# প্রাদ্ধার্থ বিভাগ



# गश्यि किर्क्षेष्णायन खनी उग्

শ্রীল শ্রীপ্জ্ঞাপাদ শ্রীধরস্বামিক্ত ভাবার্থদীপিকা টীকা শ্রীল শ্রী পুজ্ঞাপাদ সনাতন গোস্বামি ক্ত বৈষ্ণবৃতোষ্ণী টিপ্পনী শ্রীল শ্রীপ্জ্ঞাপাদ জীবগোস্বামি কৃত ক্রমসন্দর্ভ শ্রীল শ্রীপৃজ্ঞাপাদ বিশ্বনাধ চক্রবর্তিকৃত সারার্থদিশিনী টাকা স্মেতঃ

শ্রীরামনারায়ণ বিদ্যারত কৃতান্বাদ সমেতঞ্চ ত্রিপুরাধীশ্বর শ্রীমন্মহারাজ বীরচন্দ্র বর্মমাণিক্যস্য দম্পূর্ণ সাহায্যেন স্লাং বিনা বিভারত্বাং।

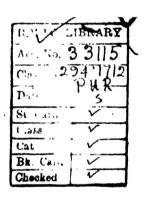
म ग म क काः।



भूर्मिमावाम ;

ব্যস্থার,—রাধারমণ্যত্ত্ত বিরামনারারণ বিদ্যারছেন প্রকাশিতং স্তান্তিতক।

मार्थका, जाविन ।



## দশমক্ষরের স্থচীপত্র।

विषय ।	नू गुड़े।	शर का	ावदश मृहा। मराप	<b>5</b> 1
	দেবকীপু <u>ত্র</u> ছইতে <b>আ</b> পনার	মৃত্যুর কথা	একাদশ আধ্যায়ে—সুক্ষাৰ্যন ৰাশকগণসহ ৰৎস পালন কৰি	टड
প্রবণ করিয়া ভীভচিত্ত	কংস্কর্ত্ক ঐ দেবকীর ছয়	গৰ্ক্ত বধ।	করিতে জীক্ষকর্ক বংসামূর ও বকাম্বর বধ বর্ণন।	
4,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	,	,	>>>	>
विश्वीत व्यथारिक	कःगवध निभित्र (प्रवकोत	গर्द्ध कश्वान	पामन क्षशाहतक्षश्चरतत्र क्षस्रगत वर्गः शातन <b>र्वक</b> व	< <b>7</b> -
ত্ৰিল আৰিছাৰ এবং	तकानिकर्ष्क डीहांब छव	क्था (प्रकीत	পালের গিলন এবং 🗷 কৃষ্ণকর্তৃক ভাষার গলদেশ রোধে বধ বর্ণ	(न।
नाचना ।	۷۵	>	5>>	>
	ভগবান্ হরির নিজ রূপে	यशः উদ্ভব,	क्रद्रशांस्थ व्यथाराय-अवा निक नावा पाता (शांतरन व	
	দীয় ৰভি এবং ভীতি ব		बातकान इत्रन कतिहन ७९काटन नर्सक्रमी स्देश विक्रक नवः	河南
নীত করণ।	ŧ:	>	গৰ্যাক অবিকৃপ পূৰ্বাৰৎ আচন্ত্ৰণ কন্দেন।	
	গ্ৰিকা বাকা জবণে কংসে	র অভিশয়ভয়	₹७•	>
	ছুণার বালকাদি হিংসার প্রার্		চতুর্দণ অধাারে-অভ্ত দর্শনের কারণ নিশ্চর করিতে	41
The Manage to the Manage	₩0	5	গারার ব্রহ্মার মোছ এবং তৎকর্তৃক 🚨 ক্লকের স্বতি।	
পঞ্চয় অধ্যাবৈ—?	গুলের জাভোৎসৰ করিয়া	নন্দের মধুরায়	240	>
	ह्य नङ् नमांशस्मादन्य।		পঞ্চল অধাতে-শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক ধেলুগালন করিছে করি	
the man and has	÷¢	t	ধেছকান্ত্র দৰ্দন এবং কালিদের বিৰু হইতে গোণ বালকদি	रशब
वह प्रधारय-न	ধ- রহুদেবের বাকো এট	ল প্রভাগমন	রকাবর্ণন।	
	त्था श्रृडना हाक्यी वर्गत <b>अ</b> ग		043	
अवटन विश्वत वर्षत् ।			(बाज्भ चमारत-वस्नाहरम <b>क्षेत्रक कर्ज्न</b> क्रानित नि	
	>+>	>	এবং ৩ৎ পদ্মীদিগের স্তবে ভাহার প্রতি 🕮 🕸 क কফণা। 🗸	
मश्च व्यथारा-	গ্ৰনে <b>শকটোংকেপণ,</b> ভূণ	।विश्वंदक व्यवः-	929	•
८क्रमत क्रवर सूध महद्रा	विश्व श्रम्भ निष्क्षं र श्री हुक	कीका करतन।	সপ্তদশ অধাারে — নাগালর হইতে কালিয়ের নির্গমন	
•	>२¢	*	ভগবান কর্তৃক স্থহাবিত লাজ ও সুধ্বৰ্দ্পগকে দাবানল হ	१८७
आहेन व्यक्षारिक-	<b>विकास</b> त्र नावकवन क्षेत्र र	रानाकीषा क्रू-	পরিত্রাণ বর্ণন। ৩৫৯	
स्ता ख्या मृहक्षनास्ति	যাগে বিশক্ত নিক্রণণ বর্ণন	1	चहेश्य चथार्राय - वमञ्चाकाल नाक्रिक औन मधा है	
	>3%	5,	কর্ক বলভন্ন দারা প্রেলখাহরের র্ধ এবং কালিয়ের ফ	
नवम् भूगादर्	कृतीयिक इस <b>छ</b> रनिका	हरेड गानिरंग	স্থানদে নৃভা করত প্রেল্ডের ক্সে বল্দেবের আর্থাংগ বর্ণন	'
त्रत्यांश काका अकदन	ब्रम् एवार जैक्क हार्स	व मधि-छाञानि	ত ৬৬ ভিনবিংশ অধাামে—গ্রীকৃত কর্তুক ম্বারণো গ্রাবিট ৫	લામ
क्रम करवन, क्रवरत	करक के शामिक <b>एँ</b> क शिक्	इक्त क्या जवः	७ श्रीकृतिम्श्रीस्य अत्रवाश्चि हहेर्छ छर्यान होते त्रका	
जीवात देशविक वि	ৰ মৰ্শনে বিশ্বর।	ir i Ari		. 41
· 44 - 1	348		dad and and and	-51191
	दुल्लावत मग्राटमण निवान्त्रम	,		
	ণাত অবং ভাণাদিগের খ্র	ग भातन भूसक	छ वन्तरम्ब त्रव व्यक्षरका कार्य पाना पाना पाना	• •
<b>9</b>	11 B. A.A.		***	

विवत्र । भुश । পংক্তি। प्रकृतिश्म **अ**शास्त्र—भवर कांगीन व्रशा वृत्तावस्य ख्रीकृत्कव व्यादम धावः छमीत वानीश्वनि अवत् लालीमिलाइ नाम दर्गन। वाविश्म व्यक्षारय-वज्रहत्रण नौना बाता लालक्कारमत् क्षि জীকুকের বরদান, তদনত্তর বঞ্জশালার গমন বর্ণন। खात्राविश्म व्यक्षारम-इनभूक्तक (जाशानश्च हाता राखनीकिन्छ-দিগের নিকট আর্যাক্রা এবং ভদীর পদ্মীগণের প্রতি অনুর্গ্রহ হেড় তাহাদিগকে অনুতাপিত করণ বর্ণন। **ठकुर्किःण व्यक्षारम्--- (इक् अप्रार्थन शृक्षक हेन्द्र**यक निराजन कतिया श्रीकृष कर्ड्क (गांवर्षन भरहारमत्वत व्यवर्तन (व्यात्रल বর্ণন )। পঞ্চবিংশ অধাারে--কোধ বশতঃ ইন্দ্র কর্তৃক ব্রহ্ণবিনাশার্থে বারি বর্ষণ এবং শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক গিরি ধারণ পুর:সর গোকুল রকা বর্ণন। ষ্ডুবিংশ অধ্যায়ে--- শীক্ষের অন্ত কর্ম দর্শনে বিশ্বিত গোপদিগের নিকটে নম্ব কর্ত্তক গর্ম কথিত ভদীয় ঐখর্যা বর্ণন। সপ্রবিংশ অধাায়ে—শ্রীক্লকের অন্তত প্রভাব অবলোকন করিরা হুরতি ও হুরেন্দ্র কর্ত্তক অভিষেক মহোৎসব। अहे। विश्म अशार्य-वक्गान्य इटेंट्ड नन्यानयन এवः त्रापि-मिरगत्र देवकुर्छ पर्मन। উনতিংশ অধাায়ে-রাসবিহারার্থ গোপীগণসহ উক্তি প্রত্যুক্তি এবং রাসারস্তে ত্রীক্লফের অন্তর্দ্ধান রূপ কৌতুকের বর্ণন। ত্রিংশ অধ্যায়ে—বিশ্বছ সম্ভপ্তগোপীগণ কর্ত্ত অতি দীর্ঘ निनाम डेमाठवर यान शत समाना संक क्रिकारबयन। একতিংশ অধ্যায়ে--নিরাশ হইয়া জ্রীক্তঞ্চের গান করিতে করিতে পুলিনে আগমনপুর্বক গোপীগণ কর্ত্ত জীকুঞ গমনের প্রার্থনা বর্ণন। चाजिः म व्यशास्त्र-- वित्रहालाल खराल प्रशास इहेबा खीक्रकात আবির্ভাব এবং প্রেম বিহবণ গোপীগণের প্রতি সাত্তরা বর্ণন। " ত্রাব্রিংশ অধ্যারে---গৈপিমগুলীর মধ্যগত হইয়া আইক্ষের •यगूनावन् मण्डीय किल बाहा (अधमीशालत्र महिल विहास धर्मन । চভুদ্রিংশ অধাারে-ভগবান কর্তৃক পর্পত্রন্ত নন্দের তথা

व्यक्तिश्रतः भाग रहेट विनाधित खन्मानत स्योठन धरः भूबाहर एव

341

বিষয়। नुहीं। भर्डिं। शक्विश्म व्यवादन - श्रे इसे वेमेंग्रेंन केविटन र्शाक्नरवाबिश-शनकर्कक्ष्याद्भारक छन् खन-शीन बीत्री छै: वि विनयी भेने वर्गन । यहै बिश्ने व्येशांत्व - वितिष्ठ वर्ष अवैश्व ना तम वार्टका त्रामक केंद्रक वश्रामव शृक्ष की निष्ठी करेश कं खँक छत्ती व वर्शवी मर्जनी खं की नेय-गार्थ कार्क तंत्र छी । कारमं। मर्खाबान अधादा-- शक्का कर्डके दक्तिवर खेवर खेविदार कर्य चाता नातम वहेंदन खंड हेईबा शद्य त्यामासूत्र नेरहात । करी विः म कर्षारम् - मक्टरेवर्त र्शीक्नार्गमेन वेदर शक्रिक কর্ত্তক তাঁহার সন্মান বর্ণন। 860 **উन्हेपातिःम अधार्त्त-प्रकृत्तत्र महिल क्रिकृत्वत्र मधुता** यांका, त्रांभीगरनत त्यंत्मांकि वार येमूनाय खेळ देवत विकृत्नाक ह्यातिः म व्यथात्य- श्रीकृष्टिक शत्म श्रेषत् मानिया मखन নিপ্তণি ভেদে অক্র কর্তৃক গুব বর্ণন। একচন্বারিংশ অধ্যায়ে— শ্লীকুঞ্জের মথুরাপুর দর্শন, পুরী প্রবেশ কালীন রজক-বধ, তথা তুই হইয়া তন্ত্রবায় ও স্থানা মালাকরের প্রতি বর দান বর্থন। ৭৪৮ হাচতারিংশ অধায়ে – কুকাকে ঋজু অগাৎ বক্লাক নষ্ট করিয়া সর্বাক্করণ, ধহুর্ভঙ্গ, রক্ষকদিগের বধুত্তথা কংসের অরিষ্ট (মৃত্য চিহ্ন) দর্শন ও রঞ্জোৎস্বাদি বর্ণন। ज्यान्द्रशादिः । ज्याराय-शब्द्रस्य वस्य क्रिया वामकस्थव महा-রঙ্গ প্রবেশ এবং চানুর নামক অন্থরের সহিত সম্ভাবণ বর্ণন। ठ्युन्डचातिश्य व्यथारम्—महा कश्मामित्र मर्फन, कश्मरवाविश-দিগের প্রতি আখাস প্রদান এবং রামক্রঞ কর্ত্ত পিতৃ গাড় शक्राविश्म अशारिय क्रिक कर्डक शिठू नमोनि ( मार्डा ও পিতার) দাত্তনা এবং উত্তাদেনাভিবেক তথা ভক্নিবাস হইতে গৃহাগমন বর্ণন। विक्रिशिश विधारिय-विकारक अल्य तथा विश्वति । जिमीय वाका बाता शिक्क कर्डक यरमामा मरमात्र त्मीकांभरनामन । मश्रहपातिः में प्रधारत-श्रीकृकारम् के देवकर्क्क शांशी-मिर्गत लेखि छइ बार्वाम ध्वर डाहारमत्र आकात्म्य भूती व्यक्ति वर्गम । चहात्रशामिश्म व्यक्षारम्—कृतात्र महिक विश्वत्र अवर चेळात्रत

गुँरह गमनभूक्तक छत्रीय सरनावथ भूई कंत्रिया छर्गाना मन

मिरशत क्षकि माचना वर्ग।

विषत्र ! शृह्य । পংক্তি। উনপঞ্চাপত্তম অধ্যায়ে—অক্রের ইন্ডিনাপুর গমনের পর শ্রাতৃপুত্র পাশুবদের প্রতি ইতরাষ্ট্রের বৈষ্ম্য ব্যবহার দর্শন করত প্রভাগিমন বর্ণন। 270 भक्तानसम् अवशारत-अतामक कर्य मध्य मर्गा छ्र निर्माण এবং क्लोडे मानव वधानस्त बोस्ना क्योगस्तर सम वर्गन । একপঞ্চালতম অধ্যাবে -- জীকৃষ্ণ কর্তৃক মুচুকুনের দৃষ্টি দারা ধবনের বধ তথা মুচুকুন্দ কর্তৃক স্বক্ত হইরা তাঁহার প্রতি অমুকন্পা। - বিপঞ্চাশক্তম অধায়ে—ভীতবং হইরা ধাবমান হওত ছারকা शमन अवर डाक्सन मृत्य कव्यानीत मरवान छनिया छन्द्रस्मानन। ত্রিপঞ্চাশন্তম অধ্যায়ে--অভুতকর্মা জীক্ষ বিষ্ঠনগরে গমন-श्रुक्त म् खंकरणत्र अभक्ष रहेरछ क्रिकारीटक रवण करतन । **Б**जु: श्रक्षांचंद्रम व्यक्षांद्रा — श्रीकृष्क विशक्त त्राकांनिशत्क व्यव ক্রিয়া ও ক্রিকে বিরূপ ক্রিয়া। নজ প্রীতে গিয়া ক্রিণীর পাণি গ্রহণ করেন। পঞ্চপঞ্বিত্তন অধ্যাহে-- শ্রীকৃষ্ণ হইতে প্রহায়ের জনা ও ও শশ্র কর্তৃক তাঁহার অপহরণ এবং শশ্বরকে বণ কারিয়া পত্নীর নহিত ভাঁহার স্বাপ্মন। ষট্পঞ্চাশস্তম অবধাবে—- 🖺 ক্লফের মিথাভিযোগে মণিছবণ পূর্বক জার্থবানের ও সত্রাজিতের কথা প্রাপ্তি, অনন্তর অভ দার গ্রহণ ও ক্সমন্তক হরণাদি ছারা অর্থের অনর্থভা কণন। मश्राभाषाम व्यवहारम-मञ्बद्धात वर्ष भूनताम श्रीकृत्कत ভ্র্ন: উপস্থিত হয়, ভাহাতে আফিঞ অকুর কর্ক আনীত মণি হইতে স্বীয় অপ্যশ মার্চ্ছন করেন। 2054 'बहेनॅक्शेनंबर प्रशास-जीकृष कानिमी, शिवदूना, नहाा, क्षेत्र किया मिक्स ना कहे नक कछात्र भागि छहन करतन कवर भत्र ভপ্ৰিনী क्रीनिकीटक विवाह कविवाब निमित्र विवास आवान हेस शहर शबन करत्र । ঊनवडिच्य व्यशास्त्र---कश्रवान् इति कृषिनव्यन नत्रकाञ्चत्रः क वध कतियां कतास्क महस्य कम्रा ७ वर्ग रहेरक शांतिकाक হরণ করেন, পরে উহিংশের পাণি এহণ করিয়া গৃংছের স্থায় उहामित्मन गृहर नेमन करते । >>०० ব্টিভম অধারে — বিরুদ্ধ পরিহাস ছারা ক্লিণীর কোপ জন্মাইরা পরে প্রেম কলতে ভারতে সাধনা করেন। সেই C श्रम कलार्केन क्षेत्रको धर्मन । अ > + >> একষ্টিভ্রম অধারে-- ত্রীকৃত্তের প্রপৌতাদি সভতি

জনিক্ত বিবাহে ব্যৱাম কর্তৃক কলি বধ এবং বোড়ণ সহত্র

একশত অট সংখ্যক স্ত্রীকে সমূত্ত কোটি কোটি পুজাদির বিশ্বাহ বিষষ্টিতম অধ্যাবে—উহার সহিত রুম্মাণ অনিক্ররে অন্ত বিবাহে বান বাদব যুগে একৃষ্ণ শহরকে জয় কুরিয়া বাণুরাজার वाह मक्न (इपन करत्न। ত্রিষষ্টিত্য অধ্যায়ে--বাণ-যাদৰ যুদ্ধে মাছেশ জব এবং ক্রন্ত কর্তৃক বাণ বাহচেছতা হরির স্কৃতি। ১১১৬ চতুংবট্টিতম অধ্যায়ে---শ্ৰীক্ষ নৃগরাজকে শাঁপ হইভে মোচন করেন ও একাবহরণ দোষ উত্তি ছারা রাজগণকে শিকা দেন এবং বিভৃতি মদোরত যহগণকে নৃগোলার প্রাবদে অহুশাদন >>00 পक्षवष्टिकम व्यक्षारग्र---वन्तरस्य शाक्रुरन गमन भूतः भन्न रग्नाभी-গণের সহিত রমণ করত মৃত্তা বশতঃ কালিন্দী যমুনাকে আকর্ষণ করেন। ষট্ৰষ্টিতম অধ্যাবে--- খ্রীকৃষ্ণ কাশীতে পদন করিবা পৌপুক এবং তাহার মিত্র কাশীরালকে বধ করিয়া অদক্ষিণকে বধ করেন मश्रवष्टिकम् व्यक्षारम् -- वनदाम मनगढ रहेशा देववक नर्कात्व স্ত্রীগণের সহিত ক্রীড়া করত মহাথল ছিবিদ বানরকে বধ করেন १४८८ व्यहेबष्टिकम व्यवादिय-गूर्क कोत्रव कर्कुक नाम क्रक स्ट्रेल উছোর মোচনের নিমিত্ত বলদেবের হস্তিনা বিকর্ষণ বর্ণন। উন্মপ্ততি হম অধ্যায়ে—নারদ প্রতি গৃহে শ্রীক্লের গার্হয় দেখিলা বিশিষ্ঠ চিত্তে তাব করত গমন করেন, এই বর্ণন। গপ্ততিভ্রম অধাায়ে—- শ্রীক্লফের দৈনন্দিন কর্ম উপলক্ষে দৃত ও নারদের কার্যো কার্যামন্ত্রিচার, জগদীখরের আহিক स्रात्रक्षण हित्रक रमित्रा यथाकस्य नातरमञ्जूषिक वर्गन । একদপ্ততিত্ব সাধানে তির তের সল্লার আছিকের ইক্ত প্রত্থে গমন এবং ভলিবন্ধন পাঞ্চবদিগের গ্রমোৎসব বর্ণন। দ্বিপপ্ততিম অধ্যালে—রাজা যুধিটির কর্তৃক নিবেদিত ইইয়া শ্রীকৃষ্ণ হর্জন জরাগন্ধকে ভীম দারা বধ করেন, এই বর্ণন। ব্রিসপ্ততিম অধ্যারে—**শ্রিক্ অধ্**রত্ত রাজগণকে মোচন পূর্বক রাজযোগ্য ভোগ খালা পরিতৃপ্ত ক্ষিক্স নিজ রূপ বর্ণন দিয়া তাঁহাবিগকে স্ব স্থ দেশে প্রেবণ করিলেন।

हरू:मश्रक्तिक स्वशादि—विनर्ग पात्र। त्राक्तर परकत सर-

भ·कि। विषया श्रृहें। ঠাৰ ও ঐ ব্যক্ত অগ্ৰ পুঞ্চ প্ৰাগতে বৈচারীত শিশুপানের বধ ত্রাশীভিত্র অধাায়ে-- শ্রীরুক্তের কথা প্রদক্ষে ভ্রমীয়া ভার্যা-2362 প্ৰভৃতি বৰ্ণন। গণ ৰ ৰ উত্তাহ বিষয় জৌপদীৰ নিকট কীৰ্ত্তন করেন এই পঞ্চপ্রতিত্ব অধ্যায়ে—রাজা বুধিষ্টিবের যঞ্চাবভূগ সন্তম ও ৰৰ্ণন। 3069 मुहित खब बने छः पूर्वग्रांश्रस्त स्निष्ठक वर्गन । চত্তরশীতিভম অধাায়ে-মুনিগণের সমাগ্রে 3256 বজোংসাহ এবং বন্ধগণের প্রস্থান। ১৩৭৪ ষ্ট্রপ্রভিত্র অবাহে বুকি সাল্পহার্থে হামানের গ্রা পঞ্চাশীতিত্ব অধ্যায়ে—বলদেব এবং প্রীকৃষ্ণ পিতা মাত্রা প্রার খারা প্রায়ের রণ হইতে অপদরণ বর্ণন। কৰ্ত্ব প্ৰাৰ্থিত ভইনা পিতাকে আম ও মাতাকে মৃত পুত্ৰ স্কৰ্ अमान भूर्तक ७५कान छेगामण करत्रम। স্থাস্থাভিতম অণ্যায়ে— গ্রীকৃষ্ণ আগমনপুর্বাক বিনিধ PEDE প্রাকার নারা অর্থাৎ কাপটা পরায়ণ সাবকে বধ করিয়া তাহার वज्नीिक्षम अशासि—अर्थनः मञ्जाहकारक পৌত-বাল চূর্ণ করেন, এই বর্ণন। ১২৮৩ বরণ করেন এবং শ্রীকৃষ্ণ মিণিলার গমন করত শ্রীয় ডঞ্জ বাজা बार्डनश्रुविक्रम स्वयारिस-नवन्नवक 'अ विमृत्रशरक नथ कतिया वहनाचे 'अ अन्हरूपव अन्तिन्द महनकि अनाम करतम । 角 🖚 পুরী মধো রমণ করেন এবং বলদেব কর্তৃক ভচের গ্রাগ " विमर्ड इत्र। 2525 मर्थाणीकिकम ज्यमादा--गांतायम मात्रम मदाम ७ द्वन कर्डक क्षेत्रानी विकास व्यथारिय-विकाश शत कृष्टी व्यवस्थ वस नातात्रश्य मध्न बहेटल निर्धान भवाश खिक । করিরা তীর্থ ক্লানাদি ছারা বলদেব স্ত অর্থাং পৌরাণিক হত্যা 3809 জনিত পাঁপ হইতে মুক্ত হয়েন, এই বৰ্ণন। क्षेत्री जित्रम क्षांद्य-विकृष्टकत मृक्ति ७ मझ (मरश অক্টের বিভূতি প্রাধি কণন। ১৫১৮ অনীভিত্তন অধাারে—অর্থাকাক্ষী ও গৃহাগত শ্রীদান নামক আশ্বণকে পূলা করত শ্রীকৃষ্ণ গুরুগৃহে বাসকথা বিজ্ঞাসা खेतनविक्रित्र अधारत-त्कान (प्रवक्ता सक्ती; धकविवत्य 2025 क्टबर्स, शृहे वर्तम । সংশ্রামন্তর পরীকা করিবা ভাগ মুনিগণের নিকট বিষ্ণুর উং-একারীভিতম অধারে—ভগবান জীলাম আক্ষণের পৃথুক कहेजा वर्गन करत्न। >20. ভাগুর ভৌক্ষন করিয়া ত্রীহাকে ইক্স তলভি সম্পত্তি দান করেন। নবভিত্তম অধ্যাৱে-পুনৰ্কার সংক্ষেপে রক্ষলীলা ও তাহার शिकाका वृत्तः वृत्त्रात्त्र जानका वर्गन । . . . দাশীভিতৰ আধাৰি — কুকক্ষেত্ৰে গদন করিয়া ত্রীগ্রহণে র্কিগণকে দেখিলা নৃগতিগণ পরস্পাব কৃষ্ণকথা কছেন এবং **जीन जुलाइन कुल खीवांनाः शतिहतः।** ব্ৰিকুক্ত কুৰুক্তে গ্ৰন করেন, এই বৰ্ণন। 5492

शन्त्र्र ।

>08.

#### अध्वयानि होका।

ওঁ নমঃ ক্লফার। বিশ্বস্থাদি নবলকণ লক্ষিতং। শ্রীক্লাখাং পরং ধাম জগদ্ধাম নমামি তং। দশমে দশমং লক্ষ্মাশ্রিতাশ্রবিগ্রহং। ক্রীড়াল্ডকুলাজোধী পরানন্দ মুলীর্যতে। দশমে ক্লফাংকীর্বিতানাগাহ্বণ্যতে। ধর্মমানি নিমিডর
নিরোধা ছ্টভূভূলাং। প্রাক্রতাদি চতুর্দ্ধা বো নিরোধঃ সতু বর্ণিতঃ। ততং প্রসন্ধতঃ স্পৃষ্টি সংহারাদি নিরূপগৈঃ। ক্লা নবতি
রধ্যাগা দশমে ক্লফ্লীর্ত্তরে। আবৈগ্যন্তভূতিরধ্যাবৈ প্রন্ধ প্রাধান্দাবনেঃ। ভারং হর্তুংহরের্জন্ম সপ্রসন্ধ নিরূপতে। গোক্লে
মপুরাগাঞ্চ দারবভ্যাং ততঃ ক্রমাৎ। ক্লফ্লীলা তিধা প্রোক্তা তত্তেদেশ্বনেকধা। সপঞ্চিত্রংশতাধ্যাবৈ র্হ্লুন্দাবনাদির্। গোক্লে
বসতো লীলা বর্ণতে স্বর্ছন্র। একেন বসুনা বারিণাক্রত্রেণ ক্লতা ভতিঃ। একাদশভি রাখ্যাতা লীলা মধুপুরে ক্লতা। শেবৈ
দ্বিবৃত্তী লীলা ত্রিশ্বাণাদি বর্ণতে। এবং নব্তিরধ্যাগা দশমে বিশ্বাধ্বিঃ।

#### **এীরুন্দাবনচন্দ্রা**য় নমঃ।

#### বৈষ্ণবতোষণী।

🎒 মন্মদম লোপালং বুদ্দারণ্যপুরস্করং। 🛮 শীগোবিন্দং প্রপদ্যে ২২ং দীনাত্মগুহকারকং।। বন্দে শীক্ষণটৈতন্যং ভগবন্তং কুপার্ণবং। প্রেমভক্তিবিতানার্থং গৌড়েম্ববততার यः ॥ এই মাধবপুরীং বলে যতীক্রং শিষাসংযুতং। লোকেম্মুরিতো যেন রুঞ্চতিক ভুরাজিবুপ:॥ ঐভাগবতসিদ্ধার্থা টীকা দৃষ্টিরদায়ি বৈ:। এথিরভামিপাদাং স্তান্বন্দে ভক্ত্যেকরক্ষকান্। ভট্টাচার্য্যং সার্কভৌমং বিদ্যাবাচম্পতীন গুরুন। বন্দে বিদ্যাভূষণঞ্চ গৌড়দেশ বিভূষণং॥ বন্দে জীপরমানন্দং ভট্টাচার্য্যং রসালয়ং। রামভদ্রং তথা বাণী-বিলাসকোপদেশকং॥ নমামি জ্রীমদবৈভাচার্য্যং জ্রীবাসপণ্ডিতং। নিত্যানন্দাবধৃতক জ্রীগদাধর পণ্ডিতং। দামোদর স্বরূপাদীন্ বলে হৈতন্যপার্ষদান। যেষাং পাদরক্ষা স্পর্শাদধ্যোপ্যত্তমো ভবেং। শ্রীবাহ্রদেবদত্তক শ্রীগোবিন্দং মুকুনকং। মুরারি গুপুম্তাংশ্চ বন্দে চৈতন্যদেবকান্ ॥ বৃন্দাবনপ্রিয়ান্ বন্দে শ্রীগোবিন্দপদাশ্রিতান্ । শ্রীমৎ কাশীশ্বরং লোকনাথং শ্রীক্ষঞ্চাদকং ॥ স্বামি-পালৈন্ঘদ্যক্তং ঘদ্যক্তঞাক্ত টং কচিৎ। টিশ্লনী দশমে তত্র সেমং বৈষ্ণ বতোষণী ॥ বৈষ্ণবাপরিতোষঃ স্থান্থত্র যত্র তত ততঃ। লেখ্যং বৈষ্ণব সিদ্ধান্ত দাক্ষিণোনৈব কিঞ্ন॥ এ মিস্তাগবতবাক্ত ভক্তোৰপুরুষাথিনাং। নাভেদবাদ ইত্যেষ নালেথি ক্ষম্যতামিদং। পূর্ব্ব পূর্বত্বেচ ব্যাথ্যা পূর্বপক্ষতয় মতা। সর্বান্তিমা তু বিজ্ঞেয় অসিদ্ধান্ততয় মতা। যেষাং প্রোৎসাহনেনামি প্রতেহিতাস্ত সাহদে। তে দীনাসুগ্রহব্যগ্রা: শরণং মম বৈঞ্বা: ॥ রাধাপ্রিয়প্রেমবিশেষপুটো গোপালভটো রঘুনাথদাস:। ভাতামুভৌ যত্র স্কর্মনার কো নাম সোহর্থো ন ভবের স্থাসিক: ॥ জীমটেচত জ রুব জ প্রীতৈতা গুণবতো হবিলং। ভূয়াদিদং যদাদেশ বলেনৈব বিলিপ্যতে॥ স্বয়ং বিলিখিতং কিঞ্চিৎ কিঞ্চিদেঘাগ্যৈ বিলিখিতং। ছিদ্রুং যদন্তি ভচ্চাত্র শোধ্যং বৈক্ষবপণ্ডিতৈ: । শ্রীচৈতন্য কুপাব্যক্ত শ্ৰীকৃষ্ণপ্ৰেমলিপা, ডি:। স্ম্যগ্ৰস্থিতৃং শক্ষা দেয়ং বৈষ্কৰ তোষণী ॥ শ্ৰীমন্তাগৰতং যদ্ধি স্বাহ্ স্বাহ্ পদে পদে। তম্ম প্ৰতিপদ ৰ্যাখ্য কাৰ্য্য তৎ প্ৰতিপত্তয়ে ॥ আদ্য: পাঠোহত গৌড়ীয়ো হিতীয়ো হলেধি কাশিক: । নানান্যদেশপুভীনাং টীকানাঞাহ্বাদত: ॥ পুরা মহাপুরাণত দশ প্রোক্তানি যানি হি। লক্ষণান্যথিলে স্কল্কে তানি সন্তিতেরোরিব। তত্র প্রাধান্যতঃ স্কল্কে দশমেহতানিক-প্যতে। আশ্রেষা ভগবান রুক্ষ: স্বপূর্ণত প্রকাশক: ॥ তত্ত্ব যদ্যপি সামান্যাকারেণাশ্রয় কক্ষণ:। তথাপি রুক্ষ এব স্থান্ত পর্য্য-বসায়িতা ॥ বন্ধণোহি প্রতিষ্ঠাহমিতি তদ্নী: সভাং মতা। আত্মারামাশ্চ মুনয় ইত্যাদি সচিবা চ দা। পরিভাষাত তত্ত্ব ভাদেতে চাংশেতি হতগী:। তদেতি বৃত্তং ভাবি ব্রহ্ম স্তবময় স্বরং ॥ অথাত পরিভাষেরং জ্ঞাতব্যা যদ্যপেক্ষাতে । মৃশং স্টীকমকাদ্যৈ পরি-চ্ছেদ্যং সটিপ্লনি ॥ অঙ্গা বাক্যান্ত এবাত্তা দেয়াঃ পদ্যান্ততো নতু। বছপলৈয়ক বাক্যন্তে গভাছা বিদ্যন্তকাঃ ॥ যদ্মিন্ বাক্যে নাতি টীকা তদপ্যক্ষেন যোজ্যেৎ। টীকা তদঙ্গুন্যা বা তদঙান্ত যুতাপি বা।। তদ্যুত্ত্বন্ত পূৰ্ববাদ সলিধে পৃথগাচরেৎ। বিধিরেবং গৌড়কাশ্রো ও জ্জরাদৌ যথা মতি। এক পদ্যান্যবাক্যতে সংখ্যা শব্দান্ত কান্তকাঃ। যথার্দ্ধকং যুগ্মকঞ্চ ত্রিকমিত্যাহ্যদান্তবিরতি ॥

শ্রীকৃষ্ণের লীলা তিন প্রকার ব্রজ্ঞলীলা, মথুরালীলা এবং শ্বকালীলা। দশমক্ষমে নকাই অধ্যায়ে ক্ষেলীলা কীর্তিত হয়, তল্মধ্যে প্রথমাদি চারি অধ্যায়ে ব্রক্ষার প্রার্থনায় অবনির ভার হরণার্থ ভগবান্ হরির জন্ম। অপর পাঁচ অধ্যায় অবধি উনচল্লিশ অধ্যায় পর্য্যস্ত ব্রজ্ঞলীলা, চল্লিশ অধ্যায়ে বযুনা জলমধ্যে অকুর কর্তৃক হরির স্তুতি, একচল্লিশ অধ্যায় অবধি একাদ অধ্যায় পর্য্যস্ত একাদশ অধ্যায়ে মপুরালীলা এবং বারাদ অবধি নকাই অধ্যায় পর্যাস্ত উনচল্লিশ অধ্যায়ে হারকালীলা কীর্ত্তন ॥ ০ ॥

## গ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তি কৃত দশুমক্ষম টীকা প্রারম্ভে বন্দনা।

নিত্যানশঃ কৃষ্ণচৈতন্যচন্তোহদৈতঃ পৃথ্যামেধ্যন প্রেমিদৃদুং। তপ্তত্ত্বং তেমমংশ্চেতমুন্মাং ধিমন ভূমাৎ সৈঃ কুপারশ্মিলেশৈঃ॥১॥ औप्रमामाध्य नत्या नृहत्य नयत्य औताम ताव नम अव नमः खन्नल । প্রীরপ সামগ নমোহত্ত নমোহত তুড়াং শ্রীমৎসনাত্রন নমোহত্ত নমো নমোহত্ত ॥ ২॥ শীমন্তাগবতীয় দিব্যদশমন্বরামৃতান্তোনিধৌ থেলন্ যঃ স্বকরোদ্, তৈ রসকলৈরার্দ্রাংস্টান্থানিপ । চক্রে যদ্য মহর মীলিতমহ: শ্রীরূপবিখ্যাপিতৈঃ দর্কেদ্ শ্যন্ত এব নাটকবরে সাশ্চর্যমেতদ্যথা ॥ ৩॥ ৰক্তং পারমহংস্য পদ্ধতিমিহ ব্যক্তিং গতানাং হি যং দিখানাং ভুবনে বভূব সনকাদীনাং তৃতীয়ঃ পুরা। সালং ভক্তিরদং রহস্ত মধুনা ভক্তে মু সঞ্চার্যন্তেকঃ সোহ্বত্তার বিশ্বগুর্বে গুলার •ত দৈল ননঃ ॥ ৪ ॥ ব্যাপা বৈষ্ণবতোষণী প্রকটিতা যেনৈব যন্তা রসঃ প্রাপ্য্যাতিচমংকৃতীঃ সহন্ধাৰাহলান্যন্ গ্রাঞ্জতে। তশাদ্বিকণা অদীয় মুখতো যে নিঃস্তাঃ স্বাদিতাতানাচিতা ক্লতার্থয়ানি জমুরিত্যাশা বরীবর্ত্তি মে॥ «॥ (शालान छ तप्नाथ लिनाकरत्न् किलाकनाथ ठत्रशान्य कीवलानान । বন্দে যদীয় করণা স্থরদীর্ঘিকায়াং সাতোধতাঘততিরীহিত্যাপ্ত্নীশে॥ ৬॥ তমশ্হর দৃশাং বৈ ন'ঃ ক্লতে ভাবার্থদীপিকা। ক্লতা ক্লপালবস্তেহত্র জীধরস্বামিনো গতিঃ॥ १॥ ব্যাগ্যা লেখ্য তদীয়া যা ভক্তচিত্ত প্রমোদনী । কাচিৎ প্রভ্নাং কাচিত্র শ্রীমাল্যুক ক্রপোদিতা ॥ ৮ ॥ প্রণম্য প্রতিকং ভূম: প্রীকৃষণ কঙ্গণার্থবং। লোকনাথং স্থগচকু: প্রীকৃষণ তমুপাপ্রয়ে॥ ১॥ গোপরামাজনপ্রাণপ্রেরদেইতিপ্রভৃষ্ণবে। জনীয় প্রিয়দাস্যায় মাং মনীয়মহং দদে॥ ১০॥ দশমেহস্ক্রমপ্রাপ্তং নিরোধং পরিহায় যে। আশ্রমং বক্তি মুনিরাট্ তেনেদং প্রতিপদ্যতে॥ ১১॥ প্রথমঃ পীঠতাং ক্ষত্ত্বরুং চর্ণযুগ্মতাং। চতুর্থাদি কটা নাভি বকোদোযুগক্ঠতাং॥ ২২॥ দাদলৈকাদশং শীর্ষ ভালাদিদ্বমগাৎ ক্রমাৎ। শ্রীভাগবত ক্লফত দশমো মঞ্ছ হাস্ততাং॥ ১৩॥ ধোরসর্বাঙ্গম্থাং यक्तामाः নাস্তেখ্সা সংস্থিতি:। যথা তথাশ্রাঃ ক্লোনেবাঙ্কে স্থাতুমর্থতি ॥ ১ এ ॥ অত: প্রীদশ্যে বন্ধপর্মাত্মাদি নাম ভাক্। আপ্রোবর্ণতে ক্লফো নবলকণ লক্ষিত: ॥ ১৫॥ ঈশাত্রবর্ত্তিনামম্বরীষাদীনাং কথোদিতা। নবমে দশমে সাকাদীশস্যৈর কথোচ্যতে॥ ১৬॥ সচেখবো গোপএব কৃষ্ণ: পূর্ণতমোত্রজে। পুরুষয়ে পূর্ণতব: পূর্ণ: ক্ষত্রির উচ্যতে ॥ ১৭ ॥ এবং ফুলসা ত্রৈবিধ্যাল্লীলাস্য ত্রিবিধোদিতা। বাল্যাদিতত্তদালন্ধি ভক্তভেদাৎ সহস্রধা॥ ১৮॥ আদির: পঞ্চভিরধ্যারৈ জন্মপ্রাসঙ্গিকীকথা। জন্মচাস্য ততো বাল্যলীলা নবভিরীরিতা॥ ১৯॥ ষড় ভিঃ পৌগগুলীলান্ত কৈশোবর্ম চর্চ্চিতা। ততঃ কৈশোর্লীলোনবিংশত্যা ব্রজমগুলে॥ २०॥ একেন স্বতিরক্ষুরক্ষতৈকাদশভিস্ততঃ। । লীলা স্যান্মাপুরীশেবৈ দ্বারকারাং নিরূপিতা ॥ ২১ ॥ তদেবং দশমেহধ্যাদৈর্ম বত্যা বর্ণিতা হরে: । লীলা নিত্যকিশোরস্য নিথিলাকর্ষিণী ক্ষিতৌ ॥ ২২ ॥ তবতু প্রথমে খ্রেত্বক্রোরাগতিমাধুবী। দেবাজ্ঞাকাশবাক্ কংসাদেবক্যাঃ ষ্ট্স্তাত্যঃ॥ ২৩ ॥



#### न नग क कः।

প্রথমোহগাায়;।

#### ওঁ নমঃ কুঞায়।

<u> बीवां दक्षां वाठ ।</u>

ক্রথিতো বংশবিস্তারো ভবতা দোমসূর্য্যয়ে। রাজ্ঞাঞ্চেরবংশ্যানাং চরিতং পরমাতুকং ॥১॥

#### শ্রীধরস্বামী।

ত্ত্ৰ তু প্ৰথমে কংসং অমৃত্যুং দেবকীস্থতাং। প্ৰজা তীতোহবধীজন্যাং ষ্টাৰ্চানিতি বৰ্ণাতে। ক্লাবতারচরিতপ্ৰবশাস্ত-নির্ভঃ।উকান্থবাদেনোংস্ক্যাজালা পৃছতি তং পুনঃ॥ • ॥

ক্থিতো বংশবিস্তার ইতি ॥ ১॥

#### বৈষ্ণুব্ৰ কোমণী

শ্রীযুক্তো রাজা শ্রীরাজেতি শ্রীশন্ধপ্রয়োগোহর শ্রীকৃষ্ণণীলারন্তেহতিশয়েন প্রেক্সা বিরাজমানহাং । টঙ্গভাবঃ সমাসান্তবিধের-নিত্যবাং। রাজোবাচেতি পাঠস্ব সাধারণঃ॥ ॰ ॥

সর্ব্ধ কবৈষ্ক্র শ্রীক্ষচরিতং বিভরেণ শ্রোতুং বস্তু: শ্রীবাদরায়ণেং প্রহর্ষণার্থং তহ্তুসভিনন্দতি কথিত ইতি সার্দ্ধকেন। ক্ষিতঃ প্রায়স্তত্তক্তর কথা প্রক্রেনাপ্যক্তঃ নত্দেশমাত্রেণে তার্থঃ। ত্রাগি বংশানাং বিস্তারঃ প্রত্যকং প্র পৌজাদি প্রপঞ্চো

#### ক্ৰমসন্ধৰ্ভ:।

ওঁনম: একঞার। দশমে ক্রমসলতে সক্তাণাং সমাজ্তিং। ক্রিয়তে যদ্লিদেশেন স নেহন্ন্যুগতে গতিং। অথ দশম্ভ্রুস্ ক্রমসলতেং। নবমে দাশস্ক্র স্থ্রি দশলক্ষণামুসারেণ বংশ বংশ্যাকুচরিত দারা দুতীয় স্থিতি তদমুসারেণ তদ্রপ মরস্তর কথা

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বাচয়িতব্যে**দর্থের্ বঞ্কংসাহং বর্জ**য়িতুং তহুক্তমতিনন্দতি কথিত ইতি ব্লপ্রপোত্রাং ক্র্যাং ব্লপেণিত্রেন ব্লাংশছেন মনোহধি<mark>ঠাত্ত্বেন স্বয়ং ভগবদলীকৃতবংশ্তাক্ত্বেন চ সোমস্যাভ্</mark>যহিত্ত্বাং পূর্ক্তিনপাতঃ। স্বায়স্ত্ৰমনো তহংশ্যানাঞ্চ পরমাছ্ত-

অপিচ প্রথমাধ্যায়ে দেবকীপুত্র হইতে আপনার মৃত্যুর কথা প্রবণ করিয়া ভীতচিত্ত কংসকর্ত্ত এ দেবকীর হয় গর্ম বধ।। ।।

রাক্তা পরীক্ষিৎ প্রবর্গেৎ প্রকাশ পূর্ব্যক মুনিবর শুক্ষেবকে জিজাসা করিলেন বুলান্!

## যদোশ্চ ধর্মশীলস্য নিতরাং মুনিসন্তম। তত্তাংশেনাবতীর্ণস্য বিঞোবীর্ষ্যাণি শংস নঃ।। ২।।

#### खीधत्रवामी।

অংশেনেতি প্রতীত্যতিপ্রায়েশেকং ॥ ২॥

#### বৈষ্ণৰভোষণী ৷

ভবতেতি পরমাদরাং। সোমস্ত পূর্বনিপাত ক্তবংশে সাক্ষাং শ্রীভগবদকতরণেনাভ্যর্থিতথাং। উভর বংখ্যানাং চক্রস্থ্যবংশোরবানাং দিখিজয়াদি চরিতক্ষ কথিতঃ। পরমং অন্তং বিশ্বরাবহং। শ্রীপ্রেরবংক কুংস্থাদীনাং উর্বাণীপরিপ্রছেক্রারোহণাদিনাত্যনাদীকিক্সাং। যদ্যপি স্বারস্ত্ব ময়াদিবংশ তবংখ্যচরিতাস্তপি তৃতীয়ন্ধনাদৌ কথিতানি সন্ধিত তথাপি সোম স্থায়োরিতি উভর বংশ্যানাদিতি সর্বাবতার শ্রেষ্ঠয়োঃ শ্রীবহুনাথ রলুনাথরোত্তর তর সম্বন্ধং ॥ ১॥

ষদোশ্চ বংশ বিস্তার স্তবংশ্রানাং চরিতং পরমাস্কৃতং নিতরাং সম্যক্তয়া কথিতং তত্র হেতৃঃ ধৃর্মশী লস্তেতি ধর্মোহত্র ওপবস্তক্তি লক্ষণ:। ধর্মোনত্তিকৃহংপ্রোক্ত ইতি শ্রীভগবহুকে:। শ্রীঘদো উক্তিনিষ্ঠিৎমেকাদশস্করে প্রবর্ত্তন বক্ষাতে। অতএবোক্তং শ্রীকৃতী-দেব্যা ঘদোঃ প্রিয়ন্তাববায় ইতি। পৃথক্ষেন তস্তোক্তিম্বর্থনে শ্রীবহুদেবাবতরণেন সর্বতঃ শ্রৈষ্ঠ্যাং। ক্রমেণাভীইপ্রশ্লেচ্ছাতশ্চ। মৃনির্ সন্ উত্তর্ম: মৃনিসভ্তম: শ্রীভগবন্তক্তঃ সন্তর: শ্রীকৃষ্টে রতঃ সভ্তম স্তৎ পদান্ধরোঃ প্রেম বিশেষবানিত্যেবং সম্বোধনেন ক্ষিতে কথো চ সমর্থতোক্তা॥

অভী ইমাহ তত্ত্বতার্দ্ধকেন ধর্মশীলম্বাদেব তত্ত্ব বদোর্বংশেহবতীর্ণক্ত শ্রীগোলোকাথ্য নিজ পরম লোকাং স্বয়ং প্রপঞ্চেই তির্বাজিন মাগতক্ত অংশেনেতি। প্রীধরস্বামিচর নৈরেব ব্যাখ্যাতং। তত্ত্ব প্রতীতিঃ সাধারণ জনানামেব জেরা। নাহং প্রকাশং সর্বস্য বোগানায়া সমারত ইতি শ্রীভাগনলীতি তাবং। তত্ত্বাংশেনাবতীর্ণক্তেতি অসর্ব্ধ প্রবোধ স্বভাবতেত্যর্থং যথা অংশেন জ্বীবৃলুদ্ধেন সহৈতি। তত্তাপি বীর্য্যাণি শংস্থানীতি তাবং। অর্থাকরে। দর্শরামান লোকং স্বং গোপানাং তমসং পরং। কৃষ্ণক্ষ তত্ত্ব জ্বনোতিঃ স্বৃহমানং স্থাবিষ্মিতা ইত্যানেন স্বত্ত্ব নির্মাণ ব্যাখ্যাবিশেষময়বচনেন কৃষ্ণস্ক ভগবান্ স্বয়মিত্যানেন চ বিরোধাপত্তেং। উক্তঞ্চ ব্রহ্মণা স্বাংহিতারাং। গোলোকনামি নিজধানি তলেচ তত্ত্ব দেবী মহেশ হবিধামস্থ তেরু তেরু। তে তে প্রভাব নিচরা বিহিতাশ্য বেন গোবিক্ষমাণি প্রকাং তমহং ভজামীতি ॥ রামাণিমূর্তিষ্ কলা নির্মেন তির্চ্চরানাবতার মকরোত্ত্বনের কিন্তা। কৃষ্ণং সমহং স্বাং স্বত্তবং প্রমান বেগা গোবিক্ষমাণিপ্রকাং তমহং ভজামি॥ তত্ত্ব তত্ত্ব সন্কেহান্ত নিরক্তরে। এবমক্সত্রাপি বিক্ষোং সর্ব্ব বাণক্তরা পরিপূর্ণতা পর্য্যবানক্ত স্বয়ং ভগবতঃ শ্রীক্ষক্তেত্বর্থং। নোহম্মান্ প্রতি বীর্য্যাণি মহাপ্রভাবমর্চরিতানি শংস স্বত্তিবং সোহকর্ষং বর্ণন ইতি প্রক্রক্ষক্ত চরিতানান্ত পরম পরমাত্তত্বং স্চিতং। ন ইতি বহুতং তচ্চুশ্রম্বরাত্ত্বনো বহুমানাং। স্বসন্ধিনামপেক্ষরা বা সাচ ক্রপা বিন্যেনৈব বা। বহা নোহম্মাকং পাণ্ডবানাং যো বিষ্ণুপ্তত ইত্যাত্মন স্তান্ধিন্ ভক্তিক স্বনীর্য শ্রবণে লাল্যাচ স্থিতি। ॥ ২ ॥

#### कंत्रमञ्जूष्टः।

ভেদ ষারা দশমপদার্থমধিগত্য তস্যুচ তদক্তে নিজাতীই শ্রীকৃষ্ণরপত্ম পর্যাদোচনেন স্থাবিশেষমূপালজ্য তথাছবদ্ধন্ ওলকণ-বিশিষ্টেহত্ম কথা ঘারা সাক্ষান্তমেবাধিগত্তং ঔৎকণ্ঠ্যেন পৃচ্ছতি। কথিত ইত্যাদিভিঃ। তত্ত্ব সার্থেন্ তদস্বাদঃ। তত্ত্বেত্যর্থেনা-ভীষ্ট বিজ্ঞপ্তিঃ॥১॥ অংশেন শ্রীবলদেবেন সহ॥২।৩॥

#### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

চরিআণাং চতুর্থানিষু কথিতত্বেংপি তস্য বংশোন পর্ব্যবসান মধুরঃ। সোমস্থারোর্বংশন্ত শ্রীকৃষ্ণরাম চরিআন্তিমন্তাং পর্যবসান মধুরঃ ইতি তয়োরুৎকর্বেণোরেশঃ। মদোশ্চরিতাং কথিতং তস্য পিআল্লালন্তিবেছপি তন্ধভিত্তত্বিশ্বাধা বিভিন্ন বিশ্বাধা স্থানিসভানীত মুনিসভানীত মুনিসভান স্থানিজ্ঞান তমেকাদশে ব্যাধ্যাস্থাত চ । মুনিসভানীত মুনিসভান স্থানিজ্ঞান তেন্দ্র বিশ্বাধা বিশ্বাধান তথ্য । ক্রমান্ত্র বিশ্বাধান বিশ্বাধান তথ্য । ক্রমান্ত্র বিশ্বাধান বিশ্

ততাৰতীৰ্ণদা ৰীৰ্যাণি কথয়। কদা অংশেন বিক্ষো বা ধৰংশেন বৈকুঠে বিকুৰ্তকতি যদৈচকাংশো বিকৃত্যন পূৰ্ণভেতাৰ্থ।

যথা। অংশেন শংস। সামজ্যেন বক্তৃং ন ক্স্যাপি শক্তিরিতি ভাবং ॥ २ ॥

আপনি অনুগ্রহ করিন। চক্রবংশ ও সূর্য্যবংশের বিস্তৃত বিবরণ বলিয়াছেন, অপর ঐ ছুই বংশে যে সকল নরপতি জন্মগ্রহণ করেন, তাঁহাদের পরমাশর্য্য সরিত্রও কবিছ ইইরাছে।। ১।।

পরে ধর্মশীল মহীস্থা যতুরও বংশাবলী বর্ণন ্মহিলেন, সম্প্রতি ঐ বংশে স্পংশ (বন্ধাব ) সহ স্বাবতীর্গ ভিগবানু বিষ্ণুর বার্য (কর্মা) সকল বর্ণন ২ক্ষন ॥ ২ ॥ অবতীৰ্য্য যদোৰ্বংশে ভগৰান্ ভূতভাবনঃ। কৃতৰান্ যানি বিশ্বাস্থা তানি নো ৰদ বিস্তরাৎ ॥৩॥ নিকৃত্ততিৰ্ক্রিপণীয়মানান্তবৌষধাচ্ছোত্ত মনোহভিয়ামাৎ।

#### अध्वयामी ।

নম্ উক্তানি জাতো গতঃ পিতৃগৃহাৎ ধাজমেধিতার্থ ইত্যাদিনা স্ত্যং পুন বিস্তরেশ খনেত্যাহ অবতীর্ব্যতি ভ্তানি তাবরতি পাল্যতীতি তথা ॥ ৩ ॥

অত্র লোকে ত্রিবিধা জনাঃ মৃক্ষা মৃমুক্ষবো বিষয়িণত তেবাং মধ্যেছত্র ন কন্তাপালং প্রতায় ইত্যাহ নিবৃত্বতর্বৈরিতি। গত-

#### ৰৈক্ষৰতোষণী।

নত্ব সর্কাণ্যপি তক্ত কর্মাণি পরমান্ত্তানি ইতি চেত্তর্হি তানি সর্কাণ্যের কথরেত্যাহ অবতীর্য্যেতি অবতার প্রয়োজনমূদ্িশতি ভগবান্ সক্রৈশ্বর্য পূর্ণোহপি ক্লপরা ভূতানি সর্কাণ্যের ভাবয়তি পালরতীতি তথা সং। যতো বিশ্বায়া চেতনাদি শক্তিপ্রেরক্ষেন স্থভাবতএব হিতকারী পরম স্বরূপ্যেন প্রেমবিশেষ পর্য্যবসানরূপশ্চেত্যর্থং। আতো বানি যাবস্তি কর্মাণি তানি সর্কাণ্যের বদ সংকীপ্তর। তত্ত্বচ বিস্তরাৎ বিস্তরেণ প্রয়েজনাদি নির্দেশন নতু পূর্কবিৎ সংক্ষেপেণেত্যর্থং। ইত্যসম্ভবেহপি লালস্বরৈবাক্তং॥ ৩॥

নচ বিস্তবেণ তত্র শ্রুতে মম ভৃত্তিরাশকেত্যাশরেনাহ। নিবৃত্ত তর্বৈমু কৈরপ্যপ অধিকং সর্কোপরিতনত্বেন বা গীরমানাদিতি পরম ফলছেন সদোপগানাং পরমানন্দময়হং। তত্র মুক্তাঃ জ্ঞানিচর ভক্তাঃ স্থভাবভক্তাশেটতি হৈবিধ্যে প্রক্রীবন্ধকাঃ ভাগিত-সালোক্যাদয়শেচতি চতুর্বিধা জ্ঞেয়াঃ। ভবৌবধাদিতি অর্থায়ুম্কুণাং সর্বহংধ নিবর্তকছং। শ্রোত্র মনোহভিরামাদিতি। শব্দ মাব্রেণ শ্রোত্রাণি অর্থেন মনাংসি চাভিতো রময়তীতি তথা তত্মাদিতি পারিশেয়াহিবয়েছ্ নামপি স্থপ্রদেশ্বং তথা ভক্তীছ্ নাং তু উত্তরছয়মধিকং প্রথমঞ্চ যথোচিতং জ্ঞেয়মিতি। চতুর্থোহপ্যধিকারী কর্মঃ। এবং সাধ্যত্বং সাধনত্বন। অতঃ সদা সর্বসেবছমুক্তং। অতএব উত্তমঃ ক্লোকো মশোযত্ম তত্ম প্রভিগ্রতো গুণানাং নির্ভিশর নিত্য সত্য স্থাভাবিকানস্তানানোদার্য্য বাংসন্ট্রাদীনাং অন্থবাদঃ

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

নির্ভেতি সামান্যত তৎ প্রশংসা। পিতেত্যাদিভি বিশেষত ইতি জ্বেয়ং নির্ভতবৈ:॥ ৪॥

#### ঐবিশনাথচক্রবর্তী।

নমু জাতোগতঃ পিতৃগৃহাৰ জনেধিতার্থ ইত্যাদিনা অংশেনোকান্যের সতাং সামস্তোন তথীর্ব্যাণি সংক্ষিপ্তী ক্বতাপি বজুমশক্যান্যের। স্বাধাংশেন যাহ্যকানি তান্যপি সংক্ষিত্বীকৃত্য শ্লোকাভ্যামুক্ষান্যতো বছভিঃ শ্লোকৈন্তান্যের বিস্তৃতী কৃত্য ক্রহীত্যাহ
অবতীর্য্যেতি। ভূতানি ভাবৰন্তি প্রেমবন্তি করোতীতি প্রয়োজনমুক্তং নূলোকং রময়ামাস মূর্ত্যা সর্ব্যাঙ্গ রময়েতি। অবিভ্গুদৃশাং
নূণামিতি অমূর্ত্ত্যা লোকলাবণ্য নির্ম্মুক্ত্যেভ্যাদিত্যক্তথৈবাবগমাৎ। যতো বিশ্বাত্মা দেহ জীবাভ্যাং সকাশাদপি পরমান্ধা প্রেমাস্পদী
ভবিত্ত্যেরতি ব্রম্বত্তবাস্তে ব্যক্তী ভবিষ্যতি। বিস্তরাৎ অম্বাদি মন্দ্র্ত্তি স্থাধার্থং বিস্তরং শন্ধবাহ্ল্যং প্রাপ্যযোত্যর্থং।
বিস্তরো বিগ্রহোব্যাসঃ সচ শন্ধ্য বিস্তর ইত্যমরঃ ॥ ৩ ॥

শ্রীধরস্বামিতি: শ্রীমৎপ্রতৃতিক সনাতনৈ:। ঋত্বান্তাক মুদ্ছিষ্টং ভূজিব্যোহ্ মুপান্তদে। অন্দাদরস্ক সংসাররোগঞ্জাঃ পরমভাগালকৈ র্ডিংক্লিরোমণিভিন্তল ভবড়িদীরমানাৎ ক্লফলীলায়ত মহৌবধাৎ কথং বিরতা ভবড়িমহাতীতাহ নির্ভেতি ভবৌষধাৎ সংসার ব্যাধেরৌষধ রূপাৎ নির্ভতবৈ বদেব নিষেব্য বিগত ভূঞাব্যাধিতি ভূত্তিব সংসারক্তমানুকৈ জ্ঞানাদিভ্যোপি উপ আধিক্যেন গীরমানাৎ ভো ভো বর্ষাব এতব্লিহেব্যৈব নিরাময় ভূবতেত্যুকৈ ক্লপদিশ্যমানাৎ জন্যোবধব্দাস্য

হে মুনিসন্তম! যদিও আপনি নবমক্ষের শেষে ভগবানের কার্য্য সংক্ষেপে বর্ণন করিয়াছেন, তথাচ ভগবান্ বিশাল্পা বিষ্ণু, যিনি সকল ভূতের পালন করিতেছেন, তিনি যত্বংশে অবতীর্ণ হইয়া যে বেষ কর্ম ক্রিয়াছেন তৎসমুদায় বিস্তারিত করিয়া আমাদের নিকট কীর্ত্তন করুন॥ ৩॥

ত্রকান ! ইহলোকে তিন প্রকার সমুষ্য আছে মৃক্ত, মৃমৃক্ এবং বিষয়ী। ইহাদের মধ্যে কোন প্রকার মকুষ্যেরই হরিচরিত্রে প্রবণে অলংখ্রুদ্ধি হয় না অর্থাৎ এই পর্যান্তই অধিক আর শুনিব না

### ক উত্তমঃশ্লোকগুণাসুবাদাৎ পুমান্ বিরক্ষ্যেত বিনা পশুস্থাৎ ॥ ৪ ॥ পিতামহা মে সমরেহমরঞ্টার্মেবিঅতাদ্যাতি রথৈস্তিমিক্সিলঃ।

13

#### श्रीश्राशी।

ভূকিমু কৈরপীতার্থঃ। মুদুজুণাময়মেবোপায় ইত্যাহ ভবেষধাদিতি। বিষয়িশাং প্রমেট বিষয়োহয়মেবেত্যাহ শ্লোক মনোহতি রামাদিতি। অপগতা ভক্ যক্ষাৎ তমাস্থানং হস্তীতি অপভগ্র অক্ষাৎ পশুঘাতিন ইতি বা॥৪॥

কিঞাশংকুলদৈৰতং শ্রীক্ষয় অভন্তংকথৈৰ নিতাং শ্রোতবা। ইত্যাশ্যেনাহ পিতামহা ইতি। অমরান্জয়ন্তি বে তৈঃ।

#### বৈষ্ণবজোষণী ৷

নিব ৰবা প্ন: প্ন: প্ৰবিভিত্য বা কথা তথাৎ কো বিবজ্ঞাত বিরত্ত্ত খো বা ক্রাং। ত্রাদ্যানাং, নিরন্তরং মনসি ত্রীলাননো ব্রহ্মাননাদিণ্যধিকতয়া ক্র্রতি অত্যম্ভেলিততয়া তাছু গানছেন পরিণ্যতেচ অতঃ স্বতঃসিদ্ধান্ত প্রানাক্তর প্রাণাজ্য দর্শিতঃ। স্বতঃসিদ্ধান্ত আবা তা প্রধান কিন্তাঃ। ভূকি মুক্তী চুব্ তাদৃ ক্রাভাবাং ন স্বতঃ সিদ্ধান প্রক্রা অত উষ্ণ ক্রপথং শ্রোত্র হারের মনঃ প্রবেশিককোকং। তথাং শ্রবণক্তৈর প্রাণাল্যং দর্শিতঃ পূর্বতো ন্নত্ত্ব। তত্র দিন্তার কেবলং শ্রেত্রমান্তরেছি তারতমাং। চতুর্থানাদ্ধ প্রথমেতা এব ন্নতং আভ্রেত্রাধিকাং। শাল্রেছিলান প্রবাদ্যানাদ্ধ কেবলং শ্রেত্রমনেহৈ ভিরামন্তরেছি তারতমাং। চতুর্থানাদ্ধ প্রথমেতা এব ন্নতং অভ্রেত্রাধিকাং। শাল্রেছিলিন্ প্রবাদ্যানাদ্ধ কেবলং প্রেমাবেশেন চেতি। অত্রত্ত্ ত্রহালাহ্বন্ন: যাদ্ছিক ন্নেচ। তত্র প্রথমদ্বং কৈমৃত্য বিবক্ষা উত্তরন্ত্রেভিখেয়ার্থস্য নাত্যাদ্বের প্রেমাবেশেন চেতি। অত্রত্ত্ ত্রহাণাহ্বং বাল্যাল্য নান্ত। চতুর্থানাদ্ধ যাদ্ছিকে ন্নেচ। ত্র্যালিকা বিবক্ষা ইত্রের্ভিভিখেয়ার্থস্য নাত্যাদ্বের প্রেমানহাতিরামনেহালিলাহ্বর বিবিজি নির্ভা । প্রানিতি ত্রীবন্ধত্তঃ ক্রীবন্ধিকলে লিল্লগ্রেন্তরদায়বোগ্যহাসভাবন্য। বিরন্ধাতাং নামেত্র্যাহা যাল্য প্রকৃত্র প্রানাল্য ক্রান্তর্ভা নামেত্র্যাহা যাল্য প্রকৃত্র প্রানাল্য প্রমানিত্রকা হেলাল্য ক্রান্তর্ভা নাম্বাদ্য তত্তিই বিনাল্য ক্রিবর্তন ক্রান্তর্ভা ক্রান্তর্ভা ক্রান্তর্ভা ক্রান্তর্ভা ক্রান্তর্ভা ক্রান্তর্ভা করা ক্রান্তর্ভা ক্রান্তর্ভা করা ক্রান্তর্ভা ক্রান্তর্ভা ক্রান্তর্ভা ক্রান্ত্র ক্রিবর্ভা করা নাম ক্রান্তর্ভা ত্রাদ্বিতমেন করি। ত্রেলিত বাদ্বাদ্বিভার ক্রান্তর্ভালিক ক্রান্তর্ভালিক ক্রান্তর্ভালিক ক্রান্ত্রভালিক ভ্রান্ত্র জ্ঞিলক বাদ্বাদ্বেভিজালাক্র ক্রান্ত্রভালিক ক্রান্ত্র জ্ঞিভাবন ক্রান্ত্র ক্রান্ত্র ক্রান্তর্ভালিক করা ক্রান্তর্ভালিক ক্রান্ত্র ক্রান্ত্র ক্রান্ত্র ক্রিত্র নাজি। ত্রেলিক ক্রান্ত্র জ্ঞান্তর জ্ঞান্তর্ভালিক করা ক্রান্তর্ভালিক করের ক্রান্ত্র জ্রান্ত্র ক্রিভালিক করা ক্রান্তর্ভালিক ক্রান্তর্ভালিক করের ক্রান্তর ক্রান্তর্ভালিক করের ক্রান্ত্র ক্রিভালিক করের ক্রান্তর ক্রান

অথ ত্রিকং। তত্র মরাতু বিশেষতে। নিজকুলৈকগতে: শ্রীক্লঞ্চা কথা দদা অবশ্রুশোভব্যেত্যাশ্যেনাহ পিতেতি অমরঞ্জীরিতি

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

পিতেতি তদ্যাদাধাৰণ প্ৰবয়নাহ। বংসপদ্মিৰ ক্লুডেডি। তত্তস্তরণসাধনতাদেৰ তদ্য প্লবত্তং নতু বহন সাম্যাদ্পীতি ভাবঃ।

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

কটাদি বসব্যাতাহ শ্রের ননঃ স্থগ্রনাথ শ্রেরেমনোচ্যামে বৈতদৌষধং পীরত ইতি ভাবঃ। পশুরঃ বর্স্থাভিনাষী ক্ষী ত্রাদিনা স্থ্য বির্জ্যেত নাতাঃ। বহুলং ত্রৈবর্গিকান্তে প্রুলা বিমুখা হরিমেধসং। কথায়ামিত্যাদি বদা অত্র বক্রশ্রোতা রুভয়ো রেবানল ইত্যাহ নির্ত্তি। উত্তমংশ্লোকতা গুণানামস্থাদাংগুরোম্থাদাকণ্য পশ্চাদম্কীর্তনাথ কঃ প্রান্বকা বির্জ্যেত ন কোহপি যতো নির্ব্তাইর্ষ রুপগীয়মানাথ। রুষ্ণতা গুণানামম্কীর্তনমপি উপ সর্বাধিকোন গীয়তেকিং প্রস্তেষামাঝাননমিতি ভবাদ্নো বক্তা ত্রেষামাঝানকো হপীতি ভাবঃ অত্র বর্তমান প্রয়োগাদাধিকাবাচকোপশকোপন্যাসাচ্চ নির্ব্তাইশক্ষেন গুলভুকা এব ব্যাধ্যেয়া নত্ জানিনঃ। তেবাং নিদিধ্যাসনতাক শাঝতিক স্ততিদ্ধে ন ব্যুক্তিনতা। তথৈব গুণাস্বাদং প্রাপা কং থলু নান্নঃ সাংসাহিত্য শ্রোতা বিরজ্যেত যতো ভবেষধাৎ স্বমোরেব বিরাগাভাবে হেতুঃ শ্রোত্রমনোহভিন্রামাং ক্রথিকরনাদিক কানন্যা যদি ক্র্মী বক্তা শ্রোতা বা ভারদা স বিরজ্যেদেবেতাাহ পশুয়াহিনা ॥ ৪॥

মংকুল দৈবভবেনাপি ক্ষান্য কথা মম শ্রোতব্যেত্যাশ্যেনাহ পিতামহা ইতি অমরানু জয়ন্তীতি তৈঃ। দেববতোভীয়া।

বলিয়া বিরক্তি উৎপন্ন হয় না। ফলতঃ উত্তমঃশ্লোক ভগবানের গুণানুবাদ মুক্তজন কর্ত্ক সর্বদাই পরিগীত হয়, আর তাহা সংসার বিনাশের মহোষধ, ইহাতে মুমুক্ত্ পুরুষদিগের তাহাই মোকের উপায়, আর ভগবলগুণানুবাদ শ্রোত্র ও মনের আনন্দ জনক, ইহাতে বিষয়িদিগেরও তাহাই পরম বিষয়। অতএব আত্মবাতা অথবা পশুঘাতী ব্যতিরেকে কোন্বাজি তাহাহইতে বিরত হইবে?॥ ৪॥ অধিকন্ত ভগবান শ্রীকৃষ্ণ আমাদের কুলদেবতা, অতঞ্ব ভাহার কথা নিত্যই জোতব্য। হে

M

# ष्ट्रताज्याः द्वात्रवरेमनायाभतः कृषाज्यम् वश्यभाषः च वश्यभाः च वश्यभाः च वश्यभाः च वश्यभाषः च वश्यभाष्ट्र

#### व्यथनमा ।

দেবত্রতো ভীম্ম: তদালৈয়রতিরথৈ জিমিদিলভূল্যৈ ছ্রিত্যরং কৌরবদৈশুলাগরং বংলপদমিবাত্যন্নং ক্রা ভূচ্ছীক্লভ্যাতরন্ম য শ্রীক্ষক এব প্লবো বেবাং তে তহা বীর্যাণি বদুম্বেতি ভৃতীয়েণাবরঃ ॥ ৫ ॥

न क्वनः পाश्वनात्नवातकः हेमः मग्नेजीतमि या विक्वनिकार छोगाञ्चनिक्ष्ट्रेमिकि। छोग्वन्यशासा वकारञ्जन

#### देवकवरजावनी।

মহাদৌর্য্যসূক্তঃ। দেববতেতি ইক্ষায়ৃত্যুখনি হেতৃ বহানিয়ম নিষ্ঠরা পরম ছর্জরন্থঃ। স আন্যঃ শ্রেটো বেবাং অতিরধানাং তৈঃ
ইতি তৎপাল্যখনে তেবামপি ছর্জরন্ধঃ। অতএব হরতারং ছব্তরমপি। অতিরধানকণ মহাতারতে। একাদল সহ্মাণি বোধরেক্ষর
ধহিনাং। অন্ধ শন্ত প্রবীশন্ধ মহার্থ ইতি স্বতঃ। অমিতান্ বোধরেক্ষর সংপ্রোক্ষোহতিরথন্ধ স ইতি। কৌরবাণাং হুর্ব্যোধনাদীনাং
সৈক্তমেব সাগরঃ অতিবিজীপ্রাদিনা তং। স্বেতি প্রসিদ্ধৌ। বহু মবা ইতি প্রব্রপসাধনং তং সাধনক্ষ তক্ত দ বছিত্র ভূল্যখেন
বোঢ়লক্ষণখং কিন্ধ প্রভাব বিশেষেপ বিশক্ষপ্রেব্যাহ বংসপদ্যিব ক্রখেতি অনারাসেনেৰ তর্গাং ॥ ৫॥

বিশেষতো মম জীননপ্রদশ্চ প্রীকৃষ্ণ এবেডারাহ ফৌণীতি বিশেষেণ গ্রাইং দক্ষমপি ব্রহ্মান্তানন্তানিষার্য্যছাৎ দাহকতমন্বাক্ত।
ইদমিতি ক্ষান্তরীপন্থ ব্যাবর্ত্তিতং বহা প্রত্যক্ষমিতার্থ:। ইতি তক্র সংশবেং নিরক্ত:। কুর্বাদীনাং সন্তানবীক্ষমিতি তৎ করণারাং
হেড্রুং নৈর স্থানেহে প্রীতিহেড্ক। অভন্তেবাং সর্কেরামণি কুনক্ষানোরির্যানন বাশাধর্মণ রক্ষিত ইতি ভাব:। পাশুবানাং
কুরুদ্বেহণি পৃথগুল্পি ভোবাং তক্ত বিশেষাপেক্ষরা। অভক্রম কুরুহ্বদন্ত ক্র বান্ধপরিব্রান্তকাদিবং। ইতি তেবাং সমন্তানাক্তাব উক্তঃ তেন প্রিক্ষান্তরাক্ষান্তবেহাভিপ্রেতং। ছুটানাং সম্পানাশাং। প্রকারার্ত্তেরণ তেরামণি বীজ্যক্ষরা পর্যোক্তিহিতাচরণাক্ত। প্রারশ্চনালন্ত সার্ক্ষাক্ষাং আন্তাক্ত ইত্যুক্তং গোপনন্ত গদ্বৈব। অল্পতেন্তঃ স্থানগরা নীহার্যির ভারর ইতি
প্রথমে প্রোক্তবাং। বতঃ তক্তবাংসন্যোন ব্যপ্রক্রমা রক্ষণার্থং চক্তক গৃহীতং চকারারাত্বেরক্ষ কুণোপেতার্থ:। গর্ত্তক্ষয় তক্তেহ-

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

যেন সহায়েন প্লব উৎপুতি র্বেবাং তাদৃশা বা ॥ ৫ ॥

क्वोगीिक अञ्चलकः वनमदर्शक व्यथमाक्षामाखनम्बनी त्कवः॥ ७॥

পূর্ব্ব পূর্ব্বোক্ত বহির্মুখানপি প্রবর্ত্তরন্ সকৌ কুকমাহ বীর্ঘাণীতি। অথিলদেহভালাং অনিরভানাং জীবানাং নিরমং বিনৈব কেবাং কেবাজিটেদিছেকাদিছেন ত্র্বিটদেহ ত্যাগানাং জীরাদীনাং মৃত্যুং দেহত্যাগং কুর্বতঃ কেবাজিং জগবদিরোধিছেন ছ্র্বট মোক্ষাণাং কংসাদীনামমৃতং মোক্ষমপি চকারাং পূতনাদীনাং জ্বজিম্পি কুর্বতো যানি তস্য ভাদৃশানি বীর্ঘাণি অফ্র্যাচরিভানি বংশত্যর্থঃ। তত্ত্ব হেডুঃ। বিক্লোক্ ত্রীণি রুপাণি পুরুষাধ্যানী ত্যুক্তদিশা পুরুষর্ত্বণঃ প্রমাণাদি ভেদেন কালর্ত্বশৈদাক্ষ্বিইচ্চ হিত্তব্যতি।

#### প্রীবিশনাপচক্রবর্তী।

তিমিলিলভূল্যে:। ছুরভারং ভূলারমণি বৎসণদ্মিৰ ক্লখা অতরন্ যতো যা শ্রীক্লক এব প্রবো বেষাং তে বং সমাপ্রিতা ইত্যর্থ:। তথাহি সমাপ্রিতা যে পদপত্রবপ্রবিষ্ঠিতাত্ত ভ্রামুধির্ৎসপদ্মিতি তস্য বীর্ষ্যাণি বদস্থেতি ভূতীয়েনাম্বর: ॥ ৫ ॥

**ননেকরক্তক্ষেলাশি তংকধা অবশ্বভোত্ব্যেত্যাহ জৌ**ণ্যন্ত্রেণ বিপুঠং দগ্ধং ইদমিতি ত**র্জ্ঞ**ন্যা অবক্ষঃ ম্পু শতি । আন্তচক্র-চক্র-

ব্ৰহ্মন্ ! আমার পিতামহ পাশুৰগণ বাঁহাকে তরণি পাইয়া ৰংগ প্ৰদের তুল্য তুচ্ছ করত সমরে কৌরব সৈন্য সাধর, যাহা ডিমিলিল সূদৃধ অমর্মারি ভীল প্রস্তুতি অতিরথ সমূহে অতিশর ভীষণ হইরাছিল, তাহা অনারানে পার হইয়াছিলেন ॥ ধান

অপর তিনি রয়: কেবল পাওরগণকেই রক্ষা করিয়াছিলেন এম্বর নতে, আমার এই শরীর, যাহা একবে কুরু ও পাওবদিনের সম্ভানের নিদান বুইরাছে, মাতৃগর্জ সংখ্যা ত্রোণনক্ষন অথখাযার অক্ষাত্র

# জুগোপ কৃকিং গত **আভচজেন মাতৃত কে কং পর্বং গভারতে ৮৩** ৮ বির্যাণি তদ্যাধিলদেহভালামন্তর্ক্**ছিঃ পুরুষ ক্রাণক্লটো** ৮ ১ বিল

क्षित्रवामी।

দ্র্মনিদং মচ্ছ্রীরং কুরণাং পাওবানাঞ্চ সন্তানস্য নিদানং মে শ্র্ম মাষ্ট্রং কুন্দৌ প্রবিষ্টো বে। ধৃতচক্রো ভূগোপ ॥ ৬ ॥

অবিদ দেহভাজাং সর্ব্যোদিনাং অন্তশ্চ বহিশ্চ পূর্যবর্গেণ কালরপৈশ্চ অংশাভিপ্রারেণ বহুবচনং। মৃত্যুং সংসারং উত

বৈষ্ণবতোৰণী।

ক্তাপি রক্ষণাৎ। অক্সথা পত্যস্থ্যরণমেক তক্তা অভীষ্টমিতি। অত স্তৎ কথায়াং বিরক্ত্যা শিতরা মকুর্তজ্ঞতাপি প্রসজ্যেতেতি শ্লোক-দ্য তাৎপর্য্যং॥৬॥

মন্ত্ৰ মৃত্যুং নিবৃত্ত ত্ৰ্যাণীনামুণাদেম এৰ তলা পাস্থৰালঃ তথা ভববিধানাং নিজ্বৰভোষ্নো কিন্ত তৰিমুখজনাশহরা গোপমিছ-মিয়াত ইত্যাশকা প্রযৌৎস্থকোন তানপি প্রবর্তমন্ প্রার্থমতে বীশ্বাণীতি দেহভাকাং জীবানাং জমূতং মরণাদ্যশেক্ষ্থরহিতং প্রমম্পুরং হা। दৈরু গ্রোকং প্রাক্তমপাদাক্তেম বা প্রমন্তের দলতা। চকারাবক্তদশ্যশেকতা। বর্ষ ভরাক্তি প্রকাশয় रे जार् जारायान महारा रे जारिका को है। यहां व इसरहरू करहता मरहरू का वा व्यव्यानिकार्य के विकास के विकास है। হে বিষয়িতি তানি সর্বাণি ছয়া জায়ৰ এবেতি ভাবে ৮ অঞ্বৎ শ্রীশামিপাট্র ব্যাখ্যান্তকেব ৮ ভাবস্বরং কথা প্রকালিনা অন্তর্ন জীলাং गতाम्यर्शिय क्रांश्गामुकः क्रम्बाद्यक विवृश्तिनाः कानकाथण मुकुः ननांकि क्षः अववदीर्गामः क्रहीकि। अथना अवर्गरिक यानि পুত্র কালরে। রূপানি তৈ:। অত শ্রুবণ্ডিন। অভান্থিতে: মন্তিঃ পুষ্ণম্যা প্রতিপ্রতে। স্কাশেঃ প্রীকিফারিম্রিভি: পরমানলং তদতা-ক্ষেত্ৰ স্বাৰুদ্য ক্ষমিপৰ্যক্ষি স্থিতিক্ৰমানিক্তি বিবিধ হঃশং কিন্তা ক্ষম্ভৰ্যক্তিক্তাস্থতং বহিৰুত্তক সৃষ্ট্যকলি প্ৰবছত ইতাৰ্থঃ। মায়বৈৰ মহাৰাদ্য প্রবিদ্ধ প্রাক্তর মহায়ন্তর। প্রাক্তীক্তমা স্কতো মন্ত্রমাচারশীলকে প্রকৃতি ধর্মাতীতবাং । বরা ভাতৃশ মহাবা প্রকাশিকরা মারমাপামস্থ-ব্যক্ত মন্ত্ৰমুক্তে ক্ৰামি সাকাৰ জ্ঞিগক্ষড়ায়োহণ ক্ষুক্তৰ জ্ঞান্তনাহিত্তৰাৰ্থ্যগুৰুটনাৰ। যথ মাৰা দলা। বাগা দভে ক্রপরোক্ষেতি বিশ্বপ্রকাশাং। তমা মন্ত্রমুক্ত মনুষ্যাকারং প্রকটরতঃ। যন্ত্র মারা স্রাচ্ছাবরীক্রোরিতি জিকাওশেকাং মারা ব্যুন্ধ জানমিতি নিৰ্মণীত ভক্তাং আনাব্যাম্মশি মহ্বাস্থ নৱাছতি প্রবন্ধবাৎ তক্তপড়েনৈর ক্রুডঃ। অগবা অধিক দেহতালাং অনিয়তালাং জীবানাং নিয়মং বিনৈব তেবাং কেবাঞ্চিদৈছিকাদি মৃত্যুত্বেন ছর্বটদেহপাতানাং ঞ্জিভীম দ্রোণাদীনাং মৃত্যুং দেহ-পাতং কুর্ব্বতঃ। কেষাঞ্চিত্তগব্দিরোধিছেন হুর্ঘটমোক্ষাণাং কংসাদীনাং অমৃতং মোক্ষমপি চকারাৎ পৃতনাদীনাং পরম ভক্তগতিমপি কুর্মতো যানি তস্য তাদৃশানি বীর্য্যাণি স্বচ্ছন্দচরিতানি বদস্ব। তত্র হেতুঃ বিষ্ণোস্ক ত্রীণি রূপাণি পুরুষাখ্যানীত্যাছ্যক্ত দিশা পুরুষ-রূপৈ: পরমাণাদি ভেদেন কালরুপৈশান্তর্বহিশ্চ স্থিতদ্যের্থ:। ততশ্চ তেধামন্তর্বহিশ্চ বেচ্ছাস্থরপ্রেব সম্পাদিতং যন্তদ্ব ক্রমেবেতি-

ক্রমসন্দর্ভ:।

তততেবা বন্ধক্তিক ক্ষেত্রস্থান্তর সম্পাধিত নিতার্থ:। তদেবং তস্য মরাকৃতি পরব্রহ্মণ: প্রাকৃত মহুব্যতরা প্রতীতিক মায়রৈবেত্যান্ত। কারামন্থললোক্তি দ তত প্রবন্ধতার দুট্টাণি নিজ্ঞিতিষ্টিত তদেকশ্রণাপত্তিসম্পাদকানি ত্রীর্ঘাণি প্রোতব্যান্যে-বেভি ॥ ৭ ॥ ৮ ॥

গ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবন্তী।

ধারী। অস্ত্রতেজঃ বগদয়া নীহার্মিব গোপতিরিতি প্রথমোকে র্গদরের জ্গোপ চ কারাবাজুরক্ষঞ্জ জ্গোপ। ৬ ।।

সর্বগতিপ্রদত্তনাপি শ্রোতব্যানীতার বিদ্যানীতি। অধিলনেহভাজাং মধ্যে বে অন্তর্থা তকাং কে বহিব হিন্দার তক জোহিণঃ তেভোহযুতং মৃত্যুক্ প্রবহুত্তবা বীর্যাণি বদক্ষেতারয়ঃ। জনাব্রক্রেটা ব্রুদ্রেটিল প্রকর্মনকর্ত্ব জড়িল প্রক্রাকারের মৃতং পরমানলং বহিরকেতাঃ কংলাদিতাঃ কালকলৈঃ কালোহরমিতি বিল্লেই ইতি মৃত্যুক্তি লগতে রিভালেক রীভ্যান্ মঞ্চাতিরাধীকে পিত্যুক্তিরমন্ত্রা বিক্রনদৈরিক সালালাক্তেন ভাইতস্ত্রাং উভ্যাক্তির প্রকৃতি বৈদিন ভাইতি বিলি ক্রাক্তির অস্তর্থানি ক্রিটিলেই ক্রেটিলেই ক্রিটিলেই ক

ट्य मात्रासम्बद्धाः समयाद्यमः केन्द्रः मक्तमः वर्षस्करः यर्गनः कर्मनः । किन्तिः स्वितः द्यापितः स्वर्धाः । योक्टिकः शूलमः अः काना-महनाः कर्ममानः स्वतः भरमाकः अवतः द्यापः स्वतिस्वतिस्वतः । अर्थार्थः वर्षाः

#### श्रीशतकामी।

অপি অমৃতমপি প্রযক্ত তা বীর্য্যাণি বদস্ব জহি। অরং ভাব: সম্ভর্থামি রূপেণান্তর্গীনাং মুক্তিং বহিদ্ খীনাঞ্চ কাল রূপেণ মৃত্যুং দলতি যতঃ অতোহস্তর্গীয়াতোব শ্রোতব্যানীতি ॥ १॥

নমু বলং গদং সারণঞ্চ ছর্ম্মদং বিপুলং ধ্রবং। বহুদেবস্ত রোহিণ্যাং ক্লডাদীমুদপাদরৎ ইতি রোহিণ্যা ন্তনরো রাম: প্রোক্ত:। বহুদেবস্ত দেবক্যামন্তপুলানজীজনৎ। কীর্তিমন্তং মুবেণঞ্চ ক্লেসেন্স্লার্কী:। ঋজুং সম্মদনং ভদ্রং সম্বর্গমহীখরং। অন্তন্ত ত্রোরাসীং স্থানের হরি: ক্লিতি। পুনর্দেবক্যা গর্ভসম্বন্ধ ন্তদৈবক্তা স্ক্রিস্বেক্ষ ন্তদৈস্বাক্ত: স্কৃত্যে ইত্যাক্ষেপ:॥৮॥

ক্সানিতি ভগবত: কংসভয়শঙ্কয়া অসম্ভবাদিত্যর্থ: ॥ ৯॥

#### देवकवरजावनी।

ভাব:। অন্তং সমানং। এবং মুদ্রামৃতপ্রদানেনৈশ্বর্য বিশেষাৎ তথা তাদৃশ মহুবাতয়া মাধুর্যবিশেষাৎ তথা অধারি স্ব স্কর্পস্থ-সৈয়ব সতঃ প্রপঞ্চে পুরুষাদি রূপেণ স্বর্মপিচাভিব্যক্তে:। একসৈয়বাবভারিত্বাবভারত্বভাগে বৈচিত্র্যাভদা পুর্ক্মাহাত্মশ্রুবেও স্বকৌতুক বিশেষাহিপি দর্শিত:॥ १॥

তত্র বিশেষং পৃদ্ধতি রোহিণ্যা ইতি চতুতিঃ সঙ্কণ ইতি জ্ঞীদেবকীপুজেষু সঙ্ক্ধমহীক্সমিতি সঙ্ক্ধাণ্যরা বং প্রোক্তঃ স এব রামো বলাপ্যো রাম: সএব রোহিণীপুজ্জেন ছয়া প্রোক্ত ইতার্থ ইতি ছেলো নিরস্তঃ ॥ ৮॥

ৰুকুলো মৃক্তিদাতেতি কংসস্য মৃক্তিং দাতুং পূর্য্যায়েক ছাতুং বোগ্যোন ব্রক্তে গন্ধনিতি ভাবা। ক্ষেতান্তর্মন্ত্রীৰ নৰমাধানিট ব্রেয়ো। যথা প্রোদরাদিখাদের মৃক্তির্পথ কুংসিতং ক্যাং স মৃক্লাং জং প্রোমানলং দলাজীতি প্রেমণ মৃক্লোং ব্রুমেরগভ্যমনিতি কিছ কং স্টেইং ব্যাজার্থমূদভাবয়দিতার্থ অস্য চোত্তরখনে হেতুং পিতরে প্রতি তৃগবতা কংসভয়োভাবনমেবোক্তমঃ। পিতৃত্তিতি বসমন্ধ কুরিত্যা ত্রমান্ত্রকরণ দৃষ্ট্যা ভগবত্তক দৃষ্ট্যা তুনলং অপুত্রমাদার প্রোয়াগাল উদারধীরিতি মুনীক্রেণ বক্ষাতে। কিছিলিটে স্থানে। জ্ঞাতয়োহত্র গোপা যাদবান্ত ততো বৃহত্বনং পরিত্যজ্ঞা গোপৈং সমং বত্র বাসং ক্ষতবান্ তথা মধুরাং পরি-

#### ক্রমসন্পর্ভঃ।

কমাদিতি অত্ত রাজ্ঞা জমামকরণ দৃষ্ট্যা পিতুরিভূতিক নতু ভাবতত্ত দৃষ্ট্যা তথাতু নদ্য: স্বপুত্রমাদায় প্রোধ্যাগত ইত্যাদিক: ম্নিনা বক্ষাতে। তত্ত্ত ভাব সৈত্র মুধ্যতেন ত্রজেশএব মুধ্যপিতেতি ক্লফদলতে বিবৃতং। ক কথক্তে বৃদ্যাবনে ধারকানগরেচ। জ্ঞাতিভিঃ

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী। বর্তমান সামীপ্যে বর্তমানবত্তং। কিয়া লীলায়া নিতাত্ব জ্ঞাপনার্থং বর্তমান প্রয়োগঃ। মায়য়া স্বরূপেণ্ডৈব মহুব্যস্য। স্বরূপ-ভূত্যা নিত্য শক্ত্যা মায়াধ্যয়া যুত্তঃ। স্মতো মায়াময়ং বিষ্ণুং প্রবদন্তি মনীধিণ ইতি মাধ্বভাব্যপ্রমাণিত শ্রুতেঃ॥ ৭॥

অৰ বিশেষ পৃচ্ছতি রোহিণ্যা ইতি চতুর্জি:। প্রোক্তো নবমন্ধনে। সম্বর্ধ মহীখন মিতি দেবকীপুঠেছপি তবৈয়ৰ সহ-র্ধান্ত দেবক্যা গর্জ সম্বন্ধক উক্তঃ স কুডো ঘটত ইত্যাকেপঃ॥৮॥

শিত্ৰিখনেৰস্য গেহাৰু লং মহাকাং গতঃ। ব্ৰজং গতোহপি পিতৃৰ নিস্য গেহাৎ জাতিভিগোপৈঃ সাকং ক পাসং ক্লতবান্॥ ১॥

ব্যক্তি অন্তর্গ তি, তাহাদিগকে অন্তর্থামিরপে মুক্তি দিতেছেন, আর যাহারা বহিদ্ স্থি তাহাদিগকে সংগারি করিতেছেন, অতএব অন্তর্গ প্রিকে তদীয়া বীষ্যা প্রাকণ করাই কর্তব্য, হে বিশ্বন্ প্রদিকে আক্সাহাইক বিশ্বনা প্রাক্ষা হাইক ॥ প্রা

আক্রো: সাগ্রাপনি একবার নকহিকেন্ সহর্বণ রার স্থোহিনীতনয় আবার উছিচেকট দেককীয় গর্ত্ত সমূত্র বলিমানুর্বানি করিনেন্, ক্রিকোন্টামারি গেতান্তর ক্রিতির্বান কি প্রকাশে রোহিনীতনয়ের পুন-কারে কেন্দ্রীটার্ক্ত নকরা হইলাছিলাণ গ্রাভান ক্রিকান্তর ক্রেকান্তর ক্রিকান্তর ক্রিকান্তর ক্রিকান্তর ক্রিকান্তর ক্রিকান্তর ক্রিকান্তর ক্রিকান্তর ক্রিকা

আর ভগবান র্ক্সকাজি কারতের শিতার বৃহত্তরিও একে সমন ক্রেন ? অপর সাম্ভণতি সেই

ত্রজে বসন্ কিমকরোম্বধূর্ব্যাঞ্চ কেশবঃ। ভাতরকাবধীৎ কংসং মাতুরকাতদর্হণং।
দেহং মাসুষ্মাঞ্জিত্য কৃতি বর্ষাণি বৃধিনভিঃ। যত্নপূর্যাং সহাবাৎসীৎ পত্নঃ কত্যভবন্ এভোঃ।
দেতদন্যক্ত সর্বং মে মুনে কৃষ্ণবিচেষ্টিতং। বকুমুর্হসি সর্বজ্ঞেন্দ্রধানায় বিবৃতং ॥ ১০॥

#### शिधतवामी।

মাতৃত্ৰ তিরং কংসং তন্ত্রাৎ বধানর্থ অভা সাক্ষাৎ কন্তাদবধীৎ ॥ ১০ ॥

#### देवकवट्डावनी।

ত্যজ্ঞা বাদবৈঃ সমং যত্র তস্য বৃন্দাবনাধাস্য **দারকাধাস্যাচ বৈশিষ্ট্যমু**চ্চাতামিত্যর্থঃ সাহতাং ভক্তানাং পতিঃ পাণক ইতি স্বভক্তপা-লনার্থং তৈঃ সহ বাসন্তহ্চিত লীলাযোগ্য এবাসীদিভি ভাবঃ। অত্যোত্তরং তত্র তত্র শ্রীমহ্পনন্দবাক্যং শ্রীভগ্বহাক্যক দৃশ্যং এবমুক্তরত্রাপি ॥ ১॥

কিক ত্রত তত্ত্ব স্বতং সর্বাং কথরেতাহ ব্রন্ধ ইতি বাজ্যাং। বৃহদ্বনে বৃন্ধাবনে ব্রন্ধে। মথুরাখ্যায়াং বারকাখ্যায়াক মধুনাং পূর্বামিতি তত্ত্বাস সমরেহক্সত্র কৃত্যশি তত্ত্ব তেইতের পর্য্যবসায়িতং কো ব্রন্ধা ঈশো ক্ষণ্ণ: তৌ ব্যতে ক্মহিয়া ব্যাপ্রোতীতি। কিশা অন্তার্থে বং তৌ সেবকোন্তমতরা বিল্যেতে বস্য ইতি পর্মেশ্বরতোক্তা। অতত্ত্বাস্তৃতাত্ত্বে কর্মাণি সন্তব্ধীতি ভাবং। কিং কিমিতাব্দীনিতি বিশেশ ভেদেনার্থভেদাৎ পূর্বেশৈবারয়ঃ। কন্মাদিতি টাকাচ তদ্যাখ্যের। কন্মাদিতি পাঠে টাকা স্পাইর অন্ধা ব্যমেবেতার্থং ॥ বায়্যবং মহুব্যাকারং পর্ম ক্ষন্ধং দেহমান্তিতা প্রকটিকতা স্কিদানন্দ্রনম্বেন তস্য নিত্যবাং। যহুপূর্ব্যাং ব্রীবারকারাং কতীতি প্রাক্তিস্বন্ধীনি কিয়ন্তি বর্ষাণি মর্যাদীক্ততাতার্থং। মধুপূর্ব্যামিতি পাঠে পূর্ববং। বাং পত্রা অতবন্ তাং কতি। কিয়তীমাং ভালৃলং ভাগ্যজাতমিত্যর্থং ॥ অহো তত্ত্বিশেষা মরান্তিজ্ঞেন কতি প্রইব্যাং দ্বরা ব্রম্যব সর্ব্বে কথান্তামিত তাহে এতদিতি সৃষ্ট মন্তচাস্ট্রিণি। কৃষ্ণত্ত নরাক্ষতিব্রয়ংভগবতঃ অতএব বিচিত্রং চেষ্টিতং তত্ত্ব্বচন সামর্থ্যে হেতৃং হে মুনে তত্ত্বীলা মনননীত। মৰনন্তব্বং ক্থ্যেকত্ত্ব স্বর্ধমননং তাং তত্তাহ স্ব্র্যেতি তদ্ভিবিক্তমণি ন জানাসীত্যর্থং ॥ ১০ ॥

#### क्रममन्द्रः।

গ্রীগোলৈ বাদবৈক পূর্ববাণি জ্ঞাতীন্ বো দ্রষ্ট্রেব্যামো বিধার স্থলাং স্থমিতি শ্রীকংসমথনোকে: ॥ ৯ ॥
দেহমিতি মাসুবং মাসুবীরং দেহং লোকং ॥ ১ • ॥

#### জীবিশ্বনা থচক্রবর্তী।

মধুনাং প্র্যাং মধুরারাং বারকারাঞ্চ। মাতৃত্র তিরং কংসং কন্মাদবধীৎ অভদর্হণং মাতৃলভাৎ বধানহং। বৃঞ্চিতিঃ সহ কতি বর্ষাপি অবাৎসীৎ। বর্ষাপি কথকুতানি মাতৃষং দেহমাপ্রিতা বর্ত্তমানানীত্যর্থঃ। ততক্ষ মাতৃষ্যাদেন কতি বর্ষাণীত্যর্থঃ ফলিতঃ। পরমান্ধা নরাকৃতি রিতি নরাকৃতি পরং ক্রন্ধা ইতি পূচং পরং ক্রন্ধ মন্ত্রানিক্মিত্যাদিভি মন্ত্রাভাসের ক্রন্প লক্ষণভাৎ ব্যাখ্যান্তরং ন ঘটতে॥ > • ॥

ভগবান্ জ্ঞাতিগণের সহিত কোখায় বাস করিরাছিলেন ? # ৯ #

বেমান্! ভগবান্ কেশব ব্ৰহ্ম ও মধুপুরে বাসু করিবার সময় কি কি করিয়াছিলেন ? কংস, তাঁছার জননীর জাতা, বধ যোগ্য নহে, কি নিমিত তাছাকে সাক্ষাৎ বধ করেন ? অপর ভগবান্ মসুব্যাহৃতি পরম হন্দর দেহ প্রকটন করিয়া কত বৎসক বৃহপুরে বৃষ্ণিদিসের সহিত্ত বাস করিয়াছিলেন ? এবং তাঁহার কতগুলি পত্নী হইয়াছিল ? হে মুনে! সাপনি সর্বজ্ঞ এই সকল এবং সভাক্ত বিহ্নক চরিত্ব সমুদায় বিস্তার পূর্বাক বলিতে যোগ্য হয়েন, আৰি শ্রহানিত হইয়া অবণ করিব । ১০ ।

#### **अ**न्हां गंवल्य् ।

নৈষাতিছঃসহা কুশ্মাং ত্যক্তোদমপি বাধতে। পিৰস্তং দকুখাস্কোকচ্যতং ছরিকথামৃতং ॥ ১১ ॥ শ্রীসৃত উবাচ ॥

এতরিশ্ব্য ভৃগুনন্দন সাধ্বাদং বৈরাস্কিঃ স ভগবান্ধ বিষ্ণুরাতং।

#### क्षित्रवामी।

নৈবেতি ত্যক্তোদকল্যাপি মম জীবনং হরিকথামূতপাননিমিন্তং তত্ত্পরমে সদ্যএব জীবনং ন স্যাদিত্যর্থ: ॥ ১১ ॥ এতং সাধুবাদং সমীচীনং গ্রন্থ: । ভাগবতপ্রধান: ভাগবতেমু শ্রেচ: ॥ ১২ ॥

#### देवकवटकावनी।

অহা ভগবলনা পূর্কা মহাল্লভাব বিপ্রাণনাথজন্তামূতাপ লুংখনচিনতঃ প্রাণানাং ত্যালকতনা লক্ষা বেনৈবাদকনপি জ্যুক্ষং. কিছনেন কথামূতেনৈৰ তে ব্রক্তিঃ অল্লথাধুনৈৰ মংপ্রাণা নির্বাল্লভীত্যাহ নেতি অতি লুংসহা অভিছজ্পে গৈব নতু বেজনা সভৈতি মুনিগলে লগ নিক্ষেপ হেতু নদীন ভ্ৰুকাবং সর্কানর্থ সুলমপি সেতার্থঃ। তল্লোপারা অনশনোখা তলাপি হেতুবিশেষভাকোদকাপ উন্নক্ষাপি তাজবন্ধমিতার্থঃ। তাদৃল ভ্ৰুকাপি সহিত্তেতি বিবক্ষিতং। সাপি মাং ন বাধতে তরা পীড়াং নাল্লভবানীতার্থঃ। যথা অভৈন্তেঃসহাপি মাং সদা বিবিধ তোগেন মুহতরালমপি তত্ত তাজোদমপি ন বাধতে। নঞা সর্কাণে নির্কেশঃ নিবেশসাতার বিবক্ষা। তত্ত হেতুঃ হরেঃ সর্কা ছঃশ হরস্য তগবতঃ কথৈবাসূতং সংসারবিশ্ববাদিনা পরম নাদকভাম্মূরতরভাল । তং পিবত্তং পরমাসক্রা সেবনান্মিতার্থঃ। অতঃ ক্ষ্ণামাত্র নির্কেশঃ তিন্তাঃসিভি ভাবঃ। এবং প্রসিকামূতাইলিন্টামূক্ষং। বর্তনান্প্রাণেণ পানাবিচ্ছেন উক্তঃ। অতজনিছেনে।হম্বচিত ইতি ভাবঃ। বহা পানে প্রবর্তমানমাত্রং তদারভ্রমারত্যেতার্থঃ কিং প্রক্রিক্ত প্রক্রাকারভানিনা তন্মং পরস্কানোন্দ স্ক্রাং পাত্রাং করিতং ইতি ভাবঃ। কিঞ্চ তব মুখনেবাজোলং ক্ষরাকারভানিনা তন্মং পরস্কানোন্দ স্ক্রাং পাত্রাং করিতং ইতি ভাবঃ। তাদৃগভোকং বহনস্তমের প্রবৃত্তি ত্রবলুখনপি আইরিক্থামূতনের প্রবৃত্তি প্রবং প্রপানীক্রিতা গাড্রাগবাজিক্রিতা ॥ ১১ #

তাদৃশ তছ্ক্যা প্রমন্ত্রীতঃ সন্ শ্রীবাদরারণিঃ প্রবক্ত প্রবৃত্ত ইত্যাহ এতমিতি সিদৃশং। ভৃত্তনলনেতি শৌনকসংখাধনং। প্রহর্ষোদরাং। পর তৎ প্রশ্লানক্তরমের স প্রমানিক্রনীরমাহান্মঃ বতো বৈরাস্কিঃ বেদব্যস্নাং ব্যাস ক্ত স্ক্রিদত্ত্ত

#### क्रममस्पः।

নৈবেতি শ্রীপরীক্ষিতো গাড়রাগব্যক্তিঃ ত্যক্তোনমপীতি . উনকমণি ত্যক্তবন্তমিতার্থঃ সম্যক্ ॥ ১২। ১২। ১৩। ১৪ ॥

#### শ্ৰীবিশ্বদাপচক্ৰবৰ্তী।

কুণাভ্যাব্যাকুলবং কণং বিপ্রাম্যেতি মাবাদীরিত্যাহ নৈষেতি। যা কুং ব্রহ্মণ্যমপি মাং মুনিগলে সর্পং ন্যথাপরদিতি ভাবং ত্যক্তেলাং সম্প্রতি ভূ ত্যক্তর্লমণি ভ্যা অপি বাধাভাবে হেতুঃ পিবস্তমিতি। বর্তমান নির্দেশেন কণমণি পানবিগমে সৈব বিবেকহারিণী কুণা প্রান্তবিব্যতীতি জ্ঞাপরতি। অত্যান্তোক্ত্পদেন কথামৃত্যা মধুৰ্মারোপিতং। তেন্দ ত্যা মাদক্ত মন্তিব্যা বস্য মন্তবাদেব বিপ্রশাপাদি সর্বহংসহ হংথ বিশারকত্বং ধ্বনিতং। বহা। অমৃতপদেন মুথাভোক্ষা চক্রত্বাদাহলাদকত্বং সর্বশ্রেত্ত্বন ত্যোহারিত্বং ব্যান্ত চক্রত্বাদাহলাদকত্বং সর্বশ্রেত্ত্বন ত্যোহারিত্বং ব্যান্ত চক্রত্বাদাহলাদকত্বং সর্বশ্রেত্বন ত্যোহারিত্বং ব্যান্ত চক্রত্বাদাহলাদকত্বং সর্বশ্রেত্বন ত্যোহারিত্বং ব্যান্ত চক্রত্বাদাহলাদকত্বং সর্বশ্রেত্বন ত্যোহারিত্বং ব্যান্ত চক্রত্বাদাহলাদকত্বং সর্বশ্রেত্বন ত্যোহারিত্বং ব্যান্ত চক্রত্বাদাহলাদকত্বং ক্রান্ত্রন ত্যোহারিত্বং ব্যান্ত চক্রত্বাদাহলাদকত্বং ক্রান্ত্রন ত্যোহারিত্বং ব্যান্ত ব্যান্ত ব্যান্ত ব্যান্ত ব্যান্ত ব্যান্ত্রন ক্রান্ত ব্যান্ত বিশ্ব ক্রান্ত ব্যান্ত ব্যান্

হে ভূঞ্চনন্ত্ৰন লৌনক। কলো জনিষ্যমাণানামণি ক্তবং সংসায়ছঃখং হতীতি তং। বছা কলিব্লগং কল্পবং হতীতি বিশ্বাত

ষদিও আদি প্রায়োপবেশনার্থ উদক পর্য্যন্ত পরিজ্ঞাগ করিয়াছি তথাচ আপনকার মুখান্তোজ বিনি-গত হ্রিকথায়ত পান করাতে এই চ্:সহ কুখা আমাকে কিঞ্চিনাত্তে কেশ দিতে সমর্থ হইতেছে না। ফলতঃ জল পান পর্যন্ত পরিত্যাগ করিলেও কেবল হরিকথায়ত পান নিমিন্তই আমার জীবন বর্তমান রহিয়াছে, ভাহার উপরম হইলে সদ্যুই জীবন বিনষ্ঠ হইবে অতএব বলিতে আজ্ঞা হউক ॥ ১১॥ •

সূত কহিলেন হে ভ্রুনন্দন! এই সমস্ত স্মীচীন প্রম প্রবণ করিয়া পরম ভাগবত ভগবান্ ভক-

প্রভার্চ্য কৃষ্ণছরিতং কলিকল্মধনং ব্যাহর্ড নারভত্ত:ভাগবভপ্রধানঃ ॥ ১২ ॥ প্রীশুক উবাচ ॥

সম্যথ্যবসিতা বৃদ্ধিত্তক রাজ্যিকভ্রম। বাহ্মদের কথায়াছে ফ্রন্সাতা নৈটিকী রতিঃ।

जीधतवारी।

ব্যবসিতা ক্লতনিশ্চরা। বং বতো বুলে: ॥ ১৩॥

#### देवकवरजावनी।

পরম সংকর লক্ষঃ পূত্রঃ। তপবান্। উৎপত্তিং প্রলয়কৈব ভূতানাদাগতিং গতিং। বেতি বিদ্যামবিদ্যাক স বাচ্যো তগবানিতি বিশুপুরাণাৎ। কিছা ভগবৎ ভাগবভরোঃ সমানাদরশীরতান। সাধবে হৃদয়ং মহুং সাধুনাং হৃদয়ক্ষমিতি রীত্যাচাতেদাভিপ্রায়াং। বিশ্বুনা গর্যে প্রতিট্রেন ভগবভা রাভং ক্ষাল্রতো রক্ষিয়া প্রভাল। ক্ষাল্রতান ক্রিং কা রাভং ক্ষাল্রতানিতি তদ্যাশি পরম ভাগবতছমুক্রং। প্রত্যাক্ষ্য বক্ষ্যমাণপ্রকারেণ বিবিধ প্রাছরা মন্দ্রাল্ল। রুক্ত সর্বাচিত্রাক্রক্রমা তগবতকরিতং। কিন্ধ করে মধ্ব ভাগবতগাগাং তদ্পি। বদ্ধ সর্বাণাগহেতোঃ কলেরণি কিং পুনস্তব কালীন স্বনন্ত কল্লবং ছোলং। বদ্ধা কিং তহং কিং ফ্লাং কিং বা সাধনমিত্যাদি বিশ্বুক ক্ষিঃ কলহ এব কল্ময়ং প্রভাগবদ্ধান্তানির্দ্ধান্তানির তথা তথ। প্রভাগবচ্চরিত্রভ্রবণাদিনৈর তল্লাহান্তা
কিলানাদর্শেবক্রক্রেনান্তির । বহা কলিক অভএব কল্মবর্ক মর্কায়্রথেম্বর্ক পাণং সংমার ছ্রান্তমেব কর্ত্তীতি সর্বা মুখে হত্ত্বস্থানিত্র। বহা কলিক অভএব কল্মবর্ক মর্কায়্রথেম্বর্ক পাণং সংমার ছ্রান্তমেব কর্ত্তীতি সর্বা মুখে হত্ত্বস্থানিত। বহা কলিক অভএব কল্মবর্ক্তিন। নমু রাজ্মসভানাং বিবিধবাসনম্বিগণাগ্রে পরম গোণাং
তথ্ ক্রের্ক প্রালিত্য। ত্তাব ভাগবতেতি ভাগবতা এব প্রভাগবত শাস্ত্রমেব বা প্রধান্য ক্রের্ক পরমান্ত্রনান্ত্রান্ত ভাবা
ভাগবত্তনান্ত্রাক্র ক্রেরান্ত্রান্ত্র বিল্লান্ত্রান্ত্রান্ত্রানিতি ভাবঃ ক্রেরাক্র বিজ্ঞান্ত্র প্রধান লক্ষক্ত প্রভ্রান্ত্রনান্ত্রানির ক্রান্তনানিতি ভাবঃ বর্ণোভ্রু বিপ্রান্ত্রান্ত্র প্রধান লক্ষক্ত প্রভ্রান্ত্রনার্ক প্রভাগ্রিকর মার্লিনেবর্কা
ক্রিক্র সন্ধ্ব সান্ত্রান্ত্র নির্ভি মান্ত্রনো মুহ্ন ছ্রান্ত্রনা সন্ধ্ব ব্যধানিতি। সত্র প্রধান লক্ষক্ত প্রভ্রান্ত্রনার্ক প্রধান । ১২৪

ব্যাহর্জু মারভতেত্যক্রাপি প্রীশুক উবাচেতি পুনঃ পৃথক্কতা বচনং। শ্রোতৃণাম্কার্থাবিষ্টানামবধাপনার্থং তেষাং বক্ষামাণ প্রবশ্বেষ্টাক্ত কৃতিবদিন নাজীতি। এবমক্সজাদি জ্বেষং। তত্ত্ব প্রীশুক ইতি প্রেমভরোদদেরন শুক্কর্মধ্বভাষণাং। তথাচ বক্ষাবেশ্বেষ্টাক্ত প্রাক্ত প্রেম্বাক্ত প্রক্রেষ্টাক্ত প্রেম্বার্টার্যার বিশার ক্রান্ত বিশ্বেষ্টার্যার বিশার ক্রান্ত বিশ্বেষ্টার্যার বিশার ক্রান্ত বিশ্বেষ্টার্যার বিশার ক্রান্ত বিশ্বেষ্টার্যার ক্রান্ত বিশ্বেষ্টার্যার ক্রান্ত বিশ্বেষ্টার ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত বিশ্বেষ্টার বিশ্বিষ্টার্যার ক্রান্ত বিশ্বেষ্টার ক্রান্ত ক্রান্ত বিশ্বেষ্টার বিশ্বিষ্টার বিশ্বিষ্টার বাজর্বী ভ্রতাদার ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত বিশ্বিষ্টার বিশ্বিষ্টার ক্রান্ত কর্মান্ত ক্রান্ত ক্রা

#### ঞীবিশ্বনাপচক্রবর্জী।

বিৰেষণমপি ভাগবতেৰু প্ৰধান ইতি পুংস্থমাৰং। যকা ভাগবতা এব মান্যম্বেন প্ৰধানানি যদ্য স:॥ ১২॥
সম্যাধাবদিতা সমাজনিক্ষা। যদবতোবুদ্ধে: রাজবিসভ্যমতি। তো মহামানদ মুনিসভ্যমতি স্থা স্বোধিতাক্সভাছেপি প্রি

দেব প্রত্যাচন পূর্বক ইলিকলুমনাশক কৃষ্ণচ্ছিত্ত বর্ণন ক্রিতে আৰম্ভ করিলেন ॥ ১২॥

শুকদৈব কহিলেন হে রাম্বর্ষি সভম! তোমার বৃদ্ধি সমাক্ঞকারে কৃতনিশ্চয়া হইয়াছে। বোধ-হর সেই কারণেই তোমার বাহ্মধেবের কথার নৈঞ্জিনী রভি অন্দিরা থাকিবে। বাহুদেবকথাপ্রশ্নঃ পুরুষাংস্ত্রীন্ পুনাতি ছি। বস্তারং প্রচন্ত ক্রেছ্ং স্কঞ্চনস্ক্রিলং করা ॥১০
ভূমিদ্ প্রন্পব্যাক দৈত্যানীকপতাস্টতঃ। আলাস্তা ভূমি ভাষেশ ক্রেছাপ্যশারণখ্যায়ে॥১৪॥
গ্রেছি ভূমিদ্ প্রাঞ্চম্থী থিলা রুপন্তী করুবং বিভোঃ। উপন্থিতান্তিকে উদ্যাধ্যমন্ত্রশান্ত ।

#### श्रिश्तकामी ।

তত্র তাবং প্রথমং ভগবদৰতারকারণমাহ ভূমিরিত্যাদিভি ন'ব্দি: শ্লেকৈ:। দ্থা নৃপব্যাকা বে দৈত্যা তেবামনীকশতানাম-খুতৈ ব্যে ভূরিভার তেনাক্রান্তা ॥ ১৪ ॥ •

বিভারম্ভিকে উপস্থিতা সতী ৪ ১৫ ৪

#### देवक्षवरज्ञावनी ।

নীয়ং তেন সেক্তারং প্রথমতঃ পুনাতি। ততো বক্স্থানীয়ং সিচ্যমানঞ্চ। ততঃ শ্রোভৃত্থানীয়াম্বন্ধিকতয় সিচ্যমানসন্ধিনো ছপি তথেত্যর্থঃ। তথাটেচকাদশে। প্রতেহম্পতিতো ধ্যাত আদৃতো বাস্ক্রমাদিতঃ। সদ্যঃ পুনাতি সক্ষো দেব বিশ্বক্রহে ইন্ধিনীতি ৮ ১ পা তত্র তাবস্তগবদবতারে প্রসিদ্ধং কারণমাহ ভূমিরিতি দৃংগ্রেতি দর্পস্বভাবনির্দেশাৎ স্থানাস্থানবিবেকাভাবেক স্বদ্বমানাদিজ্ঞাপক্ষং দৈত্যত্ব লক্ষণং। শতাযুতৈরিতি অপরিচ্ছেদ্যসং। শরণং বরৌ আশ্রিতবজ্ঞী॥ ১৪॥

কথং তদাহ গৌরিতি। গোরপেতি রূপাবিশেষ জননার্থং। ততাপি থিয়া ছাথিতা। অতএর করুণং আরুকাপাদিসংমূক্ত যথাজাতথা রুদন্তী কুদন্তী কুদন্তীত কচিৎ পাঠঃ। অতএবাশ্রমুখী অশ্রব্যাপাননা। তথাচ প্রীর্ক্তপ্রাণ তরিকানোঃ। থেলাৎ করুণ ভাষিণীতি। বিভোরিতি ভগবদাবেশেন জগদৈছেবযোগাৎ অতভ্তমৈ তং প্রতি ব্যসনং নিজযুংখং সম্যাপ্তক্বতী । শ্রমিতি পাঠে স্বীরং। তথিশেকং শ্রীবক্ষুপ্রাণে। তৎ সাম্পত্তিবিদ্ধে দৈত্যাঃ কালনেমি প্রোগমাঃ। মর্ভ্যানেকং সমাপ্রমান বাধকেছেবর্নিশং প্রজাঃ। কালনেমির্গতো যোহসৌ বিষ্কুনা প্রভবিষ্কুনা। উত্তাসেনস্কতঃ কংসঃ সম্ভূতঃ স ক্ষোপ্রাং। অরিষ্টো ধেমুকঃ কেশী প্রবাধন বাব করেও। স্বন্ধোহম্বর স্তথাত্যানো বাণভাপি বলেঃ স্বতঃ। তথাক্ষেচ মহাবীব্যা নূপাণাং ভবনেরুয়ে। সর্পেরা হুরাম্বান স্তার

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

রাজস্বদধিক মন্ত্রীতি জ্ঞাপরতি। শ্লেষেণ তু রাজসন্তাদিয়াৎ যং শ্বহীণাং সন্তমানাং চ রাজা প্রীকৃষ্ণপ্রিরতমন্বাদেব যতে। লক্ষমরণ-কালয়ো প্রশ্বতেজোহণি বাধী ক্রোবীত্যর্থমণ্যস্তরুপচিক্ষেপ॥

তংশাদস্থিক: অশালপ্রামাণিচরপায়তং জীন্ প্রুষান্ সেকারং সিচ্যমানং তছভর স্পিনশ্চ প্রুষান্ । যথ গলা যথা জীন্ উদ্ধান্যোকান্ প্নাতি তথৈব বক্তাশীন্ জীন্ প্রুষান্যথাপ্রাং শ্রেষ্ঠাং ॥ ১৩ ॥

তত্ত্ব তাবভগবদবতারে প্রসিদ্ধং কারণমাহ ভূমিরিতি দৃপ্ত নৃপব্যাক্সাঃ দিতিবংশদাভাবেহপি কর্মণৈব বে দৈত্যা স্তেষামনীকশতানামধুতৈর্বো ভূরিভারস্তেনাক্রান্তা ব্রহ্মাণং স্থনেক্ষম্দ্দিন্তিমেব নতু সত্যলোকস্থং ক্লঞ্চাবতারাদতিপূর্পমেব স্কৃত্মিনা রেবভায়ঃ কন্যারাঃ সম্প্রদানপ্রস্নার্থং তত্ত্ব গতবতা তেন সহিত এব ক্ষণানস্তরং ব্রহ্মা তং প্রভাহ সম্প্রভাবতীর্ণার বলদেবার কন্যা দীরতামিত্যক্ত স্তাস্য তর্মধ্যে ক্ষীরোদতীরাগমনং ন বৃত্তং। জ্বগাস ধরণী মেরোঃ সমাজে ত্রিদিবৌকসামিতি প্রাশরেণাপ্রক্তং॥ ১৪॥

তত্বপথাৰ্ব্য অথ জগামেত্যথ শক্ষাধিক্যাদিদং লভ্যতে। বিশ্বস্থিরের মৎকর্মপালনং তু বিক্লোবের কর্ম। সচ বিশু: কীরান্তিই ইতি

বে বহারাজ। অসমিতলে তুপ্ত নরপ্রজিকারে বস্তুতর হৈত্য উৎপদ হইলে পর তাহাদের অসংখ্য নেনার কুরিভাকে এই কৃষি আক্রাভা ক্রিনা আক্রাভ নিকট শরপ্রপদ ইয়েন ১১২°॥ •

ধরণী থিয়া ও অপ্রেম্থী বৃট্য়ে গালিক্সা ধরণপূর্বাক করেগন্ধরে নিবেশন করিতে ২ সেই নিতুর (,জনার ) সঙ্গীপে উপস্থিত। মুইয়া স্থাপনার নিপান নিবেশন করিয়াছিলেন। ত্রকা ঐ কুক্তান্ত স্থাগত बका उन्नश्यक्ताय महरमदेवस्त्रा मह। स्नगम मित्रमान स्नीतः क्षीत्रभरावित्यः। उत्त भन्ना स्नामायः रामवित्यः द्वर्याकिभिः। भूक्रमः भूक्रममृत्क्रम क्षेत्रअरम् ममाहिलः॥ २०॥ शितः ममार्थो अगर्ग ममोत्रिकाः निगमां त्वथा जिमभाष्ट्रवाह रूप

#### विधवनामो ।

পৌৰুবীং পুৰুষন্য ভগৰতো গাং ৰাচং যে মন্তঃ আগু ৰূণ্ত মাচিনং অবিলবিভং ভবৈৰ বিধীয়তাকেতি॥ ১৬ ॥

#### বৈশ্ববতোষণী।

সংখ্যাভূম্ৎসতে। অক্ষোহিণ্যে। হি বহলা দিবাস্থিধরাঃ, স্থরাঃ। মহাবলানাং দৃপ্তানাং দৈত্যেক্রাণাং মমোপরি। ভঙ্রি ভার-পীড়ার্ডা নশক্রোম্যেরবরাঃ। বিভর্তুমাত্মান্মহমিতি বিজ্ঞাপ্যানি বঃ। ক্রিরতাং ভত্মহাভাগা মম ভারাবভারণং। যথা রসাতলং নাহং পচ্ছেরবভিবিহ্বলা। ইতি ॥

অধানভাম সধ্য এবেতার্থ:। কারাবাতার হেতৃপঞ্চাদে মাদ্পান্থচকং! বিনরনেন সহিত ইতি তক্ত পৃথপ্তকি র্জাবংপ্রিরতমন্দেত ত বিশেষতঃ নাহাব্যাপেকরা। ক্লীরানিতীরে গমনং তত্রস্থতগৰ্জপতৈর বিক্ষুদ্ধন পালকরাং পাল্লোজ্রবংগু তথা ব্যাখ্যানাং। বিক্লুং ক্লীরানিকলির ইতি বৃহৎ সহত্রনামন্ত্রোত্র বিক্লুনামগণপাঠাত। তত্র তীর এব গদা নতু তত্রত্য খেতনীপাথ্য প্রিভগবং প্রামিতি তক্তাপি দৌর্পভামভিপ্রেতং। তচ্চ মোক্ষধর্মে নারার্থীরে ব্যক্তমেব পত্র স্থানে দর্শরিব্যমাণ বচনামুসারেণ প্রক্রিকরের ক্রোলাকারির আক্রমণ পত্র ক্রামণ বচনামুসারেণ প্রক্রিকরের ক্রোলাকারির হাত পর্য পোর্লাকারির ব্যক্ত সকর্ষপত্রাং লাংশঃ কারপার্থবাদ্যী মহৎপ্রইপুক্রেং সোহিপি সক্র্যাখ্যঃ। তদীর চতুর্গ্রক্তানিক্রস্যাংশা গর্জ্রোদ্যারী অনস্ত্রকোটি ক্রামণ্ডিরাদ্যার বিক্লুং ত্রেরবাদির রোমবিব্রত্ব্যোদ্যবাদ্যেকের ক্রাপ্তিহিতঃ পুক্রং সোহিপানিক্রাখ্য তিয়াদেশ ক্রামণ্ডিরাদ্যার বিক্লুং পুক্রনেতি। তৃতীরবৃহস্য প্রহার্স্যাংশাংশঃ প্রহারন্ত্র হিরণাগর্জার্বামীতি। কচিত্র পর্মাণ্ডারিকর বিদ্যার বিলাবিক্রঃ। বাহ্নদেবাদ্যক তদাবরণ দেবতা ইতি তেদ ইতি॥ পুক্রমিতি:মহৎপ্রই-মহাপুক্র তেদাভিপ্রারেণ। অতঃ পুক্রম্বেকনৈবোপতত্বে ভক্ত্যা তুরাব। তেন চ ক্রতি ক্রস্য মহিরবিশের স্বচনার্থং বেদ প্রমাণকতা ক্রাপনার্থি। স্মাহিত স্থানেকচিত্তঃ সন্। কুতঃ ক্রগতাং নাথং বিশেষতক্ষ দেবানাং দেবং পূক্তাং ক্রগংগালনার্থং দেবেঃ ক্রডাম্বিতি ভাবঃ। কিন্তু বর্ধতি কামান্ আকৃক্লারতি ক্রেশানিতি ব্রাক্পিক্রং ইতি প্ররোক্রনেশোদিইং॥ ১৫ ॥

সৃষাধৌ তৃত্রাণি গগণে সমীরিতাং অদৃষ্ট বক্তৃকামিতার্থঃ। ইতাদৃশ্রমানেন শ্রীতগবতোক্তাং সমাধৌ শ্রমেতি পরমাদৃশ্রমমূকং অত্যে শ্রীরুম্বাবনাদৌ তস্যাপি পরমাংশিনঃ স্বরং ওগবতঃ শ্রীকৃষ্ণস্য তৃস্য তাদৃশকীত্রা তৃদানীস্তনানাং ভাগাবিশেব বোধনার্থং।

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

ব্রন্ধেতি কীরাকেন্তীরগমনং তদ্যৈব বিষ্ণুত্বন পালকভাৎ। ত্থৈব পালোভ্রথতে প্রতিপাদিতং বিষ্ণু: কীরাভিমন্দির ইতি

#### क्षिविचनाथहक्वरे ।

ততৈবে পড়েদং নিবেদনীয় মিতি পরামদর্শ। ততো জগামেতি। তত্ত কার্যাছর মুপস্থিতং পৃথীপালনং দৈত্যসংহরণক তত্ত প্রথ-মার্থং দেবেক্সং বা আজ্ঞাপয়েৎ দ্বিতীয়ার্থং কল্রং বেতি দেবসাহিত্যং তিনরন সাহিত্যক কৃতং॥

জগন্ধাথমিতি তত্র প্রমনে ন্যার:। • শ্লবদেবমিতি স্বেষাং বিজ্ঞাপনেচাধিকার:। ব্যাকশিমিতি বর্বতি কামান্ আকশ্পরতি-ক্লেশানিতি প্রয়োজনঞ্চোকং॥ ১৫॥

ে ৰুষাধৌ তত্রাণি গগণে সমীরিতামিতি কীরোদনাথভাণি বৃদ্ধাপি। ছর্লভদর্শন্বৰভিব্যক্ত্য ভদাদি পরবাংশিনঃ সাক্ষাৎ প্র-

रहेशा शृथी, (मवद्रम उथा जगवान जिल्लाहन नर कीत्रम्दाद जीत् ग्रवन कतिलान, उथाई गिया नमाहिज (जानकावा) हिटल श्रुक्तवमृद्ध बाता दमवापन सभवाप, द्वाकिश ( मर्स्काव वर्ष ७ मर्स-दक्षभ निवादक ) भद्रमभूत्रव स्थावात्मत जेशामबाद अवस्त सहराम ॥ २५ ॥

क्रिय़ कर शरत है अरु भाकाभवागे बकात अवन दुर्गाहत क्षेत्र । क्रांस् एनिया देशवरातिनाटक

গাং পৌরুষীং মে শৃথুতামরাঃ পুন বিধীয়তামান্ত তথৈব মাচিরং ॥ >৬ ॥ পুরৈব পুঃসাবধ্যতোধরান্ধরো ভবম্ভিরংশৈ যঁতুষ্পজন্যতাং। স যাবতুর্ব্ব্যা ভরমীশ্বরেশ্বরঃ স্বকালশক্ত্যা ক্ষপয়ংশ্চরেকুবি।

#### श्रीभवत्यामी।

বিজ্ঞাপনাৎ পুরৈব পুংসা ঈশরেণ অবধতো জাতঃ। ধরারা অরন্তাপঃ॥ ১৭

#### देवस्थवदंडीयगी।

হ ক্টং হর্ষে বা। পৌরুষীং স্বর্গুং তজ্ঞপেণ পুরুষেণোক্তামিতি। তেষাং তস্যাং বিশ্বাসার্থং। আশুতর কোলাছণং পরিত্যক্ষা পুণুত। হে অমরা ইতি তদৈবামরত্বং নাম সিদ্ধোদিতি ভাবং ॥ ১৬ ॥

তস্য পূর্বদৈয়ৰ বাচমস্থনত প্রেতি চতুর্ভি:। পুংসা যস্যাহমংশাংশ তেনা দিপুরুষেণ স্বরং ভগবতা শ্রীক্ষেন পুরৈবাবধ্বত ইতি তদ্বিজ্ঞাপনার্থং যুখং প্রধানেনালং তথাহমপি তদ্বে তিচ্চু বণার্থং স্বরং নাবিভূতি ইতি ভাব:। আংশৈ নি আশেবাংশৈ সহ উপজন্যভাং। এতে হি যাদবাং সর্ধে মন্দাণা এব ভাবিনি। সর্বাদা মংপ্রিয়া দেবি মন্ত্র্ন্য গুণশালিন ইতি পাল কার্ত্তিকমাহাম্ম্যানীত্যা নিত্য তৎপার্বদানাং যদ্নাং পুত্র পৌল্রাদি রূপেণ জনিম্বা নিকটে স্থীয়তামিত্যর্থ:। বছম্বিতি তৎসম্বন্ধিনামপি পাণ্ডবাদীনাং তদন্ত ভাবাং। এবানেব স্বর্গ গমনং অধিকারান্তেচ তৎপ্রাপ্তি ক্রেরা। ঈম্বরাণাং বিরাদ্যান্তর্যামিণামম্ম্বাদীনামপীশ্বরং সর্বাংশী। তথাচ ব্রহ্মসংহিতায়াং। ঈম্বরং পর্মঃ রুঞ্চং সচিদানল বিগ্রহং। অনাদিরাদির্গোবিলঃ সর্ব্বহ্মার কারণং ॥ যনৈ্যক নিশ্বসিত্ত কালমথাবলম্ব জীবস্তি লোমবিলজা জগদগুনাপা:। বিশ্বুম হান্ স ইহ যস্য কলাবিশেবো গোবিল্মাদিপুক্ষং তমহং ভল্লামীতি। বাধ্যাস্যতে চ তৈঃ অথাহমংশভাগেনেত্যাদৌ নারায়ণোহল মিত্যাদৌচ বস্যাংশাংশাংশভাগেনেত্যাদৌচ। ততঃ সদ্যঃ সর্বাং কর্ত্ত্বং শক্তোহপি স্বকালশক্ত্যা যদা যংকর্ত্ত্র্ যুজ্যেত তদৈব তৎ করোতীতি যথাকালমিত্যর্থ:। স্ব শব্দেন কালস্যাপি তদধীনতোক্তা। মাবং ভূবি চরেৎ প্রকটো বর্ত্তেত্যর্থ:। অন্যান তত্তিত্য প্রির্জনে: সহ নিতাং শ্রীবৃন্ধাবনাদৌ তদপ্রকৃত্রকাশ বিশেবছেন নির্ক্ণির্যামাণ বিচিত্র ক্রীড়াং ক্র্ত্তেহিপি তন্তানৈ্যরদৃশ্যন্থ। তথাচ ক্রান্দে। বংসুর্বংসতরীভিন্ন সর্বানো বালকৈর্ত্ত:। বুন্ধাবনান্তর-

#### ক্ৰমসন্ধৰ্ভ:।

বৃহৎ সহস্রনারি গুণাবতার বিষ্ণুনামবর্গেচ দৃষ্টং। গিরমিত্যাদি তারং॥ ১৫। ১৬॥

হরেঃ প্রিরচিকীর্বয়েতি নাত্র শ্রীরামলক্ষণবাদ্যথাক্রমং। কিন্তু তস্য বিশ্বিতা হানায় তেনাস্থন ইবায়নামূগতয়েচ তক্ত সৌন্ধবিশেব এবায়মিতি ভাবং। অতো ভক্তিথেদাচ্যুতাগ্রক ইত্যক্রাপি ধেদঃ শ্রীকৃষ্ণদৈয়েব জ্ঞেরঃ তদংশে থেদং পরামূশ্য

#### শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

বোত্তমদ্য কৃষ্ণদ্যাত্রে প্রাণঞ্চিক লোক্ষাত্র দৃশুত্বে তদীয় কুপাতিশয় এব হেডু ব্যক্তিত:। পৌক্ষীং পুরুষদ্য ক্ষীরোদনাথদ্য গাং বাচং॥ ১৬॥

পুরুষত বাচমেবামুবদতি পুরৈবেতি চতুর্ভি: বিজ্ঞাপনাং পূর্ব্ধের। পুংসা ক্লফ্চ: স্বরং সমতবং পরমঃ পুমান্ র ইত্যকুসারাৎ বরং ভগবতা জ্রীক্লফেনেতার্থ:। অবধৃত: জ্ঞাত:। অংশৈস্তদংশভূত পার্ধদৈ ক্লবে সাত্যক্যাদিভি: সহ মিলিতীভূর মহ্বিভূাপ লক্ষণং কুরুবিশি। ক্ষীরোদনাথাদয়ো বর্মীখরা অন্মাক্ষপীখর:॥

স্থানির তৎপ্রিমাংশভূতায়। উপেক্রাদি ম্বস্তরাবতার দ্বির স্থাএব তৎপ্রিয়াণাং দথ্যার্থ। ক্বতচর তত্ত্বন প্রভাববশাৎ পৃথস্কৃতা-তৎপ্রিয়নপ্যো তবন্ত । যত্তক্ম্ব্রলনীলমণে । নিত্যপ্রিয়াণামংশাস্ক বা জাতা দেববোনয়ঃ । তা অংশিনীনামেবাসাং প্রিয়সংখ্যা এতবন্ বন্ধে টুকি ॥

যম্বোধন পূর্ব্বক কহিলেন হে অমরগণ ! পরম পুরুষ ওগধানের যে বাক্য শুনিতে পাইলাম আমার নিকট অবণ কর এবং অবিলয়ে তজ্ঞপ বিধান কর । ১৬ ॥

পৃথিবীর যে সন্তাপ হইতেছে ইহা আমাদের নিবেদনের পৃত্তেই পরম পুরুষ ভগবানের বিদিত হইয়াছে, তোসরা মহবংশে অংশে অন্মতাহন করিয়া তাবৎ কাল থাক, ঈশরদিগেরও ঈশর সেই হরি:

বহুদেবগৃহে দাক্ষান্তগৰান্ পুরুষঃ পরঃ। জনিষ্যতে তৎপ্রিয়ার্থং দন্তবন্ত্বমরক্রিরঃ। বাহুদেবকলানন্তঃ দহস্রবদনঃ স্বরাট্। অগ্রতো তবিতা দেবো হরেঃ প্রিয়চিকীর্ধয়া ॥ ১৭ ॥ বিফোমায়া ভগবতী যয়া দংমোহিতঃ জগৎ। আদিষ্টা প্রভুনাংশেন কার্য্যার্থে সংভবিষ্যতি ॥

#### वीशत्रकामी।

एनवकीशर्ञमक्ष्यं परभानारमाहनानि कार्याहर्ष यरभानाताः मश्क्रविकारित ॥ ১৮ ॥

#### दिक्थवरकावनी।

গতঃ সদা **জ্ঞাজি সাধ্**ব ইতি। বক্ষাতে চ। মথুবা ভগৰান্যতা নিতাং সন্নিহিতো হিরিরিতি। একাদশান্তেচ দারকামধিক্তা নিতাং সন্নিহিত্তত ভগৰান্মধুক্দন ইতি॥

ঈশরেশরন্থনের বদন্ তার স্থানবতারে ঈদৃশ লীলা কৈবলানেরাস্তরকং প্রয়োজন মিত্যাহ বস্থানেরেতি। গৃহ ইতি জীববৎ পিতৃঃ সকাশাছৎপত্তি নিরিস্তা যতঃ পুরুষঃ যন্দানর উৎকৃষ্টো নাস্তি স এব ভগবান্ প্রকট সকৈম্বর্য যুক্তঃ সন্ সাক্ষাৎ স্থানের জনিষ্যতে প্রায়ুভবিষ্যতি অতস্তম্য প্রিয়ার্থং পরিচর্যায়া প্রীত্যুৎপাদনায়। যন্ব্যু তম্য প্রিয়া প্রকিন্ধান্যাঃ শ্রীরাধাদ্যাক তাসাং দাস্তার্থং অতএব সম্যান্তবন্ধ উত্তম প্রকারেণ জারস্তামিত্যর্থঃ। যন্ব। সম্ভবন্ধ যোগ্যা ভবন্ধিতি বর্প্রদানং। তথাপি জনন এব তাৎপর্যাং॥

শ্বপ্রতা ভবিতা লোগে লাতা ভবিষ্যতীত্যর্থ:। অত লাতৃত্বে যোগ্যতামাহ বাস্থদেবস্য দার কাদি প্রসিদ্ধ চতুর্যুহপ্রধানস্য শ্রীকৃষ্ণস্য কথা অংশ: সকর্বণরাং। অতএবানস্ত: অপরিচ্ছিন্ন: অতঃ স এব শেষাথোনাংশেন সহস্রবদন: শ্রীকৃষ্ণগুণগানেছ্রেতি ভাষ:। তথাচ বক্যতে। যগৈয়কাংশেন বিশ্বতা লগতী লগতঃ পতে ইতি ব্যাখ্যাতঞ্চ তৈঃ। একাংশেন শেষাথোনেতি। অতঃ ক্ষেম শ্ব শ্বন্ধণে শ্রীভগবৈত ব রাজত ইতি প্রাট্ শতন্তং বিদান্য স্থাত্মশক্ত ইতি তাবঃ। দেবঃ তদগ্রজ্বাং স্ক্তরাং সর্বেবাং প্রাষ্ঠিত তথা বিলিপ্রতি তাবঃ। নম্ শ্রীলপ্রণবদসৌ কনিষ্ঠতামেবার্ছতি মতু জােষ্ঠিতং তত্রাহ হরেঃ প্রিরচিকীর্ষ্যেতি তস্য ষত্রিততা হানার তেনাম্ম ইব তস্যাধানাস্থাতরেচ শ্রীকৃষ্ণদেবস্যত্ ভক্তসৌন্ধ বিশেষ এবার্যাতি ভাবঃ। অতো বৃহৎসহন্তনামন্তোত্রে শ্রীকৃষ্ণদেব নামস্থ পূর্ম গুলিপ্রণাচ্যতাগ্রজ ইত্যক্রাপি থেদঃ শ্রীকৃষ্ণদৈয়ের জ্ব্যঃ পূর্বাহতীর্ণো লক্ষণন্তপ্রিংন্তদংশে থেদং পরাম্প্য স্থাংশেত্ তথা ন কচিদপি কল্পে প্রকট্যতীতি তাৎপর্যাং। অথবা মন্তি লোক্তরে সতি লক্ষণপরাধীনত্বে শ্রীরঘূনাধ ইব বৈরং হংখমুরীকর্ত্বং নাযং পূর্মাণিতি স্বাভন্ত্রেণ হরেঃ প্রথং কর্জু মিচ্ছয়েন্ত্র্যন্তঃ। অতঃ শ্রীলক্ষণস্যাপি তদ্বংধ নিবারণাশক্তরেনের তক্তৌ থেছো। তেনঃ। হণ্যেরতি তাদৃশ গেহেন তস্য মনোহরণাৎ॥১৭॥

বিক্ষো বিশ্বব্যাপ হক্ত ভগৰতো মাযাখ্যা শক্তিঃ অতএব ভগৰতী সর্মশক্তিযুক্তা। ভগবতীছমেন দর্শন্ন তামেব কার্য্যবিশেষ

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

নিজ্ঞাংশে তুন কদাচিদপি করে ঘটরতীত্যর্থ:। অথবা জ্যেষ্ঠে সতি শীরবুনাথ ইব লহ্মণপরাধীনত্বন বৈরং ছংথমূরীকর্জুং নারং শকুরাদিতি স্বাভস্ত্রোণ হবে: সূথং কর্জুমিজ্যেত্যর্থ:। অথ লহ্মণস্যাপি তদুংথ নিবারণাশক্রত্বেনৈব ভজ্জেণী থেদো ক্রেয়: ॥ ১৭ । ১৮ । ১৯ । ২০ । ২১ । ২২ । ২৬ । ২৪ । ২৫ । ২৬ । ২৮ । ২৯ । ৩০ । ৩১ । ৩২ । ৩৩ । ৩৪ ॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

স্বেন ত্রাত্রা ক্লেন সহ রাজত ইতি স্বরাট্ দেবে। বলদেব:। অগ্রতঃ প্রথমমাবির্জবিষ্যতি। য এবাংশেন সহস্রোবদনোহনতঃ বিশ্বসাংশেন বিশ্বতা জগতী জগতঃ পতেঁ ইতি বক্ষ্যমাণাৎ যোহনস্তো বাস্থদেবস্য কলা॥ ১৭॥

কিংশ খলীলা পরিকরানাং ভক্তানাং ভক্তবিষাং কংলাদীনাঞ্চ মোহনার্থং যোগমায়াং মায়াঞ্চাদিশদিতাহে বিফোর্মারা যোগস্থীয় কাল শক্তি হারা ধরার ভার হরণ করত বাবৎ ভূতলে প্রকটরূপে অবস্থিত হয়েন। কর্থাৎ বহুদেবের গৃহে পরমপুরুষ সাক্ষাৎ ভগবান্ শীক্সই কন্মগ্রহণ করিবেন। তাঁছার প্রিয়ার্থ অমর স্ত্রীকণ উৎপম হউন। হে দেববৃন্দ। বাহুদেবের অংশ সহস্রেৰদন স্বরাট্ অনস্তবেশ ভগবানের প্রিয়ার্থানার অথ্যে উৎপন্ধ হইবেন॥ ১৭॥

অপর যে ভাৰতী বিকুশায়ায় জগৎ সম্মেছিত হয়, তিনিও প্রভু কর্তৃক আদিকী হইয়াছেন,

#### শ্রীমন্তাগবতম্।

36

#### প্রিশুক উবাচ॥

## ইত্যাদিশ্রামরগণান্ প্রকাশতিপতি বিছু:। আখাস্যত মহীং গীর্ভিঃ স্বধাম পরমং যথো॥ ১৮॥

#### दिक्षवरज्ञावनी ।

দ্বারা লক্ষ্যতি যয়েতি চিচ্ছকিব্যাবর্তিতা। ভগবণিচ্ছয়া সমাগ্ভবিষ্যতি। অন্তথা শ্রীযশোদাদিমোহনাশকে:। কার্য্যার্থ ইতি শ্রীনশোদামোহনাদি কার্যান্ত স্থগোপ্যথাৎ সংক্ষতেনৈবোকং। নমু বরং দদাজ্ঞাকারিণ এব। অনপ্তণ্য হবে: প্রশিষ্ট কিবলৈ ভবিতা সা পরমস্বতন্ত্রা অত তথা কর্ত্তেতাহ প্রভুনা সাক্ষাৎ ক্ষটেনবাদিষ্টেতি। নমু বয়া সম্মোহিতং জগদিত্যুক্তং। তর্হি তল্পা তাত্র জন্মনা
অন্মাদৃশামপি সমোহঃ সম্ভবেদিত্যতাহ প্রংশেনতি অংশেন ভগবদংশেন। তদিচ্ছাদিরপেণ স্থলিতা অতন্তদিচ্ছামুসারেণ
মোহ্যিষ্যতীতি ভবিঃ॥

ইতি শ্রীবিষণাদেশান্ত্রাদ প্রকারেণ আদেশে। যোগ্যতামাহ প্রজাপতীনাং মরীচ্যাদীনামপি পতিঃ যতে। বিভুঃ। উক্তার্থমেবেনং শ্লেষেণ ভগবদবতার সাধনাদিদানীমেব প্রজান ঃ তং পতীনাঞ্চ পালকত্বং বিভূত্বঞ্চ সিদ্ধমিতি। প্রভিঃ স্থমেব ধ্যাসি অচিরামধুর পদৈ ভূষিতা ভবিষ্যসীত্যাদিভিঃ। পরমং সভ্যলোকবর্ত্তীতি বিদ্যস্থতত্রতা মৃত্তিমন্ত্রেদাদি নিজ পরিবারাণাং সাক্ষাং শ্রীভগব দ্বতার বার্ত্তরা সন্ত্রেষণার্থং॥ ১৮॥

#### শ্রীবিশ্বনাগচক্রবর্ত্তী।

মায়াং সমাদিশদিত্যপ্রিমোক্তে:। প্রভুনা রু:ফান আদিষ্টা দতী অংশেন সহ স্বাংশভূতবহিরক্ষমারাসহিতৈর কার্যার্থে প্রাত্-ভবিষ্যতি। যন্নাজগঁৎ সংমোহিতং স্বাংশভূত মারুরেত্যর্থ:। যন্ধাজগং অপ্রাক্তং প্রাকৃতক স্বেন স্বাংশেন চ সংমোহিতং মানাদা र्यात्रमाशाःभवः हुहैः मात्रनुपक्षतात्व अर्थः । सा तरवात् । कामात्वाका शता कालः देनव वृत्ती कराश्चिका । या शता शतमा मिक মহিবিভুক্তরপিণী। यञ्चा বিজ্ঞানমাত্রেণ পরাণাং পরমাল্পন:। মৃত্র্তা দেবদেবদ্য প্রাপ্তি উবতি মান্যুণা। একেয়ং প্রেমদর্মত্ব স্বভাবা গোকুলেশ্বরী। অনয়া স্থলভোক্তর আদিদেবোহথিলেশ্বরঃ। অভা আবনিকাশক্তি মহামায়াথিলেশ্বরী। যয়া মুগ্ধং জগৎসর্কং সর্কে দেহাভিমানিন ইতি। এলা একবিধৈব একানংশাপরপর্য্যারে তার্থ:। কার্য্যারে ইতি। কার্য্যমত্র দ্বিবিং প্রথমং দেবকী সপ্তম গর্ভাকর্ষণ যশোদা স্থাপনাদ। তদ্ধি যোগমায়ায়া এব কার্য্যং নতু মায়ায়া:। স্থানিয়ন্ত ব্লভ্ডদ্যাকর্ষণে প্রভুষা-ভাবাৎ। যশোদাস্বাপনস্য রাজসন্ধাভাবাচ্চ। যত্তকং। ব্যতীত্য কুর্যামপি সংশ্রিতানাং তাং পঞ্চমীং প্রেমম্বীমবস্থাং। ন সম্ভবত্যেব হরিপ্রিমাণাং স্ব্রো র্জোর্ভিবিজ্জিতো ৷ ইতি। তাদুশ দিল্লভকেনু মানায়াঃ প্রভবিত্মশকার্ভি । দিতীয়ং তু দেবকীক্ষাণা-क्रार्थि वरक्रमवस्मनः जन्नामामा अव कार्याः । ज् त्वार्थमामामा सामृत्र क्रहेलात्क्यू स्त्र स्वरूपरवाशात्मव देनव क्रमहस्त्रानाकान स्था हा বিদ্ধাবাসিন্যাদি রূপেণ বহুনাম নিকেতে বহুনামা বড়ুব হ। যহুক্তং বুরুমের মায়য়া। বৈবস্বতেহ স্বরে প্রাপ্তে অষ্টাবিংশভিমে মুগে।, নলগোপগৃহে জাতা যশোদাগর্ভদন্তবা ততত্তৌ নাশমিষ্যামি বিদ্ধাচলনিবাসিনাতি। তথা রাদলীলাদি সিদ্ধার্থ ভগবং প্রেরণীনাং পতি শ্বশ্রাদিমোহনং যোগ গারারা এব কার্যাং নতু মারারাঃ। তেলাং ভগবলৈমুগাদর্শনাং। মারামোহিতত্বে তবৈষ্ণাস্যাবশ্যভাবাৎ। যোগমায়ামুব।। এত ইতি ততোভেক্ত। তুর্যোধনাদি শাখাদাস্থ্রেয়ু বিশ্বরূপগক্ষ্বাহনাদিও पर्निष्ठि नाम्रभीचतः किन्त ४८हे। यानव हे. ७ त्याहनः याग्रदेषव नक् त्यान्यात्रमा ८७वाः छन्नवरेषम्था पर्ननामित्छावः विम्थत्याहनः मात्रमा जैसूर्यमाहनः (यागमायदावि वाविद्वः ठः यज् वारमनानि महाद्धमवनाः श्रीयत्नानाननानीनाः विश्वत्र वक्रवतानानि नर्म-নাজে বাংসল্যাদি ভাবাধিক্যতেনৈশ্ব্যজ্ঞানেহপ্যসংভ্রমাদেবৈশ্ব্যানহুসন্ধানলকণং মোহনং তং ন যোগমায়লা নাপি মায়লা কিন্ত প্রেম্এব স স্বভাব: যা ধলু ভগবদৈ মহাজ্ঞান মার্ণুন চিন্নয় মমতা রসনয়। জ্ঞাক্ষাং নিবধা প্রাভিক্ষণং তিন্ধি ক্রেম্ংপানয়ন্ ত্রাধ্যাখাল মহোদধৌ ভক্তজনং নিমজ্জয়তীতা্দাধারণলকণ্ডাপ্যো ভবতাত এব তত্ত্বাক্ত বৈঞ্বীণ বাতনোমাবাং প্রঞ স্বেহময়ীং বিজুরিতি পুত্রমেহময়ত্রং বাংসলা থেয়েছেসাধারণং লক্ষণং। বোহনমেন মায়া সাধর্ম্যান্মায়ামিতি॥

रेंडि श्रीविकारमभाष्ट्रवान अकारत्व ॥ ১৮ ॥

দেবকীর গার্ত্ত সংকর্ষণ ও যশোদাযোহনাদি কার্য্য নিমিত্ত যশোদার গার্ত্তে অংশে উৎপর হইবেন।
ভক্তেব কহিলেন প্রজাপতিদিগের পতি বিভূ জ্বন্ধা দেবতাদিগকে এই প্রকার আদেশ করিয়া
এবং ধরাকে সান্থনা বাক্যে আখাস দিয়া শীয় ধামে গমন করিলেন॥ ১৮॥

শ্রসেনো যত্নপতি র্মপুরামাবসন্ পুরীং। মাধুরাঞ্রসেনাংশ্চ বিষয়ান্ বুভুজে পুরা। রাজধানী ততঃ সাভৃৎ সর্বাদব ভৃতুজাং। মধুরা ভগবান্ যত্র নিত্যং সন্নিহিতো হরিঃ ॥ ১৯ ॥ তত্যান্ত কহিচিছে রির্বস্থদেবঃ কতোৰহং। দেবক্যা সূর্যায়া সার্দ্ধং প্রয়াণে রথমাক্ষহৎ ॥ ২ ॥

#### धीधतयाभी।

ভোজেক্রকনাগারেহ্বতারার প্রভাব কথনমাহ শ্রসেন ইত্যাদি বা্বদ্ধাার স্মাপ্তি। মধুরাং আব্দন্মধুরায়াং বসন্ বিষ-যান্দেশান্ণ ১৯॥ স্থ্যা নবোঢ়রা প্রয়াণে প্রাণার্থ ॥ ২০॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

শ্রীমথুরায়াং ভগবদবতরণং বক্ষায়াদৌ তৎ কারণমাহ শ্রসেন ইতি ছাভ্যাং। মথুরাং মথাতেতু জগৎ সর্বাং বন্ধজানেন যেন বা। তৎসারভূতং যদয়ভাং মথুরা সা নিগদাতে ইতি আথবাদিক গোপালতাপনী শ্রতৌ যেন বন্ধ জানেন বা শব্দা সমুচ্চয়ার্থছাজিতিবোগেন বা সর্বাং জগর্পাতে তজ্জানিনাং তন্ত্রিতিযোগিনাঞ্চ বিলাপাতে তদ্বৎ প্রসিদ্ধং জ্ঞানাদি দরং স্বাং ভগবৎ শ্রীকৃষ্ণ নিষ্ঠ্বাৎ সারভূতং যদ্যাং বর্ততে সা মথুরা নিগদাত ইত্যর্থজারাপাতি সর্বাং তদিতবং খণ্ডয়তীতি তরাপ্তলং তত্রাপি পুরীং তন্মধাস্থ কমল কর্ণিকাশিতাং মাথুরায়থুরামপ্তলসম্বন্ধিনঃ তদ্দিণ ভাগামগতান শ্রসেনাংশ্চ তত্তরাকৈর প্রসিদ্ধান্দিশান্ বৃভূজে উপবৃভূজে পুরেতিত্বস্থাপ্র প্রতিব্রাহাণ । তচ্চোক্তমের নব্যস্কলে ॥

ভতন্তদারত্য সা স্থাসিদা অনির্বাচনীয় মাহাত্মা বা রাজধানীতি ষ্যাতিশাপেহপি শ্রুদেনাদীনাং মহাপ্রত্যুবছেন রাজহল্ল ভস্য ব্যবহারত্বাৎ ভূভ্জামিত্যপ্রক্তং। দর্বেধামেব তেবাং রাজধানী তত্র কৈমৃত্যমাহ যত্র যস্যাং ভগবান্ স্বরং ভগবন্ধা বিলক্ষণ সবৈধার্য্যক্তঃ। তথা হরিঃ বিলক্ষণ রূপ গুণলীলা মাধুর্য্যেণ সর্বা মনোহরো যং স শ্রীক্রফোহপি সন্নিহিতঃ তত্রত্যানাং নিকটে তিইতীত্যর্থঃ। ত্রেচ ব্রথ্রেত্যের হেতু জ্রেরঃ তয়া তস্যাপি মনোবিলাড্নাং। নিত্যমিতি কালাদি দোষেণাস্থাইত্রবাস্তব্ধানং নিরন্তং। অস্যাশ্চ নিত্যম্বানীতং। যথাচ পাল্লে নির্বাণ্থতে শ্রীজগবন্ধাকাং। অহো ন জানস্তি নরা ছ্রাশয়াঃ প্রীং মদীয়াং প্রমাং সনাতনীং। স্বরেক্র নাগেক্র মৃনীক্র সংস্তৃতাং মনোর্মাং তাং মথুরাং প্রাকৃতিমিতি তথাচ গোপালোক্রতাপনী শ্রুতিঃ। তাসাং মধ্যে সাক্ষাভুদ্ধ গোপাল প্রীহীতি। কিঞ্চ। তদপ্যতে শ্লোকাঃ। প্রাপ্য মথুরাং প্রীং রম্যাং সদা ব্রন্ধানি সেবিতাং। শন্ধ চক্র পালা শাল রিক্তিঃ ম্বলাদিভিঃ। যত্রাসে) সংস্থিতঃ কৃষ্ণ ব্রিভিঃ শক্ত্যা সমাহিতঃ। রামানিক্রপ্রশ্রুটাক সন্ধিগ্য সহিতো বিভূবিতি। ত্রিভী রামাদিভিঃ শক্ত্যা ক্রিণ্যেত্যম্বয়ঃ। এবং বৈকুন্তলোকাদপ্যংকর্ষঃ স্কৃতিঃ। অত্রবোক্তং পাল্লে পাতালথণ্ড। অহো মধুপুরী ধন্তা বৈকুন্সচিচ গরীয়সীতি। তলেরমেক্স্য স্বয়ং ভগবত আম্পন্তালোকাদীনামেকাত্মকতৈব জ্বেয়॥ ১৯॥

তত্ত্বৰ কংসকারাগারে প্রীভগবতো জন্ম বক্তুং তং প্রসঙ্গমারভতে তদ্যাবিত্যাদিনা। তু ভিয়োপক্রমে। তদ্যাং মথুরাপুর্য্যাং কর্ষিচিৎ চিরকালে। প্রয়াণে বিবাহানস্তরং নিজগৃহে গত্তং ॥ ২০ ॥

#### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

वस्राप्त गृरह जन्म वक्ताः खर्भायां निकार क्षामाह भूत हेि । विषयान् प्रभान् ॥

নিতাং সন্ধিতি ইত্যনেন স্বরং ভগবান্ পরিপূর্ণঃ রক্ষন্তর স্বধামনি সদা বর্তমান এবাবিভূমি প্রপঞ্চ গোচরী ভবতি নতু কৃতিকিক্র্পাদিতা আগতঃ বিতরতীতি ব্যক্তি । কিল। তদাবিভাব সময়ে বৈক্ঠ স্বেড্মীপাদিতান্তদংশা আগতা তর মিলিতী ভবন্তি লীলান্তে তএব প্রন্তর তত বাস্ত্রীতি তেঘামেৰ বৈক্ঠাদিভ্যোহ্বতরণং বৈক্ঠাদ্যাবোহণং চেতি প্রসিদ্ধি ক্রেমা। পরাব্রেশোমহদংশ যুক্তোহ্বোলালি আতো ভগবান র্ধাধিরিত্যাদিয়ু ভূতীয়ে তথা ব্যাধ্যানাৎ ॥ ১৯ ॥

স্থ্যায়া নবোঢ়য়া প্রয়াণে বিবাহোত্তর দিবসে নিত্তগৃহং প্রথাতুং ॥ ২০ ॥

হে রাজন্! পূর্বেকালে যতুপতি শুরদেন রাজা মধুরাপুরীতে বাস করিয়া মধুরা এবং শ্রদেন প্রভৃতি বহুতর দেশ ভোগ করিয়াছিলেন, অতঁএব ঐ মধুরা নগরী তদবধি সম্দায় যাদব স্পতির রাজধানী হয়। তথায়.ভগবান্ হরি সর্বদা সমিহিত আছেন ॥ ১৯॥

শূরক্ষণীয় বহুদের ক্রেমে সময়ে ঐ মথুরা নগরে বিবাহ করিয়া নবীটা দেবকীর সহিত স্থীয় গৃছে।
'গুমুনার্থ রথারোহণ করিলেন ॥ ২০ ॥

উগ্রদেনস্থতঃ কংসঃ বস্তঃ প্রিয়চিকীর্ষা। রশ্মীন্ হয়ানাং জগৃছে রোজে রথশতৈর্তঃ ॥২১॥ চতুংশতং পারিবর্হং গজানাং হেমমালিনাং। অশ্বানামযুতং সার্ধ্বং রথানাঞ্চ ত্রিবট্ শতং। দাসীনাং স্থকুমারীণাং দে শতে সমলঙ্কতে। স্থহিত্তে দেবকঃ প্রাদান্দানৈ স্থ্ হিতৃবৎসলঃ। শত্ম তুর্যা মৃদঙ্গানি নেতু স্থ ন্ত্রাঃ সমং। প্রয়াণপ্রক্রমে তাত বরবধ্বোঃ স্থমঙ্গলং॥ ২২॥ পথি প্রগ্রহিণং কংসমাভাষ্যাহাশরীরবাক্। অস্থাস্থামন্টমোগর্ভো হস্তা যাং বহুসেহবুধ॥ ২০॥

#### **औरत्रवामी** ।

রশ্মীন্ প্রগ্রহান্॥ ২১॥ পারিবর্হং উপস্করং॥ ২২॥

আভাষ্য রে রে কংসেতি সংবোধ্য হস্তা হনিষ্যতি॥ ২৩॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

তত্রাপ্যগ্রসেনস্য স্থত ইতি। নিকটস্বস্থ জ্ঞাপনার্থং তচ্চ পুনক্ষকং নিন্দা স্থচনার্থং জগিদ্ধিংসয়া কংসনায়া প্রসিদোহিপি কসি-ধাতোঃ শাতনার্থতাং। হয়ানাং রশ্মীন জ্ঞাহ স্বয়মেব সারথামকরোদিত্যর্থঃ। জগৃহে ইতি কচিং পাঠঃ। স্বস্থদে বিক্যাং ভয়া ইতি পাঠে সএবার্থঃ। তথাচ দ্বিরূপকোষে ভয়ীচ ভগিনী চৈবেতি ইতি তস্যামমুষ্য মহাঙ্গেহঃ স্থাচিতঃ। এতদাদিকং সর্বাং কংসম্য বক্ষামাণ ছক্ষেইয়া অত্যন্ত থকাত্ব জ্ঞাপনার্থং॥ ২১॥

কিঞ্চ তাদৃশ মহোৎসবে তাদৃশং ক্রোব্যাং ন কিল সম্ভবেদিতি বিবাহোৎসবং ত্রিভির্কাণয়ন্ আদাব্পকরপ্রদানমাহ চতুরিতি ব্যাকেন। হেয়াং মালা মাল্যং পঙ্কির্কা তহতাং। এতদগ্রেহপায়ুবর্তাং। ত্রিবট্শতং তত্তৎ প্রকারভেদেন সম্বর্গত্রহাত্মকারী দশ শতমিত্যর্থং। স্ক্রমারীণাং নবযৌবনানামিত্যর্থং। সম্যাবিচিত্রোভ্রমবন্ধ ভূষণাদিনা যথাবিধ্যলন্ধতে। প্রকর্মেণ পর্ম শ্রদ্ধানিনা আদাং। যানে প্রয়ণ সময়ে। যানৈরিতি পাঠে শিবিকাদিভির্কিশিষ্টে তান্তার্মকে ইত্যর্থং॥

সমং যুগপং। যদ্বা অন্যুনাধিকং যথা স্যাৎ। স্থান্ত ভাবিশুভ-লক্ষণং হে তাতেতি প্ৰীভগবদৰতাবাসন্ধতাদি জাত হৰ্ষ দৰ্শনেন বাংসল্যোদীপনাৎ সন্তেহ বচনং। তাতোহস্কল্প্যে পিত্রীতি নানা-থিছাং। তাবদিতি পাঠঃ কচিৎ সচ বাক্যাল্ডারে॥ ২২॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

প্রগ্রহিণং গৃহীতাখপাশং। ন লক্ষিতং শরীরং যন্তামিতি মধ্য পদলোপং সা চাসৌ বাক্ চেত্যশরীরবাক্ সৈবাহেত্যুপচারাৎ শিলাপ্ত্রস্য শরীরমিতি বং। যদ্বা বক্ষ্যমাণ মর্থমাহ ইতি জ্বেং। গর্জেহির্জং। তথাচ বিখং। গর্জেক্রেণে হর্তকে কুক্ষাবিত্যাদি প্ত্রশক্ষ মহক্ত্বা গর্জ শব্দ প্রয়োগশ্চাগ্রে কন্তারাং দৃষ্টায়াং কংসন্ত সন্দেহাভাবায়। নয়সে যা ভর্তৃহং প্রাপয়িস। বহস ইতি পাঠে স্এবার্ম্বং কিন্তু বাহনবন্ধহসীতি শ্রেখং। অবৃধ হে মুর্থতি শক্র জনমিত্রীবহনাৎ স্বমরণাক্ষানাচ্চ। কংসোহয়ং শ্রীদেবক্যাং মিশ্বতাংশে সবৃত্ত-

#### ঐবিখনাথচক্রবর্তী।

ভগ্না ইত্যপি পাঠঃ। ভগ্নীং ভগিনীং চেতি দ্বিরপকোবঃ। রশ্মীন্ প্রগ্রহান্॥ ২১ ॥

পারিবর্হ : উপস্করং। যানে প্রয়াণসময়ে॥ ২২॥

প্রতিশং গৃহীতাশ্বপাশং। আভাষ্য অরে কংসেতি সংবোধ্য পুত্র ইত্যস্ক্ত্ব। গর্তপদোপন্যাসোহইন্যাং কন্যারাং দৃষ্টায়ামপি কংসভ সন্দেহাভাবার। দেবক্যাং স্বজনন্যামতিলেহবস্তং কংসং কথং ভগবান্ হন্যাদিতি • চিন্তাব্যপ্রাণাং দেবানাং তস্যাং কংস্স্যাদারাধোহপাদনার্থমিসমাকাশেহদৃষ্টনরীরাণাং তেবাং বাণী জ্ঞের। স্বজ্যনি আনকল্পুতিখোঁবং স্বলাভাবি ভগবদবতার স্চকং

উত্তান্তেনের পুত্র কংস ভগিনীর (দেবকীর) প্রিয় কামনায় সেই রথের জামরজ্ব এইণ করিল এবং শত শত স্বর্ণময় রথে পরিবৃত হইয়া রথ চালাইয়া চলিল॥ ২১॥

হে রাজন্! দেবকীর পিতা দেবক অতিশয় ছহিত্বংসল ছিলেন, তিনি প্রয়াণকালে কন্যাকে বর্ণমালায় অলঙ্কত চারিশত হন্তী, পঞ্চদশ সহত্র অশ্ব, অফীদশ শত রথ এবং বিবিধ ভূষণে ভূষিত ছুই-শত অকুমারী দাসী যৌতুক দিরীছিলেন। হে তাত! বর বধুর প্রয়াণ আরম্ভ ইইবা মাত্র তাঁহাদের বস্পাধি প্রেক্বারে ভূরি ২ শন্ধ ভূষ্য মুদ্দ এবং জুন্তুভি ধ্বনি হুইল। ২২।

त्म बाहा रखेक, तरम अब तिम अहन शृक्षक गमन कतिए अपिकतन, अधि मरश अमंतीतिनी वानी

ইত্যুক্তঃ স খলঃ পাপো ভোজানাং কুলপাংসনঃ। ভগিনীং হস্তমারব্ধঃ খড়গপাণিঃ কচেহগ্রহীৎ ॥২৪॥ তং জগুলিতকর্মাণং নৃশংসং নিরপত্রপং। বহুদেবো মহাভাগ উবাচ পরিসাম্বয়ন্।

#### विधवचामी।

कुलभाश्मनः कूलपृष्यः। आत्रक छेल्युकः करा दक्ष्मवस्य ॥ २८ ॥

নৃশংসং ক্রুরং। মহাভাগ ইত্যয়ং ভাবঃ স্বজন্মনি হর্ষেণ দৈবতৈরানকত্বসূতি খোৱেণাক্ষতাবি ভগবদবতারেণ শক্য প্রতীকারতা

#### বৈঞ্চবতোষণী।

ইতি শ্রীভগবদবতারে শৈথিণ্যশঙ্কষা তৎ কারণোথাপনার্থং ব্যগ্রাণাং দেবানামাকাশবাণীয়ং জ্ঞেয়া। শ্রীভগবৎ সম্বদ্ধিনং দেবক্যাদি-কম্ক নাসে) বিহস্তং শক্ষোতীতি নিশ্চয়ার্থশ্চাত্র জ্ঞেয়ঃ॥ ২৩॥

ইত্যুক্ত ইতি যদ্বাঝাত্রেণৈৰ নতু তদৰ্থ বিচারণাদিনেত্যর্থ:। যতঃ ধলঃ নতু সম্ভাবযুক্তঃ পাপঃ তন্মূর্তিত্বারকুত-চিৎ পাপাচ্ছক্ত-মানশ্চ। যতে। জন্মত এব ভোজানাং কুলস্থাপি দূষকঃ কিমৃত স্বস্ত। অতএব হস্তমারকঃ। আদিকর্মণি কর্ত্তরি ক্তঃ। সদ্যঃ প্রবৃত্তঃ। অহো তত্রাপি নপ্তথাবিধাদিনা কিন্তু থক্সাপাণিঃ। তত্রাপি নচ বস্তাদি সাবরণাং ন বিগহিত স্পৃষ্ঠাং কিন্তু কচেছগ্রহীৎ॥ ২৪॥

জুগুন্দিতেতি ভগিনীবধে প্রবৃত্তেঃ। নৃশংসং সদ্য স্তাদৃশ স্নেহত্যাগাৎ। নিরপত্রপং তাদৃশোৎসবে সর্ক লোকাগ্রেহত্যস্তবিক-র্মোদ্যমাৎ। এবং তক্ত মহাদৃশেষ্টেরা পুনঃ পুন নিন্দা। মহাভাগ ইতি তৈর্ব্যাধ্যাতমের তত্র স্বস্ত বস্থদেবক্ত জ্বানি হর্ষেণ দৈবতৈর্য আনকহন্দৃভিষোর স্তেন হতুনা স্বাদ্ধাৎ শক্য প্রতীকারতা সম্ভবতীতি। তত্রচেতি শব্দক্ত এতং প্রকার ইত্যর্থঃ। তেন চৈতৎ স্বমহা ভাগদ্ধং প্রীবস্থদেবো জানাতীতি ক্রোড়ীক্রিরতে। যদ্ধা মহাভাগ ইত্যয়ং ভাবং ইতি প্রীশুকদেবেন প্রীবস্থদেবক্ত ইত্যর্থঃ। অয়মুক্তো হেতুঃ। অতএব পরিসাম্বর্দ তচ্চ তৈ র্ব্যাধ্যাতং। যদ্ধা সাম্বন্ধকং সামা যুক্তিভেদেন স্বেহোৎপাদনেনাক্রমেণ প্রবোধরন্। তত্ত পঞ্চবিধং সাম ভেদশ্চ দ্বিধিঃ। তথা চোক্তং। সম্বন্ধ লাভা বৃপক্কতাভেদৌ গুণকীর্ত্তনং। সাম পঞ্চবিধং ভেদো দৃষ্টাদৃষ্ঠ ভরং বচ ইতি॥

ততাদৌ সামা প্রবোধয়তি শাঘনীয়েতি ভবানিত্যাদরাৎ স্ত্রিয় তত্তাপি ভগিনীং তত্তাপি তদ্বিবাহোৎসবে কথং হস্তাৎ অপিতৃ

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

কুলং পাংস্থং করোজীতি কুলপাংসনঃ কুলদ্ধণ ইত্যর্থ:। আরম্ম ইত্যাদি কর্ত্তরি কর্মণি চেতি ক্র:। কচে২গ্রহীদিতি যেনৈব বামহন্তেন ভগিন্যা: প্রীত্যতিশরার্থং রথবাহকাশ্বপাশং জগ্রাহ তেনৈব হত্তেন সহসা তদৈব ভগিন্যা বধার্থং তস্যাং কেশপাশং জগ্রাহ। এবং প্রতোদং ত্যক্ত্ব দক্ষিণপাণিনা ধড়াং জগ্রাহেত্যহো ধলজনম্বেহস্য লোক লজ্জাধর্মভন্ম নিরপেক্ষমেব ঘাতৃক্ষ মিতি ভাবং ॥ ২৪॥

নৃশদং জুরং। মহাভাগ ইতি স্বসান্ধাদেব স্বভার্যাং হন্ধং প্রবৃত্তমণি তং প্রতি ক্রোধান্ত্রয়াৎ ধৈর্য গান্তীর্য ক্রমা চাতুর্যাদিগুণ-সমুজ্বাচ্চ। যথা নমু তাদুশো মহাজুরঃ কথং তদ্য সাম্বনং শৃণ্যান্তনাহ মহাভাগ ইতি ভাগ্যবতো জ্নদ্য প্রাতিক্ল্যং ঝাম স্পাদি-রূপি নৈব করোতীতি ভাবং ॥

সম্মলাভাব্পক্তাভেনে গুণকীর্ত্তনমিতি প্রথমং প্রুবিধং সামাহ শাদনীয়েতি গুণকীর্ত্তনং ভোলেতি সম্মঃ ভগিনীমিত্য-তাহাকে সম্মোধিয়া বলিলেন অরে কংস! অরে অবুধ! (মূর্ধ) তুই যাহাকে বহন করিতেছিস্ ইহার অফীন গার্ত্তার হস্তা হইবেক ॥ ২৩ ॥ •

এই কথা শুনিবামাত্র ভোজদিগের কুলদুষণ সেই খল পাপিষ্ঠ কংস তৎক্ষণাৎ ভগিনীর প্রাণ বধার্থ উদ্যত হইল এবং খড়গহন্ত হইয়া দেবকীর কেশবদ্ধে গ্রহণ করিল ॥ ২৪॥

মহতিাগ বস্থাদের আপনার জন্ম কালীন দেবতাদের হর্ষহেতু ভূরি ভূরি ফুল্ফুভির শব্দেই জন্মিয়া ছিলেন আমা হইতে ভগবানের অবতার হইবেক তাহাতেই ইহুার প্রতিকার সম্ভবিবে অতএব ঐ শ্লাঘনীয়গুণঃ শূরৈর্ভবান্ ভোজযশস্করঃ। স কথং ভগিনীং হন্যাৎ স্ত্রিয়মুখাহ পর্বাণি ॥ ২৫ ॥ মৃত্যুর্জন্মবতাং বার দেহেন সহ জায়তে। অদ্য বাকশতান্তে বা মৃত্যুর্বে প্রাণিনাং গ্রুবঃ ॥ ২৬ ॥

#### श्री धत्रश्रामी।

সম্ভবিষ্যতীতি পরিসাম্বয়ন্ স্বত্যা রূপাবিষয়ছেনোপপত্তিভি**ন্চ সামমার্গেণ সম্বো**ধয়ন্ ॥ ২৫ ॥

মরণভয়েন হন্মীতি চেৎ তথাপি মরণস্যাপরিহরণীয়ন্বাৎ দেহান্তরক্তচ অবগ্রস্তাবিদ্বাৎ তত্ত্রাপিচ ভোগ প্রেমাম্পদন্ধাদীনাম-বিশেষাৎ তদ্তরেন পাপাচরণমযুক্তমিত্যভিঞ্জেত্যাহ মৃতুর্জন্মবতামিত্যাদি। দেহেন সহেতি বিধাত্রা ললাটে লিখিতদ্বাৎ ইতি তথাপি কাল বিলম্বার্থং হন্মীতি চেক্তত্রাহ অদ্য বেতি অবশ্রস্তাবিনি মরণে বিলম্মাত্রায় পাপাচরণমযুক্তমিতি ভাবঃ॥ ২৬॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

হস্তং নৈবাহতীত্যর্থ:। অন্তথা শৌর্যাশনোর্হানি:। তত্র শাবনীয়েতি গুণকীর্ত্তনং। ভোজেতি সম্বন্ধ:। ভগিনীমিত্যভেদ:। কথং হন্তাদিতি স্ত্রীবধনির্ত্তা যশোলাভ:। উবাহেতি সন্ততির্দ্ধোপকার:। শ্লেষেণ শূরৈরে শাবনীয়া: তেভ্যো গুণো গৌণ: নিক্ট ইত্যর্থ:। যহুর্ ভোজা অপি ভদ্রা: কিন্তু তেখ্যমেবৈকাকী পাপিঠ ইতি কিম্বদন্ত্যা তেবাং যশস্কর:। স কথং ভগিনীং তন্মাত্রং হন্তাৎ। অপিতৃ সর্ক্মিপি স্বক্লং হন্তাদেবেত্যর্থ:॥ ২৫॥

যুক্তিভি: ষট্লোক্যা প্রবোধয়ন্ আদৌ মৃত্যোরপরিহার্যাক্ষমাহ মৃত্যুরিতি। তথাচোক্তং। জাতসাহি প্রবো মৃত্যু প্রবং জন্ম মৃত্যাচ ইত্যাদি। হে বীরেতি প্রোৎসাহন সন্ধোধনং। শ্লেষেণ অত্রত্ বীরত্তং নাস্তীত্যর্থ:। যথা যুদ্ধমাত্রে সমর্থ: নত্ বিচারাদাবিতি। কথং দেহেন সহ জায়ত ইতি জায়েত। তত্রাহ অদ্যবেতি অবশ্রুং যৎ কার্য্যোৎপাদকং যথ তত্তু তদস্তর্ভূ ত্মেবেত্যর্থ:। বা শক্ষাজ্যাং পিক্ষোর্থ বোধান্তং বোধাতে। বৈ এতং প্রসিদ্ধানবৈত্যর্থ:॥ ২৬॥

#### শ্রীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

ভেদঃ। সহস্ক নন্যা অপি ব্রিয়া অবধেন ধার্মিকত্ব যশোলাভঃ মম স্বভার্যা প্রাপ্তার পরাপকারঃ ব্রিয়ং তত্রাপি ভগিনীং ত্রা-পুষোহপর্কাণি তত্রাপি ভবান্ মহাযশস্থাতি হননে ঐহিকং ত্র্যশং পার্ব্রিকং নরক্ষেতি দৃষ্টাদৃষ্টভয়লক্ষণোদ্বিধাে ভেদশচ দর্শিতঃ। বাস্তবার্থস্থ বিপরীত লক্ষণয়া। যথা প্লাঘনীয়েব্ মধ্যে তথাঃ ন্নঃ। ভোকাঃ কলহবদ্বেন প্রসিদ্ধা স্তেবাং যশঃ কলহাধিক্যং স কথ্যেকাং ভগিনীং হন্যাৎ অপিতৃ স্ক্ষেব কুলং॥ ২৫॥

তদপ্যনিবৃত্তং তং যুক্তা প্রবোধমন্ ভো রাজন্ মৃত্যুভয়েনেমাং হংসি চেং স মৃত্যুরপরিহার্যা এবেত্যাহ মৃত্যুরিতি বল্পততাবজ্জী-বানাং জন্মমৃত্যু নৈব অঃ। তদপি দেহেন স্থুলদেহ সম্বন্ধেনৈব হেতুনা জন্মবতাং স প্রসিদ্ধাহন্দপষ্টমেব মৃত্যুর্জায়তে। ক্লা আল্য বা অন্ধ্যতান্তে বা। বা শন্ধ: ভ্যাং সর্কবিধ কালনিশ্চ্যাভাবে অন্ধ্য শতমধ্যে বেত্যুর্থ:। তত্র প্রমাণমাহ মৃত্যুবৈ ইতি। জাতসাহি জ্বো মৃত্যুর্জবং জন্মমৃতস্যাত। তত্মাদপরিহার্ব্যেহর্থেন সং শোচিত্যুর্হসীতি শাস্ত্যং আরম্ভি হে বীরেতি স্থং তু তত্মাদ্বিভেতুং নৈবাহসীতি ভাব:॥ ২৬॥

নির্মাজ্জ ক্রুরেকে ঐরপ গর্হিত কর্ম্মে উদ্যত দেখিয়া স্তুতি এবং কুপাস্পদত্ব হেতু যুক্তি দারা সাস্থনা করত কহিলেন, অহে বার! তুমি ভোজবংশের যশক্ষর, শ্রগণ তোমার গুণের শ্লাঘা করিয়া থাকে, তুমি কি প্রকারে অবলা ভগিনীকে উদাহ পর্ব্বে বধ করিবে ? ॥ ২৫॥

হে বীর ! তুমি কি মরণ ভয়ে ইহার প্রাণবধ করিতে উদ্যত হইতেছ ? আমার কথা শুন, জন্ম-বিশিক ব্যক্তিদিগের দেহের সঙ্কেই মৃত্যু জন্মিয়া থাকে, কারণ, বিধাতা তাহা লগাটে লিখিয়া দেন, আদ্য হউক বা শত বৎসর পরেই হউক, প্রাণিদের মৃত্যু নিশ্চরই হইবেক, অতএব মৃত্যু ভয়ে পাপাচ-রণ মৃক্ত হয় না, তাৎপর্যা এই যে অবশ্যস্তানি মরণে বিলম্বমাত্রার্থ প্রাপ্ত করা বুক্ত নহে॥ ২৬॥ দেহে পঞ্জমাপনে দেহী কর্মান্ত্রগোহবশঃ। দেহান্তরমন্ত্রাপ্য প্রাক্তনং ত্যক্ততে বপুঃ ১২৭॥ ব্রজং ন্তিষ্ঠন্ পদৈকেন যথৈবৈকেন গছতি। যথা তৃণজলোকৈবং দেহী কর্মগতিং গতঃ॥ ২৮॥ ব্যথে যথা পশ্যতি দেহমীদৃশং মনোর থেনাভিনিবি ফচেতনঃ।

#### श्रीभत्रशामी।

কিঞ্চ অস্মিন্ দেহে গতেছপি যদি দেহাস্তরং ন স্থাৎ তদা যুজ্যেত পাপেনাপি তৎপালনং নতু তদন্তীত্যাহ দেহে পঞ্জমাপন্ন ইতি আপন্নপ্রায়ে কর্ম্মবশাদযম্ভত এব প্রথমং দেহাস্তরং প্রাপ্য পশ্চাৎ পূর্মং বপুস্তাজতি ॥ ২৭ ॥

অত্ত দৃষ্টাস্তঃ ব্রন্ধন্নতি। একেন অগ্রতো নিহিতেন পদা তিষ্টন্ ভূবযবষ্টভা দেহং বিভ্রৎ পশ্চাদন্যেন পূর্ব্ধ প্রদেশাহুৎপাট্য পুরে। নিহিতেন পচ্ছতি যথা তদ্বৎ। অত্তচ স্বীকার পরিত্যাগৌ নাত্যস্ত ভিন্ন বিষয়াবিতি স্পষ্টং দৃষ্টাস্তান্তরমাহ যথা ভূণজলোকেতি সাহি ভূণাস্তরমবষ্টভা পূর্ব্ব ভূণং তাজতি এবং কর্ম্ম পথে বর্ত্তমানো জীবোহপি॥ ২৮॥

দেহ বিষয়াবেব স্বীকারপরিত্যাগোঁ দর্শয়িত্ব দৃষ্টান্তান্তরমাহ স্বপ্ন ইতি দৃষ্টা রাজাদি দর্শনং শ্রুতং ইন্দ্রাদি প্রবণং তাভ্যামাহিতা

#### देवकवरणायगी।

নত্ন সত্যং মৃত্যুর্ভবিতৈব কিন্ত দেহাভাবেন ভোগাসিদ্ধা কঞ্চিৎকালং ভোগার্থং দেহ রক্ষা যুকৈব তত্রাহ দেহ ইতি পঞ্চদ্বনিত্ পঞ্চত্তরারক্ষত্বেন কদাচিদ্বিচেদাপত্তিক ঘটতৈবেতি ভাবং। দেহীতি দেহান্তিরত্বেন তক্ত নাশো নিরক্ত দেহান্তর প্রাপ্তো হৈতৃং কর্মান্থ্য ইতি কর্ম্মণামবশ্রভোগ্যত্বাং। নচ তত্র প্রায়াসোহকীত্যাহ অবশং কর্মবশাং স্বত্তএব তৎসিদ্ধেরিতি ভাবং অন্ ত্যজত ইত্য-ধরং। আত্মনে পদ্মার্বং॥ ২৭॥

দেহীতি নিত্যবোগে মত্বৰ্ণীর: । জলুকেতি যঠত্বরমধ্যং পাঠোবছত্ত ॥ ২৮ ॥
স্থপ্ন ইতি তৈরবধারিতং তত্ত দর্শয়িতুং স্বাহ্মভাবেন সাধ্যিতুমিত্যর্থ: । হি এব তদেব এবং দেহাদাত্মনো ভিন্নতং বোজিত

#### শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

দেহপ্রাপ্তি ত্যাগারের জীবস্য জন্মমৃত্য তৌ ত্বাবশাকাবেবেত্যাহ দেহে পঞ্চত্বং মৃত্যুং আগরে আপদ্মপ্রায়ে দেহান্তরং প্রাণ্য অন্থ-পশ্চাৎ প্রাক্তনং বপুস্তাজতি নচ বিষয় ভোগসাধনমেব দেহো মে নজ্জাতীতি বিধীদিত্মহ সীত্যাহ কন্মান্ত্য ইতি যদি তব মুখভো গাদৃষ্ঠমন্তি তহি তত্ত্বৈব প্রাপ্তব্যে দেহ এব ভোগো ভবিষ্যতীতি ভাবঃ। তন্মাদিদং স্ত্রীবধলক্ষণং পাপং তঃখভোগসাধনং মাকার্মী-রিতি দ্যোতিতং॥ ২৭॥

উত্তরদেহ প্রাপ্তানন্তরমেব পূর্কদেহত্যাগে দৃষ্টান্তঃ। ব্রজন্ গন্তা পূক্ষঃ যথা একেনাগ্রতো নিহিতেন পদা উত্তরপ্রদেশে তিষ্ঠনেব পূর্কপ্রদেশাত্ৎপাট্য পূরোনিহিতেনৈকেন গচ্ছতি নতু যুগপদ্যভ্যামেব পদ্তাং পূর্কপ্রদেশং পরিত্যক্তার উত্তরং প্রদেশং গচ্ছতী-ভার্যঃ। অত্র প্রাপ্তিভ্যাগৌ বন্ধতঃ পৃথিব্যা একস্যা এবেভ্যপরিত্যান্ দৃষ্টান্তান্তরমাহ যথা ভ্গজলোকৈতি। সাহি ভ্গান্তরমবৃষ্টভাব পূর্কং ভৃগং ভারতি জনুক্তে যঠন্তরমধ্যাহপি পাঠো জেয়ঃ॥ ২৮॥

জীবতাপি দেহে প্রতিদিনং দেহপ্রাপ্তিত্যাগাবমূভবেন দর্শন্তি। স্বপ্নে বথা ঈদৃশং জাগ্রন্দেহ তুল্যং দেহং পশ্যতি। স্বপ্নং বিনাপি

অপিচ এই দেহ গত হইলে যদি পুনরায় দেহান্তর না হয়, তাহা হইলেও বা পাপ করিয়া দেহের পালন করা উচিত হয়, দেহান্তর প্রাপ্তির অসম্ভাবনামাত্রও নাই, এই দেহপঞ্চত্ত প্রাপ্ত হইবামাত্র দেহী স্বীয় কর্ম বশতঃ অবশ হইয়া অুত্রে দেহান্তর প্রাপ্ত হয় পরে তাহার পূর্ব্ব দেহ ত্যাগ হয়॥ ২৭॥

হে বীর! এই বিষয়ে দৃষ্টান্ত দেখ যেমন গমনকারী পুরুষ অথ্যে নিহিত এক পদে ভূমি আশ্রর পূর্বক দেহ ধারণ করিয়া পরে অন্য পদকে পূর্ব স্থান হইতে উত্তোলন পুরঃসর সম্মুখে নিহত করিয়া গমন করে, আর যেমন ত্ণজলোকা ত্ণান্তর অবলয়ন করিয়া পশ্চাৎ পূর্বক তৃণ পরিত্যাপ করে, কর্ম পথে বর্তমান জীবও সেই রূপে দেহান্তর প্রাপ্ত হইয়া থাকে ॥ ২৮॥

८ दीत । काश्रमणात्र ताजानि नर्णन ७ हेळानि अवन अन्य मः कात्र महनामत्या जाहिल रहेटल

দৃষ্ট প্রুতাভ্যাং মনসামুচিন্ত্রমূন্ প্রাণাতে তৎ কিম্পিক্সপক্ষ্তিঃ ॥ ২৯ ॥ যতো যতো ধাবতি দৈবচোদিতং মনো বিকারাত্মকমাপ পঞ্জ । গুণের মায়ারচিতের দেহুসো প্রাণানঃ সহ তেন জায়তে ॥ ৩০ ॥

#### श्री धत्रश्रामी ।

সংস্কারেণ মনসা তদেবাছিচিন্তান্ ঈদৃশং জাগ্রদ্ ইশতসদৃশং দেহং রাজাদি রূপং কিমপি অনিরুক্তং পশুতি কণান্তরেচ তদেবাহমিতি প্রপদ্যতে মহতে ততণ্চ জাগ্রদ্ধোদপগতস্থৃতি ভবিতি প্রুম্বো যথেতি। জাগ্রত্যের দর্শনিতৃং দৃষ্টান্তান্তরমাহ মনোরথেনেতি অত্যাপি দৃষ্ট শ্রতাভ্যামিতি সর্বাং যোজ্যং তথাচ বক্ষাতি জন্তোবৈ কস্যচিদ্ধেতোমুঁতি রত্যস্তবিশ্বতিঃ। জন্মত্বাশ্বত্যা পৃংসঃ সর্বভাবেন ভ্রিদ। বিষয়স্বীকৃতিং প্রান্থ বঁথা স্বপ্ন মনোরথঃ। স্বপ্নং মনোরথঞ্চেছন্ প্রাক্তনং ন স্মরত্যসাবিত্যাদি তদ্বদ্বাপি কর্মবেশাৎ দেহান্তরং প্রাপ্য প্রাক্তনং বপু স্তাক্তীতি॥ ২৯॥

নম্থ বিচিত্র দেহস্য হেতৃনাং কর্মণাং কৃতথাৎ দেহবিশেষপ্রাপ্তে। কিং কারণমিত্যত আহ যতো যত ইতি। দেহস্য পঞ্চত্ব-সময়ে পঞ্চস্থ গুণেষু ভূতেষু মায়ারচিতেষু মায়রা নানা দেহ রূপেণ রচিতেষু মধ্যে দৈবেন ফলাভিমুখেন কর্মণা চোদিতং নানা বিকার্যাক্রণ মনো বং যং দেহং দেবতির্য্যাদি রূপং প্রতি ধাবতি ধাবত সৎ যালক্রপ মাপ অভিনিবেশেন প্রাপ্তাং তত্র তত্র অসৌ দেহী জারতে। নম্থ মনসং কর্ম্বাং তদের জায়তাং নম্বকর্তা আছা ইত্যত আহ প্রপদ্যমান ইতি তদেবাহমিতি প্রপদ্যমান স্তেন সহ জায়ত ইতি॥ ৩০॥

#### देवस्वदांवनी ।

মপি। স্বপ্নে মনোরথেচ দেহাভিমান পরিত্যাগেন দেহাস্তরাভিনিবেশেনাত্মনো দেহাৎ পৃথক্তামূভবাৎ এবং কর্মবশাদেহান্তবং প্রাপ্তৈয়ব প্রাক্তনং দেহং তাজতীতি দেহপ্রাবশ্বকতা দৃঢ়ীক্বতা॥ ২৯॥

নত্ব সত্যং ভবিতা দেহমাত্রং কিন্তু পুনারাজদেহোহতিত্বতি স্কতাহ যতে। যত ইতি দৈবেনটোদিত্মিতি তদর্থং প্রদাসান্তরং নিরস্তং অসৌ অবিবেকী দেহাদেভিল্লাহপীতি বা প্রপদ্যমানঃ মহ্মমানঃ অতঃ কর্মণ এব প্রবল্বাং শ্রীদেবকা। জন্মান্তর পুত্রাদ্যপ্যাক্ষাশবাণ্যদিষ্টো মৃত্যু স্ববানিবার্য্য এবেতি মহাহর্গতিপ্রাপক্ষীদৃশং পাপকর্ম ত্যক্ত্যু। তাদৃশ নিজপ্রাচীন কর্ম সন্দেহে সতি সম্প্রতাপি পুনরিতোহিপি বিভৃতিমন্বপুঃ প্রাপ্তরে মার্কণ্ডেয়বদস্য মৃত্যুরিপি কিয়ৎকালনিবারণায় বা সংকর্মের ক্রিয়তামিতি ভাবঃ। জন্মান্তরেতাত্ত শ্রীহরিবংশোক্ত বড়গার্ত্ত সাদৃশ্রং জ্ঞেয়ং॥ ৩০॥

#### এবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

দর্শরতি মনোরথেন মনোরথেচেতার্থ:। কঃ পশাতীতাত আহ অভিনিবিষ্টা অভিনিবেশবর্তী চেতনা যৃদ্য দ:। যদ্বা মনোরথেন বিষয়বাঞ্ছা চিন্তাভিনিবেশাধিকাবান্ পুরুষ: বাপ্নে ঈদৃশং দেহং পশাতি অভিনিবেশ প্রকারমাহ দৃষ্টং রাজাদি শ্রুতং ইক্রাদি তাভ্যামভ্যন্তাভ্যাং জনিত সংস্কারবতা মনসা অনুচিস্তয়ন্ তংকিমপি রাজাদিরপ্রথেব প্রপদ্যতে রাজাত্যুচিত বিষয়ভোগবন্দেহ-মাজানং পশাতীতার্থ:। অপশ্বতিঃ বাস্তব দেহ শ্বরণশুন্য:॥ ২১ ॥

নহ দৃষ্টঃ প্রতশ্চ বিষয়ো দৈবপ্রেরিতেন মনসা স্মর্থ্যাগরামনস এবাস্ত। ততো তিয়েনাস্থনা স্ব ভোগার্থং স্কর্থং লভ্যতাং তত্তাহ যত ইতি পঞ্চ বিষয়ের মধ্যে যতো যতো যত্তা যত্ত বিকারাস্থকং মনো ধাবতি ধাবচ্চ সং আপতস্তং বিষয়মেব প্রাপ্তং ভবতি। অসৌ দেহী জীবঃ তেন বিষয়াভিনিবিষ্টেন মনসা সহ সাহিত্যাদ্ধেতোত্তং বিষয়ং প্রপদ্যমানো জারতে ভূঞানো ভবতীত্যর্থ: ॥ ৩ • ॥

নিবিষ্ট চিত্ত হইয়া সেই মনের দারা ঐ দৃষ্ট শ্রুত বিষয় চিন্তা করিতে করিতে লোকে যজ্ঞপ জাগ্র-দশায় দৃষ্ট ও শ্রুত বিষয়ের সদৃশ অনির্বাচনীয় রাজাদি রূপ স্বপ্নে ও মনোরথ যোগে দর্শন করে তাহাতে জাগ্রদেহ হইতে তাহার স্মৃতি অপগত হইয়া যায়, সেই রূপ জীব কর্মা বশতঃ দেহান্তর প্রাপ্ত হইয়া প্রাক্তন শরীর পরিত্যাগ করে॥ ২৯॥

হে বীর! দেহের পঞ্চ সময়ে নানা বিকারার্ত্ত মনঃ ফলাভিমুখ কর্মকর্তৃক প্রেরিত হইয়া
মায়া বারা নানা দেই রূপে রচিত পঞ্চতের মধ্যে যে যে দেহ অর্থাৎ দেব অথবা তির্যুক্ ইত্যাদির
প্রতি ধাবমান হওত অভিনিষেশ বারা যে যে রূপ প্রাপ্ত হয়, সেই সেই রূপেই দেহী ক্রমগ্রহণ
করিয়া বাকে। যদিও ঐ বিষয়ে মনই কর্তা তথাচ আমিই সেই মনঃ এইরূপ প্রতিপন্ন হওয়াতে
ক্রীবই মনের সহিত উৎপন্ন হয়॥ ৩০॥

জ্যোতির্ধ থৈবোদকপার্থিবেশ্বদঃ সমীরবেগাসুগতং বিভাব্যতে। এবং স্বমায়ারচিতেশ্বসো পুমান্ গুণেয়ু রাগাসুগতো বিমৃহতি ॥ ৩১ ॥ তত্মান্ন কন্সচিদ্যোহমাচরেৎ স তথাবিধঃ। আত্মনঃ কৈমমন্বিচ্ছন্ ড্যোগ্ধু বৈর্ব পরতো ভয়ং ॥৩২॥

#### গ্রীধরস্বামী।

নম্ব গতাং ভবিষ্যত্যের কিমপি দেহমাত্রং তথাপ্যস্যাতিপ্রিয়স্য রাজদেহস্য রক্ষণার্থমকার্য্যমপি ক্রিয়ত ইতি চেন্তত্রাহ ক্যোতিরিতি অদশ্চন্দ্রাদি স্ব্যোতিঃ উদক যুক্তের পার্থিবের ঘটাদির যথা উদকের পার্থিবের বৈশ মৃতাদির্চ প্রতিবিশ্বন্ধন স্থিতঃ সমীরস্য
বায়ো র্বেগমন্থগতং কম্পাদি যুক্তঃ প্রতীয়তে যথা এবং স্বাবিদ্যা রচিতের দেহের অসৌ রাগেণামুগতঃ প্রবিষ্টো মৃষ্ট্ অভিনিবেশং
প্রাপ্রোতি। অয়ং ভাবঃ আত্মনস্তাবদেহাদ্যধ্যাসেন জন্ম উক্তং সহ তেন জায়ত ইতি ততশ্চান্যোন্য ধর্মাধ্যাসাং যথা দেহাদি ধর্মাঃ
কার্শ্যাদ্য আত্মনি প্রতীয়ন্তে এবমান্যধর্মাঃ প্রেমাম্পদন্তাদয়োহপি দেহাদিন্থিতি রাজ শৃকর দেহয়ো বিশেষাভাবাদ্ ব্যর্থো মৃত্যুপ্রতীকার ইতি.॥ ৩১ ॥

এবমুক্তং সামোপায়মুপসংহরন্ ভেদমাহ তত্মাদিতি। পরত ইতি জ্ঞ্মাণাৎ তৎসম্বন্ধিনশ্চ ব্যাদিপি ইহামুত্রচ ভন্নমিতি ভেদো

#### বৈষ্ণবতোষণী।

কিঞ্চ দেহাভিনিবেশেহয়মবিদ্যাময় এবেত্যাহ জ্যোতিরিতি। আদঃ নিক্ষম্পাত্মে বস্থিতমপি। মায়া ভূগবন্মায়া তদ্মৈব রচি-তেয়ু॥ ৩১॥

নমু যতো যত ইত্যত্রাভিপ্রেতং তাদৃশং কর্ম ছকরং তণা তাদৃশং জ্ঞানঞ্চেরতোহস্তি তর্হি কণং ভবানস্যা দেহরক্ষার্থং প্রবত্তে তাদৃশাস্বাম্প্তব জ্ঞানাভাবাদিতি চেৎ মমাপি তদভাবাৎ স্বদেহ রক্ষার্থেহিয়ং প্রবদ্ধা ফুক্ত এবেত্যাশক্ষাহ তত্মাদিতি। যত্মাৎ সংক্রের্মর শ্রেমঃ সাধনং যত্মান্দেহাবেশোহপ্যাবিদ্যক এব তত্মাৎ স তথাবিধঃ পূর্ব্বোক্ত প্রক্রোর ক্রত্ত্যাগো কর্ত্ত্মশক্র্বরপি তদ্বিপরীতং পরজ্ঞাহস্ত ন কুর্যাৎ। কিমর্থং আন্মনঃ কেমমৰিচ্ছন্ ইহামুত্রচান্মনঃ কেমার্থমিত্যেঃ। যতঃ জ্যোগ্রুবিতি এবং দৃষ্টাল্ট ভয় প্রদর্শনেন দ্বিধা ভেদঃ। অত্র শ্রীকৃষ্ণ কথারস্তে আন্মন্তানান্য বৈরাগ্যাকার্য্য নিবৃত্তি কথনানি বহিমুপানামন্যাবেশ নিবা-

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

ততশ্চ মনঃ সহিত্যা জীবসা মনে। ধর্মপ্রাপ্তিং সদৃষ্টাস্তমাহ। জ্যোতিশ্চক্রস্থ্যাদিকিরণঃ উদকেষ্ পার্থিবের্ তৈলম্বতাদির্চ প্রতিবিষক্ষপেণ স্থিতং সমীরবেগাহগতং সৎ বিভাবতে বিবিধং কম্পবশাদীর্যহ্রশাদিকপং ভাবতে ভাবিতং ভবতি এবনেব স্বে শীরান্ধ কোয়া রচিতান্চেতি স্বমায়ারচিতান্তের্ গুণেরু দেহেরু পুমান্ জীবঃ রাগাহগতঃ রাগো বিষরভোগেচ্ছালক্ষণো মনো ধর্ম স্বম্থতো বিমৃত্তি তদীয় বিষয়ভোগেচ্ছাব্যাপ্যো ভবতি তেন স্বমণি তথাভূত এব জীবঃ স্বীয় বিষয়ভ্রথভোগিসিদ্ধার্থং বনেতাং হংসি তদার্থমেব দেহ নাশেহণি দ্বনীয় গুভাদৃষ্ট্র্যানশ্বরম্বাদ্দেহান্তর্ব্য স্বলভ্রাচ্চ তত্রৈব তে ভোগঃ দেহস্যতি স্ত্রীবধেত্ প্রভ্যত দেহান্তরে হংখমেব ভোক্তবাং স্যাৎ কিঞ্চ কর্মণঃ প্রবলম্বাদাকাশবাণ্যদিটো মৃত্যুদেবিকী ক্ষমান্তর প্রাদপ্যবশ্যংভাবীত্যতোবরং মৃত্যু প্রতীকারার্থং মার্কণ্ডেরেনেব সংক্রেম্ব ক্রিয়তামিতি দ্যোতিতং ॥ ৩১ ॥

স তথাবিধঃ অবিদ্যার্তঃ ক্রোগ্রুর্জোহকর্তুঃ পুংদঃ পরতো যমাদিতো যন্ত্রান্তরং তন্মাদিতি ভেদো দর্শিতঃ॥ ৩২ ॥

যদি বল পরে কোন্ প্রকার দেই ইইবে ভাহার নিশ্চয় নাই একণে রাজদেই রক্ষা করা উচিত, তদর্থ কার্য্য করাতে দোষ কি ? তাহাতে বক্তব্য এই যে চন্দ্রাদি ক্যোতিঃ যদ্রপ জলে এবং তৈল মৃতাদি-পার্থিব পদার্থে প্রতিবিষিত ইইলে বায়ুবেগের অনুগত ইইয়া কম্পাদি মুক্ত বলিয়া প্রতীত হয়, সেই রূপ এই জীৰ অবিদ্যা রচিত দেহে রাগ বশতঃ প্রবিষ্ট ইইয়া অভিনিবেশ প্রাপ্ত হয়। ফলভঃ দেহা-ধ্যাদ হেতুই আজার জন্ম কথিত ইইয়াছে অভাভ ধর্মের অধ্যাদ হেতুক যেমন আজাতে দেহ ধর্ম ক্শহাদি প্রতীয়মান হয়, সেই রূপ আজ্মধর্ম প্রেমাস্পদ্যাদিও দেহাদিতে প্রতীয়মান ইয়য়া থাকে, য়তরাং রাজদেহ ও শুকর দেহ ছই সমান, তাহার য়ত্য প্রতীকার চেকী অপ্রয়োজন ॥ ৩১ ॥

অতএব যে ব্যক্তি আপনার কল্যাণ ইচ্ছা করৈ তাহার পক্ষে কাহারও জোহাচরণ কর্ত্তব্য নছে,

এষা তবাসুজা বালা কৃপণা পুত্রিকোপমা। হস্তং নার্হসি কল্যাণীমিমাং ছং দীনবৎসলঃ॥ ৩০॥ প্রীশুক উবাচ॥

এবং স সামভির্ভেদৈশ্চোদ্যমানোহপি দারুণঃ। ন ন্যবর্ত্ত কোরব্য পুরুষাদানসুত্রতঃ॥ ৩৪॥ নির্বন্ধং তস্ত তং জ্ঞাত্বা বিচিন্ত্যানকছুন্দুভিঃ। প্রাপ্তং কালং প্রতিব্যোদুমিদং তত্তাশ্বপদ্যত॥ ৩৫

#### দৰ্শিত: ॥ ৩২ ॥

পুন: সামাহ এষেতি প্তিকোপদা দাৰুম্মী বা অচেডন প্ৰায়া। ৩৩।

চোদ্যমান ইত্যুপদিশ্রমান: স্বরং দারুণ: পুনশ্চ পুরুষাদান্ দৈত্যান্ অরুস্ত: ॥ ৩৪ ॥

আনকহক্তিরিতি নহাভাগ ইতাত্রোকাভিপ্রায়ং প্রতিবোচুং প্রতিক্রু মিতার্থঃ। ইদং বক্ষ্মাণং অপত্যার্পণং অরপদ্যত জাতবানু ॥ ৩৫ ॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

त्रनारवाभिष्ठिनौिक भाक्षश्रदाक्षनक रक्षवः। এवः मर्खक ॥ ७२ ॥

অত্যাগ্রে সংস্কৃতিসামৈবোচিতমিতি পুন ওদেবাহ এবেতি নবোঢ়া ক্লপণা ভরেন রোদনাদিপরেত্যর্থঃ দীনস্বভাবা বা পুত্রি-কোপমা পুত্রীতুল্যেতি স্বেং জনরতি। যদা পুত্রিলিক। সদৃশী অচেতনা তদ্রাভন্তানভিজ্ঞেত্যর্থঃ। ইমামেনাং অতএব কল্যাণীং নিরপরাধামিত্যর্থঃ। বৈশেষণানামেষামূত্ররোত্তরং কল্যাণীত্বে শ্রৈষ্ঠ্যমূত্য়। দীনবংসল ইতি শ্লেষেণ দীনং মৃতপ্রায়ং বংসমেব লাভি বিপ্রেভাো দদাতি। যদা দীনাদপি বংসমপি লাভি গৃহ্যতীতি। ইমাং স্বংহত্তং নার্হসি কাকা কিত্তপ্রেভার্থ ইতি নিন্দেব॥৩৩॥

পুরুষাদা রাক্ষসা অঘাদয় ন্তানমূত্রতঃ তেবাং পরিতঃ স্থিতানাং মতমমূস্ত ইত্যর্থঃ। ভক্ষকেরু সামাদীনাং বৈয়র্থাং যুক্তমে-বেতি ভাবঃ। সামাদিভিরপায়সূত্তে বিশ্ববেদ সংবাধয়তি হে কৌরব্যেতি ॥ ৩৪ ॥

ইদং বিচিন্ত্যেদমন্বপদ্যতেত্যন্বয়:। ভূয়ন্তং হননার্থং নির্বন্ধং আগ্রহং জ্ঞান্তা বৃদ্ধা বিচিন্তা বিচার্য্য কালং সময়ং মৃত্যুং বা প্রতি-ব্যোচুং বঞ্চয়িত্মিত্যর্থঃ। তত্ত্ব তদানীং সদ্যএবেত্যর্থঃ। অন্তপদ্যত উপায়ত্বেন মনসা নিশ্চিতবানিত্যর্থঃ॥ ৩৫॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

নিৰ্বাদ্ধনিতি। অৰপদ্যত উপায়ত্বেন মনদা বিচারিতবানিতার্থ:॥ ৩৫॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

তদপ্যনির্ত্তং তমত্যগ্রং স্ততিভিরিতি ন্যায়েন পুনঃ সামাহ এষেতি। পুলিকোপমা অত্কম্পনীয়পুলীতুল্যা পুত্তলিকাব্ডয়ে-নাচেতনা বা বাস্তবার্থেতু শির্শালনে নঞ্দীনাদ্তি দ্রিভাদ্পি বংসম্পি রাজকরত্বেন লাসি গৃহ্দাসীত্যর্থ:॥ ৩০ ॥

कामामान छेपिमामानः। श्रुक्वामान् देमछाान्॥ ७**८**॥

আলক্ছ্লুভিরিতি মজ্জন্মনি দেবৈ ছ্লুভিবাদনাদিদ্যমঙ্গলং ন মে ভবিষ্যতীতি নিশ্চিম্ন প্রতিব্যোদুং যাপরিছং ইদং অরপদ্যত প্রামমর্শ ॥ ৩৫ ॥

কারণ দ্রোহ করিলে তাহা হইতে এবং তৎ সম্পর্কীয় লোক হইতে ভয় এবং পরকালে যম হইতে যন্ত্রণার সম্ভাবনা আছে। ৩২।

হে বীর! তোমার অফুদ্রা এই অবলা অতি দীনা, দারুমুয়ী পুত্রলিকার স্থায় অচেতনপ্রায়া, তুমি দীনবংসল এই নিরপরাধার হত্যা করা তোমার যোগ্য হয় না॥ ৩৩॥

তকদেব কহিলেন ছে কোরব্য ! কংস একে অতি নির্দয় তাহাতে আবার দৈত্যদিগের অনুগানী হইয়াছিল অতএব যদিও ঐ প্রকার সাম ও ভেদ বচন দারা উপদিষ্ট হইল তথাপি ভগিনীহত্যার উদ্যুম হইতে নির্ভ ছইল না ॥ ৩৪॥

তাহার ঐ বধ বিষয়ে আগ্রহ অবগত হইয়া বহুদেব উপায় চিন্তা করিতে লাগিলেন। ভাবিয়া দে সময়ের প্রতীকারার্থ একটা উপার দেখিতে পাইলেন ॥ ৩৫ ॥ . মূজুয়বু, श्क्रिज्ञ তো পোছো যাবৰ ক্ষি, বলোদরং। যদাদো না নিবর্ত্তে নাপরাধোহন্তি দেছিনঃ ॥৩৬ প্রদায় মৃত্যুবর পুত্রান্ মোচয়ে রূপণামিমাং। স্থতা মে যদি জায়েরন্ মৃত্যুবরা ন ব্রিয়েত চেৎ।

# শ্রীধরস্বাদী।

নত্ব ধলোহয়ং এতক মত্তেত্তোশক্যাহ স্বয়মেব মৃত্যুবিতি ॥ ৩৬ ॥

তস্মাহণেক্ষা দোষপরিহারায় এবং করিষ্যামীত্যাহ প্রদায়েতি মৃত্যবে কংসায় নবিদমণি নৈব ন্যায়্মিত্যাশঙ্ক্ষাই স্থতা ইতি অস্যাং যদি মে স্থতা জায়েরন্ তদা যদ্ভাবি তদ্ভবত্ জীবিতন্ত তাবস্তবেদেব তদস্তরা যদ্যায়মেব ফ্রিয়েত তদা ন কিঞ্চিদন্যায়াং যদিচ স্থতা ভবিষ্যস্তি ন চায়ং ফ্রিয়েত তদা মং পুত্রাদেবাস্য মরণং ইতি বিপর্যায়ো বা কিং ন স্যাৎ। নমু প্রোচ্স্য কংসস্য তব বালকাং কংখ মৃত্যুঃ স্যান্তবাহ গতিরিতি ধাতুঃ অস্যান্ধামন্তমো গর্জোহন্তেত্যুক্তবতঃ অত ইদানীমপত্যাপণপ্রতিকৈর মন্ত্রঃ। তথা সতি

#### বৈষ্ণবতোষণী।

নস্থ তত্র পলোহয়মিত্যাশঙ্কাগর্জং বিচারমেব দর্শয়তি মৃত্যুরিতি অপোহঃ প্রতিকার্য্যঃ। বৃদ্ধি বলয়োরুদয় উৎকর্ষং তদবধি। পূর্ব্ধা বৃদ্ধিত্তৎ সামান্যং উত্তরা তদিশেষঃ। অসৌ মৃত্য়ঃ। অপরাধঃ উপেক্ষা দৌষঃ। দেহিন ইতি দেহতন্ত্রস্য ততো ইন্স্ত্রাশক্ষেঃ॥ ৩৬॥ নিক্ষায়ের দুর্শয়তি পেদায়েতার্থেন অইমেত হাতে লক বল্ল ওব ভবিষ্যামি ইতি প্রভান অইমেতবানিতি কাংপ্রয়ং কান সর্বাঃ

নিশ্বমেব দর্শয়তি প্রদারেতার্জন অষ্টমেত্ লাতে লব্ধ বল এব ভবিষ্যামি ইতি প্রান্ অষ্টমেতরানিতি তাৎপর্য্যং তান্ সর্বানিপি প্রদার আত্যন্তিকদেরত্বন প্রতিশ্রতা। মৃত্যবে ইতি তং প্রতি প্রদানেন সদ্যোমৃত্যু প্রাপ্তে স্তদভেদবিবক্ষরা। ক্রপণা-মিতি তাৎকালিক তৎ কার্পণ্যদর্শনাসহিষ্কৃতারাঃ প্রাবল্যং ব্যঞ্জয়তি। তক্রচ স্থানিখননভায়েন। দ্রিদমপীত্যাশকাগর্ত্তং বিচারান্তরং দর্শয়তি স্বতা ইতি সার্জন তবৈবাকাশবাণ্যাং কুটল কল্লিতত্ব মাশক্ষাহ স্বতা ইতি। তভাঃ সত্যত্বমাশক্যাহ বিপ্রায় ইতি। বিপর্যায়াহিপি সম্ভবেদিতার্থঃ যত উপস্থিতোহপি মৃত্যুঃ শ্রীমার্কণ্ডেয়ালামিলসত্যবদাদীনাং নিবর্ত্ততে নির্ত্তাহিপি কুশ নমুচি হরিণাকশিপু প্রভৃতীনাং পুনরাপতেও। যতো ধাতুরীশ্বস্য গতিরিচ্ছা হ্রত্যয়া অনতিক্রম্যা হক্তের্মা বেতার্থঃ। অন্যাইতঃ

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

আকাশৰাণ্যা: কুটিলকল্পিতম্বনাশক্ষ্যাহ। স্কৃতা ইতি সত্যত্ত্বমাশক্ষ্যাহ বিপৰ্য্যয় ইতি ॥ ৩৬ ॥

পূজরামাদ স্বত্যঞ্জাদিনা যতো যেভাত্বভয়মুখিতং তারতু যন্মান্তরমুখিতং ইতি গুঢ়োহভিপ্রায়:। বাক্যস্য সার: স্থিরতা ভদ্বিং॥৩৭।৩৮।৩৯।৪০।৪১।৪১।৪১।৪৪।৪৫।

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

অপোহঃ প্রতিকার্যাঃ। যাবান্ বৃদ্ধিবলয়োরদয়ো যত্ত তদ্যথা স্যাত্তথা অন্ধাৎ কংসহস্তান্ ভ্যপ্রতীকারে মনতু বলস্যোদ্যো বিফল এব বুদ্ধের্দয়স্ত স্ফলো ভবিতু মহ তীতি ভাবঃ। অসৌ মৃত্যুঃ॥ ৩৬॥

ততৈবং করিষ্যামীতি স্থপতমাহ মৃত্যবে কংসার নরিদমণ্যস্থাচিতমিত্যাশকাহ স্থত। ইতি যদি ন জায়েরহণ্ডদা ন কাপি চিস্তা যদি জায়েররপ্ত মৃত্যু: কংস্তাবতা কালেনাপি ন ত্রিয়েত তদা অমৃতিতং স্যাদেব দেবকীতু সংস্প্রতি জীবেৎ যদিচ তাবতা কালেন কংসা ত্রিয়তে তদা ন কাচিদপি চিস্তা বিপর্যায়োবেতি। ময়া তদানীমদৈ পুজে সমর্পামাণে সতি স পুত্র এব সদ্যঃ প্রবলীভূর কংসমিমং বধিষ্যতি বেত্যর্থ:। নমু প্রোচ্স্য কংস্যা তব বালকাৎ কথং বধং সম্ভবেত্ততাহ গতিরিতি। অস্যান্থামন্তমোগর্ত ইত্যুক্তবতো

প্রথমতঃ তাঁহার মনে হইল এব্যক্তি খল, আমার কথা মানিবে না, পরে আপনিই বিবেচনা করিলেন, যে পর্যান্ত বুদ্ধি বলের উদয় হয়, তাবৎ বুদ্ধিমান্ লোকের কর্ত্তব্য মৃত্যু নিবারণ করে, তাহাতে যদি নির্ত্তি না হয় তবে দেহির অপরাধ নাই ॥ ৩৬ ॥

অতএব মৃত্যুরপি এই কংসকে পুদ্র দিতে অঙ্গীকার করিয়া ইহার হস্ত হইতে আপাততঃ এই দীনা অবলাকে মোচন করি, পরে যধন আমার পুদ্র জন্মিবে সে সময় যাহা হয় হইবে, এখন ত জ্রীলোকটী বাঁচুক। আমার পুদ্র জন্মিবার মধ্যে যদি ছরাজাই সরিয়া যায় তাহা হইলে আমার এ কার্য্য অক্যায় হইবে না। আর যদি আমার পুদ্র হয়, এ না মরে, আমার পুদ্র হইতে ইহার মৃত্যু হইয়া বিপরীত হইবারই বা আশ্চর্য় কি ? যে হেতু "দেবকীর অক্টম গ্র ভোমার হন্তা হইবে"

বিপর্যায়ো বা কিং ন স্থাদাতি ধাতু তুরতায়া। উপস্থিতো নিবর্তে নির্তঃ পুনরাপতেৎ ॥৩৭॥ অগ্রের্যথা দারু বিয়োগযোগয়ো রদৃষ্টতোহমুদ্ধনিমিত্তমন্তি।

এবং হি জ্বন্ডোরপি ছব্বিভাব্যঃ শরীরদংযোগবিয়োগহেতুঃ ॥ ৩৮ ॥

এবং বিষ্যা তং পাপং যাবদাত্মনিদর্শনং। প্রয়ামাদ বৈ শৌরিবছ্মানপুরঃসরং ॥ ৩৯ ॥

#### व्यिथतयामी।

উপস্থিতো মৃত্যুরয়ং তাবল্লিবর্ত্তে নির্ত্তঃ পুনঃ কালান্তরে আপতেচেৎ নাপরাধো মমেত্যর্থঃ । অথবাদ্য মৎ পুঞান্পস্থিতো মৃত্যু-রস্যা বধাদেবা নিবর্ত্তে স পুনরনৈন মল্লেণ উবেদেবেতি । বলা গতিধ কু হু রত্যয়েত্যস্য প্রপঞ্চ উপস্থিত ইতি ॥ ৩৭ ॥

প্রাণিনামদৃষ্টঞ হবিতর্কামিতি সদৃষ্টান্তমাহ অমেরিতি। ঘনের বৃক্ষান্ প্রদহন্ বহিং সন্নিহিতানপি বৃক্ষান্ পরিত্যজ্য কদাচিদ্বর্দ্ধানপি দহতি প্রামে গৃহান্ বা এতস্য প্রাণ্যদৃষ্টব্যতিরেকেনান্যৎ কিঞ্জিয়ামকং নান্তি যথা এবং জ্ঞাে জ্ঞামরণয়ােরপি হেতৃছবিভাবাঃ অচিস্তাঃ ॥ ৩৮ ॥

যাবদাত্মনিদর্শনং স্বপ্রজ্ঞাবধি বিচার্য্য ॥ ৩৯ ॥

#### বৈষ্ণৰভোষণী।

ত্ত্ব লোকৰন্তনকীকৃত্য ব্যাখ্যা। স্থৃতা ইত্যাদিকং মৃত্যুৰ্বেত্যাদিকঞ্চেত্ৰ সম্বধ্যতে। কিছ্তবং নঞা সহ তং বিনাচ বোল্যতে। বাশন্সোত্ৰপক্তাহিছাং। তত্ৰ নঞা বিনা স্থৃতা ইত্যাদিনা বোল্ডিং তেন সহ তু বিপৰ্য্য ইত্যাদিনা। অত্ৰ বা শন্ধ: কটাক্ষ ইতি-জেনং। যদা স্থৃতা নে যদি জান্তেন্ন্ মৃত্যুন্চ ন ত্ৰিষ্কেত তদা যদ্ভাবি তদ্ভবতু। যদি শন্তেন লদ্ধপক্ষান্ত-বেহণি স্থৃতা যদি লান্তেন্ন্ মৃত্যুন্চ ন ত্ৰিষ্কেত তদা ন কিঞ্চিদ্নায়াং স্থৃতা যদি লান্তেন্ন্ মৃত্যুন্চ তং পূৰ্বং কথঞ্চিন্তি্ৰয়েত তদাপ ন কিঞ্চিদিতি। স্থৃতা ইত্যাদি বথাস্থিত পক্ষেহণি বিপৰ্য্যন্তা বা কিং ন স্যাদিতি সরলাদ্বিংং যোজনা। প্রদান্ন দ্বা কদা তত্তাহ স্থৃতা ইতি তত্ন্চ,বিপর্যন্তো বা কিং ন স্যাদিতি॥ ৩৭॥

হি এব। এবমেব জন্তো: প্রাণিমাত্রস্যাপি। হেত্রদৃষ্টং হর্জিভাব্য:। কেনাদৃষ্টেন কস্য কদা কিং স্যাত্তত্তির্মশক্যমিত্যর্থ: ইতি কর্মশক্তেরপি হর্জিতর্ক্যতন্ম মহালকাদপ্যস্য মৃত্যুঃ সম্ভবেদেবেতি ভাব:॥ ৩৮॥

ৰাৰদিত্যহো তাবত্যপি সম্ভ্ৰমে এতাবতী প্ৰতিভেতি ভাব: পাপমপি বহুবাদরপূর্ব্বকং পূজ্যামাস স্বত্যাদিনা সন্মানিতবান্॥ ৩৯॥

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ধাতু:। এবঞ্চ সতি উপস্থিতঃ কংসদ্য হন্তাদেবকীমৃত্যু নিবির্তেত। তথা সংকর্ত্ক পুতার্পণ প্রতিজ্ঞরা নির্ত্তাহণি কংসদ্য মৃত্যুঃ পুনরাপতেৎ প্রাণ্ডো ভবেৎ॥ ৩৭॥

মচিন্তিত মেতরাসম্ভবং। যতঃ প্রাণিনামণ্টং ছবিতর্কামিতি সদৃষ্টান্তমাহ। অপ্লেবনে বৃক্ষান্ প্রদহতো দারুণো যৌ বিয়োগযোগৌ কদাচিৎ সন্নিহিতস্যাপি বিয়োগং কদাচিত্রিপ্রকৃষ্টস্যাপি বোগঃ তয়োরদৃষ্টতোহনাল্লেতি বৃক্ষাণাং ভংগাদৃষ্টমেব কারণমিত্যর্থঃ। এবমেব দরীরাণাং সংবোগ বিরোগরো র্জন্মরপরো র্ছে জু বিভাব্যাহ্ বিচিন্তাঃ॥ ৩৮॥

ষাৰৎ বৎ প্ৰমাণকং আত্মনা বৃদ্ধা নিদৰ্শনং জ্ঞানং বত্ৰ তল্বপা স্যান্তপা বিমৃষ্য তং পাপং কংসং পৃত্ৰধামাস বহিস্তভাব ॥ ৩» ॥

এই আকাশবাণী স্পাই শুনা গেল, বিধাতার গতি অমূখা হয় না, অতএব একণে অপত্য অর্পণ করিতে অঙ্গীকার করাই সৎপরামর্শ, এরূপ করিলে উপস্থিত মৃত্যু আপাততঃ নিবৃত্ত হইবে, এখন নিবৃত্ত হইয়া যদি কালাস্তরে পুনরায় আগত হয়, তাহাতে আমার অপরাধ নাই ॥ ৩৭ ॥

অধিকস্ত যেমন অগ্নির কার্চ সংযোগ বিয়োগের কারণ অদৃষ্ট ব্যতীত অস্ত আর কিছু হয় না অর্থাৎ বনে অথবা গ্রামে অগ্নি উদ্ভূত হইয়া দাহ করিতে করিতে কদাচিৎ নিকটস্থ ব্রক্ষ অথবা গৃহাদিও পরি-ত্যাগ করিয়া দুরস্থ বৃক্ষ ও গৃহাদি যে দাহ করে তাহাঁর হেতু যজপে অদৃষ্ট ভিন্ন অভা নহে, তেমনি প্রাণিদিগের শরীর সংযোগ বিয়োগের অর্থাৎ জন্ম মৃত্যুর কারণ অদৃষ্ট মাত্র, তঞ্চত্যীত অভা নহে ॥০৮॥

হে রাজন্! যত দূর পর্যান্ত আপনার প্রজ্ঞার গতি, তত দূর পর্যান্ত এবন্ধি বিবিধ •বিবেচনা করিয়া বহুদেব বহুমান পুরঃসর সেই পাপান্ধা কংসের পূজা করিলেন ॥ ৩৯ ॥

প্রত্যে প্রবাদনা স্থেতি জ্বং নিরপত্রপং। মনসা দ্য়মানেন প্রহসন্ পুনরব্রবীৎ। ৪৮॥ নহস্তাত্তে ভয়ং সৌন্য যদাগাহাশরীরিণী। পু্জান্ সমর্পয়িষ্যে হস্তা যতন্তে ভয়মুখিতং॥ ৪১॥ প্রিক্ত উবাচ॥

স্থহৰধানিবৰতে কংসন্তৰাক্য সাৰবিং। বস্তুদেবোহপি তং প্ৰীতঃ প্ৰশস্য প্ৰাবিশলা হং॥ ৪২॥

#### শ্ৰীধরস্বামী

ত্য্য বিশ্বাসায় বিক্ষিত মুখান্ডোজ: প্রহসন্ত্রবীৎ ॥ ৪০ ॥

যদ্যথা অশরীরিণী বাগাহ তথাহি নিশ্চিতং অস্তা: সকাশাত্তে তন্ত্বং নান্তি মতঃ বেভ্যঃ পুজেভ্যঃ তে ভরমুখিতং সঠমোহত্তে-ত্যুক্তে: অস্তোস্তাপেক্ষয়া সর্বেহ্পাষ্টমা ভবেয়ুরিত্যুক্তান্ তান্ অস্তাঃ পুজান্ সমর্পন্নিয়ে॥ ৪১॥

নিববুতে নিবুত্ত:। তথাকো সার উপপত্তিস্তবিৎ ॥ ৪২ ॥

# বৈষ্ণবতোষণী।

ততক্ষ ক্রং নির্দর্যপি তং পুনরত্রবীৎ ইদমত্রবীদিতি পাঠঃ কচিৎ। প্রত্যাগ্রবদনাস্থোজা সদ্যো বিক্সিতপন্মবৎ প্রসাদিত-মুখঃ সন্ প্রহসন্। প্রসার্য্য বদনাস্থোজমিতি পাঠঃ স্পষ্ট:। এবং বিশাসায় তং প্রত্যান্মনোহস্তঃপ্রসাদো বোধিতঃ। বস্তুতস্ত দ্র্মানেন মনসা বিশিষ্টঃ॥ ৪০॥

সৌম্য হে শাস্তপ্রকৃতে অন্তঃপ্রসাদবোধনার্থমেব পূর্ব্বদত্র শ্লেষার্থাংশি ন স্পষ্টঃ। যদ্বা অত্রাণি ভন্ন জন্মনা সৌম্যন্তেনচ বীরবভাবাত্যয় এব দর্শিতঃ। পূল্রানিতি চ্ছলেনাকার প্রশ্লেষাং যেভ্যন্তবাভয়ম্থিতং ষেভ্যো ভন্নং নাস্তীতি বিচারসিদ্ধং তানেব সমর্পরিষ্যে নতু যন্ত্রান্তমিতি। যদ্বা যতো যান্তিক্রম্য কন্মাচিত্তব ভন্মথিতং ভবিষ্যতি তানেব সমর্পরিষ্যামি নতু ভন্নদানে
প্রবৃত্তং তমিত্যর্থাঃ। নহাস্থান্তে ভন্নং সৌম্য যদ্ধি সাহাশরীরবাক্ ইতি পাঠঃ ক্রচিং। উথিত মিত্যনাগতমিতি ক্রচিং॥ ৪১॥

স্থানত বিশেষস্য ভণিস্থা বধাং। স্থান্ত প্রাণেশ্য মধ্যক্ষা: সৌহাদমপ্যক্তীতি বধ নিবৃত্তি হেতুং তদ্ভাবনা বিশেষমপি স্বচন্তি। কিঞ্চ তদধান্ত্রিক্তা স্থান্ত্রামপি বধান্ত্রিক্ত ইতি স্বচন্তি দেবকাদিভিঃ সহ যুদ্ধাপত্ত্যা তেখাং বধ সম্ভবাং। স্বান্ত্রিক কিচং পাঠ অদ্ধাক্তেতি তৈর্ব্যাখ্যাতং তত্ত্রোপপত্তিস্ক্ততেত্যর্থ:। সারশক্ষোহ্ বলবাটী বলঞ্চ বচনস্থ যুক্ততেত্যর্থ:। যদা সারং সারত্বং অব্যভিচারিত্বমিত্যর্থ:। প্রশক্ত পরমো বৃদ্ধিমান সার্থাহী ক্রপাশীলোহসীত্যেবং

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

স্বাস্থঃ প্রসাদ জ্ঞাপনার্থং প্রত্যপ্রং স্বিদ্ধীক্ষতং বদনাস্তোজং যেন সঃ দ্রমানেন সন্তাপপীড্যমানেন মনসা যুক্তঃ ॥ ৪০ ॥ অস্যাঃ সকাশান্তে ভরং নাত্তি কিম্বস্যা অষ্টমাৎ পুত্রাৎ বন্দথা। অহন্ত পুত্রানষ্টাবের সমর্প রিষ্যে যতঃ পুত্রান্তে ভরম্থিতং স বা বধ্যভাষিত্তি ভাবঃ ॥ ৪১ ॥

বাক্যস্য সারঃ সত্যত্তং বস্থদেবো মিথ্যা ন জ্রতে ইতি সর্ব্বধা জ্বানাতীত্যর্থ:। তবেদং ধর্মশীলত্বং ভূবি প্রকটীভূতমিতি প্রশস্য ॥

পরে যদিও মনোমধ্যে অতিশয় খিন্ন হইলেন, তথাচ বিখাদার্থ বদন কমল বিক্ষিত করিয়া হাদিতে হাদিতে দেই নিল্লুজ্জ ক্রুরকে সম্বোধিয়া পুনরায় বলিলেন ॥ ৪০ ॥

হে সৌম্য! অশরীরিণী বাণী যাহা কহিলেন আমি নিশ্চয় বলিতেছি, তাহা হইতে তোমার সেরপ ভয় সম্ভাবনা নাই। আকাশ বাণী কহিলেন দেবকীর অফম গর্ত্ত তোমার হস্তা হইবে, অন্যান্যাপেশায় সকল পুত্রই অফম হইতে পারে, ভাল, আমি অঙ্গীকার করিতেছি, যে সকল পুত্র হইতে তোমার ভয় উথিত হইল, জিমিলে তাহাদের সকলকেই তোমার হস্তে সমর্পণ করিব ॥ ৪১॥ শুক্দিব কহিলেন রাজন্! কংস বহুদেবের উজি যুক্তিযুক্ত বোধ করিয়া ঐ কথায় হৃহদ্ বধ

অথ কাল উপাবৃত্তে দেবকী সর্বাদেবতা। পুত্রান্ প্রস্থার চাক্টো কন্যাঞ্চৈবাসুবৎসরং।
কীর্ত্তিমন্তঃ প্রথমজং কংসায়ানকত্বনুভিঃ। অর্পন্নামাস ক্ষেত্রণ সোহনৃতাদতিবিহ্বলঃ॥ ৪০॥
কিং তুঃসহং মু সাধুনাং বিভূষাং কিমপেক্ষিতং। কিমকার্য্যং কদর্যাণাংষ্ঠ্রন্তাজং কিং ধৃতাজ্বনাং।

#### धीशतयामी।

প্রস্তিকালে প্রাপ্তে সর্বা: সর্বাত্মা ভগবান্ দেবতা যস্তা: সা তথা সর্বাদেবতাময়ীতি বা ভগবদাশ্রত্বাং ॥ ৪৩ ॥ মৃত্যবে পুত্রং কথমর্পিতবানিত্যপেক্ষায়ামাহ কিং হু:সহং স্থ ইতি । সাধুনাং সত্যসন্ধানাং পুত্রলালনস্থাপেকা কথং ত্যকে-

#### বৈক্ষবতোষণী।

স্তত্ত্বা প্রকর্ষেণ গীতবাদ্যাদিনাবিশৎ। ইদমণি তদ্বিশাসজননার্থমেব ॥ ৪২ ॥

অথেতি মাঙ্গল্যে কালে উপাবৃত্তে কতিপন্নকালে গতে সতীত্যর্থ:। যুবৈব বস্থদেবোভূদিহানাভ্যাগতাং জন্মমিত্যানি প্রাবিষ্ণু-প্রাণোক্তে:। বৃদ্ধৌ তবাদ্যপিতরাবিত্যানি প্রীহরিবংশেহপ্যক্রেরাক্তরহুসারেণ প্রান্ধো বার্দ্ধক্যান্তিকে শ্রীভগবনাবির্ভাবাং। সর্বেবাং দেবতাদীনামপি দেবতেতি মহা ভগবছুক্তিত্বাং। তথাচ বিষ্ণুপ্রাণে ত্বং পরা প্রকৃতিঃ স্ক্রেত্যাদি বহুতরং সর্ব্বেবিহৃত্ব স্তোক্রং। অন্তর্গ ভাবঃ। বস্থদেব শব্দেন তাবদ্ভগবং প্রকাশহেত্যু শুদ্ধ সত্ত্মচূতে। যথোক্তং চতুর্থে প্রীশিবেন। সর্বং বিশুদ্ধং বস্থ-দেবশন্দিতমিতি তদ্ধপ এবান্তরং শ্রীমানানকত্মভূতিঃ। যথোক্তং নবমে। বস্থদেবং হরেঃ স্থানং বদস্ত্যানকত্মমূভিমিতি অতঃ শ্রীদেব-ক্যপি তং সম্পত্তির্দ্ধবিতি কল্পাং স্কুভ্রোং অন্তবংসর্বের প্রত্যান্দেকেকশ ইত্যর্থঃ। তচ্চ সত্ত্ব প্রীভগবদবতারার্থং॥

কীর্ত্তিমন্তমিতি মর্নীচিত উৎপন্নত্বেন প্রাক্তন তৃতীয় জন্মনি তেখা মেতদাদীনি নামানি স্বরাদীনি চেতি ষড্গর্জানয়নে স্বামি-ভির্বাধ্যাস্যতে। যদা যদা তে স্কুতলত আনীতা ন্তদা জীক্লফেনৈব কীর্ত্তিমদাদি নামানি কৃষা বৈকৃষ্ঠং প্রস্থাপিতা ইতি জ্ঞেয়ং। ন্বমে চাত্রচ শ্রীবস্থাদ্যবস্থায়ামেব তথামুবাদাং। সঃ কৃতপ্রতিজ্ঞঃ অতিবিহ্বসঃ প্রমতীতঃ॥ ৪৩॥

হু বিতর্কে কিং হু:সহং অপিতু সর্কমেবানাগ্রাসেন সহমিত্যর্থ:। এবমগ্রেছপি। অন্তব্যে:। তত্ত্ব সত্যসন্ধানামিতি প্রস্তুতোপ্যোগি-

#### শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবৰ্তী।

সর্কেষাং দেবাদীনামপি দেবতা ভগবনাত্ত্বাং পূজা। কন্যাং স্কভন্তাং অনুবংসরমষ্টস্থ বংসরেষিত্যর্থঃ বিভক্তার্থেছবায়ীভাবঃ। কন্যাঞ্চ কালে প্রতিবর্ষমিতি বীপ্পাতৃ ন ব্যাখ্যোয়া একৈক্মিন্ বর্ষ এবাষ্টপুত্রোৎপত্তিপ্রসক্তঃ। অত্র কারণমগ্রে ব্যাখ্যাস্যতে॥ কীর্ত্তিমন্ত্রমিতি জন্মদিন এব ক্তনামক্রণমিত্যর্থঃ॥ ৪৩॥

নষন্তান্তিভত্তমাং নাম স্বাক্ষাদেব প্ত্ৰধঃ কথং সোচ্ব্যস্ত্রাহ কিং ছঃসহমিতি। নষ্টম্যেকং পূজং স্বভার্যাপ্রাণ বক্ষার্থং সমপ্রভ্তমাং নাম পূজান্ সমপ্রিয়েইস্যা ইতি নিখিল পূলাপণপ্রতিজ্ঞাং তদা কংস্যাজ্ঞাং বিনৈব কথমকরোং গৃহস্থ্য ত্যা পূজ্যাত্রোপেক্ষা ন যুজ্যতে তত্রাহ বিহুষামিতি বস্থদেবং থলু ক্মিলোক ইব নাবিদ্বান্তো ভক্তি জ্ঞান বৈরাগ্য মহোদ্ধেত্ত্য কিং পুলৈরিতি ভাবং। নম্বভাদৃশ্যা স্বয়মেব বধার্থমানীত পূজ্যা ত্যা কংসং কথং পূজ্ঞং হন্তমর্ভ্তু কিমত্রাপ্যার্জ চিন্তো ন ভবেৎ তত্রাহ কিমকার্য্যমিতি। নমু তহি সর্ব্ধদোর পরিহারায় বস্থদেবো গার্হান্ত্রামেব কিং ন তত্যাক্ষ তত্রাহ হস্তান্ত্রনিতি তেন তদ্যার্হাণ্য মিপি ত্যক্তং শক্যমেব কেবলং মৎপুল্লবং প্রাপ্যাতো হরে মুখিং কদা ক্রম্যামীতি মনোর্থেনেব গৃহে স্থীয়তে। অতএব শ্বত আ্রা হরিঃ পুল্লরূপী বৈ স্বেবাং তেনৈব হেতুনা পূলাপ্তরেম্বপি ন মিহাতে শ্ব অন্তমপুল্লয় সময়ঃ শীঘং ভব্যিত্রুংকণ্ঠরৈব প্রতিবর্ধমেবিকো গার্ত্ত আধীয়তেশ্ব বালবধে স্বস্যাহ্যমন্ত ক্লকণ্ণাপন্থীকারণ্ডেত্যাদি ত্রমব্ধেয়ং॥

হইতে নির্ত্ত হইল। বহুদেবও প্রীত হইয়া তাহার প্রশংদা করিতে করিতে আপনার আলরে প্রবিষ্ট হইলেন ॥ ৪২ ॥

তদনস্তর ভগবদাশ্রয়ত্ব হেতু সর্বদেবময়ী দেবকী প্রসূতি কাল প্রাপ্ত হইলে বংসরে একটা করিয়া জামে আট তনয় ও এক তনমা প্রসেব করিলেন। বস্তদেব মিধ্যাকে অতিশন্ন ভন্ন করিতেন, এ কারণ বিহলে হইয়া অঙ্গীকৃত পালনার্ধ প্রথমোৎপন্ন কীর্তিমন্ত সন্তানটী গ্রহণ পূর্বক অতিকটে কংসহত্তে সমর্পণ করিলেন ॥ ৪০ ॥

**८६ ताक्न्! बरुरम्ब शिका इहेग्रा खर्मार मृज्य इरछ कि ध्यकारत शूळ** ममर्शन कतिरणन थ एरल्

দৃষ্ঠ্য সমন্ধং তচ্ছোরেঃ সত্যে চৈব ব্যবস্থিতিং। কংস স্তুষ্ঠমনা রাজন্ প্রহুসন্নিদমত্ত্রবিং। প্রতিষাতু কুমারোহয়ং নহুস্মাদন্তিমে ভয়ং। অইমাদ্যুবয়োঃ পুর্ভাশ্মভুরেমি বিহিতঃ কিল। তথেতি স্তুমাদায় য্যাবানক সুন্দুভিঃ। নাভ্যনন্দত ত্রাক্যমসতোহবিজিতাল্পনঃ॥ ৪৪॥ নন্দাদ্যা যে ব্রজে গোপা যাশ্চামীয়াঞ্ধ যোষিতঃ। র্ফয়ো বস্থদেবাদ্যা দেবক্যাদ্যা যতুন্ত্রিয়ঃ॥৪৫॥

#### औधत्यामी ।

ত্যত আহ বিহুষামিতি ভগবানেৰ তবং নাজদিতি জানতামিত্যৰ্থ:। নমু স্বয়ং নীতে সতি কথং বালং হস্তাদিতি মন্থা নীতবান্ নেত্যাহ কিমকাৰ্ব্যমিতি। নমু দেবকীপুলং কৰা তত্যাল ইত্যুত আহ মুন্ত্যুজমিতি চিন্তে ধৃত আথা হরিবৈ তেখাং॥ ৪৪॥ কংসম্ভ শান্তিদে ৰকাৰ্য্যামুখ্যণা ন ভবতীতি নারদক্ত প্ৰত্যুক্ষানং তদাহ নন্দাদ্যা ইতি ক্রেণে॥ ৪৫॥

# देवकवट्यायनी।

ত্বান্তদীর ধর্ম বিশেষ এব নির্দ্ধিশ্রতে নতু তন্মাত্রত্বেন সাধুর্মিতি। লালনেচ্ছাতু স্নতরামেব নাজীত্যভিপ্নারেণাবতাররতি পুত্রলালনেতি। বিহুষাং কিমপেক্ষিত্মিত্যনেন হস্তাজমিত্যাদেং পৌনক্ষ্যমাশ্ব্যাবতাররতি নত্ন দেবকীতি। বহা সাধ্নাং সর্ব্ধ সহত্ব দার্ট্যার্থং বিহুষামিত্যাদিকং দৃষ্টান্তক্মা ক্ষেয়ং। অত্যোৎপ্রোক্ষা হস্তাজ্বয়েরপ্রাপ্তপ্রাপ্ত বিষয়ত্বেন ভেদং ক্ষাঃ॥

সমত্বং পুত্রার্পণেন শত্রো মিত্রেচ তুল্যতাং সত্যে প্রতিশ্রুত এব ব্যবস্থিতিং নিষ্ঠাঞ্চ দৃষ্ট্। অন্ধান্মম ন কিঞ্চিলপানিষ্ঠং ভবিষ্যতীতি বিভাব্যেতি ভাবং। যদা সমত্বনিতি বিষ্ণতারাঃ শ্বতাত্মতারা শাসুবাদঃ যোহি বিদ্যান শ্বতাত্মা চ ভবতি স সমো ভবতীতি সত্যে ব্যবস্থিতিয়িতি সাধুতারাঃ। চতুর্পন্ত কংসপতমেবেতি নামুদিতং। প্রহাসঃ সম্ভোষাৎ। হে রাজন্মিত্যাশ্চর্যেণ সম্বোধনং 

।

ৰ্বন্ধোরিতি অন্যস্যাং জাতাদপীতি ব্যাবর্ধিতং। বিহিতো বিধাত্রা। কিলেতি আকাশবাণ্যাঃ প্রসিদ্ধিং দ্যোতরতি তরৈবাঞ্জাপ্ত ইতি বা ৪

তথেতি তথেত্যুক্তে তথা । তথা শব্দ্যাচ ভবান্ যথা দিশতি তথৈবাধিত্যর্থ: । নাভ্যনন্দত ন প্রতীয়ায় কুতঃ অসতঃ বল্দ্য মুবৈব সৌর্দ্যাং প্রকটয়তঃ অবিজ্ঞিতাত্মনঃ অন্থিরচিত্তস্যেত্যর্থ: ॥ ৪৪ ॥

নন্দাদ্যা ইতি ত্রিকং। যেচ বৃহহনস্থা একে বাশ্চ তত্র বোষিতঃ শ্রীষশোদাদ্যাং। উক্ত সমুচ্চরার্থেছিরং চ শব্দং সর্ব্বর সম্বধ্যः। দ্বিতীয়শ্চশব্দং কৈমৃত্যদ্যোতনার্থমপ্যর্থে। কিং বক্তব্যং তে তাশ্চেতি। অমীষাং গোপানাং বোষিতামপি সম্বন্ধিনো বে ভ্ত্যাদ্যা

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

সমত্বং পুত্রেহপি মমত্বাভাবাৎ সর্ব্বত্র সাম্যং ॥ ৪৪ ॥

নন্দান্য ইতি প্রক্রাক্তঃ। যথা প্রীনারদোক্তি তথাহি অবতরিষ্যতঃ স্বাভীষ্টদেবস্য শীঘ্র দর্শনেন স্বমানন্দরিত্বং শীঘ্রং তৎপ্রাহ্রভাব কারণং কংস কর্ত্ক বৈষ্ণবদ্ধাহং প্রবর্ত্তান দ্বানানন্দরিত্বং তেন ভক্তলোহেলৈর কংসঞ্চ ঘাতরিত্বং কংসদাস্যমান-বেদানামণি তেরামভিজ্ঞ ভক্তানাং ভগবদাবির্ভাবনিশ্বর জ্ঞাপকার স্বদ্ধৈ প্রীত্যতিশয়মাশীঃ সহপ্রক্ দাস্যমানানাং ভগবদিদৃশ্যানন্দাঞ্চ প্রবর্ত্তান কর্মান্ত ভবিতা নবেতি সন্দিহানো দেবকীবস্থদেবো সন্দেহোচ্ছেদনেনানন্দসিত্বর্ মজ্জয়ন্ তেনের বন্ধন-ক্রেশাংকর্ষমণি হর্ষবিন্দেরং মানরন্ স্বতকেছণি স্বন্ধিন সন্তোষরন্ মিধ্যাসোহার্দাবিস্থাবেশ সাহাগকংসমণি স্বাস্ক্রী ক্র্মারদ্যো

এমত আশস্কা করিতে পার না, সত্য প্রতিজ্ঞ সাধু পুরুষদিগের তুঃসহ কি ? বিধান্ লোকেরা কোন্
বস্তুর অপেক্ষা করিয়া থাকেন ? কুৎসিত ব্যক্তিদেরঅকার্য্য কি ? আর যাঁহারা চিত্তে ভগবান্ হরিকে
ধারণ করিয়াছেন 'তাঁহাদের স্ক্রাক্ষই বা কি ? যাহা হউক, বস্থদেবের ঐরপ সাধুষ এবং সত্যনিষ্ঠা
দেখিয়া কংস মনোমধ্যে যথেই তুই হইল এবং হাস্য করিতে করিতে কহিল তুমি এই পুত্রুকে লইয়া
যাও, ইহা হইতে আমার ভয় নাই, তোমাদের অউম তন্য হইতেই আমার মৃত্যু বিহিত হইরাছে,
জমিলেই তাহাকে আনিয়া দিও। এতৎ শ্রবণৈ বস্থদেব তাহাই করিব বলিয়া পুত্রুটা লইয়া গমন
করিলেন 'কিন্তু অন্বং ও অজিতেন্তিয়ে কংসের ঐ বচনে তাঁহার বিশ্বাস না হওয়াতে আন্তরিক
আনল জুমিল না ॥ ৪৪ ॥

(व् ताक्रन् भतीकिए! खक्रभूद्र एव नकल नन्मानि (भाभ ७ डांश्रांस्त्र एव नमछ रवाविए धवः बक्र्यन-

সর্বে বৈ দেবতাপ্রায়া উভয়োরপি ভারত। জ্ঞাতয়ো বন্ধু হাজদো যেচ কংসমসূত্রতা: ॥ ৪৬॥ এতং কংসায় ভগবান্ শংসয়ামাস নারদ:। ভূমে ভারায়মাগানাং দৈত্যানাঞ্চ বধোদ্যম:। ঝাফে বিনিগমে কংসো যদূন্ মন্ধা হারানিতি। দেবক্যা গার্ডসম্ভূতং বিষ্ণুঞ্চ হাবধং প্রতি ॥ ৪৭॥ দৈবকীং বহুদেবঞ্চ নিগৃহ্য নিগড়ৈ গুঁহে। জাতং জ্ঞাতমহন্ পুজাং ত্যোরজ্ঞনশক্ষয়া।

दी रत्रयामी।

উভরোর্সস্থাদের নন্দকুলরো: ॥ ৪৬ ॥ ব্যোদ্যামং দেবকুত্যিতি শেব: ॥ ৪৭ ॥

#### বৈষ্ণবতোৰণী।

ছেচেন্তার্থ:। বৃষ্ণয় গুরুপদক্ষিতা যাদবা: দেবতাশব্দেন শ্রীষ্ণগবংপার্যদা অপ্যক্রা:॥ ৪৫ ॥

প্রারশস্থ তার বহরু কোবাঞ্চিকৈডাছাং। হে ভারতেতি যথা ভরতবংশে ভবংপিতামহাদরো দেবতা ইতি। ভোজাদর জনীয়া ছপি দর্মে দেবতাপ্রারা ইত্যাহ বেচেতি কংসং প্রতি জহুত্রতা ভক্তারমানাঃ জ্ঞাতরঃ সপিগুঃ বন্ধবঃ সম্বন্ধিনঃ স্কৃষ্ণা মিত্রাণি ভগ-বান্ সর্বজ্ঞঃ কংসন্থ শাস্ত্যা শীত্রং প্রীভগবদবতারো ন স্থাদিত্যাদিকং চিস্তরন্ধিত্যর্থঃ। যথা পরম দরালুতা প্ররণে নারদোজিরিরং শীত্রং ভগবদবতারে কারণোখাপনেন জগতামেব হিতাচরণাং অভন্তঃ প্রতি অস্থান কার্টোতি ভাবঃ॥ ৪৬॥

শংসরামান বার্থে নিচ্। শশংস। তহিশেবঃ শ্রীহরিবংশে। ত্রিপিষ্টপাদাপতিতো মধুরোপবনে স্থিতঃ। প্রের্থামান কংলার স দৃতং ম্নিপ্রবং। ন দৃত্ত কথরামান নারদাগমনং নূপে। স নারদভাগমনং ক্রা অরিতবিক্রমঃ। নির্জগামান্তরঃ কংসঃ বপুর্যাঃ পদ্মদোচনঃ। স দদর্শতিথিং প্লায়াঃ দেবর্বিং বীতক্রমং। তেজ্বসা জ্বনাকারং বপুরা স্ব্যবর্চনং। সোহভিবাদ্যর্বরে তল্মৈ পূজাঃ চক্রে বথাবিধি। আসনকারিবর্গাভং বিস্ত্রোপজহার সঃ। নিবসাদাসনে তন্মিন্ স বৈ শক্রসথো মুনিঃ। উবাচ চোগ্রসেনভ স্থতঃ পরম কোপনং। পূজিতোহহং দ্বা বীর বিধি দৃষ্টেন কর্ম্বণ। গতেত্বেবং মম বচঃ প্রর্তাং গৃহতাঞ্চ বৈ। অর্ম্বত্য দিবো লোকানহং ক্রেম্ব প্রোগমান্। গতঃ স্ব্যাসথং তাত বিপুলং সেম্বপর্বতং। সোহহং ক্যাচিদ্বোনাং সমাজে মেন্ত্রমূর্মনি। সংগৃহ্ব বীশাং সংস্কাম-সচ্ছং ক্রেম্বণ সভাং। তত্র মন্ত্রয়তামেবং দেবতানাং মরা শ্রুতং। ভবতঃ সান্ধ্রপ্রভেহ বধোপারঃ স্থানকণ ইতি। পন্মনোচন ইতি বিশ্বরেনোং সূর্ব লোচন ইত্যর্থঃ ॥ ৪৭ ॥

ৰবেরিতি বুশ্নকং। ইতি অনেন'প্রকারেণ বিশেষেণ পুন নির্ভিশকাপগমাদিনা পুরীতো নির্গমে সতি ৰবেং সাক্ষান্তভরি-

### 'শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

ষুনিরাপত্য কংসং প্রতি রহস্যমাহ নন্দাদ্যা ইতি ঘাড্যাং ॥ ৪৫ ॥

কেষাঞ্চিকতাত্বাৎ প্রায়শক্ষপ্ররোগঃ। ভা তামদী কান্তিজন্যাং রতেতি কংগ সংবাধনং। উভরো র্বস্থদেবদক্রবরোঃ শংসরা-দাস শশংস ॥ ৪৬ ॥

বিষ্ণুঞ্চ স্বৰণং প্ৰতীতি পূৰ্ব্যক্ত বিষ্ণুদে বিক্যামাবিষ্ক্ র স্বাং বধিব্যতীতি নারদেনোক্তং তত্তৎ দর্ব্ব এব ভ্রুপ্রক্তেত্যপি জ্বেরং। সম্প্রদানি বিষ্ণুত্তজ্বেরা॥ ৪৭ ॥

কংসাদীনাং ছর্জনানামেভর চিত্রমিত্যাহ মাত্রমণি। কিমুত পিতরমিত্যেবং বর্ণাপূর্কং ওক্ষাধিক্যং ॥

जानन् नात्रमयहनार ॥

ৰাদি যে সকল বৃষ্ণিবংশ, দেবকী প্রস্তৃতি যে সমুদায় যতুন্ত্রী ॥ ৪৫ ॥

শপর বহুদেব ও নন্দ এই উভয় কুলের যে যে জাতি হৃহদ্ বন্ধু যাহারা কংসের অনুগত সক-লেই দেবতা তুল্য ছিলেন॥ ৪৬॥

শী-সমরে দেবর্ষি নারদ কংসের নিকট গিয়া ঐ কথা কহিয়া আসিলেন, আর দৈত্যগণ ভূমির ভার বরূপ হওয়াতে তাহাদের বধার্থ দেবকৃত উদ্যম হইবে, তাহাও অবগত করাইলেন। দেবর্ষি এই কথা বলিয়া নির্গত হইবাসাত্র কংস বছদিগকে দেবতা এবং দেবকীর গর্মন্ত সন্তানমাত্রকে আপ-নার নিধন কারণ বিষ্ণু মনে করিয়া ॥ ৪৭॥

তৎক্ষণাৎ ৰহদেৰ ও দেবকীকে গৃহ সংখ্য শৃত্যল বন্ধ করিয়া রাখিল এবং বিষ্ণু আশকীয় তাঁহা-

মাতরং পিতরং প্রাতৃন্ সর্বাংশ্চ স্কলঃ সধীন্। দ্বন্তি হুস্তৃপো পূকা রাজানঃ প্রায়শ্যে ভূবি।
আদ্মানমিহ সংজাতং জানন্ প্রাথিকুনা হতং। মহাস্বরং কালনেমিং যত্তিঃ স ম্যক্ষণ্ত।
উত্তাসেনক পিতরং যত্তভাজাক্ষকাধিপং। স্বয়ং নিগৃত্ব বুস্তুলে শ্রসেনান্ মহাবলঃ॥ ৪৮॥
॥ \*॥ ইতি প্রভাগবতে সহাপ্রাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং দশমক্ষে প্রথমো-

इथार्यः ॥ \* ॥ > ॥ \* ॥

# विधवचामी।

निगरेष: मृत्यरेग: अवरना विकृ उक्तका॥ १५॥

॥ \*॥ ইতি मन्द्रम व्यथमः ॥ \*॥

#### বৈষ্ণবডোষণী।

শ্বহৈ শক্ষাহাৎপব্যে। কিবা তেন তরিবারপক্সাশব্যা॥ মদা জ্ঞাদা স্বস্ত কংগল্ভ বধং প্রতি তদর্থং। বিষ্ণুক্ধ দেবক্যা পর্য্তে স্মাক্ নির্বেশ্য পরিপূর্ণতরাভ্তমাবিভূতিং। ভবিষ্যতাশি ভূতবিদ্ধিলাং সামীপ্যান্তরিদ্ধারণাদা। বদা গর্য্তে স্ভূত্বিস্য তং মদা। স্ভূতিমিতি পাঠোহশি কচিং। তল্জানঞ্চাদামইমোগর্ত ইতি পূর্ব্বোচ্জন সমুদিতা দৈত্যানাঞ্চ বংগাদামমিতি নারদবচনাদেব জ্বেং। তথাচ তত্ত্বে। তত্ত্বো দেবকী বা তে মধুরাবাং পিতৃষ্পা। বোহজা গর্তোহইন: কংস স তে মৃত্যুত্তবিষ্যতি। দেবানাকৈব সর্ব্বেং তিদিবক্ত গতিক সং। পরং রহজং বেদানাং স তে মৃত্যুত্তিবিশ্বতি। পরতোহণি পরস্তেবাং স্বয়ন্ত্রণ দিবৌকসাং। ততত্ত্ব তল্পকর্ত্বং দিবাং তে কথরামাহং। প্লাদাক স হি তে মৃত্যুত্তিপূর্বক তং স্মরেতি। তত্ত্ব পিতৃষ্বস্বেতি পিতৃস্বদ্ধেন স্বস্বেত্রণা প্রাক্তজন্ত্বন পোলতেতি কেচিং। নিগৃত্ব বদ্ধা নিজগৃহে। অজনেতি জীববজ্বনারহিত্ত্যাপি প্রাক্তজন্ত্বন শহরেতি কংসক্ত মৌচ্যং স্চিতং। কিয়া অজনাদ্বা শহ্ব তরা ॥

নম বালান মন কংস: কথং ন লজ্ঞতে তত্তাহ মাতর্মিতি মাত্রাদীনাং যথোত্তরং লিশ্বছেন ন্যুনতা মাতর্মিপ ছব্তি কিমুক্ত পিতর্মিত্যেবং হি নিশ্চরে। যতো বে অস্ন্ নিজ্ঞাণান্ এব তর্পন্তি ইত্যস্ত্প: রাজ্যাদিল্কা: তে মাত্রাদীন্ ছব্তি প্রার্থ ইতি তেহপি ন সর্বাইতি তম্ভাত্যভাগমন্ত্রিবক্ষা॥

বিশ্না নিজপক্তা জগৰ্যাপকেনেতি হননে সামৰ্থ্যমূক্তং। জানৱিতি ভূতপূৰ্বাঞ্চ তং স্মরেতি জীনারদ্বচনাদেব। পূর্বজ্ঞান্দ স্মরণাৎ॥

নচ কেবলং তৈ: সহ স্বপিত্রাপীত্যাহ উ্গ্রেতি। বহা ভোজান্যধিপমণি নিগৃত্ব হাহতিক্রম্য বা শ্বরং বৃভূজে যতো মহহলং সামর্থাং দৈত্যসেনা বা যক্ত স:। ভোজানীনাং যত্ত্যহেশি পৃথগুজি তেরাং তেরু প্রধানানামণ্যধিপ ইতি বিবক্ষা। শ্বসেনানিজি মাধুরাং তং পূর্বমেব তদম্জাতীক্বত্য বৃভূজ ইতি ন্যোতিতং॥ ৪৮॥

॥ • ॥ देखि धीनमम विश्वन्ताः देवकावरंजीयनाः धाथरमारुवादः ॥ • ॥

#### ক্রমসন্মর্ভ:।

प्तिजाथीया हेि **भार्य**प्तिज्ञार भक्षा खुत्रमशुष्तिक ॥ ८७ । ८१ । ८४ ॥

· म \* रेजि व्यानमारम व्यथमः ॥ \* ॥ > ॥ \* म

## এবিশনাগচক্রবর্তী।

শুরদেনাত্তরভারাপুরানপি # ৪৮ #

🛾 🕶 🗈 ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হুর্বিণ্যাং ভক্তচেতসাং। 🗑 দশমে প্রথমোহধ্যারঃ সক্তঃ সক্তঃ স্তাং 🗈 🕫 🗦 🗈 🕶 🗈

দের যেমন ২ পুত্র জন্মিতে থাকিল, অমনি বধ করিতে আরম্ভ করিল। হে রাজন্! মহীমগুলে প্রায় সুক ভূপতিমাত্রেই স্ব প্রাণের পরিভৃত্তি কামনায় মাতা, পিতা, জাতা, সমস্ত ভ্রুদ্ ও মিত্র পর্যান্তও হত্যা করিয়া থাকে। অপর পূর্বে বিফুক্র্কৃ যে মহাহ্রর কালনেমি নিহত হইরাছিল কংস আপনাকে সেই ব্যক্তি স্করণে উৎপদ্ধ জানিয়াই যতুদিগের সহিত বিরোধ আরম্ভ করিল। অপর নিজ পিতা উক্রেসন, যিনি যতু ভোজ ও অন্ধক বংশের অধিপতি ছিলেন, তাঁহাকে নিত্রহ করিয়া স্বয়ং সমুদায় শ্রদেন রাজ্য ভোগ করিতে প্রত্ত হইল ॥ ৪৮ ॥

। \* । देखि मन्दर्भ दोषम । \* ।

**শ্রিণ্ডক উবাচ** ॥

প্রাপ্ত বক চালুর তৃণাবর্ত মহাশনৈ:। মৃষ্টিকারিউ দিবিদ প্তনা কেশি থেলুকৈ:।

অন্যেশ্চান্তর তৃপালৈ বাণ ভোমাদিভিত্ত:। যদুনাং কদনং চক্রে বলী মাগধসংগ্রাঃ।
তে পীড়িতা নিবিবিশু: কুরু পাঞ্চাল কেকয়ান্। সাল্লান্ বিদর্ভান্ নিষধান্ বিদেহান্ কোশলানপি ॥>॥

একে তমসুরুদ্ধানা জ্ঞাতয়ঃ পর্তুপাসতে॥ ২॥

हर्ए वर्ष वर्ष वर्ष द्वार विका विकास विकास । मुखरमा दिखनः थाम सम्बद्धः अहक्कर ।

## धीधत्रयामी।

ষিতীরে কংস্থাতার দেবক্যা গর্ত্তগো হরি:। এক্সাদিভিঃ স্বতঃ সাচ সান্তিভেতি নির্প্যতে ॥ • ॥
বছ্ডিঃ দ ব্যক্ক্যতেত্যুক্তং তমেব বিরোধং প্রপঞ্চরতি। স্বর্য়া দেবকীগর্ত্তস্যান্যত্ত সঞ্চারেণ্ তগবতঃ প্রবেশং বক্তুং প্রদৰ্বেত্যাদিনা সান্তিত্তরেণ। মহাশ্নঃ অবাস্থরঃ ॥ > ॥

**अञ्चलकानाः अञ्चलक्ष्मानाः॥२॥** 

ধাম কলা তলেব সপ্তমোগর্ডো বভূব। কিং তদ্ধাম ইত্যত আহ ব্যনন্তমিতি হ বঁশোকবিবৰ্দ্ধনঃ আনন্দক্ষণস্যাবতীৰ্ণদাৎ হৰঃ

#### देवक्षवरकावनी।

প্রান্থতি বৃশ্বক তৈর্তিরে হেতৃ: বলীতি। নিভ্তং বিবিশু: তত্তবেশাদীনা হলিকগোপগ্রামের শুপ্তা ইত্যর্ব: ॥ > ॥

এক ইত্যর্কিক সম্প্রকানা:। চাতৃর্ব্যেশ বশীকুর্বস্ত:। বহা একে জক্তা: প্রীক্ষণবতারদর্শনরূপং স্বার্থমণেক্ষমাণা ইত্যর্ব:।
এতচাগ্রেংক র্যানে ব্যক্তং ভাবি। পর্যুপাসতে পর্যুপাসত॥ ২ ॥

্ হতেখিতি সার্ধকং। জাতং জাতমহরিতি পূর্বমুক্তং তে কতি হতা ইত্যপেকারামাহ হতেখিতি তে হি পুরা মরীচেঃ পূরাঃ দেবাঃ প্রীবন্ধণাপরাধেনাস্থর প্রাথা হিরণ্যাকপুতাৎ কালনেমেকৎপরাঃ ষড়গার্তা ইতি খ্যাতাঃ স্বং পরিত্যজ্য ব্রন্ধোপাসকাতে জাতা ইতি ক্র্মুক্ত হিরণ্যকিশিগোঃ পিতা ব্যান্ বধিব্যতীতি শাপং স্থলা প্রীদেবকী গার্তে যোগমারা ছারা প্রীভগবতা নিযোজ্য তৎ পিছ্কালনেম্যবভারকংসহত্তেন ঘাতিতা ইত্যাদিক্ষত্র প্রছিরবংশাত্যক্তমস্পদ্ধেরং যন্ত্রে হিরণ্যকিশিপোর্জাতা ইতি তেবামাখ্যানং তেনৈক্বাক্যমার কালনেমিকেত্রে তন্ধাদেব জাতা ইতি জ্বেরং জাতা ইত্যত্র পুত্রা ইত্যক্তক্তবাৎ ভারতাদিবু চ তথা

# विषनाथठक वर्षी।

গর্জং দঞ্চার্য্য রোহিণ্যাং দেবক্যা বোগমারয়। তস্যাঃ কুক্ষিং গতঃ রুফোবিতীরে বিবৃথৈঃ ছতঃ॥ • ॥ যত্তিঃ স্বাক্রপাত ইত্যুক্তং তমেব বিরোধং প্রপঞ্চাতি প্রাক্তির দার্জ্বরে। মহাশনোহ্বাত্তরঃ॥ ১ ॥ একে হক্রাদারঃ প্রীকৃষ্ণাবভার দর্শনোংকগাবন্তঃ তং কংসমত্ত্রনানা স্তদাজ্ঞাবর্তিনঃ॥ ২ ॥ .
সপ্তমো পর্তো বভূব যং গর্জমনন্তং প্রচক্ষতে। কীকৃশং বৈক্তবং থাম কৃষ্ণস্যাংশমিত্যর্থঃ।

ৰিতীয় অধ্যায়ে কংস বধ নিমিত্ত দেবকীর গর্বে ভগবান্ হরির আবির্ভাব এবং একাদি কর্তৃক ভাঁহার ত্তব তথা দেবকীর সান্ধনা॥ • ॥

ভকদেব কহিলেন হে রাজন্! মগধদেশীয় জরাসদ্ধের একাস্তাভ্রিত মহাবল কংস প্রলম্ব, বক, চামুর, ছগাবর্ত্ত, অ্যাম্বর, মৃষ্টিক, অরিষ্ট (র্যাম্বর) থিবিদ, প্তনা, কেশী, ধেমুক, তথা অন্যান্য অহন স্থাল বাণ, ভৌম (নারকাস্বর) প্রভৃতির সহিত মিলিত হইয়া যত্তদিগের পীড়া জন্মাইতে লাগিল, তাহাতে যাদবগণ নিপীড়িত হইয়া কুরু, পাঞাল, কেকয়, সাহা, বিদর্ভ, নিষধ, বিদেহ এবং কোশল দেশে পলায়ন পূর্বক বসতি ক্রিলেন ॥ ১॥

ক্তিপয় জাতি চিতাসুবর্তন পূর্বক কংসেরই উপাসনায় নিবিষ্ট রহিলেন ॥ ২০॥
- অনস্তর:কংশ কর্ত্ত্রক্রে দেবকীর ছয়:বালক নিহত হইলে জগবান্ বিষ্ণুর কলা যাহাকে অনস্ত

গর্ত্তো বস্তৃব দেবক্যা হর্ষশোকবিবর্দ্ধন:। ভগবানপি বিশ্বাজ্ঞা বিদিল্পা কংসজং ভয়ং।
যদৃনাং নিজনাথানাং যোগমায়াং সমাদিশৎ। গচ্ছ দেবি ব্রক্তং ভদ্রে গোপ গোভির্লক্কতং ॥৩॥
রোহিণী বস্থদেবদ্য ভার্যাত্তে নন্দগোকৃলে। অন্যাশ্চ কংসসংবিগ্না বিবরেষু বসন্তি হি ॥ ৪॥
দেবক্যা জঠরে গর্ত্তং শেষাধ্যং ধাম মামকং। তৎ সংনিক্ষা রোহিণ্যা উদরে সংনিবেশ্য ॥ ৫॥

# वीधवयानी।

शूर्क गर्ड माधात्रण मृद्यां ट्यांकः ॥ ७ ॥

নমু সা গোকুলে কিমিত্যান্তে অত আহ অন্যাশ্চিতি ন কেবলং সৈব অন্যা অপীতি বিবরেষু অলক্ষ্যন্তানেষু ॥ ৪ ॥ অঠরে সত্তং নমু গর্ম আক্ষয়মাণঃ কথং জীবেদিত্যত আহ মামকং ধামেতি তত্ততং ॥ ৫ ॥

#### বৈষ্ণবভোষণী৷

ব্ৰৰণাৎ অথবা ক্ষভেদব্যবছেরং বাতনঞ্চ তেবাং বিস্ক্রের এবেতাগ্রে পঞ্চাশীতিতমাধ্যারে ব্যক্তং ভাবি এবং ভেবাং হননে প্রভ-পবৎ ক্তোপেক্ষাপি পরিস্থতা ভাৎ। ঔপ্রসেনিনেতি দের্ঘাম্কং সাক্ষান্তরামাগ্রহণাৎ। বৈক্ষবং প্রীকৃত্যসরং বছাম অনন্তং স্কর্ষণং চতুর্ব্যুহ্ছিতীরং প্রচক্ষতে বদস্তাভিজ্ঞাঃ ॥

ভগবান্ স্বয়মের নিত্যরূপ: ঐক্রঞ: বিষায়া সর্বাংশী। অপি শব্দ: ক্লীরোদনাব্যপেকরা। পূর্বাং স ব্রন্ধাদীন্ সমাদিশং। অধুনা স্বয়মসাবিপি। বোগমায়ামিতি। বিদিয়া নিবেদনং বিনাপি বদুনাং ভরং জ্ঞাত্বা তত্ত্বনিরাসার্থমিত্যর্থ:। সম্যক্ প্রোৎসাহনাদিপূর্বাক্মাদিশং। কুত: নিজা: ঐবস্থদেবাদয়ো নাথা বেষাং ভক্তবাৎসন্যাদিতি ভাবং। বোগো ভগবছ্ছজিবিশেবং সএব ব্রন্ধাদীনামপি মোহনায়ায়া তাং ক্লগৎকারণশক্তিতোপি পরাবস্থামেকানংশাঝাং ॥

পচ্ছেতাইকং। হে দেবি অগৎপূজ্যে তত্তে সর্ব্ধমকলে এতৎ সর্বাং তন্তাঃ প্রোৎসাহনার্থং যথা তত্র পদনে যোগাভোকা।
পুনবিশেবেণ প্রোৎসাহয়তি গোণেতি অনেন ডেযাং গোণানাং গ্রাঞ্চ তন্তা অপ্যগন্মাং প্রমাক্ত্যক্রপদ্ধং দর্শিতং ॥ ● ॥

অক্তা বস্থদেবভার্যা: ॥ ৪ ॥

পৰ্জং ক্ৰণং শেবাখ্যং শিব্যত ইতি শেবোহংশঃ দ আখ্যা খ্যাতিৰ্বস্ত তং মমাংশবেন খ্যাতমিতাৰ্থঃ। মামকং দছৰ্বণদংক্ৰং ধাম

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

(चेंवांशार समार्गायकन व्यतिक्रिमिछार्थः। जः नक्रवंगः सामकः शाम चक्रतभाव्यवः वा ॥ ১।२।०।8।€ ॥

# গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

সাক্ষাদানব্দস্য কুক্ষিপতভাদ্ধ হ: কংসো বধিষ্যতীতি বৃদ্ধা শোক: ॥ ৩ ॥

रेमानीः चयः जगवान क्रटकार्शि यागमात्राः विम्लामोनाः ठिष्टकिवृद्धौनाः श्रक्षमीः ॥

নন্দপোকুলে রোহিণ্যান্তে ইতি বজার্ভবধানস্তর- রোহিণ্যা অপি জাতং গর্জমালক্য রহসি লোক্যারা বস্কুলে বেনৈব সা প্রেষিভা-কংসাৎ সংবিগ্যা ভীতাঃ বিবরেয়ু রহস্যস্থলেয়ু ॥ ৪ ॥

নামকং ধাম মদংশভূতং বলদেবস্থ কথা লৈব ইত্যাংশন আখ্যা ৰস্য বলৈয়কাংশেন বিশ্বতা অগতী লগতং পতে ইত্যঞ্জিনাকে:। অতএব তস্য রোহিণী নিত্যমাত্কতেহিণি দেবকায় গঠে মং এবেশাহুরোধেনৈর প্রথম তেন প্রবিষ্টং ততঃ স্থাং শং বলা যায়, তিনিই দেবকীর সপ্তম গ্রে ইইলেন, আনন্দ রূপে ভগবান্ অবতীর্ণ ইইবেন ইহাতে ঐ গর্ভ যেমন হর্ষ বর্দ্ধক হইল, পূর্বে গ্লেক্তির সহিত সাধারণ্য দৃষ্টিতে তেমনি শোকবর্দ্ধন হইতে লাগিল। সে স্থাহা হউক, হে মহারাজ! বিশাল্পা ভগবান্ কংস ইইতে নিজাপ্রিত যাদবগণের ভয়ের বিবরণ অবগত ইয়াছিলেন অতএব স্থাং যোগমায়ার প্রতি এই আদেশ করিলেন, হে দেবি! হে ভাজে! গোপ এবং গো সমূহে অলক্ষত ব্রজপুরে গমন করে। ১

বস্থানেবগৃহিণী রোহিণী নন্দগোকুলে অবস্থিতি করিতেছেন, কেবল জিনিই নহেন বস্থানেবের অভাভ ভার্যাও কংগ ভার ভীত হইয়া অলক্ষ্য হানে একণে বসজি করিতেছেন ॥ ৪ ॥

**ष्ट्रीय शिवा एववकीत क्रिटेंब एव एनव नामक मखान चार्ट, जाकर्व श्वक डांबारक स्मिटिनी**त

অথাহমংশভাগেন দেবক্যাঃ পুত্রতাং শুভে। প্রাপ্স্যামি দ্বং যশোদায়াং নন্দপদ্প্যাং ভবিষ্যদি॥৬॥

# श्रीशत्रामी।

কিমর্থমেবং কার্য্য ইতাত আহ অংশৃতি অনস্করমেবেতার্থঃ। অংশভাগেনেতি অংশৈ: শক্তিতি র্জনতেহ্ধিতিষ্ঠতি সর্জান্ ব্রহ্মাদি তাম পর্যান্তান্ ইতি অংশভাগঃ তেন পরিপূর্ণেন রূপেণেতার্থঃ। যদা অংশৈ জ্ঞানৈখর্য্য বলাদিভি ভাজরতি যোজরতি স্বীয়া-নিতি তথা তেনেতি। যদা অংশেন পূক্ষরপেণ মায়ায়া ভাগো ভজনং ঈক্ষণং যন্ত তেন। যদা অংশেন সায়রা গুণাবতারাদিরপা

#### देवकवरकावनी।

क्रभः जाशावनकि मत्राप्तना अवः वी नमाक् व्यवैकिकः स्थिश्कं निक्ताः क्रहे। ॥ e ॥

অথানস্তরমেবেতি দেবকীপুত্রপ্রপ্রপ্রে ধরাং বোধরতি এবমেব প্রীবলদেবস্যারকালাগ্রজন্বং তচ্চাগ্রে ব্যক্তং ভাবি। অংশেতি তৈ ব্যাথ্যাতং। তত্র প্রথমেহর্থে কর্ত্তরি বঞ্ আর্মঃ। বিতীরেচ ণিক্সম্বান্তরং । তৃতীরেহংশেন পুরুষরপেণেত্যাদিকং স্বান্ধ্যমন্তর্যার্থিতি ক্রেমঃ যদা অংশানাং ভাগদেরেন হেতুনা। নমু প্রীসম্বর্ণাকর্ষণে প্রীমন্তানা ক্রমানিচ মম কা যোগ্যতা ইত্যপেকারামাহ শুভে মহিদেশেনৈর প্রাপ্তমন্ত্রল তত্র স্বং যোগ্যা ভূরিত্যর্থঃ। এবং তাং প্রতি বরদানং ক্রেমঃ। অতএব তয়া প্রীনন্দাদিমোহনং বক্ষাতি যদা হে ভাগ্যবিত মতো যশোদারাং ভবিষ্যাসি। যশোদা রামিতি তেন তব বশং নন্দপন্থামিত্যানন্দশ্য ভবিতেতি ভাবঃ। নিপুচ্নায়মর্থঃ। অংশভাগেন প্রকাশভেদেন দেবক্যাঃ পুত্রতাং প্রাম্পানীতি ক্রেমং। অবতীণো ক্রগত্যর্থে স্বাংশেন বনকেশবৌ ইত্যত্র স্বামিচরণৈরপি ব্যাথ্যাতং স্বাংশেন মূর্ত্তিভেদেনেতি। অতএব স্বং যশোদায়াং ভবিষ্যাসি বিদ্যমানতামের প্রাপ্ত্যাসি নতু পুত্রীন্থমিতি তথা ব্যবহারাভাবাৎ ইতি ভাবঃ। এতন্ত্রন্তন্মন বিষ্যাসি ইতি পৃথগুক্তং অন্যথা প্রীম্পাদায়াং স্বং পুত্রতাং প্রাপ্তাসীতি বিভক্তিন

#### क्रममञ्जूष्टः।

অথাহমিতি। অংশানাং ভাগো ভজনং প্রবেশো যত্র তেন পূর্ণস্বরূপেণৈর॥ ৬। ৭॥

# শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

মন্নিবাদ শন্যাসনাদ্যাত্মকং শেষং তত্র দেবকীগর্জে স্থাপন্নিবৈব স্থমাত্ রোহিণ্যা গর্জে যিবাসদিত্যর্পং। নমু ত্রুসহস্থক্ষণায়াং তগবংপ্রকাশিকায়াং মহাশক্ষে দেবকীদেব্যাং প্রাক্তনান্যং ষ্ট্রাজানাং কংং প্রবেশঃ সমৃতিতীতবতি সত্যং ভ্রুসম্বত্ত্ব প্রি প্রাক্তনান্ধি প্রকাশিকায়াং মহাশক্ষে দেবকাদেবাং প্রাক্তনান্ধি ব্যুক্তানাং প্রক্তিমন্তিই বিষ্টানাং প্রবিষ্টরেই পি মধা ন তদ্যোগত্তবৈ দেবক্যামপি ব্যুক্তগামিত্যর্পঃ। বহুকং। মংস্থানি স্বর্জ্বতানি ন চাহং তের্বস্থিতঃ। নচ মংস্থানি ভূতানি পদ্য মে বোগনৈধ্যমিতি। কিন্তু কনের ভক্তপরিপাটী প্রদর্শনার্থমেবেমং শীলাবগমাতে। তথাহি ভক্তপরে প্রবিষ্টানিক্ষা ভক্তির তিন্ত কর্মনে প্রকাশিকাদিক ক্রমে করিক প্রকাশিকাদিক প্রকাশিকাদিক প্রকাশিকাদিক প্রকাশিকাদিক বিত্তক স্থাকির বিশ্বকাশিকাদিক বিশ্বকাশিক প্রকাশিকাদিক বিশ্বকাশিক প্রকাশিকাদিক প্রকাশিকাদিক বিশ্বকাশিকাদিক প্রকাশিকাদিক প্রকাশিকাদিক বিশ্বকাশিকাদিক বিশ্বকাশিক প্রকাশিকাদিক প্রকাশিকাদিক বিশ্বকাশিক প্রকাশিকাদিক বিশ্বকাশিক প্রকাশিকাদিক বিশ্বকাশিকাদিক প্রকাশিকাদিক বিশ্বকাশিকাদিক বিশ্বকাশিকাদিক ক্রমে ক্রিকাশিকাদিক বিশ্বকাশিকাদিক বিশ্বকাশিক বিশ্বকাশিকাদিক বিশ্বকাশিকা

অংশৈ ক্লানবলাদিভি ওজন মন্থর্তনং ভজেষু যদ্য তেন দর্মধা পরিপূর্ণস্বরূপেণেতি ভারাধ্দীপিকারাং অংশানাং ভাগো-প্রবেশা যত্ত ছেন পূর্ণেন স্বরূপেণেতি। অংশানাং ক্রছাদীনাং ভাগেম ভাগথেরেন হেডুনেতি। হরং বৈঞ্বতোষ্ণাং। যবা

উদরে সংস্থাপন কর। হে দেবি ! আকর্ষণ করিলে গার্ত্ত কি রূপে জীবিত থাকিবে, এ আশকা করিও না. তাহা আমারই অংশ॥ ৫॥

পরে सामि পূর্ণ রূপে দেবকীর পুত্রত প্রাপ্ত হইব, তুমি নম্পপত্নী যশোদার গর্ত্তে জন্মিও ॥ ৬॥

অর্চিষ্যন্তি মনুষ্যান্তাং সর্বকামবরেশ্বরীং। নানোপহারবলিভিঃ সর্ব্ব কাম বরপ্রদাং।
নামধেয়ানি কুর্বন্তি স্থানানিচ নরা ভূবি। তুর্গেতি ভদ্রকালীতি বিজয়া বৈষ্ণবীতিচ।
কুমুদা চণ্ডিকা কৃষ্ণা মাধবী কন্যকেতিচ। মায়া নারায়ণীশানা শারদেত্যন্তিকেতিচ॥ ৭॥
গর্ত্তসংকর্ধণাত্তং বৈ প্রাভঃ সম্বর্ধণং ভূবি। রামেতি লোকরমণাৎ বলভদ্রং বলোচ্ছুয়াৎ॥৮॥

# श्रीधत्रश्वामी।

ভাগা ভেদা যদ্য তেন যদ্বা অংশা এব মংশ্য কুর্মাদিরপা ভজনীয়া নতু সাক্ষাং স্বরূপং যদ্য তেন যদ্বা অংশৈজ্ঞনিবলানিভি জজনং অসুবর্জনং ভজেষু যদ্য তেন দর্মধা পরিপূর্ণেন রূপেণেতি বিবক্ষিতং কৃষ্ণস্ত ভগবান্ স্বয়মিত্যুক্ত স্বাং। তাং প্রোৎসাহয়তি স্বং বশোদায়ামিত্যাদি সাদ্ধচতুষ্টয়েন॥ ৬॥

সর্বান্ প্রাদীন্ কান্যত্তে যে তেয়াং বরাং ঈশরীং শ্রেষ্ঠাং নিয়ন্ত্রীং অর্চকানাং সর্বান্ কামবরান্ প্রদলতি বা তাং ॥ ৭ ॥ অবিকর্বণেনচ তদ্য ব্যুপদেশা ভবিষ্তি ইত্যাহ গর্জকর্ষণাদিত্যাদিন।। রামেতি সম্বোধনং ক্রিষ্তি । তথা সংস্কৃত্তেন তেন

# देवस्ववद्यायनी ।

বিপরিণামেনৈবার্থ সিদ্ধিঃ ভাৎ প্রতামিতি সামান্যবচনছেন প্ংবাব্যভিচারিত্বং যুক্তীনামিতিবং দধার সর্বাত্মকমাত্মভূতমিতি বক্ষ্যমাণ দিশা যথা দেবকী মাং মনসি ধার্মিয়তি স্বগর্জদেবাভিমংস্ততে চ তথা সাপি যথাচ দেবক্যাং মম মাতৃত্বাহ্মভবস্তথা তস্তা-মপীতি।, নন্দক্ষাত্মক উৎপন্ন ইত্যাদৌ শ্রীশুকবাক্যে বিবৃতি ভবিষ্যতি। অতো ভবতা স্তত্র সন্তা ব্যাক্ষ মাত্রাঞ্চ মন্ত্রা ক্রতা ব্যাক্ত যতো ভবতী মারেতি॥ ৬॥

তদেবাভিব্যঞ্জয়তি অর্চিধ্যস্তীতি ত্রিভি:। মহুব্যা ইতি প্রায় জেষামেব সকামত্বাং ধর্মেংধিকারাচ্চ। ইত্যাদিকঞ্চ তাং প্রতি বর এব। তথাচ শ্রীহরিবংশে। প্রসাদং তে করিব্যামি মংপ্রভাবসমং ভূবি। যেন সর্বান্ত লোকস্ত দেবি দেবী ভবিষ্যসীতি॥

নামেতি যুগ্মকং কুর্বস্থিত করিষ্যন্তি ভূবি বর্ত্তমানাঃ সর্কেইপীত্যর্থঃ হুর্বাদিনামানি অর্চ্চকানাং ভাবভেদেন তত্তং কামা-পেক্ষয়া কিছা স্থানভেদেন তত্তদাথ্যয়া প্রসিদ্ধেঃ। তত্তচ স্থাপি নামৈকং কুত্রাপিচ দে কচিচ্চ বহুনি ইত্যেতদভিপ্রায়েণ তত্র তত্ত্বতি শব্দপ্রয়োগঃ চকারাশ্চ সর্কেষামেব প্রাধান্তবোধনার্থমিতি ॥ ৭ ॥

পরম মং প্রেমমর শ্রীগোকুল সম্বন্ধেন তন্তাপি মাহাত্ম্মদেষ্যতীতি সঙ্কর্ষণ প্রয়েজনান্তরমাহ গর্ভেতি বৈ এব গর্ভতঃ সঙ্কর্ষণাদেব

# শ্ৰীবিশনাপচক্ৰবৰ্তী।

অংশভাগেন অংশাংশেন পুত্রভাগ পুত্রভাগং প্রাজ্ঞানি নতু সর্বাংশেনেতাতঃ সা দেবকী ময়ি বাংসল্য নৈত্রপ্রভাবমন্নং করিষ্যতীত্যর্থঃ তেন ভাবান্তরশূন্যং সম্পূর্ণমেব বাংসল্যস্থং শ্রীখশোদায়ামেব প্রাজ্ঞামীতি দ্যোতিতং। ত্বন্ধ বাদায়াং ভবিষ্যদি উৎপৎস্যদে মাত্রং যশোদায়াং পুত্রীস্বং সমবাক্ষ্যদীত্যসূক্তে স্বয়ি স্থভায়ামপি সা বাৎসল্যং ন করিষ্যতে। অলক্ষ্যবিগ্রহস্থেনের তব ব্রজে বর্ত্তিয়ানাগ্রাদিতি ভাবঃ॥ ৬॥

তবাংশভূতাং মায়াস্ক বস্থুদেবেনানেষ্যমাণাং কংসং বঞ্চন্তি। বিদ্ধাদি স্থানেষু প্রভবিষ্যস্তীং নরা আরাধরিষ্যস্তীত্যাহ অর্চিষ্য-স্কীতি। যতঃ সর্বকামানাং লোকানাং বরাং শ্রেষ্ঠামীশ্ববীং॥

কুৰ্বন্তি ক্রিষ্যন্তি তদেব মিদানীং মদবতারেণ ত্দবতারেণ চ লোকাঃ কেচি**হৈঞ্**বাঃ কেচি**ছোক্তাশ্চ ভবিষ্যন্তীতি ভাবঃ** ॥ রামেতি সহ স্থণেতি সমাসঃ ॥ ৭। ৮ ॥

ভদে! তুমি উৎপন্ন হইয়াও যাহারা পুক্রাদি কামনা করিয়া থাকে তাহাদিগের শ্রেষ্ঠা নিয়ন্ত্রী হইবে এবং অর্চকদিগের সমুদায় কাম বর প্রদান করিবে, অতএব মানবগণ উপহার ও বলি দিয়া তোমার পূজা করিবে। আর পৃথিবীতে নর সকল তোমার স্থান করিয়া দিবে এবং দুর্গা, ভদ্রকালী, বিজ্ঞা, বৈষ্ণবী, কুমুদা, চণ্ডিকা, কুষ্ণা, মাধবী, ক্ষ্মকা, মাধা, নারায়ণী, ঈশানা, শারদা, তথা অন্থিকা এই সকল নাম রাখিবে ॥ ৭॥

আর হে দেবি ! তোমা কর্ত্ক গর্ত্ত আকৃষ্ট হওয়াতে তত্ত্বহ শিশুকে পৃথিবীর লোকেরা সম্বর্ধণ

সংদিষ্টেবং ভগবতা তথেত্যোমিতি তদ্বচঃ। প্রতিগৃহ্থ পরিক্রম্য গাং গতা তত্তথাকরোৎ॥ ৯॥ গর্ব্বে প্রণীতে দেবক্যা রোহিণীং যোগনিদ্রয়া। অহো বিস্রংদিতো গর্ব্ব ইতি পৌরা বিচুক্রুশুঃ॥১০॥

# धीधवश्वामी।

লোকসা রমণাৎ রত্যুৎপাদনাৎ॥৮॥

তথেতি পুনরপি ওমিতি অত্যাদরেণ প্রতিগৃহ গাং পৃথীং ॥ ৯ ॥ বিশ্রংসিতঃ বিশ্রস্ত ইত্যর্থ: । ইতি বিচুক্তঃ নতু তদ্বিহ্রিত্যর্থ: ॥ ১ ॥

## देवकावरज्ञावनी।

নতু শেষস্থাদিনা প্রাণাদের জগদাকর্ষণাদিত্যর্থ:। গর্জ সম্বর্গাদের গোকুল প্রাপ্ত্যা সর্বেষাং লোকানাং রমণাৎ তরৈর বলস্ত উচ্ছু-য়াৎ আধিক্যাৎ তদীয়পরমপ্রেমোর্জিতমনস্বন্ধেতি ভাব:। বলং বলবহুচ্ছু য়াদিতি পাঠে বলবংস্থ আধিক্যাদিত্যর্থ:। বামেতি সহ স্থপেতি স্থপ্ মাত্রেণ সমাস:॥৮॥

তক্ত ভগৰতো বচস্তদ্যপাদিষ্টং তথৈব নতু কিঞ্ছিছাভিচারেণেতার্থ: ॥ ৯ ॥

যোগমারৈর যোগনিদ্রা নিজাবৎ সকললোক বোধ হরণাৎ তয়া প্রকর্ষেণ নাত ইতি দেবকা ছংথাদিকং রোহিণ্যান্চ বিদ্যান্ত্রাদকং গোকুলবাসিনাঞ্চ তজ্জ্জানাদিকং কিম্পি নাভূদিতি বোধিতং। তয়চ প্রাহিরিংশাহাক্তাস্থ্যারেণৈর জ্জেয়ং। প্রাগের শ্রীরন্থদেবা-হিতগর্জায়া: শ্রীরোহিণ্যাঃ পশ্চান্দোকুলং গতায়াঃ সপ্তমে মাসি তং গর্জমপ্সার্য্য দেবকী জঠয়াং সাপ্তমাদিকং গর্জমলক্তিমাক্রয় রোহিণ্যদরং নীত ইতি। তথাচ শ্রীহরিবংশে যোগনিজাং প্রতি শ্রীভগবহক্তো। সপ্তমো দেবকী গর্জো যোহংশঃ সোম্যো মমাগ্রজঃ। দ সংক্রামমিতব্যক্তে সপ্তমে মাসি রোহিণীমিতি। তয়য়ন প্রকার বিশেষণ্ট তত্তিব। সার্দ্ধরাত্রে স্থিতং গর্জং পাত্রয়তী রজস্বলা। নিজেয়া সহসাবিষ্টা পপাত ধরণীতলে। সা স্বপ্পমির তং দৃষ্ট্রা স্বগর্জে গর্জমাহিতং। অপশ্রস্তীচ তং গর্জং মুহর্জং রাথিতা ভবং। তামাহ নিজাসংবিশ্বাং নৈশে তমসি রোহিণীং। কর্মণেনান্ত গর্জন্ত স্বগর্জে চাহিত্স বৈ। সম্বর্জনো নাম শুন্তে তব পুল্লো ভবিষ্যতীত্যাদি স্বহো আন্চর্য্যে থেদে বা দেবক্যা গর্জো প্রশ্বতঃ বিস্তৃস্ত বিষ্যান্তীতি। যদ্ম কংসেনৈর কেনচিছ্পায়েন পাতিত ইত্যর্থ: ব্যক্তব্য তদহিক্ত্রেষাং তন্তয়াৎ বিচ্কুক্তঃ উচৈচ্যার্ভস্বরেণ ক্রজ্ব বিলেপ্রিতি বা॥ ১০॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

রামেতি সহ স্থগেতি স্থাত্রেণ সমাস:॥৮। ১॥

বিস্রংসিত: পাতিতঃ। কংসেনেতি ভরাৎ কর্ত্পদগুপ্তি:॥ ১০। ১১॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

তথেতি পুনরপ্যোমিতি অত্যাদরেণ তদীয়ং বচঃ প্রতিগৃহ গাং পৃথিবীং তত্তদনম্ভরং॥ ৯॥ বিস্তংসিতঃ কংসেনৈব কেনচিন্নক্রৌষধাত্মপারেনেতার্থঃ। বিচুক্স্ ভঃ দেবক্যাং লেহব ওরা বিলেপু:॥ ১০॥

বলিবে। তোমা কর্ত্ব আরুট হইয়া পরে তিনি সকল লোকের রতি উৎপাদন করিবেন, ইহাতে লোকে তাঁহাকে "রাম" বলিয়াও সম্বোধন করিবে। অধিকন্ত তিনি নিজ বঙ্গে অতিশয় উচ্ছিত ইইবেন ইহাতে লোকে তাঁহাকে বলভদ্র বলিয়াও ডাকিবে॥৮॥

হে রাজন্! ভগবান্ কর্ত্ক এই প্রকার আদিফা হইয়া, ভাল তাহাই করিতেছি, বলিয়া মায়া তাঁহার বচন গ্রহণ করিলেন, অনস্তর প্রদক্ষিণ পূর্বকি অবনিতলে গমন করিয়া দেইরূপ করিলেন॥৯॥

হে রাজন্! যোগনিদ্রা কর্তৃক দেবকীর সেই গর্ত্ত রোহিণীর উদরে নিহিত হইলে পুরবাদী সকলে "দেবকীর গর্ত্ত বিজ্ঞ হইল" বলিয়া চিৎকার করিয়াছিল, কিন্তু তদিবরণ কিছুই 'জানিতে পারে নাই॥ ১০॥ ভগবানপি বিশ্বাত্মা ভক্তানামভয়প্রদঃ। আবিবেশাংশভাগেন মন আনকতুলুভেঃ॥ ১১॥ স বিত্রৎ পৌরুষং ধাম রাজমানো যথা রবিঃ। তুরাসদোহতিতুর্দ্ধর্যো ভূতানাং সংবভূব হ ॥১২॥ ততো জগন্মঙ্গলমচ্যুতাংশং সমাহিতং শুরস্থতেন দেবী।

# ञीधत्रवामी।

মন আবিবেশ মনস্যাবিৰ্বভূব জীবানামিব ন তস্য ধাতুসৰক ইত্যৰ্থ: ॥ ১১ ॥ ধাম ঐ্মূৰ্ত্তিং ॥ ১২ ॥

জগনালনং জগতো মূর্তিমনালনং। অচ্যতাংশং চ্যুতিরহিতা অংশা ঐশব্যানরো যদ্য তং। যবা অচ্যুত্স্য অংশ ইব অংশতং ভক্তা-মুগ্রহায় পরিচিছ্রমিব বপুরিত্যর্থ:। সমাহিতং সম্যগ্ভূতনেবাহিতং বেদদীক্ষয় অপিতং দেবী দ্যোত্মানা শুদ্ধসবৈত্যর্থ: সর্বা-

#### देवस्वरावावी।

বিশ্বস্ত আত্মা প্রভ্রপি ভক্তানামভয়ঙ্কর: তদানীং তচ্চিত্তে ভাববিশেষেণ পর্য্যক্রদিত্যর্থ:। তত্রচ সর্বৈশ্বর্যাপরিপূর্ণতয়েত্য-ভিপ্রায়েণ শ্রীভগবানিতি। এতদাদ্যপদ্যার্দ্ধং দর্ক সম্মতং ন স্থাৎ অতএব শ্রীচিচ্চুকেনৈবং ব্যাথ্যাতং মন আবিবেশ পৌকবং ধামেতি সম্বন্ধ ইতি শ্রীমামিপাদানান্ত সম্মতং লক্ষ্যতে তথাচ তদ্যাধ্যানাৎ॥ ১১॥

পৌরুষং ধাম শ্রীভগবত্তেজঃ। মনসি শ্রীভগবদাবেশেন কত্তেজোহভিব্যক্তেঃ। যথা ধাম প্রাছর্ভাবং প্রভাবং বা। তথাচ বিশ্বঃ। ধাম দেহে গৃহে রশ্মৌ স্থানে জন্মপ্রভাবয়োরিতি। হ্রাসদঃ নিকটে গস্তমশক্যঃ চকুরাদ্যপ্রাহো বা। অতএবাতিহর্দ্ধর্মঃ। অভিতবিতুমশক্যঃ সম্যথভূব হ। ক্টং॥ ১২॥

সর্ব্বাত্মকমিপ আত্মভ্তং আত্মনি প্রাত্ত্তিং প্রদ্ধণতরা দধারেত্যথং তেন জীববজ্যাভাবাৎ ব্যক্তিরেব শ্রীজগবতো জন্ম উচাতে। তথাচ শ্রীমধ্বাচার্যাধ্বতং তরভাগবতবচনং অহেরমন্থপাদেরং যজপং নিত্যমব্যরং। সএবাপেকরপক্ত ব্যক্তিমেব জনার্দন:। অগৃহাদ্যক্তকেতি রক্ষরামাদিকাং তহংং। পঠাতে ভগবানীশো মৃদ্ব্দিবাপেকরা। তমসা অপুগৃত্ত যতমং পানমীশিত্য। এতং পূক্ষ রপক্ত গ্রহণং সম্দীর্ঘতে। রক্ষ রামাদিরপাণাং লোকে ব্যক্তিবাপেকরা ইতি। মহাবারাহ বচনঞ্চ। সর্ব্বে নিত্যাং শাখতাক দেহাত্ত পরাত্মন:। হেরোপাদের রহিতা নৈব প্রকৃতিজাং ক্চিং। পর্মানক্সদেশাহা জ্ঞানমাত্রাক্ত ইতি। ভগবস্থমিতি পেরং। আনক্রমন্ত্রীত্যানক্ষাং করা যক্ত ক্রক্ত তং অমৃতর্ব্বিত্বাং। জন্যতৈং। ব্যান দুয়ত একোহপ্যংশো যক্ত তং

#### ক্রমদন্দর্ভ:।

পেরিক্ষং ধাম ভাগবতং বপু: ॥ ১২। ১৩ ॥

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বিশ্বাস্থা বিশ্ববৈদ্যৰ প্রেমাম্পাদী ভবিষ্যন্ অংশেন প্রেষাদ্যবতার বৃদ্ধেন সহ ভাগেন ভগসমূহেন বজৈ ধর্মোণ সহিত এব মন আবিবেশ মনস্যাবির্বভূব। পরাবরেশো মহদংশযুক্তো হজোহিপি জাত ইতি তৃতীয়োক্তে:॥ ১১॥

পৌরুষং ধাম পুরুষোত্তমস্য প্রাহ্রভাবং দধানঃ স্বন্মিন্ প্রাহ্রভুতিং রুক্ষং পশ্যরিত্যর্থঃ। ধাম দেহে গৃহে রক্ষৌ স্থানে স্বন্ম প্রভাবিরা বিবির্মিন করা প্রভাবির্মিন করা প্রভাবির্মিন করা প্রভাবিরা বিবাধির বিবাধি

ততো ভগবাংস্তদেহাদেবকীদেহে প্লবিষ্ট ইত্যাহ তত ইতি জগতাং মৃর্ত্তিমক্ষলং চ্যুতিরহিতা অংশ। নারারণনৃসিংহাদরো বত্র তং। সর্ক্ষোং ভক্তানাং সর্ক্ষ্যা শস্তোবা আত্মনো মনসঃ কং স্লথং বত্র তং আত্মভূতং আত্মনৈব ভূতং স্বন্ধাবিভূতিং নতু বোগি-

সে যাহা হউক, তৎপরে ভক্ত জনের অভয়দাতা বিশ্বাত্মা ভগবান্ হরি পরিপূর্ণরূপে বহুদেবের মনে আবিভূতি হইলেন, জীব সকলের স্থায় তাঁহার ধাতুসম্বন্ধ হয় নাই॥ ১১॥

হে রাজন্। বহুদেব ঐ প্রকারে পৌরুষ ধাম অর্থাৎ শ্রীমূর্ত্তি মনোমধ্যে ধারণ করত সূর্য্যের স্থায় দেদীপ্যুমান হইয়া সর্ব্ব স্থুতের ত্রাসদ এবং অতিশয় ত্র্ব্ব হইয়াছিলেন ॥ ১২ ॥

তদনস্তর পূর্বাদিক্ যজ্ঞপ আনন্দকর চন্দ্র ধারণ করে তজ্ঞপ দীপ্তিশালিনী ভদ্ধসন্তা দেবকী বস্তুদেব কর্তৃক বেদদীক্ষা দারা অপিতি অচ্যুতাংশ অর্থাৎ অচ্যুতের অংশ সদৃশ যে অংশ, যাহা ভক্তাঃ

# मधात नर्वाञ्चकमाञ्च छुः कार्छ। वशानव्यकतः मनसः ॥ २० ॥ मा तमरकी नर्वाक्षविद्यान निकामकृषा निकताः न तृत्व ।

# व्यवस्थामी।

ত্মকং সর্বস্যাত্মানং অতএব আত্মত্তং ব্যিলাদাবেৰ সভং মনতঃ মনলৈৰ দ্বার ধারণদা বুভবতী আত্মস্থাপং দৃষ্টান্তমাহ যথা কাঠা প্রাচী দিক্ আনিক্ষরং চক্রমিতি॥ ১৩॥

সর্ব্ধ জগানিবাসনা নিবাসভূতা সত্যপি নিতরাং সর্ব্ধজনাধ্যাদকত্য়ান রেজে কিন্তু স্বর্থের আনন্দরতঃ কংসদা গৃহে ক্ষা অক্টেন্ত নিদ্দাতে ঘটাদিরু ক্ষান্নিবিধের তথা সূতী শোভনা সরস্বতী জানখলে জানবঞ্চকে ক্ষা যথা অভ্যোমমূপকারিণী ন রাজতে

## বৈষ্ণবতোৰণী।

সর্কাংশ পরিপূর্ণং ভগবন্তমিত্যর্থ:। যত এবাত্মভূতং সর্কামৃগ অরূপং সমাহিতং সাকাদর্পিতবং প্রকাশিতং। হর্ণশোক বিবর্দ্ধন ইতি। পূর্কং শোকোহপ্যক্তঃ অধুনাচ পরমানক্ষ এব জাত ইত্যাহ সর্কোং আত্মনাং জীবানাং কং স্থুখং বন্ধাতং। যদা নচ বোগিনামিব তদ্ধারণে যদ্ধ ইত্যাহ। আত্মনা ভূতং সমাহিতঃ সন্ যঃ অর্গেবাবিভূ তন্তমিত্যর্থ:॥ ১৩॥

গছতীতি ৰগং ইতি নিজক্যা সর্কমাত্র বাচকেনাপি অন্ত্রেমাত্রানিত্য এব সর্ক উচ্যতে। সর্ক শক্ষণ পৃথক্ পাঠাও ততঃ সর্কশক্ষেদ তদতীতং সর্কমিতি ততক নিতাক সর্কত্ত অনিত্যস্যাচ সর্কস্য নিবাস আপ্রয়ং বস্তা। বস্য ভাগেত্যাদি প্রতে বিদাপ্রতে কৈব ভত্তং সর্কাং ভাগতে স্ প্রীকৃষ্ণ ইত্যর্থং তক্ষচ নিবাসভূতা আপ্রয়েখং প্রাপ্তানীত্যর্থং। ইতি সর্কান্তানক শোভাবোপ্যতোজা। তাদৃত্রপি নিতরাং সর্কা- জালকতরা ন রেজে কিন্তু আন্তর্গরিকাং প্রীক্রনেকাদিভি বিশিষ্টক অভৈবাজ্ঞাদকতরা রেজ ইত্যর্থং। বধা তাদৃত্রপিনিধা সরস্বতীচ নিতরাং সর্কোলাসকতরা ন রাজতে। কিন্তু আত্তরক বিশিষ্টক্যোলাসকতরৈব রাজত ইত্যর্থং। এতে, হি স্বদীপ্তা অবস্কানতঃ আত্তরকানেবোলাসরত ইতি। সরস্বতী পক্ষে আন্তর্গত তল্পন আদিকং অগ্নিনিশেব কর্জেত্তনেন

#### ক্রমসক্তঃ।

দেতি। সা শুদ্ধসন্ত্রন্তিরপত্বেন প্রসিদ্ধা। দ্যোতনান্দেবকীতি যথার্থনায়ী নিতরাং ন রেজে ইতি। তেজসঃ সর্বচক্ষ্যু প্রসরণা-ভাবাদানস্বস্যাচ সর্ব্যমনঃশ্বিতি ভাবঃ। পূর্ব্বোহত্র দৃষ্টাস্কোহগ্নিশিথেব ক্লছেতি। উত্তরোহত্র সতী জ্ঞানথলে যথেতি। তত্র কংসস্য

# প্রবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বদ্দব্দেন ধারণয়া মনস্যানীতং মনস্তো মনসা দধার তেন জীবক্জননীজঠর সম্বন্ধো বারিতঃ। স্বতএবাস্তরপং দৃষ্টাস্তনাহ। কাঁচা প্রাচী দিক্ আনন্দকরং চক্রং মধেতি কিয়দিনানস্তরং তত্ত্ব সা স্বকৃষ্ণি মধ্যেৎশি ক্লকং পঞ্চন্তী বস্তুবেতি জ্লেয়ং। দিষ্টাম্ব তে কুন্দিগতঃ প্রঃ পুমানিত্যবিমোক্ষেঃ॥ ১৩ ।

প্রাক্বতাপ্রাক্ত সর্ব্যবসদ্য শ্রীহরেনি বাসরপা সত্যপি নিতরাং সর্ব্যবনভাচ্চাদকতরা ন রেজে কিন্ত তত্রত্য স্বান্তরক বিত্র জন সহিত্তস্য স্বল্যৈবেতার্থঃ। বতঃ কংসস্য গৃহে ক্লবা জ্বিদিশা ইবেতি সা যথা গৃহে ক্লবা নগঁরং ন প্রকাশরতি কিন্তু গৃহস্থিতবন্দেব তথা স্বস্মীপবর্ত্তিনাং বিজ্ঞাননাং শীতাদি নাশিকা চ তথৈবেতার্থঃ। বথা চ সা প্রবাণ সতী রোধক্স্য গৃহং দহতি তথৈব দেব-কাপি কংস্বৈস্থবং ধক্যতীতার্থঃ। জ্ঞানধনে জ্ঞানবঞ্চকে ক্লবা সরস্থতী সর্ব্যবোক্ষ্যকারিশী সতী যথা ন রাজতে পাণাতিশয়েন

সুগ্রহার্থ পরিচিছের শরীর ভূল্য হইয়াছিল, তাহা আপনার মনোবারাই ধারণ করিলেন। হে রাজব ! ভগবানের ঐ অংশ স্কান্তা, অভএব অথেও দেবকীর আত্মাতে বর্তমান ছিলেন ॥ ১৩॥

সে বাহা হউক, বেশকী বিষিও ঐ ক্লগে দৰ্শন কৰ্মনিবাদ কৰ্মনান্ত নিবাদ কৃষি বইলোন, তথাপি দৰ্শকানান্ত কৰা ক্ষিত্ৰ ক্ষেত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্

ভোজেন্দ্রগেহে থ্রিশিখেব রুদ্ধা সরস্বতী জ্ঞানখনে বর্ধা স্তী॥ ১৪॥ তাং বীক্ষ্য কংসঃ প্রভাজিতান্তরাং বিরোচয়ন্তীং ভবনং শুচিন্মিভাং। আহৈষ নে প্রাণহরো হরিশু হাং ধ্রুবং প্রিভো যদ্ধ পুরেয়মীদৃশী॥ ১৫॥ কিমদ্য তন্মিন্ করনীয়মাশু ময়ার্থতন্ত্রোন বিহুন্তি বিক্রমং।

#### खीरवयांगी।

344 11 28 II

> প্রভিনা ভবনং বিরোচন্ত্রীং অভিভ: অভ্যা কুকিনধ্যে যস্যাভাং এব বিরোচনানঃ ধ্রবং হরিরের বলম্মানীল্নীরং পূর্বং নাসীং॥ ১৫॥

নতু সন্তি সামাদর উপালা নেতি খবং আহ অব্নর্থততো দেবকার্যপ্রধানঃ বিক্রমং ন বিহস্তি ন নাগরতি মহথে প্রাক্রমং করি-

# **देवकवर**जावनी।

সা এবনা তদ্য হমপি ধক্ষাতি। তাদৃশী সরস্বতীচ নিজাধারং প্লাণেন নাশরিবাত্যের ইভি ভাব: ॥ ১৪ ॥

ৰীক্য সাক্ষাক্ ই। প্ৰভয়েত্যতা বিশেষ: জীবিষ্ণুরাণে। ন শেকে দেবকীং দ্রষ্ঠ্ং কশ্চিদপ্যতিতেজ্বসা। জাজন্যমানাং ভাং দৃই। মনাংসি ক্ষোভমাবযুরিতি ভগবদানক ফুর্জিয়াভাব্যাৎ। শুচি শুদ্ধং নতু পূর্ববিষ্ণনার্থং সকপটং দ্বিতং মন্তাভাং আহ দুটিতে। শুহাং ক্ষমমুদ্রং বা। শ্লেবেণ নাগত্তেব মম সিংছ ইব জীবণোহরং দ্রীং শ্রিত ইতি ॥ ১৫ ॥

কিমদ্যেতি অত্র টীকারাং ববেতাত পূর্বাত্র কিত্র ত্রিয়া ইতি বদি বিক্রমং ন বিহস্তি তথাপি দ্রিয়া ইতি জ্বেরং অদ্য অত্যিরেবাহনি ভত্তাপ্যাশু অধুনৈব। এবং ভরেনৈব বং স্বদৌরান্ধ্যং তত্ত্বং তত্ত্ব বিবেকেনৈব স্বয়ং করেমীতি স্বস্থিতিয়ান স্বথং করেছতি দ্রিরা ইতি

#### ক্রমসন্ধর্ড:।

তলগৃহ প্রবেশো পূর্বমমূত্র বিষয়ে তবছন্তরং তু মনঃ প্রবেশাভাবারৈবেত্যাই ॥ ১৪ ॥

তামিতি। এব জীবন্ জীবরূপেণ দৃশ্যমানোপি লোকবহিত্বত্তব্যাম্যাৎ মৃত এব সংনিবৃত্তৌ হেতুমাহ। অন্তর্গামিরূপতরা স্বরং প্রাভুঃ পরমেশ্বরো ব্রেতি। তদ্য দোবমুক্তা শ্রীহরিবংশ স্বন্ধ্যা স্বাভাবিকং গুণুমাহ॥ ১৫॥১৬॥১৭॥

# विविधनाथठकवर्ती।

স্বরোধকঞ্চ কালেন বথা নাশরতি তবৈব স্বাপরাধেন কংসম্পি দেবকী নাশয়িব্যতীত্যর্থ: ॥ ১৪ ॥ .

প্ৰভন্না ভবনং ৰিরোচরস্ত্রীং অজিতঃ অন্তরে কুন্দি মধ্যে বস্যান্তাং। শুচি স্বাভাবিকমানদ্বোধং নতু পূর্ববিষ্ঠনার্থং সক্পটং স্মিতং যস্যান্তাং বীক্ষ্য স্বপ্তমাহ মে মঙক্ষুদ্র্য ছরিঃ সিংহঃ বদ্বস্থাদীদূলী পূর্বং নাসীৎ ॥ ১৫ ॥

স্পাইমণ্যাহ তাহিন্ মধৈনিথি আত ইদানীং কিং করণীয়ং গর্জহনেব তমিমং হন্যাং চের বাদস্থাদর্পতন্ত্র: স্বার্থপরোহণি লোকঃ বিক্রমং ন বিনাশরতি সম্প্রত্যাস্য বধে মম বীরম্ববাঞ্জা বিক্রমো নক্ষ্যতি তাহাজ্ঞাত প্রবৃদ্ধতক্ষীভূতেনানেন সহ সংগ্রামে জন্মে পরাজ্যে বা মম বিক্রমন্ত স্থাস্ত্যের গর্জবধ্যেত্ব কো বিক্রম ইতি ভাবং। ন কেবলং বিক্রমহানিরেব ধর্মাদিহানিরপীত্যাহ শ্লিরা

# **ब्हे**त्रो त्रिल्लिन ॥ >8 ॥

পরস্ত কৃষ্ণি মধ্যে ভগবান্ বিষ্ণু অবস্থিত থাকাতে বিশুদ্ধ হাস্থান্থী দেবকী নিজাপপ্রভার বাস-গৃহ আলোকময় করিতেছিলেন, একদিন কংস তাঁহাকে তক্রপ নিরীক্ষণ করিয়া কহিল, এই দীপ্তিশালী ব্যক্তি নিশ্চর হরি, আমার প্রাণহর হইয়া, দেবুকীর গঠ রূপ গুহার প্রবিষ্ট হইয়াছেন, কারণ দেব-কীকে পূর্বেণ্ড দেখিয়ছি, অত্যে ঈদুলী দীপ্তিমতী ছিল না ॥ ১৫ য়

একণে আমি ও বিষয়ে আই কি করি, এই হরি অর্থ পরভার অর্থাৎ দেবকার্য্য সাধন তৎপত্ত, কখন অপিনার বিক্রম বিন্ত করিবেন না, আমার বধ নিমিত অর্থা প্রাক্রম প্রকাশ করিবেন সংগ্র ন্ত্রিয়া: বহু ও রুষত্যা বংগাছয়ং যশা প্রিয়ং হস্ত্যস্কালমারু: ॥ ১৬ ॥
স এব জীবদপি সংপরেতো বর্ত্তে ষোহত্যস্ত নৃশংসিতেন।
দেহে মতে তং মসুজা: শপন্তি গন্তা তমোহন্ধং তমুমানিনো প্রবং।
ইতি বোরতমান্তাবাৎ সমির্ভ: বয়ং প্রভু:। আত্তে প্রতীক্ষংস্তজ্জন্ম হরে বৈরামুবন্ধকৃৎ॥ ১৭॥

#### शिववयागी।

ৰাতোবেত্যৰ্থ: যৰা তৰ্হি ইন্মিদানীমেৰ হস্তৃামিতি বিচিন্ত্যাহ অৰ্থতল্লোহণি পুমান্ বিক্ৰমং ন বিহন্তি ন নাশন্তি জীবধে তন্ত্ৰাশঃ স্যাদিতি ভাবঃ। তদেবাহ জিন্না ইতি গুৰুষত্যা গৰ্ভধারিণ্যাঃ॥ ১৬॥

কি শ বএৰ জীবন্নপি মৃত: স্যাৎ নৃশংসিতেন ক্রোধ্যেণ যো বর্ত্তে তং জীবস্তমেব মহজা: শপন্তি হ্র্কাইক্যার্ধ ক্ কুর্কন্তি। সচ দেহে বৃত্তে তত্ত্বমানিনঃ পাপিনো নরকং গমিষ্যতি অথবা শাপ প্রকারমাহ তত্ত্মানিনোৎস্য দেহে মৃতে প্রথমজংক্যো গমিষ্য-তীতি॥ > १॥

# दिक्वरजावनी ।

সার্ছেন অরং অনেহ রক্ষার্থক: ক্ষণিকোহণি বা সর্ব্ধনাগং রশ আদি হতি। ত্রিরা ইত্যাদের্থথান্তর ববধাছে বশ আদেশ বথোন্তরং তদপেক্ষাছে তৈঠিং বদর্থং বধক্তজীবন্মপি হন্যাদিতি কিং তেনেতি ভাব: ॥ ১৬ ॥

নমু দিনানি কতিচিং যজ্জীব্যতে তদপি শুভং তত্ৰাহ স ইতি এব জীবন জীববদবহুবেন দৃশ্বমানোহপি মৃতএব। লোক বহিছ্ব-ততা সাম্যাদিতি ভাবং। ধলু বিতৰ্কে। নৃশংসিতং হিংসা। মন্থ্ৰাং সৰ্কে এব মন্থ্ৰাং। অন্তক্ষৈত্ৰ তত্ত্ব তত্ত্বানিনং পাপিন ইতি। দেহাত্মবুক্ষ্যৈব পাপাভিনিবেশে। ভবতীতি ভাবং। যবা দেহেহমুতে জীবতাপি কিবা দেহে সতি মৃতে মরণে চ সভীত্যৰ্ধং॥

ইতি এবং বিচারেণ। ভাবাদভিপ্রায়াৎ চেটিভারা সয়মেব নত্ত্যেরাং মন্ত্রণাদিনা সমান্ত্রির । নতু গর্জপাতনাদৌচ যয়ং চকারেতার্ব:। যতঃ প্রভ্রমনিরপেক্ষ:। যথা সয়মান্ত্রিন । নত্ত্যসম্বত্যা প্রভু: প্রভূম্ম ইত্যর্ব:। বস্তত্ত তত্ত্ ভ্রমন্ত্রামিবশ এব আদিতি ভাব:। হরেবর্বরাদ্যশেষদোর হরত্বেন কিয়া সর্ব্ব মনোহরত্বেন ভ্রামতয়া প্রসিদ্ধানি বহৈদ্বং হেব অস্যামুরভ্রোহম্বর্ত্তনং তং করোভীতি তথা ভূতঃ সন্। বদ্যপি ভরাৎ কংস ইত্যুক্তং তথাপি ভরতানে বৈরমণি ভবতীতি তথোচাতে। তস্য
হরের্জন্ম প্রতীক্ষমাণ আত্তে বভূবেত্যর্ব:। তৎ প্রতীক্ষায়াঞ্চ বিলেবঃ শ্রীহরিবংশে সচিবান্ প্রতি কংসোক্রো। মাসান্ত্র প্রামাসাদীন্ গণয়ত্ত মম দ্রিয়:। পরিণামেত্ গর্জস্য শেষং জ্ঞাস্যামহে বয়মিতি। অত তাত্তের। বদর্থং সপ্ত তে গর্জাঃ কংসেন বিনিপাতিতা:। তত্ত গর্জং প্রবন্ধেন ররক্ত্রস্য মন্ত্রিক ইতি॥ ১৭॥

#### **औविश्वनाथह**ळ्यको ।

ইতি অক্ষতা। অবিশ্যাঃ। অত্ত ভরেইনৰ যং স্বদৌরাস্থ্য তবং ততু মবিবেকেনৈৰ ইতি স্থিত্নতিনানস্থ্য কলিঙং কংসেনেতি জ্ঞেরং॥ ১৬॥

গর্জং হতবতো মন জীবিতব্যমণি ধিকৃতমেবেতাহে স ইতি। নৃশংসিতেন ক্রোর্যাণ। দেহে মৃতে সভীতি জীবতি তু বদ্যপি তত্মাবিভাতি তদণীতি ভাব:। শপন্তি রে পাপিন্ কুজীপাকে পতেতি সাক্ষেপমূকৈরাক্রোশন্তি। ততক তত্মানিন: গ্রাণান্তর হিংসরা ত্মতত্ম মানরতো লালরতো জনস্য ভোগাং যদধ্য তমন্তং প্রথমেব গল্ঞা গল্পতি॥ ১৭ ॥

দেবকীকেও বধ করিতে পারি না, এ স্ত্রীলোক, আমার ভগিনী, তাহাতে আবার গর্ত্তবিতী, ইহাকে বধ করিলে সর্ব্ব কালের নিমিত্ত যশঃ, জী এবং পরমায়ুঃ বিনষ্ট হইবে ॥ ১৬ ॥

আর যে ব্যক্তি অতার্থ ক্রতা সহ জীবন ধারণ করে, সে জীবন সত্ত্বেও মৃত ত্লা, জীবদ্দাতেই
মসুবোরা বিবিধ ছুর্বাক্য ধারা তাহাকে ধিকার দেয়, অপর দেহ মৃত হইলে, সেই শ্রীরাতিমানি
পাপির অভ্তমন নরক প্রাপ্তি হয়। এই প্রকারে বিবেচনা করিয়া যদিও ঐ ঘোরতর তাব হইতে
আপনিই নিম্ন হইল, ভ্রাচ বৈরাজ্যক কর্ত হরির জন্ম প্রতীকা করিয়া থাকিল। ১৭॥

আসীন: সংবিশংস্তির্ভন্ ভূঞানঃ পর্যান শিবন্। চিন্তয়ানো হারীকেশমপশুৎ ভ্রমাং কণং ॥১৮॥ ত্রমা ভবশ্চ তত্তেত্য মুনিভিনারদাদিভিঃ। দেবৈঃ সাকুচরৈঃ সাকং পীর্ডির্ধণমৈড়য়ন্॥ ১৯॥ সত্যত্তিং সত্যপরং ত্রিসত্যং সন্তাশু যোনিং নিহিত্ত সভ্যো

#### अध्वयात्री।

मःविभन् भवानः ॥ **১৮**॥

রন্যাভি গী। জ বুৰণং কামবর্ষিণং ঐজ্বন্ ভুষ্টুবুং ॥ ১৯॥

প্রতিশ্রুতং স্তাং কৃত্মিতি ক্ষী: প্রথমং স্ত্যুত্বেন স্থবন্তি স্ত্যুত্রতমিতি স্ত্যুং ব্রতং সংকল্পে যস্যু স্ত্যুং পরং প্রেষ্ঠং প্রাপ্তি-

# বৈষ্ণুবতোৰণী।

বৈরামুবদ্বেবার আসীন ইতি চিন্তরানঃ অরমধুনৈবাবিভূরি মাং হনিব্যতীত্যেরং ভাবয়ন্তিত্যরং ক্ষরিকেশমিতি সর্কেন্ত্রিয়বৃত্তী পরিক্রবণেন স্থাবীকেশতাভিব্যক্তঃ। যদ্যপি তল্ময়দ্দর্শনং বোগিনামপি স্ক্রভং প্রেমভক্তানামেব সম্পদ্যতে তথাপি তের্পরমানক্ষময়দ্বে অন্নিংজ পরম হংধময়দ্বেনতি ভেদঃ ॥ ১৮ ॥

ভত্ত বন্ধনাগারে। আদি শব্দেন সনকাদিভি: তেবু শ্রীনান্নদ্যাদিখা কেবল পরম ভক্তাারাম্বেন মুখ্য খাই শ্রীহরিবংশোক্তস্য ক্ষান্ত্রবার্থ ক্ষান্ত প্রান্ত্রবার্থ ক্ষান্ত ক্রান্ত্রবার্থ ক্ষান্ত ক্রান্ত্রবার্থ ক্ষান্ত্রবার্থ ক্ষান্ত্রবার্থ ক্রান্ত্রবার্থ ক্রান্ত্রবান্ত্রবার্থ ক্রান্ত্রবার্থ ক্রান্ত্রবা

সভাত্রতমিতি ত্রতং প্রতিশ্রতং বঃ কশ্চিৎ সংকলোহিশি সত্যঃ কিং পুনর তর্মপ ইত্যতোহত্রাবতরণমিদং মুক্তমেবেতি ভাবঃ।

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

শাৰীদ ইভি। ৰেনান্তে স দোৰোহণি জ্জ্ৰপং বাস্যতীতি ভাবঃ॥ ১৮॥

ি ক্রন্ধেটি। অজাগমনে পশ্চাভাবি স্ন্যাদীনা মপ্রাধান্যাৎ। সহার্থবোগে তৃতীয়াচ স্তবেতৃ যৌগপদ্যেন প্রাধান্যাং সর্পোধা কর্তৃ-স্থমের বিষক্ষিত্যিতি। উদ্দল্লিতি বহুদং পূর্কাং ম্ন্যাদিষিলিতে তাবাগতে পশ্চান্তে চ তে চ তৃই ব্রিত্যর্থঃ। পূর্কাং তেবামশি প্রধানকর্তৃদ্বেকৈক কর্তৃক্যাবিরোধাৎ জনু বোগশ্চ। ন বদিত্যস্য ব্যাধ্যায়াং॥ ১৯॥

সভ্যান্ততং বিশ্ববৃত্তি। সংখন সচ্চিদানশ্বনথেন উপপন্নানি শ্রোতসিক বৃক্তি সিকানি ॥ ২০ ॥২১॥২২॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

বৈরাম্বর্জনিতেন ভরেন কংস্সা চিত্তাবেশং বির্ণোতি আসীন ইতি সংবিশন্ শ্রানঃ। চিত্তরানঃ চিত্তরান হ্বীক্ষেশং সর্কেল্লির বিবরীভূতং তক্মর্ভদর্শনং প্রেমা প্রমানক্জনকং ভরেন তু প্রমহঃধর্জনক্মিতি ভক্তবৈরিণো তথ্যরত দর্শনসা ভেদে। ভাইবাঃ॥ ১৮॥

র্বণং লীলামুতব বিণং ক্লকাব্দং। ব্রহ্মা ভ্রমচতুর্দণকে দারমহাক্ষবীবল ইব। ভবশ্চোরাসিত সাধুপ্লে নৃত্য বিনোদী মহা নীলক্ষ্ঠ ইব নারদাদিভি স্থানেক্জীবনৈ ম হাসোৎক্ষ্ঠ চাতকৈরিব দেবে: কংসজরাসকাদিদাবানলার্তৈ ম হামতললৈ রিব সহ প্রিড্রন্ প্রিড্রত তুই বুরিভি বাবং। বছবচনমার্বং॥ ১৯॥

দ্বমেৰ ৰাত্তবং বন্ধ সংসাৱেহ দ্বিল্লবাত্তবে। দং ভকৈৰ্গম্যাসে নান্দৈয়িতি স্বভাৰ্থ ঈক্ষিতঃ। সভক্ৰপালনৈক প্ৰতৰানিতা সভ্যম্বাচ্চ-

উপবেশন, শয়ন, অবস্থান, ভ্রমণ, ভোজন, পান সকল সময়ে কেবল হাবীকেশের চিন্তা করাতে জগৎকে তদায় দেখিতে লাগিল। ১৮॥

८६ भरीकिए। अहे नमरत नात्रमानि मूमि अंदर जजूठत नमिखियांशाति रमवत्रक, छश्यान् खन्ना अवर मरहण रमपकीत शुक्र खनरन जाशमन कितिया. विविध यहन शांता कामगर्विछश्यारनत छप जाते छ कित-रणन ॥,>> ॥

छगवान् প्रक्रिक्षण्य मण्ड कतित्मन देशाय क्षेत्र देशा त्मनकाता व्यवस्थः मण्डाच सरमा खन

# সভাস্য সভাযুত্সভানেত্রং সভ্যাত্মকং ছাং শরণং প্রপন্নাঃ ॥ ২০ ॥

# विधत्रवामी।

সাধনং যদ্মিন্ তং ত্রিসত্যং ত্রিশ্বপি কালের স্প্রে: পূর্বাং প্রেলরানন্তরং স্থিতিসমরেচ সত্যং অব্যতিচারেণ বর্ত্তমানং তদেবাহঃ সভ্যস্য বোনিমিতি সদ্ধন্দেন পৃথিবাপ্ তেজাংসি তাদ্ধন্দেন বাষাকাশৌ এবং সচ্চ তাচ্চ সন্তাং ভূতপঞ্চকং তং সম্ভামিত্যাচন্দ্রত ইতি ক্রতঃ তস্য যোনিং কারণং অনেন স্থাইঃ পূর্বাং বর্ত্তমানতোক্তা তথা সন্ত্যে তিন্তিরেব নিহিতং অন্তর্গমিতয়া স্থিতং অনেন স্থিতি-সমরেহিপি সত্যম্বাকাং। তথা সন্ত্যস্য সভ্যং তাস্যাব সন্ত্যস্থ স্থাদিতং। তথা অভসত্যনেত্রং অভঞ্চ স্থাতা বাণী সত্যক্ষ সমদর্শনং তথা ভগবতা

#### বৈক্ষৰতোষণী।

মতঃ সত্যপরং সত্যত্রতদ্বাদেব সত্যপ্রিয়ে ভবান্ তচ্চ তব প্রীতিং জ্ঞাদ্বা বিধীরমানঞ্চেৎ শ্রেষ্ঠং ভবতি শ্রেষ্ঠ্যক তস্য তৎপ্রাধিসাধনতাপর্দ্বনেবেতি। তথা তৈ ব্যাথাতং। অভঃ সত্যক্রোশনেন ধরণ্যাপি স্বং প্রাপ্ত ইতি ভাবং। সচ ধর্মো মহাস্তাস্য তব

বৃক্ক এবেত্যাহু: ত্রিসভ্যমিতি। অভঃ কলেঃ প্রথমাংশমভিব্যাপ্য ত্রির্গস্যাপি তবাবতারোহয়ং নাযুক্ত ইতি ভাবং। তিরসভ্যমেব

সভ্যস্য যোনিমিত্যাদি বিশেষণত্ররেণোপপাদিভং। সভ্যস্য সভ্যমিতি অসংহিতা নির্দেশন কাল ব্যবধানাং পৃর্বাভ্রমদ্বমন্ত্র্রতে পাদান্তবং সকাকু গানপ্লুতেন বা। তত স্তবৈব ছেলোহের্লাধেন পঠনীয়ং। তদেবং সভ্যত্রতম্বং ত্রিসভ্যমক চিত্রমিত্যাহু: গুতেতি সভ্যা প্রিয়াচ বা বাক্ সা স্থন্তা সৈব গুতং সমমব্যভিচারি ফল্কানং তং সভাং তরোরপি প্রবর্জকং প্রকাশকব্রতি তস্য তরোর্কাঙ্বনসন্মো ধর্মারব্যভিচারিস্বং কৈমুভ্যোনামীতং বৈদিকরপরো স্বরোঃ পরমাশ্রমন্তন ত্রিসভ্যমিপি অবর্ত্তক বিশিষ্ট্যমুক্তং। প্রাল্যান্তর্বরিক্তানেন ভবিষ্যৎ কালক্ত স্থিতি সমর ইত্যানেন বর্ত্তমান্তিত জ্ঞেয়ং। যহা ব্রতং সক্লদেব প্রপালা য স্থবাদ্বীতিচ

বাচতে। অভয়ং সর্বাদা তবৈ দদান্যেত্র তং মন ইতি লক্ষণং। অতে। যাদবাদি সভক্তানামভর্মার্থং দ্বাবতীর্ণং বৃক্তমেবেত্যর্থঃ।

যতঃ সত্যক্ত পরং সদা সর্বাণা মিথ্যা রহিতং ইত্যার্ক্ষ। অতএব ত্রিসভাং যতঃ সন্তাস্য ব্যবহারিক সভাক্ত প্রপঞ্চক্ত যোনিমিত্যাদি।

# ঐবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ত্বমেব প্রপ্নত্তাহ'। সত্যং ব্রতং যদ্য তং । সক্লদেব প্রণয়ের ব তবান্ধীতি চ বাচতে । অভবং সর্বাদা তবৈ দদায়েত্ব তং মনেতি ত্বক্তে:। নচ স্বভক্তপালকদেবতান্তরবং ত্বনিভ্যোহস্থক্টশেচত্যাহ। সত্যঃ সর্বাদাদেশবর্তী পরঃ প্রেচ্ছ তং। বহা। সত্যং সত্যনামানং। সত্যে প্রতিষ্ঠিতঃ কৃষ্ণঃ সত্যমত্র প্রতিষ্ঠিতং। সত্যাৎ সভ্যোহি গোবিন্দ ক্তন্থাৎ সভ্যোহি নামত ইত্যুদ্যন পর্ব্বোক্তেঃ পরং পরমেররং। ত্বু দ্বিবলাদরোপি সত্যা এবেত্যাহঃ। তিলা জ্ঞান বল ক্রিয় শক্তরঃ সত্যা যদ্য তং। ন তদ্য কার্যাং করণঞ্চ বিদ্যতে ন তৎ সমশ্চাভাধিকশ্চ দৃশ্যতে। পরাদ্য শক্তি বিবিধৈব শ্রহতে স্বাভাবিকী জ্ঞান বলক্রিরা চেতি শ্রুতেঃ। ত্বদংশা অপি সত্যা ইত্যাহঃ। সত্যদ্য মৎস্য কুর্ন্বাদ্যবতার বৃন্দশ্য যোনিমূল্যমন্থান মবতারিগ মিত্যর্থঃ। ত্বনাগি নিত্য মিত্যাহঃ। নিহিতং সন্নিহিতং স্থিতমিত্যর্থঃ সত্যে মধুরাবৈকুষ্ঠাদিলোকে। কিঞ্চ সারস্য সার ইতি বং সমস্থাচিবস্থপারন্থনেবেতাহঃ সত্যন্য সত্য মিতি। যহা সত্যদ্য বংকিঞ্চিৎ কালবর্তিনো মায়িকপ্রপঞ্চন্য প্রকাশকত্বাৎ সত্যং সর্ব্বকাবর্তিনং চন্দ্রশন্ত শ্রোত্রা শৌত

করিতে লাগিলেন্ যথা—ভগবন্! আপনি সত্যত্রত অর্থাৎ আপনকার সংকল্প সত্য, সত্যই আপনাতে প্রেষ্ঠ প্রাপ্তি সাধন অর্থাৎ সত্যাচরণ বারা আপনাকে প্রাপ্ত হওয়া যায়, আপনি তিন কালেই অর্থাৎ সৃষ্টির পূর্বের, প্রলম্বের পর এবং হিছি সময়ে সত্য স্বরূপ অর্থাৎ অব্যভিচারে সর্বেদ। বর্ত্তমান আছেন, কারণ আপনি সভ্যের অর্থাৎ পৃথিনী জল তেজঃ তথা বায়ু আকাশ এই পঞ্চভূতের যোনি, স্ত্রাং সৃষ্টির পূর্বের, বর্ত্তমান ছিলেন। একণেও সভ্যে আর্কাশাদি ঐ পঞ্চভূতে অন্তর্যামিত্ব রূপে অবহিত রহিয়াছেন, ইহাতে স্থানির সময়েও আপনকার সভ্যত্ম দৃষ্ট হইছেছে। আরু আপনি ঐ সভ্যের অর্থাৎ পৃথিব্যাদি পঞ্চ ভূতের সভ্য অর্থাৎ পারমার্থিক স্বরূপ, বে হেছু তাহার বিনালে ত্মাপনিই অর্থাই বাকেন, সভ্এব প্রস্থা সময়েও অবধিত্ব হেছু আপনকার সভ্যত্ম নিশ্চয় হয়। অধিক স্কৃত্ত

# একায়নোহদো দ্বিফল ত্রিস্ল শত্রসঃ পঞ্চিবিষঃ ষড়াত্ম।

# विश्वत्योगी।

ব্যাধ্যাসম্ভানতাং সত্যঞ্চ সমদর্শনমিতি শতক স্থন্তা বাণী কবিভিঃ পরিকার্ত্তিতা ইতি ত্রেংনিত্রং নয়ন সাধনং নেতারং প্রবর্ত্তক-মিতি বাবং। এবং সর্ব্ধ প্রকারেণ সত্যাস্থকং তাং বরং শর্বং প্রবাহ উত্যর্থঃ ॥ ২০ ॥

নম্ ভবস্তোহপি লোকেশ্বা মন্তুল্যা এব কিমিতি মাং শরণং প্রপদ্যন্তে নৈবং বাচ্যং স্থমেবৈকঃ দর্পেশ্বঃ দর্প স্ট্যাদি কারণতাং বরন্ত ত্দেক শরণা এব লোকাদি রূপং বৈতঞ্চ সর্পং ত্রাতিরেকেণ নাতীতি বক্তুং হৈতপ্রপঞ্চং বৃক্ষরপেণ নির্পরন্তি একারূন ইতি অসৌ প্রপঞ্চ আদি বৃক্ষঃ বৃক্ষাতে ইতি বৃক্ষঃ। সমষ্টি বাষ্টি দেহরূপঃ ক্থংভূতঃ একারনঃ একা প্রকৃতিরয়নমাশ্রন্থা যস্য।
ত্বিফ্লাং ছে স্থ তঃথে কলে যস্য সঃ। অরোগুণা রক্তঃ সন্ত তমাংসি মূলানি যস্য সঃ। ধর্মার্থ কামমোক্ষান্ট্রারো রসা যস্য সঃ। পঞ্চেক্রিরাণি স্বক্ চক্ত্ নাসিকা জিহ্বা শ্রোত্র সংজ্ঞকানি বিধা জ্ঞানপ্রকারা যস্য সঃ। যট্ উর্দ্ধঃ শোক্ষোহন্তরামৃত্যুক্ষ্পপাসা কোষা বা
আন্ধানঃ স্বতাবা যস্য সঃ। সর্প্ত ত্বস্ক্ মাংস মেদোহস্থি মন্ধ্রাণ গুক্রাণি ধাতব স্বচো যস্য সঃ। পঞ্চভূতানি মনোবৃদ্ধাহন্ধ রাশ্চ

# ৰৈষ্ণবতোষণী।

নমু দেবকীগর্ত্তে প্রবিষ্টস্য কথং সন্ত্যবোনিভাদিকং তত্রাহুঃ সন্ত্যাত্মকং সত্যো বিকাররহিত আঁয়া প্রীমূর্ত্তি র্যস্য তং অভং সমানং॥ ২০॥

ৰিখগ ইত্যধিষ্ঠাতৃত্ব মাত্ৰ বিবক্ষমা দাম্যেনৈব নিৰ্দেশঃ বিশেষস্ত তমোরেকঃ থাদতি পিপ্লান্নমিত্যাদে ক্রেয়:। এবমনমো বু কা-ক্রাতাবাং প্রপঞ্চাতীতবং দর্শিতং। প্রবাহ রূপেণ প্রথমত এব বর্ত্তমানস্বাং। আদিশ্চাদৌ সদাকালচ্ছিদ্যমানত্বাং বৃক্ষ। তত্র স্থা কুংখ রূপে কলে চতুরসঃ। স্বগষ্ট বিটপ ইত্যত্তাচ চ্ছ্মঃ প্লুতস্বরেণ ঘটনীরং। অন্তাইতঃ। তত্র একামন ইতীত্যস্তে ছাভ্যামিতি

# . ীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

মিতি বং। সত্যং কেবেদং বিশ্বমন্ত্রকাতি মাধ্বভাষ্য প্রমাণিত প্রতঃ। হেঁ ঋত নিতাসতাশ্বরূপ। সত্যং নেত্রং সর্বেজি-রোপ্লক্ষকং নয়নেজ্রিয়ং যস্য তং সত্য আয়া শ্রীবিগ্রহো যস্য তং॥ ২০॥

নমু বদি দেহেক্সিরধামাদি বিশ্লিটোহংমেব সত্যস্তর্হি জগদিদং কিমসতাং তত্র জগতং সত্যস্তেহণি কাসচ্ছেরাছং তব তু তনভাব ইত্যাহ:। একারন ইতি। অসো প্রণঞ্চ আদিরকো ভবতি। প্রথমত এব প্রবৃত্তবাদাদিং রুণ্টতে কালেন ছিলাতে ইতি বৃক্ষং। সমষ্টি বার্টি দেহরূপং। একা প্রকৃতিররনমাশ্ররো যস্য সং। কে স্থগছংখে ফলে যস্য সং। অরোগুণা মুলানি যস্য সং। চত্বারো বর্ণধর্মা আশ্রম ধর্মা বা রসা যস্য সং। পঞ্চ ইক্সিরাণি বিধা জ্ঞানপ্রকারা যস্য সং। ষট্ উর্ম্বরং আয়ানং স্বভাবা যস্য সং। অত্ শোক মোহ জরা মৃত্যু কুংপিপাসাং বৃত্ত্বরং। সপ্রধাত্তব স্বচো যস্য সং। ত্রস্থ্যাংস মেদোহস্থি বণা শুক্রাণি ধাতবং। অটো পৃথিব্য

আপনি সত্যের অর্থাৎ স্থন্তা বাণীর ও সমদর্শনের প্রবর্ত্তক, এইরূপ সকল প্রকারেই আপনি সত্যা-জুক হইয়াছেন, আমরা, সত্য রূপি আপনকার শরণাপন হইলাম ॥ ২০ ॥

প্রভো! আপনি যদি এ রূপ বলেন তোমারাও ত লোকেশ্বর অতএব মং সদৃশ, কেন আমার শরণাপন্ন হইতেছ ? এ রূপ বলিবেন না, সর্ব্ব স্ফ্রাদির কারণ প্রযুক্ত আপনিই এক সর্ব্বেশ্বর, আমরা আপনার আপ্রিত, লোকাদি রূপ হৈত প্রপঞ্চ সকল আপনা ব্যতিরেকে কিছুই নাই, হে ভপবন্। এই প্রপঞ্চ আদি বৃক্ষস্বরূপ অর্থাৎ সমন্তি ব্যতি দেহরূপ। এক (প্রকৃতি) ইহার আপ্রয়। ছই (স্থাছাও) ইহার ফল। তিন (সন্ধু, রক্তঃ, তমঃ, গুণ্ডরু) ইহার মূল। চারি (ধর্ম, কর্থ, কাম, মোক্ত) ইহার স্বন। পঞ্চ (প্রোত্ত, শক্ত, কাম, এণত্তর) ইহার মূল। চারি (ধর্ম, কর্থ, কাম, মোক্ত) ইহার রুস। পঞ্চ (প্রোত্ত, শক্ত, ক্রির, মাংস, প্রকার। ইহার স্বনা, স্ক্রা, স্ক্রা, ক্রির, ক্রির, মাংস, মোল, অফি, মাজা, উফা, ইহার অর্থা। ক্রিটিল প্রকৃত এবং শনঃ বৃদ্ধি, ক্রমার) ইহার বিটপা অর্থাৎ লাখা বিভার। নর (নব ইন্রির ছিন্তে ) ইহার ধার। ক্রিক্তর্থাৎ প্রাণ, ক্রপান, প্রসান, ক্রমান, ক্

সপ্তত্বগক্ত বিটপো নবাকো দশচ্ছদী **বিধপশ্চাধিরকঃ ॥ ২১ ॥**ত্বমেক এবাস্থা সতঃ প্রসৃতিত্বং সন্ধিনানং ছম্পুগ্রহশ্চ।
ত্বনায়য়া সমৃতচেতসপ্তাং পশুন্তি নানা ন বিপশ্চিতো যে ॥ ২২ ॥

#### खिशवतारी।

এবমষ্টো বিউপা যস্য সং নব বারাণি অক্ষান্দিজাণি যস্য সং। দশ প্রাণান্দ্রাং প্রাণি বিদ্যক্তে যস্য সং দশচ্চদী বৌ জীব প্রমাধ্যো যিন্দ্রানো সং বিধ্যাঃ ॥ ২১ ॥

এবং রূপস্য সংসার বৃক্ষস্য সতঃ কার্যস্থামক এব প্রস্থৃতিঃ প্রক্ষণে স্তির্জন্ম মন্ত্রাৎ স কারণমিত্যর্থঃ। দ্বনের সির্ধানং সংনিধীরতেহুন্মিরিতি লরস্থানং দ্বনোত্রাইণ্চ অর্গৃহাতি যঃ সং পালকঃ। নতু ব্রন্ধ বিষ্ণু ক্রনা এবংভূতাঃ প্রসিদ্ধাঃ কথমহমিতি চেত্রবাহঃ দ্মান্ত্রতি সংবৃতং পিহিতং চেতো জ্ঞানং বেষাং তে দ্বামের নানা পঞ্জি বেজু বিপশ্চিতো বিদ্বাংসঃ তে তথা নপঞ্জি ॥ ২২॥

# देवस्व वरकावनी।

শেবং পঞ্চেত্যাদে আনেতি করণে লুটে। বৃক্তাণীজিরপঞ্চক সভাবত্তেন। পশুন্তি পাদপা ইত্যাদে প্রাসিদ্ধ: কোবা জ্মাংস ক্ষিরমেদো মজ্জান্থীনি। লোম রক্ত মাংস রাষ্ধ্যি মজ্জান ইত্যেকে। ধাতবন্ত জ্গাদরং শুক্ত সহিতাঃ সপ্তজ্ঞিতি সপ্তাবরণানি জ্গ্যস্তেতি বা॥২১॥

মৃহ: জম্পদপ্রয়োগ তাত তাত তদিতর ব্যাবৃত্তি দার্চার্থ:। অক্তেন্ত:। यহা নমু প্রস্তুতিঃ সন্নিধানং চ মহাপুরুবঃ। অন্ত্রাহো বিষ্ণ:। কথমহমেব তাজদ্রপ তাতাহা জিতি। আকার প্রশ্নেবেশ অনার্য়া বেতু আসংবৃত্ত চেতদ তে নানা ন পঞ্চত্তি কিন্তেক্মেব পঞ্চতীতার্থ:। এবং সর্বেবাং ভগবজ্ঞপাণামভিন্নবং চাভিপ্রেত:। একত্তিব ভগবত্তিগ্রহত আভাবিকাচিত্তালক্ষ্যা নানা ক্রপতা সনাবেশাং। উপাসনা ভেবেনিব দর্শন ভেদান্ত। যথোকঃ প্রীনারদপঞ্চরাত্রে। মণির্যথা বিভাগেন নালপীতাদিভির্যুত:। ক্রপভেদনবাগ্রোতি ধ্যানভেদান্তথাচ্যুত ইতি। মণিরত্র নানা ছবিধারী বৈদ্ব্যাথ্যো জ্বের:। যথা সংবৃত্তচেত্রত: আর্ব্রের ত্তনীয়া নার্য্যা এব পূর্ব্বোক্রং নানাবিধং বাং পঞ্জান্ত। তরেব নানাব্যসৌ প্রাপ্রোতি ইতি মঞ্জ ইত্যর্থ:। যে বিপশ্চিত ক্তেত্ব তথা তথা ন মন্তরে। কিন্ত আভাবিকশক্ত্যবেত্যর্থ:। অন্তং সম্নানং। এবং সর্বেবামেব প্রীভগবজ্ঞপাণ্যিমায়িকত্বং। সচিদানশ্বন্ত্রপত্বক্ষেক্সং। ২২॥

#### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

থেজো বাধাকাশ মনো বুজাহকারা বিউপা: শাথা বিস্তার। বস্য স:। নব বারাণি অক্লাশ্ছিলাণি বস্য স:। দশ প্রাণাশ্ছনা: প্রাণি বিদ্যান্তে যস্য স: দশজ্লী। বৌ জাবেশবেরী থগৌ যত্ত্বিন্য মান্ত ॥ ২১॥ •

ছচ্ছকি কার্যাছাদ্শোহরং দ্বনীয় এবেত্যাছ:। দ্বনেব অস্য প্রপঞ্জুক্স। সতঃ সত্যস্য এক এব প্রস্তক্তিরংপাদক:। সন্নিধানং লয়স্থানং অনুগ্রহং পালক:। ভাব প্রধান নির্দেশেন তত্ত্বাধিক্যম্ভিপ্রেতং। নমু ভবদাদ্যো ত্রন্ধ বিষ্ণু ক্তা এবস্তাঃ প্রসিদ্ধাঃ ক্থমহমিতি চেত্তত্ত্বাহঃ। দেয়ায়েরা অসম্ভ চেত্সঃ অনায়তজ্ঞানা বাং নানা ন প্রসৃদ্ধি যে বিপশ্চিত তেওঁ। ত্রন্ধানীনাং দ্বন্তার-দাদিভি তাবঃ॥ ২২॥

ব্যান এবং নাগ, কৃষ্, কৃকর, দেবদন্ত ও ধনময় এই দল প্রাণ ইহার পত্র। ছই (জীব ও পর্যাত্মা) ইহাতে প্রকী॥ ২১॥

ভগবন্ ! এবছিধ কার্য্য রূপে সংসার বৃক্ষের জন্ম এক আপনা হইতেই হয়, অর্থাৎ একমাত্র আপ-নিই-এই সংসার জন্মর কার্য । অপর আপনিই ইহার সাম্পনি ইহার সাম্পনিই ইহার পালক। মাহাদি-বের জ্ঞান-আপনকার মায়ায় আচ্ছের, তাহারা আপনাকেই রক্ষা, বিষ্ণু, ক্লুল, বলিয়া নানাবিধ অবলো-ক্লু করিয়া থাকে, বিহান পুরুষেরা জন্মপ্র দেখেন না ॥ ২২,॥

বিভর্ষি রূপাণ্যৰবোধআত্মা কেমায় লোকস্ত চরাচরস্ত।
সব্যোপপন্নানি হুখাবহানি সতামভদ্রাণি মুহুঃ খলানাং ॥ ২৩ ॥
ত্বযুস্থুজাকামলসব্ধান্ধি সমাধিনা বেশিত চেত্রসৈকে।

# अध्यवसामी।

নস্থ দেবকীস্থতং মাং কথমেবং বর্ণমথেতি চেক্তত্রাহং বিভর্ষীতি। অবরোধ রূপ আত্মা তং রূপাণি মৃত্রী বিভর্ষি ধৎদে নতু তং কভাপি পুত্র ইত্যর্থং। ক্ষেমার পালনার সতাং ধর্মবর্ত্তিনাং স্থকরাণি ধলানাং অভ্যাণি নাশকরাণি॥ ২০॥

ন কেবলম্ভোক্তকানাং মোক্ষার্থ মপীত্যাহঃ স্বয়ীতি। স্বরি স্মাধিনা স্মাবেশিতচেত্সা নিমিত্তেন তৎপাদপোতেনাশ্রি-

# বৈষ্ণবতোষণী।

অববাধ রূপ আত্মা সর্ক্র্ল স্থরণ: প্রীদেবকীনন্দ্রনাধ্যন্থমেব সন্ধেন সচিদানন্দ্যনন্ধেন উপপন্নানি শ্রৌত যুক্তি সিদ্ধানি রূপাণি পুরুষাখ্যাদীনি মূর্ছার্কভিধি লগৎস্ক্রিং প্রতিধংসে প্রকট্যসীত্যর্থ:। অতো দেবকীলক্ষণনিজ্ঞপাক্তি হারা প্রাকট্যান্তব তরন্দনন্দেইপি তাদৃশত্বক ন ব্যাহস্তত এবেতি ভাব: লোকক্ষেমার্থত্বে হেতুঃ প্রথেত্যাদি। সংপালন ধলদণ্ডান্ত্যান্দর তং সিদ্ধেং ধলানামপি হুই কর্মতো নিরন্তে:। সন্তোহত্ত ধর্মমর্য্যাদা কারকাঃ থলা স্তল্লোপকা ইতি। অস্তত্তে:। যদ্ধা ত্বনেক এবাস্থ্যোদান্বেব শ্রীদেবকীনন্দন রূপক্তৈব তন্ত তাদৃশত্বং নির্দ্ধান্ত্রের হৈতি ভাবং ॥ ২৩॥

অন্ত তাৰন্ধজ্ঞপাবিশ্রণি সমরগতানাং তেবাং বার্তা অন্তদাপি মনোমাত্রেগাপি লব্ধতদাশ্রমাণামনায়াসেনাথিল সংসার হুংথনাশং পরম স্থাপরপ বংপ্রাপ্তিশ্চ ভবতি তংপ্রসঙ্গেনাক্রেবামপি আদৃশবং সম্পদ্যত ইত্যাহং দ্বীতি দাভ্যাং। পরম স্থাপ্তক তৎ পার দ্বীপার্মানে দ্বি হে অধুকাক্ষেতি পরম সৌন্দর্যমুদ্ধিইং। অনুমাবেশে হেতুং। কিঞাধিলক্ত অথওক্ত সবক্ত চিচ্ছক্তিবিশেষাচিন্ত্যা-

#### क्रममन्द्रः।

বিভরীতি। লোকদৃষ্টিং প্রতিধৎসে প্রকটয়সীত্যর্থ:। অতো দেবকীলকণনিজশক্তি দারা তব প্রাকট্যেন তৎপুত্রত্বেহিপি তাদৃশত্বং ন ব্যাহতমিতি ভাব:। ন কেবলং পালনার্থং কিন্তু ভক্তজনানাং স্বাহতবানন্দাবেশার্থমিপি রূপং বিভর্বি। যেনোভীর্ব্যমানমুত্তীর্ণঞ্চ ভবানিং জানস্তি তৎসংসর্গেনান্যেহপি তাদৃশা ন ভবস্তীত্যান্ত:॥২৩॥

বন্ধীতি। হে অবুজাক ইতি সৌন্দর্য্যং ব্যঞ্জিতং অথিল সন্ত্রধায়ীতি অপ্রাক্তত সন্ত হেতৃক নিরতিশয়ানাং ন গুণা দং প্রাকৃত সন্ত্রস্য থণ্ডাবেন সাতিশয়ত্বাৎ পরিমিত কার্যাদাচে। অমলেতি পাঠে প্রসিদ্ধ সন্তাধ্যানেনাপি তাদৃশত্বং ব্যক্তং। তাদৃশে দ্বি ভবসমূত্র-

# **এ**বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

অন্যেহপি মৎস্যকুর্ম্মাদয়ে। বহৰক্ষীবন্ধায়াঃ সম্ভীত্যাহঃ। বিভবী তি। অববোধঃ চিদ্যনরূপঃ। সবোপপরানি শুদ্ধসবৃষ্ণরূ-পাণি থলানাং অভন্রাণি অভন্রক্রাণি॥ ২৩॥

ক্ষোরেত্যকং। তদেব ক্ষেমং বাস্তবম্ভিব্যঞ্জরতি দ্বীতি থিলং নিকুটং সত্তং গুণাত্মকং অথিলসত্তং বিশুদ্ধ সন্তং নিশুণং ধাম অন্ধ্যং যস্য তদ্মিন্। অমল সত্তেতিচ পাঠঃ স্মাধিনা পৃথিব্যামবতীর্ণস্য তব রূপগুণলীলাদি ধ্যানাতিশয়েন দ্ব্যাবেশিতং বচ্চেত

ব্রহ্মন্ ! স্থাপনি এরপ বলিবেন না যে স্থামি দেবকীপুত্র স্থামাকে এরপ বর্ণন করিতেছ কেন? প্রেডা ! স্থাপনি জ্ঞানস্থরপ স্থাস্থা, চরাচর জগতের কল্যাণার্থ সময়ে সময়ে বিবিধ মূর্ত্তি ধারণ করেন, বর্দ্ধতঃ স্থাপনি কাহারও পুত্র নহেন। স্থাধিকস্ত স্থাপনার ঐ মূর্ত্তি সম্বন্ধণায়িত এবং ধার্ম্মিক জ্ঞানগরের স্থাবহ ও ধলদিগের বিনাশ কর। অতএব স্থাপনাকে ঐ রপ বর্ণন করা অমুচিত নহে॥ ২০॥

হে অখুজাক ! আপনি নির্মালসবৃত্তণের ধাম, প্রধান প্রধান : বিবেকিপুরুব সমাধিযোগে আপননকার চর্ণ রূপ জরণী আশ্রর পূর্বক ভবসাগরকে গোষ্পদ (ভূচই ) করিয়া থাকেন অর্থাৎ বে সকল পুরুষ নিকাম হইয়া আপনকার ভলনা করেন ভাঁহাদের অনায়াসে মুক্তি হর। হে দেব ! কেবল

ত্বং পাদপোতেন মহৎ কুতেন কুৰ্বান্তি লোবংসপদং ভবানিং । ২৪ ॥ ব্যং সমৃতীয়া হৃত্ত্যং হ্যামন্ ভবাৰ্থং ভীন্নদলনোহয়াঃ।

#### वीधत्रकामी।

তেন একে মুখ্যা বিবেকিনঃ মহন্তিঃ ক্লতেন সেব্যতয়া সম্পাদিতে নয়ছা ইদমপি মায়াময়মিত্যনাদরং পরিত্যক্স ইদমেব মহৎ সর্কোংক্ষষ্টমিতি মনসি ক্লতেন বছমতেনেত্যর্থঃ। ভবান্ধিং তুল্ছং কুর্বন্তি অনারাদেন ভক্ষমানানাং নিকামাণাং মুক্তিরিত্যর্থঃ॥ ২৪॥

নম্ব তেন পোতেন চেৎ পূর্বে পারং গতাঃ তর্হীদানীস্তনানাং কা গতি স্তত্তাতঃ স্থীয়মিতি। স্বয়মর্থঃ হে হ্যমন্ স্বপ্রকাশ দ্বং পাদপোত সামীপ্য মাত্রেণ ভবাধ্বেধী বংসপদ মাত্রে লাভে তত স্তলিরপেক্ষাঃ স্বয়মেব অস্তেষাং ভীমং স্বহন্তরমপি ভবার্ণবং সমূ-ভীর্য্য ভবৎ পদান্তোক্তই রূপাং নাবং অত্রেব নিধার ভক্তিমার্গ সম্প্রানারং প্রবর্ত্ত্যেত্যর্থঃ পারং যাতাঃ তৎ কিং যতঃ অভদ্রসৌহ্নদাঃ সর্ক্ত্তেষ্তিপ্রীতির্ক্তাঃ অতত্তেবাং ভরণায় নিধারেতি। কথং মৎ পদাশ্রেণ মাত্রেণ ভীর্ণা অত উক্তং ভবান্ সদম্প্রহং সতো

#### বৈশ্বতোষণী।

পরিমিত সর্ব্য স্থাত্মক ত্রনীর অরূপ অংথাভিব্যক্ত শুক্ষসত্বস্য ধালি আপ্রয়ে অমলেতি পাঠে তক্ত মালা মল রাহিত্যেন যৎ শুক্ সত্বসংজ্ঞতং তদেব সাক্ষাত্তকং॥ ২৪॥

সম্য গুটজেন্তীত্বেতি বংসপদমাত্রতা করণেন নাব ন্তিতীর্বোশ্চ চেষ্টামাত্রং নিরন্তং। ত্বামন্নিতি তচ্চ তব প্রকাশ স্বভাবাদেবেতি ভবিং। অত্র পূর্বতিচুপদাদি শব্দস্য সাধনলক্ষণ ভক্তেনী তাৎপর্যাং। অত উক্তমত্র নিধায়েতি। অক্সন্তৈঃ। তত্র কথং মৎপাদে-

#### क्रममसर्छः।

পার পরমস্থদ দ্বীপায়মানে মহৎ ক্লডেন পরমাদর বিষয়ীক্লডেন দ্বংশানের পোতেন্ আবেশিতং প্রবেশিতং তচ্চেডঃ তেন ভবান্ধিং গোবংসপদং কুর্বস্তি। তদানন্দেন তদ্ভিত্মপি ন জানস্তীত্যর্থ:॥ ২৪ ॥

স্বয়মিতি স্বত্ৰ পূৰ্ব্বত্ৰত পাদশব্দস্য সাধন লক্ষণায়াং তত্তকাৰেৰ তাৎপৰ্য্যং। তত্ৰ নিধায়েতি। স্বতঃ টাকাচ ভক্তিমাৰ্গং প্ৰাব-শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

ত্তেন হেতুনা প্রাপ্তেন বংপাদ পোতেন মহৎক্তেন মহত্তিবান্ধে: পোততুল্টীক্তেনেতার্থ:। গোবংসপদং কুর্বন্তি ভবানেরস্তি-স্বমপি ন জানস্তীতার্থ:॥ ২৪ ॥

কিঞ্চ ত্বংপাদপোতাশ্রমণমাত্রেলৈর ভবানে গোল্লাক্রের জাতে বৈশ্ববা ভবানিমজানত্ত এব পত্তামেবোল্লাক্ত্রীত্যান্ত:। স্মন্
মিতি তরণ সাধন নিরপেক্ষমের অন্যাঃ স্থান্তরমণি ভীমমণি সম্ত্রীয়া যাতাঃ হ্যমন্ হে স্থাইতি তং বেষামন্তঃকরণে নোদেষি
তেবামের তমঃ প্রাক্ষণঃ সংসারোহর্ণর ভ্ল্যো ভীমো হস্তরশ্চ ভবতি। প্রেমভক্ত্যুদম পর্কতে ত্যুদিতে তু সমত তমসি স্মানের
নাই সতি স্বামের সংসার তরণং ভবেদতো ভবংপদাক্তোক্রনামমত্রের কুলে নিধারের ভক্তিমার্গ সম্প্রদার প্রবিষ্ঠ্যের যাতা তে থথা
ন্যোপ্যবং তরেয়ুরিত্যভিপ্রায়েণভূত্বপ্রেক্ষতে ইতি ভাবঃ। অত্র সংসারম্য সামক্ত্যেন নইছেন্দি বয়ং সংসারিণ এবেভি ভক্তানাং
মিথ্যাভিমান এব গোবংসপদাকারঃ সংসারঃ। যথা চ গোবংসপদ কলং পাবনং প্রাঘনীয়ঞ্চ ভবেং তথৈব তেবাং সোহভিমানোপ্যন্যবাং ভক্তমানিনামভিমান রোগহরোহভিজ্ঞানঃ প্রাঘনীরশ্চ ভবতীতি ভাবঃ। যতঃ সংস্ক বৈশ্ববেশ্ব অন্ত্রের এতাদ্শো

আমরাই আপনকার চরণকে সেব্য বলিতেছি এমত নহে পূর্বতন মহাজনমাত্র আপনকার পদকে দেব্য রূপে গ্রহণ করিয়াছিলেন ॥ ২৪॥

প্রতা। আপনি যদি এ রূপ বলেন পূর্বত্ন ব্যক্তির। আমার চরণ তরি যোগে ভ্রসাগরের পরপার গমন করিয়াছেন তবে ইদানীস্তন ব্যক্তিগণের উপায় কি ?। তে স্থাঞ্জাণ। আপনি ভক্ত জনের অসুগ্রাহক, ইহাতে আপনকার চরণ তরির সামীপ্যমাত্রেই এই সংসার গোষ্পদ তুল্য হয়, সত্রের পূর্বতিন মহাজনগণ এ তরির সংপ্রকান। করিয়া অন্সের মুক্তর হইলেও মুখং ভ্রার্ণর উত্তীর্ণ হইয়াছেন, স্থান ব্যাহার ভক্তিমার্থ, সম্প্রায় প্রবর্ত করাইয়া, স্থাপনকার পদাস্থ রূপ তর্ণী এই খানেই রাধিয়া সংসার সাগ্রের পার হইয়াছেন, ভাহার কারণ সর্ব্ব ভূতের প্রতি ভাহাদের অতিশায়ু

# ভবৎ পদাভোক্ত নাৰ্যত্ত নিশার যাভাঃ সমস্থাহো ভবান্ ॥ ২৫ । যেহন্মেরবিশাক বিমৃক্তমানিন স্বাভভাবাদবিওম বুদ্ধঃ।

# विभन्नवानी ।

ভজানহুগৃহাতীতি ॥ ২৫ ॥

নমু বিবেকিনাং কিং মন্তৰনেন মুক্তা এব হি তে তত্ত্ৰাহুঃ বেছন্ত বিস্কোমানিনঃ বিমুক্তা বরমিতি মন্তমানাঃ ছবি জাতো নিরক্তা বো ভাব স্বস্নান্তক্ষেরভাবাদিতার্ছঃ। ন বিশ্বজ্ঞা বৃদ্ধির্ববাং তে তথা বহা ছবি জন্ততা ইতি ছেন্দঃ অন্তম্বতরঃ বাদেবেব বিশ্বক বৃদ্ধরঃ

# देवकक्टजांवनी।

ভ্যাদৌ ক্রানং বিনেতি শেষ:। যথা এবং তেষামেব তভারণ কারণতে হেতু: সম্ভ এবাছগ্রহরণা বস্যেতি ॥ ২৫ ॥

নত্ন বিনাপি মংগদাল্লরং ক্লানেনৈর সংসারোজয়ণাদিকং ভবেৎ কিজেন তত্রাহার ইভি হে অয়বিক্ষাক্ষ্য ইভি দৃষ্টিমাত্রেণ সর্পতাপ হারিত্বসূক্ষা। ভালুদেহণি বরি বছৰ পর্যবসিতেন বৃষ্ণপদেন তদীরাশ্চ গৃহত্তে। অস্তাইতঃ। ভত্র প্রভাগীত্যাদি গ্রহণাৎ মনন নিদিধ্যাস্নাদি বরা প্রথমত তাবং ব্যাক্তভাবাদবিশুদ্ধ বৃদ্ধরঃ তথাপি ক্লান মার্গমাল্লিত্য বিমৃক্তমানিনঃ। দেহবরাতিরিক্তব্দেমাল্লানং ভাররকঃ। ততঃ। ক্লেশাহবিকভরতেরাম্বাক্তাসক্তচেতসামিত্যকেঃ। কুচ্ছেণ পরং পদং লীক্ষুক্তি রূপং আক্রহ প্রাণ্যাপি ততোহধঃ পতত্তি কদা ইত্যপেক্ষায়ায়হঃ অনাদৃতেতি বদীতি শেবঃ। তেবাং ভক্তি প্রভাবস্যানস্থ্তত্তের্ছি পূর্বক্স্য ব্যানাদ্বস্য নিবর্তকাভাবাং। তথাপি দক্ষানামণি পাপ কর্মণাং মহাশক্তি শ্রতকাবং পাদপল্লাবক্সরা প্নর্কিরোহাং তথাচ বাসনাভাব্যগৃত্ত শ্রতিগবং পরিশিষ্ট বচনং। লীবন্মুকা অপি পুনর্বদ্ধনং বাত্তি কর্মভিঃ। বদ্যচিত্য মহাশক্ষো ভগবত্যপ্রাধিন ইভি। অত-এব তত্ত্রের লীবন্ধুকাঃ প্রশাল্ভরবচনক। নাস্ত্রভতি বো মোহাং ব্যাক্তাক্ত কর্মভি র্জাবং পরাঃ। রথবাত্রা প্রসাক্ত শ্রাক্তাক্ত বো মোহাং ব্যাক্তর ক্রমণীশ্বরং। ক্রানামি দক্ষ কর্মণি স্ব ভবেদ্ধ রাক্ত্য

#### क्रमनमर्खः।

র্ব্যেক্তর্থ:। ইত্যেষা। ভবাপবর্গেত্যস্য ব্যাখ্যারামপি স্বন্ধ:॥ ২৫॥
বেন্যে ॥ ২৬ ॥

#### **अविन्नाश्वक्वर्वा**।

नात्मार्यसमा मः ॥ २८ ॥

বৈশ্বাসামের তবার্ণবো গোলাদী ভবতি বে তু তব বিশুক্ষস্বমন্ন বপুকি সান্নাভানবন্তো জ্ঞানিন শুবান্ত স্থান্তরে। তীম এব ক্রেন্স্ন স্থান্তর বর্ত্তান্তি তবার্ণবমপ্লবেশঃ বড় বর্গ নক্রমস্থেন ভিতীর্ধতি। তবাং হরের্জ্সবতো ভলনীরমন্তিং ক্রেজ্যুণং বাসন্মূরের ক্রেন্সমিতি বথা সনৎকুমারেগোক্তং। ক্রেশোহ্বিকতরন্তেবামিতি বথা তগৰতাপি নৈক্র্যামপাচ্যুত তাববর্জিতং ন শোভতে জ্ঞান বলং নির্ম্লনমিতি বথা নারনোপ তথৈব দেবা জ্ঞান্তঃ। বে ইতি। জন্যে উক্ত লক্ষ্ণেতাব্দম্পূর্থীতেতাঃ সন্ধ্যোতিরাঃ। জনবিদ্ধান্তেতি ছংকুপাবলোক্তন মানুর্যানস্থানি ইতি ভাবঃ। বিম্ক্রমাদিন ইতি ছয়কা বথা সংসারোজীর্ণা জ্বপি সংসারি-মানিন তথেবৈতে সংসান্ন মধ্য গতিতা জলি বিম্ক্রমানিনজনে হেতুঃ ব্যারবিশাক্তে মধ্যাকারে অভভাবাৎ নারাঃ শাবলাসন্তেন প্রত্যাভাবি ক্রেন্সমানি কর্মানিভিনিতি তর্মানিভিনিতি তর্মানিভিনিত তর্মানিভাবিত্তকালাঃ কামাদি নির্জন্ধ স্পকাতঃকরণ ভ্রেম্বান্ত্বপ্রমানিভাবিত্তকালাং ক্রান্তিন পরং পদং জীবনুক্তসমান মাক্রহ্যেতাবাং ক্রীভূত জন্যা ব্রুক্ত হৈ তাং বিনা প্রস্বপনারোহাসন্ত্রাৎ প্রেরঃ পতি ক্রেন্সমানিভাবিত তর্মানিভাবিত ক্রেন্সমানিভাবিত ক্রেন্সমানিভাবিত্ব ক্রেন্সমানিভাবিত ক্রেন্সমানিভাবিত ক্রেন্সমানিভাবিত ক্রেন্সমানিভাবিত ক্রেন্সমানিভাবিত ক্রেন্সমানিভাবিত ক্রিম্বান্ত্রমানিভাবিত ক্রেন্সমানিভাবিত ক্রিম্বান্তিত বিনা জ্ঞানং ন সিক্রেলিতি শাল্লাক্রের ক্রিক্রিন্সানী ক্রিক্রানা ক্রিক্রান্তিত নার্নানিভাবিত করা ক্রেন্সমানিভাবিত ক্রেন্সমানিভাবিত ক্রিন্সানিভাবিত ক্রান্ত্রমানিভাবিত ক্রিন্সমানিভাবিত ক্রিন্সমানিভাবিত ক্রিব্রান্ত্রমানিভাবিত ক্রেন্সমানিভাবিত ক্রিব্রান্ত্রমান্ত্রমানিভাবিত ক্রিম্বান্ত্রমানিভাবিত ক্রিন্সমানিভাবিত ক্রিব্রান্ত্রমানিভাবিত ক্রিন্সান্ত্রমানিভাবিত ক্রিন্সমানিভাবিত ক্রিক্রান্সমানিভাবিত ক্রিন্সমানিভাবিত ক্র

मन्ना, मक्टल उपचारण भात स्ट्रेंटर विनन्ना के छत्री करेंना बाम नार्ट के के

তে অরবিশালোচন ৷ বে সকল পুরুষ ভবনীয় চরণপত্ম অনানয় করিয়া আপনাদিগকে সুক্ত বলিয়া অভিনান করে, আপনকার প্রতি ভক্তির অভাষ হেডু তাহাদের বৃদ্ধি বিভয়া নতে, অধবা আপনাতে ব্রতি না থাকা প্রস্কুক কেবল ভাহালের বাব ( সুতর্ক ) বিষয়েই বিভয়া বৃদ্ধি হতরাং গোলবন্ধ ক্রি আরহ কুছেন পরং পদং ততঃ পভত্তাবৈশিদ্ভর্মদর্ভারঃ ॥ ২৬॥ তথা ন তে মাধব তবিকাং কচিত্রশুস্তি মার্গাই ছার্ম বন্ধসৌহনাঃ।

# अभवाती।

কুচ্ছেন বহৰৰ তপদা পরং পদং মোক্ষসন্নিহিতং সংকুলতপঃ ঐতাদি আক্সন্থ পতত্তি বিদৈরভিত্রত্তে ন আদৃতে যুদ্দত্ত্রী বৈতে॥ ২৬॥

ঘদীরার ন ক্লাচিদ্পি পত্রীত্যাহ: তথা নেতি বিনারক। বিয়হেতবঃ তেবাসনীকানি ছোমাতানি পান্তি যে তেবাং মুর্দ্ধহ

# বৈশ্বতোৰণী।

ইতি। তৰেবং ভজিসোপান জ্ঞান মাৰ্গে তৰ্জাপি চিত্তবিদ্ধাং শনকৈবিৰ্ত্তে ইত্যাদে তব্ৰ সৰূপদং চিত্তমাক্ষয় ব্যোৱি ধাররে দিত্যা-দৌচ যক্ষান ত্যাগো ধারণান্তরং সিদ্ধিশ্চ ক্ষয়তে তত্রানাদরো ন মন্তবাঃ। কিন্তু ত্রন্ধকৈবল্যেকা সংকার বশালৈ বিলগ্নেবং। বধা নির্জাসকার্বশাং বিবরাবিষ্টানাং বিবরে তদ্পতে। তত্র জ্ঞাতগ্রতা বক্ষনাচ ক্রিরতে ইতি ত্রন্ধণ্যের মন্ত্রতা স্থাং। অভ্যেবমন্দ্র ভক্তাং ভগবান্ মুকুন্দো মুক্তিমিত্যাদেঃ। অনাদরেহপি নরকোহণি ক্ষরতে। নাতঃ পরং পরম বত্তবতঃ স্বন্ধপমিত্যাদিৰু। বো নাদ্ভো নরকভাগ্তিরসংগ্রাসকৈরিত্যান্যকোঃ। তত্মাং সর্বাং সমন্ত্রাং। ২৬॥

তজ্ঞপোপাসকান্ত আত্মতবাদি জ্ঞানাভাবেছিপ খবর্ষপরিত্যাগেছিপ কথঞিং পাতকাপাতেপি নৈব প্রস্তীত্যান্থ তথেতি প্র্যিথ বিরোধে যথা ত্বং মূর্থ স্থপার্থ নেতিবং। যবা কিঞ্চেত্রার্থঃ। তাবকাঃ ক্রাচির্ক্তরণাপ্রিতা যে তে তু ক্রাচিং ক্টিদপি মার্গাদিপি কিং প্নমূর্গ্যাৎ ন পর্ভন্তি প্রত্যুত ছবি বন্ধগোঁহ্রলাঃ প্রাপ্ত নিশ্চন প্রেমাণঃ সন্তঃ। অভএব দ্রাছভিতে৷ গুপ্তাঃ সন্তঃ ইত্যাদি। মাধব হে লক্ষ্মীকান্ত ইতি তেবাং খতএব সর্ব্যাশাং দিন্ধিরপ্যভিপ্রেতা। যবা মধুকুলাবতীর্ণেতি পরম ক্রাক্রণঃ প্রভাব হৈ সর্ব্যাদিক্র্কেতি। প্রত্ন প্রভাবান্তেবাং তাল জ্ঞানেবৈতি ভাবঃ অক্সতিরঃ। যবা তথা তেন প্রকারণাপি প্রথম প্রব্তবাং ক্রাক্রিনান্ত ব্যানতিব্রবাণি ন লংগ্রত। কিন্তু বন্ধগোঁহ্রলাঃ সন্ত ইত্যর্থঃ। বিনারকানীক্রপান্ত্রিয় বিশেবেণ চরন্তি নির্ভর্গ

क्रममण्डः।

उथा। २१ ॥

# এবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

মতাং বহুকালেনাবিদ্যানিরসিনীং বিদ্যায়ৎপাদ্য অন্ধৃত্তবদশায়ৎপাদ্যত সহসৈবাস্তন্ধীরিতে তে বিমুক্তমানিন এবোচান্তে নতু বন্ধতো জীবনুকাঃ। ভক্যাহমেকয় প্রান্ধ ইতি ভগবহুকে উক্তিং বিনা তং পদার্থদ্যাপরোকাঞ্ভবালাভাং ভগবদপরাধ সন্তবাচ্চ দক্ষানামশি কর্মণাং পুনঃ প্ররোহাদধঃ পতন্তিচ। মতুকং। রথবাত্রা প্রসঙ্গে বিজ্ঞুক্তিচক্রোদর মৃতং প্রাণবচনং। নাম্ন ব্রক্তি বো মোহাব্যক্তং পরশেবারং। জ্ঞানান্ধি দক্ষকর্মাপি সভবেব্যক্ত রাক্ষস ইতি। বাসনাভাব্যোখাপিতং পরিশিষ্ট বচনঞ্চ জীবন্ধকা অপি পুনর্বন্ধনং বান্তি কর্মভিঃ। মদ্য চন্তা মহাশক্তে ভগবত্যপরাধিন ইতি। বিত্তা মার্লাভ্য তেবাং ব্রক্ত্ত ব্রপনামুৎপাদ্য অবিদ্যা বিদ্যবোক্ষপরামেপ্যক্রপরমন্ত্রা তৎপদার্থ সাক্ষাৎকারমন্ত্রাব্যমানা জীবন্ধকান বিদ্যবিদ্যান্য ব্যক্তি বিদ্যান্ত তেবাং ব্যক্তিং লভতে পরাং। ভক্ত্যা মার্লিজানাতি বাবান্ যশ্চান্ধি ভবতঃ। ততে। মাং তত্তে জাত্বা বিশতে তদনত্ত্রমিতি ॥ ২৬ ॥

নম্ম জ্ঞানিন এব কেবলং কিমিছাক্মিপাতে ত্বতে প্রহুত্ম চিত্রকেরাদি দৃষ্ট্যা তকা অপ্যাক্ষিপাতাবিদ্যত আহে তথেতি বথা বিমুক্তনানিনাংখা পততি তথা তাবকা মার্গাৎ ভক্তিবোগায়এপ্রতি কিমৃত মৃগ্যান্ত ইত্যর্থঃ। বদি বা অক্ততি তথা তাবকা মার্গাৎ ভক্তিবোগায়এপ্রতি কিমৃত মৃগ্যান্ত ইত্যর্থঃ। বদি বা অক্ততি তথা দার্গা বাংলা পতি বৃদ্ধানিতে প্রেয়ঃ শতশুলীভাব দর্শনাৎ ভক্তানাং অংশোপি প্রেমাধিক্য হেতৃরেব দৃষ্টা। বস্থা। তথা ন অশান্ত বতো ক্ষেত্রিকা বি বিশ্বনান্ধানাঃ। ন বে ভক্তা প্রশানীতি প্রতিজ্ঞাতবতা মনোগকরিব্যতেব

বছ জ্পের তপতা বলে মোক নিজিছিত পদ অর্থাৎ সং কুল, তপতা, বেদাধ্যয়নাদিতে আরোহণ করিয়াও প্রায়ই বিজে অভিভূত ইয় ॥ ২৬॥

পরস্তাতে মাধবা যে সকল ব্যক্তি আপনভার তক, আপনতেই সোলদ্য বর্ষ করিয়া,থাকেন ভারাদের ঐ রূপ তুর্গতি হয় না। ভার্যায়া অপিনী কর্তৃক অভিযুক্তি হইয়া নির্ভয়ে বিশ্বকারিগণের



ষয়াভিগুপা বিচরন্তি নির্ভয়া বিনায়কানীকপমুর্দ্ধ প্রভো ॥ ২৭॥ সত্তং বিশুদ্ধং প্রয়তে ভবান্ ছিতে। শরীরিণাং শ্রেয় উপায়নং বপুঃ। বেদ ক্রিয়া যোগ তপঃ সমাধিভি স্তবার্ছণং যেন জনঃ সমীহতে॥ ২৮॥

# बिधवयामी।

বিচরস্তি বিদ্বান জয়স্তীত্যর্থ: ॥ ২৭ ॥

সতাং স্থাবহানি রূপাণি ধারয়সীত্যুক্তং বিভর্ষি রূপাণীতি। তৎ কেন প্রকারেণ স্থাবহত্বমিত্যপেক্ষারামান্তঃ সন্তং বিশুদ্ধ-মিতি সন্তং বপুঃ প্রমুত ইত্যুদ্ধঃ। প্রেয় উপায়নং কর্ম ফলদাতৃ কথা যেন বপুষা জন শুবার্থণং পূজাং সমীহতে করোতি। কৈঃ বেদশ্চ ক্রিয়াযোগশ্চ তপশ্চ সমাধিশ্চ তৈঃ চতুরাপ্রমধন্মৈরিত্যর্থঃ। বপুষোহনাপ্রয়ণে হর্হণাসম্ভবান্নকর্মফল সিদ্ধিঃ স্যাদিতি॥ ২৮॥

বৈষ্ণবতোষণী।

জেন তানেব মহাবিদ্বর্গেশান্ বিল্ল করণার্থ মাগতান্ সোণানানীব ক্লবা শ্রীবৈক্ষুপদমারোহস্তীত্যর্থ:। তেষাং ভক্তি বিদ্লেহস্থতাপ: স্যাৎ তেনচ শ্রীভগবতো মহতী কপা স্যাদিতি অস্তৎ সমানং॥ ২৭॥

নাতঃ পর্বং পরম যন্তবতঃ স্থরপমিতি তৃতীয়োক্তায়্সারেণ পরম কারণ বৃদ্ধরঃ পরম তবৈক রূপছেহিপ বিশুদ্ধ সন্থায় তৎ প্রকাশ শক্তি রূপদেন তদভেদ বিবক্ষয়া বিশুদ্ধং মায়াতীতং চিচ্ছক্তি বৃদ্ধি বিশেষঃ সন্ধানে বপুরিত্যুক্তং স্থিতে পালনার্থং তৎ প্রারতে নিত্যানন্দবিবিধ প্রকারবানেব যত্র পালনে যাদৃশং বপুর্বুক্তং তদর্থং তাদৃশং বপুঃ প্রবর্ত্তরতীত্যর্থঃ যথা নানেক্রিরবানেব দেবদত্তো দর্শনার্থং চক্ষঃ প্রয়তে প্রবণার্থং প্রোত্রমিন্তি রাগদিশুতে তহুদিতি ভাবঃ তদেবং স্বয়ং প্রকটীভূর পালনে স্থাবহুদ্ধং দর্শিতং ধ্যানগতছেনাপি দর্শকৃত্তি শরীরিণামিত্যাদি শরীরিণামশের জীবানাং প্রেয়সঃ সৎকর্ম ফলস্য তৎ প্রেমান্ত প্রকার্থ বর্গস্য বা উপায়নং উপটোকনমিব করণয়া সাদর দানং বেন । যদ্ধা প্রেয়স স্তস্য উপায়নমাধিক্যেন প্রেয়া রূপং পরমানন্দর্রপমিত্যর্থঃ । এতসৈয়বানন্দস্যান্যানি ভূতানি মাত্রা অপি জীবন্তীতি প্রতঃ । উভর্মপাপ্যাপাসকানাং তত্তদাত্ত্বে পর্যবসানং বেদেতি ভদর্থপ্রধানেন্দত্রাপ্রমধন্দৈরিত্যর্থঃ । অর্হণ্য বিবক্ষিতত্বাৎ । কেবল বেদাদ্যর্পণ লক্ষণার্হণস্বত্ত বপুর্বিনাপ্যাদেশেনৈর সম্ভবাচ্চ । বেন বপুরা হেতুনা জনশত্রাপ্রমবর্তী সর্কোহিপি সম্যনীহতে ঘদনলপক্ষিত বপুর্বেদ্যাস্থিপ মাত্রমর্হণং তন্তু ন সম্যাগিতি ভাবঃ । ততশত্রুরাপ্রমিণামর্হণিদিন্ধ্য তৎ সন্ধিনামন্যেরামপি তৎ সিদ্ধের্ম্বক্রমেবাক্তং শরীরিণামিতি । অন্যবৈঃ । অত্ন ন কর্ম কলসিদ্ধিরিত । সর্কাগামপি সিদ্ধীনাং মূলং তচ্চরণার্চনমিতি ন্যারেন ॥ ২৮ ॥

# ক্রমসন্দর্ভ:।

তকৈ ইত্যাদি ব্যাখ্যায়াং স্বামতি দয়ং॥ ২৮॥

# এবিশ্বনাথটক্তৰৰ্জী।

মংপ্রভুনা মমারং ভ্রংশ: কৃত ইতি বৃদ্ধি বৃদ্ধান্ত করে। ততক্তাভিতত্তরা রক্ষিতা বিনারকানাং বিশ্বকারিণাং অনীকানি স্তোমাঃ তানি পাস্তি যে তেষামণি মৃদ্ধিস্থ বিচর্তি তানভিভবস্তীতার্থ:। বনা তচ্চরণাংত্তেপি ভক্ত্যা স্বস্থ্ধস্থ ধাররস্তীতার্থ:॥ ২৭॥

তদেবং বিভর্ষিরপাণীত্যনেন শুদ্ধবান্ধক শরীরাণাঞ্চরাচরলোকে প্রাকট্যমুক্তং। ক্ষেমারেতি তৎপ্রয়োজনং ক্ষেঞ্চ ভক্তেঃ কৈবলাং স্বয়ান্থ্রলাক্ষেতি চতুর্জি বিবৃতং তন্মধ্য এব বেখনোরবিদ্ধাক্ষেত্যনেন ভক্তের্গ গুলাবন্দ মোকফলকো জগবচ্চরণাদরে সতি ধ্বনিতঃ। ইদানীং ভক্তেঃ প্রাধান্যমপি প্রয়োজনং শুদ্ধবান্মক বপুঃ প্রাকট্যস্যেত্যাহঃ সন্থমিতি বিশুদ্ধং মারাতীতং সবং চিন্মরং বপুর্জবান্ শ্রমতে। কীদৃশং স্থিতে প্রাক্রন সমরে শ্রেম্বসাং উপ সাধিক্যেন অয়নং প্রীপ্রির্বত জ্ঞাকের এবাছঃ বেদাদিভিশ্তর্জি শত্রুরাশ্রমধন্ধিঃ সহ অর্থং স্বিভ্রে। বেন বপুষেতি বপুবোহনাশ্রমণেহর্গা সিদ্ধেঃ। ২৮॥

অধিপতিদিগের মন্তকোপরি ভ্রমণ করিয়া বেড়ান অর্থাৎ সর্ব্ব প্রকার বিশ্বজ্ঞয় করিয়া ফেলেন। অথবা তাহাদের মন্তককে সোপান করিয়া বৈকুষ্ঠ পদে অধিরোহণ করেন॥ ২৭॥

প্রভো! আপনি স্থিতি কালে বিশুদ্ধ সন্ত্রপ শরীর আগ্রেয় করিয়া থাটুকন, আপনকার সেই দেহ দেহিদিগের কর্ম ফল দায়ক, অতএব স্থাবহ, যে হেড় সেই শরীয় যোগে লোকে বেদ-ক্রিয়া-যোগ-তৃপস্থা এবং সমাধি দারা অর্থাৎ ক্লছুর্বিরধ আ্রেম ধর্ম দারা আপনকার পূজা করিয়া থাকেন। আপনি শরীর আগ্রাম না করিলে পূজার অভাবে কর্ম ফল সিদ্ধি হুইতে পারিত বা ॥ ২৮॥

# मदः नटक्वालतिमः निकः छटाविकान मक्कानिकिमाश्रमार्कतः।

# वीधतयामी।

ৰ্য্যৰ্জাক্ষেত্যাদিনা শ্লোক এয়েণ ভগবন্তকানাদেব মোক্ষো নাজেবা মিঠ্যুকং। তত্ৰ কৰ্ম ফলং হি ভক্তিং বিনা মাভূং মোক-শুভূ জ্ঞানৈক সাধ্যৰাৎ কিং ভক্তোতি সামূশবান প্ৰত্যাহ: সৰং নচেদিতি। হে ধাত: ইনং সন্থ নিজং তব বপু নভিবেচেৎ ভৰ্মি বিজ্ঞানং বিশিষ্ট মপবোক্ষং জ্ঞানং নভবেদিত্যসূৰক:। কথা ভূতং অজ্ঞান ভিদাপমাৰ্জনং অজ্ঞানঞ্চ তংক্কতা ভিদাচ তথোৱপমা-জ্ঞানং নিবৰ্ত্তকং। যথা অজ্ঞানং ভিদন্তি অজ্ঞানভিৎ বিজ্ঞানং মাৰ্জনং আগ প্ৰাপ্তমেবেতি। নমু জড়ানাং বৃদ্ধাদীনাং যতঃ

# देवकवरजावनी।

ধাতঃ হে বিবিধ মূর্জিধর ইলং সর্জোপকারকং সন্থাক্ষকং গুণশু বৃদ্ধানেঃ প্রকাশেঃ বৃদ্ধানে ক্রন্থ বৃদ্ধানে বাহলানে ক্র্যা প্রকাশত ইত্যন্ত প্ররোগশ্চায়ং বৃদ্ধানি প্রণঃ সন্ধান্ধিবিশের ব্রালি প্রণঃ সন্ধান্ধিবিশের ব্রালি প্রণঃ সন্ধান্ধির ক্রিনের প্রকাশতে বর্ণা গদানিঃ সচাত্ত সর্ক্র্যা সাক্ষত্ত সন্ধান্ধি বিশেষ প্রমান সাক্ষিত্বন প্রকাশতে বর্ণা গদানিঃ সচাত্ত সর্ক্র্যা সাক্ষত্ত সন্ধানি বিশেষ প্রমান প্রকাশতে বর্ণা গদানে বিত কর্মান ক্রির্যালি প্রমাত্ত বিশ্বাল ক্রির্যালি ক্রির্যালি প্রমাত্ত বিশ্বাল ক্রির্যালি ক্রির্যালি প্রমাত্ত ক্রির্যালি ক্রের্যালি ক্রির্যালি ক্রির্যালি ক্রির্যালি ক্রির্যালি ক্রির্যালি

#### क्रममण्डः।

অত্র সর শব্দস্য সাক্ষান্তদাবির্ভাবে শ্রীবস্থদেব দেবক্যাবেব তাৎপর্ব্যতোহবগতে। শ্রীবস্থদেবাদ্যাখ্যং সন্ধং বপুরিত্যাদি ধোক্যং।

#### धीविश्वनाथहक्कवर्जी।

নমু কেচিদার্শনিকা মহপ্য প্রাক্ত সন্মন্ত্রমেব মন্যন্তে তত্ত্বাহা । সন্ত্রমিতি হে ধাতঃ ইনুষিতি তর্জন্যা গর্ডং লকীকুর্জন্তি তব বপ্রিদং নিজং সন্তঃ শুদ্ধং ল ভবেছেৎ কিন্ত প্রাক্তনের সন্তঃ ভবেছে। তদা বিজ্ঞানং তথা ভূতদেন সতা মন্ত্রভবঃ মার্জনং লোপং আপ প্রাপ্তঃ । মহদন্ত্রত এবাত্র প্রমাণমিত্যর্থঃ । বিজ্ঞানং কীদৃশং অক্তানভিং অক্তান নিবর্ত্তমিতি স্বস্থারা বিশুদ্ধ সন্ত্রেন বিজ্ঞান মাত্রাদের সংসারো নিবর্ত্ত ইতি ভাদৃশ বিজ্ঞানস্য প্রামাণ্যং নাশকামিতি ভাবঃ । কিন্তান্ত প্রমাণাত্ত্রমান্ত্রাভাৱঃ । গুণপ্রকাশৈও প্রসাভিত্তিক্ষিত্রভাবনিক ন মান্ত্রেন প্রসাদক্ষ প্রেম প্রদাদক্ষ প্রেম প্রদাদক্ষ ক্রেম প্রকাশিতে সম্প্রতান্ত্রাভিন্ত জাত্রাছঃ । বন বা শুদ্ধসন্তর্বন হেতুনা প্রকাশতে নতু প্রাক্তত্বেন । স্বত্রব বন্ধাতে বস্থাবভারা ক্রান্তে শরী-

হে থাতঃ। এই বিশুদ্ধ সন্ত বদি আপনকার নিজ শরীর না হয়, তাহা হইলে বিশিষ্ট জ্ঞান যাহাতে অজ্ঞান ও অক্সান কৃত ভেদ নির্ভ হয়, তাহাও হইতে পারে না, গুণ প্রকাশ দারা আপনি সর্ব্ব সাক্ষী, পরিপূর্ণ স্বরূপ, এই প্রকার ক্রনাই হইতে পারে অর্থাৎ আপনকার বৃদ্ধাদি গুণ প্রকাশ পাইতেছে, আপনি জন সাক্ষী, বৃদ্ধারক হইয়া প্রমাতা হওয়াতে আপনকার গুণ প্রকাশ হইল এ ক্রাম অক্সান করা যাইতে পারে, আপনাকে সাক্ষাৎ করিতে পারা যায় না। পরস্ত ভদ্ধ সন্ত মৃতির

# গুণপ্রকাশৈরকুনীয়তে ভবান্ প্রকাশতে যক্তচ মেন বা গুণঃ ॥ ২৯ ॥ ন নাম রূপে গুণ কর্ম জন্মভি নিরূপিতব্যে তব তক্ত সাক্ষিণঃ।

# क्षित्रशामी।

প্রকাশ: তদু ক্ষেতি জ্ঞানং ভবেদেব গুণপ্রকাশৈ গুণাবিছিলে: প্রকাশৈ: ভবান্ সর্ক্রাক্ষী পরিপূর্ণ: কেবলমহুমীরতে কর্যতে নতু সাক্ষাৎ ক্রিয়তে ইত্যর্থ:। অহুমান প্রকার মাত্ত: প্রকাশতে যক্ত চ যেন বা গুণ ইতি। যক্ত সন্ধনী অয়ং বৃদ্ধাদি গুণাঃ প্রকাশতে যো গুণসাক্ষীত্যেবং যেন বা বৃদ্ধান্ধতে প্রমাত্রা বাহে। গুণাঃ প্রকাশতে ইত্যন্ত্মীরতে ইত্যর্থ:। গুদ্ধ সৰু বপুৰি পরি দেব্যমানেতু স্বদাকারেই গুলাকারেই প্রথমানেক সাক্ষাৎকারে। ভবেদেব ইতি ভাবঃ॥ ২১॥

এবং তাবস্তকানাং অভ্যুদরাপবর্গার্থং রূপাণি বিভর্ষীত্যুক্তং তান্তপি ভঙ্গনীয়ানি কেবলং নতু জ্ঞাতুং শক্যন্তে অনস্তত্থাৎ অভর্ক্যভাচ্চ মনোবচসোরগোচরভাদিত্যাহ: ন নাম রূপে ইতি। গুণাশ্চ কর্মাণিচ জন্মানিচ তৈ নিরূপিত্যব্যে নিরূপণার্হে ন ভবতঃ কুতঃ অমুমেরং বর্মুমার্মোয়ত তবেতি তত্রাপি হেডুঃ তল্প সাক্ষিণ ইতি নহি সাক্ষিণ স্তত্তং মনোবচোহগোচরমিতার্থঃ।

# देवक्षवरज्ञावनी।

প্রকাশতে বছিনের ধুম ইতি অতভ্যবশ্ব: পরমানন্দরপথেন স্প্রকাশতাৎ যেন প্রকাশে যেনচ ব্রহ্মজ্ঞানস্থাপি তিরোধানং সা ঘদীর স্থাপ্রকাশতা রূপা শক্তিরের স্থাৎ ততো বাছেন কড়েন সর্বেন তৎ প্রকাশে ন কিন্তু কথিকদন্ত্মানমের অরুণোদরাদিনা স্থানেরে-বেতি যথা মনাংস্থাসন্ প্রসন্ধানি সাধ্নামস্থ্রক্রহামিত্যাদি বক্ষাতে অতএব প্রীবিষ্ণুপ্রাণাদৌ সন্ধাদরো ন ক্রীশে যত্ত প্রাক্তা গুণাঃ। স শুলং সর্বভ্রেজ্যঃ প্রমানান্যঃ প্রসীদত্ত। ক্রাদিনী সন্ধিনী সন্ধিবয়েকা সর্ব সংস্থিতো। ক্রাদ্বাপাকরী মিশ্রা ঘরি নো গুণারজিতে ইত্যাদি বছতরমন্তি। যবা তত্তাপ্যেত্ত্বদীয়াবতারে প্রকাশহেত্ং বিশুদ্ধ সন্ধ বিশেষং বিনা জ্যাহাজ্যাদি জ্ঞানং নৈবস্যাদিত্যাহঃ সন্ধং নেতি নিজং স্বয়ং ভগবতন্তব সাক্ষাং সন্ধন্ধিতা অতএব স্ব্যাহাল্যাদি লক্ষণ বিশিষ্টং জ্ঞানং কীদৃশং তদিতর জ্ঞানম্বাজ্ঞানং তত্তিৎ মার্জনং নির্তিং প্রাপ নমু স্বয়ং ভগবানহম্বতীর্ণ ইতি কুতো জ্ঞানং তত্তাহঃ গুণেছি গুণ্মা প্রীদেবক্যাদি প্রভাবাদেঃ প্রকাশৈঃ। নমু ম্মাংশত এব তস্য তাদৃশাঃ প্রকাশা তবন্ধ ন বিলক্ষণ্যাদিত্যাহঃ প্রকাশত ইতি প্রস্কর্বণাদিত স্তাদৃশ্বানম্ভ্রাদিতি ভাবঃ॥ ২১॥

নমু নাম রূপে থলু মনোমরে এব দ্যাতাং কথং মজপদ্য তাদৃশত্বং বর্ণাতে তত্তাহা গুণাদিতি র্যে তব নাম রূপে তে নিরূপণীয়ে জ্ঞেছে যাথার্থোনামুভবনীয়েন ভবতঃ ইত্যর্থা তত্ত গুণৈনাম ভব্তবংশল ইত্যাদি রূপঞ্চ শ্যামস্কুল রাদি।

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

তদেব রূপ প্রদক্ষেন নামোইপি স্বপ্রকাশব্যাতঃ॥ ২৯॥

ন নামেতি পুর্বোক্ত গুণস্য সাক্ষিণঃ। তথাপি ক্রিয়ায়ং প্রবণকীর্ত্তনাদি লক্ষণয়াং ভক্তৌ প্রতিপত্তিভক্তৌ জাতারাং স্বশক্ত্যৈব-

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

রিষশরীরিণ:। তৈতৈ রতুল্যাতিশরৈ বাঁহিয় দেহিষসকতৈরিতি। যদা ইনং নিজং সবং শুদ্ধসবায়কং তব বপু ন ভবেদ্ধবির্ভবে-চেন্দ্র তদা অজ্ঞানভিৎ বিজ্ঞানমপরোক্ষামুভবো মার্জনং আপ নাশমেব প্রাপ্নয়াদিত্যর্থ:। কিছু তদা গুণানাং বৃদ্ধাদীনাং প্রকাশে ভবানমুমীরতে। কেবলমনুমীরেতৈব অনুমান প্রকারমান্ত:। যস্য গুণা প্রকাশক্ষে বেন বা বৃদ্ধধিষ্ঠাতা হেতুনা বাহোগুণা প্রকাশতে স দেখা ইতি ॥ ২১ ॥

ন কেবলমেডজ্ঞপমেব তে বিশুদ্ধসন্থাম্মকমণি শ্বেডস্য বাচকং নামাপি তে চ নামরূপে ভক্তৈয়বাস্ত্রিভুং শক্যেনান্যথেত্য-পীত্যাক:। নেতি শুলৈঃ শ্যামস্থলর স্কুপার্জ লোচনেতি কর্মন্তি গোঁবর্জনোদ্ধরণ ত্রিভুললালতেতি। জন্মতি নন্দনন্দন বস্থ-দেবনশ্বনেতি যে তব নামরূপে তে বদ্যপি যথা কথঞ্চিছাচ্যুধ্যেরে ভবত ত্তদপি সাক্ষিণো বিষয় ত্রষ্টু জীবস্য নির্মণিতব্যে সাক্ষাদ-

সেবা করিলে সেবকের অন্তঃকরণ আপনকার আকার প্রাপ্ত হয়, তাহাতে আপনকার প্রসাদে অবশ্রুই সাক্ষাৎকার ঘটে ॥ ২৯ ॥

ভগধন ! গুণ, কর্ম ও জন্ম ধারা আপনকার নাম রূপ নিরূপণ হয় না, কারণ আপনকার বর্ম মনঃ ও বাক্যের অসুমেয় মাত্র, কিন্তু মনঃ ও বচনের গোচর নহে, যে হেডু আপনি তাহারও মনোবচোভ্যামকুমেয় বন্ধ নো দেব ক্রিয়ায়াং প্রতিযন্ত্যণাপি হি॥ ৩०॥
শৃণুন্ গুণন্ সংস্মরয়ংশ্চ চিন্তয়ন্ নামানি রূপাণিচ মঞ্লানি তে।

#### विभवतामी।

হে দেব বহুধা দ্যোতমান তথাপি ক্রিয়ায়াং উপাসনাদি লক্ষণায়াং ত্বাং প্রতিবন্ধি উপাসকা: সাক্ষাং পশুষ্টি হি প্রসিদ্ধং ॥ ৩০ ॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

কর্ম্মভির্নাম গোবর্দ্ধনোদ্ধরণ ইত্যাদি রূপঞ্চবেণ্ বদন ত্রিভঙ্গলানিতেত্যাদি। জন্মভির্নাম শ্রীদেবকীনন্দন ইত্যাদি রূপঞ্চ শ্রীমংস্যাদি। যদা গুণাং শাস্ত্রাভ্যাদাদয়ং কর্মাণি সদাচারাং যম নিয়মাদীনি বা জন্মানি সদ্প্রকুলোংপদ্মদাদীনি তৈরপি ন নিজ্পণীয়ে। যতো মনসা তর্কেণ বচসা আগুবাক্যেন চাহ্যমেয়মন্তি ইতি নিশ্চমমেব নত্মভবিত্বং শক্যং বন্ধ গুণ কর্মাদি লক্ষণং প্রাপ্তি সাধনং বস্য তস্য তত্ত্রচ হেতুং তস্য পূর্ব্বোক বৃদ্ধা গুণস্যাপি যং সাক্ষী সাক্ষাদর্শন শক্তিমান্ অতএব তেনাদৃশ্র স্তুস্য তদগোচর বিলক্ষণ স্বরূপ মাধ্র্যমন্ত্র গুণাদেরিত্যর্থং। বৈপরীত্যেন বানরোরপি হেতুহেতুমন্তাবং অতো গুণাদীনামনিরূপণীয়ত্বাত্তে অপি ন নিরূপণীয়ে ইতি তথা সাক্ষিসভবিত্বন তন্ধারেপি তাদৃশত্তং যত্রকং তচ্চ প্রমিতমেব পরমানন্দৈক রূপণাব্যতিরেকেণচ বিদ্ধান্তবাং। তদশ্যসারং ক্ষরং বতেদং ইত্যাদৌ। রূপং যদেতদ্ববোধরসোদ্নেন্দ্রোরন্ত্যে নাতঃ পরং পরম যন্তবতঃ স্ক্রপমিত্যাদৌচ ক্রিরারাং নাম কর্তিন রূপ ধ্যান লক্ষণায়াং সত্যাং ইত্যর্থং। প্রতিষদ্ধি তে নাম রূপে স্বরূপ মাধ্র্যাদিনা যথাবদম্বতিরি । তহন্তকং ভক্ত্যাহমেক্রা গ্রাহং শ্রদ্ধান্ধা প্রিয়ং স্তামিতি। অক্টব্রুং। তত্র জন্মনীনানি স্বরণাভাসাদিনা যথা কথিঞ্চিদ্দ্ববর্তনীয়ানি জ্ঞাতুমস্ক্তবিত্বং অতর্ক্য স্বরূপাদি যাথার্যন্ত্রাং তত্ত শব্দন নাম রূপে অপ্যন্তর্ভাবিতে। ত্রোন্তং প্রকার্য্বাং। উপাসনাদীতি উপাসনা মানসী আদি গ্রহণাহান্ত্র ক্রিরাচ গৃহীতেতি ॥ ৩০ ॥

নমু তৎ ক্রিয়াচেত্তদমুভবস্য হেতু স্থর্হি কথং প্রথমত এব সান স্যাৎ। উচাতে অন্তাত্র নানাপরাধন্মী সংসারবাসনা প্রতিবন্ধিনী সাচ তদা বৃত্তৈয়বাপগচ্ছতীত্যাহ: শৃণুদ্ধিতি শ্রবণাদীনাং বিক্রো জ্ঞেয়:। মল্লানি সর্ব্ধ ড্:থনিবর্ত্তক্ষাং প্রম স্থাত্মক্ষাচ্চ ইতি ভাব:। অতঃ স্বতঃ প্রধার্থতোক্তা অতএব ক্রিয়াস্থ নিজাশেষ কর্মস্থ বর্ত্তমানো যঃ সোহপি তচ্চরণারবিক্ষয়ো রাবিষ্ট চিতো ভূষা।

# ক্রমসন্দর্ভঃ।

তে প্রকাশতে ইত্যর্থ:। তদশ্মসারং হৃদয়ং বতেদমিদ্যাদেং নাহং প্রকাশ: সর্বস্যেত্যাদেশ্চ। তত্মান্তরত্ত্পাসক এব তত্র তত্র। বিষ্ট চিত্তোভবতি ভবায়চ ন কল্পতে নান্য ইত্যাহ:॥ ৩০॥

শৃণ্রিতি ক্রিয়াস্থ ব্যবহারিকীশ্বপি বর্ত্তমানঃ। যোংশেন বৎস্যাদিনাক্মাকং ভবায় স সাক্ষাং স্বয়মেবেতি কুকিং গত ইতি

#### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

হতবনীয় মাধুর্যোণ ভবতঃ। তয়ো মাধুর্যানহভব এব তদনহভবঃ। যথা পিত্তদ্বিতরসন জনেন চর্বিতস্যাপি মংস্যণ্ডিকা থণ্ডস্য স্বাদালাভাদনহভব এব। এবঞ্চ ভক্তিরহিত জীবকর্ত্কাহভবাশক্তেরের হেতো নামরপ্রোর্থার বিশুদ্ধস্বায়ক্ত্মব-গতমিতি ভাবঃ। যথা সাক্ষিণ ইতি তবেত্যস্য বিশেষণং নামরপ্রোঃ স্বর্পভূতত্বাৎ ন হি সাক্ষিণঃ স্বর্পং সাক্ষাৎ জ্ঞাতুং শকুবন্তীতি ভাবঃ। হে দেব অথাপি ফ্রিয়ায়াং অধীয় শ্রবণকীর্তনাদি ভক্তেন সত্যাং প্রতিষদ্ধি নামরপে সাক্ষাদহভবন্তিচ। তেয়ামগ্রত্বিদ্ধির স্বর্পক বিশেষ ক্রেয়ার ক্রেয়ার হিছা মনসা ক্রান্তি মানশ্ন্যথাদি লিকেন বচসা মনোরবিন্দাক্ষ দিল্কতে থামিত্যাদ্যহ্বাগ ব্যক্তক বাক্যেন অহুমেরং ব্যু প্রেষভক্তিরোগো যস্য তস্য ॥ ৩০ ॥

কিংশ নামরপরোঃ প্রকাদিভিরভাগ এবাহত্বে কারণমিত্যাতঃ। শৃণুরিতি ক্রিরাম্ম স্থাদিহিক ব্যাপারের বর্তমানোহিপ ন সাক্ষী। তথাপি হে ছ্যতিমন্! উপাসকগণ উপাসনাদি ক্রিয়াযোগে আপনাকে সাক্ষাৎ দর্শন করিতে পার এরূপ প্রসিদ্ধ আছে। ৩০॥

ফলতঃ যে ব্যক্তি ভক্তি পূর্বক আপনকার পরম নঙ্গল নাম ও রূপ দকল প্রবণ কীর্ত্তন ও চিন্তন করিতে করিতে তথা অন্তান্ত মানবদিগকে ক্ষরণ করাইতে ২ উপাসনাদি ক্রিয়ার সময় আপনকার চরু

[ ५०४ । २४ ।

ক্রিয়াস্থ বুল্লচরণারবিন্দয়োরাবি**উচিতো ন ভবায় কল্পতে॥ ৩১॥**দিন্ত্যা হরেহস্তা ভবতঃ প**দোভূবো ভারোপনীত তত্ত্ব জন্মবৈশিতুঃ।**দিন্ত্যাঙ্কিতাং ত্বং পদকৈঃ স্থানোভনৈ প্রক্রাম গাং দ্যাঞ্চ তবান্ত্বকম্পিতাং॥ ৩২॥
নতে হভবস্থোশ ভবস্থ কারণং বিনা বিনোদং বত তর্করামহে।

#### विधंत्रश्रामी।

তন্মান্তক্ষ্যের মোক্ষ ইত্যুপসংহরন্তি শৃণুদ্ধিতি অন্তানপি সংক্ষারয়ন্॥ ৩১ ॥

বিশেষতঃ শ্রীক্ষণবভারমভিনন্দন্তি দিষ্টোতি দিষ্টা ভদ্রং তব পদঃ পাদভূতায়াঃ ঈশ্বর্গ্য তব ক্ষম মাত্রেণাপনীত এব কিঞ্ ভংগদকৈঃ কোমকৈঃ প্রদেঃ স্থানাভকৈঃ ব্রজাকুশাদি শুভ লক্ষণৈ গাং পূণীং দ্যাং স্থান্ধ তব ত্যাস্কন্পিতাং ॥ ৩২ ॥

নমু তব জন্মনা ভারোংপনীত ইত্যুক্ত্যা মমাপি কিং জীববং সংসার উক্তঃ নহি নহীত্যাহঃ নেতি বত হে ঈশ অভবস্য অসং-

देवकवरकावनी।

যদা য ইত্যসা পূর্বেণারর: । য: শৃণুন্ ভবতীত্যর্থ:। ডচ্চরণারবিন্দরো: ক্রিরাস্থ শ্রবণাদিক কর্মস্থ স্পাবিষ্ট চিত্ত:। যদা ক্রিরাস্থ ডজ্বীলাস্থ । যুদ্ধদিতি পাঠ: কচিৎ। ততশ্চ সমন্ত্রসমেব। অতো ভবায় সংসারায় ন ক্রতে তৎ কারণে বিদ্যমানেপি উদ্বোধ্যো ন স্যাৎ ভবাসনা রহিতোভবতীত্যর্থ:॥ ৩১॥

দিষ্ঠা এতত্তম্বং জাতং অস্মাদৃশানাং ভাগ্যেনেত্যর্থ:। অস্যা ভারার্দ্তায়ং ব্দবতারেণ পরম ধন্যবং প্রাপ্তার বা । পদ ইতি পত্তাং ভূমেক্রংপত্তা কার্য্যবাবণরোরভেনান্তিপ্রারেণ পত্তাং ভূমিরিতি ক্রতেং জতএবার্ত্যেক্রর স্তর্তৌ অধির্ম্থং তৈহবনির জিনু রিতি। জন্মনা শ্রীদেবক্যামবতার মাত্রেণ। ভারঃ কংসাদি হেতুকঃ অপনীতো দ্রীকৃতঃ ইদং তদ্বিজ্ঞাপন চাতুর্যাং। এবং ভারহরণাদ্ধরেরিতি সবোধনং। নিজপদান্ধ ব্যপদেশ সৌভাগ্য ভাজন পৃথিবী ভারাপনয়নেন ভক্তানামস্বাদৃশাং ভূবোহিপি হিতং কৃতমেবেতি প্রেলাজনমেকং সিদ্ধং। কিন্তু অস্মাকং তস্যান্ত পরমহিতকারি বিচিত্র ক্রীভ্যা সর্বলোক কৃতাণী করণমেব মুণ্যপ্রয়োজনং কার্য্যান্ত্যাশরেনাহঃ দিষ্ট্যান্বিভামিতি অস্নার্থে ক প্রভায় বাপরান্তোচিত নরাক্রভিন্তেন মহাশ্রীরিণাং তেবাং দেবানাং ভাদৃশ দৃষ্টা। কিন্তা দ্বামিত ক্রীদেশ ক্রিলাহ ক্রিলাহ ক্রিলাহ ক্রিলাহ তিতাচরপাং। যামহকম্পিতামিতি দৈত্যবধাদিনা তত্রত্যানাং হিতাচরপাং। যাবাবিশেষণ দ্বমিদং দ্বোরের জ্রেয়ং। ততশ্চান্বিভবেনৈর ভক্তিবিস্তারণাদিনা বাহকম্পিতাং গাং। দ্যামন্ধিভামিতি। ক্রাতিৎ পারিক্রাত হরণাদ্যর্থং তত্র গতস্য পারিক্রাত পরাগাদিষু পদানামুদ্বাং॥ ৩২॥

ন ভবঃ সংসারে। ভক্তানাং জ্বগতামপি বা যক্ষান্তস্য বত হর্ষে। অন্যক্তিঃ। বছা। বিনোদমান্তার্থে হেডুঃ হে জ্বভর। বতঃ

# क्रयमन्दर्धः।

পূর্ব্বে মনস্তোদধারেত্যপ্যুক্তং। তত একবাক্যতামুরোধেনায়মর্থঃ। যদ্যপি তদীয় প্রাচীন তাদৃশ প্রেমবাক্সাবশত্যা কুক্ষিং প্রবিষ্টএব

ভবায় কল্পতে কিন্তু ভবদমুভবায় কলতে॥ ৩১॥

ভারাব্তরণমবশ্য কর্ত্তব্যমিতি ভল্পা জ্ঞাপয়স্তি । দিছ্যোতি পদঃ পদজন্যায়াঃ পদ্ধাং ভূমিরিতি শ্রুতেঃ। ভারোহ্পনীতঃ অধু-নৈব কংস জ্বাসকাদীন্ হতান্ জানীম ইতি ভাবঃ। পদকৈঃ স্কুমারেঃ পদেঃ স্থানভিনে ধ্ব অবজ্ঞাদি মঙ্গলচিত্বিতিঃ। সাং পৃথিবীং দ্যাং স্বর্থক ॥ ৩২ ॥

অশ্ববিজ্ঞাপিতঃ অশ্বনাদি পালনার্থনবিতীর্ণোহসীত্যশ্বাকম্ভিমান এব কেবলং বস্তুত হং স্বৈর জন্ম কর্ম লীলোহসীত্যাহঃ। নেভি গারবিদেদ আবিষ্ট হইয়া থাকে তাহাদিগকে পুনর্বার সংসারে আসিতে হয় না ॥ ৩১॥

হে হরে! আপনি ঈশ্বর এই ধরণী আপনকার চরণভূতা, বড় ভাগ্য, আপনকার জন্ম মাত্রে ইহার ভার অপনীত হইল। ভগবন্! আমাদের পরম ভাগ্য, অদ্য আপনকার স্থাভন চরণের ধ্বেজ বক্ত অঙ্গাদি শুভ লক্ষ্ম ধারা অবনীকে অঙ্কিতা, এবং স্বলোককে আপনা কর্তৃক অনুকৃষ্পিত দেখিতে পাইব ॥ ৩২॥

- হে ঈশ ! আপনি অসংসারী ফ্তরাং ক্রীড়া ব্যক্তীত আপনকার জন্মের কারণ আমরা কিছুই <del>অফু</del>

ভবো নিরোধ: স্থিতিরপ্যবিদ্যয়া কৃতা যতত্ত্বয়ভয়াত্রয়াত্মনি ॥ ৩৩ ॥
মৎস্যাত্ম কৃচ্ছপ বরাহ নৃসিংহ হংস রাজস্ম বিপ্র বিবৃধেষু কৃতাবতার:।
ছং পাসি নিরিভুবনঞ্চ তথাধুনেশ ভারং ভূবো হর যদূত্ম বন্দনন্তে ॥ ৩৪ ॥

#### खिशत्रवामी।

সারিণত্তে জন্মনঃ কারণং ক্রীড়াং বিনা ন তর্করামঃ। কিঞ্চ হে অভরাশ্রর ন ভরং আশ্রয়ত ইতি তথা তং সন্বোধনং হে নিত্যমূকে ত্যর্থঃ তব জন্ম কারণং নাজীতি কিং বক্তব্যং যতো জীবাত্মপ্রণি ভবাদরত্বরি বিবরে বা অবিদ্যা তরা ক্বতা ন পরমার্থতঃ সন্তীতি ॥৩০ প্রস্তুতং প্রার্থরত্তে মংস্যেতি নোহস্মান্ বিভূবনঞ্চ অক্তদা যথা পাসি তথাধুনা পাহীতি বন্ধনং তে ইতি বদস্তঃ সর্ক্ষে শিরোভিঃ প্রণমন্তি ॥ ৩৪ ॥

# বৈশ্বভোষণী গ

সর্বাশ্রমাত্মনি ত্বয়াশ্রিত্য বর্তমানারা অবিদ্যা বিদ্যাধ্যারাশ্চিছ্জেরিতরা মারা তর্মৈব নিতাং ভবাদরঃ কৃতা বর্ততে ততত্ত্বতংপাতি পালনমাত্রার্থং নারং বস্বরূপেণ প্রবন্ধ বিশেষে যুক্ত ইতি বিনোদং বিনা ন কারণান্তরং তর্করামহ ইত্যর্থং । হুটবের্থার্থ-প্রবন্ধক সভর সৈয়ব সম্ভবতীতি তদেবং বিনোদস্য স্বরূপাস্বন্ধিত্বন স্ক্র্ট্যাদি দীলাজ্যো মহান্ বিশেষো দর্শিতঃ। অতএব নাগপন্নীতিক্ষকং অব্যাক্ত বিহারারেতি । অতএব অজিতক্ষতির দীলা কৃষ্ণসার ইত্যাদিকানি শ্রীক্ষকাদীনামণি বিশেষণানীতি ॥ ৩০ ॥

হে ঈশেতি তত্র সামর্থাং দর্শরন্তি তথা পাহীতি শ্বেং হে যদ্তমেতি অধুনা শ্রীকৃষ্ণ রূপদেন সাক্ষান্তগবদাং পূর্কতো বিশেবেণ পালনং কর্ত্ত্যমিতি ভাবং। অতএব ভারং হরেতি বদ্যাপ মরা হতাং বং কহি মা ব্যথিষ্ঠা ইতি রীত্যা তব স্বন্ধনা ভারোহপনীত ইত্যু কৈব তৎ প্রার্থনা বিশেবতো লদ্ধা তথাপি প্নক্ষিভলীলা দর্শনার্থমকুঠতরৈবেদমূক্তং ইতি জ্বেং। অন্তব্যঃ। যদ্ধা বথা পালি তথাধুনাপি পালি পালাসি কাকা ততোহধিক্ষেব পাল্লগীতার্থং। তদেবাভিব্যঞ্জরতি ত্বো ভারং হয়েতি শ্রীনৃসিংহাল্যবতারে হয় হতানামপি হিরণ্যক্ষপিপ্ কালনেমি প্রভূতীনাং পুনরত্র জন্ধনা ভ্বো ভারে। তবত্যে। অধুনা তথা বিধেহি বথা তেবাং পুনরা বৃত্তি র্ন ল্রাং। বেন ভক্ষানামন্থাকং তাল্শ হুইাদর্শনেনচ পরম হিতং লাগিতি ভাবং। মধ্বেং হুইানাং মুক্তিদানম্বোগ্যমিত্যাশহ্য তদর্থং স্কাকু প্রণমন্তি অন্তব্যেতি অন্তব্য স্থানং॥ ৩৪ ॥

#### ক্রমসন্মর্ভ:।

তথাপি কুক্ষ্যাদিন্তব্যং ভগবতো হবরোধকং ন স্যাৎ। কিন্তু প্রেটমবেতি। তস্য চ প্রেম আগ্রন্থ: কুক্ষিন ভবতি কিন্তু মন এবেতি। তদামত্রম মনএব তদ্ধারণে সাধনং। ততঃ কুক্ষিং গতঃ মনসৈব দধারেতি॥ ৩১॥ ৩১॥ ৩৫॥ ৩৫॥ ৩৫॥ ৩৫॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

জ্ঞতবদ্য অস্ত্রমান: ভবদ্য প্রাত্ত্র্ভাবদ্য বত আশ্রয়াত্মনি ত্বয়ি দ্বামাশ্রিত্য বর্ত্তমানা যা অবিদ্যা মারা তবৈব ভবাদরে। জগৎস্ট্র্যাদয়ঃ ক্বতা ইত্যর্থ:। নান্তি ভয়ং যত ইতি ত্বৎ ত্মরণাদেব কংসাদ্যক্ষর ভয়ং নিবর্ত্ততে। তর্বধার্থং আদ্ধে ত্মক ত্মরমেবাবিভূর্যোদ্যমো ন ঘটত ইতি জাবং ॥ ৩৩ ॥

তদশ্যসাক্ষধীরাণাং বৃহধৈবাৰগত চরং বৈক্ষ্যামবগম্যতাং চেত্যাহ:। মৎস্যাখেতি। তথৈব ভূবোভারং হরেতি ভূভার-হরণমেব সম্প্রত্যস্তাকং পালন্মিতি ভাব:। বন্ধনত্তে ইতি বৃদক্ত: সর্ক্ষে শিরোভি: প্রণমন্তি ॥ ৩৪ ॥

মান করিতে পারি না। হে নিত্যমুক্তস্বরূপ! আপনকার জন্ম নাই ইংহা কি আবার বলিতে হয় ? জীবান্ধার যে জন্ম হিতি ভঙ্গ, ভাহাও আপনকার বিষয়ে যে অবিদ্যা আছে ভাহারই কৃত, বস্ততঃ জীবান্ধারও জন্মাদি কিছুই নাই॥ ৩৩॥

সে যাহা হউক, হে ঈশ। আপনি অহা সময়ে মৃৎস্থা অথ কছপে বরাহ নৃসিংহ হংস ক্ষতিয় বিপ্রা এবং দেব এই স্কলে অবতার এহণ করিয়া সামাদিগকে এবং ত্রিস্থবনকে যজপে পালন করিয়াছেন একণেও তক্রপে রক্ষা করুন, অধিকস্ত এই স্থানির ভার হরণ করিতে আজ্ঞা হউক। হে যদূতম! আপনাকে বন্দনা করি! এই বলিয়া সকলেই মন্তক অবনত করিয়া প্রণাম করিলেন॥ ৩৪ ॥

দিন্ট্যান্ব তে কৃক্ষি গতঃ পরঃ পুমানংশেন সাক্ষা দ্বগবান্ ভবায় নঃ।
মাস্ত্রং ভোজপতে মুমুর্ষো র্পোগুলা বদুনাং ভবিতা তবাদ্মকঃ ॥ ৩৫ ॥
ইত্যভিন্ট্র পুরুষং যজ্জপমনিদং যথা। ত্রক্ষোণানো পুরোধায় দেবাঃ প্রতি যমুর্দিবং ॥ ৩৬ ॥
॥ \* ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে বিতীয়ো২ধ্যায়ঃ ॥ \* ॥ ২ ॥ \* ॥

#### श्रिश्वयामी।

দেবকীং প্রত্যান্তঃ দিক্টোতি নোহস্মাকং ভবায় উদ্ভবায় সাক্ষাৎ পরঃ পুমান্। তে কুক্ষি গতঃ স্মতো ভয়ং মান্ত্রিতি ॥ ৩৫ ॥

যস্য রূপমনিদং সর্বা প্রত্যক্ ভূতং যথা যথাবৎ অম্মান্ বঞ্যিত্বা এতাবিহ স্থাস্যত ইতি মন্যমানা এক্ষেশানে পুরোধায় পুরতঃ
কৃত্বা যয়ঃ ॥ ৩৬ ॥

#### ॥ \*॥ टेकि मन्द्रम विकीय ॥ \*॥

# বৈষ্ণবহভাষণী।

ধুদোহরমভিপ্রায়ঃ প্নরার্ভি মোক্ষাপ্তা তেবাং ছ্টানাং ক্লাচিদপি দর্শনং ন ভাবীতি ভক্তানামন্মাদৃশাং পরমহিত্যেব সিদ্ধান্তি এবনকৈর ক্লাক্ষ্যাপা দেবাংগ্রীভগক্তং ভবা তেনৈবাতিবিন্নিতাং গ্রীদেবকীমান্ধান্য দিটান্থিত। ছে মাতরিতি তবগন্ধাত্ত্বেন পরম বন্দ্য বাং বদ্য পি মনজা দধার ইত্যুক্তং তথাপি কুলিগত ইন্তি মাতরি তভাং তথৈব বক্তুং বোগ্যন্থান্তং পরঃ পুমান্ পরম প্রুব্যেত্বন ইত্যুক্তং তত্র সাক্ষাং ব্যৱহান কর্ত্বানি অতএব তগবান সকৈন্ধ্য যুক্তং তালেন গ্রীবন্দেবেন ইতি তভাপি তভাং জন্ম প্রকাশিতমিতি জ্বেমং ন ইভি সাক্ষান্তন্দল বিশেবয়োর্য্ বন্ধা জবারেতি কিং বক্তব্যমপিত তথ প্রকাশানান্ধান্তন্দেবেত্বর্য ব্যবহংশেন মংভান্ধানিন। বোহন্মাকং ভবার ভবেং স এব সাক্ষান্তে কুলিগত ইতি যথ এতং দিল্লা নন্থ কংসক্ত লুশ্চেটাভন্নেশ বিজেমি ভত্রাহঃ মুন্বারিতি নিক্টায়াত মৃত্তাহানেবং চেইত ইতি ভাবঃ। তেভান্য মাতৃৎ স্বং ভানং মাতৃহ্বিত্যর্থঃ। নম্ম ন কানে তাবন্দেব কিমনিইং ভানিতি তত্রাহঃ যদ্নাং সর্ক্রোমণি কিং পুনন্তব প্রীবন্ধদেবাদীনাহা তন্ত স্বস্য বেত্যর্থঃ। এবং নিত্যমেব দেবাতাহ ভবনীতি জ্বেমং। তথাচ প্রীবিষ্ণুপ্রাণে। অনৃষ্ঠাঃ প্রুব্ স্তামহ-রিশ্নিতি। ৩৫॥

পুরুষমিতি শ্রীদেবকী হাদরপুরে স্থিত্যভিপ্রায়েণ। যদা পরমপুরুষোত্তমং। যদ্য রূপমনিদং প্রপঞ্চাতীতং পর ব্রহ্মাত্মকং তথা তথাভূতত্বেন স্বতেরবিষয়মপীত্যর্থ:। ইত্যানেন দেবকী ক্রমাত্রেশৈব ভূভারোহপনীত ইত্যাদি গর্ত্তিতেন প্রকারেণাভিতঃ স্তত্ত্বেতি পরমাত্মতাদি বর্ণনেন স্তবনাদপি শ্রীদেবকী গর্ত্তজাতত্বাদি বর্ণন স্থাতেরুহংকর্ষোহভিপ্রেতঃ ॥৩৬॥

॥ 🛊 ॥ ইতি শ্রীবৈক্ষবতোষণ্যাং দশমটীপ্সন্যাং দিতীয়েছধ্যার: ॥ 🛊 ॥

#### ক্ৰমসন্দৰ্ভঃ।

॥ 🛊 ॥ ইতি প্রীমন্তাগবত দশমস্বদ্ধে শ্রীকীবগোপামি 🚁ত ক্রমসন্দর্ভস্য ছিতীয়োহধ্যার: সমাপ্ত: ॥ 🛊 ॥

#### ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

দেবকীং স্তবন্ত আশাসমন্তি দিষ্টোতি। অংশেন বলদেবেন সহ কুক্ষিং গতঃ। যথা। যোহংশেন পরঃ পুমান্ প্রকৃতীক্ষণ কর্ত্তা ভবেৎ স সাক্ষান্তগর্বানিত্যর্থ:। ভবার ভূতৈয় ॥ ৩৫ ॥

যদ্য রূপং অনিদং প্রপঞ্জীতং চিল্লন্মিতার্থ:। স্কান্বঞ্জিত্ব কিমপি রহস্যং অভুতং ক্রন্ত ইতি মন্মানা ব্রেলানৌ প্রতঃ ক্রা॥ ৩৬॥

॥ • ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং, হর্বিশ্যাং ভক্তচেতসাং। বিতীয়ো দশ্মেহধ্যারঃ সক্তঃ সক্তঃ সভাঃ ॥ • ॥

তদনত্তর দেবকীর প্রতি কহিতে লাগিলেন হে অব। ভাগ্য ক্রমে পরম পুরুষ সাক্ষাৎ ভগবান্ আমাদের উত্তবার্থ তোমার কৃক্ষি গত হইয়াছেন, ভোজপতি কংদের মরিতে ইচ্ছা হইয়াছে, তাহা হইতে আর তুমি ভয় পাইও না তোমার আত্মজ অতঃপর যতুদিগের রক্ষাকারী হইবেন। ৩৫।

হে রাজন্! বাঁহার রূপ সর্ব্য প্রত্যক্ ভূত, সেই পুরুষের এই প্রকার বধার্থ তব করিয়া দেব-ভারা মনে করিলেন আমাদিগকে বঞ্চনা করিয়া ক্রেলা ও মহেশ বৃদ্ধি এখানে থাকিবেন অভএম ভাহাদিগকে অএবর্তি করিয়া সে স্থান হইকে প্রাহান করিলেন। ১৯৯ ।

L \* । देकि नगरम क्लिय । \* B

গ্রীশুক উবাচ।

অথ সর্ব্ব গুণোপেতঃ কালঃ পরম শোভনঃ। যহে বাজন জন্মকং লাভক এই তারকং ॥ ১॥ দিশঃ প্রসেত্নপূর্বপং নির্মালোডুপণোদরং। মহী মঙ্গলভূমিষ্ঠ পুর্ব্বাম জ্ঞাকরা॥ ২॥

# **बी**धवृष्टामी।

তৃতীয়ে নিজ রূপেণ সম্ভূতক হরি: স্বয়ং। পিতৃভ্যাং সংস্কৃতো নীত: পিত্রা ভীতেন গোকুলং॥ • ॥

অথেতি মঙ্গলার্থং যহি সর্ব্ধ গুণোপেতঃ কালো বভূব তদা দেবক্যাং বিষ্ণুরাবিরাসীদিতাইম শ্লোকগতেনাবরঃ। প্রম শোভনত্ব-মেবাহ বহাত্যাদিনা অজনারারারণাজ্জন গুলা প্রশাপতে গুলা ঋকং রোহিণী নক্ষত্রং ক্থভূতং শাস্তানি ঋকাণিচ অধিন্যাদীনি গ্রহাক তার্কাক যদ্মিন্তং। যহাতি সর্ব্বানুষ্ক্যতে॥ ১॥

निर्धनानाम् पूर्वनानाम् त्या विचिन् ७९। ७था मक्रालन कृतिकाः भूतान्या यन्तार ना ७था॥२॥

# বৈষ্ণবতোষণী।

সর্ব গুণোপতত্থাদেব পরম শোভনঃ বহীত্যাদিকং তৈর্বোজ্বিতং তত্র বহুজনে জায়মানে তং সন্নিহিত সময়ে তৃাদৃগজন জন্মবাদিকমাসীং। বহিচ জনার্দ্ধনে জায়মানে, তজ্জন সময় এবচ তাদৃগদুল্ভি নাদাদিকমাসীং তদা দেবক্যামাবিরাসীদিতি বিশেষে এইবাঃ বায়পোরং সাইরিউভিরেক্মেব বাক্যং সারেখাপি প্রবোধন্তায় তদন্তর্বাক্যানি পৃথক্ পৃথগঙ্কমিত্বৈর ব্যাথ্যেয়ানি সার্দ্ধাইছে পাইম লোকগতেন ইতি তথাখ্যা পরার্দ্ধা তদন্তর্ভাব বিবক্ষা শাল্কাদিকত্বং তন্মিংল রোহিণীদিনে সর্বেধামুক্ষাদীনামুগ্র দৃষ্টিত্ব রাহিত্যাদিনা। তচ্চোগ্রাদীনামুগ্রহাদি পরিহারাদেঃ অত্র বিশেষশেচাক্তঃ থমাণিক্য নামি জ্যোতি প্রস্থি। উচ্চস্থাঃ শনি ভৌম চাক্সিশনয়ে লগং বুবো লাভগো জীবঃ সিংহতুলালির জন্মবশাং প্রোশনোরাহবঃ। নৈশীথঃ সময়োহইমী বুধ দিনং ব্রহ্মকর্ষত্ত ক্ষণে শীক্ষণভিধমন্ত্রক্ষণ মভ্লাবিঃ পরং বন্ধা তদিতি। কিঞ্চান্তর ব্রহ্ম কন্যা তুলা মীনরাজের ক্টে মুচ্চগাঃ। সোম সৌম্য শনি কৌণী-স্থতা ভজ্জানি স্থিতাঃ বর্ষে জনাবজাবনঃ শিং শাঃ। বিশ্বমের বস্তু জীমন্ বভুবামুষ্য তুষ্যতঃ॥ ১ ॥

# উদয়ঃ প্রকাশঃ॥ ২॥

# ক্রমসন্ধর্ভঃ।

অথৈতি যহি বদা অজনস্য কদাপান্যদা জাতত্বনাশ্রতস্য শ্রীকৃষ্ণস্য নিজ জন্মনা স্বীক্রিয়মাণং ঋকং তন্থাপরাস্তকাল বিশের গত রোহিণ্যাথাং অভূতদৈব সর্ববিশ গুণোপেতঃ সর্ব গুভসমেতক কালোহভূথ তদিছোরাং জাতারাং ছুর্ঘটঘটনীভিন্তছেন্তিবেব বা স্বভাগ সম্পন্ন ইত্যর্থঃ। সর্ববিশ্বাদিক্মাহ। শাস্তেত্যাদিনা যথাযথঞ্চ তং জ্লেয়ং। তেবাং ভীষণ স্বভাবদ্বেন সর্ববিব তেভ্যো ক্রম্বনীতি। অসুরক্রহাং সর্ববিশাদিক এব তেভ্যো ক্রম্বনীতি॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥

#### এ বিশ্বনাপচক্রবর্মী।

তৃতীয়ে দেশকালাদৌ প্রসন্নে শ্রীহরের্জনি:। পিতৃভাাং সংস্কৃতি: প্রাপ্তি বঁশোদাস্তিকাগৃহে॥ •॥

যত্তে বিজনস্যাপ্রাক্ত জন্মরহিতস্য ভগবতো জন্মনক্ষত্রমভূং। অথ তদৈব সর্বান্তগোপেতঃ কালোহভূদিতারয়ঃ। শ্লেষেণ জন্মক-নামাপ্যাহ। অজনারারায়ণাজ্জন্ম যস্য সোহজনজন্ম প্রজাপতিস্তস্য ধকং রোহিণী নক্ষত্রমিত্যর্থঃ। প্লিষ্টছেনোক্তি জন্মক্ষিন প্রকাশিয়াদিতি নীতিশান্তরীত্যা পোপনার্থা। কীদৃশং শান্তানি ধকাণ্যখিন্যাদীনি গ্রহাশ্চ তারকাশ্চ যন্মিং তং॥ ১ ॥

ি সর্ব্বগুণোপেত্ত্বমাহ দিশ ইতি। বর্বাহ্মপি শরদোপ্তণ উক্তঃ তঞ্জ সর্ব্বাণি তত্ত্বানি প্রসন্নানি তত্ত্ব মহাভূত্তস্যোদ্ধস্থস্য প্রসাদ-মাহ গগণমিতি অধস্থস্য প্রসাদমাহ মহীতি॥ ২॥

ভৃতীয় অধায়ে ভগবান্ হরির নিজ রূপে স্বনং উদ্ভব, মাতা পিতা কর্তৃক তদীয় স্তুতি এবং ভীতি ৰশতঃ গোকুলে নীজ করণ ॥ • ॥

শুক্দেব কহিলেন অনস্তর যথন সর্বস্থিণ সম্পন্ন প্রম রমণীয় শোভন কাল উপস্থিত হইল অর্থাৎ ব্যু সময়ে ক্রোছণী নক্ষত্র উদিত ও অস্থিনী প্রেস্তি তারকা নিক্র তথা অক্তান্থ তারা সমূহ শান্ত ছইল ॥ ১ ॥

নিক্ নকল প্রসমান্ত গগণমন্তলে নির্মাণ নকজেগণ প্রকাশ ছইতে লাগিল। আর পৃথিবীক পুর, আম, গোষ্ঠ তথা আক্যানকল বহুল মন্ত্র ময় হইতে থাকিল। ২ ॥ নদ্য: প্রসন্ধ সলিলা হ্রদা জলরুহপ্রিয়:। বিজ্ঞালিকুল সন্নাদ স্তবকা বনরাজয়:॥ ৩॥ ববো বায়: ত্থস্পর্শঃ পুণ্যগন্ধবহঃ শুচিঃ। অগ্রয়ণ্চ বিজ্ঞাতীনাং শাস্তান্তত্ত সমিদ্ধত ॥ ৪॥ মনাংস্থাসন্ প্রসন্ধানি সাধ্নামহ্রত্তহাং। জায়মানেহজনে তত্মিন্ নেছ্ছ্ ন্তুয়ঃ সমং। জতঃ কিন্তুর গন্ধবিস্তিত্ত বুঃ সিদ্ধচারণাঃ। বিদ্যাধর্য্যন্ত নন্তুর গন্ধবিতিঃ সমং মুদা। মুমু চুমু নিয়ো দেবাঃ হুমনাংসি মুদান্বিতাঃ॥ ৫॥

#### वीधतवामी।

জলফুহৈ: আঃ শোভা যেবাং তে দিজালিকুলানাং সন্নাদো যেবু তে তথা তথকা ফাস্থ তাঃ॥ ৩॥ সমিকতেতি আর্থিনাদ্যাসমাভাবোদ্রইবাঃ সমৈকতেতি সম্যক্ দীপ্তা বভূব্রিত্যথ:॥ ৪॥ অস্ববঞ্চ হাং কংসাদি ব্যতিরিক্তানাং সর্ক্পাণিনাং অজনে জারমানে আসন্ত্রসম্বে তিমিন্ সমরে॥ ৫॥

# বৈষ্ণবতোষণী।

প্রসর সনিলম্ব জনক্র প্রীম্বরোম্ভত্র তত্ত্ব পৃথিমির্দেশঃ প্রাধান্য মাত্রেণ অত উভরেষামপ্যভরং জ্ঞেরং ॥ ৩॥

অথম্পর্শ ইতি শৈতাং পুণোতি সৌরভাং পুণাস্ক চার্মপীতামর:। ওচির্নির্মান ইতি ধ্বাদাসম্বন্ধেন মান্দামুক্তং। চশক্ষোহত্ত্ব বাবুরোর ব্যাতাপেক্ষরা পূর্কোক সমুচ্চেরে। অতএব তত্ত্ব বারৌ সতীত্যর্থ:। শাস্তা নির্বাণ প্রায়া অপি। যদা প্রদক্ষিণাবর্ত্তা: সন্ত ইতার্থ:॥ ৪॥

ভীষণাকারাদিখেন দর্বেষপি উবেগহেত্তর। তেভ্যোক্রয়্স্তের সর্বেইতি স্বাহ্বরক্রহাং সর্ব্ব প্রাণিনাঞ্চ। ততঃ কংসাদীনান্ত চিত্তোবেংগাহিধিকমন্ত্রনীতি ভাব: । মন্থ সর্ব্ব গুণোপেতত্বাদিকমন্ত্রন জন্মর্ক্র সা কিরন্তং কালমার্ল্য ইত্যপেক্ষারামাহ অন্তর্নে ভগবিদি প্রান্ধাননে ইতি । বর্ত্তমান সামীপ্যে বর্ত্তমানবদা । তদাদিভাগমার্রভ্যৈব তত্তৎ প্রায়ুত্তং কিন্তু নিকট নিকটং ত্বিকং ইত্যর্থ: । অন্তর্নাপদাং ত্রসাপি বদা জন্ম তদা বা কিং কিমাক্র্যামিতি ভাব: অন্তর্নে ভগবিত জারমানে ইতি । বর্তি পদেন স্বেদ্ধাপি সর্ব্বিত বোজ্যং । নেছ: ত্বমেব গুলু বিশেবোদরাৎ । তথাচ প্রীহরিবংশে । জনাহতা হৃদ্ভুল্লো দেবানাং প্রাণদং ত্তদেতি । অন্তর্নিক প্রস্তায় হৃদ্ভি নাদাদর্ভ্য তৎকালীনাগতা ইতি জ্বেরং ॥

বিদ্যাধর্যদেতি চশব্দঃ পূর্ববং সমানগণত্বাপেক্ষয়। মুদ্দেতি নিভ্ত খ্রীভগবং প্রাহ্রভাবে সত্যপি তন্ত্রদাচরণে হেতু:। তদ-স্থসকানাভাবেপ্যাক্ষিক হর্বডাভাবেইনব তদাচরণাং। তদেতি পাঠস্ত সর্বদেশ্য:। কিন্তু স্থাম্যসম্মত ইব যহী ত্যাদিনাইন স্লোকে তস্যাধ্যান্তত্য ব্যাধ্যানাং। যথা তেনৈব সম্বন্ধ উদ্দিই:॥ ৫ ॥

#### क्रममन्दः।

# অসুরক্রহাং সর্বপ্রাণিনাঞ্চ ॥ ৫ ॥

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

মধ্যস্থানাং ত্রয়াণাং প্রসাদমাহ ঘাড্যাং নদ্য ইতি। জলক্ত শ্রিষ ইতি রাত্রাবলি দিবসস্য গুণঃ দিজালি কুলানাং সংনাদঃ তবকাশ্চ যাস্থ তা ইতি। বর্ষাস্থপি বসস্তস্য গুণ উক্তঃ॥৩॥

স্থম্পর্শ ইতি শৈত্যং পুণ্যেতি সৌরভ্যং। পুণ্যস্ত চার্বপীত্যমর:। শুচি নির্শ্বল ইতি ধুল্যাদ্যসম্বন্ধেন মান্দ্যসূক্তং। শাস্তা--নির্মাণ প্রায়া অপি সমিদ্ধত অড়াগমাভাব আর্ব: সমাক্ষিণাবর্ত্তবেন উদ্দীপ্তা বভূবুরিতি বাপরেপি ত্রেভারা গুণ উক্ত: ॥ ৪ ॥

মনাংগি মনো বৃদ্ধীক্রিয়াদীন্যপি তত্তানীত্যর্থ:। অহুরক্রহামিতাহুর কর্তৃক দ্রোহবত্ত্বেন সাধ্নামপি মনাংসি পূর্ব্ধ অপ্রসরান্যে বাসরিতি ভাব:। জায়মানে আসর প্রান্তভাবে অজনে প্রক্রিকে॥ ৫॥

অপর যে সময় নদী সকলের জল প্রসম হইল হ্রদ সকল কমল সমূহে শোভাশালী ও বনরাজী সকল পক্ষি ভ্রমরাদির কলরবে পরিপূর্ণ পুষ্পত্তবকৈ শোভিত হইয়া উঠিল। ৩॥

আর যথন পবন স্থস্পর্শ হইয়া পুণ্য গন্ধ বহন পূর্বক বহিতে লাগিল দ্বিজাতিদিগের শাস্ত ত্তা-শন উদীপ্ত হইয়া উঠিল ॥ ৪ ॥

অপিচ যে সময় সাধু পুরুষদের অথবা কংসাদি ব্যতিরিক্ত সকল প্রাণির মনঃ প্রসন্ধ ইল। এবং যে সময় সেই জন্ম রহিত ভগবান্ আসন প্রসন্থ ইলৈ অর্থাৎ জন্মিবার উপক্রম করিলে ভূরি ভূরি তুমুভি ধ্বনি হইল তথা গজর্বগণ গান, সিজ্জারণনিকর স্তব এবং অপ্যরা দিগের সহিত বিদ্যাধ্য সকল হবেঁ নৃত্য আরম্ভ করিলে, দেব ও ঝি সমূহ হবানিত হইয়া পুস্প রস্থি আরম্ভ করিলেন ॥ ৫॥

মন্দং মন্দং জলধরা জগর্জ্বসূসাগরং। নিশীথে ডম উদ্ভূতে জারমানে জনার্দনে ॥ ৩॥ দেবক্যাং দেবরূপিণ্যাং বিশৃঃ সর্বশুছাশয়ঃ। আবিরাসীকাথা প্রাচ্যাং দিশীক্ষিব পুঞ্চলঃ॥ ৭॥

# विश्वत्यामी ।

অনু সাগরং সাগরে পর্জতি সভি তমসাঁ উত্তে খনজমসি নিশীখে॥ ৬ ॥ বধা ৰখাৰং ঐখারেদৈব দ্ধপেশ॥ ৭॥

# বৈষ্ণবজোৰণী।

অত্রাণি পূর্ববিষক্ষা। মুদেভি পুনক্ষজিং অবিভাঃ অভোন্যং মিণিতাঃ সত্তঃ। অঞ্সাগরং সাগরং গর্জন্তরমু তথাচ শ্রীবি-মূপুরাণে সিদ্ধবো নিজশংশন বাদ্যং চজুর্বনোহরমিভি #

নেতৃত্ব পূড়র ইত্যাদিকং কদা ইত্যপেকারাবাছ। নিশীধে অর্জনাত্রে কীদুলে তম উত্তে তমসা উল্লৈখনিয়ে ভূ প্রাধ্যে তাজরক্ষাইনীমাৎ বিশেষণক্ষের তৎ কান্তি ধারা তথানালেনাপীকূপনা বোজনার তথাপ্যভূতোপ্রেরং। নিশীধে পূর্ণচল্লোদরাাৎ
তেনোপ্র্যাচেরং বর্ণা কথকিলের নম্বতিযোগ্যিন্তি আপাতে। হুক্তিনালাদৌ হেডুং ভারেতি। প্রীন্তমাদি তক্তন প্রার্থানান প্রাক্তিয়
ত্রিন্ধ প্রকটা তবতি তৎ প্রাক্ত্যকণ ইত্যর্থং। কংসাদীনাং তম্বনজ্ঞানং গোকুলে জায়্মান মারাপ্রভাবেশৈবৈতি ভ্রেরং। অথবা
অবেতি বহি বদাহক্ষক ক্যাপ্যক্রণা ভাতত্বনাশ্রতক্ষ প্রীকৃষ্ণক ক্রমণ্য নিজ ক্রমণা বীক্রিয়নাণং তম্বাপারার সমর্বিশেষণত
রোহিণ্যাখ্যমকূং। তর্হোর ত্রনারম্ভ এব। সর্বাক্ত ক্রমাদেং কালক স্বক্তা বে ওণাং স্থকা ধর্মা ভৈদ্ধপতং সর্বা ওক্ত সমর্বিশেষণত
রোহিণ্যাখ্যমকূং। তর্হোর ত্রনারম্ভ এব। সর্বাক্ত ক্রমাদেং কালক স্বক্তা বে ওণাং স্থকা ধর্মা ভৈদ্ধপতং সর্বা ওক্ত সমর্বিশেষণত
রোহিণ্যাখ্যমকূং। তর্হোর ক্রমান হুর্তী ঘটনীরাভি ভক্তক্রিভিরের বা। স্ব স্বভাবেদৈর বা। তথা সম্পন্ধ ইত্যথি অলন ক্রম্পর্কীরিত পর্বার্বার্য কর্মান ইত্যাদিনাচ সূর্যুচ্ রিত্যাম্বান্তন
রোহাত্যর্মির বর্জিতেন মনাংসি ইত্যামান্তন। তত্র স্বগুণোপেতত্বং শীস্তেতি পর্ম শোভনত্বং জান্তমান ইত্যাদিনাচ সূর্যুচ্ রিত্যাম্বান্তন
মহীত্যর্মেনচ আত্র দিক্ প্রসাদাদি বায়ু পর্যান্ত বর্ণনং। শর্মকান্তাদি সম্বন্ধনাং উল্লেক্তাক্ষিনাং মন্ধং মন্ধ্রমিত্রান্তং দিগতে বর্ধান্ত।
গ্রান্তে চ দিবসসম্বন্ধিনাং অলম ইত্যাদি পদ্যং। ত্রেতা সত্যাদি সম্বন্ধনাং উল্লেক্তাং মুল্বান্তী মুচা বিজ ইতি বৈক্তব্যাব্যং জন্মর্কারন্ত
সম্বন্ধহবজ্যেরিতি অন্তর্থ সমানং॥ ৬॥

দেবক ভগৰতো রূপমিব রূপং সচ্চিদানন্দবিগ্রহ:। তহত্যামিতি তহদাবির্ভাবেহিদান কচিকোর: ইতি ভাষঃ বিভূত্তপিগ্যামিতি পাঠোহিপি কচিৎ সর্ব্ব গুহালয়: তুর্গমন্থাৎ ত্র্বিতর্ক্যদান গুহেব গুহা শ্রীভগ্গবৎ স্থান: সর্বাস্থ স্বর্বজীবাদ্যত্তরলক্ষণান্ত শ্রীবৈকুর্ভাদি

#### क्रयमम्बद्धः।

অহুসাগরং সাগরেণ সহ। জারমানে জনার্দন ইতি। তজ্জ্জার্থং জনানাং বাচনে সতীত্যর্থ:॥ ৬॥ দেবো বন্ধনেবক্তজ্ঞানিশ্যাং ভদসম বৃত্তি রূপারানিভার্থং পাঠান্তরে বিষ্ণুরূপিণ্যাং তহ্বদাপকঃপ্রাকৃত বিশ্রহানিভি চ বার্মণ বোদ্যা-

#### শ্ৰীবিশ্বনাখডক্রবর্তী।

ব্দুকুতঃ মদৃশীকুতঃ সাগন্ত সাগনস্কুমং তাবপান্যান্তথা ॥

নহ দিশঃ প্রসেহরিতি সস্বং নির্মাণে স্পোদর্মিতি পূর্বোক্তে র্কনধরাঃ ধনু করা কগর্জুরিত্যপেকারাসাহ নিনীখ ইতি তমদা উৎকর্বেণ মৃতে ব্যাত্তে ইতি নিনীথ এব মধ্যে প্রণং দেবগণে গালসমাত্ত্ প্রাত্তাবিত্যসঙ্গ্রন্থ ও জনানাথ স্ব্রিক্তক্ত মূনি দেবানীয়া অর্জনে ভগবান্ আবির্জন আবির্জন সামান্ত্রিক্তি বাচ দে ক্লিমানে স্তি॥ ৬ ম

সেকাশিকাং বিভূমশিক্যবিভি চ পাঠঃ। দেবস্য বিজেন্তিক স্লগং সঞ্জিদানক খনং বর্তকে বস্যাগুস্যাং আবিধানীৎ প্রকটা বড়ব। সর্কীত্র অহাত্তি অহবিদ্যাত্তানের বধুবা বিজ্ঞানির শীবাভ্যকরণের চু সর্কজন প্রোক্তমাজেতে ইতি নঃ। আন্যো লক্ষেতা দথা

অধিকক্ত কথন ভয়োমর নিশীমে ভগবান্ জনার্দম জন্মিনার উপজেষ করিলের প্রতিধাগরে জলধর সকল মন্দ সর্জন করিছে লাগিল ॥ ৬ ॥

त्न हे गबत, श्र्विहरक दवनन इक्ट बाकान शांत्र जीवांत्र कात्र, हमयत्रभिनी दमवकीत गर्द्ध गर्कान्छ-

তমছুতং বালকমম্ব্ৰেক্ষণং চতুতু জং শঋ গদাত্মদারুধং।

শ্রীবংস লক্ষাং গলশোভি কৌস্তভং পীতাম্বরং সাদ্রপ্রোদসৌভগং॥
মহার্চ বৈদুর্য্য কিরীট কুণ্ডলছিষা পরিষক্ত সহত্র কুন্তলং।

# **अध्यक्षामी**।

তমভুতং বালকং বস্থানেব ঐকতেতি বিতীয় প্লোকেনাধয়:। অভুতত্বে হেতুগর্ত বিশেষণানি অভুক্তেকণমিত্যাদীনি প্রীবংস

# বৈষ্ণবতোষণী।

লক্ষণাস্থাচ গুহাস্থ শেতে হক্ষ্ভিত তয়া বিহরতীতি। প্রকা: সর্বাংশপূর্ণ ইত্যন্তর্যামিত্বালিনা হৃদয়ালিয় বর্ত্তমানৈ রংশৈ: সর্বৈরের সংভ্রাবতীর্ণ:। অন্তর্বামিনামপি তদানীং শ্রীদেবলীনন্দনত্বেনব মহৎস্থ ক্রেং তথাচ প্রীভীম্বাক্যং। তিমিম্বহ্মঞ্গ শরীরভালাং দ্বৃদি কিদি থিটিতমাত্ম করিতানাং। প্রতি দুশমিব নৈক্ধার্কমেকং সমধি গতোহিমি বিধৃত ভেলমোহ ইতি। তথাচ শ্রীবৈক্সলাকাদাধিষ্ঠা-তারোপি তত ততঃ সভ্রাবতীর্ণা ইতি শ্রীহরিবংশাত্রাকেন মুক্টমান্বতা গোমছে শ্রীগক্ষাগমনাদিনা স্পষ্টভাদিতি এতচ শ্রীভাগবতাম্বতে বির্তমন্তি নচাত্র দোবং। স্থ স্করেপেগৈর পরম বিভৌ তত্রৈব নিজ সর্বর্ত্তিং প্রকাশ্য তত্তেলো নিগৃহতয়া তেরাং হিত্তাং। তথাচ শ্রীমধ্বাচার্যগ্রহং পাল্লবচনং। স দেবো বহুধা ভূত্বা নিগুণিঃ পুক্রেরাত্তমং। একীভূয়ঃ পুনং শেতে নির্দ্বোবহিরাদিক্লিতি। প্রাচ্যামিতি দৃষ্টান্তেন সর্বত্র প্রকাশমানভাপি শ্রীদেবক্যামারিভাবি বোগ্যতোক্তা। অতএব শ্রীবিষ্ণুপ্রাণেহপি ততেহিথিল জগৎ পল্প বোধায়াচ্যতভালনা। দেবকী পূর্ব সন্ধ্যায়ামারিভূতিং মহাত্মনেতি। আবিভাবন্দ কংস বঞ্চনাদ্যর্থমন্তমানীতি শ্রীহরিবংশে। গর্ত্তকালেত্বসম্পূর্ণে অইনে মাসি তে ব্রিয়ৌ। দেবকীচ যশোদাচ স্ব্র্বাতে সমং তদা্ইতি॥ ৭ ॥

ভিমতি যুগ্মকং। বালকং মৃত্ স্বরাকারতয়া বালকত্বেনৈব প্রতীয়মানং শৃঞ্চাদীনি উদিতি ঝটিতি কংসাদি হিংসনজ্ঞাপনায় উদ্যতানি উৎক্রটানি বা আয়ুধানি যস্ত তং। আয়ুধক্রমণেচাক্তো শোতমীয়ে বৃহদেগাতমীয়েচ এভদ্যানক মন্ত্র বিশেষ প্রসঙ্গে। দক্ষ-জ্যোর্দ্ধে স্বরেচ্চক্রং গদাঞ্চ তদধঃ করে। বামত্যোদ্ধে শাক্ষ ধিয়ুঃ শৃঞ্চাঞ্চ তদধঃ স্বরেদিতি। কিন্তু শৃঞ্জ ইতি বক্ষ্যমাণামুসারেণ। শাক্ষ স্থানে পদ্মং জ্ঞেয়ং। তত্রতু শাক্ষে পিদেশোপাসনা বিশেষার্থমেব ভগবতি তু স্ক্রদা সর্ক্ সমাবেশাং নাসস্ভব্মিতি। সাক্রপরোদাদিপি সৌভগং বর্ণ সৌন্দর্যাং যক্ষ তং। মহার্হং তত্রতা রব্রেছপি পরমোৎকৃষ্টং বাল-

#### त्क्रग्रमसर्जः

তোজা সর্বাহ্ন গুহাত্ম তথা ছলেবু বৈক্ঠানিবু শেতে নিগৃঢ়ং ক্রীড়তি যা স সর্বাংশ পরিপূর্ণ ইত্যর্থা। দৃষ্টান্তে চ তথাহ পুরুষ ইতি ॥ १ ॥

তমভুতমিতি পরিচ্ছদানামপি তৎশ্বরূপ ভূতত্বে নিজমিদং তৎসহিতানামেবাবির্ভাবাৎ। পরিশ্বক্তেতি কিন্দী রীতানেক কেশ

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

গর্ডাদ্যন্তিতঃ সন্ধিঃসরতি তথা নেতাত দৃষ্টান্তঃ যথেতি কিঞ্চ দৃষ্টান্তদাষ্ট নিতিকরে। যুগপদেবাবির্ভাবমাহ তদিনে নিশীথে প্রাচ্যাং দিশি অইম্যা ইন্দু রপ্টোছপি মহংশং মুথপ্রভু জন্মনা অলঞ্চকারেত্যানন্দোত্রেকেণ পৃষ্ণ নং পূর্ণিমায়া ইন্দুরির পৃষ্ণলঃ সন্ যথা আবিরাসীওিওব দেবক্যাং বিষ্ণুরপি সর্কাংশকলা পরিপূর্ণ আবিরাসীদিত্যময়ঃ। আবির্ভাবন্দ কংসবঞ্চনার্গ্যধ্মষ্টমে মাসি ষত্তকং হ্রিবংশে গর্জকালে স্বসম্পূর্ণে অইমে মাসি তে ব্রিমৌ। দেবকী চ যশোদা চ স্ব্রান্তে সমং তদেতি। শ্যাণিক্যনায়ি জ্যোতিতা হে জন্ম-পত্তী চোক্তা। উচ্চন্থাঃ শশিভৌম চাল্কিশনয়ে লগ্ধং ব্যো লাভগো জীবঃ সিংহ তুলালিষু ক্রমবলাৎ পুবোলনোরাহবঃ। নৈশীথঃ সমযোহইমী বুধদিনং ব্রহ্মকর্পত্র ক্রমে ভূষাভিধমমুক্তেকণ্মভূদাবিঃ পরং ব্রন্ধ তদিতি॥ १॥

তমছুতং বালকং বস্থদেব ঐকত ইতি বিতীয়েনাম্বর:। অমুতত্বে হেতু গর্ত্তানি বিশেষণানি অমুক্তেকণমিত্যাদীনি। বৈদ্র্য্যং

# র্যামী ভগবান্ হরি ঈশ্বর রূপে আবিভূতি হইলেন ॥ ৭॥

হে রাজন্। ভগৰান্ আবিস্তৃত হইলে কহদেব দেখিলেন সেই বালক অতিশয় অনুত, উঁহোর পদ্মপলাশ তুল্য লেমচন, চারি হস্ত, শত্র গদা প্রভৃতি আয়ুধ ধারণ করিয়াছেন। বক্ষঃছলে শ্রীবংসের চিহ্ন বিরাজমান, মলদেশে কৌস্তভনণি শোভমান। ভাঁহার পরিধান পীতবদন, বর্ণ নিবিভূ জলধর উদামকাঞ্চন্দ কন্ধণাদিভির্বিরোচমানং বস্তুদেব ঐক্ষত ॥ ৮॥ সঁ বিস্ময়োৎফুল্লবিলোচনো হরিং স্ততং বিলোক্যানকত্বস্থুভি স্তুদা।

विश्वत्यामी।

লক্ষণং গলেন শোভতে গলশোভী স: কৌত্তো বন্মিন্ ড়ং। শীর্ষিক সহস্র কুন্তলং কিরীট কুণ্ডলানাং ছিষা কুর্বপরিমিত কেশ মিত্যর্বঃ॥৮॥

বিশ্বয়েন উৎফুলে বিশিষ্টে লোচনে যক্ত স:। গ্রামযুত্ৎ অম্পৃশৎ মনসা দত্তবান্ কংসনিগৃহীতক্ত দানাসভ্তবাৎ বিশ্বয়ে হেতু:

#### বৈষ্ণবতোষণী।

বায়জাখাং নীল পীত রক্ত ছবি রক্ষং তছিদ্যতে মহিঠ তয়া যদ্মিন্ তাদৃশস্য কিরীটস্য থিবাদিং কুগুলয়ো দ্বিষাদ্ধঃ কিন্মীরিত বছলকুস্তলমিতার্থঃ। যদা থিবেতি টাবল্ডং হলভাবেতি বিধানাং। তত্ত মহা বৈদ্যামিব কিরীট কুগুলছিয়া পরিষক্ত সহস্র কুপ্তলং

বস্য তং তহরানাচ্ছবি তয়া শোভমান কুস্তলর্কাং ইতার্থঃ। কিরীটং ত্রিকোণ পত্রাবলিরপং মুকুটন্ত সমস্ত কচাবরক্মিতি ভেদঃ।

উদ্দামভিত্তেজসাত্যুত্তটোং কাঞ্যাদিভিঃ ক্বদা বিশেষতো রোচমানং। যদা তৈক্রপলক্ষিতং স্বত্রব বিরোচমানং কিন্ত স্বরূপ লাব
গ্যাদি লব্ধ ধামভিরেব তৈঃ স্বর্মসৌ প্রতিভূষিতো ভবতীতি ভাবঃ। অত্রব ঘনতমস্যপি তাদৃশমৈকত। বক্ষাতেচ স্বরোচি
বৈতি। অত্র গৌতমীরে যালাকড়োপরি নিবিইছমার্টমহিষী সমাব্তত্বং। ব্রহ্ম শিবাদি কুয়মানত্বকাক্তং তরোক্তং পিতৃভ্যামদৃষ্টবা
দিতি ক্রেমং॥ ৮॥

স পরম ভাগ্যবান্ হর্ষিং কংসাদীনাং সর্বজ্ঞানহরং ভগবন্তং পুত্রতাং প্রতাং প্রতাং প্রতাং প্রতাং বাপ্তাং বিলোক্য সাক্ষাক্ ই । বিশ্বরেন বিক্সিত লোচনঃ সন্ তদা তৎক্ষণমেবাস্পৃথ অস্পর্শরং দানায় সংক্রমকরোও। নমু কংসেন পীড়িতস্য স্তত্সর্বস্য বন্ধস্য সংক্রোহণি কথং ঘটেত কথং বা লানং বিনৈব দানং তত্রাহ ক্ষেপ্তি কৃষ্ণপ্রাহ্রভাব স্বভাবেন য উৎসব উল্লাসন্তেন সন্ত্রমা মনত্র। মস্য সঃ। ততে। বিচার-মপি ন কৃতবানিতি ভাবঃ। ততক্ষ মুদা ব্যাপ্তো বভূব কৃণং মুদ্ধ ইবাসীদিত্যথঃ। যথা মুদা হর্ষ পূর্বকং প্লাতঃ সন্ ক্ষঞেত্যাদি

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

মিত্যৰ্থ: ॥ ৮ ॥

স্থতং হরিং বিলোক্যেতি। অবতার সামান্যজ্ঞানং তত্ত্ব ক্লেডি মুনীক্রবাক্যং তৎস্বভাবং বতএবাত্যস্তোলাসক চেতবুরা

#### শ্ৰীবিশ্বনাথঢক্রবর্ত্তী।

নীল পীত রক্তছেবি রত্নং তন্যুক্তং কিরীটং ত্রিকোণ পত্রাবলীরূপং॥৮॥

স বিশ্ববেত্যহো মহামুক্ত মুনীক্রাণামপি ছল্ল দর্শনঃ পরমেশরো মম পুনরবিদ্যাবদ্ধ জীবস্যাবিদ্যাবদ্ধজীবেন কংসেনাপি বহিরপি বদ্দ্য গৃহহেবতীর্য দৃশ্যো বভূবেভ্যেকে। বিশ্বয়ঃ। সর্ব্ধ ব্যাপকং পরং ব্রহ্মাপি মাসুবগুরাক্তলনিষ্টেতি দিতীয়ঃ। বিবিধার বস্ত্র কটক কুণ্ডল কিরীটাদ্যলহার বিশিষ্ট এব বালকো গর্তারিক্রান্ত ইতি তৃতীয়ঃ। সাক্ষায়হাভয়স্যাপি ভীষণ আদিপুক্রো ভগবানপি কংসভয়ভীতং মাং স্বপিত্ত্বনালীচক্রে ইতি চতুর্থঃ। হরিং সূতং বিলোক্যেতি তামিন্ স্বেষ্ট্রদেবন্ধ পুত্রম্বলা জীবনা যৌগপদ্দেবন্দ তস্যাভূদিতি ভাবঃ। কৃষ্ণাবতারেত্যহো সামান্য বালক্স্যাপি ক্রমনি পিতা দান ধ্যানাছ্যৎসবং করোতি মম তৃ কৃষ্ণ এব পুরুত্বনাবতীণঃ সম্প্রতাহং ক্র্থবং করোমীতি প্রাপ্ত সন্ত্রমঃ মুদা আগ্নৃতঃ আনন্দসম্প্রেণ নিম্ভিতঃ সম্পূদ্ধ মনসা দলে।

সদৃশ হতগ, মহামূল্য বৈদূর্ঘ্য মুকুট তথা কুগুলের ত্যুতিতে অপরিমিত কেশপাশ দেদীপ্যমান, আর তিনি অত্যুৎকৃষ্ট মেধলা অঙ্গদ তথা কন্ধণাদি অলঙ্কারে দীপ্তি পাইতেছেন ॥ ৮॥

ভগৰান্ হরিকে উক্ত রূপে আবিষ্ঠ হইতে দেখিবামাত্র যদিও বহুদেবের নয়নহর বিশায়ে উৎকৃষ্ণ হইল, কারণ কৃষ্ণায়জারোৎসবের সত্তম ক্মিল তথাপি পুত্রমুখ দর্শন হইল বলিয়া আনন্দে পুলকিত হইলেন এবং ওৎক্ষণাৎ মনো খারা দশ সহত্র ধেনু দান করিলেন। সে সময় বন্ধনাবস্থায়

কৃষ্ণাবতারোৎসব সংভ্রমে। হস্পৃশব্দা বিব্রেভ্যোহ্যুতমাগুড়ে। গবাং ॥ ৯ ॥ चरियेनमरको नवधार्या शृक्षः भन्नः नजानः कृष्यीः कृषाक्षानः। স্বরোচিষা ভারত সৃতিকাগৃহং বিরোচয়ন্তং গতভীঃ প্রভাববিৎ ॥ ১০ ॥ **बिवञ्**रमव छेका ॥

বিদিতোহিদি ভবান্ সাক্ষাৎ পুরুষঃ প্রকৃতেঃ পরঃ। কেবলামুভবানন্দস্বরূপঃ সর্কাবৃদ্ধিদৃক্ । ১১

# প্রথরস্বামী।

ক্লকাৰতারেতি মুদা আপুতো ব্যাপ্তঃ স্নাত ইতি বা॥ ১॥ কতধীঃ ওজবৃদ্ধি:॥ ১০॥

পুত্রবৃদ্ধা পঞ্চন্ কাং পরিক্যজ্যাই অহো বিদিকোহিসি কথং বিদিতোহিস্থি তবান্ প্রকৃতেঃ পরঃ পুরুষ ইতি রমু কিম্আশ্চর্যাং

# देवकक्टावनी ह

লকণেভূতা স্পদিতি॥ >॥

অথানস্তরং সদ্য এবেত্যর্থ: পুরুষং প্রমেশ্বং তত্তাপি পরং পরিপূর্ণ তয়া অবতীর্ণং অবধার্যা নিশ্চমেন জ্ঞামা তত্ত হেছু: কুত্ধী: তত্র ন্যস্তচিত্ত ইতি ওত্ত ক্ষত প্রণামানি অলানি ভ্রলাণীনি যস্য সংসাটাকং প্রণম্য ইত্যর্থ: যদা অবনত শিরা: সন্ অবধারণে হেছবরমপ্যাহ স্বীয়েলাসাধারণেন মনো নয়নাহলাদকেন মিলিতার্কেন্দু কোটি তুল্যেলাপি রোচিবা মধ্য তমো ব্যাপ্তং স্তিকাগৃহ-মেব নতু তৰাছং বিশেবেণ রোচরস্তং প্রকাশয়স্তং এবমেকজৈব যুগপল্লিজ তেজসঃ কচিছিস্তারেণ কচিচ্চ সম্বরণেন পারমৈম্বর্য শক্তি-র্ন্দোভিতঃ কীদৃশঃ সমতে তেওঁ। তেওঁ। অপগত কংসভরঃ সন্। নমু গ্রব শক্তং কংসপ্রহরিকাঃ শ্রোযান্তীতি ভর হেতৃত্বত্যের ভত্তাৰ প্ৰজাবং তলৈৰ্ব্যং বেক্টীভি তথা দ:। কিং করিয়ন্তি এতে বরাকাঃ সোপি বা ইতি ভাবরিছেতি ভাবঃ। ভারত হে ভরত বংশ্বোতি 🗬 বস্থানেৰ ভাষ্যভৱেশ প্ৰীত্যা সংখাধয়তি। শ্লেষেণ ডাঃ একিঞ্চন্ত কাস্তিঃ হেছু গৰ্ডতএৰ ডন্ডাঃ রভেডি॥ ১০ ॥

বিশিত ইতি তৈর্ব্যাখ্যাতং তত্র কথমিতি কিং প্রকারক ইত্যর্থ: ভবান্ ইত্যাদৌ হেডু রূপে বাক্যান্তরে তত্তরকণ্দৃষ্ট্যা পরম পুরুষত্বেন সিদ্ধো ভবান প্রাকৃতেঃ পর ইতি ব্যাথ্যেরং। নিরিত্যাদৌ নর তহি আশ্চর্য্যবং কথং বিদিতোহসীতি বদসি পুরুষস্য

#### ক্রমসন্ধর্ত:।

বোধনায় ততো বিশেষ জ্ঞানায় ততো বিশেষ জ্ঞানমাই॥ ৯॥

পরং পুরুষং 🕮 কুষণখ্যং শ্বরং ভগবস্তমেব নিশ্চিতা তত্র হেড়ুঃ কৃতধীঃ নাস্তচিত্তঃ তর্বধনাছ ॥ ১০ ॥

বিদিতোংসি ভবান্ বিজ্ঞাতোংসি কথং যা প্রকৃতেঃ পরঃ পুক্ষতন্ত্রটা স ভবান্ যা কেবলাকুতব্নিক্ষা পরপ্রকাষ্য আত্মা স ভবান্

# 🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বিশ্রান্দং বিতরণং স্পর্শনং প্রতিপাদনমিত্যভিধানাৎ স্পৃশি দানার্থকোৎপি জেয়:॥ ১॥

ক্বতধীত্বন্দিকেব যৌগপদ্যেন ক্লবৈত্বৰ্য্য বাৎসন্য বৃদ্ধি:। গতভী: প্ৰভাববিদিতি। হস্ত হস্তান্মিন্নপাকে কংস সহসাগত্যান্ত্ৰং প্রবোক্যতীতি প্রবৃদ্ধা বভরম্বক্ত্ব তদৈখব্য বৃদ্ধা প্রভাব ক্লানেন গতমিতার্থ:॥ ১০॥

হে ভগবং ছং মামেবং নিজ অক্সপং কর্মশ্বিসি জ্বস্যাক্ষ্মভিপ্রারঃ মৎপিতা মদর্থ কংসাদিভেতি তক্ষামীশ্বরং প্রতীত্য নির্ভরে৷ ভববিতি তৎ সত্যং দ্বনীবরত্বেন মম প্রতীতি জাতৈবেত্যাহ। বিদিতোসি। কীদৃশবেনেতি চেদত আৰু বঃ প্রকৃতেঃ পরঃ

# ছিলেন ভাহাতে বস্তুতঃ দান হুইবার সম্ভাবনা কি ? ॥ ৯ ॥

হে ভারত! তদনন্তর শুদ্ধবৃদ্ধি বহুদেব ঐ পুক্তকে পরম পুরুষ অবধারণ করিয়া প্রণত হইলেন এবং কৃতাঞ্জল হইয়া নিৰ্ভয়ে স্তৰ করিছত লাগিলেন। হে রাজন্। তৎকালে বালকের শ্রীর কান্তি দারা সৃতিকা গৃহ সাভিশন্ন উন্যোতিত ইইতেছিল। ১০॥

वस्ति अध्यक्षक भूक वृक्षित कर्ने कतिशाहित्यन, उरशत जारा भतिकांक भूकिक कवित्नन অহো! আপনাকে জামিতে পারিলাম, আপদি প্রকৃতির পর পুরুষ, কি আশ্রর্য নাকাৎ দৃষ্ট হইলেন ভগবন্ ! কেবল অনুদ্ৰৰ ও আনন্দই আপ্নকার বন্ধণ এবং আপনি সর্বাধাপির অন্তর্বারী; এতলাপ স্তাৰ স্বপ্ৰকৃত্যেদং স্কীতো ত্ৰিগুণাত্মকং। তদ্মু দ্বং ম্থাৰিন্তঃ প্ৰবিষ্ট ইব ভাৰাসে॥ ১২॥

# अश्वचायी।

পুরুষস্ত প্রকৃতেরম্ভত্বাদেবেত্যত আহ সাক্ষাদিতি প্রত্যক্ষত ইডার্ছ:। নম্বন্দিসন্নির্দ্ধইং প্রত্যক্ষত উপদত্যতে কিঞ্জিত্রনিত্যত আহ কেবলেতি কেবলন্দাসাবস্থত্বক আনন্দক স এব স্বরূপং বস্তু সং কিঞ্চ সর্ব্যবিদ্ধুক্ নহেবংছুতো দৃশ্রো ভবতীতার্থ:॥ ১১॥

নমু দেবকী লঠব প্ৰবিষ্টিস্য কিমিরমভিন্ধতিঃ ক্রিয়তে অত আহ স এবেতি সএব উক্ত স্বরূপ এব সং ন দেবকী লঠবে প্রবিষ্ট ইত্যর্থ:। নমু বিষং স্ট্রা তদমু প্রবিষ্টস্য কুমেতবত অত আহ স্প্রেক্তাতি স্মার্থা ইদং স্ট্রা তদমু সমপ্রবিষ্ট এব। নমু

# देवकवरणावनी।

প্রকৃতে রন্যবং প্রশিদ্ধনেবেভ্যত আহ সাক্ষাদিতি। বৰা পরমন্ত্র ভঙ্গাপি সাক্ষাৎ প্রাপ্ত্যাতিপ্রদ্ব্যন্নাহ বিদিতোহসীতি মরান্য বৃষ্পুলক্ষাহসীতার্থঃ। বেদন প্রকারমেবাহ যং প্রকৃতেঃ পরং প্রকৃতিজ্ঞ পূক্ষং স ভবান্ যথা যং কেবলাম্ভবানন্দ্রমণং পর বৃদ্ধি। নির্মিশের আত্মা সোহপি ভবান্ যক্ষ সর্ম বৃদ্ধিক সর্মান্তবামী পরমান্ধা গৈছিপি ভবানিতি ভক্তজপক্ষাৎ স্বরং ভগব্বেন বিদিতোসীহত্যর্থঃ। তত্তাপি সাক্ষাবিদ্ভোহিসি চকুবা দুটোহসীতাহো মম ভাগ্যমহিষ্টেত ভাবং॥ ১১॥

তত্র দৈক্তেন ভদ্মিন্ নিজ পুত্রছাপল্যপনার সা দেবকী সর্ব্ধ লগিরবাস নিবাসভ্তেতি দিট্টার তে কুদ্দি গড়ঃ পরঃ পুনানিতাদি লব্ধনি তৎ প্রবেশ বার্মতি স এবেডি চতুর্ভিঃ তথাৎ সর্ব্ধ বাগিকত তবাত্র সম্প্রতি প্রকাশ এব নতু প্রবেশ ইতি তাৎপর্যাঃ বান্তবার্থবেবং ন কেবলং সাক্ষাৎ প্রাপ্তোহিসি অপিতু প্রত্যাপীত্যাশরেনাহ স ইতি সএব পুর্ব্ধাক্ত মদহভ্তবরীত্যানেনৈর রূপেণ লয়ঃ ভগবক্রপ এব ছং ততো হেতোরপ্রবিষ্টঃ অসম্ভাবিত প্রবেশ ইত্যর্থঃ। পরাজেরসোচ ইতি ব্রিষ্টার্থ বৈশিষ্টং তথা ভূতোহিশি স্প্রক্রত্যা প্রেমবশ্যেন পর্মাচিন্ত্য শক্তিছেনচ নিল্প অভাবেনেদং দেবকুাদরং হি নিশ্চিতং প্রবিষ্টো ভাবাসে ক্রিরসে তত্ম দৃষ্টারঃ। অগ্রে স্ট্যালৌ কারণার্থবাদীয় রূপেণ ত্রিগুণাত্মকং ত্রন্ধাণ্ডং স্ট্রা গর্ডোদকশারি রূপেণায় পশ্চাৎ তদিবেতি। অত্র সামাজতোহরং ভাবঃ বন্ধ্যমাণাস্থ্যবেশারেগংগিত তত্র বদি প্রবিষ্ট জনাত্র যোগ্যে কিমৃত্তি। বিশেষত ক্রম বন্ধাদি ভক্ত্যা তৎ প্রবেশে সভ্যাপি বন্ধাপ্তস্য ক্রড্যেন বং প্রেমাভাবাৎ প্রাক্তভণময়ন্তেন তৎস্পর্শিছাভাবাচ্চ তত্রোদাসীন এবাসি অভঃ প্রবিষ্টোপ্রপ্রবিষ্ট এব অস্যান্ত তবৈদ্বানীত্যাদন্ত্যের তন্তকেলাগ্যতেতি তন্ধদেবত মমেতি স্থ বিশ্বাহ প্রবিষ্টাভন পুত্রত্যাপি ছং প্রাপ্তোহশীতি অতএব বন্ধা তদম্ হি নিশ্চিতমপ্রবিষ্টিহং ইদস্ত প্রবিষ্ট ইব ভাব্যসে যথা অন্যত্রান্যঃ প্রবিষ্টো ভবতি তথৈৰ ক্রিয়সে ইতি এতছক্তং ভবতি নচান্ত ন বহির্বস্যি স্বর্ধং নাপিচাপরং ইত্যাদিরীত্যা পরম্বারণতবৈত্তক্রপ্রধাপি বিভূমণি নিজঃবিশ্রহং নিজন্ধন প্রেমা স্কর্দেশ মধ্যন্থিতমের সন্দর্শ-রূপি তেন চানন্দ্রসিত অন্যথাস্থপত্যা মণিমত্র মহোব্ধাদি বং কাগ্যচিন্তা শক্তিবের নিমিত্তম্পগদ্যতে তবৈর

#### क्रममण्डः।

সর্কা বৃদ্ধি দৃক্ সর্কান্তর্বামী সোহপি ভবানিতি বরং ভগবদ্বেনেতার্থ:। তত্তাপি সাক্ষাদেব বিদিতো দৃষ্টোহসীতাহো মম ভাগ্যমিতি ভাব:। কিরং এতহা বত: প্রতয়াপি প্রাথোহসীতি তমবতার কারণেন সহ বক্তুং তাদৃশ প্রাথি হল ভতাখ্যাপনার প্রকৃতিপরা দিবং বোজয়ন্ তস্য বটনার সর্বাদি পরিপাটিশাসুবদন্ সর্ব প্রবেশে। তাবদাহ ॥ ১১ ॥

স এবাহ। তত্ত্ৰ প্ৰবেশোহপি ততঃ পরস্থমাহ এবং তবানিত্যস্তাভ্যাং বংগতি ৰাভ্যাং॥ ১২ ॥

## **अ**विश्वनाथं ठळवर्छी।

পুক্ষ **ওদীকণ কর্তা স ভবানেৰ বং কেবলায়্ভবানক্ষ স্বরূপঃ পরবন্ধাণ্য আত্মা স ভবান্ধি বং সর্কার্ডিগৃক্ সর্কান্তবামী সোহিপি** ভবানু সাক্ষাদেব স্বরং ভগৰত্বেনৈৰ ইতি সর্কারহং জানাম্যেবেত্যর্বঃ ৪ ১১ ৪

নম্ন তো তাত ছলগুহে প্রবিষ্টং মাং পরিচ্ছিরনের লাত্যের জানাসি জতঃ কিমপি বে তবং ন জানাসীত্যাশক্ষ ক্ষানমানিকুর্জরাহ স এব উক্ত ক্ষমণ এব বং ক্প্রেক্ত্যা ক্ষীর প্রধান শক্ত্যা ইনং লগুৎ ক্ষুণ তদম্ ক্প্রেবিষ্ট ইব প্রবিষ্ট ইব চ তাব্যসে নির্পাশে।
লগজোহস্তক্ষণসভাষান্ত্রাহ ক্ষাবিষ্ট ইব নম্প্রবিষ্টা বহিচ্চোগলভাষান্ত্রাং প্রবিষ্টা ইব মতু প্রবিষ্টা ইত্যর্জঃ। এবমের সর্ক্ত

रकान वाकि कथन काराज्य मृष्ण राजन नारे, रेराएकर थाणक निजीकन कतिया कार्क्य मानि-एक । ১১ ।

छगवन्। वाशनकात्र यद्गेश धेरै थकात्र है हैशार्छ दिनान गरम्ह नाहे, वाशनि दमवकी कर्षत्र शिवके

যথেমে বিকৃতা ভাবাস্তথা তে বিকৃতিঃ সহ। নানা বীর্য্যাঃ পূথগৃভূতা বিরাজং জনয়ন্তি হি। সমিপত্য সমুৎপাদ্য দৃশ্যন্তেইসুগতা ইব। প্রাথেব বিদ্যমানতামতেযামিহ সম্ভবঃ ॥ ১৩॥

# श्रीभव्यामी।

কথং তর্হি ক্রত্যোচাতে ত**ং স্ট**্র। **তদেবাস্থ**াবিশদিতাত <mark>আহ প্রবিষ্ট ইবেডি ভাব্যদে নিরুণ্যদে প্রভাক্তো বা সক্র</mark>পেণ প্রবিষ্ট ইব লক্ষ্যদে॥ ১২॥

অত্র দৃষ্টান্তঃ যথেতি ইমে অবিকৃতা ভাষা মহদাদয়ে। যথা তথেতি দৃষ্টান্তং বিরুপ্টেতি তে বিকৃতৈরিতি তে হি বিকৃতিঃ বোড়শ বিকারেঃ সহ সমিপত্য মিলিছা বিরাজং ক্রনাণ্ডং জনয়ন্তি সয়িপতনে হেতুঃ যতঃ পৃথগ্ভূতাঃ সন্তঃ নানা বীর্যা বিশিষ্ট কার্য্য সমর্থা ন ভবন্তি অতঃ সয়িপত্যেতি। এবং সমুৎপাদ্যাহ্গতাঃ প্রবিষ্টা ইব দৃষ্ঠান্তে ন পুনঃ প্রবিষ্টাঃ কুতঃ উৎপত্তেঃ প্রাদেব কারণ তয়া বিদ্যমানস্বাৎ ন তেয়ামিহ স্থান্ত কার্য্যে পশ্চাৎ সম্ভবঃ প্রবেশ ইতি ॥ ১৩ ॥

## বৈষ্ণবতোষণী।

নিজ্ঞজনঃ। প্রেম প্রবর্ত্তিতয়া লোকবল্লীলা কৈবল্য বিনোদশালশালিন ন্তব প্রবেশোপি সম্পাদিত তথা পুত্র ভাবোহপীতি তত এব ভগবতো বরাদিকং চ নির্বাচমিতি জ্ঞেয়ং তত্র শ্রীদেবক্যা তদর্বমন্মিলেব জন্মনি ব্রতং বিধায় তত্মান্তম্বরো লব্ধ ইতি শ্রীবিধফুর্ম প্রাসিদ্ধিকামুন্মর্ত্তব্যা॥ ১২॥

অন্যত্র মহদাদীনামিব ভবতঃ স্থতরাং প্রবেশাংপি ন সম্ভবেদিত্যাহ যথেতি যুগ্মকেন বহির্গতদ্যাম্বর্গমন্দমেব প্রবেশঃ পূর্বং বিদ্যমান এব হি কারণ কার্যাংশাভিব্যক্তিশ্চেতি ন তেযাং প্রবেশ ইত্যর্থঃ॥ ১৩॥

#### ক্রমসন্দর্জঃ।

যথেমে পৃথিব্যাদর তথা তে মহদাদরোপি। কথং হি যন্ত্রাৎ বিক্ততৈরিতি পূর্ব্বত্র তু সঞ্চলাদিভিঃ। পরত্র যোড়শবিকারেঃ পূর্বত্র বিরাজ্য তৎপ্রারং ঘটং পরত্র ব্রহ্মাণ্ডং॥ ১৩॥

#### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বর্ত্তমান স্বং মালা হৈ প্রবিষ্ট ইব নতু প্রবিষ্টঃ সর্কাদৈব বর্ত্তমান স্বং জাত ইব নতু জাতত্তেন চ সর্কাব্যাপক মূর্ত্তেত্তব কংসঃ কিমিপি কর্ত্তুং ন শকুরাদিতি জানাম্যেবেতি ভাবঃ ॥ ১২ ॥

জাত্র দুষ্টান্তঃ। যথা ইমে জাবিক্কতা ভাবা মহদাদয়ো ব্রহ্মাণ্ডে প্রবিষ্টা অপি ন প্রবিষ্টাঃ তত্র পুন জাতবং প্রতীতা জাপি ন জাতা স্থবৈ অমিত্যর্থঃ। দৃষ্টান্তঃ বির্ণোতি তে অবিক্কতাঃ বিক্কতৈঃ ধোড়শবিকারৈঃ সহ নামা বীর্যাঃ পরম্পর বিসদৃশ অকশা অপি পৃথগ্ তৃতাঃ পরম্পর মিলিতা অপি সন্নিপত্য চৈতন্য প্রেরণবশামিলিতীভূর বিরাজঃ জনমন্তি। তত্ত বিরাজঃ সমুৎপাদ্য অনুগতা ইব তত্র প্রবিষ্টাঃ ইব দৃশ্যন্তে মতু প্রবিষ্টাঃ। তথাহিরপি তেবাং বর্জমানভাদিত্যর্থঃ। তথা তত্র বিরাজি সমুভূতা ইব দৃশ্যন্তে নতু সমুভূতান্তর হেতুমাহ প্রাগেবেতি ইছ বিরাজি সন্তব উৎপত্তিঃ॥ ১০॥

নহেন। নিজ মায়ায় এই ত্রিগুণাত্মক বিশ্ব স্থৃষ্টি করিয়া পশ্চাৎ ইহাতে প্রবিষ্ট না হইয়াও প্রবিষ্টের ন্যায় লক্ষ্য হইতেছেন॥ ১২॥

ভগবন্! যদ্রপ অবিকৃত ভাব অর্থাৎ মহদাদি পদার্থ সকল বিকৃত ভাবের সহিত অর্থাৎ বোড়শ বিকারের সহিত মিলিত হইয়া বিরাজ অর্থাৎ ত্রুলাণ্ড উৎপাদন করে। ভগবন্। অবিকৃত ভাব মহদাদির সহিত বিকৃতভাব মিলিত হইবার কারণ এই ঐ সকল ভাব পরস্পার পৃথক্ হইলে বিশিক্ত কার্য্যে সমর্থ হয় না, অপর, অবিকৃত ভাব সকল বোড়শ বিকার সহ দিলিত ছইয়া ত্রুলাণ্ড উৎপার করণান্তর যদ্ধ্য তাহাতে অনুপ্রবিষ্টের ন্যায় দৃষ্ট হয় বস্ততঃ প্রবিষ্ট নহে, কারণ উৎপত্তির পূর্বেল কারণত্ব রূপে বিদ্যানা ছিল, মৃত্রাং কার্য্য স্ট ইইলে পশ্চাৎ প্রবেশ সম্ভবে না ॥ ১০ ॥ এবং ভবান বুদ্ধান্তমের লক্ষণৈ প্র'হৈছ প্ত'লৈঃ সন্ধান তদগুণাগ্রহঃ।
অনার্তত্বাৰহিরস্তরং ন তে সর্বল্য সর্বাত্মন আত্মবস্তনঃ॥ ১৪॥

#### विधतचामी।

#### বৈষ্ণবতোষণী।

ভবতন্ত পরমকারণজেন ন স্থতরাং প্রবেশো নচ স্পর্শ ইত্যাহ এবমিতি তন্মাদেবভ্তস্য তব সাক্ষানেবাহ্যং প্রকাশং লোপি তব পরম প্রসাদমর ইতি ভাবং। অন্যতৈঃ। তত্র গুণৈরিতি বিশেষণভেদেনার্থভেদাং হিধা ব্যাখ্যাতং। যহা অত্রৈবার্থবিশে-বেগ প্রেমবশ্রমাদি গুণশীলত্বং বোলমতি এবমুক্ত প্রকারেগ প্রেমবশ্রমাদিতি গুণিসহ নিতাবর্ত্তমানোহপি তেরু গুণেরু আগ্রহং প্রনাপ্রিদা তথা ভ্তে। ভবান্ ভবতি কথস্থতৈঃ বৃদ্ধান্থমেরনেব নতু প্রাপ্যং লক্ষণং অরুপং বেষাং তৈঃ নতং সমশ্রাভ্যাদিক দৃশ্যতে ইতি শ্রুভঃ। তত্র হেতবং সর্প্রেম্যাদারঃ সর্প্রিয়নঃ সর্প্রিয়নঃ সর্প্রেমবশ্রেন সততাশেষ সক্ষান্থান অন্যন্ত বন্ধ যন্ত্রমা প্রতং পরম প্রবার্থ স্ক্রপ্রেম্য তথাপি তালা গাগ্রহ ইতি সতত ভক্তপ্রেমবশ্রেন সততাশেষ সক্ষাণ্ডব্যঞ্জকত্বং দর্শিতং তত্ত আব্রোর্থং প্রভাষা প্রবিষ্ঠঃ প্রাপ্রান্থিচি তন্ত্রবতে। যুক্তনেব তদেব চাব্রোর্পি পরম ফলমিতি ভাবঃ॥ ১৪॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

এবং ভবানৃতথা তলগুণেষু গৃহমাণেষু অগ্রহো গ্রহণাভাবো যদ্য তাদৃশশ্চ ভবানিতি তু স্থিতৌ ততঃ পরুত্বমূক্তং প্রবেশমেব নিরাকুর্বন্ প্রপঞ্চদ্য অবতঃ সন্তাং পরিহরতি ॥ ১৪ ॥

# वीविश्वनाथहक्तवर्शी।

কিঞ্চেমে তত্তলগুণৈ বিধি এব ভবাং স্থ কারণছেন প্রবিষ্টোহণানিপ্ত এবেত্যাহ। এবং ভবান্ স্থপ্প্রকৃত্যা স্টে জগতি প্রবিষ্টোপি বুদ্ধা অস্থেম্যমেন লকণং বেষাং তৈঃ স্থপ্রকাশদাপভিজ্ঞানানলাদিভিগ্রিছিং স্বোপাদেরৈ প্রবিং সহ সম্পি সদা বিরাজনানোপি তলগুণাপ্রহং। তদ্যাঃ প্রকৃতে প্রপান্ লেপকান্ ছংখায়কান্ আনইলক্ষম স্থং ন গৃক্টাদি। কুতঃ অনাবৃত্তছাৎ যোহি প্রকৃতি প্রবিষ্টার্যতা ভবতি স এব ভান্ গৃক্টাতি নিপ্তক্ত ভবতি যথা জীব ইতি ভাবঃ। অভন্তব বহিরস্তরং বাপ্যতে প্রকৃতে প্রণান নিস্তি। যথা জীবস্য বহিঃ শক্ষ লপশাদ্যঃ। অস্তক্ত শোক মোহাদ্য ইতি ভাবঃ। সর্ক্ত্রেম্বান স্কান্তবিষ্টানি । কিঞ্জ কেবলং ন ভবৈব অপি তু আরু বন্ধনঃ তব স্বীয় পদার্থস্য সর্ক্রিয় কংস্ব্যাপি নীলা বিলাস ধাম ভক্তাদে বহিরস্তরক্ষ ব্যাপ্যতে লেপকাঃ প্রকৃতি প্রণান সন্তীত্যথঃ॥ ১৪॥

ভজাপ আপনি ইন্দ্রির ও বিষয় সহিত বর্তমান হইয়াও ঐ সকলের সহিত গৃহীত হয়েন না হে ভগবন্। পরিছিল ব্যক্তিরই নীড়ে প্রস্থাদির প্রবেশের ন্যায় অন্তল্প প্রছেল সম্ভবে, আপনি অনারত অর্থাৎ অপরিছিল, আপনকার অন্তর্প্রহিঃ ভেনই নাই, প্রবেশ কোথা হইতে হইবে,। আপনি সর্প্রস্তরণ, সকলের আত্মা, ব্যাপক এবং পরমার্থ বস্তু আপনকার আবরণ হইতে পারে না। আপুনকার অন্তর্গামিত্ব ক্রপে প্রকেশই মুখ্য নাহে, ইল্লাভে দেবকীর গর্ত্তে প্রবেশ কি রূপে হইবে ? অতএব, আপনি ক্রেক অনুভ্রম ও আনকা স্বরুপ, আপনাকে জানিতে পারিলাম, আমার পরম ভাগ্য। ১৪।

য আত্মনোদৃশ্য গুণেষু সমিতি ব্যবস্যতে স্ব ব্যতিরেকতোহবুধঃ।
বিন্যুক্ষাদং নচ তন্মনীষিতং সম্যগ্যতস্ত্যক্তমুপাদদৎ পুমান্॥ ১৫॥
ঘটিতাহস্ত জন্মন্থিতিসংযমান্ বিভো বদস্ত্যনীহাদগুণাদবিক্রিয়াৎ।

### শ্রীধরস্বামী।

নবেতকেতু চতুষ্ট্যং প্রণঞ্চ্যাবস্তব্ধে ঘটেত তত্ন সম্ভবতি সন্থেন প্রতীতেরিত্যাশস্কাহ য ইতি। আত্মনো দৃশ্যেরু গুণেরু দেহাদিরু অবাতিরেকতঃ আত্ম ব্যতিরেকেণ পৃথক্ সর্মাং দেহাদিরিতি ব্যবস্যতে নিশ্চিলোতি যং প্রান্ সেহবুধঃ অবিধান ব্যতিরেক দর্শনাৎ কিঞ্চ মনীবিতং বিচারিতং তৎ দেহাদি সর্বং যতঃ বিনাহ্যাদং বাচারম্ভণমাত্রং বিনা সমাঙ্ ন ভবতি অতোহ্যম্ভবেদন ত্যক্ষং বাধিতমেব বস্তু বুদ্ধা উপাদদৎ স্বীকুর্কান্ অবুধ ইত্যর্থঃ ॥ ১৫ ॥

এবং পরমেখরদৃশ্যস্য ত্রাতিরেকেণাসভ্যুক্তং পরমেখরোপাদানত্বাদ্পি ত্রাতিরেকেণাসভ্যিত্যাহ ভত্তোহস্যেতি নটেবং

## বৈষ্ণবতোষণী।

নবন্যেবামন্যেপি দেবাঃ প্রাদিরপাঃ প্রকাশন্তে কথং ম্যোবাগ্রহঃ ইত্যতাহ য ইতি ব্যেন প্রম প্রম প্রমকারণক ছাং বিনান্যেবাং স্বাতত্ত্রেপ সন্বাভাবারতের প্রথার্থমিতি ভাবঃ। যবা আত্মন: স্বস্য দৃষ্ঠাঃ সাক্ষাদক্তবনীরা মনোহরা প্রণা বেবাং ত্বেপি মধ্যে স্ব ব্যতিরেকতঃ তেবামপি মূল স্বরূপং তাং বিনারং দেবঃ সন্ উত্তম ইতি বো নিশ্চিনোতি সমূর্থঃ বতঃ তক্মনী-বিতং দৃষ্ঠাপ্তণোহরং সন্নিতি বিচারিজাং সম্যপ্তমং ন ভবতি কুতঃ অনুবাদং তত্ত্বনিষ্কারণার্থমন্যোন্য বাদং বিনা তৎ সৎ সক্ষমা ভাবেন তত্ত্বামিশ্বরাদ্যেবেত্যর্থঃ বতঃ স্থ্যান্ স্বিভিন্তাকং প্রথাধান্তরেবাপাদদৎ স্বীকৃতবান্ দদে পরবৈপদমার্থঃ ॥ ১৫॥

ষত্ত ইতি তৈ ব্যাখ্যাতং তত্ত্বোপাদানত্ব নির্মাহারৈবং ব্যাখ্যেরং অনীহত্তমক্ষোভিতত্ত্বমিত্যর্থঃ। অবিকারিত্বং শ্বরূপান্যথাভাব রহিতত্ত্বমিত্যর্থঃ। গুণময্যাবিদ্যরা বিবর্ত্তত এবেতি নোপাদানত্ত্বেপি দোব ইতি ভাবঃ। অথ নিমিত্তত্বে দোবমাশহতে নবিভি ব্রহ্মতাদিত্যাদৌ বন্ততো ব্রশ্ধ শ্বরূপ এব তত্মিন্ গুণাধ্যারোপাদেব বিকারিত্বাদি প্রতীতেরিতি ভাবঃ। যথা নির্দোধেণ সর্ম্ব কার-

#### ক্রমসন্ধর্ভ:।

য ইতি যদি অস্য জীবান্ধনো দ্রষ্টুব'তিরেকেণাপি ন জগছণদভ্যতে তদা কিং পুন: সর্ক প্রকাশক্ষ্য প্রমান্ধন ইত্যর্থ:। অস্বাদং বেদাস্মতিং বিনেতি তত্র সাপি নাজীত্যর্থ:। যস্য ভাষা সর্কমিদং বিভাতীত্যাদি শ্রুডে:। যতঃ স পুমান্ বেদৈস্তাক্তমুপদদণৎ উপাদেষ্থনে স্বীক্লতরানিতার্থ:। দদ ধাতৌ তিঙাতিঙৌ ভবস্তীতি চ্ছান্দসং পরক্ষৈ পদং। স্বষ্ট্যাদি কর্তৃত্বেপি ভতঃ প্রক্মাই॥১৫ স্বস্তু ইতি। শ্রুডেম্ব শক্ষুণ্বাৎ ইতি ন্যায়েন সিদ্ধান্তমাই। বদস্তীতি বিরোধং পরিহরতি জ্পারে ব্রহ্মণীতি চিন্তামণ্যাদিবদ

# **बिविश्वनाथहळावर्खी।**

ু নহ বেপকা অপি প্রকৃতিখণাই কেচিৎ কথনা তন্তা এবেত্যত আহ ব আছান: খন্য দৃশ্যগুণের তোগ্য প্রকৃচন্দন বনিতাদির সমিতি উত্তমেইরং পদার্থ ইতি ব্যবস্তে নিশ্চিনোতি স অব্ধঃ কৃতঃ। খব্যতিরেক্তঃ খনিং ক্ষেবাং সদা সংযোগাভাবাৎ ততশ্চ শোক মোহাদি হংগঞাদখাৎ সংসারপ্রবাহ প্রাপক্ষাচেতি ভাবঃ। নহসৌ মীমাংসকো ভোগ্য প্রগাদিঃ সমিতি বদন মনীবিণ্নেবাছানং মন্যতে। তত্ত্বাহ বিনেতি হু নিশ্চিত্মেব বাদং বিনা। তত্মনীবিতং ন সম্যক্ মনীবিদ্ধং তত্ত্ব প্রবাদ এব নতু স মনীবিত্তাক্ত । বতত্ত্বতাক্তাক্তমেব দ্বীর ক্তিন্ত্বশিক্ষাদ্ধেন যৎ তদেব উপ আধিক্যোনাদ্ধৎ শীক্ষতবান্ ইম্বামার্থ ॥ ১৫ ॥

নম্ব এব স্বপ্রস্কান্ত্রেদং স্টে ত্যাদি স্কৃত্তে ও নমর প্রস্কৃতেশ্চ মছক্তিদ্বেনাভেদাৎ গুণমর জগৎ উপাদানস্য মম কথমন্তর্ব হি-

ভগবন্! যে পুরুষ আত্মার দৃশ্য গুণ দেহাদি মধ্যে দেহাদিকে আত্ম ব্যতিবেকে পৃথক বর্তমান বলিয়া নিশ্চয় করে, ব্যতিবেকে দর্শন হেছু সে নিভান্ত অবিধান্, যে হেছু দেহাদি পদার্থ বিচারিত হইলে বাক্য মাত্রের আরম্ভ ব্যতিরেকে এ সকল যথার্থ হইতে পারে না, ততএব অত্যে যে বস্তু অব-স্তুত্ব রূপে বাধিত, যে পুরুষ বুদ্ধি ধারা ভাহাই বস্তু বলিয়া স্বীকার করে, তাহাকে অবিধান্ ব্যতীত আর কি বলা যাইতে পারে ? ॥ ১৫ ॥

বিভা। তত্ত্বদর্শিরা বলেন আপনা হইতে এই জগতের সৃষ্টি স্থিতি প্রদায় হইতেছে, অথচ আপনি নিগুণ স্বতরাং নিজ্ঞির ও অবিকারী। ভগবন্। যদিও নিজ্ঞায়ের কর্তৃত্ব ও অবিকারিত্ব বিরুদ্ধ, তথায়া

# স্থাীমরে ত্রন্ধণি নে। বিরুগাতে তদাপ্রয়ম্বাত্বপচর্ব্যতে ভাগৈ: ॥ ১৬ ॥

#### विश्ववामी।

সত্যপি বিকারিত্বমিত্যাহ অনীহাদিতি অভগরাদনীহত্বং অভোহবিকারিত্বমিত্যর্থঃ। নামু অনীহত্বে কথং কর্ত্বয় কুড়েরে কুড়োব বাবিকারিত্বং তত্ত্বাহ ত্রীশ্বর ইতি ব্রহ্মতাদিবিকারিত্বং ঈশ্বরত্বাচ্চ কর্ত্ত্বমিতি। নমু এতদপি বিরহ্মমেব নেত্যাহ তদাশ্ররত্বাদিতি ভগৈঃ কুর্মন্তিঃ ত্বয়ি স্ট্যাদিকর্ত্ত্বমূপচর্য্যতে ভগাশ্ররত্বাৎ যথা ভৃত্যক্বতং রাজনীতি॥ ১৬॥

#### বৈক্ষবভোষণী।

প্রেন সর্ব্বোৎস্কুটানস্তত্ত্বহু স্থাপর্যতি করে: প্রীকৃতিশ্চ প্রতিজ্ঞাল্টারাম্ব্রোধেনেতি ন্যায়েন উপাদানাদ্বিমিন্তাচ। আরু বিরোধন্মাশ্ব্য পরিহরতি বিজে ইত্যাদিনা। তরাগুণাদবিজিয়াদনীহাদিতি পদরয়স্য ক্রমেণায়মর্থং। বদাপি তব রল আদি বৈশুণাস্বর্বনা নান্তি তত উপাদানতা হেছু:। স্বন্ধপান্যথা ভাৰ সন্তবোহণি নান্তি। নিমিন্ততা হেছুইহরজন্টেলি নান্তীতি তথা বিজে ইত্যায়ায়মর্থং। যদ্যপিচ কুৎক প্রসক্তি নির্বন্ধৰ শব্দ ব্যাপকো বেড়াক রীত্যা বিজোরেকদেশাভাবেন মর্ব্ধ পরিণতা ব্যুণান্যাংশানবন্ধানাদিদোবং স্যাৎ নিমিন্তবালীকারে চেটাপি ন সন্তবেদিতি। তথাপি প্রতেক্ত শব্দমুল্বাদিন্যায়েন প্রত্যেক প্রমাণান্তব্ব বদন্তি। নির্প্তর্বাদি হেছুছেচ ত্রমাদি দোৰ চতুইর রাহিত্যেন স্বত্থক প্রমাণকুতাভিঃ প্রক্তিরের সিদ্ধে ক ইহ সন্দেহ ইত্যাভিপ্রায়াদিত্যর্থং। নচায়ং বিরোধ ইত্যাহ স্বন্ধীতি ব্রন্ধণি নির্বিকার পরমানকৈক ক্রপেহণি ক্রমানে ক্রাণ্ডালীনামণি নানা পদার্থ প্রসর লোহ চালনাদাববিকারছাদোট দুটে। অচিন্ত্যাং থলু রে তাবা ন তাংস্কর্বেণ যোলরেও। প্রকৃতিত্যঃ পরং যক্ত তদচিন্ত্যস্য লক্ষণমিতি পুরাণানাং নির্ণেষ্টেচ সতি সর্ব্বাচিন্ত্য শক্তিগণ পরম্পর্মা পরম কারণভূতে স্বন্ধি কোরা বিরোধং স্যাৎ অন্যথামূপপত্তিই সর্ব্বোপমর্দিনী যেয়মুভ্রন্তাপ্যচিন্ত্যাযের শক্তিং বলাহপন্থাপ্য বিরোধনি নির্কার করনং যুক্তমিত্যথা: নাম্ন ভবতু বৈকুইচন্বর্যাদি হেছু নির্দ্ধোর বাজ্বাপুণ্য শক্তিতা ক্রমন্তবাদি হেছু সদোব বৈজ্ঞা শক্তিতা ত্র দোবাহির ইত্যাশক্তাহি স্বান্তবাদি তি ত্র্যাং শক্তিছারারপদার তদোবেণ লিপ্যসে তথাপি স্বামান্তব্যন্ধ তদ্যাণ নিদ্ধানীতি তেপ্ত বিশ্বত কর্ত্বাদিলিত ত্র্যাঃ শক্তিছাতা বৈভ্রন্থেন্বত্যর্থং॥ ১৬॥

#### ক্রমসন্ধর্ড:।

চিন্ত্যশক্তিছেনেতি ভাবঃ। তত এব ত্রৈপ্তণ্যং শক্তিছেহপি তদম্পর্শ মাহ তদাশ্রম্মাদিতি তথৈব পালনলক্ষণান্তরন্থিতিবিসর্গ-লক্ষণাবাস্তরং জন্ম দৈনন্দিনাদি লক্ষণাবাস্তর সংবমা অপীত্যাহ॥ ১৬॥

#### ত্ৰী বিশ্বনাথচক্ৰবত।

র্ত্ত পার ব্যাহ বর ইতি। নমু লগৎস্ট্যাদি কর্তু: কুতোহনীহ্যাদিতি সন্তবেৎ তত্ত্বাহ দ্বনীশরে ব্রহ্মণি ন বিক্ষাতে দরি ব্রহ্মান্যথামূপপতৈ বেশর দেহপানীহ্যাদিকসভাপগম্যমের স্বন্ধণ দ্বাহাদিতি হঠোকেরিতার্থ:। নবেতেন বিরোধোনাপবার্তীতিত আহু ভদাপ্রন্থাদিতি প্রদৈঃ কুর্বান্তিদ্বি স্ট্যাদি কর্ত্বমূপচর্যতে গুণাপ্রন্থাৎ বথা ভৃত্যকুতং রাজনীত্যকঃ প্রক্রতে ছফ্কিন্তেপি বহির্দ্ধনে বং স্বন্ধণাভাবাদন্তর্বহিন্তব ভদ্পু ন যোগাভাব উপপাদিত:। বহা নমু বং প্রস্য চতুর্ভু লস্য মম কথং ব্রহ্মণং কথং বেশরম্বং সন্তবেদিতি চেৎ সভাং দং ন ব্রহ্ম নাপীশরঃ কিন্তু ব্রহ্মগোহি প্রতিষ্ঠাহমিতি দ্বহক্ষে রাদ্যোহ্বভারঃ পুরুষঃ পরস্যেতি ব্রহ্মাক্ষেক তরের রাক্ষান্ত ভ্রমান্ত ক্ষাপ্রন্থাৎ তরোব ক্ষেম্বরেরিস্যাপ্রন্থান্দ্র্যুক্ত ইতি প্রভু দাদি গুণনিবন্ধনোপচারাদাপ্রিত ধর্মান্তরাপি ধন্ত ইতি প্রত্তমেহিন্ত দেশ ইতি বন্ধনি ব্রহ্ম ক্ষাপ্রন্থ ভ্রমীভার্য:। উক্তিরিয়ং রস্মীত্যৈর ব্যহ্মণং। রনেনোহক্ষাতে ক্ষাপ্রশ্ব মেরা রস্মিতির বিভি বন্ধ তক্স বন্ধ ক্ষাপ্রঃ ক্ষাঞ্চন্তব্য স্ক্রণ্ডরাভার্যনিতি বঠোক্ষাঃ ৪১৬ ৪

আপনি ঈশ্বর এবং দাকাৰ কা, আপনাতে অকর্ত্ত্ব ও অবিকারিত্ব বিরুদ্ধ হইতে পারে না, গুণ দকল স্ক্রাদি করে আপনি তাহাদের আপ্রয় বলিয়া আপনাতে স্ক্রাদি কর্তৃত্ব আরোপিত হয়, যেমন ভুক্তাক্ত কার্য্য রাজাতে আরোপ করা দিয়া থাকে ॥ ১৬ ॥ দ হং ত্রিলোকস্থিতয়ে স্বমায়য়া বিভর্ষি শুক্লং থলু বর্ণমান্সনাঃ।
দর্গায় রক্তং রজদোপরংহিতং কৃষ্ণঞ্চ বর্ণং তমদা জনাত্যয়ে॥ ১৭॥
হুমসূত লোকস্থ বিভো রিরন্দিষ্ গৃহিহ্হকতীর্ণোহিদি ম্মাথিলেশর।

# श्रीश्रवकामी।

এবং ভূতদ্যৈৰ তৰ যথা বিশ্ব স্থিতি সৰ্গ লয়াৰ্থং ত্ৰিৰণা গুণাৰতারাঃ এবং ভূভারাপনরনার্থমিতি জ্ঞাতমিত্যাহ স স্বমতি লোক-প্রেন ॥ ১৭ ॥

রকিত্মিচ্রবতীর্ণোহসি ক্লেন বর্ণেন মতঃ সাধ্নাং সংরক্ষণার্থং রাজন্তসংজ্ঞা 'ষেহস্থরকোটি ব্রপাইর নির্ভিমানাঃ ইত-

# देवश्चवरजावनी।

নকু কথং মন্তোহন্ত সর্বাং স্ট্রাদিকং ত্রন্ধাদীনামণি সর্বাদি কর্ত্ক্ষাদিত্যত আহ স ছমিতি স উক্তাবিরোধপ্রকারেণ স্ট্রাদিকারকৃষ্ণ শুক্রং শুক্রং শ্বন্তো মায়াগুণরাহিত্যাৎ সারিধ্যেনাপি সর্বান্ত্রোপকারকৃষ্ণ শুদ্ধমিতার্থং তাদৃশ্মাদ্ধনঃ স্বত্বৈ বর্ণং রূপং শ্রীবিষ্ণুঃ সন্ বিভর্ষি প্রাণি প্রকৃষ্ণি পর্যান তথা তরেমায়ন্ত্রন রূঞ্চং ত্রে হেতুং স্বমায়য়া নিজরুপয়া তথা রক্তং রন্ধোময়ন্ত্রন সিম্কাদিরাগবছলং ব্রদ্ধায়া সন্ বিভর্ষি প্রাণি তথা ত্রোমায়ন্ত্রন রূঞ্চং কোধাদি প্রায়ত্রা নাভিব্যঞ্জিত স্করণ প্রকাশমিতার্থং তারু ক্রন্ধান্ত্রা সন্ বিভর্ষীতি অত্র চাক্ষ্বে গুণে ন তাৎপর্যাং পর্য তামসানাং বকাদীনামণি শুরুরবর্গান পর্যাসগুকাদীনামণি শ্রামবর্ণপ্রাই তামসানাধি শ্রামবর্ণপ্রাই প্রান্ধানি শ্রামবর্ণপ্রাই প্রায়মবর্ণপ্রেনির প্রান্ধানি শ্রামবর্ণপ্রাই গুণামবর্ণপ্রেনির প্রান্ধানি শ্রামবর্ণপ্রাই ক্রিমেলার নানাবর্ণা অপি বলা সংগারপারা এব। অত্যে বন্ধানার ক্রের্বর্ণপ্রেই ক্রন্ত্রের ক্রাম্বাই ক্রিমিল্র নিগুলি রূপ্ত সামানার ক্রিমিল্র ক্রিমিল্র ক্রিমিল্র নামবর্ণ প্রায়ম্ব বন্ধান্তর নামবর্ণ প্রকৃষ্ণ প্রকৃষ্ণ প্রক্রাই ক্রিমিল্র নামবর্ণ প্রক্রিকার ক্রিমানার ক্রিমিল্র নামবর্ণ ক্রিমেলার ক্রিমিল্র ক্রিমিল্র নামবার ক্রিমিল্র ক্রিমানার ক্রিমিল্র নামবার ক্রিমানার ক্রিমিল্র ক্রিমানার ক্রিমানার ক্রিমানার ক্রিমানার ক্রিমানার ক্রিমানার ক্রিমানার ক্রিমানার ক্রিমিল্র ক্রিমানার ক্রেমানার ক্রিমানার ক্র

অধুনাতু লোকহিতার্থং স্বর্মেব মংপ্লতাং প্রাপ্তোহিদি অহো লোকভাগ্যং কিমুত মন্তাগ্যং ইত্যাহ স্বমিতি অদ্য বিবিধ ছঃথসা-

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

স অং স তথা ভূত এব অং। আত্র লোকে বৃত্তকা এব মুখ্যা ই তি মুখ্যং তং পালনমেব প্রান্তে লাবং। তদেবাহ স্থ মাষ্যা স্থেষ্ ভক্তেব্ কপ্যা। ভক্তকপাত্র প্রবিষ্ঠিকা পূর্ববিচিন্তা শক্তিম্ভ হুর্ঘট ঘটনীতি জ্ঞেরং ভক্তেব স্থানোহিপি ভক্তেনোকং উত্তরত্র রক্ত্যেত্যাদিবং। সম্বেন ত্যক্ত হাং। ন তত্তম্বর্ণ: কিন্তু তদধিষ্ঠানক এবেত্যর্থ:। আয়ান: শ্রীবিষ্ণুরূপস্য তথৈবাধু-নাপি ইত্যুপ সংহরতি॥ ১৭॥

অমুদ্যতি মুম ব্রদেককাম্বাৎ কার্যাগৃহ রূপেছপি গৃহে দারের বা বিভো সর্বাত্ত সর্বাংশেন স্থিতঃ। হে অধিলেখন সর্বোহাং

# জীবিশনাথচক্রবর্তী।

নমু ব্ৰহ্মাদিভ্যোহপাস্য স্ষ্ট্যাদি প্ৰসিদ্ধং কথং কৰ ইতি ব্ৰবে সতাং ব্ৰহ্মাদ্যোহ পি তবৈৰ ৰূপাণীভ্যাহঃ স প্ৰসিদ্ধ কমেৰ ক্ষমায়য় ক্ৰমণেবৈৰ শুক্লং শুদ্ধমিত্যৰ্থঃ। ক্ষাংপালক্ষ্য বিক্ষোঃ শ্যামবৰ্গছাং। ক্ষনাত্যৰে ক্ষনসংহাৱাৰেত্যৰ্থঃ। ক্ষন বৰুপোপবৃহিতং ব্ৰক্ষমিতি বং জনগোপবৃহিতং ক্ষামিতিবুৎ সংখনোপবৃংহিতং শুক্ষমিতাফুকে ব্ৰক্ষম্বাে ব্ৰহ্মানাৰ ইব বিক্ষোন্ধ সংখন বৈশিলঃ। সৰ্স্যাবৰণ বিক্ষেপাভাবাদোনাসীন্যৰূপত্মেন শুদ্ধসভ্যে প্ৰমেশবে সাদ্ধিখ্যমাত্ৰং নতু স্পৰ্শঃ। ক্ষত্ৰবাক্তং ত্ৰিদে ব্ৰিশ্বীক্ষায়াং হরিছি নিশ্বণঃ সাক্ষাদিতি সন্থাদ্যাে ন সন্থাশ ইতি সাক্ষী চেতাঃ কেবলাে নিশ্বণিশ্বতি শ্বতিশ্ব। ২৭॥

ভোঞ্জাত সতাং স্বরাহং বিদিত্তৰ একামি স্বলগৃহে কিমর্থমবাতর্মিত্যপি কানাসি চেং জাই ইত্যত স্বাহ স্বমিতি ৷ স্বস্য

প্রভা ৷ আপনি উক্ত রূপ হইয়াও ত্রিলোকীর পালনার্থ স্বীয় মায়া বারা শুক্ত বর্ণ ধারণ করেন, স্পত্তি নিমিত্ত রাজোগুণান্বিত রক্ত বর্ণ গ্রহণ করেন, অপর প্রলয় সময়ে তমোগুণ বারা কৃষ্ণবর্ণ স্বীকার করিয়া থাকেন ॥ ১৭ ॥

८६ विथित्यत । ८६ विट्छा । वाशिन अहे भगेख लाएकत तका हैन्द्रा कतिता वामात वाशित

রাজন্তসংজ্ঞাহত্রকোটি যুগপৈ নির্ত্রমানা নিহনিষ্যে চমু: ॥ ১৮ ॥
আয়ন্ত্রসভান্তব জন্মনো গৃহে অফ্রাএজাংন্তে হভাহনৎ হ্রেশ্বর ।
স তেহবতারং পুরুষেঃ সমর্পিতং অফ্রাধুনৈবাভিসরত্যদায়্ধঃ ॥ ১৯ ॥
প্রীশুক উবাচ ॥

#### क्रिथतवामी।

श्रुष्ठ कानामानाः हम्ः निरुनियारम সংहतियामि ॥ >৮ ॥

কিন্তু তথাপ্যপ্রমত্তেন দ্বনা ভাষামিত্যাহ স্বয়ন্তিতি। অসভ্যঃ থলঃ সমর্পিতং কথিতং ॥ ১৯ ॥

# देवकवरजायगी।

গর মগ্প্য যাদবাদি ভক্তজন প্রবানস্য সর্বলোকস্য বিরক্ষির্ স্থপাংস্থপো ভবন্তীতি দিতীয়ায়াঃ বঞ্চী তং রক্ষিত্মিচ্ছ্রিত্যর্থঃ হে বিভোহ্যিলেশ্বরেতি অবতারাসম্ভবং ল্যাতয়তি তথাপ্যবতীর্ণোহিদি তথাপি মম গৃহে মং সম্বন্ধমাতয়ুক্তে কারাগৃহেহপি অহো প্রম কার্লামহিদেতি ভাবঃ। তত্মাং ক্রিরচ্ছ্রাস্থ্রচক্রবর্তির্দে নিঃশেবেণ বিশেবেণ চোহ্যমানাশ্চাল্যমানা যাশ্চম ভাঃ পুনরাব্রাভাবেন নিতরাং হনিষ্যদ এব তদগ্রতঃ তাসাং হননেন তেবাং হননভাপি স্থাচ্ প্রাপ্তে তংসহিত্তনন্মের বিবক্ষিতং। যথা
নির্ভিমান নির্গালাং সিদ্ধা ইতার্থঃ দীর্ঘপাঠয় তেষামসম্বতঃ নিঃশেবেণ ব্যহং কার্যমাণবাহুছেনে রচ্যমানা ইতার্থঃ॥ ১৮॥

অন্তমিতাত্র তেবামাভাবে কিন্তিতি পিতৃত্নেহম্তৃত্যা দ্বিং নিবেদন্মীত্যুৰ্থ: তদেবাহ তথাপীতি যবা তেবাং মধ্যে মহাছ্ট্রাং দ্বিনানাং ন: পরম হ্যুবাং অন্যাপি ধৃষ্টতবৈধ ভাবিদ্বাচনায়নেৰ প্রথমণ প্রতিকার্য্য ইত্যাহ অভ্যহনং অভ্যহন্ শিলানাং পেৰনামান ন্যবধীদিতি পাঠস্ত সার্ক্তিক স্থৈ: সন্মত চ সিক্তেনাসমাহিত্যাং অভিসরত্যাগচ্চনেৰ বর্ততে হে স্থ্যেন্তে তচ্চ দ্বক্তদেব বৈরিণামস্থ্যাণ্যুক্তমেবেতি ভাবঃ ॥ ১৯ ॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

কাষমনোবাগতীতাচিস্তানস্থাকে ততোভক ক্লপা প্রবর্ত্তিয়া মচিস্তাশক্তা তবাবয়োঃ প্রবেশেঃহলি ঘটতে ভবৰদীক্তঃ প্রভাবে। হলীতি ভাবঃ। ন বিদ্যুকে ইত্যাস্য ক্লপব্যাখ্যায়ামলি সন্ধৃমিত্যাদি বরং॥ ১৮॥

অব্যুত্তমপি নিবেদয়ন্ তথাপ্যয়ন্ত শীল্পমেব প্রতিকার্য্য ইত্যভিপ্রৈতি। অয়ন্তিতি। অথেতি আনস্তর্য্যে যোগনিক্রয়া তাবদাহে-ক্রিয়াবরণাৎ অন্তর্বেমস্তঃ কিঞ্চিজ্ঞাতমিতি ভানাং॥ ১৯॥

#### এ বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

লোকস্য ইমং লোকং অতঃ বাধুনাং রক্ষণার্থং রাজনাসংজ্ঞা যেহস্বকোটিযুগপারৈজনির্ভ্যানাঃ ইতত্ততভাল্যমানাশ্চম্ং সেনাঃ ॥ ১৮ ॥

শত বংক্পরা তব সর্বনৈখব্যনহং জানান্যেৰ তৰপাবিবেক্সমূলে। মরা ছত্তর এবঁ যতঃ সাম্প্রতিক্স্য নহাত্ত কংস্স্য দৌরাঝ্যং বাং জ্ঞাপরামীত্যাহ। অর্ভিতি। নতু মনৈত্বলৌকিক রূপনাব্ব্যাঝাদনিন্দাে মাং ন প্রহিষ্টি প্রত্যুত প্রীণরিব্যাভিতি তথাহ অসভ্যঃ রসাঝাদ হেত্হি সভাজনেবেতি ভাবঃ। হিংসায়াং কৈন্ত্যমাহ তবেত্যানি। সম্পিতং ক্থিতং অভিস্থিনেব স্প্রেম্ব সর্ভীতি ত্মাগতপ্রার্মহং প্রামীভ্যতোহ্ধুনৈব রুপমিদমূপসংহর। ত্মিরাগতেত্পসংক্ষিভিতঃ পূর্বং কিং ভ্রিম্যভীতি মে মহাক্ষ্প ইতি ভাবঃ॥ ১৯॥

কৃষ্ণবর্ণ হইয়া অবতীর্ণ ইইলেন, অতএব রাজম্মনামক কোটি ২ অহার যুথপতির সহিত যে সকল সেনা ইতস্ততঃ পরিচালিত হইতেছে সাধু জনের রক্ষণার্থ আপনি ভাহাদিগকে বধ করিবেন সন্দেহ

তথাপি আপনি সাবধান ইইবেন, কারণ এই খল কংস আমাদের সৃত্তে আপনকার জন্ম ইইবে ইহা শুনিয়া আপনকার অগ্রন্তানিক নিহন্ত করিয়াছে। হে হ্রেখর। ঐ ছুরাত্মীর ভূত্যেরা আপন-কার অবভার কথা বুলিয়া আসিল, সে শুনিয়া এখনি অন্ত্র উন্তন্ত করিয়া আসিতেছে॥ ১৯ ॥ অধৈননাত্মজং বীক্ষ্য নহাপুরুষ লক্ষণং। দেবকী তমুপাধাবং কংসাদ্ভীতা স্থবিশ্মিতা॥ ২০॥ জ্ঞীদেবকুয়বাচ॥

রূপং যত্তৎ প্রান্থরব্যক্তমাদ্যং ব্রহ্মজ্যোতি নিশু শং নির্বিকারং।

# अध्यक्षामी।

উপাধাবং অস্তৌং॥ २० ॥

ছিল ভাগন্ধা তাবদ্বান্তীতি শ্লোকচত্ইয়েনাই দেবকী কিঞ্চিৎ বিজ্ঞাপয়িত্বং রূপমিতি যন্তৎ কিমপি রূপং বন্ধ প্রান্ত বেদা কিং তবস্ত তদাই অব্যক্তং তত্র হেত্বং আদ্যং কারণং কিং পরমাণবং ন ব্রহ্ম বৃহৎ কিং প্রধানং ন জ্যোতিশ্চেতনং কিং বৈশেষিকাণামিব জ্ঞানগুণং ন নিপ্ত গং কিং মীমাংসকানামিব জ্ঞানপরিণামি ন নির্বিকারং কিং ভাস্করীরাদীনামিব শক্তিবিক্ষেপেণ পরিণামি ন সন্তামাত্রং তর্ধি কিং সামান্যং ন নির্বিশেষং তর্ধি কিং কারণহাৎ সক্রিয়ং ন নিরীহং সন্নিধিমাত্রেণ কারণং। এবং ভূতং কিমপি

# বৈষ্ণবতোষণী।

অধ শ্রীবস্থানে স্তবানস্তরং তমেনমিত্যেরঃ তং চিরমপেক্ষিতং এনং দিব্যর্মপেণাবিভূ তিমিত্যথঃ আত্মকং নিজ্ঞাদরাদেব জাত-জেন ভাতং তাদৃশভানোংপাদনক মমতাবিশেষজননার্থং অতএব মম গর্জনাহভূদিত্যাত্মকিঃ কিছ প্রস্তিরীত্যস্করণান্তদেগাপ-নার পূর্বং যোগনিজ্ঞা বা ভগবত্তেজ্সা বা বাহেজিয়াবরণমপি কৃতং অতএবাত্মেত্যুক্তং। মহাপুক্ষ স্বঃ ভগবান্ ত্তাত্মজন্দর্শনং ভয়ে হেতুং মহাপুক্ষত্ব দর্শনং বিশ্বরে হেতুং ভোত্রে চেতি জ্ঞেয়ং তথাপি ভয়্সতিরাত্মজত্ব দর্শনময়স্য স্বেহস্য প্রাবল্যং দর্শয়তি ॥২০

রূপমিতি তৈ ব্যাখ্যাতং তত্রাব্যক্তং সর্বাগোচরং নহু বস্তুচ সর্বাগোচরং ন সম্ভবতি তত্রাহ কারণং সর্ব্ধ কারণং কার্যান্যথাহ্পপ্রতাব গমাং ইতার্থ:। নহু মেরারচিবাগ্নিঃ প্রকাশ্ভ দহতে বা স ইতি ভাবং। নহু পরমাণু সম্দরে থলু ব্যক্তবং কারণঘঞ্চ বিদ্যুত ইতি তত্রাভিব্যাপ্তঃ দ্যাদিত্যাশহতে কিং পরমাণ্ ইতি পরিহরতি নেতি তেবাং বায়াদি পরমাণুনাং পরস্পরমিপ ব্যার্ত্তে র্ব বৃহ্ত্রমঘ্মিতার্থঃ। তর্হি তত্তব্দম্পরে প্রধানেহতিব্যাপ্তিরিত্যাহ কিমিতি পরিহারেত্ স্বতঃপ্রকাশমানবাং। ক্যোতিঃ শব্দেন চেতন মূচ্যতে প্রধানস্য ক্ষড়াং তং প্রকাশ্যঘিতি ভাবঃ ক্যোতিশ্চরণাভিধানাদিতি ভারাং। নহু চেতোক্সানস্য বোগাং চেতনমূচ্যতে তর্হি তথা বৈশেষিকাণামান্ধন: স্বতো ক্রড়াঃ কিন্তু ক্রান গুণ যোগাদেব চেতনা ইতি মতং তথা কিন্তুরামিপি তদ্বস্থ ইত্যাশহতে কিং বৈশেষিকীতি। তথৈব ত্রাশহান্তরং কিং মীমাংসকানামিব ইতি। অথ ভাহরীয়া বদুন্ধণ এব শক্তি রুত্বিক্রেপণ জ্ঞানক্রিয়াদি রূপত্রা পরিণামং মন্যন্তে তদপ্যাশহাতে কিং ভাররীত্যাদিনা তং পরিহরতি ন সন্তামাত্রমিতি। স্কুব্দেনাত্র বন্ধেবোচ্যতে তদ্য তু প্রবৃত্তিনিমিতং সত্তা ত্র্মাত্রমিত্যবিক্রতমেব তদিতার্থঃ। তত্ব সোৎপ্রাসমান্ধিপতি তহীতি সা খনু

#### ক্রমস<del>ন্দর্ভঃ</del>।

আথেত্যুক্তমাত্মজমিতি চ তত্তাবনঞ্চ মমতাবিশেবজননার জীবদার্ত নিজ্ঞমণস্য সর্জাংশানলীকারাৎ তৎসলোপনার জ্ঞেরং॥ ২০॥ রূপং বিশেষতশ্চায়মর্থ:। নমু সারাংশ বিবেকে সতি জগদপি ব্রহ্মত্বেনোপলভ্যেত। তহি কেন বিশেষস্ত্রতাহ। সাক্ষাদিতি মারা নাহতত্বেনেত্যর্থ:। তত্মাদিদং ব্যক্তবং যাড়্ভণ্যং কুপাবিকারিত্ব:। আল প্রত্যক্ষ বিশেষত্বং কর চরণাদি চেটা সৌঠবমপি

# **अ**विश्वनाथहक्कवर्शी।

অথ পভাৰ্ত্যং দৃষ্ট্ উপ সমীপং ভীতেতি অৱপ মহুপসংহরতঃ অয়মানং তমালক্ষ্য পর্মেশরত্বাহতারেণ কংসময়ং ন গুণয়তি গুলহং হস্ত কিং করোমীতাতিবিহ্বলেতার্থ:। স্থবিত্মিতেতাক পর্মেশরক্তারো কংসঃ থলু কো বরাকত্তদপাবয়োর্ভয়ং বর্দ্ধত এবেতি কোয়মবিবেকো হস্তর ইতি ভাবঃ॥ ২ ।

কিঞ্চ ভঞ্জাঃ ধলু স্বত্যা ভগ্বেন্তমণি বলীকুর্বস্তীতি প্রাসিদ্ধেরেনং মহাহঠিনং স্তত্যেব বলীকুতা স্ববচনে স্থাপরামীতি মনসি বিমৃণ্য ভোঃ পরমেশ্বর আবরোঃ প্রতিক্ষণমেবাডিভরে বর্ত্মানেছপি তব ভরশবৈব নাস্তীত্যাহ চতুর্জিঃ। রূপমিতি ফাবস্য তব তৎপ্রসিদ্ধ

শুক্ষেৰ কহিলেন রাজন্। তদনস্তর কংসভীতা দেবকী সেই সন্তানটীকে মহাপুরুষ সক্ষণান্তিত দেখিয়া বিশ্বিত চিত্তে স্তব করিতে লাগিলেন॥ ২০॥

দেবকী কহিলেন ভগবন্! বেদ সকল বাঁছাকে অনিক্রিদীয় কার্য্যকর যে বস্তু বলিয়া বর্ণন করেন অর্থাৎ যাহাকে নিরীহ (সমিধি মাত্রে কারণ) নির্বিশেষ, সন্তামাত্র, নির্বিশার, নিন্তুণ,

# मलामाजः निर्वित्भवः निर्वी**रः म पः माक्ताविकृतशाष्ट्रमीशः ॥ २**> ॥

# धिवत्रयामी।

কাৰ্য্যকল্প: যহন্ত সএব সাক্ষাৎ সং বিক্ৰিতি অপলোক্ষণেত্যাহ সংগাদ্দীপ ইতি বৃদ্যাদিকরণ সংবাত প্রকাশক ইতার্থ:। অথবা অব্যক্তং ন কেনাপি প্রকারেণ ব্যক্তাত ইতি অব্যক্তং কথমুৎপত্ত্যা ভাবন ব্যক্তাত ইত্যাহ আদ্যং সর্বাত্ত কার্য্যস্য আদ্যমনাদীতার্থ: তথা ব্রহ্মক্যোতির্নিপ্রণং নির্মিকারং ইতি চতুর্জিঃ পদেঃ দেশেন প্রকাশেনচ গুণেনচ বিকারেণচ ব্যক্তিং নিরাকরোতি। তথা সভা-

### বৈঞ্চবতোৰণী।

সামান্যং তক্ক পদ্মা আভি দ্বেৰোচ্যতে সাচ পূর্ব্বোক্তাব্যক্তাদি রূপা নভবহীতি হতিলানমিব সর্ব্বং লাতবিতি ভাবঃ। তত্র সিদ্ধান্তর ন নির্ব্বিশেষমিতি সামান্যং পদু বিশেবেদ্বর্গতমেব স্যাৎ তত্তু বিশেষাৎ পূর্বস্থুত্তরমণি বর্ত্তমানং ন সামান্যাকারমিত্যর্থং। তত তথ প্রকাশক্ষাৎ তলাচক শব্দ্যাণি প্রবৃত্তি নিমিন্তং যা চিৎ সৈব সন্বোচ্যত ইত্যর্থং। চেতনম্বন্ধ স্বর্বপ্রকাশিদ্বনেক্তমিতি ভাবঃ। তদেবং সামঞ্জন্যে প্রন্নাশক্ষতে তহাঁতি সক্রিং সন্ধোভমিত্যর্থঃ এবং নিরীহমিত্যাদ্যাণি সৃদ্ধিন মারেণেতি স্বরূপভূতাচিত্ত্য শক্ষৈবেত্যর্থঃ। নহু সারাংস বিবেকে সতি জগদণি ব্রহ্মবেনাপদভ্যেত তহিঁ কেন বিশেবজ্ঞাহ সাক্ষাদিতি মারানায়ত্তবেন্ত্যর্থঃ তমাদিদং ব্যক্তব্যং বাঞ্চা গাং রুপাদি বিকারিত্বং অক্সপ্রতাদ্বিশেষকত্বং করচবণাদি সৌর্ব্বমণি স্বরূপ ধর্ম বৈক্তবমেব জ্ঞীরানায়লাদি মতাহুসারেণ তৎ স্বরূপভূত সধর্মত হাগনাভূ প্রতাগ্রহালি মতাহুসারেণ তৎ স্বরূপভূত সধর্মত হাগনাভূ প্রতাগ্রহালি মতাহুসারেণ তৎ স্বরূপভূত সমর্ম্বত হাগনাভূ প্রতাগর্মত কর্মবা নিরানেন জ্ঞানিনঃ প্রতি প্রকাশনাব্য তম্বত্তমাদি কর্মবাহালি বিশ্বনিক্রাক্ত বিশ্বনাধ্য কর্মবাহালি প্রাক্তমানিক স্বর্বাদিক করেও। অনুই দোর্বাহা বিশ্বনহন্ম প্রতাগর্মিক করেও। ত্রাক্রিক্রাক্তি প্রকাশনাব্য তম্বত্তমাদি বিদ্যান্ত্রকর্মা নিরাক্রেক্তাত্তি প্রেত্তা স্বর্মাণ নিরাকরেলিত। তত্র ক্রমাহিত্যং সাক্ষাদিত্যনেন্দ নিরাকরেলিও। তত্তমিক্র স্বর্বাদিক ইত্যর্থঃ। নচাত্ত নবিহ বঁত্ত ইত্যাদি বচনর্ব্যাং শ্রাদিক্রেক্তন বিশ্বনাধ্য করিলিও স্বর্তা স্বর্বাদিক করেবাহিত অনুমূত্তাম্বাক্র বুদ্ধানিক্রেক্র প্রতাগ্রহাক বুদ্ধানিক্রেক্র প্রতাগ্রহাক বুদ্ধানিক্রিক্র স্বর্তানানাক্রিক্র বন্ধ প্রতাগ্রহান ত্রেক্রানাক্র স্বর্তানানাক্র স্বান্তানেন্দ ত্রের্বার্বার্য হালিক করেব ব্যক্তবার স্বাদিক্র স্বর্বানাক্র স্বর্তানানিত নিক্র ব্যক্তরাদিক্তি নিক্র বিশ্বাহার স্বর্বানিক্র বন্ধ বন্ধ প্রতির্বাহন করিলিকির বন্ধ করিক্র বিত্তমান তারত্বযাদিকির দিক্র। বন্ধানিতির বন্ধ ক্রপন্তির বন্ধ করিক্রীরং বন্ধ প্রতির হাল তারত্বযাদিকির দিক্র। বন্ধানিক্রিক্র বন্ধ বন্ধ প্রতাহন বন্ধানিক্র বন্ধ বন্ধ প্রতাহন বন্ধানিক্র বন্ধ বন্ধ প্রতাহন বন্ধ বিলিক্র বালিক বিল্বানিক বন্ধ ক্রমানিক্র বিলিক্র বিলিক্র বিলিক্র বিলিক্র স্বর্বানিক্র বিলিক্র স্বর্বানিক্র বিলিক্র বিলিক্র স্বর্বানিক্র বিলিক্র বিলিক্র বিলিক্র বিলিক

### ক্রমসন্ধর্ত:।

শ্বরূপ ধর্মবৈভবমেব। অত: সন্থানাত্রং কেবলধর্মর রগং জ্যোতিঃ স্বপ্রকাশতৈতন্যং। ত্রক্ষ সর্কতোহিপি বৃহৎ। আদ্যং ক্ষর্মবিতং দৃষ্ট দোব প্রাকৃত তত্ত্বর্ম্ম নিরাসেন। জ্ঞানিনঃ প্রতি প্রকাশনানং তবন্ধ দক্ষপং শ্রীবিগ্রহং প্রাহঃ স তদ্ধপ এব জ্বান্। ন চৈতদিপ। তদ্ধোবাহ হৈ ভবেৎ অদৃষ্টদোবদাং বিহ্বদক্ষভবার্যঃ শাল্পে নিরাক্তথাক্ষেত্যভিপ্রেত্য স্বয়মপি নিরাক্রোতি। জন্মরাহিত্যং সাক্ষাদিত্যনেতনৰ নিরাক্রোৎ। তত্ত্বিজ্ঞ পরিচ্ছদ্বতা স্বস্ক্রপেটেণ্ব প্রাক্ট্যাৎ। পরিচ্ছিদ্বতং নিরাক্রোতি বিশ্বুরিতি ব্যাপকম্রিরিত্যর্থ:। ব্যক্তবং অধ্যাত্ম দীপ ইতি প্রত্যতাত্মাকং বৃদ্ধাদিক্ষেবেদং প্রকাশরতে। তত্তা ক্রম্বৎ স্বয়মেব প্রকাশতে। ততশ্চ

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

রূপমাকারং নারারণ রাঘব হয়-ঀয়াদিকং অব্যক্তং সর্কেলিয়াগোচরং আদ্যং আলন্যং প্রাহর্বেদাঃ। তথা নির্ক্ত পি নির্বিকারং বন্ধ বির্বার্থিক বির্বারণ বন্ধ বির্বারণ বন্ধ বির্বারণ বন্ধ বির্বারণ বন্ধ বির্বারণ বিভাগি করে বিভাগি করে বিভাগি বির্বারণ বন্ধ বির্বারণ বির্বারণ

জ্যোতিঃ বর্গ, রহৎ, আদ্য অর্থাৎ মূল কারণ বলিয়া থাকেন সাপনি সেই বস্তু, সাক্ষাৎ বিষ্ণু; অধ্যা-

নকে লোকে ৰিপরার্দ্ধাবদানে মহাস্থতেয়াদিস্তং গতের।
ব্যক্তেহব্যক্তং কালবেপেন যাতে ভবানেকঃ শিষ্যতেহশেষসংজ্ঞঃ ॥ ২২ ॥
যোহয়ং কালক্তম্ম তেহব্যক্তৰকো চেক্টামাছ শেষ্টতে যেন বিশং।

# **अध्यक्षामी**

মাত্রমিতি বিশেবেণ নির্কিশেষমিতি সামাজেন নিরীহমিতি জিল্লনাচ ব্যক্তিং নিরাকরোতি অন্তং সমানং এবভূতস্য তব ন তর্ত্ত শক্তেত ভাবঃ॥ ২১॥

কিঞ্চ মহাপ্রালরেহপ্যবশিব্যমাণস্য কুতোভরমিত্যাহ নঙে লোক ইতি। চরাচরে লোকে মহাভূতেরু সীনেদ্রপি আদিভূতং ভূত-পক্ষং প্রবিষ্টেবু তমিন্নপি ব্যক্তেহব্যক্তং প্রধানং প্রাপ্তে অশেবাদ্ধকে প্রধানে সংজ্ঞ। প্রজ্ঞা যস্য এবং ময়ি সীনমিদমন্তি পশ্চাদেব-মুদ্বোধনীরমিতি সং অশেবসংক্ষঃ শেবসংক্ষ ইতি বা॥ ২২॥

কিক এবং প্রান্তর কের্বাহরং কালঃ এবং হে অব্যক্তবদ্ধো প্রকৃতিপ্রবর্ত্তক তস্য প্রান্যাবিধভূতস্য তে তব চেটাং লীলাং

## বৈষ্ণবতোষণী।

আবাজনিত্যাদিনা নিশুণাদিখং প্রাক্কত শুণাদি রহিতখং। এবং পর ত্রহ্মত্বমুক্তং সএব ডং বিষ্ণুঃ নিজৈখর্ব্যেণ সর্বব্যাপক ইতি পরমেশর্মাং। অধ্যাম্মদীপ ইতি পরমাত্মহং। অক্তৎ সমানং ॥ ২১ ॥

কালবেগেনেতি সর্কবৈত্রৰ হেড়া। এক ইতি বৈকুঠাদীনামপি তদভেদাভিপ্রায়েণ। যথা অশেষা যে তদানীং বৈকুঠাদর তত্তৎ পদার্থাভিধা তেপি সংজ্ঞা যক্ত তত্তজ্ঞপেণাপি বা অয়মেবেত্যর্থা। যথা শিষ্যক্তে মহা প্রালয়েহপি তিঠন্তীত প্রীবৈঞ্বমতে যথেষ্ট বিনিরোগার্হং শেষ শব্দেন কথাতে ইতি বা শেষাঃ প্রীবৈক্তিলোক পরিচ্ছেদ পরিবারাদরঃ তেহপি সংজ্ঞারত্তে যেন যদপু ছংগেনৈর তে পৃহীতা ভবজীতার্থা। এবং ভূতো ভবানেকঃ শিষ্যতে নম্বর্গতে তব জীবর্ষপ্রপঞ্চ ইত্যর্থা। তথৈব ভূতীয়ে প্রীবিহর প্রশ্নাং তথানাং তগৰং তেবাং কতিথা প্রতিসংক্রমা। তত্ত্বমং ক উপাদীরন্ ক উবিদম্পেরত ইতি এবমেব কৈমুত্যেন বক্ষাতে মর্ব্যোন্যন্ত্রানাকীতঃ প্রায়ন ইত্যাদি॥ ২২॥

কালবেপেনেত্যক্রা প্রাপ্তং কালভ বাভদ্রাং নিরভঙ্কী ভতঃ স্থতরাং তভ্ত ভর্মাত্রং নিরাক্র্রতী প্রমণি কংদাদিভয়াচ্ছ্রণং

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

কেনাপি ব্যশ্বিত ইতি। শব্দলেবেণ চ আত্মানমধিকৃত্য বর্ত্তমানা অধ্যায়ান আত্মারামা: তানপি দীপদ্দি পরমানন্দেনোলাস্থ সীতি ব্রহ্মতোহপি পরমাবির্ভাবত্বং দর্শিতং সাক্ষাদিত্যনেনচ তথৈব ব্যশ্বিতং। কুটাকুটত্বেন তারতম্যাদিতি দিকু॥ ২১৷২২৷২৩৷২৪৷৷

# এবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

নিরীহং। কিয়া নিংশেবেণ হয়তি স্বমভিলাবয়তীতি নিরীহং স্তৃহেহা ঈত্ডু বাঞ্ত্যেনর:। সৃত্তং বিঞুরধ্যাত্মদীপ: সর্ব তত্তপ্রকাশক ইতাবিজ্ঞায়া অপি মম মনসি বধা ক্লোরয়সি তথাহং বঢ়ীতি ভাব: ॥ ২১ ॥

কিঞ্চ মহাপ্রকারেহপাবশিব্যমাণসাঁ তব কুতোভয়মিত্যাহ নটে চরাচরে লোকে মহাভূতেরু লীনে সতি তেৰপ্যাদিভূতমহ্মারং গতেরু সংস্থ তিমিলপাহ্মারে বাজে ব্যক্তঃ। প্রবিটে সতি তম্মিলপি ব্যক্তে মহস্তবেহব্যক্তং প্রধানং প্রাপ্তে সতি একে। ভবানেব শিব্যতেহবশিটো তবতীতি পুর্বলোকোক লক্ষণং ভবত একজৈব রূপং জ্যোতিঃ সন্তামাত্রঞ্চ শিব্যত ইতি সপরিবার স্থান পরিছিদেশ্যের তস্য নিত্যমাত্রক। অভঃ শেবসংজ্ঞঃ শেব নামা শিব্যত ইতি ব্যুৎপত্তা ভবান শেব উচ্যত ইত্যর্থঃ ॥ হৃষ্ট্ ক্রি

কালবেগেনেত্যক্তা প্রাথং কালুসুমণি স্থাত্তাং বারমন্তী সর্ব ভীষণাৎ কালাদিশি বত্তয়ং নাতি তত্ত্ব হৈতুমাই। বোইয়ং সর্ব স্থানিপ, অর্থাৎ বুদ্ধ্যাদি কারণ সমূহের প্রকাশক। অতএব আপনকার ভয় আশকা নাই॥ ২১॥

প্রতো! বিপরার্দ্ধ কালের অবসানে চরাচর লোক বিন্দু হয়, সে সময় পৃথিব্যাদি মহাভূত আদি ভূতে অর্থাৎ সূক্ষভূতে বিলয় পায়, পরে ব্যক্ত•সেই আদিভূত কাল বশতঃ অব্যক্ত অর্থাৎ প্রধানকে প্রাপ্ত হইলে এক আপনিই অবশিষ্ট থাকেন। সে সময় অশেষাত্মক প্রধানে আপনকার প্রজ্ঞা হয় অর্থাৎ আমাতেই এই সমস্ত বিলীন আছে এইরূপ বোধ করেন॥ ২২॥

অণিচ হে প্রকৃতিপ্রবর্ত্তক ভগবন্। নিমেধাদি বৎসর পর্যান্ত বিপরান্ধ রূপ এই কাল, বাহাতে

নিমেষাদির্বাৎসরাস্তো মহীয়াং শুরেশানং ক্ষেমধাম প্রপদ্যে ॥ ২৩ ॥ মর্ত্যো মৃত্যুব্যালভীতঃ পলারন্ লোকান্ সর্বান্ নির্ভয়ং নাধ্যগচ্ছৎ। ছৎপাদারকং প্রাপ্য যদৃচ্ছরাদ্য স্কৃষ্ণঃ শেতে মৃত্যুরস্মাদপৈতি ॥ ২৪ ॥ স ছং ঘোরাত্রগ্রেশান্ত্রাম স্ক্রাহ্য ব্রেশ্তান্ ভূত্যবিক্রাসহাসি।

## विवत्रयांगी।

বিপরিবর্ত্ততে পুন: পুনর্বংসরার্ত্তা মহীয়ান্ বিপরার্ক্তরণ: বস্য চেষ্টামাত্ত তং ছাং ক্ষেমধাম অভরস্থানং প্রপদ্যে শরণং ত্রজে ॥ ২৩॥ ক্ষেমধামত্বাহ মর্ত্তা ইতি । লোকান্ প্রতি বদৃচ্ছয়া কেনাপি ভাগ্যোদয়েন । তে আল্যা ॥ ২৪ ॥

প্রস্তাহতং বিজ্ঞাপরতি স স্থানিত। স্থানাং বিলাসং হতীতি স্থাবিলাসহা। স্থাবিদিতি বা চেনঃ। পৌরুবং ঐশবং

## বৈষ্ণবতোৰণী।

যাতি য ইতি বোহয়ং নিমেবাদি বঁৎসরান্তঃ কালঃ বংসরাত্তনাচ মহীরান্ বিপরার্করপঃ যেনচ কালেন হেতুনা বিখং চেষ্টতে তং কালং তন্ত তাদৃশস্য তে তব চেষ্টামাহরিত্যবরঃ। অভএবেশানং সর্কেশ্বরং। ততঃ প্রপদ্ধত্তর হ্রণমাত্রং কির্বা ইতি ভাবঃ। অতএব ক্ষেমভাত্রত স্থ্প্রাপ্তেক্ত স্থান্য হানং। যবা সর্ক্ষক্ল ক্রয়াদীনামপ্যাশ্রয়ং॥২৩॥

যত বংশাদাপ্রিতোহপি নির্কাষ্টে সন্ ক্থী ভাদিতাহ মর্জ্য ইতি মরণধর্মা যঃ কশ্চিমৃত্যুবংশরক্ষার। নির্ভায় ভরাভাবং নপ্রাপ আদ্য হে সর্বপ্রেষ্ট স্থতোরপি নির্বারিতার্থঃ। বহাে ভরাছিতঃ সন্ লেতে নির্কাত। ভবতীতার্থঃ। মতোহমান্তংগালাজাকেতো সর্ত্তান্থা তথাং সঁকাশামৃত্যুঃ পলায়তে। অজ্যরুপাকেশ শতঃ প্রকার্থিছমপি ধ্বনিতং। তৎপ্রতাবমাত্রজ্যত ভরাভাবত। বহা সৃত্যুরিতি অল্যাধুনা দ্বি সাক্ষাং প্রান্ত্র্তুত সর্বলাকঃ শহঃ সন্ লেতে। বর্ত্তান সামীপ্যে বর্ত্তানবহাে। তত্র হেতুঃ সৃত্যুরিতি। অভং সমানং। এবং পরব্রহ্বনে স্টিতং। নির্ভিন্তং প্রান্তির্কার্যাণ্ডেন সর্ব্বোপ্রভায় বিশ্বনিত্তানত ভ্লীকৃতং। অতঃ প্রক্রীপ্রবার্থিন রূপং যার্দি হেতু কাল্লীন্র্বেন শরণাপ্র মৃত্যু নিবারণত তথে কৈম্ত্যেন্চ দৃদীকৃতং। অতঃ প্রক্রীপ্রবার্ত্তাপ্রবাধেন রূপং যার্দি ক্রেড্রাক্টার বাক্যং ন বন্ধ পরক্রেন ব্যাপ্যাতং॥ ২৪ ॥

স তালুৰছেন নিৰ্ভয়ঃ মভাগ্যেনচ মৎ পুত্ৰতাং প্ৰাপ্তৰং আহি ভিট্ছেনারোচকভাৎ সাক্ষাৎ কংসনামাগ্রহণং এবং পুক্ষিণি

#### ক্রমসম্বর্ড:।

এক ইতি বৈকুণ্ঠানামণি স্বরূপং চেতি পুরুষ বিরাজ্তর্থামিনো রূপং আকারং চতুর্ জ্বাং। অতএব বিরাজ্তর্বার্তি ধ্যান

 ত্রিশ্বনাধচক্রবর্তী।

সংহারক: কালস্তমণি তদ্য তব চেষ্টামাহ:। হে অব্যক্তবন্ধো প্রকৃতিপ্রবর্তক। যেন ছচেষ্টার্রণেণ কালেনৈব বিশ্বং চেষ্টতে। স এব কাল: কস্তরাহ নিমেবেতি মহীয়ান্ পুনর প্রবর্তমার্ত্ত্যা দিপরান্ধরণ:। দ্বা দ্বাং প্রপদ্যে যথা দ্বং নির্ভয়ক্তবৈধ স্মাতরং মামণি নির্ভয়াং কুর্বিতি ভাবঃ॥২৩॥

षक्षत्रभाद्यिकारिन निर्कटः किমৃত पश्चितार मर्का ইতি সর্মান লোকান্ প্রতি পলারন্ নির্ভরং ভরাভাবং ন প্রাপ। বদৃদ্ধরা বাদৃ-চ্ছিক্মহৎকৃপালক্ষতক্ষ্যেতার্থঃ। তংপাদ্বেবাক্ষং ধ্ববস্তরিং প্রাপ্য অক্ষেহিত্রী শব্দে না নিচুলে ধ্ববস্তরিচ হিম্কিরণ ইতি মেদিনী। হৈ আদ্য তেন বস্তকাপি দ্বরা মাতৃত্বেন স্বীক্ষতাপি কংসাদ্ধি কেবলমহ্মেব মহাভর্বিহ্বলৈতি ভাবঃ॥ ২৪॥

খং বৃদ্ধীক্ষ নির্ভন: কথমাবানের মহাতর প্রক্তো করোবাত্যাহ স খনিতি। বোরাদিতি মহাভীবণবং। উপ্রেতি পিতা নোগ্র:

বিষের পরিবর্ত্তন হ'ইতেছে তত্ত পণ্ডিতের। বলেন ঐ কাল তোমার লীলা মাত্র। প্রভা। তুমি এতাদৃশ এবং অভয়স্থান, আমি তোমার শরণাপর হইলাম॥ ২৩॥

হে খাণ্য! এই মর্ত্যনাক মৃত্যুরাপ বিষধর ছইতে তীত হইয়া প্লায়ন করত গকল লোকের প্রতিই ধাৰ্মান ইইয়াছিল, কোখাও নির্ভন্ন পায় নাই। কোন খনির্বাচনীর ভাগ্যোলয় হেতু তোমার পাদপথা প্রতি ছওয়াতে একণে হ'ব হইরা শর্ন ক্রিতেছে, ইহার নিকট ছইতে মৃত্যু অপগত ছইল ॥ ২৪ ॥

ज्यतन्। त्रेरे प्रि एठा व्यापत जाराती जैवारानाच्यत त्यात करन रहेरक चामता चिन्ति नवरा

রূপঞ্চেদং পৌরুষং ধ্যানধিষ্ণ্যং মাপ্রত্যক্ষং মাংসদৃশাং ভো: কৃষীষ্ঠাঃ । ২৫ ॥
জন্ম তে ম্যাসে পাপো মা বিশ্বামধুসূদন । সমুবিজে ভবদ্ধেতোঃ কংসাদহমধীরধীঃ।

## अध्ययामी।

শ্রীমন্তাগবতম ৷

ধ্যানাস্পদং মাংসদৃশাং মাংসচকুষাং প্রত্যক্ষং মাক্কথাঃ ॥ ২৫ ॥ ভবত এব হেতো নিমিত্তভূতাৎ কংসাৎ সমূদ্বিকে বিভেমি যতঃ দাধীরচিতা ॥ ২৬ ॥

## বৈষ্ণবডোব শী।

অয়ন্ত্ৰসভা ইত্যেবোক্তং শৰ্পশ্লেষেণ প্রমোগ্রন্থং স্চিতং অর্থশ্লেষেণ্চ পিতৃব্যক্তর ব্যক্ত্রা ভ্রাধিক্যং। নিক্কতি সম্লং হি বন্ধ্ত্যা ভ্রান্থতিমিতি ন্যারাৎ ন ব্রাহীতি অক্ষক্রনামের কুরু নতু তং ঘাতরিজুং প্রার্থিরে ইতি কুপাবিশেষার দৈন্যোক্তিঃ। ভো ইতি প্রমার্জ্যা সম্বোধনং। তথাপি মাতৃভাব ক্ষভাবতো ভর্নিষয়ং তমেবান্তর্ধাপিরিজুং ছলেনাহ ক্ষপঞ্চতি পুরুষত ব্যষ্ট্যন্তর্ধানিনো ক্রপমাকারং চতুত্বিত্বাৎ অতএব বিরাজ্যুক্তির্ধ্যান ধিক্যান্ত্রন প্রাক্রিমিত্যেবার্থঃ। বিভ্রুত্ব হি গৃঢ্ছং ধ্যানধিক্যান্তর শ্রুত্ব প্রার্থ বিশ্বাধিক্যান্তর বিভাগি শ্রীগোপালতাপনী ধ্যানাদৌ মাংসদৃশাং অজ্ঞানাং অবোগ্য- ত্রাদিতি ভাবঃ। তত্র হেতৃত্ব বক্ষাতে বিশ্বমিত্যাদিনা॥ ২৫॥

নমু মাতত্ত্ব কিমর্থং ভরং তথা মমাপ্রত্যক্ষতারাং গর্তচোর্য্যাপরাধেন তন্মাৎ ভরমেব দ্যাৎ ইত্যাশস্কা যথার্থমেব নিবেদরতি জন্মত ইতি। ভবদর্থমেব বিভেমি নাআর্থমিতি। বদ্যপি মধুস্থদনত্ত্বন ত্বি ক্রোদন্মান্তরং ন সম্ভবতি তথাপি তত্ত্ব কারণমিদমেবে-ত্যাহ অধীর্থীরিতি হঠাকৈর্যবিলোপকেনামুক্শেপাদয়েন্ত্যর্থ: অত্র কংস নাম গ্রহণমত্যুৎকৡয়া॥

তত্ত্বাস্থ্যতিমাশত্ব্য পুনতদণ্যসহমানাহ উপেতি শৃঝাদি প্রিয়া সেবিতং চন্ধারো ভূজা যত্র তাদৃশং যদ্রপং আকার বিশেষ স্তদে-বোপসংহর গোপয় রূপান্তরম্ভ প্রকৃষ্ট্র ইত্যর্থ:। তথা সতি লোকে কুত্রাপি গোপন্নিভূমশক্য স ইতি ভাব:। হে বিশান্ত্রিতি

#### ক্রমসন্মর্ভ:।

ধিষ্ণ্যত্ত্বন প্রসিদ্ধং মাংসদৃশাং অজ্ঞানাং অযোগ্যতাদিত্যর্থ:। রূপং চেদমিত্যাদি প্রকরণব্যাখ্যা বিশেষং চতুর্থসন্দর্ভন্ত সপ্ত-নবভিত্তমপদ্যানন্তরপ্রবৃত্তকে দৃশ্য:। নমু মাতত্ত্ব কিমর্থং ভরং তমহং মাররাম্যের। তথা মমাপ্রভাক্ষতারাং গর্ভচৌর্যোণ ভন্মভির মেব স্যাৎ ইত্যাশস্ক্য যথার্থমেব নিবেদরতি॥ ২৫॥

জন্মত ইতি। ভবদর্থমের বিভেমি নাত্মার্থমিতি। বদ্যপি মধুস্দনত্বেন কুদ্রান্তত্মান্তর ন ভয়ং সম্ভবেৎ তথাপাধীরধীর্বেইনর বিভেমী-ত্যর্থ:। অতোহ্যিকং ভূজাধ্বং কৌন্তভাদিকঞ্ গোপয়ন্ নিগুঢ়ং লোকাফুরপমেবাকারং প্রকাশরেত্যর্থ:। তথা সতি লোকে

## প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

সেনাচ নোগ্রা কিন্তান্মন্ত এবোগ্র ইতি ভরেনৈব সাক্ষান্তরামাগ্রহণং কিঞ্চ ভৃত্যানাং বিবিধং আসং হংসি পিজোরাবরোঃ কিমন্তর্ভনং ন হরসীতি ভাবঃ। ভো মাতঃ কংসাদি বধার্থমেবাবতীর্ণোহন্মি আরাতু কংসন্তমধুনৈব বধিব্যামি চক্ষ্ জাং পল্যতি তছ্জিমাশকা বর্দ্ধিকান পুত্র ভাবেন তন্মাৎ কংসবধ্যসন্তাবরন্তী প্রত্যুত কংসাদেব তদনিষ্টমাশক্ষানা মহাভরকম্পিত সন্ধালী হত্ত হত্ত পর্যোধ্যকান্তর্ভার পুত্রহাদ্যকার্বতি পুত্রহাদ্যিন্ ভেদাদর উপারা ন ঘটন্ত ইত্যতঃ সাহের অক্ষত্যং সাধ্যামীতি মনসি বিমূশ্য ভজ্ঞপম্পসংহাররিত্থ যুক্তান্তরম্থাপরতি রূপমিতি পৌক্রমেশ্বরং ধ্যানধিকাঃ ধ্যানাম্পদং মাংসদৃশাং মাংসদৃশাং প্রত্যক্ষং মারুণাঃ ৪২৫॥

ভো মাত বঁদীদং রূপমন্তর্রাপরামি তদা কংস আগত্য গর্ত তে ক গত ইতি গর্তচোর্ব্যাপরাধেন স্থামধিকং তাড়রিরাজীতি চেন্তত্র মম কা শলা ইত্যাহ জন্মতি। মাবিদ্যারাজানাত্ব। মধুবদনতি মধুবদতাং হতবতো মম কংসববে কং প্রহাস ইতি মানংহা তদানীস্তনাৎ মধোরগারমিদানীস্তনঃ কংসঃ কোটিশুণিতবলাধিক ইতি ভাবঃ। কর্ত্বেভারিতি মদপরাধং প্রকল্প স্থাদনব্রাদিকং কুর্যাচেত্র করেছে। কেবলং ভবতঃ ক্ল্যাপ্যাপানে ইতি ভাবঃ। মহু তহি রূপং ব্রুদিতাদেন নতে লোকে ইত্যহইয়াছি, অনুগ্রহ করিয়া আমাদিগকে শ্লোণ করে। তোলার এই প্রশাসরূপ ধ্যানাস্পদ, ইহাকে চর্ম্মন

হে মধ্সুদন। আমাতে তোমার এই জন্ম হইল ইহা যেন ঐ পাপ কংস জানিতে বা পারে। প্রভো । আমি তোমারই নিমিত্ত কংস হইতে জয় পাইতেছি, জামার চিত্ত অভির হইতেছে। অভএব 1

উপসংহর বিখাত্মরদো রূপমলোকিকং। শব্দ চক্র পদা পদ্ম জিয়াত্মইং চতুত্বং॥ ২৬॥ বিখং যদেতৎ বতনো নিশান্তে যথাবকাশং পুরুষ: পরো ভবান্।

## विश्ववागी।

কিমিত্যুপসংহৰ্ত্তব্যং এবভূতেন প্ৰেণ ময়া তব মহতী শাখা স্যাদিতি ভজাহ বিৰমিতি নিশাকে প্ৰলয়াৰসানে যথাবকাশং ক্ষসং-

# देवकवरणावनी।

যুগপদনত রূপাবকাশস্থারাত ত্বাশক্তিরিতি তাবঃ শতোহধিক ভূজবরং কৌততাধিকঞ গোপরন্ নিগৃচং লোকাছরপদেব রূপং প্রকাশরেতার্থঃ। তথা সতি লোকে কুত্রাপি গোপরিভুং শক্যসে ইতি ভাবঃ॥ ২৬॥

নৰধুনা মারয়াম্যের তং তথেদৃশেন ময়া পুত্রেশ তব কীর্ত্তিরের ভবিষ্যতি মাংস চক্ষুবোহণি চমৎক্রতিমাঞ্চারীত্যাশহ্য পুনর্জনা-বর্ত্তিকুনী মাতৃভাবেষ তস্য তাদৃশ শক্তেরপ্রতীত্তা ব্যালান্তরেগাণি তৎ-প্রার্থরতে বিশ্ববিতি অত্ত তেলাফালেহণি বিবিতি

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

কুত্রাপি গোপয়িতুমপি শক্যেথামিতি ভাব:। নৰধুনা মারদাম্যের ভং তথেদৃশেন মরা পুজেণ তব কীর্দ্ধিরের ভবেৎ। মাংসদৃশোহপি চমংক্কৃতি স্থিমাম্পাতীত্যাশস্ক্য তাদুশ লেহেনৈর তস্য তাদুশশক্তিমপ্রতীরতী ব্যাস্বান্তরেশ্বিপ তদের প্রার্থিতে॥ ২৬॥

বিখমিতি বিবং অনস্তকোটি প্রক্ষাঞ্জাত্মকং নিশা প্রাণম্বর্জাত্তি তদভে তলানীমেব তেবাম্ভিব্যক্তে: পর: পুরুষো নহৎপ্রই রূপ:

#### শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবন্ত।

নেন মদৈখৰ্ব্যং র্থৈব কিমবাদীঃ সত্যং পুত্ৰ ভবন্ধাতাহমেবমধীরবুদ্ধিলেব মাথিদ্যস্থ মদৈব দোবোহরং নির্দ্ধশ্বনং তে বামি মাড়-বাংসল্যোনাপি রূপমিদমুপসংহরেতি ভাবঃ॥

বিশাস্থান্থিতি বিশ্বমধ্যে হৃষ্ণপাত্মি তল্মমান্তম ধ্যে স্থিতা কথমেবমধীরাং ধিন্নং প্রবর্তনদীতি তবৈবানং লোব ইতি ভাব:। অলো-কিক্মিতি লৌকিক নরবাসকাকারো ভব। যথা ঝটতি তামহং কাসি গোসনানীতি ভাবঃ॥ ২৬॥

নত্ন কিনিজ্যপন্থতিবাং মন্ত্ৰ। প্ৰদেশকেণ পুজেণ তব মহতী প্ৰতিঠেনাছিতি চেরাহং প্রতিঠানাশানে ইত্যাহ বিশ্বমিতি।
নিশান্তে মন্দিরে নিশান্ত বন্তা সদন ভবনাগার মন্দিরনিত্যবরঃ। স্বতম্ মন্দিরে ব্যাবকাশমস্ভোচ্ছঃ নুলোকস্য মাহ্নতা মন
বিচ্বন্যের তদিদং। আরি মৃদ্ধে কোটিব্রহ্মান্তবিপ্রহো জগবাং কর মার্বপ্রত্যা পর্ছে হিতোহভূদিতি বক্ মতিবহুদ্দানি বিং ন
নজনে ইতি প্রতিবেশি ন্যো মান্প্রনিয়ন্ত্রীতি প্রত্যুতাপ্রতিঠিব মন স্যাদিতি ভাবঃ। নম্ব পদ্ধর্কম্পুর্ভ র্জগবতঃ সান্দাদ
পরোক্ষান্ত্রিবনা দেবিকী বন্ধদেবরোরণি কিমিদমন্ত্রীনান্দাবিদ্যুক্তং জর শোক্ষান্দিকং নৈবং বিদ্যাবিদ্যাত্যাং বহিরন্ধাতাঃ পরত্য
থলু বাব্রকা স্বন্ধপৃত্য চিক্ত্রিক্তস্যা জণি সার্বভিত্রশো বঃ প্রেমা তহিলাসভূত্বেবদে তরশোক্ষানিক্মাবিদ্যুক্তপ্রবাদ
পাত্রী তবিজ্বং নৈবাহ তি। প্রেরো মান্নাতীতত্বে কিং প্রমাণমিতি চেৎ ভগকতঃ প্রেম্বর্জানাত্যাক্ষণপত্তিবের মান্নামন্ত্র তস্য
মান্নাব্যাক্ষাপদ্যতেতি। কিঞান চান্যন্ত ব্যুৎপত্তার্থবিদ্যুক্তাস্যতে। জক্ষা মান্তিন্ধানাতি বাধান বণ্টানি তবতঃ। জক্ষাব্র্ নেক্রাপ্রান্থ ইতি জগবত্বক্তেক্তন্য স্বন্ধণং তক্ত্যের প্রয়মিত্যবদীয়তে। সা চ ভক্তি দ্বিবিধা গুণীভূতা প্রথমিত্যিত কেবলাচ তাসাক্ষ ক্রমেণ জানং জানমন্ত্রী রতিং প্রেমা চেতি কলানি ভন্ত জানেল কেবলং চিৎ স্থাবন্ধন্য ব্রহ্মস্থান্য জান্যান্ত্র বিধা ক্রমেণ ক্রান্ত্রী তস্য বন্ধ এব বিরাজতে। ঐপর্য্য ক্রীভ্রোর্বেণান্ত্রণা শ্রীবিগ্রহস্য চেতি। প্রেরাচ দাস্য স্থ্য বাংস্ব্যোক্ষ্য ভেচ্নাক্রম্পুর্বমানস্বং প্রাপ্তিপতি তথা আছাদ্যতি বথা তল্পমতা রস্কান। নিবছো ক্রীভূর ক ক্ষণ্ণ ক্রামুর্ব্যমণারন্ত্রনানানান্ত্রাণ্ড বাংস্ব্য

হে বিখান্ত্ৰন্ । শাল্কিক, গলা, পালের শোলাক শোলিত চতুত্ব, আই শাল্ক লগ তিয়োহিত কর॥২৬ জনবন্। শাশনি পদন প্রস, গ্লেরাবসায়ন কীয় গায়ীরে চয়াচর বিশ্ব ধারণ করিয়াছিলেন, বাঁহার দেহে জগৎ অসকোচে ছিল, কোন পদার্থের খান বঙীর্ণ হয় নাই, সেই শাপনি শামার গর্মে জন্মিয়া-

বিভর্তি সোহয়ং মম গর্ভজোহস্কুদহো নূলোকস্থ বিভূমনং তথ ॥ ২৭ ॥ শ্রীভগবানুবাচ ॥

ছমেব পূর্বে সর্গেহ ভূ: পৃশ্ধি: স্বায়স্তুবে সতি। তদায়ং হৃতপা নাম প্রস্তাপতিরক্ষায়ঃ॥ ২৮॥

# ञीभव्यामी ।

কোচতঃ অনম্ভাবিতদাৎ উপহাস্যতৈব স্যাদিত্যর্থ: ॥ ২৭ ॥

চতৃত্বি রপেণাবির্ভাবে কারণং তাবদাহ ধমেবেত্যাদি চতুর্দশক্তিঃ। পূর্কাসর্গে প্রথম জন্মনি অভ্: আসী: পৃত্নির্নাম সারভুবে ময়স্তবে অরং বস্তুদেব: ॥ ২৮ ॥

## देवस्वदाखावनी।

সাটোপনেব বাক্যং ততশ্চাধুনা মাররান্যেব ইত্যেবৌদ্ধতোন ধ্বনিতং স্যাৎ এবসিত্যপান্তরং। বিশ্বং অনন্তকোটি এক্ষাণ্ডায়কং। নিশা প্রাক্কত প্রণয় রাত্রিঃ। তুদুত্তে তদ্যা নাশে স্পষ্ট ছিতি সময়ে পরঃ পুরুষো মহৎ প্রষ্ঠু রূপঃ সন্ বিভর্ষি ইতি সোহরমেব হি বিশ্ব-মন্তর্জাবয়ন্ স্বাংশিনং তং প্রবিশ্যাবির্জবতীত্যজিপ্রারাং। গর্জকো পর্ত্যশেচতি পাঠ্যয়ং॥২৭॥

এবং ত্যোক জি জিরান নিত্তা নিজ্প্রসিদ্ধ ক্লণাবির্জাবকারণকথনাদিনা তৌপ্রতিষ্ট্রনির পরিসাম্বরন্ মাতরি ক্লেহ বিশে-বেণ তাং সংবাধ্যাহ স্থমেবেত্যাদিনা স্বায়স্কুবে মহস্তবের সচি বর্তমানে। যহা হে সতীতি পুনঃ পুনস্তক্তৈর পত্নীভয়া পাতিব্রত্য নিষ্ঠাভিপ্রায়েণ। স্কল্পবং রাগ হেবাদি রহিতঃ। এব্যক্ষোন্তং দাল্পত্যবোগ্যতোকা॥ ২৮॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ ৷

मन् ॥ २१ ॥ २৮ ॥

# ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

প্রেমবজ্জনমান্তাদরতি। জ্ঞানেন বা জ্ঞানমররত্যা বা সচ্চিদানন্দান্তবন্ত্নাং য আন্বাদন্তন্তাং কোটিকোটিগুলিতং মমতা হেতুকমান্তাদং প্রেমা প্রবর্জনিত। তথাছি সর্ব্ধ সন্তাপ নিবর্জকাং পর্মাহলাদকাং দৃশ্যমানাচ্চন্ত্রাদপি সকাশাং সর্বপ্রপাহিল পর্যাদিকে দিব্রুকাংশি দুশ্যমানাচন্ত্রাদিপি সকাশাং সর্বপ্রপাহিল কালছাদি দোব্যুক্তাহিল দুশ্যমানাহ অপ্রো বং স্থমধিকং দত্তে তত্ত্র মমইতব বদি কারণং সর্বপ্রথমপিততে অভাবাদেব নির্বধিক হা মমতা প্রেমনিষ্ঠা কিমুভেতি জ্ঞান প্রেম্নো র্ডেদো বিবৃত্তঃ। যথা হুবিদ্যা স্বর্জ্জা বম তয়া জীবং হুংখয়িতুমেব বয়াতি তথৈব প্রেমা স্বর্জ্জা মমতরেশ্বরং স্থারপ্রশাস্ত্রপরিত্তং বয়াতি। যথা দুগুনীর জনস্য গাত্রবন্ধনং ব্যাদিকা। মাননীর জনস্যাপি গাত্রবন্ধনমনর্থ স্থান্ত ক্ষেত্র ক্ষান্ত্রপরিত্তা বিদ্যাধীনো জীবো হুংখী। প্রেমানীনাং ক্ষোহাত্রিক্তিই বিধীরতে। তথা মান্তর্মান ক্ষানের্ব্ধান্তা স্বতারতম্যেন জ্ঞানাবন্ধণ তারতম্যাক্ষীবস্য পঞ্চবিধ ক্লেশ তারতম্যং বিধীরতে। তথাবন্ধ হিলি ক্ষান্তর্মেন ক্ষানের্ব্ধান্ত্রা মনতার রসনরা নিবধ্য পর্বেশ্বর্মান্ত্রনার প্রকার্মার ক্ষানিকার্যাদিক মার্ত্য ব্যাধিকং স্থান্ত ন তথা দেবক্যান্ত্রি নিষ্ঠ ঐথর্য জ্ঞান মিলিভবনে প্রাক্র্যাভাবাৎ তক্তং প্রেম্বন্ত্রণা তথা ভূতত্বে কারণছ নাবেষ্টব্যং। ভাসাং মন্ত্রো দিনি নিন্তা সিক্ষাদেশৰ তন্ত্রান্ধণ প্রেমবিশ্বাণামিপি নিত্যসিক্ষাদিতি সর্বাং নির্বদ্যং॥, ২৭॥

ছেন, ইহা সমুষ্য লোকের এক প্রকার বিভ্ন্থনা। অতএব এতাদৃশ রূপবান্ পুত্র হারা আমার শ্লাঘা হওয়া দূরে থাকুক, লোকে সমাজে করং উপহাস্যতা হইবার সন্তাবনা, এ নিমিতেও এই অভ্ত রূপ সম্বরণ কর্মন ॥ ২৭ ॥

এতৎ প্রবণে ভগৰার সাপনার চতুতু জ রূপে অবতারের কারণ বলিতে লাগিলেন, হে সতি! প্রথম জন্মে স্বায়জুব্মরস্তারে তুমিই প্রায়ি ছিলে তৎকালে এই অক্ষার বহুলেব স্ত্পা নামে প্রজা-পতি হইয়াছিলেন॥ ২৮ ॥ যুবাং বৈ অক্ষণাদিটো প্রজাদর্গে যদা ততঃ। সংনিয়স্যেক্সিয়গ্রামং তেপা**রু** পরমং তপং।
বর্ষ বাজাতপ হিম ঘর্মকালগুণানমু। সহমানো খাদরোধ বিনিধৃতি মনোমলো।
শীর্ণপর্ণানিলাহারাবুপশান্তেন চেতদা। মতঃ কামানভীপ্সস্তো মমারাধনমীহথুঃ॥ ২৯॥
এবং বাং তপ্যতো উদ্রে তপঃ পরম তুক্তরং। দিব্য বর্ষ সহস্রাণি দাদশেয়ু র্মদাস্থানোঃ॥ ৩০॥
তদা বাং পরিতুটোহহমমুনা বপুষান্তে। তপ্যা প্রদ্ধানিত্যং ভক্ত্যা চ হুদি ভাবিতঃ।

## श्रीशतकामी।

তেপাথে তপঃ ক্লতবস্তো ॥ २৯॥

তপ্যতো: बाह्यला: श्रेयूर्वजीन भनायत्ना: मिळखरवा: ॥ ७० ॥

অমুনা বপুরা প্রাছভূতিছাখনি বরদরাট্ বরদের প্রেষ্ঠঃ ইত্যানেন সক্করণেচ বারং বারং আবির্ভাবে কারণমুক্তং কামস্য দিংসয়া
বৈক্ষবতোষণী।

বৈ প্রসিদ্ধৌ শরণে বা । ততত্ত্বদানীমেবেতি ব্রহ্মাদেশপালন প্রতাক্তা সংনির্মোতি চ শান্তি নিঠা অতএব প্রমং অনেকার্থত তপেত্বপং কর্মক ্তার্থ ব্যক্তর্এব তপং শ্রেশংন্দাত ইত্যভিপ্রেক্তা তৈর্ব্যাখ্যাতং। তেপাথে তপঃ ক্ষতবন্ধাবিত্যেবার্থ: পর্যাব-ভাতি তত্ত্বিব চাণিতং ভাদিতি ॥

তপএৰ দৰ্শয় তি বুৰ্বেতি যুগাকেন বৰ্বাদীন্ কালজ গুণান্ সভাবান্ অহ নিরন্তরং সহমানৌ আতপং সাকাজবিরশিতাপং অর্থ উফাং। যদা আতপং শারদজ রবেং ঘর্মো নৈদাদজ। কিঞা খাদরোধং প্রাণায়ামা তেন প্রথমং সামাজতো ধৃতা নাশিতা ভতো যাব ছপলভাৱে তাবিদ্ধিংশবেণ ধৃতান্ততঃ স্বয়ম্পলভামানায়া অপি স্ক্রতম বাসনায়া উচ্ছেদনেন বিশেষেণ নিধ্তা মনসো মলাং কামাদ্যো যাভাগে তৌ। এতেন যৎকিঞ্বি মধ্যমন্থ বাবৰ ক্রমেণ ত্রোরাগ্রহাধিকাং বোধিতং অতএব উপশাজেন স্থিবেণ কিয়া মদিতিন শামাদ্যো মন্ত্রিক শামাদ্যা মন্ত্রিক শামাদ্যা ক্রমেণ ত্রোরাগ্রহাধিকাং বোধিতং অতএব উপশাজেন স্থিবেণ কিয়া মদিতিন শামাদ্যা মন্ত্রিক শামাদ্যা ক্রমেণ তারারাগ্রহাধিকাং বোধিতং অতএব উপশাজেন স্থিবেণ কিয়া মদিতা বিদ্বালয় স্থানি প্রায়াম্যা বিদ্বালয় বিদ্

ভদ্ৰে পরম ভাগ্যবতীতি তত্র যোগ্যতোক্তা যথা ভত্তৰনে মাথুরক্ষেত্র এবাত্র ময্যেব আত্মা চিন্তং যরোরিতি কামান্তরং নিরন্তং ইত্যুপরতি নিষ্ঠা ॥ ৩০ ॥

তদেতি সার্দ্ধকং ঘনৰে হে স্কাপরাধরহিতে ইতি তপোনি শ্ছিলত। স্চিত। অতএব বাং যুবলো: সহদেন যুবাং প্রতীতার্থ

# क्रमजन्म 🕏 ।

অনেকার্থস্য তপে: তপ: কর্মক কৃত্যুর্থ ব্যক্তর এব তপ: শব্দোহন্দ্রতে। আতপ: শার্দস্য রবে: ধর্মো নৈদাবিদ্য মতঃ পুত্র ভূতাৎ কামান্ জনকভাবোচিত স্থানি। প্রজাসর্গ ইত্যুক্তং মাদৃশো বাং বৃতঃ স্বত ইতাগ্রতশ্চ বক্ষাতে ॥২৯॥৩০॥ বাং যুবাং পরি প্রতি তপ্যা মৎসক্তোষার্থং প্রেষ্কেন জাতা সাধনভক্তো যা শ্রদ্ধা তয়া জাতা তলকণা যা ভক্তিরয়া নিত্যং হৃদি-

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

আতপঃ সৌরকিরণোথতাপঃ হর্মো নিদাহোরঃ॥ ২৯॥

मनायाना म किछाताः॥ ७०॥

মদীয় ব্ৰতক্ষপ তথঃ শ্ৰদ্ধাত্তি পূৰ্বকং নিমন্তরং মদ্যানমের মৎপরিতোবে কারণমিত্যাকঃ তদেতি। অমুনা অনেন চতুভ্জেন

ত্রক্ষা তোমাদিগকে প্রজা স্কনার্থ আদেশ করিলে তোমরা ছুই জনে ইন্দ্রিয় সমুদায় নি গ্রহ করিয়া পরম তপতা করিয়াছিলে। বর্ষা রোদ্র হিম ঘর্ম প্রভৃতি কালগুণ সকল সহু করিয়া থাকিতে, প্রাণায়াম ঘারা তোমাদের মনোমল নির্মৃত হইয়াছিল, শীর্ণপর্ণ ও অনিলমাত্র তোমাদের আহার ছিল, শাস্ত চিত্ত হইয়া আমার নিকট অভীক্ট দিন্দি অভিলাধ করত আমার আরাধনা করিতে ॥২৯

্পত্তাঃ ার্থ ক্রিছে আমাতে চিত্ত সমর্পণ করিয়া তুশ্চর তপক্তা করিতে করিতে তোমাদের দেব পরিমানে আমশ সহজ্ঞ বৎসর রখন গভ হয় ॥ ৩০ ॥

তথন তোমাদের প্রতি আমার পরিভোষ কলে, তপস্থা এবং প্রদা ভক্তি সহকারে তোমরু

প্রাছরাসং আদেরাড় যুবরোঃ কামদিৎসয়া। ত্রিষ্বতাং বর ইভ্যুক্তে মাদৃশো বাং রুতঃ হৃতঃ ॥৩১॥ অজুউগ্রাম্যবিষয়াবনপভ্যো চ দম্পতী। ন ব্রাথেছপ্রবর্গং মে মোহিতো মম মার্য়া ॥ ৩২॥

## अभवतामो ।

দাতৃষিক্ষয়া ৰাদৃশঃ মংসদৃশঃ ॥ ৩১ ॥ মে মজোহপি যুৰামশ্বৰ্গং ন ৰ্বাণে বৃত্ৰস্থৌ ॥ ৩২ ॥

### देवकवरकामगी।

পরিভূই: সন্ পরীতি কর্ম প্রবচনীয়ং বা তচ্চ বীপায়াং বীপাচ অন্ধভেদেনেতি তথৈবার্থ: নমু তক্তৈয়ৰ পরিভোষ্যক্ষং নভু তপসা সত্যং পারম্পরিক্ষেব কারণং তদিত্যাহ তপসা মং সভোষার্থং প্রবৃত্তেন জাতায়া নর্বধা সাধনভক্তে প্রদ্ধা তরা জাতা বা তরকণা তক্তিবলা নিত্যং ক্ষি ভাবিত: যদ্ধেন প্রাপিত: চকারাছিনৈব যদ্ধ প্রেমলক্ষণনা প্রাপিত: প্রুত্ত ভাবনা মধ্যেবেতি জ্ঞেরং অম্না এতেন প্রিক্ষাধ্যেন বপুষেতি পরিতোষাদৌ সর্ব্ধি যোজাং অম্না বপুষা, ক্ষি ভাবিত: । অতএব পরি সর্বভোষাবেন ভূঠোইং অতএবামুনের বপুষা প্রাক্ষাধ্যেন বপুষা প্রাক্ষাধ্য হৈছে ত্তীয়া ৷ বরদ্যাভিতি তৈর্যাখ্যাতং ৷ কিঞ্চ তপসোহধিক ফল্যানে ভ্রু চোভবোক্তরাধিকেট কারণং জ্ঞের ॥

বিশ্বতামিত্যর্শ্বকং বাং যুবাভ্যামিত্যর্থ;। ভৃতীয়ায়াঃ ষষ্ঠী মাদৃশঃ মৎ সদৃশ এব বৃতঃ নতু সাক্ষাদহং। লক্ষাদিনা তথা জ্বলাশকে বিতি ভাবঃ॥ ৩১॥

ভাদৃদ্দেন বজাবেন ব্বাং দ কেবলং বিষয়ান্তরোৎপাদনং নাদৃতবন্ধী অপিভূ তদুনাদরেণ মোকায় যোগ্যাবিপ মৎ প্রদাদেন তং হত প্রাথমপি মাদৃতবন্ধী ইত্যাহ অজুইেভি তত্রাজুই গ্রাম্যবিষয়াবিত্যনেলাহকায়ান্দিদ দেহাবেশো নিরকঃ। অনপভ্যাবিত্যনেলাক্ত্যাপলক্ষিত মমতান্দাভাব উক্তঃ। তত্তভাপবর্গবর্গ বোগ্যতা দর্শিতা তত্ত্বকং বিনিধ্ত মনোমলাবিতি তত্ত্বাপি মে বত্ত ইতি প্রাথিবজ্ঞাবনা দৃদীক্বতা তত্ত্বকং বরদরাভিতি তাদৃশাবিপি ক্বাং তাদৃশাদিপ মত্যো ন ব্রাথে তত্ত্ব ক্রমপ্রাথং হেতুং মির্দিশতি মোহতৌ মম মার্রেভি। মম মদীয়রা ঝটিতি স্ববিষয়ক প্রন্ধেহ সম্পাদিকরা মার্রা কুপরা। যক্ষা মহিবরক প্রোচিত লাল-মেক্ষাম্যা কুপরা তিরক্ব তান্তাবত্বাৎ ইত্যর্থঃ। দৃষ্টান্তস্ক সালোক্য সাইতিয়াটো প্রসিদ্ধ এবেতি নোক্তঃ॥ ৩২ ॥

#### ক্রমসন্তঃ।

ভাবিতঃ প্রেমলকণ্যা প্রাপিতঃ প্রভাবনাময়েতি জ্ঞেরং । বাং ব্বাভ্যামিত্যর্থ: চতুর্থ্যাং বন্ধী। তদা বামিত্যাদি ॥ ৩১ ॥

অকুটেতি। মুম মাররা মদগত পুরুলেহম্যা। কুপরেত্যর্থ: । মিব্রুলেহ্স্যাপ্রর্গস্থাতিক্রমিন্বাদিতি ভাব: ॥ ৩২ ॥

#### श्रीविधनाथहळावर्छी।

ভক্তোতি প্রদ্ধরেতি নিত্যমিতি ভাষিত ইতি পদত্রদাধিক্যেন নেরং তপো বোগাক্ষ্তা ভক্তিব্যাথ্যেয়া সা ডু মদান্মনোরিভ্যেতাব-ঝাত্রেণৈব সিদ্ধ্যেদতস্ততঃ পৃথগৃত্তা প্রেমহেতু ভূতৈব ভতণ তপো বোগাবেবাধিকাবনরোরৈধর্য জ্ঞানহেতু জ্ঞেয়াবিভি কেচিদাছ রন্যেতু নিত্যসিদ্ধরো দেবিকী বস্থদেবয়োঃ প্রেমাপ্যৈশ্বর্য জ্ঞানমিপ্রো নিত্য এব তদংশ্রেয়ঃ পৃদ্ধি স্থতপসোর্জানধোগৌ স্থানিনো-ভয়োরকিঞ্চিৎকরাবিত্যান্তঃ। অত্য চিন্তিত ইত্যকুক্ত্য ভাষিতো ভাষ বিষয়ীকৃত ইত্যনেন রাগভক্তিরবগন্ধতে॥ ৩১ ॥

মাননা পুত্রবেদ্থ মন্যা বৈষ্ণবীং ব্যাতনোকারাং পুত্রবেদ্ধরীং বিভ্রিভ্যুপরিষ্টান্থকে: পুত্রবেদ্থেপি মানানকেনোচ্যতে। মোহিতৌ তদাস্বাদানকেন বিচিত্তীক্বতৌ ॥ ৩২ ॥

হালর মধ্যে নিত্য আমার চিন্তা করাতে আমি এই দেহ ধরিয়া প্রাফ্তৃত হই, কারণ আমি বরদাতা-দিলের রাজা, তোমাদের অভিলয়িত বর দান করিব। সে বাহা হউক, তোমাদের সন্তুশ আবি-ভূত হইয়া "বর প্রার্থনা কর" এই বাব্যে বলিলে তোমরা আমার সমৃশ পুত্র চাহিয়াছিলে। এ১ ॥

তোমরা ছুই ত্রী পুরুষে অনপতা **ছিলে, আন্যাবিষয় কিছুমান্ত ভোগ কর নাই, আনা**র মারার তুমাহিত হইয়া আমার নিকট মৃক্তি প্রার্থনা কর নাই॥ ৩২॥ গতে যি যুবাং লব্ধ বরং মৎসদৃশং হৃতং। গ্রাম্যান্ ভোগানভূঞাধাং ধুবাং প্রাপ্ত মনোরপোঁ। অদৃষ্ট্রান্যতমং লোকে শীলোদার্য গুণেঃ সমং। অহং হৃতো বামভবং পৃশ্লিগর্ক্ত ইতিস্মৃতঃ॥ ৩০॥ তলোবাং পুনরেবাহমদিত্যামাস কশ্যপাৎ। উপেক্ত ইতি বিখ্যাতো বামনতাচ্চ বামনঃ। তৃতীরে হিম্মিন্ ভবে হহং বৈ তেনৈব বপুষাধ বাং। জাতোভূয় স্তয়োরেবং সত্যং মে ব্যাহাতং সভি॥৩৪

क्षित्रवामी।

वतः महा सींग शरक ॥ ७० ॥

অদিতাাং কখ্যপাধানন আদেতি বত্তদপি তজ্জপরোধুবিরো রহমেব পুনরাস মিতার্থ: ॥ ৩৪ ॥

## देवसः वटजायना ।

সতঃ সাধিতে মরি মনেকাথারৈবাগ্যাদপি শিথিলো সাতো উৎফুল্ল মনছেন স্বস্য মলকণ পুত্র সম্পত্তি যোগ্যভেড্লাত িয়ন্ত্র-মপ্যর্জিতনভাবিতাহে গতে মন্ত্রীতি। পশ্চলগ্রামান্ ভোগানপি বুবাং ভূকেবন্ধো বতাবুবাং প্রাপ্ত মনোরথো ভূতো । পুরাং প্রতি গতে ইতি বা। অত্র টাকারাং বরং দ্বা ইত্যধ্যান্ত্রিতাব ব্যাধ্যাতং। দ্বেতি পাঠন্ত কুত্রাপ্যদর্শনাং। বরং মৎসদৃশ মিত্যত্তে ব্রশক্ষ কর্ম সাধনঃ॥ ৩০॥

শাহস্ত ভবভাগি তছক্তি চাত্র্গ্যাক্তলিভ ইব পাচাহিচার্য্য ভবন্থনোগতমেব ক্বতবানিতাাই আদট্ভেত। শূীলং স্ক্রেরিক ওঁলার্য্য মহন্ত গুলিভারে কার্য্য কার্য কার্য্য কার্য কার

ভগোরিতি তৈর্বাধ্যাতং তত্র তদপীত্যানৌ তদপি মনৈব পুনরভিষমিত্যর্থ:। বামন আসেতি যদিতি উপেক্স ইতি , বিশ্বতা বামন হাত বিধ্যাতো ব: স আস ইতি যদিত্যর্থ: অন্তেদি কিন্দ ভাষেশাভাব আর্থ:। বহা তথা ওথা বিধ্যা নিন্দ ক্ষাপাদদিত্যামান বহুব গোহহমেব তজ্ঞপ্রোষ্থরোরাস বহুবেত্যর্থ:॥

বেন পুরা বরার প্রাছরাসং তেনৈবেতি অধুনা পরিপূর্ণতয়া পূর্বজন্ম ব্যেজংশতবেতি বোধিতং। এতেচাংশকলাঃ প্ংসঃ কৃষ্ণ ক্রমসন্দর্ভঃ।

যুবাং গতে প্রাপ্তবিতি মরি বরং **লব্ধ। অত উৎফ্র মনন্ত্রেন তাদৃশ পুত্রার্থ সম্পত্তি** যোগ্যতেচ্ছরা চ বিষয়োপার্জ্জনং জ্ঞেয়ং॥ অনুষ্ট্রেতি। শীলং সচ্চরিত্রং ঔদার্য্যং মহস্বং। গুণাং কারুণ্যাদয়ং তরোং কারণানি॥ ৩০॥

ষা তথাতিহ্বভাগা অভ্যন্ত। বাবোংপি জীৰহদেৰ আগতে গতি বিৰুতা ইতি হয়োবৰরঃ তদংশ্যেৰ তৎ সাম্যাৎ পৃলিগ্ৰীদি ক্লপ্ৰয়েন পূৰ্বাণিভিবিঃ। তথা্ণাপ্রিতোৰাং তৃতীয়ে অৱমেৰ অৱং তাৰ্দলৈৰ তেনৈৰ ৰপুষেত্যকলা গম্যতে ॥ ৩৪ । ৩৫ ॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাগচক্রবর্তী।

শ্রামান্ ভোগানিতি তাদুশ পুত্রোংপঞ্চীছরেতি ভাব:। বাবায়ো প্রামাধর্মকেতামর:॥

পুরিপর্ম্ব ইতি লোধনং ত্রেতাবুগাবতারো লক্ষাতে। বিকুর্যজ্ঞ: পৃষিণর্ত্ত ইত্যেকানশে তংপ্রাদিদিকোক্তে: ॥ ৩০ ॥

অদিত্যাং কল্পপাৰামন আসেতি যত্তদপি তত্ৰপাৰো যু বাষোৱহমেব পুনৱাসমিত্যৰ্থ:॥

ভবে জন্মনি তেনৈব চতুর্জন অহং জাত ইতি প্রথমে জন্মনাহং পৃদ্ধিগঠঃ দ্বিতীয়ে ২হং বামনা তৃতীবেহনিছহমহমেবেতা কছেল-মাত্র বাচাখেন মনৈব পূর্ণকং ভয়ো ম'দংশক্ষিতি বোধিতং। এবং অমেব পূর্ণকর্মে হতুং পৃদ্ধিত্বিতি। নতু পৃদ্ধিবেব ক্ষিত্যুক্তা

সে যাহা হউক, আমি তোমাদিগকে ঐ বরই প্রদান করিয়া গমন করিলে, তোমরা আমার সদৃশ তনয় লাভ করিয়া বিবিধ প্রাম্য ভোগ করিয়াছিলে, কারণ তোমাদের মনোরথ পূর্ণ হইয়ছিল। হে সভি! সেই জন্মে আমিই তোমাদের পুত্র হইয়াছিলাম, যে হেছু লোকে শীল ও উদার্য্যাদি গুণ ঘার। আমার সমান কোন ব্যক্তিকেই দেখিতে পাই নাই, অতএব ঐ জন্মে পুরিগর্ম বিলিয়া বিখ্যাত হই॥ ৩০॥

হে সতি! দ্বিতীয় জন্মে আমি পুনর্বার তোমাদেরই ছই জনের পুত্র হইয়াছিলাম। কশ্যপ হইতে অদিতির গর্ব্বে জনিয়া উপ্রেক্ত নামে বিধ্যাত হই। ঐ জন্মে আমার আকৃতি থবা হইয়াছিল 96

এতদ্বাং দর্শিতং রূপং প্রাগ্জন্ম স্মরণায় মে। নান্যথা মন্তবং জ্ঞানং মর্ত্যলিক্ষেন জায়তে ॥ ৬৫ ॥ 
যুবাং মাং পুত্রভাবেন ব্রহ্মভাবেন বা সকুৎ। চিন্তয়ন্তো কৃতত্বেহো যাত্যেথে মদগতিং পরাং।

শ্বিধরস্বামী।

প্রাক্ প্রথমং তাবদেতজ্রপং মে জন্ম ইতি শ্বরণার জ্ঞানায় দশিতং মন্তবং মদ্বিয়কং অনস্তরং ওদিছেয়া বালোহপি ভবিষ্যামীতি ভাবং॥ ৩৫॥

শ্ৰীমন্তাগৰতম।

নমু ওয়ি প্রসল্লেহপি কথমাবয়োঃ পুনঃ পুনর্জন্মতি অতঃ পরং ন ভবিষ্যতীত্যাহ যুবামিতি ॥ ৩৬ ॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

ইত্যাহ্যক্তে: অতএব বৈ নিশ্চয়ে অথ কাং স্নৈ পরিপূর্ণতয়ৈব জাত ইত্যর্থ:। ,বাং যুবয়োন্তয়োরেবেতি জন্মভেদেপাছেনং দর্শয়তি। হে সতীতি সত্যং মে ব্যাহ্মতমিতিচ তব পাতিব্রত্যাদি ধর্মস্থ সিদ্ধি ম হক্তেরপি সত্যতা সম্প্রত্যেব পর্যাপ্তাভূদিত্যভিপ্রায়েশোক্তং॥৩৪

ভবতা খিন্ ইতি ভবো বিষয়ঃ আহং বিষয়ে। যদ্য তজ্জানং নির্ণয়ে মহ্বার্রপেণ ন স্যাং জনাত ইতি চিচ্ছুকপাঠঃ। যহা যচোকং রূপঞ্চেনমিতাদি তরাহ এতচত তুর্জাকারং যদ্রপং দর্শিতং তত্বরদানমারতা প্রাচীন তদাকার প্রাহ্রতাব অয় খারণায়ৈর নতু প্রাধান্তাপেশনা নরাকৃতি পরব্রহ্রপেনের খায়ং ভগবতো মন তত্র তত্র প্রতিপাদনা দিতার্থঃ। কিঞাল্লথা প্রকারাত্তরেণ মন ভবো কর তং প্রতীতি র্যা তজ্জানং ন জায়তে। কেনাত্র প্রকারান্তরং তদেবাহ মর্ত্তাভ বিভূজভাদিনা প্রাক্ত মহ্বাভের লিকং চিহুং যত্র তেন গৃহ্দেন নরাকৃতি পরব্রহ্র রূপনেত্যর্থঃ। তত্মাচত্ত্র্জ বিভূজভায়া ক্রীড্তো মন মুখ্যোহিশি তদাকারঃ প্রথমং ন দর্শিত ইতি ভাবঃ। মুখ্যদ্বাধান্ত দর্শিতং একোহিসি প্রথমমিত্যাদি তদমিতং ব্রহ্মান্বরং শিষাতে ইত্যন্ত ব্রহ্মান্বরা বাক্যে। যার্ত্তালি শ্রীভকবাক্যে।
গোপ্ততপ কিম্বর্রিত্যাদিনা শ্রীভকদেবেনাপি খ্রম্পুনোদ্যানেনান্ত্র্দিতে মধ্রাপুরস্থী বাক্যে। যার্ত্তালীলোপ্রিকমিত্যাদি শ্রীমহন্ধব

যুবামিতি বা শব্দ: উপমার্থে বিকরে বা। স্বর্গণে গুণেনচ বৃহত্তমন্তামুখ্যন্তেন ভগবানেবাত ব্রহ্ম তাদৃশভাবেন কৃতরেহে সন্তে মুছ্শিচন্তরেগ্রে)। ভাবদ্বস্থা তুলান্ত্রঞ্চ বিষয় মাহান্ত্রাৎ। পরাং সদগতিং, পর্মবৈকুঠং তল্পমনঞ্চ কশ্রপাদিতিভ্যাং একীভূয়াধিকারান্তে জ্ঞেরং। অন্তব্বে:। অতাবভারিকায়ামিতি কথমিত্যন্ত্রয়:। অত ইত্যাদিস্ত সিদ্ধান্ত:। অথবা তদেবমপি যুবাং সাধকাবিতি ন মস্তব্যং নচ পুন ম'ৎ প্রোপ্তৌ শঙ্কা কার্য্যা বতঃ এতে হি যাদবাঃ সর্ব্যে মদগণা এব ভাবিনীত্যাদি পাল কার্ত্তিকমাহান্ত্র্যবিচনাৎ। যণা সৌমিত্রি

## শ্রীবিশ্বনাপচক্রবতা।

যুবামিতি পুত্রভাবেন নরাকৃতি পরব্রদ্ধ ভাবেন বা কৃত্সেহে। সক্তদেব বা চিন্তরুস্তো পরাং প্রকটলীলাত উত্তরা মপ্রকটলীলাং পুশ্যাদীনাং অংশস্থং দেবকী বস্তুদেবয়োরংশিস্থা । সতি হে কোবিদে। সন্সুধী কোবিদো বুধ ইত্যুমরঃ॥ ৩৪॥

সরি ভবতীতি মন্তবং মথিষয়ং মর্ত্তালিকেন ময়েত্যহন্ত অয়ং পরিপূর্ণ অরপে। মর্ত্তালিকে। ধিভূজ এব নরাক্তি পরএক্ষডাদিতি ভাব:॥ ৩৫॥

এবং স্বপিতৃতাৎ স্বমস্ত্রোপাসনা পটলোক্ত বন্ধদেবাদি ধ্যানপূজাদীনাং সার্ব্বকালিকত্ব প্রদর্শনমপ্যন্যথারূপপত্তি সিবং তয়ে নিজ্য সিবতং সংগোপ্য প্রেমবর্ধনার্থং সাধকত্বমেব থ্যাপয়ন্ সিবিং প্রতিশ্রুতা তাবানন্দয়তি। যুবামিতি। বস্তুতশ্চায়মর্থং। মম প্রথমা গতি রদ্যতনী গোকুলং প্রতি যাত্বেকাদশে বর্ষে মথুরাং প্রতি পুন ভাবিনী তাং পরাং মদগতিং যুবাং যাস্যেথ প্রাপ্স্থাং যাস্যথ ইত্যর্থং। সাম্প্রতন্ত্র ময়া সহ যুবরো বিজেদ এব ভবতীত্যর্থং।

আত্মনায়য়া আত্মনায়া তদিজ্বাদ্যালি বুনায়া জড়াত্মিকেতি মহাসংহিতাবচনাদাত্মেজ্যা প্রাক্তঃ প্রকৃতিক বরূপঞ্চ বভাবকেতি

এ কারণ লোকে আমাকে বামন বলিত। এই তৃতীয় জন্মেও আমি দেই শরীর সহিত তোমাদের গৃহে ঐ রূপে পুনর্বার জন্মিলাম, তোমরা সেই পৃশ্বি ও স্থতপা, আমার কথা সত্য জানিও॥ ৩৪॥

হে সতি! আমার পূর্বতন জন্ম সারণ করিয়া দিবার নিমিত তোমাদিগকে এইরূপ দর্শাইলাম, এ রূপ না করিছে খানব চিহু ছারা মদ্বিয়ক জান জন্মিতে পারিত মা॥ ৩৫॥

কোমরা হুই জনে স্নেহ করিয়া পুত্রভাবে অথবা ত্রন্মভাবে আমাকে চিন্তা করিয়া অতঃপর আমার •পরা গতি প্রাপ্ত হুইবে।

93

ইত্যক্ত্বাসীদ্ধরিস্কাং ভগবানাক্সমায়য়। পিজোঃ সংপশ্যতোঃ সদ্যো বভুব প্রাকৃতঃ শিশুঃ ॥৩৬ ততশ্চ শৌরি র্ভগবং প্রচোদিতঃ স্বতং সমাদায় স সূত্তিকাগৃহাং।

# श्रीभत्रचानी।

যদি কংসাত্তীতোংসি তাই মাং গোকুলং নয় কশোনায়াত কন্যাং মন্মায়ামানয়েতি প্রথমমেব ভগ্রেকা প্রচোদিতো বস্থনেবো যদা বৈষ্ণবভোষণী।

ভরতী যথা সঙ্কর্ষণাদয়:। তথা তেনৈব জায়ুত্তে নিজলোকাল্যল্জয়।। প্নস্তেনৈব গছেন্তি তং পদং শাখতং পরং। ন কর্ম্ম বন্ধনং জন্ম বৈশ্ববানাঞ্চ বিদ্যুত্ত ইতি পাল্লোভরপণ্ডবচনাং। মদীর তত্ত্বয়হায়য় মজ্জয়াইমীপুলাপটলায়্সারাচ্চ। যুবাং নিতামেবৈ তাদ্শৌ। তথাপি মমেব ব্বয়োরপি মংপ্রেইর মংপ্রেমবিশেষমমারাধন প্রচাবার্থং তত্ত্ব তা বাংশেন। সম্প্রতি ব্রম্মের চাব-তরণং লীলামারং। এতদেবোক্তং দ্মেব পূর্ক্রার্থ ভূং পৃল্লিরিত্যাদি। তত্ত এবানস্তরমপি মং প্রাপ্তেই ন সাধন বৈশিষ্ট্য নালের ক্রেমির সাংপিক্ষরং। কিছু তদপি পূর্ক্রেদেব নং প্রাপ্তিম্ব স্বত্রর ইত্যাহ যুবামিতি। পূল্লভাবেনেতি ভাববৈশিষ্ট্যেন তথা মদাবির্ভাববৈশিষ্ট্যেন চত্যর্থ:। বেতাস্কর্মপে পিতরৌ নালবিশ্বেতামিত্যাদিনা পিতরাবুণলকার্বারিত্যাদিনা। স্বহো ভাগ্যমহোভাগ্যমিত্যাদি রীত্যা। ইথং সতাং ব্রম্ব স্থামত্ত্যা ইত্যাদি রীত্যাচ তারতম্যাং। পূর্কেণ মুখ্যেন ইতরেণ গৌণেন বা চিন্তয়ন্তেই ত্রাপি সক্রনের চিন্তয়ন্তেই বা যদ্যেবমিপি সন্তরতি তদাপীত্রথং পরাং অস্যাং প্রপঞ্চ প্রকিলীলা ত্র উল্লাং তদপ্রকালীলা রূপাং মালাতিং যাস্যথ এব নাধুনিক সাধন যোগ্যতাহোগ্যতাভ্যাং ত্রোপকার্য্যতাপ্রকার্যতে ইতি ভাবং। তত্র হেতুং ক্রত্বেরহি ক্রতঃ স্বভাবত এব সিদ্ধং মেহং পুল্লভাবন্যং প্রেমা যােরা স্বেটা স্বভাব সিদ্ধম্ব সম্বামান্থ হিলপান্ত প্রার ক্রম্বরেই স্বলাব বা চিন্তয়ন্তেই অনাং স্বানাং।

ততঃ কিং জাতং ইতাপেক্ষায়ামাহ। ইতীতি। ইত্যুক্ । হবিস্তচ্চতু জং ক্ষপমপহর্তু গোপরিত্ব প্রব্রুদ্ধেন বিধ্যাপিত তরামাসৌ ত্কীমানীং। ততক পিজোঃ সম্পান্তভাবেৰ নৱনাত্ৰ দত্ত দুটোঃ সতোর্জপবান্ স্বরূপভূত ৰাজাগ্যবানসাবাদ্ধমায়য় মায়া স্যাৎ শাষ্ত্রী বুদ্ধো বিতি ত্রিকাণ্ডশেষাং মায়া বর্ষ্ট্রই জ্ঞানমিতি নির্ঘণ্টাচ্চ স্বরূপভূত জ্ঞানশক্ষ্যা বৃদ্ধিসাচ্চিব বিশেষময় শক্ষ্যেতি যাবং যথা আত্মনায়া তদিছল স্যাং গুণনায়া জড়ায়্রিকেতি মহাসংহিতা বচনাং আত্মেছ্য়া। যথা মায়া দত্তে কুপায়াঞ্চেতি বিশ্বকোষাং আত্মক্ষয়। শিশুরাবিদ্ধৃত শৈশবোবভূব। তত্র বিশেষ জ্ঞানার্থমাহ প্রাকৃত ইতি গৌণাা রন্ত্র্যা প্রাকৃত ইবেতার্থঃ। যথা নচাগত্বকাকাবেল তাল্যভূব ইত্যাহ প্রাকৃত ইতি প্রকৃতিক স্বরূপঞ্চ স্থভাব-বিদ্ধ এবেতার্থঃ। অর্থান্তবর্গ কিন্তার কিন্তার বিদ্ধ প্রাকৃত্য ব্যক্তি সিদ্ধমিদং হি মহাম্মনামিতি প্রযোগাচ্চ স্বভাব-বিদ্ধ এবেতার্থঃ। অর্থান্তবরং হি নচান্ত ন বহি র্যসোত্যারতা ববদ্ধ প্রাকৃত্য ব্যথিত পুরিতে বাক্ষ্যে দাইণিস্তিক দৃষ্টান্তাভাগ নির্মনীয়ং বাতীই লীলাক্রমমের প্রকৃত্যত স্ত্র্যা সর্ব্ধনের তত্ত স্থভাব বিদ্ধমেবেতি ভাবঃ। বক্ষাতেচ গর্মেণ বহুনি সন্তি রূপণি নামানিচ স্কৃত্যা তে ইতি॥ ৩৬॥

ভগবতা প্রচোদিত ইতাত্র ব্যক্তোজিবের তথা শ্রীংরিবংশে বস্থাদের বচঃ শ্রাভারপং সংহরদচ্যতঃ। অনুজ্ঞাপ্য পিতৃত্বেন নন্দ্রগোপগৃহং নয়েতি। স্থার্থাঃ সংহরৎ সমহর্থ কিং কৃত্বা নন্দ্রগোপগৃহং নয়েতি পিতৃত্বেন পিতৃত্বেন মুজ্ঞায়েত্যর্থঃ। সম্যগাদায় • ক্রমসন্দর্জঃ।

योत्राथः ॥ ७७ । ७२ । ७৮ । ७२ । ८० । ८२ । ८२ । ८७ ॥

## প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

পর্য্যায়াৎ প্রকৃতি সিন্ধমিদং হি মহাত্মনামিতি শিষ্টপ্রয়োগাচ্চ স্বভাবসিদ্ধ ইত্যেবার্থ:। অর্থান্তরম্ভ ন চান্ত ন বহি র্যান্যত্যারভ্য ববন্ধ প্রাকৃতং যথেত্যপ্রিমে বাক্যে লাষ্ট্রণিত্তক দৃষ্টাক্তাভ্যাং নিরসনীয়ত্বাৎ । ৩৬॥

ভগৰতা প্রচ্যোদিত:। যদি বিভেষি তহি মাং গোকুলং নর যশোদারান্চ তাং কন্যাং মন্মারা মানরেত্যাদিষ্ট: স বহুদেব: অপাদ নিগড়ং অরমেব প্রস্তং বীক্ষ্য বদা গন্তমৈছেৎ জ্বদা সা নক্ষ্যায়রা নিমিত্তভূত্ত্বা অন্ধনি জাতা। কিঞ্চ গর্তকালে ভ্নংপূর্ণে অইমে মাসি তে

শুকদেব কহিলেন হে রাজন । ভগবান্ হরি ঐ প্রকার কহিয়া ভূফীস্কৃত হইলেন। পরে দর্শনকারি পিতা মাতার সমক্ষে নিজ মায়াবোগে প্রাকৃত বালক হিলেন॥ ৩৬॥

অনন্তর যদি কংস হইতে ভয় পাও তবে আমাকে গোক্রে রাখিয়া, আমার যোগমায়া যশোদার-কন্যা হইয়া অন্মিয়াছেন, তাঁহাকে লইয়া আইস, এই প্রকার ভগবছাকো প্রেরিত হওয়াতে যখন

যদা বহির্গস্তমিয়েষ তর্হাজা যা যোগমায়াইজনি নন্দজায়য়া॥ ৩৭॥
তয়া হৃত প্রত্যয়স্ববর্তিষু ঘাংশ্বেষু পৌরেষুচ শায়িতেবথ।
ঘারশ্চ সর্বাঃ পিহিতা ত্রত্যয়া বৃহৎকবাটায়সকীল শৃভালৈঃ॥ ৩৮॥
তাঃ ক্ষেবাহে বস্থদেব আগতে অয়ং ব্যবর্যন্ত যথা তমোরবেঃ।

# डीश्रवागी।

গদ্ধনৈচ্ছৎ তলৈবচ যা অজাপি যোগনায়া দা নলগায়য়। নিমিত্তমাত্র ভূতয়া অজনি জাতা 🖟 ৩৭ ॥

ক্তা: প্রতায়ার্থা: সর্কর্ত্তয়ো বেষাং অথবা হতা: প্রতায়। অন্যাশ্চ সর্বা বৃত্তয়ো বেষাং জাগ্রতামপি তথা ভূতের দাবশালের সংস্থ রংংস্ক কবাটের সৌহকীলক যুক্ত শৃত্তলৈ বৃহিত্তি: কবাটাদিছি দুর্গিতায়া ইতি বা॥ ৩৮॥

স্বয়মেৰ ব্যবৰ্য্যন্ত বিবৃতা ইত্যৰ্থ:। ব্যব্ৰিয়স্তেতি বক্তব্যে গুণশ্ছান্দসঃ নুবেনিমিডাং ॥ ৩৯ ॥

# देवक्षवर्टावनी।

কোমল বন্ধান্ত পেটিকাবাং স্থাং নিধায় তাং শিরস্যাধায় কিছা সাবধানং শলৈ: শলৈ: করাভ্যামুখাণা নিজাছে নিধায় বাছভ্যমা-নিষ্যানিব গৃহীয়া সং অনির্বাচনীয়ভাগ্যবান্। তত শ পাদনিগড়: বয়মেব ভ্রষ্ট ইতি জেমং তহীত্যতা বিশেষঃ প্রীহরিবংশে নবস্যা-মেব সংজাতা কৃষ্ণপক্ষস্য বৈ তিথাবিতি॥ ৩৭ ॥

তরেতি যুগাকং। প্রতিষো জ্ঞানং বাংশ্বাং বারহিতাং রক্ষিণো বারপালান্চ তেরু। তথাচ শ্রীবিক্পুরাণে মোহিতান্চাভবংকত রক্ষিণো বোগনিজ্রা। মধুরাবারপালান্চ ব্রজ্ঞানকর্মপুভাবিতি মোহনাদিকক্ষ মাররা এব বোগ্যমিতি তথা তর্তকং প্রকাশনদ্ধ শ্রীজগবত এবেতি তথৈব তদাহ বারশেচতি অথানন্তরং সদ্যএবেত্যর্থ:। যাং পিহিতা মুদ্রিভাতা বারোপি ছাল্লীনাং হৃতপ্রতারাদিখং নক্ষণীক্ষতা শ্রীবস্থদের আগতে সতি অয়মেব বির্তা ইত্যুথ্ তান্চ কথমপ্যানবাট্রিত্থ ন শক্যু ইত্যাহ রহৎ কবাটাদিভি হ্রি-ত্যায়াঃ। ৩৮॥

কৃষ্ণ: কৰি ভূ বাচক: শব্দো গশ্চ নির্বতি বাচক:। তরোরৈক্যং পরং ব্রন্ধ কৃষ্ণ ইতাভিধীয়ত ইতাভ্নারেণ সর্বাকর্ষক প্রমানন্দ খনস্থিতি তথ্য বাহে বাহক ইতি বহনাদিশ্রমে। নিরতঃ। প্রত্যুত প্রমানন্দ এব ব্যঞ্জিতঃ। তথা সংসারবন্ধদি কর্ষতি হরতীতি কৃষ্ণ

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।
ক্রিমৌ। দেবকী চ যশোদা চ স্থ্যতে সমং তদেতি ইরিবংশবাক্যে সমং সহ সমকালমের স্থ্যত ইতি তক্রাবগমাদক্র তু দেবকী
প্রসবোত্তর কাল এব যশোদা প্রসবদর্শনাছ ভ্রোরেব শাক্রবাক্যয়োরতিপ্রামাণ্যাদের মনসীয়তে। বদৈব দেবকী ক্লকং স্থব্বে তদৈর
যশোদাপি ক্লকং স্থব্বে তদনস্কর সময়ে যোগমারাক স্থব্বে ইতি কালভেদেন তদ্যা বি: প্রসব এবেত্যত এব অদৃশ্যতাস্কা বিকো:
সাম্বাই মহাভূজেতি বক্ষাতে। কিক যশোদা প্রস্তব্য ক্ষাস্য চতুত্ ভ্রাদ্যম্বকে ন বাক্তি প্রক্ষরাক্ত বিভ্রম্বনের ব্রোজত ইতি ॥৩৭

তথা গোলনাথার হতাং যায় জ্ঞানদ্য দর্ধা বৃত্তরো বেষাং তেরু ঘাংছেরু ঘাবপালেরু শান্তিতেরু দংখিতি জ্ঞানহরণং যোগমারাংশ ভূতারা মানাথাং কার্চাং । যা ঘারং পিহিতান্তাব্যব্যান্ত ব্যত্তিরন্ধ বিনৃতা ইত্যর্থং । বৃহৎ কপাটগতৈরার্থ কীল শৃল্পলৈ ছ্বিত্যরাং ছরতিক্রমাং ।। ৩৮॥

রবে নিনিতাং। উপাংশু মন্দ মন্দং পর্জিতং যদ্য দাং। কণৈশ্বনীকৃতৈরিতার্থং। শ্বাদিন পরীধান পাত্নকা ছত্ত চানরিং। সেই পুত্র গ্রহণ করিয়া সৃত্তিকা গৃহ হইতে বহির্গমনে বস্তুদেবের বাঞ্ছা হইল, সে সময় ভগবানের যোগমায়া জন্ম রহিত হইয়াও নন্দজায়ার পর্ট্রে জন্ম গ্রহণ করিলেন। ৩৭।

রে রাজন্! সেই মায়ার প্রভাবে সমুদায় দারপালের যাবতীয় ইন্দ্রির রম্ভি অপহত হইল অর্থাৎ তাহারা জাগ্রৎ থাকিয়াও অচেতন হইয়া পুড়িল এবং পুরবাদি সকলে নিদ্রায় অভিভূত হইয়া শয়ন করিল। বয়দেব দেবকী যে গৃহে ছিলেন তথাকার দার সকল বৃহৎ রহৎ কবাট, লোহ কীলক এবং লোহ শৃত্তর বন্ধ হইয়াছিল॥ ৩৮॥

কিন্তু বহুদেব শ্রীকৃষ্ণকে লইয়া বছির্গমনার্থ উদ্যত হইলে বেমন রবির উদরে জন্ধকার স্বয়ং বিমোচিত হয় তাহার ন্যায়, সে সকল উদ্যাতিত হইয়া গেল। রাজন্! তৎকালে মেঘ সমূহ মাদ ববর্ষ পর্জন্য উপাংশু পর্জ্জিতঃ শেষেছেরগানারি নিবারয়ন্ কণৈঃ॥ ৩৯॥ । মঘোনি বর্ষত্যসক্ষমাসূজা পঞ্জীরতোরোঘ জবেশির ফেণিলা। ভয়ানকাবর্ত্ত শতাকুলা নদী মার্গং দদো সিন্ধুরিব গ্রিরংপতেঃ॥ ৪০॥ নন্দব্রজং শোরিরুপেত্য তত্ত্ব তান্ গোপান্ স্তম্প্রামুপলভ্য নিদ্রো।

### अभवत्यामी।

গভীরো মজোরোম জন্য জবেন বেঁ উর্মারকৈ: কৈণিলা ফেশব্যাস্থা ভ্রানকৈরাবর্ত্তনতৈ ব্যাপ্তাপি প্রির:পতে: দীতাপতে: ॥ ৪০ ॥ নিজ্যা অজ্যা ॥ ৪২ ॥

## বৈক্ষবতোষণী।

ন্তৰাহ ইতি বন্ধং বাৰি কুতোচ হেতৃ:। ব্যবগ্যন্তিতি কর্মকর্ত্তরি প্রবেগণঃ কর্ত্তাচার্থাৎ প্রীবস্থদেব এব তমো যুগোনবাটিতং স্যাদিতি দৃষ্টান্তেন তদাগমনাং পূর্ব্ধমেব ক্রমেণ সমাধিবৃতি ধ্বনিতা পর্ক্ষন্যো গর্জন্মেয় উপাংশু মলং মলং গর্জিতং যস্য সঃশেষ ইতি সমরে নিজনেবা সিদ্ধরে পার্বদ প্রবরঃ শ্রীমাননন্ত এব। শ্যাসন পরীধান পাছকা ছেত্র চামরৈ:। কিং নাভূত্তস্য কুঞ্চন্য মৃতিভেট্নে স্বিভিত্তি ব্রহ্মা ওবচনাং। অবগাং প্রীবস্থদেবস্য পশ্চাদগছেং। তথাচ বিষ্ণুপুরাণে। বর্বতাং জলদানাঞ্চ তোম্বস্তুমবণং নিশি। সংছাদ্যান্ত্র্বেথী শেবঃ ক্রেণ্ডান্ত্রিক্ষিতি। তচ্চ তেন অপিরসি মহাবৃষ্টি নিবারণং যং কিঞ্চিল্লিক্ত মেব জ্বেমং চিত্তরা বর্জনানে বৈরত্যে সদ্যঃ স্থদ চমংকার হেতৃত্বেন বোগ্যন্তাং॥ ৩৯॥

মঘোনি শক্তে বর্ষতীতি অন্তাপি মারামোহিতজনত্বে তদজানাদনৌ খ্রীবস্থদেবাদর্শনাদ্যর্থমেব বৃষ্টিমকরোৎ। যা থবু জল ভ্যোরেকতাপাদনেন তদ্য সহসা যমুনাবগাহেহপি হেতুরভূং। তত্রাসক্তবঞ্চ তৎ ক্লেশ শঙ্করা মধ্যে মধ্যে বিজেদনাং। সচ বিজেদো নির্জনদেশ ইতি জ্বেরং। বমাস্থজেতি তদানীং পরম ভীষণবাদ্যভিপ্রারেণ। তদেবাভিব্যঞ্জরতি গল্পীরেত্যাদি বিশেষণাজ্যাং। অন্তত্ত্ব নদীতি মহাশক্ষ যুক্তবঞ্চ লেবেণোক্রং। তথাপি যথা সীতাপতেঃ সমুক্ত তথা সা ঞ্রীবস্থদেরদ্য মার্গং দদৌ। পরার্ত্তাবপি তদ্যাব তদানাং অতত্ত্ব বৈর্প্রার্থীর বিজেদ্বার্থীরাং নানাবর্ত্ত পত্তাক্লাং। বস্থদেবো বহন্ বিকুং জায়ুমাত্রবহাং য্যাবিতি॥ ৪০॥

উপেতা সমীপে গছেতি বন্ধাদিকমন্ধানতোহপি তদ্য দৈবদাহায়াং স্চতিং নারবন্ধাদি বিমোকস্ত পূর্ববং। তুদানীং প্রীয়ণোদা সমীপে সমতিব্যক্ত শৈশব মাধুর্য্যেণ শ্রীবহুদেবদা স্বস্ত চাক্সইচিত্তথাচ্ছিত্রমিত্যক্তং। স্কুতনিতি ক্ষচিং পাঠ: নিধার নিধিমিব গৃঢ়ং ন্যায়। তদ্যাঃ স্কুতামুপাদার মারাজেন কন্যাজেনচ কংসবঞ্চনার্থস্পাদেরজ্বনচ গৃহীত্ব। এবচ শ্রীভগ্রতি স্নেহ তর এব। যদ্ধং মারাজেন

# শ্ৰীবিশ্বনাগচক্র বর্তী।

কিং নাতৃত্বস্য কৃষ্ণস্য মূর্ত্তিভেদৈ চ মূর্তিখিতি একাগুপুরাণাৎ॥ ৩৯॥

তোরোঘ ভোরসমূহ: প্রিয়:পডে: সীতাপ্তে: ॥ ৪ • ॥

তংস্তামুপাদারেতি কংলাৎ **অপ্ত্রা রক্ষণং মিত্রপূত্রা বধং জানতো**≱ণি প্রমধার্মিকস্যাপি বস্থাদ্বস্যায় মন্যায়ে ন দ্ধণং

মন্দ গৰ্জন পূৰ্বক বারি বৰ্ষণ করিতে ছিল সত্য, কিন্তু তাহাতে বহুদেন্দের প্রমন ব্যাঘাত হইল না। অনন্তদের বীয় ফুগা দারা জ্বল নিবারণ করিতে করিতে তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে লাগিলেন॥৩৯

ইন্দ্র শনবরত বর্ষণ করিলে যদিও গঞ্জীর জল প্রবাহের বেগে প্রবল তরঙ্গ হইরা যমানুজা যমুনা বোরতর ফেশিল এবং ভয়ানক শত শত আবর্ত শঙ্কুল (ব্যাপ্ত) হইরাছিল, তথাপি সাগর যদ্রপ দীতাপতি রাম্চক্রকে পথ প্রদান করিয়াছিলেন তাহার ন্যায়, ঐ নদী বস্থদেবকে যাইবার নিমিত্ত বন্ধ প্রদান করিলেন॥ ৪০॥

সে যাহা হউক, বহুদেব নন্দত্তকে উপনীত হইয়া দেখিলেন ভগবানের মায়া প্রতীবে গোপেরা সকলেই নিদ্রিত হইয়া রহিয়াছে অতএব আপনার পুরুটী যশোদার শয়নে স্থাপন করিয়া তদীয় শিশুং যশোদাশয়ৰে নিধার তৎ হৃতামুপাদার পুন গৃহানগাৎ॥ ৪১॥

দেবক্যাঃ শয়নে ন্যাস্য বস্থাদেবাহেথ দারিকাং। প্রতিমূচ্য পদোর্লোহমান্তে পূর্ববদার্তঃ॥ ৪২॥ যশোদা নন্দপত্নীচ জাতং পরমবৃধ্যত। নতল্লিকং পরিশ্রাস্তা নিদ্রয়াপগতক্ষ্তিঃ॥ ৪৩॥

॥ अ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতারাং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে শ্রীকৃষ্ণা-বতারস্তৃতীয়োহধ্যায়ঃ ॥ अ॥ ৩॥ अ॥

## वीधतवामी।

প্রতিমূচ্য বন্ধা পলোঃ পাদয়োঃ লোহং নিগড়ং আত্তে শ্ব ॥ ৪২ ॥ জাতং কিঞ্চিদিতি কেবলং অব্ধাত নতু পুত্রঃ কন্যা বা ইতি নিদ্রন্না চ মোহিতেতি ॥ ৪৩ ॥

॥ \* ॥ ইতি দশমে তৃতীয়: ॥ \* ॥

#### देवक्षवरजावनी।

জ্ঞাতায়া স্কৃপি স্বীকার:। তথা মিত্রপুঞ্জীডেন প্রতীয়মানায়া অপি কংসকার্য্য বধ দোষানপেক্ষণং। গৃহানিতি চিস্তাব্যাকুলস্য শ্রীদেবকী লক্ষণস্য নিজগৃহস্য ততো মুহু: ক্রিতদ্বেন বছর নির্দেশঃ॥ ৪১॥

দারিকাং বালিকাং শয়নে ন্যাস্যতি তস্যা উদর্ক শোক বৃদ্ধি শঙ্করানাদরেণৈর শয়ন এব ন্যুস্য ন পুনর্ক্ষ ইত্যর্থঃ। পূর্ববিদার্তঃ ক্রাটাদিভি নিক্সক্ষঃ ॥ ৪২ ॥

যশোদেতি তাদৃশ পুরোৎপত্যা শ্রীনন্দস্য ব্রজস্য কীর্টিবিতারণাভিপ্রায়েণ তথা নন্দরতি পুরোৎপত্ত্যা জপদিতি নন্দথাভ্স্যাপি তদানন্দতা হচিতা। তস্য পত্নীতি তস্যা অপি জগদানন্দকত্বং তথা তৎ পতিত্বেন তস্যাপি যশো বিতারণং হচিতং পরিপ্রান্তা প্রসন্ন শ্বভাবেন জাতাত্যজ্জপ্রা। নিজ্যা যোগনিজ্যা অতঃ স্বত্তরাং তৎ পরিজনানামপি তাদৃশত্বস্থা। তথাচ শ্রীবিকুপুরাণে। তামিন্ কালে যশোদাপি মোহিতা যোগনিজ্যা। তামেব কন্যাং মৈত্ত্রন্ধ প্রস্তা মোহিতে জন ইতি। পশ্চাৎ পুত্র দর্শনেন পরম হাষ্টাভূদিতিচ জ্বেয়ং। তথাচ তামেব ক্রাণ্যান্থ লগাত্মান্ত্রা বাংলাদা জাত্মান্ম লগাং নিলাংপল দর্শন্যানং ততাহত্যর্থং মুদং য্যাবিতি॥ ৪০॥

॥ \* ॥ ইতি বৈষণ্ৰতোষণ্যাং শ্ৰীদশ্মটীপ্ল খাং তৃতীয়: ॥ \* ॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ 🛊 ॥ ইতি দশমে তৃতীয়: ॥ 🛊 ॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

প্রত্যুত ভূষণমেব পুত্রীভূতে ভগবতি বর্দ্ধিঞ্লেহেনৈব তাদৃশ বিবেকাপহারাং॥ 8>॥

প্রতিম্চা বন্ধ। পদরো পোহং নিগড়ং আরুত: আত্তে স্ব ॥ ৪২ ॥

পরং কেবলং জাতমব্দ্ধাত নতু পূল্র: কন্যাবেতি। তদ্য জাতদ্য চিহ্নং। তত্র হেতুং পরিশ্রান্তা অতিদৌকুমার্যাৎ প্রসবোধ শ্রম্বতা প্রদাবন্ধ চানন্দেন শ্রমোপশাস্ত্যা চ নিদ্রবেতি। কিঞ্চান্ত চকার উক্ত সমূচ্চরে। যথা বন্ধদেবপদ্ধী তথা নন্দপদ্ধী চ জাতং ফার্ডাছ্ংপদ্ধপত্যাং পরং সর্ব্বোৎকৃষ্টং অবৃদ্ধাত তক্ষাধুর্যাস্বাদ শক্তৈয়ে তদ্বরুষা তদীর স্বর্ধপভূতা নন্দমমূভব গোচরী চকারেত্যর্থ:। কিছু তদ্য লিহুং পরমেশ্বরো হরমেবেতি লিহুং বিশেষং ন অবৃদ্ধাতেতি ভেদঃ। নমু তদ্যা গ্র্ত্তাই কৃষ্ণ ইতি ন প্রসিদ্ধং তত্রাহ্ বিশোদা তাল্বশো দদাতি দেবকৈয়া স্থীভাবাৎ দে নামী নন্দভার্যায়া যশোদা দেবকীতি চ। অতঃ স্থামভূত্রসা দেবক্যা, শৌরী ক্ষার্যেত্যাদি পুরাণ্রচন্নব্রাদিত্যপ্রি:। ক্যাথানমিদং ভাগবতামৃত বৈক্ষবতোষণ্যানন্দ্রন্দাবন্দি সংমত্যৈবতি নোপেক্ষীরং॥ ৪০॥

॥ \* ইতি সারার্থদর্শিণাং হর্ষিণাং ভক্তচেতসাং। তৃতীয়ো দশমে ক্ষত্তে সক্তঃ সক্তঃ সতাং॥ \* ॥

তনয়া গ্রহণ পূর্ব্বক পুনরায় গৃহে আগমন করিলেন॥ ৪১॥

অনস্তর দেবকীর শয়নে কন্যাটী রাখিয়া আপনার পদৰয়ে লোহ নিগড় বন্ধন পূর্বক পূর্ববৰ বন্ধ-নাবস্থায় রহিলেন ॥ ৪২ ॥

হে রাজন্! . নন্দপত্রী যশোদা যথন কন্যা প্রসৰ করেন তৎকালে কোন একটা উৎপন্ন ইইল এতাবলাত্র কাহার বোধ ইইয়াছিল, পরিপ্রান্তা ও মায়া বারা অপহত স্মৃতি হওয়াতে তাহার চিহ্ন অর্থাৎ পুত্র কি কন্যা জানিতে পারেন নাই॥ ৪০॥

.॥ \*॥ ইতি জীদশমে তৃতীয় ॥ \*॥

b-0

শ্ৰীশুক উবাচ॥

বহিরন্ত:পূর্বার: দর্বা: পূর্ববদার্তা:। ততো বালধ্বনিং শ্রুত্বা গৃহপালা: সম্থিতা:॥ ১॥ তেতু ভূর্নমুপত্রজ্য দেবক্যা গর্জন্ম তথে। আচখ্যভোজরাজায় যতুৰিয়: প্রতীক্ষতে॥ ২॥ দ তল্লাভূর্নমুখায় কালোহয়মিতি বিহ্নল:। সূতীগৃহমগাচ্ছীত্রং প্রস্থানমুক্তমুর্জ্জ:। তমাহ ভ্রাতরং দেবী কৃপণা করুণং দতী। সুষ্যেয়ং তব কল্যাণ স্থিয়ং মাহস্ত মেইসি।

## श्रीधतवामी।

চতুর্থে চণ্ডিকাবাক্যমাক্ণ্যাতিভয়াকুল:। হর্মক্রিভিহিতং মেনে কংসো বালাদি হিংসনং॥১॥ তং অষ্টমং জন্ম॥২॥

## বৈষ্ণবতোষণী।

আর্তা লগা বভূবুং স্বয়দেব। ততভদনভর্মেব বালভ বালজাতেখ্ব নিং জাতমাত্রভ স্বভাবতো রোদন শকং। সতঃ সামান্যতো ন স্বীবং। গৃহপালা রক্ষিণং শ্লেষেণ কুকুরা ইব। স্বয়ক্ সাবধান মুদ্যতাস্ত ত্যোখিতাঃ॥১॥

উপব্ৰঙ্গ তত্ৰ তেবামনধিকারেছপি সমীপে গন্ধা ভোজরাজার তং বিজ্ঞাপয়িতুং॥ ২॥

কাল: হস্তং সময়োহয়ং কিস্বা সাক্ষামূ ভূয়েরয়মাগত ইতি। বিহবলো ভয়ব্যাকুল:। অতএব প্রাথালন্ ইভন্ততো নিপতন্ উত্তরার্কে শীঘ্রু ভূগমিতি বা পাঠঃ॥

প্রাতরমিতি তং প্রতি তাদ্শোকৌ যোগাত। তক্ত হুরাত্মতোকা করণং যথাকাং। সতীতি তক্ত। বৈরুব্যেন তক্ত সাহুগকাচিরাদের নাশ: সম্চিত এবেতি ভাব:। দেবী অপুপ্রক গোপনং দিষ্ট্যৈব ময়া কৃতমিত্যক্তর্দ্যোতমানা প্রিয়সখ্যা যশোদায়া: কক্সকা বধ শহয়া কপণা হংথিতাচ সতী। তব সুবা পুপ্রবধ্ ভবিষ্যতীতি প্রথমং তাবলোভং জনয়তি। তদবজ্ঞায়াষ্ট্রমগর্ভতামাশক্ষাচ তামাচ্ছেত্ মুদ্যতং প্রতাহ ব্রির মিতি অসমর্থামবধ্যাক্ষেত্রেই:। তচ্চ তব যুক্তমেবেত্যাহ কল্যাণ হে ধার্মিক্তি যয়া হে আয়ুয়ন্ইতি মৃত্যুভয়ং নিবর্ত্র্যতি ॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

বালদ্য বালকজাতে ধ্ব নি: 4 ১ ॥ ২ ॥

মন কালোয়ং জাত ইতি সুষাভবিষ্যৎ পুত্ৰস্য বধু ভবিষ্যতি। তদেব জানস্তমাহ। ক্রিয়মিতি দীনদীনবদিতি দৃষ্ঠাত্ব: নতু গৌণ-তোক্তি: শ্রীযশোদায়া নিজস্থী হাৎ সমুদ্ধিকে ভবদ্ধেতোরিত্যাদিবৎ স্নেহল অভাবদাচ্চ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

মানাবাকোন কংসদ্যামভাপো দেবকী ক্ষমা। ছম খ্রিভি ম ব্রণাচ চতুর্থে কথাতে কথা॥ •॥

বালধ্বনিং জাতমাত্র বালক রোদনশব্দং। গৃহপালা: খান ইব॥ ১॥

তদপ্তমং গর্ত্তক্র ॥ ২ ॥

কালঃ বালকং হত্তমন্বমেৰ সমন্ত্ৰ ইভি। যথা মন্ত্ৰুনিভি ভয়েন ॥

দেবী স্থপ্ত্রত গোপিতবাদম্ভ দে ্যাতমানা। সংগাঃ কল্পেয়মপি জীবছিতি কুপণা সতী তংপ্রতারণে কোবিদা। স্বা তব ভাবিনঃ প্রত্যেয়ং বধ্ প্রবিষ্যতীতি বৃদ্ধা। তদপি বলাদাচ্ছিদ্য জিম্বক্ষশ্বং তমাহ দ্বিয়ং পশ্যেষমবলা হে কল্যাণেতি স্তীবধোথ পাপেন তবা-কল্যাণং মাভবছিতি ভাবঃ ॥

চতুর্থ অধ্যায়ে চণ্ডিকা বাক্য শ্রাবণে কংসের অতিশয় ভয় এবং ছুর্মন্ত্রিদিগের কুমন্ত্রণায় বালকাদি হিংসায় প্রবৃত্তি । ।।

শুক্রের কহিলেন রাজন্! বহুদেব পূর্ব্বেৎ নিগড় বন্ধ হইয়া বসিলে বহির্ভাগস্থ অভ্যন্তরস্থ সমুদায় পুরম্বার পূর্ববেৎ স্বয়ং আবদ্ধ হইল। তদনস্তর বালক ধানি শুনিয়া গৃহপাল সকল জাগিয়া উটিল ॥ ১॥

এবং শীত্র প্রমন পূর্বক দেবকীর অন্তম গাই জন্ম কংসের নিকট নিবেদন করিল; এ ছুরাত্মা উদিগ্র ইইয়া উহারই প্রভীকা করিডেছিল ॥ ২ ॥

অতএব প্রবণমাত্র সম্বর শয্যা হইতে গাত্রোখান করিল এবং এই বুঝি আমার কাল, ইহা বিবে-

বহবো হিংসিতা ভ্রাতঃ শিশবঃ পাবকোপমাঃ। ত্বয়া দৈবনিস্ফেন পুব্রিকৈকা প্রদীয়তাং॥০॥ নশ্বহং তেহ্যবরজা দীনা হতস্থতা প্রভো। দাতুমহ সি মন্দায়া অঙ্গ মে চরমাং প্রজাং॥৪॥ শ্রীশুক উবাচ॥

উপগুছাত্মজামেবং রুদন্ত্যা দীনদীনবং। যাচিতন্তাং বিনির্ভর্পে হস্তাদাচিচ্ছিদে খলঃ 🛭 ৫ ॥

# औधवश्वामी।

কালোমৃত্য়: ॥ ৩ ॥

অঙ্গ হে ভ্ৰাতঃ॥৪॥

দীনদীনবং দীনাদপি দীন ইব নতু তথা পুত্ৰস্যান্যত্ৰ নীতথাৎ সাচ যোগমান্ত্ৰে জ্ঞাতথাং যাচিত্তাহপি থলঃ আচিত্তেদ আকৃষ্য জগ্ৰাহ॥ ৫॥

# देवकवरकायनी।

ভাতরিতি স্নেহং জনমতি পাবকবতেজ্বস্থিন:। বহব ইতি নির্দয়তমুক্ত্রণ গ্রুমানাহ দৈবেতি। একেতি পূঢ়োপালস্কঃ দৈল্য:॥ ৩॥ কার্পণাথ সেহমুৎপাদম্বস্ত্রী পুনরপি তথৈব প্রার্থতে। নম্বিতি নিশ্চয়ে হি যতঃ দীনা বন্ধনাগার বাসাদিনা। প্রতা হে অদের দানেপি সমর্থ। মন্দারে পুত্রভাগ্যহীনায়ে মে মহং। ইমামিতি পাঠে ইমামপীত্যর্থঃ সদ্যোজাতাং কিঞ্চিদপি কর্জু মুক্ষমাং নতু অন্তমগর্জাদিয়ং ক্লাবশ্র হস্তব্যা বত্রশক্ষমাং বার্দ্ধক্যেন জন্তুরেনাপান্তাপত্যোৎপত্তি সন্তাবনা নির্জেঃ॥ ৪॥ .

আত্মজামিতি বশোদর। সহাক্যা: সংখ্যানাভিন্নতং বিবক্ষরা অতএব দীনদীনবদিতি দীনদীনো যোজন শুদ্ধ কর্মধাররবছত্তর পদেবিতাধিকারন্থন প্রকারেণ গুল বচনক ইতি ক্তেণ দিরুক্তাহি দীনদীন: সিদ্ধাতি। জীতভীত ইব শীতমযুধ ইতি বং। মারা দিইজানেপি স্নেহেন শ্বভাবেন। জ্বুরে নীচে ২ধমে ধল ইতি বিশ্বঃ॥ ৫॥

#### ক্ৰমদন্ধৰ্ভ:

আত্মজামিতি ভিরাম তরৈবোক্তং॥ ৫॥ ৬॥

#### श्रीविश्वनाथहळ्ववा।

বহব ইতি। নির্দিষ্ণ মৃক্ত্ব। শ্রুমানাহ দৈবেতি মনৈবৈজদুরদৃষ্টং তব কো দোষ ইতি ভাবঃ প্রদীরতামিত্যনেন স্বরাপি মাং শ্ন্য-ক্রোড়াং মাকুর্বিতি দৈলঃ॥ ৩॥

#### অঙ্গ হে ভ্ৰাতঃ॥৪॥

এবমনেন প্রকারেণাগ্রজাং স্বকন্যামিবেত্যর্থ: । দীনদীনবৎ দীনাদপি দীনজন ইব নতু তথা তস্তাঃ স্বাপত্যবাভাবৎ। তাং দেবকীং। আচিছিদে সাক্ষয় অগ্রাহ॥ ৫॥

চনা করত বিহল হইল। তদনন্তর ইতস্ততঃ স্থালিত ও মুক্তকেশ হইয়া দীব্র দেবকীর সৃতিকা গৃহে দোড়িয়া গেল। হে রাজন্! লোতাকে আগত দেখিয়া দীনা দেবকী সকরুণ বচনে কহিতে লাগি-লেন হে কল্যাণ! এটা তোমার সুষা অর্থাৎ তোমার পুত্রবধৃ হইবে, ইহাকে মারিয়া স্ত্রী বধ করা উচিত হয় না। ভাই! তুমি দৈবপ্রেরিত হইয়া অ্যা তুল্য অনেক শিশুর প্রাণবধ করিয়াছ, একটা কন্যা আমাকে দাও॥ ৩॥

প্রভো! আমি তোমার কনিষ্ঠা ভগিনী, সুকল সন্তান গুলি নিহত হওয়াতে নিতান্ত বিনা হই-যাছি। শেষের কন্যাটী এ অভাগিনীকে অসুগ্রহ করিয়া দিতে যোগ্য হয়েন॥৪॥

হে রাজন্! কন্মানিক আলিঙ্গন করিয়া দেবকী দীনা অপেকাও দীনার ন্যায় হইরা ঐ প্রকারে যাক্রা করিতে থাকিলেন, তথাপি ছ্রাত্মা কংদের দয়া হইল না। ভর্পনা করিয়া তাঁহার হন্ত হইতে কাড়িয়া লইল। ৫॥ তাং গৃহীত্বা চরণয়ো জাতমাত্রাং স্বস্তঃ স্থতাং। অপোথয়চ্ছিলাপৃষ্ঠে স্বার্থান্ম লিত সৌহদঃ॥৬॥
দা তরস্তাৎ দমুৎপত্য দদ্যো দেব্যম্বরং গতা। অদৃশ্যতামুজা বিষ্ণোঃ দায়ুধান্ট মহাভুজা।
দিব্য স্রগম্বরালেপ রত্বাভরণ ভূষিতা। ধমুঃ শূলেষু চর্মাদি শব্ম চক্র গদাধরা।
দিদ্ধচারণ গন্ধবৈরপ্দরঃ কিন্নরোরগৈঃ। উপাহতোরু বলিভিঃ স্থুয়মানেদমত্রবীৎ॥৭॥
কিং ময়া হতয়া মন্দ জাতঃ থলু তবাস্তব্ধৎ। যত্র কচিৎ পূর্ববশক্র মাহিংদীঃ রূপণান্ রুথা॥৮॥

# वीधत्रवामी।

অপোথয়ৎ বলেন চিক্ষেপ॥ ৬॥

मना এব দেৰী ভূষা॥ १॥

কপণানিতি অন্যান্ শিশুন হনিষ্তীতি জ্ঞান্বা বাবয়তি। ক্বপণামিতি পাঠে মা মাং ক্বপণা॰ রুথাহহিংসীঃ হিংসিতবানসীতি। यहा

## বৈষ্ণবৃত্তোবণী।

থলমনেব দর্শয়তি তামিতি জাতমাত্রাং গর্জনাদি ক্লিয়ামিত্যর্থ:। তথাচ শ্রীহরিবংশে সা গর্জশয়নক্লিষ্ট। গর্জায়্কিয়মুর্জজেতি ॥ ৬ ॥ সা তর্জতাদিতি ব্য়াকং। সদ্য: সম্পেত্যাধ: কিপ্সমাণাপি বলাদ্র্জম্পুত্য। অত বিশেষো ভবিষোত্তরে। কংসায়্রভোভমাঙ্গে পাদং দত্য গতা দিবমিতি। দেবী দিব্যরূপা সৃতী। অদৃশ্রত কংসাদিভি: সর্বৈধা। তচ্চ নিজোক্তো কংসশ্র বিশাসার্থং মহাভুজ্জেন মহাকারজ্ঞ বিভীষিকার্থং॥

সিক্ষেত্যাত্যপলকণং॥ १॥

মন্দ হে অল্লব্ৰন্ধে নয়। ইতা যদ্যহং হতাপ্যভবিষ্যনিত্যৰ্থ:। যন্তবাস্তং করিষাতি স যত্র কচিল্লিন্চিত্য বকু ননৰ্হে দেশে জাত ইত্যতো নয়াদ্য থং ন হন্তস ইত্যথ: স তাবং ক ইত্যপেক্ষায়ামাহ পূর্কাশক্রঃ পূর্ক জন্মনি যন্ত্যাং হতবানিত্যথ:। ক্লপণাং দেবকীং

#### तात्र मैल र्जः

বি**ষ্ণোরন্থকেতি চ**া। ৭ দ

হত্যা যদ্যহং হতাপ্যভবিষ্যমিত্যর্থ:॥৮।৯।,১০।১১,॥

# প্রীবিশ্বনাথচক্রমন্ত্রী।

অপোথয়ং বলেন চিকেপ॥ ৬॥

সমুংপত্য অধঃক্ষিণ্যনাণাপি বলাছ্ৎপ্লুত্য। কংসাম্ব্রস্যোজমাঙ্গে পাদং দলা গভাদিবমিতি ভবিষ্যোত্তবং। অনুজা বিজ্ঞোবিতি ক্ষাস্য বশোদাগর্জকাং হচসূতি। সাধুধাষ্টেত্যাদি কংসস্য ভীষণার্থং। স্ববাচি বিশাসোৎপত্যার্ক ॥ ৭ ॥

মরা হত্যা কিমিজি বদাহং হতাগ্যভবিষামিতার্থ: বত কচিং বক্মনর্হে দেশে ইতার্থ:। ক্লপণাং দেবকীং ক্লপণানিতি পাঠে অভান্ শিশূন্॥৮॥

এবং জাতমাত্র সেই ভগিনীতনয়ার পা ধরিয়া বলপূর্বক শিলা পৃষ্ঠে নিক্ষেপ করিল। সে স্থার্থ নিমিত্ত সৌহল্য উন্মালত করিয়া ফেলিল ॥ ৬॥

সে যাহা হউক, প্রক্রিপ্তা হইবামাত্র সেই কন্যা কংসের হস্ত হইতে উর্দ্ধে গিয়া উঠিলেন এনং
তংকণাৎ দেবী হইরা আকাশে গমন করিলেন। হে রাজন্! তদনন্তর সকলে দেখিতে পাইল
বিফুর অনুজা দেই দেবী সদান্ত অউভুজা হইয়াছেন এবং দিব্য বসন ভূষণ ও মাল্যালকারে শোভা
পাইতেছেন, তাঁহার অউ হস্তে শূল, ধকুঃ, বাণ, থজা, চর্মা, শমা, চক্রা ও গদা দেদীপ্যমান, আর সিদ্ধ,
চারণ, গদ্ধবা, অক্যারা, কিমার এবং উরগাণ ভূরি ২ উপসার আহরণ করিয়া তাঁহার স্তব করিতেছেন।
হে ভারত! ঐ দেবী আকাশ হইতে উচ্চস্বরে কংসকে সম্মোধিয়া কহিলেন॥ ৭॥

অরে মৃঢ়! আমাকে বধ করিলে কি হইবে, তোর পূর্বে শত্রু তোর অন্তক হইয়া কোনস্থানে

ইতি প্রভাষ্য তং দেবী মায়া ভগবতী ভূবি। বহু নাম নিকেতেরু বহু নামা বস্থুবহু॥ ৯॥ তয়াভিহিতমাকর্ণ্য কংসঃ পরম বিশ্বিতঃ। দেবকীং বহুদেবঞ্চ বিমুচ্য প্রপ্রিতোহত্রবীৎ॥ ১০॥ অহো ভগিন্যহো ভাম ময়া বাং বত পাপ্যুনা। পুরুষাদ ইবাপত্যং স্বহুদোহিংসিতাঃ স্ততাঃ। সম্বহুং ত্যক্তকারণ্যস্ত্যক্তজ্ঞাতি স্বহুৎ ধলঃ। কালু লোকান্ গমিষ্যামি ত্রহ্মহেব মৃতঃ শ্বন্।

# **औ**धत्रशामी

क्रुश्नाः (मवकीः ॥ ৮॥

বছনামস্থ নিকেতের বারাণস্যাদি স্থানের ॥ २ ॥ প্রম বিশ্বিতঃ কথং দৈবী বাক্ অনুতা জাতেতি ॥ ১ • ॥

#### देवकवटडावनी ।

বন্ধনাদিনা মাহিংদীঃ পতি সহিতানেনাং বন্ধনালেনাচয় ধনাদিকক প্রত্যপন্ধেত্যর্থঃ । কুপণানিতি পাঠে তহু যে হস্তান্ বালকান্ তৌতং স্বন্ধিনক্ষ্যের্থঃ ॥ ৮॥

প্রভাষ্য আদিশু ভগবতি পূর্ব্বোদিষ্ঠ ভগবৎ প্রসাদেনাধিকৈ বর্ষ্যযুক্তা সভী বহনামেতি নানা নামস্থ নিকেতের নানা নামথেন প্রসাজ্যিতার্থ:। হ হর্বে ॥ ১॥

বিমৃত্য কারাগারাদ্বিংসার্য্য বি শব্দেন রক্ষিসক্ষোচাচ্চ। নিগড়াঝোচনমগ্রে বক্ষ্যতি। দেবক্যা: প্রাথিমোচনং স্ত্রীণামেব তল্পুক্রে: বিশেষতা ভগিনীয়াৎ তথা ছংখ বিশেষচে। অন্তর্তঃ। যথা তয়াভিহিতমাকর্ণ্য তাঞা তঞা বিমৃত্য নত্র: সম্ভ্রবীৎ কীদৃশো ভূষা ক্ষামা আক্ষিক বৈভ্রাদিভি স্তাদুল বাকৈয়ালচাত্যস্ত বিশ্বিতো ভূষেতি॥ ১০॥

সহো হ্যমার্তি সংখাধনে। বত থেদে। পুরুষাদা হি পুরা খাপত্যাদা আসন্ তত্তৈকাং রাক্ষ্সীং খাপত্যমদন্তীং দৃই। দেব্যা ক্প যোক্তং ইতঃ প্রভৃতি রাক্ষ্যবাদা জন্মত এব প্রবৃদ্ধা ভবন্ধিতি॥ •

ত্যক্তকান্ধণ্য: বালানাং ভাগিনেয়ানাং নির্দোষাণাং বহুনাং রুধা মারণাং ইতি ধর্মোনাপেন্দিত এব। লোকন্চ নাপেন্দিত ইত্যাহ ত্যকা জ্ঞাতরা দেৰকাদর: স্থান্দ বন্ধনো তবদাদরো দেন সং অতএব খলা। হু বিতর্কে কাঁরোকান্ বৈ ইতি পাঠে বৈ নিশ্চরেম্তঃ সন্লোকান্ গমিষ্যামি ব্যতিরেকে দৃষ্টাস্তোহয়ং ব্রহ্মহা যথা কাঁনিচল্লোকান্ ন গছাতি তঘচ্চ কান্ লোকান্ গমিষ্যামি ন কানপি তস্য প্রসিদ্ধৈর্মহারোরবাদিভিঃ প্রায়ন্দিত্ত পর্যাপ্তি র্নতু মমেতি। মম স্বভাস্তেভ্যোপি ছুর্গতর ইত্যর্থঃ। হে স্বসরিতি দৈতাং অসাদিত পাঠে ইহ লোকেহপি জীবনাত ইত্যর্থঃ॥

#### 🕮 বিশ্বনাখচক্রবর্ত্তী।

वह नाम निरक्टलब् वात्रांशनानि ऋरनुब्॥ २॥

পরম বিশ্বিত: কথং মাত্র্যা দেবক্যা গর্ডে ছর্গাদেবী জাতা কথং বা দৈবী বাগন্তাভূদিতি॥ ১০॥

अधियाट्या पूरे यात्र यनाना मीन वालकिमगटक द्र्या वर्ष कतिम् ना ॥ ৮॥

ঐ প্রকার কহিয়া ভগবতী সেই দেবী ভূমগুল মধ্যে বারাণসী প্রভৃতি বহু বহু নামণারি নিকেতনে অধিষ্ঠিত। হইয়া বহুনামা হইলেন ॥ ৯॥

পরস্ত্র তাঁহার বাক্য শুনিয়া কংল যৎপরোনান্তি বিশ্মিত হইল, কারণ তাহার মনে হইল এ কি !» লৈববাক্য অনৃত হইল ! যাহা হউক, লে তদন্তর দেবকী ও বহুদেবকে বন্ধন হইতে মোচন করিয়া দিল এবং বিনয়াবনত হইয়া কহিতে লাগিল ॥ ১০ ॥

অগো ভগিনি! অহে ভগিনীপতি! আমি বড় পাপাত্মা, রাক্ষ্ম যেমন স্বীয় অপত্য হিংসা করে তাহার তায় তোমাদের হুত সকল বিনষ্ট করিয়াছি, ইহাতে আমার কারুণ্য ত্যাগ হইয়াছে এবং আপনি জাতি হুহুদ্ ত্যাগ করিয়াছি, আমি অতিশয় থল, ব্রহ্মহার সদৃশ মরণের পর কোন্ লোকে দৈবমপ্যনৃতং ৰক্তি ন মৰ্ত্যা এব কেবলং। যদ্ভিজ্ঞাদহং পাপঃ স্বস্থ নিহতবান্ শিশূন্॥ ১১॥
মাশোচতং মহাভাগাবাস্থজান্ স্বকৃতং ভূজঃ। জন্তহ্বা ন সদৈকত্র দৈবাধীনাঃ সহাসতে॥ ১২॥
ভূবি ভৌমানি ভূতানি যথা যান্ত্যপ্যান্তিচ। নায়মান্ত্যা তথৈতেরু বিপর্য্যেতি যথৈব ভূঃ॥ ১৩॥

#### क्षिश्वश्वामी।

হে ভাষ ভগিনীভর্ত্তঃ পুরুষাল্লো যথা স্বাপ্ত্যমণি হিনন্তি তহৎ ॥ ১১ ॥

হে মহাভাগৌ ক্ষতং ভূজঃ স্বায়ৰ কৰ্ম ভ্ৰোক্ৰ্ কিঞ্জন্তৰ প্ৰাণিনঃ সদা নাসতে কিম্বাকালমেৰ তত্ৰাপি একত্ৰ নাসতে কিম্ব বিষ্ক্ৰান্তে যতো দৈবাধীনাঃ ॥ ১২ ॥

সদা নামত ইতি যহক্তং জন্ম মরণাদি তদপি দেহানামের নাশ্বন ইত্যাহ ভূবীতি। ভূতানি দেহা এব আয়াত্তি অপযাত্তিচ ভবত্তি ন ভবত্তিচেত্যথ: দুখা ভূবি ভৌমানি ঘটাদীনি তত্ত্বং। এতেবু ভূতেবু জন্মাদিভি বিক্রিয়দাণেশপি জন্মপরোক্ষতন্মভিজান্মনান আত্মা

#### . বৈষ্ণবতোষণী।

ন কেবলমত্র মনৈব দোষঃ কিন্তু দেরানামেবেত্যাহ দৈবমিতি দেবতা। সত্যমেব দেবা অনৃতং মহুষ্যা ইতি শ্রুতিবিরো-ধোহপি জাত ইত্যর্থ:। এবেতি লোকোক্তানধিকং। পাপ ইতি কথমন্যথা তম্বিশ্রস্তঃ স্তাদিতি ভাবঃ॥১১॥

মহাভাগৌ হে,পরম বিবেকিনৌ জন্তবঃ সর্বাএব জীবা নতু কেচিদিত্যর্থঃ। একক একস্মিন্ স্থানে নাসতে তত্ত্বাপি সহ সংভূষ পর-স্পারমাসজ্য নাসতে মাইসর্য্যাদি সম্ভবাদিত্যর্থঃ। কিন্তু পৃথক্ স্বাম্ব কর্মার্কিত লোকাদৌ তিষ্ঠতীত্যর্থঃ॥ ১২॥

অপযান্তি নশুন্তি ভূবীতি তত্র যানি তানি সর্বাণ্যবেত্যর্থ:। যবা ভূবি বর্ত্তমানানীতি ভৌমানাং জন্মনাশরোঃ সর্ব্ব প্রত্যক্ষতোক্তা। এবং দাষ্টান্তিকেহলি জ্ঞেরং ন বিপর্য্যেত্ জন্মাদি বিক্রিসাং নাপ্নোতীতি। তত্র প্রীবৈষ্ণব মত্তে ভূব আপ্রয়ন্থাংশ এব দৃষ্টান্তবং ন কারণ-ত্বাংশে পীতি ক্রেয়ং। ঈশ্বরেহণি মাৎসর্য্যেণ কংসাদীনাং ত্বৈত্বাদান্তর প্রায়ন্থাৎ তদংশেপীতি বা। তত্ত্বৈর জীবাত্মনো ব্যাপকত্বাংশে

#### ক্রেমসন্দর্ভ:

জন্তবং সদা নাসতে ত্রাপ্যেক্সিন্ হানে নাসতে সহ সংভ্যাপি নাসত ইত্যর্থ: ॥ ১২ ॥ ভূবীতি দৃশ্যমানানীত্যর্থ: । জীবায়ন আশ্রয় এব ভূবো দৃষ্টান্তং ॥ ১৩ ॥

#### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্মী।

ভাম হে ভগিনীপতে। পুরুষাদো রাক্ষ্যো যথা স্বাপত্যং হিনন্তি তরং॥ ১১॥

ভূজ ইতি কিবস্তং স্বক্লতমিতি বছাডাব আৰ্ব:। মহাভাগাৰিতি ছ্ৰ্ণাদেব্যেৰ আব্যোৱাশ্বজাভূৎ কিমন্যৈ: স্টত: স্বক্লত ভূগ্ভিৱিতি বিমৰ্শেন মাশোচতং। কিঞাবিমশান্তব্যপ্যাহ জন্তব ইত্যাদি॥ ১২॥

আন্মানাম্ববিবেকেনাপি মাশোচতমিত্যাই ভূবি ভূমো আল্লিতানি ভৌমানি ঘটাদীনি আরান্তি ভারত্তে অপবাতি নশ্সন্তি চ। যথা ভথৈব ভূতানি দেহা এব জারত্তে নশ্সন্তি চ। তথা এতেবু ভূতেবু-দেহেবু বিপরিবৎস্থ জন্মাদ্যনেকবিকারং প্রাপ্নবংস্থপি অন্মপরোক্ষ তরা জান্তমান আত্মান বিপর্ব্যেতি জন্মাদি বিকাররপং বিপর্ব্যয়ং নাপ্রোতি একরপ এব বর্তত ইত্যর্থঃ। যথৈব ভূ ন বিপর্ব্যেতি

যাব বলিতে পারি না। কি আশ্চর্য্য ! কেবল মান্তুবেই মিথ্যা বলে এমত নুয়, দেবতারাও অনৃত বলিয়া থাকেন, দৈব বাক্য বিশাস করিয়াই ত আমি ভগিনীর শিশু সন্তানদিগকে নিহত করিয়াছি॥ ১১॥

যাহ। হউক, তোমর। মহাভাগ, আর সন্তানদিগের নিমিত্ত শোক করিও না, তাহারা স্বকৃত কর্ম-ভোগী অর্থাৎ স্ব স্থারক কর্ম ভোগ করিয়াছে, অপর সকল প্রাণীই দৈবাধীন, এ কারণ সর্বাদা একত্র থাকিতে পার না, অত্যয়কাল মাত্র থাকে ॥ ১২॥

যক্রপ পৃথিনীতে পার্থিব ঘটাদি উৎপদ হয়, পরে ভালিয়া বায়, তাহার ন্যায় দেহ সকল জন্ম প্রহণ করে এবং পরে ধ্বংস প্রাপ্ত হয়। অপদ্ধ বজ্ঞপ পার্থিব ঘটাদি বিক্রিয়নাণ হইলেও পৃথিবী বিক্লভা হয় না, তেমনি জন্মাদি হারা দেহ সকলের বিকার হইলেও প্রত্যক্ষ পরিজ্ঞেয়নান এই আত্মা যথানেবংবিদাং ভেদে। যত আত্ম বিপর্য্যাঃ। দেহযোগ বিয়োগোঁচ সংস্থতি র্ন নিবর্ত্ততে ॥ ১৪॥ তস্মান্তদ্রে স্বতনয়াম্ময়া ব্যাপাদিতান্ত্রপ। মাসুশোচ য্তঃ সর্বাঃ স্বকৃতং বিন্দতে হ্বশঃ॥ ১৫॥

ন বিপর্ব্যোত বিপর্যাবং ন প্রাপ্রোতি এক রূপ এব বর্ত্ত ইত্যর্থ:। ভৌমেষু বিক্রিয়মাণেষু যথা ভৃত্তথেতি ॥ ১৩ ॥

এবং বিচাৰ্য্যমাণে সতি ন শোকাদ্যবসরঃ অজানতাম্ক ন নিবৰ্ত্তত ইত্যাহ যথেতি যথা যথাবং স্থানেবং ৰিদাং এবমজানতাং আত্ম বিপর্যায়ঃ দেহে আত্মবুদ্ধি ভ্রতি যতো বিপর্যায়াৎ ভেদো ভরতি দেহাহঙ্কারেণ আত্মনি পরিচ্ছিলে সতি ইদমহঙ্কারাম্পদং ভিলং ভরতি যতো ভেদাৎ পুলাদি দেহৈৰ্যোগশুচ বিায়োগশ্চ ততঃ সংস্থৃতি স্থুথ ছংথে ইতি যাবদজানং ন নিবৰ্ত্ত ইত্যুৰ্থ: ।। ১৪ ॥

এবমুক্ত প্রকারেণ ন তে তর তন্যাঃ অহঞ্তান্ন ঘাতিতবান্ তথাপাজ্ঞানদুটা স্বতন্যান্ ময়া ব্যাপাদিভানপি মানুশোচেতি

বা। তদাচারীন্তীত্যাদিকং যথা ধার্থমেব বিপর্য্যেতি ভ্রমতীত্যর্থ: ॥ ১৩ ॥

আত্মন এবং দেহাবৈদকণ্যমজানতাং দেহযোগ বিয়োগোহণীতি পাঠো বহুত্র সচ সর্ব্বোপি ছন্দো বিভাষয়ৈকবন্তবভীতি ন্যায়েন উকারোহজহ্রদীর্ঘ প্লুত ইতি বং। অহৈত মতে পূর্ব্বোক্ত প্রকারেণাত্মজ্ঞানান্যথাত্বং ততো ভেদকর্মনং ততোভিন্নে হধ্যাস: ততো দেহযোগ বি**রোগে** ততঃ সংস্তিশ্চ ন নিবর্ত্ত ইতি চ স্যাৎ অনৈবং বিদামিতি বছবচন পাঠ এব সর্ব্ব সন্মতঃ। অত টীকায়ামি-ত্যেতং পূর্ব্বোক্তং সর্বাং যাবদজ্ঞানং তাবন্ধনিবর্ত্ত ইতি ব্যাথ্যেরং॥ ১৪॥

ভদে হে সৰুদ্ধিমতীতি তামধিক শোকাং বিশেষতঃ সম্বোধয়তি। যত্ৰণ্চ বিল্মতে ভূঙ্ক্তেহ্বশঃ অনিচ্ছন্নপীতাৰ্থঃ.॥ ১৫॥

নতু কারণত্বেংপি বণা বেন হেতুনা। এবমাত্মতত্বমজানতা। ভেদস্তক্ষাদন্যত্র তহুপাধৌ দৃষ্টি ভ্রতি। বতো হেতে। স্তবৈর্বাত্মভাবনা ভবতীতাদি। যত ইতি যতংশ্চতার্থঃ॥১৪॥১৫॥

# ঐবিশ্বনাথচক্রবন্তা।

ভৌমেষ্ ঘটাদিষনেক বিপৰ্যারং প্রাপ্নবংম্বপীতার্থঃ॥১৩॥

অনেবস্থিদ এব আত্মতত্ত্বমজানতঃ শরীরমেবাত্মত্বেন জানত ইত্যর্থঃ। যথাবথাবদেব প্রথমং ভেদো ভবতি পৃথক্ পৃথক্ শবীরা-ণোব পৃথক পৃথপাস্থান ইতি ভেদজ্ঞানং ভবতীতার্থঃ বতো ভেদাদেব আত্মনো বিপর্যায়ঃ অন্ত্রাদি বিকাররূপ বিপর্যায় প্রাপ্তি:। দেহজন্মধুণাভ্যামেবাস্থা জাতোমূত ইতি জ্ঞানং ভ্ৰতীতাৰ্থ:। তত্ত্বত দেহৈবেৰ পুত্ৰাদিভি ৰ্যোগঃ স্থুথকারণং বিয়োগে ছংথকারণঞ্চ ইরমেন সংস্তি: ॥ ১৪ ॥

ত্ৰণাৰু দেহাৰামৰাত্মবাং তৰ্য বুছা। তাৰ্ বৃহিদ্'টা ময়া হতাৰপি মায়ুশোচেতাৰ্থ:। নয়া পঞ্ভূতাত্মক। দেহা এব হতা ইতাতো ম্মাপি দোষ দৃষ্টি ন কাৰ্য্যেতি ভাবঃ। মনৈৰমাত্মতত্বজ্ঞানং নাঞীতি চেৎ তদপি মাহুলোচেত্যাহ যুক্ত ইত্যাদি অজ্ঞানাশ্ৰয়ে কৰ্মবাদে

বিপর্যায় প্রাপ্ত হন না, সর্ববৃদা এক রূপই থাকেন॥ ১৩॥ :

ভিগিনি! এইরূপ বিচার ক্রিলে শোকাদির সম্ভাবনা মাত্র নাই, যে দ্কল ব্যক্তি এই প্রকার যথাবং না জানে তাহাদিগের আত্মবিপর্যায় অর্থাৎ দেহে আত্ম বৃদ্ধি হয়। বিপর্যায় হইতেই ভেদ জন্মে অর্থাৎ আত্মা পরিচ্ছন হইয়া অহকারাস্পাদ ভিন্ন হয়। সেই ভেদ হইতে পুজ্ঞাদির দেহ সহ যোগ ও বিয়োগ হয়। তাহাতেই সংক্ষতি অর্থাৎ হুখ ছুঃখ হইয়া থাকে। সেই সংসার যাবৎ সজ্ঞান থাকিবে ভাবৎ নিবৰ্ত্ত হ'ইবে না 🌉 ১৪ ॥

স্তএব হে ভুদ্রে! যে সকল শিশু গিয়াছে যদিও তাহারা বস্তুত তোমার ভনয় নয় এবং আমিও 🍕 বস্তুতঃ তাহাদিগকে নিহত করি নাই, তথাপি অজ্ঞান দৃষ্টিতে তুমি তাহাদিগকে স্বীয় তনয় জানিয়া

যাবন্ধতোহন্মি হস্তাত্মীত্যাত্মানং মন্যতেহস্বদৃক্। তাবত্তদভিমান্যজ্ঞো বাধ্যবাধকতামিয়াৎ॥ ১৬॥ ক্ষমধ্বং মন্ দৌরাত্ম্যং সাধবো বন্ধুবৎসলাঃ। ইত্যুক্ত্যাশ্রুমুখঃ পাদে শ্রালঃ স্বস্রোরথাগ্রহীৎ॥১৭

#### श्रीधनकामी।

দাবয়তি তথাদিতি। অজ্ঞানাশ্রমেব কর্ম বাদমাহ যত ইতি॥ ১৫॥

কথং তহি এাশ্রণাদি হত্ত জন্মতভাচ প্রায়শ্চিত প্রবণং অজ্ঞান মূলমেবেত্যাহ যাবদিতি। অস্বদৃক্ দেহাভিমানীতি তদভিমানী তভা দেহভা হননমান্মভাভিমভামান ইতার্থলে ১৬॥

•

শ্রালঃ কংসং স্বশ্রেরিতি স্বস্পক্ষেন দ্বিচনাত্মপপন্ত্যা মিপুন গণ দারা মিপুন লক্ষণয়া স্বস্থ তংগত্যোরভিধানং লিঙ্গসমবার ভাষেন প্রাণভূত উপদধাতীতি বৎ দেবকী বন্ধদেবয়োঃ প্রত্যেকং পাদমগ্রহীদিত্যধঃ। শ্রালশক্ষেন বা কথঞিদ্বস্থদেব্যভিধানং ॥ ১৭ ॥

#### देवक्षवद्यावनी।

অজ্ঞ স্তত্ত্ত্তানহীন:। অবং সর্বৈত্তিব হেতু:। অস্তত্তি:। যথা ন্যেবং জানগ্ল খং কিমিতি মরণাছিতেবি কিছা তান্হতবানসি স্বাহতবাভাবাদিত্যাহ যাবদিতি স্বদৃক্ শাস্ত্তী আত্মতহজ্ঞোহপি হতপ্রায়োহস্মি অতএব তান্ হনিব্যামীত্যেবমভিমানং কুরুতে যতেহিজ্ঞ: সাগ্রতব্রহিত: ॥ ১৬ ॥

নৰ আৰু মণি স্বাস্কৃতবো নাজীতি চেতথাপি মদপরাধ্য ক্ষত্তব্য ইত্যাহ ক্ষমধ্বমিতি বছরং দেবকাদ্যপেক্ষয় যতো যুয়ং সাধবো বদ্ বংসলাপ্ত দীনেতি পাঠে ক্ষমার্থমান্মদৈন্যং স্কচমতি সাধবো দীনবংসলা ভবন্তীতার্থঃ। অথানস্করং, সদ্যো বদক্ষেবাগ্রহীদিতার্থঃ। অন্তর্তৈঃ। তত্র মিথুনগুণো মাতৃ পিতৃ প্রাকৃতিকঃ প্রাণ্ডক্তরেপন তন্মন্ত্র সংস্কৃতেইকোচ্যতে বছরাম্পপন্ত্যাচ তদ্যণপাতিনাোহিপ গুন্ত ইতি। বাসরীভাস্য সকার পক্ষমাশ্রিত্যাত্তর্জ্জন্মা ব্যাথাতিং। অন্তিচেত্যস্য দ্বিস্ক্ষমাশ্রিত্য জ্বল্লকণ্মা ব্যাধ্যে

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

কথং তহি তিব মোহ স্তত্ত্বাহ যাবদিতি। তহি নামাকং কথং ভবেৎ॥ ১৬॥ তিত্রাহ ক্ষমধ্যমিতি বসূবংস্লাঃ তেবামপ্রাধ্তাহকা ইত্যথঃ। দীনেতি পঠিঃ স্থামঃ॥ ১৭॥

#### विश्वाषठकवर्ते।

প্যেবং বিচারেণ ন শোকাবকাশ ইতি ভাব: ॥ ১৫ ॥

মম তৃ ত্ৎপুত্র হস্তৃত্যেৰ তাৰলাজি জ্ঞানিতাদিত্যাহ। যাবদিতে অধদৃক্ ন স্থমাত্মানং পশ্যতি কিন্তু দেহমেৰ পশ্যতিতেহিজ্ঞ। তেন মম দেহাভিদানাতাৰাং। হত্মাণি স ইমান্ লোকান্ন ২াও নানিবদ্ধাত ইতি ৰচনান ত্ৎপুত্ৰ হস্তৃত্থ নাপি ৰদ্ধ হাত ভাৰঃ॥ ১৬॥

তদিপ ময়ি পূত্রহঙ্ ৃষমারোপ্যাধিকং চেজাদিবি তহি শতামূং ছাই এব বৃদ্ধি পূর্ব্বকং পাগ মকরবমেব তথা নিশ্লতি যুগিং ক্রিব বেতাাহ ক্ষমধ্যমিতি। শালা কংসা অস্ত্রোরিতি বিবচনাত্পণত্তা অস্থপনে অস্থতি লাক্তিত ইত্যেকঃ অস্পদ্ধে লক্ষকঃ অন্যোবাচকঃ। তরোরেকশেবাং ক্রোরিত্র বিরুদেব দেবক্যোঃ গানে প্রত্যেকং পাদমগ্রহীদিত্যুর্থঃ॥১৭॥

আমা কর্তৃক নিহত হইলেও শোক করিতে খোগ্য হইও না, যে হেতু সকল ব্যক্তি খবশ হইয়া বক্ত কর্ম প্রাপ্ত হইয়া থাকে॥ ১৫॥

যদি বল জ্ঞান দৃষ্টিতে যদ্যপি কেই হন্তা অথবা হত হয় না তবে প্রাক্ষণাদি বধে প্রায়শ্চিত্ত প্রুত হয় কেন ? উদ্ভির তাহাও অজ্ঞান মূলই জানিবে, ফলতঃ দেহাতিমানী পুরুষ যাবৎ পর্যান্ত আমি হতা, অথবা আমি হত হইলাম এইরূপ আপনাকে বোধ করে তাবৎ পর্যান্ত দেহের হনন আল্লাতে কল্পনা করিয়া দেই অজ্ঞ ব্যক্তি বাধ্য ও বাধক ভাব প্রাপ্ত হয়॥ ১৬॥

অতএব তোমরা সাধু ও দীনবৎসঁল, আমার দৌরাষ্ণ্য কমা কর। হে রাজন্! কংস এইরূপ কহিয়া অঞ্মুখে ভগিনী ও ভগিনীপতির চরণ গ্রহণ করিল। ১৭। নোক্ষয়ামাস নিগড়াদিপ্ৰকঃ কন্যকা গিরা। দেবকীং বস্থদেবঞ্চ দর্শয়ন্ত্রাস্থাসাছদং।
ভ্রাতৃঃ সমন্তপ্তস্ম কান্ত্র। রোষঞ্চ দেবকী। ব্যস্তজ্বস্থদেবশ্চ প্রহস্ত তমুবাচহ।
এবমেতন্মহারাজ যথা বদসি দেহিনাং। অজ্ঞান প্রভবাহংধীঃ স্ব পরেতি ভিদা যতঃ॥ ১৮॥
শোক হর্ষ ভয় দেব লোভমোহ মদাস্থিতাঃ। মিথোরস্তঃ ন পশ্যন্তি ভাবৈ ভাবং পৃথগদ্শঃ॥১৯॥
কংস এবং প্রসন্ধাভ্যাং বিপ্রকং প্রতিভাষ্তিঃ। দেবকী বস্থদেবাভ্যামনুজ্ঞাতোহবিশালা হং।

## श्रीभत्रश्रामी।

व्यायटमोश्रमः व्यियवानानिमा नर्नयम् ॥ २৮॥

স্থ পর ভেদ দর্শনে কিং ভবতি তদাহ শোক ইতি। ভাবৈরেব নিমিত্তভূতৈ মিধোঁ ভাবান্ মতং ভাবমীশ্বরং পৃথপদ্শতে ন প্রভাতি কিস্ত্নেব হস্তা হতকেতি মহান্তে ইত্যর্থ: ॥ ১৯ ॥

বিশ্ৰন্ধং যথা ভবতি ॥ ২০ ॥

# देवश्ववद्याय्नी।

নিগড়াল্লোহশৃত্যলাৎ তদা তং কর্ত্তয়ামাদেত্যর্থ:॥

ভাতৃপ্তত্ত সম্যাগ্রন্থ কাস্বা দৌরাআং সোচ্ব রোধং চকারাচ্ছোকঞ্ তত্যান্ধ। বস্থদেবস্ত হ ক্ট্র্বাচ। প্রহস্যেতি ত্য্যাপি তাদ্শোক্তে:॥

এবন্মুক্ত দিতি ময়েদং পূর্বনৈবোকং ভবতৈব ন মন্যত ইতি ভাব:। হে মহারাজেতি শাস্ত্রজানং ত্রি ঘটতৈবেতি ব্যঞ্জিতং মহাভাগেতি পাঠে তথৈবাথ:। পক্ষে ন রাজত ইতি অরাজ: হে মহারাজ হৈ অত্যন্তাশোভমান অমৃদ্বল সারিধ্যাদিতি ভাব:। তথা মহান্ অভাগঃ অভাগা ম্বা হে পরম হর্তগ ইতি। দেহীনামহংধীঃ তত্রাহং ভোকা কর্তা ইত্যাদি নাতর্জ্ঞান প্রভবা যতোহহংধিয়ঃ॥১৮ ভাবৈস্থ তৈঃ পৃথক্ দৃশঃ বহিদ্ ইয়ঃ। অন্তরৈঃ। তত্র বস্তত ঈশ্বর এব হস্তা ন দেহো নাথাবা হত্য দেহ এব নায়েত্য্থঃ।

মিথো নিমিত্ত্তৈরিতি ঘোল্যং মিথোম্ভমিতি তহিধা ন হত্তং সাক্ষাদ্বতীর্ণম্পি তং তহিধা ন পার্ট্রীতি লেখার্থ-চ ॥ ১৯ ॥

এবং তথাক্যান্নমোদনেন স্বসিদ্ধান্ত নিরূপণেনচ বিশ্রদ্ধং কংসস্য বিশ্বাসজনকং যথা স্যাৎ বিভদ্ধনিতি পাঠে অকপটং যথাস্যান্তথা প্রতিভাষিতো অনুজ্ঞাতশ্চ সন্॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

নিগড়াৎ লৌহ শৃত্বলতঃ তং কর্ত্তয়িত্বাপীত্যর্থঃ পূর্বং বন্ধনাগারান্মোচনং ক্রেয়ং। ক্রান্ধা ক্ষ ামবলম্বা । ১৮॥ ভাবৈ ভূ তৈন্দ্রিণো নিমিত্তভূতৈঃ পৃথক্ দৃশো বহিদ্ প্রিয়:॥১৯।২০।২১।২২।২৩।২৪॥

#### শ্রীবিশ্বনাথচক্রবত্তা।

নিগড়াৎ লোহশৃত্বলত: ॥

ভ্রাতুরপরাধং কান্তা রোধং শোকঞ।

যতো ২হং ধিয় এব হেতোরয়ং স্বঃ অয়ং পর ইতি ভিদা সহ স্থপেতি সমাসঃ ॥ ১৮ ॥

মিথঃ পরম্পরং ভাবৈ নূ পব্যাত্ত রোগাদিভি ভাবং মহুষ্য গ্রাত্তাদিকং মন্তমীশ্বমিতি শেষ । পৃথক্তশা বহিদৃ ইয়ালা ১৯॥

এবং কন্যার বাক্যে বিশ্বস্ত হইয়া প্রিয় বচনাদি দারা আত্মসোহার প্রদর্শন করত তাঁহাদিগকে নিগড় হইতে মুক্ত করিয়া দ্বিল। বহুদেবও হাস্ত করিয়া তাহাকে বলিলেন হে মহারাজ! যে প্রকার কহিতেছ এই রূপই বটে, যে হেতু দেহিদিগের অহং বৃদ্ধি অজ্ঞান প্রভবা, সেই অহং বৃদ্ধি হুইভেই ইনি আপন, ইনি পর, এতজ্ঞপ ভেদ দর্শন হয়॥ ১৮॥

ভেদদর্শী দেহিগণ শোক হর্ষ লোভ মোহ ভয় দ্বেষ এবং মদে পরিপূর্ণ, স্নতরাং নিমিত্ত ভূত পদার্থ সকল ঘারাই পদার্থ সকলকে বিনষ্ট করেন যে ঈশ্বর, তাহাকে দেখিতে পাম না॥ ১৯॥

শুকদেব কহিলেন হে রাজন্! বস্থানেও দেবকী প্রসন্ন হইয়া, যে প্রকারে বিশাস হয় সেইরূপ করিয়া এই মতে সম্ভাষণ করিলে, কংস তাঁহাদের কর্তৃক অসুজ্ঞাত হইয়া নিজ নিকেতনে প্রবেশ তস্তাং রাজ্যাং ব্যতীতায়াং কংস আছুয় মন্ত্রিণঃ। তেড্য আচফ তৎ সর্বাং যত্নজং যোগনিদ্রমা॥২০ আকর্ণ্য ভর্ত্ত গদিতং তমুচুর্দেবশত্রবাঃ। দেবান্ প্রতিক্তামর্যা দৈতেয়া নাতিকোবিদাঃ॥ ২১॥ এবংশুত্রহি রাজেল্র পুর গ্রাম ব্রজাদিষু। অনির্দেশায়ির্দশাংশ্চ হনিষ্যামোহদ্য বৈ শিশূন্। কিমুদ্যমোহ করিষ্যন্তি দেবাঃ সমরভীরবঃ। নিত্যমুদ্বিম মনসো জ্যাঘোট্যর্ধ নুষ ত্বব ॥ ২২॥ অস্তত্তে শর্ব্রাতৈর্হ ন্যমানাঃ সমন্ততঃ। জিজীবিষব উৎস্ক্র্য পলায়নপরা যাষ্ট্র। কেচিৎ প্রাঞ্জলক্ষে ভীতা ন্যন্তশন্ত্রা দিবোকসঃ। মুক্তক্ষ্ক শিখাঃ কেচিদ্বীতাঃ স্ম ইতিবাদিনঃ॥২০

#### · श्रीधतकाभी।

নাজিকোবিদাঃ দৃষ্ট্যাত্র মতয়ঃ॥ ২১॥

ন নিৰ্গতানি দশদিনানি যেষাং তানভাংশ্চ ॥ ২২ ॥

#### देवस्थवरजावनी।

তজ্ঞানমপি ভগবৰিম্থানাং তেষাং হাদি হাছিবং ন স্যাদিতি দর্শগন্কংসস্য স্বোক্ত জ্ঞানবিক্ষ ব্যবহারনাহ তস্যামিত্যাদিনা যাবং সমং ও মন্ত্রিল প্রেল কেশি চানুরাদীন ॥ ২০ ॥

স্বভাবত এব দেবানাং শত্ৰবঃ ক্তামৰ্যাঃ সন্তঃ॥ ২১॥

হে বাজেক্সেতি সংখ্যাধনমিক্সেংবজ্ঞগা ভোজেক্সেতি পাঠোংপি ডথৈব বৈ এব অনুদাব ॥

নত্ন তাই দেবা যুদ্ধার্থমূদ্যমং করিষ্যান্তি তত্রাহঃ কিমিতি জ্যাঘোষে: পূর্বং যুদ্ধে কুতৈঃ সদা লীলায়ামপি বা ॥ ২২ ॥

অভত ইতাদিন। স্থতিত কণাচিৎ কংসস্য দেবগণ জয়ো জেয়:। তথাচ বিষ্ণুপ্রাণে তত্তে । কিং ন দ্োহমরপতি ময়া সংযুগ্নেত্য স:। পৃষ্টেনৈব বংন্ বাণানপগছের রক্ষ্যা। মজাষ্ট্রে বারিতা বৃষ্টির্যদা শক্ষেণ কিং তদা। মছাণ ভিএর জলনৈ ন্রিপোয়কা থথেনিত। ইতি। পলায়ন পরা বিমুখতয়া ধাবস্ত ইত্যর্থ:॥

প্রবংদা মৃদ্ধি ধতোহঞ্জলি বৈ স্তাদৃশা বভূবুরিতি শেষ:। যতো দীনা হংথিতাঃ কীণচিত্তা বা ভীতা ইতি কচিৎ পাঠ:॥ ২৩॥

#### এীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বিশ্বন্ধনকপটং যথা স্যাৎ বিশ্ৰব্ধনিতি পাঠে সবিখাসং॥ ২০॥ নাতিকোবিদা ন কোবিদা ইত্যৰ্থ:। উঁতি ইত্যনধিকাৰ্থং॥ ২১॥ অনিদ শান্দশদিনেত্যো ন নিৰ্গতান্নিৰ্গতাংশ্চ॥ ২২॥

করিল। পরস্ত রাত্রি প্রভাত হইবামাত্র মন্ত্রিদিগকে আহ্বান করিয়া কন্যা রূপিণী মায়ার সমুদায় কণা তাহাদের নিকট কহিল॥ ২০॥

সন্ত্রিগণ দৈত্য, দেবতাদের বৈরী এবং তাহাজে প্রতি জাতকোধ ছিল, বিশেষতঃ দৃষ্টমাত্র বিষ-য়েই বৃদ্ধিমান, অতএব প্রভুর উক্ত বাক্য প্রবণ করিয়া উত্তর দিল ॥ ২১ ॥

হে রাজেন্দ্র ! যদ্যপি এ রূপ হইয়া থাকে তবে পুর গ্রাম ব্রজ ইত্যাদি স্থানে যে থানে যত শিশু জিমিয়াছে তাহাদের বয়ঃক্রম দশ দিনের ন্যুনই হউক, অথবা অধিকই হউক, সকলকে বিনই করা যাউক। মহাক্রাজ ! দেবতারা সমর ভীক্ষ, আপনকার ধনুকের ছিলার শব্দে নিতাই উদিয় থাকে, তাহারা উদ্যম করিয়া কি করিতে পারিবে ?॥ ২২॥

হে রাজন্। সাপনি দেবগণকে সংহার করিতে প্রবৃত্ত হইলে তাছারা আপন্কার শরজালে বিদ্ধ হইরা জীবনেচ্ছার সমর পরিহার পূর্বকে চতুর্দিকে পলায়ন পর হইয়াছিল। কত্রকথলা দেবৃতা ভীত ন স্বং বিশ্বত শস্ত্রাস্ত্রান্ বিরথান্ ভয়সংযুতান্। হংস্যন্যাসক্ত বিস্থান্ ভগ্নচাপানমুধ্যতঃ ॥ ২৪ ॥ কিং ক্ষেমশ্রৈর্কিবৃধৈরসংযুগ বিক্থনৈঃ। রছে। জুয়া বা হরিণা শস্তুনা বা বনৌকসা। কিমিক্রেণাল্লবীর্য্যেণ ব্রহ্মণা বা তপস্ততা ॥ ২৫ ॥

# वीभवयागी।

অগুতঃ বিধাতঃ স্তু উৎস্কা রণং ত্যক্ত্বা ॥ ২৩ ॥
অগ্রালকান্ বিমুগাংশ্চেতি ন হংসি ন হিংস্বি ॥ ২৪ ॥

্থানে নিউবে দেশে শূরৈঃ সংযুগাদভাত বিক্থনং প্রৌঢ়বাদো বেষাং তৈঃ। নমু হরে বিভেমি শভ্যেশ্তেতি চেত্ততাছঃ রহো জুষেতি সংবিভাস্তঃ প্রবিষ্টেন কচিদপি বহিরদৃষ্টেনেতার্থঃ। পুরুষ প্রবেশ রহিতমিলাবৃত্ত বনমোকোণ্যভাতেন শভুনা॥ ২৫॥

#### रेवस्व्वरज्ञावशी।

অংশ তব ধর্ম পরিপালনেনৈর দেবা জীবন্তীত্যান্থ:। নত্তমিতি ধৃতান্যাণি ভয়াকুলতয়া বিশ্বতানি থজাাদীনি শরাদীনি চ বৈঃ তান্॥২৪ নমু তথাপি জীবন্ততেভিমানিনােহবশ্যং বিজেয়ং দর্শয়িষ্যন্তি ততাল্থ: কিমিতি সার্দ্ধকং অসংযুগং স্ত্রীপার্মাদি। অন্তত্তৈঃ। তত্ত সর্ক্তেত্যাদি বাজবাহর্ত দৈত্যানামভিত্রেতন্ত ফারোদাদে অন্তত্ত্বেন নিহুতা তিইতীত্যের ইতি তাভ্যাং তব রণসংঘটনাবগন্তব্যানেবিতি ভাবঃ। নমু তথাপি দেবেজােহবশ্যমাগন্তা তবাহ কিমিতি। নমু ব্রহ্মা তৎ সহীয়াে ভবিতা তত্তাল্ ব্রহ্মাণ্ডে তপঃ প্রত্মেন বিক্রমাভাবাং তপাের ভায়া শাপাপ্রাক্তিক তেন সহায়েনাপি স্তা কিমিতার্থঃ॥ ২৫॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

রংখ জুষা নিলীমস্থিতেনেতি ডেমাং বিবক্ষিতং টীকায়ান্ত বান্তবার্থ এব ॥ ২৫ ॥ যথেতি বন্ধ বলম্বেন মহান্ বিবৃদ্ধঃ সন্॥

## ত্রীবিশনাপচক্রবর্তী।

অন্যতঃ বিধাতঃ সতঃ। উৎস্কা রণং ত্যক্ষা ॥ ২৩॥

তব ধার্মিকখনের তেষাং বৃদ্ধৌ হেডুরিত্যাত্। নত্মিতি। তেনাতঃপরং ধার্মিকত্বং তাজ্যতাং। ধর্মস্য নায়ং কাল ইতি ভাবঃ॥ ২৪॥

বয়স্ক তেভাঃ কৰা থাপ ন বিভীম ইত্যাছঃ। ক্ষেমে নির্ভয়ে দেশে শুরৈঃ সংযুগাদন্যত্রৈব বিকল্পনং প্রোঢ়িবাদো যেষাং তৈঃ। নচ হরেঃ শন্তো বা ভেতবাং তয়োরপি অতুশা বলম্বাভাবাদিত্যাইঃ। রহোজুয়েতি। এদি বলং স্যান্তদা কিমিতি প্রকটীভূয় ন হ্ধাতে কিমিতি লোকানামস্তঃকরণেয়ু প্রবিশা নিজুয়ত ইতি ভাবঃ। বনৌকসা পুরস্বপ্রবেশ রহিতমিলাবৃত বনমোকো যস্য তেন ॥২৫॥

হৃষ্যা অস্ত্র শস্ত্র বিদর্জন পূর্বকে অঞ্জলি পুটে দাঁরাইয়া ছিল। আর কতকণ্ডলা মুক্তকচ্ছ ও মুক্তশিথ হৃষ্যা ''আমরা ভয় পাইয়াছি'' বলিয়া শর্ব প্রার্থনা করিয়াছিল। ২৩॥

রাজন্। সেই সকল দেবতা স্ব স্থা শস্ত্র এবং বির্থ ও ভয়ে বিনম্ম হইয়াছিল, আর তাহাদের ধরুঃ ভগ্ন হইয়াছিল অতএব মুদ্ধ পরিত্যাগ করিয়া। আপনি তাহাদিগকে অন্যমনস্ক ও বিমুখ দেখিয়া বধ করেন নাই॥ ২৪॥

তে মহারাজ! দেবতারা নির্ভয় দেশেই শূর, যে স্থানে যুদ্ধ নাই সেই খানেই তাহাদের প্রোঢ়িবাদ (শোর্য বীর্যাের কথা) শুনিতে পাওয়া যায়, তাহাদের হইতে কি হইতে পারিবে ? আর হরি
ও শল্প হইতেই বা ভয় সন্তবনা কি! হরিত সর্বাদা নির্জনে সকলের অন্তরেই প্রবিষ্ট থাকেন, বাহিরে
দৃষ্ট হয়েন না। মহাদেবের বাস ইলার্ত বন, যে থানে কখন কোন পুরুষ প্রবেশ করিতে পারে না।
ইন্দ্র অথবা ব্রহ্মা হইতেও ভয় সন্তাবনা দেখি না, কারণ ইন্দ্র অতিশয় অয় বীর্যা, আর ব্রহ্মা সর্বাদা
তপাতাতেই নিযুক্ত আছেন॥ ২৫॥

30

তথাপি দেবাঃ সাপত্নামোপেক্যা ইতি মন্মহে। ততন্তম লখননে নিযুক্ত্রান্ম্রতান্ ॥ ২৬॥ যথাময়োহঙ্গে সমুপেক্ষিতো কৃতি র্ন শক্তে রুড়পদক্ষিকিৎসিতৃং। যথেক্তিয়গ্রাম উপেক্ষিত ন্তথা রিপুর্ম হান্ বন্ধবলো ন চাল্যতে ॥ ২৭ ॥ মূলং হি বিষ্ণু দেবানাং যত্র ধর্মঃ সনাতনঃ। তভাচ ব্রহ্ম গো বিপ্রান্তপো যজ্ঞাঃ সদক্ষিণাঃ।

श्रीभत्रवाभी।

यमः প্রাদ্যমৈর্বেবাঃ কিঞ্চিদপি কর্জুঃ ন সমর্থঃ তথাপি নী ভিরত্বসর্তব্যা ইত্যাহত্তথাপীতি ॥ ২৬ ॥ ক্রত্পদো বন্ধমূলঃ ॥ ২৭ ॥

# दिक्वदावायगी।

ম-মহে মন্যামহে। নমু দেবা ভীতা: 'পলায়িষ্যস্ক এব তত্ত্বাহু: তত ইতি তেষাং দেবানাং মূল্যা বালক রূপেণাবতীয়া স্থিতস্য গুরুষ্য বিক্ষো: ধননে হিংসনে হম্মারিষ্তক্ষ্ম । ২৬॥

নমু গুপ্তশেচনসমর্থ এব স মম কিং করিব্যতি তত্ত্বাহু র্যেতি ক্লাচিন্নহৌষধাদিপ্রভাবেণ তচ্চিকিৎসা সম্ভবমাশকা দৃষ্টান্তান্তর-মাতঃ যথেক্সিব্রতি। বছর্বলম্বাৎ এব মহান্ বিবৃদ্ধঃ সন্ ন চালাতে স্থানান্তুংশরিত্মপি ন শকাতে কিমৃত হন্তমিতার্থঃ॥ ২৭॥

অধ ম্লস্ত তক্ত গুপ্তভাপি হননোপায়ং সাহৈ কিত্তিৰ্বাদক্তে। ম্লগ্ৰমেৰ তক্তহসাবিদাম্বীণাং বচনাম্বাদেনাপি সপরিক্রং নির্দিশ্য জনন মেব দৃটী কুর্বস্থি ম্লমিতি হি নিশ্চিতং। সনাতনোহনাদিসিছো বেদপ্রসিছো নতৃপধ্যাদিসিত্যর্থ: ধণ্ডোহপূর্বঃ তপঃ ব্যথাচরণং নিত্যনৈমিত্তিক লক্ষণং যক্ত শবেদন কাম্য কর্মাণ্যপলক্ষ্যক্তে সদক্ষিণা ইতি তথৈব সাক্ষত্যা ধর্মমূলতা সিছোঃ॥

অথ তথাপি তস্য বিষ্ণোরহোজ্ট্রেপি তৎপরিকর হননেনৈব হননং স্যাৎ ইত্যাহ স্তন্মাদিতি। সর্বাত্মনা সর্বেটেণৰ প্রযক্তেন হলঃ তেবাং হননমেবাত্মাকং জন্ধব্যাপমর্শকং প্রয়ো ধর্মঃ ইতি তান্ হন্যামেবেতার্থঃ হে রাজন্মিতি তব প্রভাবেটেণৰ স্নতরামেবেতি ভাবঃ। ব্রাফাণ্যননে হেতবঃ ব্রক্ষেত্যাদি তন্নাশে স্বতো বেদাদি নাশ সিলেঃ গোহননে হেতুঃ হবিছ'ৰা স্বতাদি যক্কীয়দ্রব্যপ্রদাঃ॥

ন কেবলং তে বিক্ষোঃ পরিকরাঃ অপিতু তহু নির্বিশেষাঃ অপীতি পূর্ববদম্বদন্তি বিশ্র ইতি তপঃ স্বধর্মাচবলং সভ্যক্ষ ম্থার্থ-

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

পর্মো হ্রপূর্ব্বঃ তপঃ স্বধর্মঃ যজ্ঞাঃ কাম্যধর্মাঃ। সর্ববান্ধনা সর্বেটেণৰ প্রযন্তেন ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ।

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তদপি ক্ষা অপি শত্রবো নোপেক্ষণীরা ইতি নীতিশাস্ত্ররীতি রন্থসরণীরৈবেত্যাহস্তথাপীতি ॥ ২৬॥ কচপদো বন্ধমূলঃ ॥ ২৭॥

ধর্মঃ সনাতন ইতি ধন্ম এব তং জীবরংস্তদ্য মূল্মিত্যর্থ:। তদ্য ধর্মদ্য মূলং বেদাদয়:॥

তেষামপি মধ্যে আক্ষণবধেনৈব দৰ্কে ৰজ্জান্তীত্যাহ:। তত্মাদিতি কিঞ্চ যক্ষানাং কারণং হবি তদ্য গার ইতি তাক্চ বধ্যা ইত্যাহ-

কিন্তু যদিও উদ্যম করিয়া দেবতারা কিছুই করিতে পারিবে না সত্য, তথাপি ,নীতি অমুসরণ করা কর্ত্তব্য, আমাদের মত এই যে, দেবতারা আমাদের শক্র, স্বতরাং উপেক্ষণীয় নহে, অতএব তাহাদিগের মূলোৎপাটনার্থ আমাদিগকে নিযুক্ত করুন। হে ম্হারাজ। আমরা আপনকার অমুত্রত, প্রাণপণে আদেশ পালন করিব ॥ ২৬॥

যেমন শরীরে কোন একট্রী রোগ উৎপন্ন হইলে যদি তাহাকে উপেক্ষা করা যায়, তবে সেই ব্যাধি ক্রমে বুজনুল হইরা উঠে, পরে সহজে তাহার প্রতীকার করিতে পারা যায় না, অথবা যেমন ইন্দ্রিয় নিচরকে উপেক্ষা করিলে শেষে সে সকলকে বলীভূতকরা অসাধ্য হয়, তেমনি মহান্ রিপু বছ-বল হইলে তাহাকৈ বিচলিত করা হুংসাধ্য ॥ ২৭॥

হে রাজন্! দেবতাদিগের মূল বিষ্ণু, ঐ বিষ্ণু যেখানে, অনাদিসিদ্ধ সনাতন ধর্ম, সেইখানে থাকেন, সেই ধর্মের মূল বেদ, গো, তাহ্মণ, তপস্যা এবং দক্ষিণা সমেত যজ্ঞ, অতএব সর্বপ্রথতের বেদবাদি-তপস্বি এবং যজ্জনীল প্রাহ্মণদিগকে, তথা স্বতদোহনকারিণী গাভী সকলকে বধ করা যাউক। হে মহা-

তিয়াং সর্বান্ধনা রাজন্ ব্রাক্ষণান্ ব্রহ্মবাদিনঃ। তপস্থিনো যজ্ঞশীলান্ গাশ্চ হক্ষো হবিছু ঘাঃ।
বিপ্রা গাবশ্চ বেদাশ্চ তপঃ সত্যং দমঃ শমঃ। শ্রদ্ধা দয়া তিতিক্ষাচ ক্রতবশ্চ হরেন্তন্যঃ।
সহি সর্ব্ব স্থরাধ্যক্ষোহ্মস্বন্ধিড় গুহুশয়ঃ। তম্মুলা দেবতাঃ সর্ব্বাঃ সেম্বরা সচ্তুমুখাঃ॥ ২৮॥
আয়ং হি তম্বোপায়ো যদৃষীণাং বিহিংসনং। এবং হ্র্মান্ত্রিভিঃ কংসঃ সহ সংমন্ত্র্য হ্র্মাতিঃ।
ব্রহ্মহিংসাং হিতাং মেনে কালাপাশার্তোহ্মরঃ। সন্দিশ্যু সাধুলোক্স্য কদনে ক্লনপ্রিয়ান্।
কামরূপধরান্ দিক্ষু দানবান্ গৃহ্মাবিশ্ব ॥ ২৯॥

# शिधतवामी।

দেবানাং মূলং বিষ্ণুঃ সচ যত্ৰ ধৰ্মন্তত্ৰাতে ধৰ্মদ্য মূলং বেদাদয়ঃ ॥ ২৮ ॥ কিঞ্চ যত্মাৎ বিপ্ৰাদয়ো হুরেরের তনৰ স্তত্মাদয়মেবোপায় ইস্ত্যাহ অয়মিতি ॥ ২৯ ॥

# বৈষ্ণৰতোষণী।

ভাষণমিতি সাধারণ ধর্মঃ দমাদয়ঃ প্রায়োনির্ভিধর্মাঃ ক্রতবশ্চ প্রায়ঃ প্রত্তি ধর্মা ইতি বিবেচনীয়ং পূর্ব্বভোইতাধিকোন দমাদীনা-মুক্তি স্তদ্বতামপ্যবীণাং জিঘাংসয়া। তন্রিত্যেকঘং সমাহার প্রাধান্যেন তহুরিতি হ্রসাস্ত পাঠে। ন বহুত্ত ॥

এবং তদ্ধননে সতি দেবাতান্তর হিংসাতু পিষ্টপেষণমেবেত্যাহ্য সহীতি স হি স এব যথাহস্করন্তিভূপি স এব বিতীয়ো হি শব্দ প্রসিদ্ধে তির্হি কথমসৌ। সাক্ষাদেব নহিংস্যেত তত্তাহ গুহাশয় সদৈব অনৃশ্য বাসহাৎ সম্প্রতি পৃথিব্যাং জাতত্বে হপ্যগুপ্তহাদসৌ ন দৃশ্যতে হন্যথা জীয়তৈত্বেতি ভাবঃ ॥ ২৮ ॥

তশাং পূর্ববৃক্তিমেব সংক্ষিপ্য উপসংহরন্তি অন্ত্রমিত্যর্ককেন। গুপুত্বাং ঘাত্যবালেন্দীপ প্রায়ো নৈব প্রাপ্য:। গাবন্তর্মান বাহা জীবিকা অপি ভবন্তি তেবাং ধর্মমূলত্বমপ্যেষামেব হিংসরাপগচ্ছেদিত্যভিপ্রেত্যান্তঃ ঋষীণামিতি। ব্রহ্মবাদি প্রভৃতীনাং এব তর্বধোপায় ইত্যশু অন্য: ভাব:। পূর্বং থলু ধর্মশু তজ্জীবিকাত্বেন তদাশ্রম্ক তেস্য চ বেদাদ্যো মূলানি অতন্তন্তম তুল্যা এব তে তব্রচ বিপ্রা স্থেষামপ্যাশ্রমা: তত্ত ন্তর্স ত্র্গপতেরিব গুরাশন্স্য তল্পক মূল জীবিকা স্থান হিংসম্বৈব হিংসা স্যাদিতি এ

স্বতো হ্র্মতিঃ পুনশ্চ হ্র্মন্ত্রিভিঃ সহ সমন্ত্র হিতমিভি হিতামিতি বা পাঠঃ ॥ কদনে নিমিত্রে ॥ ২৯ ॥

# ঐবিশ্বনাথচক্রবতা।

গান্চেতি॥

বান্ধণবধ এব তদ্য শরীরপাতো ভাবীত্যাহঃ বিপ্রা ইতি ॥ ২৮ ॥ শ্বীণাং বিহিংসনমিতি সর্ব্ব মূলস্য বিক্ষোরপি মূলবাদিতি ভাবঃ ॥ ২৯ ॥

রাজ! গো, বিপ্রা, বেদ, তপদ্যা, সত্যা, শম, দম, আন্ধা, দয়া, তিতিক্ষা ও যজ্ঞ এ সকল বিষ্ণুর মূর্ত্তি। বিষ্ণু সমস্ত দেবতার অধ্যক্ষ, সকলের অন্তর্যামী, অহারদিগের বিদেবী প্রাং তিনিই ঈশার ও চতুর্থ সহিত সমস্ত দেবতার মূল ॥ ২৮ ॥

হে সহারাজ! যে হেন্তু আহ্মণাদি সকলে বিফুরই শরীর, অতএব ধ্যিদিগের হিংসা করা যাউক, তাহাই বিফুকে বৃধ-করিবার উপায়। তদনন্তর হুর্মতি কংস হুর্মন্তিদিগের সহিত মন্ত্রণা করিয়া অহ্মহিংসাতেই আপনার শ্রেয়ঃ অবধারণ করিল, কারণ কালপাশে আর্ভ হইয়াছিল, পরে পরপীড়নে
তৎপর তথা ইচ্ছাসুসারে বিবিধ রূপধারি দানবদিগকে সাধুজন হিংসার্থ আদেশ করিয়া নিজগৃহে
প্রবিষ্ট হইল॥ ২৯॥

20

কেবৈ রজঃ প্রকৃতর শুষ্দা মৃত্তেতসঃ। দতাং বিষেষমাতের রারাদাগতমৃত্যবঃ॥ ৩০॥ আয়ুঃ প্রিয়ং যশো ধর্মাং লোকানাশিষ এবচ। হস্তি শ্রেয়াংসি সর্বাণি পুংসো মহদতিক্রমঃ॥৩১॥ \*॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংদ্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমস্ক্রেইস্থ্রমন্ত্রণং চতুর্থোহধ্যায়ঃ॥ \*॥ ৪॥ \*॥

শ্ৰীশুক উবাচ॥

নন্দস্বাত্মজ উৎপরে জাতাহলাদে। মহামনাঃ। আহুয় বিপ্রান্ বেদজ্ঞান্ স্নাতঃ শুচিরলঙ্কতত্বান্।

# श्रीभत्रयामी।

আরাং দমীপমাগতে। মৃত্যু রেষাং তে॥ ৩०॥

নতাং বিষেষো ন মৃত্যুমাত্রহেত্: কিন্তু বহুবনর্থকারীত্যাহ আয়ু: শ্রেয়নিতি ॥ ৩১ ॥

. ॥ ☀॥ ইতি দশমে চতুর্থঃ ॥ ☀ ॥

পঞ্মে জাতকং নলী সনোঃ কথা মহোংসবং। গ্রাণ মথ্রাং প্রাণ বস্তুদেবাগ্নোৎসবং॥ •॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

রজঃ অভাবন্ধাং কুপথগামি বৃদ্ধয়ঃ উদ্রিক্তেন তমসাচ সাধু দর্শিতমপি সংপথমপশাস্তঃ বিদ্ধে ফলমাহ আরাদিত্যাদিনা ॥ ৩০ ॥ লোকান্ ধর্মসাধ্যস্থাদীন্ আশিষে। নিজবাঞ্চিতানি আয়ুরাদীনাং যথোত্তরং শ্রেষ্ঠাং কিং পৃথপ্তি দেশেন সর্কাণ্যপি শ্রেষাংসি সাধ্য সাধনানি প্ংসঃ সাধিতাশের পুরুষার্থন্যাপি জনস্য মহতাং তাদৃশাং শ্রীবিঞ্চোরপ্যপদ্ধীব্যশীলক্ষেন প্রসিদ্ধানাং অতিক্রমো বাচনিকাদ্যনাদ্রোহপি॥ ৩১ ॥

॥ \* ॥ टेंकि देवकवटकावनीनाभाः प्रभग विश्वकाः हकूर्यः ॥ \*॥

নন্দ্ৰিত যুগ্মকং। নন্দয়তি জগদিতি খ্ৰীনন্দ্যা যথাৰ্থ সংজ্ঞাইং দৰ্শয়ন্ তুশলোক্ত মৈখবা জ্ঞান প্ৰধানাং খ্ৰীবস্থদেবাদপি শুদ্ধবাং-স্বারীত্যা সৌভাগ্যভ্রমভিব্যঞ্জয়তি আত্মজ ইত্যাদিনা কুর্ম্বহেত্যকেন। অতঃ শ্লাঘিষ্যতেচ রাজ্ঞানন্দঃ কিমরোধু ক্ষন্ ইত্যাদিভ্যাং

क्रयममर्डः।

অতিক্রমো বচসাপি॥ ৩১॥

॥ \*॥ हेिज मनरम ठजूर्थः॥ \*॥ ४॥ \*॥

আয়ুক ইতি পুত্রীভূত ইত্যার ব্যাধ্যাদ্যতে পূর্ব্বের। মহামনা: শ্রীক্ষাবিষ্টিতি:। . অধুনা তু তশিলের আয়লে লাতে লাতা-

# विश्वनाथठक वहीं।

ভীতং রাজানমাখাদয়তি<sup>,</sup>আরাদিত্যাদিনা॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥

॥ \* ॥ ইতি সারার্থদর্শিনাং হবিণাাং ভক্ততেখাং। দশ্মদা চতুর্থেহিন্নং সক্তঃ সূক্তঃ স্তাং॥ \*॥

রুঞ্জনোৎসবো দাড়ং করং শ্রীমধুরাগম:। নন্দ্রা ব্রুদেবেন সংলাপ: পঞ্চমে হতবং। নন্দ্রিতি তৃকারেণ বর্লেব আত্মজে উৎপরে জাতাহলাদোহিপি কংসভয়াৎ সঙ্চিত্মনা জাতকর্মাদিকং কর্তুং ন প্রাভূং। নন্দস্ত আ্বাজ্ঞে উৎপল্লে জাতাহলাদো মহামনাঃ

হৈ ভারত! অফ্রগণ একে রজঃস্বভাব, তাহাতে আবার তমোগুণে তাহাদের চিত্ত বিমৃত্ত আপনারা মৃত্যু সমীপে আগত হইয়াছিল অতএব আশু উৰ্কায় হইবার নিমিত স্ক্তোভাবে ব্ৰহ্ম ক্রিতে প্রস্তুত্ত হইল॥ ৩০॥

হে রাজন্ প্রীক্ষিৎ! সাধুজনের বিষেধ কেবল মৃত্যুমাত্রের কারণ নহে, তাহাতে বহু ২ অনর্থ হয়, অর্থাৎ মহন্ত ক্রিনের অতিক্রমে পুরুষের আয়ু, জ্রী, যশ, বর্ম, অর্গাদিলোক, কল্যাণ এবং সর্ব প্রকার শ্রেষ বিনষ্ট করিয়া কেলে। ৩১ ॥

॥ अ । 🗪 ि प्रभारम हेडूर्थ ॥ 🗱 ॥ .

পুত্রের জাতোৎসব করিয়া নন্দের মধুরায় গমন এবং তথায় বস্তুদেব সহ সমাগ্রেমাৎস্ব । ।।

# বাচরিত্র। স্বস্তায়নং জাতকর্মাজ্জদ্য বৈ। কারয়ামান বিধিনা পিত্রেবার্চনং তথা॥ ১ 📭

औधत्रश्राभी।

बरायना डेमात्रुहिन्छः ॥ >॥

### देवस्थवरकावनी।

আত্মজ ইতি অত্যাত্মজত্মুংপন্নত্বনাত্মন্ত্ৰনাত্পন্নত্বনিত্যৰ্থতন্ত্ৰং প্ৰত্যেকাৰ্যাভ্যাং ব্যক্ষতে নীলোপস্বৰ ভচ্চান্যধা প্ৰতিপত্তি নিরা-সার্থং। তত্তাত্মজন্বং পুত্রভাবেনাথ্মৰি প্রাত্নভূতিহ্বমেব নান্যৎ তৎ থলু আবিবেশাংশভাগেন মন আনক হৃদ্ভে:। ততো জগমঙ্গল-মচ্যুতাংশমিত্যাদিবৎ শ্রীনন্দ যশোদয়োরপি গম্যতে। যস্য দেবে পরা ভক্তি যথা দেবে তথা গুরৌ। তদৈয়তে কথিতা হথা প্রকা-শত্তে মহাত্মন ইত্যাদে:। ভক্তিরেবৈনং নযতি ভক্তিরেবৈনং দর্শয়তি ইত্যাদেশ্চ শ্রুতে:। তথা ভক্ত্যাহমেক্যা আহু ইতি শ্রীভগবহুকেশ্চারাম্ভবিষ্যতে তাদৃশ প্রেমাম্পদত্যা পরম পুরুষার্থ রূপায় তৎপ্রাকট্যায় সতত তন্মনম্বলক্ষণ ভক্তেরাবশ্যকথাং শ্রীনারদ পূর্ব্ব জন্মনি শ্রীঞ্চবপ্রহ্রাদাদিষুত্র দৃষ্টত্বাৎ তৎক্রতুন্যায়েন যে ষ্ণা মাং প্রপদ্যত্তে তাংস্তবৈব ভজান্যহমিতি শ্রীভগবহুপ-নিষ্ব প্রামাণ্যেনচ ত্ৎ প্রাকট্য বিশেষায় ভাষিশেষক্ত চাপেক্ষিভত্বাৎ। অনম্যোরেভাদৃশ ভক্তি দিগদর্শন তু ব্রহ্মবরে করিষ্যতে। এতদেবাহ মহামনা ইতি অত্যন্ত তাদাত্ম্যাপত্ত্যা মহান্ একিঞ্জএব মনো যস্য তন্ধারণ সামর্থোন মহৎ মনো যস্য ইতি বা। यস্যান্তি ভক্তি ভগবত্যকিঞ্চনা দক্ত্তিপ্ত তিন শুক্র সমাসতে স্থবা ইত্যুক্তামুসারেণ মহামনন্ত্রং থবকৈব মৃণ্যং যক্তোদার্য্যাদরো ছপি গুণা অন্তর্ভবন্তীতি উপলক্ষণকৈতং এ মিশোদারা অপি বক্ষাতেচ। নন্দঃ কিমকরোদ্রশ্বন্ প্রের এবং মহোদরং। মশোদাবা মহাভাগা পপৌ यদ্যা ইতি। তদেবমনয়ো ত্তমোশ্চাত্মনি তৃদ্য আতৃত্বে সমানে ২পি ফুলেন ফলকারণ মহুমীয়তে ইতি ন্যায়েনান্তি বিশেষঃ। ত্যোশ্চত্-ভূঁ জ্বেনানয়োদ্বিভূত্ত্বেন ইতি। অথোৎপন্নত্বং নাম চ বহিস্তাদৃশ প্রাকট্যমেব নতু জীববৎ প্রকারান্তরং তচ্চানয়ো ততো নির্কিশেষ-মেৰ প্রত্যুত পূত্রতম্মোৎপন্নত্বেত্বতি বিশেষো হপি পূত্রত্ব ব্যঞ্জিকশাক্ষত্যা প্রকৃত্যা চানম্বো: প্রাকট্যাৎ তরোস্ক পুত্রত্বাপ্রত্যারিক্যা তয়া তরাচ প্রাকট্যাৎ তচ্চ যুক্ত অনয়োরেব প্রাতে: গুদ্ধপিতৃভাবময়ত্বাছৎকৃষ্টত্বাচ্চ। তত্ত্ব নলবিত্যাদিনা তু শব্দ ব্যক্ত বৈশিষ্ট্যেনাত্র দর্শ্যতে। পর পরত্রচ দশ্যিষ্যতে ত্রােক্সিখ্য জ্ঞানাজ্য়নেব বিদিতােহসীত্যাদিনা তদ্দশিতং তাদৃশভাবং বিনা তু শ্রীবরাহদেবস্য ন ত্রন্ধপুত্রত্বেন এক্রিঞ্চদেবস্যুত্র নোত্তরাপুত্রত্বেন প্রসিদ্ধিঃ তয়োন্তস্য নাভিমানো হপি। তত্মাৎ সর্বাংশেন এনন্দস্যাত্মজ্বত্বেনাৎপল্লোইসৌ ক্রিয়য়া জন্যাস্পৃষ্টতীয়েদ বক্ষ্যতে আহুম্বেত্যাদি গ্রন্থেন। অতঁএব শ্রীগর্গেণৈবাত্র প্রধানতা বক্ষ্যতেচ। প্রাগয়ং বস্থদেবদা কচিজ্জাত-ন্তবাত্মজ ইতি। প্রীবন্ধণাপি স্বপুরুণার্থতা সমধ্য়িতা নৌমীডাত ইত্যাদৌ পঙ্গাঙ্গজায়েতি সর্বতে। বৈশিষ্টেন ভগবতা ঞ্জিকেনচ নাযং সুথাপো ভগবান্ দেহিনাং গোপিকাস্থত ইতি। স্থাগমবিভিন্তি সকল লোকমঙ্গলোঁ নন্দগোপতনয়ো দেবতেতি। তত্মালন-

#### ক্রমসন্ত:।

হলাদ ইত্যাদিভিঃ। আবিবেশাংশভাগেন মন ইত্যাদি সাম্যং বোধয়য়পি ভাববৈশিষ্টাং বোধয়তি কারয়ামাদেতি। স্থানৰজাডাাং⊪১

#### ञीविधनाथहळावडी।

অতিবিদ্যিত্যনাঃ বৃতিবাচনপূর্বকং জাতকণ্ম কার্যামাসেতি তুকারাদেবৈত্যাত্রে বহুদেবান্তেদে প্রতিষ্ঠ নন্দগ্রেশি রুঞ্চান্ত্র প্রার্থি নন্দগ্রেশি রুঞ্চান্ত্র প্রার্থিন নন্দগ্রেশি রুঞ্চান্ত্র প্রার্থিন নিজ্ঞান্তর প্রার্থিন নিজ্ঞান্তর প্রার্থিন প্রার্থিন ক্রিলিন্তর প্রার্থিন ক্রিলিন্তর প্রার্থিন ক্রিলিন্তর প্রার্থিন ক্রিলিন্তর প্রার্থিন ক্রিলিন্তর ক্রেলিন্তর ক্রিলিন্তর

হে রাজন্! আত্মজ উৎপন্ন হইলে উদারচিত্ত নন্দ সাতিশয় আনন্দিত হইলেন। স্নানানন্তর শুচি

# ধেনুনাং নিষুতে প্রাদান্বিপ্রেভ্যঃ সমলঙ্কতে। তিলাদ্রীন্ সপ্তরক্রৌঘ শাতকৌস্ভাফরার্তান্॥ २॥

### शिशतयामी।

নিযুতে ছে দশ লক্ষে সপ্ত তিল পর্কভাংশ্চ প্রাদাং। কথস্কৃতান্ রজৌতৈ রক্তসমূহৈঃ শাতকৌস্তাৰ্টরঃ স্থবর্গ রসাটিজবন্ধনৈশ্চ আর্তান্ । ২ ॥

#### বৈক্ষৰতোষণী।

জাতং। তদ্যা মাতৃ কলবাজনে কি নল্জা ৰজং মথেতি জাতে যে মানা জন্মচ শ্রীবন্ধদেবাদী ব্যাজমান্ত্রাইন ত্রাপ্যসৈবান্তর প্রভাব নাজনিব কারে। তদাং প্রিত বদা বাবিভূতি চতু জি রূপাছালনার শ্রীদেবকীছা সারতে তদা যশোদা হলবহু দিছুল রূপস্য তজ্ঞপাছালন পূর্বকাবিভাব স্তন্ত্রাদীদিতি গন্যতে। অত্রব প্রাগন্ধ ব্যুদেবস্য কচিজ্ঞাতন্তবাত্মল ইতি অংশ্রোক সমাধানার্থ শ্রীপর্ণ: পুনর্বক্যতে। বহুনি সন্তি রূপাণি নামানিচ হত্যা তে ইতি। অথু পূর্ববিদার্থনাক শ্রীনন্দ্রশোদযোরভিমত্যা সিদ্ধান্ত গত্যাচ শ্রীক্ষে নিজাল্পজ্ঞং মুখ্যমেনিব হাপিতং দেবার তন্তলাল্পনাক্ষ্ ভূতং রূল নিশ্বিত্যা: শ্রীবন্ধদেব দেবক্যো শুক্তদভাবাহপগুছাত্মলামিতাত্মিরিব ন গৌণ্ডেনেতি বিবেচনীরং। তদেবং সিদ্ধান্ত ইতি মহোহেসবাত্মকুল্যেন তদেব প্রথমিষ্যান:। পূল্লে চোহপদ্ম জাতাহলাদ ইতি ন কেবলং পূল্লো জাতঃ কি দ্বাহলাদে হপি জাতু ইতি সহোক্তি: পূল্রব্যাজনাহ্লাদ এব জাত ইত্যুৎপ্রেক্ষা স্থতঃ সম্ভবি বস্তান বাজ্যতে তেচাহলাদস্য প্রাচুর্য্যং ধনমত ইত্যালকারিকাঃ এতচ্চ মহোহদ্য বৈশিষ্ট্যে হেতুঃ। বিশেষতঃ প্রান্তি প্ররন্তি কামানিতি বিপ্রান্তান্ তলাদি বেদজান্ লাত কর্মাদি বৈদিকবিধি সম্যান্তি প্রোজ্যান্ । যাবতী বৈ দেবতাঃ সর্কা ন্তা বেদবিদি ব্রাহ্মণে বসন্তীতি প্রত্যে। ভচি বৈঞ্চব তিলকাচমনাদীনা বিশেষতঃ প্রিত্য: মন্ লাতকর্মান্ত প্রান্তন্ত্রমিধা জননাদি কর্মামান কেবানের তরং কর্ত্ব বিধানাং। তন্ত কর্মকলং প্রয়োজরীতি ন্যামাং ফলং তন্তৈর। বৈ ইতি পাঠে তচ্চ প্রসিদ্ধবেবতার্থ:। বিধিনা বথাবিধীত্যর্থ: বিধিবদিতি কচিৎ পাঠ:। অস্য যথপ্রপক্ষং পূর্বৈং পরেশ্ব সহর্বানান্দ জাড্যমেব হেতুক্বক্ত:। যদ্বা তথাপ্যক্ত তদামেজিতাদ্যবহুত্ব ভালাক করেন্ত। তন্ত জাতাহলাদ ইত্যনেনানন্দ জাড্যমেব হেতুক্বক্ত:। যদ্বা তথাপ্যক্ত তদামেজিতাদ্যবহুত্ব স্থান করেন্তর্বা স্বান্ত ক্রামান্ত ত্রান্তন করেন্তর্বান্ত হিলাদ্যক্র ইত্যন করেন্তর্বার্য হিলাদ্য স্বান্তন্ত্র । তন্ত ক্রান্তনাদ্য ইত্যনেনানন্দ জাড্যমেব হেতুক্কক্ত:। যদ্বা তথাপ্যক্ত ক্রামান্ত ইত্যন করেন্তর্বান্তন হিলাদ্বত্র ইত্যন করেন্তন্ত্র । ত্রান্তন্ত্র ইত্যন করেন্তন্ত্র ইত্যন করেন্তন্ত্র হিলাদ্য করেন্তন্ত্র হিলাদ্বন্ত্র ইত্যন করেন্তন্ত্র হিলাদ্বন্ত্র হিলাদ্বন্ত হিলাদ্বন্ত্র হিলাদ্বন্ত হিলাদ্বন্ত্র হিলাদ্বন্ত হিলাদ্বন্ত হিলাদ্বন্ত্র হিলাদ্বন্ত্র হিলাদ্বন্ত্র হিলাদ্বন্ত হিলাদ্বন্ত হাল্য করেন্ত হিলাদ্বন্ত হিলাদ্বন্ত্র হিলাদ্

নিযুতে বিংশতিলক্ষাণি এতচ ছাদশাধ্যারে প্রকটী করিব্যাম: তত্ত কীরস্বামিকারিকরা দিগদর্শনং ধথা এক দশ শত সহস্রাণ্য-যুত' প্রায়্তাথ্য লক্ষমথ নিযুত্মিতি । সম্যালস্থত বথোক্ত রৌপ্যাধুর স্বর্ণ শৃঙ্গাদি ভূষিতে । তিলাদ্রিপরিমাণাদিকমুক্তং ভবিষ্যোত্তরে ।

#### • ক্রমসন্দর্ভঃ।

ধেন্নামিতি নিযুত্সতা শতগুণিতমযুক্ত জেরং। এক: দশ সহ্তামবৃত্ত প্রেষ্তৃথি লক্ষণ নিযুত্মিতি কীরখামাজে: বিলয় কথং খায়ং ন ক্তবান্ উচাতে ॥ ই॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তারতমোনৈর তত্ত্বাপদেশ তারতম্যমন্যথা বরাহদেবস্য বন্ধপুত্রবং ক্ষুস্য চোত্তরাগর্ত গতত্বেনোতরা পুত্রব্যধি প্রসিদ্ধাতি ক্রবাণা বশোদা গর্ত্তবাভাবমের স্বাভীষ্টপাধকং মন্যতে নচ নল বশোদারো: ক্ষেত্ব স্থান্তর ব্রৈয়ব তত্তাপি সম্বল্ধসাপাধিষ্ণ বাচাং। নহি বস্ত্তশক্তির্ব্ধ্যা পরাহন্যত ইতি নায়াং। নহি নির্ক্তেক্ত প্রেমা হেতু বুরৈয়ব সহেতুকো ভবতি নহীবরে জীববুরৈয়বেশবো জীবো ভবতি কিন্তু ক্ষণসা মৃত্তকাদান্ত্তভাবণস্যাপি সত্যম্মারামেবপ্যপাদেশবহন্ত্যাস্থাপ সত্যমায়ারামেবপ্যপাদেশবহন্ত্যাস্থাং প্রেমদমক্ষেতি সিদ্ধান্ত:। জাতাজ্যাদ ইতি পুত্রেণ সহাজ্যাদোহপি জাত ইতি সহোক্ত্যাল্ডনার প্রব্যালেনাজ্লাদ এব জাত ইত্যুৎপ্রেক্ষাত। জারামানেত্যাজ্যাদোধ স্বাধ্যান স্বর্গ কর্ণাসামর্থাং॥ ১॥

নি**কৃত্ব বিংশতি নক্ষাণি। একং দশ শত নহলাণাব্**তং প্রযুভাধা লক্ষমথ নিযুত্মিতি ক্ষীরক্ষামী। তিলাজিপরিমাণম্কুং ভবি-

হইয়া বেদজ বিপ্রাগনকে আহ্বান ও অলক্ষত করিয়া স্বস্তিবাচন পূর্বকে মণাবিধি তনয়ের জাত কর্মাদি করাইলেন। পরে আপনার পিতৃ ও দেবলোকদিগেরও অর্জনা হইল ॥ ১ ॥

তদনস্তর বিংশতি লক্ষ অলঙ্কত ধেমু, তথা সাতটী তিলপর্বত আক্ষণদিগকে দান করিলেন। সেই

# • কালেন স্নানশোচাভ্যাং সংক্ষারৈ স্তপদেজ্যা। শুদ্ধান্তি দানৈঃ সম্ভক্তা ত্রব্যাণ্যাত্মাত্মবিদ্যয়া॥৩॥

### शिधतवामी।

জব্যাণাং গোহিবণ্যাদীনাং হল্লধ্যে কিঞ্জিনৈ বেবশুদ্ধি তথা দানাদি যুক্ত জাতকথা সংস্কারৈরেব গন্তাপাং শুদ্ধিরিতি দশ্বিতৃং প্রতিনিয়হানি শোধকানি দৃষ্টান্তবেশোনাংরতি কালেনতি। কালেন ভূম্যাদি স্নানেন দেহাদি শৌচেনানেধ্যলিপ্রাদি সংস্কারে-র্গতাদি তপ্রদক্ষিয়াদি ইন্যায় আদ্বাদি দানৈপ্রবাণি সংভূষ্টা মন: আত্মা আত্মবিদ্যয়ু॥ ওঞ্

### देवकवट्यावनी ।

উওমো দশভির্টোবৈশ্বানং প্রভাগিতঃ। বিভি: কনিষ্ঠে। রাজেন্স তিলনৈলা প্রকীতিতঃ। পূর্দ্ধবচ্চাপ্রং স্বাং বিশ্বন্থং প্রকালিকং। তিলোকং তবৈবালো ধান্যান্তিপ্রদ্রেশ। ইবং নিবেশ্যামরশৈল মগ্র্যা মতন্ত্র বিশ্বন্ত গিরীন্ ক্রমেণ। তুরীর ভাগেন চভূদিলঞ্চ সংস্থাপরেং পূলা বিলেপনাচ্যানিত্যালি। তেচ মল্বান্যঃ চহারঃ। তথাচ তবৈত্র মেরুমহান্ বাছিম্যন্ত মধ্যে স্থান বুলি ব্রু সংখ্তঃ স্যাব। পূর্বেশ মুক্তাকল বন্তুর্ক্তা বান্যেন গোন্দেক পূল্যাগৈঃ। পশ্চাক গারুত্বতা নীলরহৈঃ সোন্যেচ বৈদ্ধ্য স্বোজনাগৈঃ। বন্ধা বিশ্বু ত্রাবান্ত্র দ্বারি দিবাকরে। হপ্যে হির্মায় স্যাব। কিঞ্চ শুক্রাবাগ্রন্থবাবলী স্যাব পূর্বেণ ক্রুলানিচ দক্ষিণেন। বাসাবি পশ্চাদ্ধ কর্ম্বাণি রক্তানি চৈবোভয়তে। ঘনানি ইত্যাদি। দ্রোণ সংখ্যাচ্যেক্তা গারীজোণাঢ়ক প্রস্থাং কুত্রক্ত পলং পিছুঃ। শাণকে। মাষকশৈচ্ব ব্যাপ্র্বাং চতুর্গণা ইতি। এবং বট্পঞ্চাশদ্ধিক পলশত ছয়েন জোণঃ স্যাব। তাদ্লান্ সপ্ত বছল রয়াদি যুতান্ প্রক্তি শাতকুভাধ্বাত্রতহং স্থনেরোর্কর্ণস্যাপি সাল্শ্যায়। ততঃ পূর্বেভ্যাংন্যানেয়তানি। তাদ্লান্ সপ্ত বছল রয়াদি যুতান্ প্রক্তি পাদপ্রকাননাদি পূর্বকং নিজজননৈ শুভলগ্রেষ্ তহং প্রস্থাপনাদি প্রকারেগালাগায়। যা

নম্বদ্যানস্পদ্ধে হৈত্ত হি বাং কর্ত্ত কালবিলাং কথং ন রুত্বান্ উচাতে পুল্পেন্নৈবেতা হ কার্বেন্তি তদ্ ষ্টান্তি ব্যা
কালং গর্ভদে রাবশ্যক্ষমভিপ্রেতং। অন্যাইত ক্ষর ভ্যাদীন্যধাস্তানি দ্র্রাণি অর্ধাং। গর্ভদে দাঁই ত্রিক বং দ্রব্য শুদ্ধে পূর্বিদ্যাব সাধ্যমান অত তথা শব্দেন পূর্বেত যথেতি গমাতে। যথা তথেতি পাঠঃ কচিং। ভূমি শুন্ধানীনাষ্পাদানং দৃষ্টান্ত পোষ
পার্থমেবৈতি ব্যক্তিই। যথা কালাদিভি প্রবাণি ভূম্যাদীনি শুন্ধান্তের আল্পান্ত্র্ আল্পানি ব্যাদিবিল ক্ষাভাবিল্যা ব্যাদিবিল ক্ষাভাবিল্যা ব্যাদিবিল ক্ষাভাবিল্যা ব্যাদিবিল ক্ষাভাবিল্যা ক্ষাদ্ধিন শুন্ধানি শুন্ধানি ভূম্যাদিবিল ক্ষাভাবিদ্যা ব্যাদিবিল ক্ষাভাবিল্যা ব্যাদিবিল ক্ষাভাবিল্যা ব্যাদিবিল ক্ষাভাবিল্যা ব্যাদিবিল ক্ষাভাবিল্যা ব্যাদিবিল ক্ষাভাবিল্যা ক্ষাদ্ধিন ক্ষাভ্যাদিবিল ক্ষাদিবিল ক্ষাদিবিল্যা বিশ্বাদিবিল ক্ষাদিবিল ক্ষাদিবিল্যা বিশ্বাদিবিল ক্ষাদিবিল ক্ষাদিবিল ক্ষাদিবিল ক্ষাদিবিল ক্ষাদিবিল ক্ষাদিবিল ক্ষাদিবিল ক্ষাদিবিল্যা বিদ্যাদিবিল ক্ষাদিবিল ক্ষাদি

#### क्रममन्द्रः।

পুর্ব্রপ্রেরেবেত্যাহ কালেনেতি। জ্ব্যাণি ভূম্যাণীনি তত্র ভূমে: কালেনেত্যাদি জ্বেশং ॥ ৩॥ ৪॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ .

### वीविश्वनाथहळ्व ही।

ব্যোজরে। উত্তয়ো দশভির্জোণৈ মধ্যমং পঞ্চিম্তিং। ত্রিভিঃ কনিষ্ঠো, রাজেন্দ্র তিল্পৈল্য প্রকীর্তিক্ষা দ্রেল্যংখ্যাত খারী ব্রোণাঢ়কাং প্রস্থাং কুড়বঞ্চ পলং পিচুং। শাণকো মাষকশ্চেতি বর্ণাপূর্বং চতুগুণা ইতি ॥২॥

্ আবশ্যক্ষ্য ৰিবিধদানাদিযুক্ত জাতকৰ্মনো গৰ্জগোধক্ষ্য প্ৰাক্ বালক্ষ্য দৃষ্টাস্তান্ দীপকাল্ডারেগাহ্ কালেনোত কালাদিভি র্জব্যাণি ভন্নান্তি। তত্ত্ব কালেন বন্ধাদীনি লানেন দেহাদীনি শৌচেনামেধ্য লিপ্তালাদীনি সংস্কারে গর্জাদীনি তপ্যা ইন্দ্রিয়াদীনি ইজ্যা ব্যাস্থাদীনি দানৈ ধনাদীনি সম্ভটা মনঃ। আত্মাতাবিদ্যয়া প্রমাম্মনঃ শ্বরপাফুভবেন জীবঃ॥৩॥

# সপ্ত তিলাচল রত্ন সমূহ, তথা স্থবর্ণ রসাক্ত বসনে আরত হইয়াছিল॥ ২॥

হে ভারত! গো হিরণ্যাদি দ্রব্য মধ্যে কোন ২ পদার্থ যদ্রেপ দানাদি হারা শুদ্ধ হয় তদ্রুপ দানাদি যুক্ত জাত কর্ম সংস্কার হারাই গর্মগুদ্ধি হইয়া থাকে, এই নিমিত্ত নন্দ ঐ রূপ দান করিলেন। কলতঃ কোন ২ পদার্থ (ভূম্যাদি) কালবশতঃ শুদ্ধ হয়। কোন ২ পদার্থ (দেহাদি) স্নান হারা শুদ্ধি পায়। কোন ২ বস্তু (আমেধ্য লেপনাদি) শোচ হারা শুদ্ধ হয়, কোন ২ পদার্থ (ইন্দ্রিয়াদি) তপদা হারা প্রত হয়। কোন ২ ব্যক্তি (ব্রাহ্মণাদি) যক্ত হারা পবিত্র হন্। কোন ২ পদার্থ (দ্রব্যাদি) দান হারা শুদ্ধ হয়। কোন ২ পদার্থ (মনঃ প্রভৃতি) সম্বোধে শুদ্ধ হয়। তথা আরা আরুবিদ্যা হারা শুদ্ধ হয়। থাকে ॥ ৩ ॥

সোমসলাগিরো বিশ্রাঃ সূত মাগধ বন্দিনঃ। গায়কাশ্চ জগুনেঁ ছুক্তর্যো ছুক্ত্যো মুহঃ॥ ৪॥ অজঃ সংমৃষ্ট সংসিক্ত দারাজির গৃহান্তরঃ। চিত্রধ্বজ পতাকা আক্ চৈলপল্লব তোরণৈঃ॥ ৫॥ গাবো র্যাশ্চ বংসাশ্চ হরিদ্রাতৈল্র্যিত।। বিচিত্র ধাতুর্বই অক্ ব্রুকাঞ্চনমালিনঃ।
মহাহ বস্তাভ্রণ কঞ্কোফীয় ভূষিতাঃ। গোপাঃ সমায্যু রাজন নানোপায়নপাণ্যঃ॥ ৬॥

### शिभतवाभी।

সৌমসলাগিরঃ স্বাভিবাচকাঃ বিপ্রাদ্যোবভূব্য। তার প্তাঃ পৌরাভিনাং প্রেক্তো মাগদা বংশশংস্কাঃ। বন্দিন খুমন প্রেজাঃ প্রভাব সন্ধেরেলং ॥ ॥

সংষ্টানি সংসিকানিত ছারাণি অজিবাণি অজবানি গৃহাওবাণি গৃহমধ্যানিত ধ্যিন্স তথা চিত্রধ্যজের প্তাকানাং অজ্ভৈচন প্লবতোবিধানি চ তৈ ভূষিতঃ ॥ ৫ ॥

হরিত্রাকৈর ক্ষিত। লিপ্তা: বিচিত্রা ধাতব্য বহলজন্চ বস্ত্রাণিস কাঞ্চন নালাশ্চালকার তথা বিদ্যান্তে বেষাণারেত তথা ভূতা গ্রাদ্যো বছুব্বিত্যব্য ॥ ৮॥

#### देवभवदां सभी।

্ডেষ) আনক ভেনাঃ গুৰিব ভেদাশ্চ জুপ্ভ্যশ্চ আনকভেনাশ্চ যুগাত এব হস্তাভ্যাং ক'টিবিয়েন বাদাজে তে নেছঃ অংখনেব। মুক্রি তাজ স্টার্মবিষ্যঃ হর্ষভ্রেণ ভেষ্যুং তাৰ তাল্ডিপ্রেঃ ॥ ৪ ॥

সংশক্ষাভাগনাদিনতো বিশেষে। বোধাতে। চৈলানি থণ্ডিত ব্যাণি। অনাথৈ:। তত্ৰ পতাকানাং জ্ৰজো মালাকাবেণ স্বি বেশাং। কৃষ্যিত ইতিধ্যাই।বাং। যদা জ্ৰজং পুশুমালাঃ চিত্ৰাণি বিবিধানি যানি ধ্ৰজাদীনি তৈঃ সম্মন্য । ৫॥

চকাবৌ পূর্ব কৈমুত্য প্রতিপাদকৌ তেন মহিষ্যাদ্যোহপুপেলক্ষ্যন্তে বুষা বংসতরা ইতি পাঠঃ কচিৎ।

তদেব সন্ধানাৰ গোক্লস্য প্ৰীনন্দৰণোদে প্ৰতি প্ৰমান্ধ্ৰাগং দশিতবান্দ্ৰাগতি মহাহেঁতি সপ্ততি:। স্মাগাযয়ুবিতি সন্ধ গুহে তত্ত্বস্থা বচনাং প্ৰবৈজ্ঞাৰ মুবিতাথং এজং সংস্থাই ইতাছিলজাইং। স্মাক্তনেবত দশৈতি প্ৰমাহৰ্ষ বাজকাত্যাং মহাহেঁতাদি বিশেষণাত্যাং মহাহেঁবিছিম্বা নিধিবং গুলান্ত ক্ৰিকিতৈবলি বন্ধাদিতি ভূমিতাঃ সন্তঃ। যান্যেৰ প্ৰমোধান্যেন দাস্যন্তেচ নামো পাষনৈ মহাব্যাদিভিদ্বা গোণ্যা বেষাং তে। বাজদিতি শ্লেষণ হে প্ৰেমা বিবাজনান। যথা বাজেং ইত্যুপায়ন বিশেষণং। গোপা গ্ৰাবজনা তথ্যভাব্যাপ্ৰয়া জাতৈয়ৰ স্থানিয় চিন্তা ইতি ভাবঃ। শ্লেষেণ ত্ৰচ তাদৃশ তথ প্ৰেমা গাং পৃথিবীম্পি পান্তি ইতি। প্ৰমণ্যে গগ্ৰাম

#### बीविधनाषहक्रवाशी।

তবা বিপ্রাঃ সৌমস্কাগিরঃ সৌমস্কাং গীর্ রেষাং তে . শুভাশীকাদক। বভূবঃ। ত্তাদরো জগুঃ। ত্তাঃ পৌরাণিকাং প্রোক্তা মাগ্রা বংশশংস্কাঃ। বন্দিনশ্বনল প্রক্রাং প্রতাব সদ্ধোক্তবং ॥ ৪ ॥

আনে সমাক্ মুঠানি পশ্চাৎ চন্দনপুশাদি রসৈঃ সংগিকানি ধারাণাজিরাণাস্থনানি গুঃমধ্যানিও ব্যিন্ বঃ। টিওল্বজ প্তা-কাডাং তথা চিত্রাণাং ক্রমাং চেলানাং চেল্ব গুনাং প্রবামাঞ্চিত তিবিটা ক্রোরটণঃ বিভূমিতে। হতুদিতি শ্বেঃ॥ ৫॥

### ক্ষিতা লিপা: ॥ ৮॥

সে যাহা হউক, তদনন্তর আক্ষণগণ অভিবাচন আরম্ভ করিলেন। সূত (পৌরাণিক) মাগধ (বংশকীর্ভক) এবং নৃদ্দী (প্রস্তাবানুরূপ কথনশীল) লোকের। তব করিছে লাগিলেন। শেষে গায়ক গণ গান আরম্ভ করিল এবং বারস্বার ভেরী ও জুন্দুভির ধ্বনি হইতে লাগিল॥ ৪॥

হে পরীকিং ! ব্রেজপুরীর সম্দায় দার, অজির এবং গৃহতল সম্মার্জিত ও জলসিক্ত হইল আর চিত্র বিচিত্র ধ্বজা স্কলে পতাকার মালায় তথা চেল বসনু পল্লব এবং তোরণে ভূষিত হুইতে আরম্ভ হইল॥৫॥

অপর, ব্রজন্থিত গো, রুষ তথা বংস সকল, তৈল হ্রিদ্রার চল্চিত হইয়া বিচিত্র গ্রাতু, মর্রপুচ্ছ, মাল্য,বসন, ভূষণ, চোলক,তথা উঞ্চীবে স্থসভিজত হইয়া গোপগণ বিবিধ উপহার গ্রহণপূর্বক আদিতে আরম্ভ করিল॥৬॥ গোপ্যশ্চাকর্ণ্য মুদিতা বশোদায়াঃ স্পতাদ্ভবং। আত্মানং ভূষয়াঞ্চকু ব্স্তাকল্লাঞ্জনাদিভিঃ॥ ৭॥
নবকুষ্কুম কিঞ্জন্ব মুপপক্ষভূতয়ঃ। বলিভিন্তবিতং জগ্মঃ পৃথুত্রোণ্যশ্চলৎকুচাঃ॥৮॥
পোপ্যঃ স্বমৃষ্ট মণিকুগুল নিক্ষকণ্ঠা শ্চিত্রাম্বরাঃ পথি শিখাচ্যুত্মাল্যবর্ষাঃ।
নন্দালয়ং সবলয়। ব্রজ্ভীবিরেজু ব্যালোলকুগুল প্যোধ্বহারশোভাঃ॥ ৯॥

### क्षित्रवामी।

আকলাঃ অলহারা:॥ १॥

নব কমুম কিঞ্জকৈ মুখ পহজেষু ভৃতিঃ শ্রীধানাং॥৮॥

স্থায়ীনি উজ্জ্বানি মণিময়ানি কুগুলানি যাসাং নিষ্কাঃ পদকানি কঠেরু হাসাং তাশ্চ তাশ্চ শিথাভ্যশচুকোনি মাল্যবর্ষাণি যাসাং তাঃ নন্দালয়ং ত্রন্ততী এজিন্তাঃ পথি বিরেজ্বঃ সবলয়াঃ কন্ধণভূষিতাঃ। ব্যালোলৈঃ কুগুলাদিভিঃ শোভা যাসাং তাঃ॥ ১॥

### देवकवरकावनी।

গোপ্য: শ্রীবশোদারা যাতৃ প্রভূতর:। চশক উক্ত সম্ক্রয়ে। ততো গোপা আকর্ণ্যেতি পূর্বেণাপ্যয়য়:। আসাং পশ্চাদ্বাবাহস্তঃপূর্বা-সাং। মুদিতা ইত্যানেন তেভ্যোহপি নাদ বিশেষং দুর্শয়তি যশোদায়া ব্রহ্ময়শ: প্রদারা অনপত্যায়া শ্রীব্রক্ষের্যাঃ স্কৃত্যা উদ্ভব মুৎপত্তি নাকর্ণা এব মুদিতা স্তুস্যাং তামিংশ্চ নিত্য সহজ প্রেম সদ্ধাবাৎ অক্তএব ব্যাদিভিরাম্মান মভ্যয়ন্॥ ৭॥

নবকুৰুম কিঞ্জবাদপি মুখপকজানাং ভূতিঃ শোভা যাসাং ইতি তদানীমন্থরাগাবেশেন মুখশোভাতিশয় উক্তঃ। কিঞা বলিভি ম হারত্নাদিমরৈ রক্ষতপাত্রান্ত্রপহারেঃ সহ তান্ গৃহীত্ব। মোদ বিশেষ্মেবাহ ছরিতমিত্যাদিনা। পৃথুদেশিগ্যাহিপি ছরিতং অগ্যুঃ তত্র চলংকুচা ইত্যতিশ্যস্য লক্ষণং সর্ক্ষেণংকণ্ঠাতিশয়স্যেতি জ্ঞেরং ॥ ৮॥

ভক্তিবিশেষেণ পুনস্তাএব বৰ্ণব্বতি গোপ্য ইতি শিখা ধশিল্লাগ্রাণি নলালয়ং ব্রজন্ত্য এব বিশেষতো রেজুরিতি তাসাং দেহাদি শোভাশত সম্পত্ত্বো সত্যামপি শ্রীনন্দনন্দন প্রেমসম্বন্ধেনৈব বিশেষতঃ শোভেতি তাবঃ ॥ २॥

#### ক্রমসম্বর্ভ:

নবেতি অত্যুলাসাং নবকুত্বন কিঞ্জবাদপি মুগপকজ ভূতি বাসাং॥ বলিভিক্পথাবৈ: সহ॥ ৮॥ ১॥

### ঞীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

গোপ্য: শ্রীযশোদায়া ষাতৃ প্রভৃতর:॥ १॥

নবক্ষুম কিঞ্জাদিপি মুথপক্ষজে ভূতিঃ শোভা যাসাং তাঃ। বলিভিঃ স্বর্ণমুদ্রা রক্ষহারানর্য্য বস্ত্র নারিকেলাদি ফলাক্ষত দুর্কা চন্দন পুস্পমালালৈঃ স্বর্ণপাত্রস্থৈ স্বর্ণরসর্জ্যিত বস্ত্রাচ্ছাদিতৈ ব্যমপাণি গৃহীতৈঃ দহিতা ইত্যর্থঃ। পৃথু শ্রেণ্যোহপি ছরিতং জক্ষু ইর্ষোৎস্ক্যান্ত্রগ্রশাং॥৮॥

বৰ্ণিতা অপি তাঃ পুন উক্তিভরেগাতৃপ্তাা বর্ণয়তি গোপ্য ইতি। শিথা ধন্মিলাগ্রাণি। ব্রজতী ব্রজ্ঞা । ১ ।

গোপীসকলও মশোদার সন্তান জন্মিয়াছে এবণ করিয়া অতিশয় হুফ হইল এবং বসন ও অঞ্জনাদি দারা আপনাদিগকে ভূষ্তি করিতে প্রবৃত্ত হইল ॥ ৭॥

অনন্তর বিপুল নিতৰা ত্রিবলি শোভিত সেই সকল গোঁপী বশোদার সন্তান দর্শনার্থ সত্তর গমন করিল। হে রাজন্। কঙ্কুম ও পদ্ম কিঞ্জন্ধ দারা ঐ সকল গোপীর মুখপদ্মে চমৎকার শোভা হুইয়াছিল। তরান্থিত হুইয়া যাওয়াতে তাহাদের পীন স্তন চঞ্চল হুইতে লাগিল॥৮॥

সেই সকল গোপার কর্ণে উজ্জ্বল মণিময় কুগুল, কুণ্ঠদেশে মনোহর পদক এবংকরে শোভন কল্পণ ছিল, আর তাহারা বিচিত্র বসন পরিধান করিয়াছিল। অধিকন্ত, তাহাদের মন্তকশিখা হইতে এক ২ বার পুস্পমাল্য বিস্তন্ত হইয়া পড়িতেছিল অতথাব নন্দালয় গমন করিতে ২ পথিমধ্যে তাহারা সর্বতোভাবে বিরাজমানা হইল। এবংচঞাল কুগুল পীনপরোধর তথা মনোহর হার দারা তাহাদের সকলেরই চমৎকার শোভা ইইল॥ ৯॥

তা আশিষঃ প্রযুঞ্জানাশ্চিরঞ্জীবেতি বালকে। হরিদ্র। চুর্গ তৈলাদ্ভিঃ সিঞ্চন্ত্যোহজনমুজ্জঞঃ। অবাদ্যন্ত বিচিত্রাণি বাদিত্রাণি মহোৎসবে। কৃষ্ণে বিশ্বেখনে হনন্তে নন্দ্রস্য ব্রজমীয়ুষি। বোপাঃ পরস্পরং হান্টা দবি ক্ষার স্বতাম্বৃতিঃ। আসিঞ্জো বিলিম্পন্তো নবনীতৈশ্চ চিক্ষিপুঃ॥১০॥ নন্দো মহামনাস্তেভ্যো বাদোহলক্ষার গোধনং। সূত মাগধ বন্দিভ্যো বেহন্যে বিদ্যোপজীবিনঃ।

### শ্রীধরস্বামী।

জন দিকস্তাঃ অজনং উচ্ছপ্তরিতি বা॥ ১০॥

#### रेवक वरकावशी।

. চিবং পাণীতি তাৰানত্যলাদোক্তিং ভ্যাচ্চ তদ্য বাৰ্ণদিকীং দৰ্ম দম্পভিমান্তনা সঙ্গতি মাত্মনি প্ৰীতিং চাশাসত। অলাৰ্থেকঃ। অত্যন্তবালগাং বালক ইতি তদানীং তবিং তদেবোচিতনিতি ভাবঃ। যথা বালকেহিপ তত্ৰুচ প্ৰেম অভাবাদেব ইতি। অজনং ভগ্বত মৃদ্ধ ওঃ উচৈচ মন্দিল গাঁতি বন্ধেন বা বালকন্দলাৰ্থং তনকীৰ্ন্তন্ত জীবেতি পাঠস্ত তাদামতিকাকণ্যোক্তিঃ। উপলক্ষণকৈতং সংক্ষোং॥

অবাদান্ত বাদকৈরিতি শেবং বিচিত্রাণি। ততং বীণাদিকং বাদ্যমানদ্ধং মুরজাদিকং। বংশ্যাদিকত্ব শুষিরং কাংস্যতালাদিকং বদং ইতি চতুর্বিধানি। একৈকস্যাবান্তর বৈচিত্র্যা বাদন বৈচিত্র্যাত বিচিত্রাণি কিখা অবাদ্যন্ত ব্রজবাদিত্রের বাদ্যমানের জগতি যানি বাদিব্রাণি তান্যপি বুরাজমানে তান্যকে তত্রাপি বেই ক্ষেপ্ত জগচিত্রাকর্ষক মাহান্ত্র তার্যা স্বর্মবতীর্থে। তর হেতু ম হোৎসবে যাবছংসবোপরি বিরাজমানে তামহে তত্রাপি হেতবং ক্ষেপ্ত জগচিত্রাকর্ষক মাহান্ত্র তার্যা স্বর্মবতীর্থে ভগবতি বিখেশবে সর্প্ব প্রেটি অনন্তে স্ক্রপৈশ্বর্য মাধুর্ব্যরপরিচ্ছিলে নন্দ্র্যা বুরাং পর্ম প্রেমানন্দ্র স্বৃদ্ধতার পর্মং নিজ্ঞাচিত পৃদং স্বৃত্ত্বি তাম্মিদ্রতীত্র্যাণ। আগত ইতি কচিৎ পাঠাঃ ॥

ক্ঠাঃ সম্ভো দধ্যাদিভিঃ পরম্পবং আ সম্যক্ সিঞ্চন্তঃ নবনীতৈশ্চ পরম্পারং বিশেষেণ লিম্পন্তঃ পরম্পারং চি**ক্ষিপ্ঃ বলেন প্রচন্ত্রতা** বা পিডিল প্রস্কে অলমামান্তঃ॥ ১০ ॥

নক ইতি ব্যাকং। তেভাো গোপেভো গোপীভাশ্চ তথা স্তাদিভাশ্চ বেচান্তে বিদ্যোপজীবিনঃ গায়কা বাদকাশ্চ তেভোঁপি বাস ক্রমসন্দর্ভঃ।

বাংহী ভাষাদেনাশীঃ। জীবেতি পাঠস্বতিকারুণোন। অজনং শ্রীবিষ্ণুং মঙ্গলার্থং॥

অবাদ্যস্ক জৈলক্যে। তত্র হেতৃং কুক্তেত্যাদি নন্দ্যা ব্রজং। প্রাকাঠাপন প্রেমস্বান্তদভীইলীলাবোগ্যমিত্যর্থং। প্রস্পাবং চিকিপুং স্থল্যানাস্থং॥ ১০॥

### এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

স্থতিকান্তর্গুহং প্রবিশ্য চিরং পাহীতি রা**ন্ধপ্রবেন রাজ। ভূখেতি ভাবঃ। জীবেতি** পাঠে বাংসল্য কার্কণ্যোদরঃ। তত্তো বহিনিস্ত্য হরিজাদিভিঃ প্রস্পরং জনং সিঞ্জ্য উ**টচে র্জন্তঃ**॥

অবাদ্যম্ভেতি ত্রিলোক্যামের যতঃ ক্লক্ষে বিখনৈয়বেশ্বরে তানি বাদ্যান্যনন্তান্যের যতো হনতে ইতি॥

চিক্ষিপু: প্রয়াসার্থং বলেন প্রচ্ছয়তরা পিচ্ছলপত্তে খলয়ামাসু:॥ ১०॥

মহামনাঃ মহোদারমনাঃ প্রাদাৎ বেছনো তেভ্যোহপি বিদ্যাং নৃত্য গীত বাদ্য শক্ত শাস্তাদ্যাং তৈত্তৈবিতি যানু যানু অযাচতেতার্থং।

সে যাহা হউক, সেই সকল গোপী নন্দনিকেতনে উপনীত হইয়া 'চিরজীবী হও' বলিয়া বালকের প্রতি আশিষ প্রয়োগ করিতে লাগিল, পরে হরিদ্রা চূর্ণ ও তৈল জল দিয়া সেচন করত সেই অজন ভগবানের গুণগান করিল। হে রাজন্! সেই মহোৎসভব বিচিত্র ২ বাদ্য সকল বাদিত হইয়াভি।। অপর বিশ্বের ঈশ্বর অনন্ত ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ নন্দত্রকে অবতীর্ণ হওয়াতে যাবভীয় গোপ আনন্দে প্রাকৃত হইয়া দ্বি ত্রু য়ত জল লইয়া পরস্পার সেচন ও নবনীত খারা বিলেপন করিয়া, কেপণ তবিতে লাগিল॥ ১০॥

মহামনা নন্দ তাহাদিগকে বহু ২ বসন ভূমণ ও গোধন প্রদান করিতে লাগিলেন। খপর সূতা

তৈত্তিঃ কামৈরদীনাত্মা যথোচিত্রশপূজয়ৎ। বিষ্ণোরারাধনার্থায় স্বপুত্রস্যোদয়ায়চ। রোহিণী চ মহাভাগা নন্দগোপাভিনন্দিতা। ব্যচরদিব্য বাসঃ স্রক্ কণ্ঠাভরণ ভূবিতা॥ ১১॥

### ত্রীধরস্বামী।

তেতাঃ প্রাদাল্যথোচিত মন্যানপাপুত্রয়ং॥ ১১॥

#### देवसभ्वतः जायनी ।

আদিকং প্রাদাদিতি শেষঃ। তত্র ধনং স্বর্ণ রূপ্যাদি। যথোচিতমিত্যুন্তর পদ্য পদেনাত্রাপ্রিয়ঃ। স্বত্ত এব অদীনাত্রা উদাব চিতঃ সম্প্রতিত্ব মহামনা ইতি পুনক্ষিকা পূর্ববং শ্রিক্ষণনাত্রন তত্তোদার্য বিজ্ঞাদি ভণানাং মূহরতিশ্বিতাভিপ্রায়েণ ন কেবলং তাবতা তৃথবান্ কিঞ্চ। তৈত্তৈরিতি তৈত্তৈঃ কামেঃ সহ পুনশ্চ বে যে স্বৈরং প্রাথিতা স্তবং কামদান পূর্বকং সর্বাং জান্ যথোচিতং জাতি বদ্যোবিদ্যামূরপং অপূজ্যং প্রক্ চন্দন তাত্ব প্রোংসাহনাদিছিঃ সন্মানিত্রাংশ্চ। দানাদে কদ্দেশ্যাহ এবিফোরারাধনস্য যোহথা ফলং তং সন্তোধ তথ্য পর্ম বিক্ষবন্ধা কামিতাথানত্যকামছাল নহপূর্ব মালায় তথা স্বপ্র্জ্ঞাভ্যুদ্যায়ত সনেন কর্মণা শ্রীবিষ্ণুং প্রদীদস্ক তং প্রসাদেন মম প্রাভ্যুদ্যো ভবভিতি সম্বল্পরিত্রের্থা। অথচ বিক্যোবাধনস্য বং ফলং তজ্ঞপায় তদভ্যুদ্যায় তদপ্তের্ক পণ্ডণ শীলৈক্ষর্য প্রকাশনায় ইতি পদরেষেণ যদেবং মনন প্রাপ্তঃ তচ্চ তদ্য বাগ প্রাপ্তমাৎ প্রম মহদিতি প্রকর্ণার্থেনত মুনীলঃ দিদ্ধান্তমিপি বিন্যান্থদিতি জ্বেরং। অত্র চ শন্ধোহপ্যর্থে সচ ছল্ল ভবং স্টেয়তি নন্দঃ কিমকরোধু স্কন্ ইত্যাদেঃ নেমং বিবিঞ্চ ইত্যাদেঃ যুবাং শ্লাব্যত্মাবিত্যাদেশ্চ।

রোহিণী রোহয়তি জনয়তি ব্রজম্বথং তছীলেতি রোহিণী অলৈর স্থনাম নিক্জি সাফল্য প্রমোৎকর্ষং প্রাপ্তেতি ভাবঃ সাচ মহাভাগা তাদৃশ স্বীয় পুরোদয়েন তস্যাপি পরম প্রেয়স্যা নিজ প্রাণসহচর্যাঃ প্রীয়শোদায়াস্তনয়স্যাপ্যদ্বেনচ তত্তরাল্যাদিলীলা মাধুর্য্য লাভেন চান্যাভ্যঃ প্রীবস্থদেব পদীভ্যঃ প্রীদেবকীতশ্চ ভাগাবিশেষবতী স্বদাগমন মাত্রেণ মন্ত্রপ্রায়ং মম পুর্ত্রো জাত ইতি প্রীমন্ধলাভিধ গোকুলরাজ্বনাভিনন্দিতা সতী গোণোভূপেহপীত্যমরঃ। প্রীমন্ধলন গোপেশ্চভিনন্দিতা সতীতি বা মহলাসেনৈব তদ্ধতানি দিব্যানি মর্ত্য হল্লভানি বানি বান আদীনি স্বয়্যাপি তত্ত্বাদেনৈব সর্ব্ধ ত্রেণং বিশ্বত্য তৈর্মন্ত্রিতা সতী বাচরৎ মহোৎসবে তন্মিন্ প্রীত্যা বিবিধ

#### ক্ৰমসন্দৰ্ভ:

তৈরিতি বিকোরারাধনস্য যোহর্থ: ফলং তৎ সম্ভোষ:। তদর্থ: স্থপ্রাভাদ্যার্থঞ। সনেন কর্মণা বিফু: সন্তব্য তেন চ মংপুরুষ্য শ্রেষাে ভব্তিতি স্ক্রায়রিত্যুর্থ:। তদাগ্মনেন জাতাভীষ্ট্রাম্মনগোপাচিন্নিতা বাচর্মাহােংস্ব কর্মার্থ: ততঃ॥ ১১॥ ১২॥

#### ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

যথোচিতং বিদ্যা গৌরবাদিকমনতিক্রম্যেত্যর্থ:। দানাদেঃ ফলমাহ। বিষ্ণোরারাধনদ্যার্থ: বিষ্ণুসন্তোষ স্তব্যৈ তস্যাপি ফলং স্বপুত্র-স্যাভ্যদয়:। অনেন দানাদি কর্মণা বিষ্ণু: প্রসীদতু। বিষ্ণো: প্রসাদেন মৎপুত্র: কুশলী ভবস্থিতি সম্ক্রয়ন্নিভার্থ:। চকারেণ নবগ্রহ দিকপালাদীনামপি স্বপুত্রং প্রতি প্রসাদার্থ:॥

মহাভাগা বস্থাদেবপদ্বীভাঃ সর্ব্বাভাগিপ শুরুষ্ণ বাল্যলীলোৎসব গাভাদিতি ভাবঃ। নন্দগোপেন নন্দরাজেন গোণো ভূপেহণীত্যমরঃ। অভিনন্দিতা দ্বনাগমন মঙ্গলেন এব মংপুরো হয়মভূদিতি। ব্যচরৎ সমাগত জীজন সন্মাননার্থমিত্যর্থঃ। দিব্যবাস
আদিতিঃ শুরণোদানন্দাভাাং দতৈ ভূষিতা পত্যু ব্যানাদি ছংখং স্বস্য চ তাছছেদাদি ছংখং রক্ষেজন্মোৎসবানন্দেন বিস্কৃতিবেতি
ভাবঃ॥ >>॥

মাগধ বন্দী তথা অন্যান্য বিদ্যোপজীবী যে সক্ল ব্যক্তি গিয়াছিল তাহাদিগেরও যথাভিল্ধিত তত্তদুর্য দারা যথোচিত পূজা করিলেন। আর মহাভাগা রোহিণী দিব্য বসন, মাল্য তথা কণ্ঠাভরণে ভূষিতা হইয়া ভগবানের আরাধনা এবং স্বীয় তনয়ের অভ্যুদয় নিমিত্ত যথাশক্তি দানাদি করিলেন। তদ্দর্শনে নন্দ এবং অন্যান্য গোপগণের যৎপরোনান্তি আনন্দ জ্মিল ॥ ১১ ॥ তত আরভ্য নন্দস্য ব্রজঃ সর্ব্ব সমৃদ্ধিমান্। হরেনি বাসাত্ম গুণৈরমাক্রীড়মভূন্প ॥ ১২॥ গোপান্ গোকুল রক্ষায়ৈ নিরূপ্য মধুরাং গতঃ। নন্দঃ কংসস্য বার্ষিক্যং করং দাতুং কুরুদ্বহ ॥১৩

### ত্রীধরস্বামী।

করে নিবালেন যে আতাুনি গুণাজৈবলাঁবা আক্রীড়ং বিহারস্থানং ॥ ১২ ॥ বাধিকাং প্রতিবর্ধং দেৱং ॥ ১৩ ॥

### देवस्वदङावशी।

ব্যাপাৰেণ ইতন্ততো বদ্ৰাম ইতাৰ্থঃ ♦ এতদৰ্থদেব স্বৰ্গহান্তঃ শায়িত্যা তদীয়াভিনৰ বালক্ষ্যাতানুক্তিৰিতি জেবং ॥ ১১ ॥

নহ সদ্য এব ধেহ নিবৃত শ্বাস্য সমাগলখার সম্পাদনং সপ্ত তিলাজ্যানি সাধনং প্রজাসংখ্যের ধেহ ব্যাদ্যলন্তবং বৃত্ব ব্রালন্ধবানি দিলানঞ্চ কথা কৈনিত্য লৈ বাহালী কৰিব ইতি । প্রাক্ স্বত এব মথুরা ভগবান্ যত্র নিতাং ইত্যাদি নামেন যোহসৌ গোণেযু তিঠিতীতানি তাপনীক্ষতা জরতি জননিবাস ইতি প্রীয়ার ইজোগবামিতি ভগবান্ গোকুলেশ্বর ইতি প্রিভকাক্তাচ হরে নিবাসভূতো য গায়। তত্র স্বৈত্য কর্ম স্ক্রিমান্ রজঃ তত্র ইতি তত্ত্বস্থ জন্মার্ড্য তুর্মাজীড়মভূৎ বহুব। চিন্তামণি প্রকৃত্ব সন্মাহক্ষ বৃদ্ধ লকারতের স্ব্রালিভিগাল্য । লক্ষীসহলশতসন্ধনসের্যমানং গোবিদ্যাদিপুক্ষং ত্রমং ভলামি ইতি রক্ষাংহিতাহুদানে তেওঁ ক্রালিভিগাল্য করে। লক্ষানিত্য সেবাদেন। নায়ং প্রিয় ইত্যাদে। বৈকুঠ শ্রীবিজ্ঞান তাস্থ স্বর্যোধিদাদি স্ক্রান্য যোধির পরিয়াবেণ চ ব্রজদেবীনামের পর্য রমা জ্ঞাণাং তাদামিপি পর্য রমায়াঃ প্রীরাধারান্য তদানীমেরাবির্ভাবান্থিয়ার স্থান মিপ বছুবেত্যার। যদিচ তত্র আবিত্য নান্য রক্ষ স্ক্রিমান্ সন্ হরে নিবাসাত্ম গুলৈ রমাগাং প্রাপ্যান্তগাভূদিতি সরলাত্ময় ক্রিয়তে ত্রপি পূর্কবিদেবার্থঃ প্রসজ্জতে তলারত্য তা্য ব্রজঃ সর্ক্ সমূদ্দিমান্ স্বাণীদিতিমাত্রং কিং বক্তবাং যং প্রকৃত্য শ্রীবিজ্ঞান স্বাণি নান্দ্র বিল্যান্ত ক্রিমানিক কর্ম স্ক্রিমান্ত ক্রিমানিক ত্রাসীদিতি ততো জগল্লন্য দ্বাণায়ানান প্রতিপাদান্ত্রিয়াম:। তদেবং প্রসক্তঃ শ্রীব্রজনেনীনানি ভগবেহং প্রাক্রীয়াত্রং জন্ম স্ক্রিভিত বাহে। তাকার্টাবিংশাধানানানী প্রতিপাদান্ত্রিয়াম:। তদেবং প্রসক্তঃ শ্রীব্রজনেনীনানিতি ভবিত হবে নিবাসাত্মগ্রীভাবিক স্বর্ক সমৃদ্ধিমানে বাচো পৌনক্ষক্তাং স্যাং ব্যাত্র কর্মান্ত্রং নাদৃতং॥ ১২॥

পূৰ্ক্মপুত্ৰকেন ধনাদৌ মমস্বাভাৰতঃ জ্ঞীনন্দস্ত কংসান্তম্মকিঞ্চনগোৰ নাদীং অধুনাতৃ পুত্ৰ মহারত্ন প্রাপ্তা সর্ব্বাহ ছাক্ষার্থ ব্যগ্রঃ সন্ ছুইতর ভয় সমাধানার্থং রাজধানীং শীল্পং স্বর্মেব গত ইত্যাহ গোপানিতি নিরুপ্য নিযুজ্য বার্ষিক্যং প্রাবণস্য বর্ষা-ছবাবস্থাকক্ষান্তনৈব দেয়ং। তে কুরুদ্ধহেতি যথা কুকুকুল সম্ভানৈক হেতে। তব রক্ষার্থং প্রীমৃধিষ্টিরাদয়ো ব্যায়া হথেতি ভাবঃ॥ ১৩॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

স্বলৈকে জাতে পুতনানি ছুইগণাং কংসাং ভীতা। শীঘ্ৰৰে কৰং দাৰুং॥ ১০।

### গ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

নত্ন কুবেরেণাপ্যশক্যং নরাণাং কামিতপুরণং শ্রীনন্দরাজেন কথং হৃতমিত্যত আহ তত ইতি। হরেনি বাসভূতস্যাত্রনো গুণৈ ব্রজঃ সর্বসমৃদ্ধিমানের সদা। তত আরভ্য তুরমায়াঃ সর্বা সম্পাতেরাক্রীড়ং ক্রীড়াম্প্রনমভূৎ। যদি সর্বা সম্পাতিবের নন্দভরনে ক্রীড়িতুমারেভে তদা কস্য দেয় বস্তুন স্তুক্রাভাব ইতি ভাবঃ॥ ১২॥

চিরাৎ সর্ব্ধানোহর পুজোৎপত্ত্যা প্রাপ্ত মহানিধিরিব শ্রেয়াংসি বহুবিদ্বানীতি বিমৃশ্য শ্রীনন্দরাজো যথা দেব পিত দিক্পাল গ্রহান্দীন পূজাদিভিঃ প্রসাদরামাস তথা দেশাধাক্ষং ছুইনৃপং কংসমপি স্বর্ণমুদ্রা রত্ববস্ত্রাত্যপহারেণ প্রসাদরিত্বং বাধিক করদানমিধেণ তংসমীপং গল্পঃ ন বিলদ্দে ইত্যাহ গোপানিতি॥ ১৩॥

হে রাজন্ ! ঐ সময় হইতে গোপরাজ নন্দের ত্রজপুরী সমস্ত সমৃদ্ধিতে সম্পন্ন হইয়াছিল। অধি-কস্তু ঐ পুরী ভগবান্ হরির নিবাস স্থান হওয়াতে নিজগুণে মহালক্ষী রমার বিহার ভূমি হইয়া উঠিল॥ >২॥

সে যাহা হউক, তদনন্তর নন্দগোপদিগকে গোকুল রক্ষার্থ নিমুক্ত করিয়া কংগের প্রাপ্য বার্ষিক রাজস্ব প্রদান নিমিন্ত মধুরায় গমন করিলেন ॥ ১৩ ॥ . বস্তদেব উপশ্রুত্য ভাতরং নন্দমাগতং। জ্ঞাহা দত্তকরং রাজ্যে যথো তদবমোচনং। তং দৃষ্ট্যা সহসোধায় দেহং প্রাণমিবাগতং। প্রীতঃ প্রিয়তমং দোর্ভ্যাং সম্বন্ধে প্রেমবিহ্বলঃ। প্রজ্বঃ স্থমাসীনঃ স্পৃষ্ট্যানাময়মাদৃতঃ। প্রসক্তধীঃ বাত্মজয়োরিদমাহ বিশাস্পতে।

### ত্রীধরস্বামী।

ভাতবং স্থায়ং তদ্বমোচনং ত্স্য বৃষ্ঠি স্থানং॥ ১৪॥

### देवस्ववरत्तंषनी ।

উপশত্য জন প্রম্পরেশা প্রায় শ্রীবল্লবেজনা সর্ধ জনাদৃত্যাং। ততশ্চরধারা রুঁজে কংসারা দত্তকরং চ জারা। অন্যথা বাপ্র টিও ত্যা স্থা গোষ্ঠাসম্ভবাং লাভবং বৈশ্বকভাষাং শূর বৈমাত্রের লাভুজাভরাদিতি মধ্বাচার্যাঃ। তথোজেও প্রস্বাক্ষে। তথাজেও স্বাহ্ম বাদ্যা বাদ্যা উত্যাস ভার্যা। নামা বশোদা সচ শূর তাত স্কৃত্যা বৈশ্বা প্রভাবেধ্প গোপ ইতি। বৈশ্যাপ্রভব ইতি পিতানহা স্ক্রোতিয়াং অতএব স্কান্দে যাদ্যানাং হিতার্থার ধৃত্যে গিরিবরে। নরা ইতি শ্রীভগবেধারাঃ। যাদ্রেম্বিপ্ ভবস্তো মম ব্রাহা ইতি হরিবংশে তদ্বাভূন্ প্রতি শ্রীরাম বাক্যক। তার অব্যাহনও শক্তাদিকং অব সমস্তাম্ত্রতে যত্র তথ কৃত্যবিদ্যানং অস্যা পূর্মং গমনং প্রবার্থেকেইরা তদ্রক্ষণায় ঝাটিতি প্রস্থাপ্রিভূনিজ্যাচ॥

তং দৃষ্ট্য ইত্যানৌ নন্দ ইত্যধাহার্য্যং তত্ত কংসভয়াদিনা তঞাগমনাসম্ভবেহপি সহসৈবাগতং তং দৃষ্ট্য। যথা সহসা সপদ্যেব উথাগ প্রীতঃ লবং পরমানন্দং তত্ত প্রেমা বিহলং কম্পাদি বিকারেরাকুলং সন্ যতঃ প্রিমানন্দং তত্ত প্রেমাবিবশং কথং বহুব। তত্র প্রীনন্দ স্তমাগতনিত্যেতাবত্যংশে দেহং প্রাণমিবেতি দৃষ্টান্তঃ নতু দৃষ্ট্যেলাদ্যংশহপি তত্রাসম্ভবেনাব্যাপ্তঃ। তত্ত তং দৃষ্ট্য ইত্যাদিকং সর্বাং বোজয়িয়া পশ্চাৎ কং কিমিবাগতমিত্যেউল্লেখনীয়ং দেহং প্রাণমিবেতি। বর্ণজ্ঞোন্ত প্রীবহ্নদেবন্ধ প্রীনন্দেনামন্ত্রতাৎ বয়সাকুলতং লক্ষাতে। তচ্চ পুন জনিব্যমাণাপত্যন্ত বচসা ব্যক্তী ভবিষ্যতি দিষ্ট্যা ল্লাভঃ প্রবয়স ইত্যাদিনা॥

ততশ্চার্থাং শ্রীনন্দেন পাদ্যাদিনা পূজিতঃ শ্রীবস্থদেবঃ। তচ্চ স্ববাদাগতশ্বং। অনামরং কুশ্লমিতার্থং সবিনয় বচনাদিন। আদৃতশ্চ সন্। ইদং বক্ষ্যমাণমাহ প্রসক্তধীরিতি বক্ষ্যমাণস্থ সর্ক্ষ্যাপি পুত্রার্থকত্বাং। স্থশকেন তদানীং তৎসঙ্গ স্থভাবেন তক্ত ভগবদ্ধি মিশ্রত্বেংপি বাংস্বামেবাসীদিতি ভাবঃ। তত্র শ্রীশুকেন স্বাস্থ্যোদন্ধ ব্যক্তিহং বিশাপ্পতে প্রজানাথ ॥

#### क्रगमन्दर्धः i

উপশ্রত্য পরম্পরয় শ্রত্বা। পশ্চাদূতমুগাৎ দত্তকরং জ্ঞায়া অস্য পূর্বাং গমনং পুত্রসম্বন্ধেনোংক ঠাবিশেশাং। প্রাতবং পিতৃব্যজং। তদেতচেতুর্থ সন্দর্ভে পঞ্চদশোত্তরশততম বাক্যে দ্রষ্টবাং। দৃষ্ট্বা প্রীতঃ স্বস্বজে তদস্পস্থাচ্চ প্রেমবিবশো জাতঃ। অত্র বর্ণ কনিঠেনাপি শ্রীনন্দেনানমস্কৃত্বাত্তস্য জ্যেষ্ঠবং গমাতে। আদৃত্তো বিনর বাক্যাদিনা। স্বাত্মজ্বাত্তিতি তস্য বাৎস্লাঃ স্টিতং।

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভাতরং বৈশ্যকন্যায়াং শূর বৈশাত্রেয় ভাতৃজাতবাদিতি ভারততাংপর্য্যে শ্রীমধ্বাচার্য্য বচনৈক্তং এক্ষবাক্যং তবৈ ময়া স বরং সংনিক্টঃ সচাস নন্দাথ্য উজ্ঞান্য ভার্যা। নামা বশোদা সচ শ্রতাত স্থতস্য বৈশ্যাপ্রভাবেহিও গোপ ইতি বৈশ্যাপ্রভাব ইতি পিতামহাভজ্জাতিহাং। অতএব স্কান্দে। বাদবানাং হিতার্থায় ধতো গিরিবরোময়েতি ভগবদাক্যং। বাদবের চ সর্কেষ্ ভবস্তো মম বল্লভা
ইতি তদ্ভাতৃন্ প্রতি রামবাক্যঞ্চ। তদব্যোচনং তদ্য বস্তিস্থানং॥

তং বস্থদেবং সম্বজে নলঃ নতু নমশ্চকার বয়সা ততো জ্যেছতাং ॥

আহ বহুদেব: ॥

বহুদেব শুনিতে পাইলেন রাজধানী মধ্যে আপনার পরম মিত্র নন্দ আসিরাছেন অতএব রাজসমীপে কর প্রদানের সন্ধাদ অবগত হইবা মাত্র তাঁহার বাসন্থলে গমন করিলেন। হে রাজন্! প্রাণ আগত হইলে দেহ যদ্রপ উথিত হয় প্রিয়মিত্র বহুদেবকে দেখিবামাত্র তক্রপে নন্দ সহসা উথিত হইলেন এবং প্রীত ও প্রেম্বিহল হইয়া প্রিয়তমকে বাহ্ছয়নারা আলিকীন করিলেন। তদনন্তর বহুদেব প্রজিত হইনা স্থাসীন হওত আদরপূর্বক অনাময় জিজ্ঞাসিয়া আত্মজন্বয়ে চিত্ত আদরপূর্বক শানতে নন্দকে সুখোধিয়া বলিতে লাগিলেন মিত্র। তুমি অধিক বয়স পর্যান্ত অপুক্রক ছিলে তোমার সন্তানাশা এক

দিষ্ট্যা ভ্রাতঃ প্রবয়স ইদানীমপ্রজ্স্য তে। প্রজাশায়া নির্ত্ত্স্য প্রজ্ঞা যৎ সমপদ্যত ॥ ১৪ ॥ विचेता मः मात्र कि एक विश्व वर्ष भागः পুনর্ভব: । উপলব্ধো ভবানদ্য সূর্ল ভং প্রিয়দর্শনং ॥ ১৫ ॥ নৈকত্ৰ প্ৰিয়সন্বাসঃ স্কুদাং চিত্ৰকৰ্মণাং ! ওবেন ব্যুক্ষানানাং প্লবানাং শ্ৰোতসো যথা ॥ ১৬॥

### द्यीधत्रवामी।

পুনর্জবঃ পুনর্জাত ইব তত্ত্র হেডু গর্তবিশেষণং সংসারচক্রে বর্ত্তমান ইতি । ১৫॥

ছল্ল ভর্মেবাহ নৈক্ত্রেতি প্রিয়ন্চাসৌ সম্বাসন্চেতি হে প্রিয়েতি বা প্রোত্ত ওবেন নীয়মানানাং প্রবন্ধীতি প্রবা: তৃণ কাঠাদয় ত্তেষাং যথা একত্র স্থিতি ন'নিষ্ট তহুৎশ ১৬॥ •

### বৈষ্ণবভোষণী।

দিষ্ট্যেত্যনেন রহস্ত দৃত প্রস্থাপনং গমাতে বছল যজাদি প্রস্থাইসরপায়ংপত্তেঃ প্রজামাত্রস্থাদায়া নিবৃত্তস্থাপি ইদানীং যং প্রজা সমপদ্যত প্রমোত্ম পুত্রত্বেন সম্পল্লতয়া জাতেত্য্র্য: এতদিটা। সোহলং সিদাস্ত: সরস্বতীস্থাদ:। স্বমতে তু ছেলেনৈব্ তথোকং সমাগপ্রাপ্যতেত্যেবার্থঃ প্রক্রেত্যেব বা ছলোক্তিঃ সম্ভতি মাত্রার্থছাং। অত্তৈবং বিবেচনীয়ং অনেন তদভিপ্রায়াক্ষানাদেব প্রজামা-ত্রাশা তত্ত দর্শিতা। তত্তত্ তাদৃশ প্রজায়া এবাশা প্রাগাদীৎ ফলেন ফল কারণা<del>ত্</del>তমানাৎ অতএব হর্ম ভত্ত জ্ঞাপনায় বিলয়োপ্যভূৎ তথা তক্ত প্রবয়ন্তাদিকমপি তজ্জাপনং তু প্রতাপত্নে মাভগবতি লেহভরোদীপনার্থং। লোকে হি বরোহধিকভানপত্যভ বহু প্রয়দ্ধেনাপ্য-প্রাপ্তাস্ত অতএব নিরাশ্যাকস্মাত্ৎপদ্নে পুত্রোন্তমে ২ত্যন্ত স্লেহো দৃষ্ঠত ইতি॥ ১৪॥

আদ্য দিট্টা ভবামুপলক্ষী যতঃ প্রিরদর্শনং ছল ভং। নমু মমতু অৱশক্ত ন ছল ভত্বং তত্তাহ পুনর্জাত ইব ভবানিতি তচ্চ কুতঃ সংসার-চক্রে বর্ত্তমানঃ ক্ষণে কণে মৃত্যুসম্ভবাদিত্যর্থ:। এতচ্চ অনিষ্ঠাশকীনি বন্ত্র্দয়ানীত্যত উক্তমিতি তেরামভিপ্রায়:। यहा সংসার-চক্রে বর্তমানে। ভবালস্থিয়েব জন্মনি পুত্ররূপেণ পুনর্জাত ইব দিষ্ট্যোপলবঃ। যতুঃ প্রিয়মাত্রস্য দর্শনং ছল্ল ভং কিমুতৈতাদৃশানন্দ যুক্তস্যেত্যৰ্থ:। यश्वा দৃষ্ট্যা ভদ্ৰং কথমশ্মিন্ সংসার চক্রেছদ্য পুনর্ভবো ক্লক্ষৈব বর্ত্তমানঃ মমেত্যর্থাৎ যতো ভবানদ্য উপলব্ধো দৃষ্ট ইতি তত্ত্ব হেতুহ ল ভমিতি ॥ ১৫ ॥

একত্র সংবাসঃ সদা স্থিতি ন স্যাৎ তত্র হেতু শ্চিত্রেতি ব্যুক্ষ্মানানাং বিবিধং নীয়্মানানাং বহ প্রাপ্ণে॥ ১৬॥

#### ক্রমসন্দর্জ: i

তত্ৰ তস্য প্ৰস্থাৰা আশা ন সাধারণ্যা: কিন্তু তাদৃশ্যা এব অন্যথা তদপ্ৰাধ্যে:॥ ১৪॥

পুনর্ভবো জন্ম বর্ত্তমানো ২ভূৎ নমেত্যর্থাৎ তত্ত্র হেভূ: উপেতি। সংসারচক্রেহন্মিন্ প্রিরদর্শনং ছল্ল ভিমিতি॥ ১৫॥ সংবাসঃ সদান্থিতিঃ ॥ ১৬ ॥

### विश्वनाश्वक्तवर्थी।

প্রবরসো বৃদ্ধন্য পুরো জাত ইত্যুক্তে মিথোক্তিঃ কন্যেত্যুক্তে নম্মস্যাপ্রতীতি রতঃ প্রফেত্যপত্য বাচক শব্দ প্ররোগঃ। মংপুত্র ন্যাসং স্বকন্যা চৌৰ্য্যঞ্চ কথঞ্চিন্নলো জানাতি নবেতি শৰুৱাপি ডচ্ছস্ব প্ৰৱোগঃ॥ ১৪॥

। बिट्डोिं वक्कनोपि क्रिडेमा सम পून উবো বর্তমামোহরং পুনর্জনৈরবাদ্যাভূদিতার্থ:। বতো ভবাত্বপদক ইত্যোভাবৎকালপ্যান্তমহং ভবদ্ধপুলস্তান্দৃত ইবাস্মিতি ভাব:॥ ১৫॥

নবেবকে কাবামেক জৈব বসাৰ প্ৰতাহ নৈক জেতি হে প্ৰিয়। ওবেন শ্ৰোতসো বেগেন ব্ৰুছ্মীনানাং বিবিধং নীয়মানানাং প্ৰব-স্তীতি প্লবা কুৰকাঠানৰ জেয়াং ॥ ১৬॥

প্রকার নিরুত্ত হইয়াছিল, একণে যে তনয় লাভ করিয়াছ, ইহা তোমার পরম ভাগ্য॥ ১৪॥

সবে! যদিও ভুমি এই সংসার চক্তে অবস্থিত ছিলে, তথাচ অদ্য তোমাকে ভাগ্যক্রমে পুনরুৎরের ন্যায় দেখিতে পাইলাস, করিণ প্রেয়দর্শন অতি ছুর্লভ ॥ ১৫॥

হে প্রিয় ! শ্রোতঃপ্রবাহে নীয়মান ভূণ কান্তাদির যজ্ঞপ সর্বাদা একত্র দিতি হয় না, তেমনি যে সকল হছদের বিভিন্ন ও বিচিত্র কর্ম, তাহাদের পরস্পার একত্র ছিতি ঘটে না॥ ১৬॥

কচ্চিৎ পশব্যং নিরুজং ভূর্যস্থ তৃণ বীরুধং। রহন্বনং তদধুনা যত্রাস্দে স্থং হৃহদ্ তঃ ॥ ১৭ ॥ ভাত মম হৃতঃ কচ্চিন্মাত্রা সহ ভবদু জে। তাতং ভবস্তং মম্বানো ভবস্ত্যামুপলালিতঃ ॥ ১৮ ॥ পুংসদ্রিবর্গো বিহিতঃ স্থহদে। হৃদ্মভাবিতঃ। ন তেয়ু রিশ্যমানেমু ত্রিবর্গোহর্থায় কয়তে॥ ১৯ ॥

### वीधत्रवामी।

কচিচলিতি পশব্যাদি রূপে তশ্মিন্ বনে নির্দোষ গোপয়ো দধ্যাদি প্রভৃত গোপিকান্তন্যাদিনা প্রক্ষেবিবক্ষরা পৃছ্তি প্রসক্ষীঃ স্বায়ন্ত্রোরিত্যুক্তবাৎ ॥ ১৭ ॥

ভব্দ্তামুপলালিত: সন্ কচিষ্ঠত ইতি শেষ: ॥ ১৮ ॥

পুত্রাদর্শন ক্লেনাহ পুংস ইতি। স্কলে। বন্ধূন্ প্রতামভাবিতঃ সম্পাদিতো যক্তিবর্গঃ স হি পুংসো বিহিতঃ যুক্তঃ শাল্তেশ বা

### বৈষ্ণ বতোষণী।

নিকলং নীকলং ক্রম্মং ছলোইফুরোধাং কলাশস্কায়ং টাবস্তঃ। অধুনা যত্তাস্সে স্বং ইতি পশুনাং স্থান্সারেণ শ্রীমথ্রামওলে কদাচিং ক্সিংশিচ্বনে স্থিতে:। য্বাধুনৈত্স্য পূর্বার্দ্ধি: সর্বৈর্গি পদৈর্ঘ্যঃ। বিশেষত স্তদানীং তন্তদপেক্ষরা স্কৃতির্ভ ইতি তত্তাপি তন্ত্রসাগানাং বহুদেশ ব্যাপিতাপেকত ইতি ভাবঃ॥ ১৭॥

উপলালিতো নিজ প্রবল্লালিতো যা স কচিৎ কুশলী বর্ততে ইত্যর্থা। অন্তান্তো যথা কিং ভবস্তং তাতং মন্যমানো ভবতি ইতি মেহং বর্দ্ধাতি বস্তুতন্ত জাত মাত্রস্য তভাবো ন সন্তবেৎ দর্শনাবোগয়োঃ সন্তবাদিত্যনেনৈব সম্বন্ধঃ। বদা ভবদুজে কিমান্তে কিং কংস ভয়াদিনাহক্তন ন গতোহন্তীতি ভাবা। মন হত ইতি পূর্বৈ শ্রীবহ্ণদেবন তজ্জয়নোহণি ক্রনাণিং। তথাচ শ্রীহরিবংশে প্রাণেষ বহ্মদেবন্ত ব্রুদ্ধাবন্ত ব্যাহিণীং। প্রজাতাং প্রমোবাগ্রে চক্রাং কান্তভ্যাননমিতি। অস্যার্থা। প্রজাতাং ক্রতিবতীং করে শ্রীন্দ্দন্দন ক্রমতঃ পূর্বং ইতি তয়োর্জয়চ প্রায়ঃ সমকালনেব ক্রেয়ং তথাচ তাত্রৈব তদানীং শ্রীবহ্লদেবাক্তো বর্দ্ধমানাব্তাবেতো সমান বয়সৌ যথা। শোভেতাংশো ব্রুজে তম্মিন্দ্দাগোপ তথা ক্রিকিতি। অতএব তয়োর্জ্গপ্রিক্রণাদি লীলা বক্ষাতে। শ্রীপুর্বনবাত্তম বারিতি ভক্ষম্ম নক্ষত্রে ক্রিয়তে তচ্চ শ্রীক্ষস্যাষ্টমাসিক্ষাৎ তস্য তু দাদশ মাসিক্ষাহ্পপদ্যত ইতি॥ ১৮॥

এবং মিত্র পূরাদীনামপি পালনাদিনা ভবতঃ পরম ক্বতার্থতা বৃত্তৈব। অহত্বধুনা ধনাদিমানপি পূত্র কলত্র মিত্রাদি ছ: ধেনা-কৃতার্থ এবেত্যাহ পুংস ইতি পুংমাত্রস্য শ্লেষেণ তদেব পৌক্ষমিতি ভাবঃ। হি এব অনুভাবিত এব ক্লিশ্রমানের ক্লেশং প্রাপ্তবৎস্থ অর্থায় ক্থায় ন কল্পতে কিন্তু হ: বীর্ষৈবেত্যর্থঃ। তেষাং ছ:ধে সতি ধর্মস্যাপ্যনাদরদীয়ত্বাৎ। বুদ্ধৌচ মাতা পিতরৌ সাধ্বী ভার্য্যা স্থতঃ

### ক্রমসন্দর্ভ:।

নিকলং নীকলং কলা রোগ:। অধুনেত্যন্তত্ত পূর্বমাসীদিতি জ্ঞাপিতং॥ ১৭॥ ১৮॥ সম্প্রতি কংসাযুক্তস্য মম মানাস্থান গত স্বজনস্য তত্ত্বেন তদপালস্য সর্বং ব্যর্থমিত্যাহ পুংস ইতি॥ ১৯॥

### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

পশুভো হিতং পশবাং। নিরুক্তং নীরুক্তং হ্রস্থাং ছন্দোংফুরোধাং। রুক্তা টাবস্তঃ॥ ১৭॥
মম সূতঃ স্থাং বর্ততে ইতি শেষঃ। ম্যান ইতি বর্তমান সামীপ্যাশ্বংসামান ইতার্থঃ॥ ১৮॥
মম তু গৃহাশ্রমো বিফল এবেতাাহ। পুংসঃ স্কৃত্বদানীন্ অসুলক্ষীকৃত্য ত্রিবর্মঃ শাক্তেণ বিহিতঃ। ভাবিতঃ স্বক্ষতি-

হে মিত্র। একণে তুমি যে রহদনে স্থলাণ পরিরত হইয়া বাস করিতেছ, সেখানে পশু সকলের কুশল ত ? তথায় ত কোন রোগের প্রাহর্ভাব নাই ? এবং জল, তৃণ, লঙা ত প্রচুর পরিমাণে লভ্য হয় ?॥ ১৭॥

হে জাতঃ । আমার পুত্র তাহার জননীর সহিত তোমাদের ব্রজে রহিয়াছে, সে তোমাকে ত পিতা বলিয়া মানে, তোমাদের স্ত্রী পুরুষ কর্তৃক লানিত হইয়া ভাল আছে ত ? ॥ ১৮॥

মিত্র ! পুজ কলজের কুশল জিজাসা করিবার তাৎপর্যা এই যে , বন্ধুবর্গের নিমিত সম্পাদিত যে তিবর্গ (ধর্মা, অর্থ, কাম) ইহাই পুরুষের যুক্ত ও শান্ত বিহিত, কারণ বন্ধুবান্ধব ক্লেশ পাইতে থাকিলে नमरगांश छेवाह॥

অহো তে দেবকীপুত্রাঃ কংসেন বছবো ছতাঃ। একাবশিক্ষাবরজা কন্যা সাপি দিবং গতা ॥২০॥
নূনং ছদৃষ্টনিষ্ঠোহয়মদৃষ্টপরমো জনঃ। অদৃষ্টমাত্মনস্তত্ত্বং যো বেদ স ন মুহ্নতি ॥ ২১ ॥

### औंधत्यामी।

প্রোক্ত:। ন স্বমাত্র পর্য্যবসিত: অতত্তেষু ক্লিশ্যমানেষু স্থ্পায় ন ভবতীত্যর্থ: ॥ ১৯ ॥

নন্দো বস্থদেবং সাত্ত্রপ্লাহ অহো ইতি ॥ ২• ॥

ন্নমিতি অদৃষ্ট এব নিষ্ঠা সমাপ্তি বঁদ্য সং যুদৈৰ পুঞাদি স্থপ্ৰাদমদৃষ্টং হীয়তে তদৈব তে পুঞাদয়ো ন ভবন্তীতাৰ্থ:। তথা অদৃষ্ট-প্ৰমং অদৃষ্টমেব প্ৰমং বদ্য সং৷ যাদ্যি পুঞাদয়ো বিযুক্তা তথাপি তান্ অদৃষ্টমেব প্ৰং সক্ষয়তীতাৰ্থ:। এবমদৃষ্টমান্ত্ৰন তথাজি-চাৰি কাৰণং স্থত্থংখা যোঁ বেদ স ন মুহ্ছত তথাদিদানীং দ্বা ন ছংখং ভাবনীয়ং মুতানামপি বিযুক্তানাম্পি চ কালান্তৰে দশন-ধ্ৰাগ্যোঃ সম্ভবাৎ অন্ত্ৰাদিভিৰপি কালান্তৰে তদিয়োগে সত্যপীতি নক্ষত দৈবী বাগেষা ভাবি হুচিকা॥ ২১॥

#### देवस्ववरायंगी।

শিশুঃ। অপ্যকার্য্য শতং ক্বরা ভর্ত্তব্যা মহুরত্রবীৎ ইতি স্মৃতেঃ । ১৯॥ ।

ভবতা যদু জ কেমং পৃষ্টং তদপ্যস্তোব বয়স্ক তুদু:খেন তদপি কথয়িত্ং ন শকু ম: ইতি ব্যক্তয়ং গুমেবাস্থাচিতি অহা ইতি খেদে॥২০
সাম্ব্যতি নৃনং নিশ্চরে হি এব অদৃষ্টনিষ্ঠ এব ন মুছতি মোহেন শোকং ন প্রাণ্ডোতীত্যর্থঃ। অফুকৈঃ। তত্র ন ভবন্ধি অদর্শনং
প্রাণ্নু বস্তীত্যর্থঃ। মুতানামপীতি জমদ্যি সত্যবদাদে দুইস্বাদিতি ভাবঃ। তত্মাদিত্যাদিকং ক্ষেত্র্য মভান্থসারেণ নতু শ্রীমন্ত্রন্দ সোতি ন বসভদঃ। সত্যপীত্যস্য দর্শনাযোগরোঃ সম্ভবা দিত্যনেনেব সম্বন্ধঃ। যহা অদৃষ্টাদেব নিষ্ঠা মরণং যাসেতি তব তংপ্রাণাঞ্চ ভাদৃশাদ্ইবাত্তে মুতা ইত্যর্থঃ। নমু তর্হি অজনৈব বরং তত্তাহ অদৃষ্টাদেব প্রমং জন্ম কারণং যাসেতি। এবঞ্চ প্রম্পর সম্বাদে। মনুষ্যলীলারৈবেতি জ্বেয়ং॥ ২১॥

### ক্রমসন্দর্ভ:।

যন্পি তংপৃষ্টং এজ কুশলং বিদ্যতে তথাপি তৰিজ্ঞাপয়িতৃং ত্বদুংখেব ন শকু ন ইতি বাঞ্জয়ংস্তমেবাস্থশোচতি অহো ইতি॥ २०॥ २১॥ শ্রীবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

নিষ্ণাদিত তেমু স্বহংবিতি। জীপুত্রয়ো ম'ৰিচ্ছেদাৎ মন চ পুত্র লালনাদি স্থানবাপ্তা। ন অর্থায় ন প্রয়োজনায় ॥ ১৯ ॥

ত্বপৃষ্ঠিং মধুজ ক্ষেমমন্তীতি কিং ব্ৰবীমি যদহং ত্বদুংখেনৈৰ মহাছঃখীত্যাহ আহো ইতি তত্ত মংপুত্ৰ ন্যাসাদিক মস্য ন বিদিত-মিতি জ্বাত্ব। বস্তুদেবো গতাশকো হন্তুরানন্দিতো বভূবেতি জ্বেরং॥ > ।॥

ভো জাতরয়ং ছশারোহপি বিপং দিছ্ বিবেক পোতেনৈব তীর্যাতামিত্যাহ নৃন্মিতি। অদৃষ্ট এব নিষ্ঠা সমাপ্তি র্যস্য সঃ। যদৈব পুত্রাদি স্থপ্রদমদৃষ্টং হীয়তে তদৈব পুত্রাদয়ো ন ভবস্তীত্যর্থঃ। অদৃষ্টমেব প্রমং মৃত বিযুক্ত পুত্রাদীনামপি সঙ্গমকারণং যদ্য সঃ। এবমদৃষ্টমাত্রনত্তবং যো েদেতি অভুন্যঃ কোহন্যো বিবেকীতি তব মাস্ত মোহ ইতি ভাবঃ॥ ২১॥

# পুরুষের ত্রিবর্গ স্থার্থ হয় না॥ ১৯॥

নন্দ এই স্কুল কথা শুনিয়া বস্থদেবকৈ সান্ত্রনা করত কহিলেন মিত্র! তোমার পদ্ধী দেবকীর অনেক শুলি সন্তান কংসু কর্তৃক নিহত হইয়াছে, শেষে একটা কন্যা অ্রশিফ ছিল তিনিও স্বর্গে গমন করিয়াছেন॥ ২০॥

আমার নিশ্চয় বোধ হইতেছে অদৃত্টেতেই লোকের নিষ্ঠা (সমাপ্তি) হইয়া থাকে, অর্থাৎ পূত্রাদি রূপ স্থপ্রদ অদৃত্ট যথন হান হয়, তথন আর পূত্রাদি থাকে না, পরস্ত অদৃত্টই লোকের পরম পদার্থ, তাহাতে যদিও পূত্রাদি বিয়েশ হয়, তথাপি সেই অদৃত্টই পুনরায় তাহাদের. সহিত মিলাইয়া দেয়। এই রূপে অদৃত্টকেই যে ব্যক্তি আপনার তত্ত্ব অর্থাৎ হথ হুংথের অব্যক্তিচারি কারণ বলিয়া জানেন তিনি কদাপি মৃশ্ব হয়েন না, অতএব একশে আপনি হঃখ চিন্তা করিবেন না, য়ত ও বিযুক্ত দিগেরও কালান্তরে দর্শন এবং তাহাদিগের সঙ্গেত্ব উত্তর কালে সংযোগের সন্তাবনা আছে॥ ২১॥

্বস্থদেব উবাচ॥

·করো বো বার্ষিকো দত্তো রাজ্ঞে দৃষ্টা বয়ঞ্চ বঃ। নেহ স্থেয়ং বহুতিথং সম্ভাৎপাতাশ্চ গোকুলে॥ শ্রীশুক উবাচ॥

ইতি নন্দাদয়োগোপাঃ প্রোক্তান্তে শোরিণা য**যুঃ। অনোভি রনড়ুদ্যুক্তিন্তম**কুজাপ্য গোকুলং॥২২ ॥ \* ॥ ইতি জীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমস্কম্বে বস্তদেব নন্দসমাগমো নাম পঞ্চমোহধ্যায়ঃ ॥ \* ॥ ৫ ॥ \* ॥

### श्रीधवकां भी ।

তাং বুদ্ধা বস্তদেবো হঃখং ত্যক্তবা নন্দমাহ করো ব ইতি। বোযুদ্মাতিঃ ॥ ২২॥
॥ \* ॥ ইতি দশমে পঞ্চমঃ ॥ \* ॥

### বৈষ্ণবতোষণী।

অহো তে দেবকীপুত্রা ইত্যাদি শ্রীনন্দোক্ত্যা লোকে মু পুত্রপরিবর্ত্তন জ্ঞানাদি শক্কা নির্ত্তঃ পরম ক্ষ্টঃ শ্রীবস্থদের ন্তঃ প্রতি সমাগম মূলমুপদিশতি কর ইতি। ব ইতি বছম্বং গৌরবাৎ তৎ সঙ্গি সংগ্রহাদ্বা বন্ধমিতি তদ্দর্শনেনাম্মনো বছমানাং। ব ইতি পৌনক্ষক্যং ভিন্ন বাক্যমাদ্দাবায়। যদ্বা বোযুম্মীয়া বয়ং তৎ শ্লেহেন দিন কতিপয় ডিঠাস্মং তং প্রত্যাহ বহুতিথং অত্র রাজধ্যান্যাং ন স্থেয়ং। তথাচ শ্রীবিষ্ণুপুরাণে। দন্তোহি বার্ষিকঃ সর্কো ভবন্তি নুপতেঃ করঃ। যদর্থমাগতা ক্ষান্ধাত্র স্থেয়ং মইাধনৈ রিতি। করো বৈ ইতি কচিৎ পাঠঃ বহুতিথমিতি পূরণ প্রত্যায়ে ডটী তিথুগাগমাৎ বহু গুণ পুগ সংক্ষা তিথুগিত্যনেন ততো বহুতিথং মধাস্যাৎ তথা ন স্থেয়মিতি লক্ষে বহুনাং পূরণী বা স্থিতিঃ সা নামুঠেয়া ইত্যুর্থ চিরকালং ন স্থেয়ং ইত্যের বিবিক্ষিতং তথাপি নিজ সঙ্গ স্থাপেক্ষয়া শীষ্মজিগমিষু মিবালক্য ভায়য়তি সঞ্জীতি॥

প্রকর্মেণ ভার দর্শনাদিনোক্তাঃ অনভাহঃ অনোবহন সম্পাঃ মহার্যভাতদ্ধৃকৈরতিশীল গমনার্থং তমস্ক্রাণ্য তদস্ক্রামাদার গোকুলং যয়ং প্রতস্থিরে॥ ২২॥

·॥ \*॥ ইতি বৈষ্ণবতোষণ্যাং শ্রীদশমটীপ্লস্তাং পঞ্চম: ॥ \*॥

### ক্রমসন্দর্ভ:।

কর ইতি ট করাদত্র দওভরঞ্চ তথা বৈক্ষত্বে তদাক্যং। নাত্র ক্ষেং মহাধনৈরিতি। বছতিথমিতি পূরণ প্রত্যরাস্তং বছকাল পর্যাস্তং ব্যাপোত্যর্থ:॥

শনভূদ্যু কৈরিতি শিঘ্র গমনার্থ প্রসিদ্ধমেবোক্তং অনভূদ্বিশেষ ব্যঞ্জনয়া ॥ ২২ ॥

॥ \* ॥ · देखि जीनमम कुमर्नन्म र्ड शक्यः ॥ \* ॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

জ্ঞাততত্বো বস্থদেবো যদক্ষুমাগত স্তদাহ কর ইতি। বৈ নিশ্চিতং বো যুমাভি:। বহুতিথং চিরকালং ॥ ২২ ॥

। ॥ \* ॥ ইতি সামার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ডক্তচেত্রাং। দশমে পঞ্চমোহধ্যার: সঙ্গভঃ সজ্ভঃ সভাং ॥ \* ॥

নলের ঐ সকল ভবিষ্যৎ সূচক দৈব বচনের মর্ম হৃদয়ঙ্গম করিয়া বহুদেব ছঃখ পরিত্যাগ পূর্ব্বক তাহাকে সম্বোধিয়া বলিলেন মিত্র। রাজাকে বর্ষিক কর দেওয়া হইয়াছে, জামাদিগের সঙ্গেও সাক্ষাৎ হইল, আর এখানে মধিক কাল অবস্থানের আবশ্যকতা নাই, গোকুলে ম্রানা উৎপাত উপস্থিত আছে, শীব্র প্রস্থান কর।

তকদেব কহিলেন হে রাজনু! বহুদেব এই প্রকার কহিলে নন্দাদি গোপরক তাঁহার অনুমতি লইয়া ব্যবাহ্থ শকটে আরোহণ পূর্বক গোকুলে প্রত্যাগমন করিলেন॥ ২২॥

॥ 🗱 ॥ टें डि मनास्म भा 🛊 ॥

200

গ্রীশুক উবাচ॥

নন্দঃ পথি বচঃ শোরে ন ম্যেতি বিচিন্তয়ন্। হরিং জগাম শরণমূৎপাতাগম শঙ্কিতঃ। কংসেন প্রহিতা ঘোরা পূত্রা বালঘাতিনী। শিশৃংশ্চচার নিম্নতী পুর গ্রাম ব্রজাদিরু॥ ১॥ ন যত্র প্রবণাদীনি রক্ষোম্বানি স্বক্ষান্ত। কুর্বন্তি সাম্বতাং ভর্তু বাতুধান্যশ্চ তত্র হি॥ ২॥

### श्रीशतकामी।

্ষরে স্থার্গিবা নন্দো এজং গছনে, মৃতাং পথিল দৃষ্ট্ । তুরাক্ষসীং তস্তা: মৃত্যুং শ্রুষাচ বিশ্বিত: ॥ ১ ॥ শ্রীক্ষপবিষয়ে শ্রুমানং রাস্থানং প্রতি অবিষয়ে প্রবৃত্তা সৈব মরিষ্যতীতি স্চয়ন্নাহ ন যত্তেতি । বৃত্ত শ্রীকৃষ্ণসা শ্রুবণাদীনি ন

### ∡बक्कवटङायगीं।

পথি বিচিত্তরন্ হরিং সর্কভরহরং নিজেইদেবত্বেন সতত শরণমণি বিশেষতঃ স্পুত্রমঙ্গলার্থং মনসা শরণং জগাম। যরা ন মৃষে-ত্যতো হেতোর্হরিং মনোহরং বৃত্ততং পথি বিশেষত শিত্তয়ন্ন জানে তত্ত কিং বৃত্তমন্তি ইতি তত্ত চিন্তাং শরণং নিজগৃহং জগান গচ্ছ-রভুং॥

অথ ব্রস্ত্রনাহ তত্ত্বচ যদ্যপি পূর্বং তন্মছিভি ঋ বীণামেব হিংসা নিশ্চিতা তথাপ্যতিভীতেন কংসেন তু পরস্পরহৈবোপায়েছির নিতি প্রথমং তামনঙ্গীকৃতা সাক্ষাবাদিহিংসা এবাসুমতা ইত্যভিপ্রেড্যাহ কংসেনেতি। প্রহিতা প্রাণেধ নিযুক্তা যতো দোরা বালঘাতিনীচ অতএব নিতরাং ফুরী মতী ছর্বিব স্তনদানেন সন্যো মারমন্ত্রী। তথাচ বিষ্ণুপ্রাণে। যদ্মৈ যদ্মৈ বাল বিশ্বাম স্থামি তথা ক্ষাব্যক্ষিত। তথা ক্ষাব্যক্ষিত বালকংস্যাপহন্ততে। আকরঃ রক্ষাত্যংপতিস্থানং গ্রামং ব্রক্তে বালাহিং। আদি শক্ষাৎ সাথাদ্যক্ত ॥ ১ ॥

শিশুন্ নিম্বনীতি প্রাদির্ চকারেত্যকং। নহু তর্হি শ্রীনন্দব্রজবালানাং হস্ত কা বার্তা ইত্যপেক্ষায়ামাই নেতি। স্বকর্মস্থ যজ্ঞাদির্
তৎ সালগুণার্থান্যপি যত্র প্রবণাদীনি ন কুর্বস্তি কিং পুনং স্বপ্রধানানীত্যর্থণে সাম্বতানাং ভক্তানাং ভক্তানাং ভক্তামপি প্রবণাদিভিত্তে
নশুন্তি কিং পুনস্তস্যেত্যর্থং। স্বর্থে চকারং অমুক্তসমূচ্চয়ে বা জন্যেচ দৃষ্টাং। হি এব তত্রৈব প্রভবতীতি শেষং। যথা কিন্তপানী
ন্তনাং সর্ব্বে শিশব স্তয়া বত হতান্তবাহ নেতি। পূর্ববদর্থাং। অন্তেচ ভগবিষ্ম্বাং কংসপক্ষীয়াং প্রভিগবতা ভল্পতৈর বাজিব। ইতি
ভাবং। ইতি কংসক্ত মৌচাং দর্শিতং। তদেবং তেন সাক্ষাদ্ধিষ্টিতেছপি তাদৃশ হুষ্টাগমনং নিথিল লোকানক্ষক প্রভিগবদ্ধীলা বিশেষ
সম্প্রত্যেহ্ তথা তাদৃশ হেতুকোংপাতশ্চ কজ্জনস্তাদীনাং তিৰিষয়ক প্রেম বিশেষ বর্দ্ধনার্থং তদীর প্রসাম্পাবি লীলাশকৈর সম্পাদ্যত

### क्रममन्द्रः।

ন যজেতি। ততো যথা কথঞ্চিত্তগৰৎসম্বন্ধ বিমা ভূতানাং দৈত্যস্বভাৱানামের বালং স্থতী ভগরত স্তাদৃশলীলেছটেয়ে প্রীগোকুলে প্রবেশ সমর্থাভূদিত্যাগতং তন্ত এর বন্ধ মিতাপাঙ্গেত্যাদি চ যোধিষ্কেতি তৎ করেইতীতি ণিচি ক্রি রূপং টেল্লেগিখ ॥ ১ ॥

এতত্তু গোপপ্রযুজামান দিব্য বালভিদ্ধেতি জেরং। কামচারিণী অব্যাহত গমনাপি ॥২॥৩॥৪॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

বর্চে সৌরপ্য কৌরপ্যে জীবন্মৃত তনে।রিহ। নির্বর্ণ্যেক্তঃ পুতনারা দাহো নন্দ্র্যা চাগম:॥১॥

**ঞ্জিঞ্বিংরে শৃত্ন্মানং রাজানং প্রতি অবিবরে প্রবৃত্ত্য সৈব মরিব্যতীতি স্চরন্নাহ নেতি। যত্র প্রাদিবু সাম্বতাং ভর্ত্ত্র শ্রবণাদীনি** 

ষষ্ঠাধ্যায়ে সথা বহুদেবের বাক্যে এজে প্রত্যাগমন কালীন নন্দের পথি মধ্যে মৃত রাক্ষণী দর্শন এবং মরণ বিবরণ ক্লবণে বিসায় বর্ণিত হুইতেছে॥ ।॥

শুকদেব কহিলেন নন্দ আদিতে ২ পথিমধ্যে এই চিন্তা করিতে লাগিলেন বস্থদেবের বাক্য কখন নিধা হয় না, বোধ হয় ত্রজে কোন উৎপাত হইয়া থাকিবে, এই প্রকারে ভাবি উৎপাত শঙ্কায় তাঁহার অতিশয় ভায় হইল অভএব ভগবান্ হরির শরণাপদ হইলেন। এ দিকে নিঠুর বভাবা বালঘাতিনী প্তনা কংস কর্তৃক প্রেরিড হইয়া প্রঞাম ত্রজ প্রস্তি স্থানে শিশু হত্যা করিয়। বেড়াইতেছে॥ ১

এতৎ প্রবংশ শীক্ষ বিষয়ে শক্তিত চিত্ত পরীক্ষিতের প্রতি কহিলেন রাজন্! কোন আশস্কা করিও না, অবিষয়ে প্রবৃত্তা রাক্ষ্মী অবশ্য প্রাণতাগ করিবে, কারণ সাত্তপতি ভগবান্ হ্রির প্রব- সা থেচর্য্যেকদোৎপত্য পূতনা নন্দগোকুলং। যোষিত্বা মায়য়াত্মানং প্রাবিশৎ কামচারিণী॥ এ তাং কেশবন্ধব্যতিষক্ত মল্লিকাং বৃহন্ধিতত্ব স্তন কুচ্ছুমধ্যমাং। স্থবাসসং কল্লিতকর্ণভূষণত্বিষাল্লস্থ কুণ্ডল মণ্ডিতাননাং॥ ৪॥

### बीधतवामी।

সন্তি তত্ত্বৈৰ তাসাং শক্তিঃ। সাক্ষান্তশ্মিন্নেৰ সতি কা শঙ্কেতি ভাৰঃ॥ ২॥

যোধিত্বা বেশতো বনাং নারীমিবাত্মানং ক্লতা নম্ম নির্মিশক্ষাচ সতী কথং পর সন্মনি প্রবিষ্টা অত আহ কামচারিণীতি। নহি কামচারিণীধিদং চিত্তমিত্যর্থ:॥৩॥ °

তাঞ্চ বনিতাং পতিং দ্রষ্ট্রুং আগতাং অতিরূপবতীং শ্রিয়মিব গোপ্যোহমংসত ইত্যুত্তরশ্লোকেনায়য়: । শ্রীসাম্যাথানি বিশেষণানি কেশবন্ধ ব্যতিবক্ত মল্লিকাং ধশ্লিলসংসক্ত মল্লিকাক্সুমাং বৃহন্ধিতথেন স্তনাভাগি চোভয়ত আক্রান্তমিব কুচ্ছুং কুশং মধ্যমং উদবং যস্য। স্তাং স্ক্রাস্ট্রুং রুমণীয়ে বাস্দী বৃদ্যা স্তাং । কলিতয়োঃ কর্ণভূষণয়োশ্বিষা উল্লেখ্য কুওলৈ মণ্ডিত মানুনং যস্যাতাং ॥ ৪ ॥

#### · देवक्षवरजावनी ।

ইতি ভাবঃ। লীলানায়ী শক্তিশ্চ শ্রীভূ লীলেতি মুখ্য শক্তিত্ররে বৈকুঠে পান্মোত্তর থণ্ডাদি প্রসিদ্ধা সৈব পান্ম কার্ত্তিক মাহাত্ম্যাদে। তুলদীত্বেন বৃন্দাত্মেনচ বর্ণ্যত ইতি শ্রীকৃষ্ণলীধায়াং বৃন্দার্কদৈব সা জ্ঞেয়া যদধিষ্ঠানং বৃন্দাবনমিতি॥ ২॥

একদা রাত্রাবিত্তি পরাশর বৈশম্পায়নৌ। উৎপত্যাকাশমার্গেণাগত্য। উপেত্য ইতি পাঠঃ কচিৎ। যতঃ থেচরী সা ঘোৰত্বাদেব যোষিত্বেতি অত্র যোষিতং করোতীতি ণিচি টিলোপে ক্তৃ ৯ প্রতায়ে বোষয়িত্বেতি বক্তব্যে গিচো লোপ আর্ষঃ॥ ৩॥

তামিতি যুগাকং। স্তীতি মলিকানাং মিথো যোজনয়া বছধা সেচিবং বেধ্যিতে কর্ণ ভূষণয়োঃ কল্পিত্তং লীলা গত্যাদিনা অতএব স্কৃতঃ প্রসরস্থ্যা ভ্রোম্বিরা উল্লম্ভিরলকৈ মণ্ডিতাননাং॥৪॥

### ্ শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

দৃষ্টাদৃষ্টফলেষু স্বকশ্বস্থপি বৰ্ত্তমানা জমা ন কুৰ্বস্থি ততৈত্ব যাতৃধান্যঃ প্ৰভবন্তীতি শেষঃ। কিমৃত যত্ৰ প্ৰাধান্যেন কুৰ্বস্থিতি জত্ৰ ন প্ৰভবন্তীতি কিমৃতভৱাং যত্ৰ কৈৰ্ণ্যেন কুৰ্বস্থি কিমৃতভমাং সাক্ষাদেব যত্ৰ স প্ৰায়ভূ গান্তে ইতি ভাবঃ॥ ২॥

তদিপি প্তনাবধলীলায়া আবশ্যকভালীলাশক্তি প্রেরণবশাদেব মৃত্যুনা নিমন্ত্যুমাণৈব মর্জ্যং গোকুলং জগামেত্যাহ সেতি। একদা রাত্রো আকাশমুংপত্য গোকুলং প্রবিশ্য মায়য়া আজানং যোষিজা বোষিতং ক্লমা নিজ্বলাপ আর্ষঃ। সৌন্দর্যোগ সর্বজনান মোহরিজা গৃহান্তঃ প্রাদিষু সহসা প্রবেষ্ট্রিতি ভাবঃ। মৃদ্যুপি জগামোহিনী ভগবআয়াপি তান্ সিদ্ধভক্তান্ মোহয়িত্বং নোংসহতে
তদ্পি কৃষ্ণলীলাশোভাসিদ্ধার্থং উল্লেজালিক মায়েব তানপি পুতনাদি মায়া মোহয়তি ভগবিদ্ধারণাদিতি জ্লেয়ং ॥৩॥৪॥

ণাদি মাত্রে রাক্ষস সকল নিহত হর, যেখানে প্রবণাদি নাই, সেই স্থানেই রাক্ষসীরা স্ব স্ব কর্ম করিয়া থাকে অর্থাৎ যেখানে শ্রীকৃষ্ণের অর্থাদি না হয় সেই থানেই রাক্ষসীদের শক্তি, যে স্থানে শ্রীকৃষ্ণ সাক্ষাৎ বর্তমান তথায় রাক্ষসীদের শক্তি প্রকাশের সম্ভাবনা কি ?॥ ২॥

সে যাহা হউক, এক দিবস রজনীযোগে ঐ পৃতনা আকাশ পথে নন্দগোকুলে আসিয়াছিল এবং মায়াযোগে আপনাকে বর নারীরূপিণী ক্রিয়া নন্দসদনে প্রবেশ করিয়াছিল; সে কামচারিণী, ইহাতে নির্লুভ্জ ও নিঃশঙ্ক হইয়া পরগৃহে প্রবেশ কয়া তাহার পক্ষে বিচিত্ত নহে॥ ৩॥

হে রাজন ! ঐ নিশাচরী পরমা স্থলক্ষী নারী হইয়াছিল, তাহার কেন পাশে কিনা কুমুম সংযুক্ত, রহৎ গিতত্ব ও স্থলতম স্তনদ্বয়ে আক্রান্তের ন্যায় হওয়াতে উদর যেন কুল হইয়াছিল। তাহার পরিধান বসন রমণীয়, কর্ণ ভূখণের শোভায় এবং দেশীপ্যমান কুণ্ডলে মুখ্যওল স্থলর রূপে মণ্ডিত ॥ ৪ ॥

বস্কুস্মিতাপাঙ্গ বিদর্গ বীক্ষিতৈ র্মনোহরস্তীং বনিতাং ব্রজ্ঞোকসাং। অমংসতান্তোজকরেণ রূপিণীং গোপ্যঃ শ্রেয়ং দ্রুষ্ট্রমিবাগতাং পতিং॥ ৫॥ বালগ্রহস্তত্র বিচিম্বতী শিশূন্ যদৃচ্ছরা নন্দগৃহে হসদস্তকং।

### धीयतत्राभी।

বছ বিভাগাদ বিদৰ্গ বীক্ষিতৈঃ বন্ধ রম্যং বিভং বেষু তথা ভূতা অপাদ বিদ্যা বেষু তৈ বীকিতৈ ক্লোক্সাং মনোংরগ্রীং অতো গোপা খভ্যনত্ত্বন তাং ন নিবারিত্বস্ত ইত্যুক্তং ভ্বতি। গোপ্যশ্চ শ্রিয়মির মন্বা তুঞ্চীমাদন্ অতঃ কেনাপি অনিবালিতা সতী প্রবি-বেশেতি ভাবঃ ॥ ৫॥

বালগ্ৰহং পুতনা অসদস্তকং বালং দদর্শ। নতু অসতাসস্তকং দৃষ্টা কিং ন বিভেতি আ ইতি চেত্ততাহ। প্রতিজ্ঞারী নিজ্ঞাক তেজ্য

#### देवस्वयद्यायनी ।

মন্যত শ্রীরত্র জগৎসম্পত্তিঃ কিং কর্তৃঃ ইব পতিং দ্রাষ্ট্রমিব কঞ্চিং পুণা লক্ষণং জনং নিজাশ্রহেন বরীত্রান তাদৃশ লক্ষণং স্থেরির শ্রীরত্র জগৎসম্পত্তিঃ কিং কর্তৃঃ ইব পতিং দ্রাষ্ট্রমিব কঞ্চিং পুণা লক্ষণং জনং নিজাশ্রহেন বরীত্রান তাদৃশ লক্ষণং সর্কোপরি শ্রীরত্রেলে তনর এব দৃশ্যতে ইত্যাশরা ততো ন নিবারিতবতা ইতি ভাবঃ। জার পতি শক্ষা ধববাচিত্বং তেরামণি ন মতং অপ্রেচ ক্লননী ভাবসৈর্ব দর্শয়িব্যমাণবাং। জ্বলুতিঃ। তত্রাক্রান্তমিব আক্রান্তরাদিবেত্যর্থঃ। ক্লভুং ক্লশমিতি কার্যকারণ্বের্বান্তরেলাপচারেন তদা ক্রমাদ্যক্রখং জাতং জন্মাদিব ক্লশমিত্যর্থঃ। তথা অতিমনোহরণাদ্বেতে। র্যজ্তমন্ত্রং তেনেতি কর্তৃধর্ম কর্মাধ্যমাণ্রিক্রান্তর্গান ক্লান্তর্গাঃ। ৫॥

দেতি প্রকরণ বশালভাতে। বালগ্রহ ইতি তদ্বিশেষণমের অজহলিক্স্বাল্প্রীস্থা। তত্র গোকুলে শিশ্ন বিটিমতী মৃগয়মানা ওতশ্চ বদ্ ছেয়া বৈরিত্যা ভগরত এব তাদৃশ লীলা শক্তি প্রেরণেনামুসদ্ধানং বিনাপীতার্থ: সহসা জ্ঞীনন্দগৃহ এবাগ্রতা বিচিম্বতী তমের তল্লে দদ্ধ। বদ্ধ্যা বৈরিতেতানবঃ। অসদস্তকমপি বালং বালামাধুরীমাবিদুর্সপ্তং অউএব তল্লে আহিতং সন্তং প্রতিচ্ছেম নিজোকতেজদং

#### ক্রমসন্দর্ভঃ i

স ভণিত্যস্যাবতারিকা প্রবিষ্টকে ব**ন্ধ অন্তোজকরেণ লক্ষণেন রূপি**ণীং প্রিয়ং অমংসত। প্রতিং প্রষ্টুং কঞ্চিৎ শুভলক্ষণ ভাজং জনং নিজাশ্রম্মতে বরী ভূমিতি ত্যা জ্ঞীকৃষ্ণ এব পর্যাবসানং বিতর্ক্য তাভি ন নিবারিতা ইত্যর্থ: ॥ ৫ ॥

বালগ্রহ ইতি বিশেষণমেৰ সতি বিশেষ্যং প্রকরণৰশাৎ বদুচ্ছয়া ভগৰতঃ স্বৈরলীলেচ্ছ্য়া সহসা নন্দগৃহ এবাগ্তা ইতি শেষঃ।

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

তাং প্রিয়ং কপিণীং মৃতিনতীং রন্ধানি ধনসম্পত্তিমিব অস্তোজকরেণ উপলক্ষিতাং। পতিং শ্রীবজরাক্সেষ্টেনেবং শ্রীনারারণং এই মিনবাগতাং জনংসতে হ্যান্তরেণাদ্বর:। বৃহতা নিত্তবেন ন্তনাভ্যাঞ্জ উভয়ত আক্রান্তমিব ক্লচ্ছণ কৃশং মধ্যমমূদরং যাগা তাং। বনিতাং অত্যক্তনাগবতীং। বনিত। জনিতাত্যর্পার্যারাঞ্চ বোষিতীত্যমর:। আহে। রূপ মহো হত্তরাগ ইতি প্রস্নোক্ষান্ত বিশ্বতীং অত এইবতে সহস্যান্তপ্রং প্রবিশ্বতীমপি ন নিবার্যানাক্ষরিতি ভাব: ॥ ৫ ॥

বাল এবং পূত্রনা অসমস্তকং অহস্কারমপি অবধ্যত্বেন প্রতীরমানং বালং দদর্শ যতঃ প্রতিক্রেরেতি ভসি ভল্লন্যাহিতমন্তর্পিতং

সে মনোহর হাস্য যুক্ত কটাক্ষে অজবাসিদিগের চিত্ত হরণ করিয়াছিল, অতএব গোপেরা তাহাকে নিবারণ করিল না, গোপীগণ তাহাকে দেখিয়া মনে করিয়াছিল শ্রীকৃষ্ণ গোকলে জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন, ইনি বৃদ্ধি তাঁহার বনিতা লক্ষ্মী, এইরপে. মৃত্তিমতী হইয়া পতি দর্শনার্থ আসিতেছেন, ফলতঃ তাঁহাকে সাক্ষাৎ লক্ষ্মী মনে করিয়া গোপীরাও ভূষ্মীস্কৃত হইয়াছিল, স্ত্রাং কেহই নিবারণ না করাতে সে খনায়াসে পুরমধ্যে প্রবিষ্ট হয়॥ ৫॥

হে রাজন্। পূতনা সাক্ষাৎ বালক অন্তেষণ করিতে করিতে নন্দ গৃহে শয্যার উপর ঐ শিশুটা দেখিতে পাইল। যদিও সেই বালক অসজ্জনের নিধনকারী, তথাচ তাহাকে দেখিয়া পুনরায় ভয় বালং প্রতিচ্ছন্ন নিজারু তেজসং দদর্শ তল্লেহ্গ্রিমিবাহিতং ভিসি ॥ ৬॥
বিবৃধ্য তাং বালকমারিকা গৃহং চরাচরাত্মা স নিমীলিতেক্ষণঃ।
অনন্তমারোপয়দক্ষ মন্তকং যথোরগং স্থেমবৃদ্ধি রক্ষুধীঃ॥ ৭॥
তাং তীক্ষ্বচিত্তামথ বামচেষ্টিতাং বীক্ষ্যান্তরা কোষপরিচ্ছদাসিবং।

### **बी** धत्रवाभी

বালনাট্যেন প্রতিচ্ছন্নং তিরোহিতং নিজং উক্ত তেজো যেন তং কমিব ভসি তল্মনি আইহিতং স্বান্নীমিবেতি॥ ৬॥

চরাচরাস্মভাদেব তাং বিব্ধ্য নিমীলিতেকণ: আন ! স্ব্রমনন্তং হুষ্টানামন্তকং সা অঙ্গারোপয়ৎ বালং মন্বা যথোরগং স্বপ্তং অব্জি শ্চাসৌ রজ্জুধীশ্রেচতি সং অজ্ঞানতো রজ্জু বৃদ্ধ্য যথা গৃহাতি তবং ॥ ৭ ॥

নমুবংশাদাবোহিংগৌ কথং তাং ন ন্যবার্যতাং ততাহ তামিতি। বামং ব**ন্ত জনন্যা ইব চে**ষ্টিতং বস্যাস্তাং বর্জিয়ঞ্চ স্হদৈব

देवस्ववरङायगी।

ভদাভিমুখোন জ্বনজনহাপ্রভাবং দদর্শ তত্র দৃষ্টাজোহগ্নিমিতি যথা কশ্চিন্তস্মতাহিতং অগ্নিং তাদৃশং পশ্চতি তদ্বদিত্যর্থঃ। ব্রজৌকসাং মনোহরগ্রীমিত্যাদিকমপি দীলাশক্তিকোতুকমেব॥৬॥

বালক মারিকাসংজ্ঞং গ্রহং চরাচরস্যাত্মা প্রমাত্মা বাল্য লীলয়া সর্বভাব গ্রহণাং মুদ্রিত নেত্রাজো বভূব তচ্চ তদ্যাং নিজাতান্ত বালত ভীকত্ব বোধনায় তাদৃশ ছ্ঠদর্শনাভাবায় অদৃষ্টি আভাবিক তিথিধর্ষণাভাবায় তদ্ধিতার্থবিশ্রকক্ত্রেছার্দী বধে সর্ব স্পাণ্নিখেঃ অস্য সাক্ষারজ্জাচ্ছাদনার মরণে তবৈকল্য দর্শনাভাবার অয়ন্নন্তং তাদৃশানামন্তকং অবৃদ্ধি বিপরীতজ্ঞান পূর্বকং যথাস্যাত্থা আরোপয়ং॥ ৭ ॥

অথ কার্থ কাক ক্ষিন্তারেনোভয়ত্রাপাষয়:। অতীতি চিচ্চুক পাঠঃ বামচেষ্টিতবেন ছঃথপ্রদতা নিরস্তা তত্রাস্তরা বীক্য ইত্যস্ত

### ক্রমসন্দর্ভ:।

প্রতি তদাভিদ্ধ্যেন। ভদি ভক্ষাভাস্তরে দৃষ্টাস্তোহয়ং ছন্নতাং সংগ্রহং আম্মা প্রমাম্মা। স্বয়মনস্তং তাদৃশানস্তকং অতএব অর্দ্ধি যথা স্যাত্তথারোপয়ং। কণ্ট মাতৃস্থেহ ময়া তং প্রভয়া তক্ষিন্ প্রসঙ্গে স্তি॥৬॥৭॥৮॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

ভক্ষাজ্ঞানি তমগ্রিমিবেত্যর্থঃ॥ ৬॥

চরাচবাত্মেতি হুষ্টাগমনকালে সর্বজ্ঞতাশক্ষে: সেবাবার্ প্রিকের । তাং বির্ধ্য বাল্যস্বভাবেনৈর নিমীলিতেক্ষণ আস দিদীপে।
নিজাতান্ত বালর ভীকত্ম জ্ঞাপনায় চ তাদৃশামঙ্গলদর্শনাভবার চ অদৃষ্টি আভাবিক তথিধ ধর্ষণাভাবায়চ মাতৃভাব দর্শিকায়ান্তস্যাঃ অকর্ক বন্ধে লক্ষাক্তংপতৈন্ত তন্মরণ বৈকল্য দর্শনাভাবার চ মুদিত নেত্রস্থং। ততশ্চানস্তং তমক্ষমারোপর্য়। অন্তকং অসোতি
সংহারিকাশক্ষে: দেবাবসরঃ। যস্য দেশতঃ কালতশ্চ অস্তো নাজি তমনস্বমণি অক্ষমারোপর্দিত্যর্থ: বিরোধেনাত্মত রুসো ব্যক্তিতঃ।
স্প্রত্মনন্তমিতি শক্ষ বিরোধঃ। যথা স্থামুরগং অবুদ্ধা অনুব্দ্ধা হেতুনা বিজ্ঞান গৃহাতি তথাদিত্যর্থ: ॥ ৭॥

নত্র বংশাদাবোহিলো কথং তাং ন ন্যবারয়েতাং তত্রাহ তামিতি। বামং বন্ধ জনন্যা ইব চেষ্টিতং যস্যা তাং। সম্ভরা গৃহমধ্য এব

হইল না, কারণ বাল রূপ প্রদর্শন হেতু জন্মাচ্ছাদিত অগ্নির ন্যায় তাঁহার স্থীয় মহ্ৎ তেজঃ প্রতিচ্ছন্ন হইয়াছিল ॥ ৬॥

দে যাহা হউক, চরাচর সকলের আত্মা, শিশুরপী ভগবান্ ঐ রাক্ষদী আসিবামাত্র জানিতে পারি-লেন এ অস্থনা নহে, বালসংহারিকা, অতএব হাহার বিনাশ বাসনায় নয়ন্দ্র নিমীলন করিয়া রহি-লেন। অনন্তর ঐ রাক্ষদী তাঁহার নিকট গমন করিল এবং অজ্ঞান ব্শতঃ সর্পেতে রক্ষু বুদ্ধিকারী ব্যক্তি যেমন স্থাবিষধরকে ক্রোড়ে আরোপণ করে তাহার ন্যায়, ছক্টের অন্তক সেই অনন্তকে এহণ করিয়া আপনার অক্ষে স্থাপন করিল॥ ৭॥

হে রাজন্! যদিও ঐ রাক্ষনী মৃতু অথচ বিচিত্র চর্মময় কোষাচ্ছাদিত অদির তুল্য তীক্ষ চিতা,

বরস্ত্রিয়ং তৎপ্রভয়াবধর্ষিতে নিরীক্ষ্যমাণে জননী অতিষ্ঠতাং ॥ ৮ ॥
তিম্মিন্ স্তনং ভূর্জরদীর্য্যমূল্লণং ঘোরাস্কমাদায় শিশো র্দদাবথ ।
গাঢ়ং করাভ্যাং ভগবান্ প্রশীড়া তৎ প্রাণৈঃ সমং রোষসমন্বিতোহপিবৎ ॥ ৯ ॥

## श्रीभन्तवामी।

অধরা গৃহমধ্যে বীক্ষা অন্তর্তৈক্ষা বহিশার্দ্দিবে চ দৃষ্টাক্ত কোষপরিজ্ঞদাসিবৎ মৃছ্চিত্র চর্ম্ময়ঃ কোষঃ পরিজ্ঞদ আবরণং যস্য অসেঃ থড়াক্ত তবং তংপ্রভয়াবধর্ষিতে অভিভূতে অহমস্য জননী ইরং বেতি নোহিতে তু সত্যো জননী জননো নিরীক্ষ্যমাণে এব কেবল মতিষ্ঠতাং নতু নিবারিতবত্যো ॥ ৮॥

তিমিন্ স্থানে ছর্জরং বীর্য্যং বিষং মন্মিন্ তং জ্ঞানং প্রীক্লফনকমাদায় শিশোঃ তব্মৈ শিশবে দদৌ অথ অনস্তমেব প্রপীডা কেবলং

### देवश्वदाखावनी।

ছ্টতাত্মনিতিক থণ্ডিতা অন্তর্দ্ধুট্ট জনস্য সহসা পরগৃহান্তঃ প্রবেশ সহসা সামর্থ্যাৎ তত্তাপি বরক্তিরমিত্যবিশ্বনীরতাচ নিরাক্তা বিশেষ-তক্ত তৎ প্রভিন্না মাতৃবৎ ক্ষেহ প্রাকট্য প্রতি ভ্রমাবধর্ষিতে। জননী ইতি প্রথমা বিবচনস্য পূর্ব্ধ সবর্ণ শহান্দসঃ স্থপাং স্থলুক্ পূর্ব্ধ-সবর্ণেত্যাদিনা॥৮॥

তিমিলেব স্থানে ইতি ধান্তা মুক্তং উবণং স্পর্শেনাপি মারকমিতার্থ: অতএব বীর্যাং তিষিধ রূপমেবেতি তথা তৈ ব্যাধ্যাতং আদার আরুবা। অতো বিকর্মকত্বমপি তং ভং জনং ব্রজবালকানামপি বধার্থমাগতত্বন রোধ সমন্ধিতঃ সন্ প্রাণৈ সমং অপিবং যতো দন্ধিনাং তস্যাং দৃভেনৈব প্রাণাপহারো যোগ্য ইতি ভাবং রোধ সমন্বিত্তক্ষ তৎ জন্য প্রাণ পানার্থমেবাক্ষং তত্ত রোধরূপং তত্তের এব তান্ হুইভাব মরান্ অপবিত্তানপিবং অশোধরদিত্যর্থ: কুঠার সমন্বিতো বৃক্ষমিছিনদিতি বং স্বর্ম্ম তদমুকরণ মাত্রাং কৃত্বানিত্যর্থ: ফলস্ক তদমুকরণ মাত্রাদিপি স্থাদিতি স্ক্রিব্রেবিত্যং ব্যাধ্যেরং। বোরশুরমাপাত্ত এব পরিণামতত্ব পরম কৃপামেবা করোদিত্যাই ভগ্রানিতি কার্মণাদি স্বগুণাব্যভিচার্য্যের সনিত্রপ্রথ:। এতচ্চাত্রে ব্যাস্থাং কিঞ্চেদং বাল্য লীলাবেশেহপি তাদৃশ শক্তো হেতুং তদাবেশেহপি স্ক্রানাং স্বর্মার প্রত্তীক্ষক্যালীলাস্ক্রপা প্রবৃত্তিং স্যাদেবেতি ভাবং। স্বস্থাত্রে:। ত্রাপথ্যমিতি মধ্বে ইত্যস্তে বির্মন্ত্র ক্রোণা হি ত্রিব্র ঘাত্যা ন ভবন্ধি। তত্ব স্থান্ত্রগাদ্যান্য তৎ প্রাণানের ব্রপ্রাণেশ্ব মিশ্র্যানীতিচ ন্ত্রে

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

ভৰ্জব্ৰেত্যাদিভ্যাং বিষমন্ত্ৰং গন্যতে। আদান্ন আকুষ্য। অতো দ্বিকশ্বকত্বং তমিতি শেষঃ। প্ৰপীডা অনমিতি পূৰ্ব্বেশৈবাৰয়ঃ।

#### 🔊 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

বীক্ষ্য অন্তব্যৈক্ষ্যে বহি মার্দিবে চ দৃষ্টাস্তঃ মৃত্ চর্মমন্নঃ কোরঃ পরিচ্ছদ আবরণং যদ্য তথাসূতমদিনিবেতি তদ্যাঃ প্রভবাবধর্ষিতে অভিভূতে মংপুত্রদ্যাভ্যদরার কিনিয়মবিকা কিমিয়মিক্রাণী মুর্গিমতী তৈলোক্য দম্পত্তি বা বাংদল্যেন স্তন্যং পায়য়তীতি মোহিতে সত্যো জননী জননাৌ নিরীক্ষ্যমাণে এব কেবলম্ভিষ্ঠতাং নতু নিবারিতবত্যে । ৮॥

তশ্বিদ্ধের স্থানে ত্র্জ্রং বিষর্গণ বীর্যাং যাস্য তৎ। যোরা পূতনা শিশোং শিশবে গাঢ়ং প্রণীড়োতি তথা ত্যাজিরতুমশকাঃ সন্নিতি ভাবঃ। রোষসমন্বিত ইতি মদীয় ব্রজবালকানপীয়ং জিঘাংসতীতি রোষমন্ত্রী হুই সংহারিকাশক্তিরেবাপবিত্রান্ প্রাণান্ স্তনকাপিব-দশোষরং নতুস ইতি কুঠারসমন্বিতো বৃক্ষমজ্জিনদিতি বং ॥ ১ ॥ ১

তথাচ প্রীকৃষ্ণের চুই জননী অর্থাৎ যশোদা ও রোহিণী ভাছাকে উত্তমা স্ত্রী এবং জননীর ন্যায় চেফাবিত তথা গৃহ মধ্যে প্রবিষ্টা দেখিয়া তদীয় প্রভায় অভিভূত হইয়াছিলেন অর্থাৎ মুগ্ধ হইয়া এই
অঙ্গনাই বুঝি বালকৈর জননী হইবে, এই রূপ বিতর্ক করত কেবল তাহার প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া
দাঁড়াইয়াছিলেন, ইহাতে ভাঁহারা নিবারণ করিবেন কি । ৮॥

সে যাহা হউক, রাকামী সেইন্থানে উপনীত হইয়া শিশুকে ক্রোড়ে লইল এবং তুর্জর গরল বিলেপিত স্তন পান করিতে দিল। তদ্দর্শনে ভগবান্ ক্রুদ্ধ হইয়া গাঢ় নিপীড়ন পূর্কীক কেবল বিষ সা মুঞ্চ মুঞ্চালমিতিপ্রভাষিণী নিষ্পীভ্যমানাথিলজীবমর্মণি।
বির্ত্য নেত্রে চরণো ভুজো মুহ্নিস্বিদ্নগাত্রা ক্ষিপতী স্বরোদ হ ॥ ১০ ॥
তস্থাঃ স্বনেনাতি গভীর রংহসা সাত্রি মহী দ্যোশ্চ চচাল সগ্রহা।
রসা দিশশ্চ প্রতিনেদিরে জনাঃ পেড়ুঃ ক্ষিতো বজ্রনিপাতশঙ্কয়া॥ ১১ ॥
নিশাচরীত্বং ব্যথিতস্তনা ব্যস্থ ব্যাদার কেশাংশ্চরণো ভুজাবিপ।
প্রসার্য্য গোঠে নিজ রূপমান্থিতা বজ্রাহতো বৃত্র ইবাপতদ্ব প॥ ১২ ॥

### विधवनामी।

বিষমপথ্যমিতি মহৈর তৃদ্যাঃ প্রাণ্ডে: সৃহাপিবৎ ॥ ৯॥

চরণৌ ভূজৌচ মূহ: ক্লিপন্তী নিষিন্নানি বেদযুক্তানি গাত্রাণি যস্যা: সা॥ ১০॥ ব্যাদায় মূথং বিবৃত্য নিজ রূপমান্থিতা মরণসমন্ত্রে কণ্টমযুক্তমিতীর ॥ ১২॥

রদা: রদাতলানি চ ॥ ১১ ॥

### देवकवरकायना ।

বেতি ভাব: ॥ ৯ ॥

মুঞ্ মুঞ্জিবদলমিত্যপি ৰারণেংত্রতু বীপ্পায়। অভাব: পুনর্বজ্ মুশুজুত্বাৎ অধিল জীব মর্ম্মণি জীবনাপ্রয়ে করোদ উচ্চৈ: সরো-দনমার্ত্তনাদ: চকার। হ হর্ষে॥ ১০॥

রদাশ্চেল্: প্রতিনেহণ্ট দিশশ্চ প্রতিনেহরেবেতার্থ:। বক্সেতি লোকে তদুর্দ্ধ শব্দগুপ্রসিদ্ধে:॥ ১১॥

নিজরপং উপুকীষরপং। গোঠে লক্ষণরা গোর্চ সমীপদেশে গোনোহাথাবরোধন হলে নতু জনবাসে। নতু ক্রমাণামের চুর্ণিতত্বেন কথ্যমানস্বাহ চরণরোঃ পক্ষাত্মক ভ্জরোশ্চ বিকেপণোৎপতনাৎ সা থেচর্য্যে কন্যেৎপত্যেতি পূর্ব্ধ দর্শিতভাচ্চ হে নূপ এতাদৃশ কথো-বোধনেন নুন্ পাসীতি ভাবঃ॥ ১২॥

### क्रमननर्जः।

রোবসমন্বিভন্থ তৎ স্তন্যপানার্থমুক্তং॥ ৯॥

ডতশ্চ রোম্বারাপিবদনাশ্যদিতি রোম্ক্রপং তত্তেজ এব তানপিবং ন স্বয়মিত্যর্থ:॥ ১১॥ ১১॥

বস্তুত স্ত ভগবান্ রোবেংপি কারুণ্যাদি গুণাব্যভিচারী। গোষ্ঠে গোদোহার্থ গ্রাব্রোধন স্থলে ন তু গ্রাদ্যাবাদে ক্রমাণামের চূর্ণিত্ত-ছেন কথ্যস্থাং॥ ১২॥

### ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

নিশীডামানা অর্থাধানকেন চরণৌ ভূজৌ চ মৃত্যু হ নিক্ষিপতী॥ > । রসা রসাতলানি চ॥ >> ॥ নিজরপমান্থিতা মৃত্যুপীড়িতয়া তয়া নিজমায়য়া রক্ষিত্মশক্যথাং॥ > ২॥

অপথ্য বিবেচনা করত তাহার প্রাণের সহিত পান কল্পিতে আরম্ভ করিলেন।। ৯।।

সমস্ত জীবমর্শ্বে নিস্পীডামানা হওয়াতে দেই রাক্ষ্মী সহ্ব করিতে না পারিরা বারস্বার ছাড় ছাড় বলিতে লাগিল এবং ছাই চক্ষ্ব বিরত করিয়া মৃত্যু তঃ হস্ত ও পদ ক্ষেপণ করিতে ২ রোদন আরম্ভ করিল। স্তনাকর্ষণের বেগে তাহার গাত্র ঘর্শ্বে পরিপূর্ণ হইল ॥ ১০॥

হে রাজন্! পূতনার অভি গভীর বেগান্বিত শব্দে পর্বতসহ পৃথিবী এবং গ্রহ নক্ষত্র সমেত নভোমগুল বিচলিত তথা রসাভল ও দিক্ সকল প্রতিধ্বনিত হইল। অধিকস্ত, যাবতীয় জীব বন্ধনি-পাত শক্ষায় ভূতলে পড়িয়া গেল॥ ১১॥

সে যাহা হউক, ঐ নিশাচরী ঐ প্রকার ব্যথিত তানা ও বিগত প্রাণা হইরা বিবেচনা করিল মরণ সময়ে কপটতা যুক্ত নহে অতএব মুখ ব্যালান এবং কেশ, চরণ তথা হতবর প্রসারিত করিয়া আপ-নার রূপ অবশ্যন করিল। হে নৃপ! পরে ক্রাহ্র ব্রাহত হইয়া যে রূপে পড়িয়াছিল সেই রূপে পতিতা হইল॥ ১২॥ শতমানোহপি তদ্ধেই ক্রিগবৃত্তান্তর ক্রন্মান্। চূর্ণানাস রাজেন্দ্র মহদাসীত্তদভূতং ॥ ১৩॥ ঈশামাত্রোগ্র দংষ্ট্রাস্থং গিরিকশরনাসিকং। গওশৈলন্তনং রৌদ্রং প্রকীর্ণারুণ মূর্দ্ধজং॥ ১৪॥ অন্ধকৃপ গভীরাকং পুলিনারোহ ভীষণং। বন্ধসেতু ভূজোর্বজিনু শৃশ্যতোয় ব্রদোদরং॥ ১৫॥

### व्यथतवामी।

পতরপি তদ্যাং দেহং বট্জোশ মধ্যবর্ত্তিনো জ্রমাংশ্চূর্ণীচকার॥ ১৩॥

ঈশা লাকণ দণ্ড: তংপ্রমাণা উগ্রা দংষ্টা যশ্মিন্ তথা ভূতমাননং যশ্মিন্ তং তদ্যাঃ কলেবরং বীক্ষ্য গোপা গোপান্চ সংত্রস্থা সংক্রাঃ সংক্রাস হেতুছেন পুনর্টভিঃ পদৈ বিশনটি গিরি কল্পর ইব নাসিকে যশ্মিন্ তং গিরেন্চ্যুতৌ স্থ্লোপলো তাবিব তনৌ ম্মিন্ তং । রৌজং ঘোরং প্রকীর্থা অক্ণা মৃক্কা যশ্মিন্ তং ॥ ১৪॥

ক্ষরকুপাবিব গভীরে ক্ষিকণী ৰশ্বিন্ তং। পুলিনবদারোহো জবনে তাভাাং ভীষণং। বন্ধা: সেতব ইব ভূজো উরু অভ্যুীচ

### ি বৈক্ষবভোষণী।

ত্ত্রান্তর্গাদর্শ্যনাহ পত্তেতি। ন কেবলং জীবরেব জীবান্ জ্বান দ্রিয়মাণো হপ্যতিতরামিত্যপি শব্দার্থ: তদেব বট্ ক্রোপ্ট ক্রম চুর্নিথং ত্ত্রাপি তব্বাত্তঃ চুর্নিওং ব্রদহৃতঃ মহদেবাসীৎ স প্রবৃত্ত ত্যা: শ্রীভগবলীলা শক্তেরেব মহিমা ইত্যবগমরিতুং স্তৌতি রাজেক্রেতি॥১৩ সিশেতি ত্রিকং। রৌক্রমেব দর্শরতি স্বশ্বতালাষ্ট বিশেষণা তেত্রচ ভীবণমিতি পুনস্থাক্তি র্বাত্তর্গর্গরিভাগ্রন্থ প্রবৃত্তি বিশেষণা প্রবৃত্তি তিন্ত্র ক্রমেবেত্যর্গরিভাগ্রন্থ ত্রানহরণমন্ত্রান্তর্গরালাম তেথা গোপা গোপান্ত তাদ্বেহ দর্শনেন সম্মৃত্ ত্রভা বভুব্রিত্যর্থ: শ্বপ্রবিদ্ধান এতহ্য-ক্রমেবেত্যর্থ: ॥১৪॥

কথ বাস হরণরত্তং কানত্তঃ শ্রীমনোদানিকটার। গোপাস্ত মোহবাথে শ্রীমনোদা রোহিণ্টো পরিত্যকা বিদ্রুতা গুল্পুতক দেহাতং বাসং গৃহীর। গৃহমানীতবত্য ইত্যাই বাসং হেতি। তত্র বাসমিতি তথাপি তলীনামাত্রাবিদারেশ তাসাং তদ্দ্রা সেহ বৃদ্ধিঃ স্বিতা বাসরাদেবাক্তোভয়ং বস্তত্ত সুত্রাহিপি ভয়মন্তেবামপি যন্ত্রাং তং। অতএব তস্যা উর্সি ক্রীভৃত্তং সহসাবলোকপূর্বক শ্রীহন্ত পাদ নর্তনাদিনা ক্রীড়াং ক্রেরং অতএব জাতঃ সংশ্রমো বিশ্বরো হর্বাবেগো বা যাসাং তথাভূতাঃ সত্যঃ সাক্ষাং পতিত পূত্রা মহোচ্চ দেহারোহণে হপ্যতির্যাক্ ওয়াভিমুখং গরা জগৃহর্বতো গোপাঃ শ্রীক্ষে সহজ সেহাকুলছেন প্রসিদ্ধানের সর্বাভিমুখং গরা জগৃহর্বতো গোপাঃ শ্রীক্ষে সহজ সেহাকুলছেন প্রসিদ্ধানের সর্বাভিমুখং গরা জগৃহর্বতো গোপাঃ

#### ক্রমসন্দর্ভ: i

পতেতি। অত্র ভাৰৎ ক্রমচূর্ণরিভূষং তথাপি দ মহুব্য গবাদি বৰ্জ্জিছং চেক্সুভয়মত্রাভূতং। তচ্চ ভগ্রচ্ছক্তি ব্যঞ্জকমেব॥ ১৩॥১৪॥১৫॥

#### **बिविधनां थहळावर्खी**।

পত্মান: পীড়াবৈরপ্রাবশাদস্ক: পুরাত্মান্ত্রপুত্য গ্রামমপুরেজ্য তর্বহিংপ্রদেশে পত্মিত্যর্থ:। অপি কারেণ ন কেবলং জীবস্থাব সা জীবান্ জঙ্মান অপিতৃ মৃতাপীতি ভাব:। বট্জোশ মধ্যবর্তিনো ক্রমান্ তাবতাং ক্রমাণাং চুর্ণনং ক্রমাক চুর্ণনং গ্রামেনারজ্যনং চেত্যজ্যমূক্তং ক্রমান্চ তে কংলারামন্থা স্তরোপ্য ফলা ইতি বৈক্ষব্তোরণী ॥ ১৩ ॥

তস্যা কলেবরং বীক্ষা গোপাগোপান্চ ভত্রহা। ঈশা নাক্ষন দণ্ড তথপ্রমাণা উগ্রাদক্ষী যদিং তাদাসাং বস্য। পুলিনবদারোহো-ক্ষমনং তেন ভীৰণং। বন্ধাং পেতব ইব ভূলাব্র অব্দী চ যদ্মিন্ তথ শ্নাতোরব্রদ ইব উদরং যদ্মিন্ তথ। পূর্বান্ত তস্যাঃ শাদেন ভিয়ানি বিদীর্মানি ব্রাদীনি বেবাং তে তাল্চ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥

হে রাজেন্দ্র । পূজনারাক্ষণীর দেহ পতিত ক্ইবার সময় ছয় জোলের মধ্যে যত রুক্ষ ছিল সম্-দার চুর্ব করিয়া ফেলে, অতএব তাহার পজন অদুত হুইয়াছিল ॥ ১০ ॥

ফলতঃ প্তনার দেছ অতিশয় ভরাৰক, তাহার বদনে লাগল দণ্ডের প্রমাণ উগ্র দশন, নাসিকা-দ্র গিরিকশরের তুল্য, হুই তান হুইটা গওলৈল অর্থাৎ কুলু পর্বত সদৃশ, মন্তকে অরুণবর্ণ কেশ কলাপ প্রকীণ ॥ ১৪ ॥

নেজৰা অৰুক্ৰেশ ছুলা গভীর, জৰনৰত্ন নদীয় পুলিন সমান, ভুজ-ৰয়, উর্জ-ৰয় থবং পদ-ছয় বদ্ধ সেত্র সদৃশ, উদর জলস্ভারনসম, জভরাং সর্বভোভাবে ভীষণ ॥ ১৫॥ সংতত্রত্বঃ স্ম তদ্বীক্ষ্য গোপা গোপ্যঃ কলেবরং। পূর্বস্ত তন্নিউনিত ভিন্নস্থৎ কর্ণ মস্তকাঃ। বালঞ্চ ত্রতা উরসি ক্রীড়স্তমকুতোভয়ং। গোপ্যস্ত বিং সমভ্যেত্য জগৃহ জাত সংভ্রমাঃ। বশোদা রোহিণীভ্যাং তাঃ সমং বালস্য সর্বাশঃ। রক্ষাং বিদ্ধিরে সম্যক্ গোপুচ্ছভ্রমণাদিভিঃ১৬ গোমূত্রেণ স্নাপ্যিত্বা পুনর্গোরজসার্ভকং। রক্ষাং চ চক্রুঃ শক্তা দ্বাদশাঙ্গেয়ু নামভিঃ॥ ১৭॥

### श्री धत्रशासी ।

যি বিন তং। শূন্যতোর এদ ইব উদরং যিমান্তং॥১৫॥

পূৰ্ব্বেষৰ তদ্যা শব্দেন ভীতাঃ পুনৰ্দশ্নেনাতি তত্তস্থাৱিতা। হুপ্ৰবিতি। তদ্যা নিষ্টনিতং শব্দত্তন নিৰ্ভিন্নানি হুং কৰ্ণ মন্তকানি বেষাং তে॥ ১৬॥

হাদশাঙ্গেষু ললাটাদিযু কেশবাদি হাদশ নামভি:॥ ১৭॥

### देवस्ववरङायनी ।

তার্থ: তথৈব ভাষাদি তম্বজ্ঞানমপি ৰক্ষ্যতে এতাহি প্রায়: শ্রীব্রজেশ্রীস্বয়স্কা জ্ঞেয়া মাতৃবৎ মেহেন রক্ষান্যাচরগাৎ॥ ১৫॥

বালভেতি স্নেহভবেণ তাদৃশ ৰক্ষা যোগ্যত্বং বোধয়তি এবমগ্রেছণি যশোদাবোহিণীভ্যাং সম্মিতি তরে প্রারিষ্টশঙ্কয়তি ব্যাকুলত্বেন কিঞ্চিং কর্ত্ত্ মুন্দাক্ত তরাপ্রায়াভাং সাহিত্যঞ্চ তয়োঃ সমাক্ শোকোপশমনার্থং জ্ঞেরং। সর্বাশ ইতি বহবর্থাৎ কার-কাং মাঙ্গলিকার্থেছিরং শস্ প্রভারঃ। বাহাভান্তরাদি ভেদেন সর্ববৈত্যের্থঃ। সম্যগুত্তম প্রকারং যথাস্যাং। আদি শব্দেন শর্ষণ নির্মান্ত শুপ্রকাণ স্পর্ণাধিনি ॥ ১৬॥

সমাক্ষমের দর্শরতি গোম্তেণেতি। ললাটাদি বাদশালেষ কেশবাদি বাদশ নামভিঃ শক্তা গোমরেন রক্ষাং চক্রং তানিচ বিবি-চ্যোক্তানি পালোক্তরথণ্ডে তিলকনির্দাণবিধৌ। ললাটে কেশবং ধ্যারেলারারণমথোদরে। বক্ষংস্থলে মাধবত্ত গোবিলাং কঠকুপ্লকে। বিষ্ণুণ দক্ষিণে কুকৌ বাহোচ মধুস্দনং। তিবিক্রমং কন্ধরেত্ বামনং বাম পার্থকে। শ্রীধরং বামবাহোত্ স্ববীকেশন্ত করের। প্রাত্তিক কট্যাং দামোদরং ভবেৎ ইতি এরং সহজ্ব পরম বৈষ্ণবত্তরা শ্রীভগবল্লামভিরেব রক্ষাবিধিঃ ক্বত ইতি জ্বেয়ং॥ ১৭॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

### শ্রীয়শোদাদ্যোরপ্রাধান্যং শোকবৈবশ্যেন ॥ ১৬॥ ১৭॥

### শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

উরসি পর্বতবছতুকে ক্রীড়স্তং। প্রবেষ্টুং স্থতিকাগারমনীশানাং বনৌকসাং। দিদৃকা পূর্ত্তর ইব নিজ্ঞান্তং স্বপুরাষ্থিং॥ ১৬॥ রক্ষাবিধানে যশোদা রোহিণ্যোরপ্রাধান্যং তয়োঃ শোকোথ বৈর্গ্রাতিশ্বেন। সর্বতঃ সর্বেব্দেষ্। আদিশ্বেন সর্বপ নির্মগুন স্থপ্কোণ স্পর্শনাদীনি॥

শক্ত। গোময়েন বাদশাকেষু ললাটাদিষু নামভিঃ কেশবাদ্যৈঃ॥ ১৭॥

অতএব সেই দেহ দর্শন করিরা গোপ গোপী সকলেরই মহাভয় জন্মিল। ইতি পূর্বের ঐ রাক্ষ-দীর গভীর ধ্বনিতে তাহাদের হাদয় কর্ণ মস্তক নির্ভিন্ন হইয়াছিল। সে যাহা হউক, মৃতা রাক্ষদীর বক্ষঃস্থলে আপনাদের বালককে জ্বীড়া করিতে দেখিয়া গোপীগণ সম্ভ্রমান্বিত হইলেন এবং শীত্র সমীপে গিয়া শিশুকে তুলিয়া লইলেন। অনস্তর যোগাণা ও রোহিণীর সহিত মিলিয়া গোপুচ্ছ চাল-নাদি দারা স্ব্র প্রকারে তাঁহার রক্ষাবিধান আরম্ভ করিলেন্॥ ১৬॥

প্রথমতঃ গোম্ত্র দারা স্নান করাইয়া পুনর্বার বালতের অঙ্গে গোরজঃ দকল লেপন করিয়া দিলেন, তদনন্তর গোময় দারা ললাটাদি দাদশ অঙ্গে কেশবাদি দাদশ নাম অর্থাৎ ললাটে কেশ্ব, উদরে নারায়ণ, বক্ষঃস্থলে মাধব, কণ্ঠকুলে গোবিন্দ, দক্ষিণ কৃষ্ণিতে বিষ্ণু, দক্ষিণ বাহতে মধুসুদন, দক্ষিণ কন্ধরে ত্রিবিক্রম, বাম কৃষ্ণিতে বামন, বাম বাহতে জীধর, বাম কন্ধরে হুবীকেশ, পৃষ্ঠে পদানাভ এবং কটিতে দামোদর এইরপ নামোল্লেখ পূর্বক তিলক দিয়া রক্ষা বন্ধন করিলেন । ১৭॥

গোপ্যঃ সংস্পৃত্তস্থিত আৰ্থের কর্মোঃ পৃথক্। অস্থাত্মতথ বালস্য ৰীজ্ঞাসমক্র্বত ॥ ১৮॥ অব্যাদজোহন্তি মণিমাং তাৰ জাৰ্থাের যজ্ঞো হচ্যুতঃ কটিতটং জঠরং হ্যাস্যঃ। ছৎকেশব স্বন্ধর ঈশ ইনস্ত কণ্ঠং বিষ্ণুডু জং মুখমুক্তকম ঈশরঃ কং॥ ১৯॥ চক্রাগ্রতঃ সহগদাে হ্রিরস্ত পশ্চাৎ দ্বংপার্থা র্ছমুরসী মধ্হাজনশ্চ।

### विश्ववामी।

জনাচান্তা এবং প্রথম মতিসন্ত্রমেশৈবং রক্ষাং কৃষা কিঞ্চিয়ভাষানা: প্রভাংপর্যোগ বীজন্যাসমকুর্বতেত্যাহ সংস্ট সনিলা জাচান্তা: আছানি প্রথমং অলেষু করয়ো: পৃথক্ জলাদ্যেকালশ বীজানাং মধ্যে করওছো ত্রীণি করয়ো: সভিত্র চূড়ারি তথা অল্যাদাবেকৈ ক্-বিশ্বকে জলাদ্যেকৈকং বীজং নিধার বালস্যাপ্যকেষু তথৈবাকুর্বত: ॥ ১৮ ॥

অন্তি অঙ্ছী জাম জামনী ভূজং ভূজো কং শির: ॥ ১৯ ॥

তথা দিক্ষু রক্ষামকুর্বারিত্যাহ চক্র্যাপ্রত ইতি। চক্র সহিতো হরি স্তবাগ্রতোহস্ত সহগলো গদাসহিতো হরি স্তব পশ্চাদস্ত দং-

### বৈঞ্চবতোৰণী।

অথ রক্ষানন্তরং গোণ্য ইতি বশোদা রোহিণ্যৌ য্যাবর্ত্তরতি পূর্ব্তবং অতএব বন্ধ্যতেহিণ গোপীভিরিতি মাতেতিচ পৃথক্ষেন ভাত্য তাত্র বক্ষামাণ রীত্যা অলাদীখরাত্তৈকাদশ-বীলানি সামুখার ভারদাদ্যকর রূপাণি নমঃ শকান্তানি জেলানি ॥ ১৮ ॥

ততক পলৈরেতৈ রক্ষাং চকুরিত্যাহ অব্যাদিতি। অন্তি নাবিত্যনরোঃ স্থপাং স্থপ্রত্যাদি ছোলস হত্তে স্থপ্ত্ ভুজমিত্যক স্থপাং স্থপ ইতি ওট্ স্থানে অমানেশ:। অজাদ্যাং কেশবাদিবত্তয়ামপ্রধানা মূর্তিভেদাং। মণিমানিত্যপি তরামা ভগবৎপ্রাচ্জাব বিশেষঃ হং জীবাধারপল্পঃ উল্লোবকঃ॥ ১৯॥

#### ক্ৰমদন্ধ:।

বীজং অজাদীনাং প্রথমাকরং সামুখারু ॥ ১৮॥ অভিবু জাবিতি স্থপাং স্থল্গিডাট্টনা স্থলুক্॥ ১৯॥

### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

প্রথমনাচান্তা এবাতিসম্মেণের রক্ষাং ক্রমা পশ্চালকাশাসা যথাবিধানমের রক্ষাং চকুরিত্যার গোপ্য ইতি। সংস্ট সনিনা আচান্তা:। আত্মনি আত্মনাশ্বনের কুকারে কর্মানি স্থানালের ক্রমানি স্থানালের ক্রমানি কর্মানি নামান্যেকৈ কাক্রমা সাম্পার্স্য নমংশব্যক্ষ্য ন্যাসং। তেন অং নমোহজন্তবাক্ষ্মী স্পর্যাৎ মং নমো মণিমাং তব জামুনী স্বব্যাদিত্যেবং প্ররোগ:॥ ১৮॥

ততক পলৈরেতৈ রক্ষাং চকুরিন্তাহ অব্যাদিতি অভিযু অভ্যু । মণিমান্ তল্লামা ভগৰৎপ্রান্থভাৰ বিশেষঃ । স্বাস্থ জাহনী জভ্যে ২চ্যুত ইতি সন্ধিরার্থঃ। যুক্তা২চ্যুত ইতি চ পাঠঃ। হুৎ জীবাধারপক্ষং উরো বক্ষঃ॥১৯॥

ডথা দিকু রক্ষামকুর্বন্নিত্যাহ। চক্র্যপ্রত ইতি চক্র সহিতো হরি স্তবাগ্রতো হয়। সহগলো গদাসহিতো হরিক্তব পশ্চাদস্ত। ছৎ-

তাহার পর গোপীসকল জল স্পর্শ পূর্বক আচমন করিয়া প্রথমে আপনাদের সকল অঙ্গে ভথা কর-বারে অজুদ্ধি একাদশ বীজ ন্যাস করিলেন শেষে বালকের অঙ্গেও তজ্ঞপ করিয়া দিলেন॥ ১৮॥

হে রাজনী। শোপীরা এই বলিরা বীজন্যাস করিয়াছিলেন বথা-ভগবান্ অজ তোমার পদমর রক্ষা করুন, অণিমান তোমার জাতু-মর রক্ষা করুন, যজ তোমার উক্ত-মর রক্ষা করুন, অচ্যত তোমার কচিতট রক্ষা করুন, হয়প্রীব ডোমার জঠর রক্ষা করুন, কেশব ভোমার অদর রক্ষা করুন, উশ তোমার উদ্যুক্ত করুন, ইন অর্থাৎ সূর্যাদেব, ভোমার কঠদেশ রক্ষা করুন, বিষ্ণু ভোমার তুল-মর রক্ষা করুন, বিষ্ণু ভোমার মুক্ত ব্যামার বৃধ রক্ষা করুন, স্বিশ্ব তোমার মন্তক রক্ষা করুন ॥ ১৯ ॥

অপর, চক্রপাণি তোমার মধ্যে থাকুন, হরি গলা ধারণ পূর্বক তোমার পশ্চাৎ ভাগে থাকুন, ধরু-

কোণের শব্ধ উরুগার উপর্যুগেন্দ্র ন্তার্কঃ কিতে হলধরঃ পুরুষঃ সমস্তাৎ ॥ ২৬ ॥
ইন্দ্রিরাণি রুষীকেশঃ প্রাণারারায়ণোহবতু। শেতবীপপতিশ্চিতঃ মনোযোগের্যরোহবতু॥ ২১ ॥
পৃথিগার্ত্তর তে বৃদ্ধিমান্থানং ভগবান্ পরঃ। ক্রীভ়ন্তং পাতৃ গোবিন্দঃ শরানং পাতৃ মাধবঃ।
অজন্তমব্যাবৈকৃত আসীনং বাং প্রিয়ঃপতিঃ। ভূঞানং গল্পত্ব সর্বব্রন্থ ভরন্ধরঃ।
ভাকিতো যাতুধান্যশ্চ কুমাণ্ডা যেহর্ভকগ্রহাঃ। ভূতমাতৃ পিশাচাশ্চ যক্ষরকো বিনারকাঃ।

### औधत्वामी।

পার্শরোধ স্থারো মধুহা অসিধরো হজনশ্চ আন্তাং শব্ধর উরুগার: কোণেরু ক্ষিতৌ ২ধস্তাৎ ॥ ২০ ॥ এবং বহীরকাং রুখা অন্তরঙ্গ রক্ষামকুর্শরিত্যাহ ইক্রিয়াণীতি ॥ ২১ ॥

### देवकवरलावनी।

ডার্ক্সহিত: উপেঞ্র: পুরুষ: পুরুষোত্ম:॥ २०॥

ইব্রিয়াণীতি সার্দ্ধকং। অবন্ধিতি প্রক্ষকী রক্ষণেত্যক বৈর্গ্যাৎ এবমগ্রে পান্বিত্যাদ্যপি পরো ভগবান্ যং বরং ভগবানিত্যর্থ:। সর্ব্বতী স্থাদাশ্যারং। তেবাং তদংশবেন মমতাম্পদ্বাৎ বস্তু বর ংভগববেনেনবাহতাম্পদ্বাক অংশেনাংশন্ত রক্ষা ভবতু বরক্ষ বভেতি প্রার্থনাম্য ইতার্থ:। সত তাত্ত্বভাবতারাক্ষাবরণ রূপান্দ তে তেইতি ক্সেমং॥ ২১॥

ক্রীড়স্তমিতিচ সার্দ্ধকং। গোবিন্দ ইত্যাদিকস্ত তত্তৎ ক্রীড়াহ্রপেণ তত্র গোবিন্দ গো মধ্যে ক্রীড়াপর: ক্রিচদেৰ ইতি তাসাং ডানং। মাধবং লক্ষ্মীসংবাহ্ চরণঃ শেষশারী বৈকুঠো বিকুঠাহতো জয় বিজয় সনকাদি সমাধানার্ধং রুপয়া স্বয়ং পাদপ্রকারের বহিনিগতো যা স ইত্যর্থ:। প্রিয়াপতিঃ প্রমব্যোম সিংহাসনস্থো মহানারায়ণঃ। যক্তভুক্ স্পষ্ট এবেতি। সর্ব্ধ এছ ভয়কর ইত্যস্য সর্বৈর্ধনিশ্বর। ক্রীড়াদিরু গ্রহদোবেভ্যোহিপি রক্ষার্থং॥

### ক্রমসন্দর্ভ:।

তাক সহিত উপেন্ত: পুরুষ: প্রকৃতিদ্রন্থী ॥ २० ॥ ২১ ॥

পরো তবান্ স্বয়ং তগবানিতার্থ:। সরস্বতী সম্বাদকায়ং। অতত্তে বিফোরিতি চ বক্ষাতে তেবাং তদংশত্বেন মমতাম্পদত্বাং। স্বস্যু স্বয়ং তগববেইনবাহস্তাম্পদত্বাচ স্পদেশাংশ রক্ষা ভবতু স্বয়ঞ্চ স্বস্যু ইতি প্রার্থরামহ ইত্যর্থ:॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

পার্শবোধ প্রধারের মধুহা অসিধরের হলনকার। কোণের শব্ধরে উক্গারোহত উপয়াপেক্রো হত্ত জার্ক কিতাবধ্যালত। হলধরঃ পুরুষ: সমস্তালত ॥ ২০ ॥ ২০ ॥ ২০ ॥

ধারী মধ্হা এবং অসিধারী অজন তোমার পার্য-ছয়ে অবস্থিত হউন, শশুধারী উরুগায় তোমার কোণ-সমূহে থাকুন, উপেন্তে তোমার উপরে এবং গরুড় অধোভাগে আর হলধারী পুরুষ তোমার সর্ব্ব দিকে রক্ষার্থ অবস্থিত হউন ॥ ২০ ॥

এই প্রকারে বহির্ভাগে রক্ষা করিয়া পরে অস্তরের রক্ষা করত কহিতে লাগিলেন, বংগ ! শ্রহীকেশ ভোমার ইন্দ্রির সকল রক্ষা করুন, নারারণ তোমার প্রাণ সকল রক্ষা করুন। খেতবীপ্রতি ভোমার চিত্ত রক্ষা করুন। বোগেশ্বর তোমার মনঃ রক্ষা করুন ॥ ২১॥

অপর, পৃথিগত তোমার বৃদ্ধি রক্ষা করুৰ, ভগবান বয়ং তোমার অহতার রকা করুৰ, গোবিদ্দ তোরাকে ক্রীড়ার সময়ে রক্ষা করুৰ, মাধব ভোমাকে শরম কালে রক্ষা করুৰ, ক্রের্ড ভোমাকে গমন কালে রক্ষা করুন, প্রিপতি তোমাকে উপবেশন সময়ে রক্ষা করুৰ, সর্বব্রহেয় জ্যাকারী বজ-ভোক্তা ভোমাকে ভোজন কালে রক্ষা করুন, অপর ডাকিনী গণ, রাক্ষী সকল তথা বাল্ডাই ও ্রেটেরা রেবতী জ্যেষ্ঠা প্তনা মাত্কাদয়:। উন্মাদা যে অপন্মারা দেছ প্রাণেজির ক্রন্থ:।
বিশ্বদ্ধী মহোৎপাতা রদ্ধ বাল গ্রহান্ত যে। সর্ব্বে নশ্যন্তি তে বিষ্ণো নাম গ্রহণভীরবঃ॥২২॥
ইতি প্রণারবদ্ধান্তি র্গোশীভিঃ কৃতরক্ষণং। পায়য়িছা স্তনং মাতা সংন্যবেশায়দাত্মজং।
তাবদ্ধনাদয়ো গোপা মধুরায়া ব্রজং গ্রাডাঃ। বিলোক্য প্তনাদেহং বভুবু রতিবিন্মিতাঃ॥২০॥
নূনং বতর্ষিঃ সংজাতো যোগেশো বা সমাস সঃ। স এব দৃষ্টো হ্যুৎপাতো যমাহানকভুন্দুভিঃ।.

### ञ्रिभत्रयामी।

আত্মানং অহ্বারং॥ ২২॥

সংন্যবেশয়ং শার্যামাস ॥ ২৩॥

### देवकबरजावनी।

ডাকিন্ত ইতি ত্রিকং। আদি শক্ষাচ্চ বকী জ্বালামুধাদ্যা দেব্যা গণাঃ। বালগ্রহা ইতি পুনরুক্তি বালকে তেভ্যো ভয়াধিক্যাৎ। কেচিদাছরর্জক রূপেণ যে প্রাণিনো,গৃহত্তি তেহর্জকগ্রহাঃ পিশাচ ভেদা ইতি ॥ ২০॥

ইতি এবং ক্ল'ং রক্ষণং রক্ষা যদ্য তং। তত্র হেতুং প্রণরেন মেহেন বন্ধাভি বশীক্লতাভিঃ। ইতি শ্রীবশোদা গৃহে বন্ধবন্তাসাং ধাত্রী-তরা সদাবছিতিঃ। তথাচ শ্রীভগবদর্থং প্রম ব্যগ্রতরা বিবিধ ব্যাপারতাচ জ্ঞেরা। শুনং পার্রিছেতি মাতুং লেহ সভাবতঃ। তথা লোকে স্তনপানেন বাস্ম্য স্বাস্থ্যজ্ঞানাচ্চ॥

তাবদিতি গমনে শৈষ্য মুক্তং মধুরাপুর্ব্যাঃ সকাশাৎ ব্রন্ধং ব্রন্ধদর্শন যোগা দেশং প্রাপ্তাঃ বিলোক্য দূরতো ৰিবিধ কল্পনায়া নিভাল্য পর্বতাকারক্ষেন দূরত এব দর্শনাসম্ভবাং তক্রচ গ্রীবহুদেবোক্ত সন্বাদেনাত্যক্ত বিশ্বিতা ইত্যর্থঃ ॥ ২৩ ॥

অতি বিশ্বিতানাং তেৰামস্তোক্তিমাহ। নুনমিতি বিতর্কে স আনকগ্নস্থতিঃ প্রাগেতাদৃশো নাসীং। অধুনাচ ঋষিং সম্প্রজাতো-বৃত্তঃ ঝবিবাক্টক্তৈর প্রামাণ্যাং। নমু ঋষিত চিহ্নং কিমপিন দৃষ্টং ইত্যাশক্ষ্য পক্ষান্তরমাহ গোগেশ ইতি। অস্তরুপাসনা নিষ্ঠং সংশক্ষান্ত্যাং

#### ক্ৰমসন্ধৰ্ভ: i

অত স্তত্তদঙ্গাবতার। স্তদাবরণ রূপাশ্চ তে ত ইতি জ্ঞেয়ং। অর্জক বাগগ্রহয়োরৈকার্থ্যেন পুনক্তক্তি ব'ালকেন্ড্যো ভয়াধিক্যাৎ॥২২ তাবদিতি বিলোক্য জ্ঞাত্বা তচ্চ দ্রতোহপি দর্শনেন য২ কিঞ্চিছ বণেন চেতি জ্ঞেয়ং। যে নীচল্লাভয়ো ব্রজৌকসস্ত এবেত্যুর্থ:॥২৩।২৪

### विवयमाथहक्तवर्शे।

প্ৰণয় রসনয়া মশোদা গৃহ এব বন্ধাভিঃ। পায়য়িছেতি জনপানমেব বালানাং বাস্থালকণমিতি ভাবঃ। সংন্যবেশরং শায়য়ামাস ॥২৪ অতি বিশ্বিতাঃ কিং শক্তেণ প্ৰমাদচ্ছিলপকঃ কোহপিঃ পৰ্বতো নভোব্যাশিনোহপাত্ৰত্যান্ মহীকহাং শচুণ্যিছা পপাত। কিখা বয়মেৰ সাহজিক্যা জাজ্ঞা কথাপি যোগিন্যা বা দেশান্তরং প্রাপিতাঃ খঃ। কিখা কস্যাপৈয়েজজালিকস্যোদং কর্মোতি সন্দিহানা ইতার্ধঃ ॥ ২০ ॥

তত্ত্ব জীবজরাজর নিশ্চিনোতি নৃনং নিশিতমেব ঋষিরস্থংকুলে বস্থাদেব: সর্বজ্ঞবাদস্মীয়তে। খোগেশো হটাঙ্গযোগাভ্যাসী যোগজ নেত্রেণ তাবি রও দর্শিছাং সমাস সমাস্দীপ্যতে শ্ব। অস দ্বীত্তী॥

কুমাও এড়তি ভূতগণ, মাতৃগণ, পিশাচগণ, তথা ৰক্ষ, রাক্ষস, বিনায়ক সকল এবং কোটরা, রেবতাঁ জ্যোষ্ঠা, পূতনা, মাতৃকা এড়তি, তথা উন্মাদ, অপস্মার, যাহারা দেহ, প্রাণ ও ইন্দ্রির জোহী। অপর স্থা দৃষ্ট মহা মহা উৎপাত এবং র্জগ্রহ, বালগ্রহ প্রভৃতি যত আছে, সকলেই বিষ্ণুর নাম গ্রহণে ভীত হইয়া বিন্ত হউক ॥ ২২॥

ছে রাজস্ ! গোপীরা থাণর বন্ধ হইয়া ঐ প্রকারে রক্ষা বন্ধন করিলে নাতা আত্মজকে তনপান করাইয়া শ্যার লয়ন করাইলেন। এই সময়ে নকানি গোপগণ সধুরা হইতে একে আসিলেন। প্ত-নার মৃতদেহ দেখিয়া ভাষাদের সাতিশর বিশার জন্মিল। ২০।

পরস্পার কহিতে লাগিলেন কি আশ্চর্য্য । জামাদের বোধ হয় বহুদেব সম্প্রতি শবি শর্ধাৎ তপঃ

কলেবরং পরশুভিশ্ছিত্বা ততে ব্রজ্ঞোকসঃ। দূরে ক্ষিপ্তাবয়বশো নির্দেহ্ণ কার্চবেষ্টিতং ॥ ২৪ ॥
দহমানস্য দেহস্য ধূমশ্চাগুরুসোরভঃ উত্থিতঃ। কৃষ্ণনিত্রু সপদ্যাহতপাপানঃ॥ ২৫ ॥
পূতনা লোকবালত্মী রাক্ষসী রূধিরাশনা। জিঘাংসয়াপি হরয়ে শুনং দ্বাপ সদ্যতিং॥ ২৬॥

विभन्नचारी।

বিষয়মেবাহ ন্নমিতি। বত বিশ্বরে সাম্প্রতং স ঋষিং তপং প্রভাববান্ বোগেশো জ্ঞানী বা সম্যগাস যতং স এব দৃষ্ট ইতি॥ ২৪॥
\* বিষয়ান্তরমাহ দক্ষমানস্যেতি। ক্লকেন নিভূক্তি অভএৰ সপদ্যাহতঃ পাপায় যস্য॥ ২৫॥

প্রসঙ্গাৎ কৈম্তিক ন্যারেন ভক্তি বৈত্রবমাহ পূতনেতি॥ ২৬॥

देवकवट्डावनी।

তত্ত্তিছি। বোধাতে তত্ত্ৰ হৈতৃং স একৈতি। আনকক্ষুভিন্নিতি। ভাদৃশ অন্নত্বেন বোগাতাং বোধনন্তি। অন্নতত্ত্বা বছা কোহপি যং পূৰ্ব্ব জন্মনি ঋৰি ৰ্যোগেশো বা সমাস অত্ৰ সন্দেহ এব বিক্লঃ স এবানকছন্দৃতিঃ সন্ সংজাতঃ অন্যৎ সমানং। এবং স্ক্ৰিজ্ঞান্দেৰ সোহবদদিতি তৈৰ্ম্বতঃ অতএব স্থাবিশ্বিতাঃ॥

এবং যাবৎ শ্ৰীনন্দাদরো নিকটমারান্তি তাবতৈ গোকুল রক্ষারাং স্থিতৈঃ শ্রীমহপনন্দাদিতি নিযুক্তা গুছচিতাঃ ব্রক্ষোক্ষো ব্রজা-শ্রিতাঃ কনিষ্ঠ জাতরো নিতরামদহন্ পুনর্জীবন শৃষ্কা নির্দেহ্রিতি গাঠঃ কচিৎ ॥ ২৪ ॥

অগুরতোহণি সৌরতং ৰসা সং। জ্ঞা হেডু:। ক্লফেন সৌগন্ধা সৌন্ধণাদি নিজাপেবাংকর্ষ ব্যঞ্জকেন ভগবতা নিংশেষেণ ভূক্তঃ প্রোণৈ: সহ অনপানাং অভএব সপদি ধ্যজাণ সময় এব আ সম্যক্ হতো নাশিতঃ পাপ্যা ধ্মসেবিনামপি সর্জ্বোং যেন স চাসৌ সচ তস্য এবং ভগবছচ্ছিইস্য মহিমা দর্শিতঃ। প্রিত্তং বস্তু ভক্তা সমর্শিতং কিমুভেতি বক্ষাভেচ পূতনা ইজ্যাদিনা॥ ২৫॥

পূতনেতি যুগাকং। জাত্যা রাক্ষদী ত্রাপি লোকবালগ্নী ত্রাপি ক্ধিরাশনা হররে ইতি তত্তদোষ হরগাতিপ্রায়ের প্রমান্তনে মৃত-প্রারেষস্তর্গহিরিজ্রিরের জ্ঞান জিলা শক্তি প্রদেশেন সামান্তত স্তাবদ্ধিতার ক্ষণার বিশেষতঃ পূতনাদীনামপি তাদৃশ হিতকারিত ক্ষপো বোপ্তলৈকদেশ তদাদি প্রণ গণ প্রকটনেন সর্ক চিন্তানাং স্বভাবত এব স্বন্ধিরাকর্ষকার তল্পৈ জেছহির্বিছেবাভাবেন মছন্ স্লাতিং সতাং গতিং জ্ঞাক্ষ মেব প্রাপ্রোত্তীতি ॥ ২৬ ॥

क्रमनमर्दः।

ক্ষনভূতি তং সৌগন্ধাধানমপি ব্যক্তিবং ॥ ২৫॥

রাক্ষসী লোকবালয়ী ক্ষরিশানেতি ক্রমশোহধ্মভাধিক্যং ॥২৬॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

ব্ৰজৌকলো হন্তাজা উপনন্দাদ্যাদিষ্টা:। নিঃশেবেণ দেহং পুন জীবনশন্ধা বিষধর জীবানাং দাহেনৈবোপশান্তে:॥ ২৪॥
তদ্বেস্য কৃষ্ণুপশ্লেশিখং মহিমানমাহ, দক্ষমানস্যেতি। কৃষ্ণ নির্ভ্রেন কৃষ্ণকৃত জন্যপানেন সপদ্যাহ্তঃ পাপান বস্তুত্যাং প্রক্রা
প্রসঙ্গাং কৈম্ত্য ন্যারেন ভক্তে মহিমানমাহ প্তনেতি জিঘাংসন্থাপি কিম্তোদাসীন্যেন কিম্তত্যাং প্রক্রা কিম্তত্যাং প্রক্রা
ভক্তেয় ত্যর্থ:। হরেরে ভগবৎ প্রাহ্রভাবিষাত্রার কিম্ত কৃষ্ণার পরমাত্মনে সর্ব্ধ পরম স্বন্ধপান্তারিলে। বিরন্তনমধি কিমৃত বিবেতরম্বন্ধ
কিম্তত্যাং প্রিরং কিমৃত্ত্যাং প্রিরভরং কিমৃতাভিত্যাংপ্রিরভয়ং। পূতনা নারা প্রসিদ্ধা রাক্ষ্যাপি কিমৃত মাম্ব্যংকিমৃত্ত্রাং জ্বনাং
কিমৃত্ত্যাং রক্তা অম্বাগ্র্কাং। ত্রাপি কিমৃত্ত্যাং ভক্তাভরে হতি বৎসলাং বৎসাহরণলীলা গভান্তাব্যাভিত্না অনিবাচ্যাৎ
শ্রীবশোদা তু দূরত এব প্রণতিপাত্রীকৃত্যৈর স্থাপিতা নতুন্ধিতিত্তি কর্ণ স্ক্রাদানকর্মকর্ত্পদেহ কৈমৃত্যমণ্ডলী।

প্রভাবশালী অথবা সম্যক্ জানী হইয়াছেন, কারণ তিনি যাহা বলিয়াছেন সেই উৎপাতই দৃষ্ট হইল। তদনস্তর ব্রজবাসি সকলে মিলিত হইয়া বহু ২ কুঠার জানিয়া তদ্ধারা পৃতনার মৃত কলেবর ছেদন করত এক একটা অঙ্গ দৃহে কেপণ করিলেন এবং কার্চ রেষ্টিত করিয়া দগ্ধ করিতে লাগিলেন॥ ২৪॥

হে রাজন্! দাহন করিবার সময় ব্রজবাসিদের অন্য এক বিশ্বয় উপস্থিত হইয়াছিল, অধীৎ দহ্মান সেই দেহের ধুম অগুরু চলন ভুল্য অরভি ইইয়া উঠিয়াছিল, তাহার কারণ ভগবান্ জীকুক তদ্দেহ ভোজন করিয়াছিলেদ তাহাতে তাহার সমস্ত পাপ সদ্যঃ বিধবত হইয়াছিল। ২৫॥

হে মহারাজ। ভগবন্তজ্ঞির বৈভব দেখুন, পূতনা সকল লোকের বালঘাতিনী এবং ক্রেধিরাপনা রাক্সী ছিল, হত্যা করিবার বাসনাতেও ভগবান্ হরিকে স্তন দিয়া সদ্গতি প্রাপ্ত হইল। ২৬॥ কিং পুনঃ শ্রদ্ধা ভক্তা কৃষ্ণায় পরমাত্মনে। যচ্ছন্ প্রিয়তমং কিং সু রক্তা স্তশ্মাতরো যথা। পদ্যাং ভক্তহৃদিস্থাভ্যাং বন্দ্যাভ্যাং লোকবন্দিতৈঃ। অঙ্গং যদ্যাঃ সমাক্রম্য ভগবানপিবং স্তনং।

#### औधत्रवामी।

শ্ৰদ্ধা আজিকোন ভ**ক্তা প্ৰেলা বকাঃ বিধান্ত** আতিৰ <mark>ইতি বংসাহরণ শীলাভিপ্ৰারেণ ৰহবচনং গো গোপিকা ক্তদাতু তন্মাতরো</mark> ছলবলিতি ॥ ২৭ ॥

### देवकवट्डायना ।

কিং পুন: কিম্ত ইতার্থ:। তত্রাপি প্রদ্ধনা বিশাদেন কিমৃত ত্রাপি ভক্তা আদবেণ কিমৃত প্রিয়তমমিতাকে: ক্রমপ্রাপ্রাচায়-মর্থো কভাতে ত্রাপি প্রীতা। স্বদ্ধ প্রীক্ষণন বা প্রিয়ং যছন্ কিমৃত। ত্রাপি প্রীতাতিশ্যেন প্রিয়তরং যছন্ কিমৃতে-ত্যেবার্থ: ত্রাপি স্বতি প্রীতাতিশ্যেন প্রিয়তমং যছন্ কিমৃত ইতি কিঞ্চ ত্রাপি রক্তা তদেক জীবন। তথ্যুথক কুথান্চ যথা যজ্ঞি তথা যছন্ কিংমু কিম্তেত্যেবার্থ: পুনক্ষি: কৈম্ত্যেগপি বৈশিষ্টায় ত্রাপি ত্রাভিবেন যথা যছাপ্তি তথা কিমৃত্তি অত্তবে মাতরং সর্ব্বিভিবেন সর্ব্বোপরি পৃথগের স্থাপিতা:। ভোলন বিষয়ে মাতৃণানের সর্বাধিক রাগাৎ প্রের্স্যাদ্যোহপি ন দৃষ্টান্তিতা ইতি জ্ঞেষং ॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

প্রমান্থনে জ্ঞানক্রিয়া শক্তি প্রদেশে তংসামান্যত স্তাবিদ্ধতার ক্ষাম বিশেষ প্তনাদীনামপি তাদৃশ হিতকারিতা ক্রপো যো গুলৈক-দেশস্থলাদি গুলগণ প্রকৃতিনেন সন্ধাটিন্তানাং স্বভাবতঃ স্বামিয়াকর্ষকার তথ্য ত্তব্বেষমাত্রাভাবেন যথা কথঞিং কিঞ্চিপি যদ্ধন্ কিং প্ন:. কিম্তেত্যর্থ:। তত্রাপি প্রদ্ধা বিশাসেন কিম্ত তত্রাপি ভক্ত্যা আদরেণ কিম্ত তত্রাপি স্বস্য প্রাক্তরং যদ্ধন্ প্রত্যত্ত্ববিং। অত্রাপি প্রাত্তা প্রিয়ং প্রতি বিশেষেণ প্রিয়তরমিতি ক্রম: কার্য:। অতঃ প্রতিবিশেষতর ক্রপেণ প্রোমা প্রিয়তমমিত্যান্দাপি গম্য:। তত্রাপি রক্তা স্তদেক জীবনান্তংস্থৈক স্থা যথা যদ্ধন্তি তথা যদ্ধন্ কিন্ত কিম্তেত্যেবর্থ:। প্রকৃত্তি কিম্তেত্বি। ত্রাপি ত্রাপি ত্রাপ্রতের যথা যদ্ধতি তথা ক্রমণ ত্রাপি ত্রাপি ত্রাপি ত্রাপি ত্রাপি ত্রাপি তথা যদ্ধি তথা ক্রমণ্ডতি। ত

তমূহিম দৃষ্ট্যা তু নাশ্চ যিং তদশীতাহি পদ্ধামিতি। তথাভূভা সতী সা সাগতিমাণেতি কিমাশ্চর্যমিতার্থঃ। তত্ত চ মাত্ৰেব-ভাষালুকরণকারণা তংকক্ষণৈৰ কারণমিতি ভাষঃ। তছকেঃ। সংহ্বোদিব পুতনাপীতি। কং ৰা দ্যালুং শরণং একেনেতি চ।

### बीविधनाशहकवर्दी।

ভগৰতো নিকারণক ক্ষপা প্রাণিতং পূকনায়া: সোভাগ্যং তাবং পশ্যেত্যাহ পদ্যামিতি রাভ্যাং। ভক্তক্ষিছাভ্যামিতি পূকনা ন ভক্তা নাগ্যভক্তা কিওঁ তস্য বৈরিণীতি ভাবং। লোকবিলিতৈ এঁল কলাদিভিরণি বল্যাভ্যামিতি পূকনা তুপানৌ ন বলিতেই নাগ্যবলিতেই কিও মরণসময়ে অভ্যন্থাং সকালাং নিকাসয়িতুং বতমানয়াগ্যলকুবত্যা স্বণাণিভ্যাং বাবৰণং ভাড়িতেই এবেতি ভাবং। সম্যগাক্রম নতু বথাকথাকিং শৃষ্ট্য স্থান বলাবে লোকপালাং স্বান্ধাং মেংতিকাজিশ ইতি বং। পূক্তনাপি সকুলা খামেব দেবাপিতেতি ব্যোক্তে বৈকুইবের মৃতু নহারং স্থাং। ত্যপি কীল্গং জনন্যাং শ্রীষ্টেশালায়াং প্রকাশতেদেন গড়ি ব্রু তমিতি প্রীগোলোক্ষেব-ভাষ্যের স্বান্ধানেক্ষা স্থানিক্ষা স্থানিক্ষা স্থানিক্ষা স্থানিক্ষা সাক্ষা স্থানিক্ষা সাক্ষা স্থানিক্ষা স্থানিক্য স্থানিক্ষা স্থানিক্ষা

ইহাতে সিদ্ধ জনদীর ন্যায় যে ব্যক্তি শ্রন্ধা ( আন্তিক্য ) এবং ভক্তি ( প্রেম ) দারা পরমাতা ভগ-বান্ শ্রীকৃষ্ণকে প্রিয়তক বস্তু দার করেন ভাঁহার সন্দাতির কথা আরু কি বলিব ? অপর যে পুদ্ধিয় ভক্ত জনের হুদ্ম বিতে এবং বাহা লোকবন্দিতদিলেরও বন্দনীর, সেই প্রদায় দারা যাহার অঙ্গ আজমণ যাতৃধান্যপি দা স্বর্গমবাপ জননীগতিং। কৃষ্ণভুক্তন ক্ষীরাঃ কিয়ু গাবোহ্মুমাতরঃ। প্যাংসি যাসামপিবৎ পুত্রস্থেই স্কুতান্যলং। ভগবান্ দেবকীপুত্রঃ কৈবল্যাদ্যখিলার্থদঃ।

देवसम्बद्धां वर्गे ।

খানেব দেবাপিতা ইতি রীত্যা গোকুলং বনবৈকুষ্ঠং ইতি শ্রিক্ষোপনিবদ্রীত্যা গোকুলাখ্যং মহৎপদমিতি শ্রিবশ্বসংহিতা রীত্যাচ
শ্রীগোকুলদৈয়ব প্রাণিধিক লোকানভিব্যক্তরং। চিস্তামণি প্রকর সন্ম ইত্যাদি ব্রহ্মসংহিতা বর্ণিত প্রকার বিশেষং। গোলোক এব নিবসত্যথিলাস্বস্থতো গোবিল্মাদিপুক্তরং তনহং ভঙ্গানীতি। তব্র প্রানিদ্ধা শ্রীক্ষেলাকমেক অভএব জননীগতিং
তব্যাপি জনন্যা: শ্রীষণোলায়া ইব গতিং নিজ লালনাগাধি ক্রত ধাব্রীবর্গ প্রবেশমিত্যর্থ:। নিষ্বেংসতেচ জননীনামন্যগতি রিতি
ভাব:। তত্তকং। খামেব দেবাপিতেতি লেভে গতিং ধাক্রাচিতাং ইতি চ। নম্ন ত্র্স্যা দৃষ্টাস্তত্বেন মাতৃণামিপি গর্ভি ক্রথবাভিপ্রেরতে
নেত্যাহ ক্ষেতি। তত্মাদেব গাবো মাতরশ্চ মাতর এব নিত্যমিত্যর্থ:। অপ্রস্তানাং গবাং প্রদ্বোগো মাতৃষু কৈন্ত্যায় অস্মাতর
ইতি বা চ্ছেল:। যথা কিন্গাবং যতন্তা অনুমাতর মাতৃ সদৃত্য এব অতঃ শ্রীষণোলাতু স্ক্র্ম্ক্মণিবদেব দ্বে রক্ষিতেতি জ্বেয়ং। অত্ত ক্রীর পদাধিক্যাৎ পুতনায়াং ভদমুকরণমিত্যেবচ সিদ্ধং॥

তস্যা: স্বৰ্গং বিশেষ্ট্য ত্ৰিশেষণ জননীগতিং বিশিন্ধি প্যাংসীতি যুক্ষকেন। অয়ন্থা। কৈবল্যাদ্ধিলাৰ্থদঃ কামিনাং ধ্যাদি মাত্রাথদিং নতু স্বরূপ ব্যঞ্জঃ মুম্কুলীত কৈবল্যদা নির্কিশেব ত্রহ্মাণ্য স্বরূপতাদাত্মাত্র প্রাপত্তঃ নতু সবিশেষ ভগবদাণ্য স্বন্ধপোপলন্তকঃ তথা জগবান্ ভক্তানামপি ভগবং স্কর্প মাত্রেণ নতু মমতা বিশেষ ময় প্রেমবিশেষ প্রেদেন প্রাদি ক্রপেণ তথ প্রাপক ইত্যর্থা।
তথা দেবকীপুত্তঃ থ্রীদেবক্যা অপি জন্মনৈব পূত্রঃ নতু পিতরে নাম্বিদেতাং ইত্যাদিনা স্লাদ্বিষ্মাণ তাদৃশ ভাবময় লালনেনাপীতথা । স এম যাসাং গবাং মাতৃণাঞ্চালমতার্থং প্রবেহল তথা অলমতার্থনেবাপিব্দিতি পরক্ষারং ভত্তাবন্য গাড়েকাধিক্যেনচ সংক্ষা-

ক্রমসন্দর্ভ: i

এবং তস্যাঃ স্নান্যতঃ স্পাতিমুক্ত্ব পুনরাশ্চর্য্য বিশেষায় পরমং বিশেষতো দর্শয়তি যাত্বিত্যদ্ধেন। স্বর্দং ব্রহ্মা ভবো লোকপালাঃ স্বর্কাসং মেহতিকাজ্ঞিন ইতিবং পরম স্থামুভব স্থানং ॥

য এতং পূতনা মোক্ষমিতি। বক্ষ্যমাণ রীত্যাচ গ্রীগোক্লগৈয়ব প্রাপঞ্চিক লোকানভিব্যক্তং চিন্তামিণ প্রকর সন্মেত্যাদি বন্ধানিংছিতা বর্ণিতং প্রকাশবিশেষং গোকুল এব নিবসতীত্যাদি তবৈব প্রানিষ্কঃ। গ্রীগোলোকাথ্যং গ্রীকৃষ্ণলোক্ষের অন্তএব জননী-গতিং তত্রাপি জনন্যা অপি গ্রীযশোদারা ইব গতিং নিজলালনাদ্যধিকৃত ধাত্রীবর্গু প্রবেশমিত্যর্থঃ। • তহুক্কং। ত্বামেব দেবামিতেতি। লেভে গতিং ধাত্র্যচিতামিতি চ। নমু তদ্যা দৃষ্টাস্তত্বেন মাতৃণামিতি তথা গতিরভিপ্রেয়তে নেত্যাহ ক্ষেত্তি। তম্মাদেব গাবো মাতরশ্চ জননী গতিমবাগেতি কিমুবক্তব্যং। গাবন্তা ন্তদীয়া মাতরশ্চ মাত্র এবেত্যর্থঃ। তদ্যাং স্বর্গং বিশেবরিকৃং জননী গতিমিপি বিশিন্তি পরাংগীতি হাত্যাং। ইথং স্তাং ব্রশ্বস্থায়ভূত্যা ইত্যাদিবচার্মর্থঃ। যং কৈবল্যাদ্যখিলার্থনঃ কামিনাং ধর্মাদি মাত্রর্থনঃ

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী।

রকা স্তনাতরো বিশেত পূর্বত। ক্ষত্তুক স্তনকীরাঃ কিমু গাবো ইয়মাতর ইত্যুত্তরত্র চ ডতঃ সকাশাৎ ক্রনাত্গামপ্যান্যামপ্যাদিক্য প্রতিপাদনাৎ বৈরিজন কংসাদি সামেহিপি ষস্যাবেষভাবায়করণ কারণাদেবৈতাবৎ ক্রপাপাতী বভূব পূতনা তস্যাং শ্রীষশোদারা গতিং প্রাপ্তঃ বোগ্যতাং সা কথং ধ্তামিত্যত এব লেভে গতিং ধ্রাক্যচিতামিত্যন্ধবেনাকং। অতএবাত্রাপি জননী দক্ষেন ধাত্রোব ব্যাখ্যেতি কেচিং। উত্তাপি ধাত্রাচিতেতি শক্ষেম ধাত্রীসম্বন্ধিনী গতি ন' সভাতে। মহারাজাচিতা সম্পদ্বেস্ত্রকে মহারাজ তুল্যিব সম্পং প্রতীয়তে ন তু মহারাজসম্বন্ধিনীতি। তত্বাং স্বব্রেষ্ট্রের গোলোকে ধাত্রী নার্দ্যং পূত্রন প্রাপ্তি সিদ্ধান্তঃ।

নহ কিমু গাবো হছমাতর ইতি কৈমুভোন মাতুণামণি বৈহুও প্রাপ্তিরের বদাভিপ্রেরতে তহি বৈরভাব বাংসলা ভাবরোজনাথা-পতিঃ বাচ ভগবতাবিবেচকর লক্ষণ দোরমের সমর্পরেৎ যদি চ বাতুধান্যপি সা বৈহুওনবাপ কিমুভাররকাঃ পরম বংললাঃ মাতরো গাবদ্য কিম ভাবতা হপুত্রমং কলং লভতে শ্রেতাভিপ্রেরতে তহি তদেবাভিবাল্যতাং কিম্বান্তাপেকারামার পরাংগীতি। অন্যভাঃ কৈবল্যাদ্যথিল ফলপ্রদাহিপি যাসাং পরাংলি অলং অভিশব্নে ছল'ভ বুলা অপিবং। অন্যাসূতং পীত্মতীব তে মুদেতি ব্রেরাক্তেশ। তেন তাভাঃ কিমরং বাহিতং দাসাতি প্রভাত তা এবাবে বাহিতং দনতীতি স্বাহিত্স্রন্বোগ্যতা লক্ষণ কলং পোমোনীতাঃ ক্রমো করিয়া ভগবান্ স্বাহং ভানপান করিবেন্ন, সেই রাক্ষ্যীও বর্থন জননীরগতি লাভ করিলেন প্রেমেন্ত্র বাহাকরিয়া ভগবান্ দেবকীনক্রন যে সকল গো ও গোমনীর ভানস্থা পান করিবেন্ন প্রেমেন্ত্র বাহাদের ছব অভ্যক্ত প্রসূত্ত হাইলে, ভাহারাঃ মাতুনদ্রল হাইয়া ক্রেনাক্তি লাভ করিবেন প্রেমেন্ত্র বাহা-

তাসামবিরতং ক্ষে ক্র্বিতীনাং স্থতেক্ষণং। ন পুনঃ কল্পতে রাজন্ সংসারোহজ্ঞানসম্ভবঃ। কটধ্মস্য সৌরভামবস্রায় ব্রজৌকসঃ। কিমিদং কুত এবেতি বদক্তো ব্রজমাযযুঃ। তে তত্ত্ব বর্ণিতং গোপৈঃ পৃতনাগমনাদিকং। শ্রুছা তৃনিধনং স্বস্তি শিশোশ্চাসন্ স্থবিস্মিতাঃ।

#### देवक वरकावनी।

ন্তম্বং দর্শিতং। এতজ ইথং স্তাং ব্রহ্ম স্থামুভ্তা ইত্যাদিবজ্জেরং। অতস্তাসাং অজ্ঞান সম্ভবং সংসারং সংসারিষ্ণ ন পুন নিত্
কলতে ঘটতে জ্ঞানাগ্রপর্গপরি সমাজ্যাং। সংসারিকের মুক্তানামণি সিদ্ধানামিত্যাদি ন্যারেন শুদ্ধ ভক্তস্যাপ্যেক্সা প্রম গুদ্ধ ভছাত্তবিধানামসম্ভব ইতি তদেব ব্যক্ষরতি অবিরত্তং নিতামেব শ্রীক্তকে স্থতেকণং স্থতভাবং কুর্বাতীনামেব সতীনাং যত্র শ্রিক্ষ স্তর্জ্ব নিত্যমেবৈতাদৃশীনামেবেতার্থং হে রাজন্ধ ভগবত্তবজ্ঞানে বিরাজমানেতি সিদ্ধান্তে স্থাবধানং করোতি অতঃ স্বর্গস্য জননীগতিমিতি, বিশেষবেশাপ্রাপঞ্চিক্ষমেব স্থত্তরামিতি চাগতং। কটঃ শ্রশানমিতি ক্ষীরস্থানী। ব্রজোকসং যে তদ্ জাস্তাং পূর্বামন্ত্র গতান্তে তথা॥ তে পূর্ব্বাক্তাঃ শ্রীনন্দাদয়শ্চ সংপ্রত্যাগতাঃ গোপৈঃ শ্রীগোকুল রক্ষানিগ্র্তাদিতিঃ তত্র ব্রজ্ঞে পূত্রনা গ্রমাদিকং বিশেষতঃ শ্রন্থ স্থাদি শব্দাং স্তনদান মহার্তনাদাদি। শিশোশ্চ স্বস্তি শ্রম্বেতি তেন স্থবিস্বয়েন বাৎস্ব্যা পোষ্ণং ধ্বনিত্তং॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ

নতু শক্ষণমাত্র বাঞ্চকঃ। মুমুক্শাঞ্চ কৈবল্যদো নির্কিশেষ ব্রহ্মাথ্য শ্বন্ধসভাদাত্মামত প্রাপকঃ নতু সবিশেষ ভগ্রদাথ্য শ্বন্ধপোপলস্ককঃ। তথা ভগবান্ ভকানামিলি ভগবংশ্বন্ধপমাত্রেণ নতু মমভাবিশেষ মন্ত্র প্রেমবিশেষ প্রদেন পুরাদি কলেণ তংপ্রাণক ইত্যর্থঃ।
তথা দেবকীপুরুঃ শ্রীদেবক্যা অপি জন্মনৈব পুরুঃ নতু তাদৃশ ভাবমন্ত্রেন লালনেনাপীত্যর্থঃ। স এব যাসাং গবাং মাতৃণাঞ্চ অলমত্যর্থঃ
প্রন্ত্রেক পুতঃ অলমত্যর্থমেবাগিবং ইতি পরস্পারং তদ্ভাবাসক্রিদ শিতাঃ। তথাঃ সর্কোত্তমতা চ। অতস্তাসামজ্ঞানসম্ভবঃ শংসারঃ
সংসারিত্বং ন পুন ন তু কল্পতে ফুলাতে জ্ঞানাত্রপর্যুপিরি স্মাক্ষ্রত্বাং। গংসারিকের মুক্তানামিল সিদ্ধানামিত্যাদি ভারেন গুদ্ধভল্বসান্প্রেক্স প্রক্র ভিন্ন ভিন্ন প্রক্রিক্স গ্রম ছল্লভিন্নং তদ্বিধামপাসন্তবাক্ত কিম্ত ভাসাং। তলেব ব্যঞ্জরতি অবিরতঃ নিত্যমেব শ্রীকৃষ্ণে স্বভানিং বিজ্ঞানিত্যিং। কটেতি। ব্রেক্সক্রানং ব্রু প্রান্ধনেত্যান্ধ প্রক্রিনাং যব্র শ্রীকৃষ্ণ স্ত্র নিত্যমেব ভাদৃশীনামেবেত্যর্থঃ। কটেতি। ব্রেক্সক্রান তদ্ প্রক্রানেত্রিণ ব্রক্সানিত্যাং তে

### **बी** विश्वनाथहळा वर्जी।

দ্দাবিভার্থ আয়াতঃ তত্ত্বন্ধ হিতে গোলক হিতেক সকাশাত্তত্ত্বনৈব স্থিতি স্তাসাং সর্বোংকটোতি সিদ্ধান্তো হবঁগতঃ। দেবক্যাঃ
প্রোহিণি তাসাং প্রাংস্যলমণিবং নতু তস্যা ইতি ততােহিণি তাসামুংকর্বে। ধ্বনিতঃ। নচ. তাসাং সংসার ধ্বংস লক্ষণং ফলমের
দাতব্যমন্ত্রীতি বাচাং। সংসাবো হি দেহ গেছ পাতি প্রাদ্যাসক্তিরূপ স্থত্ত্বাসাং দেহসমন্ধি স্থন্যামূতং কৃষ্ণঃ পিবতি। গেছে কৃষ্ণঃ
বেলতি। পতিঃ কৃষ্ণস্ত পিতা। পুত্রঃ স্বরং কৃষ্ণ এবেতি তদাদ্যাসক্তেঃ সংসারন্থং ন ঘটত ইত্যাহ তাসামিতি। স্তেক্ষণং স্বতভাবং।
নতু ক্রতে ন ঘটতে। অজ্ঞানসন্তব ইতি জ্ঞানিনাং ব্যবাহ্বন্ধ এব তাবং সংসারিদ্বাভাব প্রতিপাদকঃ। ক্র্যান্ত্রনাদিণি শাস্ত্রভক্তানাং ব্যক্তরা ভগবনমুভবঃ শ্রেষ্ঠঃ। ডাডোহণি দাক্তাববটা ভগবতঃ প্রভূবেনামূভবং প্রেষ্ঠ ইতি সংসারাভাবেহণি কৈমুত্যং
ভক্তিরসামূত্রিকারবগন্তব্যং ॥

প্রাণ কিলা প্রতিষ্ঠান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান করি শালানমিতি শীরবামী। কুড কিমিনমিতি কিমেতাবান ওক্ষুণ ধ্য ইক্রপুরানিংস্ততা ভূতকমণি ডিকা স্থান্ত প্রবেষ্ট্র মুৎসহতে। কিলা বিশেষতো নিংস্ত্যানরাব্ভীমধিরোহতি কিম্দীচ্যাং কুবের প্রাৎ কিলা প্রতীচ্যাক্রশাল্যানির চাকর বৃহধা সন্ধিহানা ইত্যর্থঃ॥

ফলতঃ তাহারা ভগবান শ্রীকৃষ্ণে অবিরত পুত্র দৃষ্টি করিত, স্তরাং তাহাদের অস্ত্রীন সমূত সংসার ক্রিড হইতে পারে না। সে যাহা হউক, যে সকল অজবাসিয়ান্ত দুরে গিয়াছিলেন চিতাধুমের সোরভ আত্রাণ করিরা, ইহা কি, কোথা হইতে হইল ? পরস্পার কলিতে বলিতে তাঁহারা অভে আগমন করিলেন এবং গোপদিশের প্রমুখান প্তনার আগমন তথা নিধন বৃত্তান্ত শুনিয়া এবং শিশুর

নন্দঃ অপুজ্রমাদায় প্রোধ্যাগত উদারধীঃ। মূর্দ্ধ্রয়ায় পরমাং মূদং লেভে কুরুদ্ধ ॥ ২৭ ॥

য এতং পৃত্রামোক্ষং কৃষ্ণস্যার্ভকমন্তৃতং। শৃণুয়াৎ শ্রদ্ধা মর্ত্ত্যো গোবিন্দে লভতে রতিং ॥২৮॥
॥ ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে পৃত্রামোক্ষঃ

যঠোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

### श्रीधतकामी।

এতদার্ভকমর্ভক চরিতং কিং তৎ পূত্নামোকং। অত্তুং দৈত্যকুলানীশং পূত্নায়াং শিক্তছলাৎ। ,শুন্যাপোশানতঃ প্রাটণঃ প্রাণাহতিমক্লয়ৎ॥ ২৮॥ ॥ ॥ ॥ ইতি দশ্নে যঠঃ ॥ ॥ ।

### বৈষ্ণবতোষণী।

তেম্বপি শ্রীনন্দক্ষ বৈশিষ্ট্যমাহ নন্দ ইতি সংভ্রমে গতে সতি পরমাং মুদং লেভে তত্র হেতৃবং নাম্রৈব তাবতা শ্রীনন্দ স্বত্রাপুদারধীঃ দ্যাদি গুণ গণার্থব মানসং অত্রাপি স্পুত্র মানায়াকৈ কুড়া তত্রাপি প্রোধাগত ত্রাপি মুদ্ধ্যব্রায়েতি। কিন্তু প্রোধাগত ইতি হন্ত মংপ্রবাসাদেতাবাননর্থো জাত ইতি পশ্চান্তাপবানপীতি গমাতে। কুরুষ্থেতি পূর্ক্বিং এতদারভাচ শ্রীক্ষ্ণস্যাধােকজেত্যাথ্যা ব্রজ্ঞান কুড়া। যথা হরিবংশে বাস্থানেব মাহার্যো। অধােহনেন শ্রানেন শক্টান্তর চারিণা। রাক্ষণী নিহতা রৌজা শকুনীবেশ-ধারিণী। পূত্রনা নাম বেরা সামহাকারা মহাবলা। বিষদিয়ং স্তনং কুজা প্রয়েছগী জনার্দ্ধনে। দদ্ভ নিহতাং তত্র রাক্ষণীং বনগোচরাং। পূন্র্জাতো হয়মিত্যাহ্রুক্ত স্বাদধােকজ ইতি॥ ২৭॥

অহো পূতনায়া: সাক্ষান্তৎ সম্বন্ধানি। তাদৃশ্যাং গভৌ কিমাশ্চর্যাং তছার্তা প্রবণনাপি সর্ব্বোহপি তন্মিন্ ইতিমপি লভতে ইত্যাহ য ইতি। যো মর্ব্যো মর্বধর্মা বং কশ্চিদেতৎ শ্রীক্ষম্পান্ত্তার্ভক চরিতং শৃণ্যাৎ স গোবিদ্দে গোকুলেন্দ্র-ভগবতি রতিং লভতে ইত্যথাম্প্রান্ধানমণ্যনপেক্য নামাদিব্রুত্ত শক্তিরেব থ্যাপিতা তথাপার্থ্যাম্প্রানে সতি কারণা বিশেষালোচনাৎ ফল্স্য শৈল্য বৈশিষ্ট্যে গম্যেতে। কীদৃশং পূত্নায়া অপি মোক্ষঃ সংসারাজ্বভূ ফলাস্তরাচ্চ নির্গমো যেন তৎ অত্তবাস্কৃতং অর্ভকভাবাপরিত্যাগেছপি তাদৃশ মারণ মোক্ষণাদিনা বিশ্বস্থ কৌতুকাবহং। নিশ্মা ইতি পাঠে যন্তান্ত্রিশ্রম্যা ভবতি স শ্রম্যা সহ রতিং লভতে। পাঠ্ময়ং তেবামস্থাত। অবদ্যায়া: ক্ষাদেব লভ্যোহহ্মিতি তন্ময়ীং। প্রাগহন্ পূত্নাং ক্ষো রাঘবস্তাভ্রেদ্ধানিব। কিঞ্চ। আরম্ভাদেব লীলায়া বকীধাতুগতিপ্রদাং। কৃষ্ণং স্বত্তনাধ্রেয় তৃষ্ণয়ামাস বৈক্ষবান্। ২৮॥

्॥ \*॥ ইতি ঐীবৈষ্ণবতেবাৰণ্যাং দশম টিপ্লণ্যাং বঠঃ ॥ \*॥

#### ক্রমসন্ধর্ভ:।

সম্প্রত্যাগতা: পুরুষমাগতাক বিশেষত: শ্রন্থা। ২৭।।

য ইতি পূত্রনারাঃ মোকঃ সংসারাং। আসাংসারিকান্তন্মূল ফলান্তরাচ্চ নির্গনো বত্র তৎ ন কেবলমার্ত্রকান্ত অবংশন তদ্বস্থ এব তামিন্ অপি তু অর্ভক পৌগণ্ড কৈশোরাম্মকে সর্কাব্যন্থেছিপি গ্লোবিন্দে গোকুলাধিষ্ঠাতরি তামিরিত্যর্থঃ॥ ২৮॥

॥ \*॥ ইতি জীদশমক্রমসন্দর্ভে ষষ্ঠোহধ্যায়: 🖣 \*॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী। •

অবিশ্বিত। ইতি ইন্যো বস্থদেবঃ সত্যুদ্ধ ঈদ্ভামপি বিপত্তো শিশোঃ বন্তি নারায়ণং বিনা কঃ কুর্য্যাদিত্যুক্তবন্তঃ॥

প্রোষ্যাগত ইতি। হস্ত মংপ্রবাসান্দেবৈতাবাননর্থো জাত ইতি কিঁমহং মধুরামগচ্ছমিতি পশ্চান্তাপ:। উদারধীরিতি হস্ত নির্-জয়ে ঘারপাণা অপি কেহপি তাং পুরঃ প্রবেষ্ট্রং ন ন্যাধিদ্ধান্ধিতি সর্পেবাং ধিয়ো নিনিন্দ ॥ ২৭ ॥

যত্র তৎ আর্ডকং অর্ভকচরিতং পূত্রনায়া অণি মোকো মত্র তৎ অঞ্জবাস্কৃতং পূণুরাৎ স রক্তিং লভতে। নিশম্যেতি পাঠে তুব্যেৎ তিঠেদিতি বাধ্যাহার্থ্যং। यह। মঃ প্রদ্ধা নিশম্য ব্লতিং লভতে স গোবিদ্দে গোবিদ্দবিষদ্ধক রতিমান্ ভবেদিতার্থ: ॥ ২৮ ॥

॥ • ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হরিণাাং ভক্ততেত্বাং । বর্ষোহধ্যায়ো হত্ত দশ্মে সভতঃ সভাং ॥ • ॥

কুশল সম্বাদ পাইয়া বিশ্বিত হইলেন, পর্ব্ধ উদারবৃদ্ধি নন্দ প্রবাস হইতে আসিয়া স্থীয় তনয়কে গ্রহণ পূর্ব্বক মন্তক, আত্রাণ করত পরম হর্ব প্রাপ্ত হুইলেন॥ ২৭॥

হে রাজন ! প্রিক্ষের অন্ত বাল চরিত এই পৃতনামোক বিবরণ যে মমুষ্য প্রকাশহকারে প্রবণ করিবেন তাঁহার গোবিলে রতি লাভ হইবে॥ ২৮॥

॥ 🗱 ॥ टें डि मम्मरम यर्छ व्यशांत्र ॥ 🗱 ॥

শ্রীবিষ্ণুরাত উবাচ॥

যেন যেনাবতারেণ ভগবান্ হরিরীশরঃ। করোতি কর্ণরম্যাণি মনোজ্ঞানিচ নঃ প্রভা ॥ ১॥

যচ্হ ণ্তোহপৈত্যরতি বিত্যা সত্ত্ব শুধাত্যচিরেণ পুংসঃ।

### विश्ववामी।

উংক্লিপন্ শক্টং ব্যোমি তুশাবর্ত্তমধংক্লিপন্। দশরন্ বিশ্বমাস্যেত ক্লফং ক্রীড়তি সপ্তমে ॥ • ॥

রুফার্ডক স্থাসিদ্ সংগ্রবানকনির্ক্ষণ। ভূব ভাদের সংপ্রাষ্ট্রং রাজান্যদভিনকতি। যেন যেনেতি। যেন যেন মৎস্যাদ্যবতারেগাপি মনি যানি কথানি করোতি তানি নং কর্ণপ্রধারহানি মনঃ প্রতিক্রানিচ ভবস্তোব ॥ ১॥

' কথানি যং শৃণ্ডঃ প্ংমা প্ৰমাত্ৰপ্য অৱতিৰ্মনোল্লানিঃ ভক্ম <mark>লুক্ত। ৰিবিধা তৃষ্ণাচ অপগচ্ছতি। তথা সৰ ভদ্ধি হরিভকি হ</mark>বি-

### देवभवर जावनी ।

বেনেতি যুগ্মকং। তবচ গোবিকো প্রতের রাতং উত্যুক্তা প্রবণ কীর্তনাদাশেষ সাধনানাং পরম ফল রূপায়াঃ প্রীতগবদ্রতেঃ সিদিং বাল্চাব তারভাগের প্রয়া অত্যাবিক ক্রিন্ত ক্রিন্ত বিদ্যাবিক ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রেন্ট্রিক ক্রিক ক্রেন্ট্রিক ক্রেন্ট্রেক ক্রেন্ট্রিক ক্রেন্ট্রেক ক্রেন্ট্রেক ক্রেন্ট্রেক ক্রেন্ট্রেক ক্রেন্ট্রেক ক্রেন্ট্রেক ক্রেন্ট্রেক ক্রিন্ট্রেক ক্রেন্ট্রেক ক্রেন্ট্রেক ক্রেন্ট্রেক ক্রিক ক্রেন্ট্রেক ক্রেন্ট্রেক ক্রিক ক্রেন্ট্রেক ক্রিক ক্রেন্ট্রেক ক্রিক ক্রিক ক্রেন্ট্র

পিপুঞ্জিতমতি যজ্পত ইতি। স্বৃতিঃ প্রবৃত্তি প্রবৃত্তি প্রবৃত্তি প্রবৃত্তি প্রতৃত্তি সত্যাং বিবিধা তৃষ্ণা সৃত্তং ওদাতি প্রবৃত্তি প্রবৃত্তি বিশ্বনা করে। করে বিশ্বনা করে বিশ্বনা করে বিশ্বনা করে বিশ্বনা করে। করে বিশ্বনা করে বি

#### ক্রমসন্দর্ভঃ j

বান্যলীলারস্থত এব বতি ফলং প্রেয়া স্বস্যাপি তছন্দীপনমগ্রভ্য জাত পরমানন স্তদেব ভূম: পৃচ্ছতি বেনেতি জিভি: ॥ ১ ॥ বলেভানেন যদাপি তথাপি যতদনাৰপীতি শৃত্যালয়া জয়াগাং কিঞ্ছিদ্যাহারেগায়র: । কর্ণেতি পদন্তমং শব্দার্থয়োঃ পৃথন্তাধুর্য্যাহ্ন-

### वीविधनाथहकवडी।

সাতঃ মুংগ্রাখিতঃ ক্ষাং গপ্তমে ২ন উদ্দিশেও। তৃণাবর্ত মহয়াস্যে বিশং মাতর মৈক্ষেও। রদছেদ বঝং বাাধ্যং পূতনা অনুচ্ববে।
শক্টে ইন্দিব্বং পাণোতৃণাবন্তবদে বলং। বিশ্বকুপদ্ব তাবদৈশ্বয়ং নিজ মাতরি। এবমাদি মনৈশ্বয় বৃথাং বাল্যে প্রদর্শিতং।
ফাংলা ভগবদবতারাজ্বলীলামাক্রণাপাক্ষমনোহরতেইপি জীক্ষ বাল্যলীলা মামতি লোভ্যত্যতন্তামেব ক্রইট্যাশিরেনাই ধেন খেন
মংস্যাদ্যবতারেণাপি যানি ২ ক্ষাণি করোতি হান্যপি নঃ কর্ণাজ্যাং রহ্যান্যায়াদ্যানি মনোজ্যানি মনোপ্যানক্ষিত্বং জানস্ত্যেব কিছ ডেগ্রাপ মধ্যে যথ শৃণ্তঃ প্রংসঃ প্রমাক্রণাপি অরতিঃ প্রবন্ধানি ক্রেবির্কিন্তি নগুতি অনুধ্ দিবং ভারতি হ্র্যাপান নির্ব্যা ভক্তির্যাদ্যাদ বিষ্কা তাল তৃষ্ণাভাবং অগৈতি ক্ষ্যুৎপত্তা আকাজ্যা জায়তে ইত্যর্থঃ। ততক্ত সন্ধং চিত্তং ভদ্যতি হ্র্যাসনা নির্ব্যা ভক্তির্যাদ্য সন্বর্থ ভ্রতি। যথা গৈতিকরোগ নির্ব্যা রসনা সিতানাধুগ্রগ্রহণাসমর্থা হ্রাৎ আসক্য প্রস্তান্ত জায়তে ইত্যর্থঃ। অচিরেনেতি

সপ্তমাধ্যারে গগণে শকটোৎক্ষেপণ, তৃণাবর্ত্তকে অধ্যক্ষেপণ এবং মুগ মধ্যে বিশ্বপ্রদর্শনপূর্বক শ্রীকৃষ্ণ ক্রীড়া করেন॥ ০॥

রাজা পরীক্ষিৎ শ্রীকৃষ্ণের বাল্যালীলা রূপ অমৃতসমুদ্দে নিমগ্ন হইয়া উল্লাস্বশতঃ সবিনয় বচনে শুক্দেবকৈ জিজাসা করিলেন প্রভো! ভগবান্ ঈশ্বর হরি মৎস্যাদি যে ২ অবতার গ্রহণ করিয়া যে ২ কর্ম করেন যদিও সে সকলই আমাদিগের কর্ণের শ্রখাবহ এবং মনঃ প্রীতিক্র হইয়া থাকে॥ ১॥

তথাপি যাহা প্রবণ করিলে পুরুষ মাত্রের মনোগ্লানি, তথা তাহার ঘূলীভূত বিবিধ তৃষ্ণা অপগত হয়, আর অচিরে সত্ত ভিদ্ধি, হরিভক্তি এবং হরিদাস পুরুষের সহিত সধ্য হয়, যদি অমুগ্রহ করেন, ভক্তি হ'রে তৎপুরুষে চ স্থাং তদেব হারং বদ মন্যদে চেৎ ॥ ২ ॥
অথান্যদপি কৃষ্ণ্য তোকাচরিত্মতুতং। মামুষ্ণ লোকমাসাদ্য তজ্জাতিমমুক্তমতঃ॥ ৩ ॥
বাদরায়ণি রুবাচ ॥
কদাচিদেশিখানিক কৌতুকাপ্লবে জন্মর্ক্ষোগে সমবেত্যোষিতাং।

### ञीधत्रवामी।

मात्र त्रेशानिक ভेवछि তদেব हातः हत्त्व-विद्यन्तः सत्नाहतः वा वम **अध्यक्षः** यमि कटतासि ॥ २ ॥

অত্যোৎস্থক্যেন পুনর্বিশিনষ্টি অথেতি অমুক্তমতঃ অমুকুর্মতঃ॥ ৩॥

উত্থানং শিশোরক পরিবর্ত্তনং তত্র করণীয়ে কৌতুকাপ্লবে উৎসবাভিষেকে তথা তত্মিদ্লেব দিনে জন্মর্কস্যাপি গোণে অতি মধোই-

#### देवस्थवरञावनी।

ভূপেগমানেব স্যাদিত্যাহ যদি অং মন্যদে তদা বদ। পরম বিনয়োক্তিরিয়ং। যদা পুনরধুনাপি গুপ্তং নকরোধীত্যর্থ:। স্বিন্য নর্মোক্তিরিয়ং॥ २॥

কীদৃশং তত্ত্ব চিত্তত্বং হরিং তত্ত্রাহ অথেতি। অথানস্তর্নের নতুপোদ্বাতাদিনাপি ব্যবধানেন শ্রীক্ষণ দীলামাধুরীভিশ্চিত্তাকর্ষ-ক্ষয় তেলেকাচরিত্বের বদেতি পুর্বেশৈবাধয়:। তদেবং স্থাচন্ত্রে হেতুমাহ অদুতং রূপ গুণ কিলাস লীলা চাতুরীভিঃ কচিত্তদহুগত ছ্রুইেশ্ব্যমিলনেনচ ধিম্মাবহং তচ্চামানস্ব্যানের রূপ্যিতুং প্রকটিতমিত্যাহ মান্ত্রং লোকমাসাদ্য মর্ত্ত্যলোকেহবতীর্ঘ্য তজ্জাতি-মণি ম্বলীলয়াম্মাৎ কুর্বতঃ স্বাভেদেন ব্যবহরত ইত্যর্থঃ ॥ ৩॥

শ্রীতকদেবেছিপি তছক্তমেবাছ্যোদমান: ক্রমপ্রাপ্তাং বালালীলামেব কথন্তি কদাচিদিত্যাদিনা। কদাচিন্মাসত্ত্র এব বয়ঃ প্রাকট্য সময়ে। ত্রৈমাসিকস্যচ পদা শকটো ২পরত্ত ইতি দ্বিতীয়োক্তেঃ তত্ত্বৈব জন্মর্ক্যোগ ইতি নাক্ষত্র মাসেহিতিপ্রতঃ তত্ত্বিবচ দৈবা-দৌথানিকং যং কৌতুকং বৃত্তং তদ্যাপ্লবে ব্যক্তৌ সত্যাং। ঔথানিকং বহির্নিক্রমণমিতি কেচিৎ। ততু চিন্ত্যং। চতুর্থে মাসি নিক্রম

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

ভবেন। হারং হারবৎ স্পৃথয়া হৃদিধার্য্যং চেল্মন্যদে পূর্ব্বিৎ তৃপ্তাং ন করোষীত্যর্থঃ। তত্তাদৃশ মন্যদিশি তোকাচরিতমের বদেতাদ্বয়ঃ॥२॥০ অভিষেচনং কুশাগ্রেণেতি জ্ঞেয়া। চকারং কারয়ামাস ॥ ৪ ॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

সর্পত্র যোজ্যং। ততশ্চ ভক্তিং প্রেমা স্থাৎ তংপুক্ষে বৈষ্ণবে সধামিতি ষদ্যপি জক্ত্যারম্ভত এব বৈষ্ণবে সধ্যং বিহিতং তদপি প্রেমি সত্যেব বৈষ্ণবমাত্রে নির্প্তাদি প্রেমান্ত বন্ধ প্রাপণে সামর্থ্যমন্ত্যেব তদপি শ্রীক্ষণবাল্যাদি চরিত্মচিরেণৈব তত্তৎ প্রাপয়তীত্যজৈবোক্তং। মন্ত্রদে চেদিতি। যদি তবৈতৎ সন্মতং আধানিতি ভাবং॥১॥২॥

অত্যোৎস্কানে তদেব পুন: স্পষ্টরতি। অথেতি। তজ্জাতিং মাস্থবস্থাতিং অনুকন্ধত ইতি মাস্থবস্থাত্যস্থানেধনৈব ভূর্বোকে প্রাকটাং নমু দেবাদি জাতামুরোধেন দেবাদি লোক ইতি দেবাদিভ্যোহণি মাসুবাগাং সৌভাগাং দ্যোতিতং॥ ৩॥

কদাচিন্মাসত্রর ব্যাসি সতি তৈনাদিক্ত চ পদা শকটোংপবৃত্ত ইতি দিতীয়োক্তে:। মাজত চরণাবৃদ্গিত্যত তু রাসাত্রয়: পরি-চ্ছেদকা ষস্ত ইতি ব্যাখ্যেয়:। উত্থানমূতানশারিন: শিশোন্তির্যাক্ শমনসামর্থ্যোক্ষম:। তত্ত্ব কোতুকাপ্লবে তদ্দু हুং বন্ধবাসিনীনাং

### তবে সেই মনোহর চরিত্র বলিতে আজ্ঞা হুউক । ২।।

হে ত্রহ্মন্ ! ভগবান্ এক্টি মনুষ্য লোকে স্বব্জীর্ণ হইয়া মানব জাতির ক্ষমুকরণ করিয়াছিলেন, শুনিতে পাই, তাঁহার অন্যান্য বাল্যচরিত অভিশয় অন্তুত, অনুগ্রহ করিয়া তাহাও বর্ণন কর্মন ॥ ৩॥

শুকদেব কহিলেন রাজন্! একদা অর্ধাৎ মাসত্তয় স্বতীত হইলে বালকের অস পরিবর্তনে যে উৎসবাভিষেক করিতে হয়, সেই উৎসবাভিষেক তথা সেই দিবসেই জন্মনক্ষত্তের যোগ নিমিত্ত নিশালয়ে অতিশয় মহোৎসব হইল, তাহাতে যাবতীয় পুরস্ক্রী (পতি পুল্লবতী ক্রী) একস্থানে মিলিত বাদিত্রগীতৰিজমন্ত্র বাচনৈ শ্চকার সূনো রভিষেচনং সতী ॥ ৪॥
নন্দস্ত পত্নী কৃতমজ্জনাদিকং বিপ্রৈঃ কৃতস্বস্তায়নং স্থপ্তিতৈঃ।
অন্নাদ্যবাসঃ অগভীষ্টধেনুভিঃ সংজাতনিদ্রাক্ষ মশীশয়চ্ছনৈঃ॥ ৫॥
উত্থানিকোৎস্ক্রমনা মনস্বিনী সমাগতান্ পূজ্য়তী ত্রজোকসঃ।

### श्रीधतवामी।

সবে সমবেত ঘোষিতাং মিনিত পুৰন্ধীণাং মধো<sup>®</sup>বাদিত্ৰাদিভিঃ **শোভিত্যভি**ষ্টেম্বাদা চকার ॥ ৪ ॥ অন্নাদিভিঃ স্বপুজ্নিত বিতৈথঃ কৃত মঙ্গলং সংজাত নিজে অকিণী যুস্য তং অশীশ্রৎ শাস্তিবতী শকট্য্যাধ্তাং প্রেছে॥ ৫ ॥

#### বৈষ্ণবতোষণা।

ইতি ফুত্যে: ত aচ সাবনমাস গ্রহণাং। হুনোরিতি তদেক পুস্রায়ান্তস্যাঃ ক্ষেষ্ডরেণ তল্পহোংসবে পরমাং শক্তিং বোধয়তি। সভী সর্ক কুমুধু এবোভ্যা ইত্যুর্থঃ। স্ত্রীপ্রধান কুমুদ্ধান্স্যা এব কর্ড্ড মুক্তং নতু প্রায়ং শ্রীনন্দ্স্য ॥ ৪॥

নলদ্য পত্নীতি তথলোদার্যাং তত্র তদ্যাত্মতি: সাহচ্যাঞ্জ স্চিতং। ক্রতং ত্যা গোপীভিশ্চ মজ্জনাদিকং যদ্য দ তং। আদিশক্ষা-দেশারোচনা তিলকবেশাদি পূর্ব্বোক্তোহভিষেকো হপ্যক্রান্তভাব্যতে। স্বস্তায়নং স্বন্ধিবাচনাদি মঙ্গল কর্ম অরাদ্যং আরুং তত্ত্পকরণঞ। আদ্যমিতি কৈচিং। অকু র্ব্বাদিমালাহভীটং আয়নো বিপ্রাণাং বা যদ্য যং প্রিয়ং স্তব্যং ধেছু বিশেষণং বা শনৈবিতি স্কুনারতয়া নিজাভঙ্গ শক্ষ্যাচ॥ ৫॥ ।

অশ্রবণে হেতৃ: মনস্থিনী প্রমোদাব্চিন্তেতাত্যাগত পূজায়াং শ্রদ্ধা দক্ষতা সাবধানতাচোক্তা। অথোথানিকে প্রমোদাস ময় প্জোৎসব বিশেবে ঔংস্করণ কর্ম সাক্ষতার্থম্থকণ্ঠ। বৈষ্যাং যদ্য তথাভূতং মনোযদ্যাং তথা ভূতাচ সতী সমাগতান্ সর্বানেব ব্রুবাদিনো
জনান্ গন্ধনাল্যাত্রণাদিতিঃ পূজ্য়তীতি। অতো যেচ বক্ষ্যমাণা বালা স্তত্ত্ব আসংস্তে তয়া পুজ্পার্বে বক্ষিতাএব প্রায়শো ভবেমুরিতি
জ্বেবং এবকারেণ কিঞ্চিদ্পি শ্রবণং প্রত্যাথ্যাতং। বৈ নিশ্চয়ে। তেনচ সত্যমেতদিতি সশপণং তদেব দৃদীক্কতং। অন্যথা শেষকৃত্য পবিত্যাগেনাগ্যবশ্যমাগতা স্যাদিতি ভাবং সচ বোদনেনাপি মাতরম্প্রাপ্য স্তনার্থী সন্ ক্ষমের চরণাবৃদ্ধং মুহুকৎক্ষিপ্রবানিতি বাল্য-

#### ক্রেসমর্ভ:

অরাদ্যং অরং তত্পকরণঞ্।। ৫॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী।

কু হুংলপমুছ নিমজ্জান সতীতাৰ্থঃ। ভিশ্বিদেনে জন্মক ভাপি যোগে স্তি সমবেত যোষিতাং মিলিত পুৰশ্বীণাং মধ্যে বাণিআ-্ৰিভিঃ শোভিতং অভিষেচনং চকার ॥ ৪ ॥

অন্নানিভিরন্নানি দানেন স্বৰ্ছ প্লিতৈ বিশৈষ্ট কৃতনঙ্গলং। সংজাতনিজে অকিণী যন্ত তং বালং কৃষ্ণং শনৈরিতি নিজাভক শক্ষা ক্রোড়ে নিম্পান্ধং ধূছৈব স্বয়নপি শয়িব। স্বৰ্ণ প্রাকৃতিক্রেশস্থান্ত শক্টজাধস্থিতে পলাকে নিম্পান্ধ শায়মানাস। তত্ত নিজাপুর্ত্তিং জ্ঞাহৈব স্বয়মুত্ত্বাবিতি শনৈঃপদেনৈব দ্যোতিতং ক্রেয়ং॥ ৫॥

উত্থানিকে উৎসবে উৎস্কায়ক মনো যন্তা: সা মনস্থিনী ৰস্তাল্ধার মান্য গদ্ধ চন্দন তৈল সিন্দ্রালিকং দদানা এক্ষোকসো হইলে সর্বাকশ্য-কুশ্লা যশোদা তাহাদের মধ্যে বসিয়া গীত বাদ্য এবং ব্রাহ্মণ দারা মন্ত্রবাচন করত মঙ্গল করিয়া শিশুর অভিষেক করিলেন ॥ ৪॥

তদনস্তর অন্নাদি সমস্ত ভোজন সামগ্রী তথা বসন, মাল্য, অভীপ্সিত ধেমু ইত্যাদি দিরা ত্রাক্ষণ দিগের পূজা করিলেন, তাছাতে সেই সকল বিপ্র তনম্বের মঙ্গল বিধান করিয়া দিলে তিনি কৃতস্মান দেই শিশুর দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া দেখিলেন তাছার নেত্রম্বর নিমীলিত হইতেছে, অতএব শ্বীরে ২ হস্ত ম্বারা তুলিয়া লইয়া গিয়া গৃহের গধ্যে একটা শকটের নীচে প্রেম্থো (ঝোলনায়) শোয়াইয়া আদিলেন ॥ ৫॥

ভাহার পর যে দকল এজপ্রী আদিয়াছিল, উৎদবমতা হঁইয়া তাহাদিগের পূজা করিতে ব্যস্ত হই-

紹

নৈবাশৃণোধৈক্রদিতং স্তৃত্যা সা রুদন্ স্তনার্থী চরণাবুদক্ষিপৎ॥ ৬॥ অধঃশ্যানস্য শিশোরনম্লক প্রবালমূদ্ভিরু হতং ব্যবর্ত্ত।

### क्षित्रश्रामी।

**उनिक्**षिर **उदिः ठानिउवान्**॥ ५॥

ভদধঃ শ্যানসা শিশোরমকশ্চাসো প্রবাশবরা হশ্চ যোহজিবু তেন হতং শকটং ব্যবর্ত্ত বিপরীতমপ্তং কথ। বিশ্বস্তানি নানা

### रिकथराखावनी।

গীলা সেষ্ঠিবমুক্তং। শক্টান্থর ভঞ্জন ইতি ব্রহ্মাণ্ড পুরাণোক্তান্থলারেণ শক্টারিষ্ঠিস্য দৈত্যস্য বধার্থমিতি সভাতে। তচ্চান্থ্যস্থিক-নেব ওবতু প্রিভগবতারিতস্য অভাবত এব দর্ম সমাধান শক্তিময়তাং রোদনঞ্চ মাতৃঃ অন্যপানার্থং জনার্থীত্যুক্তেঃ। অস্য ভন্মনতঃ ভাবস্য মুনীক্রেণানুত্মরণাল্যথার্থমেব বচনং। তচ্চ ক্তমাংসল্য বশ্যতাময় বাল্যনীলাবেশেন ভ্রেয়ং। ভৃক্তাধ ব্যাহ্বং গোক্বলীলা কৈবলাচ্চেতি সিদ্ধান্তঃ॥ ৮॥

অধো গৃহাছি মহাশকট্যাগভাদ্ধা প্রান্ধিকায়াং শশান্স। অন্ধকেনাত্যন্ন প্রমাণেন এবালভাহিপি মৃহনাচ অক্সিট্রেকন ১ তং হননম্দ্রা স্পৃষ্ট মাত্রনিভাগে। বহা হত্তে গতার্থন্থাং গতং প্রাপ্তমিত্যন্ধ:। ভজাক্রাবিষ্টরাং শকটভোচন্ডাপি ভূমিপ্রবিশিক্ষকাং নিক্ট প্রাপ্তমেন ভগবদিগ্রহণ্য বিভ্রুতা স্বভাবেন বা সন্থাবাং অহনে ব্যুর্থানেন তদাবিষ্ট ইভান্তর্ধানেইন বিলয়ং প্রাপিত ইতি জেবং। এবং বাল্য লীলায়ামের ভদবাভিচারেণ নিক্তৈম্ব্য বিশেষবির্ভাবাং শ্রিক্ষণ্য সর্বাচো বিশিষ্টো নহিন্দা দিলিছা। বতং স্বাং বিশ্বনাপ্ত শ্রিকাদিংলাবেতারেণচাইর্বাভাদিকং বিগ্রহানাট্রেণ পরিক্রন বিশেষবৈধ শ্রীর্বালাধান্যবহানেণ্চ বাল্যে কেবলং লীলাফ্রণতেনেইর্বামিতি প্রনায়ত্ত ভগবতা মাধুনী সিন্ধা। শ্রীবিষ্ণ্ধর্শেছিপি ভত্তকং শ্রীমদর্জনেন। ভালোচ্ছিত ভাগ্রং গুক্তভার সাব যায়া মাব জাব বদদ্যভাত। পাদাগ্র বিক্ষেপ বিভিন্ন ভাগুং চিক্ষেপ কোহন্যঃ শক্টং যথা স্বং ইতি। অত্র ভাল শক্ষেন মন্তি হত্ত প্রমান প্রিলত ভাল রক্ষ এববাচাতে বৃহত্তিয়ের বিবন্ধিভয়াং। তথা শ্রীবন্ধণান্ধিভিত্তীয় স্করে। ভোকেন জীবন্ধনণ যত্ত্বিকিবারা ক্রেমানিক্সতে পদা শক্টোপ রুত্তা। যত্তি বিব্যান্ধনিকারের মধ্য প্রাপ্তেন ক্রেনেই ভ্রেরণা শ্রীক্ষণা ভগবত্তা বিশেষ প্রকটনং বিনা ন সন্তাবাং ন সন্তবং ভবেং ইত্যর্থ। স্বন্ধ: শক্টস্যাতি বৃহত্তমহাং মাতালি তদ্ধং পুত্রং শায়িতবতীতি জ্যেরং।

### क्रम्मक्रः।

স্তৰাৰ্থীতি বাল্যলীলাবেশো দৰ্শিতঃ॥ ৮॥

অধ হাতে শক্টাহ্রবভঞ্জন ইতি বন্ধাওপুরাণাং। অহুরাবেশেনৈর ভূমৌ প্রবিশচ্চত্রতাহ্চেল্যাপি শক্টস্যাল্লকেন চরণেম

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

মনোংসবাগত নাবীঃ। নৈবেতি ব্ৰক্ষপ্ৰীজন সন্ধানন বচন প্ৰতি বচনাদ্যাবেশবশাদিতাগঃ। ন্তনাৰ্থীতি নিজান্ত এব ক্ষোলগনাদিতি ভাবঃ। মনীণ বোদন শব্দেন নাবদধাসি তিওঁ জ্বলা হ শৃক্টকোটন শব্দেনৈব আমবধাপয়ানীতি মাত্ৰে কুপান্তিব শুক্টভস্কাধ্যেৰ চরণী উচ্চিক্ষেপেত্যুংপ্ৰকা গ্ৰমান ৬॥

সমকশ্চাদৌ থাঝান্বন্ত্ৰত, যোহতিৰ জেন হতমিতি তেন বামনাবতারত কটাহ ভেদার্থমিব শক্টভলার্থ তচ্চরণ যুগং ন বন্ধিওং নাপি নুসিংহাবতাবত কঠোর হিবলাকশিপু বিদারণার্থমিব জাতৈতাবাতি কঠিনমিতি ভাবং। রাল্যাদি লীলা নাধুর্যাবিরোধাতি-অত্র্টাই ঐর্থ্যমেত্য ক্ষেত্ত পূর্ণৰ প্রতিপাদকং। ব্যবস্তৃত্ব বিপ্রাজীভ্য় অপত্থ। বিধ্বস্তানি নানা রস্বস্থি কুপাভাজনানি স্বর্ণ রজভাতিরিক কাংভাদি ময়ানি পাতাণিয়ত্র তাম্বুণা ভারধা। বাতাভানি বিপ্রাভানি চচ্চেচ অকাক চক্রাকাং বাতাভাক্তকাকা যদিন্

লেন। অতএব বালক গৃহাভান্তরে শক্টের নীচে শ্রান থাকিয়া বে রোদন করিতে ২ হঠাৎ একবার চরণম্বয় উদ্ধিদিরে সঞ্চালিত করিলেন্॥ ৬॥

হে,রাজন্! অধোভাগে শ্রীকৃষ্ণ শয়ান ছিলেন, উপরে শকট ছিল, উর্দ্ধদিকে ক্ষেপণ করাতে ভাঁহার ক্ষুদ্র অথচ প্রবাল ভুল্য মৃত্ চরণ দ্বারা উপরিস্থ শকট আহত হইল এবং তৎক্ষণাৎ বিপর্যুক্ত

বিধ্বস্ত নানা রসক্প্য ভাজনং ব্যত্যস্ত চক্রাক্ষ বিভিন্ন ক্বরং॥ १॥
দৃষ্ট্য যদ্যোদাপ্রমুখা ব্রজন্ত্রিয় ঔথানিকে পর্বাণি যাঃ সমাগতাঃ।
নন্দাদয়শ্চাদ্তদর্শনাক্লাঃ কথং স্বয়ং বৈ শক্টং বিপর্যগাৎ।
উচুরব্যবসিত মতীন্ গোপান্ গোপীশ্চ বালকাঃ। রুদতানেন পাদেন ক্ষিত্তমেতয়সংশয়ঃ॥ ৮॥
ন তে প্রদ্ধিরে গোপা বালভাষিতমিত্যত। অপ্রমেয়ং বলং তস্য বালকস্য ন তে বিছঃ॥ ৯॥

#### श्रीशत्रवाभी।

রদবন্তি কুপ্যভালনানি স্বর্গরজতাতিরিক্ত' কাংদ্যাদি ময়ানি পাত্রাণি যথা ভবস্তি তথা চক্রেচ জ্বনাশ্চ চক্রাক্ষাং বত্যস্তাশ্চক্রাক্ষা যদ্মিন বিভিন্নঃ কুবরো যুগন্ধরো যদ্মিন তচ্চ তচ্চ যথা ভব্তি তথা ব্যবস্তুত ॥ ৭॥

অভূত দর্শনেন আৰু া বভূবু ওদেবাহ কথমিতি। বিপর্য্যাৎ বিপরীতমপ্তদিতি॥৮॥ ন শ্রুপবিরে বিশাসং ন জামু: উত অপি বালস্য এতন সম্ভবতি এতেচ বালাঃ কিং জানস্ভীতি॥৯॥

#### रिकाराजायगी।

যাং এ মিনেশালা প্রন্থাঃ যাশ্য ব্রজারিয়ঃ ঔথানিকে পর্কাণি সমাগতাঃ। যেচ ব্রীনন্দালয়তে সর্কে দৃষ্ট্র। শক্ট বিপর্যায়ং বীকা তহাাকুল জংগা উৎপাত্তয়া শক্তিমা দর্শনেন ব্যাকুলচিত্রাঃ সন্তঃ কথং শক্টং বিপর্যাগালিত্যুচু রিতিশেষঃ। পর্কাণীত্যক কথাণীতি কচিৎ পাঠঃ। বৈ বিশ্বে॥ १॥ •

শহুতদর্শনাকুণ হাদেবাব্যব্যিত। কিং দৈত্যেন গ্রহাদিনা বেত্যাদি বিবর্তন কারণোল্লমনে নিশ্চয়মগতা মতি বেবাং তান্। বালকা ত্রাধুর্যারন্ত চিত্তবেন তলেক চ্টয়ঃ এতছক্টং অনেনেতি এতদিভিচ প্রত্যক্ষম্ম তৎকালীনম্বঞ্চ স্চয়তি অতুএবাহঃ সংশ্রোহপ্যক্র নাতি কিমুতাপ্রতীতিরিত্যর্থঃ ॥ ৮ ॥

তে পরম ভগবং প্রিয়ন্তেন নর্ব্ব জ্ঞান যোগ্যা অপীত্যর্থঃ। অপ্রমেয়ং ভগবত্তয়া বিশেষতন্ত্ব বাললীলাবিদ্ধারেণ তর্কাগোচরুং বলং।
ন বিহুঃ ভতো ন প্রদ্ধারেচ। তত্র পুনত্তে ইতি হেবস্তরং পুত্রভাবনয় তৎ প্রেমানন্দমন্তা ইত্যর্থঃ। তাদৃশ তৎপ্রেমঃ সর্বাচ্ছাদকভাদিতি
ভাবঃ। প্রদ্বিত্তভগবান্ রামো বিপক্ষীয় নূপোদ্যমং। ক্লাং চৈকং গতং হুর্তুং কন্যাং ক্লাহশন্ধিতঃ। বলেন মহতা সার্ধ্বং প্রি-

#### ক্ৰমাসন্দৰ্ভ:।

স্পর্শো জ্ঞেয়:॥ १॥ ৮॥

েত বাৎসল্য পূণ্চিত্তাঃ 🏿 ১। ১০। ১১। ১১। ১৩। ১৪ ॥

### **এ বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।**

বিদীর্ণঃ কুবরো বুগন্ধরণ্ড যত্র তাল্যথা ভাত্তথা। শকটাস্থর ভঞ্জন ইতি ব্রহ্মাণ্ডপুরাণাং আস্থরাবেশেনৈর স্থ্রীন প্রবিশচ্চক্রছাত্তিভাগি শক্টান্য নিকট প্রান্তবেন জন্পনে চরণেন স্পর্ণো ছেয় ইতি শ্রীবৈষ্ণ্রভোষণী॥ ৭॥

বশোদা প্রমুখা মাশ্চ ব্রজন্তিমঃ পর্বনি। কন্দণীতি চ পাঠঃ। বিপর্য্যাং বিপর্যন্তং সদপতদিত্য চুরিতি শেষঃ॥ অব্যবসিতা কিং দৈভাবদঃ কিলা গ্রহাদেঃ কর্মেদ্মিজ্যনিশ্চিতা মতি র্যবাং তান্॥৮॥ ন শ্রদ্ধিরে ন বিশ্বসন্তি স্ব॥ ১॥

হইরা পড়িয়া গেল। হতরাং নিকটে নানা রদ পূর্ণ যে দকল কাংস্যাদি পাত্র ছিল সমুদায় ভূগ ইহল এবং সেই শকটের চক্র ও অক উলটিরা পড়িল, আর যুগন্ধর (জোঁয়াল) বিভিন্ন ইইয়া গেল॥৭॥

হে মহারাজ! অঙ্গ পরিবর্তনাৎসবোপলকে যশোদা প্রভৃতি যে সকল ব্রজন্ত্রী একটা মিলিত হইয়াছিলেন তাঁহারা এবং নন্দানি গোপ রুন্দ ঐ ব্যাপার অবলোকন করিয়া আশ্চর্য্য দর্শন হেতু সাতিশয় ব্যাকৃল হইলেন এবং বিশায় প্রকাশ পূর্ব্বক পরস্পার কহিছে সাগিলেন শকট বয়ং কি প্রকারে বিপরীত হইয়া পড়িল। সেখানে ব্রুসকল বালক ছিল তাহারা গোপ এবং গোশীগণকে ব্যাকৃলিত চিন্ত দেখিয়া বুলিল আমাদের নিক্তম বোধ হয় এই শিশু রোদন করিতে করিতে পাদ চালনায় শক্তক পাতিত করিয়াছে॥৮॥

কিন্তু বালকের কথা বলিয়া গোপেরা তাহাতে বিশাস করিল না, বরং পরস্পার কহিতে লাগিল শিশুর কখন এরূপ কর্ম সম্ভবে না, ইহারা বালক কি জানে?, হে রাজন্! ঐ শিশুর যে অপরিমিত রুদন্তং স্ত্তমাদায় যশোদা গ্রহশঙ্কিতা। কৃতস্বস্ত্যয়নং বিপ্রৈঃ সৃক্তিস্তনমপায়য়ৎ ॥ ১০ ॥ পূর্ববৎ স্থাপিতং গোপৈর্বলিভিঃ স পরিচ্ছদং। বিপ্রা হুত্বার্চয়াঞ্চকুর্দধ্যক্ষত কুশান্ধৃভিঃ॥ ১১ ॥ যেহসূয়ানৃতদন্তের্ধ্যা হিংসা মান বিবর্জিকতাঃ। নৃতেষাং সত্যশীলানামাশিষো বিফলাঃ কৃত্যঃ॥১২॥

### बीधतवामी।

त्रकारेषः स्टेकः कृषा॥ >०॥

ভগবৎ প্রভাবানভিজ্ঞ বিপ্রচেষ্টিতং বিতশ্বরাহ পূর্ব্ববিদিত্যাদিনা বলিভিঃ শক্তৈঃ। মুদ্ধা অষ্ট দিক্ষু বলিভিঃ সহিতং সপরিকরং যথা-পূর্ব্বং স্থাপিতং বিপ্রা দধ্যাদিভি রর্জরামাস্থ: ত্তা প্রহাদি হোমং বিধায় ॥ ১১ ॥

অব্যা গুণেবু দোষাবিষরণং। ঈর্ব্যা অক্ষান্তি:। তেষাং আশিষ: ক্রতাঃ তৈঃ প্রযুক্তাঃ॥ ১২॥

### देवकवट्यावना ।

প্লুতঃ। ছরিতং কুশ্তিনং প্রাগাদগঙ্গাধরথ পত্তিভিরিতি। শ্রীবলদেবস্যাপি তথার প্রবণাং। নেমং বিরিঞ্চ ইত্যাদে তক্ত স্বতেম্চ। নমু তাদৃশ প্রেমবৈবক্তোন স্বতো হমুশকানং নাম মান্ত সভ্যোমুক্তা সন্তবেদিত্যাশক্ত হেবন্তরমাহ উঠ অপি বালভাবিতমিত্যতোহণীতি গোপা অপি ন প্রদ্ধিরে কিমুত গোপা ইত্যর্থঃ॥ ১॥

অতএব বিশেষতঃ আইবশোদায়াঃ নেহতবেণ চেষ্টিতমাহ স্কলস্কমিতি। গ্রাহেভ্যো বালগ্রহাদিভাঃ বিবৈশ্বঃ কর্ত্ভিঃ হকৈঃ রক্ষোদাদিভিঃ ক্রবিং রক্ষোহনং বলগহনমিত্যাদিভিঃ পশ্চাদাশস্তা স্তৰমপায়য়ৎ ॥ ১০ ॥

শ্রীননাম্বর্তিনাং বিপ্রাণামপি তাদৃশ এব ভাব ইতি দর্শররাহ পূর্ব্বদিতি। বলিভিঃ বলবন্তিরিত্যাদিনা শক্টিস্য পরমং গুরুত্বং বৃহত্বঞ্চ দর্শিতং। ভত্তকং তালোচ্ছিতাপ্রমিত্যাদি। অতস্ত্রদধাে নিঃশক্ষোচং মাতা পূলং শায়িতবতী। ত্বা আদাবনিষ্ট নির্ত্যথং
আজ্যেন ব্যাহ্রতিভিঃ সা সামান্যতো গ্রহহামং বিধার পশ্চাং দ্ধিমিশ্রৈরক্ষতিঃ কুশ সহিত প্রোক্ষণ জলৈশ্চ শক্টমর্চ্চরামান্তঃ।
ব্যোপজাতীনাং তদাশ্রর প্রধানতাং ॥ ১১ ॥

অধুনীভেভা বিশেষতঃ শ্রীবল্লবেক্স শ্রীবলাদাবচ্চেষ্টিতমাহ য ইতি চতুর্ভি:। তত্র য ইতি ত্রিকং। তত্রৈবৈকেন তেষাং ব্রাহ্মণানাং সর্বোজ্যমধাহ য ইতি। অস্থাদি চতুক বিবর্জনেন প্রায়েশপরতঃ হিংসা মান বিবর্জনেন মোক্ষপরতঃ সত্যঞ্চ সমকর্শনমিতি। নারায়ণ পরাঃ সর্বেধ ন কুত্রণ নকিভাতি। স্বর্গাপবর্গ নরকেস্বপিতৃক্যার্থ দর্শিনঃ। ইতি চৈক্ষাক্যতায়া সত্যশীলহেন পর্বন বৈক্ষবত্বকাক্ত সত্তব সর্বাইনাভাত্তে পৃথগুক্তিঃ॥ ১২॥

### গ্রীবিশনাগচক্রবর্তী।

স্থাকৈ রক্ষোম্বনক্তিঃ কুতং বিভারনং যাস্য তং ॥ ১০ ॥

ৰণিভি বঁলবঙ্কি গোঁপৈঃ পূৰ্ব্ববেদৰ শক্টং স্থাপিতমিতি তমা বৃহস্ত ব্যক্তিত। অৰ্চ্চয়াঞ্চকুরিতি গোপজাতীনাং তদাশ্রয় প্রধানত্বাং সঞ্চিত ধনাম্পদকেন লক্ষ্যধিষ্ঠানত্বাচ্চ ॥ ১১ ॥

শ্ৰীনন্ত গ্ৰাহ্মণাণীজিরের মে বালকঃ কুশলীতি জানাতি ম্বেতাাহ ব ইতি। মানো গর্কা। তেবাং তৈঃ কৃতা আশিষো ন বিফলা ইতি বিষয়োতি শেষঃ ॥ ১২ ॥

# বল গোপগণ তাহা জানিতে পারে নাই তাহাতেই ঐ রূপ কহিল॥ ১॥

সে যাহাহউক, যশোদা সম্বর গিয়া রোদন পরায়ণ পুত্রটীকে ক্রোড়ে লইলেন এবং চুইত্রই আশস্কায় ব্রাক্ষণদিণের দারা রাক্ষ্য বিনাশক মন্ত্রপাঠপূর্বকে স্বস্তায়ন করাইরা স্তনপান করাইতে লাগিলেন॥১০

তে রাজন্! সেই সকল আহ্মণ ভগৰানের প্রভাব অনভিজ্ঞ ছিলেন, ইতরাং গোপগণ কর্ত্ব ঘণাক্রমে অফটদিকে বলির সহিত স্থাপিত প্রহাদির হোম করিয়া দধি, অক্ষত এবং কুশ জল দিয়া যথাবিধি অর্চনা ক্রিয়ালন । ১১॥

হে মহারাজ। যে দকল ত্রাহ্মণ অনুষ্ঠা, অনুষ্ঠা, দম্ভা, ঈর্ধা, হিংসা এবং অভিমান বর্জিত ও সত্য-শীল সেই দকল দ্বিজাগ্র্য যে আশীর্কাদ প্রয়োগ করেন তাহা কদাপি বিফল হয় না॥ ১২॥ 12

ইতি বালকমানীয়সামর্গ ক্ষুত্র ক্ষপাকৃতৈঃ। জলৈঃ পবিত্রোষধিতিরভিষিচ্য দ্বিজোন্তমৈঃ॥ ১০॥ বাচয়িত্ব। স্বস্তায়নং নন্দগোপঃ সমাহিতঃ। হৃত্বাচায়িং দ্বিজাতিতাঃ প্রাদাদরং মহাগুণং॥ ১৪॥ গাবঃ সর্বগুণোপেতা বাসঃ প্রগ্রু কামালিনীঃ। আত্মজাভ্যুদয়ার্থায় প্রাদানেতচাম্বযুক্ত ॥ ১৫॥ বিপ্রা বেদবিদো যুক্তাত্তৈ বাঃ প্রোক্তান্তথাশিষঃ। তা নিফলা ভবিষ্যন্তি ন কদাচিদপি প্রবং॥১৬ একদারোহমারুতং লাল্যন্তী স্বতং সতী। গরিমাণং শিশোব্যাতৃং ন সেহে গিরিকূটবং॥ ১৭॥

### श्रीभन्नवाभी।

ইতি এবমতিপ্রেতা সামর্গ্ বঙ্গুভি**রুপাক্তিঃ সংস্কৃতিঃ পবি**ত্রা **ওবধরো বেষু জলেষু তৈঃ কৃত্বা বিজ্ঞোতনৈঃ কৃত্তিঃ অ**ভিষেচ্য অভি-বেকং কার্যায়ির। ১০।। **ছত্বা হাব্যিতা**। ১৪।।

গাবে। গাশ্চ প্রাদাং অবযুক্ত আশিবো যুর্জু: ॥ ১৫ ॥ তান্তবৈব বভুব্রিত্যর্থ: ॥ ১৬ ॥

উংক্ষিপ্য মৃছপালেন শকটং ব্যোমি শীলয়া। তৃণাবৰ্ত্তং পদাপীতা ভূব্যপাতয়দৰ্ভকঃ। আয়োহং উৎসঙ্গং ॥ ১৭॥

### বৈষ্ণ বজোষণী।

ইতীতি ত্রিকান্ত যুঁগাকং সামর্গ্রকৃংবি তত্তবেদমন্ত্রাঃ পবিজ্ঞোবধন্নঃ সর্কোবধন্নঃ মহোবধন্দ ॥ ১৩ ॥ মহাত্তবং রসামোলাদি বিশিষ্টং ॥ ১৪ ॥

গাব ইতি সার্দ্ধকং। অভ্যাদয়: সর্কোপত্রব দাঝি পূর্বকং বৈভবং স এব নিজ পুক্ষার্থ নেহ ভরাত্তং সাধ্যিত্ং তেচ বিশ্রা: অসু অন্নভোজনাদান তরং অযুক্ত প্রযুক্তবন্তঃ। আদিব ইত্যুত্তর স্বার্তাং ॥ ১৫ ॥

কীদৃশান্তে বেদবিদঃ বেদার্থাভিজ্ঞাঃ মন্ত্রবিদ ইতি পাঠো বছর। তথাপি তত্বপলকণ্ডেন স এবার্থঃ। অতো যুক্তা ভগবন্তকাঃ ইতার্থঃ। ভগবান্ বন্ধ কার্থ স্থোনতা নিদেঃ। অন্ধাবান্ ভন্নতে যোমাং স মেযুক্তমো মত ইতি শ্রীভগবদ্দীতাতঃ। অতকৈ বা আশিষঃ প্রোক্তা তাতবৈধ বভূব্রিতার্থঃ। তদিছান্ত্রপারেণ যথাবদরং তাঃ শ্রীভগবতি ব্যক্তা বভূব্রিতার্থঃ॥ ১৬॥

ত্রজে বিরাজমানোহহং কাঞ্চিদর্হামি নার্তিং। ইতি চিক্ষেপ ভগবামুপরিস্থ মন: কুটং। একদা একান বয়: প্রাকটো একহায়ন

#### क्रममण्डः।

তে চ বিপ্ৰা আশিধােহৰযুঞ্জেতামন্তঃ॥১৫॥

় বাশ্চ আশিষ্ট্রেঃ প্রোক্তান্তান্ত্রিধৰ বহুবুরিতি শেষঃ। এশ্বপ্রটেশ্বছেন তত্তৎ প্রকাশানামনীকারাদিতি ভাবঃ॥১৬॥১৭॥

### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

উপাক্তি: সংস্কৃতি:। পৰিকা ওবধন: সংশীৰণি মহৌৰধাাদরে। যত্র তৈ জঁলৈ: করণৈ দি দ্বোন্তম: কর্ত্তিরভিষিত্য অভিষেকং কারমিষা ছবা হাবমিষা। মহাশূলমতিশাদামোদ্ধুকে:॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥

গাবং গাং শুণাং বছ পরস্বীত্যাদর:। তে বিপ্রা অন্ন অনুস্থরং অধ্যুগত স্বীচকু:॥ ১৫॥

তি বা আৰ্শিব: প্ৰোক্তাযে বিশ্ৰা যুক্তা যোগিন তা তথা বছুবুরিতি শেব: ॥ ১৬॥

রাজতাধিলসম্পত্তিপত্তী মবাপি সঞ্জিতে:। কিমেভি ব্যক্তিরিতি স্বমনোহভিনদীখর:। একদা একাল বরসি বত্তে সতি এক

এই জুডিপ্রায়ে বালককে আনিয়া ব্রাহ্মণদিগের দারা ঋক্, যজু ও সাম্মন্ত্রে সংস্কৃত তথা পবিত্র ওষধি দিভিত জলে অভিযেক করাইয়া॥ ১৩॥

গোপদাজ নন্দ সমাহিত চিত্তে স্বতিবাচন করাইলেন, তাহার পর অমিতে ছোম করাইয়া নিজা-তিদিগকে উত্তম স্বাদ ও স্থাদ সমাদিলেন ॥ ১৪ ॥

শার শীপ্তকের অন্যুদ্যার্থ বহু ২ গাড়ী আনাইয়া অন্ধ্র মালক্র তথা অর্থহারে ভূষিত করত দান করিবেল। সেই আক্ষণেরা সকলেই আশীর্কাদ প্রয়োগ করিতে লাগিলেন ॥ ১৫॥

र प्राप्तन् । दानदान द्यांभी विधानन कर्जुक दा दा जानीर्वाहन खेळ इस दन मकेन त्यारे धाकात्र र ररेग्नाहिल, निन्हम कामिछ, दोनळ खाचारनंद्र जानीर्वाह कनाह निकल इस ना ॥ ১৬॥

्र इ प्राञ्जन । ভগবানের अन्तरं वालहतिक विल अवग क्ष्र, धक्षा नन्मभन्नी भूखरक क्राइड

ভূমো নিধায় তং গোপী বিশ্বিতা ভারণীড়িতা। মহাপুরুষমান্ত্রধ্যা জগতামান কর্মান্ত। দৈত্যো নালা তৃণাবর্ত্তঃ কংসভ্ত্য প্রচোদিতঃ। চক্রবাত স্বরূপেণ জহারাসীনমর্ভকং॥ ২৮॥

# व्याधितवामी।

তুণাবর্তাং স্বমৃত্যু পবিহারায় শ্রীকুষ্ণেনৈবা**য়ন উৎসন্ধাত্তারায় কৃতং ভারমন্ধানতী উৎপাত** শঙ্রা মহাপুরুষ মাদখ্যে। এই কো-দ্য বর্ত্তিনাং জগতাং ভারেণ পীড়িতা বিশ্বিতাচ সতী **যথা জগতাং মধ্যে কর্মস্থ আস বভূব নতু জগত্তদ**রং তং বেদ ইত্যর্থ:॥১৮॥

# বৈষ্ণবতোৰণী।

আসীন ইতাতো ৰড়্বিংশাধাায়োজে:। লালয়**ডী মুখচুম্বনং স্তনপায়নক তথা কদাচিদ্নীলয়। করা**ভ্যামুতোলনং কুর্বন্তী সভী প্রহা-ভিজ্ঞেতার্থ:। ইতি লালনে সৌষ্ঠবং অভিপ্রোতং বোঢ়ুং **স্বলেন** প্র্যাপয়িতুং ততা**ক্ষা** একাকিনী ব্দর্ণন্দেকদা গৃহদাসীধিভ্যাদি বক্যমাণ প্রকারান্তরেণ মন্তব্যং॥ ১৭॥

ভূমো নিধায় ইতি তৈ ব্যাপ্যাতং তত্ৰ সমৃত্যিত্যক্ৰ শব্দেন সৈবোচ্যতে মৃত্যু শব্দেম চ পরাভব এব তদসন্থবাং কৃতং প্রকাশিতমিত্যর্থঃ। অতঃ শ্রীক্ষোদারবর্তিনামিতি বিভূত্বেন তত্দরবর্তিনামিবেতি ব্যাথ্যেয়ঃ। পরিচ্ছিয়বেইপি বিভূত্বর দামোদর লীলায়াং
স্থাপয়িতবাং বিগ্রহ রূপত্বেইপি বিভূত্বং বিভূত্বেইপাক্তাম্পৃষ্টবমগ্রিমাগ্রিমলীলায়াং স্থাপয়িতবাং। যদ্ধ ভূমাবিতি সংভ্রমেণ থট্যুদে ভারাসহনাভিপ্রায়েণ চ ইতি ভাবঃ। ভারণীড়িতেতি তাদৃশ প্রসক্ষে তাদৃশ শক্ত্যুদরাদিতি ভাবঃ। জগভাং মহাপুরুষমীশ্রমিত্যর্থঃ। কর্মস্থ
বভায়নাদিরূপ ত্বাৎসল্যময়ের্। য্রামার্থ স্বহং প্রিরাত্ম তনম প্রাণাশয়া ব্রুক্তে ইত্যনেন ত্রসাং কৈম্ত্যাপ্যতাং॥

দৈত্য ইতি মুগাকং। বাত্যারূপ দৈত্যখেন হর্ তথং মহাবলিষ্ঠখং। অপ্রতি কার্যস্থাঞ্চাক্তং। কংসভ্তা ইতি পরম দেই দং তত্রচ প্রচাদিতঃ পূর্বং বালবাতিখেন পূতনৈব সামায়ত ভাবং প্রস্থাপিতা তভাশ্চ ছন্মায় মূর্তেরপি মরণাছকাকুলঃ সন্মূন্তিরে শকটাস্ত্রঃ প্রস্থাপিতঃ তস্যাচ বিলায়নান স্থাতিঃ সন্মূর্তার্ধ ধর্মো বলবত্তরো হপ্রাইকরণো মহাবার্ত্রের প্রকৃষ্টতরা স্থাপিত ইত্যর্থঃ সচ গলে নিস্পীতা গৃহীত ইতি ভাবি কৌতুক স্চনং চাত্র। আসীনং তত্র মাতৃ দৃষ্টি পথ এবেতি তস্য বিশ্বরো হ্রুথাতিশরো দর্শিতঃ। অর্ভকং প্রকৃতি বাল্যং সংবৃত গৌরব্যাতার্থঃ ॥ ১৮ ॥

#### क्रममन्डः।

জগতাং মহাপুরুষং ঈশর্মিতার্থ:। কর্মার স্বস্তায়নাদি রূপ ত্রাংসলা মরের। যদামার্থ সূত্র প্রিরাক্স তনর প্রাণাশরাজংকতে ইত্যানেন কৈম্ত্যাং পুত্নাদিনা কার্যাদি সিদ্ধে:। কংসেন স্বস্তু এব প্রকটতয়া প্রেরিত ইত্যর্থ:॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০। ২১। ২২। ২৩॥

# শীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

আদীনো প্রিয়মাণো বিহারদেত্যতোতনোকে:। আরোহমুৎসঙ্গমারুড়ং তং লালরন্তী ভূজাভাামুত্তোলনান্দোলনাঙ্গিভিকলাসরন্তী গিরিক্টবং গিরিক্টবং গিরিক্টবং গিরিক্টবং গিরিক্টবং গিরিক্টবং গিরিক্টবং গিরিক্টবং শিশোগরিমাণং বোঢ়ুং ন দেহে। আগমিবান্তং ভূপাবর্ত্তং স্মাভৃক্মেবার্মুং হরিব্যক্তমালকা মাজু র্ণোদায়াঃ ক্রেশো মাভূদিত্যের্য্যা এব শক্তা ভত্তারার ভারঃ ক্রেয়ামাদে ইতি জ্বোং। কিঞ্চিপ্যপরি ভোলরাম্ব মাং ব্যোশ্লিংথেলিভূমনা যতো ২স্মাং। ইতান্ত্য কিল সত্যকামতৈবানয়ত্ত্পবিবর্ত্তনাম্বরং॥ ১৭॥

ভূমাবিতি সম্ভ্ৰমণ বিশ্বিতেতি মছিলোরগ্নাকশ্বিকো ভারঃ কৃতন্ত্যো ল জানে কন্সচিদালপ্রহয়্যাবেশজনিতো বেতি শব্দা জ্গতাং মহাপুরুবং শ্রীনারারণমাদ্ধ্যে। বৈকুণ্ঠ দিশমুদ্ধ্যালোক্য ভগবংস্করিব দন্তোহরং স্বতন্ত্রিব পালনীয় ইতি ধার্মননোবাচেত্যর্জ। তভক ব্যগ্রা তংস্বত্যয়নাদ্যর্থং কর্মস্থ বিপ্রাহ্বানাদিব্ আস বভূব ॥ ১৮॥

লইয়া লালন করিতেছিলেন; হঠাৎ তাঁহার ভার বোধ হইল, সেই শিশুকে গিরিশিথর ইল্যু শুক্ল বোধ করিয়া তিনি ভার বহনে অসহিষ্ণু হইলেন॥ ১৭॥

শ্রীকৃষ্ণের উদরন্থিত জগতের ভারে অত্যর্থ পীড়িতা হওয়াতে ঐ গোপীর সাভিশুর বিশ্বর জনিল। তৎক্ষণাৎ পুশ্রুকে ভূতলে স্থাপন করিলেন এবং ঘটনার কারণ মা জানাতে উৎপত্তি আশক্ষা করিয়া মহাপুরুষের খ্যানে প্রবন্ধ হইলেন। তাহার পর ঐ বিষয়েই নিষ্ক থাকিলেন কিন্তু পুশ্রের উদরে জগৎ ক্ষিষ্ঠিত হুওয়াতে তাহার যে গুরুজ হইয়াছে তাহা জানিতে পারিলেন না এই সমরে কংসের ভত্তা ত্ণাবর্ত নামা একজন দৈত্য কংসপ্রেরিভ হইয়া চক্ষণাত ক্ষরপে আসিয়াছিল, সে ভূতলোপবিষ্ট সেই শিশুকে হঠাৎ হরণ করিল। ১৮॥

গোকুলং সর্বমারণুন্ মুঞ্চংশ্চকুংমি রেণুভি:। ঈরয়ন্ শ্বমহাযোর সক্ষেন প্রদিশো দিশু:॥ ১৯॥
মুহূর্ত্তমভবদেগার্চং রজসা তমসা রতং। স্বতং যশোদা নাপশ্যতশ্বিদ্যান্তবতী বতঃ।
নাপশ্যৎ কশ্চনাত্বানং পরঞ্চাপি বিমাহিত:। ত্ণাবর্ত্তবিস্টাভি: শর্করাভিম্পক্ততঃ॥ ২০॥
ইতি থরপবনচক্রপাংশুরর্ধে হতে প্দরীমবলাধ্বিলক্ষ্য মাতা।
অতিকরুণমনুসংসরন্ত্যশোচতুবি পতিতা মৃতবংসকা যথা গোঃ॥ ২১॥

# श्री पत्रचामी।

ঈরয়ন্ নিনাদেরীয়িত্যর্থ: ॥ ১৯ ॥ যতঃ বত্র **স্তত্ত্বতী** তত্র স্থানে নাপশ্রুৎ ॥ ২• ॥ থরপবনচক্রাৎ পাংশুবর্ষে সতি ॥ ২১ ॥

#### देवकवरजीवना ।

ষ্ণস্তথা হরণাশক্তে রেণুভিরাবৃণ্ন্ অতএব গুত্রত্যানাং চক্ষ্য ডজ্যোতীংবি চ মুক্তন্ প্রদিশঃ বিদিশঃ দিশশ ॥ রজদা তংক্তত্যন্দাচ শ্রীভগবদর্শন বিনাশকাভ্যাং রজন্তযোগুণাভ্যামাবৃত্য । প্রথমং যোগিনাং হৃদরমিবাদীদিতি শ্লেবেণোপ-নাচ। তামিং স্টেত্রব স্বপার্যে স্তন্তবত্যাপি যতো যদাজক আদের্যেতোর্নাপশ্রং তদ্মিদ্বিত্যত্র স্বর্মিতি কচিৎ পাঠঃ ॥ ১৯॥

পর্মন্যমাত্মানমপি নাপশুৎ। চকারাৎ কিঞ্জাশূণোজ। বিমৌহিতঃ কিঞ্চিন্দ্সদ্ধাভূমপাশক ইত্যর্থ:॥ ২০ ॥

এবমত্যন্ত গৌরব প্রকাশনেনাত্মনোহনভূপক্য নরনং শ্রীভগ্বতা তল্লীলাশকৈয়ব বাংসল্যেন বোধিতা ত্মিপ পুরাদর্শনমাত্রেণৈবাত্যাক্সনা সতী কিঞ্চিদহলজাত্মক্সনা বহু বিল্লাপেত্যাই ইতীতি। পুর্বোক্ত প্রকার ধর পবন চক্র সংবদ্ধ পাংশু বর্বে সতি স্থত্স্য পদবীং দার্গিং কেনাপি লক্ষণেনানধিগন্যৈব অবলা কিঞ্চিৎ কর্ত্ত্ মন্থ্যজ্ঞাশকা কেবলং ভূবি পতিতা সতী অতি কৃষণং কাঠ পাবাণ বন্ধ সারাদীনামপি ভেদকং বধাস্যাত্তথা অন্ধ্যৱন্ত্রী অশোচৎ তদর্থং বিলাপং চক্রে বন্ধা প্রাগণোচৎ পশ্চান্মোহেন ভূবি পতিতা বতো মাতা। বেহভ্রেণাস্থ্যনানাভাবে পরমার্ত্ত্বেচ দৃষ্টান্তঃ। মৃত্তেত্যদর্শন মাত্রেণ মহানিষ্টপক্ষোৎপত্তেঃ ॥ ২১ ॥

### वीविश्वनाथहक्वर्शे।

ভাবদেব দৈত্যোজহারেতি ভদ্ধরণকালে ঐপর্ব্যা এব শক্ত্যা ভারলাঘ্বং ক্লুত্মিতি ক্লেরং। দিলো বিদিশক ঈর্যন্ প্রতিধ্বনরন্ ॥১৯ যতো যক্ত নাজ্যবাদী ভাষ্মিন্ স্থলে ॥

পরপ্ৰন চক্রাৎ পাংও বর্বে সক্তি ক্ষবিলক্ষা অনুষ্ঠা॥ ২০॥

উপারতঃ পাংশুবর্ষস্য বেপো যদ্মিং তথাভূতে প্রনে সতি॥ ২১ ॥

ঐ তৃশারত সমস্ত পোকৃল স্নান্দোলিত এবং ধূলি দারা সকলের দৃষ্টিরোধ তথা খোরতর মহাধ্বনিতে দশ দিক্ অভিধানিত করিতেছিল ॥ ১৯॥

অতথ্য মৃত্তিকাল সংখ্য সম্নার গোষ্ঠ ধূলি এবং অন্ধলারে আছম ক্ট্রাণেল। বলোলা যে আদে প্রেক আলম করিমাছিলেন ওবার জাহাকে দেখিতে পাইলেন না সকলেই বাজার বিমোহিত ক্ট্রান বাজিই আগমানে অবলা অন্তর্জানিতে পারিক মা, ত্ণাবর্ত দানব যে সকল পর্করা (ধাপরাল) থাকেল করিতেছিল ভাছাতে সকলেই বংশলোনান্তি উপক্ষেত্র হইল ॥ ২০॥

ক্ষেত্রত ক্ষেত্রত প্রনাম প্রনামক বেতু উদ্ধান্ত ধ্লিবর্ষণ ইইতে থাকিলে যথোগা পুত্রবর্ষ দেখিতে না পাইয়া ইতস্ততঃ লতুকরণ করিলেন, ক্রাপি সন্তান প্রাপ্ত হইলেন না, অতথ্য যুত্বৎসা গাভীর ন্যার ভূতলে পড়িয়া করুণব্বের রোদন করিতে করিতে শোক করিতে লাগিলেন॥ ২১॥

রুদিভমনুনিশ্ম্য তৃত্র গোপ্যো ভূশমনুতপ্তধিয়ো হ্লুপূর্ণমূখ্য:।
ক্রুক্ত্র রুপুপলভা নন্দসূনুং পবন উপারত পাংশুবর্ষবেগে ॥ ২২ ॥
তৃণাবর্দ্র: শাস্তর্রা বাত্যারপধরো হরন্। কৃষ্ণং নভোগতো গস্তুং নাশকোন্ত্রিভারস্থ ॥ ২০ ॥
তমশান্তং মন্যমান আত্মনো গুরুমত্রা। গলে গৃহীত উৎক্রতুং নাশকোন্ত্তার্ভকং।

# औरत्रवासी। \*

উপারত: পাংশুবর্ষস্য বেগো মন্দ্রিন্ তথাভূতে পবনে সতি তত্র তস্যা ক্ষণিত মহানিশম্য গোপ্যো কক্ষত্র। ২২॥
ৰাত্যা চক্রবাতঃ তুজপধর: কৃষ্ণং হরন্ শাস্তরয়ঃ কথিংয়ভোগতঃ ততঃপরং গল্প নাশকোদিত্যর্থঃ॥ ২০॥
তিত্রমন্তরা অতিগোরবেণ তং অন্মন্তং অশাবন্তং পর্বাত্তপ্রায়ং মন্যমানঃ ভেনেবাদ্ধনো গলে গৃহীতঃ তং ত্যক্ত্রিচ্ছরপি নাশকোদিত্যর্থঃ॥ ২৪॥

# বৈষ্ণবতোষণী।

পবনে উপারত পাংশুবর্ষবেগে সতি গোপ্যঃ প্রতিবেশিস্তঃ তব্র শ্রীব্রজেশরীগৃহে ক্ষণিতং অমুনিশম্য বীপারা শ্রমণ তব্রচ শ্রীনন্দ-স্ক্ষম্প্রপানত্য গ্রাণাদৃষ্ট্ । ভূশমন্ত্তপ্রধিয়ঃ সত্যন্তত এবাশ্রু পূর্ণমুখ্যঃ সত্যো ক্ষন্ত্য় । অমুরক্তেতি পাঠে শ্রীনন্দ্রপদ্ধা চামু-রক্তাধী যাসাং তাঃ । নন্দস্ম্বিতি শ্রীনন্দ্র্য তদমুগ্যাৎ শ্রীব্রজবাসিনাঞ্চ সর্ক্ষোং রোদনং স্কর্মতি ॥ ২২ ॥

ততশ্চ তেবামার্ডি রোদনে নভোগমনলীলাং বিহার দৈত্যং হস্কুদ্যত ইত্যাহ তৃপেতি। তৃণাবর্তো বাত্যারূপধরঃ ক্বকং হরন্ নভো-গতো ভূষা তত্র তেনাবিদ্ধতভারেণ ভূরিভারভৃৎ সন্ তত এবচ শাস্তররঃ সন্ গবং নাশক্ষোৎ॥ ২৩॥

অনুত্তং অন্ধবন্ধং নীলমণি পর্বাতং নতু নক্ষত্মং তং মন্যমান: অতোহরণাশক্তা চ মোক্তু মিছেরপি নাশকং বত তেনৈব গলে গৃহীতঃ অতএবাহুতং লোকাতীতং কৌতুকাবহং বার্ডকং। অন্মন্তমিতি যুবোরনাকাবিতি জ্ঞাপকাং ছাক্ষনো বলোপঃ কিন্তু পাঠোহরং কচিদেব। অন্মানমিতি পাঠন্ত বছত্ত অত্তত্ত মতুপলোপ স্থান্যমান। অন্মানমিতি পাঠন্ত বছত্ত উত্তত্ত অত্তত্ত মতুপলোপ স্থান্যমান অন্ধার্ণমিতি পাঠন্ত বছত্ত টীকাচ তত্ত তত্ত তত্তৎপ্রকারে । অত্তার্ণ শব্দেন বর্ণ উচ্যতে আগ্যমাদে তথা দৃষ্টছাং। বর্ণ শব্দেন চ আভা ভব্যতে আন্ম শব্দেন কথকিং পর্বাত ইতি। অত্তচ বথাহি কেনচিত্তে নীর্মানো-বালকো ভয়াত্ত্বপালং গৃহাতি তক্ষাক গ্রহণাদিনা লৌকিকবাল্য লীলাচ।

# ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তত্র ব্রজেখার্য্যা ক্লিভং নিশম্য অনু পুরাম্ভরাদ্পি গোপ্য আগত্য তত্ত্ব ককছ:॥ ২২॥

প্রথমং ক্লাং বালকান্তরমিব হরন্ নভঃ অভ্যূর্জং গতঃ ততক ভ্রিভারভ্দিতি তত্ত উর্জ্ঞানেশে মহাভারং তং প্রতি বন্, শান্তররঃ ততক বোঢ়ুমসমর্থ এব তত্তো গল্পং নাশকোং ॥ ২৩ ॥

ততক নিশন্ন শ্বীর নভো বিহারাভিলাবো নিশাদিত বর্গপুর পুরন্ধী কল্পী বদর্শনাভিলাবক বালঃ ক্লমতং হবং প্রবর্তে ইত্যাহ। তমিতি। আফুন: সকাশাদণ্যভিগৌরকদেন তং জন্মতং জন্মবন্তং পর্মতং মনামানঃ উৎস্তই নি:সার্ক্লিড্ং নাশকং। তল হেড্: গলে

অনেককণ পরে যথন প্রনের ধূলি বর্ষণ বেগ উপরত হইল তথন গোপীগণ রোদন ধরনি শুনিয়। ব্যস্ত সমস্ত হইয়া সেই ছানে যশোদার নিকট আসিলেন এবং নন্দতনরকে দেখিতে না পাওয়াতে সম্ভপ্তহিতা তথা অঞ্চপূর্বমুখী হইরা আর্কস্বরে রোদন আরম্ভ করিলেন ॥ ২২॥

এদিকে তৃণাবর্ত্ত দানৰ চক্রবায়ুর রূপ ধরিয়া জীক্ষকে হরণ করিয়া লাইয়া যাইতেছিল, ভূমিভার লাইরা যাওয়াতে তাহার বেগ মন্দীভূত হইরা পড়িল, অতএব ক্রইস্টেই বিদিও আর্কাশ অভিজেশ করিল তথাত তাহার পর যাইতে সমর্থ হইল-না। ২৩॥

হে রাজন ! ঐ দানব বিজাতীয় গুরুষ হৈছু ঐ অহুত বালককৈ পর্যক্তপুন্ধ বোৰ করিতেছিল কিন্তু বালক তাহার গলদেশ এহণ করিলছিলেন হতরাং সে ত্যাগ করিছে ইচ্ছা করিলেও তাহা করিতে সমর্থ হইল না, বরঞ্চ এহণ হেতু অবিলম্থেই চেফাশুন্য হইল এবং তাহার চকু বহিগতি হইয়া গলগ্রহণ নিশ্চেফো দৈভা নৈগতিলোচন:। অব্যক্তরাবো ন্যপতৎ সহ বালো ব্যস্ত এ জে।
তমন্তরীকাৎ পতিতং শিলায়াং বিশীপ সর্ববিষ্ণবং করালং।
পুরং যথা রুদ্রশারেণ ভিন্নং ব্রিক্সা রুদ্রহাে দদৃশুঃ সমেতাঃ॥ ২৪॥
আদায় মাজে প্রতিহত্য বিশ্বিতাঃ কৃষ্ণক তদ্যোরদি লখ্মানং॥ ২৫॥
তং স্বতিমন্তং পুরুষাদনীতং বিহায়দা মৃত্যুমুখাৎ প্রস্কুজং।

# अध्यक्षामी।

তস্যোরসি দখনানং ক্লুমানার মাত্রে প্রতিষ্ঠ্য সমর্শ্য বিশ্বিতাশ্চ বড়্বুরিভ্যর্থ:॥ ২৫ ॥ বিহারসা গগণমার্গেণ পুরুষাদেন নৈত্যেন নীতং তথাপি মৃত্যুম্থাৎ প্রমুক্তং পুন ল'ক্। মোনং প্রাপুঃ ॥ ২৬ ॥

## देवक्षवरजावनी ।

গণ প্রহণেটনৰ নিশ্চেষ্ট:। হস্ত পাদ প্রক্ষেপণাদাবশক্ত ইত্যর্থ:। গণ গ্রহণাদেব নির্মতে বহিনিঃসতে গোচনে যস্য সং। কিঞ ন ব্যক্তং কিমুক্তং ইতি বোজু মুশক্যং রাব আর্ত্তনাদে৷ যস্য সং। সহবালঃ শ্রীক্ষবালগোপাল সহিতঃ। ব্যক্ত মূর্তঃ ব্রক্ষধ্যে নিতরাং পৃষ্ঠতঃ সর্মান্তপাত্যপত্তং। পূর্বং পৃতনারাঃ পাদাদি বিক্ষেপেণ মহার্তনাদেনচ ব্রক্ষবাসিনাং মহাভন্নং ব্রহ্মাসীৎ তদ্ধুনা মাভূদিতি গণগ্রহ-পেন নভস্যেৰ মারণং প্রত্থৰ নভসি গ্রমার্থং ভূণাবর্ষেন স্বস্য হারণম্পীতি তবং॥

শিলারাং পশুপাদ সম্মর্দ কর্দমান্তরবার্থং গৃহান্তিকে শিলাবন্ধ ভূভাগ এব নম্বন্যস্য কস্যচিত্রপরীত্যর্থঃ। অনেন পূতনাবং বৃক্ষবর্গ-চূর্ণং পরিস্বতঃ। অতএব বিশেষতঃ শীর্ণা ভয়াঃ সর্ব্ধে অবয়বা ষদ্য করালং কঠিনতরাক্ষপি। যন্ধা অতএব করালং রৌদ্রং। আকা-শারিক্টেইতয়া পতনে দৃষ্টান্তঃ পূর্মিতি। তক্রাণি বিশীর্ণেত্যাদি যোজ্যং। সমেতাঃ শ্রীয়েশোদা পার্শ্ব মিলিতাঃ। যন্ধা অন্যোন্যং মিলিতাঃ সড্যো ক্লন্তঃ। ক্লত্যো বা সমেতাঃ সর্ব্বাএব যুগপদ্দশৃতঃ। যতঃ স্ত্রিয়ঃ স্ত্রীম্বেন প্রেম কোমল স্বভাবতঃ মেছ বিশেষে প্রীক্ষণা-সক্রচিত্তা ইস্ক্রেখা। অতএব তাসাং শোকাধিক্যেন শীক্ষ তদপনোদনার্থং তাসামেবান্তিকে নিপাতনাদানৌ তাঁভিত্তদর্শনং॥ ২৪॥

ভতঃ শীক্ষ দুইবতীনাং চেটামাহ প্রদায়েতার্ককেন। হত্তমর গৃথীতালগণাত্রসি লখমানং। পূর্বমাবেগন্য বলবস্থাং পশ্চাদেব বিশ্বয়ঃ। দৈত্যোরসি লখমানথেনাল ভালাভাদিনা তল্যাঃ প্রম ভাগ্যাহ্বদ্ধানেন্চ বিশ্বিতাঃ। অনস্তর্কী যমুনায়ামেব তচ্ছনীরং বাংগামাহ্ব বিভিজ্ঞেয়ং॥ ২৫॥

ৰভিমন্তং সৰ্বাধা কুশলিনং বাভিমন্তমেবাছ বিহারদা পুক্ষাদেন নীতং অতে। হল্মদৃশ্যাগম্ভানে ভক্ককেণ নীত্ৰাল্ভ্যুত্লাদ্য ক্ষমদৰ্ভ: i

অশ্বস্তমিতি ব লোপশ্চান্দস: १ ২৪। ২৫। ২৬॥

# विविधनाथठकेवर्छी।

গৃহীতঃ তেনৈৰ ৰাল্যলীলয়া অপতন ভয়াদিতি ভাবঃ। অকান্তমিতি যুবোরনাকাবিতিবৰলোপ শ্হান্দসঃ। অখানমিতি পাঠে মড়ু-বোপশ্চ। অশাৰ্ণমিতি পাঠে অভাৰ্ণবং শিলা সমুভমিবেতাৰ্থঃ॥ ২৪॥

তভোরদি শ্বনানং কৃষ্ণং আদার মাত্রে প্রতিষ্ঠ্য বিশ্বিতা বকুবু:। উর্গীতি কৃষ্ণতা বাধার্ভাবং স্তিতঃ। সম্বর্তা পৃথিপ্রদেশ এব শিলা পতিভ্রাম ॥ ২৫ ॥`

বিহারদা গগণমার্গেণ পুরুষাদেন সমুষ্যভক্ষকেণ নীতং অতএব মৃত্যো মুপাদিব মুক্তং ॥ ২৬ 🛔 🕡

আসিল শত্তএৰ শ্বাক্ত থাক্তি করিতে ২ গতাহা হইনা বালক সহিত উপ্তমধ্যে পড়িয়া গেল। হে রাজন্। শত্তরীক হইতে শিলাতলৈ পতিত হওয়াতে দেই ঘোর দাদবের সমুদায় শব্যব বিশীর্ণ হইয়া গেল। তদনভর অকাননাগণ রোদন করিতে ২ ক্ষত্রবাণে নির্ভিদ্ধ অপুরাহ্বের ন্যায় ভিদাস ঐ দৈতাকে দেখিতে পাইল ॥ ২৪ ॥

এবং তাহার বৃদ্ধান্ত লাখিত জীকুষ্ণকে সইয়া মাতৃহতে সমর্পণ পূর্বক যৎপরোনাতি বিস্ময় প্রকাশ করিতে লাগিলেন॥ ২৫ ॥

ভয়কর দাদব গগণনার্গে লইমাপিয়াছিল, তথাপি বালক মৃত্যুমুখ হইতে মৃক্ত হইয়া আসিয়াছেন

বোপ্যশ্চ গোপা: কিল নন্দম্থান লব্ধ। পুন: প্রাপুরজীব মোনং ॥ ২৬॥ অহোবতাত্যভূতমেষ রক্ষসা বালো নির্ত্তিং গমিতোহভাগাৎ পুনঃ।
হিংস্রঃ স্বপাপেন বিহিংসিতঃ বলঃ সাধুঃ সমন্বেন ভরাৎ অমৃচ্যতে ॥ ২৭॥ কিং ন স্তপশ্চীলমধাক্ষজার্চনং পুর্তেই দত্তং বত ভূতসোহনং।
যৎ সংপরেতঃ পুনরেব বালকো দিক্ট্যা স্ববদ্ধু প্রেশ্বর পক্তিঃ।

# व्यथत्रवासी।

পরস্থারং হর্ষকথা মাহু: অহোবতেতি। নির্তিং গমিজঃ মৃত্যুং প্রাণিজঃ কোহত্র বিশ্বরো বুজাতে এবৈতদিতি তেখেব কেচিদাহুঃ হিংস্র ইতি॥ ২৭॥

নোহশাভিন্টীণং কুডং পূর্তং বাপি কৃপাদি নির্মাণং ইষ্টং পঞ্চজায়িছোতাদি ছতং লানং যদবস্মাত্রপ আদে: প্রণয়ন্ হর্ষয়ন

### देवकवरणावनी।

তসা হারদেন মূথং প্রাপ্তমণি তত্মাৎ প্রকর্ষেণ ক্ষতাদি রাহিত্যেন মৃক্তং উর্করিডমিতি। যদা। বিহায়দা প্রুষাদেন নীতমিতি অত্যুচ্চপাতাদি সম্ভবাৎ সাক্ষামৃত্যু মুখমিব প্রাপ্তমণি জন্মাৎ প্রমৃক্তং। গোপ্যঃ জীক্ষাদাদাঃ তাসামাদে মির্দ্দেশভাভিঃ প্রাক্ লক্ষাৎ স্বেহবিশেষেণ মোদাধিক্যান্ত। গোপাশ্চ কিল নিশ্চতং ভাদৃশং কর্বা পুনরপি পুতনাদি ভরাপেক্ষরা কিছা জন্মাপেক্ষর পুনর্জাতমিবেত্যথঃ॥ ২৬॥

এবং তেরাং নির্ম্ভরং সেহ বিশেষ এব ব্যবদ্ধত। নচ তিছিদাতক্মীশ্বর ক্লানং বৃত্তমিত্যন্যোন্যং তেবাং হর্ষার্ত্রবৈশ্য ক্ষরে।
বতেতি এ পরম বিশ্বরেহত্যন্তহর্বে বা। অত্যন্ত্তমেবাহুরের ইত্যাদিনা। এব একৈকপ্রাণ রূপণ পরম স্কুমারোহভিনবং বালং কিঞ্চিদিপি
কর্ত্বমশক্ত ইত্যর্থং। নির্দ্তিং গমিতোহিপি পুনরভ্যগাৎ অন্তদভিমুখং প্রাপ্তঃ। অতি অভরং যথাস্যাত্তথা বা শত্রোরপি মরণাৎ। নাহুতং
চৈতদিত্যাহং হিংস্ত ইতি, বিচারহীনং জিঘাংস্থং থলো বঞ্চকং অতঃ স্বগাপেন বিহিংসিতঃ সাধু হিংসামাত্তাদি দোব রহিতঃ সম্বেনাম্ব বৎ পরম স্থুপ ছংপ দর্শনজেন পুণ্যেন প্রমুচ্যতে প্রমৃক্ত ইত্যর্থং। এবং পুনং পুন রূপক্তবেণ ছাইকংসাদিচিন্তা ন কার্ব্যতি ভাবং।
সাধুরিতি শ্রীনন্দম্দিখোক্তং গোপ স্বাধারণ বাক্যথাৎ। যহা হিংস্প ইত্যাদিকমর্থান্তর্ন্যানে ত্রচ বিহিংস্যত ইত্যর্থং ॥ ২৭ ॥

পুন: প্রহর্ষণাত্মভাগামভিনন্দত্ত তথৈবাছ: কিমিতি অধোক্ষরসার্চনং যত্মাত্তদর্শিত্তাৎ তত্তকি সাধক্মিতার্থ:। স বৈ পুংসাং পরে। ধর্মো যতো ভক্তিরধোক্ষর ইত্যকে:। তাদৃশং তপ আদি। ত্রুত্ত তপ: রুজ্ঞাদি পূর্তাদিকক্ষোক্রং। বাপী কৃপ ভড়াগানি দেবতার-তনানিচ। অর প্রদানমারামা: পূর্তমিত্যভিধীয়তে। অগ্নিহোত্তং তপ: সিহুং বেদানাঞ্চাত্মণালনং। আতিথাং বৈশ্রদেবঞ্চ ইট্নিত্য-

#### ক্রমসম্পর্ড:

যুবোরনাকাবিতি জ্ঞাপকাং। প্রমূচ্যতে প্রমুক্ত ইত্তার্থ:॥॥ ২৭॥ স্বধোকজপ্রীণনার্থং তপ স্বাদি॥ ২৮॥

# 🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

এবং বালকেংশি মহাত্মর হস্ত তলক্ষণেনৈশব্যাণ প্রকটোত্তনাশি তেবাং নন্দাদীনাং বাৎসন্তাং ন জন্ত্রাস প্রজ্যতাবর্ধ ভৈবেত্যাহ জাহোবতেতি ত্রিভি:। জত্তাদিশি বদভূতং তত্মাদণ্যভূতমেতৎ যদেষ বালো নির্ভিং অমঙ্গল ব্যঞ্জ্যারণ নাশাদি শব্দেন বজু মনহাহিদ্দশাং প্রাণিতোহশি অভ্যাগৎ পুন ব্দু নামভিমুখং প্রাপ্ত:। কোহত্ত বিদ্বারা যুজ্যত এবেতি ভেষেব মধ্যে কেচিলাছ: হিংক্র ইতি স্থিপনে নিরপরাধ নব বালক হরণলক্ষণেন। সাধু বালকঃ সমজেন বালজাদেব শক্ত মিত্রাদিব তুল্য বৃদ্ধিষ্টেন ॥ ২৭ ॥

শ্রীনকানবন্ত যদ্যস্য ধানভামকলমভবিষ্যন্তদা সর্কে বরমরিষ্যামৈবেত্যভো হস্মাকমেবৈত্তহত্তর স্কৃতক্লমিত্যাহঃ কিমিতি।

এত দর্শনে স্পৌদিসের এবং নন্দানি স্কেলের পুনরায় অসীম আনুনা ক্রিল । ২৬ ।

উাহার। হাই হইয়া পরস্পার কহিতে লাগিলেন, অহে। এ অতি আক্ষা । এই বালক জ রূপ কর্মকর রাক্ষ্য কর্তৃক মৃত্যু হল্তে, হাপিত হইয়াও পুনন্ধার মাসিলেন, সেই এল হিংক নিজ পালেই বিহিংসিত হইয়াছে, সত্য বটে, সাধুলোক সমন্ব হেতু আপনা হইতেই ভয় ইইতে মৃক্য হন ॥ ২৭॥

মাহাঁ হউক, আমরা কি তপদ্যা কি বিশ্বপূজা, কি কৃপ বাপী প্রাকৃতি নিশাণ জন্ম পুণ্য, কি পঞ্ যজ্ঞ, কি অগ্নিহোত্রাদি যাগ যজ্ঞ, কিয়া দান ধর্ম, ক্রিয়া ছিলাম বলিতে পারি না, যে হেছু সেই সকল তপদ্যাদির প্রভাবে আমাদের এই মৃত বালক ভাগ্য ক্রেই আত্মবন্ধ্রীগের আনন্দ বর্ষন পূর্বক দৃষ্ট্বাহ্তানি বহুশো নন্দগোঁশো রহ্বনে। বহুদেব বচো ভূয়ো মানয়ামাস বিশ্বিতঃ। একদার্ভকমাদায় স্বাক্ষমারোপ্য ভাবিনী। প্রস্কুতং পায়য়ামাস স্তনং স্নেহপরিপ্লুতা॥ ২৮॥ পীতপ্রায়স্য জননী স্থত্স্য রুচিরশ্বিতং। মুখং লালয়তী রাজন্ জ্ভতো দদৃশে ইদং॥ ২৯॥

#### धीशतयांत्री।

ভূপাবর্ত্তাবগমে দৃষ্ট গৌরবাশন্ধিনীং প্রসং। বোধরন্ দর্শরামাস জ্ঞুমাণো মুখে জগং॥ ২৮॥ পীতপ্রারস্য পীতঃ প্রায় ন্তনো যেন ভূস্য॥ ২৯ ॥

#### देवकबद्यायगी।

ভিধীরতে। শরগাগত সংত্রাণং ভূতানাঞ্চাপ্যহিং সনং। বহির্বেদ্যাঞ্চ যদানং তদ্দত্তনভিধীরত ইতি। যদাধোক্ষস্যার্চনে রূপং তপ আদি। তত্র তপ একাদশীব্রতাদি পূর্তাদিকঞ্চ তৎ সেবাক্ষত্বন ক্রুমিতি জ্ঞেরং। এব সাদৃশ্যে সংপরেত ইব পুনরপি স্ববদ্ধু প্রণয়ন্ কুর্বন্ স্বন্ধনান্ জীবয়ন্নিতি যাবং। উপস্থিতঃ সমীপমাগতঃ॥

এবং সামান্ততঃ সর্ব্বেষাং শুভগবতি সেহভূরো দর্শিতঃ বিশেষতশ্চ শ্রীবন্ধবেদ্রস্যোৎপাত নির্দ্ধারেণ পুনন্তৎ শক্ষাসৌ ব্যবন্ধততরা-মিত্যাশরেনাই দৃষ্ট্রেত। বছলঃ ইত্যানেনান্যান্য শ্রীভগবত স্তাদৃশালি চরিতানি হৃচিতানিচ শ্রীমথুরা লোক প্রসিদ্ধানি শ্রীধরাখ্যছন্ত্র বিপ্রাভিডব চাত্রীমরাদীনি শ্রীমূনীক্ষেণ রাক্ষো হলায়ুইেনামুক্তান্যপি জেয়ানি বৃহদ্বন এব নান্যত্ত্রেতি বিশেষ শক্ষানিদানং এবং এজানক্ষাৎ পৃথিবীপালনাক্ষ নুন্দ্রগোপ ইতি শ্লেষঃ ॥

ৰজত্তম: স্বভাবং মন্তামকং শুক্ষমানিদং। নিম্নিজান্ ৰিভন্নীতি ত্ণাবৰ্তজ্ঞহানপি। অথ পূৰ্ব পূৰ্ব ভয়াও পুনরনিষ্টাশক্ষা ভয়ান্তীমিব তাং সান্ধ্যিত্ং লীলাশজ্জিবেব তদ্মিন্ কঞ্চিৎ প্ৰভাবং দৰ্শনতি একদেত্যাদিনা। আদান্ন পল্যক্ষিয়াং দন্ধানং তং ততো গৃহীবা ভূমৌ ক্রীড়ন্তং ততো বা বলান্গৃহীত্বা ভাবিনী স্বভাবতঃ সম্ভাব যুক্তা বিশেষত স্কাদৃশ পুত্রদেহরসেন পরিপ্লুতাত্যবং নিমন্না মত্তএব প্রদুতং প্রকর্ষেণ বস্ত্রাদ্যালীক্রণেন সদা ক্ষরৎস্তন্যং॥ ২৮॥

পীতপ্ৰারভেতি। পীতা গাবো বিভক্তা প্ৰাতর ইতিবং কর্ত্তরি ক্ত:। ভাবক্তান্তাং পীতং পানং প্রায়মীনদসিদ্ধং বক্তেতি বা। টীকাদতে অনশব্দোপোহত্রার্থ এব। জননীতি স্কৃতভেতি লেহ ভরং বোধন্তি তক্তচ ক্লচির্মিত ইতি প্রম্যোল্যাং অতো লালমন্তী ভূত্ত্বমাণ্য তলালনং অনিতানলতরালভেন ভূত্তাং কুর্মতঃ স্তঃ মুখে মুখবিবরাত্তঃ। দিতীরাক্ত পাঠে মুখং লালম্বতী তদ্ধারা জঠেরে দদ
লেতি ক্ষেরং। ক্রংমত চাত্ত জঠেরে জনতা ইতি বক্ষান্ততঃ সপ্তমাত্তঃ পাঠ এব তেবাং সম্প্রতঃ। অগ্রেহপি মুখে দর্শনত ব্যাধ্যানাদিদ
মন্মাতি বিশ্বত তদেব বিশ্বং ন্যত্তং ত্বা বিগ্রহ্যাচিন্তাশক্ত্যা বিভূম্যান্তি ভাবঃ। অতথব তত্ত বিশ্বত সম্পর্কো নাতি তত্তকং-

### ক্রমসম্বর্ড:।

পীতেন্তি। পীতা গাবো বিভক্তা ভ্রাতর ইন্ড্যাদি প্রয়োগ দর্শনাৎ কর্ত্তরি ক্তঃ আগন্তপ্রার ইভিবং। ইনং যদম্বাতি দৃশ্যিতে তদেব নান্যমিত্যচিক্তাপক্ষ্যা তন্য বিগ্রহন্য বিভূষং দর্শিতং জগহ্দরম্বং প্রলমে তদংশাংশন্য গর্ব্তোদশায়িন ইন্ডার্থ:॥ ২>॥ ৩০ ॥

#### ত্ৰীবিশ্বনাথচক্তবৰ্তী।

চীর্ণং ক্বতং। পূর্ক্তং বাগ্যারি নির্দ্ধান্ত ৷ ইটং পঞ্চয়কাদি। মং যশ্মাৎ তপ আনে:। প্রণয়ন্ কুর্মন্ হজন্ জীবন্দিতি যাবং। প্রণয়-বতঃ কুর্মদ্বিতি বা ॥ ২৮ ॥

প্রীতপ্রার্ন্যেতি। প্রীতা পাৰো বিভক্তা ভাতর ইতিবং'কর্তনি জ:। তদং পীতবংপ্রার্ন্যোত্যর্থ:। মূদে মুদ্ধবিদ্যান্ত:। বিতীয়াত পাঠে মূশং নানান্তী ক্রমানা বঠনে মদলৈবৈতি জেনং। তুংনস্য চাত র্কঠনে জনন্যা ইতি ক্রম্ভতে:। ইন্মন্দ্রশাং বিখনেব তদীন

পুনরার আসিরা উপদ্ধিত ইইলেন। হে রাজন্! গোপরাজ নক এই প্রকার নিজ বাসন্থান বৃহৎনে বহু বহু অনুত স্থান করিয়াছিলেন। তদনন্তর এক সময় যশোদা বালককৈ জোড়ে অর্থণ পূর্বক স্নের পরিয়াত হইয়া প্রস্তুত তন পান করাইতে ছিলেন। ২৮॥

শিশুর প্রায় তান পান হইয়াছে,জননী লইয়া লালন করিতেছেন, এমত সময়ে এ বালক একবার

थः द्राप्तमी त्याि उनीक्यां माः मृर्याम् विष्ट यमनायुधीः मह দ্বীপালগাং স্তদ্ধিত ব্নানি ভূতানি যানি স্থিরজঙ্গনানি।

সা বীক্ষ্য বিশ্বং সহসা রাজন্ সংজ্ঞাত বেপথুঃ। নিমীল্য মুগশাবাক্ষী নেত্রে আসীৎ স্থবিস্মিতা ॥৩০ ॥ \* ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষত্কে শকট-ভপ্তন তৃণাবর্ত্তবধো নাম সপ্তমোহধ্যায়ঃ॥ 🗱 🛭 १॥ 🛊 ॥

शिशतयामी।

নগান্ গিরীন্ তদু হিতৃ ন দী: ॥ ৩० ॥

॥ \* H ইতি দশ্যে সপ্তম: ॥ \* ॥

#### देवस्थवर जारुगा।

শ্ৰীভগবহপনিষংস্ক । ময়া তত মিদং সৰ্কাং জ্বগদব্যক্ত মূৰ্তিনা। মং স্থানি সৰ্কা ভূতানি নচাহং তেলবস্থিত:। ৰচ মংস্থানি ভূতানি পশ্র মে যোগমৈশরং ইতি। জগহনরতার তদংশাংশ গর্ভোদকশায়িন এব তচ্চ প্রালয়কালে স্ক্রতীয়বেতি ॥ ২৯॥

ইদন্তাপরামৃষ্টমেবাহ থমিতি। অন্তরীক্ষা রোদদী দিবং ভূমিঞ্চ এবং ভূবঃ স্ব ভূ রিতি লোকত্রয়ং॥

বীক্ষা সাক্ষাদৃষ্ট্য। সহসাহকত্মান্যুগপচ্চেত্যমরঃ বিশ্বমেশবং জগদেব ইত্যস্কুক্রমপ্রি তৎ কারণাদিকং সংগৃহীতং জচ্চার্তো পুনর্বিদ দর্শনে বৈকারিকানীত্যাদিন! ব্যঞ্জরিতব্যং। সংজাত বেপথুঃ পরমান্ততত্বেন উৎপাত শঙ্কয়া বা। নেত্রে সংমীশ্য তদদর্শনার নিজা-ক্ষিণী মুদ্রম্বিদানেন নিজাভ্যাং বহির্নেআভ্যামেবৈকলৈব তদ্ধর্শনং বোধিতং। নচ দিব্য দুষ্ট্যাদি প্রাপ্তি: প্রত্যুত ততঃ এক্সিফপ্রেমা-নন্দ লক্ষ্যা এব দাসীয়মানা কাচিদিয়মপি শক্তি গুদ্যাং বর্ত্তইতি লক্ষ্যতে নেত্র নিমীলনাদনাদুত্যৈর সেতি তর্ক্যতে। তত্ত্তং নারদ পঞ্চরাত্রে। হরিভক্তি মহাদেব্যা: সর্ব্বা মুক্ত্যাদি দিন্ধয়:। ভুক্তরশ্চাস্কৃতা স্ততা শেটিকাবদমূত্রতা ইতি। তথাপি তদানীমন্তুতছান্তাদুশ লীলোদয়াবসরে স্বদাস্যমেব ফলয়ন্তী বিস্ময় ধারা তামান্মেশ্বরী মুল্লাস্মিত্মেব মহুবর্তত ইতি চ গম্যতে। মুগশাবান্দীতি মুনে এক্লঞ্চ বাংসল্যময় বিশ্বর শোভা বিশেষ বিরোচমান তন্মাতৃলোচন সহজ সৌন্দর্য্য ক্রণোল্লাসময়ং বচনং॥ ৩०॥

॥ \* ॥ देखि चीरेक्कवरणावन्ताः मन्त्र विश्वकाः मश्ररमारशावः ॥ \* ॥

#### क्रमननर्जः।

॥ \*॥ ইতি শ্রীদশমে শ্রীজীবগোস্বামি ক্বত ক্রমদলর্ভে সপ্তম: স্বাপ্ত: ॥ \*॥

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

বিগ্রহ্স্য মাতৃক্রোড়গতস্যাপ্যচিত্ত্যশক্ত্যা বিভূত্বেন সর্ব্ব জগদধিষ্ঠানত্বাৎ। জুন্তিত ইতি জুন্তণোচিত ক্ষণেপি সবিশেষ সর্ব্ব বিশ্ব-দর্শনমচিন্তাশক্তৈয়ব নিশাদিতং॥ ২৯॥

নগান বীপাধ্যাকরান্ জন্বাদি বৃক্ষান্ পর্বতাংশ্চ তদ্ হিতৃ ন দী:॥

সহসা অকল্পাং যুপ্পচ্চ। সংস্থাত বেপধুরুৎপাত শঙ্কা। সংশীল্যেতি শ্রীবিষ্ণুধানার্থং ভগবরারায়ণ রক্ষ রক্ষ মংস্কৃতমন্মাহৎপা-তাদিতি বিজ্ঞত দৃষ্টিছাৎ মুগুলাবাক্ষী। পুতনাদি বধৈষর্য্যং ন প্রেম সমচুকুচৎ। প্রত্যুতাবর্দ্ধয়তিশিক্ষর। নন্দভাগ্যাদি হেতুনাং তত্রাভুদ্বদি কল্পনং। তত্তা নির্হেতুরেবেয়নৈশ্বরী শক্তিরাগতা। বিভূত্ব দর্শিকা ক্লফদেহস্য ক্ল্টমেবহিত্ত তথাপি বিশ্বিতৈ বাসীন্মংপ্লুল্যেদমদ্য কিং। নছৈশাজ্ঞান সন্ত্ৰাস্ত্ৰ্যা বাৎসন্ত্যে শিথিলাভবং। নচাত্ৰ সন্তবেৎ কিঞ্চিৎ পূৰ্ববদ্ধেতু কল্পনং। ভচ্চাপি বস্তুতো গাড়তপ্রমোর্শিনীরমের হি। ইতি নিক্ষপতা প্রেম: খ্যাপিতা স্যান্ত্র হুই। এবঞ্চ। প্রেমদেব্যা পরীকার্থমাগচ্ছস্ত ক্রান্তরা। শক্তিরেষা হরেঃ কি র তীয়া দাসীক্তা ভবেদিতি ॥ ৩• ॥

॥ 🛊 ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। দশ্যে সপ্তমোহধ্যার: সঙ্গত: সঙ্গত: সতাং ॥ 🛊 ॥

জ্ঞা ত্যাগ করাতে তাঁহার মনোহর হাস্য যুক্তু আস্য মধ্যে যশোদী লেখিতে পাইলেন ॥ ২৯ ॥ আকাশ, বর্গ, মর্ত্তালোক, জ্যোতিশ্চক্র, দিক্, সূর্য্য, চন্দ্র, অমি, বায়ু, খীপ, পর্বত্, নদী, অরণ্য 'এবং স্থাবর, জন্ম ও সমুদায় ভূত দেদীপামান। হৈ রাজন্। পুর্জের বর্দনর্যটেগ ঐ প্রকার বিশ্ব নিরীক্ষণ করিয়া ভয়ে যশোদার হুৎকম্প উপস্থিত হুইল, নেত্রদ্বয় নিমীলন করিয়া ক্ষণকাল যুৎপরোনান্তি বিস্মিতা **হইয়া রহিলেন ॥ ৩**০ ॥ ॥ 🚁 ॥ देखि तुर्गास गथम ॥ 🛊 ॥

বাদরায়ণিরুবাচা

গর্গঃ পুরোহিতো রাজন্ যদ্নাং স্বমহাতপাঃ। ব্রজং জগাম নন্দস্য বস্থদেব প্রচোদিতঃ। তং দৃষ্ট্বা পরমপ্রীতঃ প্রত্যুপায় কৃতাঞ্জলিঃ। আনর্জাধোকজধিয়া প্রণিপাত পুরঃসরং। স্পবিতং কৃতাতিথ্যং গিরা সূন্তয়া মূনিং। নন্দয়িজা-ব্রবীদ্রান্ পূর্ণস্য করবাম কিং॥ >॥ মহিছিচলনং নূণাং গৃহিণাং দীনচেতসাং। নিঃশ্রেষ্সায় ভগবন্ কলতে নান্ধা কচিৎ॥ ২॥

# विधव्यामी।

শ্বষ্টমে নান কর্মান্য বালক্রীড়া কুত্হলে। মৃত্তকণাভিযোগেচ বিশ্বরূপং নিরূপ্যতে। বিশ্বরূপাদি বালন্য নিশম্যাশ্হিন: পিতৃ:। নামকুল গর্গবাকোন নিজ্ঞত্মস্ফুচং ॥ ১ ॥

পূৰ্ণশেও কথং ধনিনাং গৃহমাগতঃ তত্ৰাৰ মহৰিচলনমিতি। মহতাং স্বাশ্ৰমাদদাত্ৰ বিচলনং ন স্বাৰ্থং কিন্তু গৃহিণাং মঞ্চলায়। নমু

### देवकवटकावनी।

এবনৈষ্য্য সম্বলিতঃ বাল্য চরিত্তমন্ত্রমারণ প্রদূদেন লীলীস্তর ব্যম্ভরিত্মপ্যক্ত্র। পুন: পরার্ত্য কেরলং বাল্য স্বাভাবিকং পর্ম মনোহরং যথাক্রমং কথর্রাদৌ দিগবি শিব শতাহে ইতি জ্যোভিঃশাত্রাভিপ্রারেণ প্রার: শতত্ম দিনে নাম কর্ণমাহ গর্ম ইত্যাদিনা জন। ইত্যন্তেন হে রাজ্মিতি পূর্ব্ব দীলা প্রবণ স্থাবিষ্টং রাজানং কথান্তরে হবধাপরতি স্থমহাতপাঃ জনীর্বাচনিম ভাগ্যবান্ যেন শ্রীবন্ধ-দেবস্য শ্রীনন্দ্যা শ্রীক্রক্ষ্যা হৈবং প্রমাশ্বীয়তাং প্রাপ্ত ইতি ভাবঃ ॥

আনর্জ নন্দ ইতি শেষঃ অধোকজুধিয়া প্রমেশ্বর ইব ভক্তোত্যর্থঃ। ত্পবিষ্টং পাদ প্রকালনাদিনা পথি প্রমাপনোদনেন সদা-সনে স্বথোপবিষ্টং কৃতং আভিষ্যং মধুপকাল্যপণ লক্ষণং যদ্য তং তন্ত্রা মধুর তোত্ত ক্রপন্না মূনিং নন্দাভিপ্রেত প্রবণান্ন প্রাক্ত্রত মৌন মিত্যর্থঃ পূর্ণস্ত শ্রীভগবস্তক্তা দিল্প সর্বার্থদ্য তত্ত্ব জন্ হে সর্ববেদার্থ জ্ঞানেন বৃহত্তম। ভগবান্ বন্ধ কার্থদ্য বিরশীক্ষ্য ইত্যাদিনা বেনদ্য সুইব্যাদিনাচ তন্তকাবের তৎপর্যাবসানাৎ ॥ ১ ॥

মহতাং প্রীভগবৎ সেবাদি নিষ্ঠশ্বাবিশেষেণ চলনং স্বস্থানাদন্যত্ত দূরে গমনং নূণামিতি স্বভাবতঃ ক্রহিক পারলৌকিক কর্ম পরাণা-

# ° ক্রমসন্দর্ভঃ i

অধোকজধিয়া তদধিষ্ঠানছেনাডেদ দুই্ট্যা ॥ ১ ॥ ২ ॥

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

অস্ত্রবধ প্রসন্থ সম্প্রতার তৃণাবর্ত্ত্বধ মৃক্ত্ব। তৎপ্রাচীনানি নামকরণাদীনি চরিতানামুশ্বতা বকুমুপক্রমতে। গর্গঃ পুরোহিত ইত্যাদিনা॥১॥

পূর্ণস্থ তব কিং করবাম অপি তুন কিমপি কর্তু মহাম ইতার্থো বা। কিং শব্দয় প্রশার্থবাং পূর্ণস্থ তব কিং অপেক্ষিতং বর্ততে তপ্ ক্রিই বরং করবামেতার্থো বা। আদ্যে মম অকা হাগমনস্য বৈর্থাং। বিতীয়ে পূর্ণহস্যেতি চেলাবম্ভর রাপ্তিরং ন বার্থং প্রত্যুতা-ভিনন্দনীরখাং পরম সার্থকং ক্লপাপারবশ্যাৎ সনৎক্ষার বামনাধীনাং পরম পূর্ণানামপি পৃথু বলি প্রভৃতি গৃহাগমনস্য দৃষ্টবাদিত্যাহ

শ্বভ্রমাধ্যায়ে শ্বভ্রমাধ্যায়ে শ্রীক্ষের নামকরণ এবং বাল্যক্রীড়া কুড্হলে তথা মুদ্তক্ষণাভিযোগে বিশ্বরূপ নিরূপণ বর্ণিত হইতেছে॥ •॥

শুকদেব কর্ত্ক প্রেরিত হইয়া নক্ষান্দিরে গমন করিলেন। তাঁহাকে দর্শন করিয়া নন্দের পরম প্রীতি জন্মিল, কৃতাঞ্চলি হইয়া প্রস্থাপান করিলেন, পুরে বিষ্ণু বৃদ্ধিতে প্রণিপাত পুরঃসর যথাবিধি সর্কেনা করিলেন, মুনি আতিখ্য আহ্ব পূর্বক স্থাসীন হৈলৈ সূমৃত বাক্য দারা আনন্দিত করত নন্দ বলিতে লাগিলেন জন্মন আপনি পরিপূর্ণ স্করপ, আমি আপনকার কি করিব १॥ ১॥

হে ভগৰন ! মহান ব্যক্তিগণ স্থীয় আশ্রেম হইতে যে জন্তে গমন করেন তাহা তাঁহাদিগের সার্থ নিমিত্ত নহে, গৃহিদিগেরই মঙ্গলার্থ, গৃহি ব্যক্তিরা অতিশয় ক্রপণ, ক্ষণকালের নিমিত্ত গৃহ পরিত্যাগ

# জ্যোতিষাময়নং দাক্ষাদযতজ্ জ্ঞানমতীন্দ্রিয়ং। প্রণীতং ভবতা যেন পুমান্ বেদ পরাববং ॥ ৩॥

# विधनवामी।

তহি তিএব মহদ্দৰ্শনাৰ্থ্য কিমিতি নাগছেতি ভতাৰ দীনচেভসাং ক্লণাদাং ক্লম্পি গৃহং ত্যক্তুং অশকু বভাষিত্যৰ্থ:॥

ত্বরা বালয়োনীম করণাদি করণীরমিতি বক্তু তস্য জ্ঞানাতিশরমাহ জ্যোতিবামরনমিতি। যদতীব্রির জ্ঞানসাধনং জ্যোতিবাময়নং তং প্রতিপাদকং জ্যোতিংশাস্ত্রমিত্যর্থ:। তেং সাক্ষাৎ তবতা প্রণীতং বেনান্যোহিপি প্রান্ পরাবরং পরং কারণং পূর্বজন্মন্তওং কর্ম অবরং কার্য্যং অন্মিন্ জন্মনি ভাবি ফলং তবেদ। উক্তঞ্চ জ্বাত্তকে যত্পচিত্রমন্য জন্মনি ভভাগুড়ং তস্য কর্মণঃ প্রাপ্তিং দর্শরতি শাস্ত্র-মেতত্ত্মসি দ্রব্যাণি দীপ ইবেতি॥ ৩॥

#### देवकवरजावनी।

মিতার্থ: তত্রাপি গৃহিণাং লায়া পুত্রাদীনামপি তত্তদিত ব্যগ্রাণাং অতএব দীনচেতসাং নিঃশ্রেষ্পান্ন সর্ব্ধ মঙ্গলান্ন ভগবন্ হে সর্বজ্ঞ ইতার্থ: প্রবৃত্তিক্ষেদিত্যাদি বচনাং। অতো বিজ্ঞানাং ভবিষধানামক্তেবু মিছিধেবু ক্লপনা অন্নমাগ্যনমূচিতদেবেতি ভাবঃ। করতে ঘটতে। অন্যথা দীনজন নিংশ্রেষ্পার্থ ব্যতিবেকেণ কদাচিদপি ন ঘটতে মহতাং নিংশ্রেষ্পাঃ স্থাভাব্যাং॥ ২॥

জ্যোতিবাং গ্রহাণাং। অন্ধনমিতি করণে নাট্। অন্নতের্গতার্থতন্য ক্রানার্থনাৎ করণস্যাপি হেতুদাৎ তৎ প্রতিপাদকমিন্তোবার্থ: তচ্চ প্রণীতমিত্যুক্তনা ক্রোতিংশাল্পমিত্যেব পর্যাবসীয়তে। কীদৃশং তৎ জ্ঞানং ক্রানান্তরস্যাপি সাধনং তথা অতীক্রিন্নং ইক্রিন্নান্যাচর জ্ঞান জনকথাত্যতিক্রান্তঃ। তদেবং বিশেষণদ্বস্যাতীক্রিন্ন ক্রানসাধনমিত্যেব নির্গলিতো হর্থ:। যদা ক্রনং জ্ঞানসাধনং শাল্তনিত্যথ: যদ্যমান্তরদাদির বিধ্যাতমতীক্রিন্নং ক্রানং স্যাৎ ইতি পরং পূর্ব্ব ক্রন্ন বৃত্তং অবরং এতুজ্জন্ম ভাবি কলং তৎ বেদেতি বালন্নোত্যক্তরতা কথনীর্মিতি ভাব:। তত্ত্ব পূর্ব্ব জ্লাব্যতি ক্রিন্নান প্রভাগনিত্র ক্রিন্নান্ত ভাবাত ক্রিন্ত ত্রান্ত পূর্ব্ব ক্রিনান্ত প্রান্ধন ধ্রতা ক্রিক্রান্ত প্রান্ধন ধ্রতা ক্রিক্রান্ত প্রান্ধন ধ্রতা জ্ঞান্ত পূর্ববৃত্ত কথনং। প্রান্ধ হ কণ্ডিৎ প্রন্ন ইতি ভচ্ছাল্লভ স্থামন্বাদি গুণ উক্তঃ॥ ৩॥

# क्रममर्जः।

জ্যোতিবাং গ্রহাণাং। অত্রায়নমিতি করণে লুট্। অয়তের্গতার্থতম্বা জ্ঞানার্থছাৎ। করণদ্যাপি হেতুছাৎ তৎপ্রতিপাদকমিত্যেবার্থঃ। তচ্চ প্রণীতমিত্যুক্ত্যা জ্যোতিঃ শাস্ত্রমিত্যেব পর্যবদীয়তে। কীদৃশং তৎজ্ঞানং তৎসাধনং। অতীক্রিয়ং ইক্সিমাণোচর জ্ঞানজনকত্বাত্তমতিক্রান্তঞ্চ। তদেব বিশেষণহুরুদ্য অতীক্রিয় জ্ঞানসাধনমিত্যেব নির্গলিতাহর্থঃ॥৩॥

# **बै** विश्वनाथहळावर्डी।

মহতাং স্বাশ্রমাদন্যত্র বিচলনং গৃহিণাং নিংশ্রেয়সায় পরম মললায় করতে সমর্থং ভবতি তদেব তেবামপেক্ষিতমঁপীতার্থ: নুণামিতি গৃহিবপি মধ্যে নুণামেব নতু দেবাদীনাং এবং নৃবপি মধ্যে গৃহিণামেব নতু ব্রহ্মচার্য্যাদীনাং। তত্রাপি দীনং তৃণাদিপি স্ক্রত্সম্মন্যং চেতো বেবামিতি তেবেব মহৎ ক্লপাধিকাসন্তবাৎ নতুত্তমম্মন্য কঠোর বক্রচেক্সামিতার্থ:॥ ২॥

বালক্ষয় নামক্রপার্থং প্রার্থনা বীক্সং স্কল্পাহ। জ্যোতিবাং গ্রহাদীনাং অয়নং জ্ঞাপকং জ্যোতিঃশান্ত্রং যদ্যতঃ অতীক্সিয়ং স্থানং ভবেত্তত্তবতা জ্ঞান্নত ইতি ক্সিং বক্তব্যং দ্বনা প্রদীতং ক্বতং যেনান্যোহপি পুমান্ পরমুত্তরকাল ভাবি বন্ধ অপরং পূর্ককাল ভূতঃ রন্ধ বেদ জানাতি তেন বার্দ্ধকে মম জ্ঞাতস্য পুত্রস্য জন্ম লগ্নাদিকং বিচার্য্য হত্তপাদাদি লক্ষণঞ্চ দৃষ্ট্য ভন্তাভন্তাদিকং কথনীরমিতি ভাবঃ॥ ৩॥

করিতে পারে না, মহাপুরুষেরা দয়া করিয়া বয়ং তাহাদের গৃহে আসিয়া দর্শন দেন। প্রভা !
মহাত্মাদিগের গৃহত্ব ভবনে আগমনের কারণ এতদ্যতীত অন্য ক্রেইকারই করিত হইতে পারে
না॥ ২.॥

হে ব্রহ্মন্ ! অতীন্তির জ্ঞান সাধন ধে প্রসিদ্ধ জ্যোতিঃশান্ত, তদ্বারা একণে জন্য পুরুষের অর্থাৎ পূর্ব্ জন্মকৃত কর্ম এবং অবর কার্য্য অর্থাৎ ইহ জন্মে ভাবি ফল অবগত হওয়া যাইতেছে, ভাহা সাক্ষাৎ আপনা কর্ত্ব প্রণীত হইয়াছে॥ ৩॥

ছং হি ব্রহ্মবিদাং শ্রেষ্ঠঃ সংক্ষারান্ কর্ত্তুমর্সি। বালয়োরনয়োনু গাং জন্মনা ব্রাহ্মণো গুরুঃ ॥॥॥ গর্ফ উবাচ॥

यम्नोगरमाठार्थाः था। তশ্চ ভূবি সর্বতঃ। হতং ময়া মংস্কৃতং তে মন্যতে দেবকী হতং॥ ৫॥ কংসঃ পাপনতিঃ স্থাং তব চানক ছুন্দুভেঃ। দেবক্যা অন্ট্রাে গর্ভো ন জীভবিতুমহ তি।

#### श्रीभन्यामी।

বিবন্ধিতমাহ সং হীতি। দৈবজো মন্ত্রিজ স্থু অতো নামকরণাদি সংস্থারান্ কর্তুমহ সীত্যর্থ:। নামত দা করণীয়ং ততাহ নুণামিতি॥ ৪॥

সভ্যংসাহিনং নশং প্রতি গুপ্তমেতং কার্য্যমিত্যভিপ্রায়েণ প্রত্যাচক্ষাণ ইবাহ যদুনা মিতি। ওবতু তথাপি স্বয্যাগত ইতি কো বিদ্যাদিতি চেদত স্বাহ থ্যাত ইতি। ততঃ কিমত স্বাহ স্কৃতমিতি কংসোমন্যতে মন্যেত ক্লয়েদিতার্থ: ॥ ৫॥

নত্ন যহকুমার ইতি কথঞিজ্ঞানাতু তত্রচ বস্থদেবস্য পুত্র স্তত্তাপি দেবকাাং **জাত ইতি কুতো জানী**য়াৎ তত্তাহ পাপ্মতিরিত্যাদি।

# देवक वट्ठावना।

হি যতো এফবিদাং শ্রেছো মহাভাগবতোত্তমতাৎ অতএব সংস্কারান্ জাতাহরপান্ জ্মানা জাতার কিং পুন জ্ঞানাদিনা ইতার্থ: ॥ ৪ ॥

যদ্নামিতি ত্রিকং। মুর্বতঃ সর্বস্যাং পাপমতি ছ' ইব্দিঃ। অপি হস্তা ইতি সম্ভাষনার্থস্যাপি শব্দন্ত যদীত্যর্থঃ হস্তা দেবুকীপুত্রাদিহনন-শীলঃ কংসো যদি প্রাপ্তাশতঃ স্থাত্তি সংস্কার কর্মানা কং মহানেবানয়ে। ইখ্যার রূপঃ স্থাদিত্যর্থঃ। টাকারাত্ত হস্তা গস্তা তদা সদ্য এবেতি ব্যাব্যেরং॥ ৫॥

তবৈদং জ্বেরং বিবিক্তে নামকরণ দিৎসরা ভরমুৎপাদয়তি। বস্তুতন্ত গত্যথান্ধন ধাতো গর্মনেন প্রাপ্সতি আয়াস্যতীত্যর্থ:। অপী-ত্যেব পাঠো যুক্ত:। যন্ত্যি দেবকীকতা বাক্যে জাতঃ থলু তবান্তর্কং যত্র কচিৎ পূর্ব্ধশক্ত রিত্যক্তা প্রাত্যতানকর্মূতি সম্বন্ধ শহাপযাক্রমসন্দর্ভ:।.

#### জনা জাতৈয়ব॥৪॥৫॥

# শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

কিঞ্চ এতাদৃশ মহাত্মভাবস্যাপি তব মদগৃহাগমনং মন্ত্রিপ্রেরদায়ৈব তচ্চ মম নিঃশ্রেরদ মৈহিকং পারলৌকিকঞ্চ তত্রৈহিকং নিঃপ্রেরদান বিশাদ্যমেকং প্রচরণের্ নিবেদরামি ক্রপন্ন পূল্বিড়াত্ত প্রমিতি। ন কেবলং জ্যোতির্বিদামেব তং শ্রেষ্ঠ ইতি ভাব:। তেনোভন্ন গুণবৃক্তমার্থনেব দৈবজ্ঞা মন্ত্রবিদ্ধ কর্ত্তমূহ সীতার্থ:। নমু তদগুণাকরণীয়মিতি চেত্ততাহ নৃণামিতি ॥ ৪॥

স্বরং বিভাদতাৎসাহিনং নন্দক কংসাত্রীধমাণ: স্থপ্তমেবৈতং কার্য়েক্সভিপ্রায়েণ প্রত্যাচক্ষাণ ইবাহ যদ্নামিতি। তব যত্ত্বেহিপি ক্ষত্রিষ্মাভাবার যত্ত্বগাতিঃ। স্বহত্ত যত্প্রোহিতত্বেন খ্যাতঃ মংক্লডামিদং ন গুপ্তং স্থাস্যতীতি ভাবঃ॥ ৫॥

দর্শতঃ দর্শন্যাং মন্যতে মংদ্যতে নবেতাবং কোংস্থাদায়তে তত্রাই কংদস্তদ্পি থয়িতু ব্রশ্বাদিনি দোষ্পি ন দ্রোই মাচরিয়াতীতি চেদত আহ পাপমতিঃ। মাদৃশান্ জিঘাংসতোবেতি ভাবঃ। কিঞ্চ ত্বাপাবশা মপকরিয়াতোবেত্যাই স্থামিতি। বস্থাদেবদ্রোইণঃ

অপর, আপনি ব্রহ্মবেতাদিগের মধ্যে শ্রেষ্ঠ, ইহাতে আপনি দৈবজ্ঞ ও মন্ত্রবিৎ, অতএব এই চুইটা বালকের সংস্কার সকল করিতে যোগ্য হয়েন। ব্রহ্মন্ গ্রাহ্মণজাতি জন্ম খারা মানব মাত্রের গুরু, আপনি সংস্কার করিলে তাহা গুরুক্ত হইবে॥৪॥

গর্গের মানস গোপনে সংক্ষার করেন, অতএব নন্দের অত্যর্থ উৎসাহ দর্শনে প্রত্যাখ্যান তুল্য বচনে কহিলেন নন্দ। আমি যদ্দিগের আচার্য্য বলিয়া পৃথিবৃত্তি মধ্যে সর্ব্বত্ত বিখ্যাত, আমি যদি তোমার পুত্রের সংক্ষার করি, লোকে এই পুত্রকে দেবকীপুত্র জ্ঞান করিবে॥ ৫॥

যদি বল, আপনি ষত্ত্তিগের আচার্য়্য, আপনি সংস্কার করিলে লোকে না হল্ন আমার পুত্রকে যতু-কুমার বলিয়া জানিবে, বস্থদেবেল পুত্র দেরকীগর্ম্ভে জ্মিয়াছেন ইহা প্রকাশ হইবার সম্ভাবনা কি? তাহাতেও বক্তব্য এই, তুরাল্ধা কংস পাপমতি, তোমারও বস্থদেবের সহিত সথ্য আছে অধিকস্তঃ ইতি সঞ্চিত্তান্ শ্ৰুত্বা দেবকীদারিকাবচঃ। অপি হন্তাগতাশঙ্ক স্তহি তল্পোহনয়ো মহান্॥ ৬॥ জ্ঞীনন্দ উবাচ॥

অনক্ষিতোহশ্মিনুহদি মামকৈরপি গোব্রজে। কুরু দিজাতিসংস্কারং স্বস্তিবাচনপূর্বকং। শ্রীশুক উবাচ॥

এবং সংপ্রার্থিতো বিপ্রঃ স্বচিকীর্ষিতমেব তৎ। চকার নামকরণং গুঢ়ো রহসি বালয়োঃ।

#### প্রীধবস্বামী।

কিং ময়। হতয়া মন্দেত্যাদি দেবকীকন্যাবচঃ শ্রুষা দেবক্যা অষ্টমো গর্ভো নস্ত্রীভবিতৃ মহ'তীতিচ নৈত্যং সঞ্চিত্রন্ সামান্যেন কচিদ-ত্রীতি জ্ঞাষা যুবরোশ্চ স্থাং সঞ্চিত্ত্রন্ মণ্গৃহে ভবেদিতি সংভাব্য মৎসংশ্লার লিঙ্গেন চাগ্তাশকঃ আগতা আশকা ব্যা সং হস্তা হনিঘাতি তর্হি তলো মহান অময়ঃ স্যাৎ ॥ ৬ ॥

দ্বিজ্ঞাতি সংস্থারং দ্বিজ্ঞাতীনাং অবশ্যক্তব্যং সংস্থাবমাত্রং কেবলং স্বস্তিবাচন পূর্ব্বকং কুরু॥ १॥

#### বৈষ্ণ বতোষণী।

ত্যেব তথা তাদৃশ বদ্ধস্য পুত্র সঞ্চারে স্থ্যমপ্সকিঞ্ছিৎকরং স্যাৎ তথাপি পাপ্মতিস্থাৎ তুর্মন্ত প্রবীণত্থেন ইদ্মাশক্ষিয়ত এবৈতি ভাবঃ মছক্রেবেব অসৌ অন্ত পুত্রত্যা জাতঃ কিন্তইন্তব শিক্ষয়া দারিকায়মানো মাং ছলয়ন্ নন্দগৃহং প্রবিষ্ট ইতি ॥ ৬ ॥

গোরজ ইতি স্থান সংঝারানপেকাচ দর্শিতা রহনীতি দিনে গবাং সপালানাং বনে গমনাং। বিজ্ঞাতিসংস্থারং যথাবং ক্ষত্র বৈখায়-রূপ নামকরণ লুক্ষাং। পুণাই স্থতি ঋদ্ধ বি ক্রিক্ট্যা স্থিবিচনং ভাং। স্বস্তিবাচন মন্ত্রাণাং পঠনক স্বতিরাচনং। যথা পুনস্থ মা দেবজনাঃ পুনস্ক মনসা ধিয়ং। পুনস্ক বিশ্বাভূতানি জাতবেদঃ পুনীহি মাং ইত্যাদি মন্ত্রাঃ। তক্ত সর্ব্বকর্মপাবভাকং ন বহির্লোক বেদ্যক্ষ স্থতঃ কেবলং তং পূর্বকং॥

তৰু জ জনৈরপালক্ষিতত্যা রহিদি তাদৃশ সংস্থার মাত্র করণং অক্ত কর্ত্ত্বিষ্টমের। নলু শ্রীভগবদৈশব্যাভিজ্ঞেন তেন কৃতত্বং ক্রতৌ সক্ষোচো ন ক্বতঃ তত্রাহ বালয়ো রিভি লোকহিভার্থং স্বভক্ত প্রনোদার্থং চ প্রকটিত বাল্যলীলয়ো স্তয়ো স্তদমূরপা লীলা তদীনৈশ্ব্য জ্ঞানিনামপি মোহিনীতি ভাবঃ। তত্র রহংস্থানে বালকদ্বগানয়ন তদ্দশিক গ্রানিক শুভাশীর্কাদাদিবর্ণনমূহং॥

# क्रगम<del>म</del>र्जः।

অপীতি সম্ভাবনাৰ্থসাল্যদীভ্যৰ্থ:। হস্তেতি শীলে হৃন্। হিংসাশীল: কংসো যদি প্ৰাপ্তশক্ষো ভবতীতাৰ্থ:॥৬॥৭॥

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

কংসদ্য বহুদেব সথে ছয়পি জোহ সম্ভবাদিতি ভাব:। তত্ত্বৈং কুযুক্তিং ভ্ৰহ্মণতীত্যাহ দেবক্যা ইতি দেবকীদারিকাবচ: শ্রুষ অইনো গরেনি ন স্ত্রীভবিতৃ মূহ্তীতি চিন্তমন্ ইত্যধন:। মচ্চ্জ্র বিষ্ণুবেব দেবক্যা গরে জাত এব কিন্তু বহুদেব শিক্ষা তদ্য স্থান শিক্ত গৃহে প্রবিষ্ট ইতি। দেবকীদারিকা বচ ইতি মদিইদেবী ভূগৈব দেবকীদারিকারপা ভূষা যত্ত্ব কচিচ্ছাত ইতি পদেন দেবক্যামপি জন্মসম্ভাব্য বিষ্ণু নিষ্ধেশক্ষয়েব মাং স্পষ্টমন্ত্রণ তন্ত্রিয়া শীঘং ক্ষহীতি মামতিব্যঞ্জনামাদেতি চিন্তমন্ তদ্যেষণে প্রবৃত্তা মন্নামকরণ শিক্ষেন আগতা নক্ষগৃহে বহুদেবহুতো, হস্তীত্যাশকা যদ্য তথাভূত: সন্নাগত্য যদি হস্তা হনিষ্টিত তহি নোহন্মাকং মহান্ অনমঃ। যদীতি অপীতি চ পাঠঃ ॥ ৬ ॥

ভাগ্যবশাদের মন্গ্রমারাতমীদৃশমাচার্য্য: কনা প্নরহং নপ্যে তন্মারাদিতাহাৎসবাদং দিনায়রে সবিস্থারং করিয়ে সাম্প্রতমদা কেবলং শাস্ত্রীয়নাবশ্যকং করুবেইবেড্ছারা কার্মামীতি মনলি বিভাব্যাহ অলক্ষিত ইতি। মামকৈ প্রাত্রাদিভিরণি গো ব্রজে ইতি "দেকীর অফ্রম গর্ব্ধে ব্রী হুইতে পারে না " ইত্যাদি যে বাক্য দেবকীর কন্যা কহিয়া যান, কংস তাহাই সর্বদা চিস্তা করিয়া থাকে, অতএব দেবকীর অফ্রমগর্ভের সন্তান কোথাও আছেন, ইহা নিশ্চয় করিয়া এবং তোমাদের উভয়ের স্থ্য দেখিয়া আমার কৃত সংস্কারকে চিহ্ল করত আশক্ষায় কংস যদি মারিয়া ফেলে, তাহা হুইলে তোমাদের মহান্শেনয় অর্থাৎ অশুভ হুইবে ?॥ ৬॥

নন্দ কহিলেন, ত্রহ্মন্ ! এই ত্রন্তপুর অতি নির্জ্জন স্থান, এখানে কংসের কোন লোক নাই, আমার লোকেরাও আপনাকে দেখিতে পাইবে না, অলক্ষিত হইয়া কেবল স্বস্তি বাচন করিয়া বালকের দিজাতি সংস্কার অর্থাৎ দিজাতিদিগের অবশ্যকর্ত্তকা সংস্কার্মাতি করিয়া দিতে আজ্ঞা ইউক। শুকদেব কহিলেন দ্বিজ্বর গর্গ এই প্রকার প্রার্থিত হওয়াতে সেই গুই শিশুর নাম করণাদি সংস্কার, অয়ং বৈ রোহিণীপুজো রময়ন্ স্থদে। গুণৈঃ। আখ্যাস্যতে রাম ইতি বলাধিক্যাদ্বলং বিছঃ॥৭॥ যন্নামপৃথগ্ভাবাৎ সংক্ষণমুশত্যপি॥৮॥

আসন্ বৰ্ণাক্ৰয়ো হৃদ্য গৃহুতোহ্নুষুগং তনুঃ। শুক্লো রক্তথা পীত ইদানীং কৃঞ্তাং গতঃ ॥৯॥

## श्रीभत्रवागी।

যদ্নামপৃথগ্ ভাবাং কু তশ্চিকেতো বিপ্রতিপদ্যানানাং যদ্নামপৃথগ্ ভাবাং ভাবেন ভাবনা তথাং অন্যোন্য শিক্ষা সর্বৈক্ত মত্য-কর্ণাদিতার্থ:। সমাক্ কর্যতি আকর্ষতি একীকরোতীতি সক্ষ্ণমপুশেন্তি নন্তে বক্ষান্তীত্যর্থ:। গন্ত সক্ষ্ণন্ত ন প্রকাশন্তি ॥৮॥ অসা তব পুরুষ্য অতঃ প্রীকৃষ্ণ ইত্যেকং নাম ভবিষ্যতি ॥ ৯॥

#### देवकवरकावनी।

জন্মং বৈ ইতি সার্দ্ধকং। জন্মং হীতি কচিং। অন্তমিতাকুল্যা নির্দিশ্য করেণ স্পৃষ্টা বা বোধনতি এবনগ্রেহপ্যস্যেতি তত্ত্ব প্রকটার্থ: বোহিনীপুল হৈত্যতদপোকং নামেতার্থ: স্থানঃ শ্রীবন্ধদেবাদীন্ ভবদাদীংশ্চ। আর্থীস্যেত ইতি নামেছি মংকর্ত্বত্ব বাজমাল্রমের কিন্তু
তাদ্শতন্ত্ব। স্বধ্যের খ্যাতি ভবিষ্যতীতার্থ:। এব্যুত্তরত্রাপি। বিছ্পিতি বস্ত্রনান সামীপ্যে বর্ত্তমানবন্ধং। এব্যুত্তরত্রাপি। এনমিতি
শেষঃ॥ ৭॥

যদৃনাং শ্রীবস্থদেবাদীনাং ভবদাদীনাঞ্চাপ্থগ্ভাবাঃ নির্বিশেষ পিতৃষাদিভাবাং তেনোভয়কুলভাপি স্বশ্নিয়াকর্ষণাদিত্যর্থঃ। এষান্দিপ যাদব্যেন ত'দৈকাং ছাবকাতো ব্রজমাগ্রুসা রামন্ত বচনেন হরিবংশে ব্যক্তং প্রতৃয়বাচ ততো রামাং স্বাংগুনেভিতঃ স্থিতান্। বাদব্যেদিপ সর্বেষ্প সর্বেষ্ ভবছো নম বান্ধনা ইতি। যদ্নামহমাচার্য্য ইতি তু প্রসিদ্ধি মাত্রমবল্বা প্রোক্তং। অপি শক্ষান্ধনামস্তরাণ্যপি স্চিতানি। উত্তেতি পাঠে স এবার্থঃ। প্রকটার্থেতৃ শোভনং হার ঘেষাং তান্ সাম্বত। আত্মারামাদীন্ রময়ন্ রামাং বিহু জানিন্তি ইতি নামাং সদাতনত্বং ব্যঞ্জতি এবমুত্রত্রাপি কিঞ্চ সকর্ষণ নামোহিপি নিক্তক্যস্তর্মপি শক্ষান্ত ক্ষেয়ং॥ ৮॥

এবং জন্মক্রমাণেক্ষয়দে। শ্রীবলদেবস্য নামানি ব্যক্ষ্য শ্রীকৃষ্ণস্য নামানি প্রকাশ্যরাহ আসন্নিতি। তত্ত্ব প্রকটার্থেহিয়ং অনুযুগং যুগে

## ক্ৰমদন্দৰ্ভ: i

যদ্নাং শ্রীবন্ধনেবাদীনাং ভবতাং চাপৃথগ্ছাবান্ত পিতৃত্বাদি সাধারণ বুদ্ধেরিত্যর্থ:। তত্তকং শ্রীহরিবংশে গোপবর্গং প্রতি তেন স্বয়নেব। যাদবেশ্বপি সর্ক্ষের্থ ভবত্তো মন বান্ধবা ইতি নির্দ্ধারণং হি সন্ধাতীয়েশ্বের মুদ্ধী সপ্তম্যৌ বিধত্তে। গোষু ক্ষমাঃ স্মাক্ ক্ষীরা ইতিবং। তদেবং সতি সন্ধর্শতি অভেদ বুল্ধীকী করোতি সন্ধর্শ ইতি বিৰক্ষিতং। অনেন গোপানামেষ যত্ত্বংশোদ্ভবত্তম্পাবগতং। তচ্চ শ্রীকৃষ্ণসন্ধানে প্রতিপাদিত্যের ॥ ৮॥

আদল্লিতি প্রকটার্থো হয়ং প্রভিম্গং তত্ব গৃহিতো ভগবতো বর্ণাক্রয়ঃ অস্য বাদকদ্যাসন্ তদ্য বিবরণং ভক্ল ইত্যাদি। ইদানীং

#### শ্ৰীবিখনাগচক্ৰবৰ্ত্তী।

স্থানসংস্কারোহপি নাপেক্ষ্য:। রহসীতি দিনে সপাদানাং গ্রাং বন গ্যানাং। বিজ্ঞাতিসংস্কারং বালয়োরনয়োঃ ক্ষত্রবৈশ্যান্ত্রপ নামকরণ লক্ষণং। পুণ্যাহ স্বত্তি ঋষরাত্র ব্রিক্ষক্ত্যা স্বত্তিবাচনং ভবেৎ তম্য সর্ক্রকর্ম্বাবশ্যকতাৎ তৎপূর্ককং॥ ৭ ॥

যদ্নাশ বস্নদেবাদীনাং ভবদাদীনাঞ অপৃথগ্ভাবাং নির্ধিশেষ পিড়্ছাদি ভাবাং স্বস্মিন্ন্ত্য কুলস্যাকর্ষণাং। ওচ্চ হরিবংশে। প্রত্যুবাচ তহো সামঃ সর্বাংস্তানভিতঃস্থিতান্। যাদবেছপি সর্ব্বেশ্ন ভবস্তো মম বন্ধভা ইতি তহচনেনৈব ব্যক্তং। গর্ত্তসম্বশ্ব ন প্রকাশয়তি ॥৮॥ তব প্রস্থারং কোহপি মহাপুক্তর এব শ্রীনন্ধ বোধয়ন্নাহ আসন্ধিতি। প্রতিযুগ্ধ তন্পৃ্তিতো হসী তক্লাদয় ক্লয়ে বণা আসন্। গৃহত

যাহা করিতে আপনারও ইচ্ছা হইরাছিল, নির্জ্জনে অতিগোপনে সম্পন্ন করিলেন। তদনন্তর নন্দকে সেখোধিরা বলিলেন গোপরাজ! রোহিণীর এই পুত্রটা নিজগুণে স্ফাজ্জনের মনোরঞ্জন করিবেন এই কারণে ইনি রাম বলিয়া খ্যাত হইবেন এবং বলাধিষ্ণা হেতু ইহাঁকে বলও বলিবে॥ ৭॥

অপিচ, কোন কারণবশতঃ যতুগণ পরস্পার বিবাদ করিলে ইনি তাঁহাদিগকে শিক্ষা ধারা সম্যক্ কর্ষণ করিবেন অর্থাৎ সকলের ঐক্যমত্য করিয়া দিবেন একারণ ইহাঁকে অনেকে • সকর্ষণ বলিয়াও জানিবে॥ ৮॥

আর তোমার এই পুজটি প্রতিষ্গেই শরীর পরি এই করেন, ইহার শুল, রক্ত এবং পীত এই

# देवकवरजायनी।

াণে বারং বারং তন্পূহিতো হস্য শুরাদি বর্ণাক্রয় আসন্ ইদানীং বংপ্রবেত্ জগনোহন শ্রামবর্ণতানেবারং গতঃ এতত্তকং ভবতি তন্ পূর্হত ইতি পাতরোজনা যোগ প্রভাব ইবোকঃ। তত্ত্বচ শুরাদি রূপ গ্রহণেন শ্রীনারায়ণ প্রভাবস্য ব্যক্তা তর্পাসনা যোগ এব প্র্যাবসায়িতঃ পূর্ক পূর্কং তদংশভূত শুরাহাপাসন্যা তত্ত্বংসামাদি প্রাপ্ত্যা শুরুতাদি প্রাপ্তিঃ দশ্রুতি কুফতা প্রাপ্তির বিদ্যাবেত্ব চ নারায়ণসমাে গুণৈ রিতি ইখং পূর্ক কৃত্ত মুক্তং পরম ভাগবতঃ শ্রীনন্দত লোপাসন্যা তংসাম্যপ্রাপ্তা কৃষ্ণতা প্রাপ্তিরতি বক্ষাতে চ নারায়ণসমাে গ্রহণ রিতি ইখং পূর্ক কৃত্ত মুক্তং পরম ভাগবতঃ শ্রীনন্দত তোমিতঃ এবং পরমােংকর্ম প্রাপ্তাতং প্রকা নির্দ্তাং কুফেত্যেব তাব্যাপ্তাং নাম জ্বেয়ং। অতো নায়াণি কৃষ্ণতাং গতঃ ইত্যথিপি ক্রেয় ইত্যভিপ্রায়ং। অপ্রকট বাস্তবার্থান্ধাং। অন্তব্যং মুগে মুগে তন্গৃহ্নতঃ প্রকট্মতঃ এরো র্ন্থা আসন্ প্রকটা বভূব্ং তত্র যাে যাং শুক্তা প্রের বিদ্যানীয় প্রকটা বাহুবং কিলাহেন্দানিক ক্ষিতাং ক্রিমবিতীর্গ্রাং অতঃ স্বাং কৃষ্ণতাং সর্ক নিজাংশন্য কৃষ্ণীকর্ত্বাং সর্বাকর্ষক্রাচ মুখাই ক্রাবং ত্রামা। অতঃ করি ভূবাচাকঃ শন্ধা গশ্চ নির্ন্ত বাচকঃ। 'তয়াে রৈক্যং পরং বন্ধ কৃষ্ণ ইত্যভিবীয়তে ইত্যাদিকা

# ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ইতি স্বাচয়োক্তা যোগপ্রভাবো দর্শিত:। ইদানীং দাপরাতে কৃষ্ণতাং গত ইতি। সত্যাদ্যবতারাণাং চতুর্ণাং ওক্লাদীনামুশাসনা নিদ্ধতেন ভতংসারপ্য প্রাপ্ত্যেতি ভাগে নন্দং বোধয়িতুমীপ্সিতঃ। বস্তুতন্ত অস্যাবতারিশ স্তত্ত্বর্ণবন্তো হবতারা অংশা এব ইদানীময়মবতারী পূর্ণ: রুঞ্জং প্রাপ্ত:। যহা হঃ শুক্ল: যো রক্ত: য: পীতশ্চ। উপলক্ষণমেতৎ যো যো হন্যো মন্বন্তরাবতার লীলারতার পুরুষাবতারাদিশ্চ সদর্কোছপি ইদানীমংশিলো হুগ্যাবভারসময়ে ক্লফভামেভজ্রপতা মন্মিমন্তভূতিতাং গতঃ সর্কাংশ মাদায়ৈবাবতীর্ণভাৎ। নমু ক্লতে শুক্ল-ষ্ঠ মুধাছরিতি। ত্রেতায়াং রক্তবর্ণো হসাবিতি দ্বাপরে ভগবান্ শ্যাম ইতি কলৌ রুঞ্বর্ণ ত্বিবা ক্ঞামত্যেকাদশোক্তো। কথ্যস্তে বর্ণনানভ্যাং ওক্ল: সভ্যয়গে হরি:। রক্ত: শ্যাম: ক্রমাৎ ক্লফা স্ত্রেভায়াং দ্বাপরে করাবিতি ভাগবতামূতোঁজেশ্চু পীতো হয়ং কিং য্গাঁগো হবতার: নচ আদ্ত্রিতি ভূতকাল নির্দ্ধেশন ক্রম প্রাপ্ত্যা পীতোহপি দাপরযুগাবতার ইতি বাচ্যং যুগাবতারপ্রকরণপঠিতমাং নচ তত্রত্ব শ্যাম প্রদায় পীতার্থত্বত্বন্ত পীতপ্রদায় বা শ্যামার্থত্বং ক্রামিতি তথা পীত ইত্যকার প্রশ্লেষেণাপীতঃ শ্যাম ইতি বা বাচ্যং সংর্থাপি ব্যাখানে অমুযুগমিতি বীক্ষাপ্রয়োগাৎ তন্রিতি বহুবচনাচে। বীক্ষয়া চৈকৈক্মিল্লপি যুগে বর্ণঅয়স্য **প্রাপ্তেন**ভিমতার্থ লাভঃ। নচেদানীমিতি পদেন কলিযুগুমাদিমো হংশ এব বাচনীয় ইতি বাচ্যং। ক্লফাবতারদ্য ছাপরান্ত ভবত্বেন প্রসিদ্ধেঃ। यांचन्नश्री घटण्य जनसङ्करार । उत्तरवहायुत्र । स्वायम्ब व्याज्यः कनितिष्ठि व्यथरमारकः । इस्मायजातास्त्रस्य किम्पूर्ग প্রসুত্তেঃ তঁমাদেরমত্র ব্যাথ্যেরং। বভালে নিত্যসম্বন্ধাৎ যথা ইদানীং দ্বাপরাত্তে ক্ষণতাং গতঃ স্বর্ময়মবতারী তথা তেনৈব প্রকারেণ ইলানীং কলিমুগালি ভাগে পীত ইতি কিঞ্চিৎ স্থূপ কালমব**লয় ইলানীমিতি পদার্থ** উভয়ত্রাপ**র্বয়তীতি। নমু তহি<sup>\*</sup>সাকাৎ** ক্রিয়-মাণে। হলা ক্লেন্সা বৰ্ণঃ। কিং ইলানীস্তন এব কিখা পূৰ্ক্মপ্যাদীদেব তক্তিৰ প্ৰাকট্যমধুনেতি তত্ত্ব ন কেবলং ক্লফবৰ্ণ এব পূৰ্ক্মাদীৎ অপিতু অনোহপি বৰ্ণা আসল্লেবেত্যাহ স্থাসন্ধিতি ত্ৰয়োহপি বৰ্ণা যথাসম্ভবং পূৰ্ব্ব পূব্ব থুগে তদানীং দৃশ্যমানান্তবং পূৰ্ব্বমপি আসল্লেব নিতাহানামেব তেষাং ভদানীং ২ প্রাকটাং। নতু তে তদানীমেবাপুর্বা অভবলিতার্থঃ। অস্য কথভ্তসা অরুযুগং তন্রবভারান গৃহতঃ।' অবতারাহ্সংখ্যেরা ইতি হতোক্তেঃ। কাহো কথং বা কতিবেতি ত্রক্ষোক্তেশ্চ। এবঞ্চ বৈবস্বতমন্বন্তর গত্মষ্টাবিংশ চভূৰ্ণীয় ঘাণৰ কলিম্গলো: স্বয়মৰতারী কৃষ্ণ: পীতশ্চ প্রাহর্ভৰতি তদ্মুগ্রয়াবতারে শাম ক্লফৌ তদা তত্ত্বৰাজভূতি। তিঞ্চত:। তত্র পীতসা স্বর্ণবর্ণো হেমাকো বর‡কশ্লনাক্ষণী। সন্ন্যাসকৃৎ সমঃ শাস্তো নিষ্ঠাশাস্তিপরায়ণ ইতি ভারতাছাক্তত্বেৎপি বিশিষ্য স্পষ্টতর। অন্যত্র কাপ্যক্ষিরভিরহস্যতাং। 🛮 ছব্ন: কলো যদভব ব্রিযুগোহণ স অমিতি সপ্তমন্বন্ধৈ শ্রীপ্রজ্ঞাদেনাপি ছন্নবৈনৈবোজত্বাং। ছন্নথঞ্চ স্বীয় বৰ্ণভাবয়োৱন্ট্ৰীয় বৰ্ণভাবাভ্যামাবৃতত্বেন জদানীস্তন জনৈঃ প্ৰামো ছল ক্ষ্যত্বমেবেতি স্বস্য ছক্ষণ ক্ষাস্থং চিকীৰী চ তস্য রহস্য ব**ন্ধ আ**ঠ ব্যঞ্জরতা হেতুকৈবেতি গৌড়ীয়ভক্ত স্থধীতি রবশ্যাবগম্যং। তত এব তৎপ্রমাপক বচনস্য নানাতত্র বিধানেন কলা বলি তথা শূৰু। কৃষ্ণবৰ্ণং বিষা কৃষ্ণং সাজোলাকাত্ৰ পাৰ্বহ**্ষ**ী য**ত্তৈঃ সদীৰ্ভনপ্ৰাহৈ বৃজ্জি হি স্থমেধন ইত্য**দ্য ৰুগাৰ্ভাৰ প্ৰক্ৰণ মধ্য পঠিতস্য তবৈ ৰু ছেল্ল এবার্থো হবসীয়তে হথান্তরে। সঁ মধা নানা কলো সর্বাক্তির অপিকারাং বৈবস্বতান্তাবিংশ চতুর গীয় কলাবপি ভন্তবিধানেন ভন্তাপ্য ন্যায়বিধিনা। খেতো ধাৰ**ভীড়াছিবং এক প্রথদ্ধোচ্চার্য্যেশ একদৈবার্থছয় বোধকেন শবে**নেতার্থঃ। শৃণি,তি,শৃণ,অমপি রাজানং প্রতি প্ন: প্রেরণং রহসাজেন তরেশোচামানমর্থং বিশিয়াবধাপয়িত্বং নানাতর বিধানেনেতি কর্ণী ওক্সমা প্রাধান্যং দর্শিতমিতি তথান্তরং ভন্তম্যাপ্যাচ্ছাদনার্থং ক্সেবং। ক্সফেতি সর্ব্ধ কলিযুগ**থকে রুফবর্ণং কুফবর্ণদেহং** ক্ল<del>ফত্বং</del> ব্যাবর্ত্ত-

প্রাগয়ং বস্তদেবস্য কচিজ্জাত স্তবাস্মজঃ। বস্থাদেব ইতি শ্রীমানভিজ্ঞাঃ সংপ্রচক্ষতে॥ ১০॥ বহুনি সন্তি নামানি রূপাণিচ স্থতস্য তে। গুণকর্মাসুরূপাণি তান্যহং বেদ নো জনাঃ॥ ১১॥

# धी धत्रवागी।

প্রাগ্যমিতি সামান্যোক্তা ঋষিবরং জন্মান্তরগতং নাম কথয়তীতি নন্দো মন্যতে শ্ব অতএব এনং বাহ্নদেব ইতি সংপ্রচক্ষতে ॥ ১০॥ গুণাহ্বকপানি ঈশ্বর: সর্বজ্ঞ ইত্যাদীনি কর্মাহ্বপাণি গোপতি গোবর্দ্ধনোদ্ধরণ ইত্যাদীনি তানি সর্বাণি অহমপি নো বেদ জনা অপি নো বিহু: ॥ ১১ ॥

#### देवक्षरद्वावना ।

নিক্জি রপান্ত ভ্রতি সর্ব্ধ বৃহত্তনানল এব সর্বান্তভাবাং। অতঃ স্বাভাবিক মেবৈতন্মহানাম যত্র প্রণবে বেদা ইব তান্যনান্যপি নামানি রূপে রূপানীবান্তভ্তানি গুক্তঞ্চ বিশেষ্য রূপন্য তস্যান্য নাম গণ বিশেষণকত্বাং। উক্তঞ্চ প্রভাসপুরাণে। মধুর মধুরমেতনাললং নলনানিত্যালো সকল নিগমবল্লী সংফলনিত্যন্তে রুঞ্চনামেতি। নামাং মুখ্যতরং নাম ক্লফাখাং মে পরস্তপেতি চ। যস্যাস্য যশ্চ প্রথমমপ্যক্ষরং মহামন্ত্রেন প্রসিদ্ধান্য ম

প্রাণিতি প্রকটার্থে তবাত্মজোহরং কচিদনাত্র বস্থদেবাদপি জাত তথ কথং তত্রাহ প্রাক্ অহা তেই চ পূর্বজন্মনীতার্থ:। এবং
শীবস্থদেবক্ত পূর্ব জন্মতিপি তন্নামানীদিতি শীনদেনাবগৃতং। অপ্রকটার্থে ইহৈব জন্মনি পূর্বং কংস কারাগারে বস্থদেবাজ্জাতোহপি
ভবাত্মজ এবেতি পূর্ব্বিদ্ধান্তাহ্মসাবেণ অন্তথা ভবাত্মজ ইতাক্তাধিকাং তাথ। অর্থ ছরেপি শীন্মন্ হে পরম ভাগাসম্পদ্যুক্তি ।
তাদ্শ পুত্র প্রাপ্তে:। পাঠান্তরে শ্রীমান্ পর্মশোভা সৌভাগ্যাভ্যাং যুক্তোহয়ং তবাত্মজ্ঞ:। অভিজ্ঞা ইত্যনেনানিক্ত্যন্তরাত্মিককেরেবান্তরক্তং বোধ্যতে॥ ১০॥

রূপাণীতি দৃষ্টান্তত্বেনাক্রং যথা শুক্লাদি রূপাণি তথা নামান্তপি জন্মান্তর সম্বন্ধিনী বহুনি সন্তীত্যর্থ:। তাজহং বেদ জনান্ত ন বিছ বিত্যর্থং। লোকেহপ্যসন্তাব্যত্বাৎ তানিচ বহুনি নতু প্রকাল্ভন্ত ইতি ভাব: অপ্রকটার্থেতু গুণাত্মরূপাণি শ্রীনর নারামণ নৃদিংহাদীনি কর্মান্ত্রপাণি মৎস্যাদীনি অথ গুণাত্মরূপাণি নামানি ভক্তবৎসল ইত্যাদীনি কর্মাত্মরূপাণি জগৎপ্রতা জগৎপালক ইত্যাদীনি সন্তি-

# क्रममन्धः।

জৎপ্তাহাবসরে তু ক্ষতাং সাক্ষান্নারণতাং রূপ গুণাদিভিস্তত লাতামেব গত ইত্যর্থ: উপসংহরিব্যতে চ নারায়ণ সমো গুণৈরিতি। এবং তত্তত্পাসনা প্রভাবরূপং পূর্ববৃত্তমুক্তং। অত এব পর্মোৎকর্বরূপ নিষ্ঠবাধ কৃষ্ণ ইত্যেবাস্য মুখাং নাম জ্যেমিতি ভাবং॥৯॥ বাত্তবার্থস্ত প্রাণিতি তবাত্মজোধ্য়ং কচিং কার্য্যে নিমিত্ত এব বস্থানেবস্য জাত ইতি এবাত্মজ্ঞরমেবাস্য , স্বাভাবিক ইতি ভাবং। বক্ষাক্তে চ স্কৃত্য্য ত ইতি॥১০॥ .

বহুনীতি প্রকটার্থে কৃতি বাচ্যানীতি ভাব:। বাস্তবার্থে তু গুণামুরপাণি এীনুসিংহরপাদীনি কর্মামুরপাণি ভীক্র্মাদীনি ॥>১॥১২

# শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

য়তি বিষা কাস্ত্যা অক্তমণ ইন্দ্রনীলমণিবছ্জ্জলমিতার্থ:। এক কলিযুগপক্ষে ক্ষণবর্ণং কিন্তু বিষা কাস্ত্যা অক্তমণ শুক্ল বক্ত শ্যামানামুক্তখাং পারিশেষোণ পীতং অস্তঃক্ষমণ বহিগৌর মিতার্থ:। যদ্মা ক্লফাবডার লীলাদি বর্ণনাৎ ক্লফবর্ণং। সালোপাক্ষেত্যাদিকমিত্যু ত্রবেশহলি স্পষ্ট প্রচ্ছন্নমান্তাং তুল্য এবার্থ:॥ ৯॥

প্ৰাক্ পূৰ্বং বস্নদেব্দ্য বস্নদেবান্তৰাত্মকোহয়ং কচিদেকান্তস্থলে জাত ইতি প্ৰাক্ পূৰ্বজন্মনি, বস্নদেবস্যাপি পূৰ্বজন্মনি বাস্নদেব ইত্যেৰ নামানীদিতি নন্দো বৃদ্ধাতে শ অভিজ্ঞা ইতি ন কেংলমহমেক এবেতি প্ৰামাণ্যং দৰ্শিতং ॥ ১০ ॥

বহুনীতি। ন কেবলং কৃষ্ণ ইতি নাম বাস্থদেব ইতি নাম মহৈর কৃত্যমিতি ভাবং। রূপাণীতি ন কেবলং মরোজানি ওক্লানীন্মের ইত্যর্থং। গুণকর্মান্মরঞ্জাণীতি। ভক্তবংসল সর্বজ্ঞ গোবদ্ধনধরাদীনি কুবশস্বং সন্তার্থো পশ্চানন্দার্থীকন্ততঃ কুষ্ণং। ভক্তাঘাকর্বণা-

তিন বৰ্ণ হইয়াছিল একণে ইনি কৃষ্ণতা প্ৰাপ্ত হইয়াছেন, সতএব ইহাঁর " প্ৰীকৃষ্ণ " এই একটা নাম হইবে॥ ১॥

আর, তোমার এই পুত্র পূর্বে কদাচিৎ বহুদেব তন্ম হইয়া জন্মিয়াছিলেন, সেঁই কারণে অভিজ্ঞ জনেরা ইইাকে বাহুদেবও বলিয়া আখ্যা প্রদান করিবেন॥ > ॰॥

নন্দ! তোমার তনয়ের গুণামুরূপ "ঈশার, সর্বাজ্ঞ" ইত্যাদি বহু ২ নাম এবং কর্মামুরূপ গোপতি,

**38** 385

এব বঃ শ্রেয় আধাদ্যদেগাপগোক্লনন্দনঃ। অনেন সর্বর্জাণি যুয়মঞ্জন্তরিয়াও ॥ ১২ ॥ পুরানেন ব্রজপতে দাধবো দস্থাপীড়িতাঃ। অরাজকে রক্ষ্যমাণা জিগুর্দদূয়ন্ সমেধিতাঃ। য এতিয়ান্ মহাভাগে প্রীতিং কুর্বন্তি মানবাঃ। নারগ্নোহভিভবস্তোতান্ বিষ্ণুপক্ষানিবাস্তরাঃ।

শ্রীমন্তাগবতম্।

# शिषत्रवामी।

জাতক ফণমাহ এব ইভি। আধাস্যৎ আধাস্যতি॥ ১২॥ অনন বক্ষমাণাঃ সমেধিতাশ্চ দক্ষি জিঞাঃ॥ ১৩॥

#### देवश्ववद्यायना ।

ইত্যানেন সচ্চিদানল্বন রূপাণামিব নামামপি নিতাতা স্থাচিতা সাচ গুণ কর্মান্তরপাণীতি সাধিতা গুণানাং নিতা ওগবং সমবেতবারিতাতা সিদ্ধ্যা ওপা কর্মাণাঞ্চ প্রীগোবর্জনধর কালিয়দমনাত্বাপানানা মনাদ্সিদ্ধ বেদপ্রসিদ্ধেঃ। অতএব তত্ত্বপাসক পরস্পরার্শিনাবিছিল্লভাপত্তে: প্রীভগবতা ভক্তেছামমপ্রাচ্চ তরিত্যতা তদম্রূপ নামামপি তথাম্বদিদ্ধিঃ। তচ্চ সর্বং প্রীভাগবতামূতে বির্ত্তন্তি। এবং গুণকর্ম নামানস্ত্যাজ্ঞগাণীব নামান্তনন্তানি লোকিকবং প্রতীয়মানান্যপি সচিদানল্বেনাণোকিকানি তত্বপাসক হৃদবৈক্ষক বেদ্যা তত্ত্বানি নাহমপি বেদ জনা অপি ন বিত্রিত্যর্থ:। অত উক্তং শ্রীবিফুপুরাণে। অনাধ্যেরাভিধানং স্বামনাণ্যের প্রেরোজননিত্যাদি। স্বিতীয়ন্ধকেচ। তদশ্বসারং হৃদয়ং বতেদং যদগ্রুমানৈ ইরিনামধেরে:। ন বিক্রিয়েতাথ যদা বিকারো নেত্রে জলং গাত্র ক্রেরু হুর্য ইতি॥ ১১॥

গোপান্ গোকুলশব্দেন তত্ৰত্যাংশ্চ স্কানেৰ নন্যতি হৰ্ষ্যতীতি তথা স ইতি তস্য স্বভাব উক্তঃ শীলাথেঁ প্ৰত্যয়াৎ। কৰ্মণাপি বো যুমাকং অজজনানাং সংক্ষোমেৰ শ্ৰেয়: ঐহিকানুমিক মঙ্গলং আধাস্যতি। তথানেন ক্ষেনে হেডুনা স্কাণি ছ্গাণি কংসাত্যপ-দ্ৰবানপ্ৰোহনায়াসেন তারিষ্যথ ॥ ১২ ॥

পূর্ববৃত্ত মাহ পূরেতি। জন্মান্তরে প্রকটার্থে সাধবো দেবা: দদ্যবো দৈত্যা: অরাজকে ইক্সন্ত পদ্চাতৌ॥

মহাভাগে প্রমপুণ্যবতি। যদ্বা হে মহাভাগে ইত্যন্তে শ্রীমশোদা সম্বোধনং সন্ত্রীকো ধর্ম মাচরেদিতি ন্যায়াৎ। মহাভাগা ইতি ক্চিৎ পাঠ:। মানবা জীব মাত্রাপি ইতি নৃগতিং বিবিচ্যেতাাদিবং। অর্থো বাহাং প্রতিপক্ষ জনাং আন্তরাশ্চ কামাদারং বিষ্ণুপফান্

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

নাবায়ণ প্রমব্যোমাধিপ এব সনো যস্য তাদৃশোহপি। শ্র্যাদিভিত্ব বিরঃ গোপানাময়ে ওভাবহ বিধৌ স্থসমাহিতং। পাঠান্তরে স্বেন

# গ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

দপি তদ্ব হাচ্চ মন্ত্রময় বপুষ ইতি গোবিলো গোবিচারণাদপীতি কেশবাচার্য্যাদি ব্যাখ্যানাদিত্যর্থ:। তান্যহং দৈবজ্ঞোহপি ন বেদ জনা নো,বিছ্রিতি কিং পুনরিত্যর্থ:। নদ্দস্ত মংপুশ্রস্য মহাপুরুষস্থান্নানা জন্ম গভমিদং সর্বজ্ঞবাদয়ং বক্তীতি বৃদ্ধতে॥ ১১॥

আধাস্যৎ আদাস্যতি গোপানাং গৰাঞ্চ কুলং নন্দয়তীতি সং। তেষাং কুলসা নন্দনং। ব্ৰহ্মমোহনে পুত্ৰ ইতি বা। হে গোপেতি বা। অঞ্জঃ স্থেন সর্ব্ব ছুর্গানীতি যদা যদোপদ্রব আয়াস্যতি তদা ছদিষ্টদেবেন শীনারায়পেনাবিষ্টোহয়ং সংপুত্র এব ছয়ায়মাশ্রয়িতব্য ইতি ভাবং॥ ১২॥

পুরা জন্মান্তবে দাধবো দেবাং দস্যুবো দৈত্যা:। অরাজকে ইব্রুস্য পদচ্যুতী।

গোবর্দ্ধনধর ইত্যাদি অনেক আখ্যা আছে, আর গুণ কর্মের অনুরূপ ইহার রূপও বিস্তর, সে দকল আমিও জানি না, অন্য ব্যক্তিরাও জানে না । >> ॥

সে যাহা হউক, একণে তোমার এই বাল্কের জাতক ফল বলি প্রবণ কর, ইনি গোপ ও গোক্-লের আনন্দ বর্দ্ধন হইরা তোমাদের শ্রেয়ঃ উৎপাদন করিবেন। অপর তোমরা ইহা হইতে ষথার্থতঃ সকল তুর্গম উত্তীর্ণ হইবে॥ ১২॥

অহে ব্রজ্পতে । পূর্বে একবার অবনী অরাজক হইলে দহাগণ হইতে সাধুদিগের উৎপীড়ন আরম্ভ হইরাছিল, তাহাতে ইনি তাঁহাদিগের রক্ষা করেন। ইহাঁ কর্ত্বক রক্ষিত এবং সমেধিত হইয়া

589

তম্মানন্দাস্বজোহরং তে নারায়ণসমো গুণৈ:। শ্রিয়া কীর্ত্তামুভাবেন গোপায়স্ব সমাহিতঃ ১৩॥ ইত্যাস্থানং স্মাদিশ্য গর্গেচ স্বগৃহং গতে। নন্দঃ প্রমুদিতো মেনে আত্মানং পূর্ণমাশিষাং॥ ১৪॥

#### श्रीधत्रश्रामी ।

ইতি আল্লানং প্রতি সমাদিশ্য আল্লানং শ্রীকৃষ্ণং বা আশিষাং আশীর্ভি:॥ ১৪॥

#### देवस्थवट्डायनी।

দেবান্ দৈত্যা ইব অপ্রকটার্থে ভাগোঁ ভগএব নিজাশেষ ভগবন্তা প্রকটন পরে বিষ্ণু পক্ষ শব্দো দেবতাপর্যাযো জ্ঞেয়ঃ। সমুদায়দ্যৈক-দেশোহপি দৃষ্টান্তো ভবতীতি নচাম্মিল্লিব শব্দো হত্মপপন্তঃ॥

গুণানিতি নারায়ণেন পরম বৈক্ষ্ঠনাথেন দমঃ অপ্রকটার্থে নারায়ণ এব সমো যভেতি নারায়ণাদিপ মাহায়্মমধিকং বোধিতং উপ্নানাছপনেরস্য কিঞ্চিং সাদৃশ্ব মাত্রেণ ন্যুনতাপত্তেং তর গুণা আয়নিষ্ঠাঃ ধর্মাঃ করণাদয়ো রূপাদয়ণ্চ। বহিনিষ্ঠামাহ প্রিয়ান্পাত্যাকিটা সংখ্যাত্যাহত্বনে প্রতাপেন। পক্ষরেহপি যদ্যপীদৃশ তথাপি তরায়নো জাতঃ স্ব প্রভাব মন্তর্ধ্যাপ্য ছামেরায়্গত ইতি প্রসাহিতঃ পরমাবহিতঃ সন্ এতং গোপায় বাল্যেহিমিয়স্য রক্ষায়াং প্রয়য়ং ক্রিত্যর্থঃ। বস্তুত্ত, স্নেহ বর্দ্ধানার্থমেবেদং অবৈর বাল্যাদিনামবয়ঃ সর্বাথা সর্বায়নাচ রক্ষেত্রর্থঃ। তর কীর্ত্তা স্বস্য কেবলস্য সংপ্রক্স্যাচ কীর্ত্তি বিধ্যাপনেন লোক রঞ্জনয়েত্যর্থঃ। গোপাদবেতি পাঠে আয়নেপদ্মার্যং। গোপানাং অয়ে লাভ ন্তামিন্ স্ক্সাহিতে।হামিতি। পাঠান্তরে আয় স্ব শব্দাভাাং যোগক্ষেমে অভিহতে তদেবং প্রকটার্থেছিপি নারায়ণস্য সাম্যান তয়ামান্যেরাস্য নামানি তথা তত্তা বিশিষ্ট্যান্যনান্যপি ত্রিষ্ঠাতি ভাবঃ। অতঃ শ্রীনক্ষেত্রির গোক্রে বিধ্যাপিতানি মুকুলাদি নামানিচ ভীগোপ্যাদয়ো বদ্ধীতি জ্যেং নদেতি প্লেষেশ অভাহধুনা নলং ক্রিক্তর্থঃ॥ ১০ ॥

সগৃংকত ইতি তদত্যে সম্মাদিনা ত্রিশেধাক্রেঃ। মতএব প্রকর্ষেণ মুদিত ইত্যেতদনন্তরং নিজপুরোহিতাদীনানীয় প্রকট-মেব প্রং নাম করণ মহোংসবঃ ক্বত ইতি জেয়ং॥ ১৪॥

#### ক্রস্পন্ত:।

স্বশমেৰ সনাহিত ইতি বাত্তবোহৰ্থ: প্ৰকটাৰ্থে তু খদ্যপি নাৰায়ণস্য সমন্তথাপি তৰায়ুজ্ঞতাং প্ৰাপ্ত ইতি তবৈৰ গোপনীয় ইতাৰ্থ: ॥১৩॥ গত ইতি তদত্যে সম্ভ্ৰমাদিনা তদ্বিশেষাক্ত্তি:॥১৪॥

#### ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্মী।

নাবায়ণ সম ইতি হৃদিপ্তদেবেন সন্ত্ৰপ্তেন শ্ৰীনাৱায়ণেন স্থসঃ পূক্সভাং দত্ত ইতি ভাবং। অতো মুকুল মধুপ্দন নাৱায়ণাদিনাম ভিন্তৰ সমপ্যভিধীয়তাং কিন্ত শ্ৰোহাংদি বছবিমানীতি বিভাব্য স্থাবধানং সন্ গোপায় প্ৰতিক্ষণং পালয়। বক্ষিতঃ পুলোহয়ং তে নাৱায়ণ ইব সর্ক্ষোপদ্ৰবৈজ্যা বক্ষিণতীতি ভাবং। গোপায়ম্বৈতি পাঠে আ্মানে পদমার্যং। বস্ততন্ত্র নারায়ণং সমো যস্য তত্রাপি গুণাদিভিবেব নতু দৈতা মোক্ষান্ত ভক্ত মহাভাবপ্রদত্ত শ্লীনাবায়ণাদ্দি বিভাগ মোক্ষান্ত ভক্ত মহাভাবপ্রদত্ত গাছে ভিনাবায়ণাদিভিন্তি। গোপানাং ক্ষান্ত বিজ্ঞানত । অয়ে শুভাবহ বিধো বা স্থামাহিতঃ॥ ১৩ ॥

আত্মানং স্বং প্রতি। প্রাণানাজ্জ্য মৌগ্রোন ছ্ট্রোঃ পূতনানসোঃ। শিষ্ট্রপ্র প্রকৃষ্ট্রপ্য পর্বস্থাপি মনো ২হরং ॥ ১৪ ॥

সাধ্যণ সেই সকল দস্তাকে পরাস্ত করিয়া দেন। ছে নন্দ! ইনি অতি মহাভাগ্য, যে সকল মানব ইহাঁতে প্রীতি করেন, যেমন অন্তর্গণ বিষ্ণুপক্ষীয় ব্যক্তি দিগকে অভিভব করিতে পারে না তাহার ন্যায়, সেই সকল মানবকে অরিগণ পরাভব করিতে কদাপি সমর্থ হয় না। অতএব হে নন্দ! তোমার এই আত্মজ, গুণ সম্পত্তি কীর্তি এবং অনুভাবে (প্রতাপে) নারায়ণের স্মান, তুমি সর্বাদা সমাহিত হইয়া ইহাঁর রক্ষণাবেক্ষণ করহ॥ ১৩॥

হে রাজন্। এই প্রকার আদেশ করিয়া গর্মাচার্য্য স্বীয় গৃছে গমন করিলেন, নন্দও আনুন্দিত হইয়া আপনাকে কল্যাণপূর্ণ জ্ঞান করিতে লাগিলেন॥ ১৪॥ কালেন ব্ৰন্ধতা তাত গোকুলে রামকেশবো। জাতুভ্যাং সহ পাণিভ্যাং রিষ্ণমাণো বিজহ্রতুঃ॥১৫ তাবজ্যি যুগ্মমতুক্ষ্য সরীস্পত্তো ঘোষ প্রঘোষ রুচিরং ব্রজকর্দমেষু।

# श्वित्रवागी।

বালক্রীড়া চনংকারেঃ ক্তঞা রামেণ সংযুক্তঃ। প্রমানক্রমাণ্ড ব্রেজ নক্র্যশোদয়োঃ। পূর্ণপ্রমেব দর্শগ্রাহ কালেনেতি॥ ১৫॥ অর্ক্রয় পুনঃ পুনরাক্রয় স্বীস্পত্তী অতিশ্যেন চল্ডৌ কথং ঘোষাঃ কটিপাদ ভূষণকিক্রিণ্য ভেষাং প্রঘোষের ক্রচিরং যথা ভবতি তেষাং ঘোষাণাং নাদেন হুত্তং মনো যয়োন্তৌ লোকং ইতন্ততো গছেন্তং ক্রনং অনুস্তা ক্রিচতুরাণি পদানি অনুস্বা মুগ্ধবৎ প্রভীতবচ্চ

### বৈক্ষৰতে যেণী।

এবং তদ্য শ্রবণক্তং পূর্ণ দুর্কা দর্শন ক্রতমপি বক্তুমার্ভতে কালেনেভাদি কালেন রক্তা ইতি শক্ট ভন্ধনারাম করণাচ্চ কিঞিৎকালে গতে সতীত্যর্থ: তৃণাবর্ত বংশ্বেত্ত্বর কালীন এক একংব্যন ইত্যুক্তথাৎ একান্দেহি শিশোঃ পাদব্রু দুখাতে বলিইন্যান্ত্ তন্মধ্যেহিলি ব্যুক্তিক্রম কথনং তৃ হুইবধাদৃত লীলাগ্ব সাধারণ্যেন কচিদাবেশেনচ। গোকুলে ব্রুমধ্যে ইতি তত্ত্বৈব তন্মহামধ্র লীল্যা তত্রত্যানাঃ মহাজাগ্যং বোধন্বতি এবমগ্রেহিশি বোধাং। রাম জ্বলীল্যা গোকুল রমণাং কো ব্রুমা উশক্ষ তাবিপি বর্ষতে শীলামাধুর্যোগ বশীকরোতীতি। কিশ্বা প্রথম রুত্ত প্রশাস্ত কেশ বিলাস যুত ইতি। যহা সংগ্রেষ যে প্রকাশস্তে মম তে কেশ সংজ্ঞিতাঃ।
সর্ব্বিটা কেশবং তত্মানান্য মুন্নিসন্ত্রমা ইতি। ভারতরীত্যা তত্তাহিশি দেদীপ্যমানত্যা বিব্রুম্বত ইতি কেশবঃ। তাবিতি রিক্তালীল্যা ক্রণমনোহরতা অভিপ্রেতা কেশবস্য পশ্চারির্দেশঃ অফুল্বপ্রেন হে তাতেতি কথ্যবাল্যলীল্যা বিশেষ ক্ষরণেন প্রেমবৈর্বশ্যাং।
স্বালনং সন্ধোধনং। যদা তাত্ন্য শ্রীনন্দ্য গোকুল ইতি ভ্রথবিহার স্বাছন্দ্যং দ্শিতং॥ ১৫॥

অষ্ক্ৰোতি। স্বীস্পত্তী কৃটিলং গছভোবিতিচ বিদ্বালীলায়ামপি বলিষ্ঠাং দ্যোত্যতি অভিনুম্থামিত্যাদিষু কমলাদি রূপকা-প্রায়োগং স্বস্য তদ্তিক্রম ক্রেঁ:। ক্চিচ্চ তং প্রয়োগ স্বন্যয় তদ্বারাপি ক্রেঁয় ইঙ্কি জ্বেঃ। ব্রহ্ময় কর্দমেষিতি প্রায়োগান্ত্র গোর-সাদি নিপাতেন প্রায়ণস্থাৎ বহুরক্ষ স্থান বাল্ল্যাং লোকং ক্ষিদাগতং মুগ্ধবং গ্রহজনং মবৈবান্ত্ত্য পশ্চাদন্যং জ্ঞারা প্রভীতবং মাত্রোরস্তিক্মপেরত্বং প্রশ্বদান্তীত্রাধিকোন বাল্গ্রালাসেষ্ঠিবং বোধিতং। বতি প্রত্যান্য্থানোম্থ্যে বালং তথৈব লীলাবেশেনেত্যর্থ:। স্বন্যবিহা:। যথা ঘোষো ব্রহ্মেন ত্রত্যা স্থেষাং প্রকৃষ্টি র্যোধিং ঘণ্ডো বিশ্বণ্যা মহাশ্র্যান্য্য দ্বিশ্বাল্যচ্চ শকৈ-

#### क्रमनम् ५: ।

কালেনেতি প্রাচীনলীলেয়ং। নামকরণস্য শততম প্রয়ন্তাহে নির্ণয়াৎ। তৃণাবর্ত্তবধ্স্য বার্ধিকভাং। অস্য বর্ধাভ্যস্তরে চ সম্ভবাং॥১৬॥

## श्रीविश्वनाथहळ्व वे ।

কালেন ব্ৰন্থতিও। ক্ৰিশ্ব্যমিশ্ৰা ক্ষস্য প্ৰোচ্য বাল্যস্য মাধুৱীং। কেবলামেব তাং প্ৰাছ নিত্যভাষ্যামূপাদকৈ:॥ ১৫ ॥
অভিবুৰ্গ্মম্থ্কষ্যেতি। জাঞ্ভাং সঞ্চলনেন অভ্যোৱাকৰণাৎ সরীস্পত্তী কুটিলং গচ্ছত্তী ব্ৰন্ধক্ষমেষ্ গোৱস গোৰৎস ম্আদিকৰ্দ্ধিত ব্ৰন্ধণেৰু। ঘোষাণাং গোপগোপীসাং প্ৰঘোষো হো হো হো ইতি মুখক ব্ৰভালিকোলেবায়ঃ। তেন ক্চিবং যথা স্যাত্তথা
যতন্ত্ৰবাদেত্যাদি। ঘোষাঃ কিৰিণ্য ইতি স্বামিচবণাঃ। লোকং ব্ৰন্ধপ্ৰদ্ধীন্তনং কিঞ্চিদাগতং মৃদ্ধং মাত্ৰং মহৈৰাঞ্স্ত্য পশাদ্দমঃ

ভদা চ তরো মাতরৌ নিজন্মত্তে দোর্ভ্যামুপগুল্ধ প্রমোদং যয়ত্য। নিজ নিজেতান্তক্তবাৎ তৌ ছাবপি প্রতি তরো ছারোঃ স্থত-বৃদ্ধিঃ। তে দে প্রত্যের তরোরপি মাতৃবৃদ্ধি বৃধাতে। স্থানা বাংসল্যোগ রূপরা বুবস্তো হগ্ধপ্রাবিস্তনে সভ্যো। স্কলরে কিং ন স্থানরমিতি ন্যারেন পদ্ধ এবালরাগতৃল্যন্তেনাপি ক্লচিরো। মুখনিত্যেকত্বং অস্থ লাল্যমুখাপেক্ষরা মুগ্ধং মনোহরং ক্লিতং মত্র প্রমাণতঃ

জ্ঞাত্বা মাত্রোবস্তিকমূপেয়তু। বতিপ্রত্যদ্বাদ্বথান্যো মুগ্ধাদি বাদস্তবৈব লীলাবেশেনেত্যর্থ:॥১৫॥

কিয়দিন গত হইলে গোকুল মধ্যে রাম ও কৃষ্ণ ছুই জনে জামুদ্বয়ে তথা হস্তহরে ভর দিয়া চলিতে চলিতে বিহার আরম্ভ করিলেন॥ ১৫॥

তাঁহারা উভয়ে স্ব স্ব পদ্ধর পুনঃ পুনঃ আকর্ষণ পূর্বক কটিভূষণ ও চরণ ভূষণ কিঞ্কিণীর নিনাদে রুচির রূপে বারস্বার চলিতে ২ ব্রজকর্দমে যাইতেন, সেই কিঞ্কিণীর শব্দে ভাঁহাদের মানস সহর্ষ 'হইত, কথন ২ ইতস্ততঃ গমনকারি লোকের পশ্চাৎ ২ তিন চারি পদ গিয়া মুশ্ধ ও প্রভীতের ন্যায় তমাদ হুন্টমনদাবনুস্ত্য লোকং মুগ্ধপ্রতীতবহুপেরতুরন্তি মাত্রোঃ ॥ ১৬ ॥
তন্মাতরো নিজন্তের রুণরা স্মুবন্ত্যো প্রাঙ্গরার ক্রির্পৃগৃহ দোর্জাং।
দত্তা স্তনং প্রপিবতোঃ স্মুথং নিরীক্ষ্য মুশ্ধস্মিতারদশনং যযতুঃ প্রমোদং ॥ ১৭ ॥
যহাসনাদর্শনীয় কুমারলীলাবস্তর্জ তদবলা প্রগৃহীতপুচছঃ।

# वीषत्रवामी।

মাত্রোরত্তি সমীপে উপেয়তু: উপজ্ঞাতু:॥ ১৯॥

তদাচ তলাতরৌ নিজস্ততৌ দোর্ভাামুপগৃহ আংমোদং যযতুঃ। কথং ভূতে স্থণমা রূপরা স্বত্তৌ পরঃপূরপরোধ্রে সভোৌ পক্ষেন অক্বাগেণ কচিরৌ কথস্থতং মুখং নিরীক্য মুধ্য মন্দং মিতং যমিন্ আরা দশনাত যমিন্ তচে তচে ॥ ১৭ ॥

যহি অন্ননাঃ দর্শনীয়াঃ কুমারলীলা যােয়াতথাভূতো জাতো তদা অন্তর্জ ব্রহমধ্যে তদবলা ব্রহাদনাঃ তৌ প্রেক্তাঃ প্রেক্-

#### देवकदर डावना।

কচিরং यथाস্যাৎ তদ্য গোষস্য তেন বা প্রকৃষ্টেন নাদেন। সমমন্যৎ ॥ ১৬ ॥

প্রেলা ব্রজকর্দ্দন এবাক রাগত্তেন কচিরে। ক্ষচিরত্বঞ্চ স্থানরে কিং ন স্থানরমিতি ন্যারেন সরসিজ মন্থবিদ্ধং লৈবলেনাপি রমাং
ইত্যাদিবৎ বিশেষতন্ত্র বাল্যসীলারাং তদাদেরের শোভনত্মিতি। নিজে সীরে স্থান্তর ইতি তরোরো প্রত্যের ক্ষেত্তর উক্ত নিজ
নিজ্যের ক্রমাং। অত্যুএব প্রকর্ষেণ স্বেচ্ছরা কদাচিন্মাত্ বিপর্যারেণাপি পিবতোঃ তানং দ্বা তত্তদন্তরা মুধং নিরীক্ষ্য সম্যাবলোক্যাত
অত্যুব প্রকৃষ্টং নেনং বিরিক্ষো নারং স্থাপ ইত্যাদি বক্ষ্যমাণাম্নারেণ তত্তদানন্দকোইণাধিকতমং মোদং প্রাথবতোটা। স্ম হর্বে বিসরে
বা। মুধ্মিত্যেকবং স্ব ব লাল্য মুধাপেক্ষরা। অন্যাবৈঃ। বন্ধা মুধ্বং স্থানরং স্বিতং বন্ধ প্রমাণতঃ সংখ্যাতশ্রানা দশনা বন্ধ তচ্চ
ভাচত ॥ ২৭ ॥

অথ কিঞ্চিবয়োহতিরেকেণ বল বৃদ্ধি প্রাক্ট্যাদিতন্তভোহথিল এক্সধ্যে বিহরত্তাং লক্ষানামণি বন্ধ দ্বীণামত্যানশো জনিত ইত্যাহ
নহীতি । অঙ্গনা দর্শনীরেত্যাদিকং তৎ কৌতুকে তাসামের প্রাধান্যাৎ। বংসৈতর্গকৈ: বহুত্বমেক বংল পরিত্যাগেন মূহর্বৎসান্তর গ্রহণাৎ
একদৈব ত্রি চতুঃ পুচ্চগ্রহণারা। প্রশক্ষেন ক্লাচিদণি পুচ্ছত্যাগ্রো নিরক্তঃ। স্মত্তর স্থানে স্থানে হুক্স্যান্থী স্মত্তর প্রকর্ণে-

#### ক্ৰমসন্দৰ্ভ:

প্রদক্ষেনাবেশেন চ ব্যক্তিক্রম: সম্ভাব্য:। প্রপিবতোঃ স্তনং দলা ভম্তদম্ভরা মুখং নিরীক্ষ্য চ॥ ১৭॥ ১৮॥

#### শ্রীবিশনাপচক্রবন্তী।

সংখ্যাতশ্চারা দশনা যত্র ডচ্চ ডচ্চ ॥ ১৭ ॥

যহি কিঞ্চিবলাধিক্য প্রকটনে সতি অন্ধনানাং আ সমাজ্ প্রকারেণ নর্ধনীয়া অতি চিন্তাক্ষিট্ট কুমারস্বন্ধিনী লীলা যথো তথাভূতা বভূতাং তং তদা অবলা তৌ প্রেক্ষয়ঃ প্রেক্ষমাণা লক্ষ্যঃ। কীদৃশো তাজাং গৃহীতপুট্ছে বৃত্তৈ রিভত্ততত আক্ষমাণাবিতি। শ্যানানাং বৎসানাং প্ছান্ লাল্চংক্রমবেন প্রাণ্ড কিমিদমিতি সাল্ট্যং মৌদ্মোন যদা কর্তলেন মূটীকৃত্য গৃহীত তদা
বংগৈ রূপায় প্লায়তে। ততত যৌদ্ধেন মৃষ্টি মত্যন্ত্রে প্রভূতে ভরেন দৃদ্ভেরীকুর্ম্ব্রে ভূতলে স্বামাণে ক্লান্তা বিলোক্য

হ'ইয়া জননীদের সমীপে প্রত্যাগমন করিতেন॥ ১৬॥

মাতৃত্ব আপন ২ তনরকে বাত বারা উত্তোলন করিয়া পরম হর্ব প্রাপ্ত হইতেন। সেহভরে তাঁহাদের পরোধর ছুগ্নে পরিপূর্ণ হইত। পান্ধ ও অঙ্গরাগে ক্রচিরাঙ্গ বালক ছুইটাকে ব ব বাত বারা আলিঙ্গন করিয়া তাঁহারা তান দান করিতেন এবং যধন শিশুরা তান পান করিত তখন ঈবং হাত্য ও অল্প দশনে ছুপোড়িত বদনের দিকে একদৃষ্টিতে চাহিয়া থাকিতেন। ১৭ ।

তদনত্ত্ব যে সময় রাম কৃষ্ণ উভ্রের কুমারলীলা অসনাগণের দর্শনযোগ্য হইল, সে সময় ঐ ছই বালক ব্রহ্মধ্যে বৎসগণের পুত্র বরিতে আরম্ভ করিলেন,ভাহাতে সেই সকল বংস ধাবমান হইয়া ইত- বংসৈরিতস্তত উভাবসুক্ষ্যমাণো প্রেক্ষ উজ্বিতগৃহা জহনু র্হসন্তাঃ ॥ ১৮ ॥
শূল্যগ্রিদং ট্রাইজনবিজকউকেভাঃ জীড়াপরাবতিচলো স্বস্তুতো নিমেক্ষুং।
গৃহ্যণি কর্ত্ব্যুপ যত্ত্ব ন ভজ্জনতো শেকাত আপতুরলং মনসোহনবস্থাং।

# **बि**यत्रचामी।

মাণাঃ বিশ্বত গৃহক্বত্যা হসস্তো জহার্:। কথজুতৌ তাভ্যাং প্রগৃহীতানি পূজানি যেবাং তৈ বঁংগৈ রিভন্তভোহসুক্ষামাণৌ ॥ ১৮ ॥ অতি চপলো তৌ স্কাদিভ্যো নিবেজুং গৃহোচিভানি কর্মাণিচ কর্তুং কর তদা তক্ষনভৌ ন শেকাতে যদা অলং মনসোহনবস্থাং

#### देवक्षवरणावनी।

ক্ষমাণাঃ অতএব, ত্যক্তং গৃহং তত্ত্ৰত্য ক্বত্যং কিবা প্ৰেক্ষণাৰ্ধং তত্ত্ব তত্ত্ব সৰ্ব্ধ ব্ৰজে পরিভ্রমণেন গৃহমেব যাভিন্তাঃ হনন্তঃ অভ্ৰতদ্বাং। কিং বা অহো বলিষ্ঠতরৌ ইতি তৌ পরিহসন্তাঃ তণ্ঠিকরপ্যাক্ষরমাণ্ডাং॥ ১৮॥

ততশ্চাধিক বরোবল প্রকটনেন জীড়া লোলতয়া মাজোরপি মনঃ প্রেম বিহবলং চক্রতু রিত্যাহ শৃঙ্গীতি। যতঃ জীড়াপরৌ অতঃ
শৃঙ্গাদীন্ ধর্ত্ মভিসর্বত্তে তেভ্যো নিবেছ, নিবারয়িত্ব। ষয়া শৃঙ্গাদিজিঃ জীড়াপরৌ অভতেভ্যো নিবেছ, ন শেকত্বঃ। সন্ধিরার্যঃ।
কুতঃ শুভি চলোঁ পরম চপলোঁ। তর শৃঙ্গিণো বৃষাদরঃ লংছি ৭ঃ কুরুরাদরঃ বানরাদয়ে। বা অসয়ঃ ধঞাঃ। পাঠায়রে অহয়ঃ সপাঃ
ধক্ষানাং সম্বরণাদি সম্ভবাৎ ইদমেব যুক্তং ছিলা বর্বাদরঃ। স্থানেন্দ সদা নিবেধেহন্তস্যাশক্যতা তাড়নাদাববোগ্যতাচ। তথা
শৃঙ্গাদিভ্যো নিবেধস্যাবক্তকতা সাচ মেহাকৃতকা শু পার্শে স্থাপনেন্চ বাছাত্রেণভিচ বোধ্যতে। তক্ষমনাত্রু তানীয়তরা লাতসজ্বে হিল্ল কর্ত্রা লাতসজ্ব শু কর্ত্রা লাতসজ্ব কর্ত্রা কর্ত্রাহ্বামিশ। চাপলাখ্যসক্ষারি ভাব তয়া স্থামিনং বাংসল্যাবাং কত্রক কর্ত্রভং ভাবং প্রমুত্ত ওং সমাধি নিঠাতোহপূত্তক্রং ভলতি। এবমেব ব্যাক্ষাতং গৃহসৌধ্যস্য পরাকান্ত্রা দর্শিতেতি। তচ্চাত্রে প্রীত্রন্ধ প্রত্যাদান্যাধাবেশ
কেনাঃ বদ্ধামার্থ স্থন্থ প্রিয়ন্ম তনয়া প্রণাদার্য ভংকত ইত্যাদি কৈমৃত্য প্রভিদাদক বচনতো নাবিন্দন্ ভববেদনাং ইড্যাদান্যাধাবেশ
নিবেধ বচনতো নেমং বিরিক্ষ ইন্ড্যাদি তত্ত্বাৰ প্রশাসা বচনতোহণি বাক্তমেব। তত্ত্ব প্রীরামক্বক্ষয়োরভোভানাসক্রা শোভাভরঃ
প্রীবৈশন্পান্তনেন্ত্রেণ গাসনাশনোন।। এক বেশ ধরাবেকং প্রম্মানে। শিগুত্রতং। এক ক্রিগ্রার গভাবেক দেহে। বিধা ক্রতে।

#### ক্রমসকর্ত্ত।

জনবন্ধাং বাংশল্য পোৰুক চাপলাখ্য সঞ্চারি ভাবং ভদীর গৃহকর্মণোচ্পি ভং প্রেমমর্যেন স্থাপিভয়াই।।

#### এবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ছত্তনাম্বংসালপি তুর্জালো যুবামিতি হসত্ত্যো বল্পেন পূঞ্ছং ত্যাঞ্জামাসভুরিতি জেনং ॥ ১৮ ॥

অতিচলোঁ তৌ শৃলাদীন ধর্ণ চলতোঁ তৈঃ সহ জীজিত্মিছতোঁ বা তৌ তেজো নিৰেছ; গৃংহাচিত্তানি কর্মানি চ কর্তু: যত্র বাল তজনানো ন শেকত্ তলা মদসে হনবছাং চাপলাং বাংসলাঃ ছারিপোৰক সক্ষাত্তি ভাষা আপজ্য। তত্র পৃথিগো র্যালয়: লংট্রা চকুয়ালয়: বিজাহ পশ্লিশঃ॥

ন্ততঃ আকর্ষণ করিয়া লইয়া যাইত। তদ্দর্শনে ব্রজাসনাগণ কৌতুক বশত গৃহকর্ম বিশ্বত হইয়া হাস্ম করিতে ২ সাতিশয় হুক্ট হুইতের ॥ ১৮॥

হে রাজন ! আপনাদের ছুইটা সন্তান অভিশয় চপন ও ক্রেড়াপর হইয়া উঠিলে তাহাদিগতে দৃদি, দংক্তি, দর্শ, পক্ষি, অমি, জল ও কন্টক কুইতে নিবারণা করিয়া রাখিতে তবা মূহোচিত তাবৎ কর্ম করিতে ছুই জননী (বশোদা রোহিনী) অপক্ত হুইয়া পড়িলেন, হুভরাং তাহাদের অভংকরণ অভিশয় অনুক্ষান্তিত হুইন। পরস্ত জননতর অমু কাল মধ্যেই রাম এবং কৃষ্ণ বা বালে জামুকর্ষণ ব্যতিরেকে পদবর হারা এমপুর মধ্যে চলিয়া ক্যেন্ট্রতে আরম্ভ করিলেন। ভাহার পর ভগবান্

কালেনাল্লেন রাজর্ষে রামঃ কৃষ্ণ চ পোত্রজে। স্বয়ুক্ত জাতুভিঃ পদ্ধিবিচক্রমতুরোজসা।
তত্ত চ তগবান্ কৃষ্ণো বয়স্যৈ প্রজবালকৈ:। সহরামো প্রজন্তীগাং চিক্রীড়ে জনয়মুদং।
কৃষ্ণ তথাপ্যাে কুচিরং বীক্ষ্য কৌমারচাপলং। শুণুস্ত্যাঃ কিল তন্মাতুরিতি হোচুঃ সমাগতাঃ॥১৯

#### अधितवामी।

আপতুরিতি গৃহদৌখাদ্য পরাকাষ্ঠা দর্শিতা॥ ১৯॥

### देवकवरञावनी।

একচব্যা নহাবীগাবেকস্থ শিশুতাপতে। এক প্রমানে লোকানাং বেদবৃত্তীত মাহবৌ। ক্রংমন্ত জগতো গোপৌ সংবৃতৌ গোপদাবকো। সংবাল ব্যতিষকাতি: ক্রীড়াভিরতিশোভিতৌ। অন্তোম্ভ কিরণগ্রতৌ চক্রপ্র্যাবিবাদরে। বিদর্পত্তী তু সর্প্রতি সর্প্রতিষ্ঠ কর্মার্থিকি দুর্গৌ কর্মভাবিব। কচিছ্র প্রদিয়াকৌ ক্রীয় প্রোক্রিতৌ কচিং। তৌ তত্র পরিধাবেতাং কুমারাবিব পাবকী। কচিছ্রাম্বভিরাক হৈঃ সর্পমাণী বিবেছতুং। ক্রীড়ভৌ বংসশালাম্থ শঙ্ক দিয়াক মুর্গজৌ। গুভভাতে প্রিয়া কুরাবানক জননৌ পিতুং। জনক বিপ্রক্রেণি প্রহ্মবেটী কচিং কচিং। তৌ তত্র কৌতৃহ্বিনৌ মুদ্ধত্ব বাকুক্রেনি পাবকী স্বন্ধারকাবিতি॥

্ববম্ংকণ্ঠয়া যুণ্পদিব বর্ণয়িভূমিচ্ছু: শীজমেব বিঙ্গণ পাদ ব্রজ্যবোরাদিম মাদিমং ভাগা বর্ণয়িশ্বা পুন স্তজ্ঞলীলা মাধুরী বিশেষ মরগোলালাদিভিমং ভাগমিন বর্ণয়িভূং প্রত্যাবর্ত্তে কালেনেত্যাদিনা অল্লেনেতি। বন্ধ বন্ধলালি বৃদ্ধি বলাতিরেক প্রকটনাং অন্বটনি
ভূমি ঘর্ষণমপ্রানিতানি নান্নি যেরু তৈঃ পদ্ধিঃ পদৈরোজ্লা গোক্লে বিচক্রমভূং বল্লমভূং বল্লমভূতে পাঠেইনারালেন বলিইভাই।
গোরজে ইতি পাঠে গোলক্লোভিক ধর্জেতি বংলাচ তদ্য মনোহরত্বং পবিত্রত্বঞ্চ বোধয়িভূং হে রাজস্ক ক্ষেত্রতি ভ্রীলা
মাধুরী মন্ধিবই ব্যাপাস্থল্য উতি ভাবঃ॥

তদেবং সাধারণ্যেন তরোর্রীলাং বর্ণয়িত্ব। পুন: প্রীক্তম্ব সম্বেদ্ধন রামজ্ঞাপি তাদৃশবং ব্যঞ্জয়িত্বং তস্য বিশেষতঃ সর্ব্ধ বন্ধ মদো মোহন লীলা বর্ণনেন প্রাধান্যং বকু মাই ওতান্ধিত। তু ভিরোপক্রমে। ক্রেয়া ভগবানিতি স্বয়ং ভগবন্ধেন স্বভঃ প্রাধান্যং সহ রাম ইতি লীলাতোহপি বোধরতি অথচ তগবান্ নিজ ভগবস্তা সারমাধুরী বিশেষ প্রকটন পরঃ ক্রম্মঃ সর্ব্ধ জনাকর্ষক মাধুর্যাঃ সহরাম ত্যাক্র্যাকর্ষক:। রামেতি তস্য পর্ম রমণ সাহায্যাদক্রৈব তরিক্তিক মর্য্যাদা পর্যাধিরিতি ভাবঃ। তত্তাদৃশং সন্নিত্যর্থঃ। বর্ষস্যঃ স্বিভিঃ সংহতি মিখঃ প্রণয় বিশেষণ তাদৃশং লীলাসেষ্টিবং দর্শিতঃ। তত্র বোগবৃত্ত্যা সমবয়ন্ত্রং ক্রচার্থশক্ত্যা সমান গুণ জাতি শীল ব্যবসায় বেশব্রু ধ্রনিতঃ তথৈব স্বিস্থাপন্তঃ। তত্ত্ব হেতুঃ ব্রজ্ব্য তদারীন্বত্বেন প্রসিদ্ধন্য ত্যা ব্রজ বিশেষ্ট বালকৈশ্বিক্তীড়ে চিক্রীড়

তাতংক্রীড়োলাদিতচিত্রা ভল্যা তন্মাছ: শ্বেষামপি প্রেমবিনোদ বিশেষার মিথঃ সংমন্ত্রা তৃত্বারিবেতাাই ক্র্যুন্তেতি। গোলাঃ প্রজ্যো বৃদ্ধান্ত ক্রিচিরং মনোহর মিতি প্রেম কৌতুক্মের ব্যক্তং পৃণ্ক্রাঃ শৃণ্ক্রাঃ শৃণ্ক্রা ইতি ভল্যাং ভ্রাবহিত্যং স্টিতঃ। ব্রাবহিত্যং স্টিতঃ। ব্রাবহিত্যং স্টিতঃ ব্যক্তি বিত্যং পৃণ্ক্রা অপি সমাগতাঃ হ ক্ট্ম্চঃ। চুকুল্ডা কিলেতান্তে বন্ধতো ন চুকু ওরিতার্থা তাদৃশক্ষ চাপালাং তাসাং মুখ্যোকৈরা বিভিন্ন বিভিন্ন বিভিন্ন বিভিন্ন বিভিন্ন বিভিন্ন বিভিন্ন বিভিন্ন বিভাগি বিভাগি মুনীক্রেণাপি জন্মকৈর বিভিন্ন বিভিন্ন বিভাগি বিভাগি

#### ক্ষেপশর্ভ:

পুন রিক্সণ পাদত্রজ্যা লীলয়োরন্তিম মন্তিমং ভাগং বর্ণস্থিতু মাহ কালেনারেনেতি।
সাম্যোৰ করে। স্ক্রীলা মুক্তু বিদেশতঃ শুকুঞ্জীলামাহ। তততেওাদিনা॥ ১৯॥

# ঐবিশ্বনাগচনাবর্তী।

অস্বৰ্টানি ভূমিবৰ্ণনাপ্ৰাপ্তানি জান্নি বেৰু তৈঃ পডিজাছ সংগ্ৰণং বিনৈৰেভাৰ্থঃ ওজসা অনুস্ৰেচিচ পঠিঃ চ সহস্তাম ইতি গৰালোৰণাদি শীলায়াং ক্লাইজৰ প্ৰাধান্যাং ৪ ১৯ ৪ .

প্রীকৃষ্ণ রাম সহ মিলিত হইনা সমবয়ক ব্রেকালকদের সহিত জীপার প্রস্ত হইলেন। তদর্শনে ব্রেকালনাদের পরম হর্ব হইল। গোপীগণ জীকুকের মনোহ্র বাল চাপল্য অবলোকন করিয়া সকলে মিলিয়া তদীয় জননীর সমকে আসিয়া বলিতে লাগিলেন। ১৯॥

বংসান্ মুঞ্জন্ কচিদসময়ে জোশ সংজাতহাসঃ স্তেয়ং স্বাস্বভাগদধিপয়ঃ কল্লিতৈঃ স্তেয়যোগৈঃ। মৰ্কান্ ভোক্ষ্যন্ বিভন্ততি সচেম্বাত্তি ভাণ্ডং ভিনত্তি দ্ৰব্যালাভে স গৃহকুপিতো যাত্যুপক্ৰোশ্য তোকান্॥ ২০॥

# वीभवचाती।

কৃষ্ণচাপল্য চৌর্যাণি সহৈবাধিল সন্মত:। প্রজন্মন্ত: সমাগত্য গোপো গোপো মুদং দত্য। অসমনে অদোহনকালে কোলসঞ্জাতহান:। তেয়ং চৌর্যার্জিতং নতু দত্তং তত্রাপি স্বাচ্ নেতরং। দ্বিচ পয়্চ দুধিপ্রোহন্তি কিঞ্চ ভোক্ষান্ মর্কান্ প্রতি বিভজ্ঞা
দলতি তেবাং মধ্যে তৃপ্তত্বেন স কোহিপি নাজি চেৎ তহি ভাত্তং ভিনত্তি কচিদ্ত্রবাস্যালাভে সতি সং গৃহান্ ধক্যামীত্যেবং কুপিতে
বাতি বন্ধা সগৃহা গৃহিণঃ তেভাঃ কুপিতত্তেবাং তোকান্ পর্যাহাদির স্থামুপ্রকাশ্ম রোদ্যান্তা যাতীত্যর্থ:॥ ২০॥

# देवस्वरकावनी।

তদ্বণাত্ত ব'ৎসানিতি সার্দ্ধধ্যেন। তত্র পূর্বার্দ্ধনেকং বাক্যং অবভারিকা বিনোদায়তু পৃথগিব ব্যাখ্যায়তে। তত্র প্রথমোপদ্রবমাতঃ বৎসান্ মুঞ্চন্ বহুত্বং স্বেষাং বৈষ্ট্রা বিশেষ বোধকং নমু প্রাকৃতি বৎসপালায়মানত্বং ধ্রিদং কো মু দোবং তত্রাহঃ অসময়েৎদোহন-কালে নমু বালকেনাজ্ঞানতঃ প্রশৃ ইদং ক্লতং অমুশোচণ প্রতিগৃহং বিদ্যমানা বহবো লোকা ক্ষ্মীরন্ ততাহঃ ক্চিৎ ক্লত্যান্তর বার্থ-ত য়া যদা তে রোদ্ধুং ন শকু বৃত্তি তদৈবেত্যর্থ:। এবঞ্জেটি কথং নভীষয়ধ্বে ততাচং ক্রোশে সম্যগ্জাতহাসঃ আক্রোশনার্থং ইতি পরম মোহনীতোক্তা। বত কিমর্থ বৎসান্ মুঞ্জেত্ত হসস্তাঃ সাহকরণমাহঃ দধি পয়োহতীতি তদর্থমেব। গৃহজনানিতভতো ধাবয়িতুং বৎসান্ মুঞ্তীত্যর্থঃ অহো কঠিনা তার্হি কথং স্বয়মেব পূর্ব্ধং ন দখেতাত্র সন্মিত ভ্রবিলাদেন শনৈরিবাছঃ তের্যমেবাত্তি নতু দত্তং অত-ব্রদ্দত্তমপি তাদৃশং ন ভূঙ্তে ইতি ভাব:। অদি কা বো হানি যত ব্ততঃ পতিত ভাওগা গোরদমাত্রদাতাল প্রমাণ পানে ততাহ গৃহি স্বাম্যাদ্যর্থং যত্নতঃ স্থাপিতং স্বাবেবান্তি তত্রাপ্যথ কাং ক্লেনৈবান্তি। অহো পরম চতুরাণাং বো গোরদং অদাবশিক্ষিত চাতুর্ঘাশ্চারয়ে-দিতি ন স্ভাবরাম:। তআহ:। করিতৈ: পূর্কাদৃটাশুভৈরধুনা অব্তৈরা বচিতৈ: ভেয়োপালৈ:। অয়ি যুলং পিতৃপিতামহাদীনাং পুণা ফল মেবেদং যদয়ং পরম ক্লপণানাং অদত্তম্পি ভূঙ্কে ভহি কথমিব পশ্চাদপি নাহ মোদধ্বে ততাত মঠানিতি বরং। স্থি গণায়িত: স্বয-মন্ত্ । অহো ভক্ষান্ বভোজনাং পূর্বমেব মর্কটান্ সর্বান্ প্রতি বিভাজা দদাতি কিঞ্চ তেবাং বনাৎ ফলাদি তৃপ্তত্বেন যদ্যেকো নাত্তি তর্হি স্বয়মপি নাত্তি ভাওক ভিনতীতার্থ:। এততু সর্কাং তাদাং । রাগত বানর বৃন্দায় নবনীতং দাতুং নিজোপদেশস্যাকরণ কোপে-নেতি শুভাতে। যথা স প্রমহ্রীলঃ কদাচিত্বন্ধা যত্নেন বহু ভোজিতক্ষেৎ স্বয়ং নাস্তি তর্হি ভাগুং ভিনত্তি তদ্দোষ্মারোপ্য ইতি ভাবঃ। নমু কথমেবং জ্ঞাতেহপি ভাণ্ডানি ন গোপার্থ তত্মান্দ্রমেব তথা ক্রীভ্রন্ত্যো মন বালকং চপলীক্লতবত্য ইত্যাহঃ দ্রব্যেতি। ন ইতি পরোক্ষ নির্দেশো দর্শনেপি অদর্শনং হচয়তি। সম্প্রতি সৌম্য প্রকৃতি দর্শনাৎ অক্সন্থং বা সর্বং গ্রহন্থিতং জনং প্রতাপি কুপিতঃ সন্ তোকান্ তোকানি বালাপভ্যান্যপি রোদয়িত্বা যাতি দ্রবতি। তানিচ রাধাচন্দ্রাবল্যাদীনি তল্লঘু ভ্রাতাদীনিচ জেয়ানি সগৃহশদ্দেনৈব বা গৃহস্থিত জনা উচাস্তে । ২ ।।

#### क्यमन्दरः ।

বংশানিত্যাদি বনাৎ কলাদিভিত্পক্ষেন তেবু কোংপি নাবি চেৎ তর্হি স্বয়মপি নাবি ভাওঞ্চ ভিনন্তীত্যর্থ:॥ ২০॥ শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

কৃচিবং স্থানং হক্তৈতাদৃশং স্থায়ক্তি শ্ৰেষণথা। শ্ৰীৰশোদরা ন প্রাপ্তং তদক্ষচাকুৰমেতত্ততাঃ প্রাবণ বণ্যস্থিতি ভবে গছা শৃণ্ত্যাঃ শৃণ্টিস্তা স্থাপ্ত চিরিত্র প্রবণার্থং গৃহকার্য্য শতমপি তাজকৈত্তা তক্ষাত্তে উপালস্তন দান মিবেণ পরমানন্দমেব দাত্মিতি ভাবঃ॥ ২০॥

যশোদে! ভোমার কৃষ্ণ অসময়ে ( আদোহন কালে ) বংস সকলকে খুলিয়াদেন, কেছু আকোশ ( কোধ ) করিয়া কিছু বলিলে হাঁসিতে লাগেন। চোর্য্যের নানা উপায় কল্পনা করিয়া তথারা স্থাত্ত্ব দিনি তুল্ধ চুরি করত ভক্ষণ করেন। খাইতে ২ আবার বানরদিগের প্রতি ভাগ করিয়া দেন, কদাচিৎ সেই সকল বানরের মধ্যে তৃপ্ত হইয়া কৃছে ভোজন না করিলে আপনিও খান না, ভাগু ভাঙ্গিয়া কেলেন, কথন দ্রব্যের অলাভ হইলে গৃহন্তি জনের প্রতি কোপ করিয়া পর্যাক্ষে শ্রান শিশুগণকে রোদন করাইয়া প্রহান করেন। ২০॥

হস্তাগ্রাছে রচয়তি বিধিং পীঠকোলৃথলাদ্যৈ শ্ছিদ্রং ছম্ভর্নিছিতবয়ুনঃ শিক্যভাণ্ডেযু তদ্বিৎ।

#### श्रीभवत्रामी।

কলিতৈত্তেমবোগৈ রিত্যক্তং প্রণঞ্মতি হস্তাগ্রাস্ ইতি। তুক্সশিকাছ ভাতের অন্তর্নিহিত দধ্যাদে বয়ুনং জ্ঞানং যদ্য সঃ। ছিদ্রং

# देवसव्दान्ते।

অহা কিমিদমপূর্ব্ধং কথয়থ কৈ তে তেরযোগা তানপি শৃথ্ম করাহং হত্তেতি। বিধিং হত্তরায়তোপায়ং আদাশলেন পীঠে পীঠনিবপ্প বালক গলে ইতি জীবিল্লমকলাহা কালুলাবেণ বালকরালোহণাদি। হি নিশ্চিতং। অথ ততেহিপি দ্বে বক্ষত তত্তাহং নিকাবর্তি ভাওের দীর্ঘ দশলা লগুড়াদিনা ছিদ্রং বচরতি। নক্ করোত্ব পীঠাছাপারান্ দ্বতশ্বিত্ত জু নিজাভীষ্ট ধারা বোগাতা হর্মটা ক্টেদপি ভাওং তত্তাহং তবিং। নক্ষ বহর্ ভাওের সংস্ক নিজাভীষ্টং কথং প্রামুদ্ধান্ততাহং অন্তরিতি ভাও লক্ষণ বিশেষেণৈবেতি ভাবং। অথ কথমত গুমিন গৃহকোর্চিকায়াং ন রক্ষত তত্তাহধর্ণান্তেতি স্বশব্দেন মণিগণ দাপেক্ষমণি থতিতং তত্তা মণিগণ ধরণমপূহক্ষ ঠরের ক্তিতিং মদক কিরণাভেলমপি যদি গাঢ়ং তবো ভবেদিতি অনেনেদমপূক্তং তবতি যদি ধৃতমধিগণজং ন আন্তনা ক্তিচিং কথিছিং তথাবেশ শেবেণ কিঞ্চিদপূর্ব্বিতং আদিতি চৌরভান্ত মণিপরিধাপনেন তবাপি তত্ত সাহাষ্যং জনো মন্যতে। গৃহস্বামিভি ছ্র্নিভোইয়ং মণিগণোহপাচিছদ্যেত তত্মাদদা প্রভৃতি নায়মলক্ষরণীয় ইতি তঞ্চ ভাবসন্তি। অপূর্বক্ষেদং ধৃতানর্থ মণিগণোহপি গোরস চোর ইতি পরিহসন্তি চেতি। অনি যদিং সতাং স্যাং তদা নিহু তা গৃহীবৈবাত্তানীয়তাং তত্তাহং কাল ইতি। যদিং জনসন্তবতি তন্মিন্ সমন্ন বিশেষ ইত্যর্থ:। নম্ম কাসে। তত্তাহ বহাতি । এবং ভঙ্গী বিশেষার্থনেবেদং পৌনকক্যং। তেতাহিতি যতি ভঙ্গেন পৃথক্ পাঠাং। অথবা

#### **बिविन्नाथहळ्नवर्शै।**

সবি ৰশোদে দৃণ্ অপ্ত্রক্ত চৌর্য চাতুর্য্য মিত্যাহঃ বংসানিতি। এতং প্রেছন্য পৃত্যগৃহের্দধি চৌরয়ামীতি মনসি ক্লা গহা গত্বা গৃহান্ জনশ্স্তাং কিকীবু: কচিদ্দিৰদে অসময়ে অদোহকালে বংসান্ মুকন্ ভৰতি। ততভেতত্ততো ধাৰতো বংসান্ পরাবর্ত্ত ন্তিতুং তদমুপদং পৃহারি:স্ত্তা জনেৰু ধাবৎস্থ শূন্য গৃহান্ প্রবিশ্য দ্ধি চোর্যাখা প্লারত ইতি ভাব:। অক্তমিরহনি অবে দ্ধিচোর: কৃষ্ণ আগত স্তাড্যতাং নহতামিত্যাদি ক্রোশে আক্রোশে ক্বতে দতি সঞ্চাতহাসো ভবতি। অথ তদনস্তরমেব মহামাদক হাক্ত মধুপান-বৈবঙ্গেন জড়ীভূতাস্বস্থাস্থ পশুস্তীৰ্ণি নিৰেদ্ধু মপাবন্ধতীৰ দ্বিপৰোহতি। তবৈবোৰিছা ভূত্তে নাণি পনামতে অস্মাকং মোহিতী-কৃতথাদিতি ভাবঃ। নবেবঞেদ্ধিলস্পট মিমং প্রথমমেবোদরপুরং কথং ন ভৌজরধের তত্র জরা হজীক্ষংভোজিতভাভ ন বুভূকা-দিকং কিন্তু স্তেবং তেন কর্মৈর স্বাহ্ত স্মতন্তোৱিতমের দধ্যাদিক মন্মৈ রোচতে নতু দ্বেমিতি ভাবঃ। তদেবং পরোক্ষ মপরোক্ষ-ঞেতি বিৰিধং চৌৰ্যাং ৰংসমোচন হাসাভ্যাং জ্ঞাপিতং। এবং ক্রিটেড: স্ববুদ্ধৈয়ের রচিটেড: স্বেম্বাবেটিগ ক্টোর্যোগারেরপরৈরপি লোষ্ট্রেকপাদিভিরপরশ্বিন্ পরশ্বিরপি দিনে ভোক্ষান্ শভোকনাং পূর্কমেব মর্কান্ মর্কটান্ প্রতি বিভক্তি কর মরং ভবতাং প্রত্যেকং ভাগ ইতি বিভজা দদাতি। বছত্র ভোজিতত্বেনাতিতৃগুলাৎ তেবাং মধ্যে স্ একোংপি মর্কটো নাত্তি চেত্তদা যুদ্মান্ বিনা কিংনে ভোজনে নাহ মপি ন ভুঞ্জে ইতি ছ:থেন ভাণ্ডং দ্বিপূর্য়ং তিনজি ক্লাচিৎ শৃক্তগৃহে প্রবিশ্য দ্ব্যাণি জ্ব্যালাভে সতি সগৃহায় গৃহসহিত জনারৈর কুপিত: তিষ্ঠ রে তিষ্ঠ খা: প্রাতজ্ঞলিদলারমেকং গৃহীবৈদ্ধ চৌর্যার্থমেয়ামি যতা দধিন আংল্যামি তালগৃহং স্বাল বৃদ্ধদেব ধক্ষামীহ্যক। তোকান্ বালাপত্যানি উপজ্জ নথাদ্যাঘাতেন রোদিয়িলা বাতি। ক্সিংশ্চিদ্নাসিন্ গৃহে প্রবিষ্টঃ পন্ হস্তেন গ্রহীতু মলক্যে দধিভাতে বিধিমুপারং রচরতি। উপযুগির নিহিত ছিত্র পীঠারোহণেন বা উদ্থলারোহণেন বা বালক্ষারোহণেন েবতার্বঃ। অভিত্রুস শিকাবর্ত্তি ভাতেওরু অন্তর্নিহিতে দগাদৌ বয়ুনং জ্ঞানং বত সভাওটৈকণা দর্শনেনৈবেতি ভাবঃ। অবরোপ-য়িভুম শব্যঃ সশল্য লগুড়েন ছিল্লং রচয়তি ভবিং ছিল্লং কর্জুং ছিল্লেণ ধারাং পাত্যিতুং ধারুরা চ ব্যাদাতুং অস্য বালানাঞ্স্থং প্রবিভুং বেজীতি সং। নচাত্মকারেহলি চৌর্যাসামর্থানিত্যাত্বং। ধরাত যুক্তে হগারে বালং শীর স্তামালমলি অর্ধপ্রদীপংরচ

অপর উচ্চতম শিক্যন্থ ভাণ্ডে যে সকল জুব্য থাকে, যাহা হাত দিয়া না পান তাহার নিকট পীঠ উদূথল ইত্যাদি লইয়া গিয়া পাড়িবার উপায় করেন,যদি আমরা শিক্যন্থ কোন ভাণ্ডের অভ্যন্তরে দধ্যাদি
কোন বস্তু স্কাইয়া রাখি,তোমার কৃষ্ণ তাহাও জানিতে পারেন এবং তাহা পাইনার নিমিত তাহাতে
ছিদ্র করিয়া দেন। অধিকস্তু, যে কালে গোপুগণ য'ব গৃহকার্থ্যে ব্যগ্রচিত্ত হইয়া থাকে সেই
সময় অন্ধ্রারমন্ত্র আগারে তোমার বালক আপনার অঙ্গে যে মণ্ডিগণ ধৃত, আছে, যাহা ভাঁহার আপ-

ধ্বাস্তাগারে প্রতমণিগণং স্বাঙ্গমর্থপ্রদীপং কালে গোপ্যো যহি গৃহক্ত্যেষু ব্যগ্রচিত্তাঃ ॥ ২১॥ এবং ধার্ফ্যান্থাতি কুরুতে মেহনাদীনি বাস্তে।
স্বেয়োপায়ৈবিব্রচিত কুতিঃ স্থাতীকো যথান্তে।

# वीधतवामी।

রচয়তি তরিং ছিন্ত রচনাবিং ধ্বান্তিযুক্তে গৃহে সাজমেবার্থে প্রেদীপং রচয়তি বিশেষতো গ্রন্তমণিগণং যহি যদ্মিন্ কালে॥ ২১ ॥ রে রে চৌর ইত্যাক্টো জয়তি অমেব চৌরঃ অহং গৃহস্বামী ইত্যাদীনি ধার্ট্যানি প্রাগল্ভ্যানি উপতি ভোঃ কমনীয়ে যশোদে যদ্ম উপতি বাজৌ স্বর্চিতে গৃহে মেহনাদীনি পুরীবোৎসর্গাদীনি কুরুতে এবং স্তেরোপারৈ বিরচিতা ক্রতিঃ কর্ম যেন সঃ স্বং সমীপে

#### বৈষ্ণবতোষণী।

তত্ত্তাতে বৃত্ত বিশেষং কথং জানাতি তত্তাহং তিষিং লক্ষণেনৈৰ ইতি পূৰ্ববং। নমু ভো মিথ্যা প্ৰলাপিন্যাং কিমিদং কথ্যথ মমায়ং ৰাল্কোহন্যাপি মুগ্ধ এব তত্তাহাং অন্তংবৰ নিহিতং সংবৃত্য ধৃতং ব্যৱনং জ্ঞানং স্বৰ্দ্ধি ৰ্যেন সং। অন্যৎ সমানং। তদেবং নিগৃত্ পরজব্যস্য সময়স্যত জ্ঞানং হুগারোহণ ছিদ্রকরণ লক্ষণক্রিয়াধৈধ প্রাবীণ্যং সংজ্বতহাস ইতি মোহনবিদ্যাত্বং চোক্তং। তৈশ্চ সংপূর্ণেগু নৈমহাচোরত্যেকা॥ ২১॥

অথ তস্য ভ্যাতিশয়ং দৃষ্ট্ৰ সংক্ষেপেণৈবোপসংহরন্তঃ কিনপান্যদপি হাস্যায় ব্যক্তমন্তি এবমিত্যর্জেন। এবং ন্তের বোলৈর্বিরচিত ক্বতিঃ রুত্রতঃ সন্ পুনর্ধান্ত গানি আসাং সম্বন্ধ বিশেবেণ পরিহসন্তীনাং বৃদ্ধানামূত্ররীয়াকর্ষণাদীনি স্কৃতি নিদেশাদীনিচ কুকতে কিং বহনা আসাং বাজে মূত্রণাদীনিচ কুকতে এতা মার্জিয়েত্বং নিতাং ন শক্ষুবন্ধি স্বয়মাগম্য পশ্তত চেতি ভাবঃ। তালেং পশ্তত সোহয়মেব নান্য ইতি পরম্পর মাহঃ স্থপ্রতীক ইতি। তদেবং প্রেমবিনোদং বর্ণরিদ্ধা শ্রীয়াগোদায়াঃ রেহপুরং দর্শয়তি ইপনিতি। তাসাং সন্ধা প্রেম বিশেষময়ং কোশন কলমাহ সভয়েত্যাদি। ইথং ব্যাধণাতঃ অর্থ ন্তদর্থনীয়া পর্ম প্রাগল্ভাং যস্যাং সা অত্তরে প্রহর্ষোদরেন পুত্র চাঞ্চল্যাদি কৌত্বকন তাসাং কৌতুক পরতায়া বিতর্কেণচ প্রহ্মিতমুখী প্রহ্মিতং হাস প্রায়ন্ত সহিতং মুখং শ্বন্ধ হিলত বৃক্তমিতার্থঃ। উদ্দশং মুখং যস্যাঃ সা হি এব উপালক মিচ্ছাম্পি নাকরোং কিন্ত বংস উদ্দীয়্ উদ্শং ব্যবহারং কথং করোষীতি সলালনম্বাচেত্য্বঃ। ইদ্যেব নিশ্চিত্য তাভিরপ্যাগত্য কোশনং কৃতঃ বথা মাত্রশৈথিব্য মন্ত্র্যাধিক মন্ত্রদৃহ চাপলাং বিধাস্যত্যন্ত্রমিতি অন্যথা তু ত্ব্য

#### क्रममन्द्रः i

উশ্তি কমনীয় ইতি বশে রত্র রোচনানতার্থ প্রাধাতাৎ। নহ্পালব্ধু মৈঞ্দিতি। তদ্বেতদেবাভিপ্রেত্য তাভিরপি ক্রোশনং

## শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবৰ্তী।

য়তি। তত্রাশি গ্রতমণিগণমিতি কিমপাবিদিতং ন তিষ্ঠতীতি কথং সাবধানা ন তিষ্ঠতেতি চেন্তত্রাহং কালে ইতি। যালুপান্ত স্থিত কলভাবণ মধুর চলন গাত্রলাবিগানি মধ্যেব প্রত্যক্ষ চৌর্য্য নিম্পাদিনী মোহনী বিল্যৈবান্তি তদাপি বাল্য মৌগ্র্যবশাৎ পরোক্ষ চৌর্যা প্রিয় এবাসৌ বুধাত ইত্যত এব ক। কুত্র কিং কুরুতে ইতি বাল সহচর প্রেষণাদিনা প্রতিক্ষণ মনুসন্ধত্ত ইতি ভাবং ॥ ২১ ॥

ন কেবলং চৌর্য্যমের কুকতে ইত্যাহ: এবমিতি। উপতি হে কমনীয়ে স্বপুঞ্জন শ্রবণনানন্দিতে হে যশবিনি বাজৌ দেবপূজার্থনাম্ন্ত লিপ্ত ভূমৌ মেহনাদীনি মৃত্তপুজীযোৎসর্গাদীন ধার্ত্যাহ্যপদ্রবান্ পুরস্ক্রীন্তন বেণ্যুজরীয়া কর্ষণ বিবাহচিকীর্যা পাদ প্রহারাদীনি কিঞ্চ তবানেন তনয়েন মহতী সম্পত্তি জাবিনীত্যাহ। স্তেম রূপৈ রুপায়ৈ বিত্তাৰ্জ্জনৈ বিশেষেণ রুচিতা ক্লতি ব্যাপারে বেন সং।
বাল্যে দিব চোরন্থতি যৌবনে পরবিত্ত কল্ঞাদীন্যপি চোরন্ধির্তীতি ভাবং। স্বং সমীপে তু স্প্রতীকং সাধ্রিবাত্তে। তাসাং প্রেমবিশেষময় ফুংকার ফলমাহ সভায় নয়নং মাতা মাং তাড়ন্নিয়তীতি শক্ষা ব্যাকুলং শ্রীযুক্তং সচক্ষিত বিহবল দৃষ্টিত্ব সক্ষণ শোভা বিশিষ্টং

নারই অঙ্গ, দে দকলকে আপনার প্রদীপ তুল্য করিয়া স্বীয় কার্য্য সাধন করেন ॥ ২১॥

যদি কেছ চোর বলিয়া আক্রোল করে তাহাকে বলেন তুই চোর আমি গৃহের সামী। হে যালোদে! তোমার কৃষ্ণ এইরূপে নানাবিধ ধুইতা করিয়া বেড়ান এবং মার্জিত গৃহে মল মৃত্র ত্যাগ করিয়া আইসেন। হে সতি! চোধ্য ছারাই তোমার পুত্রের সকল কর্ম হর, কিন্তু তোমার সমীপে সাধুর ন্যায় থাকেন, যেন তুইতার লেশও জানেন না। হে রাজন্! গোপীগণ ঞীকৃষ্ণের সভর

देथः ज्वीिं प्रचयनयन अमूथालाकिनीं छ-

र्व्याथ्या वार्षा अवनिवयुषी नक्ष्मानक् रेमष्ट्र ॥ २२ ॥ 💥

একদা ক্রীড়মানাত্তে রামাদ্যা গোপবালকাঃ। কৃষ্ণো মুদং ভক্ষিতবার্নিতি মাত্রে অবেদয়ন্ ॥২০ দা গৃহীত্বা করে পুত্রমুপালভ্য হিতৈষিণী। যশোদা ভয়সন্ত্রান্ত প্রেক্ষণাক্ষমভাষত ॥ ২৪॥

## श्रीभत्रश्वाभी।

স্প্রতীকঃ সাধুরিব আত্তে। সভরে নয়নে যক্ষিন্ ভক্ত তং শ্রীবৃক্তং মুখক তদালোকিনীভিঃ ব্যাপ্যাতার্থা প্রথ্য পিতাত্মজ কর্ম ফলা উপালকুং আক্ষেপ্তুং নৈচ্ছং॥ ২২॥

কদাচিদপরাধান্তরে উপাণভত তদ। তু মহানা-চর্যামভূদিতি কথয়লাহ একদেতি॥ ২৩॥

উপালভা নির্ভংক্ত ভয়েন সংভ্রাম্বশ্রেকণে চপলনিরীক্ষণে অকিণী যস্য তং॥ ২৪॥

#### रिवक्षवरकावणी।

সক্ষোচনং নাক্রিষাতৈবেতি ভাব:। অত্র। জগজ্জন মলধ্বংসি শ্রবণ স্থৃতি কীর্ত্তনা;। মলমূজানি রহিতা: পুণালোকা ইতি স্থৃতা:। ইতি পুরাণান্তর বচনেন কৈমূত্যাপাতাং। ত্বক শাশ্র রোম নথ কেশ পিনন্ধমিত্যাদি প্রীক্ষমিণী দেবী সিদ্ধান্তামুসারাচ্চ'। যদ্যপি তত্র ন সম্ভবন্তি তথাপি বাল্যপীলাবিনোদার্থ: মৃধৈব প্রপঞ্চিতানি মেহনাদীনীতি জ্ঞেয়ং রোচমানতার্থ প্রধানোহত্র বশ ধাতু: ততঃ কমনীযে ইতি ব্যাগ্যাতং॥ ২২॥

পুনরেতৎপূর্নাং কানপি পূর্ব্বদহৃত লীলামমুস্বত্যাহ একদেত্যাদি। তে তথাবিধাং রামাদ্যা ইতি তেষু জ্যেষ্ঠবর্গং বোধরতি অতএব মেনে গোপারন্তি শ্রীব্রেম্বর্যাক্সনা সর্বতঃ শ্রীক্ষণং রক্ষন্তীতি গোপাশ্চ তে দারকাশ্চ॥ ২৩॥

প্ৰায়নমাশস্ক্য করে গৃহীয়া হিতৈষিণীতি। তত্ৰোপালস্কন তাড়নাদিক মপি হিতমিতি তত্জাতীয়স্য প্ৰেয়ঃ প্ৰমাশ্ৰ্যায়ং ব্যঞ্জিতং প্ৰমিতি কেবলং তস্যাত্ৰৰ তদ্যোগ্যায়ং মাতৃং প্ৰম হঃখ ভয় প্ৰদেনাত্মাপরাধেন তাড়নমপ্যাশস্ক্য ভয় সংজ্ঞান্ত প্ৰেক্ষণাক্ষং অতঃ কেবল মভাষ্ঠেতৰ নতু তাড়িত্বতীত্যৰ্থঃ॥ ২৪॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

কুত্মিতি ভাব:॥ ২২ ॥

#### জীবিখনাপচক্রবর্তী।

মূথমালোক মিতৃং শীলং যাসাং তাভি ব্যাথ্যাতো হর্থঃ শ্রীকৃষ্ণ ধাষ্ট্য দর্শন শ্রবণ বিবিধ ভাবশোভিত তন্ম্থাবলোকনোথ আনকো যতৈ সা। এত এব প্রহনিতমূথী তাসাং স্বস্ত চানন্দেন প্রকৃত্নিতমূখী উপালক্ষ্মাক্ষেপ্তঃ নৈচ্ছদিচ্ছামণি নাকরোং। মং হত-ধার্ষ্টোনেমা আনন্দে নিমজ্জ তত্তং স্চমন্ত্যা মামণি নিমজ্জন্তিত্যাকাক্ষয়েতি ভাবং॥ ২২॥

পুরন্ত্রীণাং স্তনং বাংসন্য রসাস্বাদফলকং সমাপ্য সহচরাণামনি স্তনং বিশ্বয় রসাস্বাদোদক্যাহ একদেতি। দগ্ধ: স্তেয়ে হয়ুপা-লম্ভং প্রোচ্য প্রাহ মৃদ্যে ছপনে। উপালম্ভং জনন্যেতি দ্বয়ে প্রেমেতি হেতুতাং॥ ২৩॥

করে গৃহীবেতি প্রায়নাশক্ষা উপাল্ভা নির্ভর্প্য। হিতৈষিণীত্যপাশস্ত তাড়নাদাবপি প্রেয়: পোষ এব নতু তত্র লোব:। প্র মিতি মাতুরিয়ং রীতিবেব নত্নীতি:। ভয়সমাত্তেতি প্রমেশরস্যাপি তাদৃশবং প্রেমবঞ্জ দ্যোতন্যা ভূষণমেব নতু দ্যণ মিতি ভাব:॥ ২৪॥

নয়ন ও শ্রীযুক্ত বদন অবলোকন করিতে ২ এই প্রকারে তদীয় মদদ কর্ম দুকল বারস্বার ব্যাখ্যা করিয়া বলিলেও যশোদা কেবল হাস্তমুখী হইয়াছিলেন, পুত্রকে ভর্মনা করিতেও তাঁহার বাসনা হয় নাই ॥ ২২ ॥

পরস্তা, কৌন এক সময় অন্য প্রকার অপরাধ ঘটাতে যশোদা শ্রীকৃষ্ণকৈ তিরস্কার করিলেন, তাহাতে একটা স্মহৎ আশ্রুষ্ঠা প্রকাশ পাইল অর্থাৎ এক দিন রাম প্রভৃতি গোপ বালকগন জীড়া করিতে করিতে দৌড়িরা মাসিয়া যশোদার নিকট নিবেদন করিলেন, মাতঃ! তোমার কৃষ্ণ মৃতিকা ভক্ষণ করিলেন ॥ ২৩॥

ক্ষামি দমদান্তাত্মন্ ভবান্ ভক্ষিতবান্ রহঃ। বদন্তি তাবকা হেতে কুমারান্তেইগ্রন্তোইপ্যয়ং॥২৫ নাহং ভক্ষিতবানন্ত সর্কো মিধ্যাভিশংসিনঃ। যদি সত্যগিরস্তহি সমক্ষং পশ্য মে মুখং॥ ২৬॥

# बीधतवामी।

অদাস্থাত্মন্ চপলগাত্র। রহ একাজে॥ ২৫॥

নাফ ভক্ষিতবানিতি ন বাহুং কিঞ্জিন্ময়া <del>ডক্ষাতে মংকুক্ষাবাদা</del>বেৰ সৰ্ব্বমন্তীতি ভাৰ:। সমকং প্ৰাত্যক্ষণ ২৬ চ

#### বৈষ্ণবডোষণা

উপলম্ভনমেব কিঞাছিদিশতি কলাদিতি। অদান্তাশ্বন্ হে অসংবতেজিয়। রহ ইতি শ্রীরামাদীনাং সাক্ষায় শুক্ণাশকে:। হি হেতৌ নিশ্চয়ে বা। তাবকা হীতি মিথ্যাপবাদাদিকং নিরন্তং এতে সাক্ষান্তমান। ইতি নাত্রাপলপিতুমপি শক্ষ্যীতি ভাব:। নমু মাত্র-র্ন্বিণেবেতি বদন্তীতি চেন্তত্রাহ তবাগ্রন্থোপি বদতীতি অত্র চায়মিতি তৎসাক্ষাদেবাস্যোক্তৌ ন কোহপি সংশর ইত্যর্থ:। অগ্রন্থ শ্বিক শ্রীবস্থাদেব নন্দ্রো প্রাত্তিৰ শ্বিকালিয়া: পর্ম স্থান্তেন শ্রীনন্দ্রন পুল্তেন বাচ্যিত্বা লাল্যমানত্বনচ তথা ক্রাব্ধা । ২৫॥

নাহং ভক্ষিতবানিতি শ্রীকৃষ্ণ বাক্যং বাল্যলীলায়াং মিথ্যোক্তেবপ্যদোষাং। প্রস্তুত বর্ণন প্রবণাভ্যাং শ্রীশুকাদি সাধুগণ সুপ হেতুদেন শুণঘাং। . হে অম্বেতি তাড়ন শঙ্কা ক্ষেহং বর্দ্ধয়তি। সর্ব্ধ ইত্যনেন মদগ্রক্ষোহপান্নমন্যবালবদেব মন্যতাং নচাত্র বিশেব ইতি ভাবঃ। মে মুখং পশ্র ইতি সমগ্র ভক্ষণতন্তকি কাপগন মননাং॥ ২৬॥

#### क्रमनमर्जः।

পুনরেতৎ পূর্বাং কামপি পূর্ব বদভূত লীলা স্বত্যাহ। একদেত্যাদি এবং নিগুড়েতি ব্যাপারাং হদোবং ॥ ২৩। ২৪। ২৫। ২৬॥

## শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

হে অদান্তাত্মন্ চঞ্চল গাত্র হে অনবন্ধিতচিত্র। মৃদমিতি মদগৃহে কিং সিতাদিকং ন প্রাপ্নোধীতি ভাবঃ। রহ ইতি নং সাক্ষাদশক্তেঃ। বদন্তি তাবকা ইতি নায়ং মিথ্যাপবাদ ইতি ভাবঃ। মন্তাড়নাকাজ্জিণ এতে মদৈরিণ এবেতি চেন্তবাগ্রজা বলদেবোহণীতি। অয়মিতি বংসাকাদেবেতি নাত্র সন্দেহ ইতি ভাবঃ॥ ২৫॥

কৃষ্ণ উবাচ নাহমিতি। বাল্য স্বভাবেন তাড়ন ভয়ায়িপ্যোক্তি বাৎসল্য রস্পোষিকা অতএব বাৎসল্যাদীনাং রসানাং প্রেম-বিলাসমর্বাৎ প্রেমবতাঞ্চ ভক্তবাৎ ভগবতাক ভক্তবাৎ ভগবতাক ভক্তবাৎসল্যভা পৃথিব্যক্ত সভ্য দৌচদয়াদি নিতা চিনার সর্বর গুল্গণ চক্তবর্তিবাৎ ভক্তবাৎসল্য গুলাফ ভ্তাচেত্যেবং ভূতত্বে মিথ্যাদয়ে ভগবতি ন দোবারতে প্রভ্যুত নহা ওণ চূড়ামণাভবস্থীতি বিবেচনীরং॥ ২৬॥

তাহাতে হিতৈষিণী ঐ জননী পুজের কর ধারণ পূর্বক তিরক্ষার করিতে লাগিলেন। হে রাজন্! মাতা হস্ত ধরিবামাত জীক্ষের ছই চকু ভয়ে ব্যাকুল হইল, যশোদা তাহাকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন॥ ২৪॥

অরে চপলাক। তুই একাতে মৃত্তিকা ভক্ষণ করিলি কেন ? এই যে তোরই দক্ষী এই দকল বালক এবং তোর অগ্রহ্ম এই রামও বলিতেছে॥ ২৫॥

শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন মা। আমি কিছুই খাই নাই অর্থাৎ (বাহিরে কিছু ভক্ষণ করি নাই, অত্যে হইতে আমার কৃষ্ণিমধ্যে সম্লায়ই আছে) ইহারা সকলেই মিথ্যা ব্লিতেছে, যদি ইহারা সত্য-বাদীই হয়, প্রত্যক্ষে তুমিই কেন আমার মুখ নিরীক্ষণ কর না।॥ ২৬॥

যদ্যেবং তহি ব্যাদেহীত্যক্তঃ স ভগবান্ হরিঃ। ব্যাদতাব্যাহতৈখব্যঃ ক্রীড়ামমুজবালকঃ ॥ ২৭॥ সা তত্ত্র দদৃশে বিখং জগৎস্থাসুচ থং দিশঃ। সাজি দ্বীপান্ধি ভূগোলং স্বাযুগীন্তারকং।

# वीधत्रशामी।

ব্যাদেহি মুখং প্রসারয়েতি ব্যাদত্ত মুখং প্রসারিতবান্॥ ২৭ ॥

তত্র তান্ত্রন্ধ বিষং দদৃশে দদর্শ। তং প্রাপঞ্রতি। জগং জলমং স্থানু স্থাবরং ধং অন্তরীকলোকং সাদ্রি দীপান্ধি ভূগোলং পর্যত

#### देवश्वदकावनी।

স এক কাৰা; তগবান্ নিত্যাশেষ ভগবতা যুঁজেকেন মন: সকোচ হেত্রপি হরি: সর্কাননাহর: মাধ্য্যাভিন্যতৈত্ব প্রাধান্য প্রকাশ নেন ধন্দশীল ইত্যর্থ:। অতএব নবিশেবেণ নচ আ সর্কতো হতং ত্যক্তং প্রথমিদি বেন স: কিন্তুনাদ্তদশি তলক্ত নিকটে স্থিতা নিজাচিত লীলা বিশেষবিসরং সদা প্রতীক্ষতে। কলাচিল্লভতেচ তক্ষ্প ইত্যর্থ: ক্রীড়ামহুজবালক ক্ষরং ক্রীড়য়া লীলয়া মহুজ বালক অংসদৃশ:। বহা ক্রীড়ামহুজা: তদীর তাদৃশ নিত্যলীলা সবিদ্ধ মহুষ্যা: নন্ধদৃষ্টবশা মায়াস্থানি মহুষ্যা: তেচ নন্দাদর: তেয়াং বালক: আগনালুসারেণ নিত্য তলীল:। উভর্ষা স্বেজামর অরপান্ধির্জাবোচিত লীলারসাবিষ্ট ইত্যর্থ:। অতএব ব্যাদেহীত্যুক্ত মাতো ব্যাদত ব্যাদাং মাতৃকোপ রবিরশ্বিলেশবশাল ধুনীলামুজ্য বিক্রিতং দ্ধানেত্যর্থ:। ভয়সংভান্ত প্রেক্ষণাক্ষমিতি চোক্তং তদেব-মদৌ সদৈব তাদৃশ লীলারসভোগী। তাদৃশ তলৈম্বর্য্য শক্তিরেবত্ স্বরং বা তমেবালিক্ষ্য বা তদভীষ্ট লীলারস সম্পাদনার ত্রসমাধানং সমাদধাতি যথাধুনা মাত্রি কোপাচ্ছাদকভাবান্তরগাদনেন তথা সর্কমেবাভান্ত বিদ্যুতে ততো ন কিম্বি ভক্ষয়তীতি তন্ধচ: সত্যাপাদনেন চ তল্পকণ নিজ প্রভু সাহাব্যায় বিশ্বমাদিবারা মাতৃত্বং প্রেমপোবান্ত বিশ্বং দর্শিতবতী যথাচ তৃণাবর্ত্তবাদেশ ত্রিন্ ভাবাদিক মাবিভাবিতবতী তদেবমচিন্তিত সর্কার্থ সিধ্বের্য্য মপি মহদেব সিন্ধই ইতি জ্বেরং॥ ২৭ ॥

সেতি যুগ্মকং। তত্ৰ তশ্বিন্ ভগৰতি তজ্জঠরা স্তর ইতার্থ:। ভক্ষণাপলাপোপবোগিত্বাৎ ৰক্ষ্যতেচ তৈঃ তনুদরাশ্রিতং বিশ্বমিতি। চরাচবা-

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

কিঞ্চ। স ঐক্ত কাধ্য: ভগবান্ নিত্যাশেব ভগবতা বোগেন মন: সঙ্কোচ হেতৃতা যোগ্যাহিপি হরিঃ মাধুর্য্যাতিশয়েন প্রাধান্যনসর্কমনোহর:। অতো ন বিশেষেণ চ আ সর্কতো হতং ত্যক্তং ঐত্যব্যমিপি যেন স:। কিছনান্তমিপি তৎ যস্য নিকটে স্থিছা নিজো
চিত্ত লীলাবিশেষবসরং সদ! প্রতীক্ষতে ক্লাচিৎ লভতে চ তাল্ল ইত্যর্থ:। ক্রীড়ামম্জবালকল্চ ক্রীড়ামম্জান্তদীয়তালৃশনিত্যলীলা সম্বন্ধি মম্ব্যা: শ্রীনন্দালয়: তেবাং বালকঃ নিত্য তল্লীলঃ। অত্যব্র ব্যাদেহীত্যক্তমানো ব্যাদত্তেতি বিদারিতে আস্যে সতীত্যর্থ: ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥

# **अ**विश्वनाथठळ वर्डी।

বাদেহি মুখং প্রাণারর। মহু মাতা মমান্যাপরাধং মা পশ্যতিতীচ্ছরৈব তাত্নাদ্বীতেন তগবতামিথ্যাক্তং। মুধ্প্রদারণে হুম্ বিভাজকান কাকণা সা তদ্যেক্ছা কথং সকলা স্যাদিত্যত আহ ন ব্যাহতং প্রেম মাধ্র্যবেক্তন নিজেখ্য্যাহ্বসন্ধানাভাবেহপি ন পরাহতং কিন্তু অক্কত্যাবদরে অর্মেব সাবধানমৈখ্যাং যদ্য সং। সত্যসন্ধাতা শক্ত্যা প্রেরিতা ঐখরী শক্তিঃ অ্যমেব প্রকটীভূয় বিখং দর্শবিদা প্রিক্তা প্রকাষ ব্যাহিতং ক্রিক্তা প্রভং সনকল কোপং বিশার্যামাসেতি ভাবং। নখলং ভগবতঃ প্রেমমাধ্র্যাম্বাদেন যতো বশোদা ভং সন তাত্নাদিভ্যোহপি তদ্য ভয়ং স্যাৎ অত ঈশ্বরোহ্ছমিতি অয়মেব নিজেখ্য্যমহসন্ধার নির্ভয় এব কথং ন তিইত্বিত্যত আহ জীড়েভি। জ্বীত্বাপ্রধানা মহুজবালক ইতি শাক পাথিবাদিন্তান্ত্যপ্রদাপনলোপঃ। শাক এব প্রধানং যদ্য তথাভূতঃ পার্থিব ইত্যত্র পার্থিবো ্বথা নিজাল্বাদ্যেষু খণ্ডাদিবস্তব্ব মধ্যে শাক্ষেব প্রধানং মন্যতে। তথিবায়মীশ্বরো মহুজবালকঃ ক্রীভাং তাল্পপ্রেমমন্ত্রীমের প্রধানং মন্যতে নতু শীর সর্ক্বেশ্বর্ছাদিক্ষিতি ভাবঃ॥ ২৭॥

তত্ত্ব মুপান্তর্জঠক্রে ক্রংমস্য চান্তর্জঠরে ইতি ব্রহ্মন্তবোক্তে:। জগৎ জলমং স্থানু স্থাবরং ধং ভূবলে কিং। সাজীতি ভূগোলমিত্যস্য

ষশোদা কহিলেন যদি এমন, তবে মুখ প্রদারণ কর দেখি। হে রাজন্! এই কথা বলিবা মাত্র সেই ভগবান্ হরি, যিনি লীলার্থ মনুজ বালক হইরা ছিলেন, যাঁহার ঐশ্বর্য অব্যাহত, তৎক্ষণাৎ বদন ব্যাদান করিলেন ॥ ২৭ ॥

যশোদা তাঁহার মুথ মধ্যে নিখিল বিশ্ব দেখিতে পাইলেন অর্থাৎ জন্ম, স্থাবর, অন্তরীক্ষ্ক, দিক্ সকল,

জ্যোতি শ্চক্রং জলং তেজো নভস্বান্ বিয়দেব চ। বৈকারিকাণীন্দ্রিয়াণি মনোমাত্রা গুণাস্ত্রয়ঃ॥২৮ এতদ্বিচিত্রং সহ জীবকাল স্বভাবকর্মাশয়লিঙ্গভেদং। সুনোস্তনো বীক্ষ্য বিদারিতাতে ব্রজং সহাত্মানমবাপ শক্ষাং॥ ২৯॥

#### श्रीधत्रश्रामी।

দ্বীপ সমুদ্র সহিত ভূবেশিকং বায়ুক্ত প্রবহঃ অগ্নি বৈঁছাতঃ ইন্দুক্ত ভারকাক্ত তৎসহিতং জ্যোতিক্তক্রং স্বর্লোকং বৈকারিকাণি দেবাঃ মন ইতি বৈকারিক শব্দেন গৃহীতমপি দেববৈশক্ষণ্যাৎ পুনর্মকং ইক্রিয়াণি তৈজ্পানি মাত্রাঃ তামসাঃ শব্দাদয়:। গুণাঃ সত্ত্বাদয়:॥ २৮ এঘমেতবিচিত্রং বিশং সহ একদৈব বীক্ষা। বিচিত্রতামাহ। জীবশ্চ গুণক্ষোভকঃ কালশ্চ পরিণামহেতুঃ স্বভাবশ্চ জন্মহেতুঃ কর্মাচ তৎ সংস্থারঃ আশয়শ্চ এতৈ বিশিক্ষানাং চরাচরশরীরাণাং ভেদো যশ্মিন্ তৎ তত্র চ ব্রম্পঞ্চ সহাত্মানং স্থাসহিতং কচিদ্বীক্ষ্য স্থানা-खानो बाह्य विमातिएक बादक भक्षामवान ॥ २२ ॥

# देवक्षवद्भावनी ।

ত্মকং বিখনেব বির্ণোতি ধমিত্যাদিন। ভেদমিতান্তেন বৈদ্যতোহণি র্জ্যোতিশ্চক্রেহণি জের:। খমস্তরীক্ষং ভূবলে কিং ইতার্থ:। বিয়দেব বিয়দপি দদর্শ স্থূলানাং তৎ পরিচ্ছেদ্যানাং তৎ কার্য্যাণাং জ্লাদীনাং ক। বাত্তেত্যর্থ:। এবমগ্রেহপ্যসূবর্ত্ত্যং। চকারাদহকারা-দীংশ্চ। তত্র নিরাকারাণামপীক্ষণং তদধিষ্ঠাতৃ দেবানামভেদভানেন জ্ঞেরং॥ ২৮॥

কদা বীক্ষ্য বিদারিতাত্মে সক্তি তশ্মিন্ ব্রজং সহাত্মানং আত্মভ্যাং স্বাভ্যাং ক্ষণ্ণবেশালাভ্যাং সহিতং। বক্ষ্যতেচ শ্রীব্রহ্মণা। যস্ত কুক্ষাবিদং সর্কং সাত্মং ভাতি ইতি এবং তত্তৈৰ বালবিগ্রহ্নভাচিস্ত্যশক্ত্যা যুগপ্দিভূত্ব মধ্যমত্বে তত এবাজৈৰ জগতোহস্তঃস্থিতত্ব বহিঃ স্থিতত্বে দর্শিতে। শক্ষামবাপ বিবিধামাশকামকরোদিতার্থ:। যথা পূত্রং প্রতি শক্ষা মকরোৎ বীক্ষাতি পূর্ববৎ দিল্লান্ত:॥ ২৯॥

সহাত্মানং আস্বভ্যাং স্বাভ্যাং শ্রীকৃষ্ণ বশোদাভ্যাং সহিতমিতি ৷ ২৯ n

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

বিশেষণং। স্বাঘ্ ডি জ্যোতিশ্চক্রমিতাস্য বায়ুঃ প্রবহঃ। অগিবৈ গ্রতঃ। নভস্বান্ নভস্কঃ বৈকারিকাণি দেবান্ গুণান্ স্থাদীং স্ত্রীন্। অত্র নিরাকারাণামপি দর্শনং তদধিষ্ঠাতৃদেবতানাং মূর্ত্তিমন্থাৎ। ২৮।।

পুনশ্চ প্রপঞ্চয়তি। এত দ্বিখং সহ যুগপদেব বীক্ষ্য জীবশ্চ গুণক্ষোভক: কালশ্চ পরিণামহেতু:। স্বভাবশ্চ জন্মহেতু: কর্ম্মচ তৎ-সংস্কার আশরণ্ড তৈ নি নানাং শরীরাণাং ভেনে। যশিংশুৎ। তনৌ কুক্ষো বিদারিতে প্রদারিতে আসের আস্যাধারা কুক্ষাবিত্যর্থ:। সহাব্যানং আত্ম পতি পুজাদি সৃহিতং ব্ৰুঞ্চ। যদ্য কুকাবিদং বিখমিতি ব্ৰুক্ষোক্তেরদ্যৈব বিখন্যান্তঃস্থিতত্ব বহিঃস্থিতত্ব অচিন্তাযোগ-মায়বা দর্শিতে। ততশ্চ কৃষ্ণশরীরদা জগন্মধ্যবর্তিও জগদ্বাপকত্বাভ্যাং পরিচ্ছিরতাপরিচ্ছন্নতে বাস্তবে এব ব্যঞ্জিতে ঐশ্বর্যোপাসকানাং বিশ্বনি ভগবদর্শনং ভগবতি বিশ্বদর্শনং যত্তকং তদেতদের মাধুর্য্যোপাদক শিরোধার্য পদার্ময়া প্রীয়নোদয়াপি দৃষ্টং। দৃষ্টা চ শঙ্কাং পুত্রং প্রত্যনিষ্টাশঙ্কাং অবাপ ॥ ২৯॥

এবং পর্বত, দ্বীপ, সমুদ্রসহিত ভূলোক, প্রবহ বায়ু, বৈহ্যত অগ্নি, চন্দ্র তারা সহিত জ্যোতিশ্চক व्यर्था पर्ताक ज्या जल, तायु, रेवकान्निक व्यर्था हित्ता विकाश हित्ता प्रकल, यन छ শব্দাদি বিষয় তথা সন্ত্রাদি তিন গুণ ইত্যাদি সুমুদার তন্মধ্যে বিরাজমান দৃষ্ট হইল ॥ ২৮ ॥

टर ताजन ! जनतात भन्नीत जैविष्तातिक मूर्धमारक अवेशकात विष्ठित विश्व यादारक अनेत्कालक जीव, পরিণাম হেতু কলৈ, কর্ম এবং তাহার সংস্কার, আশর এই সকল দারা চরাচর যাবতীর বিভিন্ন শরীর বর্তুমান ছিল, তাহা এবং এক প্রদেশে আত্মসহিত ব্রজপুরী অবলোকন করিয়া যশোদার যৎপরো-লান্তি বিস্ময় হইল॥ ২৯॥

কিং স্বপ্ন এতত্ত্তদেবমায়া কিংবা মদীয়ে। বত বৃদ্ধিমোহঃ।
অথো অমুধ্যৈব মমার্ভকস্য যঃ কশ্চনোৎপত্তিক আত্মযোগঃ॥ ৩০॥
অথো যথাবদ্ধবিত্তক গোচুরং চেতোমনঃ কর্মা বঢ়োভিরঞ্জসা।

#### শ্রীধরত্বামী।

তামাহ কিং স্বপ্ন ইতি। পরিতো বিলোক্যাহ নামং স্বপ্ন: তহি কিং দেবল্ল হরেমায়া তথা হলেহপি কিং ন পশুন্তি মদীয় এব কিনিব জিমোহ: বিপর্যাসঃ দর্শণে মুখবং এবং তুহি অয়ং ক্লেখেপি কথং অস্ত: প্রতীয়তে অন্তর্কাহিছৈচক রূপে। কথং জগং প্রতীয়তে তথা সতি বিষপ্রতিবিশ্বরোরিব পরম্পারং বৈপরীত্যেন প্রতীতিঃ শুদিত্যাশক্ষাশ্রথা বিতর্কয়তি অপো ইতি অথবা মনাম্ব্যার্ভক শ্রাপি সতঃ যঃ কশ্চনাচিস্তা আত্মবোগঃ স্বীষ্ঠমেম্বর্যঃ ঔৎপত্তিকঃ স্বাভাবিকঃ॥ ৩০॥

চরমং পক্ষমাশ্রিত্য অয়মীশ্বর ইতি নিশ্চিত্যাহ অথো ইতি। চেতশ্চিত্তং চিত্তাদিভি ন বিতর্ক গোচরং জগৎ যদাশ্র্যং যদ্ধিষ্ঠানং

#### বৈষ্ণবতোষণা।

এতদ্বৰ্শনং উত্ত বা দেবতা বিশেষত মায়া বা। বত থেদে ঔৎপত্তিক আশ্বযোগঃ জন্মনৈৰ স্বন্ধিন্ত প্ৰথিক্তিঃ। বাবং বাবং বিবিধাশ্চয্য দৰ্শনাং ॥ ৩০ ॥

অপ চরম তর্কমণি তত্র কুংণিপাস। কৌমল্যাদি দর্শনেনাসম্ভাব্য পুনর্বক্তবিধৈবি তিকৈনি শ্চয়মপ্রাপ্নুবতী সর্ব্ব ছব্বিতক সম্পা-

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

তিষ্যেৰ ৰালবিগ্ৰহস্যাচিস্তাশক্ত্যা যুগপদ্ভিত্ত মধ্যমত্ত্বে তত এবাস্যৈৰ জগতোহস্তস্থিতত্ব বহিঃস্থিতত্বৈ দৰ্শিতে ঔংপত্তিক আত্মযোগঃ। জন্মনৈৰ স্বন্ধিন্ অপূৰ্ক্ষাৰ্থ সম্প্ৰাপ্তিঃ॥ ৩০॥

অথ চরম তর্কমপি তত্র ক্ষ্ণপিগাসা কোমলতাদি দর্শনেনাসন্তাব্য নিশ্চমমপ্রাপুরতী পরমাচিদ্যাশক্তিং শ্রীনারায়ণমের তৎকাবগং

# শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তালৃশদর্শনস্য কারণং বিতর্কয়তি। কিং স্বপ্ন: এতদর্শনং কিং স্বপ্নহেতুকং নহি নহি নিজাণস্য নয়নকাল্য্যাদ্যভাবাং তং কিং দেবমায়া নহি নহি মম-নির্টীয়া মোহনে দেবানাং প্রয়োজনাভাবাং। তহি কিং মদীয় এব কন্টিছুছেমে হৈ বিপর্যাসঃ। নতি নহি স্বাস্থ্যসময়ে সম্প্রতি মম বৃদ্ধি মোহকারণাভাবাং। অথো অথবা অমুষ্য মম বালকস্য নারায়ণসমো গুণৈরিতি গর্গবণিত্মহা-প্রভাবতাং কন্টনাচিন্ত্য আব্যাগাং আত্মীয় মৈম্বায় ॥ ৩ । ॥

চতুর্তু তর্কমণি তত্র অপুত্রে কুৎপিপাদা মৌগ্ধা চাঞ্চল্যাদি দশনেনাসন্তাব্য অবৃদ্ধা কমণি নিশ্চয়ং কর্ত্ত্মশকুবতী দক্ষ তকা

তিনি আপনা আপনি কহিতে লাগিলেন এ কি স্বপ্ন ? পরে চতুর্দ্দিক্ নিরীক্ষণ করিয়া আপনিই বলিলেন স্বপ্ন নয়, ইহা বুঝি ভগবান্ হরির মায়া। তদনন্তর বিবেচনা করিয়া বলিলেন দেবমায়া নয়, তাহা হইলে অন্যে দেখিতে পায় না কেন ? আমারই বুঝি বৃদ্ধি বিপর্যান্ত হইয়াছে, দর্পণে যক্রপ মুখ দেখে তদ্ধপ এতমধ্যে বিশ্ব দেখিতেছি। তাহার পর আপনিই বিচার করিয়া বলিলেন ঐ রূপও নহে, তাহা হইলে প্রীকৃষ্ণও তম্মধ্যে কেন প্রতীয়মান হইবেন ? পরিশেষে আশক্ষা করিছে করিতে করিতে কহিলেন অন্তরেও বাহিরৈ একরূপে বুঝি জগৎ প্রতীত হইতেছে। ক্ষণকাল পরে আপনিই কহিলেন তাহাও নহে, তাহা হইলে বিশ্ব প্রতিবিশ্বের ন্যায় পরস্পার বৈপরীত্যে প্রতীত হইত। এই রূপ আশক্ষা করিয়া অন্যপ্রকার বিতর্ক করত কহিলেন, আমার বালকের বুঝি ইহা স্বাভাবিক কোন অচিন্ত্য প্রথা হইবে ॥ ৩০ ॥

পরে শেষ পক্ষই অবলম্বন করিয়া বলিতে লাগিলেন এই ঐশ্বর্য অত্যন্ত অচিন্ত্যই বটে। অহে। ! যাহা চিত্ত মন বাক্য এবং কর্মদারা বিতর্কের বিষয় নয়, যাহা জগতের আশ্রয়, যাহার অধিষ্ঠান হৈছ **11** 

যদাশ্রারং যেন যতঃ প্রতীয়তে স্ক্র্বিভাব্যং প্রণ্ডাম্মি তৎপদং ॥ ৩১ ॥ অহং মসাসো পতিরেষ মে স্থতো ব্রেজম্বরস্থাবিলবিত্তপা সতী।
গোপ্যাস্চ গোপাঃ সহ গোধনাশ্চ মে যশায়য়েখং কুমতিঃ স মে গতিঃ ॥ ৩২ ॥

# ত্রীধরস্বামী।

যেন করণাধিষ্ঠাতা যতো বুদ্ধিবৃত্তাভিব্যক্তাৎ। নমু ইদমবিতর্ক্যং ভবতু তৎ পদং কীদৃক্ শত আহ সুছর্মিতাবাং ইদ্মত্যস্ত মচিস্তা নিত্যবং ৪০০ ৪

এবং প্রপঞ্চ প্রতীভ্যোলীতং তবং পুনর্জীবসংস্তিহেতুমায়াশ্ররজেনোরয়স্তাহ অহমিতি বশোদা নামাহং অসৌ মম পতি: অমুষ্য এজেখরস্য অধিল বিভাধিষ্ঠাত্রী অহং সতী জায়া এব ক্ষেণ মম স্থতো গোপ্যাদরশ্চ মদীয়া ইখং কুমতি র্যনায়য় আস এব মে শ্রণমিতি ॥ ৩২ ॥

# বৈঞ্চৰতোষণী।

দকং শ্রীনারায়ণমের তৎ কারণং নিশ্চিত্য তঞ্চ হজ্ঞেরং মতা কেবলং প্রণমতি অথো ইতি। কর্ম্ম শুভসদৃষ্টমৈছিকঞ্চ কান্নিকব্যাপারশ্চ ন বিতর্কগোচরং বিতর্কাগোচর ইত্যর্থ: তাদৃশমপি যদাশ্রয়ং যেন সাধনেন যতো হেতো রঞ্জসা প্রতীয়তে সাক্ষাদমূভ্য়তে তঞ্চ পদং পাদাঞ্জং অতএব স্মৃত্বিভাবাং অচিষ্ক্যকার্যার্নশস্ত কারণত্বেন প্রমাচিষ্ক্য স্বন্ধপ শক্তিবৃন্দকং ॥ ৩১ ॥

অথ বাহ্মপ্রসন্ধার নিজ্পবাভাবিকাবস্থিতিমেব দ্রুত্বসন্তাহ অহমিতি পাদত্তবেণ পুনরন্তর মন্ত্রসন্ধার ভীত্ তমেব শরণং গছতি যদিতি ইখং নিজবালকে উচ্চাব্য দর্শনে হেডু: কুমতি র্যন্ত ত্র্বিভাব্যরা মার্যা সঞ্চব মম তত্তক্তিবিমুখারা: শরণমিতি। যদা যদী-ত্যাদৌ তথাপীত্যাক্ষেপ্লভাং। তদেতং সর্বং লবণাকর ভাষেন বিশ্বয়াদি দারা তস্যা: প্রেমেব পুঞ্চাতি ইতি দর্শিতং॥ ৩২ ॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ

নিশ্চিত্য ত**ঞ্জুত্তে বিং মধা কেবলং প্রণমতি। অধো ইতি ত**গ্য পদং পদাব্ধং। অধু বাহ্যমহুস্কার নিজং ভাবং দ্রুটুরস্তাহ। অহ-মিতি পাদক্রেণ পুনস্তং সুখাস্তস্থিতমহুস্কায়াহ॥ ৩১॥

যদিতি। কুমতি নিজ বালকে বিশ্বরূপদর্শনরূপা॥ ৩২ ॥

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

গোচরস্যাপি বস্তনো বস্ততঃ কারণং ভগবানেবেতি সামান্যতো নিশ্চিবতী তৎপদাত্ম্বং স্কৃতস্বস্তিকামা প্রণমতি। অথো ইতি বথাবৎ যাথার্থোন নৈব বিতর্কস্য গোচরং। ক্লীবন্ধনার্ধং। দৃশ্যমানমাশ্চর্যমিদং বদাপ্রয়ং যো হস্যাধিষ্ঠানং। যতঃ যশ্চাস্যোৎপত্তিহেতুঃ। বেন প্রতীয়তে যশ্চাস্য প্রতীতিহেতুঃ তৎপদং তস্য ভগবতঃ পদং চরণারবিন্ধং। চেতশ্চিন্তং। তদাদিভিঃ প্রণতান্ধি স্কৃত্বর্বিভাব্যং,মাদৃশীনাং ধ্যাকুস্পক্যমতঃ কেবলং প্রণমামি। স্ববাস্য মৎস্কৃত্ব্য সর্কানিষ্ঠং প্রশমন্বন্ধিতি ভাবঃ॥ ৩১ ॥

হত্ত হত্ত সএব স্থাত্যাদ্য দাতা সএব বক্ষিতাপি ভবেদেৰ তত্ৰ মন পুনরজ্ঞারাঃ কিনহন্ধার মনকারাত্যামিতি তৌ ক্রিহাস্তী শ্রীবিফুং প্রপদ্যনানা প্রাহ স্বাহনিত। অধিলবিত্তপা নিধিলধনরকণাভিমানবতীত্যর্থঃ। গোপান্চেতি গোপীনাং গোপানাং সর্ব্বগোধনা-নাঞ্চাহমেব স্বামিনী মহারাজ্ঞীত্যভিমানে! যথা কুমতি স্তথৈব লোকোত্তরদ্যাদ্য সর্ব্ব ব্রম্বন-প্রাণ্ডত্তপ্র বালকদ্যাহং মাতা অহমেব পালয়িত্রী দানধ্যানাদিভি বিপ্রদেবাদ্যারাধনৈ নিত্যং বিফুপ্রুইনেন্চ সর্বানিষ্টেভ্যো রক্ষামহমেব সভতং কারম্বনী ভবামি ভতোহদ্য স্বভীত্যভিমানোহিপি কুমতিঃ। এজাবতো গোকুলৈখব্যদ্য শ্রীবিফুনৈব দত্তবাত্তর যথা মুমাভিমানানৌচিত্যং ভথৈব ভেনেব কুপরা দত্তে প্রভাগ্যবিষ্টেভ্যঃ প্রতিকলং পাল্যমানে চ পরম লোকোত্তরে হিম্ম স্থতে লোকিক্যা গোপকাতে নিক্টারা অভ্যবোগ্যায়া মুম মাতৃত্ব রক্ষয়ত্রীখাল্যভিমানোপ্যনৌচিত্যাং কুমতিরেবেতি বিবেকজিম্বক্ষিব শ্রীবশোদ্যারাং ক্ষণিকীয়ং নতু বিবেকঃ। যথা মহামোহা-ক্ষানামিপ ব্যাবহারিক লোকানাং কাদাচিৎক পার্মাধিক প্রসঙ্কতান্ত্রীপুত্র্যাদ্যাসক্তিবিহানেত ক্ষেয়ং ৪২ ৪

বুজির্ত্তি অভিব্যক্ত হয়, এবং যে পদ হইতে এই জগৎ প্রতীয়মান হইতেছে সেই পদে সামি শরণাপন্ন হই॥ ৩১॥

হায়! আমি থশোদা নাল্লী গোপী আমার পতি এই নন্দ,ইনি ব্ৰক্তেশ্বর, আমি ইহাঁর অধিন বিভের অবিষ্ঠাত্তী সতী জায়া, এই কৃষ্ণ আমার পুত্র, এই সকল গোপ, গোপী এবং গোধন আমার,এই প্রকার কুমতি যাঁহার মায়ায় হইতেছে সেই এই ভগবান্ আমার শরণ হউন॥ ৩২॥ 22

্ইত্থং বিদিততত্ত্বায়াং গোপিকায়াং স ঈশ্বর:। বৈঞ্বীং ব্যতনোশ্মায়াং পুত্রস্কেছ্ময়ীং বিভূঃ ॥৩৩॥ সদ্যো নফস্মতি গোপী সারোপ্যারোছ্মাত্মজং। প্রবৃদ্ধস্নেছকলিল হৃদয়াসীদ্যথা পুরা॥ ৩৪॥ ত্রয্যা চোপনিযন্তিস্ত সাংখ্যযোগৈশ্চ সাহতৈঃ। উপগীয়মান মাহাত্ম্যং হরিং সামন্যতাত্মজং॥৩৫

#### औधत्वामी।

বৈক্ষবীং স্বীয়াং মায়াং ॥ ৩৩ ॥

প্রবুদ্ধেন স্নেহেন কলিলং ব্যাপ্তং ছদয়ং যস্যা: সা পুরেবাসীৎ॥ ৩৪ ॥

মানাবলোদ্রেকমাহ ত্রব্যা ইতি। ত্রব্যা ইক্রাদিরপেণ উপনিষ্টিঃ ব্রশ্বতি সাংবৈষ্ণঃ পুরুষ ইতি বোগৈঃ প্রমান্ত্রেতি সাহতৈ ত্র্য-

#### বৈষ্ণবজোষণী।

তদেবং তরিষ্ঠানেব দৃষ্ট্। সোহপি পরমতুই ছবৈষত্র্য দর্শনেন বাত্রশ্চ সন্ তং ভাবমেব তহা বিস্তাররামানেত্যাই ইথমিতি। ইথং অহং নমাদাবিত্যাদিনা বিদিতং নির্দ্ধারিতং তবং প্রথমপাদত্ররোক্ত শ্রীকৃষ্ণলীলাযাথার্থ্যং যরা তহাং গোপিকারাং সদা মাতৃভাবেন শ্রীকৃষ্ণলীর্ত্রাং স তরা প্রাথিত ঈশবঃ। মারাং তিষ্বিরাং দরামেব বাতনোৎ পূর্বতোহপি বিস্তারমামাস যথা তিষ্করোধি প্রায়মীদৃশ দর্শনাদিকং পূন ন জাতং ইতি তাং বিশিনষ্টি পুত্রেতি প্রাচুর্ব্যং মার্ট্ প্রাচুর্ব্যং চাক্তদীর নেহাপেক্ষরা তস্যাং প্রকৃতিসম্বন্ধিত্বং প্রত্যাচটেন্টবিষ্করীং বিজ্ঞোঃ স্বর্গণক্তিং॥ ৩৩॥

তত-চ সদ্যো নষ্টা তিরোহিতা স্থৃতি তদসুসন্ধানং যতা তথাভূতাসীং। আরোহমতং আত্মতা নিজোদরাত্ৎপদ্ধং ইতি তত্তাবা-স্বাদঃ। নষ্টস্থৃতিস্থমের অনুষ্ঠি যথা পুরেতি ॥ ৩৪ ॥

তদেবমহো পরমভাগাবতী শ্রীয়শোদেত্যাহ এয়েতি। এয়া কর্মোপাসনাম্যা তত্তদন্তর্যামিপর্যবসানরা উপনিষ্টিঃ স্বরূপ-গুণাভ্যাং সর্ব্ধ বৃহত্তমে তব্নিরেব পর্যাবসিতাভিঃ। সাংখ্যযোগৈঃ সেম্বরৈকৈচ শ্রীভাগবতার্থপর্যবসানৈঃ পুরাগৈবিত্যগঃ। সাহতৈ তত্ত্বপাসনামরেঃ পঞ্চরাতাগনৈঃ। অনুযোরপি বেদাক্ষাং তৎ সাহিত্যোকিঃ। উপহীনে যংকিঞ্চিদ্দীয়মান্মাহাঝাং নতু

#### ু ক্রমসম্বর্ড: i

তবং অহং মমেতি পাদক্ররোক্ত তল্লীলাঘাথার্থ্যং স তরা প্রাথিত ঈশ্বরং মারাং তদ্বিষ্যাং দরাং পূর্বতোহপি বিস্তার্থামাস। বৈষ্ণবীং বিষ্ণোঃ শ্বন্ধপশক্তিং তদেব মহো প্রমভাগ্যবতী শ্রীয়শোদেত্যাহ॥ ৩৩॥ ৩৪॥

ত্রেভি। ত্র্যা কর্মোপাসনাম্যা স্থাত্ত্রীমপ্র্যসান্ত্র উপনিব্ডিঃ বন্ধপ্রণাভ্যাং স্থ্রুছত্মে ত্রন্ধণি ত্রিলেব প্রা

#### প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ইখমনেন প্রকারেণ বিদিতং তবং মমস্ববিহাসা বরা তদ্যাং যশোদারাং সত্যাং তহি কা মাং লাল্যব্যতি প্রতিক্রণং কা পাল্যি-ব্যতীত্যতঃ প্রব্যেহমরীং স্বরূপে মরট্। প্রব্যেহরূপং প্রেমবিশেবং ব্যতনোদিত্যর্থঃ। মোহনসাধর্ম্যান্মারাং তেন চ'তাং প্রেমান্ধাণ চকারেত্যর্থঃ ॥ ৩৩ ॥

নষ্টশ্বভিরিতি। বধা স্বপ্রদৃষ্টোহর্থ: কশ্চিৎকশ্চিবিস্মর্যাতে তথৈব সদ্য এব সা বিশ্বদর্শনাদিকং বিসন্মারেত্যর্থ:। প্রার্জন সক্ষোচকাব পাদপ্রৈশ্বর্যক্তানাদসমূচিতেন প্রভুতিত প্রবাদীভূতেন স্নেহেন কলিবং ব্যাপ্তং হৃদরং যস্যা: সা॥ ৩৪॥

দেৰক্যাঁ অপি সকাশাৎ তদ্যা উৎকৰ্ষমভিব্যঞ্জয়িতুমৈশ্বৰ্যাদৰ্শনাদ্পি স্বীয় বাৎসল্য প্ৰেন্ধ: সজোচাভাবমাথ্যাহৈশ্ব্য শ্ৰহণাদ্প্যাহ। ত্ৰহ্যা বজ্ঞপুক্ষকেন উপনিষ্তি ত্ৰ'ল্পকেন সাংথ্যৈঃ পুক্ষকেন যোগৈঃ প্ৰমাত্মকেন সাম্বতিঃ পাঞ্চরাকৈভগবকেন ইত্যেবং কৰ্মিপ্ৰভৃতিভি ৰূপগীন্তমান মাহাত্মাং দেশকালানিয়মান্তস্যাঃ সমক্ষমসমকং বা উপ আধিক্যেন গীৰ্মানৈশ্ব্যং ঠুঁৱিং সা আত্মসমমন্যতেত্যত্মদভীষ্টদৈৰ

হে রাজন্। গোপী যশোদ। এই প্রকারে যথার্থ তত্ত্ব অবগত হইলে পর সেই ঈশ্বর পরম বিহু ভগবান পুত্রত্বেহ্ময়ী স্বীয় মায়া বিস্তার করিলেন ॥ ৩০ ॥

তাহাতে তৎক্ষণাৎ সেই গোপীর স্মৃতি বিনক্ট ইইয়া গেল। তিনি তনয়কে কোড়ে করিলেন, প্রবৃদ্ধ স্নেহে তাঁহার হুদয় ব্যাপ্ত হইল। স্নতরাং পূর্বে যক্রপ ছিলেন তক্রপই হইলেন॥ ৩৪॥

এবং বেদ সকল ইজাদি ৰলিয়া, উপনিষ্ৎ সকল এক বলিয়া, সাংখ্য সকল পুরুষ বলিয়া, যোগ

বিষ্ণুরাত উবাচ ॥

নন্দঃ কিমকরোদ্রহ্মন্ শ্রেয় এবং মহোদয়ং। যশোদা বা মহাভাগা পপো যদ্যাঃ স্তনং হরিঃ॥৩৬

शिवतत्रामी।

বানিতি উপগীয়মানং মাহাত্মাং যদ্য তং॥ ৩৫॥

অতি বিশ্ববেন পুছতি নন্দ ইতি। মহামুদ্য উদ্ভবো যদ্য তৎ ॥ ৩৬ ॥

বৈষ্ণবতোষণা।

সমাক্ মানস্তাং। তং হবিং আত্মলং মনাত পূক্সভাবেন সাক্ষান্তথা লালিতবতীতি কাৰা চমংকারাতিশরো ব্যক্তিঃ। অত্রেদং বিচার্যাং ন তাবদস্যা বিশ্বদর্শনমুংকর্ষহেতুঃ। বাবদ্ধ লাহেত পরাবরেছিন্ন বিশ্বেষরে এইরি ভক্তিযোগং। তাবং স্থ্যীয়পুরুষস্থ রূপং ক্রিয়াব্যানে প্রযতঃ শরেত। তং সত্যমানলনিধিং ভক্তেত নান্য সক্ষেৎ যত আত্মপাত ইতি প্রথমসাধনেহিলি বিভীয়ক্তরাবজ্ঞাত্তরাং। নচ বিশ্বদর্শনেন শ্রীক্ষণ্ডে পরমেখরজ্ঞানমভূং। ভূর্য্য নির্ণয়েহপামুষ্য মমার্ভকন্তেত্যাহ্যক্তরাং। ঈশরস্থ যভচ্ছলাত্যাং পরোক্ষতরৈব নির্দেশাং পঞ্চমনির্ণয়ে চ পত্যাদিগণপাত্তিবেন এব মে স্কুত ইতি যন্মায়েতিচ তথৈব দর্শনাং অন্যথা শ্রীদেবকীবদসৌ তমেবাজ্যেরে। নচেশ্বর জ্ঞান মৃত্তমং পূজাদিভাবময় শ্রীক্ষঞ্চাদায়ত্ব অফুরুম ইতি প্রকরণার্থঃ দর্শিতব্যাখ্যয়া তম্ভার্থতাপ্রেরেশাং। অফ্রথোন্তরেরিছে প্রমান্তরের ন সংগচ্ছেতে তন্তান্তাদৃগীশরক্ষানং পরিত্রা তদাবরণঞ্চানম্পোচ্য ক্তনপায়নাদিককৈর রাজ্ঞা ভোষানাগাং। শ্রীক্রমেবেরেরের ন সংগচ্ছেতে তন্তান্তাদৃগীশরক্ষানং পরিত্রা তদাবরণঞ্চানম্পোচ্য ক্রনপায়নাদিককৈর রাজ্ঞা ভোষানাগাং। শ্রীক্রমেবেরেরেরের ন সংগচ্ছেতে তন্তান্তাদির শ্রীভক্তনালি তং প্রাগ্রন্থ ক্রমেবালিছা কর্মান পরমঞ্জানবতাং শ্রীব্যাদিদীনামিলি তক্ষ্পানমাত্র তাগুলাঃ প্রিরোহিলি তন্ত্রান্তনালি কিংকানতিক হিলার্যাণ্ডাং। আন্যেয়ান্ত্রা স্বির্দ্ধান্তনালি ক্রমেবের তাদৃশ্যাং প্রিরোহিলি তন্ত্রান্তানা নুনিয়িয্যাণ্ডাং। অন্যেয়ান ভারিয়ান তিন্তানালি ক্রমেবেরিক কর্মেরানির প্রতিত্রান্তনালি ক্রমেবেরিক ক্রমেরানির ক্রমেবিরান্তনালি ক্রমেবেরিক ক্রমেরান্তনালি চি। ততঃ কিং পুন স্বনীয়দ্য ইতি দর্শিত এবার্থঃ সাধীনান্ত নান্তনাল তথা ।

ক্রমসন্দর্ভঃ ৷

বিশিতাভি: সাংখ্যাযোগৈ: সেম্বরি:। তে চ শ্রীভাগবতার্থ পর্যবসানানি পুরাণানি মন্তব্যানি। সাহতৈ: তহপাসনাময় পঞ্চরাতাগথৈ: উপ যংকিঞ্চিনীয়মানং নতু সমাক্ আনস্ত্যাং। তং হরিং আত্মন্তমমন্ত পুঞ্জাবেন সাক্ষান্তথা লালিতবতীতি। কাকা চমংকারাতিশয়ো ব্যক্তি:। অথ বিশ্বরূপদর্শ নমীশ্বরভাবং চানহুমোদ্য পুঞ্জাবময় স্তনপায়ন বাল্যলীলাহুভবাবেবাহুমোদ্তে ॥ ৩৫ ॥
নন্দ ইত্যাদি নায়ং স্থাপো ইত্যন্তেইধ্যায়ত্বয়ায়কো গ্রন্থ:॥ ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩১। ৪১। ৪১।

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবৰ্ত্তী।

তেনাবয়ে ব্রত নিয়ম সংতত পূজনাদিভি: সম্বটেন প্র্নাভিধান মদীয় শ্বন্তরক্কত নিয়বদা বছতপ: সম্বোধিতেন শ্রীনারায়নেন কপয়া দত্তো লোকোত্তর: পূল্রোহয়ং য়ৎ কর্মিপ্রভৃতিভি স্রয়াদি প্রতিপাদাদেন ভ্রমতে তত্র থলু নায়য়ণসমা গুণৈরিতি সর্ব্বের গর্গেণ গীয়তয়া নায়ায়ণ সায়া প্রথমা অনায়্রকর পূত্রনাদিবধানামেতৎকর্ত্কস্বপ্রথমা চায়মেব নায়ায়ণ ইতি তেয়াং বিশ্বাস এব হেত্র ব্রত্তয়য়ং মৎপূত্র এব মাং মাতয়ং ক্রণমপ্যদৃষ্ট্র বিক্লীভবতাহকৈনং শ্বনিমেষ বাবহিতং জ্ঞাছা বিহ্বলীভবামীতাবয়ো র্জনাজনন্যোরহুত্ব এবাত্র প্রমাণমিতি মনসি সা সমাধতে। কিঞা কর্মিপ্রভৃতয় স্রয়াদিভির্বথা হরিং মঞ্জপুরুষাদিকং মন্যন্তে তইথবেয়ং বাৎসল্য প্রেয়া হয়িং আয়্রজং মন্যতে তেভার তত্তদম্রলাং ফলং দাদনন্তেয়ামস্থাহকো বশমিতা সমীটে। অসৈয়াত্ বাৎসল্য প্রমামর্প্রগং ফলং দাত্রমসমর্প্রে ক্রাম্বাহ্মে ক্রাম্বাহ্মির স্বাম্বাহ্ম রোদিতীতাদি বিশেষ উত্তরাধ্যায়ে স্পরীভবিষ্যতি পদ্যমিদং ক্রফলীলায়াং পরিভাবাস্ত্ররূপং জ্বেরং। পরিভাবা হেকদেশস্থা সকলং শাল্রমতিপ্রকাশ্যতি যথা বেম্মপ্রদীপ ইতি। ইকো গুলবুদ্ধী ইতি যত্র যত্র গুলবুদ্ধী ক্রমেতে তত্র তত্র ইক্ প্রিভাবোপতিষ্ঠতে বথা তথৈব ক্রেমার কৈশোর মাধুর কুরক্কতাদিগত লীলাম্ব যত্র যত্র শ্বর্যপ্রসম্পতিষ্ঠতে ইতি॥ ৩৫ দ

উত্থাদর্শন প্রবণান্তামপি তদ্যাঃ প্রেমদার্তামারণ্য ক্ষিপ্তভূতিভো ভক্তভাশাভিব্যক্তমানমুংকর্ষক জানরতিবিশ্বরেন পৃক্তি
সকল পরমাত্মা বলিয়া, তথা সাত্তগণ ভগবান বলিয়া, যাঁহার মাহাস্ক্য গান ক্রিভেছেন, সেই
হ্রিকে আপনার আক্সক্ত জান ক্রিভে লাগিলেন। ৩৫॥

এই বৃত্তান্ত শ্রবণ করিয়া অতিশয় বিশায় হওয়াতে রাজা পরী**ক্ষিৎ পুনরা**য় <sub>প</sub>বিশায় প্রকাশিয়া

পিতরো নাম্ববিন্দেতাং কৃষ্ণোদারার্ভকেহিতং। গায়স্ত্যদ্যাপি কবয়ো যল্লোক শমলাপহং ॥৩৭॥ শ্রীবাদরায়ণিরুবাচ ॥

জোণো বস্নাং প্রবরো ধরয়া ভার্যয়া সহ। করিষয়মাণ আদেশান্ অক্ষুণস্তম্রাচ হ।

#### औशतयामी।

যরোঃ প্রসল্লোহবতীর্ণঃ তৌ পিতরাবপি যন্নাম্বিন্দেতাং ন প্রাপ্নুতাং ক্ষণস্যোদারং মহৎ অর্ভকেহিতং বালনীলাং যচ্চ কর্যো গার্ম্ভি তদ্যোহবিন্দাং স কিং প্রেয়োহকরোং॥ ৩৭॥

#### देवस्वदायां।

পূচ্ছতি নন্দ ইতি। কিং কতরং। এবমীদৃশো মহান্ উদয়: সর্বতঃ স্লেহোৎকর্বো যন্ত্রাং। মহাভাগেতি ততোহপি তস্যা: শ্রেযোহধিক-মতিপ্রৈতি তদেবাহ পণাবিতি। অতঃ পীডামৃতং পরন্তস্যা: পীতশেবং গদাভূত ইত্যুক্তরীত্যা শ্রীদেবক্যা ন্তথা বৎস বালক বপোন ন্যাসাং গোপীনাং ন্তনপানে সত্যপি পূর্ববৈশ্বয় জ্বানমিশ্রমান্তবা কথঞ্চিত্ত তাপ্যসময়ে বারেকজাতত্বাচেতা তর্ত্রান্য ক্রপত্বহেত্য পরম্পবৈতাদৃশ মেহাভাবাদকৈব ন্তনপানং সমাগভিপ্রেকং॥ ৩৬॥

কিঞ্চ পিতরাবিতি পিতৃত্বেন সর্ক লোকখ্যাতৌ লক্করের চাপি প্রীক্ষণেয়াদারং রাজন্ পতিরিত্যাদৌ অক্কেনক ভজতাং ভগবান্
মুকুন্দো মুক্তিং দদাতি কহি চিং স্থান ভক্তিরেগাং ইভ্যুক্তদিশা পর্মাদের্ল্যাপি দাতৃ যথ অর্ডকেহিতং তদমু পশ্চাদপি না বিন্দেতাং
মধুরারাং গতেন বাল্যলীলাসম্বরণাং। কিং বাচ্যং সাক্ষাদম্ভব মাহান্ত্যং তদ্য ভক্তা গুরবোহিপ যক্ষানেনাপি কুতার্থ্যপ্তাং পরা
পরার্জং কালং গময়ন্তীত্যাহ। যচ্চ কবয়ো ব্রহ্মাদয়ং পূর্বপরার্জানে প্রীনারদাদীন্ প্রভ্যুপদেশনারভ্যাদ্যাপি গায়ন্তা। অহে। সর্ক্ষেবান্
মপি তন্তাগা বিশেষ হেভুরিত্যাহ যদেব চাদ্য কলিকালেহিপি লোক্মাত্রাণাং সর্ক্ষেবান্প শমলাপহং। এক্ত্রাপি গীয়মানেন সম্বন্ধপরম্পার্মা
কুতাপি করণাং মন্তক্তিযুক্তো ভ্বনং পুনাতীতি অমুব্রদ্মায়হং নিত্যং পুরেয়েত্যভিলু বেণুভিরিতিবং। অত উক্তং প্রীস্তেন কুফ্চারিতং কলিক্মাম্মিতি। যাল কবয় আত্মারামশিরোমণ্রোহিপি ভবন্ধি। মন্তাগবিতা অনাদিতঃ শ্রুপুরাণগীয়মানমপি অদ্যাপি
গায়ন্তি প্রমানন্দ ভবেণ বত্র তত্ত্যাপ্যান্তাই ব গায়ন্তএব বর্ত্তিক নচ কথয়ন্তি মাত্রং যক্ত লোক্স্যাতিদীনস্যাপি মন্ত্রিস্তাগ্রামণিতে স্বান্ধিতাং মন্ত ইত্যর্থঃ। তং যো যাচ অবিন্ধং স নাচ কিং প্রেয়োহ্বান্তি পূর্বেণ্যায়ঃ। এবং মহাবিশ্বরো ব্যঞ্জিতঃ॥ ৩৭॥

অথাক্তাগ্রিমাধ্যায়ে মুখ্য: সিদ্ধান্তে। বক্ষ্যতে প্রথমং তাবং কিমকরোং শ্রেম ইতি সাধনগতং তং প্রশ্ন মনুস্ত্য তত্ত সিদ্ধান্তাভাসং বাবদেতদধ্যায়ং বক্তৃং আদে। তয়োরংশেন যং পূর্ববৃত্তং তদভেদেন তদাহ লোণ ইতি ত্রিভি:। প্রবরং পরম শ্রেষ্ঠ: শ্রীনন্দাংশ্রাং। আদেশান্ শ্রীমধুরামপ্তবে গোপালন প্রায় বাদ শ্রীবস্থদেব স্থাদি লক্ষণান্॥

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

নন্দ ইতি। মহান্উদয়ঃ ফলং যদ্য তং। মহাভাগেতি নন্দাদপি তদ্যাঃ শ্রেয়োহধিকমভিতপ্রতি ॥ ৩৬ ॥

নমু পীতশেষং গদাভূত ইতি বচনাদেবক্যা অপি স্তন্ত প্রণাবিত্যত আহ পিতরৌ অস্থংকুলে পিতৃত্বেন খ্যাতৌ দেবকীব্রনেরে কৃষ্ণ্য উদার্মতিস্থপ্রদম্ভিমহচ্চ অর্ভকেহিতং বালচ্রিত্রং ন অম্ববিদ্ধেতাং চকুবাদিভিরাম্বাদ্যিতুং নালভতাং উদার্পদেন রাম মাতৃত্বাভিমানিনী রোহিণী বংসাহরণলীলাপ্রাপ্তমাতৃভাবা গোপ্যক্ত ব্যার্ড্তাঃ যং অর্ভকেহ্তং॥ ৩৭॥

কৃষ্ণাবতারস্য তদীয় বাল্যদীলানাঞ্চ নিত্যবাদেব নন্দ্যশোদ্যো নিত্যসিদ্ধবং স্পষ্টমিতি। নাপ্যেতাদৃশঃ প্রেমা সাধনসিদো ভবিত্মহ তীত্যপি জানতোহপি রাজ্ঞোহস্য প্রশ্লোহরং বধা ভক্তাবাংপলস্যেতত্যতন্ত্র মমাপুরিরং তাদৃশীভবিত্মহ তীতি প্রচিব রাজস্মদাসীন্মনা এবাছ জোণ ইতি। আদেশান্ গোপালনাদিলক্ষন্ত্র জ্ঞাণং ॥

জিজ্ঞাসা করিলেন, এক্ষন্! নন্দ এমন কি মহোদয় শ্রেয়ঃ করিয়াছিলেন ? আর ভগবান্ হরি যাঁহার স্তনপান করিয়াছিলেন সেই মহাভাগা যশোদারই বা এমন কি স্কৃতি ছিল ?॥ ৩৬॥

অপর, বাঁহাদের ক্রতি প্রসন্ন হইয়া ভগবান অবতীর্ণ হইয়াছিলেন সেই পিতা মাতারাও প্রীকৃঞ্জের যে উদার বাল্যলীলা প্রাপ্ত হয়েন নাই এবং ক্রিগণ অন্যাপি যাহা গান ক্রিয়া থাকেন, এবং যাহাতে কলুব বিনষ্ট হয় সেই বাল্যলীলা যিনি প্রাপ্ত হইলেন তিনিই বা কি প্রেয়ঃ ক্রিয়াছেন ?॥ ৩৭॥ জাতয়ে। নৌ মহাদেবে ভূবি বিশ্বেশ্বরে হরো। ভক্তিং স্যাৎ পরমা লোকো যায়াঞ্জো ত্রুগতিং তরেৎ॥৩৮ অস্ত্রিভ্যক্তঃ স এবেহ ব্রজে দ্রোণো মহাযশাঃ। জজে নন্দ ইতিখ্যাতো যশেদা সা ধরাভবৎ॥৩৯ ততো ভক্তি র্ভাবৃতি পুত্রীভূতে জনার্দনে। দম্পত্যো নি তরামাসীদেগাপগোপীযু ভারত॥ ৪০॥

# **ভীধরস্বামী**

ব্ৰহ্মণ আদেশান্ গোপালাদিলক্ষণান্ ॥ ৩৮ ॥
স এব জোণো অজ্ঞে সচ নন্দ ইতি থ্যাতঃ সা ধ্যা যশোদা অভবং ॥ ৩৯ ॥
গোপ গোপীনামপি বস্তমভাবাং অস্তোব ভক্তিঃ তয়োঃ পুন নি তিয়ামেব ॥ ৪০ ॥

### देवकवरजावनी ।

তত্র যদ্যপি খ্রীমরন্দাংশহাচ্ছুদ্ধ ভগবন্ধাধুর্যাংশক্ষি যোগ্যন্তথাপি তত্তদেব মুনিসঙ্গেন তদৈবর্গ্যন্তানমালয় স্লেবেণ বাভীইনাই জাতয়ারিতি। ভূবি জাতয়ো: সতো: নৌ আবয়োহ রৌ মনোহরতা প্রধানে ভগবতি। অতএব বিশ্বেমীশরেহপি মহাদেবে প্রমন্ত্রীড়াপরে ভক্তি: প্রেমলকণা স্যাৎ। প্রার্থনায়াং লিঙ্। প্রমেতি অমনস্যাদৃতং তদিশেবং বাধয়তি সচ পিত্রোচিত বাংসল্যাথ্য ইতি ফলেনাল্মীরতে। যে যথা নাং প্রপদ্যন্তে ইত্যাদি শ্রবণাৎ। এবং বচন মাত্রল্ভ্যাপরাশেবার্থপরিত্যাগমণ্যা পূর্ব্বমপি তরোল্যাল্য ভক্তি রন্তিত্ব মবগম্যতে অন্তিবেহপি প্রার্থনা তাদৃশপ্রেমাংকঠরের অত্তিবেভাব্যৎ প্রেম:। বথা শ্রীঞ্জবস্য ক্বেরে সাক্ষাৎপ্রত্রোর্থনাহ কেবলকামনাম্যাপি ভাব। তাদৃশ প্রেণ অমহিমাদি বৃদ্ধে: অতঃ প্রেম বভাবছান্তংপ্রাধান্যেনের প্রার্থিতং নান্যথা যত্র তাদৃশবেন শ্রীক্রঞ্গাপান্তগতিঃ বতো আতেতি এবং বন্ধদেবাদিতঃ সাধনেপ্যুৎকর্ষো দলি তঃ। নাধনস্য সাধ্যসাচ শুদ্ধ ভক্তিছোও। অতঃ শুদ্ধ ভগবৎ প্রেম বাসনবেন তত্র সর্বেধামপি হিতং প্রার্থিতং নতু কামিজনবন্ধৎসরেণাত্মন এব ভদাহ যমাস্ক্রত্যা তচ্ছুবণ কীর্তনাদিনান্যোহপি লোকঃ সর্ব্বো হুর্গতিং তরেৎ ইতি। লোকে ইতি সপ্তমান্ত পাঠে লোকে বয়া প্রসিদ্ধান্যাইপীতি শেষঃ। এবমুভ্রোরপি বাংসল্য শুদ্ধে মাতৃভাব স্বাভাবাহে প্রীব্রশাদারা আধিক্যমপি ক্রেয়ং॥ ৩৮॥

স এবেত্যভেদ বিবক্ষরা ইহ শ্রীমধ্রাপ্রদেশে স ভগবানিতি পাঠে প্রমাদরো দর্শিতঃ পূর্বতোহপি মহাবশাঃ সন্॥ ৩৯ ॥ তত্ত স্তাদৃশ ভক্তেহে তোঃ পূত্রীভূতে যোহন্যস্য ক্ষ্যচিৎ পুত্রো নাসীৎ তদ্মিন্ পুত্রতাং প্রাপ্তে তরোরের তদ্ধোদ্রিকতাদৃশ-

# গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

কাতবোরিতানেন ভাবিনি জন্মনীতি লভাতে। মহান্দেবং ক্রীড়া যসা তন্মিন্ ভূবি স্থিতো যো বিষেশ্ব তন্মিন্ বিশেহণীখরা যত্র তন্মিন্ পরাবরেশো মহদংশযুক্ত ইত্যুদ্ধবোক্তেঃ পূর্ণে ইত্যুর্থঃ। হরৌ আবরো ম্নশ্চোরে। পরমেতি ফলেন ফলকারণ মছমীরতে ইতি ন্যায়াৎ স্ক্লদ্ববিচারিতাপিভূবোচিভবাৎসল্যমনীত্যর্থঃ। ব্যামন্তক্ত্যা ভবিষাস্ত্যা তচ্ছুবণ কীর্ত্তনাদিনা অন্যোহপি সর্কো লোকঃ ত্র্গতিং তরেদিতি শুদ্ধ প্রেমভক্তি প্রার্থনারা তক্ষ্মনি ভ্রোভদত্তরপা সাধনভক্তিরপ্যেকা শুক্রবাসীদিত্যবগন্যতে। নতু পৃত্তি স্ক্রতপ্রোরিব ভক্তিনপোবাগো চেতি পূর্বং ব্যাখাত্যের তৎপ্রসঙ্কে তৎকলং॥ ৩৮ ॥

স এব জোণোত্রত্বে ইহ মন্দ ইতি খ্যাতঃ। সা ধরৈবেহ ঘশোদেতি নিত্যসিদ্ধরে। র্ধশোদা নন্দরোঃ সাধনসিদ্ধৌ খরাজোণৌ প্রবিষ্ঠা বভূতামিত্যর্থঃ ॥ ৩৯ ॥

জনাৰ্দ্দনে গোপীজনান্ প্ৰেয়া পীড়বভি নবনীত চৌধ্যাছাপদ্ধৰৈ: উদ্বেজ্বতীতি বা অন্যরসং বাচনান ইভি বা গোপগোপীবু নধ্যে

শুক্দেব কহিলেন রাজন । বস্তু জেও জোণ, ধরানালী ভার্যার সহিত জ্ঞার আদেশ পালন করিবার নিমিত্ত জ্ঞাকে কহিয়াছিলেন, ভগবন । আমরা ছই জনে অবনীতলে জন্ম গ্রহণ করিলে আমাদের ছই জনের মহাদেব বিশ্বেশ্বর হরিতে সেই পরম ভক্তি উৎপন্ন হউক, যদ্ধারা লোকে হুর্গতি হইতে উত্তীর্গ হইয়াথাকে, এই বর প্রদান কর্মন ॥ ৩৮॥

ব্ৰহ্মা, "তথাস্ত্ৰ" অৰ্থাৎ তাহাই হউক বলিলে, সেই মহাযশস্থী জোণ ব্ৰহ্মগুলে নন্দ এই আখ্যায় বিখ্যাত হইয়া জন্মগ্ৰহণ করেন এবং সেই জোণভাষ্যা ধরা যশোদা হয়েন। ৩৯॥

প্রেই কারণে ভগবান্ জনার্দ্দন পুত্র ছইলে তাঁহার প্রতি তাঁহাদিগের সাতিশয় ভক্তি জন্ম।

কৃষ্ণো ব্ৰহ্মণ আদেশং দত্যং কর্ত্তুং ব্ৰজে বিভূ:। সহ রামো বসংশ্চক্তে তেষাং প্রতিং স্থলীলয়া ॥৪১॥
॥ \* ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংদ্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং দশমস্বন্ধে বালক্রীড়ায়ামন্টমোহধ্যায়ঃ ॥ \* ॥ ৮ ॥ \* ॥

ত্রীবাদরায়ণিরুবাচ ॥

#### बीधतवामी।

चनीनमा পুদ্রভাবাসুকারিণ্যা॥ ४১॥

॥ \* ॥ रेजि मन्दम अहेगः ॥ \* ॥

নবমে পয় উৎসিক্তে গন্ধা গোপাথ তৎকৃত্ব। বিলোক্য ভাওভঙ্গাদি কৃষ্ণং দান্না বৰদ্ধ তং। তন্দ্রাশ্রিতং বিশং দৃষ্ট্। বিশিত চেতসং। বন্ধবন্ধু কুৰাপুৰ্ত্তা পূৰ্ণতা মন্দ্ৰন্থ ॥ • ॥ .

# रेवक्षवरजावनी।

ভাবাং অতঃ পুত্রভূতে ইতি কটিং পাঠঃ সদত এব কথগুতেহিপি জনৈত্র জাদিতি উকৈরদ্যতে যাচ্যতে মাত্রং নতু লভাতে যং তিমিরপি যতে। ভগবতি অয়ং ভগবতি আক্রিক ইত্যর্থঃ। তিমিন্ ভক্তি নিতিরাং পূর্বতোহিপি বরীয়স্যাসীং। তথা প্রসিদ্ধ ত্রজজন মুখ্যুবেন স্বাভাবিক প্রম বাংস্কাবতীয়ু গোপগোপীদ্পি নিত্রামাসীদিতার্থঃ পুত্রীভূত্তাদেবেতি ॥ ৪০॥ •

তত্র প্রস্তুত দিল্লান্তান দৃষ্ট্য তাবহুপদংহরতি ক্ষণঃ স্বয়ং ভগববেন পরম স্বতন্ত্রাংপি ব্রন্ধণো লগালত সর্ক নিজ ভক্ত গুরো রা-দেশং বরং সত্যং কর্জুং তেন সামান্তিরা দৃষ্ট্যাপি সা তয়োঃ গরম ভক্তি বিশেষ তয়াভীষ্টাভক্তি বিশেষে প্রকটা স্যাদিতি নিদর্শনয়া লগতাব্যভিচারিছেন প্যান্তং বিধাতুং পরম স্বর্গণ সহায়েন শ্রীবনরাদেশাপি সহ ব্রেল্প বদং জদানীং প্রকটাক্তাত তয়োঃ সম্বন্ধিন ব্রন্ধ বিশেষে তংপ্রত্রা প্রকটাকুরে তয়োঃ সম্বন্ধিন ব্রন্ধ বিশেষে তংপ্রত্রা প্রকটাকুর নিবসন ব্রা নিজ স্বাভাবিকৈয়েব লীলয়া তেয়াং তয়োয়্তংসঙ্গিনাঞ্চ প্রীতিং ত্রিলাম্বাদেশন কিং কৃতং তত্রাহ ক্ষাইতি সের্ভকের্ যা লীলা তক্তিবেশা লীলেতার্থঃ। তরের তেয়াং প্রকিশি বিদ্যত্রের বিদ্যান আদেশং বরং সত্যং চক্ষে বিপ্রাবেশবিদাযুক্তা ইত্যাদিবং ক্রপয়া তয়হিমানমপ্যদর্শয়নিত্যর্থঃ। প্রত্যাদিশেন তব্যের হিতং ক্তমিতি ভাবঃ। তদাদেশং বিনাপ্যনেরাং গোপাদীনাং তয়্তাব ক্রপনাং ॥ ৪১ ॥

॥ \*॥ इं ि चौरिवस्वराह्याः मन्यिन्ताः ष्रहेमः ॥ \*॥

অথ তত্র তাত্তিকং সিদ্ধান্তং বক্তুং তৎপ্রতিপাদন যোগ্যাং পূর্ব্বাপরবিলক্ষণাং লীলামুদাহরন্ দধিপরশ্চৌধ্যাত্তক মতাকাং তাম-কুক্তা বর্ণরতি একদেত্যাদিনা যশোদেতি দামোদরভাদিনা আক্রন্ধার প্রেমবশ্যতাতিশয় যশোদানাং নন্দ্রা গেহিনীতাদ্ধাস্ত্য

#### क्रमममर्जः।

# ॥ \*॥ इंडि जीनमम क्रमनमार्ड २ हेमः॥ \*॥

# প্রবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

দশ্পত্যো র্যশোদানন্দরোজ্জি নিভরামাসীদিতি গোপা গোপ্যশাপি দ্রোণধরমোরমুবর্তিন তাদৃশ্যাধনবস্তঃ পুর্বজন্মন্যায়ন্নিতি জ্ঞাপিতঃ ৪৪০ ॥

আদেশং পরমাভক্তিরন্থিতি বরং। প্রীতিং চক্রে প্রেমাণমুংপাদয়ামাস ॥ ৪১॥

॥ \*॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণাাং ভক্তচেত্রসাং। দশমস্যাষ্টমোহধ্যায়ং সক্ষতঃ সঞ্চাং ॥ \*॥

নিবিদ্ধমন্থনং পীদা গুনঞাকৃত্তিমান্ কুধা। ভাগুং ভিদ্বা ক্ৰতং মাত্ৰা নবমে বদ্ধ ঈশবঃ ॥ টোৰ্য্যক্ৰোধাদিমজীবান প্তথৈব দৈব বোদরে:। চৌর্যক্রোধাদিমান্ মাত্রা বদ্ধং ক্লফ রোদিবি। অভিচমৎকারকস্যাসাধারণস্য শ্রীক্লফবিষয়কনন্দ্যশোদাশ্রাব : অন্যান্য গোপ গোপীদিগের স্বভাবতই তৎ প্রতি ভক্তি ছিল ॥ ৪০ ॥

দে যাহা হউক,ভগবান ্ শ্রীকৃষ্ণ ব্রহ্মার আদেশ সত্যুকরিবার নিমিত্ত বলরামসহ ব্রজে বাস করিয়। পুত্রভাবাসুকারিণী লীলাদারা সকলেরই প্রীতি বর্দ্ধনকরেন ॥ ৪১ ॥

। # ॥ ইতি দশমে অফুম ॥ # ॥

নবমাধ্যায়ে চুল্লীন্থিত হ্র উৎসিক্ত হইতে লাগিলে যশোদা তাহার রক্ষণে গমন করায় শ্রীকৃষ্ণ রোষ-

একদা গৃহদাসীয়ু যশোদা নন্দগেছিনী। কর্মাস্তরনিযুক্তান্ত নির্মানন্থ স্বয়ং দধি। যানি যানীহ গীতানি তথালচরিতানিচ। দধি নির্মান্থনে কালে স্মরন্তী তান্যগায়ত॥১॥ কোমং বাসঃ পৃথুকটিতটে বিভ্রতী সূত্রনন্ধং পুজ্ঞান্তের তুক্তযুগং জাতকম্পঞ্জ স্থভ্জঃ।

# ध्येधत्रवामी।

স্বয়ং দধি নির্মামস্থ তদা অগায়ত চেতি চকারস্বরসঃ॥ ১

#### देवस्ववरञावनी ।

ত্তেন তদ্যাপি মাহাত্ম্যমবগন্তব্যমিতি বোধ্যতে এক মিন্ লিনে গৃহলাগীরু যাবলগৃহক শুলিধকারিণীরু সর্বাব্যের কর্মান্তরে নৈমিতিককণে নিযুক্তান্ত সতীরু দধিরু চাধিলেছের মধ্যমানেরু সংস্থ একং দিনি মন্ত তচ্চ পুত্রপ্রেরানিবদ্ধনেজ্যানেবেদ্যার পুত্রোপভোগার চ
ক্রেয়ং তয়া তলৈয়ের সর্বোপালেয়ছেন গৃহীতত্বাং। অতএব নিং নিশ্চিততর্ম। মনত্ব। অন্যথা লোকশাত্রপ্রানিদ্ধান্তর প্রিলাংখ্যধেলুমত লিকাছগ্ধানাং তবৈক রা দ্ধিমন্থনাসন্তবং স্যাৎ। কর্মান্তর পার প্রমাণিশিষ্টং জ্রেয়ং। সর্বপরিত্যাগেন সর্বাসানের নিযুক্তহাং। গোপানামিশি
তন্দিনে যতন্তবো গতত্বেনাবগংস্যমানত্বাং তচ্চ নুনমিল্রযাগরূপং তলৈয় বল্লে তালুশমান্যচরত্বাং। কার্ত্তিক মান্যোপার্যায়া সমকাল্যান্ত। তল্যাগস্য চ কার্ত্তিকীয়েছং তদারভৌবের প্রবৃত্তি প্রতিলিক্তর প্রতিক শুক্লপ্রতিপদি লোকাগ্যম্যোক্রিরীর নানত্বাং। তথাচ শর্হণনারাং আগ্রহায়ণসহযোগেন ইল্পিরৈশ্ব মহোংসবৈরিতি বক্ষ্যতে অথেক্রিয়ার্থিরিত্যর্থত্বহিশি ইল্পনিক্রিরীরমানত্বাং। তথাচ শর্হণনারাং আগ্রহায়ণসহযোগেন ইল্পিরৈশ্ব মহোংসবৈরিতি বক্ষ্যতে অথেক্রিয়ার্থিরিত্যর্থত্বহিশি ইল্পনিক্রিরীরমানত্বাং। তথাচ ল্যারেন স্থব দেবতেতি॥

যানি যানি তথ্য বাল্যা চরিতানি ইহ তব সভায়াং মন গীতানি স্বাণি তানি স্বাং স্বাস্তী বাংসল্যবিশ্বাসেন ভাবয়স্থী দায়ে। নির্মন্থ বাজ তামিন্ কালে গানাবসরে অগায়ত। চকার উক্তন্ম্চয়ে। নির্মন্ত্ অগায়চ্চেতি নানাকবিজ্ঞনরচিতানি স্বয়ং তৎকণ নিব্দানি বেতি জ্ঞেয়ং গীত্রপেণেতি শেষঃ॥ ১॥

ইঅং তদেক মিন্দামাং তত্মাত্রি নিজমেহভরোদয়াৎ তামেব বর্ণয়ন্ পরমসৌন্র্গেণ পরম্মেহেন চ তত্মাতৃত্যোগ্যতাং দশ্যতি

#### ক্রমসন্সভ:।

একদেতি। প্রায়োহয়ং দীপমালিকামহোৎসবো ভবেৎ। দামোদরলীলোপাসনস্য কার্ত্তিকেহভিধানাং॥ ১ । ৭২। ০॥ শ্রীবেশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

মহাবাৎসল্যপ্রেয়ঃ সাধনমপ্যসাধারণমপূর্কং শ্রেয়ে ভবিতু মহতীতি তদনাকণিতবতঃ প্রস্কর্ত্রাজ্ঞাহপি চিত্তং নাতিপ্রসন্নালক্য তত্র মুখ্যং সিদ্ধান্তনিপূর্কং দিনাস্তরগতাং দামবদ্ধনলীলাং বক্তমুপ্রক্রমতে একদেতি। দীপমালিকামহোৎসবদিন ইতি শ্রীবৈঞ্চবতোষণী অত্র শ্যামৈককণ তুরঙ্গমবৎ পরার্দ্ধ সংখ্যান্ত্রপি গোরু মধ্যে ব্রন্ধরাজ্য যাংপল্লগদ্ধিভাদ্যা অতিক্ষরত্ব স্থান্ত্রিপর্মনঃ স্থান্তি প্রাক্রিলায় সপ্তান্ত্রীত এব গাবো বর্ত্তরে তাসামেব হ্র্মদধ্যাদিকং মৎপুত্রস্য রোচকং ভবিব্যতীতি বিচারয়ন্ত্রী শ্রীবশোদা নিমন্মন্ত্র। স্বর্গনিতি অপুত্ররোচনীয় নবনীতোৎক্রমণ হ্রাবর্ত্তনাদে বাংসল্যপ্রেমাখ হঠাদেব দাসীনাং বিজ্ঞানসন্তান্ত অদ্যারভ্য বালকভা ভক্ষা নবীনত হ্র্মাদিকং সর্ক্রমহ্নের সাধু সাধ্যিষ্যামি যথা তত্তদেব রোচয়ন্ ক্রন্ধণেচার্য্যাথং পরগৃহং ন যাস্যভীতি ভাবং দধীত্যনস্থানাং দগ্নং মধ্যে যদেকং সারভূতং পূর্বেক্যঃ স্বয়মেব সাধিতং তদেবেতি ভাবং। নিম্মিত্যুপ্রক্রণাণ হ্র্মপ্যাবর্ত্ত্যামাস॥

স্প্রসিজো যো বালঃ ক্লফ স্তস্য চরিতানি যানি গীতানি গীতছেক্স। কবিপুর্যন্ত্রীভিঃ স্বয়ং বা নিবদ্ধানি তানি স্বরস্তী অনুসক্ষতী অগায়ত। গৃহাস্তঃ শয়িত ক্লফাদশনোখাস্য স্বাস্তঃ ক্লোভস্যোগশান্তয়ে ইতি ভাবঃ॥১॥

বাংসল্যপ্রেমা রূপগুণাভ্যাং চ ক্লফ্ল্য যশোদৈবাহুরূপা মাতেতি দ্যোত্যন্ বাৎসল্য রসোপাসকানাং অবশ্যকর্তব্যং শ্রীক্লমাত্তিরে দিধি ভাগুণি ভঙ্গ করেন, তদবলোকনে ঐ গোপী কর্তৃক শ্রীকৃষ্ণের বন্ধন এবং তাঁহার উদরন্থিত বিশ্ব দর্শনে বিশ্বায় ॥ ০ ॥

শুকদেব কহিলেন, এক দিন গৃহের দাসীগঞ্জন্মান্য কর্মে নিযুক্ত হইলে নন্দগৃহিণী যশোদা স্বয়ং দিধ মন্থন করিতে লাগিলেন, সেই সময় শ্রীকৃষ্ণের বাল্যচ্য়িত্র ঘটিত যে যে গীত ছিল তাহা স্মরণ করিয়া গান করিতেছিলেন ॥ ১ ॥

হে রাজন্! যশোদার বিশাল কটিতটে কোম বসন কাঞ্চীদারা নিবদ্ধ ছিল, পুত্রস্ত্রেহে ত্তন-দ্ম

রক্ষাকর্ষশ্রমভূজচলৎকল্পে কুণ্ডলে চ বিলং বক্তুং কবরবিগলমালতী নির্মান্ত। তাং স্তন্যকাম আগাদ্য মধুতীং জননীং হরিঃ। গৃহীত্বা দধিমন্থানং ন্যুষেধৎ প্রীতিমাবহন্॥ ২॥ তমক্ষমার্জ্যস্পায়্য্য স্তনং স্নেহরুতং সন্মিত্মীক্ষতী মুখং।

#### नीधत्रवामी।

স্ত্রনত্তং কাঞ্চীবত্তং। রজ্জাকর্ষণেন প্রমো ঘ্যো ভূজিয়োশ্চল**ন্তে। কত্ত**ণী চ ক্ররাত্বিগ্রন্তো মালত্তো ঘ্যাঃ সা.॥ ২॥

#### देवस्थवरकावनी।

কৌমমিতি। তত্র স্থল্য পৃথুকটিত্ট ইত্যুপলকশোনাক্ষসৌন্দর্য্যং ব্যক্তিতং। বেশসৌন্দর্য্যং কৌমমিত্যাদিনা। কৌমমতসীত সূত্যং বারং কৌমদিতি অতসী স্যাহ্মা কুমেতি চামরা। অতিস্ক্ষঞেদমবলোক্যতে নানারাগঞ্চেতি তচ্চ সচিত্রং পীতং জ্বেয়ং। অস্যাঃ ক্রমদীপিকাভিপ্রায়তঃ শ্যামবর্ণবেদ শোভাভরাপেক্ষয়। এতস্যাঃ পীতবর্ণবঞ্চ শ্রীগৌতমীয়ে স্ত্রনদ্ধমিতি ত্রাপ্যতিশোভা দর্শিতা। স্তরং নীবীবর্ষ মন্থনার্থং বিশেষতো বা তর্বনং। স্বাভাবিক চেষ্টা সৌন্দর্য্যমাহ রক্ষেত্যাদি। কুওলেচ চলম্ভী কবরঃ কেশবন্ধঃ মালতীত্যত্র ক প্রক্রাভাবঃ সমাসাম্ভ বিধিরনিত্য ইতি জ্বাপনাং। মালতীতি তদ্যাএব কার্তিকে প্রাধান্যাং। সেহমাহ পুর্ত্রেতি জ্বাতেতিচ প্রচরিত্যানাং স্ক্রেরিতি ক্রবোশ্চালনব্যঞ্জনয়া হর্ষাদি ভাব বিলাদোহপি বর্ণিতঃ॥

তং স্নেহবিশেষময় বাল্যলীলাম্ক্রপয়া ক্**ধা তন্যকাম: তাং তাদৃক**্ষেহরসময়ীং যতো জননীমিতি শ্রীক্ষান্তঃস্থিতভাবমেবা-ম্বদতি তেন চ তস্যাঃ স্থ্যেবাভূদিত্যাহ প্রীতিং আসমস্তাবহন্ প্রাপ্যন্। স্তনপানে প্রযন্ত্যাহ মছন দণ্ড গ্রহণেন নিষেধ সামর্থ্যা-চ্চাতুর্যাচ্চ। এবং মনৌহরণান্ধরিঃ শ্যাত উত্থায়েতি জ্ঞেয়ং কার্তিকে প্রাত্রেব মছন ব্যবহারাৎ বালাস্তবৈরসংমিলিতভাচ্চ॥ ২॥

সন্মিতং প্রস: ব্যং স্ত্রামধ্রত্বাচ্চ মিতেন গণ্ডে লক্ষ্যনাণেন সহিতং মুথং তদ্যেক্ষাণা অভ্স্থমপি ত্যক্ত্ব। নমু তং পার্য়স্থ্যেন্বাঙ্কে ক্রা কুতো ন গতা তত্ত্বাহ জবেনেতি। তথা সতি বেগেন গমনাসিজে:। তত্ত্বিব হেতুং উৎসিচ্যমানে ইতি উদ্রিঞ্চীত্যথ:। এবং দৃষ্টিপ্লোচবেইনতিদ্রে প্যঃ পাকস্থানংজ্ঞেয়ং তৎপ্রোহপি মথ্যমানদ্ধিবদেব ইতি ক্ষণিক তত্ত্যাগোহপি কুত:। অথবা যদ্ধানার্থ স্থক্ধ প্রিয়াম্মতন্ম প্রাণাশ্যা ত্বক্তে ইতি কৈম্ভ্যান্ত্রান্ত বিশেষ্তঃ সর্বাং তদ্যৈব পিত্রে চ প্রস্যাপাত্ত্থেং সোচ্যপ্লেক্দেহধন-

# গ্রীবিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী।

ধ্যাননাহ কৌমমতসীত ভূথং পীতচিত্তমতি হক্ষং ভবেং। তেনাসাা: শ্যামবর্ণ জেম নীপিকোকং ধ্বনিতং। স্তানদং নীব্যা নিবদ্ধং। পৃথুকটিতটে স্ক্রিক্সাভ্যাং স্থাক সৌল্ধ্যবঞ্ধ ব্যক্সিতং রজ্জোরাকর্ষেণ শ্রমো যুয়োভূজিয়োভূলিয়ো করণৌ বজ্মিত্য-স্তানাং বিদ্রতীত্যনেন সম্বদ্ধঃ। মেম্ভুল্যাং ক্রেরিগল্ভী জলবিলুশ্রেণীব মালতী যুস্যঃ সা। ক্প্রত্যয়াভাব আর্ধঃ॥

আসাদ্য প্রাতরস্থ গৃহাৎ প্রবৃদ্ধা বহি নি : হত্য কুধা কদলুখ: সন্ধিত্যথ:। মন্ত্রানং মন্তনদণ্ডং স্থীতেতি মাত ম । মথানেতি স্বৰ্চন ম্মান্ত্রিষ্যন্তীং মাত্রম্ভিজ্ঞায়েতি ভাব: অভেন্তচাতুর্য্যং জ্ঞান্থা মাতুং প্রীতি স্তাং আবহন্॥ ২॥

অহে। বালস্যাস্য বৃদ্ধিরভূত্ত্ব মথনাধিরম্যোপবিষ্টা স্বয়মেবাস্কমার্কণ তং উৎস্জা ইত্যক্ত হেতু: জ্বেনেতি। তকাপি হেতু: উৎসিচ্য মানে অতিতাপেনোজিচ্যমানে সতি প্রসি উভারণার্থমিত্যর্থ:। অধিজিতে চ্লীমারোপিতে। নহু রুঞাদপি তস্যা হ্রমেতিমমহা-

হইতে তুগ্ধ প্রস্নুত হইতেছিল, আর বারস্বার রক্ষ্র আকর্ষণে বাহু-ছয় প্রান্ত হাইতে তাহা হইতে ক্ষণ চলিত ও কর্ণের ক্তল্যুগল কম্পিত এবং কবরী হইতে পুস্পদাম, স্থালিত হইতেছিল, অপর প্রম বশতঃ তাঁহার বদন স্থেদ-বিন্তুতে অভিত হইয়াছিল, প্রীকৃষ্ণ স্তন্য পান্ কামনার জননীর নিকট আসিলেন এবং হস্ত ছারা মন্থানদণ্ড ধারণ করিয়া প্রীতি উৎপাদন পুরঃসর সন্থন করিতে বারণ করিবলেন ॥ ২॥

হেরাজন্! ক্রোড়ে আরার হরির সহাস্য বদন নিরীকণ করিতে করিতে যুশোদা তান পান করা-ইতে লাগিলেন, সেহ বশতঃ তাঁহার পয়োধর হইতে ছগ্ধ প্রস্তু হইতে থাকিল, ইতি মধ্যে চুল্লীর উপরে যে ছগ্ধ ভাও আরোপিত ছিল অগ্নির অত্যন্ত তাপে তাহা উপ্লিত হইল অতএব যদিও অতৃপ্তমুৎস্কা জবেন না য্যাবুৎসিচ্যমানে প্য়সি ছধিশ্রিতে ॥ ৩॥
ন জাতকোপঃ স্ফুরিতারুণাধরং সংদশ্য দন্তি দ্ধিমগুভাজনং।
ভিত্তা ম্যাশ্রু দ্শদশ্মনা রহো জঘাস হৈয়ঙ্গবমন্তরং গতঃ ॥ ৪॥
উত্তাধ্য গোপী স্থশৃতং প্য়ঃ পুনঃ প্রবিশ্য সংদৃশ্য চ দধ্যমত্রকং।

#### শীধরস্বামী

অধিপ্রিতে চুলীমারোপিতে উৎসিচামানে অতিতাপেনোধিজ্যমানে ॥ ৩॥ দৃশদ্যানা শিলাপুজেণ অন্তরং গৃহমধ্যং গত একান্তে নবনীত্মভক্ষ্যৎ ॥ ৪॥ অশৃতং স্কৃতিধং দ্বি মছনন্থানং প্রবিশা ভিলং সংদৃশ্য দৃষ্ঠা॥ ৫॥

## देवसव्यावस्था ।

বিদ্যাদিসম্পত্তার্থকর্মানি সদৈবেহতে তজেবিধপায়ন স্থান তাড়নাদৌ প্রসিদ্ধং। অন্যত্র চন সম্ভবতি ইত্যন্যভাব হুর্বোধো নাতাপিতৃ স্নেহ পরিপাকঃ থবসৌ গোপজাতীনাং চ সর্বতো হুগ্ধসম্পত্তাবেবাপ্রহঃ। ততোহয়ং বালকোন কাঞ্চিদপি স্বসম্পত্তিব রক্ষাং জানাতীত্যতো মরৈবাধুন। সা কর্তব্যতি ধিয়া তৎপরি ত্যাগেন তদর্থ গমনমণি তৎস্বেহ ময়্মেব ম্পাত্মসম্পত্তার্থং সহ্মা-নেপ্যাত্মহংপ্রেহবিশেষ এবাম্বানি গম্যতে তথ্যিতি বিবেচনীয়ং স্মত্যব্য ডুশক্ষঃ॥ ৩॥

জাতকোপ ইত্যাদিকমনেবং। মাত্রেহময় বাল্যলীলাবেশমাধুর্ঘং বণিতং। তত্তত্তাবানাং তন্মনসোবোদ্ধূত্তাং তত্তচেষ্টানাঞ্চ বহুদ্যের কৃতত্তাং তালিকমেবেতি চ দর্শিতং। প্রোচ্নষ্টা মুবা রুণাপি বাল্য স্বভাবেনৈবাঞ্যস্য সং। নাস্যং পশাতি বসুস্যা ইত্যাদি ভট্টিপদ্যে মিথ্যাসৌ বিহিতেজ্ঞির ইতি বং। যদ্ম কদাচিং কৈতবাদিনা মিথ্যা দ্যোদিতি অধুনাতু অমুষাঞ্জঃ অত্পত্তাদিতি মুনীক্রস্য সবিনোদ সাক্ষিত্বং দৃশদক্ষনেতি নিঃশবং তত্তবে শনৈবর্জছিলার্থং অন্তর্মস্বর্গ হং গতঃ সন্ হৈয়ক্ষবং হৈয়ক্ষবীন্ং হেল্ব গোদোক হনস্য সদ্যোনবনীতং। তাদৃশ স্তমেব তদিত্যমর সন্মতাবপি। কাত্যন্ত নবনীত্তমিত্যাহ ইতি কীর্মামি লিখনাং। তদিদঞ্চ প্রথমন্মিপ্তাচদ্ধ্য প্রত্থাৎ কোগোদোহোত্তবং নব্যভিচরতি ॥ ৪॥

স্থ হ'ল প্ৰকং। ভশ্নং ভিশ্নং। তচ্চ স্থত সৈত্ৰ কৰ্মেতি বিলোক্য নিৰ্দ্ধাৰ্য্য তাদৃশে কৰ্ম্মণ্যন্যস্যাপ্ৰবৃত্তে উপচাতুৰ্য্যবিশেষোপ্ৰৱে ন্তুপ্ত কোপসন্তাবনাচ্চ তমপি তত্ৰাপশ্যন্তী জহাস ত্ৰ্যাতিচাপ্ৰোন ভেদেন চাতুৰ্ব্যে ভীত্যাপ্সরণেন গৃহান্তত্তৎ কিঞ্নিণাদি তচ্চা-

#### ক্রমসন্দর্ভ: i

স জাতেতি অন্তরং গৃহাভান্তরগৃহং গতঃ ॥ ৪। ৫॥

## 🗐 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

প্রদন্ত্র যদন্ত্রাধেনাতৃপ্ত: রুক্ষোহপুণেক্ষিতঃ সতাং। তত্তক্যপেরাদির কাপ্যণেক্ষ্যতা বরা পুনঃ সোহপি সবেভূগেকতাং। প্রেরো বিচিত্রা পরিপাট্টাদীরিতা বোধ্যা তথা প্রেমবতীভিরেব বা ॥ ৩ ॥

ম্যা রুথাপি বালাস্থভাবাদেবাঞ্চ বদা স:। দৃশদশ্মনা শিলাপুত্রেণ নিঃশক্ষিকার্থং তত্তলে ইতি জ্ঞেরং। অস্তরং গৃহাত্যস্তরং তিংবঙ্গবং হোগোদোহস্য সদ্যো নবনীতং ॥ ৪ ॥

স্থতং রপকং। দ্ধিমন্ত্রনং প্রিণ্য দ্ধান্ত্রকং দ্ধিপাত্রং অতিচিক্দ্রেন অতিদূচ্রেনাম্ক পায়াং কন্ত্রং বিলোক্যেতি স্তন্যপানে বালকের তৃপ্তি হয় নাই, তথাচ তাঁহাকে পরিত্যাগ করিয়া যশোদা বেগে দেই দিকে গ্রন করিলেন ॥ ৩॥

ন্তন্যপান ত্যাগ করিয়া যাওয়াতে জ্রীক্ষের,কোধ হইল, কম্পমান অরুণ ওঠ দশন দিরা দংশন করিতে করিতে কোথে একটা শিলাপুত্র (লোড়া) লইয়া দধিমণ্ডের (নবনীতের) ভাজন ভাঙ্গিয়া ফেলিলেন, পরে গৃহ মধ্যে গিয়া একান্তে নবনীত ভক্ষণ করিতে আরম্ভ করিলেন ॥ ৪ ॥

যশোদা চুল্লী হইতে হুতও ছুগ্ধ নামাইয়া পুনরাক্ত দধিমন্থন স্থানে প্রবেশ করিয়া দেখেন দধিমণ্ড-

ভিন্নং বিলোক্য স্বস্থতস্য কর্ম তজ্জহাস তঞ্চাপি ন তত্ত্ব পশ্যতী ॥ ৫ ॥ উদুখলাজ্যে রুপরি ব্যবস্থিতং মর্কায় কানং দদতং শিচিস্থিতং। হৈয়ঙ্গবং চৌর্যাবিশঙ্কিতেকাণং নিরীক্ষ্য পশ্চাৎ স্থতমাগমছনেঃ॥ ৬॥ তামাত্রস্থিং প্রস্মীক্ষ্য সম্বন্ধতোহ্বরুছাপস্নার ভীতবং।

## शिधतवामी।

উদুথলাতে পরিবর্ধি তিস্যোদ্থলস্যোপরি। শিচি শিক্ষে। চৌর্যোগ বিশক্তি চঞ্চলমীকণং বৃদ্য তং॥ ৬॥
.তপদা ঐকাগ্রোগ ঈরিতং তদাকারিতাং নীতং ক্ষমং যোগ্যং প্রবেষ্ট্রং মনোহিপি যং নাপ তং। অথবা অম্বধাবৎ কেবলং নতাপ

## বৈষ্ণবতোষণী।

লিত ভাণ্ডাদি শকাশ্রবণেন চ॥.৫॥

বাকাদিভয়াদিবর্ত্তা স্থাপিতস্যোদ্ধলস্যোপরি স্বন্তিকাসনেনোপবিষ্ঠং অস্তর্গ্ হপ্রবেশানস্তরং যৎ কিঞ্চিদেব ভূক্ । সত্রমব্নিষ্ঠং হৈয়স্বীনং সভাওমের গৃহীতা মাতৃব্দনায় পশ্চাদ্বারেশ নির্দ্ধনং গৃহপশ্চাদ্দেশং গ্রেভি শেষ:। পূর্কং শিক্ষে, স্থাপিতং যত্ত দেরেভি বিশেষচাপল্যদর্শনমপ্যক্তং পশ্চাৎ স্তস্যা পৃষ্ঠতস্তদ্ধিকনার্থং ॥ ৬॥

প্রকর্ষেণ সমাগীলিবেতি বতাড়নার্থং তস্যা যাষ্ট্র গ্রংগাসন্তবাং প্রাক্ কর্লাপি তদর্শনাচ্চ। তরিদ্ধারার্থং অতঃ সত্ত্রঃ সন্ অপস্সার মাত্রকানার বমলাক্ষ্রাথা টেডার্কাররিইডনানাজন ভাসদননি জপুরপুরোধারঃ প্রভাবেতি জ্বেরং। ভীতবদিতি সংজ্মাত্রেহভর জ্ঞানেন তবতোহস্তভরাভাবাং। যথা ভীতোহন্যো মথা তথৈব ইত্যর্থঃ। এবা মাতরি বাল্যাদি শীলামাধুরী। মাতা তু তিমিন্ দিনে পুরোধারমপি নির্গত্তকাং জ্ঞারা অষধাবদেবেত্যাহ যোগঃ সমাধি গুলতাং মনঃ প্রবেইং ব্রহ্মণি শীভগবত, এবাবিভাবাতরের বা শীনী ত্রীবৃহং ক্ষমং যোগ্যমণি তপ্সা একার্ম্যাণ সরিতং স্বর্ম্ব্রায় প্রেরিডমণি নাম্প্রাণ্ডার্থঃ। নাম্মিত্যাদেশ স্পষ্টা-

#### क्रगममर्जः।

- উদ্ধলেতি। পশ্চাদ্বারেণ তথারির্গম্যেতি শেষ: ॥ ৬ ॥

তামিতি অপসরণং মাত্রকনার্থং প্রোধারাধ্যৈব জেরং। প্রবেষ্ট্ং জন্ধণি লীনতাং প্রাপ্তঃ তপসা প্রেরিভম্পি যৎ, যং নাপ ॥ ৭।৮॥

## श्रीविधनाष्ठकवर्ती।

বাম তৰ্জন্যা নাসাগ্ৰং শৃষ্টে,তি জ্ঞোং। ৫॥

দ্ধিক্লি চরণিচিছেন কিছিণীশব্দেন চ তকালি তভা গুলিশব্দেন চ গৃহান্তঃ হিতং নবনীতং ভূঞানং অহুলায় হসন্তী কিঞি দ্বিলয় যাবজন যিবাসজি শ্ব তাব্দেব পক্ষবাবেণ নিঃস্তা বহিঃ প্রালণান্তরে কাকাদি ভ্রান্থোম্থীকতোদ্ধল্যোপরি ক্ষেত্র হিত্ত স্বাহন্তনাপৰিষ্টে স্তি স্বভ্রনাই। উদ্ধলেতি শিচি শিক্যে হিতঃ তত শোসবিদ্ধা আনীতমিত্যথা। চৌগ্যাদ্বেতা মাহতাভ্নভ্যাদ্বিশ্কিতে তদা গ্রান্থান্ত্র স্ক্রেণ বস্য তং। গৃহান্তগতিরতিয়াগ্রীবং নিরীক্ষ্য পশ্চাৎ ক্রম্প্রিকানগ্রে স্ক্রেণ বস্য তং। গৃহান্তগতিরতিয়াগ্রীবং নিরীক্ষ্য পশ্চাৎ ক্রম্প্রিকানগ্রে স্ক্রেণ বস্য তং। গৃহান্তগতিরতিয়াগ্রীবং নিরীক্ষ্য পশ্চাৎ ক্রম্প্রিকানগ্রে স্ক্রেণ বস্য তং।

প্রভীৰণার্থনাত্তবৃষ্টিং ভীতবৃদ্ধিতি সাহজিক মাতৃরেহভর জ্ঞানেন তক্তোহস্তর্ছাভাবাং। যথা ভীতবৃদ্ধিত মতুবৃস্তং ভ্যাণুক্তং

ভাজন ভগ হইয়া পড়িফাছে। দেখিয়া বিবেচনা করিলেন পুত্রেরই কর্প হইবেক, কিন্তু ভাঁহাকে তথায় দেখিতে বা পাইয়া হাসিতে লাগিলেন ॥ ৫॥

পরে গৃহাভান্তরে দৃষ্টিপাত করাতে দেখিতে পাইলেন বালক বিপর্যন্ত উদ্থলের উপর স্তিকা-সনে উপবিষ্ট হইয়া শিকার সদ্যোজাত নবনীত পাড়িতেছেন এবং যথেছেরপে বানরদিগকে দিতে-ছেন, পরস্ত চৌর্য হৈছু জাহার নেত্রময় সভিশয় চঞল হইতেছে নিরীক্ষণ করিবামাত্র যশোদা ধীরে ধীরে পশ্চাৎ দিকে গমন করিলেন ॥৬॥

• এই সময়েই শ্রীকৃষ্ণ পশ্চাৎ দৃষ্টি করাতে তাঁহার ন্য়নগোচর হইল, জননী যতিহত হইয়া নিকটে উপস্থিত হইয়াছেন অতএক সত্তর উদ্ধল হইতে অবরোহণ করিয়া ভীতবৎ পলায়নপরায়ণ হইলেন, যশোদা তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবমান হইলেন কিন্তু তাঁহার ধাবন করা বিফল হইল, কৃষ্ণকে প্রাপ্ত

গোপ্যবধাবন ব্যাপ যোগিনাং ক্ষমং প্রবেষ্ট্রুং তপ্রেরিতং মনঃ ॥ ৭ ॥ অবঞ্চানা জননী বৃহচ্চলচ্ছেন্নীভরাক্রান্তগতিঃ স্থমধ্যমা। জবেন বিস্তংসিতকেশবন্ধনচ্যুতপ্রস্নামুগক্তিঃ প্রায়্যৎ ॥ ৮ ॥ কৃতাগসং তং প্রকৃত্তমক্ষিনী কর্যস্তমঞ্জাসিনী স্বপাদিনা।

## धीधत्रश्रामी।

ফতো বোগিনাং মনোহপি বং প্রবেষ্ট্রং নক্ষমিতি ॥ १॥

অৰঞ্চনানা এবং ক্ষণমূগচ্ছপ্তী বৃহত্যোশ্চলস্ত্যোঃ শ্রোণ্যোর্ভবেণাক্রাপ্তা স্তকা গতি র্যস্তাঃ সা বিস্তংসিতাৎ কেশবন্ধাং চূটেতঃ প্রস্থানর মৃগতিরমুগমনং যুসাঃ সা। • যদা জবেন কম্পিতাং কেশবন্ধাং পুরংপতিতানি প্রস্থানি অমু পশ্চাং গতি র্যস্তাঃ সা প্রামৃষ্থ ধৃতবতী॥ ৮॥

অগুনাদিনী অঞ্জন্তী দর্বতঃ প্রদর্গতী মদী যরোঃ তে অফিণী অপাণিনা কর্বস্তং নর্দন্ততং ভিষয়ন্তী। হ্রস্বশ্ছান্দদ:। ভীষয়ন্তী ভয়মুৎপাদ-

## देवकावर जांचनी।

ভাবিহাং। অন্তথাবং পদে পদে প্রাপামানমিবাধাবং,। অহো অস্ত তাবদ্যাঃ সন্তত্ত মক্ষরনাদিসময়নৌভাগাং প্রায়নসময়-সৌভাগামপি পরম যোগিনাং মনসোহপ্যগোচর ইতি ভাবঃ। সাক্ষাক্ত ধারণান্তস্যাঃ সর্বভক্তেভ্যোহপ্যধিকো ভাগাভ্রো দর্শিতঃ ॥ १॥ রহদিত্যাদিরপাপি ক্রেন প্রাম্বং তং পৃষ্ঠতে। ধৃতবতী সেহময়েনেতি শেষঃ মতো জননী ॥ ৮॥

কৃতং আগো যেন তং অভন্তাড়নমাশকা তঃ পরিহারার্থ প্রকর্ষণ ক্রমন্ত: অভএব অঞ্চন্দিনী অংশভিঃ প্রসরংকজ্জলে অক্সিনী।
বাহ্যমানমপি মাতৃহত্তেনাঞ্চমার্জনমপরাধাদপ্রাপ্য অগৈয়ব পাণিনা কর্মন্তং স্মুর্দ্রন্তং বহুলাঞ্চনির্গমার্থং কিছা অপ্রাপীসারণার্থং
মার্জয়ন্তং কিঞ্চিত্তেনে রিহ্বলে ঈক্ষণে নেত্রে যদ্য তং। কিছা তথা ক্রমন্তং। উকৈবীক্ষমাণাহ্বলোকয়ন্তাপি। পুন ন্তাণ্শবিক্ষাভাগস্ক্রোচনেন স্থপ্রন্ত তপোদানার্থং ভীষ্মন্তী ভাষ্মন্তী ভাষ্মন্ত ভাষ্মন্ত আৰু ক্রমন্ত্র বানরপ্রিয় গৃহন্টাক ইতঃ প্রভৃতি নবনীতাদিকং কিঞ্চিলাগ্যে বন্ধা গৃহান্তর্দ্ধান্তে যথা কুত্রাপি গ্রা ক্রীভিত্তং ন শক্ষোবি ক্রীভনকানি

## ত্রীবিখনাগচক্রবর্তী।

বং। স্যাত্তণাপ্ৰসার ছ্ডাবেত্যর্থঃ। ভয়ভাবনয়া স্থিতস্যেতি কুস্তাতের:। গোপী বশোদা বোগঃ স্মাধিস্তপ্রতাং মন: তপ্রা জ্ঞানেনে-বিতমপি প্রবেষ্ট্র ক্ষণি লীনী ভবিত্র ক্ষমমপি যং নাপ। নামং ক্রথাপ ইত্যাদৌ স্পন্নীভাবিত্বাং ॥ ৭ ॥

নচ যোগিছ্পাপং তম্মধাবনেন সান প্রাপেতি বাচ্যমিত্যাহ অষ্ঠেতি। বিস্থাস্তাং কেশ্ব্রাং চ্টেড: প্রস্কের্মণতিরস্থামনং যভাঃসা। প্রাপ্টতোহমুষ্থ তং ধৃতবতী ॥৮॥

যোগিছপ্রাপং তং ন কেবলং শ্বতরতোব কিন্ত বন্ধক্রাদিভির্নিশং ত্রমানং তমভং সরং অপি মহাকাল্যমাদীনামপি ভরতেত্থ তং যষ্টিমাত্রেণাপ্যভাষরদ্পীত্যাহ কুতাগদ্মিতি অঞ্জনসিনী অঞ্জী দক্ষতঃপ্রদর্তী মদী যদ্যোতে অক্লিণী, অপাণিনা স্বামপাণিপৃষ্ঠেনৈব সংমদ্রস্তং দক্ষিণপাণেম হিগৃহীতহাৎ ভিষর্তী যষ্ট্যা ভাষর্তী। ভ্রম্মগাবাধৌ। বহা ভীষ্যমাণা তদা হ্রপরবৈশ্বদ আর্থে, অবাধ্বং

হইতে পারিলেন না। হে রাজন্ ! যোগিদিগের একাগ্রভাদারা তদাকারে পরিণত চিত্ত খাঁহাকে প্রাপ্ত হইতে অক্ম হয়, তিনি কি সহজে ধৃত হন্ ? ॥ १॥

অনেক ক্ষণ পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিয়া পারে যুশোদা তাঁহাকে ধরিলেন। ধ্রিবার সময় চঞ্চল ও বিশাল নিতম্ব-ব্যের ভারে যশোদার গতি এক এক বার স্তব্ধ হইতে লাগিল, আর কেশবন্ধ বিস্ত্রংসিত হওয়াতে তত্ত্বস্থ পুশা সকল বিগলিত হইয়া পশ্চাৎ পশ্চাৎ পতিত হইল ॥৮॥

সে, যাহা হউক, জীরুষ্টের হস্ত গ্রহণ করিয়া ভয়প্রদর্শন করিতে করিতে ঐ গোপী যদিও অভিশয় ভর্মন করিলেন, তথাচ তাঁহার দৃষ্টি জীরুষ্টের প্রতিই রহিল। ভগবান অপরাধ করিয়াছিলেন,

উদ্বীক্ষ্যমাণা ভয়বিহ্বলেক্ষণং হত্তে গৃহীত্বা ভিষয়স্ত্যবাগুর্থ ॥ ৯॥ জ্যক্ত্যা, যক্তিং স্কৃতং ভীতং বিজ্ঞায়ার্ভকবৎসলা। ইয়েষ কিল তং বন্ধুং দান্ধাহতদ্বীর্য্যকোবিদা॥১০ নচান্ত ন' বহি র্যায় ন পূর্বাং নাপি চাপরং। পূর্বাপরং বহিশ্চান্ত র্জগতো যো জগচ্চ যঃ॥ ১১॥

# ं **टी**धत्रवामी ।

प्रश्री अवाधतम्बर्भग्रर ॥ २॥

ইরেষ ঐক্তং। অতথীর্ষাকোকিদা তংপ্রভাবীনভিজ্ঞা ॥ ১০ ॥

অকোবিদন্ধনেবাহ নতা ন্তরিতি পঞ্জিঃ। বন্ধনং হি বহিঃ পরীতেন দামা অন্তরাবৃত্তসাব ভবতি তথা পূর্ব্বাপরবিভাগরতো বস্তনঃ পূর্বতো দানস্বাহপরতঃ পরিবেইনেন ভব্তি নবেতদন্তীতাহে নচান্তরিতি কিঞ্চ ব্যাপকেন ব্যাপ্যস্য বন্ধোভবতি তচ্চ বিপ্রীত্মিত্যাহ

#### বৈষ্ণবতোষণী।

সহচর বালকাদীংশ্চ দ্রষ্ট্রপি ন শক্ষাসীত্যাদি বাকোন তথা যইয়ুখাপন প্রায়াদিন। তাড়নোদ্যমমিব ক্রতব্তীতা 🐒 । দ চ তাড়য়ামাদ উৰীক্ষামাণেতি সভয়ৰ পাঠে ভয়বিহ্নলেকণং যথা ভারথা উতৈকর্মমুখতরাহ্বলোক্যমানেতি তভা কাত্য্যমূকং। অতৈহ্বা গু-রদেব। যথা ভয়েন বিহ্বৰে কম্পমানে হড়ে গুহীয়া ক্ষমবাগুরং। অভাৎ সমানং॥ ১॥

যতোংওঁকমাতে বংপলা কিমৃত স্বার্ভকে তশিদ্ধিতার্থ:। অতোংতদীর্যাকোবিদা তৎপ্রভাবাহসন্ধানরহিতা স্নেহভরাক্রাস্ত-চিত্তবেনান্যাক্ দুর্ভ:। থব। ভরীধ্যকোবিদা তচ্চাপশভর ভ্রমারতাদ্যভিজ্ঞা অতন্তং বন্ধুনৈছেং। কিল প্রসিদ্ধে নিশ্চয়ে বা॥ ১০॥

ষ্মহো প্রেমবলং শ্রীযশোদায়া ইত্যাহ ন চেতি ফুমকেন ব্যাপকত্বেন বহিন'ত্তি অত তৎপ্রতিযোগিতয়া প্রতীতমন্তরমণি নাতি। এবং পূর্বাপরে অপি। স্বগচ্চ যঃ ইতি কারণব্যতিরেকে কার্য্যাতিরেকাৎ যদননাক্ষণদিত্যর্থঃ। ততণ্চ তচ্ছক্রৈব জগচ্চকে-

## क्रममन्द्रः। •

ভীষয়ন্তী ভায়য়িত্মিতার্থঃ। অবাগুর**্ অবাগু**রত ভর্গনাদিনা তাড়নোদ্যমিব ক্বতবতী॥ ১। ১০॥ ন চান্তরিতি কিঞ্॥ ১১॥

#### প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ভো অশান্ত প্রকৃতে বানরবন্ধে মন্থনীকোটক অদ্য নবনীতাদিকং কৃতঃ প্রাপ্তাদি তথা বর্গাদ্য যথা সহচরবালকৈঃ সহ থেলিতুং নবনীতমপ্রস্তৃ থ ন প্রভবিষাদি। ইদানীং যাইতাড়নাথ কিং বিভেষীতি তর্জ্যন্তী যহুগোনেন তাড়নোদামং চকার নতু ততাড়। গুরী উল্লেখ্য ১ ॥

মাত্রম্য মাং তাড়য়েতুটকে তাড়নে যদি তবাতিশয় ভীন্তং কিমদ্য দ্বিভা ওমভাজ্ঞী:। মাত্রের মধ নৈব করিয়ে পাত্র স্বকরতে। বত যদ্ধিতি প্রোক্তি-কাত্র্যা বিরবমনা হস্ত ক্লাচিদমং মন্থানা বনং প্রবিশেদিতি শঙ্করা ওলিবোধার্থমূপায়ং নিশ্চিকায়েত্যাহ তাকেতি। তথীব্যস্ত সর্বব্যাপকস্থশক্ষ্ণস্য তদৈশ্র্যাস্য ন কেশ্বিদা। ওদ্ধ তন্মাধ্র্যুক নিমশ্বাদিতি ভাবঃ ৮ ৮০ ॥

বন্ধাদি অধ্পর্যান্ত বৈ নিবপ্নস্থাপি সর্ব্বাপক্ষপি মহামহেশ্বর তং শ্বপ্রেম্বলাদেব পট্ট্ম দারা ব্রেম্বাণীত্যাহ ন চেতি ছাজাং বর্দ্ধা হৈ বহিংপরীতেন দারা মার্ত্ব্য পরিছিল্ল ব্রুল্টি সভ্ততি যক্ত তু বিভূষাদহি ন বিদ্যতে তংপ্রতিযোগিয়াদ্যুদ্ধ ন বিদ্যতে ত্র ক বা দারা স্থাত্বাং। কিছা ভেনাবরীত্ব্যমিতি ভাবং। সর্বদেশব্যাপক্ষ্যক্য প্রদাসং সর্বকাল্ব্যাপক্ষ্যাহ ন পূর্বং নাপি চাপর্মিতি যন্ধাং পাক্ পশ্চাং কালো নাম্ভ ইত্যবঁং। কিঞ্চ ব্যাপকেন ব্যাপ্যস্থাই ইছা ভবতি তচ্চাত্র বিপরীত্নিত্যাহ পূর্বাপর্মিতি। স্থাত্ত ইছ উল্লেখ্য বিদ্রাধ্যাদিত্যবং। তত্ত সম্প্রেন স্থাতাপি তহলে। নাম্ভবেং কিং পুন র্জগদংশাংশভূতেন নামেত্যবং। নচ সাকারত্বন তথ্য বিভূষং সন্তবেদিতি বাচাং সাকারত্বৈব তল্পোদ্রে সর্বন্ধ্যত ইদ্যান্স্পাস্থ্য দ্বাদ্যা দৃইয়াং।

স্তরাং কেবল রোদন করিতে লাগিলেন। অঞ্জলে কাঁহার লোচনমুগলের অপ্তন চতুর্দিকে প্রস্ত হইতে আরম্ভ হইল। অপর হুই কলে হুই নেত্র মর্দন করিতে থাকিলেন॥ ৯॥

হে রাজন্! ষশোদা অতিশর পুত্রবংগলা, সন্তানকৈ সভয় অবগত হইরামাত্র যথি পরিত্যাগ করিয়া রুজ্ম ধারা বৃদ্ধন করিতে ইচ্ছা করিলেন, যে হেতু ভগবানের কি রূপ বীর্যা, তদিময়ে ঐ গোপী অনভিজ্ঞা ছিলেন ॥ ১০ ॥

टर 'तांजन्। यांनातिक देवन अनिक्का विलिलाम छारात कांत्रण छन, याँदात अखत नारे, वांदित

্তং মহাক্রজমব্যক্তং মর্ত্তালি**স্থমধোক্ষজং। গোপিকোল্খলে দাল্লা ববন্ধ প্রাকৃতং যথা॥ ১২॥** তদামবধ্যমানস্য স্থার্ভক**স্য কৃত্যিসঃ। দ্যুস্লোনমভূতেন সন্দর্ধে ই**ন্যুচ্চ গোপিকা।

## श्रीभतवामी।

পূর্কাপব্যিতি। কিঞ্চ ত্রাতিরিক্তম্য চাভাবাং ন বন্ধ ইত্যাহ অগচ্চ য ইতি ॥ ১১॥ তং মগুলিক মধেকিজং আয়ুজ্ং মুখা ববন্ধ ॥ ১২॥ দ্যুকুলোনং দ্বাভ্যামকুলিভ্যামপূর্ণং॥ ১৩॥

# বৈষ্ণবতোষণী।

স্তদংশাংশভূতর। রক্ষা কথং তদ্ধঃ স্তাৎ নহি বহিনচিচিয়ো দহেয়ুরিতি ভাবঃ সর্কতিত্ব নঞ্প্রয়োগ স্তভদতাবদার্চ্যং অতএব সমু-চেয়ে চকারবিশি শক্ষণত তমেব ববন । যতদেঃ সামানাধিকরণান্ত স্বক্পান্তরমিতার্থঃ ॥ ১১॥

ব্যা প্রাক্তং বালং তৃথৈবচ তহি কথং বৰ্ষ ত্রাই মন্ত্রালিকং দৃশ্যানাম্থ্যবালকাকারং। তহি কথং ন চান্তরিত্যাদি তারাই অধাক্তং শইক্রিয়জ্ঞানাতীতরূপং। অত্পর নিত্যা ব্যক্তাইপি ভগবানীক্ষতে নিজ্পজ্জিতঃ। তামৃতে প্রমান্ত্রানং কং প্রেশ্যামিতং প্রতুই তি নারায়ণাধ্যায়াদৃষ্ট্যান কেনাপি বাজাতে ইত্যব্যক্তং উভয়য়ণাপ্তিয়্তরূপত্তর্থনিত্যায়ঃ। প্রকৃতিভাঃ পরং বালু তদ্চিন্তুত লকণং ইতি উদ্যেপর্যায়্রাপদেশন প্রতের শক্ষ্ণলাদিলারেন অত্ লোইন্প্রমধ্যমোনধ্যমোহ্যাপক্ষে। ইরিরিত্যাদি অস্থ্লান্ত্রিন্তর স্ব্লোইণ্লাল্রিক্রাপ্রাম্পালারের হিলিত্রাদি অস্থ্লান্ত্রিন্তর স্ব্লোইণ্লাল্রিক্রাপ্রামান্ত্রা তথাকা ত

अभटकम कुछाशन इछात्मन वस्त्रनाशारङाङ्ग भिक्षाक्षाः भववानकवद्दैरभक्तात्मीिक छार । चानूरनानमिकि अथनाम वस्त्र

## क्रममर्न्डः।

ইদং ত্নুধনং প্রোধারাভান্তর প্রাক্ষণপতি তম্ভাদেই জেলং চৈতাবুগ্বভা তভ প্রোধারা গ্রেখাং। টেতারঞ্। যৌ তাকর্জনরকৌ তু এজে সভোপেবাচনাবিতি হরিবংশাং॥ ১২॥ • বদনাং সক্ষেত্র তদ্পি ভাকুনং নুন্নাশীদি ভাবলঃ। যদিতি প্রথমায়া রজ্ঞা দৈবাং ভাকুলোনসং জ্লাতং ততণ্ড তদা বালোচিত-

#### **अ**विश्वनाथहळ्यकी।

িই সা কথং ব্ৰদ্ধ তত্ৰাহ তং আয়াৰ্ক্ষ মন্ত্ৰা অলাধাৰণবাংস্ণাপ্ৰেমবিষয়ীক্তোত্যৰ্থ:। ওঠি প্ৰেমাধীনতাং বিভূত্বেণাচিন্তাশ্কৈয়ৰ িনমিতি ভাবঃ। অব্যক্তং প্ৰেমবশ্য বাদেৰ প্ৰচ্ছনীভূত মহৈহুৰ্য্যং মৰ্ত্তালিসং মহুব্যাক্ষান্ত্ৰং ও দৃপ্যধোক্ষক্তমতীক্ৰিনং। মধ্য প্ৰাকৃত ুল্লিত তথৈৰ চিং প্ৰমণিতং বৰ্দ্ধেতদহা প্ৰেমবলং তদ্যা ইতি ভাবঃ॥ ১১॥ ১২॥

্প্রমা স্মত্তবিষ্যত্যপি তক্ত বন্ধনে প্রথমং ওদাকারস্য মাতৃক্রোড়পরিচ্ছিরস্যাপি বিভ্ছমাছ ঝিডিঃ। তদামেতি। সহচ্বৈঃ সহ

ুর্ব নাই, পর নাই, যিনি স্বরং জগতের পূর্বে পর, জান্তর আছির, তথা আপনি জাগতের

মানবলীলাকারি দেই অব্যক্ত অধোক্ষজকে আত্মজ জ্ঞান করিয়া ঐ গোপী প্রাকৃত বাসকের তুল্য ভারা উদ্পলে বন্ধন করিলেন॥ ১২॥

যাহা হউক, কৃতাপরাধ বলিয়া যদিও রজ্পারা স্বীয় বালককে বন্ধন করিতে আরম্ভ করিলেন

যদাসীত্রদপি ন্যনং তেনাশুদপি সন্দধে। তদপি দ্যুঙ্গুলং ন্যনং যদ্যদা দত্তবন্ধনং। এবং স্বগেছদামানি যশোদা সন্দধত্যপি। গোপীনাং স্থায়ন্তীনাং স্ময়ন্তী বিস্মিতাভবৎ। স্থমাতুঃ স্বিদ্নগাত্রায়া বিস্তন্তব্রস্কর্যা দৃষ্ট্বা পরিশ্রমং রুষ্ণ রূপয়াসীৎ স্ববন্ধনে॥ ১৩॥

## বৈষ্ণবতোৰণী৷

দৈবাদ্যস্বানেষাং উত্তরাদাঞ্চ তস্য লাল্যোচিতহঠবত্তাদর্শনেন তত্ত্ব দর্শিতাস্থভাবর। তিওভ্তাশক্তা তথৈব রক্ষণাং। কিঞ হিতেহপি প্রেমণি বৈর্ত্তাবিশেষতজ্জাত তৎক্ষপাবিশেষাভ্যাং দাভ্যামূনদ্বেন তদ্বশীকরণং ন ছাং। অত এব দৃষ্ট্। পরিশ্রমং ক্ষণঃ ক্রপয়াসীং স্ববন্ধনে ইতি বক্ষ্যতে ইতি দৈবী হচনা। অন্য দাম সন্ধানঞ্চ মাতাপুত্রয়ো ওৎসনরোদনে শ্রুষা আগতাভিঃ প্রতিবেশি গোপীভিঃ পরিহাসেন তদপ্রণাং॥

যদি ত্যস্তান্ত দিত্যনেন পূর্বেশাবয়:। যদ্যশাদিতি বা বধ্যতে জনেনেতি বন্ধনং দাম। যদ্যদা দন্তবন্ধনং তৎ সর্ক্মপি ভাস্ত্রং ন্যন্মিতি পূর্বেশৈবারয়: ॥

স্থ কু ক্ষমন্তীনাং ক্ষমনানামপি গোপীনাং। অনাদরে ষষ্ঠা। অতিনির্ব্ধক্ষেন সন্ধীন্তমানেংপি মুহুর ক্ষনে রক্ষ্পর্য্যারৈরপ্যবসিতে পরমান্চর্যোগ যক্ত তাসাং স্থান্মিতং তদ্পানাদৃত্যেত্যর্থঃ। স্থগেহে যানি দামানি মন্থননেত্রাণি তানি সর্ব্ধাণাপি সন্দধতী সতী। যদ্বা সন্দধতী বন্ধনাভিনিবেশেন সন্ধানং কুর্বব্যাপাত্রং। সপ্তম্যর্থে ষষ্ঠী গোপীষু স্থান্মস্তীৰু স্বায়মপি ক্ষমন্তী বিক্ষিতাপ্যত্রং। অতাহাদ্মিন্ দিনে সপ্তা শ্রীরোহিণ্যপি শ্রীমত্পনন্দাদিগুহে নিমন্ত্রিত্ব গতাসীদিতি গম্যতে অভ্যুণা সা ন্যবার্ষিষ্যাদিতি॥

স: স্বয়ং ভগবান্, ক্লম্ভ: সর্কচিত্তাকর্ষকলীল:। স্বেতি পাঠে শ্রীকৃষ্ণস্তাপি **তক্তাং রেহাধিক্যং বোধুন্নতি। অত**এব ক্লপন্না নাতৃ-

#### ক্রমসন্দর্ভঃ !

হঠবতাং দৃষ্ট্। তথিভূহ-শক্তিন্ততাত্মানং প্রকাশিতবতীতি সর্বস্যা এব স্বাস্থ্রলানস্বং জাতং॥

যত্র স্থিতেহপি প্রেমণি ভক্তবৈর্থ্যাবিশেষ তজ্জান তৎক্পণাবিশেষাভ্যাং ৰাভ্যামূনত্বেন তৰ্ণীকরণং ন স্যাদিত্যেষা তু দৈবী হচনা বক্ষাতে চ। দৃষ্ট্য পরিশ্রমণ কৃষ্ণঃ ক্লপয়াসীৎ অবন্ধনে ইতি॥

অতঃ শ্রীরোহিণ্যাদি শ্রীমছপনন্দাদিগৃহে নিমন্ত্রিতেব গতাদীদিতি লভতেে। অন্যথা দা বাৎদল্যাদ্বার্ঘ্বিয়দিতি॥ ১৩ ॥

#### প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

থেলনং পরগৃহেষু দধিচোর্য্যং চাবশ্যকং প্রাক্তাইকং ক্লত্যং চিকীর্ষে। ম'ম বন্ধনং মা ভবন্ধিতি তদিছোয়াং জাতায়াং মংপ্রাঞ্চ্ছণ বরীয়াদিতি তদীয় সত্য সকলতা শক্তা প্রেরিতা বিভূতাশক্তিং সংসৈব তদেহে প্রাত্রভূদিত্যাহ দ্বাস্থ্যানং দাভ্যামসূলীভ্যামপূর্বং। ততন্চ। তেন দামা সহ অন্যক্ষাম সন্দধে গ্রাহ্ম কুগুদ্ধেতার্যঃ॥

বন্ধ্যতে হলেনেতি বন্ধনং দাম॥

গোপীনাং গোপীর প্রতিবেশি প্রক্রীর স্বর্মানাস্থ সভীর্ বিশ্বিতেত্যহো নৃষ্টপরিমিতমক্ষোদরং শতহস্ত পরিমিতেন দায়াপি ন বেষ্টাতে তবোদরং ভিলমাত্রন্পি ন বিপুলীভবতি দামাপ্যস্থানাত্রমপি ন ন্নীভবতি তদপি বেষ্টনং ন পূর্য্যত ইত্যেকে। বিশ্বয়ং । প্রতিবার্ষেব বেষ্টনে শ্যস্থা ন্নেইতব নতু ত্রাস্থা চতুরস্থাদি ন্নেতেতি দিতীয়ণ্চ বিশ্বয়ং ॥

ত্তকাংশ মণিময়ানতিদীর্থ কি বিশিবেটি তাবদাধন্যান্য গৃহস্থিত সর্বলামভিরণি ষল্ধনং ন নিশাদ্যতে তদশ ভভং বং বালকস্য লগাটণতে বিধানা বন্ধনং ন লিখিতমিত্য স্থীয়তে তদিও উদ্যাৎ প্রিশ্বনি বনোদে বিন্মাতামিতি পুন্ধীন্তন প্রবোধিত্যাপি মণোদ্যাদ্য সন্ধাপর্বভেশনে নিলাক্ত প্রাধিবলৈ কি উদ্যাৎ প্রিশ্বনি বিশাল বিন্মাতামিতি পুন্ধীন্তন প্রবোধিত্যাপি মণোদ্যাদ্য সন্ধাপর্বভেশন কি ভিত্ত কি লাভি প্রতিবিদ্যাল কি বিশ্বনি বি

এবং সন্দর্শিতা হঙ্গ হরিণা ভক্তবশ্যতা। স্ববশেনাপি কৃষ্ণেন যস্যেদং সেশ্বরং বশে 🛊 ১৪ ॥

## औधतवामी।

নচৈবং স্বাতন্ত্রা ভঙ্গ ইত্যাহ এবং সন্দর্শিতেতি। সেখরমিদং বিশ্বং ৰ্স্য বলে যদধীনমিত্যর্থ:॥ ১৪ ॥

#### देवकवरकावनी ।

ছঃখ দৰ্শনাক্ষতরা অবন্ধনে ছ্র্যটেৎপ্যাদীং। মাতৃ শব্দেন তথাৎস্ব্যামের মূবং কারণমিত্যুক্তং। বাল্য অভাব জাতাং হঠবতাং পরি-ভাজা ধৃতায়াং ক্পায়াং তথিভূব শক্তে রজ্জু; প্রতি কিঞ্চিদৌদাদীভেন বিতয়য়ৈর তয়া সংবদ্ধো বভূব অভান্ত ক্রিতা এবেতার্থ:। পরিশ্রমণ্চ ক্লভ্যোব বলবত স্তভ্য গ্রহণেন রজ্জুদ্মানাদিনা চ॥ ১০॥

নমুপূর্বিং পর্মেশরর্থক সাধিতং তথা বৃত্ত্বাভ্নাত্প্রভাব:। কোপশ্চের্য্য ভরং প্লারনং বলাক্র্য: রোদনং বন্ধন্ধ বর্ণিতং তরদপান্তর্বেন রহজ্বেন ভবতামপি স হেডুবেন তার্বিক্ষেবাধিগমাতে ততঃ কথমিব তাদৃশে তর্ত্তবিতি উচাতে সন্ত্যং তত্র প্রথণঃ পূর্বিমীশরর্থক বর্ততে তথাপি ভক্তান্থ্রই স্বন্ধাং মন্তব্যঃ যং বিনা নতে কস্যাপি স্থকরা ভবন্ধি স্থকোন্দ হৃদ্যুবেনারোচমানস্থাং। ততন্তেবাং গুণ্থমপি হীয়তে জনস্থাহেতবা ধর্মী হি গুণাঃ। স্বতন্চ নির্দ্যুবার্ত্তার্কাণো দোব এব। নচ ত্রির সন্তর্বতি সাধারণ্যালোতনানৈর্য্যাং। অয়মান্ত্রাপহতপাপাা। এব উ এব বামনীঃ বামানি সর্বাণাভিষ্ণীতি স্পতঃ। তন্ত্রাং গুণ্থমণ হৃদ্যা ভূতা। বিষয়ের বিরোধী চ স এব মুখ্যো গুণো মন্তব্যঃ। যথৈব ষঠে পুংস্বনত্রতপ্রসদে সএবাদে পিঠিছঃ যথা বং ক্রপ্যা ভূতা। তেজসা মহিল্লোজ্যা। কৃষ্ট দিশ প্রথমি ক্রেলানারী ভক্তিঃ জান্তহি তল্পাপি তহক্ষ্ম পর্যাগ্রতা বৃক্তা ন চৈবৃন্ধের্যাং হীয়তে অল্প্র জাগরক্ষাং। যথা বহলাপি ইক্সমাণয়ো নাল্ক্বর মণিপ্রীব্য়োঃ। কিঞ্চ প্রত্যুত্ত তেন গুণেন সর্বান্ধর্যাং হীয়তে অল্প্র জাগরক্ষাং। যথা বহলাপি ইক্সমাণয়ো নাল্ক্বর মণিপ্রীব্য়োঃ। কিঞ্চ প্রত্যুত্ত তেন গুণেন সর্বান্ধর্যাং হিগ্রাং ব্যুক্ত ক্রেল্যালাক্ষানার ইত্রুপদি অত্র সাধুভিরিত তালা ও ব্যুক্তবানিত্র্যাঃ। অন্তঃ সাচ বনতা তালমুক্তবান্তর্বহিরীহামব্যের জাদিতি তন্ত্রাব্রানিত্র ক্রিবাাাদিভাবন্তাক্য যাপি ত্রান্ত্রাবিতা ইতি অত্যান্পজ্ঞাপি শ্রীক্ষণ্ড তাল্শং ভাবং তাত্ত্বিক্ষেম মন্ত্রা বিত্রাক্ষা হিত্যাস সা মাং বিষোহ্য তীরপি প্রাাদদে ব্যি ক্রতাগিদি দাম ভাবনের। তে দশাশ্রু কলিলাঞ্জন সন্ত্রমান্ধান। বন্ধুং নিনীয় ভন্ন ভাবন্দ্যা হিত্যা সা মাং বিষোহয়তি ভীরপি

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

এবমপি এঁতংপ্রকারেণৈর সমান্দর্শিতা ন উদ্ধর্মন্তীতি ভাব:॥ ১৪॥

### बीविश्वनाथहळावर्खी ।

ত্যাহ স ইতি সমাতুরিতি চ পাঠ:। রূপয়েতি সর্বশক্তি চক্রবর্তিনী পরমভাষতী রূপাশক্তিরেব ভগবচ্চিত্রং নবনীতমিব বিজ্ঞান্ত তত্র স্বয়ং প্রাহ্র্ পুর্বোছ্তে সভাসকলতা বিভূতা শক্তী তত্র সহসৈবাস্তর্দ্ধাপয়ামাসেতার্থ:। অত্র পরিশ্রমমিতি রূপয়ভালাং স্বাস্থ্যন্ত সমাহিতা ভক্তনিষ্ঠা ভলনোখা প্রান্তি স্তদ্ধনোখা স্বনিষ্ঠা রূপা তেতি হাভ্যামেব ভগবান্ বছো ভবেং। তে হে যাবরভ্তাং তাবদ্যস্থানতা সামীং। তয়োক্ত্তয়োক্ত বজোংভ্দিতি প্রেয়া স্ববন্ধন প্রকার স্বলাতরি স্বয়ম্লাহতো ভগবতেতি ভেয়ং॥ ১০ ৪

ভগৰতঃ পরন পারনৈশ্বর্যে সত্যপি প্রেমবশ্যতা নিবন্ধনং বন্ধন্দিদং পরস্কমংকারিছাভূষণমেব নতু দ্বণমিত্যাহ এবং হরিণা স্বস্য আন্নারানহেহপি ব্ভুক্ষা পূর্ণকামছেহপাতৃপ্তা ভ্রমন্থ্যপথছিপ কোপেন স্বারাজ্যলন্ধীবন্ধেহপি চৌর্যোণ। মহাকাল ষ্মাদিভ্রদ্বেহপি ভ্রপলায়নাভ্যাং মনোগ্র্যান্বেহপি মাত্রা বলাক্ষ্মহণেন আনন্দময়বেহপি ছংধরোদ্নেন সর্ব্যাপকত্বেহপি বন্ধনেন ভক্তব্যাতা স্বাভাবিক্যের স্বস্য সময়ক্ দর্শিতা। অজ্ঞান্ প্রতি দর্শনায় উপযোগাভাবাং বন্ধ ভব সনংক্ষারাদীন্ বিজ্ঞানপ্যতিচমংকারং প্রাপ্যান্থভাবিত্ততি নেদমহক্রণমাত্রন্ধেন ব্যাধার্য দর্শয়ং ভ্রমিদাং লোকে আস্বনো ভক্তবন্যতামিত্যক্র ভ্রিদামিতি প্রযোগাদিতি বিসায় জ্ঞানিল এবং গোপীগণও অভিশায় বিস্মুয়ান্বিত হইলেন, হে রাজন্ বন্ধনার্থ যত্ন করিতে করিতে যশোদার গাত্র ঘর্মাক্ত হইল এবং ভাঁহার কেশপাশ হইতে পুল্পমালা বিল্লিষ্ট হইয়া পড়িতে লাগিল। জননীর এই পরিপ্রাম দেখিয়া জ্ঞাক্ষ কুপাপরবৃশ হইয়া স্বয়ং বৃদ্ধনস্থ হইলেন ॥ ১৩॥

হে রাজন্! ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ স্বতন্ত্র, ঈশ্বর সহিত এই বিশ্ব তাঁহার বশবভী, তথাপি তিনি ঐ প্রকামে ভক্তবশ্যতা দেখাইরাছিলেন ॥ ১৪॥ নেমং বিরিকোন ভবোন জীরপ্যঙ্গসংশ্রয়া। প্রসাদং লেভিরে গোপী যত্তৎ প্রাপ বিমৃক্তিদাৎ॥১৫

#### श्रीभवन्त्रामी।

ভগবং প্রদাদ মনোছপি ভক্তা লভত্তে ইদৃত্ত চিত্রমিতি সরোমাঞ্চ মাহ নেম্মিতি। বিশিষ্ট: প্রোহপি ভব আয়াপি এজা বাপি ॥১৫॥

#### देनकवरकावनी।

যদিতে তীতি। তদেও দভিত্পতাহে এবমুক প্রকারেণ দশিতা ত্রাপি সমাক্ষনাত্র বন্ধনপ্রস্থমতাবিলাদাম্পদ ছাভাবাং। অক্ষেতি প্রেম স্বোধনে। হি নিশ্চয়ে হরিণেতি তথা ভকানাং মনোহরণাং। স্বশেন স্তম্বোপি যতঃ ক্ষেন স্বয়ং ভগবতে তথিং। তদেবাভি বাজ্যতি যদ্যতি ॥ ১৪ ॥

#### क्रममन्दर्धः।

নেমমিতালি বহং ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥

#### গ্রীবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

ভাবঃ। স্বৰণেন স্বাধীনেনাপি নত্ব তহি কৃতঃ স্বাধীনত্বং তত্ৰাহ যুগোতি চিচ্ছকি সাৱভূতেন প্ৰেছৈৰ তস্যানন্দাতিশয়াৰ্থনেৰ ভক্ত-বশত্বং নিম্পাদ্যত ইতি প্ৰাক্ প্ৰপঞ্চিতঃ॥ ১৪॥

ভক্তবশাসা তমা ভক্তেৰপি মধ্যে ব্ৰজেৰ্থ্যা আধিকামপারং বশ্যহাতিশর দর্শনেন সরোমাঞ্চমাহ নেমমিতি বিশিষ্টা মৃক্তি বিমৃক্তিঃ প্রেমা তংগ্রদাদিপি ক্ষঞাং যং ক' প্রমাদং গোপী প্রীয়শোল প্রাপ তং তং প্রমাদং বিরিঞ্চো ভবং শ্রীরপি ন লেভিরে ন লেভিরে ন লেভিরে ইতারয়ং নঞ্ অ্রেল লেভিরে ইতাস্যা ত্রিরার্ত্ত্যা প্রাপ্তাভাবাতিশয় উক্তঃ। যরা বিরিঞ্চোভবং শ্রীরপি প্রসাদং ন লেভিরে মপি তু প্রসানং লেভির এব। কিন্তু গোপী যং প্রসাদং প্রাপ ইমং ন লেভিবে ইতারয়ং। বিরিঞ্চা পুরোহিপি স আদিদেবো কগতাং পরো গুকরিত্যুকে উক্তানামাদিগুকরিণি তবং বার্মাপি বৈক্ষবানাং যথা শকুরিত্যুকে ততোহপ্যংকর্থনানি শ্রী প্রায়াপি অঙ্গ সংশ্রমকেন স্বাভাবিকার কর্মান বিরাদ্ধ কর্মান বিরাদি বিরাদি কর্মান বেরা বিরাদি কর্মান বিরাদি বিরাদি বিরাদি বিরাদি কর্মান বিরাদি কর্মান বিরাদি বিরাদি কর্মান বিরাদি কর্মান বিরাদি কর্মান বিরাদি বিরাদি বিরাদি বিরাদি বিরাদি কর্মান বিরাদি বিরাদি বিরাদি বিরাদি বিরাদি বিরাদি বিরাদি কর্মান বিরাদি বিরাদ বিরাদি বিরাদি বিরাদি বিরাদি বিরাদি বিরাদি বিরাদি বিরাদি বিরাদি ব

হে মহারাজ! ভগবানের প্রদন্ধতা অন্য ভক্তজনেরাও প্রাপ্ত হয় সত্য, কিন্তু কুজিপ্রদ ভগবান্ হইতে যশোদা যে প্রসন্ধতা লাভ করিলেন, ভাহা কি ব্রহ্মা পুত্র হইলেও, কি ভব আত্মা হইলেও, কি অঙ্গাঞ্জিতা লক্ষ্মী ভার্য্যা হইলেও কাহারও কথন সে রূপ প্রসাদ লভ্য হয় নাই ॥ ১৫॥ নায়ং স্থথাপো ভগবান্ দেহিনাং গোপিকাস্তঃ। জ্ঞানিনাং চাত্মস্তানাং যথা ভক্তিমতামিহ ॥১৬ কৃষ্ণস্থ গৃহকৃত্যেয়ু ব্যগ্রায়াং মাতরি প্রভুঃ। অদ্রোক্ষীদন্ধ্নো পূর্বং গুহুকো ধনদাত্মজো।

## औभत्रयामी।

ফ্লিত্যাত নাম্মিতি। দেহিনাং দেহাভিমানিনাং তাপ্সাদীনাং জ্ঞানিনাং নির্ভাভিমানানাম্পি ॥ ১৬॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

অণ কণমস্তান্ত্ৰী তৎপ্ৰাপ্তি জাতা পরেষা বা কণং স্তান্ত্ৰাহ নাম্মিতি অন্তংগোপিকাপ্ততা ভগবান্ দেহিছেনাভিমান-বতাং তপ আদিভি ন'স্থাপ: কিন্তু এতাবানের যজতামিহ্ নিংশ্রেমদোদয়:। ভগবতাচলো ভাবে যন্তাগবতদঙ্গভ: ইত্যুক্তরীত্যা কথঞ্চিৎ কদাচিৎ তম্ভক্রসঙ্গে। যদি স্যাতদা ক্রমত এব প্রাপ্যঃ। এবং জ্ঞানিনাং দেহাদ্যতিরিক্ত জ্ঞানবতাং সাত্মভুতানাং তদ্বিজ্ঞান-বতামপি ন স্থাপঃ কিন্তু পূর্ব্বব্তম্বক্তসঙ্গাদেব। আত্মপোতানামিতি পাঠং কেচিৎ পঠন্তি তত্র আইত্মব পোত্তমণুনাধনং বেষাং জ্ঞানিনামিত্যর্থঃ। তহি কেষাং কেষাং স্থাপ ইত্যপেক্ষায়াং তন্নিদর্শনমাহ যথা ইহ ত্রীগোপিকাস্থতে ভক্তিমতাং স্থাপঃ। অনেন মহানারায়ণাদি ভক্তিমন্তোহপি ব্যার্তা: যুক্তঞ্চ তেষামন্ত্র্থাপ ইতি। দেহিনাং জ্ঞানিনাঞ্চ দেহিসামান্য দুষ্টা। ভক্তান্তরাণাঞ্চ গোপ-লীলাদৃষ্ট্যা তত্রাদরানাম্পদহাং। তম্তকানাং স্থাপ ইতি চ যুক্তং। ইখং সতাং ব্রহ্মস্থামূভূত্যা ইত্যাদিয়ু তেঁবাং তাদুশতল্লীলায়া স্কোন্ত্ৰমন্ত্ৰমান্ত্ৰমানিতি জ্ঞেয়ং। তত্ৰ গোপিকাস্থত ইতি বিশেৰণমেৰ নোপলক্ষণং গোপিকায়া এব সৰ্কোপাদেয়ত্বেন বিবক্ষিত দ্বাং ইহ শব্দত তদ্বাচ্যের ন জগদাদিবাচী প্রাপ্তথাদ্বার্থছাচ্চ ভক্তিমস্তদ্ধ ত্রৈকালিক ভক্ত পরম্পরা এব অবিশেষেণ প্রাপ্তত্বাং। তামুপদিশতাং বেদানাং তত্বদেশকোপদেশ্যপরম্পরাশাং চানাদানস্তকাল ভাবিত্বাং। তচ্চ বিশেষণং ভক্তিত্বধ্প্রাপ্তি রপয়োঃ সাধন সাধ্যয়ো রুভয়োরপ্যবস্থয়োর্দ্ধন্ত;। তথাতে সার্ব্ধকালিক তম্ভকা গোপিকাস্কতেইনব সাধ্যন্তি লভন্তেচ তমিতি স্থিতে নিইভ্যব তম্ম তদ্রপেণাবস্থিতি: সিদ্ধা। তণা গোপিকাস্থততেইনব সাধননির্ণয়ে গোপিকায়াশ্চ তৎ সাধনত্বে স্বাশ্রয়দোধাপাতাৎ ন সাধনাবকাশ ইতি সৈব নিৰ্দ্ধাৰ্য্যতে অতএব গোপিকায়াঃ স্থাপ ইতি কিং বক্তব্যং গোপিকায়ান্ত স্থতএব স ইতি ব্যঞ্জিতং। উপল-ক্ষণকৈতং শ্রীনন্দ্যা তদীয়ানামপি তেষাং তাদৃশ্ত্রক শ্রীকৃষ্ণজনাষ্টম্যাদিরতে তদীয় নানামন্ত্রে চ আবরণপুজায়াং দ্রষ্টব্যং। তন্ত্রাং পূর্বং মলা তেলোবংশাভ্যাং জোণধরারূপাভ্যাং যঙ্লীলামাত্রং তদেবাপাত প্রবোধমাত্রার্থমুক্তমিতি ভাবঃ॥ ১৬॥

এবং শ্রীগোপিকারাং কেবলবালন্থেহপি অন্যত্রাব্যাহত জ্ঞানাদিমবং বক্তুং প্রস্তৌতি ক্ষমন্থিতি। এবং শ্রীমশোদা শ্রীকৃষ্ণং ববন্ধ স চান্তং মোচয়ামাস ইতি । ভিয়োপক্রমে তুশব্দঃ। গৃহক্তেয়েষ্ ইতি বহুত্বেন তেথামহুপরতিঃ স্থচিতা তং ভ্যক্তা, গ্রমনঞ্চ তস্য

#### শ্ৰীবিশ্বনাখচক্ৰবৰ্ত্তী।

কিঞ্চ শ্রীভাগবতেহিন্দ্রন্ ভগবংপ্রেনৈব সর্বপ্রকার্থশিরোমণিজেনোদ্য বাতে তথা মূলভ্তাশ্রাণাং ভক্তানাং মধ্যে নিজাসিদ্ধ এব তথা নিত্যান্থিতিঃ সম্ভবেহ তেদপি মধ্যে গোক্লবন্তিন জন্মান্তাদ্য এব শ্রেষ্ঠা যেষাং বাংসল্যাদি ভাববিষয়ীভূতঃ ক্ষম্ভদর্গমন ভক্তিমন্তিনের স্থলভা নান্যৈরিজ্যাই নান্ধমিতি। অয়ং গোপিকাস্থতো ন স্থাপঃ কেশাং দেহিনাং দেহাধ্যাসবতাং ভক্তিষতাং জ্ঞানিনাং দেহাধ্যাসবহিতানাং আক্মারামভক্তানাং তথাভূতছে সত্যেব প্রাপ্তিযোগ্যতায়াং নিষেধসম্ভবাং আত্মভূতানাং পূর্কশ্লোকনির্দিষ্টানাং বিরিঞ্জনশ্রিয়াং তল্প বিরিঞ্জনহানাং জ্যাপিকাস্থতো ভগবান্ ন স্থাপঃ। কিং তদিতি বিক্ঠা দোলগাদিস্ত এব ছংখমেবাভিব্যঞ্জনতি। যথা ইহ শ্রীমণোদায়ামেতহণলন্ধিতের বাংসল্যপথাকাম্ভ ভাবাশ্রেষ্ ব্রহলোকের্ যা ভক্তিঃ স্থিয় উরগেক্তভোগ ভূক্তদণ্ডত্যাদিনা বথা ছলোকবাসিন্য ইত্যাদিনা চ ব্যঞ্জিতা শ্রুতাদিভিরহণতি নায়ী তন্ততাং যথা স্থাপত্থা তেনেতি তেন গোপিকাদ্যমণ্ডিমন্ত স্বন্যতা ছংখালীকান্ত বিরিঞ্জ তব লক্ষ্যাদিভিনীমনাভিমানিভিঃ স্থা লোকস্থিত ছংশক এব অন্যেয়ন্ত তাদ্নাপ্রেলাভাদ্যেচকত্বা তদ্মগত্যভাব এবেতি ভাবঃ তল্ত স্থাপ হ্র্প্রাপ্ত শ্রী এবোচ্যেতে ইতি কেচিলাহা। ভক্তিবন্ধ্যাপাদ্যমোচকত্বং বন্ধু মাহ ক্ষাছিতি॥ ১৬॥ ১৭॥

কারণ গোপীনন্দন ভগবান্ ভক্তিমান্ জনগণের যক্তপ স্থলভা, দেহাভিমানি তাপসাদির এবং নির্তাভিমানি আত্মভূত জানিদিগেরও তৃক্তপ স্থলভ নহেন॥ ১৬॥

হৈ রাজন্! ভগবান্ভক্ত প্রদত্ত বন্ধন এক্ত হুইলেও অন্যের মোচক হইয়া থাকেন, তাহার বিবরণ

পুরা নারদশাপেন রক্ষতাং প্রাপিতে মদাৎ। নলকৃবরমণিত্রীবাবিতি খ্যাতে প্রায়িতে ॥১৭॥
॥ \* ॥ ইতি জীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংদ্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং দশমস্বন্ধে উদ্থলবন্ধনং নাম নবমোহধ্যায়ঃ ॥ \* ॥

শ্রীপরীক্ষিপ্রবাচ॥

কথ্যতাং ভগবন্ধেতত্তয়েঃ শাপস্য কারণং। যত্তবিগহিতিং কর্ম যেনাসীদ্দেবর্ষেত্তমঃ। প্রাপ্তক উবাচ॥ •

## श्रीधतवाभी।

•ভক্তৈ ব'দ্ধস্যাপি অন্যমোচকত্বং বক্তৃমাহ ক্লক্ষতি॥ ১৭॥

॥ 🛊 ॥ 🛮 देखि मन्दम नवमः ॥ 🛊 ॥

দশ্যে পাতর্য্রিক্সমন্তরা যমলার্জ্নো। তত্র তাভ্যাঞ্চ দেবাভ্যাণ ক্ষা: স্তত ইতীর্যাতে ॥ • ॥

## ় বৈষ্ণবজোষণী।

প্রাঙ্গণসমীপত্তাং রক্ষ্যমাণানাং বালানাং রক্ষিততাং দৃঢ়বন্ধনমোচনোল্থলাকর্ষণ শক্তেরমননেন পুত্রস্যান্যান্যতা গমন শঙ্কাপগমাৎ তথাচ শ্রীবিষ্ণুপুরাণে তস্যা বাক্যং। যদি শক্ষোসি গছত ত্বমপি চঞ্চলচেষ্টিতেতি ॥

পূৰ্ব্বমদ্ৰাকীদিত্যকং তত্ৰ পূৰ্ব্ব তদৰ্শন সম্ভবেইপি সম্প্ৰতি তত্তিক স্তৰিশেষাস্থপক্ষেতি তচ্চ যদ্যপি স্বযোগ্যখাত্তলীলাশক্তিক্ততমেৰ তথাপি স্বৰনাহসন্ধানেন তৰ্দ্ধনাহসন্ধানস্য যুক্তমাদিৰেত্যুৎপ্ৰেক্ষণীয়ং দৃষ্ট্ৰ বিচাৰিতবানিত্যৰ্থ: ॥

অথ তনেব তস্য বিচারমাহ পুরেতি মদাদভিমানাং মধুমত্ততায়াশ্চ হেতোঃ যতঃ শ্রিয়া সম্পদান্বিতৌ ॥ ১৭ ॥

॥ \*॥ ইতি শ্রীদশম টিপ্পন্যাং বৈষ্ণবতোষণ্যাং নবম: ॥ \*॥ অথ তম্ম বন্ধস্য মাতৃকোপাদ্যগ্রস্থ চাব্যাহতসার্বজ্ঞমন্ত্রীং বিচাররপামান্তরলীলামপি কৌতৃকাং পৃচ্ছতি। কথ্যতামিতি। তমোহভূদিতি শেষ:। তদৈতচ্ছাপস্থ কারণমিতি যোজ্যং যেনাদীন্দেবর্বে ত্তম ইতি পাঠান্তরং স্থগমং আর্বনাচ্চন্দোভদীদোষ:॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ \*॥ इंडि बीमनारम क्रममनार्ड नवमः ॥ \*॥

তদ্ধুগল মোক্ষণণীলাশ্রবণ রসপোধার্থং পৃচ্ছতি ক্থাতামিতি॥ ১॥

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

ঋণিত্বাদেব বদ্ধোহহং মাত্রা তদন্ণীভবন্। কিং কুর্বে ইতি সংচিন্তা মোচয়ত্তঃ পুরক্রনৌ ॥

॥ \*॥ ইন্তি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণাং ভক্তচেতসাং। দশমে নবমোহধায়ং সঙ্গতঃ সঙ্গতাং ॥ \*॥ কুবেরাত্মলধ্য়োঃ শাপকথাত্যোক্তা পুরাতনী। ত্রিমোচয়িতা কুঞ্জাভায়ে দশমে স্বতঃ॥ • ॥

শুন, ঐ রূপে বন্ধন করিয়া যশোদা গৃহকার্য্যে ব্যত্তা হইলে শ্রীকৃষ্ণ অর্জ্জুন নামে ছইটা বৃক্ষ দেখি-য়াছিলেন, ঐ ছই তরু পূর্বজন্মে ক্বেরাত্মজ শুহুক্ ছিল, মদোমততা প্রযুক্ত নারদের শাপে বৃক্ষত্ব প্রাপ্ত হয়। পূর্বজন্মে তাহারা অতিশয় সম্পতিশালী ও নলকুবর এবং মণিগ্রাব নামে বিখ্যাত ছিল ॥ ১৭ ॥

॥ ॥ देखि मन्य नवम ॥ ॥॥

দশমাধ্যায়ে বৃক্ষৰয়ের মধ্যদেশ দিয়া গমনকরত শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক যমলার্চ্ছনের পাত এবং তাহাদিগের কর্তৃকস্বরূপ ধারণ পূর্বক শ্রীকৃষ্ণের স্তব বর্ণন॥ ॰ ॥

রাজা পরীক্ষিৎ জিজাসা করিলেন হে ভগবন্। কুবেরতনয় নলক্বর এবং মণিগ্রীবের শাপের কারণ কি আজা করন। তাহারা এমন কি গহিত কর্ম করিয়াছিল যে, যাহাতে ভাগবতোত্তম নারদেরও তাহাদের প্রতি ক্রোধ উৎপদ হয়॥ রুদ্রসামুচরো ভূষা স্থদৃথো ধনদাক্ষজো। কৈলাসোপবনৈ রম্যে মন্দাকিন্যাং মদোৎকটো।
বারুণীং মদিরাং পীত্বা মদাঘূর্ণিতলোচনো। স্ত্রীজনৈরমুগায়ন্তিশ্চেরতুঃ পুল্পিতে বনে ॥ ১ ॥
অন্তঃ প্রবিশ্য গঙ্গায়ামন্তোজবনরাজিনি। চিক্রীড়তু যুবিতিভি গ্রজাবিব করেণুভিঃ ॥ ২ ॥
যদৃচ্ছয়া চ দেবর্ষি র্ভগবাংস্তত্র কৌরব। অপশ্যমারদো দেবো ক্ষীবাণো সমর্ধ্যত ॥ ৩ ॥
তং দৃষ্ট্য ব্রীড়িতা দেব্যো বিষম্রাঃ শাপশঙ্কিতাঃ। বাসাংসি পর্যুধুঃ শীত্রং বিবস্ত্রো নৈব গুহুকো ॥৪॥

## প্রীধরস্বামী।

যদিগহিতিং কর্ম যেন বা ভাগবতোত্তমস্যাপি তমঃ ক্রোধঃ তদেতৎ কণ্যতামিতি॥ ১॥ গঙ্গামামস্তম ধ্যে কণ্ড তে অন্তোজানাং বনানি তেষাং রাজয়ঃ তা বিদ্যন্তে যদিন্॥ ২॥ অপশ্যাৎ দৃষ্ট্য চ ক্ষীবাণো মত্তো সমর্ধ্যত॥ ৩॥ কৃত ইত্যত আহ তং দৃষ্টেত ॥ ৪॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

প্রী শুকদেবশ্চ, তাদৃশ তদ্বিচার মহাস্তা বকুমারত্তবান্ তত্ত্ব কলুসোতি যুগাকং বারণীং ক্ষীরোদমধনাজ্ঞাতাং কিন্তা বকণ নির্মিতাং ইতি মহামাদকত্বং উক্তংতাংপীতা কৈলাসোপবন মধ্যে যা মন্দাকিনী। তদ্যাং তৎসমীপে পুলিতে বনে প্রথমং চেরতুঃ॥১॥

গঙ্গারাং চিক্রীড়কু:। কিং ক্সমা। অন্তঃ প্রবিশ্য অস্তঃ কথস্তুতে অস্তোজবনানাং রাজি ব্রেত্যব্যাবিশেষণ্ডেন নপুংসকভারুম্॥ ২॥ স্থে চুকারো ভিরোপক্রমে। যবা অপশ্যং সম্যাগবুধ্যত চেতি চকারাব্য়:। যবৃদ্ধ্যা বৈরিত্যা আগত ইতি শেষঃ। দেবর্ষিরিতি নিয়স্ত্ মং ভগকানিতি দ্যালুম্বং ইতি বক্ষ্যমাণ শাপামূগ্রংগ্নে ব্যাগ্যতোক্তা। হে কৌরবেতি তত্ত্ব তস্য গ্রীনাসভ্বেপি আগ্যনাৎ কৌতুকেন স্থোধনং॥ ৩॥

গুহুকাবিতি তুদা সাধিকস্বাভাবেন দেবস্বহানে: কেবল যক্ষতয়োপলক্ষিতে। এবশব্দেন দেবীনামাঞ্চহণাপি ন পর্যাধাতা-মিতি বোধাতে ॥ ৪ ॥

#### ক্ৰেমসন্দৰ্ভ:

অন্তোজবনেন রাজিতুং শীলং যদ্য তামিন্॥ ২। ৩। ৪॥

#### **अ**विश्वनाथहळ्कवर्जी।

তায়ো বিগহিতিং যৎ কর্ম্ম যেন বা কর্মণা দেবর্ষেরণি তম: ক্রোধ এতত্তমো: শাপদ্য কারণং কথাতামিত্যময়: ॥ > গঙ্গায়াং চিক্রীড়তু: কিং কৃত্বা অন্ত মথেয় প্রবিশ্য কীদৃশে অস্তোজানাং বনরাজি র্যত্ত তিমিন্ ॥ ২ ॥ দৃষ্ট্রা চ ক্ষীবাণো মত্তো এমব্ধ্যতেতি মন্তমোরনায়ো ম্ম কুপা ন ফলবতী ভবিষ্যতীতি তায়ো ম্পাপনোদনার্থং দধ্যাবিতি ভাব: ॥ এ৪

শুকদেব কহিলেন রাজন্! কুবেরের এই ছুইটা সন্তান রুদ্রাত্মতর হইয়া অতিশয় অহঙ্কত হইয়াছিল। তাহারা এক দিবস মদোদ্মত হইয়া কৈলাস পর্বতের রমণীয় উপবনে গমনপূর্বক পুল্পিতবন
মধ্যে এক সঙ্গে সঙ্গাতিকারিণী স্ত্রীগণের সহিত বিহার করিতে আরম্ভ করিল। বারুণী মদিরা পান
ক্রাতে তাহাদের লোচন মদে বিঘুর্ণিত হইতেছিল॥ ১ ॥

তুই জনে পদাবনরাজিবিরাজিত মন্দাকিনীর জল মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া গজন্ম যেমন হস্তিনীগণ

সমভিব্যাহারে বিহার করে তাহার, ন্যায় যুব্তির্ন্দ সহিত জল ক্রীড়ায় প্রবৃত্ত হইল ॥ ২ ॥
সেই সময় যদৃচ্ছা ক্রমে দেবর্ষি নারদ দৈবাৎ সেই দিক্ দিয়া যাইতে ছিলেন হঠাৎ তাহাদিগকে
দেখিতে পাইলের। 'দেখিবা মাত্র দেবর্ষির বোধ হইল এই ছুই ব্যক্তি মদ্যপানে মত্ত হইয়াছে ॥৩॥

হে কুরুনন্দন! দেবীগণ দেবর্ষিকে দেখিতে পাইয়া সাতিশয় লজ্জিত হইল এবং বিবস্ত হইয়া থাকাতে শাপ ভয়ে সত্বর বসন পরিধান করিতে লাগিল কিন্তু ঐ ছুই গুহুক দিগন্বর হইয়াই থাকিল, বস্ত্র পরিধান করিল না॥ ৪॥ তৌ দৃষ্ট্যা মদিরামতৌ **শ্রীমন্নাক্ষো স্থরাত্মজো। তরোর্দ্**গ্রহার্থায় শাপং দাস্যন্ত্রিদং জগৌ ॥৫॥ নহ্মন্যা জ্যতো জোষ্যান্ বৃদ্ধিজংশো রজোগুণঃ। শ্রীমদাদাভিজাত্যাদি র্যত্র স্ত্রীদ্র্তিমাসবঃ ॥৬॥ হন্যত্তে পশবো যত্র নির্দ্ধিররজিতাত্মভিঃ। মন্যমানৈরিমং দেহমজরায়্ত্যুনশ্বং॥ ৭॥

#### **अ**धतत्त्रामी ।

অন্ত্রহার্থায় অত্ত্রহ: মদনাশ: অর্থক জ্রীক্ষদর্শনং তবর্থ ইদং বক্ষ্মাণং নহন্য ইত্যাদি ॥ ৫ ॥

জোষ্যান্ বিষয়ান্ জ্বতঃ দেবমানুষ্য পুংসঃ শ্রীমদাদন্য আভিজাত্যাদিঃ সংকুলবিদ্যাদিজনিতো মদঃ জন্যো বা এজো-গুলঃ রজঃকার্য্য হাষ্য হর্ষাদিরপঃ নহি তথা বৃদ্ধি লংশঃ বৃদ্ধিং লংশয়তীতি তথা কিন্তু শ্রীমদ এব তদাহ ব্যেত্যাদিতি চত্তিঃ। ব্যৱ শ্রীমদে॥ ৬ ৪

ইনং নশ্বং দেহং অজ্বামৃত্যু অর্জ্বশ্চ অমৃত্যুশ্চ যথা তথা মনামানৈ: ॥ १ ॥

## देवस्वदर्ভाषणी।

স্বাত্মজাবিপি মদিনামন্তে যতঃ শ্রীমদেনান্ধে সদসদ্ ষ্টিহীনে। মদিরেত্যাদি বিশেষণদ্ধং শাপে স্বেতি চাম্প্রতে হেতু বিবিচনীয়। তথানের্থহার্থার ইতি তৌ প্রতি স্বযোগ্যযায়গ্রহন্ত বোহর্থ উপশাস্তি ভগবছক্তি ভগবংসাকাংকার্মদ্বনর্পঃ তলৈ তং প্রাপিরিত্থ স্থাবর্ষ প্রাপক্ষ শাপং দান্তন্ অমুপ্রহ স্থভাবতাদেষাং সোহয়মম্প্রহঃ পরাপরাধ স্থশাপাবভিত্র স্বরপেনের পর্যবিদিতঃ ভারত চ তজ্ঞপাহর্থে স্বয়নাত্মজাবি প্রামন্ত্রীয়া ভারত তজ্ঞপাহর্থি স্বামন্ত্রীয়া প্রমমহ্তিলীলাশ্রীবালগোপাল সাক্ষাৎকারাদিকং লেভাতে। তিকেন স্বাব্যামা তদানীং তেন প্রমান্ত্রীনাগ্রাক্ষ স্থাবিষ্ঠা প্রমমহ্তিলীলাশ্রীবালগোপাল সাক্ষাৎকার্যাদিকং ত্রীলাগানং ক্রিমাণ মাসীদিতি তৎ কারণ্যতাদান্ম্যাপন্ন নিজান্ত্রহেণ তৎ পর্যস্তোহ্পার্থা দ্ত ইতি জ্বা ত্রহতা হতঃকোপাভাবেন গাধার্যপেন্টিভঃ স্বয়মবোচং ॥ ৫ ॥

জীনদেনান্ধং দৃষ্ট্য শ্রীলংশরপং শাপং দাতুমাদৌ শ্রীমদং নিদ্ধতি নহীতি পঞ্চতিঃ। অভিজাতিঃ সংকুলং তত্ত্বঃ আভিজাত্যো মদং আদি শ্রাঘিদাদিনদং। তথাচোক্তং বিদ্যামদো ধনমদ স্তথা চাভিজারো মদং। মদা এতৈরলিপ্তানাং তএব হি সতাং দমাং। যত্র শ্রীমদে সতি স্বতএব সদ্য তেবাং প্রাপ্তেঃ তেবাং কামক্রোধ্যোম হাহেত্ত্বাং। তয়োল্চ। কাম এব ক্রোধ এব রজোগুণসমূহবং। মহাশনো মহাপাপ্যা বিজ্ঞোনমিহ বৈরিশং। ইত্যাদিনা নিদ্ধিত্বেন শ্রীমদ্যীতাস্ক্রপ্রাং॥ ৬॥

তত্ত মহাপাপ জনকং প্রপ্রেহলকণং স্কৃতিং কর্মাত্র বটত ইত্যাহ হন্যক্ত ইতি ভোজনস্থার্থং পশ্ব ইতি ,সাক্ষাং ভক্যাভিকা

## ক্রমসন্দর্ভঃ।

ত विवाना पञ्च श्राह्म (वार्थः। ओक्स मर्भनः **उदेत्र ॥ ८**॥

হনাস্ত ইতি। অজরণ্চ যো দেহবিশেবঃ পশ্চাদমূত্রপানাম্বরোম্ব ক্রৈকাং তল্মমামানৈরিতার্থঃ ॥ ৭ । ৮॥ 🕝

## • औविश्वनाथठळवर्डौ ।

অন্তর্হস্য অর্থ: ফলং ভগবৎসাক্ষাৎকারন্তদর্থং শাপং দাসান্ধিত। যথা। অতিবংসলং পিত্রাদিকো ইতিমধুরং ক্ষীরাদিকং ভোজনিয়ান্
পূল্রাদিকমতিনিদ্রাণিমালক্ষ্য তন্ত্রিজাভলাবং নধবন্নাথাতং করোতি তন্ত্রিজাও দিব্যানি ক্ষা আহিবং লান্দ্রিজ ভাবং ॥৫॥
কোধ্যান্ প্রিরবিষয়ান্ ক্ষত: সেববানস্য প্রংসঃ প্রীমদাদন্য আভিজাত্যাদি বুদ্ধিলংশকো হি নিশ্চমেন ন ভবতি। যথা প্রীমদঃ
অবশ্যমেব বৃদ্ধিং লংশরতীত্যর্থং। অভিজাতিঃ সংকূলং তত্ত্বং। আদিশকাবিদ্যাদি মদঃ। রক্ষোগুণোত্তবন্ধান্তক্ষোগুণং শ্রীমদে সতি
যথা পাপানি আরম্ভে তথা নান্যত্রেজ্যাহ যত্তে চতুর্জিঃ॥ ৬॥

জরামূত্যভাগে দৃষ্টাভ্যামপি ইমং দৃহং ন নশ্বরং মন্যমানৈ: ॥ १ ॥

হে রাজন ! ঐ তুই কুবেরনন্দনকে শ্রীমদান্ধ ও মদিরা মত দেখিয়া দেবর্ষি তাহাদের . মদ নাশ এবং কুফাদর্শন লাভ অভিপ্রায়ে অভিদাপ দিবেন বলিয়া কহিতে লাগিলেন ॥ ৫॥

অহো! যে পুরুষ বিষয় স্বো করে তাহার ঐশগ্য মদ ভিন্ন সংকৃষ্ণ জনিত ফিলাদি মদ অথবা অন্য কোন প্রকার রজোওণের কার্য্য হাস্য ও হ্রাদি তক্রপ, বৃদ্ধি জংশকারী হয় না, ঐশগ্যমদে যক্রপ বৃদ্ধি জংশ হয়, তাহার কার্য তাহাতে মদ্য, স্ত্রী ও হ্যুত তিনটীই উপস্থিত করে॥ ৬॥

আর ঐশর্য্য মদে অন্ধ অজিতাত্ম ব্যক্তিরা এই নশ্বর দেহকে অনশ্বর জরাও মৃত্যুবিহীন মনে

দেবসংজ্ঞিতমপ্যন্তে কৃমিবিড়্ ভস্মশংজ্ঞিতং।. ভূতপ্রক্ তৎকৃত্নে স্বার্থং কিং বেদ্ধ নিরয়ো যতঃ॥৮॥
দেহঃ কিমন্নদাতুঃ স্বং নিষেক্ত্র মাতুরেব বা। মাতুঃ পিতৃর্বা ক্রেভুর্বা বলিনোহয়েঃ শুনোহপি বা॥৯
এবং সাধারণং দেহমব্যক্তপ্রভবাপ্যয়ং। কো বিদ্ধানাত্মসাৎকৃত্ব হস্তি জভূন্তেহসতঃ॥ ১০॥

#### श्रीभवत्यामी ।

নরদেব ভূদেব সংজ্ঞিতমপি ঝাদিভি ভক্ষিতং বিট্সংজিতং দশ্ধং ভক্ষসংক্ষিতং অন্যদা ক্ষিসংজ্ঞিতং তৎক্তে তদর্থং যো ভূতঞ্ক ভূতজোগ্ধা যতো ভূতজোহাৎ নির্য়ো ভবতি স কিং স্বার্থং বেদ নবেদেত্যর্থ: ॥ ৮ ॥

নিষ্কেরু: পিতৃ: মাতৃ: পিতৃমা তামহদ্য পুত্রিকাপুত্রকরণেন ॥ २ ॥

অব্যক্তপ্রভবাপায়ং অব্যক্তাৎ প্রভব স্তবিরেব অপ্যয়ো যদ্য তং আত্মদাৎ কলা আত্মতি মলা অদতঃ মূচাদৃতে: ॥ ১০ ॥

## देवक्षवতোষণী।

বিচারোহপি নিরস্তঃ। নির্দিরেঃ সন্তিঃ যতো হজিতেজিরেঃ অতএব ইমং সাক্ষাজ্জরাদি ধর্মকমপি তারচ প্রতিক্ষণপরিণামিজেন নাশ-শীলমপি অজরা মৃত্যু বতিবৃতি মন্যমানেঃ। টীকায়াং অজরশ্চ যো দেহবিশেষঃ পশ্চাদমৃত্যুরপ্যস্তঃ তয়ো দ দৈক্যং তদ্মস্মানি-রিত্যেঃ॥ ৭॥

বাদ্য অৰ্থ: হিত্মিতাৰ্থ: ॥৮॥

দেহে মমতা নিদ্ধারণমপি ন ঘটেত বহু বিপ্রতিপত্তেরিত্যাহ ইতি সং ধনং স্বীয়মিত্যথ:। বলিন: বলাদ্বিষ্ট্রাদ্যর্থ: গৃহত:। এব শক্ষ্যাপি পূর্বেরপ্যবয়:। ক্রেতুর্বা বলিনোহ্যে রিতি বা বলিন: ক্রেতুর্যেরিতি বা পাঠ:॥১॥

এবং পূর্ব্বোক্তপ্রকারেণ দেহং সাধারণমপি বিধান্ জানন্ তথাহব্যক্তং প্রধানবং কারণাবস্থায়ামবিবিক্তং ভূতপঞ্চক তত্ত প্রভ-বাপ্যয়ৌ ষ্প্রভাগাতমাত্রপ্রতীতমপি জানন্কো নাম তমাত্রবোকীকৃত্য জন্ত্রতি ন কোহপি অসম্ভন্ত জানভোহপি মন্তী-ভার্থ: ॥ ১০ ॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:

দেহ ইতি স্বং বস্থিতি শেষঃ ॥৯।১০।১১।১২।১৩)১৪।১৫।১৬)১৭।১৮।১৯।২০॥

## শ্ৰীবিখনাপচক্রবতী।

মরদেব ভূদেবসংক্রিতমপি অন্তে মরণানন্তরং শাদিভিরভিক্তিং পুত্রাদিভিরদগ্ধং চেৎ কমিসংক্রিতং ভক্ষিতঞ্চেৎ বিট্সংক্রিতং দগ্ধগেৎ ভক্ষসংক্রিতং ভবেৎ তদ্য দেহদ্য ক্বতে যো ভূতঞ্জক্ যতো ভূতলোহাৎ॥৮॥

দ্রেহে মঁসীতা নির্দ্ধারণমপি ন ঘটতে বছবিপ্রতিপত্তেরিত্যাহ দেহ ইতি নিষেক্তুঃ পিতৃঃ স্বং ধনং। মাতুঃ পিতৃ মাতামহস্য বা পুজিকাকপণে সতি। বলিনো বলাদ্বিষ্টার্থং গৃহতঃ॥ २॥

অব্যক্তাৎ প্রভবস্তবিশ্লেবাপায়ে। যদ্য তং। আর্থ্যাৎক্তবা আত্মজেনাঙ্গীকৃত্য অদতোহজ্ঞান্ বিনা॥ ১০॥

# করিয়া নির্দ্ধয়তাপূর্বক পশু বধ করিয়া ভ্রমণ করে ॥ ৭ ॥

কিন্তু ইহা বড় খেদের বিষয় যে এই দেহ নরদেব ভূদেব ইত্যাদি আখ্যায় বিখ্যাত হইলেও অন্তে কৃমি অথবা বিষ্ঠা কিন্তা ভন্ম সংজ্ঞা প্রাপ্ত হয় অর্থাৎ মৃত্যুর পর এই দেহ মৃত্তিকায় প্রোথিত হইলে কৃমি সংজ্ঞিত, কুরুরাদি কর্তৃক ভক্ষিত হইলে বিষ্ঠা রূপে পরিণত এবং অগ্নিতে দগ্ধ হইলে ভন্ম সংজ্ঞা প্রাপ্ত হইয়া থাকে। এই রূপ দেহের নিমিত্ত যে ব্যক্তি প্রাণিদ্রোহ করে, যাহাতে নরক হয়, সে আবার স্বার্থ কি জানিল ? সে নিতান্তই অনভিজ্ঞ ॥ ৮।।

অপর এই দেহ কি অন্নদাতার ? কি নিয়েক কর্তা পিতার ? অথবা জননীর ? কিম্বা পুত্রিকা করণের কারণ মাতামহের ? কি ক্রমকর্তার ? কি বলবান্লোকের ? অথবা অগ্নির ? কি ক্রুরের ? কাহার যে কিছুই নিশ্চয় করিতে পারা যায় না ॥ ৯ ॥

বরঞ্গ, এ স্কলেরই সাধারণ এমত অফুভব হর, অপর এই দেহের উদ্ভব অব্যক্ত অর্থাৎ মায়া হুইক্তে হুইয়াছে, অন্তে অব্যক্তেই ইহা বিলয় প্রাপ্ত হুইবে, অতএব মৃত্ ব্যুতীত কোন্ বিদ্যান্ ব্যক্তি এতাদুশ দেহে আত্মবুদ্ধি করিয়া তদর্থ প্রাণিহত্যা করিবে ? ॥ ১০॥ অসতঃ শ্রীমদান্ত দারিত্রাং পরমঞ্জনং। আত্মেপিন্যেম ভূতানি দরিত্রঃ পরমীক্ষতে ॥ ১১ ॥ যথা কঞ্চকবিদ্ধান্তো দক্ষেতি তাং ব্যথাং। জীবসাম্যং গভো নিজৈ ন' তথা ২বিদ্ধকন্টকঃ ॥১২॥ দরিত্রো নিরহংস্তভো মৃক্তঃ সর্ক্মনৈরিছ। ফুল্ডুং যদৃষ্ট্যাথোতি তুদ্ধি তস্য পরং তপঃ।

# अध्यक्षामी।

এবং শ্রীমদচেষ্টিতমুক্ত্ব তং প্রতীকারং নিশ্চিনোতি অসত ইতি। পরং শ্রেষ্ঠং দান্নিদ্রমেব কেবলমিতি বা কৃত ইক্যুত আহ আন্মোপম্যেনেতি। ততোন ক্রম্ভতীতি ভাবঃ ॥ ১১ ॥

## देवक्षवरकावनी।

অহো ৰতাসাধোরনাক্তানাথাপি কথঞ্চিতিং তাৎ এমদাক্ষ্য ত্বসাধোদ বিন্দ্রোগৈবেত্যাহ অসত ইত্যাদি পরমঞ্চনমিতি নিদান-বিপর্বায় ভারেন ॥ ১১ ॥

যতো বংগতি। জবোঃ ক্যাচিদপি প্রাণিনন্তাং ক্টকবেধকুতাং নেচ্ছতি ত্যা সা ভবন্ধিতি ন ৰাশ্জীতার্থঃ। বভো দিলৈমু খ-ক্লান্তাদিতি শীবস্য ত্যা সামাং নিজ হংধাছমারণাৎ কুণোদ্বেন তুল্যাবন্ধুবং গতঃ প্রাণ্ডোভবতি। অবিদ্ধক্টকঃ ক্টকেনাবিদ্ধ ইত্যর্থঃ। রাজদন্তাদিবৎ প্রনিপাঠঃ। যথা অবিদ্ধা অবায়ং ক্টকো যত্ত্ব সং॥ ১২॥

অহন্বারেণ ধনিত্বাদি গর্কেণ বস্তত্তে। নম্রত্বাভাব: দ নির্গতে। বন্ধাৎ অতঃ দবৈধি ধনাদিসক্ষান্তি ম' দৈশ্চিত্ববিক্ষেণৈ মুঁজো ভবতি।
কিঞ্চ অন্নাদ্যভাবেন বদ্দ্রে অভাবত এব প্রাপ্নোতি বস্তত্তপ ইত্যাভিমাননানকত্বাৎ। তচ্চ পরং প্রেচমিতি প্রদিদ্ধ তপোবদ্ভিমানাহৈতৃত্বাৎ ॥

তস্যেক্তির অরাধিকং চ তপংসাধ্যমপি অতো ভবতীত্যাহ নিত্যমিতি। অরকাজ্জিণঃ ডক্সমাত্রেক্টো অহু নিরন্তরং শুবাতি বিষয়-রসাত্রপরমন্ত্রীতার্থঃ অতএব হিংমা বিষয়োপ্রেগার্থপর্বীড়নাধিককণাণি উপরমতি। এবং শ্রীমদাদ্ভিতাত্মতা ততণ্ঠ হিংসা-

## श्चीवनमाथठकवर्ती।

শ্রীমদরোগপ্রতীকারং নিশ্চিনোতি ব্দাত ইতি। পরং কেবলং n >> n

বিকৈ মুখিলান্যাদিভি দ্'টে জাঁবে পর্মিন্ সাম্যং গতঃ। পূর্বামূভ্তবব্যথাসাদৃশ্যং তত্তাস্থিমান ইত্যর্থঃ। অবিদ্ধক্টকঃ কট-কেনাবিদ্ধঃ। রাজক্ষাদিঃ ৪ ১২ ৪

দারিজ্যে সভি মোক্ষসাধনানি বছএব ভবজীত্যাই দরিজ ইতি ত্রিভি:। অ্বহারেণ ধনিহাদিগর্কেণ বঃ তত্তঃ নাম্বাভাবঃ স হে রাজন্! দেবর্ষি এই প্রকার ধনমেদর চেক্টা উল্লেখ করিয়া তাহার প্রতীকার স্বাং নিশ্চয় করিয়া কহিলেন, ধনকদে অন্ধ ও অসৎ কোকদিগের কেবল দরিজ্বতাই প্রেষ্ঠ অঞ্চন, কারণ দরিজ্ব লোক আপিন নার দৃষ্টান্তে অন্যক্তে দেখিয়া থাকে, স্তরাং কাহারও দ্যোহ করিতে তাহার ইচ্ছা হয় না ॥ ১৯॥

কলতঃ, যে ব্যক্তির অঙ্গে কণ্টক বিদ্ধ হয় সেই লোকই মুখনানতাতি চিহু হারা "সকল জীবেরই হথ ছংখ সমান" ইহা জানিতে পারে, হতরাং সকল জীবকে সমান বোধ করাতে সেই হাজি যেমন অন্য আলির কণ্টকবেধ জন্য ব্যথা ইচ্ছা করে না, যাহার অঙ্গে কখন কণ্টক বিদ্ধা হয় নাই তাহার তজ্ঞপ বাহা হয় না ॥ ১২ ॥

সাপর, দরিক্রতা যে ভাষা তাহার আনা বারণ এই, দরিক্রতা হইটে মুক্তিও সাধিত হয়, কারণ যে ব্যক্তি দরিক ভাষা হইতে অহকারসপ পর্কা নির্গত হইয়া যার অবং লৈই ব্যক্তি সকল প্রকার নদ শূন্য হয়। তুদনক্তর বৃদ্ধাক্রতে যে কউ পায় ভাহাই ভাষার অসম ভাগা, অধিকস্ত অসাত্ত্বাভিক দরিক্র পুরুষ্কের হেন্দ্ নিতা কুমার কীন হইতে থাতে, অতএব ভাষার ইন্তির সকল অবিলয়ে ওক হয়, নিত্যং ক্ষুৎক্ষামদেহন্য দরিজন্যামকাজ্যিণঃ। ইব্দ্রিয়াণ্যসুগুষ্যন্তি হিংসাপি বিনিবর্ততে ॥১৩ ॥ দরিজন্যৈ বৃদ্ধান্তে নাধবং সমদর্শিনঃ। সন্তিঃ ক্ষিণোতি তং তর্ষং তত আরাক্ষ সিধ্যতি ॥ ১৪ ॥ সাধুনাং সমচিতানাং মুকুল্চরণৈষিণাং। উপেক্যোঃ কিং ধনস্তব্ভৈরসন্তিরসদান্ত্রয়ৈঃ ॥ ১৫ ॥ তদহং মত্রো মাধ্যা বারুণ্যা শ্রীমদান্ধয়োঃ। তমোমদং হ্নিষ্যামি স্ত্রেণয়োরজিতাত্মবোঃ ॥১৬ ॥

#### खी भत्रचागी ।

यदार मः ॥ ১०॥

যুক্তাতে স্বত্তব সংগ্ৰুতে তৰ্মং তৃষ্ণাং॥ ১৪॥
নমু সাধুনামপি ধনিক এব প্ৰিয়ং স্যায়দ্বিজ ইত্যত আহ সাধুনামিতি। ধনেন তত্তো গৰ্কো যেষাং তৈঃ॥ ১৫॥
তমোমদং অঞ্চানকতং মদং॥ ১৬॥

## বৈষ্ণবতোষণী।

দিকং তবিপরীতে তু দারিল্যে হিংসাদিনিবর্তকং জিভাত্মভামত্যক্তং n° ১৩ n

কিঞ্চ সংসক্ষতা চায়ং ক্লতার্থো ভবতীত্যান্ধ দরিদ্র সৈবেতি সাধবোহিপি দরিদ্র সৈয়ব যুক্তান্তে প্রযক্ষ বিনাপি নিলিতা ভবতি। উভয়েষামপি বিবিজ্ঞ দরাদিতি ভাব:। এবকারায় সুধনিনাং তেষাং জনসংঘট্টপ্রায়ে তথালে দ্বতি গমনম্বাদিতি ভাব:। ন চাফলোকবৈত্রপি দরিদ্রস্যাবোগো ধনিনো বোগশ্চ যক্ষেনাপাদাত ইত্যাহ সমং ধনহানি লাভয়োস্থলাং ক্রষ্টুং শীলং ঘেষাং তে। ততঃ সন্তির্জামান্মাত্তৈ হেত্তি শুমন্ন বিষয়কমপি সর্কাং তর্ষং ব্যাং দরিদ্র এব ক্ষিণোতি। আরাং শীলং। হি নিশ্চিতং ॥১৪॥

নহু সাধুভি ম'। ক্রিয়তাং স্বলাভার্থং ধনিযোগে যত্ন অহগ্রহার্থং তু ক্রিয়তাং তত্রাহ সাধ্নামিতি এতে সাধবং সদাচারাস্তে তু যত্র স্ত্রীদ্ত মাসব ইতি দর্শনাদসন্তোহসদাচারা এতে সমচিতা ধনিযাধনিত্বোং সমদৃষ্ট্র ত্তেতু ধনগর্কিতত্বন তরোবি ষমদৃষ্ট্রং। এতে মুকুন্দচরণৈষিত্বন তদেকাশ্রয়া ত্তেতু বিষয়ৈষিত্বেনাসদাশ্রয়া ইত্যেবং প্রকৃতিবিরোধাদনভিক্ষতে ক্লপেক্যৈ স্থাদৃশ্যরুময়াম্প্রহাবোটগ্য তাদৃশাম্প্রহক্ষণং প্রয়োজনং কিং স্যাধ্রৈবেত্যর্থ: ॥ ১৫॥

নত্ব মাধ্ব্যা মন্ততা ক্ষণাদপ্যাদ্যতি তত্তাহ 'শ্রীমদান্ধ্রোরিতি শ্রীমদান্ধতায়া: স্থায়িতাদদক্ষমাধ্রীপানেন মন্ততাপাস্থ্রংস্যত্ত্যের-শ্রীবিখনাথচক্রবর্ত্তা।

নির্মতো যন্ত্রাৎ স:। সর্কমদৈ মুক্ত ইতি দরিজ্ঞ সকৈরনাদৃতত্বাৎ সংকুল মরাদয়োহপি প্রায়ো নশাস্তীতি ভাব: ॥ ১৩ ॥

নচ দরিদ্রদৈয়কা তৃক্ষৈব সর্বাদোষময়ীতি বাচাং তদ্যা অপি প্রতীকারসম্ভবাদিত্যাহ দরিদ্রদ্যৈবৈতি। ধনিষ্ণারিদ্রায়োম্বলাদশি-ঘেনোভরপৃহান্ কপয়া গচ্ছস্তোহপি সাধবো দরিদ্রদ্যৈব যুদ্ধান্তে দরিদ্রেশৈব তদদন সন্তামণ সম্বাদাদি সন্তবাৎ তদ্যৈব তে স্বরঃ সংযোগন্ধনিত ফলদায়কা তবস্তীতার্থ:। নতু ধনিনো মদাহ্বস্য অঞ্জানয়োঃ সন্নিধী বর্ত্তবানোহহমেব প্রমাণমিতি ভাবঃ। ততশুচ সন্তিঃ সৎসংযোগ মহিলৈব তং তর্বং তৃষ্ণাং দরিদ্রঃ স্বর্থমেব ক্ষিণোতি ক্ষিণীকরোতি। তংক্পাল্কস্য ভক্তামৃত্স্য তৃষ্ণাহর স্বভাবস্থাৎ অত্রব পূর্বমৃক্তং কৃদ্ধং যদুচ্ছয়াযোতীতি কৃদ্ধ স্থা বাদ্চিছ্কের নতু কর্মান্তনিত্রং ভক্তস্য কর্মানস্থীকারাং ॥১৪॥

নচ সাধ্নাং ধনোপাধিকো ধনিকসংযোগঃ সম্ভবতীত্যাহ সাধ্নামিতি ধনেন অস্তো গর্মো বেষাং তৈঃ অসন্তিরবৈকীবৈঃ অসদাশ্রের-রবৈষ্ণবেশবিভিঃ। তেন গর্মাইভো দরিতা বৈষ্ণবদেবিনো ধনিনোহিপ সাধুভিঃ সংযুদ্ধান্ত এবেতি ভাবঃ ॥১৫॥
তদনযো পর্বিরোপস্য কাং চিকিৎসাং করোমীতি মনসি বিচার্য নিশ্চিনোতি তদহনিতি চতুর্জিঃ। মাধ্যা মধুম্যা তমোহক্সানং ॥১৬১৭

# তাহাতে প্রহিংসাও নির্ত হইয়া ্যায় ॥ ১৩ ॥

অপিচ, সমদর্শি সাধু পুরুষেরা দরিন্দ্র সঙ্গেই সঙ্গত হইরা থাকেন, দেই সাধুদিগের বারা দরিদ্র পুরুষদিগের তৃষ্ণা ক্ষয় হয়, স্থতরাং অবিলম্বেই সিদ্ধিলাভ করিয়া থাকেন ৮ ১৪॥

অহে কুবেরতনয়! সাধু পুরুষ্দিগের ধনিগণই প্রিয়, দরিদ্রজন প্রিয় নহে এরত বলিও না, সাধুপণ সমচিত, ভগরান্ যুক্দের চরণমাত্র আছেবণ করিয়া ভ্রমণ করেন, ধন গর্বিত অসদাভাগ অসহ
লোককে ঠাহারা উপেকা করিয়া থাকেন । ম ১৫ র
ভত্তিব তোমরা ছই জন খ্রীমারে অন্ধ এবং মাধ্বী নামক হলাপানে মন্ত থাক, অধিকস্ক একলে গ্রেণ হই-

2

যদিমো লোকপালক পুজে ছুর। তমঃপ্রতো শ্রেরিবাসসমাত্মানং বিদ্যানীতঃ স্কুর্মদো ॥১৭॥ অতো হছ তঃ স্থাবরতাং আতাং নৈবং যথা পুনঃ। স্মৃতিঃ স্তান্ধং প্রসাদেন তজাপি মদকুগ্রহাং ॥১৮ বাস্থদেবক সান্ধিয়ং অনু। দিব্যশন্ততে। রুতে স্বর্গোকতাং ভূয়ো লক্ষতলী ভবিষ্যতঃ॥

শ্রেক উবাচ॥

স এব মুক্তবা দেবর্ষি গতো নারায়ণাশ্রমং। নলক্বর মণিগ্রীবাবাসতু র্মলার্ছ্নো ॥ ১৯॥

अधितवामी।

তমং প্রতী ত্যোব্যাপ্তো ॥ ১৭ ॥

শপতি অতো ২হ'ত ইতি অনুগৃহাতি স্যাতাং নৈব্যিত্যাদিনা মংপ্রসাদেন স্মৃতিং স্যাৎ ॥ ১৮ ॥

স্বলে কিতাং দেবজং পুনল জ্যু তিমিন্ মদন্তাহাৎ লক্ষ্তকী ভবিষ্তাঃ ॥ ১৯ ॥

### देवक वर जावगी।

তার্থ:। অউএব স্থৈপরো: স্থ্রীলম্পট্রো:। নন্পভোগেন স্থৈপত। শামোৎ নেত্যাই অজিতাত্মনো: অসংযমিতমনসোরিতি॥ ১৬॥
পুরেট্রী ভূথাপি তমোগুণ ব্যাপ্তোন কেবলমজ্ঞানেন নমৌ কিন্তু মদেন ম্যাবজ্ঞরাপীত্যাশ্রেনাই স্কৃত্মদাবিতি। অস্য বটোরগ্রেনাম্বে কোবা দোষ ইতি মহাত্ত্বিদাদিত্যর্থ:॥ ১৭॥

অত ইতি যুগাকং। কাতো নিজকর্ম দোবাদেবেতার্থ:। স্থাবরতাং, বৃক্ষধোনিমর্থত: তমঃপ্রত্থন স্থাবরত্লাস্থাং। অতঃ স্থাবর-খেন পরমদারিদ্রো সতি এবমীদৃশৌ পুন ন' স্যাতাং। নমু স্থাবরত্বং বহুনাং বর্জতে নৈতাবতা শিক্ষা সাথে তআহ স্থৃতিঃ পূর্বজন্ম বৃত্তাস্তপ্রবাং। অতএব সদা ভগবৎপ্রিরাণাং অজজনানাং সেবা চ তাভ্যাং ক্রতা। তথাচ হরিবংশে। যৌ তাবর্জন বৃক্ষোতু একে সত্ত্যাপ্যাচনাবিতি ॥ ১৮ ॥

বাস্থদেবস্য মরি যোহসূত্রাহ স্তন্মান্তলৈয়ৰ সারিধ্যং লব্ধ। দিব্য শরক্ত ইতি তাবং কালএব জ্রীভগৰদৰতারাং। লব্ধজনী ভবি-ব্যতঃ ইতি ভক্তিরসিকানাং ভক্তিব্যতিরিকাশীরক্ষাক্তিঃ। লব্ধেতি ভক্তেঃ স্থিরতাং বোধয়তি॥

#### - 🗐 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

স্থাবরতামিতি নিরাবরণয়োঃ ক্তরয়োরক্রবাণয়োরনয়োঃ স্থাবরত্বনেবোচিতমিতি ভাবঃ। স্থাবরত্বেছপি মংপ্রদাদেন স্মৃতিরস্থ। স্থানে সত্যামপি মদন্ত্রহাদিত্যাদি। দেবমানেন শরচ্ছতে বর্ষশতে বৃত্তে সতি বাস্থাদেবদ্য দালিধ্যং লক্ষ্য লক্ষ্যক্রী সভীে স্থালে কিতাং ভবিষ্যতঃ প্রাক্ষ্যতঃ। ভূপ্রাপ্তৌ পরক্রৈ পদমর্ষিং॥ ১৮। ১৯॥

য়াছ, তোমাদের ইন্দ্রিয় বশীভূত নাই, আমি তোমাদের অজ্ঞানকৃত মদ নাশ করিতেছি॥ ১৬॥

হে রাজন্ ! এই প্রকার কহিয়া ঐ দেবর্ষি রোশবশতঃ কহিতে লাগিলেন, যে হেতু এই ছুই জন লোকপালের পুত্র হইয়া এ প্রকারে তমোব্যাপ্ত হওয়াতে অত্যন্ত তুর্মদতাপ্রযুক্ত আপনারা যে বিবস্ত তাহাও জানিতেছে না ॥ ১৭ ॥ \*

নেই কারণে ইহারা স্থাবরত্ব প্রাপ্ত হইবার যোগ্য, অচিরে তত্রপ হউক, পরে অনুপ্রছ করত বলি-লেন পুনর্বার ইহাদিগকে ঐরপ না ছইতে হয়, একারণ আমার প্রদাদে ইহাদের ঐ অবস্থাতেও শৃতি থাকিরে, তাহাই আমার অনুগ্রহ ॥ ১৮ ॥

দেবপরিমাণে শতবংস্র অতীত ইইলে ইহারা তুই জনে ভগবান রাজদেবের সামিধ্য হেতু প্ন-রায় দেবৰ লাভ করিলা সামার অনুগ্রহে সেই দেহে ভুকি লাভ করিবে।।

खब्दनव कविरत्तन हाल्य । तिहे दुन्विद् कहे श्रकात किला मात्राह्माधारम गमन करतन, कुमविध बल्कुबत अ मिन्धीय यमनाक्ट्न दक्ष हहेग्रा त्याक्ट्स बांग कतिरहाहिन ॥ >> ॥ শবে র্ভাগবতমূথ্য সত্যং কর্ত্ব বচে। হরিং । জগাম শনকৈতার বত্ত তো বনলার্ক্নো ॥ ২০ ॥ দেবর্বি মে প্রিয়তমো বদিমো ধনলাত্মকো। ততথা সাধরিব্যামি মল্টীতং তত্মহাত্মনা ॥ ২১ ॥ ইত্যন্তরেণার্ক্নয়োঃ কৃষ্ণন্ত বময়ো র্যো। আত্মনির্কেশমাত্রেণ তির্গুগ্তসূদ্ধলং ॥ ২২ ॥ বালেন নিকর্বতাস্বগুদ্ধলং তদ্ধামোদরেণ তরসোৎকলিতাভিনু বদ্ধো।

## क्रिश्वचामी।

প্রস্তমাহ ঋষেরিছি॥ ২০॥

কিমিভি সভাং কর্ত্তবাং ভত্তাহ কেবর্বিরিভি। বন্দতঃ ভত্তভঃ 🛚 ২১ 🛊 -

বৰরো ব্ৰলয়োঃ সহজাভয়োঃ আত্মনঃ প্রীকৃষ্ণস্য তল্মধ্যে প্রবেশমাজের 🛭 ২২ 🗈

ष्मर ष्मकीिष ष्मवक् তত্র हেण्: দামোদরেণেতি। উৎকলিত: উৎপাটিত: অভিযু বদ্ধো বদ্ধোন্তে পরমস্য একুঞ্স্য বিক্রমিতে-

## देवकवरणावनी।

তদেৰমিতিহাসং প্রদর্শ্য তস্য সম্প্রতি বদ্ ভগবদমুশ্বতবং দর্শিতং তদেব দর্শ্যতি ধবেরিতি। তবচ সভ্যতা বোগ্যা সাঁচ তেনৈব প্রবর্তীয়েতি ভাব:। ততাপি ভগবতঃ ভক্ত্যাখ্য প্রমবিদ্যাক্তানাং পরম পৃক্ষাস্য ভাগবতমুখ্যস্যেতিচ ক্ষতিং পাঠ:। হরিরিতি তক্ষাপাছদরণাভিপ্রারেণ। শনকৈরিতি শব্দসমুখানেন মাত্রাদ্যাগমনশব্দা। তত শ্চোপুখলস্য শনকৈরাকর্বণেন পত্তন মণি ন কাত্যিতি ক্রাপিতং এবং বলেন তদা কর্বণার্থং রিক্তেণ্টেন্য গ্রন্থন । উক্তং চ দ্বিভীরে যত্ত্রিক্তাব্দ্রগতেনেন্তি ॥ ২০ ৪

বন্দ্ৰাদেৰ্থি দে প্ৰিয়তম কৰাৎ তেন মহাস্থনা মহাস্থভাবেন বন্দীতং তদেব তত্তথা তেন প্ৰকাৰেণ ইমৌ ধনদান্তলী সাধ্যি-ব্যামি স্থাব্যযোগে কছ্ত্য পুন: স্বৰ্গং দ্বা প্রমভক্তিমক্তৌ ক্রিব্যামীতার্থ: ॥ ২১ ॥

ইত্যন্ত্ৰাক্ষে কৰা মহদপরাধ্রোম বাল্যলীলাক্রীজনকতা প্রাধ্যের তাদৃশত্বং স্যাদিতি বিচার্য্যেত্রর্থ:। তির্যার্গতং প্রভিপর-দভিপ্রায়ন্থলারেণ তির্যাক্ত্বং প্রাপ্তমিতার্থ:। তির্যাক্ বক্রে তিরো হর্থেচেতি বিশ্ব:। অত্র মাত্রপদেন বত্বং বিনেতি প্রস্ততে। গতমিতি তক্রৈর কর্ত্বং ইতি তস্য সচেতনত্বমির স্টিতং তচ্চ লীলাশক্রে: বরং সর্ব্যস্পাদকত্বেন। বথা হরিবংশে। তদ্ধাম তন্ত্র বাল্যন্ত্রভাবাদভবদ্ চ্মিতি। পাল্পে। নমন্তেক্ত দালে ক্রাদীপ্রি থারে ইতি ॥ ২২॥

ওত্তির্য্য গ্রাত্যা তরোল রং নিঃশেবেণ কর্বতা আকর্বতা দামোদরেণ কর্ত্রা উৎকলিভাজিলু বন্ধৌ সত্তে তরলা বেলগন নিঃশেষং

#### क्यममर्खः।

ৰৎ দেবৰ্বি মে´ প্ৰিয়তমঃ তম্ভন্মদিমে ধনদাক্ষকৌ তথা সাধ্যিব্যামি বৎ যথা তেন মহাত্মনা গীডমিত্যহরঃ ॥ ২১ ৫ আন্মনিৰ্কেশমাত্ৰেণ অবছেমাপীত্যৰ্থঃ। তেন চোলুখলস্য তিৰ্য্যগৃগত্যা লীলাশকেঃ প্ৰভুতা দৰ্শিতা। এবমন্যত্তাপি ক্লেরং ॥ ২২॥

# विविधनाथकक्रवर्ती।

প্রস্তব্যাহ ঋবেরিতি ॥ २०॥

বদ্দবাদেশ্য মে প্রির্ভম কর্মাদিমে তথা সাধ্রিষ্যামি বদ্ধথা তেন মহাত্মনা গীতমিতাবর: ॥ ২১ ॥\*
ইতি বিচার্য্য বমরোঃ সহজাত্ত্মোর রৌরক্তরেশ মধ্যে ববে । তত্ত আত্মনঃ প্রবেশমাত্মেশ উদ্ধৃদং ভির্যাপ্গতং ভির্শচীনমত্ত্ ॥২২
ভিত্তিরাশ্চীনমেবোদ্ধলং অবক্ আত্মুক্লং বধাস্যাত্তথা নিঃশেবেশ কর্মভা বালেন উৎক্লিভ উৎশান্তভা হক্ষি বন্ধা করোকে। পর্ক-

হে রাজন্ ! সেই দেববি নারদ পরম ভাগবত অতএব তাঁহার বাক্য সত্য করিবার নিমিত যেখানে যমলার্জন নামে এ ছইটা রক ছিল ভগবান্ হরি ধীরে ধীরে বেই স্থানে গমন করিলেন ॥ ২০ ॥

ভগবান আপনা আপনি কহিতে লাগিলেন, যে হেডু দেববি আমার প্রিরতম, সেই কারণে এই ছুইটা ক্ষের তমর্মকে (বমলার্ডনেকে) সেই ইকার করিতে হইল, ঐ মহাজ্য কবি যজন বলিয়াছেনঃ২১

এই প্রকার বলিয়া ভগবান্ অবিল্যেই সহজাত নৈই হুই আৰু ন বুজের মধ্যহলে গরন করিলেন তথাধ্যে প্রক্রিফ প্রথমিতি ইইবামাত তিনি বাহাতে বন্ধ ছিলেন লেই উদ্ধলটা আরক্ত ইইল ॥২২ হে রাজন্ ! প্রীকৃষ্ণের উদ্রে রক্ত্র বন্ধ ছিল তাহাতে সেই উদ্ধলটা আরক্ত ইইলা ভাহার নিম্পেতত্য পরমবিক্রমিতাতিবেপ স্কল্পবালবিটপো ক্তচণ্ডশব্দে। । ২০॥
তত্ত্ব প্রিয়া পরময়া ককুভঃ ক্লুরন্তে সিদ্ধাবৃপেত্য ক্লয়োরিব ভাতবেদাঃ
কৃষ্ণং প্রণুষ্য শিরসাধিললোকনাথং বদ্ধাঞ্চলী বিরক্তসাবিদমূচতুঃ স্ম॥ ২৪॥

## व्यवस्थामी।

नाजित्वभः करम्भा त्वयू एक इक्क अनानविष्ठेभा गरत्रारको ॥ २०॥

ককুভ: প্রতি সর্বতঃ ক্রন্তাবিত্যর্থ:। বরা দিশ: প্রকাশরস্তাবিতি। কুজনোর করো: হিতোহরি র্যথা মূর্তিমান্থগৈতি তথোৎ-পত্য বিরজ্গো নির্মাণে ॥ ২৪ ॥

#### বৈক্ষৰভোষণী।

পেতত়্। কথং তদাহ পরমেত্যাদি বিটপা অত্র শাথাঃ। বিটপা পদ্ধবে শিক্তো বিস্তারে স্তব্দাথয়ো রিতি বিশ্বঃ। অন্তবৈঃ। বদা পরনিতিছেনঃ দামোদরেবেতি তদ্যামেব মাধুর্যাঃ। উৎকলিতেত্যাদিনা চৈশর্যাঃ স্থচিতমেব পূর্ববন্ধপুরং ভগবন্তাপ্রকটনমূলং। অত্র চ নামকরণং হরিবংশে স চ তেনৈব নামা তুরুজো বৈ দামবন্ধনাং। গোঠে দামোদর ইতি গোপীডিঃ পরিগীয়ত ইতি॥২৩॥

তত্র তরোর করোঃ স্থিতে দিকৌ দেবাবিতার্থঃ। অতঃ সর্বা দিশঃ ক্রুপ্তে বিতীররা প্রতিষ্ঠার লভ্যতে ভৃতীররা সহ শক্ষবং। পক্ষেত্রভূতিগান্তমিদাং শোভরন্তাবিতার্থঃ। যদা ক্রয়োঃ ককুভঃ দিগ্তাগান্তদন্তিকে উপেতা মিধো জ্যোতিমি নাদেক জাতবেদা ইব ক্রুপ্তে শিরদৈব প্রকর্ষেণ নহা ইতি দণ্ডপ্রণামে শীঘঃ প্রীম্থাদিদর্শনাসিছেঃ। ক্রক্ষমিতি তদানীদপুল্ধলাকর্ষণাভিপ্রায়েণ। নমু দানোদরবেনাতান্ত বাল্যলীলাপরং বালকং কথং প্রণতবস্তে তত্তাহ অধিলেতি তদৈশ্ব্য স্বভাবান্ত্রট প্রীনারদাম্প্রেহণ তিজ্ঞানেণেন্তেরিতি ভাবঃ। যদা নমু তাদৃশ ক্রতাপরাধো প্রীনারদ প্রসাদেন স্বত তহ্তোচ কথং লজ্জাদিকং বিহার প্রীজগবং পার্ষেণ সমাদিকমকুর্বতাং ততাহ অধিলেতি অনন্য গতিহাদিতার্থঃ। বিরন্ধসৌ বিগতাপরাধৌ স্ভাবিতার্থঃ। স্ব বিসরে। মহাপরাধিনোরপি সদ্যন্তাদ্পত্রিকিঃ ॥ ২৪॥

#### क्रमनन्द्रः।

প্রম্বিক্রম্মিতি প্ততোক্তয়োরেব মহামর্দক্তেনেত্যাদি॥ ২৩॥

কুজরোঃ কুকুতঃ সকাশাৎ উপেত্য কুরস্তৌ সম্রমেণ কম্পমানী। বরোশ্বিরা পরস্পরমিলিতথাৎ একীভুয়ায়িরিবোপেত্যেত্যুৎপ্রেকণ তন্মহিমপরিপাটীমারততে ॥ ২৪ ॥

## वीविश्वनाथहक्तवर्थी।

বিক্রমিতেন অতিবলেনাকর্ষণেনাতিবেপা অতি,কম্পমানাঃ স্কন্ধানরো বরোক্তো দামোদরেণেতি স চ তেনৈব নামা তু ক্লঞো বৈ দাম-বন্ধনাথ। গোঠে দামোদর ইতি গোপীভিঃ পরিগীয়ত ইতি হরিবংশোক্তা প্রসিদ্ধিঃ স্মারিতা ॥ ২৩॥

করুভো ব্যাপ্য ক্রন্তের কুর্বরোর ক্রােজাভবেদা অগ্নি মি থো জ্যােতিমিদনাদেক এব জাতবেদা ইব ক্রন্তাবিভার্থ ॥ ২৪ ॥

পশ্চাৎগামী হইয়া যায়, যাহা হউক পরে তিনি মহাবলে সেই উদ্থলটা আকর্ষণ করিতে লাগিলেন, তাহাতে তুইটা যমলার্জ্বনেরই মূল উৎপাটিত হইল এবং তাঁহার বিক্রমে ঐ তুই রক্ষের প্রবাল শাখা ও ক্ষম পর্যান্ত কম্পিত হউয়া উঠিল, হতরাং অবিল্যেই প্রচণ্ড শব্দ করিয়া ঐ তুইটা রক্ষ পতিত হইল॥২০॥

হে ভারত। বমলার্ছার উন্মূলিত হইয়া পতিতহইবামাত্র দেই ছইয়ের অভ্যন্তরন্থ মূর্তিমান্ অগ্নির ন্যার ছইটা নিজপুরুষ সেই স্থানে আবিভূতি হইলেন, ভাঁহাদিগের চমৎকার জী, তাহাতে সকল দিক্ থকালিত হইয়া উঠিল, ভাঁহারা তথার উপনীত হইয়া মন্তব্দারা অধিললোকনাথ জীকৃষ্ণ কে প্রণাম করিলেন এবং নিরহন্তর ছইয়া অঞ্জী বন্ধনপূর্বক কহিছে লাগিলেন॥ ২৪॥

কৃষ্ণ কৃষ্ণ মহাযোগিং স্থমাদ্যঃ পুরুষঃ পরঃ। ব্যক্তাব্যক্তমিদং বিশ্বং রূপং তে ব্রশ্নশো বিদ্যু: ॥২৫॥
তমেকঃ সর্ব্বভূতানাং দেহস্বাস্থ্যেশ্রেরঃ॥ ২৬॥
তমেব কালো ভগবান্ বিষ্ণুরব্য়ে ঈশ্বঃ। ছং মহান্ প্রকৃতিঃ সূক্ষা রক্তঃসন্ত্তমোম্যী।

# व्यथनवामी।

পোণবালকং মাং যুবাং দেবে কিমিতি প্রণতাবিতি চেন্ত্রাহতু: হে কৃষ্ণ কৃষ্ণ মহাযোগিন্ অচিষ্যপ্রভাব স্থং ন বালঃ কিছ পরং প্রথং যতঃ আদ্যাং কারণভূতঃ। ভ্রাপি ন নিমিন্তমাত্রং কিছ উপাদানমপি বমেব ইত্যাশরেন তুই বৃত্ ব্যক্তাবাক্তমিতি স্পূশং স্ক্লরপমিদং তে রূপং বিহুঃ ॥ ২৫॥

নিয়স্তাপি ঘমেৰ ইত্যুচতুত্ত্মেক ইতি। দেহ: অসব: প্রাণা: আত্মা অহন্ধার: ইন্সিয়াণি চ এতেয়ানীশ্ব: ॥ २७ ॥

- নশ্ব্যু কালো নিনিত্ত: প্রকৃতিরূপাদান: প্রকৃতেজাঁতো মহান্ বিখাত্মতা পরিণমতে পুরুষ: কর্তা নিয়স্তাচ কিম্তাহং ত্ত্রাহতু:

#### देवस्ववरकायनी।

যদাপ্যাবাং মহাপ্রাধিনো তথাপি ছয় নিতরামস্থাহীতো তৃচ্চ তবোচিতমেবেতি। নিবেদেয়িতু মুপক্রমেতে ক্ষেতি। হে নরাক্তি পরব্রহ্মন, বীপ্সা পরমানলেন প্রেম সন্ত্রমেব বা কিছা জিহবা কর্ষক ক্ষুক্রমাম অভাবেন। যদা উল্পুল কর্ষণাদি বাল্যলীলারসম্য মহাচঞ্চল্য করণ হৈর্য্যপাদনেনাভিন্দ্ধী করণায়। ক্ষুদ্ধেন প্রপঞ্চতে মহাযোগিন্হে অচিন্ত্র্যানত্ত্ব্যাপ্তর্থা। যতঃ প্রকৃতিক্রা তাবং প্রদ্য অন্ত পরঃ প্রত্বস্যাপ্যংশী। আংশিছেন মহানারারণাদিভেদেন বহুবিধাবিভাবঃ স্যাদিতি ত্রাপি ত্রমাদ্যঃ স্বয়ং ভগবান্ ইত্যর্থা। তথা দর্শিতঃ ঈশ্বঃ পরমা ক্ষুষ্ক ইত্যাদি ব্রহ্মশহতোপ্যাভ্যাং। আতঃ সর্কতো গুণাধিক্স্য তবেদ্দী ক্রপাপি ফুক্তবেতি ভাবঃ। কিঞ্চ। স্প্রদ্যাপি তব ব্রহ্মণ পরমহুহতো রূপমধিষ্ঠানং কার্য্যঞ্চাবিহুরিতি। ব্রহ্মণা ইতি ক্রচিৎ পাঠঃ। এবমাব্যোর্বি নিত্য তদীর্থেনাহুগ্রহো ঘটত এবেতি ভাবঃ॥ ২৫॥

কিঞ্চ ছমিতি এতচাৰ্দ্ধকং ইখং তদেব সৰ্বপ্ৰেবৰ্ত্তকথেন তত্ততো হত্মদপরাধাভাবাৎ কিন্তা ত্বতএব বহিরস্তত্ত্বেকনাথডাদহুগ্রাহে। ভবাব এবেতি ভাবঃ॥ ২৬॥

#### ক্ৰমসন্দৰ্ভ:।

কৃষ্ণ ক্ষেতি। প্রমন্ত্রপূর্বাৎ প্রমনামন্বাচ্চ প্রাঙ্নিদ্র্দশো বীষ্দা চ। পরং পুক্ষো ভবান্। তত্ত্বেংপি আদ্যাং স্বরং ভগবানিত্যর্থ: ॥ ২৫। ২৬। ২৭। ২৮।।

## क्षीविधनाणहळ्कवर्शी।

উদ্ধবে বন্ধং গোপালবালং মাং যুবাং দেবৌ কিমিতি প্রণতাবিতাত আহতু:। ক্লফ ক্লেডেতি বিষং মহোরের যুগপড়জে:। দ্বং পরঃ প্রদো ভগবান্ ত্রাপ্যাল্য: স্বরং ভগবান্ স্বতন্ত্র, গোণালবালো ভবলোবেতি ভাব:। হে মহাযোগিলচিন্তাপ্রভাব অন্মন্তক্সা তবৈত্বদ্ধনকারণমত্ত্যিতি ভাব:। স্ক্রেরপ্রাত্ব বিদ্যাহতু:। ব্যক্তাব্যক্তং কার্যকারণান্ত্র ॥ ২৫ ॥

নচ খদন্যো বন্ধকঃ কোহপীশ্বরে ১২ন্তী ক্যাহজু: খমিতি। অসবঃ প্রাণা: আত্মা অংশ্বারঃ ॥ ২৬ ॥

সর্বাত্তক বাবনে বৈক স্থান ইত্যাহতৃত্ব মিতি। কালো নাম তব 66 ই। মহান্ কার্য্য প্রকৃতিঃ শক্তিঃ প্রুৰো হংশঃ কীদৃশঃ অধাকো

হে কৃষ্ণ ! হে কৃষ্ণ ! হে মহাযোগিন্ ! আপনি অচিন্তাপ্রভাব, আপনি বালক নহেন পরস্কুষ্ম, যে হেতু সকলের কারণ, ভগবন্ ! আপনি কেবল নিমিত্ত কারণ নহেন, তত্ত্ত পুরুষেরা বলেন সুল ও সূক্ষ্ম রূপে প্রকাশমান এই বিশ্ব আপনকার রূপ, অতএব এই বিশের উপাদান কারণও আপনি ॥ ২৫ এবং হে বিভো । এক আপনিই সকল প্রাণির দেহ, প্রাণ, অহন্ধার এবং ইন্তির সকলের ঈশর॥২৬ হে দেব ! যে হেতু আপনি ঈশ্বর অব্যব্র বিষ্ণু, অভএব আপনিই কাল অর্থাৎ কাল আপনকার

# प्रत्याव शूक्रहसार्थ्यकः मर्काटककातिकातिर ॥ २१ ॥

গৃহমাণৈত্বমগ্রাহো বিকারে: প্রাকৃতি ত লৈ: । কোঁ বিহার্ছ বিভাতুং প্রাক্সিদ্ধং তণসংশ্রিত: ॥২৮

#### Øषत्रवामी ।\*

স্বনেব কাল ইত্যাদিনা সাহ্রেন। যতো ভগবানীশ্বরো বিষ্ণুস্তবং অতঃ কালো নাম তব লীলা প্রস্কৃতিঃ শক্তিঃ প্রবো হংশঃ মহান্ কার্যাং অতত্তমের স্প্রিত্যর্থঃ ॥ ২৭ ॥ \*

নথহমেব ৫৮৫ দর্বাং ততোহপি ঘটাদিজানে মজ্জানং কিং ন ভবতি ভবতি, চেৎ দর্বোহপি এন্ধবিৎ স্যাৎ অভ আহতু: গৃহ্মাণৈ জ্বিতি। দৃশ্যবেন বর্তনানৈ ব্রিবিকারৈরিক্রিয়াদিভি ইন্ত্রী দং ন গৃহদে ইতি ভাব:। নথ তহি জীবো জানাতু নৈবেত্যাহতু: কো বিহেতি। জাবাগ্রেপতেঃ প্রাণেব ব্রাক্ষিত্রা সিদ্ধা দাং কো বা জানাতি। গুণসংশ্রিত: দেহাদ্যার্ত:॥ ২৮॥

#### देवश्ववरकायगी।

বানেক আদেদমগ্র আত্মান্দাং বিভূরিত্যাদি তৃতীয়য়্বদাদিতো ভগবাংত্বেষে সর্কারণবেনাব্যম্বাস্থা প্রকৃতিরিত্যর্থ: তথা পুরুষ্ধ বৃদ্ধান্দের দেনেত্বিন দেনেজিরাদীশন্বাবনের মুখ্য: পুরুষ ইত্যর্থ:। স্ক্লেতি ভূমিরাপোহনলোবায়ুরিত্যাদি গীতোক্তাষ্টারমবকার্যাত্মক প্রকৃতে: কারণবেষ্টান্তা বঞ্চান্দের বিশ্বন্য বৈচিত্র্যাপেক্ষা সচিদানন্দশক্তে ব্যক্তেদার্থক। সা চ তব প্রকৃতিত্বাহুগতৈর প্রকৃতি: প্রকৃতিক প্রকৃতিক প্রকৃতিক বিশ্বন্য বৈচিত্র্যাপক্ষা সচিদানন্দশক্তে ব্যক্তেদার্থক। তাহ কিবং মদাপি রক্ষ আদি ময়ত্বং নেত্যাহ অরক্ষান্ত্রতান্ধানিতি ন্যায়ায়ুলপ্রকৃতিক ব্যক্তের্য:। বধা ক্ষা ছ্রের্মা। তাহি কবং মদাপি রক্ষ আদি ময়ত্বং নেত্যাহ অরক্ষান্ত্রতান্ধানীতি। অব্যক্ত: ক্ষা চৈতন্যক্ষপদাৎ। অধ্যক্ষ ইতি পাঠে দেহাদ্যধিষ্ঠাতেত্যর্থ:। তমের লক্ষ্মতি সর্বাক্ষিত্র বিকারো বান্যাদ্যবহান্তদম্বদ্ধানকতা। তথাকৈকাদশে নামা জ্ঞান নমরিষ্যতি নৈধ্যতে হসে। ন ক্ষীয়তে স্বনবিদ্যাভিচারিণাং হি ইতি যদ্ধ পুরুষ: প্রকৃত্যধিষ্ঠাতা স্প্রিহত্তু: অব্যক্ত: সর্কাগোচর:। পাঠান্তরে সর্ক্সাক্ষী অত্তব সর্ক্ষেতি॥ ২৭॥

বিজ্ঞাপুং দাক্ষাৎকর্ত্বং। জন্য বৈচা । তত্র বিকারে: প্রাকৃতৈরিতাদ্য বাঁখা ব্রিবিকারৈরিত ভবৈরিতাদ্য চেল্লিয়াদিভিরিতি। জবচ শ্লেবেণ এবং পরসাম্প্রহক্ষণি দাক্ষামানোহণি সমন্ত্রাকৃতিং তত্বতো জ্ঞাত্বং বা ন শক্যত ইত্যাহত্বং গ্রেহিত। গৃহ্মানৈং দাক্ষান্ত্রহানিরিবকারে: দদৈব বিজিয়াশূন্যৈ: প্রাকৃতিং স্বাভাবিকৈ ভবিং কারণাদিভি বিশিষ্টোহণি বং অগ্রাহ্বং বশীকর্ত্র মণক্য ইত্যর্থ:। পরমন্বতন্ত্রহাৎ অবতারিকায়া:। পক্ষান্তরে তবতো জ্ঞাত্মশক্য: একদ্যের বুগপরিভ্রমধ্যমন্তাদিনা পরম হর্ষিতর্ক্যন্ত্রহাৎ তত্র চ ইহ শ্রীনলগোকুলে প্রাক্ প্রথমত এব দিছং নিতাং প্রকটতয়া বর্ষমানমণি হাং গুণান্ ভিজিলক্ষণান্ সম্যক্ শ্রিতঃ আশ্রেতাহণি কো বিশেষেণ জ্ঞাতু মর্থ তি যোগ্যো ভবতি শক্ষোতি বা অণি তু ন কোহণি লোকিকলোকিকতাপ্রকটনেন পরমন্ত্রেরাধণীলন্তাং। ব্রাভ্রেহিশি সং তান্ গুণান্ সংশ্রিতঃ তৈর্বছি ইত্যর্থ:। তথাহ্জিত্বাদরেণ অতঃ জো বিত্যাদিনা বন্ধনদর্শনেন পরমনোহোহপাদনাদিতি ভাবঃ। সংবৃত ইতি পাঠেহপি সম্যগ্রত্বেন স এবর্থঃ॥ ২৮॥

## अविधनाथहक्कवर्धी।

श्यर्थामी मर्स्सव् त्करंजव् (मरहव् विकातान् मन व्यामीन् त्विख व्यत्का विकृतीयत्र अरका छगवाः सम्म ॥ २१ ॥

ছং ক্লপনৈৰ দং দৃশ্যনে ৰস্তত্ত্বনদৃশ্য এবেত্যাহতু:। গৃহ্বনাণৈদ্বা দৃশ্যমানৈ বিকারে বৃদ্ধীব্রিয়াদিভি প্রতিষ্ঠা দং ন গৃহনে কীনৃনৈ: প্রাকৃতৈ গুণকাব্যান্তেলাপ্রাকৃতি রগুণকাব্যা বৃদ্ধীব্রিয়াদিভি: দং দৃশ্যন এবেতি ভাব:। নৰপ্রাকৃত দ্বাজানীবে দানাত্র নিবেত্যাহতু: কোহিছিহেভি। প্রাকৃ দিছমিতি দ্বায় ভটত্বশক্তি বিদান্ত্বাজ্জীবন্যাণি দং কারণমিত্যর্থ:। গুণসংবৃত ইতি গুণাতীত্ত্ব স্বস্কৃত্তা কথিকিবাং জানাতীতি ভাব:॥ ২৮॥

লীলামাত্র, হে প্রভো ! আপনি মহান্ অর্থাৎ মূল কার্য্য, আপনিই রজঃ সন্ত ত্যোময়ী সূক্ষা প্রকৃতি। আপনিই পুরুষ, আপনিই সর্বক্ষেত্রের অধ্যক্ষ অর্থাৎ বাদ্যাদি অবস্থার অনুসন্ধান কর্তা, অত্এব আপনি সর্বিশ্বরূপ ॥ ২৭ ॥

হৈ বিভা। আপনি দ্রন্থী, একারণ দৃশ্যস্থরপে বর্ত্তমান যে সকল প্রাক্ত বিকার অর্থাৎ ইন্দ্রিয়াদি, সে সকল আপনাকে গ্রহণ করিতে পারে না। হে ভগবন্। জীবও আপনাকে জানিতে সক্ষম
নহে, কারণ আপনি জীবাদির উৎপত্তির পূর্বাবিধি স্বয়ম্প্রকাশরূপে সিদ্ধ আছেন, ইহাতে দেহাদি
আরত কোন ব্যক্তি আপনাকে জানিতে যোগ্য হইবে ?॥ ২৮।।

তিয়ে তুভ্যং ভগবতে বাহৃদেবায় বেধসে। আত্মদ্যোতিগু বৈশ্চ্যুমহিন্দ্র ব্রহ্মণে নম্ভ। ২৯ ॥ যদ্যাবতারা জায়ন্তে শরীরিদশরীরিশঃ। তৈত্তৈরতুল্যাভিশয়ৈশীর্যি দে হিদ্সস্ত েঃ ॥ ৩০ ॥

## **श्ची**धत्रश्रामी ।

অতো হত্তে য়ন্বাৎ কেবলং প্রণমতন্তকৈ তৃত্যমিতি। আত্মন: বন্ধাৎ ন্যোতঃ প্রকাশো বেষাং তৈ ও গৈছলো মহিমা মস্য অতিত্র-রিব রবেন্তবৈ ॥ ২৯ ॥

অংশ অহমীশ্বর ইতি কুতো জাতং ভত্তাহতু: যদ্যেতি ॥ ৩ ॥

## বৈষ্ণবভোষণী।

তদ্বৈ কৃষ্ণন্ত ভগবান্ স্থানিত্যাদে প্রসিদ্ধায় তুড়াং নমঃ পুন র্জগবতে মহাবৈকুঠনাথার নারায়ণাধ্যার চ পুনস্তচতুর্ গৃহপ্রথমার বাহদেবার চ পুন বেধিনে স্প্রতিক্তে নঙ্গবিদিরপার পুরুষার চ পুরুষারৈব সতে আত্মদ্যোতে ইত্যাদি রূপিনে চ। ব্রহ্মণে কচিদধিকারিনি নির্কিশেবাকারেণ ক্রতে চ। তত্মাং তত্তংস্ক্রাত্মকত্বাং পর্মবৃহস্ত্মারেত্যুপসংহারো বা। দীলারপেণ চারমর্থ:। তত্ম প্রীনন্দরোক্তি প্রোগ্লি সিদ্ধার তৃত্যং প্রীনন্দাত্মকার ভগবতে নমঃ। কচিবস্থদেবাপত্যায় চ বেধনেহত্ত্তলীলা সম্পাদ্ধিত্তে অভএবাত্মদ্যোতে:
স্বির্কা প্রকাশ বিশেবেরের প্রতি ব বিল্যলীলেত্যাদিভিরাজ্বরৈশ্ব্যার। ব্যা আত্মনা ত্র্যা তংগ্রভরা দ্যোভত্তে ভ্রদাভান্তি বৈ প্রণাদ্যানি তৈ ব ক্রেনাজ্যবিভূত্যার সর্ক্রমণি ত্রি সম্ভবতীত্যাহতু: বন্ধা ইতি ॥ ২৯ ॥

বিবিক্ষিত্তমাহতু: যদ্যেতি যুগাকেন। শরীরিষু মৎস্যাদিজাতিরু মধ্যে হশরীরিণঃ প্রাক্কতশরীররহিত্স্য তব। কিছা শরীরিষু বর্ত্তনানা অপি অপরীরিণ গুদ্ধগরিহিতা:। শরীরেছিতি পাঠেহপি স এবার্থা। অভতৈ তৈরনির্বাচনীরৈঃ অভএবাভুল্যাভিশরৈ বীর্ট্যাঃ প্রভাবৈরত্তুত্তিতি বা দেহিষু জীবেষু অসকতৈয়্বউমানৈরিত্যর্থঃ। অবতারা অপি জ্ঞারত্তে কিং পুনস্তমবতারীত্যর্থঃ। অন্যতৈঃ। যা এবং ব্যপ্রমবির্দ্ধরে বিচিত্তলীলয়ায়ানমাচ্ছাদরশ্বপি ছং নিতরাং প্রাকট্যমেব বাসীত্যাহতু র্যস্তে অর্থান এ ৩০ ॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

বিশং সর্বং এবং প্রাকৃত সর্বায়কত মৃক্। তদতীত তদায়কত্মণ্যাহতু:। তবৈ স্বং ভগবতে মহানারারণায়। বাহ্ণেবার তচতু-বৃহিপ্রথমায়। বেধ্বে প্রাকৃতস্টিক্তে সকর্বণাদিরণায় কীদৃশায় প্রথমায়। আত্মেতি। অভএব তত্তৎ সর্বায়কতাৎ বন্ধণে প্রমূর্হতে ॥ ২৯ ॥

তদেবং মহিমানং নিজপ্য তথাভূতস্য তদ্যাবতারেশ্বপি মহিমাতিশয়মমর্যাদং দর্শরিশ্বা তত্র তদ্য কৈমূত্যমাপাদহত্রী সাক্ষাবদ-বতারে সর্বলোক ভাগধেরাঝ্রপতিত অভাগধেরং স্লাঘেতে যদ্যেতি খাভ্যাং। তপ্রতি দেহদেহিশ্বরোর্ভেদাভাবাৎ শীববদসৌ শরীরী ন ভবতীত্যশরীরিণঃ॥ ৩০॥

# **बीविधनाथ**ठकवर्डी।

অতো হজে রন্ধাং কেবলং প্রাণমতন্তক্ষা ইতি। বেধনে বিশ্বকর্তে। হজে রন্ধান কারণং গুণসংবৃত্তত্বমূক্তনেব পুনরপি স্পাইরতঃ। আল্লনা ক্ষেব দ্যোতত্ত্ব ইতি তৃৎপ্রকাশের গুণেশুরো মহিমা মেদৈরিব রবে র্গন্য তদৈল। ২১॥

সতাং প্রমেশ্বর এবজুতো ভবতোর ব্বাং ভু মামের প্রমেশ্বরং কেন কৃক্ষণেন ক্রবাথে তত্রাহতুঃ। বস্য অবভারা মৎস্যাদরঃ শ্বীরির মৎস্যাদিজাতির মধ্যে জ্ঞায়তে অসুমীয়তে। অশ্বীরিণঃ প্রাক্তশ্বীররহিত্স্য তব কৈঃ দেহিরু জীবেষসক্তৈর্ঘটমানৈ-বীর্যাঃ প্রভাবেঃ। স ভবানবতারী ধবের ভবসি। হত্তিসহত্রেণাপি ভূক্ষৎপাটনয়ো রাবরো রর্জ্ক্নয়ো রর্জ্নয়মৌজনো ঘণিলালীকো-দিত বলসবেনাপ্যৎপাটনাং রক্ষ্ক্লম্বারপি তাদৃশ শক্তাপণাদিতি ভাবঃ। ভবায় ভূত্ত্যৈ বিগতো ভবো বশ্বান্তবৈ মৌক্ষার সংশ্ভাগেন অংশাংশেন এক্ষরভাদিনা আশিবাং স্ক্কামনানাং পতি দ'তি বং স এবেতার্থঃ ॥ ৩০ ॥

প্রভো! আপনি সেই ভগবান্ বাস্থদেব, আপনাকে নমস্কার করি। হে এক্সন্! মেঘৰারা, যজ্ঞপ দিবাকরের তেজোরাশি আছেম বোধ হয় তজ্ঞা যে সকল গুণের স্বতঃ প্রকাশ হয়, সেই সমস্ত গুণৰারা আপনকার মহিমা আছেম রহিয়াছে আপনাকে নমস্কার করি।। ২৯।।

অহে। অশরীরী হইলেও অমুপম আতিশহাশালি তত্ত্বীর্যা, যাহা দেহি সকলের অসকত, তদারা বাঁহার অবতার সকল শরীর মধ্যে জানা যায়।। ৩০।। স ভবান্ সর্বলোকস্য ভবায় বিভবায় চ। অবতীর্ণো হংশভাগেন সাম্প্রতং পতিরাশিষাং।
নমঃ পরমকল্যাণ নমত্তে বিশ্বমঙ্গল। বাহ্নদেবায় শাস্তায় বদূনাং পত্য়ে নমঃ॥ ৩১॥
অনুজানীহি নৌ ভূমং স্তবামুচরকিকরোঁ। দর্শনং নৌ ভগবত ঋষেরাসীদমুগ্রহাৎ॥ ৩২॥

## टीशतयामी।

ভবায় উদ্ভবায় বিভবার বিগতো ভবো ৰন্মিন্ তকৈ কৈবল্যায় ইত্যৰ্থ: ॥ ৩১ ॥ নৌ আবাং। অনুচর: কুবের: নারদো বা তল্য কিছরৌ ভগবতন্তব দর্শনং ॥ ৩২ ॥

# देवकवरणावनी।

আহো ভাগামিত্যাহতু: স ইতি। ভবার বিভবার চেতি ঐহিকামুমিকাশেবসপদ্যর্থমিত্যর্থ:। সাম্প্রতমবতীর্না যত আশিবাং ভক্তকামিতানাং সর্বসামেব পতিঃ পালকঃ পরিপুরক ইত্যর্থ:। সাম্প্রতমিত্যস্য রথান্থিতমট্তবারয়:। গোকুলকীড়াসমরে ২ম্মিরিত্যর্থ: ম

এবমবভার প্ররোজনেন স্বমঙ্গলকারিতোচিতীম্পপাদ্য তাদৃশক্ষ তদ্যুণং তাদৃশতরামকীর্ত্তনছারৈবাদ্নাদমানৌ তহ্চিতসেবারামপ্যক্ষমন্ত্রনাট কেবলং ভক্তা মূহ: প্রথমত: নম ইতি। হে স্বতঃ প্রমকল্যাণস্বরূপ। কিঞ্চ বিশ্বস্থ মঙ্গলং ঐতিকাম্নিক স্বধং

বন্ধাদিতি প্রমমন্ত্রতি কচিৎ পাঠে প্রমাণাং শ্রীশিবাদীনাদ্রশি মন্ত্রতি ব্যাধ্যেয়। বছেচিনিঃস্তস্ত্রিৎপ্রব্রোদকেন
ইত্যাদৌ শিবং শিবেহভূদিত্যকেল । তৎ কুতঃ বাস্থদেবার স্ক্রিতার্থমের বস্থদেবারা প্রকটার অতঃ শান্তায় নির্দেশার স্থস্ক্রপায় বা। নিত্যমের্থ তু বদুনাং ক্রিয়াণাং গোপানাঞ্চ তেবাং পতয়ে কুলপতিরূপায়। শ্রীগোপানাঞ্চ বাদবন্ধং স্থান্দমধ্রামাহান্ত্রে
ব্যক্তং। রক্ষিতা যাদবাঃ সর্প্রে ইক্রবৃট্টিনিবারণান্ত্রিত। তথা ব্রাভিবিক্তো ভগবান্ মধ্যো যহুবৈরিণেত্যাদিনা॥ ৩১॥

এবং শুজা দেবজেনানবসরে তত্তাবস্থিতিমযুক্ত মন্ত্রা তাদৃশং স্থাবেজমেনাছনোচজাবাহতু: অহন্তানীহীতি গন্ধমেবেতি ভাব:।

ত্মন্হে প্রমেশ্র। অন্তর্ত্ত:। যথা অফুলানীহি আবাং প্রতি কিঞ্চিদান্ধাং বিধেহীতার্থ:। ত্মন্হে সর্বতং পরিপূর্ণেতি।

যদ্যপি তব কাপ্যপেকা নান্তি তথাপীতি ভাব:। তচ্চ ভক্তবাৎসদ্যাদেবেত্যাহতু:। অহ্বচরস্থ ভক্তক্ত শ্রীশক্রক কিছরো ক্রজাহিচরাবিত্যক্তে:। যথা শ্রীনারদক্ত কিছরো তংগ্রসাদেনৈব তাদৃশক্লপ্রাপ্তেজনহুগতিশ্বরণকৈ প্রস্তত্তান্দ্ ক্রজাচ। যথাহত্বরাবাং

কিন্তরাবিতি নিরম্বর মহজানীহি। যথা তবাহত্বরাবাং গোপবালকানাং কিছরো অহ্বলানীহি এখাং কিছরো ক্রমাত্রের রক্ষেত্রপ্ত:।

নম্বতিত্র তিমিদং তত্তাহত্রহুগ্রহাদিতি। নৌ আবাভ্যাং তব দর্শনং ভগবতঃ প্রমদ্যালোঃ অচিষ্যপ্রভাবক বা প্রজা শ্রেই
শ্রীনারদক্ত মহাপরাধিনোরপ্যলভালভিগিদ্ধেরেত্বপ্রাশ্বিহে ইতি ভাবং॥ ৩২॥

#### क्रमम्बर्छः

ভদেবান্দ্য নমস্কতো নম ইতি প্রমাণাং শিবাদীনামণি মঙ্গলন্ধ। বাস্থদেবার বস্থদেবদারা প্রকটার। শাস্তার দর্শন্য পর্মস্থরূপার। যদুনাং ক্ষত্রিরদেবাণাং গোপবিশেষাণাক ॥৩১/৩২॥

#### बीविधनायहळ वर्छी।

পরমং কল্যাণং যশ্বান্তবৈ । তে অরঞ্চ পরমনঙ্গলঅরপ ॥ ৩১ ॥ অন্তরন্য নারদস্য কিছরো॥ ৩২ ॥

সেই আপনি সর্বলোকের উদ্ভব এবং কৈবল্য নিমিত্ত সম্প্রতি পূর্ণস্বরূপে অবতীর্ণ হইয়াছেন। প্রভো! না হইবে কেন !, আপনি সকল কল্যাণের অধিপতি, অতএব হে পরমকল্যাণ! আপনাকে নমস্বার, আপনি বাহ্নদেব, শান্তমূর্ত্তি, এবং যছদিগের (ক্রিয় বা পোপগণের) পতি, আপনাকে নমস্বার করি,॥ ৩১॥

হে ভূষন্ ! আমরা ত্ইজন আপনকার অকুচর ক্বেরের কিছর, দেববির সম্প্রহে আমাদের আপনি যে ভগবান্ আপনকার দর্শন লাভ হইল ॥ ৩২ ॥

বাণী গুণানুকথনে প্রবণো কথায়াং হন্তো চ কর্মন্থ মনন্তব পাদয়ো র্নঃ।
স্মৃত্যাং শিরস্তব নিবাসজগৎপ্রণামে দৃষ্টিঃ সতাং দর্শনে ২স্ত ভবন্তন্নাং॥ ৩০॥
শ্রীশুক উবাচ॥

ইখং সঙ্কীৰ্ত্তিতন্তাং ভগবান্ গোকুলেশ্বঃ। দাল্লা চোদুখলে বদ্ধঃ প্ৰহুদন্নাহ গুছকো ॥ ৩৪॥

## श्रीधत्यामी।

তত্র গতরোঃ আবরোঃ পূর্বস্বভাবে। মাভূৎ কিন্ত বাণী গুণাত্মকথন ইত্যাদি। নঃ অস্মদো র্ছ রোশ্চেডি দিবচন স্থানে বহবচনং অস্বৎ সন্ধিনাং সর্বেষামপীতি বা। তব নিবাসভূতং যৎ জগ্ব তস্য প্রণামে দ্বিবাস ইতি বহুমানেনস্বগতঃ প্রণামে শিরোইন্থিত্যর্থঃ। ভবতনুমাং ভবতো মুর্জীনাং॥ ৩৩॥

সম্বীর্ত্তিতঃ সংস্কৃতঃ ॥ ৩৪ ॥

#### देवकवरजावनी ।

শ্রীনারদাস্থ্যহেণ মন্তকাবেব যুবাং ব্রত্তী তত ন্তবৈব গছতমিতি চেন্তহি সর্বাভক্তপ্রকারং দেহীতি ভক্তিসভাবেনৈর প্রার্থয়তে বাণীতি। তব পাদয়োগুণানাং ভক্তবাৎসদ্যাদীনাং সৌন্দর্যাদীনাঞ্চ অম নিরন্তরং কথন এব নতু যোগ যাগাদি নিরূপণে নোহম্মাকং বাণী বাগিক্রির্মন্ত । পাদরোরিতি ভক্ত্যা নতু তন্মাত্রবিবক্ষয়। শ্রবণাবিতি বিবচনেন শ্রবণক্রিয়ত্ত সাকল্যেন প্রবৃত্তিরভিপ্রেতা। এবম-ত্রেংপি কথায়ামিত্যত্তাপি গুণকথায়ামিত্যের পূর্বারত্তাক্ত জৈয়ং। কর্মন্ত পরিচর্যাদক্ষণের্। চশবং সর্বৈরেবাবেতি। শির ইতি তত্র প্রাধাত্তাৎ অবশিষ্টবাচন। তত্র নিবাসো বসতিস্থানং অগদ্যত্ত তত্ত স্বোধানং। তবেতি পুনক্তি র্জগরিবাসতয়া অগৎ প্রণামেন ছৎ প্রণামে সিন্ধেইপি তদেকদৃষ্ট্যপেক্ষরা। যদ্বা তব নিবাসভূতা যে ক্লগতো অক্সমরূপাং শ্রীবৈক্ষর রূপা স্তেবাং প্রণামে শির্ক তন্তোভ্য কিল্মানমেৎ ইত্যুক্তে:। যদ্বা তব নিবাসাহরং যো ব্রক্ত অন্তর্ভ্য ক্রিন্তং সর্বভ্য দ্রতোহণি প্রণামে। দৃষ্টিশ্রক্তরির্মং ভবন্তম্নির্বিশেষাণাং সতাং শ্রীনারদাদীনাং যদ্বা সতাং শ্রীবৈক্ষবানাং ভবন্তন্নাং চ অর্চারূপাণাঞ্চ দর্শনে সাক্ষাৎ গুদর্শনেই বিভিত্ত গৃহেত্বসম্ভবং স্ত্যাদিনা ন প্রার্থিতং এবং স্পর্ণাদিকমুণলক্ষ্যং॥ ৩৩॥

গোকুলেখর: প্রহলন্ গুছকাবাহ গুছকাবিতি। তয়োত্তাদৃশপূর্কাবস্থতং প্রচিয়ত্বা ভাগ্যাতিশয়ং দর্শয়তি প্রহাদে হেতৃঃ স্বয়ং ভগবান্ তাভ্যামপীথং ভগবত্তেনৈব কীর্তিতঃ দায়া চোস্থলে বন্ধ ইতি। প্রথমত স্তাবদৃদ্ধ ভ্রাণি দায়া তত্তাপ্যসূথল ইত্যর্থ:। অতো

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

তব নিবাদোংখ্যং যো ত্রন্ধ স্তত্তন্ত্রন্য জগতঃ সর্বাদ্য দ্রতোংপি প্রণামে ॥৩৩॥

ইখমিতি দামেত্যাদি প্রহাদে কারণং গোকুলেশ্বর ইতি শীলার্ধপ্রত্যয়েন তলায়া চ নিত্য তাদৃশলীলবং দর্শয়তি ॥৩৪॥

#### গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

তদম্চর কিন্ধরত্বাদেবাবয়েরত্বাৎসল্যাতিশয়মালক্যান্যৈ র্লুভমণীদং প্রাথয়িতুমুৎসহাবহে ইত্যভিব্যঞ্জয়ন্তাবাহতু: বাণীতি।
অবৈক এব চকার এবার্থক: প্রতিসপ্তমান্তঃ বোজ্য:। তেন তব গুণামুকথন এব বাণী ভবতু ন দ্বন্যক্থায়ানিত্যেবং সর্প্তি ব্যাধ্যেরং
নঃ আবয়ো ম নম্বণীয় পালয়ো: স্বত্যাং। নিবাসভ্তানাং অগতাং অকমানাং নারদাদি ভক্তানাং প্রণামে শিরোহন্ত। হে নিবাস
অগদিতি সম্বোধনপদং বা। ভবতনুনাং দ্বন্নু ঠিরপাণাং॥ ৩৩॥

সন্ধীর্ত্তিতঃ সংস্ততঃ দান্না চকারাৎ প্রেন্ধা চ বন্ধ: । প্রহুসন্ধিতি প্রহাসোহয়নেতে উপদেবাদরো মন্মায়ন্না বন্ধা: স্বনোচনার্থং যং মাং স্তবস্থি

প্রতিষর প্রাথিক দর্শনে তৎপর হউক । ৩০ ।

শুকদেব কহিলেন হে রাজন্। গোকুলেশের ভগবান্ শুকুষ্ণ এই প্রকারে স্তত হইয়া উদুখলে বন্ধ থোকিয়াও হাসিতে ২ সেই ছুই গুহুকের প্রতি নিম্নলিখিত বাক্য প্রয়োগ করিলেন।। ৩৪।। গ্রীভগবামুবাচ॥

জ্ঞাতৃং মম পুরৈবৈতদ্ধিণা করুণাত্মনা। যজীমদান্ধয়ো বাগ্ভি বিজংশো ২মুগ্রহঃ কুজ ॥ ৩৫ সাধূনাং সমচিতানাং স্তরাং মৎকৃতাত্মনাং। দর্শনামো ভবেষকঃ পুংসো হক্ষোঃ সবিতু র্যা॥৩৬

#### श्रीभव्यामी।

বাগ্ভি ন' ছন্যো জুৰতো জোব্যানিত্যাদিঃ শ্ৰীবিভংশরপো ২ছুগ্রহং কৃত ইভি ॥ ৩৫ ॥

যুক্তমেবৈতৎ ইত্যাহ সাধুনামিতি। সাধুনাং স্বধর্মবর্জিনাং সমচিত্তানাং আত্মবিদাং স্থতরাং মংক্কতাত্মনাং ম্যার্পিতচিত্তানাং তেখাং কুপাতিরেকাৎ স্বতরামিত্যুক্তং। ক্লবিতু দুর্শনিদক্ষো র্যধা বন্ধো ন ভবেত্তছং ॥ ৩৬ ॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

ভয়েনৈবৈতৌ ন সহত ইত্যভিপ্রেত্য স্বয়মেব হসতি স্বেতি ভাব: ৷ গোকুলেখরো ভগরানিতি গোকুলেখনশীল হালেগাকুলেখন-নানায়নশাকং ভগবানেবং প্রিয়লনপ্রেমবঞ্চরা গোকুলে নিত্যকৌতুকণীল ইভি গোকুলঞ্চেমং প্রমবিলক্ষণং জানীহীতি চ ব্যঞ্জয়াত ॥ ৩৪ ॥

এত মম জ্ঞাতমেবেতি অভাগা মহদপরাধির মমেদৃশ কপাত্পধোগাং। যথা ঋষেরাসীদহ্প্রহাদিতি তয়োককা প্রীতঃ সন্
তামের জ্চয়ন্ তয়োঃ প্রহ্রার্থ মহমেদতেতি। করণান্ধনা দ্যাশীলেন করণান্ধতামেবাই শ্রীমদান্ধরোরপাত্রহাই কত ইতি। অভাজঃ।
যথা স্থাতাং নৈবং যথা পুনরিত্যাদি বহলবরপ্রদানমন্ত্রীভি বাগ্ভিঃ। কণ্ডুতঃ বিগতো লংশো হধঃপাতো মহাপরাধকতো মহানরকাদিরপো যকাং॥ ৩৫॥

সাধ্নামিতি তৈবর্গাখ্যাত্মেব তত্র পূর্কয়োর্যথায়খং যৎ কিঞ্চিয়য়ংবিরং স্ক্রামিতাদেন ব্যক্তিং। যথা সাধ্নামিতি কুপালুতায়াং সমচিত্রানামিত্যপরাধাথ্যংশ মংক্রায়নামিত্যক্ত স্বাভাবিক গুণবৃত্তবালক প্রেরাজকং বিশেষণ্ডয়ং। তেযাং দর্শনাদ্পি প্ংসো জীবমাত্রস্ত্তরাং সংসারবন্ধোন ভবেৎ কিং পুন স্তান্শবহুলবালক প্রয়োগালগ্রহাং ভবতো রবজ্ঞাত্থাদেব তদপেক্ষা জাতেতি ভাবঃ। স্ত্রামিতি প্রবণকীর্ত্তনাদিনাপি ন ভবেৎ দর্শনান্ত স্ত্রামিতি জ্ঞাপকং। অক্ষোর্সক স্তমঃ কৃত্তঃ। স্বত চ দর্শনাদিতি স্তরামিত্য প্রক্রামিত তাপক্ষা তৎ পূর্বতাহিপি তল্পাশাং॥ ৩৬॥

#### जन्मननर्जः।

বিগতো ভংশো যন্ত্ৰাং ॥৩৫॥

সমচিত্তানামিতি অপরাধাগ্রহণে সাধ্নামিত্যস্থাহে বিশেষণং ॥৩৬।৩৭।৩৮॥°

# ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

সোহরং বশোদাদিগোপীতি দানা প্রেয়া চ বজো হতীক্ষং ভর্ণ দিতঃ বেহেন গোকুলে তিঠামি। অত্যতানাং তাসাং ভর্ণননাহং যথা প্রীরে ন তথানরোঃ স্তত্যেতি ব্যঞ্জতি ॥ ৩৪ ॥

বাগ্ভি ন' ছন্যো জ্বতো জোব্যানিত্যাদিভিঃ শ্ৰীবিত্ৰংশক্ষপো ২ন্ত্ৰাছ এব ক্বড ইতি ॥ ৩৫ ।

নমু তং দৃষ্ট্ পাসম্মানয়তো রাবরো ভদমুগ্রহ: কথং সম্ভবেত্ততাহ সাধ্নামিতি। সমচিতানাং অমানাপমানাভ্যামক্ষ্ত্যতাং ক্তরানতিশ্রেন মধ্যের কৃত আত্মা মনো হৈত্তেবাং। দর্শনাত্তঃ দর্শনাপ্তিত এব বছা দর্শনেনাতো নাশো বস্য সং সবিত্ দর্শনাদক্ষের বৃদ্ধিত তথা ক্রমান্ত তথা নালাপরাধ্যনীমস্মানসানাম প্রাণাং শ্রীনারদাদিদর্শনাদিপ ন বৈদ্ধের ইতি বিজ্ঞাপিতং ॥ ৩৬ ॥

ভগবান্ কহিলেন অহে গুহুকদ্বয় ! করুণাময়, দেব্যি তোমাদিগকে জীমদান্ধ দেখিয়া তোমাদের প্রতি বাক্যদারা জ্রীজংশরূপ যে অনুগ্রহ সে বিষয় অগ্রেই আমার পরিজ্ঞাত হয় ॥ এ৫ ॥

যে সকল ব্যক্তি দাধু অর্থাৎ অধন্মবর্তী এবং সর্বত্তি সমচিত ও আত্মক্ত হতরাং তাঁহাদিগের চিত্ত আমাতেই অর্থিত থাকে, সূর্য্যদর্শনে যেমন চক্ষুর বন্ধন হয় না তাহার ন্যায়, আমার দর্শনে তাঁহাদি-গের বন্ধন হয় না।। ৩৬।। তদ্পচ্ছতং মৎ পর্য়ো নলকুবর সাদনং। সংজাতো ময়ি ভাষো বামীপ্দিতঃ পরমো হভবঃ॥ ৩৭
ঞ্জিত উবাচ॥

ইত্যুক্তো তং পরিজ্ঞা প্রণমা চ পুনঃ পুনঃ। বদ্ধোলুখলমামন্ত্রা জ্ঞাতু দি শম্তরাং॥ ৩৮॥

॥ \*॥ ইতি জীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংদ্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং দশমস্কৃত্রে যমলার্চ্ছুনভঞ্জনং নাম দশমোহধ্যায়ঃ ॥ \*॥

#### শ্রীধরস্বামী

প্রাধান্যাদেকল্যৈর সংবাধনং হৈ নলকুবর যুবাং তৎ তত্ত্বাৎ সাদনং সদনং নিকেতনং মৎপর্মৌ সম্ভৌ গছড়েং। যুবরোরপেক্ষিতো-মরি প্রেমা জাত এব। অভবো ন ভবো যত্ত্বাদিতি সঃ॥ ৩৭ ॥

বদ্ধোলৃথলং বন্ধমুদুখলং যশ্মিন্ তং ॥ ৩৮ ॥

॥ । इंडि न्नरंभ मन्भः॥ ।।

## देवस्ववत्जावनौ।

মং পরমৌ মদেকান্তিনৌ সস্তৌ যতঃ সংস্থাত ইতি। অন্তত্তৈঃ। বহা যুবরোম রি ভাবঃ প্রেমা প্রীনাকুদান্ত্রহাৎ সম্পশ্লাত এব বতঃ পরমো ভবোহভূদেয়ঃ মদেক ভক্তি লক্ষণো বাণী গুণান্ত্রপনে ইত্যাদিনা যুবাভ্যামীক্ষিতঃ। এবং প্রীনারদান্ত্রহসম্বন্ধন নিজ্পভোষাতিশ্যব্যঞ্জনাৎ। তদতিশ্রোহিপি ভাদিতি ব্যক্তিতং। সহ্জবিন্যাদিগুণাম্তপ্রোনিধিগাৎ সাক্ষাত্ নোক্তমিতি জ্ঞেরং ॥ ৩৭ ॥

• পুনর্মন্ধোন্ধলমিতি শ্রীশুক্দেবক্ত কৌতুকোকি:। যন্তরা বন্ধন্তং দেবা অপি স্ববন্ধি বদন্ত ইতি। তথা তাদৃশভক্তবশ্যতাময়মধুর-দীলাদিদ্ট্যা মুহ্: পরিক্রমাদিহেতুক্ত অত্ত বহুত্রীহিণা নির্দেশ উল্পলক্ষ ডদমুগতিবিবক্ষরা সাচ বন্ধনীয়বন্ধনাশ্রইবৈপরীত্যমর-ডল্লীলাকৌতুক্ ব্যঞ্জিকেতি। উল্পলমাত্রবিশেষণং নতুপলক্ষণং। তত স্তম্ম অপি প্রণামাদিকং কৃতমিতি জ্ঞেরং। তথোকং পালে। নমত্তেহন্ত দায়ে ক্রেন্দীপ্রিধামে। ইতি আমন্ত্রণঞ্চ ভক্তোতি॥ ৩৮॥

॥ \* ॥ ইতি প্রীবৈষ্ণবতোষণ্যাং দশমটিপ্পতাং দশম: ॥ \* ॥

#### ' ক্রমসন্মর্ড:।

## । • ॥ টতি দশ্যে ক্রমসন্দর্ভে দশম: ॥ • ॥

## विविधनाथहक्तवर्छो ।

প্রাধান্যানেকং সংবোধ্যাত তে নলকুবর অত্নেব পরসঃ সেব্যো ব্যোগ্রথা ভূতৌ সস্তো । সাদনং সদনং ন ভবঃ সংসারো বতঃ সঃ ॥ ৩৭ উন্প্রে বছং বছোল্থলং । আহিতাল্যাদিঃ ॥ ৩৮ ॥

॥ 🔸 ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেত্সাং। 🛮 দশ্যে দশ্যোহধ্যার: সক্তঃ সক্তঃ স্কৃতঃ স্তাং ॥ 🗢 ॥

অতএব হে নলক্বর, তোমরা আপনার সদনে গমন কর, আমার প্রতি তোমাদের পরম প্রীতি উৎপন্ন হইয়াছে, ভাহাতে তোমাদের সংসার সম্ভাবনা নাই।। ৩৭।।

শুকদেব কহিলেন রাজন্! সেই ছুই শুহুক এই প্রকার উক্ত হইয়া সেই ভগবান্কে প্রদক্ষিণ ও পুনঃ ২ প্রণাম করিলেন, পরে উদুখলে বন্ধ সেই ভগবান্কে সম্ভাষণ করিয়া উত্তরদিকে যাত্রা করি-লেন।। ৩৮।।

॥ \*॥ इंडि मेन्य मन्य ॥ \*॥

वामब्राग्नशिक्षकां ॥

গোপা নন্দাদয়: প্ৰুম্বা ক্ৰময়ো: পততো রবং। তত্তাজগ্মু: কুক্সপ্ৰেষ্ঠ নিৰ্বাতভয়শকিতা: ।।১।।
ভূমো নিপতিতো তত্ত্ব দদৃশু ধমলাৰ্জ্নো। বত্ৰমু স্তদ্বিজ্ঞায় লক্ষ্যং পতনকারণং ॥ ২ ॥
উল্পলং বিকর্ষস্তং দাল্লা বন্ধং স্ববালকং। কদ্যেদং কুত আশ্চর্য্যমুৎপাত ইতি কাতরা:॥ ৩ ॥

## व्यथतचामी।

একাদশে সমাগত্য বুলাবনমধা জকৈ:। বংশান্ পালয়তা তেন হতৌ বংশবকাস্বরৌ॥ •॥

নিৰ্যাতো বস্ত্ৰপাত ইতি ভৱেন শ্ৰিতা:॥ >॥

ৰক্যং প্রত্যক্ষতঃ প্রতো গতমপি পতনকারণমবিজ্ঞার বভ্রমুঃ॥ ২ ॥

লক্ষ্যং কারণং দর্শরতি উল্বলমিতি। অমপ্রকারমাহ কল্যেদং রাক্ষ্যাদেং কর্ম্ম কুতো বা কারণাৎ অহে। আশ্চর্য্যমুৎপাত ইতি

## देवकवटावनी।

জত্রাজ্য বিভি জত্রাগ্যনার ক্রতং প্রতমুরিত্যর্থ:। নির্থাতো নিরন্ত্রগর্জিতমুংপাতবিশেষ: তরং দৈত্যাদিভান্তাভ্যাং সন্ধির্যা: জত্রো বৃদ্ধি তত্তাদের নিকট হানাই ব্রন্তেখ্য্যাদীনাং প্রথমত আগমনং ন জাতমিতি জ্ঞেরং। হে কুক্সেট ইতি শ্রীনন্দাদিত্রাসাবেশেন স্বোধনং ততো রক্ষণার্থমির ॥ ১ ॥

ভূম্যামিত্যধকং নিতরাং উন্মূলনাদিনা পতিতো দদৃও দুরাদিতি শেষ:।

বলমুরিতি সার্থকং উল্খলমিত্যাদিলকণং পতনকারণং লক্ষাং লক্ষিত্ং শক্ষমণি তদবিজ্ঞার দূরন্থৰাৎ সংলাজ্ঞাৎ পতিত বৃক্ষণাদাদিব্যবহিত্যাক্ত তত্ত্ব হিতমনস্ভ্র বলমুঃ সন্দিদিহঃ তদস্ভবে তু সতি প্রথমং তদনিষ্টাশঙ্কাবিষ্টাঃ হ্য ন তু তর্থণাতহেত্ব জিজ্ঞাসরেতি। তস্য তত্ত্বেজুবে জ্ঞাতে সতি জিজ্ঞাসণেরা ন হ্যারিতি চ ভাবঃ ॥ ২ ॥ পুনশ্চ নিকটে সমাগত্যাণি শাধাব্যবহিতং তম্দৃষ্ট্ কল্পেদিত্যাত্যক্ত্ব কাতরা বভূবুঃ। ইদমাশ্চর্যাং কস্য কেন ক্রতমিত্যর্থঃ। তথাচ বিবৃতং তথাক্যং প্রীহরিবংশে। কেনেমৌ ক্রমসন্দর্ভঃ।

উচুরিত্যাদিনকণং পতনকারণং। সক্ষাং সক্রিজুং শক্যমণি তদবিজ্ঞার দ্রক্ষাৎ সক্লাভ্ডাৎ পতিতবৃক্ষণাধাব্যবহিতথাত ভবস্থিতমনস্ভূর বভ্রমুং সংদিদিতঃ ॥ > ॥ ২ ॥

পুনক নিকটে সমাগত্যাপি শাধাদিব্যবহিতং ভষণৃষ্ট্1 কল্যেদ্মিত্যাছাজ্ব কাতরা বভূবু:। ইদমাক্ত্যাং ক্সা কেন শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

धकानत्न हत्त्र त्मीकः कनळात्रकथानिकः। वृक्तावनाश्रत्मा वश्यावनः वश्यवकार्यनः॥ >॥ २॥

ঙৎ তরোঃ পতনকারণং বাশকং শক্ষাং শক্ষরিতুং শক্যমণি অবিজ্ঞার প্রেম্বা তাদৃশবোগাতাকত্বনাসস্থাব্য বত্রমুঃ। ত্রমমেবাহ কস্যেদং কর্ম কুতো হেতোওত্বাদাকর্ত্যমেতহুৎপাত ইতি নিশ্চিত্য কাতরাঃ। ভাগ্যেন বিধা্তা বালঃ ক্লো রক্ষিত ইতি ব্যাকুলা বভূব্ঃ ॥৩॥

একাদশ অধ্যারে বৃন্দাবনে বালকগণ সহ বৎসপালন করিতে করিতে জীকৃষ্ণ কর্তৃক বৎসাহ্মর ও বকাহার বধ বর্ণন ॥ ০ ॥

ভবে শক্তি হওত সম্বর সেই স্থানে আসিলেন ॥ ১॥

শাসিবামাত্র দ্উ হইল যমলার্জন ভূতলে পড়িয়া রহিয়াছে। ঐ ছুই রক্ষের পতনকারণ সম্প্র উপস্থিত থাকিলেও তাঁহারা জানিতে পারিলেন না, স্থতরাং জান্ত হইয়া রহিলেন ॥ ২ ॥

হে রাজন ! যমলার্জন পতনের প্রত্যক্ষ কারণ নন্দের নিজ নন্দন তিনি যে উদ্ধলে রক্ত্রক ছিলেন সেই উদ্ধল ঐ ছানেই আকর্ষণ করিতেছেন, কিন্তু নন্দাদির সে দিকে মনোযোগ হইল না, কোন রাক্ষাদির এ কর্ম ! কি কারণে হইল, এ কি আশ্রুধ্য উৎপাত এই প্রকার কহিতে কহিতে সকলে বংপরো নাক্তি কাতর হইলেন ॥ ৩ ॥

বালা উচুরনেনেতি তিরশ্চীনমূল্থলং। বিকর্ষতা মধ্যগেন পুরুষাবপ্যচক্ষাহি॥৪॥
নতে ততুক্তং জগৃহু র্নঘটেতেতি তস্ততং। বালফোৎপাটনং তর্কোঃ কেচিৎ দলিশ্বচেতদঃ॥৫
উল্থলং বিকর্ষস্তং দালা বদ্ধং স্বমান্তকং। বিলোক্য নন্দঃ প্রহুসদ্দনো বিমুমোচ হ॥ ৬॥

# विधनवामी।

কাতরা ভীতাঃ সস্তো বভ্রমুরিত্যর্থ:॥৩॥

মধ্যগেন বৃক্ষয়ো ম'ধ্যগতেন ন কেবলমেতাবল্ বৃক্ষাভ্যাং বিনিৰ্গতো দিবেটা পুক্ষাবপ্যচন্দ্ৰহি দৃষ্টবস্তো ৰয়মিতি ॥ ৪ ॥ কেবলং তাৰ্কিকা ন অগৃহঃ অন্যে তু সন্দিশ্বচিন্তা বভূবুঃ ॥ ৫ ॥ ভগবন্ধায়ামোহিত্য্য নন্দ্ৰস্যাচরিত্যাহ উল্পল্মিতি ॥ ৬ ॥

## देवक्षवरजावनी।

পাতিতৌ বৃক্ষো বোষস্যায়তনোপমো। বিনা বাতং<u>:</u>বিনা বর্ষং বিছ্যুৎ প্রপতনং বিনা। বিনা হস্তিক্বতং দোষং কেনেমো পতিতৌ ক্রমাবিতি॥ ৩॥

ততশ্চ ব্যবহিতং তং দর্শয়িদ্বা বালাঃ স্বয়মূচ্ঃ তত্তাই রনেনেতি সংপ্রাশ্বদ্ধেন পূর্ণবচনাশক্তেরুৎপশটিতমিতি তু নোচুঃ। কীদৃশেন সভা উৎপাটিত মিত্যপেকায়ামূচ্ঃ তির্যাগ্ গত মূল্থল মিত্যাদি। এবামমোহস্ক শ্রীদামোদর মাধ্র্যাবেশেনেতি গম্যতে॥ ৪॥

ন জগৃহ: শ্রীনন্দাদয়: মমতার্দ্রচিত্তথাৎ কেচিৎ প্তনাদিনাশাল্ল ব্যাপ্তিনা তর্কেণ কিঞ্চিৎ কর্ক শালমানচিত্তা বিপ্রা অপি স্বাভাবিক মমতার্দ্র নেনাদ্রমানচিত্তা বিপ্রা অপি স্বাভাবিক মমতার্দ্রমেন নামতার্দ্রমেন কর্মান্ত নামতার কর্মান্ত নামতার কর্মান্ত নামতার ক্রিক কর্মান্ত নামতার কর্মান্ত কর্মান্ত নামতার কর্মান্ত নামতার নামতার নামতার কর্মান্ত নামতার নামতা

শ্রীনন্দস্য বাৎসল্য প্রাবল্যমাহ উল্থলমিতি। উল্থলমিত্যাদেঃ পুনরুক্তি বিশেষতঃ শ্রীনন্দস্য তথোলুখলাকর্ষণেন প্রস্বাস্থ্যভছলা-কুতমিত্যর্থ: ॥ ৩ ॥ ক্রমসন্দর্জঃ।

তত্ত্বত ব্যবহিতং তং দর্শবিদ্যা বালা: শ্বয়মূচ:। কিম্চুন্তআছ রনেনেতি সম্ভান্তম্বেন পূর্ণব্চনাশক্তেরুৎপাট্টতমিতি জু নোচু:॥ ৪॥ তেরু পর্মবাৎসল্য শ্বভাবা ন জগৃহ:॥ ৫॥

প্রীত্রজেশরদ্য পরমবাৎদল্য চেষ্টামাহ উল্থলমিতি। বিলোক্যেতি সাক্ষপ্রত্যক্ষিদেশের দৃষ্টেত্র্থ:। প্রহ্মরদন ইতি বালস্য

#### জীবিশনাথচক্র বর্তী।

অনেন ক্লফেন বৃক্ষয়ে। ম'ধ্যগতেন তিৰ্য্যগ্যতমূদ্থলং নিবিক্ৰজেত্যেতশাত্ৰং বালা উচুঃ। স্বন্ধান্তক্ষেন পূৰ্ণবচনাশক্ষেবেতাবৃৎপাটি-তাবিতি তু নোচুঃ। অবিশ্বসভন্তান্ পুনক্ষচুঃ। বৃক্ষাভ্যাং নিৰ্মতৌ ছৌ পুক্ষাবপ্যচন্দ্ৰহি লুইবস্তো ব্যমিতি ॥ ৪ ॥

তে নন্দাদয়ঃ। ত্ত্মিন্মতার্ক্তিভছাৎ তৎপ্রভাবানমূসন্ধানাৎ তছ্তেং বালোক্তং ন স্বগৃহঃ। কেচিদন্যে তু নারায়ণসমোগুণৈ-রিতি গর্গোক্তিম্বত্যা স্বাভাবিক প্রেমোদ্যেন চ সন্দিশ্বচেত্স এব বভূবুঃ॥ ৫ ॥

বিলোক্য বিশেষেণাক্ষপ্রত্যকং নির্বাধং দৃষ্টা প্রহস্তদন ইতি মংক্রোড়াদপি ষস্যাঃ ক্রোড়ং স্বমতিপ্রিরং মন্যদে সা জ্জননী স্বাম-

গোপ সকলকে ব্যাকুল দেখিয়া তত্ত্ৰস্থ বালকেরা কহিতে লাগিল, ইনি ( শ্রীকৃষ্ণ) এই ছুইটা বৃক্ষের মধ্যগত হইয়া তিরশ্চীন (বক্র ) করিয়া ঐ উদ্থলটা আকর্ষণ করিয়াছিলেন, আমরা দেখিলাম তাহাতেই ঐ ছুইটা বৃক্ষ উপজিয়া পড়িয়া গেল, আমরা কেবল এই মাত্র দেখিয়াছি এমত নহে ঐ ছুই তরু হুইতে ছুই জন দিব্য পুরুষ নির্গত হুইয়াছিলেন, তাঁহাদিগকেও দেখিয়াছি॥৪॥

কিন্তু সেই সকল গোপবালকদের ঐ উল্কি আছ করিলেন না বরং পরস্পার তর্ক করত কহিতে লাগিলেন, বালকের এরশ প্রকাণ্ড তরুদ্বয় উৎপাটন সম্ভব হয় না, পরস্ত জন্য কতিপর পোপবালকদের ঐ কথায় সন্দিশ্ধ চিত্ত হইলেন ৪ ৫ ৪

তুদনন্তর, ভগবন্মায়ায় মোহিত নন্দ রক্ষ্বন্ধ নিজপুত্রকে উদৃধল আকর্ষণ করিতে দেখিয়া হাস্য-

গোপীভি: স্তোভিতো হনৃত্যম্ভগবান বালবৎ কচিৎ। উদ্গায়তি কচিমুগ্ধ স্তৰশো দারুযন্ত্রবং॥৭ বিভর্ত্তি কচিদাঞ্চপ্তঃ পীঠকোমানপাত্নকং। বাহুক্ষেপঞ্চ কুরুতে স্বানাঞ্চ প্রীতিমাবহন্।

## श्रिधत्रवामी।

জ্ঞাস্যস্তি মামিতি শহুমানোহতীৰ বাল্যমন্থকরোতি শ্ব তদাহ গোণীভিরিতি। স্তোভিতঃ করতালাদিনা প্রোৎসাহিতঃ ॥ ৭ ॥ ইদ্মানুহেত্যাক্সপ্তঃ আনুনুত্মসুমূর্থ ইব বিভর্তি কেবলং পীঠাদি বাহুক্ষেপং করচালনঞ্চ ত্রিদাঞ্চেত চকার্স্যাহয়। তৎ ঐশ্বর্যং

#### देवकवरजावनी।

ধিক্যাদ্যস্থানাৎ প্রহর্ববাধনার্থ। তথাপি বিলোক্য ইতি সাক্ষপ্রত্যক্ষং বিশেষেণ দৃষ্ট্য ইত্যর্থং। বন্ধস্য ভীতস্য বালস্যোদ্ধাসনার্থং প্রহ্মদদনঃ সন্ প্রহ্মদদনমিতি বিতীয়ান্তপাঠো বা। তথাচ শ্রীবিক্পুরাণে। নবোলগভালদন্তাংভ সিতহাসক্ষ বালক্মিতি। তস্য প্রকট হাসক্ষ পিতৃতভাগণি শক্ষানস্য তৎপ্রসাদদর্শনেন সপুনঃ পিতৃসন্তোষার্থ নিজ্ভয়ত্বঃধাভাববোধনায় চ জাতঃ। বিশেষত উল্পলাক্ষাক্ষ মুমোচ। বিতীয়বন্ধন্য উল্পলগতস্য প্রথমমোচনীয়ন্থাং। হ হর্বে। এবং শ্রীয়বেদাদায়া বন্ধনক্ষমতাবন্ধোচন ক্ষমতয়া শ্রীনন্দ-স্যাপি তাদুশন্থং দর্শিতং। অত্য চ বন্ধনদায়াং বাহুল্যং তৈঃ প্রেমাবেশেনেব ন সন্তালিত্মিতি জ্ঞেয়ং॥ ৬॥

ন কেবলমসে পরমলিয়ায়া মাতৃ: পিতৃলৈতবং প্রেমবশতামাপরে হিপ ঘন্যাসাং গোপীনামপীতি দর্শয়নতি প্রাক্তনবাল্যচরিতমাহ গোপীভিরিতি ছাভ্যাং প্রায়ো জরতীভি:। ভগবানখিলৈয়র্য্য সম্পরোহিপি বালবং জন্যো বালো যথা তছদিতি তংগ্রেমরসবশবাল্যলীলাভিনিবেশেন নিজেয়্য বিস্মৃতি: স্চিতা। বালক ইতি পাঠে বাল্যলীলাছরপমেব তদিতি ভাব:। কচিদিতাস্য মুগ্রইত্যনেনাপ্যয়য়ঃ। অতিবালকদেন নৃত্যাদিকং কিঞ্চিনজানন্ কচিয়্য়ভাবমপি দর্শয়তীত্যর্থ:। যথা নৃত্যাদে সর্ব্ধা
মনোরম ইত্যর্থ:। তথা নৃত্যাদে হতু দর্শক্ষয়ং স্ক্রমঞ্চারাদি শিরতো নৃত্যাদিপরা প্রিকো তছজাসাং বলঃ অধীন:॥ ৭॥

বাহক্ষেপং ভূজৌ মূহরুত্থাপ্য পরাক্রমদর্শনং ন কেবলং তত্র তাদামেব স্থবং জাতং অপিতৃ গোপমাত্রাণামিত্যাহ স্বানাং জাতীনাং

## ক্রমসন্দর্ভ:।

ভীতস্য ভরহানার্থং প্রহস্বদন্মের যস্য সঃ। অন্তন্ত স্বয়মপূৰ্ষি ইত্যর্থং। বিতীয়ান্তঃ পাঠো বা তস্য তেজস্থিত স্বভাবাদের ॥৬॥
অন্যাসামপি গোপীনাং তন্মিন্ প্রেমবশ্যতাং দর্শয়ন্ প্রাচীনবাল্যলীলাষাহ গোপীভিরিতি ছাভ্যাং॥ ॥॥

ে বাছক্ষেপং ভূজৌ মুছ্রুখাপ্য পরাক্রম দর্শনং তত্ত সর্ক্ষোং গোপানামপ্যানক্ষ্মুদাহর্তি । স্থানাং জাতীনাং গোপজাতীনামি-তার্থঃ । অতএব যে কৈচিছুদ্ধ ভূত্য আসন্ তেষামপি বশ্যতোতার্থঃ ॥

## এবিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী।

দ্লাপরাধেনৈব বগ্নতি স্ম তন্ত্রামহং কথং মোচন্নামীত্যুপালম্ভন দ্যোতকঃ প্রহাসঃ। দ্বং মার্যরৈব শীবানাং বন্ধমোক্ষো যথা ব্যধাঃ। তথা দ্বংপিতরো তৌ তে প্রভাঃ প্রেইন্নব চক্রতুঃ॥ ৬॥

পিত্রোন্তরো: সৌভাগ্যমহিমা কেন বক্তুং শক্যন্তদীয় ব্রহ্মবাসিমাত্রস্যাপ্যতিমাত্রবশ্যে ব্রহ্মদিবশীকর্তাপি ক্লফ ইত্যাহ সার্হ্ব-ত্রেরাদশভি:। স্তোভিত: যদি নৃত্যসি তদা তৃত্যং পঞ্চলভ্তুকং দাস্যামীতি প্রোৎসাহিত:। বালবং যথান্য: প্রাক্তাতা বালন্তর্দে-বেত্যর্থ:। মুক্কাসাং প্রেরের নিকৈশ্ব্যানস্থসন্ধানাং। দাস্থত্তঃ প্রত্রেগত প্রতিকা॥ ৭॥

পীঠকেতি। কিন্নদদ্য বদমভূদিতি জিজ্ঞাস্থতিঃ প্রথমং হে ক্লফ পাছকা মানরেতি ততন্ততোহুধিকভার মূলান মানয়েতি ততন্ততো-

# वम्रत डाँश्य वक्तन त्यांचन कतिया मिरलन ॥ ७॥

হে রাজন্ ! পশ্চাৎ আমাকে জানিতে পারে এই আশকায় ভগবান্ জ্রীকৃষ্ণ অতিশয় বাল্যের অনুকরণ করিয়াছিলেন, বালরূপী ভগবান্ কখন ২ গোপী কিগের করতালি তারা প্রোৎসাহিত হইয়া নৃত্য করিতেন কখন বা মুশ্ধ হইয়া তাঁহাদের বশবন্তী দারুযন্তের ন্যায় উচ্চৈঃস্বরে গীত গাইতেন।। ৭।।

কৰন " ঐ দেবাটা লইয়া আইন' এইরূপ আজপু হইয়া আনয়নে যেন সামর্থ্য নাই এবন্থিধ ভাব প্রকাশ করত কৈবল পীঠ ও পাছুকা ধরিয়া থাকিতেন, আর আপনি যে ভ্তাগণের বশ্য, ইহা নিজ দর্শরং ন্তরিদাং লোকে আত্মনো ভৃত্যবশ্যতাং ॥ ৮ ॥ ব্রজ্ঞোবাহ বৈ হর্ষং ভগবান্ বালচেষ্টিতৈঃ। ক্রীণীছি ভোঃ ফলানীতি শ্রুতা সত্তরমূচ্যতঃ। ফলার্থী ধান্তমাদায় যথো সর্বফলপ্রদঃ। ফলবিক্রয়িণী তম্ম চ্যুতধান্তকর্ময়ং।

#### क्षिपत्रचानी।

বিদন্তি যে তেৰাং ॥ ৮ ॥

এবং ব্ৰহ্মণ হৰ্ষম্বাহেতি। রন্ধং বৃন্ধাবনং গ্ৰুমন্তঃকৃষ্ণেন যন্ত্ৰিতাঃ। স্বতন্ত্ৰা ইব নন্দান্যা মন্ত্ৰেত্ৰমন্ত্ৰয়ন্ ॥ ৯ ॥

রৈঞ্চবতোষণী।

অবিশেৰেণ তাসাং গোপ**লাতীনামিত্যৰ্থ:। স্থানাঞ্চ প্ৰী**তিমাবহমিতি পাঠন্তেবাং সম্মতঃ। তিছিদাঞ্চেতি চকারদ্যাৰয় ইতি ব্যাধ্যানাৎ। আহুসঙ্গিকং প্ৰাৰোজনমাহ দৰ্শবন্ধতি। তদৈখৰ্য্যমেব বিদন্ধি নতু ভূত্যবশ্যতাং বে তান্ সাক্ষাছোধয়ন্নিত্যৰ্থ:। অত্ৰ ভূত্যশস্তদৈখ্য্যমাত্ৰ দৰ্শিনাঃ ভাবাস্থবাদেন স্থানামিতি তু প্ৰীভগৰতঃ॥ ৮॥

অন্যাভিরপীদৃশীভি ব'লালীলাভি ব'লবলানাং সংক্ষানাং সাক্ষাক্ষাে সদাক্ষ্যাদিত্যাই ব্রহ্মস্যতি। বৈ প্রসিদ্ধং। পুনরোৎস্ক্যাভিশবেন তানাং কিঞ্চিদাই ক্রীণীইতি সার্দ্ধপভিঃ। বদ্যপ্যেতে শ্লোকাতৈ নাদ্তান্তথাপি পুন্তকের দুশ্যমানস্থাক্তিক্ষ্কেন তু কিঞ্চিম্বাধান্তবাং তথাদিভিক্ত ধুত্থান্তব্যাহ্য বাধান্তবে। অত্র বহুত্র নানাপাঠ্যে নানাক্রমতে সভ্যপি গৌড়াদিদেশীরসংস্প্রদার্ভ্রা ক্রমপাঠবিশেবৌ ব্রিরেতে। তত্র স্থানাং প্রীতিদাহত্বং কিং বর্ণনীয়ং অহো তদ্দ্রবাসসহদ্ধেন প্রশিক্ষাভীনামপীত্যাই ছাভ্যাং। ক্রীণীই ভোঃ ক্রাণীতি প্রস্থা সম্বস্মুতঃ। ক্রাণী ধান্যমাদার বন্ধে সর্ক্ষ্কপ্রাধানং প্রস্তুর্গালিত বিচারিতবানিতি বাল্যনীলাবেশো দর্শিতঃ। তত্র ধান্যাদানং প্রত্তথ্যাত্রপ্রাপ্তেরিতি স্থাতিশ্বো' দর্শিতঃ। ততঃ কিং বৃত্তমিতি সক্ষোভাবিভিন্তবান্তি বাল্যনীলাবেশো দর্শিতঃ। ততঃ কিং বৃত্তমিতি সক্ষোভ্রাতি বিচারিতবানিতি বাল্যনীলাবেশো দর্শিতঃ। তত্র ধান্যাদানং প্রত্তথ্যাত্রপ্রাপ্তিরেরিতি স্থাতিশ্বো' দর্শিতঃ। ততঃ কিং বৃত্তমিতি সক্ষোভ্রাত্য বিদ্বাদান্তির ক্রান্তনান্ত বিদ্বাদান্তির ক্রান্তনান্তর বিল্যালালাক্র ক্রেই কলভাত্তমপুরি চ। সত্র বানেন পথ্যের চ্যুতানি ধান্যান্যি স্থাত্তাভ্রির ক্রান্তনান্তর ক্রান্তনাত্র কর্ত্তিঃ। তত্তক ত্রাধুর্য্যাবেশবিবশিক্রিরতা তদ্যান্তন্ত্রী বাব্রক্র প্রবেশং দ্বিতা লাভালাভাদিকং বিশ্বত্য গৃহমের ক্রপামেতি ক্রেরং। সর্ক্ষক্রপ্রদা ইত্যনেনাত্রকালেগপি তদাবেশক্ষ্ণ।

#### ক্রমসন্দর্ড:।

আগুস্পিকং প্রয়োজনমাহ দর্শগরিতি ॥ ৮ ॥ ন কেবলং গোপজাতীনামেব প্রীতিমুদাবহদিত্যাহ ব্রহ্গোতি । তথাসিন: সর্প্রসৈয়ে । অত্র ক্রীনীহীত্যালয়ং ক্লোকা বছবিধা বর্ত্তমে ॥ » ॥

#### গ্রীবিখনাথচক্রবর্ত্তী।

২প্যধিকভারং পীঠকমানয়েত্যাজ্ঞপ্ত আদিষ্টপ্তত্তদানরন বিভর্তি স্বমূহ্ল স্বঠরোপরীত্যর্থ:। বাহক্ষেপং তত্র তত্ত্ব কর্মণি ভূকৌ মূহকথাপ্য অপরাক্রমদর্শনাৎ স্থানাং জ্ঞাতীনাং ॥৮॥

ন কেবলং জ্ঞাতীনামেব অপি তু সর্কেষামেব ব্রশ্ববাসিনাং প্রীতিপ্রদো বশ্যতাদিত্যাহ দর্শহন্তি তহিদাং তদৈখব্যবিক্যান্ বন্ধাদী-নিতি নৈতদমুক্রণতেন ব্যাধ্যেয়ং ॥

তেৰতিনীচানাং প্লিনজাতীনামপি প্ৰীতিপ্ৰদ ইত্যাহ ক্ৰীণীহীতি: অচ্যতঃ পৰিপূৰ্ণোহপি ফলমাত্ৰাৰ্থী সৰ্বাফলমানাৰ প্ৰতঃ হিতথানামাত্ৰপ্ৰায়ে ধৰ্মিনালায় যথৌ ॥

নচ তাৰন্মাত্ৰমপি ধান্যং তয়া প্ৰাপ্ৰমিত্যাহ চ্যুতেতি। অভ্যন্তরাত্বরয়া বহিনির্গদে বৃত্ধনাৰ সর্বধান্যানি প্রতিতানি ভত্ত বিত্রমাত্র ধান্যযুক্তে কেবলাঞ্জাবেব নীয়তামিত্যুক্ত্বা ফলপাত্রে ন্যুত্তে ফলবিক্রেরিণাপ্যভূতিকেইা ফ্লৈং শীবাদিভি: স্ট্রেরেরাপুরুষং

ঐশ্বর্য্য পরিজ্ঞাতা লোকদিগের দেখাইবার নিমিত আত্মীয় জনগণের প্রীতি উৎপাদন করত কেবল করচালনা করিতেন।। ৮।।

বস্ততঃ ভগবান্ আপনার বহুবিধ বাল্যচেন্টাম্বার। সমুদায় ব্রজের হ্র ইংপাদন করিরাছিলেন। হে রাজন্। একদা কোন একটা পুলিন্দজাতি স্ত্রী "কল কিনিবে গো"বলিয়া চীৎকার করিলে ভগবান্ হরি, ফুনি স্বয়ং সমস্ত ফল প্রদান করেন, ফলার্থী হইয়া ধান্য গ্রহণ পূর্বক তাহার নিকটগমন করিলেন।

करेल त्र शृद्ध प्रदेश क्रिक्श क्ष्म श्वास्त्र के । मित्र श्वीतः भेठः कृषः क्ष्मा क्ष्म स्वास्त्र । त्यार प्राचित क्षिण मित्र क्ष्मा श्वास्त्र । या पानाः त्या विद्या स्वास्त्र श्वास्त्र श्वास्त्र श्वास्त्र । या पानाः त्या विद्या स्वास्त्र श्वास्त्र श्वास्त

## বৈষ্ণবতোবণী।

শরমকলপ্রান্তিরপি তস্যায়-ছতিতা। অব প্রিবলাদারা: প্রিরোহিণীতোহিপ প্রিরামেহিপ বশীকারি বাৎস্ল্যাতিশরং দর্শরিত্ব প্রীর্দ্রেশিবরা প্রম্বাৎস্ল্যেন নিজাং ক্রির্মাণং প্রশালনাদিকমুদ্দিশন্ দামোদর লীলারা: ক্রমপ্রান্তাং দিনৈকক্বতামিত্যাই সরিদিত্যা-দিনা। উদয়মিত্যক্ত্বেন সরিজীরগতং কৃষ্ণং ভয়ার্ক্রন মথান্তার্থং। ভয়ে অর্জুনো বেন তমান্ত্রম্বিদ্রিত বাৎস্ল্যেন তদয়সরানাদনিটা শরা দর্শিতা। কৃষ্ণং ক্রীড়াবিইচিজং। ক্রথেতি কার্থ হো সর্কেরের নামভিরিত্যর্থং। রোহিণী তজ্ঞালনসাধনাত্যাসক্রা প্রিবশোদিবর প্রেরিত্তি ক্রের্যা তথা প্রক্রিক্রান্তানে রামান্ত্রাম্প্রান্ত্র উত্তরাপ্রের্যেশন। তত্র্যুক্র নামের্যাতার বদাহতে ক্রীড়াব্রন্যেশন প্রান্ত্রা প্রবশ্বনা রামান্ত্রম্বর্যা বদাদার প্রের্যান্ত্রমান বাহিলী প্রবংস্লা। এবমাহতাবিপ বশোদার প্রের্যামান্ত্র্যুক্ররাণি তস্যা এব বাংস্ল্যাধিক্যায়-ভবেন শীল্লভন্নাকর্বণসামর্থ্যানির্বর্যং। কিমর্থং তত্রাহ প্ররোর্থস্লা। সরিজীরে নানোপত্রবন্ত্রাণি তস্যা এব বাংস্ল্যাধিক্যায়-ভবেন শীল্লভন্নাকর্বণসামর্থ্যানির্বর্য হা ক্রতং বালৈ রতিবেলং সহাব্রন্ত্রা। স্বের্যান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান ক্রির্যান্ত্রমান

# **अ**विधनाथहक्कवर्षी।

ফলেষু তস্য জাতলোভত্তন ভোকেছিল জংকরতনহরে তদীরবৈভবশক্তে: নাহাব্যাৎ। তত্তক রদ্ধৈরিতি তদীয় সর্ক্ষনপ্রাদ্ধ-শক্তা তংপ্রেমপর্যান্তা সক্রের সম্পত্তিরভূদিতি জ্ঞারং ॥

রোহিণ্যাঃ স্কাশাদ্পি প্রীয়শোদারামতিবাৎস্ল্যবত্যাং রামকৃষ্ণাবতিকেব্বশাবিতি, দর্শরন্ ব্যাক্তিক্দিন এব লীলাস্তর্মাহ স্বিজীবে পেলনার্থং গতং কৃষ্ণং রাম্ক উত্তর্বাক্যান্ত্রাধাৎ তত্তোজনসাধনাসক্তরা প্রীয়শোদ্রা প্রেবিতা বোহিণীতি কর্ত্পদং ক্ষেয়ং ॥

বশোদাং প্রেবল্পমাসেতি তস্যা এবাধিকবাৎসল্যবক্তাগুদ্ধরাকর্বণসামর্থ্যনির্ণরাৎ ॥
অংকাহবীৎ পুনঃ পুনরাজ্হাব নিকট গমনে পলায়নশঙ্করেতি দূরত এবেতি ভাবঃ ॥
इस्क ক্ষেতি বীঞা দূরতঃ প্রবণার:॥

\*

শ্রীকৃত্তের কর্ষর হইতে ধান্য গলিয়া পড়িতেছিল, ফলবিক্রারিণী তাঁহার কর্ষর ফলে পূর্ণ করিয়া দিল এবং ত্রিনিময়ে রত্নবারা আপনার ফলভাও পূর্ণ করিল।

হে রাজন্! অর্জন রুক্ষ ভগ্ন হইলে পর এক দিন প্রাক্ষ এবং রাম ব্যুনাতীরে গমনপূর্বক বালকগণ সহ জীড়া করিতেছিলেন, সেই সময় জননী রোহিণী শুন্যপানার্থ তাঁহাদিগকে ডাকিতে লাগিলেন। রামকৃষ্ণ ছই জনই জীড়াসকতা হেড়ু আহুত হইয়াও যথন আসিলেন না, তথন পুক্রবংসলা রোহিণী উাহাদিগকে আনয়ন কবিবার নিমিত যশোদাকে পাঠাইয়া দিলেন। উর্দ্ধিকে দৃষ্টি করাতে যশোদার নয়নগোচর হইল অগ্রক্ত সহ নিজ আত্মজ ব্রজবালকদিগের সঙ্গে খেলা করিতেছেন। মেহ বশতঃ শুনুহু ইতে লাগিল। অত্থাব দূর হইতে ডাকিতে লাগিলেন হে কুঞ্চ! হে অরবি বিদ্দাক। 'হে বংস'! শুনু আইস, শুন পান কর, আর খেলায় কাম নাই, কুলায় আশু হইয়াছ, চল, এখন ভোজন করিতে যোগ্য হও। পরে রামকে সংঘাধিয়া বলিতে লাগিলেন হে রাম!

হে রামাগচ্ছ তাতাশু সামুক্তঃ কুলনন্দন । প্রাতরেব কৃতাহারঃ ক্রীড়াপ্রান্থেহিসি পুক্রক।
প্রতীক্ষতে ত্বাং দাশার্হ ভোক্ষামাণো ব্রজাধিপঃ। এহাবয়োঃ প্রিয়ং ধেছি স্বগৃহান্ যাত বালকাঃ।
ধূলীধূষরিতাঙ্গস্তং তার্ত্ত মক্জনমাবহ। জন্মক্রং তেহদ্য ভবতি বিপ্রেভ্যো দেহি গাঃ শুটিঃ।
পশ্য পশ্য বয়স্যাংস্তে মাতৃষ্ঠস্বলঙ্কতান্। ত্বঞ্চ স্নাতঃ কৃতাহারো বিহরস্ব স্বলঙ্কতঃ।
ইথং যশোদা তমশেষশেথরং মত্বা স্কৃতং স্নেহ নিবদ্ধী নুপি।

## বৈষ্ণবতোষণী।

এবার্থ:। হে প্রক্তে তিলিয়পি পূর্বং মেহাং অয়ুকম্পায়াং কন্। কিঞ্চ প্রতীক্ষতে ছাং দাশাহ ভাক্ষামাণোরজাধিপ:। এহাব্রো প্রায় ধেহি স্বপৃহান্ যাত বালকা:। হে দাশাহে তি মিত্রপুর্বেন প্রমাপেক্ষাং ছাং বিনা ত্রুসা ভোজনমেব ন স্যাং ইতি ভাব:। আবরোঃ সংখ্যাদ পিতোবার্থ জীড়ালক্ষ্য শ্রীকৃষ্ণপ্রতিয়া বালকানপি বিহারাদম্পরতো বীক্ষ্য মুবৈব প্রয়োজনবিশেষক্ষ দর্শয়ন্তী শ্রীকৃষ্ণনাব্রের । ধূলীধ্ররিভাক্ষরং তাত মজ্জনমাবহ। জন্ম হে তেহদ্য তবতি বিপ্রেভ্যা দেহি গাঃ ছাটি:। মজ্জনং স্কানমাবহ বিধিবং কুক্ ইত্যর্থ: বিপ্রেভ্য ইত্যুৎপর্বৈতা তৎসম্প্রদানকদানোৎসাহ্বস্তং তম্মাস্যতি যতন্তব জন্মক্রমান্ত ভবতি ইতি পাঠে সদা বর্দ্মানস্ব্রের্থা। তথাপ্যনাগছেত তথ্য তলৈবাগতানন্যান্-বালান্ দর্শয়ন্তা মাৎসর্যাং জনয়তি। পদ্য পদ্য বয়স্যাংস্তে মাতৃমূইবলক্ষতান্। অঞ্চ রাতঃ কুতাহারো বিহরত্ব স্বলক্ষতা:। বীঞ্চা প্রেমা তজ্জেন কোপেন থেদেন বা। মাতৃভিমূ হাঃ স্বপনাদিনা
নির্মালীক্রতাশ্চ তে পশ্চাৎ স্বর্ভু অলক্ষ্তাশ্চেতি তথা তান্। উপসংহরতি ইথং যশোদা তমশেবশেবরং মন্তা স্বতং স্কেহনিবন্ধধী রূপ।
হত্তে গৃহীর। সহ রামমচ্যুতং নীরা স্ববাটং কৃতবত্যথোদ্যঃ এ ইথং সলালনোক্তি পূর্বক শনৈর্গমন প্রকারেণ। অলেব্রন চূড়ামণিনিব
শিবোধার্যামিপি স্বতং মন্তা মহন্তো হয়মিতায়ভূয়। অতএব স্বেহেন নিতরাং বদ্ধা বদ্ধা ক্রানাল্যারাদি মঙ্গলং। স্বত্রের ত্রাত্রমাত তদাগ্রহাজ্যক্ষ যোগ্যাভ্যান্ত্রমির বা অথানত্রং সদ্য এবেত্রর্থ:। কাৎ স্থান বা। হে তৃপেতি তত্র ত্য্য সেহোদ্য দর্শনান্তমের

## শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভোক্ষামাণ ইতি গুৰাং বিনা ভোকুমশক্তব্ভং তং স্বপিতরং কিং কুধ্যা পীড়য়দীতি ভাবঃ। স্থগ্হান্ যাতেতি যুম্মাতাপিত-বোংপি বয়মিব ক্লিশ্ভি তান্ স্থয়েতি ভাবঃ। বস্তুতস্ত ক্লীড়াবিচ্ছেদ এব তাংপ্যাং॥

তদপ্যনাগান্তং ক্রীড়োৎসাহাদিরাময়িতুং দানোৎসাহমুৎপাদয়তি বিশ্রেভা ইতি ॥

তদৈবাগতানন্যান্ বালান্ দশ্যিৰা মাৎস্ব্যং জনয়তি পশ্যেতি॥

তং অশেষদ্য শেষরং চ্ডামণিং স্বতং মহা নহশেষশেশ্বরং মহেতার্থং স তু অশেষশেষরং স্বতশ্চ ভবতীতার্থং। হহা তং স্বতং অশে হে তাত! তুমি কুলপ্রদীপ অনুজসহ শীল্র আগমন কর। কথন্ প্রাতঃকালীন আহার করিয়া আসিন্
য়াছ, হে পূল্র! দেখিতেছি তোমরা থেলায় প্রান্ত হইয়াছ, হে দাশাহ'! (রাম!) ব্রজপতি নন্দ ভোজন করিতে বদিয়া তোমাদের প্রতীক্ষা করিতেছেন। আইন আমাদের প্রিয় করিবে চল। পরে অন্যান্য বালকদিগের প্রতি কহিলেন, অরে! তোরা সব আপন আপন ঘরে যা। তদনন্তর পুনরায় আপনার বালককে বলিতে লাগিলেন বৎস! ধূলিহারা তোমার সকল অঙ্গ ধূষরিত হইয়াছে, স্থান করিবে চল, বৎস! অদ্য তোমার জন্ম নক্ষত্র, শুচি হইয়া ব্রাহ্মণদিগকে গোদান করিতে হইবে। বৎস! দেখ দেখি তোমার ঐ সকল বয়স্য বালকগণ স্ব জননীকর্তৃক কেমন মার্জিতশ্বীর ও সন্দর্মদেশ আলম্কত হইয়াছে, তুমিও চল, স্নান করিয়া আহারের পর অলম্কতশ্বীরে আদিবে, আসিয়া প্নরায় পেলা করিন্ত। হে রাজন্! যশোদা সেহবশে বদ্ধবৃদ্ধি হইয়া ঐ প্রকারে স্থীয় কুলের চূড়ামণি ভগবনি শ্রীকৃষ্ণকৈ আপনার তনয় বোধ করিয়া রাম সহ তদীয় হস্তে ধারণ করিলেন, পরে নিজ নিকে- হত্তে গৃহীত্বা সহ রামমচ্যতং নীষা স্ববাটং কৃতবত্যথোদয়ং ॥ ৯ ॥
বিগাপর্দ্ধা মহোৎপাতানসূভ্য রহমনে । নন্দাদয়ঃ সমাগম্য ব্রক্কার্যমন্ত্রয়ন্ ।
তব্রোপনন্দো নামাহ গোপো জ্ঞানবয়েছেধিকঃ । দেশকালার্থতভ্জঃ প্রিয়কুদ্রামকৃষ্ণয়োঃ ।
উত্থাতব্যমিতোহস্মাভির্গাকুলয়্য হিতৈবিভিঃ । আয়াস্ত্যক্র মহোৎপাতা বালানাং নাশহেতবঃ ।

औरत्रवामी।

ব্ৰজকাৰ্য্যং গোকুল্য্য হিতং ক্বত্যং ॥ > • ॥

## देवंकवरजावनी।

নুন্পালয়সীতি সলালনং সম্োধনং॥ ১॥

স্বাভাবিকেন তংপ্রেমা প্রেরিতা গোপপুলবাঃ। হর্ষ্যেক্মন্দলাহার্য্যং ব্রহ্মণার্য্য মমন্ত্রমন্ । যমলার্ক্রন্ত ক্রেরাগ্র্মাপনান্তরং সমাগ্র্য আছান্যাং মিলিয়া ব্রহ্মণার্য্য ব্রহ্মণার্য্য প্রিক্র্যাগ্র্যাপ্র প্রিক্র্যাগ্র্যাপ্র প্রিক্র্যাগ্র্যাপ্র প্রিক্র্যাগ্র প্রের্যালয় মিলিয়া ব্রহ্মণার্যাদিয় তর্ম ইতি জ্ঞানাধিক্যং বিশেষিতং। ব্য় আধিক্যান্যমায়াচ প্রীনন্দ্রাহ্র্যাপ্রেমান মন্ত্রী ক্রের্যালয় নিজ্ঞান্তর চিতি গ্র্মান্ত এবং তাল্লোক্রে যোগান্তাক্রা। কিন্ধু রামক্র্যায়ে প্রিয়ন্ত্রং প্রকৃত্যের প্রেমা হিতকর্তা। অতা মহোংপাতাম্ভবেন প্রীন্যান্তর্যারনিষ্ট শক্ষেব্যাহিত্যর্থ:। অত্য জ্যের্চ কনিষ্ঠ্য নাম বৈপরীত্য সম্ভবেহপি স্বর্যত এব পূর্বাং জ্যের্য উপনন্দ ইতি নাম ক্রতং। উপ স্মীপে নন্দ্রতীতি পশ্চান্তর্দ্যুগ্রেমেন কনিষ্ঠ্য নন্দেতি ক্রতং তং পিতৃচ্বরিত তর্ত্তর ক্রায় সংবাদিত্বান্তিরমন। তথা সর্ব্ব লক্ষণ সম্পর্যাদেন তথ্য ক্রির্যা আপি প্রমপ্রান্থেন ক্রের্যান্ত্র ক্রের্যান্ত্র গ্রহ্মানা্র গ্রহ্মান্ত্র গ্রহ্মানা্র গ্রহ্মান্ত্র গ্রহ্মানা্র গ্রহ্মান্ত্র গ্রহ্মান্ত্র গ্রহ্মান্ত্র ক্রির্যানির স্বান্ত্র ক্রির্যানির ক্রির্যানির ক্রের্যান্ত্র ক্রির্যানির ক্রির্যানির ক্রির্যানির ক্রির্যানির ক্রির্যানির ক্রির্যানির ক্রির্যানির ক্রির্যানির ক্রের্যান্ত্র ব্যান্ত্র ক্রের্যানের ক্রের্যানের ক্রের্যানের ক্রের্যানের ক্রের্যানের ক্রির্যানির ক্রের্যানের নিক্র্যানির ক্রির্যানির ক্রার্যান্ত্র নির্বানির ক্রির্যানির ক্রির্যানির নির্যানির বির্যানির বির্যানির ক্রির্যানির ক্রির্যানির ক্রির্যানির ক্রির্যান্তর নির্যানির ক্রির্যানির ক্রিক্র ক্রির্যানির ক্রির্যানির ক্রিক্র ক্রির্যানির ক্রিক্র নির্যানির ক্রির্যানির ক্রিক্র নির্যানির ক্রিক্র নির্যানির ক্রিক্র নির্যানির ক্রিক্র নির্যানির ক্রিক্র নির্যানির ক্রের্যানির ক্রেন্ত ক্রের্যানির ক্রেন্ত ক্রের্যানির ক্রিক্র নির্যানির ক্রিক্র নির্যানি

## শ্ৰীবিশনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

ষদ্য অকুলদ্য শেখরং মন্বা অবাটং নিজ্জানং উদয়ং অপনভোজনালকারাদি মঙ্গলং ॥ ৯ ॥
মহাবনে বিহুটেত্যবং বিজ্জিহীর্যা যদাজনি । বৃন্দাবনে হরেন্ডহের্ বৌপনন্দী ররাজ গীঃ॥
উপনন্দো নন্দরাজদ্য জ্যেটো মন্ত্রীতিপ্রাঞঃ॥

ি গোকুল্যা গোকুল্কাসিমাত্রস্য ॥ ১৫॥

তনে লইয়া আসিয়া কল্যাথ কর কর্ম সকল সম্পন্ন করিলেন॥ ৯॥

হে রাজন্! নন্দ প্রভৃতি প্রাচীন ২ গোপগণ রহদনে বহু বহু উৎপাত অমুভব করিরা একদা সকলে একত্র মিলিত হইলেন এবং গোকুলের হিতার্থ মন্ত্রণা করিতে লাগিলেন। তাঁহাদের মধ্যে উপনন্দনামা গোপ, জ্ঞান ও বয়সে সর্বাপেকা অধিক তথা দেশ কাল ও অর্থের তত্ত্বন্ধ ছিলেন। তিনি রামক্রফের প্রিয় করিবার বাসনায় কহিতে লাগিলেন, যদি গোকুলের হিত করিতে ইচ্ছা হয় তাহা হইলে আমাদের এ ছান হইতে অন্যত্র গমন করা কর্তব্য, কারণ এখানে নিরন্তর বালকদিগের বিনাশ হেছু মহা ২ উৎপাত উপস্থিত হইতেছে। অমন্তর উৎপাত দর্শাইয়া অমুতাপসূচনা পূর্বক, কৌতুক বশতঃ স্বয়ং প্রীকৃষ্ণকে জোড়ে লইয়া কহিতে লাগিলেন, দেখ বালঘাতিনী পূতনা রাক্সীর হস্ত হইতে এই বালকটী কথিছিৎ সুক্ত হইয়াছে। অপর ভগবান হরির অমুগ্রহ প্রযুক্ত ইহার উপরে সেই শকটটা পতিত হয় নাই । ১০॥

মুক্তঃ কথঞ্চিদ্রাক্ষণ্যা বালম্বা বাদকো হসে। হরেরমুগ্রহান্ত্র মনশ্চোপরি নাপতং ॥ ১০ ॥ চক্রবাতেন নীতোহয়ং দৈত্যেন বিপদং বিরং। শিলায়াং পতিতন্তত্ত পরিত্রাতঃ হ্রেম্বরৈঃ॥১১॥ বন্ধ ত্রিয়েত ক্রন্মরোরন্তরং প্রাপ্য বালকঃ। স্বাবন্যতমো বাপি তত্তাপ্যচ্যুতরক্ষণং ॥ ১২ ॥ যাবদৌৎপাতিকোহরিটো ব্রজং নাভিভবেদিতঃ। তাৰ্থালামুপাদায় যাস্যামো হন্যত্ত সামুগাঃ॥১৩

# विभन्नवामी।

বিপদং বীনাং পদং বিহারস্থানং বিয়ৎ আকাশং নীতঃ বিগতপ্রতিষ্ঠং বা ॥ ১১ ॥ অন্যতমো বা কশ্চিমানঃ অচ্যতেনৈব বন্ধণমাসীৎ ॥ ১২ ॥ অরিষ্টোহনর্বঃ। ইতঃ স্থানাৎ ॥ ১৩ ॥

## देवकवरणावनी।

দৈত্যেন নীতঃ তত্ত্র চ বিষদাকাশং নীতঃ তত্ত্রাপি বিপদং। অন্যতৈঃ। তত্ত্ব বিগতপ্রতিষ্ঠমিতি অত্যুদ্ধ্মিত্যধঃ। কুরেখরেঃ অচ্যতপ্রেরিতৈত্তৎপার্মদরপৈরেবেত্যধঃ। তদপাচ্যত স্বক্ষণমিত্যপি দক্ষাৎ॥ ১১॥

দাত্রগদাদমাহ বন্ধ ব্রিক্সেতেতি। হু:থৈরেবালীলমপি প্রযুক্তমিদমিতি। তত্রাপীতি ভূদণীতি বা পাঠ: ॥ ১২ ॥

এবমসঙ্কৎ পরমেশ্রেণ রক্ষা ক্বতা তাদৃশঞ্চ কুতোহস্মাকং ভজনং বেন সদা তেন সা কার্য্যা তদ্মান্তদাদিষ্টনীতিশাল্লামুসারাচ্চোৎ-পাত স্থানদেতদাও পরিত্যকুমেব যুজ্যত ইত্যাহ ধাবদিতি। ঔৎপাতিক: উৎপাতজ: অন্ধমিত্যাদিকং পূর্কবৎ শ্রীকুকাতিপ্রায়েশৈব॥১৩

## क्रमनमर्छः।

্ ব্যাধ্যাতাক চিৎস্থবেন। স্বাভাবিকেন তং প্রেমা প্রেরিভা গোপুলবাঃ। হর্ষ্যেকমললা,হার্য্যং ব্রুকার্য্য মমন্ত্রন্ ইত্যাহ গোপেতি। ব্রুক্সবিং ব্রুক্সবাক্ষিক্স হিতাল্সন্ধানাং। প্রেরক্দিতি শীলে ভিপ্॥

বালানাং ব্রন্ধানানিতি পাঠছরেংশি সম্হনির্দেশে। ব্রন্ধের শক্ষোচত এবাব্রে প্রিকৃষ্ণৈকনির্চন্তেরান্দেশাং। কংঞ্চিত্তেন নির্দিষ্টং নির্দারন্তি হরেরিতি ॥ ১০ ॥ স্থারেবরৈরচ্যতপ্রেরিতৈত্তৎপার্বদৈত্ত্বাপ্যচ্যুত রক্ষণনিত্যপি শক্ষাং ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ব্রন্ধানিতি পূর্ববং প্রীক্ষণাভিঞারে ॥ ১৩ ॥

# विषनाथहळ वर्डी।

চক্রবাতেন তৃণাবর্ত্তন বিরদ্যাকাশং বিপংপ্রাপকভাষিপদং। স্করেষরে স্থারেষরেশ বিষ্ণুনা। বছরং গৌরবেশ। তত্তাপীত্যুত্তর বাক্যে অপিকারাং ॥ >> ॥

व्यत्नी क्रकः॥ १२॥

পূর্ব্বমিন্ন বিষ্ণুকথাকীর্ত্তন দর্শন পরিচর্য্যাদিকং বছতরমাসীং। বাবরন্দস্য বালকো হরমভূত্তাবদান্তাদানু সর্ব্বাহিস্ব কথাকীর্ত্তন দর্শনাদিকং প্রতীক্ষণং ভবত্যভন্তাদৃশং চ কুতোহশাকং সম্প্রতি তত্তবনং বেন সদা বিষ্ণুনৈব রক্ষা স্যাদতত্তদাদিইনীতি-শার্ত্বমবাহুদর্ণীয়মিত্যাহ যাবদিতি ॥ ১৩ ॥

অধিকস্ত,চক্রবায় (ঘূর্ণাবায়ু) রূপধারী দানব তৃণাবর্ত এই বালককে স্বীয় বেগে বিহঙ্গমগণের বিহার-স্থান আকাশে লইয়া গিয়াছিল,এই শিশু তথা হইতে শিলাতলে পতিত হ্ন্,কেবল স্থরেশ্বরগণ রক্ষা করিয়াছেন ॥ ১১ ॥

আহে গোপগণ! এই বালক এবং অন্য কোন একটা শিশু যমলাজ্বন নামক প্রকাণ্ড তুইটা তক্তর মধ্যস্থলে থাকিয়াও যে মৃত্যুগ্রন্ত হয় নাই, তাহাতেও কেবল ভগবান অচ্যুত কর্তৃকই রক্ষা হইয়াছে বলিতে হইবেক॥ ১২॥

অতএব, যাবৎ পর্যান্ত উৎপাত জন্য অনুয় কোন অক্লিন্ট আমাদের এক্সণ্ডল অভিভব না করে, তাবপ আমরা বালক সকলকে লইয়া অমুজগণ সহ চল এ স্থান হইতে জন্যত্ত পমন করি॥ ১৩॥ বনং বৃন্দাবনং নাম পশব্যং নবকাননং। গোপগোপীগবাং সেব্যং পুণ্যাদ্রিভূণবীরুধং। তত্ততাদ্যৈৰ যাস্যামঃ শক্টান্ যুঙ্কুমাচিরং। গোধনান্যগ্রতো যাস্ত ভবতাং যদি রোচতে॥১৪॥

#### विश्ववामी।

পশব্যং পশুহভ্যা হিন্তং। নবানি কাননানি অবান্তরাণি বিদ্যুত্তে বন্দ্রিন্। ১৪ ॥

#### देवक्कवरकावनी।

নস্থ না সৰীক্ষ্য পরং স্থানং পূর্ব্বমারতনং ত্যজেদিতি নীতি:। তন্ত্রাহ বনমিতি। অন্তীতি শেষ:। বুলায়া: পায়কার্ত্তিকমাহাত্মারীতা।
প্রীভগবংপ্রেরণীয়ং প্রাপ্তারা বনমিতি সর্ব্বোগস্তব্রাহিত্যং সকলসকা পুনমন্বক্ষ স্চিতং। তদেবাভিব্যপ্তর্মিত পশব্য মিত্যাদিনা।
আরোগ্যাদিপ্রদক্ষলত্পাদিশ্বাৎ পশুভা হিতুং। নবকাননমিতি বৃহত্বন্য্য জীর্ণকাননম্বং স্চয়তি। তচ্চ চিরকালং গবাদিসমর্দ্দিশ্বাননার্ত্রাদিশ্বাৎ তথা বুলাবন্য্য পূর্ব্বেজবাস্থং স্চয়তি। হরোরনাদিকালত্বেংপি তম্মিরবিন্দিশেন তছ্চিত্রম্বর্বাবগমাৎ। গোপাদীনাং সেবামিতি তত্র হুইজ্বাদ্যভারং দর্শিতং। পূণ্যা এবান্তর স্থাণা বীরুধশুল- যত্র। অদম্ভব্যার্বং। হলস্তাহেতি টাপা
বীরুধা শক্ষ এব বা। সর্ব্বমিপি যত্র পূণ্যমিত্যর্থ:। পূণ্যদেন প্রসিদ্ধানানের তত্র স্থিতে:। কার্বরাদ্যপূণ্যবৃক্ষাদীনাং কচিৎ
স্থিতবে বা তক্ষ্মত্বেন পূণ্যদ্বনিদ্ধে:। তত্র বিশেষং প্রীহ্মিরবংলে প্রীরামং প্রতি কৃষ্ণবাক্যং। ক্ষরতে হি বনং রমাং পর্ব্যাপ্তত্পসংস্তরং।
নামা বৃল্যবনং নাম স্বাহ্রকৃষ্ণলোদকং। অঝিরি কল্টকবনং সর্বৈপ্র্তিগণৈ যুতং। কদ্মপাদপপ্রায়ং যুন্নাতীরসংস্কৃতং। নিগ্ধানিলবনং নাম স্বাহ্রকৃষ্ণলোদকং। গোপীনাং স্থপক্ষারং চাক্ষচিত্রবনান্তরং। তত্র গোবর্দ্ধনো নাম নাতিদ্রে গিরি র্মহান্।
ভাজতে দীর্থাশিধরো নক্ষনস্যের সক্ষরং। মধ্যে চাস্য মহাশাথো ন্যগ্রোধো যো জনোচ্ছিতং। ভাণীরো নাম শুণ্ডতে, নীল্যেয
ইবাস্বরে। তত্র গোবর্দ্ধনকৈর ভাণীরঞ্চ বনম্পতিং। কালিলীঞ্চ নদীং রম্যাংক্রক্ষ্যাবন্ধ যতঃ স্থমিতি॥

অত্র নাতিপুর ইতি নাতিপ্রান্তে নচ মধ্যে কিঞ্চ পার্ছদেশে এবেত্যর্থ:। অহো রুলাবনং রম্যং যত্র গোবর্ধনো গিরিরিতি স্কালাৎ। ক্রেত্রবিত বিদ্ধুক্ত বিষ্কৃত্ব প্রতিপ্রতি স্কালাৎ। ক্রেত্রবিত বিদ্ধুক্তবাং প্রতিপ্রতি স্কালাহ। কর্মার প্রতি বিদ্ধুক্তবাড় নক্ত্রিমান্তর্বস্যাং যোজনবর্মান্তর্ব যুম্নাদক্ষিণতীরে সম্প্রতি চ ভাগীরত্মা গোকপ্রসিদ্ধান্তর্বা লাক প্রসিদ্ধান্তর্বা লাক প্রসিদ্ধান্তর্বা লাক প্রসিদ্ধান্তর্বা লাক প্রস্যাহ্র ক্রেত্র প্রাক্তর্বা প্রমাণ্ডিব প্রাক্তর্বা লাক প্রস্যাহ্র ক্রেত্র প্রাক্তর্বা প্রমাণ্ডিব প্রতি লাক নির্বা রুলাবন্য পঞ্চরের প্রক্রাপ্তা পর্মায়্ত্রবাহিনী। ইতি। ক্রেত্র বং থলু স্ব্যান্ত্রপ্রকার স্বাবান্তর্বা কর্মার্যা ক্রিকার প্রক্রাপ্তা পর্মায়্ত্রবাহিনী। ইতি। ক্রেত্র বং থলু স্ব্যান্ত্রপ্রকার ব্যাহ্র ক্রেত্রা লাক ক্রেত্রা পর্মায়্ত্রবাহিনী। ইতি। ক্রেত্র বং থলু স্ব্যান্ত্রপ্রকার ব্যাহ্র ক্রেত্র লাক বিদ্বান্তর বিভারে চোচ্ছুরে চ যোজনপ্রমিতকেন যমুনাতীরস্থবেন চ যমুনোত্রর ক্রিরেহি ক্রিত্র তার বিলেবলে। তদেবং স্থিতে ভাগীরস্য বিভারে চোচ্ছুরে চ যোজনপ্রমিত্রকা কর্মার্যাহিল কর্মাত্র ক্রিরহালে কর্মান্ত্র ক্রিরহাল কর্মান্ত্র ক্রিরহাল কর্মান্ত্র ক্রিরহাল ক্রিরহাল কর্মান্ত্র ক্রিরহাল ক্রান্ত ক্রিরহাল ক্র

#### क्रमम्बर्धः ।

প्णासीकि। वृत्तांवनमा सराविष्ठीर्गद्रः (वांश्त्रकि ॥ >८ ॥ >८ ॥ >८ ॥ >० ॥

## विश्वनाथठक वर्छी।

নচাম্বৎপ্রাচীনরাজধানী নন্দীবরো গঙ্কং শক্যঃ বঙ্করাম্বনীখরাৎ পলাধ্যাত্র মহাবনে বরং অবলাম তদ্যারিষ্টদ্য সংপ্রত্যপি ভব্তেব ছিভেঃ। নচ ব্রজভ্তমর্মাত্র বিহাসা সংভবেদ্ধরোচকভাদেব তত্মান্বনীখরমহাবনহো মধ্যবর্ত্তি স্থানমেবাবাস্যুধ্ধ যুজ্যতে ইতি বিচার্ব্যাহ বনমিতি। পশব্যং পশুভো হিতং নবানি কাননান্যবাস্তরাণি যত্ত তথে।

তত্ত্বাং। তত্ত্ব বুন্দাবনে। ভৰতাং ভবস্তা: ॥ ১৪॥

হে ভাতৃগণ। রন্দাবননামক বন, পশুসকলের দ্বিতকর স্থান, তদ্মধ্যে ভূরি ভূরি অবাস্তর নবীন বন এবং পবিত্র পবিত্র পর্বত, তথা প্রচুর তৃণ ও লতা আছে, অতএব সেই স্থল গোপ গোপী ও গোসকলের স্থপেব্য, চল স্বাষ্ট সেখানে গমন করা হউক, শকট সকল গোজন করহ, আর বিলম্ব করা উচিত হয় বা, ভোমাদের যদি অভিক্রচি হয় গোধন সকল অগ্রেই পাঠাও॥ ১৪॥

তচ্ছুবৈকধিয়ে। গোপাঃ দাধু দাধ্বিতি বাদিনঃ। এজান্ স্থান্ স্থান্ স্থাযুক্ত্য যয়ু রুড়পরিচ্ছদাঃ ॥১৫॥ বৃদ্ধান্ বালান্ স্থ্রিয়ে। রাজন্ দর্ব্বোপকরণানি চ। অনঃস্থারোপ্য গোপালা যতা আতশরাদনাঃ ॥ গোধনানি পুরস্কৃত্য শৃঙ্গাণ্যাপূর্য্য দর্বতঃ। ভূর্য্যঘোষেণ মহতা যয়ুঃ দহপুরোহিতাঃ ॥ ১৬ ॥ গোপ্যো রুড়রথা নৃত্বকুচকুকুমকান্তয়ঃ। কৃষ্ণলীলাং জণ্ডঃ প্রীতা নিক্ষকণ্ঠাঃ স্থবাদসঃ। তথা যশোদারোহিণ্যাবেকং শকটমান্থিতে। রেজভুঃ কৃষ্ণরামান্ত্যাং তৎকথাপ্রবণোৎস্থকে ॥১৭ বৃন্দাবনং দংপ্রবিশ্য দর্বকালস্থাবহং। তত্র চক্রু ব্রজাবাদং শকটেরর্দ্ধচন্দ্রবং।

শ্রীমন্তাগবতম্।

## वीधवयामी।

একধিয়: বিপ্রতিপত্তিরহিতা:। ব্রজান্ শকটব্ছোন্ কঢ়া: শকটান্যারোপিতা: পরিচ্ছদা থৈকে॥ ১৫॥ যন্তা: ক্তপ্রযক্ষা:॥ ১৬॥
ন্কে: ক্চগতৈ: কুছুমৈ: কান্তি যাঁসাং তা:। ন্ছেয়ু কুচেরু যৎ কুছুমং তেন কান্তি যাঁসামিতি বা॥ ১৭ ॥
ব্রজাবাসং গোক্লবস্তিস্থানং॥ ১৮॥

# বৈষ্ণবতোষণী।

একস্মিন্ প্রীক্ষণ এব ধীর্যেষাং অতএব বিপ্রতিপত্তিরহিত্ধীত্বাৎ সাধিবত্যাদি ইতস্ততঃ স্থিতানেকব্রস্পর্বিগবাদীনেবাত্ত মেল-ন্ত্রিতা রুঢ়াঃ শক্টান্যারুঢ়াঃ পরিচ্ছদা যেষাং তে ॥ ১৫ ॥

কৃত্পরিচ্ছদত্বের বিরুণ্ন্ যানপ্রকারমাহ বৃদ্ধানিতি যুগাকেন। হে রাজন্নিতি তেবাং প্রীকৃষ্ণপ্রেমার্থি নিগমরতি ॥ ১৬ ॥ অত্রের বিশেষমাহ গোপ্য ইতি ছাভ্যাং। ক্রচা আরচ়া রথান্তংপ্রায়াঃ শকটভেদা যাভিতাঃ নিদ্ধাণাং স্ত্রীভূবণের মুখ্যনাইরেন্যান্দ্রিল ক্রের্যান নৃত্রেতাত্র তেবাং প্রথমার্থস্ত স্মীচিনঃ সর্কেরের ব্রজনীন স্তদ্গুণগানস্য প্রামিদ্ধাং। কৃষ্রামাভ্যাং সহ তয়ে র্জনক-কর্ত্রায়াঃ কথায়াঃ প্রবণাৎস্কে তয়েরের কর্তৃভূতয়ার্রা॥ ১৭ ॥ সমিতি সম্যক্ত্রেন মার্গং দদৌ সিদ্ধার প্রিস্থাতে রিতিবং। কিছা মিথোবদ্ধারীকৃতমহাশক্ট বৃক্তি ব্যুন্নান্তরণাদিপূর্বকং প্রবিশ্য উত্তরণস্থানত্ব যোলনপ্রিমিতভাং কালিয়হ্রদাহত্তরতো জ্রেয়ং

# **बी**विश्वनाथहळ्कवर्खी।

ব্ৰজান্ ব্ৰজ্বৰ্তিগ্ৰাদীন্ একতা মেল্বিস্থা কাঢ়াঃ শক্টান্যাক্ষঢ়াঃ প্ৰিচ্ছদা যেষাং তে ॥ ১৫ ॥ যতা প্ৰয়েষ্বস্থঃ ॥ ১৬ ॥ একং শক্টমিতি হুয়োরেব পুত্ৰহুয়াবিরহস্হনাশক্তেঃ ॥ ১৭ ॥

হে কুরুনন্দন! উপনন্দের ঐ সকল কথা শুনিয়া গোপগণ কোন আপত্তি করিল না, সকলেই সাধুবাদ প্রদান করত স্ব স্ব শকট নমূহ যোজনপূর্বক তছপরি পরিচ্ছদ সকল আরোপণ করিয়া গমন করিলেন॥ ১৫॥

হে রাজন্! সকল গোপই অতি প্রযক্ষে বাল, র্দ্ধ, স্ত্রী তথা সমুদার গৃহ্ধোপকরণ শকটোপরি আরোহণ করাইয়া ধসুর্ব্বাণ গ্রহণ করিয়াছিল। তাহারা গোধন সকল অত্রে করিয়া চারি দিক্
হইতে ভূগ্য ধ্বনি সহ শৃঙ্গবাদ্য করিতে করিতে পুরোহিত সঙ্গে করিয়া যাইতে লাগিল। ১৬॥

হে ভারত! গোপীগণ! রথারত হইয়া প্রীতচিত্তে কৃষ্ণলীলা গান ক্রিতে আরম্ভ করিরাছিল, কুচ মণ্ডলে অভিনব কৃষ্ণ বিলেপিত থাকাতে তদ্বারা তাহাদের কান্তি কমনীয় হইয়াছিল। অপর, তাহাদের কণ্ঠদেশে উৎকৃষ্ট নিচ্চ (কণ্ঠভূষণ) এবং পরিধান স্থানর বসন ছিল। তথা যশোদা ও রোহিণীও এক শকটে আরোহণ করিয়া ঐ রূপ দীপ্তি পাইয়াছিলেন, রামকৃষ্ণের কথা প্রবণার্ধ তাহাদের চিত্ত সর্ব্বাই উৎস্থক হইল॥ ১৭॥

टर नृथ ! वृग्णावन मर्व्यकात्म छ्यावर, त्रांभगन उन्तर्सा थातम कविक्रा त्रांक्रम वमि चान

র্ন্দাবনং গোবর্জনং যমুনাপুলিনানি চ। বীক্যাসীছুত্তমা প্রীতী রামমাধবয়ো মৃপ ॥ ১৮॥ এবং ত্রজোকসাং প্রীতিং যজতে বালচেষ্টিকৈঃ। কলবাক্যৈঃ স্বকালেন বৎসপালো বস্থবতুঃ ॥১৯॥

#### क्षित्रवामी।

~ স্বকালেন তদেখাগ্যকালেন॥ ১৯॥

বৈষ্ণবতোষণী।

দক্ষিণতো মথুরা নৈকট্যেন সম্বট্যাপাতাং। অথবা কালিয়ন্ত্রদক্ষিণস্যাং দিশি বক্ষ্যাণাৰু জ্বাসান্মথুরার্ন্দাৰনং সন্ধি ব্রংস-ক্রীড়নভক্তক্রীড়নয়ো মধ্যপ্রদেশ এব তৎ স্যাৎ মহাকাননত্বেন নির্জ্বনত্বাৎ। অর্দ্ধচক্সবদিতি পশ্চান্তাগে দ্রব্যাদিস্থাপনাপেক্ষয়া পুরত চ গুবাদীনাং স্থুধনির্গমায় বিত্তীর্ণছারাপেক্ষয়। সদা সর্ব্বত তথৈবাবাদ সংনিবেশোপপত্তে:। তথাচ বিষ্ণুপুরাণে। স সমাবাদিত: সর্বো ব্রজ্ঞা বৃন্দাবনে ততঃ। শক্টীবাট পর্যান্ত শক্ত্রাদ্ধাকার সংস্থিতিরিতি। এছিরবংশে। নিবেশং বিপুলং চক্রে গবাঞ্চৈব হিতা-য়চ। শকটাবর্ত্ত পর্যান্তং চন্দ্রাক্রাকার সংস্থিতমিতি। এবং তদিনে শকটেরের চত্ত্বং। দিনান্তরেচ যথা প্রীহরিবংশেণ কণ্টকীভিঃ প্রবন্ধাভি-ন্তথা ৰুণ্টকিভি ক্র'মে:। নিথাতোচ্ছিতশাথাভি রভিগুপ্তং সমস্তত ইতি। অত কণ্টকীভি: কণ্টকযুক্তাভিব্বদ্বীভিরিত্যর্থ:। আসাং ক্রমাণাঞ্চ জীবতামেব রোপণং 'জ্ঞেয়ং। শাধানাক্ত ছিল্লানাং তথান্যো বিশেষ স্তবৈত্তৰ মধ্যে যোজনবিস্তারং তাৰাদ্বিগুণ মায়তং ইতি। তথা কালিয় হল বৰ্ণনে ব্ৰজ্সোভিত্ৰত গুদা ক্ৰোশমাত্ৰে নিরাময়ে ইত্যাদি উত্তর শব্দোহত প্রায় ঈশানকোণবাচী তদ্য বৃক্ষিণস্যাং দিশি মহাপুর্য্যা মথুরায়া নিবেশাৎ **ঈশানকোণস্য চোত্তরাস্থগতত্বা**ৎ। **অতএবাদিবারাহে**হপি ত**ংস্থানস্য মাহাত্ম্য**ং। উত্তরে হরিদেবস্য দক্ষিণে কালিয়স্য চ। অনুয়োদেবয়োম ধ্যে মুতান্তে চাপুনর্ভবা ইতি অত্র হরিদেবে। গোবর্দ্ধনাধিষ্ঠাতা কালিয় কালিয় प्रमन हेि छाउर। मथुताया नाजिपतरच शीपर हानर निर्झनरमत शूर्या: श्रम्ठामिश् शञ्चार महाघन वनचाक। **এবং का**नियमुमशा নৈশ্ত কোণে কোণান্তরে সন্ত্রীকরাখ্যং প্রদেশমন্তর্ভাব্য দৈর্ঘ্যে যোজনবয়ং ব্রজঃ স্যাৎ কিন্তু গোবর্দ্ধনমত্রে বিধায়েতি জ্ঞেয়ং। অন্যত্র হি ছারা যোগ্যত্বং দক্ষিণস্যাং মধুরাখ্যমহানগরবাদেন আগ্রেখ্যাং তেন ষমুনা চ। পুর্ব্বস্যাং যমুনায়া ঐশান্যাং কালিয়ভ্রেন গবাদি-প্রচারদ্য সংকীর্ণস্থাৎ উত্তরদ্যাং বায়ব্যাং পশ্চিম্দ্যাঞ্চ শীত বাতাদ্যাগমনেন ছংখহেতুছাও। অদ্যাপি মধুরাদিদেশে অশান্যাদি-দিক চতুইয়াদনাত্রৈব গোঠিমারনির্মাণদর্শনাচ্চ। অতো ন নঃ পুরো জনপদা ন গ্রামা ন পুহা বয়ং। বনৌকসন্তাত নিতাং বন-শৈল নিবাসিন ইত্যক্তা পুরোঘারাগ্রনেশন্তখাৎ জ্রীগোবর্দ্ধনলৈয়ব পূজাবিধানং গম্যতে। তদেবং শ্রীনন্দরাক্ষ্য মুখ্যাবাসো নন্দীখর-গিরিমভিতো যঃ প্রসিদ্ধঃ স তু কালাস্তরে জাত ইতি জ্ঞেয়ং। অতএব ইতস্ততো ব্রন্ধতীতি ব্রন্ধো নিক্ষচাতে। অতএব গোঠ নন্দনিলয়ে বা গোরই ইতি লোক বিখ্যাত্য। গোঠনন্দনিলয়গোকুলাখ্যানি স্থানাম্তরাণি চাত্রৈব বুন্দাবনে দৃশ্যক্তে ইতি দিক্। তচ্চ বৃন্দাবনং ভেদত্রয়াত্মকমেব প্রীক্ষক্ষ্যাপি প্রমমনোহর্মিত্যাহ বৃন্দেতি। বুন্দাবন্মিতি কেবলস্য সৌষ্ঠবং। গোবর্জন্মিত্যা-দিনা তত্তত্য বিশেষাণাং। উত্তমেতি বৈকুষ্ঠাদ্যপেক্ষ্মা। অহে। নধুপুরী ধন্যা বৈকুষ্ঠাচ্চ গরীষ্দীতি প্রাপ্ততাদৃশমহাম্ম্যমধুবন-মহাবনাদ্যপেক্ষ্যা চ। অতএব মাধ্বশব্দপ্রয়োগঃ। সর্বলোক্রমণ্ছেতোরপি রাম্দ্যেত্যের কিং বক্তব্যং তদ্যাপ্যালম্বনর্পস্য সর্ব্বসম্পত্তিদেব্যাঃ পত্যরপীত্যর্থঃ। এবমাশ্চর্য্যেণ প্রহর্ষেণ চাহ হে নুপেতি॥ ১৮॥

অত্র প্রীবৃহত্বনলীলারাং প্রসিদ্ধা বরোযোগ্যতাদিনা চ ক্রমোহরং লক্ষ্যতে। পুতনাবধঃ শক্টভঞ্জনং নামকরণং বিদ্বণং অঘুষ্ট-

ক্রমসন্দর্ভ:।

ডত্রেতি শ্রীহরিবংশরীত্যা কালিয়হ্রদান্দক্ষিণপ্রায়ায়াং দিশি অষ্টকোশী দীর্ঘ: চতু:ক্রোশী বিস্তীর্ণো ব্রজাবাদ ইতি ক্সেয়ং॥ ১৮॥ কলবাকৈয় ম'নোহরভাষিত্রৈশ্চ॥ ১৯। ২০॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

অন্ধচক্রবদিতি পশ্চারাগে প্রতি বন্ধব্যস্থাপনার্থং অগ্রভাগে বিস্তীর্ণে গবাদিনাং সুধনির্গমার্থক। শক্টীবাটপর্যান্তশুক্রাদ্ধিকার সংস্থিতে ইতি বিষ্ণুপুরাণেচ এবং তদিনে শক্টেরেব চক্রু:। দীনান্তরেতু যথা জ্বীহরিবংশে ক্টকীভিঃ প্রবৃদ্ধাভি তথা কণ্ট-কীভি ক্র'মো:। নিথাভোচ্ছি তথাথাভিরভিশ্বপ্রং সমন্তত ইতি ॥ ১৮ ॥

স্বকালেন স্বোচিতসময়েন ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥

করিল। সেই স্থান ভূরি ভূরি শকটে অর্কচন্দ্রের তুল্য হইয়া রহিল। হে রাজন্ ! রন্দাবন, গোন-র্কন এবং যমুনাপুলিন অবলোকন করিয়া রাম ও কৃষ্ণের পরম প্রীতি জ্মিল। ১৮॥

ठाँशत्रां वामाता के अध्यापान कार्या विक्रिया के विक्रिय के विक्र

অবিদূরে অজ্পুবং সহ গোপালবালকৈ:। চারয়ামাসতু ব্বৎসান্ধানাক্রীডাপরিচ্ছদৌ ॥ ২০॥ কচিমান্যতোবেণুং কেপণে: কিপতং কচিৎ। ক্লুচিৎপাদৈং কিঙ্কিণীভিং কচিৎ কুত্রিমগোর্থৈ:। ব্যায়মাণে নর্দতৌ যুযুধাতে পরস্পরং॥ ২১॥

### শ্রীধরসামী

কৌমারলীলাং নিরূপরতি অবিদূর ইত্যাদিনা॥২০॥

ক্ষেপণৈ বি**ৰামলক্ষলাদি জি: কিছিণীবুঁকৈ: পালৈ:** ক্ষিপততাড়য়ত:। বংসপালা এব কুত্রিমা: কম্বলাদিপিছিত। ব্যর্পম**র্থ-**কুর্বত্তি তৈ: সহ **স্বয়মণি তথৈব ব্যায়মাণৌ নর্দত্তো** তদ্মকারিশকান্ কুর্বস্তো যুযুধাতে ইত্যর্থ: ॥ ২১ ॥

### देवकवरणावणी।

জাই রিশণং তৃণাবর্ত্তবং:। প্রথমবিশ্বদর্শনং গোপীভি: ভোভিত ইত্যাদি ক্রীণীহি ভো ইত্যাদি বংসপুছে গ্রহণং মৃত্তিকাভক্ষণং বিতীয়বিশ্বদর্শনং দধিপয়ন্টের্যাং উন্ধানক: সরিজীরগতমিত্যাদি বৃন্ধাবনপ্রবেশ ইতি। অথ প্রিক্লাবনলীলামুপক্রমতে এবং
পূর্ব্বোক্ত প্রকারেণ কলবাকৈয় ম নোহরভাষিতৈত প্রীতিমানলং যছে ছোঁ। কলবাক্যাবিতি পাঠেহিপি স এবার্থ:। স্বকালেনেতি কৌমারমধ্য এবেত্যর্থ:। কালেনারেন রাজর্থে রামঃ ক্রকণ্ট গোকুলে। অন্তই জাহুভি: পত্তি বি চক্রমতুরোজ্বসা ইত্যুক্ত বাচত তুর্থস্যাপি
বর্ষস্যাবিত বর্ষস্যাবেত হবল্যং কৌমারগরিত্যাগো লভ্যতে। পঞ্চমস্য তু সাধারণ্যাপতে:। বৃন্ধাবনে চ কৌমারলীলা বংসহরণসম্বন্ধিবর্ষস্যাব্যারভাষাৎ প্রায়: সার্দ্ধং একবর্ষং ভবেং। এবং বিহারে: কৌমারৈ: কৌমারং জহতু প্র জে ইতি তদনস্তরম্ক বিলাগত বাল্যলীলারাং
বর্মতি বন্ধে ইতি হি বন্ধ্যতে। তন্মান বৈব্যুক্ত রিতি। আলো বতু শ্রীহরিবংশে বৃহ্বনক্রীড়ায়ানেবোক্তং এবং তৌ বাল্যমুজীণো
ক্রক্ষসক্র্যণাবৃত্তী। তন্ধিরের অলহানে সপ্তব্রে বিভ্বতুরিতি। তচ্চ প্রোচ্ছাপেক্ষয় সপ্তবর্ষাবিবেতি মন্তব্যং। বিরোধান্তরবং
করভেদ বিবক্ষয়েতি কেচিং ॥ ১৯ ॥

অবিদ্রে ইতি নাতিদ্রে বাল্যাৎ নচাতিনিকটে সন্ত্পাভাবাৎ স্থধবিহারাসিদ্ধেশ্চ কিন্ত ব্রজ্ঞানাদাহ্বানপ্রাপ্তপ্রদেশে ইত্যর্থ:। নানাবিধা বেণুবেজ্ঞশুক্ষবীণাকন্কাদর: ক্রীড়ারা: পরিচ্ছদা: সাধনানি যরোস্তে ।।

তানেব দর্শয়ন্ বাল্যক্রীড়ামাহ ঘাভ্যাং। তত্র কচিদিতি সার্দ্ধকং। কশ্বিংশিচৎ কালে দেশে বা তদেঘাগ্যে। বেণুবাদনং বয়োদেশয়ো-বৈ শিষ্ট্যাত্তৎপ্রভৃত্ত্যের প্রস্তুরং ইতি জ্ঞেয়ং। ক্লেপগৈ গ্রাদিভি বিষামলাদিকং দ্রে প্রক্রিপন্তঃ কিন্ধিনীষ্টকঃ পাদে: নৃত্যতঃ ইতি শেষং। স্বস্থ্যেনাপাদিতেঃ ক্রিনগোর্ধেঃ সহ॥ >>॥

#### ক্রমদন্দর্ভ:।

কেপণৈ র্বরিশেধৈঃ লোষ্ট্রাদিকং ক্ষিপতঃ। কি ক্ষিণীযুক্তৈঃ পাদৈ নৃত্যিত ইতি শেষঃ। ক্রিমগোর্ধেঃ অস্বৰ্ণীক্তেঃ॥ ২১।২২।২৩।২৫।২৫।২৬ ॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰৰতা।

ক্ষেপণৈ র্ডোরীবন্তৈ বিবামলকাদিকংক্ষিপতঃ দূরে চালয়তঃ। কিঙ্কিণীযুক্তিঃ পালৈঃ ক্ষিপত স্থাড়য়তঃ। কৃত্রিমগোরুবৈঃ ক্ষলাদিপিহিতবালকৈ রুধাকারেঃ সহ স্বয়মণি তথৈব ব্রায়মাণে নর্দত্তো তদমুকারিশন্মান্ কুর্বাণো যুয়্ধাতে ॥ ২১ ॥

# কালজ্ঞমে বৎসপাল হইয়া উঠিলেন ॥ ১৯॥

হে রাজন্! রামকৃষ্ণের কোমার লীলা বলি, এবণ কর। তাঁহারা ছই জনে বিবিধক্রীড়োপ-করণ লইয়া গোপবালকদিগের সৃহিত এজভূমির অদূরে বংসচারণ করিতে আরম্ভ করিলেন॥ ২০॥

কেরিয়া উৎক্ষেপণ করেন, কোথাও কিঙ্কিণীষুক্ত চরণের আঘাতে ভূতল তাড়ন করত তদ্ধারা খেলায়-নান হন, কোথাও বা বালকেরা গাত্তে কম্মলবন্ধন করিয়া ক্তিমর্ষের অনুকরণ করিতে থাকিলে আপনারাও র্য সাজিয়া তদসুকারি শব্দ করিতে ২ পরস্পার বুদ্ধে প্রবৃত্ত হন ॥ ২১ ॥ सम्बन्ध क्रिक्क न् राज्य थाकरण यथा। कमाहिमर्गम्नाजीत्त वर्गाः कात्रग्राः वर्षेकः। वर्षेत्राः कृष्ण्यनार्थाः क्षिपाः प्रक्रिंगः वर्षेत्रः। वर्षेत्रः कृष्ण्यनार्थाः कृष्ण्यनार्थाः कृष्ण्यनार्थाः कृष्ण्यनार्थाः वर्षेत्रः।

তং বৎসক্ষপিণং বীক্ষ্য বৎসমূপগতং হরিং। দর্শয়ন্ বলদেবায় শনৈ মুশ্ব ইবাসদৎ ॥ ২৩॥ গৃহীত্বাপরপাদাভ্যাং সহ লাক্ষ্যকার আময়িত্বা কপিথাতো আহিণোন্যাতকীবিতং।

# विश तथांगी।

ক্ষতৈ: শকৈ জন্ত্ন্ হংসমন্ত্রাদীন্॥ ২২ । মুগ্ধ ইব অঞ্চানন্ত্রি আাসদৎ সমীপমাগমৎ॥ ২৩ ॥ অপরপাদাভ্যাং সহ লাজুলং যথা ভবতি তথা গৃহীতা॥ ২৪ ॥

### বৈঞ্বভোষণী।

শবিত্রপ্রকং। প্রাক্তি লৌকিববালকৌ বথা তথৈবেতি নির্দারণাবেশন প্রাল্যনীলানির্চাকা। এবং বেশ্বারলাদিন্দ্রীজরা পরিত্রমণ্যের মুখ্যং প্ররোজনং বংসচারণক তর্পকরশ্বেনেতি বোধরতি। তার বেশবিলাসবিশেষাশেলাকা প্রীর্ম্পুরাণে। বর্ষ্পিত্রকালিন্দ্রীজরা কর্মপুশাবভংসকৌ। গোপবেশুক্রভাতোলেটা পত্রবালার্কতবনৌ। কাকপক্ষরের বালৌ কুমালাবির পাবকী। হস্তেট চ রম্বেটা চ চেরত্বর্গরহনাং। কচিক্ষসভারনোন্যং ফৌজ্যানৌ তথাপরির:। গোপবালিঃ সবং বংসাংশচাররতৌ বিচেরতুরিতি। প্রহিরিবংশে চ । পর্বালয়ং ক্রতিম্বার্থ বালকতৌ বর্মাননৌ। তওভাতে বনগতৌ বিশীর্ষাবির পরলো। মর্রাল্লকণাণ তৌ পরবাণীভ্যারিলো। বন্মালাকুলোরকৌ ক্রমণোভাবিবোলনতৌ। আরবিল্লকতাশীড়ো রক্ষ্যভোগবীতিনো। সশিকাত্বক্রকেটা বোপবেশ্প্রবালকো। কচিক্সভাবনোন্যং ক্রিড্যানেনী ক্রচিং কৃচিং। পর্ণপ্রাান্ত ক্রতিরিলাক্তরিবিণে। এবং বংসান্ পালরতৌ শোকরতৌ মহাবনং। চংচ্ব্যেতে রমভৌ শ কিলোরাবির চক্ষদৌ। ইতি। অন বিশীর্ষাবিবেতি বেণীত্রর্য্বত-শির্ক্তবিং। এবং বংসপালনে প্রথমেহ্লনি বাল্যকীড়োদিলা। আনান্দ্রিপ প্রার্জাল্লাকরো। তবৈর ক্রাচিধিশেরমাহ ক্রাচিদিভ্যাদিলা। ব্যুনাতীরে ইতি প্রারো বংসকীড়নকে ক্রক্রীড়নকরো: স্বীপে। শ্বক র্মক্রান্দিং প্রির্জননৈরিত্রিত । তৈঃ সহেতি তালুক্ স্থবিবাতকক্রেনাতিবেয়বং ব্যক্তিম । ২২।

বৎসমধ্যে বংসক্রপেণাসমনক তবং বলাৎ কংস্থাহিতছক বোধছতি পূজনালিহননাথ। হরি ছ'টানাং আণ্চরণাৎ শিটানাক মনোহরণাথ। মুক্তিপ্রদানেন তস্যাপি ছঃধহরণাথ। বললেবার দর্শয়ন সংজ্ঞাতন তং ভাপয়লিভি কৌতুকার্থং॥২৩॥

গৃহীবেতি তৈ বঁ্যাথ্যাক:। তত্ৰ সহ সাজু সং বধাস্যান্তথা গুহীছা কেন ছায়ভূতেন ইত্যাপেক্ষমাহ অপরেতি যোজ্যং। यহা অ-

### विविचलां पहकवर्ती।

ककृत् दः ममयुत्रागीत्॥

कुक्क वनरवाद्रिकि व**द्ये कार्यो**॥ २२ ॥

मर्यवन् आगः कवा बगरनदः काशवन् यूद्ध हेद अजानविव आगमः निक्षेः थान्।। २०॥

অপরাভ্যাং পাদাভ্যাং দহিতং লাকুলং ভক্ত গৃহীয়া অচ্যুতঃ দুংসারসিক্ষো চ্যুতিং তক্ত দুরীকুর্কন্। কশিথাতো ইতি তদেহেদৈব জীজোশবোণিকশিশক্ষপাতনার্থমিতি ভাবঃ। গ্রুং জীবিতং যত ওদ্বধা ক্যান্তণা প্রাহিণোং ॥ •

কখন ২ শব্দ দারা হংস মর্রাদি জন্তর অমুক্রণ করত প্রাকৃত বালকের তুল্য অমণ করেন হে রাজন্ ! একদা রামকৃষ্ণ স্বীয় বয়স্তগণ সহিত বংসচারণ করিতেছিলেন, সেই সময় একটা দৈত্য তাঁহাদের হিংমা করিবার বাসনায় আসিল ॥ ২২ ॥

ভগবান্ হরি সেই বৎসক্ষপধারি দৈত্যকে বৎস্যুথের মধ্যগত দেখিয়া বলদেবকে দেখাইয়া দিলেন। পরে আপুনি বেন কিছুই জানিতে পারেন নাই এইরপ ভাব প্রকাশ করিতে করিতে ধীরে ধীরে তাহার নিকটে গেলেন । ২০॥

সমীপে উপস্থিত হুইয়াই বংসক্লপি সেই অহুকের পশ্চাৎ ভাগের ছুই পদ সহিত লাস ল(পুচ্ছ) ধরিয়া

স কপিখৈ ম'হাকার: পাত্যমানৈ: পপাত হ। তং বীক্ষ্য বিশ্মিতা বালা: শশংস্থ: সাধুসাধ্বিতি। দেবাশ্চ পরিসম্ভূটা বর্ষু: পুষ্পসম্ভূতিং॥ ২৪॥

তো বংসপালকো ভূষা সর্বালোকৈকপালকো। সংপ্রাতরাশো গোবৎসাংশ্চারম্বন্তো বিচেরতু: ॥২৫ সং সং বংসকুলং সর্ব্বে পায়য়িষ্যন্ত একদা। গছা জনাশরাভ্যাসং পায়য়িছা পপু র্জলং। তে তত্ত্ব দদৃশুর্ববালা মহাসত্ত্ববিদ্যান্ত । তত্ত্বে ব্স্তুনির্ভিন্নং গিরেঃ শৃঙ্গমিব চ্যুতং।

### विधनवामी।

नर्त्सवाः लाकानारमरको मूर्थो शांगरको ॥ २० ॥ ष्वष्ठानः नमीशः॥ २७॥

#### देवकवरणावनी।

বাড়ান্ন: পাক্ষডাং সহিতং লাক্ লং ওস্য গৃহীত্বা জামরিতা তমিতি পুর্বেশাবর:। তদানীত্তনক্ষেপ ক্রীড়নোপবাগিকপিথফল-পাতনার্থং ক্রপিথাত্রে চিকেল। অচ্যুত ইতি তং মহাকারং শ্রময়তোহলি নিজ্যানাচাধনাও। স ইতি সাহ্নিকং স দৈত্যে মহাকার ইতি মরণে নারাপগমাৎ নিজমহাকংসদৈত্যক্ষণাতিব্যক্ষে: বিভূংশাখাবে ক্রপিথানি চ লীলরা ইতি ক্ষামাণধাও। ক্রিথিকলৈ: সহ। হ বিশ্বরে। তাদৃশ মহাকারজারি বালর্মতাইরৰ মহাক্রিথাক্রেওজেপাও। বিশ্বিতা তম্য মহাকারভাদিনা হেলরা ব্যান চ পাধিতি সহসা ভূমিতর্কজানাও ভূমিবারণাক্ষ ত্রু বিশ্বরাজ্যাক্ত বীন্দা দত্তব্যেশ অমরণাঞ্চ প্রমহিত্যভূমিতাহে দেখাকেতি ॥ ২৪ ॥

সর্বালোকানাং সুখ্যপালকারপি বংসগালকো ভূজেতি ভক্তবাংসল্যানিবিশের উজ্ঞঃ। বরা। বংসপালকৌ ভূজা সর্বলোকৈক-পালকো সজ্জে বংসাল্লানিবিশের কেন্দ্রলানিবিশের কিন্দ্রলানিবিশের কিন্দ্রলানিবিদিনিবিশের কিন্দ্রলানিবিদিনিবিলিবিলিবিলিনিবিলিনিবিলিনিবিলিনিবিলিনিবিলিনিবিলিনিবিলিনিবি

ে বকান্থ্রবরঃ ৰক্ষান্ সর্বোধাং বাধানাং ব্গপ্ৰকদর্শনান্দর্ধানাহ সমিতি। সর্বোধি আছকাদরঃ। জনাশরো মহাসরঃ নন্দীবরপিরেঃ পূর্বতো বকস্থলমিতি প্রসিদ্ধং তভান্তিকংক সহাস্থাং অতিস্থৃত্যাণিবিশেবং ক্ষেষ্ট্রিং বকবদ্ধধানেনৈক্ত স্থিত্তরা বর্তমানং। অত গুলালিব্যেন্চ্যুতং শৃস্মিব তস্য খেতশিল্ডাৎ গ্রেক্সাকার্চালি উজ্জন্তর চ্যুতত্বে বেজুঃ বজেতি। স্ট্র প্রসিদ্ধো। মহান্ চ্টত-

# विविनाशिकक वर्षी।

স বৎসাক্ষর: ॥ ২৪ ॥

একপালকৌ মুখ্যপালকৌ। প্রাতরাশ: প্রাতর্জোজনং ॥ ২৫ ॥

राज्ञण निर्खित्रः हिन्नः शित्रिण्क्यियं॥ २५ ॥

কিয়ৎক্ষণ ঘুরাইলেন, পরে গতাস্থ করিয়া কপিথ বক্ষের মতো নিক্ষেপ করিলেন। হে রাজন্। ঐ বংসাস্থারের বিশালশরীরের ভারে সেই কপিথ তরু ভ্যা ইছ্যা পতিত হইল স্থতরাং ঐ অস্বরও তাহার সঙ্গে পতিত হইল। তদনস্থর মৃত অস্থর দর্শন করিয়া বালকদিগের বিস্ময় জন্মিল। আকর্য্য প্রকাশ করিতে ২ সকলেই সাধুৰাদ করিতে লাগিলেন। আর দেবগণ পরিতৃত হইরা স্বর্গ হইতে পুস্প বর্ষণ করিলেন॥ ২৪॥

হৈ রাজন্ ! রামকৃষ্ণ সকল লোকের মুখ্য পালক, তাঁহারা ছই জন বংসপালক হইয়া প্রাত্রাশ অর্থাৎ প্রাত্কোলীন ভোজন সামগ্রী সঙ্গে কাইয়া ইতস্ততঃ জমণ কুরিয়া বেড়াইতেন ॥ ২৫ ॥

একদা বালক দকল স্ব স্ব বংসকুলকৈ জলপান করাইব বলিয়া জলাশুরুসনীপে গ্রন করিল এবং বংগদিগকৈ জলপান করাইয়া আপনারাও পান করিতে লাগিল। বে সহারাজ! দেই আনে জি সকল বালক মহাসত্ত একটা পক্ষি দেখিতা পাইল, দে বজ্ঞ নির্ভিন্ন প্রতিষ্ঠাত একটা প্রক্রি নারে সকল বালক সাতিশার ভীত হবল। বে নাজন। এ প্রক্রি

সবৈ বকো নাম মহানহ্মরো বক্তরপধৃক্। আগত্য ভরদা কুঝং তীক্ষ্কুণ্ডোহ্এসৰ্মী ॥ ২৬॥ ক্ষঃ মহাবকগ্রন্তঃ দৃষ্ট্রা রামানরোহর্ডকাঃ। বভুবুরিক্রিরাণীৰ শিলা আগেঃ বিচেতসঃ। তং তাসুষ্লং প্রদহস্তমমিবদেয়াপালসূত্রং পিতরং জগলাুরোঃ। তালনা ठाक्क मामाधिक स्वाक्षक व्याप्त क्षा भूनत्र का भूनत्र का भूनत का তমাপতন্তং স নিগৃহ তুগুয়ো র্লোড্যাং বকং কংসস্থং সভাং গডিঃ।

### विश्वचारी।

রাম আদি র্যেবাং তে নতু রামঃ॥ ২৭॥ कुअरबान्टरकाः वीत्रगवर व्यवस्त्रिज्ञविरमवर्षे ॥ २৮ ॥

#### देवकवरकावनी।

মত্বাদিনা বপুৰা চ বৰুত্ৰপথুক্ নিভামেৰ ভীক্ষতু ভোষণি ৰলবানণি অগ্ৰসদেব নত্বন্তৎ কিঞ্চিনিটং কৰ্ত্বন্ত্ৰাদিভাৰ্থ:। গ্ৰসন্মণি কেবনং প্রীভগবদিচ্ছরৈব ইত্যাহ ক্লকং ছর্বিতর্কবিচিত্রমহার্লীলার্ণবিশ্বেন প্রসিদ্ধমিতার্থ: ॥ ২৬ ॥

বিচেতলো বভূবু মু মূহ: প্রীভগবলাহাত্মাবেদিনোহপি ছইং বৰুং সদ্যোহত্তং শক্তা অপি প্রীবলদেবাদর পরমত্বেহাতুলতরা সন্যঃ সর্বা-ক্ষানক্রিরাশক্তিরহিতা বভূব্রিতার্থ:। অব দৃষ্টান্ত:। প্রাণং বিনেক্রিরাণীবেতি। শ্রীবদদেবভাগি তাদুশর্বং শ্রীক্সন্ধিনী হরণার গতে শ্রীকৃক্ষে मृगारक। अन्देशक अगरान् त्रात्मा विभन्नीत्रन्त्शामग्रमिकाति। कान्म्नमित्रद अनर्खः युक्दैविविवीदनोकूरकन मुवाबः अविहेना গলে নেতৃষশকাদা তালুমূল এব লগভাং। গোপালতহুষণি কেনচিদংশেন অগলাবো ব্ৰহ্মণঃ পিতর্ষিতি নহাকোতুকিছাৎ তদ্য বকেন প্রসনং মহাহভাবদাচ্চ সম্যাপ্রসনাশক্ষাক্ষং সম্ভবেদেবেভি ভাবঃ। অতিক্রবা তং হবং অভ্যপদ্যত উদ্যাভাহভূৎ ব্রভাইক্ষতং ক্ষতরহিতং। ব্যা প্রবেদন ক্লিঞ্চিং দ ক্ষতীকর্ত্তুং অসক্তমণি অভ্যপদ্যত তত্ত্ব হেতুং অতীতি। মহাক্রোধেন বিচারাপগ্যাদিভার্থ: ॥২৭

নিগৃহ গ্রহণেন পীড়রিত। কংনদধমিতি মহাছ্টম্ববিষ্ঠমানিক স্কৃতিতং। নতাং গতিরিতি তেন তর্বা মুক্ত ইতি ভাব:। এবং পদৰ্যেন হুটনিগ্রহশিষ্টামুগ্রহলক্ষণং দারণপ্ররোজনমুক্তং। বৃধা কংসুস্থমিতি তদারণেন কংসোহপি দান্তিত ইবৈতি। সভাং

### क्यनमर्जः।

রামাদর ইতি তদগুণসবিজ্ঞানতাপি ঘটতে। তক্ত বর্চসুন্দর্জন্য শততমবাক্যন্তাৎ পূর্বত ত্রপ্তবাং ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ 🚕 🛒

### **बीवियमाथहकवर्छो।**

রামানর ইতি রামস্য সর্বজ্ঞস্যাপি তৰ্ধসমর্থস্যাপি মোহে আছুলেছ এব হেতু র্লষ্টবাঃ। ক্ষমিণীহরণেছপি প্রাইডভগ্রান্রামো বিপক্ষীর নূপোদ্যমমিত্যাদৌ তস্য তাদুশব্দ্য তক্সকাশবাৎ 🛭

তং কৃষ্ণং প্রদহত্তমিতি তস্য নীলোৎপলস্কুমারশীতলস্যাণি স্পর্শো বহেরিব ব্রুস্যেব তত্তালুলোবাদেব লাডো লিহ্নাদোবাৎ সিতায়া অপি তিক্তৰমিৰ্বেতি জ্ঞেরং। সক্ষতং ক্ষতরহিতমিতি ভল্প 🗒 কৃষ্ণগাত্রস্য বস্তারিতত্বং ধ্বনিজং ॥ ২৭ ॥

ज्ञानिक । जिनी अर्थ निकताः गृहीया मुनावदः धान्यदंश भानन्य धानकः । जिनीतः वदा मृनः ख्वीत्रशः ७६९ ॥ २৮॥ 🚈

नाम वक, त्म अकृषा महान अक्र, वक्र भारत क्रिया तहियाहिन। तम क्रकरक तिथिवीमाज অত্যন্ত বৈগে আসিয়া একেবারে প্রাস করিল। তাহার তুও অভিশয় তীক্ষ এবং বয়ং মহাবলিষ্ঠ हिल ॥ २७॥

दर बिजन्'! द्रीम किंद्र वालकर्गन क्कारक महानरकत्र मुख्यक हरेलि एमित्रा करत्र रमहेत्रन करह-क्न रहेत, बक्का हिल्लामान थीन विने विटिन्न हम, किंख जिल्ला ट्राई वरकत वननमधान हहेगा अमित्र मिनिक केरिकि जोसूप्त नेय केतिएक नामिएनन, अरुधव दन केनिन कर अनक के रगानान वाल-कर्र के के अपने के विकार के लिया । उनके के दिएक विकास के किया विकास के किया विकास के किया विकास के किया के किया ার তিবার প্রান্থ বিশ্বরায় নিক্টে বেল । ২৭। কংসংপ্রেমিড এ বিশ্বে প্রায় আনিতে দেখিয়া জীকুক আপানার ছই বাত্বারা তাহার চঞ্-

পশ্যৎস্থ বালের দদার লীলয়া শুদাবহে। বীরণবদিকোকসাং ॥ ২৮॥
তদা বকারিং হারলোকবাসিনঃ সমাকিরন্ নন্দনবারকাদিভিঃ।
সমাড়েরে চানকশন্দাহতবৈ স্থান্ধ গোপালস্থ বিলিমিরে ॥ ২৯॥
মুক্তং বকাস্যাত্পলভ্য দারকা রামান্ধঃ প্রাণমিবেজিরোপাণঃ।
স্থানাগতং তং পরিবভ্য নির্ভাঃ প্রাণীয় বংসান্ ব্রহ্মেত্য ভক্তভাঃ ॥ ৩০॥

# **टी** धत्रवांगी

সমীড়িরে তুইবু: আনকৈ: শবৈ: অন্যৈক সংস্তবৈ: সহ॥ ২৯॥ অস্থানমাগতং প্রাণমিব ক্ষং বা প্রাণীয় একীক্ষতা॥ ৩০॥

### বৈষ্ণবজোষণী।

গতিরিতি চ শ্রীরামাদীনাং প্রাণা রফিতা ইতার্থঃ। অততে তদেকজীবনস্থভাবদার্ন্ধিগমেস্বতএব মোহতো ব্যুক্তিতা ইতি জ্ঞেরং। উলীবং যদ্য মূলং ত্রীরণং তদ্য পত্রমিবৈতার্থঃ। এবমত্রেদং তবং। মুধ্বন্মরোপেতা গৃহীতো বৎসাস্থরোহনবহিত্তাদেব কিঞ্চিং কর্তুম-শক্তোহপ্রাদেন হত ইতি ন মন্তবাং কিন্ত জানতাহবহিতেনাপি নিজালেবশক্তিং দর্শন্তাপি ন ক্রিডিং মম কেনাপি কর্তুমশক্ততে ইতি বোধনিক। ক্রেক্তান্ হর্বনিত্বং ভগবানেব তদগবে প্রবিদ্ধ ইতি তহুধেন দেবানামপি হিতমক্রোদিত্যাহ দিবৌক্সাং সর্প্রেন্তান্ব মূলাবহ ইতি এবং বকাস্থর্স্য মহাত্রস্তাদিকমপি ধ্বনিতং॥ ২৮॥

মুদাবহনলকণ্যেবাই তদেতি। স্মাক্ স্বাকিরন্তৈ ব্যাপ্তং চকু:। নন্দনস্য মলিকাদিভি: পুলৈরিভি তেষাং প্রম্প্রিয়েরিভার্থ: স্ক্র্বান্ত্রাধান স্বান্ত্রাধান ক্রিছাদ্র ক্রিয়ালয় ক্রিয়া

বেহবিশেষমের দর্শগতি। তং বকারিং বহানমাগতং সম্ভম্পলতা সমীপে প্রাপ্ত পরিরত্য নৈর্ক্তা: সন্ত:। বকাসাার্ক্তি বিতেরেকের নির্ক্তি বেহারিকের কিন্তা করা নির্ক্তিতরং স্করতি। তেবামানে প্রতিগবিধিকটে প্রমাগমনং তদানীমণি সম্ভাক্ প্রায়াম্দ্রেনাশক্তেরিতি জ্বেং। তচ্চ প্রাণাদি দৃষ্টাস্থেনৈর ব্যক্তিতং। স্থানাগতমিতি প্রাণেহপ্রতিং। বৎসান্ প্রাণীর দিনাস্তর্বৎ কাল্মনপেক্ষ্য সর্বান্ পরাবর্ত্তা। বহা। পালকানাং ছর্দিশা দৃষ্ট্র ছংখেনেতন্তত্তা গতান্ মেলগিবা তহকবধাদিকং জন্তঃ সংক্রমমিশ্রের প্রক্রের্ব কাল্মনপ্রক্রিক স্থাবের কথ্যামান্তঃ। এবং বৎস্বধক্ষানম্ভত্মত্বনাস্থ্রভাপ্রতিশিক্ষা চ জন্দিনেহস্কর্ব্যালার ক্রিতি ক্রেরং বিজ্বং বিজ্বং বিজ্বং বিজ্বং বিজ্বাধানে প্রতিগোলি ক্র্যাণাম্বাদাৎ ক্রিক্তাক্রের্ত প্রেমক্রিক্রি। ৩০ ॥

#### ক্রমসম্বর্ড: ।

मनीज़ित्त श्रमनः । जानकमञ्चनहिरेजः मःखरैव देव निकलां**तिरेकक मनी**ज़ित्त कृष्टे तूर ॥ २२। ७०। ७১। ७२। ७०। ७८।

#### ञीवननाथठकवर्षी।

नमाकितन नमानाकीर्गः वादिः ठक्तिष्ठार्थः । नःष्ठरेवः धातिरेनः ॥ २२ ॥

স্থানমাগতং প্রাণমিব ক্লফং। প্রকর্বেণেতত্তঃ সকাশাদানীয় ডৎবৎসবক্ষধচরিত্রং জপ্ত ক্লফেঃশ্বরেণোচুঃ। বলা। শ্বরুতালাদিনা গীতং ক্রপ্তে দি'নান্তরেহপি গানার্থমিতি ভাবঃ ॥ ৩০ ॥

দ্বয়ে ধারণ করিলেন এবং দর্শন্কারি বালকগণের সমক্ষে বীরণবৎ ( অগ্রন্থি তৃণ অর্থাৎ বেণার্কের ন্যায় ) বিদীর্ণ করিয়া ফেলিলেন। তদর্শনে দেবগণের পরম হর্ষ হইল ॥ ২৮॥

সেই সময় দেবলোকবাসী সমুদায় লোক বকারি ভগবান্ হরির উপর নন্দনকাননের মলিকাদি কুন্তম বর্ষণ করিলেন এবং শহা চুন্দুভি ধ্বনি তথা বিবিধ তোতে বারা তব করিতে লাগিলেন। তে রাজন। এ সকল ব্যাপার অবলোকন করিয়া গোপবালকগণ যারপর নাই বিশ্বিত হইয়াছিল ॥২৯॥

শ্রুতা তিবিশ্বিতা পোপা গোপ্যশ্চাতিপ্রিয়াদৃতাঃ। শ্রেজ্যাগতবিবেহিত্বয়ানৈক্ষন্ত ত্বিতেকণাঃ॥৩১
ক্রে বজাস্যাবালস্য বহবো মৃত্যবোহভবন্। অপ্যাসীবিপ্রিয়ং তেবাং কুলং পূর্কাং যতো ভরং॥৩২॥
অথাপ্যভিত্বস্থ্যেনং নৈবৈতে যোরদর্শনাঃ। জিঘাংসয়েনমাসাদ্য নশ্রন্তাযোঁ প্রদ্ধবং॥ ৩৩॥

### विश्वत्यामी।

অতিনয়ের প্রিরেণ প্রীত্যা আদৃতাঃ সাদরাঃ। প্রেত্যাগতমিব লোকাম্ভরাদাগতমিব ত্বিতানি অত্থানি অমৃতং পিবজীবেকণানি বেবাং তে ॥ ৩১ ॥

আহো বতেত্যাদিলোকত্ররস্য ইতি নন্দাদর ইত্যনেনাবর:। অপি এবমণি তেবামেবানিষ্টমানীৎ তৈ র্বতঃ পূর্বমন্যেষাং ভরং ক্রতং ॥ ৩২ ॥

অথ বোরদর্শনা অপি.নাভিডবন্তি ন ধর্বরন্তি॥ ৩০॥

#### देवकवरकावनी।

লোপা গোপ্যক বিশ্বিতাঃ অহোবতেতাদি বক্ষামাণরীত্যা ৰাতবিশ্বাঃ। অহোহতিশরেন প্রিরং প্রেমবৃক্ষং বর্ধান্যান্তবা আদৃতাঃ
তক্ষণাদিব বাতাত্যন্তমনঃপ্রবল্ধঃ অতএবৌৎস্থকাং আসক্যা ঐক্স চিরং তদর্শনাস্থ্রা বভূব্রিতার্থঃ। বত ক্ বিতেকণাঃ অত্থানেআঃ পরমপ্রীভাগিংস্বাদীকণে হেছুঃ প্রেডোতি। ইবোৎপ্রেকারাঃ। দেহতরেণ তেবাং তথা মননাং। বহা। প্রত্যাগতং কঞ্চিৎ
কল্চিবকুরিব। বহা। দিবা তহিরহেণ শতকদর্শনভূকাবৃক্ষেকাণাএব বিশেষতো বক্ষবাদিশ্রবণেনৌংস্কাথ ঐক্য । অন্তং সমানং ॥৩১॥
আহো ইতি চতুহং। ইতীতি চতুর্ধেনাবরাৎ ব্যাখ্যা তু পৃথক্ ক্রিয়তে। তত্র গোণালানামন্যোন্যং বধাবৃক্ষং। বিশ্বরোক্তিমাহ ক্রিছো
ইতি ব্রিভিঃ। অহো আশ্বর্ধে। বত থেদে। অক্সৈব মৃত্যবঃ তহেতবঃ। বালস্যেতি সেহভরেণ। অন্যতৈঃ। বহা। যতঃ পূর্কং
প্রথমমাগতা তক্স ভবং ক্রতং॥ ৩২॥

ভেষামেব ৰিপ্রিয়ন্থ বির্ণোতি অথাপীতি। অথ পূর্ব্বছেতোরের বোরদর্শনা অপীত্যয়া। অথবা তত্ত্ব তর্করন্তি তেবাং বকানীনাং। পূরানেন ব্রুপতে সাধবো দ্ব্যুপীড়িড়া ইত্যাদি গর্গোক্তরীত্যা বিপ্রিয়মনিষ্ট্রমনেন পূর্বাং কৃত্যুদ্দীৎ। যতো যেত্যো ভ্রুমস্য ভবতি বোরং দ'শনমণি কিমৃত কর্ম বেষাং তেইপ্যেতে বকাদর ইতি তেবাং পাণিষ্ট্রমুক্তং। নৈবং তে ঘোরদর্শনা ইতি

### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ষতিপ্ৰিৰেণ শ্ৰীকুকোন বদৰ্শনদানেনৈবাদ্তান্ত, বিতান্যমৃতং শিবন্তীবেকণানি যেষাং তে ঐকন্ত কতাদিশক্ষা সন্ধালেষু ন্যভালয়ৰ ॥ ৩১॥

তত্র পোপানামন্যোন্যং বিশ্বরোক্তিমাই ত্রিভি:। মৃত্যুবো মৃত্যুহেতব:। ভরং ক্বতং নিরপরাধানামশ্রাকং বালভুল্যান্য চ যন্ত্রাদ-পকারং প্রথমং ক্রক্তবাং ॥ ৩২॥

নৰনেন ৰাশকেন পূৰ্বজন্মনি তেবাং বিপ্ৰিয়ং প্ৰথমং ক্ষতমন্তএৰান্ত্ৰিন্ জন্মনি হৰমেনং তে এবায়ান্তীতি কথং ন সন্তাব্যতে ভ্ৰাছ:। অথাপি ব্যোবমণি ন্যান্তহি তৈব্ৰমভিভূৱেতৈবেতাৰ্থ:। কিছু তে নাভিত্ৰন্তি অভিভূতবিত্ং ন শকুৰন্তি প্ৰত্যুত জিলাংন্যক্তানি ॥ ৩০ ॥

গোপ ও গোপীগণ তাছা শুনিয়া বিস্মিত হইলেন এবং স্বতিশয় প্রীতিহেতু সাদর হইয়া সমুৎস্ক চিত্তে যেন লোকান্তর হইতে স্বাগতের নারে সেই স্কল্কে দেখিতে লাখিলেন, কিন্তু তাঁহারা যত দেখিলেন কিছুতেই তাহাদের নয়ন পরিভুগ্ধ হইল না॥ ৩১॥

অংশ কি আশুর্যা। এই বালকের বহুতর মুজুর কারণ হইরা পেল কিন্তু যে হেতু পূর্বে তাহানের হইতে জনোর ভর হইত এই কারণে তাহাদিগেরই অনিউ দৃষ্ট হইল, হায় কি থেদের বিষয়। ॥৩২॥
। এই বর্জন বানক খোরদর্শন হইরাও ইরাকে অভিভব করিতে পারে নাই, হিংসা করিবার বাসনার ইহার নিকট আসিয়া যেমন অগ্রিতে পভঙ্গ বিনন্ত হয় তাহার ন্যায় আপনারাই বিনাশ প্রাপ্ত হইরাহে॥ ৩০॥

पदा बक्कविनाः ताटा मामजाः मस्ड कर्षि हिर्। गर्गा यहार जगनश्चिति उरेथव छ ।

हेजि मन्नामरम्भा रगाभाः क्रम्भमामकथा मृत्रा। क्र्वरस्था मनमागन नाविनन् जवरमननाः ॥ ७८॥
॥ ॥ । ইजि প্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে বালকীভায়ানেকাদশোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ॥ ১১॥ ॥ ॥

### अध्यक्षामी ।

গর্গো মদাহ তত্মারন্দাত্মকোৎরং তে নারারণসমো গুণৈরিত্যাদি। বৎসমূথগতং হত্বা বৎস দন্তাস্থরং হরিঃ। আড়িব্ধগতকাহর-গ্রাণ্যং দন্তিনাং বৰুং॥ ৩৪॥

॥ \* ইতि मन्द्रम এकामनः ॥ \*॥

### বৈষ্ণবতোষণী।

কচিৎ পাঠ:। ন অভিভবন্তি ধর্ণয়িত্ং ন শকু বন্ধীতার্থ:। এবেতি কদাচিৎ কথঞ্চিদপীতার্থ:। ন কেবলমেভাবদেব কিন্তু শবঃ সদ্য এব মিন্নত্তেশীত্যাহ: জিলাংসরেতি। কুডোৎপ্যাগতানাং বহুনামণ্যেকশাদেব স্বন্ধং সদ্যোমরণে দৃষ্টান্ত: অবৌ পতলবদিতি। অনেনাস্য প্রশাঞ্জাবন্ধমপ্যক্তং। অতো হিংমঃ স্বপাপেনেভ্যাদিবদেবােংগ্রেফিডং॥ ৩৩॥

ভত্ৰ প্ৰমাণং দৰ্শ্যভোংশি বাংসন্যান্তাবেন সাকৰ্য্যান্ত: অহা ইভি। ব্ৰন্ধবিদাং বেদাৰ্থভন্তমানাং ভক্তিনিঠানামিতাৰ্থ:। অসভ্যান সন্থিন ভবস্তি। অন্তাৰি অন্ত্ভং ইভি শ্ৰীবন্ধবৈজ্ঞ সন্নান্তাবিদ্বাহ্বাংসন্যান্ত নহস্যশি গৰ্মোক্তং ভন্মাহান্তঃ তেন্ধ্বিশিল কিলি লিলিং । ইভানেন প্ৰকাৰেণ গতা আগমিষ্যানান্ত ক্ষন্তামকথা:। কথামিতি কিলিং পাঠ:। কুৰ্বভঃ কথ্যতঃ। ন কেবলমেতাৰদেব অপিভূ নম্মাণা: প্ৰীভগবতা সহ ক্ৰীড়স্তুণ্চ ভববেদনাং ভবে সংসান্তে সাংসান্তিকাণাং বদ্ধুংখং তত্তেহ্বব-তীৰ্ণা অপি নাবিদন্ ন জ্ঞাতবস্তোহপি। অতঃ কুধান্ত। ইদমক্ৰবন্ ইভ্যাদৌ যতেবাং কুধানিকং দৃশ্যতে ভক্তু ন ভব সন্ধি কিন্ত লীলো-পোৰলক্ষানীনামন্ত্ৰেতি ভাব:। তবৈবং বিহাবৈনিত্যাদি পদ্যমণি পঠন্তি। তত্ৰ প্ৰভঃ প্নঃ কৌমান্তনীনাবৰ্ণনং স্ভিবিশেষ্ট্ৰস্কান্তিননেন। অভোহপ্ৰেইণি তদ্য পুনক্ষেত্ৰিতি জ্বেছং। সন্বন্ধোকাব্ভন্ত ব্যাখ্যাভন্তা । ৬৪ ৪

॥ \*॥ ইতি জীবৈক্ষৰতোষণ্যাং দশমটিপ্লক্সাং একাদশ: ॥ \*॥

### ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ \* ॥ टेजि जीमभारा क्रमममार्ड वकामभः ॥ • ॥

### वीविश्वनाथहळ्वरहीं।

তত্র হেতুরস্য নারারণসমন্বমেবেত্যাহ:। অহো ইতি গর্গো যদাহ নারারণসমো গুলৈরিত্যাদি॥

কথাং কুর্বন্তঃ আহান্যামুণবিশ্য বাল্যচাপল্যকথাং বংসবকাদিবঞ্চ্বথাঞ্চ পুনঃ পুনঃ সংলপন্তঃ গীতপদ্যাদিতিকপনিবরুবো বা ভবস্য সংসারস্য বেদনাং ভ্রাপনং। তো রজরাজ বরস্তাবভ্রতামর্ছং ব্যতীভ্রেৰ অধুনাপি কথং পুত্রকল্যকুট্যাদিকথাত্ব নিমজন ঘোরঃ সংসারোহয়ং বর্ততে অস্নাছ্ছারাথং ভ্রানবৈরাগ্যতপো নারায়ণ্যরগাদিমু কথং ন যতথে ইভি দেশান্তরাগভর্জগোশ্যদিভি-ভ্রাপিতং। নাবিদন নৈবাবদধুং। ব্যাধ্যান্তরং ত্যাল্যং। ন পুনঃ করতে রাজন সংসারে। হ্রানসন্তর ইভি পূর্বোক্তে বেহাং সংসার-। স্যৈব নিবেধাং কৃতত্তদীয়পীড়াশভেতি ॥ ৩৪ ॥

॥ \*॥ ইতি সারাধনিনিরাং হবিণ্যাং ভক্তচেতসাং। একাদশোহরং দশমে সম্বতঃ স্কৃতঃ স্তাং '॥ \*॥

যাহা হউক, এক্ষবেভাদিগের বাক্য অভ্যন্ত আশ্চর্যা, সে সকল কদাচ অসভ্য হয় না। ভগৰাৰ গর্গ যাহা ব্যামান্তেন ভাহা তজ্ঞপই অনুভূত ছুইকু। হে গাজন্। এই প্রকারে রাম্ছকের, কথা প্রসাদ কথোপক্ষান করত নশাদি গোপগণ সলা আহ্মান প্রমোদ করিভেন সংসারবেদনা কিছুই ভারাদের অনুভূত হুইত না ৯ ০৪ ॥

॥ ॥ देखि प्रभटम धकानम ॥ # ॥

শ্রীবাদরায়ণিরুবাচ ॥

किवनानाम मरनान्धव जार बाजः मनुभाम यम्मावरमशान्।

# , विश्ववानी।

षानत्म जू महानर्भवन्ध त्रमधाद्याः । वर्शनानिननः क्रद्यां शत्मध्यति वर्गत् । महावर्ष्मशनकीका त्यस्मने में त्योक्कः । ইতी-वाषाञ्चत्रपूर्ण नन्धः व्याविभव्यतिः ॥ • ॥

কচিৎ কদাচিৎ বনাশার বনএব প্রথমভোজনং কর্ত্তুঃ ॥ ১॥

# देवकवरजावनी।

ভাতি রপগুণক্রীড়ানামভিনি ত্যন্তন:। আদ্ধ্যাদ্ধ সদাদ্ধ্যাদ্ধ: প্রভু: স প্রসীন্তু। কৌমারীমেবলীলাং বদন্ ভত্রাদৌ একেনাখাস্থরবধ্মাহ কচিদিভাগুদিনা। বদেভচ্চ অধ্যায়ত্তরং পুভনা লোকবালমীভ্যাদি প্লোকবট্কং যএতৎ পূতানালোক্ষমিতাদি লোক্ষ ক্তিরমন্ততে তত্ত কারণ্ ন পশ্লাম: সর্বজাপি দেশেৰৈতিছ্লাপ্তমাৎ বাসনাভাষ্য সম্বন্ধোকি বিৰৎ কামধেম ওকমনোহরা পরমহংদ্রপ্রিরাদির প্রাচীনাধুনিকটীকাম ব্যাখ্যাত্থাচ ভ্রীরম্বস্প্রদারানদীকারপ্রামাণ্যেন তস্যাপ্রামাণ্যং চেৎ অস্তর্গতাদারাদীকারপ্রামাণ্যেন বিপরীতং কথং ন ছাৎ। নচ মুরভিদাদিনামবদবভিদাদিনাদাং তত্র প্ররোগো ন দৃখ্যত ইতি বাচ্যং যর এজন্তাঘভিদো রচনাছবাদাজ্পৃত্তি বেহন্স বিষয়ঃ কুকথা মতিলীরিভি ভৃতীরাৎ পাপভিদাদিনারাং ত্রাপ্ররো-গাৎ নচ তত্ৰ তত্ৰ লীলাস্থবাদে সা লীলা নান্তি স্বামিপালৈ স্তত্ৰ তত্ৰ তস্যা অপি দৰ্শিতত্বাৎ অতএৰ ছাত্ৰিংশৎ ত্ৰিশতঞ বস্ত বিলসছোখা ইতি তদীরপদ্যে পণ্ডিতমধ্যারত্ররং যত্তদিদমেবেতি ন তন্মতং। নচ তত্ত্রমন্যত্র কুত্রাপি পণ্ডরিতব্যং। সর্ব্বভাধ্যারসংখ্যালোকসহিত-টীকাসভাবাৎ ততো ৰাত্ৰিংশচ্চ ত্ৰয়শ্চ্ শতানি চেতি *ৰ্টে*শ্বক্যমেৰ তৰিবক্ষিতং । অনিশীতবৃহ্<del>ষতানবস্থাভিয়া তিৰ্মেৰ পৰ্য্যবসানা</del>ৎ। কপিঞ্চালভনস্থারেন অগুণা ত্রিশতীত্যেব স্থাৎ। নচান্ত্রমূক্তে: সিদ্ধান্তবিরুদ্ধদার তদার্বং শ্রীকৃষ্ণমারিতেরু সর্কেরু দৃষ্টদাৎ। আহুরীং যোনিমাপন্না মূঢ়া জন্মনি জন্মনি। মামপ্রাপ্যৈর কৌন্তের ততো যাস্ত্যধমাং গতিমিত্যাদিবপি মাং 🕮 কৃষ্ণলক্ষণং অঞাপ্যৈর নতু প্রাপ্য ইত্যাদ্যঙ্গীকারাং। যথাচোক্তং যেচ প্রন্থ ধর দছর কেন্সরিষ্ট মলেভ কংস যবনা: কুল পৌণ্ডু কাদ্যা:। অন্যেচ সার্থ কপি বিষ্কুল দস্তবক্ষ সংখ্যাক সম্বন্ধ বিদ্রুথ ক্ষিমুখ্যা:। যে বা মুধে সমিতিশালিন আন্তচাপা: কাম্বোজ মংজ কুরু কেকর ক্ষরাদ্যা:। যাজন্তাদর্শনমলং বলপার্থ ভীমব্যাজান্বরেন হরিণা নিলরং তদীর্মিতি। নচ পুরাণান্তরাপ্রসিদ্ধনেন সা লীলা ন সন্তাবনীরা পালো-তর্থগুত্রকাণ্ডপুরাণরোঃ স্পষ্টতাৎ ত্রীবৃন্দাবনে তন্তরীলান্তানানি চ প্রসিদ্ধানি। নচ ভক্তগতিসাদুর্ভেন তেবাং তৎপ্রাপ্তিরসমঞ্চসা ভদ্ধভকৈকাদৃশপ্রাপ্তেরমূপাদেয়ছাং। নাত্যকিকং বিগণয়ক্তাপি তে প্রসাদং ইত্যাদিবচনশতেভাঃ। নচ পূতনায়া জননীসাম্যং জননীমাহাত্মাবিভিৰ্থেব্যং সংবদাদিব পুভনাপি সকুলেভি বাক্যেন জননীবেশমাত্ৰভ তৎপ্ৰাপ্ত্যা ভদ্যা এব মহিমাধিক্য-বাঞ্জনাং। তত্র তত্র তৈরপি বিজীবতাসিদ্ধান্তেন দোবঃ পরিছিয়তে। কিম্বতাপি তংসংস্থীত পঞ্চ ইতি ন্যারেন বোৰ ন্তদ্বস্থ এৰ তত্মান্ন কশ্চিৰিরোধ:। প্রত্যুত ভগৰতক্ত তত্তকীশাং পরম মাহাক্মানেৰাত দেংল্যতি। অভভাত্তৰঃ জীভগৰদত্ত গ্রহ বিশেবেলৈর সম্পদ্যত ইতি তৎ অংগাপ্যমেবেভ্যেবং তস্য তার্শং বচনমপ্যপ্রদায়তে। অসম তিবিভারেণ। প্রকৃতং ব্যাখ্যাভাম:। मरनावथर कृरक्षकार कूर्वकिकि वःक्रक निषक्षि विवर्तन विवर्तन शृर्दर श्रीकरकीकानिय वन अब सबनर स्वायबिक क्षेत्रसम्बा स्वयं श्रीविक ক্যেৰ সভ্যতে। প্ৰস্ৰাভৱাশাবিভ্যুক্ । কচিৰদাশানেভ্যুক্তছাং। সম্যক্ ৱাত্ৰিবল্পনিভ্যাগত্ৰীমুণাৰিপ্ৰকাশনচাৰিবল্পনিভ্যুক্ ধারণাদিপূর্বকং ব্রুরোপায় নিজমা প্রবোধন্তিতি স্থিতিঃ স্থ ভূপবিপ্রিয়র ব্রজাচ্ছনৈ নির্স্তনং বোধন্তি অভ্যান বর্নোতি। বিশেষণং । াচাক্তপ্ৰতি অক্সপ্ৰিৰ্দ্যেশা নিৰ্ক্ষিতানাং অধেবৈদ্য নিজাভদং বোধৰতি। বংসাঃ প্ৰঃসৱা,বদ্য সঃ । তেন তেনৈৰ তেৰাং

# 🕜 💰 ి 💖 कमगण्डः।

স্থাবিজ্ঞানিতঃ কেনচিত্ৰভূত্ৰপূপি ভাস্নতি। খাদিপাচীনটীকাকালৈ অভিতঃ সমত্যাৎ সম্বেশপুত্ৰক্ষণিভয়াক বিখতে।

**बिविनाथहळवर्डी।** 

कांतरन मिथिकः दर्कनिकमुद्धार्थमा वर्गनरे। वटक रविनारत्व इसकाश्च व्यविनार्थरवद्विकः॥ • ॥

बामणीशारिप्र विवादितंत्र विकातत्वपूर्ध बात्रगण्डाक वर्मणीरमत्त्र शिमन धर्वर व्यक्ति कर्ण्क छारात्र भन्तिरंग वर वर्गने ॥ १ ॥

ভক্তিৰ কহিলেন কোন এক দিবস ভগৰান হরি বনৈতেই অধম ভোজন করিবার মনিসে প্রাতঃ-

প্রবোধনন্ শৃসরবেণ চারুণা বিনির্গতো বংসপুরঃসরো হরিঃ॥ ১॥ বিনির্গতি বিন্তি বিনির্গতি বি

# अध्वयामी।

তেনৈব শৃষরবেণ প্রীকৃষ্ণেন বা। পৃথুকা বালাঃ त्रिकाः কেহযুক্তাঃ। শিক্ শিক্যং রম্যাঃ শিক্যাদরো বেবাং তে। সহস্রাধিক-

# देवक्षवरकावनी।

চিত্তইরণাছরিঃ। স্এব শ্বরং বন্ধাবিশেবেণ নির্গতো নম্বনাদিনবং শ্রীরামেণ সহিতঃ তত্র কারণং তচ্ছু দ্ববেণ চ নিত্যমুদ্যতক্ত তত্ত্ব শ্রীকাশিক ক্ষিত্র ক্ষিত্র নিত্যমুদ্যতক্ত তত্ত্ব ক্ষিত্র নিত্যমুদ্যতক্ত ত্ত্ব ক্ষাত্র নিত্যমুদ্ধ ক্ষিত্র ক্ষিত্র নিত্যমুদ্ধ ক্ষিত্র ক্

তেনৈব সাকং ইতি মহাবেগেন ধাবনাং। বতঃ মিঝাঃ অতঃ সর্প্রেবাং এব বুগপিরির্গমোহিশি স্টিতঃ। সহস্রস্যোপরি সংখ্যা। একং দশ শতকৈব সহস্রম্বৃতং ওথা। লক্ষ্ণ নিবৃত্তকৈব কোটিন ক্লিদ্বেচৰ ইত্যাদিবচনাদম্তাদি স্তরাহিতান্। এবং বংসানাং বালানকাসংখ্যেরসমূক্তং। ইখং বনে বালৈঃ পাল্যমানানামশি বংসানাং যদিরস্তা নাভূং। তহি ব্রন্ধে ক্লানাং তথা কথা গোল্ল সম্বানাং তথা বংসতরীশাং বংসতরাশাং ব্রাণাঞ্চ প্রিগোপালদেবপ্রভাবেন নিত্যমেব বিবর্জ মানানামিরতা কথমত মহিব্যাদরশ্চ কেন বা গণ্যাঃ পশবতদহসারেণ গোপো গোপ্যাদরশ্চনেতা ক্লোঃ। তথাচাগমে রাস্থ্যানং প্রমানশিতকোটিভিরাক্লিত ইতি। তত্ত্বমাবেশাদিকং চাচিকৈবর্গাদেবেতি। মুদেতি স্বরং প্রাক্তমন প্রবোধনাং। অতথ্য বিশেবেশাদিকং চাচিকৈবর্গাদেবেতি। মুদেতি স্বরং প্রক্রিক্তার্থঃ। তংসংজ্ঞা চ দর্শিতা ক্লীরস্বামিনা। পুকং দশ শত সহস্রাণ্যবৃত্তপ্রবৃত্তাখ্যলক্ষমণ নিবৃত্তং। অর্ক্ দ কোটিনার্কি দ পত্রে থর্কং নিথক্মিতি দশভিঃ। গণনামহাজন্মস্ক্রম্যাত্তং পরার্জণ। সহতং পরার্জ ম্যিতং তং স্বহতং ভ্রাতোহসংখ্যমিতি। প্রবৃত্তসংজ্ঞা লক্ষং অর্ক্সিক্তা কোটি-

### व्यविश्वनाष्ठकवर्षी ।

अ किकिन्दिन बनामात वन এব প্রাতর্জোজনং কর্জুং। হরিরিতি বলদেবত্ত মাত্রা জন্মক শান্তিকলানাদার্থং গৃহ এব বলাজক্তি ইতি জ্যোঃ ॥ ১ ॥

भृष्का वानाः । « विक् विकारः । नहत्वरमाभित्रमः आ अव्कानि खेवाविकान् ॥

ক্ষমাত্ বংলৈরসংখ্যাতৈরসংখ্যাসংজ্ঞাং থৈরিভার্থঃ। অসংখ্যসংজ্ঞা চ কীরখানিদ্ট্যা জেরা। বর্ধা। এবং দল শতসহলাগাব্তং প্রভাষা সক্ষধ নিৰ্ভা। অর্কুদভোটি স্ক্রিব্দিশের বর্মা নিশ্বনিতি দলভিঃ। গণনারহাজনথসম্জ্রখ্যাজনথ পরপরার্জ্য াবহতং পরার্জ্যনার্জ্য তংক্ত ভ্রতি হিলা হসংখ্যানিত। প্রবৃত্যাজ্য সক্ষ্ ক্র্রুদ্যালয় কেন্ট্রিভার্থঃ। পরার্জ্য পর্যজ্ঞান্তার বিভ্রালয় সংখ্যাদশদশশুণিতা জেরাঃ। জ্ঞান বল্লালালিকং সংখ্যাদশদশশুণিতা জেরাঃ। জ্ঞান বল্লালালিকং সংখ্যান্তার্শ্বন্ধ্যাল্ভার্তাতার্থঃ। নিল্লালালীক্ষ্ ক্রের্থঃ স্ক্রিক্ত্রতার্থঃ। নিল্লাল্ডান্তার্থান্তার্থান্তার্থান্তার্থান্তার্থান্তার্থান্তার বল্লালালীক্ষ্ ক্রাব্নস্য প্রবৃত্তি বিভ্রাল্ভার্তাত বিভ্রাল্ভার বিভ্রাল্ডা বিভ্রাল্ডার ব্যাল্ডার বিভ্রাল্ডার বিভ্রালার বিভ্রাল্ডার বিভ্রাল্ডার বিভ্রাল্ডার বিভ্রাল্ডার বিভ্রাল্ডার বিভ্রাল্ডার বিভ্রাল্ডার বিভ্রালার বিভ্রালার বিভ্রালার বিভ্রাল্ডার বিভ্রালার বিভ্রাল্ডার বি

কালে গাত্যোত্থান করিলেন এবং বৎসপালক বয়স্যদিগকে মনোহর শুসাধানিহার। প্রবোধিত করিয়া বৎস সকলকে ছাথে করত নির্গত হইলেন ॥ >ৄ॥

তাঁহার সৃদ্ধে মেহাছিত সহত্র ২ বালক স্ব স সহত্রাধিক সংখ্যাসুক্ত বৎস অত্রে করিয়া সাতি-শয় হর্ষে বহিস্তি হুইলেন, তাঁহাদের হক্তে হুন্দর শিক্য (শিকা) বেত্র বেপু ও বিষাণ ছিল। তাঁহারা শ্রীকৃষ্ণের অসংখ্যা বংসের সঙ্গে আপনাদের বংস সকলকে মুখ্লুত্র করিয়া চরাইতে ২ বানা ছানে বাল- ফলপ্রবালন্তবক্ষনঃপিচছধাতৃতি:। কাচমুক্তামণিস্বৰ্ভ্বিতা অপ্যস্ত্বয়ন্ ॥৩॥ মুফ্ডন্তোহন্যোন্যশিক্যাদীন্ আতানারাচ্চ চিক্ষিপু:। তত্ত্ত্তাশ্চ তত্তে দুরাজ্বসন্তশচু পুনর্দত্ত:॥৪॥ যদি দুরং গতঃ স্থানো বনশোডেকণায় তং। অহং প্রামহং প্রামিতি সংস্পৃত্ত হৈমিরে॥ ৫॥

### ध्येषत्रचारी।

मःशायुक्तान् वरमान्॥ २ ॥

কাচাদিভি: পূর্বং মাভৃতি ভূ বিতা অপি ফর্নাদিভিরায়ানমভূবর রিতার্থ: ॥ ৩ ॥

• मुक्कक्टन्ठांत्रवकः॥ ८॥

বদি দূরং গছতা ভবতি কৃষ্ণ তহিঁ॥ ৫॥

### देवकवरकावनी।

রিত্যর্থ:। পরার্ক্পর্যন্তারাদশগুণিতা জেরা:। তত্র চ বলৈক্যাক্সহাজাদিকং সংখ্যাপঞ্চকং জেরং। সহত্রিতি স্বেন শুণিত-মিত্যুর্প ইতি জেরং। স্বকান্ স্ববংসান্ ইত্যুর্থ:। স্ববংসকানিতি পাঠ: স্পন্ত:। তত্র তত্র বংসপ্রচারদেশে। হ হরে॥ ২॥ স্পর্কীলানেবাহ কলেতি সপ্তভি:। তর্কা: পুস্পুভছা:। স্থানসং পুসাণি। কালা মহারদ্বেভ্যা বিবেজ্বশক্যক্রপ্রাং কৌতুক-বিশেষকারিণ:। গুলা স্থাপি বৃন্ধাবনীয়দেন তথাভূত্বালালৈরের কৌতুকেনাজ্বত্য সাত্ভিঃ সাগ্রহং হারাদৌ প্রথিতা:। স্ব্রেভি পাঠ: কচিং ॥ ৩॥

শিক্যানি আদিৰ্থেষাং বঁট্টাদীনাং তান্ নতু শিক্যানি তেবামলাধারবেনালনাশে সতি হসত ইত্যাদেরবৃক্তৰাং। আতান্ সতঃ কেব্ চাতিমুগ্নেরু ক্লংফুম্পংক্সংক্ষ হসত ইত্যাদি॥ ৪ ॥

ঈদৃশবাল্যক্রীড়াছপি তদেকপরতাং প্রণরবিশেবঞ্চ দর্শয়তি বদীতি পঞ্চকেন। রুক্ষোহপি তান্ বিহার দ্বং ন বাত্যের যদি কদাচিছিকৈঃ স্থিতিঃ দ্বং গতো ভবতীত্যর্থঃ। কিমর্থং বনশোভারা ঈক্ষণয়। আনেন য়বুলং বিনস্য পরমন্ত্রের স্থাতিং। সম্যক্ পরিবস্তাদিনা স্পৃষ্টা রেমিরে স্থাং প্রাপুঃ॥ ৫॥

### अविश्वनाथठकवर्ती।

তৎপ্রদেশৈক্ষেদশেহিল পঞ্চালৎকোটিবোজনপ্রমাণত্রকাণ্ডার্ক্স্থানাং ভগবতৈব ত্রক্ষণে এতত্ত্তরাধ্যানে দর্শরিষ্যমাণহাৎ। অতএবোক্তং ভাগবভাষ্টে । এবং প্রভাঃ প্রিরাণাঞ্চ ধায়ক্ষ্ সময়স্য চ। অবিচিন্ধ্যপ্রভাবদাদ্ধ কিঞ্চির হুর্ঘটমিতি॥২॥

কাচাদিভি: পূর্কং মাতৃভি ভূবিতা অপি কলাদিভি রাশ্বানমভূবরিত্যর্থ:। তত্র কাচভবে বালানামাগ্রহাৎ মণিবর্ণে মাতৃ গামা-গ্রহাডুবণে জেরে॥ ৩॥

ৰুক্তৰ কোবৰতঃ । শিক্যাদীনিতি শিক্ষেতা উত্তাৰ্থ্য প্ৰথমবেবালাদিপাত্রাণি মুদ্রিতমুখ্যাং পিপীলিকাদিছ্প্রবেশানি কচিত্তক্তলে কন্টকাদিভিলাৰ্ত্য স্থাপিতানীতি জেবং। ভানেৰ জাতান্ সতঃ আবাদ্বে চিক্ষিপঃ। তত্রৈৰ বিজ্ঞতা নেতৃং প্রস্থিতে সতি তল্পতা বালাভভোহণি দ্রাচিক্ষিপঃ। এব বন্বস্থা স্বভাবামপ্রাপ্রতা বালান্ ক্লম্থানবলোক্য তে এব হসত্তো দছঃ॥ ৪ ॥

ण्डः क्रकः गरेन्सृत्माणि **अववर्शविक विक्रमा अध्यार क्रक्**यम्सृत्मः न पः नम्नविकि क्लानाहनः क्रविष्ठः ॥ € ॥

# ক্রীড়ামারা বিহার মারম্ভ করিল ॥ ২ ॥

ঐ সকল বালক বদিও স্ব জননীকর্ত্তক কচি, মুক্তা, মণি তথা স্বৰ্ণস্থাৰার। স্থিত ইইয়াছিল তথাচ বন ইইতে পুল্পপ্রবাল, ফলা, স্তবক এবং ম্যুরপুছে তথা ধাতু প্রস্তৃতি গ্রহণ করিয়া তদারা পুনরার আপনাদের স্থা করিতে সাগিল ॥ ৩॥

অপর পরস্পারের শিক্যাদি অপ্তরণ করত যাহা২ আত হইতে লাগিল সৈ সকলকে দূরে ফেলিরা বিভে লাগিল। ৪ ॥

যদি কথন জীকৃষ্ণ বনশোভাসন্দর্শনার্থ দুরে গমন করিতেন তাঁহ। ইইলে "আমি লগ্রে, সামি লগ্রে" এই বলিয়া বালকেরা তাঁহাকৈ স্পর্শ করত জীড়া করিত ॥ ৫॥ কেচিছেণূন্ বাদয়ন্তো ধ্বান্তঃ শৃঙ্গাণি কেচন। কেচিছ, কৈঃ প্রগায়ন্তঃ কৃজন্তঃ কোকিলৈঃ পরে ॥৬ বিচ্ছায়াভিঃ প্রধাবন্তো গচ্ছতঃ সাধু হংসকৈঃ। মকৈক্লপবিশন্তক নৃত্যন্তক কলাপিভিঃ॥ ৭ ॥ বিক্রন্তঃ কাশবালানারোহন্তক তৈ ক্রমান্। বিক্রন্তক তৈঃ সাকং প্রবন্তক পলাশিষু॥ ৮ ॥ সাকং ভেকৈ বিলিজ্ঞান্তঃ সরিতঃ প্রবসংগ্লুতাঃ। বিহসন্তঃ প্রতিদ্বায়াঃ শপন্তক প্রতিশ্বনান্॥৯॥

# अध्यक्षामी।

श्वादका वानग्रकः मृदेनः मह ॥ ७॥

বিচ্ছায়াভি: পক্ষিচ্ছায়াভি:। কলাপিভি মঁ যুরে:॥ १॥

কীশবালান বৃক্ষণাথাত্ম লম্মানানি বানরলাক লানি আকর্ষতঃ লাক লম্মুক্তঃ তৈঃ সহ ক্রমানারোহতঃ। বিকুর্বতঃ দক্তপর্শন-জ্বিক ভাদিভিতঃ সহ বিকারান কুর্বতঃ। প্লাশিষু বৃক্ষেষু প্রবতঃ শাথায়াঃ শাথাত্তরমূদ্দভ্তেঃ॥ ৮॥

প্রতিছারা: প্রতিবিধানি॥ ৯॥

# देवकवरलायगी।

কদেত্যপেক্ষামাই কেচিদিতি চতুর্জি:। বেণূন্ বাদরন্তঃ বেণুবাদনস্য মধ্যে ইত্যর্থা:। বেণুমিতি কচিৎ পাঠা:। এবং ধ্বাস্ত-ইত্যাদি তদাবেশাৎ তৎসক্ষমনাদিসিকে ব'টিতি পুনরস্থসন্ধানাচ্চ ইতি ভাবা:। বন্ধা। সংশেশানস্তরং প্রমানক্ষেন তদানন্দনেছ্যা চ পুথক্ পুথক্ জীড়াং চক্রুরিত্যর্থা:। তামেবাহ কেচিদিত্যাদিডি:॥ ৬॥

বীনাং জাত্যৈকবচনবিৰক্ষরা ছারারাঃ ক্লীবন্ধাভাবঃ। সাধ্বিতি ক্রিরাবিশেষণং পূর্বত পরত চ সর্বতি যোক্ষাং। ততততোহপ্যতমং ৰখা স্যাং॥ ৭॥

ভৈঃ কীলৈঃ। অন্যতিঃ। বছা। কীশবালান্ বানরশিশুন্ বৃক্ষশাখালম্মানলাক লঞ্জলাকবঁতঃ। সমমন্থ । । । অনুবেণ গিৰ্যাদিনিক বৈণ সংপুতাঃ পুৰিতাঃ। ইতি ভাসাং কুজমুক্তং। বিহসতঃ উপহসতঃ প্রাতভাক্ত মহাদৈৰ্যাদৰ্শনাং। কিয়া।

#### 'ক্রমসন্ধর্ভ:।'

বিচ্ছায়াভিরিতি। বিশব্দস্য স্কাতৈয়কত্বেন ছায়ায়া অক্লীবন্ধং ॥ ১। ২। ৩। ৪। ৫। ৬। ৭।।

की गवानान् उच्छि गूनं ॥ ৮॥

ত্রবা নির্বারাঃ প্রতিচ্ছারাঃ প্রতিবিশ্বানি মুখবৈক্বত্যাদিপুর্বকর্মমুকুর্বস্তঃ॥ ৯॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

भवारका वानसकः ॥ ७ ॥ वीनाः शक्तिभाः ছाग्राज्यः ॥ १ ॥

কীদৃশান বালান বৃক্ষশাথাস্থ লখনানানি বানবলাক্লানি। তৈরম্চামানৈশ্লাক্লিণ্ডং ধুতৈঃ জমানারোহতঃ।
বিক্র্বাঃ অবিজ্ঞাদি ম্থবিকারান ক্র্বাঃ। তথা তৈঃ সহ পলাশিব্ ব্বেক্ প্রবঞ্জাদি ম্থবিকারান ক্র্বাঃ। তথা তৈঃ সহ পলাশিব্ ব্বেক্ প্রবঞ্জাদি ম্থবিকারান ক্রেডঃ ৮ ॥
প্রবেশ নদ্যাদিভটেড্যং পরিক্তজ্ঞলেন সংগ্লাঃ প্রিডাঃ সরিতঃ সরিৎক্র্মধারাঃ। প্রতিজ্ঞারাঃ স্বপ্রতিবিদানি। ভ্লোৎক্ষেশাদিভিবিহসন্তঃ প্রতিশ্বনান প্রতিজ্বনীন শপতঃ বে বে করং ক্রমে ইতি স্প্রতিজ্ঞানিং শ্রুজা ক্র্পিডাঃ কিম্বের মামেব বে বে কারেশাক্ষিণসি
ক্রমদ্যেব শীহং প্রিরব্রেভি প্নঃ প্রর্মবহুয়া আজোশস্তঃ॥ ১॥

কতিপর বালক বেণুবাদন করিতে করিতে, কতকগুলি শৃঙ্গ বাজাইতে বাজাইতে, কতিশন্ন বাশক ভূসের সহিত গান করিতে করিতে, অপর কতকগুলি বালক কোকিল সঙ্গে কলধ্বনি করিতে ২ খেলা করিতে লাগিল॥ ৬ বি

অন্য কতিপন্ন বালক ভালিপূর্বাক পক্ষিদের ছালায় ধাবন, হংসদের সহিত পমন,বকসঙ্গে উপবেশন, তথা ময়ুর মহ নৃত্যে প্রস্তুত হইল ॥ ৭॥

আর, কোন কোন বালক বৃদ্ধাখার সমুসান বানরপুদ্ধ অথবা বানরশাবককে আকর্ষণ, কেহ কেহ তাহাদের সন্ত্রিত বৃক্ষে আরোহণ, অন্যে তাহাদের সঙ্গে দন্তদর্শন ও জাবিক্ষেপদারা মুখবিক্ষতি তথা তাহাদের ক্রিভিন্যাহারে বৃক্ষের এক শাখা হইতে অন্য শাখার উল্লেখন আরম্ভ করিল ॥ ৮॥

আর আর কলেকেরা ভেকগণের সহিত নির্ধরাগ্ন ত সরিৎ অর্থাৎ সূত্রজনধারাসকল উলজন

# ইখং সতাং ব্রহাত্থামুভূত্যা দাস্যং গভানাং পরদৈবতেন।

# **टी श्रायां** वी

তানভিবিদ্যিত: লোকৰবেনাভিনন্দতি ইশ্বীতি। সতাং বিছ্যাং। ব্ৰহ্ম চ তংক্ষক অহত্তিক তথা অধাকাশপ্ৰমক্ষেনেতাৰ্থ:।
ভকানাং প্ৰমদৈৰতেন আত্মান্দ্ৰ নাথেন মান্ত্ৰিতানাত ন্যদাৰ্কত্যা প্ৰতীয়মানেৰ সহ বিজ্ঞু:। ক্বতামাং প্ৰানাং প্ৰা
বৈষ্ণব্বোষণী।

বিশেষেণ হসন্ত: ভূজাছাৎক্ষেপণাদিনা বিবিধন্বপ্রাপ্তে:। यहा। প্রতিবিশ্বানি মুধবৈক্ত্যাদিপুর্বে কং অমুকুর্বন্ত:॥ ৯॥

সতাং পরমন্বরূপসভাবিভাববতাং। यह। এক্ষপদসায়িধ্যাৎ সহিশেষাশাং, উভয়গাপি জ্ঞানিনামিত্যের অমুভূতিঃ ক্ষড়প্রতি-বোগিৰপ্ৰকাশবন্ত সৈব কুখং আত্মাজেন পৰ্য্যবৃদিতত্ত্বা নিৰুপাধি প্রমপ্রেমাম্পদ্ভাৎ। সৈব বৃহত্তমপ্র্যায়ত্রজাধ্যা স্বের্বাং প্রম-শ্বরূপন্থাং তেবাং কেবলতজ্ঞপেণ ক্ষুরতা। দাস্যং গতানাং দাস্যভক্তিমতাং এশ্বর্যাদিপূর্ণভন্না ততোহপি পরেণ দৈবতেন সর্কারা-ধ্যেন স্বরূপেণ ক্রতা মহিমদর্শনার্থ: তৎকুর্বিষয়স্য বিরল্ভামাহ মায়াধিকারপতিতানাত্ত যৎ কিঞ্চির্বদারকরপেণ জ্ঞান-তক্তোরভাবাৎ নতু তত্তজ্ঞপেণাপি তেন সার্জ্ব বিজ্ঞ :। সহার্থত্তীয়রা স্বপ্রেমা বশীক্ষত্যা অস্বিতামাপাদিতেন বিহারমপি কত-বস্ত ইতার্থঃ। অতস্তেভ্যঃ সর্ব্বেভ্যঃ কৃতপুণ্যপুঞ্জা ইতি লোকোক্তিঃ। বস্তুতন্ত কৃতানাং চরিতানাং ভগবতঃ পরমপ্রসাদহেতুদ্বেন পুণাশ্চারবং পুঞ্চা বেষাং তে ইত্যর্থং। পুণ্যন্ত চার্ম্বপীত্যময়ং। তত্র শ্রীমসুনীক্সচরণানামিদং বিবক্ষিতং।ভগবাংস্তাবদ্সাধা-বণস্বরূপেখর্গ্যান্ত্রবিশেষ:। তত্র স্বরূপং প্রমানন্দ ঐশ্বগ্রম্যমেনাদ্ধানন্তন্তাভাবিকপ্রভৃতামাধুর্গ্যম্যমেদিভায় সর্বমনো-হরং স্বাভাবিকরপগুণলীলাদিসোঁষ্ঠবং। তত্তদমূভবদাধনঞ্চ ক্রমেণ জ্ঞানং ক্রেয়ং।, ভক্ত্যাধ্যসৌরবমিশ্রা প্রীতিঃ শুদ্ধ-প্রীতিশ্চ। এতত্রিবিধসাধ্যসাধন ভাবেন মায়াপ্রিতানাং ক্রুগ্র্যাভাস এব কেনাপ্যংশেন বন্ধপর্শাং। নাহং প্রকাশঃ সর্বাস্য যোগ-মায়াসমাবৃত ইতি ন্যায়েন তং ব্ৰহ্মপ্ৰমং সাক্ষান্তগৰস্তমধোকজং। মহুধ্যদৃষ্ট্যা কুল্লজা মৰ্ত্ত্যাত্মানোন মেনিরে ইত্যাদিবং। অত্র ব্রহ্মছাদিত্রক্রমণ্ট পূর্ববদেব তত্ত্র ভক্তের্যারতরা কৃতিত্ত তৎপূর্বতঃ পূণা। যস্যাত্তি ভক্তির্ভাবত্যকিকনা নর্বৈ ও শৈতত্ত্র সমাদতে হর। ইতি ভক্তা মানভিজানাতি ইত্যন্তভূতিসর্বজ্ঞানবৃত্তিখাং। ওক্সীভিত্ত ততোহিপি প্লাবিষ্যতে। আহে। ভাগ্যমহো ভাগ্যমিত্যাদিনা। তত্ত্বত নিবিশেষজ্ঞানেন স্বরূপাস্থভবঃ গৌরবময়জ্ঞানেন ঐশ্ব্যাস্থভবঃ প্রীতিময়জ্ঞানেন মাধুর্যাস্থভব-ইতি। শুদ্ধপরমমধুরতাক্ঠিন্ত নির্কিশেষজ্ঞানিধুন বিদ্যুত এব। দাদেশ্বপি গৌরবেণ ,সঙ্কৃচিতচিত্ততমা যথেইগ্রহণাশক্তে: নাতীবোৎপদ্যতে বস্তবিচাবে তু দৈব দর্বতঃ দাঘী আত্মারামাশ্চ মুনম্ব ইত্যাদি পরিনিষ্টিতোৎপীত্যাদিভ্যঃ। তথা এক্ষা ভবোৎহমপি

#### क्रथमसर्छः।

ইখমিতিহয়ং॥ ১০। ১১। ১২। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২৩॥

#### **बी विश्वनाशहक वर्डी**।

এবং তেষাং ক্রীড়াং নির্বর্গ ব্রক্ষোকসামিত্যন্তরপ্লোকোজ্ঞা তদাদিব্রন্ধাসিমাঝাণামের সৌভাগ্যং সর্ব্বেভ্য এব সকাশাদধিকদ্বেন ভৌতি ইথমিতি। অন্ত লগতি প্রায়ন্ত্রিবিধা এব জনা গণ্যন্তে। জ্ঞানিনো ভক্তাং কর্মিণক্ষ তন্ত্র সতাং ভক্তিমবেন সন্ধ্বেনোচ্যনানানাং জ্ঞানিনাং। ব্রহ্মচ তৎস্থঞ্চ অন্তভ্তিক তয়া সহেতি কৃষ্ণপরীরসৈত্র ব্রহ্মপ্রয়ন্ত্তিছং তেনৈব সহ তেষাং বিহারাৎ। ভন্মাজ্যানানাং জ্ঞানিনাং। ব্রহ্মচ কর্মানিনাহন্যে সন্ধ্বেনিবোচ্যন্তে ইতি জ্ঞেয়ং। দাস্যং গতানাং কেবলভক্তিমতাং সতাং পর্বেবতেনেইদেবেনেভি তদানীন্তরা ব্রন্ধ্রনভালাং প্রারোদাসভক্তা এবেতি ত এব নির্দিষ্টাং। মায়াং বৈব্যাক্ত স্থ্যমাজিতানাং কর্মিণাং নম্বন্ধরকেণ প্রাক্তমন্ত্র্যবালতয়া প্রতীমমানেন ক্রন্ধেন সহেতি বিজহুরিতি। জ্ঞানিনাং তদমুত্ব এব নতু তেন সহ বিহার: সক্তবেং। ভক্তানাং গৈরবেণ তত্ত্বননেব নম্পু বিহারবোগ্যতা। কন্মিণাত্তন ত তম্বন্ধইং প্রতিভাবান্ধ তত্ত্বলন্মণি কৃতত্তেন সহ বিহার ইত্যেতে তু বিজহুঃ বিহারৈ তং স্থানন্ধ পরিপূর্ণমণি প্রেমবিগাসময়মানন্দবিশেষং প্রাপ্রেয়ব স্বন্ধণি সর্ক্তো বিলক্ষণনানন্দ্র্যিত্যর্থঃ। জতঃ সর্ব্বেভ্য সকাশাদেতে এব কৃত্যপুণ্য ইতি কিং বক্তবাং কৃতপুণ্যপুদ্ধা এবেতি লোকপ্রতীত্যৈবোজিন

এবং প্রতিবিদ্ধ সকলের প্রতি উপহাস তথা প্রতিধ্বনির প্রতি লাজোশ করিতে লাগিল। ১॥

হে রাজন্। যে ভগবান্ হরি জানিজনের পক্ষে বয়প্তাকাশ পরম ত্থবরপ, ভক্জনের পাত্রপ্রদ পরমদেবতা এবং মারাজিত জনের পক্ষে নরবালক রূপে প্রতীয়মান হয়েন, তাঁহার সহিত গোপবালক মায়াশ্রিতানাং নরদারকেণ সার্দ্ধং বিজহুঃ কৃতপুণ্যপুঞ্জাঃ॥ ১০॥ যৎপাদপাংশুর্বহিজন্মকৃচ্ছুতো ধৃতাস্থাতি রোগিতিরপালভাঃ। সএব যদ্ধিষয়ঃ স্বয়ং স্থিতঃ কিঃ বর্ণাতে দিউমহো ত্রজৌকুসাং॥ ১১॥

# व्यिभवचामी।

রাশয়ো বেষাং তে ব্রহ্মবিদাং তদ্মুভব এব ভক্তানাং অভিগোরবেশৈব ভদ্দং এতে তু তেন সহ সংখ্যন বিজ্ঞা । ত্রাজামিতি ভাবঃ ॥ ১০ ॥

বহুভির্জনভি: কৃছেভ: কুছেণ ধৃত আত্মা মনো বৈ কৈ:॥১১॥

#### देवक्षवरज्ञावनौ।

যান্য কলাঃ কলার। ইত্যালৈর্থগ্রজ্ঞানবারিধেরপি প্রীসম্বর্ধন্য ভাতৃয়েহপরিপ্ল ইত্যাদি ব্রধার্মাণে নর্দ্ধন্ত গুরুপারং ইত্যাদিভাবেডাঃ। তদেবং স্থিতে স্থিতেতসে। গৌরবাসম্কৃতিত্তরা তৎ প্রীতেশ্চ তদসংকীণজেন পূর্ণতরা স্বভাববিশেষেণ চ প্রজ্ঞিকণমপি বিকাশিক্তরা তেন তচ্চেত্রোইপি পুনস্তাদৃশতরা প্রীক্তক্তে চেত আদেরপি তদ্বদেব তথাবিধ্বরা স্থীনামেব রূপগুণ-স্মুমুত্বীলামাধুর্গ্যান্যসমূদ্রবকর্তৃষ্প স্বপ্রীতি মাধুর্যা-কৃত্তবশীভাবর্ধক দৃশ্যতে তত্তি ন ত্র তর দৃশ্যত ইতি সর্ব্বেতাঃ কৃতপুণ্পুঞ্জরমন্বাংশ্যমৎকার্যতীতি। অন্যত্তৈঃ। যথা। প্র্নির্দ্ধি পূর্ব্বিস্থানার তদানীং তদবতারে নারাপ্রিতানাং প্রাপঞ্জিকানামপি কুপরা মধুরনরাকারেণ ক্রতা স্বন্ধ ভগবতেত্যাদি-ব্যাখ্যেরং। যথা। মারাপ্রিতানাং তংক্পাবিশেষমবলস্থ্যানানামিতি প্রমমধুরত্যা ক্রতা তু সার্দ্ধং বিজ্ঞুরিত্যাদি ষোজ্যং॥ ১০॥

অহো দূরে তাবদান্তাং এবাং তেন সহ নিরম্ভরবিচিত্রবিহারদৌভাগ্যমহিমা ব্রশ্বাসিমাত্রাণামপি তদ্দনিমাত্রদৌভাগ্যমপি পরমমহন্তিরপানৈগ্রবৃত্তামিত্যাই বাবদিতি। যদ্য পাদদম্বী কুরাপি পতিতঃ পাংগুরেকোহিপি সাক্ষাং সএব। কিং বা পাদপাংগুরিতি কথঞ্জিং কশ্চিদলি সম্বন্ধাহপীত্যর্থই। কিম্বা বদ্য পাদপ: শ্রীবৃন্দাবনকদম্বাদিবৃক্তঃ। যথা। যদ্য পাদে পিবন্তি সপ্রেম নিরীক্তেইতি ভক্তবিশেষান্তেরাং অংগুর্বতঃ কিরণছটোপি। বছভির্দ্ধান্তি ত্তর মমনিয়মপ্রত্যাহারাদিকেন্দের্ধ্বতঃ স্থিরীকৃত্তাম্বা মনো থৈঃ। অতো বোগিভিঃ সমাধিষ্কৈরপি অগভ্যঃ লক্ মৃশক্যঃ সএব ম্বরং ভগবান শ্রীকৃষ্ণো বেষাং দূশোবি বিশ্ব-কৃষ্ণাং সাক্ষান্শাঃ ম্বরং মুভাবতঃ মুরপ্রতো বা স্থিতঃ স্থিরতয়া নিত্যমন্তি। মুক্ত কিঞ্জিজ্বগৎ সর্ব্ধং প্রাণ্য নারায়ণঃ স্থিত ইতিবং। অহো আশ্বাণি তেবাং দিষ্টং ভাগ্যং। ম্বা। দিষ্ট্ব্য মহো বিচিত্রোংসবঃ কিং বর্ণাতে বর্ণয়িয়্বতে। অপিপু বর্ণয়িতুং ন শকাতে ইত্যর্থ: ৪১১

### **बै**विश्वनाथहळ्वरहीं।

র্ন তা নিজানিকানাং তেষাং নিধিলেভা জানিভাো ভক্তেভাশেচাংকুইতমানাং ন তত্র প্রাচীনপুণ্যবন্ধং বন্ধতো হেতুরিতি জ্ঞেরং পুণ্য-শব্দেন ভগবংপ্রিয়াচরণংশা লক্ষণীয়ং তহশীকারাতিশয়রূপপ্রয়োজনলাভার ॥ ১০ ॥

তেন নার্দ্ধং বিহারবার্তা দূরে তাবদান্তাং তৎসম্বন্ধিবস্তমাত্রমপি গুল ভূমিত্যাহ বদিতি। পাংগুরেকোইপি ধৃলিকণ:। বদা। বস্য পাদপানাং বিহারাম্পদর্শাবনীয়র্কাণাং অংশুরেকঃ কিরণোইপি ধৃতাত্মভিরেকাগ্রীকৃতিচিত্তৈ ল'ন্ধুমনহ': নারং স্থাপো ভগবানিতি পূর্কোক্রে:। স্বয়ং স্থিত ইতি স্বদর্শন সাধনমন্পেক্যৈবেত্যর্থ:। দিষ্টং ভাগ্যং। বদা। দিষ্টমহঃ দিষ্টসা তেক উৎস্বো বা॥ >> ॥

গণ যথন ঐ প্রকারে বিহার করিতে লাগিল তথন অবশ্যই বোধ হইবে ঐ সকল বালকের পুঞা ২ পুণা ছিল, তাহাতেই ভাহার। ভগবানের সহিত সংগভাবে বিহার করিতে পাইয়াছিল। ফলতঃ ব্রহ্মন্ত পুরুষেরা বাঁহার অমুভবমাত্র করেন, ভক্তজন অভিপৌরকে বাঁহার উপাসনা করিয়া থাকেন, ব্রজ্ঞ বালকগণ সংগভাবে যে তাঁহার সহিত বিহার করিতে লাগিল, ইহাতে তাহাদের আশ্রহ্ম ভাগ্য ব্যতীত আর কি বলা যাইবে ?॥ ১০॥

অথবা যোগিগণ বহুজন্মপর্যন্ত কৃচ্ছাদি জ্লেড্ছারা সংয্তচিত হইরাও বাঁহার চরণরেপুলাভ করিতে পান না সেই ভগবান স্বয়ং যে সকল জ্লেরাসির দৃষ্টিগোচরে অবস্থিত হন, তাহাদের ভাগ্না যে অত্যাশ্চর্যা ইহা বর্ণন করিয়া বলা বাহুলামান্ত ॥ >> ॥ অথাবনামাত্যপতশাহাস্ত্রক্তেষাং স্বক্রীজনবীক্ষণাক্ষমঃ।
নিত্যং যদস্তনি জ্ঞীবিতেপ্সুভিঃ পীতামূতৈরপ্যমরেঃ প্রতীক্ষ্যতে ॥ ১২ ॥
দৃষ্ট্রার্ডকান্ কৃষ্ণমুখান্ঘাস্তরঃ কংসানুশিষ্টঃ স বকীবকানুজঃ।
অয়স্ত মে সোদরনাশকৃতরোর্দ্রোর্থেনং স্বলং হনিষ্যে ॥ ১৩ ॥

### धिधतवामी।

স্থ্কীড়ন বীকণে ন কমা বস্য সংকথস্ত: যস্য অন্ত: অন্তরং ছিন্তং পীতামুতৈরপি ততে। মৃত্যভীতৈরমরে: প্রতীক্ষাতে কথং মরিষ্যতি কদা বেতি। যথ কথস্তং স্থকীড়নং বদস্ত ছদিরে অমতরং প্রতীক্ষাতে বিচিন্তাতে পীতামুতৈরপি প্ননিজ্বজীবিতেক্স্তি:। অয়স্তাব:। নামৃতপানমাত্রেণ জীবনং স্থলং ভবতি কিন্তু ভগবংলীলাম্বরণেনেতি তদেব নিত্যমন্ত ছিতি॥ ১২॥

•

কৃষ্ণমুখানর্ভকান্ দৃষ্ট্রা স ইতি ব্যবস্য নিশ্চিত্য আজগরং বপু ধূঁপো তেবাং গ্রসনাশরা পথি ব্যশেতেতি ভৃতীরশোকেনামর:। কংসেনাশ্লিষ্টা প্রহিত: বকী পূতনা কথং ব্যবস্য তদাহ অর্থিতি সার্দ্ধেন মম ত্রেম্ব যোটে সোদর্রোহ প্রারং এনং কৃষ্ণং স্বলং স্টেন্যং বংস্তংপালস্থিতং ছনিব্যামি॥ ১৩॥

### বৈষ্ণবতোষণী।

অথেতি ভিল্লোপক্রমে প্রস্তরদোপ্যাতকরাং অভ্যপতং সহসাভিম্থমাজগাম ততণ্ড তেবাং স্থকীড়ন্বীকণাক্রমা ২ভ্লিতি শেষঃ॥ ১২॥

দৃষ্টে তি ত্রিকং। অথাকাৎ সোদরনাশাদ্ধেতোং। অত্র মমেতি পাঠং সর্ক্ষ সম্মতঃ চিচ্ছুকসম্মতশ্চ বাক্যভেদাদপৌনক্ষক্যং। অনুস্তিঃ। তত্র মহাপক্ষে যথা পীতং স্থানাত্মগাৎ ক্বতং অমৃতং মোকো থৈমু কৈবনীতার্থঃ। কথস্কুতৈঃ। প্রীজগবদ্ধীনা-দর্শনার্থং নিজনীবিতেপ্সৃতিঃ চীরজিলীবিবৃতিরতএবামরৈঃ স্কৃলস্ক্ষদেহধরনাশর্হিতৈ লীলাধিগ্রহত্যা মৃত্যুশ্টনারিতি বা মৃক্তা অপি লীলার বিগ্রহং ক্বা ভঙ্গত ইতি। প্রতীক্ষাতে অপেক্যাতে। অনাৎ সমানং॥ ১৩॥

### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

এবং তত্ত্তিহারস্য প্রতিক্ষণপ্রমানল্বর্দ্ধকর্বাৎ স্বতঃ সমাপ্তাসম্ভবমাকল্য সমাপ্তিক বিনা ভোজনপানাদিকং ন সিধ্যেদিতি প্রাত্তি ভোজনসময়তারক্ষাবধার্য লীলাশকৈর তি তিনিছেদার্থ ছইসংহারস্যাপ্যবশ্যকর্ত্তব্যতরা চ তদানীমেবাস্তর্যামিপ্রেরণবশাং কশ্চিদঘাস্থরো নাম তেবামভিমুখমানিন্যে ইত্যাহ অথেতি। স্থকীজনস্য বীক্ষণমপি ন ক্ষমত ইতি সর্ব্বস্থদমপি তেবাং ক্রীজনং তদ্য ছংখদমভূদিতি ভাবং। যদস্তঃ যস্যাধাস্থরসাাস্তরং মরণসাধকছিত্তং পীতামৃতৈরণি ততে। মৃত্যুভীতৈরমরেঃ কণং মরিষ্যতীতি প্রক্রীক্যতে। বহা। বং স্থকীজনং অন্তর্দ্ধ প্রতীক্ষ্যতে প্রতিক্রণমীক্ষাতে চিন্তাত ইত্যর্থ: পীতামৃতৈরণি ক্রক্ষণীলামৃতপানং বিনা জীবিতং বস্তুতে জীবিতং ন ভবতি যত স্বস্থারিজ্লীবিতেশ ভিরিত্যর্থ: ॥ ১২॥

কৃষ্ণম্থান্কুঞাদীন্ দৃষ্ট্। স অবাস্থর: ইতি ব্যবস্থা নিশ্চিত্য তেবাং গ্রসনাশর। পথি ব্যশেতেতি তৃতীয়েনাৰয়:। বকী পৃত্সা। ব্যবসায়মাহ অয়ন্থিতি সার্দ্ধেন। অয়ং কৃষ্ণঃ মম সোদরয়ো নশিক্ষৎ অথ অতএব তয়োহ য়ো: পিঞ্দানার্থমিতি শেষঃ উত্তরশ্লোকার্থ-দৃষ্ট্যা কুল্যঃ স্বলং স্সৈন্যং হনিয়ামি॥ ১৩॥

সে যাহা হউক, তদনস্তর এক দিন অঘনামে একটা মহা জন্মর ব্রজবালকদিগের ঐ রূপ স্থ-ক্রীড়া দর্শনে অসহিষ্ণু হইরা সেই স্থানে আসিয়া উপস্থিত হইল। ঐ দানব অতিশয় ফুর্দান্ত, দেব-তারা অমৃতপানে অমর হইরাও তাহা হইতে মৃত্যুভয় কুরত নিরস্তর তাহার ছিদ্র অথেষণ করিতেন। অর্থাৎ দেবগণ স্বস্কীবন্বাসনায় নিত্য ঐ রূপ করিতেন এ পাপাত্মা কি প্রকারে বিনষ্ট হইবে॥ ১২॥

ঐ অষাহ্যর বকী (পূতনা) ও বকাহ্মরের অনুজ, কংসকর্ত্ক প্রেরিত হইয়া আসিয়াছিল। সে কৃষ্ণপ্রভৃতি বালকর্মতে অবলোকন করিয়া নিশ্চর করিল এই বালক আমার সেই ছই সহোদ্রের বিনাশকারী, অতএব বংসপাল সহিত ইহাকে অদ্যই নিহত করিব॥ ১৩॥

এতে যদা মৎস্কাদোন্তিলাপঃ কৃতান্তদা নউসমা ব্রজ্ঞাকসঃ।
প্রাণে গতে বর্ম কা কু চিন্তা প্রজাদবঃ প্রাণভৃতো হি যে তে॥ ১৪॥
ইতি ব্যবস্যাজগরং বৃহদ্বপুঃ স যোজনায়ামসহাজ্রিপীবরং ।
ধ্রাধ্রোতি জলদোত্তরোঠো দ্য্যাননান্তো গিরিশৃঙ্গদংষ্ট্রঃ।
ধ্যান্তান্তরাস্যো বিততাধ্বজিহাঃ পরুষানিলখাসদবেক্ষণোক্ষঃ॥ ১৬॥

### खीधत्रवामी।

শ্ৰীৰম্ভাগৰতম্।

নমু তথাপি ব্রক্তা অবশিষ্যেরন্নেত্যাহ এত ইতি। তিলাপঃ ক্ষতা ন্তিলোদকতয়া কল্লিতাঃ। বন্ধ স্থ দেহের। প্রজা এব অসবো বেষাং তে তথা ॥ ১৪ ॥

স যোজনায়ামং যোজনপ্রমাণেন দৈৰ্ঘ্যে যুক্তঞ্চ তৎ মহাজিবৎ পীবরঞ্চ। ব্যাতং প্রসারিতং গুহাতুল্যমাননং যন্ধিন্ তৎ ॥ ১६ ॥ অন্ত্তমিতি যত্কং তদ্দর্শীয়তুং বিশিন্তি ধরায়ামধর ওঠো যস্য সং জলদেবৃভরোঠো যস্য দর্যাবিব আননভাত্তো ক্রণী যস্য সং গিবে: শৃঙ্গাণীব দংখ্রা যস্য সং । ধ্বাস্তবৎ অন্তরাভাং যস্য সং । বিততাধ্ববৎ জিহ্বা যস্য সং পক্ষানিল্বৎ খাসো যস্য দ্ববদীক্ষণয়োক্ষয়ং দাহকদৃষ্টিরিত্যর্থ:। প্রস্কানিল ধাস্চাসৌ দ্বেক্ষণোক্ষণ্টেতি স তথা ॥ ১৬ ॥

### বৈষ্ণবতোষণী।

যথা তরোছ রোনি মিত্তরোঃ তথৈর গ্রহণার্থমিতার্থঃ নষ্ট্রসমাঃ মৃতপ্রায়াঃ ॥ ১৪ ॥ হি যতঃ ব্যবসায়বিশেষেণ অস্পন্দত্তাদিনা অশেত যতঃ থকঃ বঞ্চনাপূর্বক হিংসকঃ তাদৃশবালানাং গ্রসনে প্রবৃত্তেঃ ॥ ১৫ ॥ পক্ষবেতি পর্বেতি বা পাঠঃ । পরুষানিলবং খাসাভ্যাং দববদীক্ষণাভ্যাঞ্চ তেরু বা উষ্ণঃ ॥ ১৬ ॥

# ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

এতে কৃষ্ণাদয়ে। বালা মংস্কৃদোর্বকীবকয়ো র্যনি তিলাপঃ প্রেততর্পণার্থকতিলোদকর্নপাঃ ক্বতাঃ তিলোদকতয়া করিতাঃ তদা ব্রজ্যোকসো নন্দাদয়: । বর্ম্ম দেহেষু অনষ্টেম্প কা চিন্তা ন কাপীত্যর্থ: । যে প্রাণিনন্তে প্রকা অপত্যান্যের অসবঃ প্রাণা যেষাং তে অতঃ স্বত এব মরিষ্যন্তীত্যর্থ: ॥ ১৪ ॥

যোজনায়ামং যোজনপ্রমাণেন দৈর্ঘ্যেণ যুক্তং মহাদ্রিবং পীবরং ব্যাত্তং প্রসারিতং গুহাতুল্যমাননং যক্ষিন তং ॥ ১৫ ॥ ধরায়ামধরোঠো যস্য সং। জলদে উত্তরোঠো যস্য সং। দর্যো কল্রাবিবাননস্যাত্তো স্কণী যস্য সং। ধ্রাস্তম্ভরাস্যে

মুখনধ্যে যদ্য স:। বিস্তৃতঃ পদ্ম ইব ভিহ্বা যদ্য দঃ। পক্ষানিলবংখাদো যদ্য দ দাবাগ্নিবদীক্ষণয়োককো যদ্য দচ সচ সঃ॥ ১৬॥

ইহাদিগকে বিনষ্ট করিলে অজবাসি জনগণও অবশিষ্ট থাকিবে না, ইহারা যখন আমার স্থাদ্ দিগকে তিলোদকরূপে কল্লিত করিয়াছে তথন অজবাসিরা ত বিনষ্ট হইয়াই রহিয়াছে। ফলতঃ-প্রাণ গত হইলে আর দেহের প্রতি চিন্তা কি ? প্রাণধারি ব্যক্তিদিগের পুত্রই প্রিয়তরপ্রাণ, সেই পুত্র নষ্ট হইবে॥ ১৪॥

এই প্রকার নিশ্চর করিয়া ঐ থল অস্কর যোজনপ্রমাণ দীর্ঘ এবং পর্বতভূল্য পীবর আশ্চর্য্য বিশাল অজগুরদেহধারণ করিরা ঐ সকল বালককে গ্রাস করিবার আশার পথিমধ্যে শয়ন করিল। তাহার বিশ্বাল দেহে পর্বত গুহা ভূল্য আনন প্রাসারিত করিয়া রহিল। ১৫॥

অধর ওঠ ধরার পতিত ও উত্তর ওঠ উপরে জলধরে সংলগ্ন হইল, চুই স্কণী অধাৎ ওঠের প্রান্ত-ভাগ পর্বতে গুহার তুল্য বিস্তীর্ণ রহিল। তাহার দস্তসকল গিরিশৃক সনান, মুখের মধ্যভাগ বেন গাঢ় অন্ধকার জিহনা যেন বিস্তীর্ণ বন্ধ, নিশ্বাস সাক্ষাৎ পরুষ পরন, চক্ষুর্ব রের দৃষ্টি দাবাফি-সদৃশ অতিশয় উষ্ণ ॥ ১৬ ॥ দৃষ্ঠ্বা তং তাদুশং সর্বে মন্ধা রন্দাবনপ্রিয়:। ব্যাতাজগরত্তেন অূৎপ্রেক্তে আ লীলয়া ॥১৭॥ আছো মিত্রাণি গদত সত্তৃতং পুরংস্থিত:। অন্সংগ্রসনব্যাত্ত্যালভূপায়তে ন বা ॥ ১৮॥ সত্যমক্করার ক্রম্তরাহস্কুবদ্ খনং। অধরাহসুবদোধতৎপ্রতিছায়য়ায়ণং॥ ১৯॥

### वीधत्रवामी।

বস্তুতোহজগরমেব ব্যান্তত্তং দৃষ্ট্। বৃন্ধাবন্দ্য শ্রীঃ সম্পদেবেতি ভ্রান্ত্যা মত্বা বিপরীতং ব্যান্তাজগরদ্য সাদৃশ্যেন তং উৎপ্রেক্ষিত্তবন্ধঃ ॥ ১৭ ॥

উৎপ্রেক্ষামেব প্রশ্নোত্তরাভ্যামাহ আহো ইতি। স্বক্টং স্বাভাস্মিদং ন বা ত্তাপি অসংসংগ্রসনায় ব্যাতং য্ব্যাসত্তং ত্র্দাচরতি ন বা ॥ ১৮ ॥

নিশ্চিতং তথৈবেত্যাহু: সত্যমিতি। অর্ককরৈরারক্তং ঘনং উন্তরৌষ্ঠ বৎ পশ্যত। তস্য ঘনস্য প্রতিচ্ছায়য়া অরুণং রোধঃ হলং অধুরৌষ্ঠবং পশ্যতেতি সর্বাত্রান্তেতি॥ ১৯॥

# বৈষ্ণবভোষণী।

হি নিশ্চিতং। লীলগৈবেতি তথোৎপ্রেক্ষণমপি তেষামেকা ক্রীইড়বেতার্থঃ ॥ ১৭ ॥

গদিতব্যমেবাহু: সংস্বত্যাদিনাহন্দদিত্যাদৌ যদগ্রভাগ ইতি শেষ:॥ ১৮॥

গদতেতি কেষাঞ্চিৎ প্রশ্নং কেচিদস্থনোদমানা আহুঃ সত্যমিতি যুগ্মকেন। যথার্থং বদথেত্যর্থঃ তদেবাছরর্কেত্যাদিনা গন্ধবিদিত্যক্তেন অর্কক্রারক্তমিতি এষাং পশ্চিমাভিমুথা গতিস্তস্য পূর্ব্বাভিমুথা স্থিতির্গম্যতে প্রাভস্তাত্বাৎ। উত্তরেত্যতা পুস্বভাব আর্থঃ॥১৯॥

# वीविश्वनाथठकवर्शी।

তম্যাস্থরং দৃষ্ট্। মহাসর্পবৃদ্ধা কাংশিচৎপলায়মানানাশাসয়স্তঃ সর্কেইন্যে মন্ত্রেতি নমু রে মূঢ়াঃ এতাবৎপ্রমাণঃ সর্পো ন সম্ভবতীত্যতো বৃন্ধাবন শোভাবিশেষাধায়কো জন্তবিশ্বেষা বিধাত্রৈব রচিতঃ কিন্তু মহাসর্প প্রসারিত তুথাকার ইতি নিশ্চিত্য ব্যাতঃ প্রস্তৃতং যদাজগরত্তঃ তেন সহ উৎপ্রেক্ষাস্তে উপমিমতে লীলয়েতি ভয়াভাবঃ স্টিতঃ ॥ ১৭ ॥

কাংশিকুথ্যান্ স্থীন্ সংখাধ্য স্থানিশ্চর্স্য প্রামাণ্যার্থং পৃচ্ছন্তি এবং ইতি। সন্তক্টং নিশ্চলং প্রাণিবিশেষঃ। কুটোৎস্ত্রী নিশ্চলে রাশাবিতি মেদিনী।পূর্বনিপাতাভাব আর্ষঃ। যথা। গিরিশৃঙ্গৰাচকক্টশন্দেনোপমিতং ব্যায়াদিভি রিত্যনেন সমাসঃ। অস্মাকং সংগ্রসনার্থমিব ব্যাত্তসর্পতৃগুবদাচরতি ন বা॥১৮॥

সত্যমিতি যথা যুবং মন্যধ্বে তথৈবেতি তে প্রত্যাহ:। অর্ককরৈরারক্তং ঘনমেতস্যোত্তরোষ্ঠবৎ পশ্যত। তস্য ঘনস্য প্রতিচ্ছান্তরা অরুণং রোধংস্থলমধ্বোষ্ঠবৎ পশ্যত। হ্বোক্সন্তরাধরত্বাসংভবত্বাদ্ত হ্মশন্দেনোষ্ঠহরং লক্ষ্যতে ॥ ১৯॥

হে রাজন্! উক্ত প্রকার বিস্তৃত বদন নিরীক্ষণ করিয়া সকল বালকই তাহাকে বাস্তবিক অজগর মনে করিল এবং এ আমাদের রুদ্দাবনের সম্পদ্ এই ভ্রান্তি হেড় বিপরীত্ব ব্রিয়া লীলাবশতঃ বিস্তৃত অজগরের সাদৃশ্যে তর্ক করিতে আরম্ভ করিল॥ ১৭॥

এবং প্রেমান্তরন্তারা পরস্পার কহিতে লাগিল, অহে মিত্রগণ! বলত আমাদের অত্যে এই বে বস্তু অবস্থিত রহিয়াছে ইহা সবাভাস কি না ? এই জন্তু কি আমাদিগকে প্রাস্থ করিবার নিমিত এই ক্রপে বিস্তৃত সর্পতৃত্ব ভাচরণ করিতেছে ? ॥ ১৮ ॥

তদনস্তর নিশ্চয় করিয়া বলিতে লাগিল, হাঁ বটে ঐ প্রকারই সত্য, ঐ দেখ, মূর্য্যকিরণে আরক্ত মেঘ ইহার উত্তর ওঠের তুল্য এবং ঐ মেঘের প্রতিছোয়ায় অরুণিত হল ইহার অধর ওঠ সদৃশ হইয়া আছে॥ ১৯॥ প্রতিস্পর্দ্ধেতে স্কভ্যাং সব্যাসব্যে নগোদরে। তু**ঙ্গশৃঙ্গালয়োহপ্যেতান্তদং ট্রাভিশ্চ পশ্য**ত॥ ২০॥ আন্ত্তান্তামনার্গোহনং রসনাং প্রতি গর্জ্জতি। এষামন্তর্গতং ধ্বান্তমেতদপ্য**ন্তরাননং ॥ ২১॥** দাবোঞ্ধরবাতোহয়ং খাসবদ্ধাতি পশ্যত। তদগদ্ধসন্তর্গদ্ধোহপ্যন্তরামিষগদ্ধবং ॥ ২২॥ অস্থান্ কিমত্র এসিতা নিবিফীনয়ং তথা চেদ্দকবদ্ধিনজ্ক্যতি।
ক্ষণাদনেনেতি বকার্গুশশুখং বীক্যোদ্ধসন্তঃ করতাড়নৈ র্যুঃ॥ ২৩॥

### श्रीधत्रश्रामी ।

স্কভ্যাং ওঠপ্রান্তাভাগে প্রতিম্পর্কেতে তুশ্যতথা বর্ত্তে নগোদরে গিরিদর্য্যে তথ্য দংখ্রীভি: ম্পর্কমানা: ॥ ২০ ॥ আন্তামানমার্থিং বিজ্তো দৈর্ঘান্ মার্গ: প্রতিগর্জতি প্রতিম্পর্কতে এবাং শৃকালাং মধ্যগতমক্কারং অন্তরাননং আননমধ্যং প্রতিগ্র্কিতি॥ ২১ ॥

দাবেন উষ্ণ: ধরবাতোহয়ং। তেন দাবাগ্নিনা দগ্ধানাং সন্থানাং যো হুর্গদ্ধ: সূত্র সর্পান্তর্মবাজ্পরমন্যথোৎপ্রেক্ষ্য নির্ভন্ন যযু:। কিং প্রসিতা গ্রাস্থিতি অনেন প্রীক্লফেন হল্লা বকারে: উশৎ কমনীয়ং মুখং॥ ২৩॥

### বৈষ্ণবতোষণী।

এতা: সাক্ষান্ত্রনানা: এবমগ্রেহপি তদ্য ব্যালতুগুদ্য দংষ্ট্রাভিস্ক স্পর্কত্তে ইতি লেখে টীকারাং স্পর্কনান ইতি লেখকভ্রমাৎ॥ ২০॥ আরামযুক্তো মার্গঃ দ চান্তৃত ইতি ধ্বান্তঃ ছায়াস্থাকং ধ্বান্তাননমধ্যরো: কালবর্ণহাৎ দান্যং॥ ২১॥ ভাতীতি পশ্যত ইতি মধ্যে বিশ্বায়॥ ২২॥

ইত্যেওলাদম্ভ: উদ্ধনস্ত: তদ্য খলমারোপণেন। কিং বা স্বয়ং হদস্ত এব বিশেষত শুক্তি ক্রমুখং নিরীক্ষ্যোটচে হ'দস্ত ইত্যর্থ: কিলা ভবতাত্রাবহিতেন ভাব্যমিতি নশ্ববিজ্ঞাপনার্থমিব। করতাড়নৈরিতি করতালী: ক্রম্বেত্যর্থ:। তচে নোকরীত্যা সর্পাপসার

# প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

স্কভ্যা মস্য ওঠপ্রাস্থাভ্যাং প্রতিপার্দ্ধেতে তুলাভয়া বর্ত্তে নগোদরে পিরিদর্য্যে। এতা ইতি তজ্জন্যা দর্শরস্ত স্তস্য সর্প-তুওস্য দংষ্ট্রাভি: স্পর্ক্তে ॥ ২০ ॥

আন্তৃতায়ামঃ বিস্তৃতদৈর্ঘঃ মার্গঃ পদ্ধাঃ। রসনাং জিহ্বাং প্রতিরসনয়া সহ গর্জতি স্পর্কতে এষাং শৃঙ্গাণাং মধ্যগতমন্ধকারং কর্তু এতদপ্যস্তরাননং এতদ্যাননমধ্যং প্রতিগর্জতি স্পর্কতে॥ ২১॥

তেন দাবাগ্নিনা দথ্মানাং সন্থানাং যো হুৰ্গন্ধঃ স এব সূৰ্পান্তগ্নুতহুৰ্গন্ধবন্তাতি ॥ ২২ ॥

বিলিভা: সর্বে কিঞিৎ সভয়মাত্রকানিতি। অয়ং যদি সতা এব সর্প: স্যাদিতি ভাব:। তয়ধ্য এব কেচিদাখাসরস্ত আতঃ তথা
চেং কণমাত্রাদেব অনেন ক্ষেন হল্লা বক ইব বিনাশং প্রাপ্সাতি ইভুক্ত্বা বকারে দুর্বিত্তিস্য মুথং বীক্ষ্যেতি অক্সন্টিগোচর এব
কৃষ্ণ আতে কা চিস্তেতি লক্ষ্যিখাসা উদ্ধৃসন্ত ইতি এত বিলমধ্যে কিমপ্যতি ভো: স্থায়ত্ত্বস্থাং পশ্যাম ইতি বালাচাপল্যত

আর বাম ও দক্ষিণ দিকের তুইটা গিরিগুহা ওষ্ঠ প্রান্তভাগের সমান দৃষ্ট হইতেছে, অপর পর্ব-তের এই অত্যুক্ত শৃঙ্গরাজী ইহার দন্তপঙ্ক্তির সহিত স্পর্ধা করিতেছে॥ ২০॥

অধিক্সত, দীর্ঘতা বিশিষ্ট স্থবিস্তীর্ণ মার্গ ইহার রদনার সহিত তুল্যতা আর এই সকল শৃঙ্গের মধ্যগতে অন্ধকার ইহার মুখাড়্যস্তরের সহিত স্পর্দ্ধা করিতেছে॥ ২১॥

অপিচ, দাবানলে উষ্ণ এই থর পবন ইহার নিখাসের ন্যায় প্রকাশ পাইতেছে, অতএব এ দাবা-খিতে দশ্ধ প্রাণিসকলের যে তুর্গন্ধ তাহাই সর্পের অন্তর্গত আমিষ গদ্ধের সদৃশ বাহির হইরা আসি-তেছে। ২২।

এই প্রকারে বাস্তবিক অজগরকে অজগরত্বা বিতর্ক করিয়া পরে কহিতে লাগিল, এ কি এখানে আমাদিগকে প্রাস করিবে ? আমারা ত বিনফ হই না, এ যদি আমাদিগকে বিনফ করিতে চাহে বকাস্থরের ভায়ে অস্থরহন্তা এই জ্রীকৃষ্ণকর্ত্বক কণকালমধ্যে আপনিই বিনফ হইবে। ইহা বলিয়া বকারি ভগবান জ্রীকৃষ্ণের কমনীয় বদন অবলোকন পূর্বক হাস্থ করিতে করিতে করতালি দিয়া বজ-বালক সকলেই তদ্মধ্যে প্রবেশ করিল॥ ২০॥

ইশ্বং নিথোতিশ্যমতজ্জভাষিতং শ্রুত্বা বিচিন্ত্যেত্য মুধা মুধায়তে। রক্ষো বিদিত্বাথিল ভূতহুৎস্থিতঃ স্থানাং নিরোদ্ধুং ভগবাদ্মনো দধে॥ ২৪॥ তাবৎ প্রবিক্টাস্ত্রস্বরোদরাস্তরং পরং ন গীর্ণাঃ শিশবঃ সবৎসাঃ।

# वीशतवामी।

অমুষা বস্ততঃ সর্পবিপ্রস্থর এব মুষায়তে স্থানাং সর্পসাদৃশ্য গোচরত্বেন প্রতীয়ত ইতি তান্নিরোদ্ং বার্য়িত্ং যাব্যনো দধে তাবং প্রবিষ্ঠ ইত্যুত্তরেগাষ্যঃ ॥ ২৪ ॥

প্রবিষ্টা এব কেবলং নতু তেন গীর্ণা গিলিতা:। স্বীর্ণা ইতি পাঠে সএবার্থ:। কথস্কুতেন হতস্বকয়োরস্তঃ শ্বরতীতি তথা তেন

#### देवकवरजावनी।

ণার্থমিব নির্ভয়ত্বেন নিজবীরদর্পপ্রকটনার্থমিব চ যযুরগ্রতোহধাবন্ধিত্যর্থঃ॥ ২৩॥

ইথমুক্ত প্রকারং স্থানাং স্থীয়ানামপি মিথোহতজ্ঞানাং ইব ভাষিতং অতএবাতথ্যমযথার্থং শ্রুদ্ধা যতোহমুষা সত্যং ব্যান্তাজগর-তুওমপি মুঘায়তে রুলাবনশ্রীঘেন ভাসতে। অহা আশ্চর্যামিতি। কিঞ্চনদ্বঃ কেবলমন্ধ্যাহালৈ কিন্তানা রাক্ষ্য ইতি বিদিশ্বা কুতঃ অথিলভ্তহদি হিতঃ পরমাত্মখাং এবং সর্বপ্রবর্তকোহপি ভগবান্ সর্বৈশ্বগ্রহকোহপি তান্নিরোদ্ধ্যনা দধে ইচ্ছামকরোং॥ ২৪॥

যাবন্মনো দধে তাবৎ সবৎসাঃ শিশবং প্রবিষ্টা ইত্যাদিকং তক্ত বাহুলীলাবদবাস্তরলীলা সা চ প্রিয়ন্ত্রনপ্রেমরসাবেশময়ীতি পূর্ব্বৎ সিদ্ধান্তপদ্ধতিঃ অন্তথা সত্যসংকর্ম জ্ঞানবন্দ্র্তিক্ত তদসন্তবাৎ। বৎসানাং প্রবেশনাক্ত শেলাং বালানাং করতাড়নেন ধাবনেন চ বিদ্রাবণাং। অতএব তৎপ্রসক্ষেন বালানাং তত্ত্বমানকতমো দাবাগ্রিময়ত্বেনাত্যস্তপ্রবেশমনিচ্ছতামপি তত্ত্দরমধ্যপর্যন্তব্যন্ত। তের্মানক্র্যানাং তত্ত্ব সমাবেশন্ত লীলাশক্তিপ্রভাবাদেব জ্ঞেয়ঃ। নির্মাণঃ মুখ্সক্ষোচনাদিনা ন নির্ম্কা ইত্যর্থঃ।

### **बी**विश्वनाथठकवर्षो ।

কৌভুকোল্লাসাং। করতাড়নৈরিতি নিজনিভয়খবীরথদ্যোতনায়। স্পাশসারণার্থং বা য্যুরধাবন্ বংসা অশি পুজ্রাফুদ্যম্য তান্যধাবলিতি জেয়ং॥২০॥

মিথ: পরস্পরং অতজ্জানাং ভাষিতং অতথ্যং অযথার্থ শ্রন্থা মত্যমেব সর্পতৃত্থং হন্ত হত্তৈবাং ম্বায়তে নেদং সর্পতৃত্থং কিন্তু বুলাবনশ্রীরিতি প্রতীতীভবতীতি বিচিন্তা। কিঞ্ন কেবলং সর্পোহিপি কিন্তুৰনামকং রক্ষ ইতি বিদিন্ধা। কুতঃ অধিসভূত-হুদি স্থিতঃ প্রমান্থ্যেন সর্বজ্ঞ রাং স্থানাং স্থানান্নিরোদ্ধুং বার্গিতুং মনো দধে॥ ২৪॥

যাবন্ধনো দধে তাবদস্থরস্যোদর মধ্যং প্রবিষ্টাঃ কিন্ত নগীণা রক্ষণা ন গিলিতা জীণা ইতি পাঠেছলি দ এবার্থ ইতি স্বামিচরশাঃ। কীদৃশেন হতৌ স্বকৌ বলীবকৌ অন্তর্গতঃকরণেন স্বরতীতি তথা তেন অতএব বলারেঃ ক্ষণ্ধস্য প্রবেশং প্রতীক্ষমাণেন। ন চাত্র ভগবতঃ সত্যসন্ধরতা ব্যভিচরতি স্বোত্যাশন্ধনীরং। অস্থান্ কিমত্র গ্রাস্থিতি নিবিষ্টানন্ধং তথা চেন্ত্ববিদক্ষ্যতীতি তত্তক-সন্ধরস্যাপ্তত্ত বর্তমানস্থাৎ মৎসন্ধরমন্তক্তসন্ধর্গাে মধ্যা মন্তক্ষসন্ধরস্যাে গ্রীয়ন্থমিতি ভক্তবদ্যান ভগবতৈব প্রাক্ত্রারা মধ্যা-

হে রাজন্। অধিল প্রাণির হাদরস্থিত ভগবান্ হরি অতজ্জ অর্থাৎ ত্বিষয়কজ্ঞানবিহীন বালকদিগের ঐ প্রকার পরস্পার ক্ষিত বাক্য প্রবণ ক্রিয়া চিন্তাবারা অবগত হইয়াছিলেন, বাস্তবিক সর্পশরীর ঐ রাজসটা আমার আত্মীয় ঐ সক্ল বালকের নিকট সর্প সাদৃষ্ঠে প্রতীয়মান হইতেছে, অতএব তিনি তাহাদিগকে নিবারণ ক্রিবার নিমিত যাবৎ মনঃ স্থিয় ক্রিতেছিলেন— ধ ২৪ ॥

তাবৎ সেই সকল শিশু বৎসর্ক সহ ঐ অভ্রের উদরমধ্যে প্রবেশ করিল, কিন্তু তাহারা কেবল প্রবিষ্ট হইল, সেই সর্পশরীর অভ্র তাহাদিগকে গিলিয়া ফেলিল না, কারণ সে মনোমধ্যে আশনার প্রতীক্ষাণেন বকারিবেশনং হতস্বকান্তঃ স্মরণেন রক্ষা ॥ ২৫ ॥
তান্ বীক্ষা কৃষ্ণঃ সকলাভয়প্রদে হনস্তনাথান্ স্বকরাদপচ্যতান্।
দীনাংশ্চ মৃত্যোর্জিগরামিঘাসান্ মুণান্দিতো দিউকুতেন বিস্মিতঃ ॥ ২৬ ॥
কৃত্যং কিমত্রাস্থ খলস্থ জীবনং ন বা অমীষাঞ্সতাং বিহিংসনং।

### विधवनामी।

অতএৰ বকারে: জীক্ষণা প্রবেশং প্রতীক্ষাণেন ॥ ২৫ ॥
স্বক্রাদপচ্যতান্ বিনিঃস্তান্ বিশ্বিতঃ সন্কুত্যং কিক্তেত্যাদি বিচিন্ত্য তজোপায়ং ভাষা স্বয়মপ্যবিশদিত্যকরঃ ॥ ২৬ ॥
কথং বিচিন্তা অস্য থল্যা জীবনং অমীষাঞ্চ বিহিংসন্মিতি হয়ং কথং বৈ নিশ্চিতং ন স্যাদিতি ॥ ২৭ ॥

## टेवकबटावनी।

ন জীণা ইতি পাঠে জার্মিতুং নেষ্টা ইতার্থঃ। অহাতৈঃ। তক্র সত এবার্থমুখসকোচনাঙ্গনোটনাদে জারণেচ্ছাময়ত্বাং॥ ২৫॥

সত্তব বিশ্বসাভয়প্রদাত। বিশেষতশ্চ তানহন্তনাথান্ স্করাদপচ্যুতান্ নিজাভয়হন্ততা দ্রগতান্ সত্তব দীনান মরণেন নিজবিচ্ছেদশল্পয়া আর্ত্তান্ কিঞ্চ মৃত্যুত্ল্যাঘাস্থরক জঠরাগ্রেষ্ণানান্ বাহাগ্রে স্থাবদত্যন্তানিব গভান্ বীক্ষাদিইত প্রারন্ত ক্ষতেন ফলেন ইত্যথ:। এতচ্চ লোকবলীলারসময় এভগবদ্ধাবনাস্থাবেগৈব। বন্ধতন্ত দিইং স্থাবতারে নিয়তনীলারসময় এভগবদ্ধাবনাস্থাবেগেব। বন্ধতন্ত দিইং স্থাবতারে নিয়তনীলাররগণক্তি:। যথা দিইং প্রমাণাল্পা মতি:। অন্ত নান্তি দিইং মতিরিতি পাণিনিস্ত্তে তথা ব্যাখ্যাত্থাৎ। তচ্চামান্তিমত প্রসিত্তি সাদিলক্ষণনেব তেন যথ কৃতং তেন বিশ্বিত: আহো বত মদশ্রে মদীরানাং নিক্ষামানানামেবামপ্যেবং ফলভীতি বিশ্বয়ং প্রাপ্ত:। অথবা। সদা স্বের্ম্থাক্ষাহ্পি হংখেন বিগতিমতঃ বিষয়মুখা বভ্বেত্যেই:। অথবা তব্তো হতথাভূতানপি স্থান্দিতত্ব স্করাদ্বে নিপত্তিতান্ হংখিতান্ মৃতপ্রায়াংশ্চ বীক্ষাহ্মতা অনভনাথান্ইতি স্থান্দিত্বে হেতু:। স্মান্মত্তং ॥ ২৬ ॥

তৃতং থলভৈব তত্ত অশেষং থলমরণস দ্রক্ষণ য়ো তথা তকুকে নিজবিহারাদেশ প্রকারং পশ্রতীতি তথা সঃ। यहा। আশেষান্বং

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

निष्ठेमिकि माञ्चलीलाञ्चनारताकिः॥ २७। २१। २৮। २०। ००॥

#### প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

माया खर्था नीनागटक मा नर्द्साभमित्र मा नर्द्समा काशक करा । २०॥

স্বক্রাদিব মহামণীনিব অপচ্যতান্। মৃড্যোর্ঘাস্থ্রসা; জঠরাথে বাসান তৃণবং প্রনোর্ধান্ বীক্ষা স্থানা রুপরা অর্দ্ধিতঃ পীড়িতঃ দিইক্তেন লীলাশক্যুহ্ক্লকালকতেন তংপ্রদেশকর্মণা বিশ্বিতঃ। কালো দিষ্টো ২ণ্যনেহাপীত্যনরঃ। অহো ন তাবদেবাং প্রারক্ষ্ম সম্ভবতি নচ ত্রিনাপ্যক্ত কর্মণ্যক্র্যামী প্রবর্ত্তয়েং ত্স্য মংস্কর্পত্বেন মংপ্রাতিক্ল্যান্হ ছাচ্চ তত্মামংসহচরানপ্যেতা দৃশীং গুরবস্থাং দর্শরস্থা মংপ্রাতিক্ল্যাংপ্যক্ষমানারাঃ প্রেমপূর্ণং মাং ক্রপ্রসনিম্মীকর্জুকামারা মদীয়লীলাশক্তেরেবৃদ্ধে কর্ম ময়ি লীলাশুক্ষবোত্তরে রুসময়ম্র্টে তিল্পা এবৈতাবংপ্রভবিক্ষ্মিতি বন্ধবিচ্ছেদশোকার্ত্তিছেবি বিশ্বয়েনেষংক্তিমিতোইভূদিতার্থঃ ॥ ২৬ ॥ সক্র সহটে কিং কৃত্যং অস্য ধলস্য জীবদং ম স্যাৎ। বৈ নিশ্চিতং। অমীষাং বিহিংসন্ক ন স্থাদিতি বন্ধং কথং স্যাদিতি

নিহত সেই ছই আত্মীয় পূতনা এবং বকাহ্নরের অন্ত সারণ করিয়া শ্রীক্ষকের প্রবেশ প্রতীক্ষা করিডেছিল।। ২৫।।

সে যাহা হউক, সকল লোকের অভয় দাতা ভগৰান হরি অফনাথবিহীন সেই সকল দীন বালকদিগকে আপনার কর বইতে অপচ্যুত (নিঃস্ত) এবং মৃত্যু—অখাহ্মরের জঠনানলের ত্ণীভূত
হইতে দেখিয়া অতিশয় বিন্মিত হইলেন এবং ইংহা দৈব নিবন্ধনকর্ম বলিয়া অত্যক্ত শীড়িত হইছে
লাগিলেন ॥ ২৬ ॥

🗣 औरत "रमहे थरमक जीवन अवर के सकन माधूब हिश्मन" अहे हुईंगे कर्च कि क्षकारत ना इस जरनक

দ্যং কথং স্থাদিতি সংবিচিন্ত্য আঘাবিশত ওমশেষদৃগ্যরি: ॥ ২৭ ॥
তদা ঘনচ্ছদা দেবা ভয়াদাহেতি চুকুশু:। জহুৰু র্যে চ কংসাদ্যাঃ কৌণপাস্ত্যবাদ্ধবাঃ ॥ ২৮ ॥
তচ্ছু ভা ভগবান কৃষ্ণস্থকায়ঃ সার্ভবংসকং । চুণী চিকীর্ষোরাত্মানং তরসা বস্বুধে গলে ॥ ২৯ ॥

### अध्वयामी।

ঘনচ্ছদা নেবান্তরিতাঃ কৌণপাঃ কুণপাশিনো রাক্ষসাঃ কুণপো নিশ্বতি শুদীয়া ইতি বা ॥ ২৮ ॥ চুৰ্ণং কর্ত্তুমিচ্ছো শুদা গলে আদাবেব তর্মা বরুধে অবর্দ্ধত ॥ ২৯ ॥

### देवक्षवरकावनी।

বালকান্ পঞ্ন সন্ তেষাং তাদৃগবস্থা ক্লেহাকুলস্বাদবিশৎ ইত্যর্থ:। এবং তেষাং ছ:থহরণাৎ बैरेনাহরণাচ্চ হরি: ॥ ২৭ ॥

খনচ্ছদাঃ কংসাদঘাচ্চ ভয়াৎ চকারাৎ অক্তেচ হুষ্টাঃ কংসক্ত দৈত্যত্তেহপি কৌণপত্তং। অভিহুইছেনাভেদবিবক্ষরা কংসাদবো দৈত্যাক্তেচ তেবাং সর্কেবাং হর্ষো ভগবন্দ্বিশ্বভাবেন এব জ্পানসোলাসোৎপত্তেঃ। কিয়া। তত্ত্বৈব তেবাং আগ্মনাৎ কংসক্ত চ সদ্য এব চরমুথে প্রবণাদিতি জ্ঞেরং॥ ২৮॥

তৎ হাহেত্যাক্রোশনং চ্ণীচিকীর্বোম্থসমরণগাত্রমোটনাদিনেতি শেবঃ। বর্ধে তহা মুথাসমরণাম বধোপায়াম চ গলবিবর-মার্ণুন্ কীলতয়া মহাস্ট্লা বভূবেত্যর্থ:। যতো ভগবান্ স্কৈশ্বগ্রপূর্ণ: অতঃ কথমপি ন ব্যেতি হীয়ত ইত্যনিষ্টশম্পি সর্কা নির্দ্ধা। যথা। কিমর্থং বর্ধে তত্তাহ ন ব্যয়ঃ কোহপ্যপচয়ো ভক্তানাঃ যত্মাওঁ বালকাদীনাং রক্ষার্থমিত্যর্থ:। তত্ত্ হেতুঃ। কৃষ্ণ: ভক্তাকৃষ্ট ইত্যর্থ:॥ ২১॥

# শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

সংবিচিস্তা তত্র সহসৈবোপায়ং জ্ঞাত্বা তুওমবিশং। যতেছিশেষদৃক্ এবংক্কতে সত্যেবং ভবিষ্যতীতি ভাবি সর্বাং পশাতীতি সং। স্বাহকবিপদঃ থলজীবনসংসার্যোশ্চ হ্রণান্ধরিঃ ॥ ২৭॥

ঘনচ্ছদা মেঘাস্করিতাঃ কংস্যাব্দ্য চ ভয়াৎ হা হেতি ভগবত্যনিষ্টাশস্ক্ষা। দেবানামৈখ্যীজ্ঞানেংপি ভক্তত্বাং ভক্তেশ্চ প্রীত্যাত্ম-শক্তবাং প্রীতেশ্চ বিবেকহরস্বভাবত্বাং কংসাদ্যা অস্ত্রুরিতি চর্বারা সদ্যুএব বার্ত্তাজ্ঞানাং। কৌণপা রাক্ষ্যাঃ অঘাস্থ্রভ্রাতৃষ্পুত্রা-দয়ঃ॥ ২৮॥

তৎসাধনাং শোকজন্মসাধ্নাং হর্ষজননক শ্রুদা অর্টে ব'ংলৈচ সহিত্যাত্মানং শ্যামস্থলরক্ষপং উদরশ্বীকৃত্য চুণী চিকীর্ধোরজ গলে বর্ধে। তাবেব শোকহর্ষো বৈপরীত্যেন শ্রোত্মিতি ভাবং। নহ। শকটত্ণাবর্ত্তবধদামবন্ধনাদিলীলারাং জোকেনৈব বালবপুরা কিঞ্চিদপ্যবর্ধমানেন তত্তত্যাগ্রিচকোঃ স্বরং ভগবতো বিভোরস্থ কিম্বাস্থ্যক্ষপ্রস্থ ব্যাগ্রিরশক্যা যতো বর্ধে ইস্কাচ্যতে সত্যং। তত্ত্ব তত্ত্ব নরবাললীলম্বলক্ষণমাধ্র্যস্য বিশ্বররসাধায়ক্ষ্য ভক্তজনলোচনাস্বাদ্যধাদ্যোকিকং ভাদৃশব্দেব সমুচিতং। অত্য তাদৃশমাধ্র্যপ্রাহক্তপ্ত্রনাভাবাং স্বরং ভগবতাপি তেন লোকিক্ষ্যের বীতিরালল্যে ইতি জানীমঃ॥ ২৯॥

কণ ভাবিয়া তদ্বিদার কোন প্রকার উপায় স্থির করত অবশেষে আপনিও সেই সর্পের তুওমধ্যে প্রবেশ করিলেন ॥ ২৭॥

হে রাজন্! শ্রীকৃষ্ণ অজগররূপি-অঘান্তরের মুখুমধ্যে প্রবিষ্ট হইবামাত্র দেবতাসকল মেঘব্যবধানে থাকিয়া ভয়প্রস্কু হাহাকার করিয়া চিৎকার আরম্ভ করিলেন' কিন্তু অঘান্তরের বাদ্ধব
যে সকল কংসাদি রাক্ষ্স, তাহাদের হর্ষের আর পরিসীমা রহিল না । ২৮॥

দেবতাদের "হা হা রব" শুনিরা ঐ অহ্রের দেহ চূর্ণ করিতে ভগবানের ইচ্ছা হইল অতএব বাল-ক্যণও বৎসগণ সহিত নিজাবর্বকৈ ভাহার গলদেশে বর্দ্ধিত করিতে লাগিলেন॥ ২৯॥

ততোহতিকায়স্থ নিরুদ্ধনার্গিণো হুদ্গীণ্দ্ফের্ত্রপতত্তিত ।
পূর্ণোহন্তরঙ্গে পবনো নিরুদ্ধো মূর্দ্ধন্ বিনির্ভিদ্য বিনির্গতো বহিঃ॥ ৩০॥
তেনৈব সর্বের্ বহির্গতের প্রাণের বৎসান্ স্ফুদঃ পরেতান্।
দৃষ্ট্যা স্বরোপাপ্য তদ্ঘিতঃ পুনর্বক্ত্রামুক্দের্ ভগবান্ বিনির্যা॥ ৩১॥
পীনাহিভোগস্থিতমন্তুতং মহক্ত্যোতিঃ স্বধান্নাক্ষ্লায়দিশো দশ।

### গ্রীধরস্বামী

নিক্ষো ম্থাদীনাং মার্গভ্তঃ কঠে। যস্যান্তি তৃষ্য উদ্গীণদৃষ্টেবছিনি গতিলোচন্দ্য অন্তর্জে দেহমধ্যে পূর্ণঃ পরিভ্তঃ মৃদ্ধনি অক্ষরজুং বিনির্ভদ্য বহির্গত ইতি॥ ৩০ ॥

প্রোণেষু ইক্সিয়েৰু স্বয়া অমৃতবর্ষিণ্যা চুট্ট্যের ॥ ৩১ ॥ অহিদেহে স্থিতঃ গুরুসন্তময়ং জ্যোতিনি র্গতং থে অবস্থিতং তল্পিদীশে বিবেশ ॥ ৩২ ॥

### বৈষ্ণ বজোষণী।

হি এব ততন্ত্ৰপাৰ্দ্ধনাদেব। তুচ। ইতন্ততো ভ্ৰমতশ্চ কুত্ৰ স্থান্তামি বাস্থামি বেতি ব্যগ্ৰং ৰিচাবয়ত শ্চেতাৰ্থং। পূৰ্ণত্বে হেতু: নিক্ষ ইতি প্ৰনঃ প্ৰাণবায়ুং অতিকায়স্তেতি প্ৰনম্ভ বৃহত্তৱন্তং তেন মূৰ্দ্ধভেদ্যাপি তদ্ভিশ্ৰেতত্বং। অতএব বিশক্ষমং। মূৰ্দ্ধনি। স্থিতং ব্ৰহ্মবৃদ্ধ মিতাৰ্থং॥ ৩০॥

তেন প্রনেটনর সহ এক্ষরজুবারেণ বা ভগবন্ধরণীলামুকরণেন প্রেতানির ক্ষণং তদদ্ট্যা মৃততুল্যানির নিজমধুরলিগ্রদৃষ্ট্যা উথাপ্য চেইমিরা মৃক্লো ২ঘাস্থরস্য সংসারাম্কিং স্থলাঞ্চাঘান্সকিং দদদিত্যুর্থ:। যতো ভগবান্ জগদ্ধিতার্থং স্বয়মবতীর্ণঃ প্রমেশ্বরঃ তদমু তানমু তৎপশ্চাদিতো বক্তাং বিনোদেন নির্যো॥ ৩১॥

পীনাহিভোগোথিতমিতি তু পাঠো মুলেষু দৃখ্যতে ভোগস্থিতমিতি তু টীকায়ামেব। অভুতং অনির্বাচনীয়ং মহৎ প্রকাশবাছল্যাৎ।

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

পরেতানিতি নরলীলাম্পারেণ বস্তব্জ শ্রীকৃষ্ণবিয়োগছঃথৈনৈব মৃচ্ছিতান্ চিচ্ছক্ত্যালিঙ্গিতত্বাৎ॥ ৩১॥ জ্যোতীরূপং তথা দর্শনঞ্জমহিমব্যক্ত্যুৰ্থং॥ ৩২॥ ৩১॥ ৩৪॥

# 🗐 विश्वनाथहळः वर्खी ।

নির্কংশা মুর্থাদীনাং মার্গভ্তঃ কঠো যদ্যান্তি তদ্য উদ্দীর্ণদৃষ্টে ব'হিনি গিতলোচনদ্য অন্তর্কে দেহমধ্যে নিরুদ্ধঃ পবনঃ প্রাণবায়ঃ নির্গমনাভাবাং পূর্ণঃ। মুর্দ্ধনি স্থিতং বন্ধরন্ধঃ নির্ভিদ্য বহির্গতঃ॥ ৩০ ॥

পরেতান্ স্ববিরহ তজ্জাঠরানলয়োজনিয়া মৃচ্ছিতান্ দৃষ্ট্যা অমৃতবর্ষিণ্যা॥ ৩১॥

জ্যোতিরহিলেহে স্থিতং শুদ্ধসব্ময়মিতি শ্রীষামিচরণা:। তাদৃশহুইস্যাপি তদ্য মুক্তে: সর্বলোকপ্রত্যায়নার্থং জীবস্য নিরাকারছেহপি তংকানপ্রাপ্তভগবচ্ছক্ত্যালিঙ্গিতত্বান্তথা দৃশ্যভূমিতি শ্রীবৈঞ্বতোষণ্যাদয়:। পরবন্ধণো ব্যাপক্ষহাজ্যোতিঃ স্বরূপমিব

তদনন্তর অতিকায় সেই অঘাস্থরের মুখাদির মার্গভূত কণ্ঠ নিরুদ্ধ এবং লোচন বহির্গত হইল। সে ব্যাকুল হইয়া ইতস্তত ভ্রমণ করিতে লাগিল। অবিলম্বেই ভাহার দেহ মধ্যে প্রন নিরুদ্ধ হইয়া পূর্ণ হইল এবং ব্রহ্মরদ্ধ ভেদ করিয়া বাহির হইয়া গেল॥ ৩০॥

হে রাজন্! বায় বহির্গত হইবামাত্র তাহার সঙ্গে সমুদায় ইন্দ্রিয় নির্গত হইল। এক্সিও দেখি-লেন আপনার সমস্ত স্থল্ বয়স্থাণ প্রাণ শৃষ্ম হইয়াছে, অতএব অম্ভবর্ষিণী স্বীয়দৃষ্টিমারা জীবন-দানপূর্বক উথিত করিয়া তাহাদের সহিত মিলিত হওত নির্গত হইয়া আসিলেন॥ ৩১॥

হে ভারত। ঐ সর্পের স্থলদেহস্থ শুদ্ধস্বময় অদৃত মহজেরাতিঃ স্থীয় তেকে দশ দিক্ প্রজ্বিত করত ভগবানের বিনির্গম প্রতাক। করিয়া আকাশে অবস্থিতি করিতেছিল। ভগবান্ প্রতীক্ষ্য থেইবন্থিতমীশনির্গ্যং বিবেশ তিম্মন্ মিষতাং দিবৌকসাং ।। ৩২ ।।'
ততোইতিহন্তীঃ স্বক্তোইকৃতার্ছণং পুল্পৈঃ স্থরা অপ্রব্রমঃ স্নর্তুনৈঃ ।
গীতৈঃ স্থগা বাদ্যধরাশ্চ বাদ্যকৈঃ স্তবৈশ্চ বিপ্রা জয়নিস্থনৈ র্মণাঃ ।। ৩৩ ।।
তদ্ভূতস্তোত্রস্থবাদ্যগীতিকাজয়াদিনৈকোৎসবমঙ্গলস্বনান্ ।
শুজা স্বধান্ধোইস্তাজ আগতো ইচিরাদ্ ফুনা মহীশস্য জগাম বিস্মাং ॥ ৩৪ ॥

# औरत्यामी.

বিষ্ঠ বেকার্যাক্ত: প্রীক্ষাস্থাহি শিক্ত পূজানকুর্বন্। স্থগাং স্কৃতি গায়স্তীতি গদ্ধবিদয়:॥ ৩০ ॥ কিঞ্জেবাং বানি অভ্তস্তোতাদীনি নৈকোৎসবা অনেকোৎসবা যে মঙ্গলখনা স্তান্স্থামোৎস্থি ক্রমীপে প্রতা আজা এক্ষা অচিরাদাগত ঈশস্য প্রীক্ষাস্য মহি মহিমানং দৃষ্ট্য বিশ্বয়ং প্রাপ॥ ৩৪॥

### देवस्थवटलायगी।

দিবৌকসাং ইত্যানাদরে ষণ্ঠী। বহা। প্রমাশ্চর্যোণ তেষু পশ্চৎস্থ ইত্যথং। তাদৃশহুইস্যাপি মৃক্তেঃ অতীন্তিরায়া মৃক্তিপ্রাপ্তের্ দর্শনাচ্চ। তথা তদ্ধনঞ্চ ব্রহ্মাদীনামসন্দেহায়। সচ বিশ্বরার্থঃ। তচ্চ জ্যোতিন্তংকালপ্রাপ্তভগবচ্ছক্তিময়মেব জ্রেয়ং জীবস্য নিরাকারহাং॥ ৩২॥

ততঃ সপৰিকরে। নির্গমাৎ বাদ্যধরা: বিদ্যাধরাদর:। বারিধরা ইতি বা পাঠ:। বিপ্রা: শ্রীনারদাদর:। গণা: শ্রীগরুড়াদয়:॥ ৩৩॥ অভুতস্তোত্তাদীন্ শ্রুতা স্বধায়: স্কাশাদস্তি শ্রীকৃঞ্দা সমীপে ২চিরাৎ শীঘ্রং আগতোহন্ত ক্লিস্য মহি মাহাম্মাং তথুকি প্রদানলক্ষণং কুরাপান্তত্ত্তাদ্শস্যাদৃষ্টং দৃষ্ঠ্। ইত্যাদি যোজ্যং॥ ৩৪॥

#### **अविश्वनाथहळावर्डी।**

জীবস্যাণি জ্যোতিঃ বর্মণ মার্রিকলোচনালম্যণি তদানীং ভগবতা স্বেছ্ট্রেব স্বস্তুর্মণমিব স্বস্যান্ত্রম্ক্তিপ্রদাযকত্বলক্ষণ গুণ্সা সর্বলোকপ্রত্যক্ষীকরণার্থং দর্শিত্মিত্যেকে। প্রাণাস্থামামিতি ভাগবতীং গতিমিত্যুপরিষ্টাহকে রম্মান্ত্রং সারপ্যমৃত্তিং প্রাণ ন তু সাব্জামিত্যত স্তংক্ষণপ্রাপ্ত তদীয় চিন্ময়দেহজ্যোতিরেব তং। দেহস্ত জ্যোতির্ভূপ্রত্মাং ক্রষ্টুং শক্যো নাভূং। ভগবতি প্রবেশস্ত সাগৃজ্য-প্রথাবতোঃ শিশুপালদস্তবক্রযোরিব জ্যের ইত্যপরে মিবতাং মিবংফ্ সংস্থাণ। অনাদরে বা ষ্টা॥ ৩২॥

বক্ত: সম্ভূ: শ্ৰীক্ষাস্য সহ শং পূজাং সক্ত সক্ষত। মুঠুগায়তীতি হগা গন্ধনাদয়:। বাদ্যধনা বিদ্যাধনাদয়: বিপ্ৰা বশিষ্ঠা-দয়:। গণা গন্জাদয়:॥ ৩৩ ৫

অত্তত্তাত্রাণিচ স্থাদ্যানিচ গীতিকা: স্কুমারা গীতর ক্ষ জ্বাদরক্ষ নৈকোৎসবা অনেকোৎসবা মললপ্রনান্চ তান্। প্রধায়ঃ সতালোকস্য অন্তি নিকট এব প্রত্তি মহর্জন স্তপোলোকস্থা অপি পরশারবৈ প্রতা গীতাদিকং চক্রুরিভি জ্বেরং। প্রথা অলো ব্রক্ষিব অচিরাৎ সদ্য এব অবাস্থ্রস্য জ্যোতিবৈক্ঠং প্রতি গচ্চদেব ঈশস্য মহি মহিমানং দৃষ্ট্ আগতে। অন্যেবলক্ষ্যাণো বৃদ্ধাবন-মেব। তত্ত্রচ ঈশস্য মহিমানং দৃষ্ট্ বিশ্বরং প্রোপ॥ ৩৪ ॥

নির্পত হইবারাত্ত দর্শনকারি দেবগণসমক্ষে তাহা সেই ঈশে ( শ্রীকৃষ্ণে )। গিয়া প্রবেশ করিল ॥ ৩২ ॥
তদনস্তর দেবগণ অতিশয় হাউ হইয়া পূজা বর্ষণ দারা আপনাদের কার্য্যকারি ভগবান হরির পূজা
করিলেন। আর অপ্সরা সকল মন্যোভাবন বাদ্য, নারদাদি বিপ্রবৃদ্দ স্তব এবং গরুড় প্রভৃতি জয় শব্দ
দারা যথোপযুক্ত পূজা করিতে লাগিলেন॥ ৩৩॥

হে মহারাজ! আপনার ধাম স্মীপে সেই সকল আশ্চর্যা ন্তব্, গীত বাদ্য, জয়শক তথা অনেক উৎসব স্বরূপ মঙ্গলধ্বনি প্রবণ করিয়া ব্রহ্মা তৎক্ষণাৎ তথায় আগমন করিয়াছিলেন কিন্তু প্রমেশ্র শ্রীকৃষণকে দর্শন করিয়া তাঁহার যার পর নাই বিশ্বয় হয় ॥ ৩৪ ॥ রাজন্নাজগরং চর্ম শুক্ষং রন্দাবনেইছুতং। ব্রেম্বোকনাং বহুডিথং বর্জ্বাক্রীড়গহারং॥ ৩৫॥ এতৎ কোমারজং কর্ম হরেরাদ্বাহিনোক্ষণং। মত্যোঃ পোগগুকে চাস্থ দৃষ্টেবৃাচুর্বিশ্বিতা ব্রম্বে॥ ৩৬॥ নৈত্রিচিত্রং মনুজার্ভমায়িনঃ পরাবরাণাং পর্মস্থ বেধসঃ।

### श्रीभवत्यामी।

वहिं उर वहकानः की ज़ार्थः महाविनः॥ ७०॥

অন্যচাতিচিত্রং বৃত্তমিত্যাহ এতদিতি। কৌমারং পঞ্চমালান্তং পৌগণ্ডং দশমাবধি। কৈশোরমাপঞ্চদশাদ্যৌবনস্ক ততঃ পর্মিতি। হরেঃ কৌমাুরজং পঞ্চালকুতং কর্ম তদৈব দৃষ্টা পৌগণ্ডে ষঠেহলে বালা অদৈয়ব তত্ত্তমিত্যায়। কিং তৎ কর্ম মৃত্যোঃ সকাশাং আত্মনা অহেন্চ মোলণং আত্মনাং প্রসিদ্ধার্গত্যোঃ অহেন্ত সংসারলক্ষণাৎ অধান্তরজ্যোতিষঃ প্রীকৃষ্ণপ্রক্রেমণি তদা দৃষ্টং ক্থিতবন্ত ইত্যর্থঃ॥ ৩৬॥

নৈতৰিচিত্ৰং কিং তদিত্যপেকায়ামাহ অবোহণীতি। আত্মনাম্যং স্বসমানরপ্তাং ॥ ৩৭ ॥

### देवक वर जावगी।

শ্রীভগবংশ্পর্শপ্রভাবেন সক্কতার্থো হভূদিতি কিং বক্তব্যং তস্য পাঞ্চভৌতিকমৃতদেহোহপি পৃতনাদিবং সৌরভ্যপ্রাপ্তা। সর্ক মনোহরত্বং প্রাপেত্যাহ রাজন্তি পরমাশ্চর্য্যেণ ॥ ৩৫ ॥

স্বস্য. হরে: পৌগওকে ত্স্যারস্তমাত্রখনাক্রখাৎ কন্ প্রত্যার:। চশলান্দেবাদিক্কতমহোৎস্বঞ্চ। স্বন্ধা। প্রশ্নবীজভার প্রহেলিকাবদাহ কৌমারজং কর্ম পৌগওকে দৃষ্ট্যেচুরিতি। কিং তৎ স্মাহে মৃত্যাহেতি তাহনামহে: সকাশানোক্ষণং।
সর্ব্বে মিথো দর্শরস্ত ইত্যাদাবৈশ্বগ্রজানাম্পর্ণাৎ অদ্যানেন ইত্যাদিমাত্রতহক্ষ্যমাণাৎ॥ ৩৬॥

মহাছ্টদ্যাপি তাদৃশ্যা মুক্তা কেবাঞ্চিদ্তৃতব্জিং দৃষ্ট্। প্ৰভাগৰংপ্ৰভাবমাত নেতি ছাভাগং। পরাবরাগাং সর্কোষাংশিনামংশানাঞ্চ পরম্ভ প্ৰেট্ড বত ন্তেৰাং বেধসং প্ৰাছ্ভাব কর্তৃ ক ইতি প্রমন্বাতব্রামুক্তং তত্ত মন্থলার্ড: প্রনিক্ক্সমাস্চাস্টো মারীচ দ্যাবান্। অমধ্যাদ-

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

পূতনাবদেহস্যাসি সৌগন্ধ্যাদিমন্ত্ৰপত্তপ্ৰাপ্তিমাহ রাজনিতি। আক্রীড়গহ্বরত্বং বংসবাত্তরে জেন্তং ॥ ৩১ । ৩২ ।৩৩ ৩৪ । ৩৫ ॥
. অদ্যানেন ইত্যাদি বক্ষ্যমাণাং । অতএব তাবংকালং নামান্তত্বং ॥

পরাবরাণামংশিনামংশানাঞ্ সর্বেষাং পরমস্য অরং ভগষত: বেধসম্ভত্তদাবিভাবকর্ত্ত মত্ত্বালীলস্ত শ্রীনন্দস্যার্চ-

#### গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী ৷

বছতিখং বহুকালং। আ সমাক্ জীড়ার্ধকগহরেং বহুব॥ ৩৫ h

অন্যদপ্যাশ্চর্যামেকং শৃণি ত্যাহ। এতুং হরে: কৌমারজং পঞ্চমালকতং কর্ম দৃষ্ট্র। অস্য হরে: পৌগওকে বয়সি বর্তেহকে বালা অল্যৈব-তদু ন্তমিত্যুচু:। কিং তং আত্মনাং অহে: সক্ষশান্মোকণং কুতঃ মৃত্যোঃ অহি মরণাদ্ধেতোরিত্যর্থ:॥ ৩৬ ॥

মহলার্ভ এব মারা তদীরস্বরূপং তত্ততঃ প্রতিপ্রসিদ্ধান্মারাশন্দস্য স্বরূপবাচকত্বাং পরাবরাণাং সর্কেবা মংশানামংশিনামণি পরস্কী বেধসঃ। স্বেচ্ছাভিমত্তমেব কর্ত্তঃ। এতদিচিত্রং ন কিং তদিত্যত আহ অবোহণীতি। ধৃতপাতক ইতি পাতক্মিছ্যুপ-

। অত্ রাজন্। অঘাস্থর যে অজগরবপু: ধারণ করিয়াছিল তাহার অভুত চর্ম শুরু হইয়া বহুকাল

ফাবৎ রুদ্দাবনে ব্রজবাসিদিগের ক্রীড়ার্থ একটা স্থমহান্ছিক্রের নায় হইয়াছিল। ৩৫।

।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

। ১৫।

ا ১৫।

সে যাহা হউক, ভগবান্ কোঁসারকালে অর্থাৎ পঞ্চ বর্ষ বয়ঃজৈমে ঐ কর্ম অর্থাৎ মৃত্যু হইতে আপনাদের ও বালকদের মোচন (পরিত্রাণ) এবং অজগররূপি অঘাহ্রের সংসারমোচন করেন, বালকেরা সেই স্মরেই তাহা দেখিয়াছিল, কিন্তু তাহারা ত্রজে আসিয়া পৌগগুকালে অর্থাৎ বর্চবংসরে "অদ্য এই সকল ঘটনা হইল" বলিয়া পরিচয় দিল॥ ৩৬॥

রাজন ! অঘাহারও যে প্রিকৃষ্ণ স্পর্নায়েই ধৃত পাপ হইয়া অসক্ষনের হৃত্রতি তাদায়া লাভ-

অঘোষপি যৎস্পর্শনধৃতপাতকঃ প্রাপাত্মসাম্যুত্মতাং স্ত্র্রভং॥ ৩৭॥ সক্ষমদক্ষ প্রতিমান্তরাহিতা মনোময়ী ভাগবতীং দদৌ গতিং। স্বর্ব নিত্যাত্মপামুভুত্যভিব্যদন্তমায়ঃ পরমোষ্ঠ কিং পুনঃ॥ ৩৮॥

### **अ**धत्रवामी ।

যস্যাসং শ্রীমৃর্বিক্তস্য প্রতিমা প্রতিক্বতি গুজাপি কেবলং মনোময়ী সাপি বলাদস্করাহিতা সতী ভাগবতীং গতিং দলৌ প্রহুলাদা-দিভাঃ সএব সাক্ষাং শ্বয়মস্কর্গতঃ কিং পুন নিত্যা চাসাবাত্মপ্রধায়ভূতিশ্চেতি তরা। প্রভিতো বাুদন্তা মারা যেন সং॥ ৩৮॥

#### देवक्षवरकावनी।

নীলখেন ভাদৃশ দরালুখেন চ যা প্রাক্তিয়া প্রথবিলক্ষণসভাবস্য ইত্যর্থ:। অতে বিচিত্রং অমৃতং ন ভবতি সাদ্মাং সাম্যমিতি পাঠধ্বেংশি সমানস্বরূপদ্বেশ্বর্ধ:। অতজ্ঞান্ত সমানস্বরূপস্য তত্ত্ব প্রবেশাসভ্বাৎ অস্তাং ছুটানাং প্রমছ্র্র ভ্নপি প্রাপ। নম্ প্রিগাকুলবালকাদির সংস্থ মহাপরাধিন অস্যাম্বর্গ তদিপ কথং সভবেওতাহ বদিতি। যস্য তংপর্যস্তর্গতনীবের তমঃকৃত্বিসিমাত্রসমবধানমাত্রজাত্যা সদস্থিচারশূন্যখেন অভর্ষা ক্রপয়াবতীর্ণ্য স্ক্রিলক্ষণস্য স্পশ্বিশেকপ্রভাবেনৈর সোহয়ন্মবময়েহিপি ধৃতপাতকঃ পণ্ডিতাঘমরভাব ইত্যর্থ:। আত্মা নাহস্বঃ কিন্ত উপাধিরের সচ নাশিত এব নির্দোষণ্য প্রত্যুত তস্যাম্বরভাবিগমনপ্রমক্রপাস্টকজাত্বপাদেরমেরেতি ভাবঃ॥ ৩৭॥

নিত্যাক্মেতি তৈ ব্যাধ্যাতং। যথা। নিত্যং আত্মনাং সর্ব্বজীবানাং স্থামুভূতির্বন্ধাৎ যতোহতিতো বিশেষেণােদন্তমারঃ। তথাচ ৰক্ষাতি জীৱন্ধা অৱৈব মারাধ্যনাবতার ইতি সচাসৌ সূচ যতঃ প্রমঃ সর্ব্বতঃ শ্রেষ্ঠঃ নিজালেবভগবতাপ্রকটনাৎ যদবস্যান্তেতি স্ফায়হর্বসংখাধনে ॥ ৩৮ ॥

### क्रममस्रकः।

ন্তলীলশ্চ স মারী প্রমদ্বালুশ্চ সং। তস্যেতি প্রমশক্তিত্বং সর্ব্বকারণত্বং অভ্যতীলত্বং তাদৃশপতিতোদারিত্বঞ্চ দর্শিতং। আত্মসাত্মাং আত্মসাম্য মিত্যনেন প্রবেশবচনেন চ তৎসাযুক্ত্যমুক্তং॥ ৩৭। ৩৮। ৩৯॥

# প্রীবিধনাথচুক্রবর্তী।

লক্ষণং শরীরদৌর্গনাদেরপ্যপ্রম ইতি কিং বক্তব্যং পূতনাদৃষ্ট্যা শরীরসৌগন্ধামপি ব্যাখ্যেরং। সপ্রিরস্থস্য ক্রঞ্চন্য ক্রীড়াম্পদীতাবি-ডাং। আত্মসাম্যং স্বস্মানরূপড়ং। অসতাং অস্থ্রাণাং সাযুক্তাং ছ্র্লভিং সারূপ্যক্ত ভক্তসম্প্রদানীয়ত্বাৎ স্থছ্লভিং॥ ৩৭॥

তৎপ্রাপ্তে কারণমাহ যস্ত অলং মুর্তিভ্রস্য চ প্রতিমা প্রতিকৃতি র্জগরাখমদনগোপালগোবিন্দাদিরপা। সাপি মনোময়ী মনসৈব ধ্যাতা তরাপি সকলেব অন্তরাহিতা সতী ভাগবতীং গতিং দদৌ। ধটালাদিভাং স এর সাক্ষাৎ নিভ্যাত্মা নিভ্যপরীরশ্চাসে প্রধায়ভূতিরূপন্চ অভিব্যুদন্তমারশ্চেতি সং। পরমং স্বর্মেবান্ধর্গতং কিং পুন দ ল্যাদেবেত্যর্থং। নম্ ধটালাদীনাং তৎপ্রাপ্তে ভক্তিরেব কারণং অলাদীনান্ধ প্রতিভূল্যাৎ ভক্তাভাব এব তৎপ্রাপ্তিপ্রতিবন্ধী। ভক্তাহমেকরা প্রায় ইতি ভগবৎকৃতনির্মাৎ। স্তাং সচ নির্মোহনাত্মিরেব সমরে। কৃষ্ণস্যাবভারসমরেভূ পূর্ণারা এব কৃপাশক্তেক্লদরোক্রেকান্তৎসন্ধর্মাত্রেশিব তৎপ্রাপ্তিব্রুদ্যাত। কামং ক্রোধং ভরং লেহমেকাং সৌল্লমেব বা। নিভাং হরে বিদ্যুদ্য যান্তি তল্মরতাং হি তে। নটেবং বিদ্যুদ্য ভব্তা ভগবত্যকে। বোগেশরেশ্বরে ক্রকে যত এভিন্মচাতে ইতি। ক্রক্ষ্যা পূর্ণছে লক্ষ্মিদমসাধারণং যবৈরিষ্ট্যোহপিনাক্র দদাভীতি ভেরামণি মধ্যে ব্রেক্লাক্রনাং বহুতিখং বভ্রাক্রীভগর্বর্মিত্যক্রেকাল্মরনেহন্য স্ক্রীভাস্থপ্রাদীভাবিদ্যাৎ তাংকালিকতৎপ্রাভিত্লস্বস্যাপ্যায়ভূল্যমন্তজিত্বননাৎ ভব্ন সাক্ষপ্রনাক্ষং বৈকৃষ্ঠ এব দদৌ। নভু স্বধানি কুলাবনে ভত্তকে ভাল্শবৈশিয়াভাবাৎ ইতি ক্রেরং। তদঃ

করিল ইহা মায়ামসুষ্যবালক পরাবর সকলের পরম বিধাতা ভগবান হরির লাশ্চর্য্য কার্য্য নহে॥ ৩৭ বাঁহার প্রীমৃর্ত্তির কেবল মনোমন্ধী প্রতিকৃতি বলপুর্বক একবারমাত্র অন্তরে আহিত হইয়া প্রস্থানদাদি ভক্তসণকে ভাগবতী গতি দান করিয়াছিল, সেই ভগবান্ সাক্ষাৎ অন্তরে প্রবিষ্ট হইয়া যে ভাগবতী গতি দিবেন তাহা কি আবার অনুত বিষয়।, ভগবান্ নিত্য ও আদ্মস্থাস্ভবদারা সমন্ত মায়া নিক্ষিপ্ত করিয়াছিলেন। ও৮।

শ্ৰীসূত উবাচ॥

ইপ্নং দ্বিজা যাদবদেবদত্তঃ প্রুছা স্বরাজুশ্চরিতং বিচিত্রং। পপ্রচছ ভূয়োহপি তদেব পুণ্যং বৈয়াসকিং যদিগৃ হীতচেতাঃ ॥ ৩৯॥ রাজোবাচ॥

ব্রহ্মন্ কালাস্তরকৃতং তৎকালীনং কথং ভবেৎ। যৎ কৌমারে হ্রিকৃত্যুচুঃ পোগগুকেহর্ভকাঃ। ত্রুহি মে মহাযোগিন্ পরং কোভূহলং গুরো। নূনমেতদ্ধরেরের মায়া ভবতি নান্ধা।

### शिधतचामी।

স্বরাতু: স্বাত্রালাতু:। যেন প্রবংশন নিতরাং গৃহীতং বৃশীক্তং চেতো যাস্য য়ঃ॥ ৩৯॥ কালান্তরে ক্বতং কৌনারে ক্বতং পৌগওকে কথ্ং জ্ঞান্তোচু:॥ ৪০॥

# देवकवरकावनी ।

অমাকস্মাৎ স্থ উবাচ ইতি তৎপ্রদক্ষে প্রমানশ্বন্য বৈশিষ্ট্যাৎ সোহণি তত্ত্ব তৌতুষ্টো ইত্যর্থ:। যেন চরিতেন নিগৃহীতং তিৰিয়োগমরপ্রেমাবিভাবনেন পীড়িতং চেতেল য্বা স তথাপি প্রশ্নে হেতুঃ পুণ্যং শুভাবহমিতি তৎপীড়ারান্তদেকৌষধত্বাদিতি ভাব:॥ ৩৯॥

কাশান্তরক্তং পূর্ব্বিলীনং কর্ম তৎকাশীনং সদ্যংকাশদৃষ্ঠং কথং সন্তবেত্তদেবাহ যদিতি। যং কৌমারকে হরিণা ক্বতং তং পৌগওকে ক্রতমিতি কথং জাজোচুরিতায়য়। তদিতি কথং সন্তবেং তৎপ্রকারমিতার্থা। কৌ চুহলং কৌ তুকজনকমিতার্থা। নহাবোগিন্ পরমভক্তিযুক্তেতি শ্রীভগবদৃত্তং তবাজাতং ন কিঞানন্তি ইতি ভাবং। নহা পরমগুরুমেতত্ত্রাহ হে গুরো উপদেষ্টুঃ কিঞাকোপাং শিবো নান্তি ইতি ভাবং স্বায়্ম্য সিকাজং তর্কয়তি এতত্তেবাং তাদৃশং দর্শনভানং। মায়া চুর্ঘটিঘটনা শক্তিঃ। হরেরিতি নায়য়া স্ক্রিচারহরণাভিপ্রায়েণৈবেতানামায়া নিরস্তা। তদেব জাল্লতি নায়য়া ত্রায়াং বিনা ন সন্তবেদিতার্থা। গোপ-কুমারাণাং তেষামন্যতো ভ্রমাদ্যসন্তবাং। শ্রণার্থমেকোন গুরুং কের্ব্বিলিখ্য ক্রিয়াধ্যা অপি এতচ্চাতান্তবিনরাং পুণাং মনোজ্য তল্প গুণবিশেষং বোধ্যতি স্বত্ত ইতি। হে গুরো হুছিয়াস্থেনের বন্যাঃ

#### ক্রমসন্দর্ভ:

কালাম্ভবক্কতং কৌমারকতং পৌগগুকালে কথং স্যাৎ তত্ত্র হেডু:। যংকর্ম কৌমারে হরিণা ক্রতমপি পৌগণ্ডে ক্বতমিভূাচুরিতার্থ:।

### শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

হে দ্বিজাঃ বাদরদেবেন উত্তরারৈ বৃধিষ্ঠিরায় বা দত্তঃ পরীক্ষিৎ স্বস্য রাতা গ্রহীতা যঃ শ্রীকৃষ্ণক্তপ্য যেন প্রবংগন নিতরাং গৃহীতং বশীকৃতং চেতো ষস্ত সঃ॥ ৩৯॥

কালান্তরকৃতং পূর্বকালনিস্পাদিতং কর্ম তৎকালীনং সদ্যংকালদৃষ্টং কথং ভবেৎ। যদিতি পৌগওকে স্মানুদ্যব হরিক্বতমিদং কর্মেতি কথম্চুরিতার্থ:॥ •

্মায়া ছর্ঘটঘটনাপ্টীয়দী শক্তি:। ২বিবিজ্ঞান্যমায়া নিবস্তা যোগমায়েত্যর্থ:। তদ্মৈর ভগবন্নিত্যপ্রিজনানাং মোহনসম্ভবাৎ॥\*

সূত কহিলেন হে দ্বিজ্ঞাণ! শ্রীক্ষের প্রদন্ত মহারাজ পরীক্ষিৎ আপনার রক্ষকের এই প্রকার বিচিত্র চরিত্র শ্রবণ করিয়া শুকদেবকে পুনরায় ঐ বিষয়ই জিজ্ঞাসা করিলেন, যে হৈতু শ্রবণ করিয়া তদীয় চিত্ত একান্ত বশীক্ত হইয়াছিল। ৩৯॥

রাজা পরীক্ষিৎ জিজ্ঞাস। করিলেন এক্ষাক্। কালান্তরে কৃত কর্মে তৎকালীন বোধ কি রূপে হইয়াছিল। ভগবান্ হরি কোমারকালে অর্থাৎ পঞ্চম বংসর ব্য়ংক্রেমে যাহা করিয়াছিলেন এজবাঃ লকেরা ভাইা পৌগতে অর্থাৎ ষ্ঠবৎসর ব্য়ংক্রেমে কি প্রকারে অবগত হইয়া একে বিয়াবিলয়াছিল। ভালমার বিয়াবিলয়াছিল। ভালমার করেবর্ম

বয়ং ধন্যতমা লোকে গুরোছিপ ক্ষত্রবন্ধবং। যথ পিবামো মৃত্ত্বতঃ পুণ্যঃ কৃষ্ণকথামৃতং॥ ৪•॥ শ্রীসূত উবাচ॥

ইখং স পৃষ্টঃ সচ বাদরায়ণি তৎসারিতানতক্তাবিলেভিনঃ।

कृष्ट्रां श्नर्मकवि प्रिः मरेनः खडार उर जानवरजान्यमा ॥ ४३ ॥

॥ # ॥ , ইতি জ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশনক্ষেহ্য়াত্রবলে।
নাম দাদশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ১২ ॥ # ॥

#### श्रीवत्रवामी।

তেন বং শারিতোহনত্ত তেন হৃতান্তথিলেন্দ্রিয়াণি বস্য সং তথা ভূতোহণি কথকিল্লবহিদ্ 🕏 তে ভাগবতোভ্রমোভ্রম শেইনক ॥৪১ ॥ \*॥ ইতি দশ্যে ছালশং ॥ \*॥

#### देवकथरकावनी।

क्रुणाचीः विरागवक्र पटः क्रुक्षकथामुक्तात्मन रक्षक्राः मृष्टःतात्म ह धनाक्रमा हेजार्थः ॥ ৪० ॥

বাদরারণিরিতি পিতৃনামোয়েথারুস্যাপি নন্দনত্বন মাহাত্ম বিশেষঃ স্চিতঃ অতএব তেন তদীয়প্রশ্ববিশেষণ শারিত তত্তিবিশেষণ ক্ষমং প্রাপিতেহিনতঃ পাষ্ণক্ষমনাদির ক্ষুর্যানতংশগুরানহৈশ্বামাধুরীকঃ ক্ষঃ তেনাক্তাথিলেক্সিয়ঃ। থেমাভ্রেণ তদেকপরিক্রা লীনসর্কেক্সিয়র্ভিরিত্যর্থঃ। অরং প্রমোদমোহাত্তবঃ প্রাল্যালায় কন্পপ্রকাদিবৎ প্রেমবিকার বিশেষো জ্যেঃ। সংশ্বারিত ইতি কচিৎ পার্যঃ তথাপি সএবার্থঃ সচ বাম্যসন্মতঃ। চিচ্ছুক্স্যুক্ সন্মতঃ ক্ষুদ্রান্তঃ কর্মান শুর্মপি ব্যারং বারমীদৃশো লাতেহিত্তীতি বোধ্যতে তত্র তবৈব তাতেতি বারং বারং স্বোধনমিত্যভ্র্মি আহাঃ। তদর্থং প্রীক্ষতা মহায়বোণ সভা নিজাবিকে তর্মাকার প্রমিত্যর্থাং। প্রারহিক্সকীর্তন সামগ্রী প্রীক্ষরন সামগ্রী প্রীক্ষরন ক্ষিত্যনিক্ষ প্রসিদ্ধা শনৈরিতি তদানীমহ্বর্তমানেন প্রেমত্যরণাক্ষত্তবাং ত্র ভাগবতোত্তমোত্তম ইতি তৎপ্রমগুর্মপি প্রোত্ মহ্লীতি ভারঃ। কচিৎ স্বাম্যসন্তি দিন্তীয়ারপাঠঃ চিচ্ছুক্সন্মতঃ। তত্তত প্রতির্চনে হেতু ক্রের্যঃ॥ ৪১॥

॥ 🛊 ॥ 🛮 हेि 🔊 देवकावरकायगाः मन्माविक्षनाः वाननः ॥ 🛊 ॥

# क्रमम्बर्फः।

হরেরের মারা ছর্বটবটনা শক্তিঃ নান্যস্য তত্র তবশক্তেঃ। অনেস্কঃশাষ্ক্রকেমানাদিকমার্ভ্য ত্রহ্মণস্কুর্মানতাৎপর্ব্যং প্রকাশিতে অনত্তেপর্ব্য মাধুরীকঃ ॥ ৪০। ৪১॥

॥ 🛊 ॥ 🏿 रें ि मन्य 🖝 मननार्ड वाननः ॥ 🛊 ॥

### গ্রীবিধনাখচক্রবর্তী।

হে গুনো ইতি নন ৰন্ধিৰাক্ষাৰ বুং সিখন্য শিশ্বাস্য গুৰুৰোগুৰুমপ্মতেতি বিধেরবণ্যবক্ষবাখং ব্যৱিতং। শিৰান ইতি খণ্ডি-ব্যৱসায় স্বাস সিখ্যক ॥ ৪০॥

ক্বন্ধাৎ উটক উপবন্ধানকীর্তনানেশানৈ ভলতা নাল্পনাসানিস্নিকটভর তিবস্থতরা দিতার্থঃ হে আগবতোভানোত্তম লোনক ॥ ৪১ ॥
॥ ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং-ছ্রিন্যাং-ভক্তেডকাং । দশমে বাদশোহধ্যায়ঃ সভুতঃ সক্ষতঃ সভাং ॥ ॥ ॥

হইরাও লোক মধ্যে অভিশার ধন্য, যে হৈছু আপনকার প্রস্থাৎ পুণ্য ক্ষাক্থায়ত মৃত্যুহ: পান করিতেছি॥ ৪০ ॥

পুত কহিলেন হৈ ভাগবতোজনোজন পোনকী বাজা পরীক্ষিৎ যে ভগগান্ খনছের খারণ করা-ইরা দিলেন ভাঁহা কর্তৃক যদিও ভক্দেরের শ্রিল ইন্সিয় খণ্ডত হুইল তথাচ এ প্রকার জিল্পাসিত হওলতে কথন্থিৎ বহিদ্ টি লাক ক্রিরা। বীরে গাঁহার নিজি ক্রমীয় প্রমের উভা লানে প্রস্তুত হইলেন ॥ ৪৯॥

# **প্রতিক উবাচ**ণা

সাধু পৃষ্টং মহাভাগ ত্বয়া ভাগবতোত্তম। যদু তনয়সীশক্ত শৃণুদ্ধপি কণাং মুইটা ১ ।
সতাময়ং সারভ্তাং নিসর্কো যদর্থবাণী ভাতি ভিটেউসামিপি।
প্রতিক্ষণং নব্যবদ্যতি যদি বিশ্বীবিটানা নিব সাধুবার্তা।
শৃণুদ্ধাবহিতো রাজনপি গুহুং বদামি তে। জন্ম স্লিগ্রন্থ শিষ্যক গুরবো গুহুমপুতে ।

### अध्यक्षामी।

ত্রোদশে হহরছু দ্বা বংসান্পালাংশ্চ মায়য়া। তদা তৎ সর্বার্তাহকং ক্লকং পূর্ববদাচরং॥ • ॥ নৃত্নয়সি ন্বার্থ ক্রোবি॥ >॥

তথাহি সারভূতাং সার্থাহিণাং অরং নিসর্গ: বভাব: কৌহসৌ অচ্যুত্তস্য বার্তা প্রতিক্রণং সাধু নব্যবভ্রবতীতি, বং স:। বিটানাং

### देवकवटलावनी ।

িহে মহাভাগেতি গর্ডেহপি তেন শ্রীভগবতো দর্শনাং। হে ভাগবতোত্তমেতি তৎকথৈকরসিক্ষাং। তণা বিঃ স্বোধনক শ্রীকৃষ্ণাবিষ্টচিত্তথাং প্রেটের যদবস্থাং ঈশস্য স্থপ্রভাঃ॥১॥

অঞ্জক নৃতনয়নীতি কিং বক্তবাং মৃতো মুহ্পুহং শ্রুতমণি নৃতনয়নীত্যতনপাচিতমেবেতাছে সতামিতি। কলাচিৎ কথকিৎ ক্মাজিদণি চ বসাৎ ন চাবত ইতি অচ্যততসোতি তহার্তারা অণি তাদৃশহমতিপ্রেতং। অভএব নার ব্যাসার্থা প্রতিক্ষণ নব্যবর্ত্তি আছুবৈশিষ্টোনাপূর্ববন্ধান্তত ত্রেক্লাম্পটাংশে দৃষ্টান্তঃ। দ্রিয়াইতি তদেবং প্রমন্থাম্পদস্যাণি দ্রীপদার্থস্য নব্যবর্ত্তি আছুবৈশিষ্টোনাপূর্ববন্ধান্ত ত্রেক্লাম্পন্যান্ত প্রমান্ত্রী ক্ষুব্রতি তদেবং প্রমন্থাম্পন্য বিশ্বতা ক্ষুব্রতি ভাবং দ

শ্বিহিতঃ সন্ধিতি বক্ষামাণ্য্য পরস্কুরবগাছভাৎ রাজন হে বৃদ্ধাদিনা প্রকাশমানেতার্থঃ। উত্তেতি বিতর্কে বর্ষিদং বিচাররাম ইভার্থঃ। জন্ম শ্রীজগরতি বক্ষণিচ যদগজ্বং বছবিধনেবাক্ষ্যমানাস্যতি তৎ ধলু ন সর্কোষাং স্ববোধনিতি গুজ্মিত্যুক্তং॥

#### क्रममध्यक्र

সভামি ত্যক্ত নব্যব্দিতি প্রত্যরেনাম্বাগত্লাদমেব দর্শিতং। সাক্ষাদম্বাগে তু নবামেব ভাতীতার্থং। তথাপি তস্যাক্ষ্যিগ্

## विविधनाथहळावळी।

জেমনং বৎসতংপালহরণং বন্ধনোহনং। অভ্তবৎসবিষ্ণাদিপ্রাত্মভাবত্রনাদশে। বিশ্বস্য শৃষ্টাদিবিমোহনালৈ । বিশ্বস্থাদি বিশেহনালৈ বিশ্বস্থাদি বিশ্বস্থাদিক বিশ্বস্

হে ভাগৰতেমুক্তম। কথং মে ভাগবভোক্তমন্ধং ততাহে বদিতি। নৃতনন্দি নৃতনীকরোবি। শ্রুতাং মূত্রাখাদিতামিপি কথা-মশুতচরীশিক করোবীতি কথায়ামনুরাগো ব্যক্তিঃ॥ ১॥

সার্ভ্তাং সার্থাহিণামরং নিগর্গঃ বন্ধতঃ অচ্যুভসা বার্ধা প্রতিক্রণং করে করে সাধু যথাস্যাভথা নব্যবন্তবভি । তৃকাধিক্যানপূর্ববিজ্ঞারতে । বদর্থানি অচ্যুজ্মীর্তাপ্রবিজ্ঞানি বার্শীক্রতিটেতাংসি বের্ণাং তির্ধাং ভূতিক্রানিসি তিরেইকাল্সট্যাংলে চ্টাস্তঃ ॥

ভয়োদশ অধ্যানে ত্রুক্ষা নিজ নামানার। গোৰুৎসত বালকগুণ ভরণকরিয়ে তৎকালে সর্ব্বরূপী হইয়া শ্রীকৃষ্ণ সম্বর্গের পর্যান্ত অধিকল পূর্ববিধ আচরণ করেন দ্বালান্ত স

ে ত্রুতদেব কহিলেন হে ভাগ্যভাত্তর ৷ হে ন্রাভাগাত উত্তর জিল্লাস্থ করিছে, তোস্ত্র সাঞ্জাদ দি, বে হেতু ভগবান্ জ্রুত্থের কথা মুহুমুক্ত আৰপু করিয়াও নৃতনের ন্যায় করিতেই মাস্যালিক সাক্ষ

বেই প্রাক্তম ! সার্থাহি সাধু পুরুষবিধের পৃত্যুত্বান্তাই লাকা, কণ ও চিতের বিষয়, তাহাদিলের ইহাই প্রাক্তম বে ত্রেণু পুরুষদিলের ক্যান্তান্তান নাম ভগবান কাট্তের কথা প্রেক্তম বিষয় বিষয় করে ক্যান্তান কালি ক্রিক্তম কথা কিন্তান ক্যান্তান ক্রিক্তম করে ক্যান্তান ক্যান্তান ক্রিক্তম করে ক্যান্তান ক্রিক্তম করে ক্যান্তান ক্রিক্তম ক্যান্তান ক্রিক্তম ক্যান্তান ক্রিক্তম ক্যান্তান ক্রিক্তম ক্যান্তান ক্রিক্তম বিষয় বিষয় ক্রিক্তম বাদিক বিষয় ক্রিক্তম বাদিক বিষয় ক্রিক্তম বাদিক বিষয় ক্রিক্তম বাদিক বিষয় ব

অধারবদনাক্ষ্তা বিশ্ব বংগণালকান্। সরং প্রিন্মানীক্ষ ভগবাদিদ্যুত্বীৎ ॥ নু ॥

অহোহতিরমাং প্রিনং ব্যক্তাঃ অকেলিসম্প্রত্যাক্ষ্রাস্ক্রি বিদ্যাদক্ষ্ণ ক্ষিত্র বিদ্যাদক্ষ্ণ ক্ষিত্র বিদ্যাদক্ষ্ণ ক্ষিত্র বিদ্যাদক্ষ্ণ ক্ষিত্র বিদ্যাদক্ষ্ণ ক্ষিত্র বিশ্ব বিশ

### विश्ववामी।

ছৈণানাং জিল্লাঃ কামিন্যা বাৰ্ত্তেব কথন্ত তানামণি সতাং বা অচ্যতবাৰ্ত্তবাৰ্থো যেবাং ভানি বাণীক্ৰতিচেতাংসি বেলাং ভথাভূতানা-মণি ॥ ২ ॥

ভোজনবিহারার পুলিনং ভৌতি অহে। ইতি। স্বীয়ানাং কেলীনাং সম্পদো বিদ্ধৃত্বে যুদ্মিন্তং। মুহুলা আছা বালুকা বিদ্নিন্তং ক্ট্রিকসং সরঃ সরোজবাহল্যনোপচারতঃ সর এব বিকসদিত্যকং তস্য স্কুতেন হুড়া আছুটা অবয়ঃ পত্রিশৃত্ব তেযাং কে উদকে ধননয়ঃ তেযাং প্রতিধ্বানা তৈ ল'সম্ভোক্রমাত্তৈরাকুলং ব্যাপ্তং॥৩॥

দিবা রূচ্ং বেলাতীতেত্যর্থ: ॥ ৪ ॥

#### বৈক্ষৰতোৰণী :

তথা তেন প্রকারেণাঘাস্ববদনরপাক্ষ ত্যোর্বংসপালকান্ বালাংশ্চ জগবানিপি ॥ ই ॥

হে ব্যস্যা ইতি মম সধীনাং ভবতামেব ভোজনবোগ্যমেকদিতি ভাবং। তদেব দর্শপ্পতি স্বেষাং কেলেং পঙ্জিভোজননিযুকাদিক্রীড়ায়াং সম্পৎ সম্পত্তি থাভা তথাভূতা মূহ্লাছবাল্কা যদ্মিরিতি উপবেশস্থা। ক্টুৎসরোজসক্ষেতি ভোজনাপেক্যাং
ধ্পবং সৌগক্ষাং এতেন শরংকালো লক্ষাতে তথা প্রীভমিব ভ্রমরাদিধ্বনিবিলাসং ভোজনপাত্রক পদ্মপত্রাদিকং স্থবাসিতলীভলাছজলঞ্চ শরত্তাপনিবারণার্থ ঘনবৃক্ষজ্বায়াচ ইতি স্থভাজন সামগ্রী দর্শিতা তত্র প্রতিধ্বাদেতি প্রয়ন্তঃ সপ্তম্যনাপদার্থো বছরীহিঃ
লসন্মাক্লমিতি তৎপুক্ষা তয়োঃ কর্মধাররো জ্বেয়া ॥ ৩ ॥

হে কুধাৰ্দ্দিতা:। যথা যতঃ কুধাৰ্দ্দিতা বয়ং তত্ৰ হেতৃঃ দিবা ক্লচং অবত্তান্তঃপ্ৰবেশাদিনা বিশ্বশাশতঃ। যথা। কুধেতি বংসানাং বিশেষণং। অতো ন নিজভোজন স্থাৰ্থমত্ৰ নিক্ষা বক্ষাঃ কিন্ত চরন্ধিত্যথঃ। শনকৈরিতি জলপানেনাপ্যারিত্যাৎ। যথা। অস্বৎস্থতোজন সিদ্ধান্তামিতি ভাবঃ॥ ৪

#### क्रमननर्जः।

नवंश नवभिक्तिविविक्ति खादः উछ विकटक हेनश विकासमाम हेखार्थः ॥ > ॥ २ । ७ । ८ । ८ ॥

#### প্ৰবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

विद्यानाः कामूकानाः जिन्ना वार्द्धव कामिनीकरथव ॥ २ ॥

ভোজনার্থং তত্চিতং খুলং স্তোতি জহো ইতি খকেলীনাং বছণঙ জিমডোজনজীড়ানাং সম্প্রেল যত্ত্ব তদিতি খানবিত্তীর্ণদং।
মুত্রনা অজ্বা বালুকা বত্ত তি জিত্যুপবেশস্থং প্রফুলবর্ত্বসমাজবন্ধাং ক্ষুডাং সন্ত্রস্থা এব সন্ধেন স্কৃতা আকুটা জলনঃ পত্তিশক্ষ যে তেবাং
কৈ উনকে ধননর স্তেবাং প্রভিন্ধানাকৈ ল'সভোক্ষমাকৈ রাকুলং ব্যাপ্তিনিতি ভোজনাপেক্ষণীরধূপানিনৌরভাবীণানিবাদ্যস্থাসিতশীতল্পলিস্থান্তি দিশিতা । ৩ ॥

দিবা রুঢ়ং দিবাকর উদ্বাকাশমার্চ ইত্যর্থ:॥ ৪॥

देश तीकन् । शृंदेशीक व्यक्ति म्यूनिक विश्वित प्रश्निक विश्व म्यूनिक परमणान तका कतिना नरनायरतत श्रीनरन व्यानमन्त्रिक क्रांचान् विगरिक नामिरनन ॥ २ ॥

ব্যুসাগণ। এই পুলিন অভিশন্ন রম্থীর, এখানে আমাদের কেলি সম্পূত্র সকলই বিদ্যমান রহি-মাদ্ধে, এখানজার বালুকা সকল, কোমল অখচ নির্মাল, আর এই সমোবরের সমুদার কমল বিক্সিত ক্রোকে স্মোরতে বছবিধ বিহণ ও অমর আমিরাছে, চাহাদের ধানির প্রতিধানিতে তীরত্ব তাল সকল বিল্সিত হইতেছে। ৩।

ৰংগ্ৰহৰ, আমুৱা এই স্থানে তোকৰ কৰি বেৰা পতীত ছইনাছে, সকলেই কুণাৰ্ড ইইনাছি। বংগ্ৰহন সমীয়ে মুনুহান কৰিয়া আতি অতি তুল মধ্যে কিনুন কৰিতে থাকুক। ৪॥ তথেতি পাঁয়য়িবার্ডা বংসানার্মধ্য শাষ্ট্রে । বুকুন শিক্যানি বুডুজু: সমং ভগবভা মুদা ॥ ৫ ॥ কৃষ্ণক বিশ্বক পুরুরাজিমগুরুরভানিনাঃ স্কুদ্র্শো ব্রঞার্ডকাঃ।
সহোপবিষ্টা বিপিনে বিরেজুশ্চুদা যথাভোক্তকশিকারাঃ ॥ ৬ ॥

কেচিৎ পুলৈ বিলঃ কেচিৎ পদ্ধবৈরস্থারঃ ফলেঃ। শিগ্ভিত্বগ্ভিদ্ যন্তিশ্চ বৃত্তু কৃতভাজনাঃ॥৭

## श्रिक्यामी।

व्यक्ति मश्क्रमा नवित्व क्विक्क्निवर्ण ॥ ६ ॥

তদা তে বিরেজ্য ক্রফস্য বিশ্বক্পরিতঃ মণ্টল ব'হতিঃ পঙ্কিমণ্ডলৈঃ সহ নৈর্ভবেষ্টোণোপরিষ্টাঃ এক্রকাভিমুখানি আননানি যেবাং তে ফুলদুশো বিক্ষিত্নয়নাঃ। ক্মলক্ণিকায়াঃ পরিতঃ প্রাণি যথেতি ॥ ৬॥

भूरेला खंबरें**लंबरेनांक गरेब्दः क्वं**चीन खंखमानि रेग एख ॥ १ ॥

### বৈষ্ণবতোষণী।

তথৈবমেৰেতি তছকং সংস্পৃথ্য ইত্যৰ্থ:। শাষণ ইত্যগ্ৰেহপাস্থবৰ্তনীয়ং শাষলজেমনক ইতি বক্ষ্যমাণদ্বাং। যথা শাষ্লান্তিকে ক্ষেমনং শাষলজেমনমিতি মধ্যপদলোপঃ প্ৰায়ো কানুকাময়প্ৰদেশ এব। বক্ষ্যমাণতত্তেজালনপাঞ্জান্যপশেক্ষণাং। শাষলকাত্ৰ ক্ষ্মদূৰ্ম্বাময়দ্বেন জেয়ং। শিক্যানি স্বস্থাহাং প্ৰাত্ৰানীতানি। মুক্তেতি অযোদরান্তঃ প্ৰবেশতঃ প্ৰস্তাদেব তানি জীড়া সৌক্ৰ্যায় বৃক্ষাপ্ৰে ধৃতানি ইতি জেয়ং কিয়া জ্বোদরান্তঃপ্ৰবেশেহপি শ্ৰীভগ্ৰৎপ্ৰভাবেন বালকানামিব তেৰামবৈকলাং জেয়ং ॥ ৫॥

জভ্যাননাঃ অভি শ্রীকৃষ্ণদেশুধ আন্নং যেষাং তৈ অতএব ফুল্লদৃশঃ তচ্চ তৎপ্রীত্যর্থটিন্তাপক্তাব। বিপিনে শ্রীকৃশ্বেনে ইতি বিশেষশোভাষোগ্যতোকা ॥ ৬॥

কেচিদিতি পুনত্নক্ত্যা পুলৈরিত্যাদিভিঃ প্রত্যেকমন্বয়ং বোধয়তি অনাথা সমুচ্চয়োহপি বুধ্যেত। পুশাদিভোজনপাত্রাণাং বৈচিত্রী বাসকানাং প্রত্যেকাপুর্বরচনাকৌতুকেছ্ব। স্বস্থরোটিকৌদনাদি যোগ্যবৈচিত্র্যাপেক্ষরা বা ॥ ৭ ॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

অভ্যাননা: জীক্ষ্ণসন্থ্যুথা ইডার্থ:। অন্যথা ফ্রেছ্ক্ডং ন স্যাৎ অচিস্কা। শক্তিশেকাং ॥ ৬॥ কেচিম্বং সর্বত্র পূথগ্রয়ার্থ:॥ ৭॥ ৮ ॥

# विविश्वनाथहक्तवर्वो ।

শাহলে হরিত তৃণবছলদেশে আরুদ্যেতি তেষাং তত্ত্বলোভাদেবান্যত্র গমনাসমর্থমননাং।। ৫।।

তেবাং ভোজনোপবেশপরিপাটীনাহ। কৃষ্ণ্যা বিশ্বক্পরিতঃ পুরুরাজিমঙলৈঃ স্থপাংস্থপ ইতি তৃতীয়া। বছরু পঙ্কিমগুলেবিভার্থঃ। অজ্ঞাননা প্রেয়া সর্বাসন্থান্দা হাবতো ভগবতঃ সত্যসঙ্কর ভাশকৈয়বোদগারিতেনাচিজ্ঞাবৈভবেন নিশাদিতাৎ
ম্বাদ্যসানাং সর্ক্ষিক্ প্রকাশাং। কৃষ্ণম্যাভিম্বে সরিহিতপঞ্জে বয়মেব বর্তামহে অন্যেতু ব্যবহিতপঞ্জিব পার্বতঃ পৃষ্ঠতশ্চোপবিষ্টা
ইতি সর্বান্তিমানবস্ক ইতার্থঃ। তেন চ, সর্বতঃ পাবিপাদং তৎ সর্বভোহক্ষিশিরোম্থমিতি ক্রত্যর্থো দর্শিতঃ। সহনৈর্ভ্তব্যুগো
প্রিষ্টাঃ। ছলাঃ প্রাণি যথা ক্ষনক্ষিকারাঃ পরিভো মিলিজীভূর বহুপঙ্কিরু তিষ্ঠিত্তি তথেতার্থঃ॥ ৬॥

কেচিদিতি। পুলাদিভি: অস্বভাজননির্মাণং বালকানাং প্রত্যেকাপুর্মরচনাকৌতুকেছবৈবেতি জ্বেরং॥ ৭ ।

প্রাইয়া হরিবর্ণ তৃণনয় প্রাক্তের। তাহাই ভাল বলিয়া স্বীকার করিল, পরে বংসগণকে জলপান করাইয়া হরিবর্ণ তৃণনয় প্রাক্তের বিশ্বাসিক তদনন্তর শিক্যনোচনপুরঃসর ভগবানের সহিত হর্ষে ভোজন করিতে লাগিল ॥.৫॥

হে রাজন ! এজবালকগণ শ্রীকৃষ্ণের চতুর্দিকে পদ্মাকারে ভূরি ভূরি পড় জিরচনা করিরা সমী-পবর্তি হইয়া বসিল, শ্রীকৃষ্ণ তাহাদের মধ্যস্থলে উপবিষ্ট হইলেন, তাহার অভিনুখে তাহাদেরসকলেরই মুখ রহিল, অতএব কমলক্রিকার পত্রে সকল বজ্ঞপ শোভা পান্ন তাহারা তজ্ঞাপে বিরাজনান হইল ॥ ৬॥

जारामित मह्या दर्गान दर्गान रातक श्रूलाबाती, क्षिण्य रातक श्रुलविद्याती, क्ष्यक्षीता, क्ष्यक्षीता, क्ष्यक्षीता जाता व्यक्त

সর্কে মিথো দর্শয়ন্তঃ স্বক্তাজারুচিং পৃথক্। হসস্তো হাসয়ন্তুশ্চাভ্যবজন্তঃ সহেশরাঃ॥৮॥
বিভ্রবেণুং জঠরপটয়োঃ শৃঙ্গবেত্তে চ কক্ষে বাবে পাণো মস্থকবলং তৎকলানাঙ্গীরু।

#### क्रीधत्रवामी।

ক্ষৃতিং বাছবিশেবং অভ্যবন্ধহু; বৃত্তিরে সংহ্যরা: জীক্ষুসহিতা: ॥ ৮ ॥
বক্ষত্রাপি তেরু বৃত্তে বালানামিব কেলিবুলা স: তদাহ উদরবন্তরে। মঁথো বেণুং বিভং দধ্যিতি সর্বত্র সহন্ধ:। বাম ইতি কক্ষ

### देवक्षवटकावनी।

পৃথগ ভোজাভেবেন বসগন্ধাদিভেবেনত নানাপ্রকারিকাং স্বভোজাসা ক্ষতিং সাত্তাবিশেষং দর্শরন্তঃ মুখতলাদিন। সাকাংকারের ইব অতঃ স্বরং হসতঃ অন্যাংশত হাসরন্তঃ। বদ্যশি স্বস্থাদানীতানি ভোজানি পরীকার্থং সর্বেষাং সর্বেষেং পরিবেশতানি তথাপি স্বস্থাদানীতে ভোজানামের স্বাবতিরিক্তং পৃথক্ আপরামাস্থং বদর্থনের পূর্বাদিনে মিলিছা বন্যভোজনার সংক্রপ্রবন্তঃ ইতি ভাবঃ। সহেশ্ররা ইতি শ্রীভগবানপি ভৈরের মিষ্টমিষ্টং পরীক্ষ্য কিঞ্ছিৎ কিঞ্চিৎ ক্রমশো বৃগ্পদা সম্পামাণং তথৈব বৃত্ত্ব ইত্যর্থঃ ॥ ৮॥

অথ ৰালকৈ: সহ আভগৰতো ভোজনক্ৰীড়ামুক্ৰণ তেড়ো বিশেশেৰ তদ্য তামাহ বিজ্ঞ ি। তৎকলানি মন্থকৰলোচিডোপক্ষণানি নিশ্ সদ্ধিত লবলী ক্ৰীয় ফল প্ৰভৃতীনি। সৈৱসাধানলৈ: বৰ্গে লোকে সৰ্প্ৰেশ্ব আৰু বিজ্ঞান্ত কৰ্মান ক্ৰীড়াব্দ্য কৰ্মান ক

#### ক্রমসম্বর্ড:।

তত্ৰ ভছচিতানি ফ্লানি সন্ধিত লবলী ধাত্ৰী প্ৰভৃতীনি বৰ্গে লোক ইতি সমস্ততংশ্বনাপেক্ষা। জন্তৰ বক্ষত্ক দৃট্যা তদ্ম-নোদিতা। অত ডুবালকেলিঃ সন্বৃত্কে ইতি মহান্বিশেষঃ ॥ ৯॥

### विविधनाथहक्कवर्सी।

সংহ্যরা: সক্ষা এব সংশ্ব আজাস্য ব্যপ্থানীতস্য জনসাধ্যঞ্নাদে: কচিং রোচকতাং দর্শন্ত: বীরবটকশাকরসালাদিকং ব্যাং কিঞ্ছিক। আবাদবিশেবমন্ত্র ভো: সংশ ক্ষ তো: প্রাদানন্ ভো: ব্যব পশাত পশাত মদীরবটকাদিকং
কীদৃশং বাহিতি বজন্সপাত্রাজ্লাইছি। ক্ষাদীনাং হ্রের্ দ্যানালাং জনাবাদসন্তাবস্ত ইতার্থ:। হসবো হাস্বস্ত ইতি জাতীমাস্ত্যাদিপুপাণি বটকার্থের অলন্তিমপ্রিছা ভো: স্থার: এতানতিবাহ্তমান্ বটকানাবাদ্যতেত্যুক্তিবিবাসাং সন্পৃহং গৃহীছা
তান্ ভ্রানান্কট্রতম্থান্ দৃষ্ট্য ব্সব্তোহাসম্ভক্ষারাজে: সহর্কেতিত্বং তাডামানা: প্লারমানাল্ড।৮॥

তেম্বপি মধ্যে কৃষ্ণসা ভোজনলীলাং সর্ববিলক্ষণামাহ বিত্রদিতি জঠরপটরোকদরবল্পরোম ধ্যে বেণুং বিত্রং দধং দক্ষিণকুক্ষা-বেবেতি শোভৌচিত্যান্থিতি জ্বোং বাবে কক্ষে শৃক্ষবেত্রে বিত্রং। বামে পাণো মহুগং বিশ্বং রুক্ষধ্যোদনকবলং বিত্রং। তৎক্ষণানি

সকলে পরস্পার আপন আপন খাদ্যদ্রোর বিশেষ বিশেষ আত্মার পৃথক পৃথক দেখাইয়া হাস্য পরিহাস করত শ্রীকৃষ্ণের সহিত ভোজন করিতে আরম্ভ করিল॥ ৮॥

তির্ভন্মধ্যেরপরি স্ক্রে। হাসয়র্মভিঃ থৈঃ স্বর্গে লোকে মিষতি বুভুজে যজ্ঞভুষালকেলিঃ ॥
ভারতৈবং বৎসপেরু ভূঞানেমচ্যতাত্মন্ত । বৎসান্তন্তর্বনে দুরং বিবিশুন্ত গলোভিতাঃ ॥ ৯ ॥
তান্ দৃষ্ট্বা ভয়সংত্রন্তাক ক্ষোহস্য ভীভয়ং । মিত্রাণ্যাশাদ্ধা রিরমতেহানেয়ে বৎসকানহং ॥১০

### जीधतवानी।

পাণ্যোবি শেষণং মক্তণং বিশ্বং দংখ্যাদনং ক্ষত তছ্চিতানি পিৰাদিফ্লানি অঙ্গীসন্ধিষ্ কর্নিক্ষে বর্ধাভিন্থো মধ্যে তিষ্ঠন্ বস্য প্রিত উপ্বিষ্টান্ ক্ষ্দাং বৈ নাৰ্শভিঃ প্রিহাস বাক্যৈঃ অংগী অগীবাসিনি জনে আশ্চর্যোগ পশ্যতি স্তি ॥ ৯ ॥ . .

ভীভয়ং ভয়হেতুভো ভয়ং অস্য অপাস্য। যথা। অন্ত বিশ্বস্থ ভিয়োহপি ভয়ং। য: এক্স্ড:। আশাডোজসাং। অস্মিন্পাদেইক-বাধিক্যমার্থং॥ ১০॥

# देवकवरजावनी ।

তথা বেণু াদিধারণপরিপাটী সহিত্যে দ্বাবস্থানাদিবাল্য লীলাবিশেষেণ চ ভগবভাবিশেষপ্রকটনং পূর্বববদৃষ্ণ ॥

এবমুক্তপ্রকারেণাচ্যুতে ভগবতি আত্মা মনো যেষাং তেমু ত্লৈর্গেভিডাঃ। যদা। ব্রহ্মণা ত্লৈ লোভিডাঃ সন্তঃ শ্রীভগবং-সাক্ষারয়নাশক্তেঃ হে ভারতেভি হুংথেন সম্বোধনং॥ ১॥

তান্বংসপান্ ভয়েন বংসাদর্শনজয় শকয় সংক্রাছার্থান্ অস্য বিশ্বসাপি য় ভী তছা অপি ভয়ং স্বভারত এব সর্বাভরপ্রদ-ইভার্থ:। অভস্তস্বাক্ষেট্নর তেখাং ভয়মপগতমিতি ভাব:। অহমেবৈকাকী বংসান্ সর্বানের ইইংবানেয়ে। হে মিআণীতি স্বেহং ব্রেয়য়য়াশাসয়তি তত্মাল্মুয়াকং ভোজনাত্পরত্যা মম মহাত্রংং ভাদিতি বোধয়তি অতএব বংসানাং নিকটন্থিভিভানাক্র ন কোহপি তংসকে গত ইতি জেয়ং॥ ১০॥

### ক্রমসন্দর্ভ:।

ভয়সংক্রস্তান্ ভয়েনোদিগ্নান্। অত্র তদাগ্রহেণ্টের ন কোহপি তৎসক্ষে গত ইতি জ্ঞেয়ং॥ ১০॥

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

তহচিতানি স্থিত করীর শবল্যাদীনি অঙ্কীরু বামপাণ্যস্থিস্থিত বি বারাথমিতি ভাব:। যথা। তৎক্লানি তৎপ্রয়োজনী-ভূতান্ কুজ্গ্রাসান্ দাক্ষীপাণ্যস্থিত বৃত্ত মুণপ্রবেশযোগ্যান্ বহতরগ্রাদান্তত: পৃথক্ষত্য গ্রহীভূষেৰ বামে পাণৌ, বৃহৎ-ক্বলগ্রহণ: ভেষং॥

কণিকেৰ সৰ্ব্যাভিমুখো মধ্যে তিষ্ঠন্ হৈ ন শাভিবিতি ভো ভ্লাঃ কিং মন্থাভিমুখং ধাবত সুকুমারং মধুমললং পুরস্থিতং পিবত ভো ব্যস্য ভান্ধাকুমারং মাং কিং ভূকৈঃ থাদয়নি মন্যে ভ্ৰন্ধভায়ামপি তে ন ভরমিতি। ভো এতদনত্মা ৰামরা যুগ্ধাস্থ বুভুকুৰু জাগ্রংক্রি মংপ্রিয়স্থাঃ নিবিস্থং ভূঞ্তে ভদলক্ষিতং আগচ্ছতেতি তক্ত নর্ম্ম সভ্যসক্ষভাশক্তি লীলাশক্ষিভামিপি স্থামিন্ প্রভো
কৌত্কার্থং যদি ভোলনে বিশ্বমীহসে তহি আবাভ্যাং তদর্থং ভ্রন্ধা সংপ্রভোগানীয়ত ইতালক্ষিতমন্থমাদিতমিতি জ্বেয়ং। স্বর্গেলোকে
তলাগিজনবলে মিধতি আশ্চর্যোণ পশ্যতি সতি যজ্জভুক্ যজ্জেষ্দেশমানেণ সমর্পিতমন্থপত্তং মন্ত্রপ্তমেব হবিঃ স্থীকারমাত্রেশৈব
ভূঞানোহপি বালৈঃ সহ কেলিমিপি। ভূজান্বালনপ্রদানভালনাল্যালনমিক্লনালিমনী যাস্য সং ॥ ১ ॥

অস্ত বিষদ্য যা ভীন্তপ্ৰা অপি ভয়া ভাষা ভাষা ভাষা হৈছে । হে মিত্ৰাণীতি স্বেহং স্চন্ধতি। আশাৎ ভোকনাং। প্লোকোংনং নবাক্টরক-পালোহস্টু তেনে ইতি প্রাঞ্চঃ ॥ ১০॥

ইতেছিলেন। স্বৰ্গবাদী ও মৰ্ত্যন্থ ব্যক্তিগণ আশ্চর্য্যাথিত হুইয়া ঐ ভোজনলীলা অবলোকন করিতেছিল। ুহে ভারত ! উক্ত প্রকারে যাবতীয় বংসপাল প্রাকৃষ্ণগণ্ড চিক্ত হুইয়া ভোজন করিতে থাকিলে তাহাদের বৃৎস্থান চুরিতে চরিতে ত্ণলোভে হুঠাৎ দুরবর্তি একটি বনষধ্যে প্রবেশ করিল। ৯।

তদ্দলি বংশালগণ উদিগ হইলে ঐকুক্ল নিরীক্ষণ করিয়া ভয়ের কারণ হইতে ভাছাদের জীতি-বিমোচন প্রঃসর ক্রিলেন হে মিত্রগণ! ভোজন হইতে বিরত হইও না, নিরুদেশচিতে আহার ক্র, আমি তোমাদের স্ক্ল বৎস আনিয়া দিতেছি॥ ১০॥ ইত্যুক্ত নিজে দরীকুঞ্জ গহরেষাত্মবৎসকান্। বিচিষ্ধ ভগষান্ কৃষ্টি সপী নিকবলো যথো॥ ১১॥ অস্তোজনাজনিক দন্ত নায়াৰ্ভক স্যোশিত ক্রি ক্রিবলা নিকো বংসপান্। নীছান্ত ক্রবহান্তর দধাৎ থেহবন্ধিতো যঃ পুরা।

# वीशत्रवामी।

### বৈষ্ণবতোষণী।

আছানো বংসকানিতি গোপরাজকুমারছেন সেহবিশেশে চালাবংসানীমপি তদীয়ছাং বিচিয়ন্ অষেট্মিতার্থ:। যহ-অজ্যাদিরু বিচিয়ন্ সন্যয়ে) তত্র ততা বভাম ইতার্থ:। তত্রাপি স্পাণিকর্ষা এব স্বয়ং কথস্তো ভগবান্ ক্ষাং স্থাবান পীতার্থ:। অহো পশ্যত নিজ্জনদ্যান্তামিতি ভাব:॥১১॥

প্রভবত ইতি কর্ত্তরি বল্পী প্রভূনেতার্থ;। অস্তোজমন্ত্রনিঃ মহাপুক্ষনাভিক্মলাক্ষাত্রেন স্বতঃ সর্বক্ষোহিপি প্রভূনা তাল্শানান্ত শক্তিযুক্তেন কর্তাহিষাক্ষরভাগি নোকং দৃষ্টা যং গরং বিষয়ং প্রাপ্তঃ নোহিপি ঈশিত্ অক্ষপ্রথমবাপদেশাশ্পদভাপি অন্যদপি ততাদৃশং মঞ্ মহিছং প্রতুং, অন্তিতজিল্ঞা সন্ধিতঃ স্থানাবংসান্ বংসপাংশ্চান্যক্র নীবা শ্রীভগবদ্ধেষণপর্যান্তং শ্রীকৃন্ধাবনপ্রদেশান্তরে
স্থাপরিতা স্বমন্তর্ধাৎ চোর ইব বংসান্ পুলিনমানিন্যে যথা পূর্বস্বং স্থাক্ষিতি মায়াশ্রে শ্রানা মে ইত্যাদি বক্ষ্যমাণেভান্ত প্রন্তব্যনীর রক্ষিত্বানিতি জ্বেরং। তেষাং শ্রীকৃন্ধত্ব্যঞ্গানামপি ব্রক্ষায়াপরিভবপ্রার্ছং ভগবন্ধরবলনীত্বনৈব সম্ভবতীতি
ক্রেরং। অন্যথা নরলীলভাগিক্ষান নক্ষদেশ্বং প্রকট্মাহাজ্যো ভগবান্ ব্রন্ধাচ সর্বজ্ঞাক্ষণং তহি বিশ্বরং প্রাপ্তঃ কথবা পূনঃ
ক্রমনিপ্রারং পরীক্ষামিব কৃত্বান্ ত্রাই মারামোহনতা তদ্বুক্সভার্তকন্ত সর্বমোহনার্ভকলীলস্যেত্যর্পন। তল্মোহনতরা মূহরেম্বর্য্য

#### ক্ৰমসন্দৰ্ভ:।

আয়বংসকানিতি সর্বায় বীয়তাবৃদ্ধ্য ভগবানপি তথা যথে। ॥ ১১ ॥

• মায়ামোহনতা তদ্ধুক্তার্ভক্স্য সর্বমোহনার্ভক্সীলন্যেত্যর্থঃ। পুনঃ পুনঃ ব্রহ্মণোহপি মোহে সিদ্ধান্তোহয়ং ॥ ১২ । ১৩ ॥

### গ্রীবিশ্বনাথচক্রবন্ধী।

সপাণিকবল ইতি বৎসাদ্বেষণ সময়েংপি কিঞ্চিত্তোক্তৃমিতি ভাবঃ ॥১১ ॥

অন্তোজন্মন: ক্মলাজ্জনি হল্যেতি জড়রংশ্যতাৎ সচেতনোহণি একা জড়এব বদরং ভগবন্তং পরীক্ষিত্বং মহামারাবিন্যপি তিমিন্
মারাং বিভ্তানেত্যাকেশো ধ্বনিতঃ। অত বংসান্ প্লিন্মানিন্যে যথাপূর্ক্সথং অক্ষিত্যুত্ব গ্রহবিরোধাৎ নিত্যবিজ্ঞানানন্দস্থান্ত্যা ভগবতন্তৎ প্রিরস্থানাং বালকানাঞ্চ চতুর্থমার্যা মেহন মনৌচিত্যার্থ্যাথ্যের। যতুপ্তনাদীনামণি মাহরা ভগবন্ধানাদীনামণি মোহনং তৎ থলু বিশ্বর্বসাধারক্তওলীলাসিদ্ধর্থ। লীলাশক্তা অহ্মোদনাদেব নতু বতঃ। অত্ ব্রন্ধার্যা ক্ষণস্থানাং কেবলত্বাপনেন কা নীলাসিদ্ধিরত এবাং বোগমারের মোহনং ক্ষমারাহতাত্মনামিত্যগ্রিম্বাক্তাত জেরং। নচ ক্র্মার্যামোহিতানামের তেরাং ব্রক্ষকর্ত্মন্যতা নরনং ব্যাথ্যেরং। উপবিষ্টাদিব এতিহক ক্রত্যা ম্লার্নামাহিতেওরে ইতি ব্রন্ধ্বাক্যানম্বরং সভ্যাঃ কে ক্ত্রে নেতি জাতুং নেতে কথকনৈতি শুভুকোতিঃ। নহি ক্ষ্মণানাম্যতীত্ম তেন বজুত্বভিত্য মারিকানামেব বালবংসানাং হ্রণং বন্ধণা কৃত্যিত্যব্যত্মাথ্যেরং বন্ধা ভদন্তরে তিমিরবসরে গত আগতঃ সন্ অন্যদণি মহিত্বং মহিমানং তেই ;
অভিক্সা স্থান্তঃ শ্রেক্ষক্স্য বৎসান্ ইতঃ পুলিনাং বংস্গাংল জন্যত্র নীত্ম অভ্যন্ধাং তিরোবভূব বং তহু মারা ত্যবন্ধার মোহিত্ব।

মেব বিশ্বরা মেহিত্ব এব বন্ধা মহিত্বং স্তেইং মারাক্রিতানের বুংসনি বংস্গানন্যজানর্দিত্যর্থঃ। অন্য মার মার্যা মোহিত্ব।

এই কথা বলিয়া খাদ্যদামগ্রীর আস হাতে করিয়াই পর্বত, পর্বতিগ্রহা, লতাচ্ছম বিবর, তথা সঙ্কট স্থান সকলে বংস অন্মেশ কর্ত গমন ক্রিলেন ॥ ১১ ॥

হে রাজন ! পূর্বে বে এক্সা আকাশে অবস্থিত হইয়া প্রীকৃষ্ণের অঘাসরমোকণ নিরীক্ষণ ক্রিয়া রিক্সয় প্রাপ্ত হইয়াছিলেন সেই প্রাযোনি ঐ অবসরে আসিয়া বালরূপি-ঈবর হরির অন্য সহিমা দৃষ্ট্বাযাম্ব্রমোকণং প্রভবতঃ প্রাপ্তঃ পরং বিশায়ং॥ ১২॥
ততো বংসানদৃষ্ট্বৈত্য প্রিনেছপিচ বংসপান্। উভাবপি বনে কৃষ্ণো বিচিকায় সমস্ততঃ॥১৩॥
কাপ্যদৃষ্ট্বাস্তবিপিনে বংসান্পালাংশ্চ বিশ্ববিং। সর্বাং বিধিকৃতং কৃষ্ণঃ সহসাবজ্ঞগাম হ॥১৪॥

## **टी**धत्रवाशी

দ্ৰষ্ট্ৰেষ্য বংশান্ ইতঃ **হানাৎ বংশপাংশ্চান্ত্ৰ নীমা স্বং তিরোবভূব প্রচৰতঃ ঐক্ল**্যা ১২॥ উভাবপি বংশান্ বংশপাংশ্চ বিচিকার **অবীক্তিবান্॥ ১৩**॥

বিধিকৃতং ভ্ৰহ্মণা কৃতং ॥ ১৪ ॥

# देवक्वरणावनी।

জ্ঞানাচ্ছাদনাং ইতি ভাব:। প্রাক্তনত**ত্তরাল্যনীলানো**হনতাবদধুনাপি বন্যতোজনলীলামোহনতদ্বৈব । বিগতদাধ্বসীক্বত্য বাঢ়ং বিশ্বিতীক্বত্য চ তাদৃশতদৈবর্য্যাকরাবেষণার তথা প্রবর্ধিতোহসাবিতি বিবন্ধিত:। কুর্ম্মছেতি প্রশাতাদৃশী তথাল্যলীলা মোহনতার। প্রমঞ্জানদৃঢ়চিক্তং ব্যহাণমণীখং মোহরতি ইতি ব্যহাতে ॥ ১২ ॥

ততত্তংপশ্চাৎ চকারাৎ শিক্যাদীনিচ উভাবপি ইতি কচিরমম বিশ্বেনাতিজ্ংখিতাঃ সত্তো মদ্বেরণার্থমের স্থারত্তে ভোজন-সামগ্রীসহিতাঃ কুআপি গতা ইতি বংসপান্ অন্যত্তৈর গতা ইতি বংস্কানপি। অদর্শন মাত্রেণৈর কেহভরাক্রান্তা। পূর্ণজ্ঞানাত্মনো-জ্ঞানবনমূর্তিরপি বিচারতিরোধানাদের মুক্তং ॥ ১৩ ॥ ।

অন্তর্বিপিনে রনমধ্য এবেতি মধ্যাকে তেবাং আত্মানং বিনা ব্রজগমনাসন্তবাং। সর্ব্ধ বালকাদীনাং মোহনাত্তধ পিনে তদন্তধানং নিজমঞ্মহিমদর্শানাভিলাবাদিকং চালেবং সদ্য এব জ্ঞাতবান্। হ ক্টং। যতো বিশ্ববিৎ সর্বজ্ঞতংক্তঃ বতঃ ক্লঃ ক্লঃ ক্লঃ ভগুবান্

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

লীলাবেশং দর্শরতি কাপীত্যনেন। জ্ঞানাদ্যাঃ শব্দরঃ স্থানবদরে সভয়মিব ভটস্থান্তিঠন্তি স্থাবদরে স্থপেবারৈ ভসুপতিঠন্তীতি

### विविधनाथहळावर्खी।

চোরিতের বংসবংমধের কিমর মৈশর্বং কিমপাদ্ভং করোতি জ্ঞাত। কিং শবং তানেবানেষ্যতি মহুং প্রার্থিরিষাতে বা ন কিমপি জ্ঞাস্তীতি বেতি বিচারে। মাররা মোহনা বিনা তপ্য ন সভবেদতঃ তশ্বিন্ চোরিত্র্দ্যতে সতি বোগমারৈর সভ্যান্ বংসবালকানআচ্ছাদ্য বহিরক্মারালার। সদ্যঃক্লিভানেব তাংস্তমদর্শরদিতি জ্ঞেরং। প্রভবতঃ প্রভা: ক্ঞাৎ অবাহ্রস্য মোক্ষণং দৃই। বো বিশ্বরং
প্রাপ্তঃ ॥ ১২ ॥

অপুটৈ তা নতু অপ্রাপ্যেত্যক্ষং। অতশুত্রহিতান্ জ্ঞাতানণি অদৃষ্টা অদর্শনমতিনীবেতার্থঃ। সন্মারবা সোহিত এবায়মিতি একাণং নিথাতির্মান্ং প্রাহরিত্নিতি ভাবঃ। তত্তশোভাবণি বংসান্ বালাংশ্চ বিচিকার বিশ্ববিধাদাদ্যভিনমপুর্বকং নটব্ডদৰে-বণ্মতিনিনাবেতার্থঃ ভ্রোবহুংপশুপবংশনিশুভনাট্যমিত্যগ্রেভনোক্ষে: ॥ ১৩ ॥

পুন: কিং ক্ববা বিচিকারেত্যত আহ কেতি। বিশ্বিদিশি কাণি শাৰ্ণাদনাত্রাপি বংসান্ পুলিনাদন্যত্রাশি পালান্ অদৃষ্ট্। বিচিকারেতি পুর্কেণেবাঘর:। নহ ক্কঃ কিং বংশাদিচেকালেণ এব বিবেদ ডংক্শানতরং বা কিঞ্চিদবিবা বা বিবেদেত্যত আহ সর্ক্ষিতি দর্শনাত্তি তৃত্তির বংস এবং ভৌজন স্থান হইতে বংসপাল সকলকে হ্রণ করিয়া লইয়া সেলেন এবং অন্যত্তে স্থাপন করিয়া আপনি অন্তর্হিত হইলেন ॥ ১২ ॥

এ দিবে জ্রীকৃষ্ণ বংসদকলকে দেখিতে না পাওয়াতে যেখানে হইতে গিয়াছিলেন দেই পুলিনে জাগমন করিলেন, কিন্তু দেখানে বংদপালদিগকৈও দেখিতে পাইলেন না, জতএব বনের চতুর্দিকে বংদ ও বংদপাল উভয়েরই অন্বেষণ করিতে লাগিলেন ॥ ১৩ ॥

যথন বিপিনের ইতত্ততঃ কুত্রাপি বর্ষে ও বংসপালগণ দুই না হইল ত্থন হচাৎ তাহার বোধপুনা হইল যে, এ সকল বুঝি ত্রন্ধার কর্মা, হে রাজন ! ভগবান, প্রীকৃষ্ণ সর্বহার, তাহার ও বিষয় প্রবৰ্গত হওয়া বিচিত্র নহে॥ ১৪॥ ভতঃ ক্ষোমূদং কর্ত্থ তন্মাতৃণাঞ্চ কস্য চ। উভয়ারিতমাত্মানং চল্লে বিশ্বকৃদীশনঃ ॥ ১৫॥
যাবৰৎসপ্বৎসকাল্লকবপু বাবৎকরাজ্যাদিকং যাবদ্বস্তিবিবাণবেণুদলশিশ্ যাবিৰিভ্যান্দরং।
যাবচ্ছীলগুণাভিগান্ধতিবলো যাবিৰিহারাদিকং সর্বং বিষ্ণুময়ং গিরোহঙ্গবদক্ষঃ সর্ব্যক্তপা বভৌ ॥১৬॥
• জীধরশামী।

উভন্নান্নিতং বংসবংস্পালক্ষপেণ বর্ত্তমানমিত্যর্থ:। অন্নং ভাব:। যদি তৃষ্টীমাসে তহি তিল্মাতৃণাং বিধাদ: স্যাৎ। यদি তানেবা-নদামি তহি ব্রহ্মণো মোহো ন স্যাৎ ইত্যুভনপ্রীতন্ত্রে তথা চক্রে ইতি ॥ ১৫ ॥

ভत्त्व मर्नक्रि वाविति । वरन्नानार वरनकानाक अवकवन् अमानः अनिक्रमा । धवमून्य्रानित काकाः । यवा । वाववरन्नानिन

## বৈষ্ণবতোৰণী।

এতাবন্তং কানং হি তস্য বহিরবেষণদীলাদ্যভিনিবেশং দুঠি;ব জ্ঞানশক্তি ভট্ছাসীং। সম্প্রভিত্ন মনশ্যের তদমুদক্ষিৎসাদ্যং ভূ জাতারাং স্বল্যৈবাবসরে সমুপস্থিতেতি ভাবঃ। স্থানিভূরিজ্ঞাশক্তিপরাধীনত্বাং সর্বলক্তেঃ ॥ ১৪ ॥

তন্মাতৃণাং সর্বাল সং প্রীরস্থীনাং ইলং কর্ত্। চকারাছিনা স্বালং কণমপি স্থাত্মপারহতাং মিত্রাপারপ্রসাবরালরপ্রবেশবদা স্থানা লীলাবেশাদন্যোৎপাতশহরা তান্ কতিচিদ্নিনান্যকান্তে রক্ষিতৃঞ্চ ছারকারাং বাদবানিবেতি জ্বেরং। এবং ভেষাং মারাশরে শরানস্বার তিছিরহত্বং তগবতশ্চ তত্তদর্শনেন তৈঃ সহাতিবিছেল ইতি নাসমন্ত্রসঞ্চলকং প্রারোজনমাহ ক্সা চেত্তি। তস্যাহী-দশাক্ষরতদীরমহামন্ত্রোপাসক্ষাৎ। এবং শ্রীক্ষেক্ট্রের তেবাং মোহোন ব্রন্ধমারাসামর্থোনেতি শভাতে। তত্তচাত্মশীলাচ সাধারণদৃত্তা ন সিধাতীতি আন্মানমের উভরায়িতং উভরং বৎসা বালাশ্চেত্যেবং। কিছা স্বরং তগবান্ বৎসবৎসপাশ্চ ইত্যেবং ছরং তত্ত্বদাচরন্ত্রং চক্রে নাতীবভেদাত্তরং ইব চক্রে ইত্যর্থং। শীল্লতন্ত্রদ্বতারসামর্থাং দ্যোত্রতি বিশ্বকৃত্বাং মহাপ্রবাদীনামণীশ্বরং স্বর্মবতারীতি॥ ১৫॥

তদেৰ প্ৰপঞ্চরতি, যাবদিতি। যাবচ্ছফেনাত্ৰ যথাস্থানং সংখ্যাপ্ৰমাণাদিকং বিবেচনীরং ততক যাবৎসংখ্যানি বৎসপানাং বৎসকানাঞ্

#### ক্রমসন্দর্জ:।

क्कांत्रिष्ठः। ১८। ১८। ५७। ১१॥

# **अ**विश्वनाथठक वर्षी ।

সহসা চৌর্যাক্ষণ এব ব্রহ্মণা অভ্রকিভমেবেতার্থ:। অভর্কিতে ভূ সহসেতামর:॥ >৪॥

ততক তগৰবাহনা মোহিতে ব্ৰহ্মণি মোহকদন্যে স্বভবনং গতে সতি স্বস্য ব্ৰহ্মণানামোহনাভাবনাত্ৰ ব্যঞ্জকঃ পূৰ্ববং স্থাবৈৰ্বংস-বালকৈঃ সহ ভোজনাদিলীলাভি বিহানো নাভিবিচিত্ৰন্নিভাতো মানাভীতান্ বলদেবপৰ্য্যজানপি স্বপন্নীবানান্ মোহনিদা লোকে স্মানাবলং দশনিভূং প্রমবংসলানাং গোগোপীনাং স্বন্ধিন্ পূত্রভাবমভিলবজ্ঞীনাং মনোরংং পূর্নিভূং ব্রহ্মাণং মোহনিদাপি পূন্ম হাবিদ্বন্ধপুত্র প্রক্ষেপ্তুং একদিন্ত্রে বাভীইদেবে প্রভাগবভোগদেইরি বাল্লদেবে ভক্তিমন্তং প্রত্তি চি পারংসক্ষান্ বাল্লদেবান্ দর্শ-বিভূং স্বর্থেব বংস্বালালাকারো বভূবেভ্যাহ তত ইতি। কস্য ব্রহ্মণঃ আছানং স্বর্থেব উভন্নান্নিভং উভন্নং বংস্কং বালকদ্ধ স্বন্ধিং বংস্বাল্রনিশ্মিতার্থঃ। বিশ্বকৃতাং মহংকট্রানীনামণীশ্বর ইতি তক্ত সামর্থাং গোতিতং॥ ১৫ ॥

ज्राहत धानकाति । वातर वर्शतिवानकः तरम्थानाः तरमकानाक जनकः वर्षः। बाजार्थकता धकत्रकाः। अज्ञानि कामगानि

সে যাহা হউক, তৎপরে বিশ্বকর্তা ভগবান্ হরি সেই সকল বালকদের, জননী তথা ত্রশার আনন্দ নিমিত আপনাকেই বংস ও বংসপাল এই দিবিধ রূপে রচনা করিলেন। হে রাজন্! ভগবান্ বিবেচনা করিলেন ত্রহা বংস ও বংসপালদিগকে হরণ করিয়া লইয়াগিয়াছেন, যদি আমি ভৃষ্ণীভূত হইয়া থাকি তাহা হুইলে সালক্ষিগের মাতৃগণের ও বি্যাদের পরিসীমা থাকিবে না, আর যদি সেই সকল বংস ও বংসপাল্দিগকে আনমন করি ভাষা হইলে ত্রশার আনন্দ হইতে পারে না, অতএব উভয়ের প্রীতিনিমিত আপনিই ছুই প্রকার হইয়া রহিলেন, ॥ ১৫॥

अवीर नर्त ७ वर्तभानितितत यक्तभ कृत्रभवित्रात गतीत, त्य श्रकात कृत कृत रख भागि,

সম্মাত্মাত্ম-গোবংসান্ প্রতিবার্যাত্মবংসপৈঃ। ক্রীড়নাত্মবিহারে চ সর্কাত্মা প্রাবিশন্ধ জং ॥১৭॥

# धिधत्रवामी।

বপু স্তাবং সর্ব্বরূপোহন্দ: শ্রীক্বফো বভাবিতি উত্তয়ত্রাপোবং। সর্বং বিষ্ণুময়ং বাগদিতি প্রসিদ্ধা বা গী: তস্যা অঙ্গবং সা গীরেবার্থ-স্বরূপেণ প্রত্যক্ষা যথা তথা বভূবেত্যর্থ: ॥ ১৬ ॥

এবং দ্রবাদ্ধা দন্ এবং প্রাবিশৎ কথং শ্বমন্ত্রেব প্রবাদ্ধকঃ। আ্বরূপান্ গোবৎসানিতি কর্মাণি শ্বমেবেত্যুক্রং। আ্বরু

### বৈষ্ণবতোষণী।

তথা তেম্বর্কানাং বংসপাত্মচরবালানাং বংসকাত্মচর ক্রীড়নমেবাং বপৃংবি তাবদিত্যর্থ:। এবং যাবন্ধি বংপ্রমাণানি করাজ্যান্দীনি তাবদিত্যর্থ: যথ প্রকারাণীতি জ্বেরং। যাবচ্ছীলগুণেত্যুর যাবন্ধি বাদৃশানীত্যর্থ:। তর শীলং স্বস্থাবং গুণান্ত্র্বের্ধ- ত্বেবং শিক্ষাবিদ্যোধা অভিধা বাণী তন্ত্রমাভিনিবেশা বা আরুতিরাকারঃ বিতীয়াদিশকাথ পিতৃমাত্রাদির ব্যবহরণং পূর্কাচরিত স্বরণাদিকক। তাবং তন্তৎ সর্বাং অলএব বভৌ। ষতঃ সর্বাং তচ্চান্যুট্ন প্রাকৃতাপ্রাকৃতং বন্ধ ব্যবহরণং পূর্কাচরিত স্বরণাদিকক। তাবং তন্তৎ সর্বাং অলএব বভৌ। ষতঃ সর্বাং তচ্চান্যুট্ন প্রাকৃত্যপ্রাকৃতং বন্ধ ব্যবহরণং প্রাকৃত্যপ্রাক্ত বন্ধি ক্রান্ধির বিভূপকঃ। অতো যালগতং ভবচ্চ ভবিষ্যান্ধ ইত্যাদি প্রতালালান্ধ সর্বাং তত্র বর্ত্ত এব বক্যপেক্ষরের তন্ত্রজ্ঞাদিবাপদেশ ইতি ভাবঃ। তদেবাহ অল ইতি এবমেকলৈ বংস বংসপাদিরপদেশ ততঃ পৃথক্ষেন চাচিন্ত্র শক্ত্যাহভিন্নত্বমপ্যকং ত্রোপাযুক্তা দৃষ্টান্তঃ গিরো বাক্যপ্র তিপ্র্বন্ত্রচয়লকণ্যাকং কর্ত্কশ্নাদিপদং যথা তদ্বিতি তিও্স্বন্ত্রস্বস্য তদভিন্নতে শ্রী ভগবতন্ত ভন্তিন্নছেনাপি স্থিতত্বে দৃষ্টান্তঃয়েয়পুচারাং॥ ১৬॥

গোবংসানিতি স্বভাবতোহতি বংস্লানাং গ্রাং বংসেষু প্রমাপেক্ষ্যন্তং স্থাচিতং। স্বত্তএর প্রতিবাধ্য বলান্নিবর্ত্ত। সর্ব্বআত্ম শব্দ প্রব্যোগেণ পূর্ব্ধ বংসাদিভ্যো ভেদো দর্শিতঃ। তেন চ ভগবংক্ষেহপাত্রন্থে তেভ্যো ন্যুনমেধামভিপ্রেতং তচ্চ নাহমাত্মানমাশাদে

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বপৃংধীত্যর্থ:। এবমুন্তরত্রাপি বিহারাদিকমিত্যত্রাদি শব্দাংপিত্মাত্রাদিরু ব্যবহরণং পূর্ব্বাচরিত স্থরণাদিকক। অজঃ অজন্যতরের ভীত্তএব ক্রফঃ সর্ব্যবহরপঃ তাব্দপুরাদিরপঃ সন্বভৌ সর্ব্বং বিষ্ণুময়ং জগদিতি প্রসিদ্ধা যা গীন্ততা অক্বৎ সা গীরেব মূর্তা প্রত্যক্ষা যথা বস্তুবেত্যর্থ:॥ ১৬॥

তত্ত মধ্যাক্সাণরাক্ষোঃ পূর্ববেদৰ জী ড়িতবতত্তত সায়ং গোষ্ঠপ্রবেশমাহ স্থমীতি পঞ্চিঃ। এবং সর্বাত্মা সন্ এজং প্রাবিশং। কথং স্থয়নাইত্মৰ প্রবেশকা প্রাত্তি প্রকাশন গোবংসানিতি কর্মাণি স্থয়মেব আত্মরূপৈ বহিনীও প্রতিবার্গ্যতি প্রকাশন কর্ত্তাপি স্থামেব । আত্মবিহারেঃ আত্মভিরাত্মভূতৈবলিকৈঃ সহ যে বিহারা বেশ্বাদনাদ্য তৈজীড়নিতি ক্রিয়াকারকাগাপি স্থয়নেবেতার্থঃ। অত্র প্রিনে বহসপালা উপবিশ্য ভূঞ্জ এব শান্তবেষু বহসা ত্তাং চরত্ত্যেব তানবেষ্ট্রং ক্রফো নিশিনে পর্যাতত্যেব ক্লানার্য্যাণং বর্ষং ব্যাপ্রতিত্তি কং সর্বৈর্দ্ধঃ তত্তৎ স্থলেষু প্রতিদিনং ভ্রমন্তিরনৈ লীলাপরিক্রৈঃ ক্রফ্রস্থাপ্রথমবাচিত্ত্যা ক্লাপ্রথমবাতিত্যাপ্রতা যোগমায়্যা ব্যরাজীদেব যগৈত্বত্ব ক্লো একণা ক্রলবেজাদিশক্ষণাক্ষতা মোহাত্তে

5

যাদৃশ শৃঙ্গ (শিঙ্গা) বেণু দল শিক্য প্রস্তৃতি যেমন বসন ভূষণ,যজ্ঞপ শীল শুণ আকার বয়স,,যে প্রকার বিহার ইত্যাদি, অবিকল তজ্ঞপ হইরা সর্ক্যরূপ ভগবান্ দীন্তি পাইতে লাগিলেন। অতএব "সমন্ত জগং, বিষ্ণুষয়" এই যে প্রসিদ্ধ বাক্য ভাহা শ্লেম অর্বতঃ প্রত্যক্ষগোচর হুইল । ১৬ ।

নে বাছা হউক, ভগবান ঐ প্রকারে সর্বাপ্তা ইইয়া একে প্রবেশ করিলেন, আপনি আত্মরপি-বংসপালক বারা নিবারণ করিতেছিলেন অর্থাৎ প্রযোজক এবং প্রযোজ্য করি আপনিই হইয়াছিলেন। আর আত্মবিহারদারা অপেনিই ক্রীড়া করাতে ক্রিয়াকারকও আপনিই হইয়া- তত্ত্বৎসান্ পৃথঙ্নীতা তত্ত্তলোঠে নিবেশ্য চ। তত্তলাত্মাভবদ্রাজং স্তত্ত্বৎ সন্ম প্রবিষ্টবান্॥১৮ তত্মাতরো বেণুরবত্বরোখিতা উত্থাপ্য দোর্ভিঃ পরিরভ্য নির্ভরং। ত্রেহস্মৃতস্তন্যপয়ঃ স্থাসবং মন্থা পরং ব্রহ্ম স্থানপায়য়ন্॥ ১৯॥

### अधितवामी।

স্বরূপৈ ব'ংসপৈঃ প্রতিবার্য্যেতি প্রযোজ্যকর্তাপি স্বয়মেব আত্মবিহারৈঃ ক্রীড়ন্মিতি ক্রিয়াকারকাণ্যপি স্বরমেবেত্যর্থঃ॥ ১৭॥ তত্তদান্ত্রা তত্তদেশাপবালকরপোহতবদিতি। তত স্তত্তং সন্ম প্রবিষ্ঠঃ॥ ১৮॥

গোপিকানোহনমাহ তন্মাতরো বেণুরবেণ খুরয়া উথিতাঃ সত্যঃ স্থতান্মখা পরং ব্রহ্ম ইব দোর্ডিরুথাপ্য উত্ত পরঃ স্থাসবং পর এব স্থাবৎ খাত্ আসববন্মানকং পার্যামাস্থ রিত্যর্থ: ॥ ১৯ ॥

# বৈষ্ণবতোষণী।

ইত্যাদি ভগবছচনং ব্যক্তমেব ॥ ১৭ ॥

তত্তদাত্মা তত্তৎস্বরূপঃ প্রবিষ্টবান্ ভবৎ প্রবিশ্যাসীদিত্যথঃ। যথা। অর্থান্তক্তরূপেণ স্বস্থাহং প্রবিষ্টবান্ সন্ তন্ত্দাত্মা তত্তৎ-প্রয়ন্তবং। বংস্থার নিরোধ গোপাহ্বান সুক্তেত বেণু বাদনাদিক ক ক্রতবান্ ইত্যর্থঃ। আত্মা যত্ত্বে স্থানি বৃদ্ধিঃ স্বভাবো বন্ধা হৃত্তি হৃত্যমরঃ ॥ ১৮ ॥

তনাতৃণাং চমংকারং প্রপঞ্চন, পূর্ব্বতঃ স্নেহবিশেষং বক্তুং তল্লকণং দর্শনতি তন্মাতর ইতি। উত্থাপ্যান্তে গৃহীত্বেত্যর্থঃ। যদা। প্রণতান্থপাপ্য। উত্ত্তিতৃ কচিৎ পাঠঃ। কিন্তুত্র উত্থাপ্যতি টীকাবৈপরীত্যং ক্ষেরং অত্রৈব টীকারাঃ সাফল্যং স্যাৎ ইতি চ পরং ব্রন্ধেতি প্রীতক্তংপারনৈম্বর্যক্ত্রা তাসাং ভাগ্যং মাঘতে অহো ভাগ্যমিত্যাদিবং। স্বরেতি নির্ভরমিতি স্বধাসব্যিত্যাদিকঞ্পর্বতো বিশেষদ্যাতনার ॥ ১৯ ॥

#### ক্রমসন্দর্ডঃ।

খং পুত্রীয়ন্তীনাং তন্মাতৃণাং চকারাৎ বিনা খদক্ষতিষ্ঠতাং তেবাং খীয়েন লীলাবেশেনাখোদরপ্রৰেশবহুৎপাতাস্তরশঙ্করা কতিচিদিনানি চ একান্তে তান্ রক্ষিতৃঞ্ ধারকারাং যদ্নিবেতি জ্ঞেয়ং। তত্তদাত্মেতি বহুত্রীহিণা তত্তদ্ বন্ধবান্ ভবেদিতার্থঃ। আছা যদো ধৃতিবৃদ্ধিঃ খভাবো ব্রহ্ম বন্ধতিত্যমরনানার্থবর্গাৎ। প্রাসন্ধিকং প্রয়োজনমাহ কদ্য চেতি। একস্বরূপছাত্ত্রায়িতমেব নতৃভয়ং। বিশ্বকৃতাং পুরুষাদ্যবতারাণামীখরোহবতারী। বিশ্বময়মিত্যোপচারিকবিকারাথে ময়ঢ়্॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১ ॥

#### শ্ৰীবিশনাপচক্রবর্তী।

ममृत्म पृष्ठे त्वं ८० कि टब्बर ॥ ১१॥ १

তত্তদাত্মা শ্রীদাম স্থদাম স্থবলাদি বালকস্বরূপ: ক্লফ তত্তৎ সন্ম প্রবিষ্টবানিত্যবয়: ॥ ১৮ ॥

হস্ত হস্ত যশোদার। ইবাদাকমপি কৃষ্ণ: কিং পুরো ভবেদিতি গোপীনাং মনোরথস্য সিদ্ধিং বছিরলন্ধিতাং বদরেব তাসাং মোহনমাহ তন্মাতরত্তব্যাতরঃ অতাম্বরণ পরং একৈব দোর্ভিকখাপ্য অব্দে কৃষা জন্যং পরোহপার্যুক্ত। উত্তত্তি কাচিংকঃ পাঠ্চ। নির্ভরং গারিরভ্যেতি নির্ভরং লুভেতি পূর্ব্বতঃ সেহাধিক্যস্চকং পরং একাপি স্থাসবং মন্বা তাসাং জন্যং পরোহপিবদিত্যাহ স্থাসব্যতি। সেহস্কৃত্বেন স্বেহমার তৎ প্রোধান্যহারসিকঃ কৃষ্ণঃ স্থামিব স্বাহ্ন আসন্মিব মাদকং পিরন্ পিবন্ধুবভূবেতি ভলোভাদেব ভস্যাপি তত্তৎপুরীভাববাসনা প্রাগাসীৎ সাপি এক্সমাহন প্রবঙ্গ এব সিদ্ধেতি। অতএব স্বস্য স্থীনপি বর্ষপর্যন্তং বোগ্যার্য্বা মোহরামানেতি জ্বেরং। জন্যাযুতং পীজ্যতীব তে মুদ্বতি বর্ষণাপি বক্ষায়াব্যাং। ১৯॥

## ছिলেन ॥ ১৭ ॥

হে রাজন ! ভগবান মায়াবলে গোপবালকের রূপ ধারণ করিরাছিলেন অতএব সেই নেই বংস সকলকে পৃথক পৃথক লইরা গিরা তভদেগার্চে ছাপন পূর্বক প্রত্যেকের গৃহে প্রবেশ করাইলেন ॥১৮ হে কুলবর্য ! বংসপাল বালকদিগের মাড়গণও ভগবন্ধারার মুখ হইরাছিল, তাহারা বেপুরব শ্রবণমাত্র সম্পর উপিভ ইইরা সেই সকল মায়ারচিত বালককে অ অ তনর জ্ঞান করিরা যেন পরম-বেলকেই বাহু বারা ছলিরা অতিশয় আলিজন করিল, পরে অধাবৎ অ্যান্ত এবং আনবৰৎ ক্লাক মাহা সেই বশতঃ ক্লাবভই প্রস্তুত ইতেছিল, তাহা পান করাইতে লাগিল ॥ ১৯॥ ততো নৃপোন্দন মজ্জলেপনালকাররকাতিলকাশনাদিভিঃ।
সংলালিতঃ স্বাচরিতৈঃ প্রহর্ষন সায়ং গতো যাম্যমেন মাধ্বঃ॥ ২০॥
গাবস্ততো গোষ্ঠমূপেত্য সম্বরং হুক্কারঘোষেঃ পরিহুত্সক্ষতান্।
স্বকান স্বকান বৎস্ত্রানপায়য়ন মুহুলি হস্ত্যঃ প্রদেশিসং পয়ঃ॥ ২১॥

গোগোপীনাং মাতৃতাত্মিনাদীৎ স্নেহর্দ্ধিকাং বিনা। পুরোবদাস্থপি হরেস্তোকতা মায়য়া বিনা॥ ২২।।

#### अध्वयामी।

এবং যাম্যমেন তত্তৎকাল তত্তৎক্রীড়ানিরমেন সামং গৃতঃ প্রাপ্তঃ স্বাচরিতেঃ গ্বস্য স্বাচরিতেঃ শোভনৈরাচরিতিক্র। মাডুঃ প্রহর্ষন্ তত্তাভিক্রমর্শনাদিভিক্রপলালিতঃ ॥ ২ • ॥

গবাং মোহনমার গাব ইতি। পরিহুতা আহুতাশ্চ তে সঙ্গতাশ্চ তান্॥ ২১ ॥

এতাবহৈষমাং ঐক্লম্স্যাপি ছনি বারমাসীদিত্যাহ গোগোপীনামিতি। গবাং গোপীনাঞ্ অন্বিন্ প্রীক্লফে মাতৃতা উপলালন-

# বৈষ্ণবতোষণী।

তত্ত্বালরপোহসৌ তত্ত্লগৃহেরু সর্বেরু এব স্থমবসদিত্যাহ তত ইতি। যামো দিনাস্ত্যপ্রহরত্ত্বিন্ যমঃ গৃহাগমননিরমঃ সর্বাদ বর্ষর্ বং। তৃণসম্পত্যা তৃত্থানাং গ্রাং তদানীমাগমনতঃ পূর্ব্বের বংসানাং আগমাবশ্যক্ষাং তেন গৃহং গতঃ সারং দিনাস্ত্য দেওবট্কং ব্যাপ্য উন্মাদনাদিতিঃ সম্ক্লালিতঃ মাতৃতিঃ হে নূপ ইতি পূর্ববিং সর্ব্ব জ্ঞেয়ং। উন্মাদনং তৈলাদিনা। মজঃ স্থানং চন্দাদিনা আদিশকাং বন্যবার্তাশ্রনাদীনি। মাধবং শ্রীকাস্ত ইতি ত্লগৃহসম্পত্তির্দ্বিসপি স্টিতা॥ ২০॥

় গৰাঞ্চ তথৈৰ স্নেহবিশেৰ্মাই গাঁৰ ইতি। স্বকান্স্বকানিতি স্বেষামেৰ নিকটপ্ৰাপ্তছাৎ মমতাসৰক্ষেনাভিশরাচ্চ বৎসতরান্ বৃদ্ধিং গতানপি বৎসান্ ঔধস্মাপীনভর্মিতি তদীয়সর্বপ্রঃপ্রবণারস্তাভিপ্রায়েণ ত্ত্রাপি স্তর্মিতি মুহ্রিতি প্রব্দিত্যাদিকং পূর্বতো বিশেষ জ্ঞাপকং॥ ২১॥

এবং পূর্বেভ্যো বৎসপালেভ্যন্তদংশানাং বৈলকণ্যং দর্শরং স্তত্তাগোন খাব্যমানাভ্যোহণি তত্তক্রপমাতৃভ্যোহণি তরিজরণমাতৃবৈলকণ্য

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

এবং পূর্বেভ্যো বংসবালেভাত্তদংশানাং বৈলক্ষণাং দর্শয়ন। তত্ততাগোন লাদ্যমানাভ্যোহপি তত্তত্ত্বপমাতৃভ্যঃ স্বরূপমাতৃ বৈ লক্ষণ্য-

### श्रीविश्वनाथहळ्वरही।

যামানাং বনেন উপরবেশ ও যমু উপরমে। ভবিন সতীত্যর্থ:। নাধব: ক্লক্তংবরপভূতবালকগণত গত: স্বৰ্গৃহমিতি শেব:। ততক উন্নৰ্ধনং অগন্ধিতৈলাভ্যন্তনং ভদনক্ষরং মক্ষ্ণা স্থানং মাতৃভি: সামং সংলালিভ: ॥ ২০ ॥

গোলীনামিব ভতে। গ্ৰামপি মোহনমাহ গাব ইতি। পরিহ্তা আদাবাহুতান্ততঃ সক্তাশ্চ তান্। অত্যালি সম্ব্রমিতি মুহ্লি হিন্তা ইতি মুহঃ অবদিতি বেহাধিকাস্চকং ॥ ২১॥

किए। श्वार शिनीनार जानिन विवत्नामानमान इत्या माञ्छा गर्सा উপनामनामिमकः गर्स्वय माञ्छाव देखार्थः। श्रावर

হে রাজন্। শ্রীকৃষ্ণ এই প্রকারে তত্তৎ ক্রীড়ানিয়ম করিয়া সায়ংকাল উপস্থিত হইলে স্থান্তর আচরণে মাতৃগণকে প্রহার্তি করিলেন। তাহারাও উন্মার্দন, স্লপন, অবলেপন, অলক্ষরণ, রক্ষণ, তিলকার্পণ, তথা অশনাদি দারা সম্যক্ প্রকারে তাঁহার লালন করিল। ২০॥

ভারনন্তর, গাভী সকলও কৃষ্ণনারার বিলোহিত হইয়া সম্বর গোঠে আসিতে লাগিল এবং হুরার-শব্দে শাস্ত্রত,ও স্মীপে স্মীলিত ব ব বংসকে মৃত্যু হুঃ অবলোকন করত স্বরং প্রায়ন্ত স্থায়ন্ত পান করাইডে শার্ম করিল॥ ২১॥

হে বাসন্ত ক্রিক্তের প্রতি গো এবং প্রেণীদিগের উপলালনুরপ নাত্বাৎসন্য বদিও পুর্বের ন্যায় প্রকাশ পাইল, তৃষ্টি প্রদর্শে বিশেব স্নেহাধিকা দৃষ্ট হইল। ঐ স্কল লো সোপীদিলের ভগবানে

# অব্জোকসাং স্বতোকের স্থেহবল্যা সমন্বহং। শনৈনি :সীম বরুধে যথা ক্লফে ত্বপূর্ববং ॥ ২০ ॥

### धीयत्रयामी।

রূগা পূরোবদেবাদীং কিন্তু সেই জিকাং বিনা সেহাধিকাং তু ইদানীং বিশেষ ইত্যর্থঃ। আহু গোগোপীযু হঙ্গেস্তোকতাচ বালভাবোহপি পূর্ববদেবাদীৎ কিন্তু মায়ন্তা বিনা মমেরং মাতা অহমস্যাঃ পুত্র এবং মোহৎ বিনা ইত্যর্থঃ॥ ২২॥

রেহর্দ্ধিমের দর্শরতি ব্রক্ষৌকসামিতি। যথা ক্লফে বশোদানলনে স্পুত্রেভ্যোহিপ সেহাধিকা: প্রুর্মনাসীৎ ইদানীং স্বতোকেছপি

# देवक्षवरकायनी।

মাহ গোগোশীনামিতি। পুরোবদিতাভয়ত্রাপায়ন্ধঃ। পুর্বার পুরোবং প্রাক্তনালকে বিবাদিন্ বালবংসরপে প্রীক্তরে মাতৃতা মাতৃতাব আসীং কিব্ধ ক্ষেই বিনা পূর্বের্ সেহএবান্ধিংস্ক তৎসমৃদ্ধির্বিদ্ধিতার্থঃ আদ্ধ্রেহপি রূপে বস্তবভাবস্যানাচ্ছান্যবাদ্ধিবং। উত্তরপ্র প্রোবং প্রীকশোদায়ামিবাস্থপি ভন্নমাতৃতাবাস্থ হরেকোকতা বালভাব এবাসীয়ান্যভাব ইত্যর্থঃ। কিন্তু সায়ন্ন বিনা তদ্যাং প্রীক্তকোহহমিতি সত্যপ্রতিপাদনং তত্তিতসাক্ষাংকৃষ্ণরপ্রকাশনক। আস্থ তু স শ্রীদামাহং স্থানাহমিতি চ্ছুমুপ্রতিপাদনং রূপান্তরপ্রকাশনকেত্যর্থঃ। বক্ষাতেত বংসপালমিবেশ স ইতি সর্ববিদক্ষণ্য প্রাপ্তেহিপি সাম্যে সর্ববিদক্ষণতা হেতৃস্বভাববিশেব-প্রাপ্তাসন্তবাং ক্ষাব্রথ । আল্লোভর্ত্রাপি সমান এব বিনাশন্ধঃ তত্তশ্রেহিপি সমান এব যুক্তাতে। আল্লোভ্যত্রাপ্যপি শব্দন সমানকোটিনিবিষ্টায়াঃ শ্রীব্রংশাদায়াঃ প্রাপ্তিঃ সমঞ্জনা স্যাৎ অন্যপা হরেরপীত্যকক্ষাদিতি বিবেচনীয়াঁঃ ॥ ২২ ॥

তৰৎ প্রীয়শোদান-দুনে হপি বৈদক্ষণ্যমাহ ব্রজৌক সামিতি। স্বশব্দেন স্বাপত্যত্বেনৈব জ্ঞাতে স্থৃপি নতু প্রীক্ষণ্ডেনেতার্থ:। স্নেহ এব

#### क्रमनमर्जः ।

তহং জ্ঞীৰশোদানন্দনেহপি বৈলক্ষণামাহ ত্ৰজৌকসামিতি। ক্লেড ইত্যুভন্তলাপাৰেতি বথা ক্লেড তথা তেৰু বৰুধে ক্লেড্ড্

## विविधनाथहळावडी।

পূর্ববদেবাদীৎ কিন্তু রেহর্দ্ধিকাং রেহাধিক্যং বিনা পূর্বং শ্রীদামস্থদামাদিত্যঃ অপুত্রেভ্যাহিদি সকাশাৎ যশোদাপুত্র শ্রীকৃষ্ণে রেংক্রিরাদীৎ তদ্যৈব অপুত্রীভূততে লাতে সতি তদা অপুত্রেছদি তথৈব নেহর্দ্ধিরিতি যশোদাপুত্র অপুত্রেচ তুলাএব মেহোহভূদিত্যর্থ:। আহ গোগোপীর হরেরশি তোকতা বালভাবঃ পূর্ববদেবাদীৎ কিন্তু মার্য়া বিনা পূর্বং মার্য়া উপচারেণৈব পূর্বভূদ্যাছাৎ পূর্বজ্বাদীৎ বন্ধাহনদিনমারভাতু ক্রঞ্চএব শ্রীদাম স্থানাদি রপভাদাং প্রোহভূদিতি ক্রক্স্য পূর্বভাবা যথার্থ এবেতার্থ:। নমু শ্রীদামাদির তন্মাভূণাং যাবান সেহতাবানের প্রীভূতে শ্রীক্রেছংশি ভবিতু নহ'তি বাবছীলভগাতিধাক্রতিবরো বাবহিহারাদিক্মিতি পূর্বোক্তে:। উচাতে। ক্রকোহি মহামহেশরছাৎ আধীনীকৃতব্রজাদিবাংশপর্বাজ্ঞাংশি প্রেমঃ ধর্ষীন এব প্রেমাত্ ন তদ্যাধীন ইতি প্রেম্নি তদ্য প্রভূঘাভাবাৎ তেন প্রেমা সঙ্গতিতীকর্ত্ সালভা:। অভএব আমিচরণেরপ্যক্তং। এতাবভূ বৈষ্মাং ক্রফোণি ছিনি বার্মিতি সচ প্রোলাক্তর বর্ষান ক্রমাতাদির বিরাজত ইতি ক্রকঃ অমাত্রাদিনমীপে বৈশ্বস্থাক্রমান্ত্রসাদির প্রাত্তিত বংগ মহারাজ্যকর বর্ষিনঃ সমীপে মগুলেশ্বর ইতি। নচ বহামহেশ্বরস্য ভলেস্বং পার্রভন্তঃ দূরণমিতি বাচাং প্রভূতে ভূবণমের বর্ধা জীবস্য মারাপারতব্রং গুংথার্থকং ভবৈবেশ্বরস্যানক্রসম্বর্স্যানক্রসম্বর্স্যানিক্রসম্বর্স্যানক্রসম্বর্স্যানিকর বর্ষান ক্রম্বর্স্বর্স্তর প্রতিক্রপ্রধাননির ভিশ্বনানক্রমানক্রসম্বর্স্যানিকর বর্ষান বির্মান তাব্র ব্যাক্র বর্ষান নির্মান ক্রম্বর্স্যানকর স্বর্স্যানকর ক্রম্বর্গর ব্যাক্র প্রতিক্রমান নির্মান ক্রম্বর্স্যানকর স্বর্স্যানকর ব্যাক্র ব্যাক্র ব্যাক্র ব্যাক্র ব্যাক্র ব্যাক্র ব্যাক্র ক্রমান ক্রম্বর্স্যানকর স্বর্স্থান ক্রম্বর্স্যানকর ক্রম্বর্স্যান ক্রম্বর্স্যান ক্রম্বর্স্থাক্র ব্যাক্র প্রাক্র ব্যাক্র ক্রমান ক্রম্যাক্র ব্যাক্র ব্

ভারের বলোদানশমন্ত্রপ্তীভূতন্তরোঃ বরগত ঐকরগ্যার বৈহাধিকাং তৃণ্যবুজনণি পুনঃ লাইক্রিন্ বলোদানশন-ভারও পূর্বেব্ হইল কিন্তু পূর্বের মায়া ছিল না, একরে "লামি ইহার মাতা, ইনি সামার পুত্র" এই প্রকার অধিক মোহ হইল ॥ ২২ ॥

ফলতঃ ব্ৰহ্মবাসিদিগের ইতি পূর্বে বলোদানন্দন ঞীকৃষ্ণের প্রতি আপনাদের পুত্রাপেক্ষা যেন

ইঅমাত্মাত্মনাত্মানং বৎসপালমিবেণ সঃ। পালয়ন্ বৎসপো বৃষ্ণ চিক্রীড়ে বনগোষ্ঠয়োঃ ॥ ২৪ একদা চারয়ন্ বৎসান্ সরামো বনমাবিশৎ। প্রথমাত্ম তিয়ামাত্ম হায়নাপূরণীম্বজঃ॥ ২৫ ॥

#### **टी** धत्रशामी

তথৈবাবৰ্দ্ধত ইত্যৰ্থ:। আ অসদং যাবদ্বৎসন্থং নিঃসীম যথা ভবতি॥ ২৩॥

এবমাক্সা শ্রীক্লক্ষঃ বৎসপো ক্ল্লা তত্তাপি বৎসানাং তৎপালানাঞ্চ মিবেশাক্সানমাত্মনা পালয়ন্ ক্রীড়িতবানিত্যর্থ: ॥ ২৪ ॥ এতাবং পর্যন্তং রামস্যাপি মোহ এবাসীৎ সংবৎসরাত্তে তু কথঞিৎ জ্ঞাতবানিতি দর্শয়নাহ একদেতি। পঞ্চর ষট্স্ত বা রাত্রিষু

### বৈষ্ণবতোষণী।

বলী শনৈব দ্বিমান দ্বাদিনা। শনৈবিতি সংলালনক্রমাণেক্রা। তদংশ্বাতেবাং ক্রফ ইত্যতর্ত্তাপ্যশ্বেতি। বথা ক্ষেত্ত তথা তেব্
বর্ধে ক্ষেত্ত্ত অপুর্বাবৎ পূর্বাং থথা নাসীতথা বর্ধে ইত্যর্থ:। যরা। বথা বথাবাং তের্ প্রীক্ষক্সা তত্তদংশের বালাদিশিক্যপর্যাতের্
তত্তদেযাগ্যং বর্ধে ক্ষেত্ত ত্পুর্বাবং আশ্চর্যাযুক্তং বর্ধে ইত্যর্থ:। পূর্বামিণি যাবচ্ছীলগুণাভিধাক্তি বয় ইত্যনেন সহজ্ঞীদামাদিবদেব শীকাদ্যাবিভাবতের কঃ:। নতু শীক্ষাবদিপ ততঃ স্বর্ণাধিক্যমেব তত্ত প্রেমাধিক্যে কারণং জাতং নতু শীলাদ্যাধিক্যমপীত্যুতবেণ প্রীক্ষেক প্রেমাধিক্যক ত্নি বার্মিতি ভাব:॥ ২৩॥

স বংসবংস্থারপধর: বনগোঁঠয়োরিতি তত্ত কুআপি কেনচিদ্পি তদ্হিতং নাভুদিতি ভাব:। অন্যতৈঃ। যথা স প্রীক্ষণঃ আত্মাত্মীয় এব চিক্রীড়ে॥ ২৪॥

পঞ্চাত্বিত্যানিলিতোক্তি: প্রেম্মানে। রমগতি শ্রীক্ষাদীনিতি বাম:। অতঃ প্রায়ো বদ্যপি তেন দুইবে প্রবেশ গুণাপ্যেকদা সরাম ইতি বৃত্তাস্ত্রবিশেষোদ্দেশায় নির্দেশঃ তচ্চ তং প্রতি তল্পীলাতব্বোধনং স্নেহবিশেষেণ অন্যথা অকান্তে শ্রীত্রহ্মগমনে স্তি ততংস্বংস্বেণ তম্ম তংকৌতুকামুভবসিদ্ধে:। অতিপূর্ব্বমবোধনে কারণত্ত বক্ষাতে। অক ইত্নি বো বিনাপি জন্ম তত্তং প্রতাং

#### उसमामनार्डः

অপূৰ্ব্বৰং পূৰ্বং ৰথা নাদীত্তথা ইত্যৰ্থ:। যথা। যথা বথাৰৎ তেষ্ কৃষ্ণদা তত্তনংশেষু বালাদিশিক্যপৰ্ব্যন্তেষু তত্তদেবাগ্যং বৰ্ধে ক্লঞ্চে তৃপুৰ্ববদাশ্চৰ্ব্যযুক্ত বৰ্ধ ইত্যৰ্থ:॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥

### ঐবিখনাথচক্রবর্তী।

ক্ষেতৃ গুণোংকর্বহেতৃকং দ্বেহাধিক্যমাহ ব্রন্ধৌকদামিতি। আবাং বর্ষং ব্যাপ্য অন্বহং দ্বেহবলীতি বলী বথা প্রতিদিনমেব বর্ধতে তথৈবেত্যর্থং যথা ক্ষেণ্ঠ যশোদানন্দনে পূর্বং অপুত্রেভ্যোহিণি বর্ধমানা দা আদীং। ইদানীং স্বভোকেষণি তথৈব বর্ধে ইতি স্বভোকানামিণি ক্ষেণ্ডাং সেহর্দ্ধিকভয়ত্র জুলাবেত্যর্থং। কিঞ্চ। তু শব্দবাং ক্ষেণ্ঠ ইত্যভার্ত্ত্যা স্বেহের্দ্ধেলাছেইপি ক্ষেণ্ঠ বশোদানন্দনে তু তথাপি অপূর্ববং নিত্যনবায়মানৈৰ ভন্ত সর্বশক্তিদৌন্দ্র্যাদিগুলবদানিশিল্পত। তাদাং পূল্রীভূতক্ষ্পের্পাণাং তু প্রীদামান্দ্রিভিত্সৌন্দর্যাদিয়বাদংশ্বাচ্চেতি ভাবং। ব্রা। যথেতি ম্থাবদেব স্বেহ্বনী বর্ধে ক্ষেণ্ড তু অপূর্ববদেব বর্ধে। ইত্যাবৃদ্ধ্যা বিনৈব ব্যাথ্যেরং॥ ২৩॥

এগমাখা এক্তিকা বংসপো ভূষা বংসানাং পালানাঞ্ নিকে আত্মানমাত্মনা পালান, ক্রীভিতবানিতার্থ: ॥ ২৪ ॥ ব্রহ্মমোহন প্রসঙ্গএব বলদেবমোহন্দ্রপি ব্যক্তীকর্তুঃ কথামাই একদেতি। পঞ্জু ধট্স্থ বা বর্ষা রাত্তিবু হায়নস্য অপ্রণীযু পুরক্তরা

সেহাধিক্য ছিল একণে ঐ সকল স্ব সংস্থানের প্রতি তদপেক্ষাও অধিক স্নেহ হইল এবং এক ৰৎসর
পুরুষ্টি তাহা এরপ বৃদ্ধিশীল হইতে লাগিল যে তাহার সীমা রহিল না ॥ ২৩॥

হে রাজন্ । এই প্রকারে স্বরং আত্মা জ্রীকৃষ্ণি বৎস এবং বৎসপালক ছলে আপনার দারা আপনা-কেই পালন করত্ব সম্বংসুর পর্যন্ত বনে ও. পোষ্ঠে জীড়া ক্রিলেন ॥ ২৪॥

হে ভারত ! এতাবৎ পর্যন্ত বলদেবও বুর হইয়া ছিলেন, সম্বৎসরাজে কোন প্রকারে জানিতে পারিলেন অর্থাৎ বৎসর পূর্ণ হইবার পাঁচ বা ছয় রাত্রি অর্শিন্ত থাকিতে একদা বলদেব বৎস চারণ

ততো বিদ্রাচ্চরতো গাবোবৎসামপত্রজং। গোবর্ধনাত্রিশিরসি চরস্ত্রো দদৃশু স্তৃণং॥ ২৬॥
দৃষ্ট্বাচ তৎমেহবশোহস্মৃতাত্মা দ গোত্রজো হত্যাত্মপত্র্গমার্গঃ।
দ্বিপাৎ ককুনগুনি উদাস্যপুচ্ছো হপাদ্ধৃঙ্কতৈ রাস্ফ্রপয়া জবেন॥ ২৭॥

### विधवचामी।

হায়নস্যাপুরণীযু পুরকতয়া অবশিষ্টাস্বিত্যর্থ:॥ ২৫॥

ততো বিদূরত এব গোবর্দ্ধনশিখরে চরস্ত্যোচ গাবো এজসমীপে চরতো বংসান্ দদৃভঃ॥ ২৬॥

তদৈব সগোত্রজ্ঞ গবাং কলাপঃ তৎস্পেহবশং তেষাং বংসানাং স্নেহেনাকৃষ্টঃ অতএব ন স্মৃত আল্পা বেন সং জ্বেনোপত্রজমগাৎ কথ্নতঃ অত্যাত্মপত্র্গমার্গঃ অতিক্রান্ত আল্পান্ গোপালান্ তথা ত্র্গমাে মার্গো যস্য সচ সচ তথা যুক্তাভ্যাং পদ্ধান্ ধিবন্ ছিপাদিব প্রতীয়মানঃ। কক্দি আকৃষ্ণিতা গ্রীবা যস্য সং। উদাস্যপুদ্ধঃ উন্নমিতানি আস্যানি পুদ্ধানিচ বেন সং। ক্লাক্রপয়াং সর্পতঃ প্রবন্ধি প্রাংসি যস্য সং। আলুপ্যাইতি পাঠে স্রবার্থিঃ॥ ২৭॥

### देवस्वदायगी।

প্রাপ্ত স ইত্যর্থ:। তব্ধুনা ব্যক্তীভবিষ্যতীতি ভাব: ॥ ২৫ ॥

ততন্ত্রদনন্তরং উপত্রন্ধমিতি গোবর্দ্ধনেশানকোণকোটিস্থারিষ্টমর্দনকুওসমীপ প্রায় প্রদেশে তদন্তিকে ত্রন্ধ ব্যাপ্তঃ। স্ট্রীকরাথ্য প্রদেশাদৃত্ব্যার্গণ চতুংক্রোশসম্বাৎ অথ তর্ধাগতো গোষ্ঠ মরিষ্টো ব্যভাস্থর ইতি বক্ষ্যমাণাচ্চ। তৃণমিতি তৎপ্রাশস্তাবিবক্ষয় তদাবেশেহপি সতীত্যথা। অধুনা শ্রীক্ষেন বংসতরাগাং চারণং কিঞ্চিদ্ধোর্দ্ধ্য যোগ্যাদিতি জ্বেয়ং॥ ২৬॥

তদেবাভিব্যঞ্জয়তি দৃষ্টে বিভাগং। বৰ্থে চকারং পূর্বতো বিশেষায় সচাকাণ্ডে প্রিয়সন্দর্শন স্বভাবতঃ। অথেতি পাঠেছিপ স্এবার্থঃ ক্ষেহ্বিশেষস্থমের দর্শয়তি অন্মতান্মেত্যাদিভিঃ। আঅপান্ হর্গমার্গং চাতিক্রান্তোছত ্যাত্মপহর্গমার্গং। আজি,ত্যাদি পাঠ্যুমপি কিবস্তঃ তুগভাব আর্থঃ॥ ২৭॥

### विविधनां थहक वर्षी।

অবশিষ্টান্মিত্যর্থ:॥ ২৫॥

গোবর্দ্ধনশূলে তৃণং চরস্তো গাবঃ তত্মাদবিদ্রাৎ ত্রজন্ম নিকটে চরতো বৎসান্ দদৃশঃ ॥ ২৬ ॥

অন্বতাত্মা আত্মানমপি বিশ্বত্য স গোসমূহ: অগাং। অতিক্রাস্তা আত্মপা গোপা ছর্গমার্গান্চ যেন সং। পরস্পারং যুক্তাভ্যাং পদ্ধাং ধাবন্ বিপাদিব প্রতীয়মান: উ গুংত্বাং ককুদি গ্রীবা মুস্য সং উদ্গতানি আত্মানি পুছোনিচ যক্ত সং। আ সম্যগেৰ ক্ষরন্তি অত্মণি প্রাং-সিচ যক্ত সং॥ ২৭॥

कतिएक कतिएक कतिएक धार्म कितिएन ॥ २०॥

সেই বন হইতে অধিক দূর অন্তরে গোবর্দ্ধন পর্বতের শিখরে সে সময় কতক গুলি গাভী চরিতে ছিল, তাহারা ব্রহ্ম সমীপে বিচরণশীল ঐ সকল বৎসকে দেখিতে পাইল ॥ ২৬॥

ঐ সকল বংস নয়নগোচর হইবামাত্র গাভীগণ অত্যন্ত সেহাইউ হইল এবং আত্ম বিশারণ পুরঃসর যারপরনাই বেগে ত্রিজের দিকে আসিতে লাগিল। তাহারা আপনাদের পালক তথা ছুর্গম
বন্ধ অভিক্রেম করিয়া চলিতে লাগিল, ছুই পাদ একত্রিত করিয়া ধাবমান ইওয়াতে দূর হইতে বিপাদের
ন্যায় প্রতীয়মান হইল, ভাইাদের গ্রীবা ককুদে আবৃঞ্চিত হইরাছিল এবং সকলেই মুধ ,উম্মিত
করিয়া আসিতেছিল, আর সকলেরই নুন হইতে স্ব্তিভাবে ছুর্ম পতিত হইতেছিল॥ ২৭ ॥ . •

সমেত্য গাবোহধো বৎসান্ বৎসবত্যোহপাপায়য়ন্। গিলস্ত্য ইব চাঙ্গানি লিহস্তাঃ স্থোধসং পয়ঃ ॥২৮ গোপান্তদোধনায়াসমেবিদ্লাক্ষরমা। ছ্র্যাধ্য ক্ষ্তুতোহভ্যেত্য গোবৎসৈদ্ভঃ স্তান্॥২৯ তদীকণোৎপ্রেমরসাল্তাশয়া জাতাত্রাগা গতমন্যবাহর্তকান্।

### ' वीधत्रवामी।

গোব্ৰজ ইতানেন ব্ৰভাদলোহপাওরিত্যুক্তং তল বিশেষতো ধেনুনাং চেটিতমাহ সমেত্যেতি। গোবৰ্ধনস্যাধঃ বংস্বত্যঃ পুনঃ প্রস্তা অপি ॥ ২৮ ॥

রামেণ দৃষ্টং বৰ্দেৰ গৰাং লেহাতিশয়মূজ্। গোপালানামণি দর্শবিজ্মাহ গোপা ইতি। তাসাং গৰাং রোধনে য আরাস স্তস্য মৌঘ্যেন মোবছেন লজ্জরা সহ উক্মহ্যনা হুর্গমার্গজনিতক্লেশেন চাভ্যেত্য গোবংকৈ: সহ স্থতান্ দৃদৃশু: ॥ ২৯ ॥

ততক তেষামীক্ষণেনোলাতো যং প্রেমরল তালিরাপুতা নিমগ্না আশরা যেষাং তে লজ্জা মহা ক্লৈছু তানপি তাড়রিতুমাগতাঃ

### देवकवरणायगी।

স্বীরং মাধুর্য্যাদিভিরসাধারণং স্থশোতনং বা ঔধসং উধোত্যঃ ত্রবদিত্যর্থঃ ॥ ২৮ ॥

অভ্যেত্য অভিমুখমেত্য। অবেত্য ইতি কচিৎ পাঠ:॥ ২৯॥

যদ্যপি আরাসাদয়ঃ প্রেমরসোদয়ায়রায় উজা তথা গবাং বংগৈঃ সহিতান্ ইতি বংসদকে ছিতৈরপি স্বস্থতৈঃ পরম-বংসলানাং তাসাং দৃষ্টিপথে বংসানামানয়নাদনপসারণাচ্চ তেয়ামপরায়ঃ ত্তিতঃ তথাপি তেয়াং স্তানামীক্ষণেন য়ঃ উৎকৃষ্টঃ প্রেমরসঃ তিমিয়ায়্তাশয়ঃ। উদ্গৃহ উতৈরকে গৃহীয়া। উদ্হেতি পাঠে দীর্ঘরমার্থ:। অর্থ: সএব। প্রেমরসায়রায়রাঃ স্থাতিশয়ভৃষ্ণাতিশয়ভায়ায় বিশেষণাভ্যাং তেদঃ কয়াঃ। যদিচ গবামিব তেয়ামপি দ্রতাহিপি স্বস্তদর্শনসভ্বাৎ কথঞ্চিদ্নাভাবেহিপি বংসস্লিনাং

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

মন্থা গাঁঃ প্রত্যেব জ্ঞেয়ং নতু বালান প্রতি গ্রামিব তেষাং স্বালেম্ দর্শনসম্ভবাদদর্শনেহিপি বংসচারিনাং তেষাং মাধুর্যক্তিভিচ কোপাসস্ভবাং ॥ ২৯ ॥

তদীক্ষণেতি প্রেমামুরাগরোরুলাসাতিশরভৃষ্ণাতিশরাভ্যাং বিশেবণাভ্যাং ভেদ:॥ ৩ ।॥

### वीविधनाथहक्कवडी।

গোবর্দ্ধনস্থাধঃ সমেত্য দ্ব্যাহিকাদিবৎসবত্যোহণি ঔধসং উধোড্যঃ স্বর্থের প্রবংপরঃ অপার্যন্। গিলস্ক্য ইবেতি গ্রাং লেহনাধিক্যং স্নেহাধিক্যস্তকং ॥ ২৮ ॥

তাসাং গবাং রোধনে য সারাসো নকুটোৎকোপাণিভি শুস্ত মৌধ্যেন বৈরধ্যেন হেতুনা। লক্ষাচ মহ্যুল্চ তরক্ষামহ্যু তেন ছুর্গমার্গ-জনিত ক্লেশেন চাভ্যেত্য গোবৎসৈঃ সহ॥ ২৯॥

গতমন্যৰ ইতি অরেংনভিজ্ঞা: আত্ত পর্মবংস্নগ্রাং গণ্টুপেথে কথং বংসা আনীতা ইতি তাং ভাড্রিভ্নন্সোংশি তেয়াং রাজন্! উপরি লিখিত গো সমূহ মধ্যে গাভী সকল গোবর্জন গিরির নিম্নে আসিয়া সেই সকল বংসের সহিত মিলিত ছইল, যদিও পুনঃ প্রসূতা হওয়াতে গাভীগণ বংস্বতী হইয়াছিল তথাচ স্নেহ্ ভরে স্তন্য পান করাইতে লাগিলে ॥ ২৮॥

হে মহারাজ! গোপগণ ঐ সকল গাভীর অবরোধার্থ বিস্তর আয়াস করিয়াছিল, সকল ব্যর্থ হওয়াতে লচ্ছিত ও ক্রোধান্থিত হইয়া চুর্গম মার্গ পর্যাটন জন্য ক্রেশগু স্বীকারপূর্বক পশ্চাৎ, পশ্চাৎ আসিল এবং গোবৎস সহিত স্ব স্ব পুক্রদিগকে দেখিতে পাইল ॥ ২৯॥

অহে পরীক্ষিৎ। তনয়দিগকে দেখিবা মাত্র গোপদিগের অনির্বাচনীয় প্রেমরস উদ্ধাত হইল, তাহাতে তাহাদের চিত্ত নিমগ্ন হইয়া পড়িল। লব্দা ও ক্লেশ হেতু ছাহারা প্রেদের প্রতি তাড়ন করিতে আসিয়াছিল, কিন্ত নয়নগোচর হুইবা যাত্র গতসমুগ্র হইয়া তবৈপরীত্যে বরং জাতামুরাগ

উদগ্ হ্ন দোর্ভিঃ পরিরভ্য মৃদ্ধি আণৈরবাপুঃ পরমাং মৃদং তে ॥ ৩ • ॥
ততঃ প্রবয়সো গোপান্তোকাশ্লেষহানির তাঃ। কুচ্ছাচ্ছনৈরপগতা স্তদমুক্ষ্ত্যুদশ্রবঃ॥ ৩১॥
ব্রজন্য রামঃ প্রেমর্কে বীক্ষ্যোৎকণ্ঠ্যমনুক্ষণং। মৃক্তস্তনেম্বপত্যেম্প্রেম্প্রেম্বর্গত ॥ ৩২॥

# श्रीशत्रवानी ।

সন্তঃ গতসন্যবঃ প্রত্যুত জাতোহমুরাগো বেষাং তে মৃদ্ধি আশৈরবন্তার পরমাং মুদ্মবাপু: ॥ ৩০ ॥ কৃচ্ছাত্ততোহপগত। নিবৃত্তা তেষাং স্থতানামমুশ্বত্যা উলাক্ত্তি ক্ষালি বেষাং তে ॥ ৩১ ॥ প্রেমদ্দেরৌৎকণ্ঠ্যমতিশবং মুক্তনেশপত্যের বীক্ষা হেতুমজানরচিত্তবং ॥ ৩২ ॥

### दिक्षवरकावगी।

ৰহতানাং ক্রণাতের ক্রোধোৎপত্তি ন'স্ভবতীতি শকে তত্তদা বানতিক্রামন্তী গাঁঃ প্রত্যেব তেমাং মহা ম'রবাঃ। বহুতানামতি-স্বিহিত্তরা হঠুমাধুগ্যাহভবের তচ্ছান্তিপূর্ককপ্রেমোদ্যশেচতি॥ ৩০ ॥

প্রবর্গো বৃদ্ধা ইতি তেবাং প্রারো বিবেকিম্বাদিনা তাদৃগরবিরোগেন মোহো ন সম্ভবতি তথাপীত্যর্থ:। এবং বৃদ্ধা এব গোণালা আসম্লিতি বোধয়তি তচ্চ গোপজাতে তদশ্বভাৎ শ্রীব্রজেশস্য চ বালপ্রছেন স্বপ্রতিনিধেরভাবেন স্বয়মেব গাং পালয়তঃ সঙ্গোচিত্যাৎ অসুস্থৃতি নির্বস্তরস্থরণং ॥ ৩১ ॥

প্রেমর্কে তে তোরৌৎকণ্ঠা মৃৎকণ্ঠ। ইত্যুপচারাৎ তত্তাতিশয়এব পর্য্যবদ্যতি। টীকারামৌৎকট্যমিতি কচিৎ পাঠ: ॥ ৩২ ॥

### ক্রমসন্দর্ভঃ।\*

প্রবিষ্ঠ বিবেকিনোহপি ॥ ৩১ ॥

বজন্য গোবদন্। অপত্যেষ্ বংদেন্ তত্পলকণজেন গোপানাং বালকেছপি জেয়ং। এবু মুক্তন্তৰ্তিশ্বণান্প্যোগাৎ। প্ৰেমক্তিতোৱাৎকঠাং॥ ৩২॥

# विवनगणकक वर्जी।

বালানামীকণোডুতেন প্রেমরসেন আপ্লাশয়াক্তণ্চ লাভাহরাগাঃ প্রেরামেব পঞ্মীং ককামহুরাগাভ্যাং ভ্রুতিশ্রমরীং প্রাপ্তাঃ। গ্রুমন্বো বিস্তুতকোধাঃ ॥ ৩০ ॥

প্রবির্গো র্কা:। কচ্ছু াদের শনৈরের গোচারণাসুরোধাদের অপগতা ক্তমানাপ্রোবাদির্ক্য গতাক্তক বিচ্ছেদোখরা তেষাং অন্ত-স্বত্যা উদ্যাতাশ্রনঃ॥ ৩১॥

প্রেমর্দ্ধে হেঁতোরে বিজ্ঞান মুক্তরে দিব বংসের নবপ্রস্তবংসতরী গামপি গবাং অহেত্বিং হেত্মজানন্ অচিন্তর দিতি এতাবংকালের প্রতিদিন্দের গোদোহনাদি সমরের নবপ্রস্তানশি বংসান্ বিহার প্রাচীনানের বংসান্ তনং পারর জীঃ সর্বাএব গাঃ
পশ্যতোহিপি ত্ব্য তিন্ধির দিনে বিজ্ঞা প্রাত্তরত্থ তিন্ধির পি দিনে বদন্যেবাং প্রবর্গাং বিবেকিনামপি গোপানাং তথা চিন্তনং নাভূথ
ত কারণং বোগমারৈর। প্রস্থানাহনিদ্নার হৈত্ব গোগোপী গোপানাং বলদেবসহিতানাং সর্বোদ্দর ভগবতা স্ববোগমারর।
মোহিত্বাথ প্রতিদিনং বিরোধদর্শনেহিপি বিরোধায়সন্ধানং ন ক্যাপ্যভূথ। কিন্তু সর্বাজ্ঞান্ত কারণার্থবদ্দি প্রবাংশিবেন স্বাগ্রন্থবিদ্ধান বিরোধদর্শনেই তিত্যাদেত লীলা জিক্ষাপরিবা শ্রীবলদেবে সমৃতিতাপি পূর্বাং নাভূথ। বর্ষপর্ব্যন্তং তল্ভিন্নাদি প্রিরাশবিদ্ধান বিরোধন ক্রিকট এব স্থিত বাং নাত্ত্যৰ বংসকুলাবের ক্রেক্ত প্রকাশেন ভরিকট এব স্থিত বাং

হইল অতএব সেই দকল বালককে গ্রহণপূর্বক ৰাত্ত দারা আলিঙ্গন করিয়া মন্তক আত্রাণ করত পরম প্রমোদ প্রাপ্ত হইলেন ॥ ৩০ ॥

ভদনন্তর প্রবৃদ্ধ বয়ক্ষ গোপগণ পুজানোবে নির্ত চুইরা যদিও অতিকটে ঐ আলিক্সন ুব্যাপার হইতে নিরত চুইল তথাচ সেই সকল তনয়ের স্মরণ করাতে তাঁহাদের নম্নাঞ্চ উলাত চুইতে লাগিল ॥ ৩১ ॥

কিমেতদমূতমিব বাস্কুদেবেহখিলাত্মনি। ত্ৰজ্ঞস্য সাত্মনস্তোকেষপূৰ্ব্বং প্ৰেম বৰ্দ্ধতে।। ৩৩।।
কেয়ং বা কৃত আয়াতা দৈবী বা নাৰ্যুতাহুৱী। প্ৰায়ো মায়ান্ত মে ভৰ্তুনান্যা মেহপি বিমোহিনী॥৩৪

### विश्वत्यामी।

চিন্তানেবাহ দাড়্যাং কিমেতদিতি। বাস্থদেবে যথা পুরা প্রেম তথা স্বতোকেদ্বপি ব্রহ্মস্য প্রেম বর্দ্ধতে। কিমেতদভূতং। কিঞ্চ সাক্ষনো মৎসহিত্যস্য ব্রহ্মস্য মম তেম্বপি প্রীতিকারণং কিমিতি ভাবং॥ ৩৩ ॥

কেয়ং মায়া দেবানাং বা নরাণাং বাহস্থরাণাস্থা কুজোবা কন্মাৎ প্রযুক্তা তত্তান্যমায়ান সম্ভবতি যতো মমাপি মোহো বর্ততে। অতঃ

### देवक्षवरकावनी।

অভ্তং যুক্তাতীতং অধিলাগান্তনি অতে। বাহ্ণদেবে সর্বাশ্রের কিছা তত্রাপি শ্রীবহ্নদেবা পূর্ণভগবন্তরা প্রকট ইত্যর্থ:।

এবং সর্বাথা তদ্মিরের তত্তিতিতাদৃশপ্রেমব্রের্যোগ্যতোক্তা। তথাপি তদ্মিরির ব্রহ্নস্য গোণোপাত্মকস্য তোকের স্থাপত্যের ॥ ৩০ ॥

অথাত্র কাপি ক্লাপি মাথৈর হেত্র্তবেদিতি তর্কয়তি কেয়মিতি ইয়ং তেরু প্রেমবর্দ্ধিনী মায়া ছর্ঘটনটনী শক্তিঃ। কা কিং লক্ষণা।
বা শব্দং সম্ভ্রের কৃত আয়াতা কন্মাৎ সমৃত্ব্ কেন চ রুতেত্যর্থঃ। কৃত ইত্যের বিচারয়তি। বা শব্দো বিতর্কে। তত্তপিত্রাত্মপানিতৈ দে বিঃ কৈরপি মহাপ্রভাবিঃ কৃতা কিং তেভ্যোহপি মুনীনাং প্রভাবং পর্য্যালোচ্য তথৈর পক্ষাস্তরং কয়য়তি নারীতি। অত্রাপি
বা শব্দো যোক্সঃ। নরেবং শ্রীরুক্ষবিদ্ধিপুত্রাদির্ ব্রক্ষনানাং প্রেমবর্দ্ধনপর্দাচ ন সন্তব্যতীতাশক্ষ্য পুনর্বিক্রয়তি। উত পক্ষাস্তরে। আহ্বরী স্বন্ধাপত্যেদি শ্রীরুক্ষব্রবিদ্ধিনেন ব্রহ্মস্য শ্রীরুক্ষবিষরকভাববিশেবহান্যা তন্মাহান্ম্য সর্বেষ্টানানন্তর্দ্ধাপ্য
স্বন্ধাবিদ্ধানমন্ত্রী। সাতু সাধ্নাং তেরাং ন সন্তব্তীতি তর্কান্তরেহস্তরাণান্ত পূতনা বৎসাহ্রয়াদিবৎ ছাইভাবমন্ধীতি জ্বেয়ং। তাম পু
শ্রীরুক্ষ ইব তেরু মন্ স্বেহর্দ্ধিন সন্তব্যীত্যাহণ প্রায় ইতি। তস্য স্থিবিষরকহন্ধনাসভাবনায় হেছনালোচনরা তাদৃশপ্রেরতং

### ক্রমসন্দর্ভ:।

অধিলস্যাত্মনি প্রমাত্মনি অতো বাহ্নদেবে সর্বাশ্রয়ে ইতি তত্ত্বৈব তাদৃশ প্রেমযোগ্যতোকা ॥ ৩০ ॥ কেম্মতি অন্থিতি সংভাবনা প্রায় ইতি তাদৃশ প্রেম স্তংস্বরূপৈকায়বন্ধান্তন্মান্তারা অপ্যসন্তাবনা ॥ ৩৪ ॥

#### ঐবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

অতো বর্ষাবদান এব ভগবতঃ সা তত্র যদাভূৎ তদা মায়াণি শনৈঃ শনৈ রংশেনাংশেনৈব তত্মাত্বপররাম নতু যুগপৎ সামস্ত্যেন। ভগবদেখার্যসিদ্ধৌ তমপি ভক্তাভিমানাস্পদীক্ষত্য নিমজ্জায়তুমিত্যবদীয়তে ॥ ৩২ ॥

প্রথমং মায়াংশোপরমে সতি বিরোধদর্শনোখং তস্য চিন্তনমাহ কিমেতদিতি। বাস্থদেবে ইবেতি বাস্থদেবে যথা পুরা প্রেম তথা সতোকেলপি ব্রহ্মস্য প্রেম বর্দ্ধতে কিমেতদত্তুতং কিঞ্চ সাত্মনঃ মংসহিত্য্যাপি তেরু ক্লফবৎ প্রেম কিমিত্যর্থঃ ॥ ৩৩ ॥

ভবতু সর্বজ্ঞতদৈব কারণমস্য জ্ঞান্যামীতি কণং পরামৃশ্য দিতীয়মায়াংশোপরমে সতি মারেয়মিতি নিশ্চিত্য সা কীদৃশী কৃতন্তা কিং সম্বন্ধিনীতি পুনবিতর্কয়তি কেয়ং মায়া কৃতো হেতোঃ কৃতো দেশাদা। দৈবীতি দেবা ব্রহ্মাদ্যাএব কিমৈশ্বর্য পরীক্ষণার্থং বংস-বালকা ভূষা অন্মাকং চিত্তং স্বেষ্ মেহয়ন্তি নৈতে শ্রীদামাদ্যাঃ। নারীতি নরা ঝ্ব্যাদয়এব কিং জ্ঞানপরীক্ষার্থমেতে বংসাদ্যা অভ্বন্। আহ্বরীতি অহ্বরাঃ কংসাদয় এব কিৡ বলেনাপারয়ন্তশ্ছলেনাম্মাকং হিংসার্থমেতে হভূবয়িতি বহুধা বিকয়্য ভূতীয়মায়াংশোপরমে-সতি পুনঃ সন্তাবয়তি প্রায় ইতি সে ভর্তঃ শ্রীকৃষ্ণসৈত্য মায়া ইয়ং মহাযোগমায়াধ্যা শক্তি রসাধায়ণী যস্যাঃ ধলু মায়া নিয়ন্ত দ্বাম্ম

পূর্ব্বে বাহ্নদেবে যজ্ঞপ বৃদ্ধিশীল প্রেম ছিল একণে আপনাদের বালকের প্রতি একবাসিদিগের তজ্ঞপ বৃদ্ধিশীল প্রেম দেখিতেছি, এ কি আক্র্য় ? আমার এবং ব্রক্তবাসির ঐ সকলের প্রতি এতাদৃশী প্রীতির কারণ কি ? ॥ ৩২॥

এ কোন্মারা ? দেবতাদিগের অথবা মানবদিগের ? এ মায়া কাহা কর্তৃকই বা প্রকুলা হইরাছে? ইহা অন্য মায়া সম্ভবে না, যে হেডু ইহা হইডে আমারও মোহ জন্মিয়াছে, বোর হ্য আমার আমি শ্রীকৃষ্ণেরই এই মায়া হইবে॥ ৩৪॥ ইতি সংচিন্ত্য দাশাহে । বৎসান্ সবরসানপি। সুর্বানচন্ত বৈকৃষ্ঠং চকুষা বয়ুনেন সং ॥৩৫॥ নৈতে হুরেশা শ্বরো ন বৈতে ছুমেব ভাসীশ ভিদাগ্রারেহ্শি।

### क्रिश्तवामी।

প্রায়শো মৎস্বামিনঃ শ্রীকৃষ্ণস্যৈর মারেরমন্তি তি সম্ভাবয়তি ॥ ৩৪ ॥

'এবং শ্রীকৃষ্ণরূপান্ সামান্যতো জ্ঞাছা শ্রীকৃষ্ণং পৃষ্ট্র শ্রীকৃষ্ণোপদেশেন বিশেষতঃ সর্বাং জ্ঞাতবানিত্যাহ নৈত ইতি। জ্ঞান্থাই পাল্যমানা বংসা ধারীণামংশাঃ পালাশ্চ দেবানামংশা ইতি তাবদহং বেল্লি ইদানীন্ত ন তথা কিন্তু অন্মিন্ ভিদাশ্রয়েছপি ছমেব ভাসি

### বৈষ্ণবতোষণী।

স্বরূপৈকায়বধ্যতালোচনয়া চ প্রায় ইত্যুক্তং অস্ত স্থাৎ স্থানির্দারণে সম্ভাবনা। বিমোহিনী নিরমুসন্ধানপ্রেমবর্দ্ধিনী। বিশকো দীর্ঘকালম্বান্যপেক্ষরা ইতি লক্ষণমপ্যস্যা দর্শিতঃ॥ ৩৪॥

সবয়সানিতি সমাসাস্ত আবি:। বৈকুঠং স্বার্থেহণ়্সর্বাধা কুঠরহিতমিতি তজাপত্তে লিলং। বয়ুনেনাছসন্ধানাত্মক জ্ঞানময়েন তস্য বয়ুনস্য প্রেমবিশেষময়ত্বেন সামর্থ্য বিশেষং দর্শয়তি। দাশাহ': শ্রীযত্ত্কুলোভব: প্রাতৃত্তং গত ইত্যর্থ:॥ ৩৫॥

স্থানে দেবশ্রেষ্ঠাঃ গরুড়ানয়ঃ ঝবয়ঃ খ্রীনারদাদ্যাঃ ভিদাশ্রেষ্থেশি বালবংনাদি সম্হোহয়ং যদ্যপি বিবিধভেদস্যাশ্রয় তথাপি তিমিরিতার্থঃ ঘমেব ভাসীতি মর্মনানদাদিনৈক্যায়ভবাং। অন্যক্তি:। যদা দৈবী বা নার্গ্তাম্মীতি বিবিধভেদস্যাশ্রম তথাপি বৈত্য পরিহরতি নৈত ইতি। এতে বংসাদরো ন স্বরেশাঃ নচ ঝবয়ঃ তে তত্তংক্রীড়ালোভেন তানস্তর্জাগ্য বংসাদিরপাঃ সন্তীতি নেতার্থঃ। তেরামীদৃশ-প্রেমাম্পদ্যাভাবাং। ইথং সতাং ব্রদ্মস্থায়ভ্ত্যা ইভ্যাদিরীত্যা তাদৃক্ কৃতপুণ্যপ্রস্থাভাবাচে। আম্রীত্যস্থাজরপক্ষে তত্তরেপস্থ স্বভাগর কৃতঃ। অত একোহপি দং পৃথক্ বিবিধভেদেন বর্ত্তমানং স্ক্রিদং বংসাদিরপং, কুতো হত্রিতি নিগমাদ্দ ইতি

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

সবরসানিতি সমাসাম্ভ আর্ব:। দৈবীত্যাদিবৎ স্বন্ধং সংভাব্য নিরস্যতি॥ ৩৫॥

নৈত ইতি ইখং সতামিত্যাদি রীত্যা তেবাং তাদৃশক্তপুণ্যপুঞ্জাজাবাৎ ভিদাশ্রয়োহপি যদ্যপি ভিদাশ্রয়েহয়ং বৎসাদি সমূহস্তথা

### विविश्वनाथहक्तवर्षी।

বিভদ্দ ঘনচিংস্বপ্টধিকার:। স্বাদিতি সম্ভাবনারাং লোট্। নান্যেতি কা নাম সা মারা মমাপি মোহিনী যতো মদংশস্য মহৎত্রই; পুক্ষস্যাপি মার্রা বন্ধাদিকং সর্বজ্ঞগন্মোহিতমিতি ভাব:॥ ৩৪ ॥

ভবতু সমাধার জ্ঞানদৃষ্ট্যা পুনরপ্যেতান্ নিভালরামীতি বিচারে সতি চতুর্থমারাংশস্যাপি প্রীক্রঞ্সোচ্ছরৈর উপরমে সতি তান্
যথার্থান্ ক্রঞ্বরপানেতানপশ্যদিত্যাহ সবয়সানিতি সমাসাত আর্থ:। বয়ুনেন সমাহিতজ্ঞানময়েন চকুরা বৈকুঠাং প্রীক্রঞ্মেনা
পশ্যং ॥ ৩৫ ॥

ততক ক্লুকৈয়বং বংসবালকীভাবে কিং কারণং কিলা প্রয়োজনং তে বংসবালকা বা ক স্থাপিতা ইতি বহুতরসমাধিনাপি বং স্বাং জাতুং নেষ্টে ভত্র মারা ন কারণং কিল্ক স্বয়ং ভগবতঃ ক্লুঞ্চন্য ধবৈষধ্যমসাধারণমিথং স্বর্নসমেব। সর্বাত্র স্বাধ্যালালয়ঃ। পরমেশবাঃ স্বাংশা অপি ব্যব্দিরক মরজস্বমেব বিশ্রতি নতু সর্বাজ্ঞন্বং স্বত ইত্যত্র প্রমাণং শার্কাবাসিবিপ্রবালকক্তা ভূমা মহা-প্রক্ষোহপ্যগ্রত আধ্যাস্যতে ভন্মাৎ শ্রীবলদেবঃ ক্লুঞ্চং দৃষ্টিব সর্বাং তত্ত্বমবগতবানিত্যাহ নৈতে ইতি। সুরোশা ব্রহ্মান্যাত্রৰ মার্যা

এই রূপ চিন্তা করিয়া জ্ঞানময় নেত্র প্রকাশ করাতে দেখিতে পাইলেন সকল বংস, ও সমুদায় স্থা, সমস্তই ঞ্রিক্সমন্ত্রপ ॥ ৩৫॥

হে রাজন ! বলদেব ঐ প্রকারে সামান্যত সমুদায়কে প্রকারপি জানিয়া পরে বিশেষ পরিজ্ঞানার্থ ভগবানুকে জিজ্ঞানা করিলেন ভাই ! এই সকল বৎসপাল হুদ্ধেশ অর্থাৎ দেবগণের অংশ এবং এই সকল বংস প্রবিদিপের অংশ, অগ্রেইছাই জানিভাম কিন্তু একণে ঐ প্রকার বোধ হয় না, ভেদাপ্রেয় হইলেও ইহাদের মধ্যে ভোমাকেই দীপ্তি পাইতে দেখিতেছি, অতএব এ দকল কি ?

সর্বাং পৃথক্ ত্বং নিগমাৎ কথং বদেত্যুক্ত্বেন রত্তং প্রত্নুনা বলোছবৈৎ ॥ ৩৬ ॥
তাবদেত্যাত্মভুরাত্মমানেন ক্রট্যনেহ্সা। পুরোবদাব্বং ক্রীড়ন্তং দদৃশে সকলং হরিং ॥ ৩৭ ॥
যাবস্তো গোকুলে বালাঃ সবৎসাঃ সর্ব্ব এব হি। মায়াশয়ে শয়ানা মে নাদ্যাপি পুনরুথিতাঃ ॥৩৮।।

#### द्यीधतयामी।

অতবং পৃথক্ সংবিভক্তং স্কাং কথং বৃত্তিমিতি বদেত্যকেন প্রভূগা বক্তা নিগমাৎ সংকেপত এব উক্তং বৃত্তং বলোহবৈৎ বিদিতবা নিত্যর্থ: ॥ ৩৬॥

ভতঃ কিং বৃত্তমিভ্যপেক্ষায়ামাহ তাবদিতি। বর্বে গতে আত্মনো মানেন ক্রট্যনেহসা ক্রটিমাত্রেণ কালেন সকলং সামূচরং হরিং দদর্শ॥ ৩৭॥

দৃষ্ট্রা চ ব্যক্তর্ম দিবিত্যাহ বাত্যাং থাবন্ত ইতি সে মারাশয়ে মারাতরে॥ ৩৮॥

### বৈষ্ণবতোষণী।

বেহেন বাক্ প্রমো নিরন্ত: প্রভ্না মাদৃশাং জন্যৈবেশরেণ হেতুনা বৃত্তং তদজানীৎ যতো বলঃ সর্বসামর্থ্যাধিক্যবান্ বলাধিক্যাঘলং বিহ্রিভ্যুক্তে:। এবং প্রীকৃষ্ণভাত্প্রহেশৈব তবিজ্ঞানং বোধিতং। অন্যৎ সমানং। এতাবস্কং কালং তদ্য তত্তৎকালজানং তল্লীলানির্বাহায় প্রীভগবদিচ্ছবৈব। সাচ দ্যালুদ্রলম্ভাব্স্য সদ্প্রজ্ঞ তেখাং তাদৃশাবৃদ্যাদ্যনং ন ভাং ইত্যাশক্ষ্যে ॥ ৩৬ ॥

অথ ব্ৰহ্মাণি তত্ত্বং শ্ৰীভগবৎক্ষপদৈৰ জাতবানিতি তৎ প্ৰাসক্ষ মান্নভাতে তাবদিত্যাদিনা। তাবদিতি গতেহণি বৰ্ষে ইত্যৰ্থ:। অতি শীঘ্ৰাগমনং মহাভ্যাদিতি জ্বেয়ং। যত আত্মনো হনেনেৰ ভবতীতি তথা স:। আৰুং একান্সপৰ্য্যন্তং। সকলমিতি কলা: বালা: বংসাশ্চ নতু শ্ৰীবন্দেৰ: তদিনক্ৰী ড়ানিৰ্মাহান্ন বহুসুং কথমিছা বনে তদুনম্বনাৎ॥ ৩৭॥

গোকুলে যাবস্তো বালা বৎসপালরপা আসন্ তাবস্তঃ সর্বঞৰ বৎসসহিতাঃ সস্তো নায়েত্যাদি যোজাং ॥ ৩৮ ॥

### क्रममम्बद्धः।

পীতার্থ: ॥ ৩৬॥

नकनः कमांखिर (वर्गानिष्ठिः नहिख्या ७१॥ ७৮॥

### **अ**विधनाथठळवर्डी।

বংশবাশকাকারা এতে ন সম্ভবন্তি নাপি খবরঃ চকারারাপ্যস্থরাঃ কিন্ত ভিদাশ্ররেছপি বিবিধভেদাম্পদেছপি বংশবাশাদিসমূহে ছমেবৈ-কো ভাসি একস্যাপি তব পৃথক্তঃ বংশপাশাদিরপত্তঃ সর্কাং কথং তরিগ্যাৎ সংক্ষেপার্দেভূয়কেন পৃষ্টেন প্রভুনা শ্রীক্লকেন হেতুনা বলঃ অবৈৎ ব্রহ্মমোহনাদি বৃত্তঃ জ্ঞাতবান্ ॥ ৩৬ ॥

বৃদ্ধনাহনপ্রস্থা এব গোপ্যাদীনাং মোহনাদিকং বিবৃত্য পুনর্ত্ত কাণেছিণি বিশেষতো মোহনাদিকং বিবরীতু মারভতে তাবদিতি। বর্ষে বাতেছণি আত্মনো মানেন ক্রটানেহসা ক্রটিমাত্রকালেন অতিশীজাগমনং মহাভরেনৈর। যত আত্মনো হরে: সকাশাদের ভব-তীতি সঃ আক্ষমেকাম্পর্যান্তঃ সকলং বৎসবাত্রাদিকং হরিং ক্লক্ষ্ম বন্ততম্ভ কলান্তংস্বরূপভূতা বৎসবালাদ্যান্তংসহিতঃ দদৃশে দদ্ধ। বলদেবন্ত পূর্ক্ষবর্ষস্ত্রনিরের জন্মক্ষ দিনে শান্তিকস্থানাদ্যর্থং মাত্রা রক্ষিত ইতি পূর্ক্ষেত্র ক্লেয়ং॥ ৩৭॥

দৃট্টিকেং ব্যতক্ষদিত্যাহ আভ্যাং মায়াশহে সন্মায়াতলে সন্মায়ামোহিতাতএব কুকেৰাআনীতা ৰেতি বিভাব্য মায়িকানাং লাভি-

কি প্রকারে হইল বল ? এই রূপ উক্ত হইয়া জীক্ষ নিগম অর্থাৎ সংক্ষেপে কহিলে সমুদায় বিষয় বনদেবের পরিজ্ঞাত হইল ॥ ৩৬ ॥

তে রাজন ! তদনন্তর যাহা যাহা হইরাছিল বলি শুন ! শ্রীকৃষ্ণ নারাবলে বংম ও বংসপাল স্থান করিয়া ঐ প্রকারে জীড়া করিতে লাগিলেন, এক বংসর গত হইল, কিন্তু মনুষ্যের এক বংসর ক্রেমার আত্মপরিমাণে তেটিমাতা পরিমিত কাল । ত্রেমা ঐ কালের পর ঐ হানে পুনরাম্ব আগমন করিয়া দেখিলেন ভগরান পূর্ববং অনুচরগণ সহ মিলিত ইইয়া ত্রীড়া করিভেছেন ॥ ৩৭॥

ইহা দেখিয়া ব্ৰহ্মা বিতৰ্ক করিতে লাগিলেন, এ কি ? গোকুলে যত বালক ও গোৰংস ছিল,

ইত এতেহত্ত কৃত্ততা সন্মারামোহিতেতরে। তাবস্তএব তত্তাকং জীড়স্তো বিষ্ণুনা সমং॥ ৩৯ এবমেতেরু ভেদেরু চিরং ধ্যাতা স আত্মতঃ। সত্যাঃ কে কতরে নেতি জ্ঞাতুং নেতে কথঞন। এবং সন্মোহরন্ বিষ্ণুং বিশোহং বিশ্বমোহনং। স্বয়ৈব মায়রাজোহপি স্বয়মেব বিমোহিতঃ॥৪০

### **टी**श्रवानी

মন্মারামোহিতেভা ইতরে কুত্রতাা:॥ ৩৯॥

ইতি বিভর্কররমূছদিত্যাহ এবনিতি ঘাভ্যাং 🕽 : এবনেতেরু ভেদেরু চিরং ধাছা স আত্মভূদ্ধিতি পাঠ: ॥ ৪০ ॥

#### देवकबर्जावनी।

ইতো হেতো:। यथा। এতে নারাশরে শরানা ইতো বর্তত্তে। মন্মারামোহিতেতরে চাত্র কুত্রতাা ইতি যোজ্যং। বিষ্ণুনা ইত্যক্ষং ব্যাপা তথৈব ক্রীড়নাডিপ্রারেণ ॥ ৩৯ ॥

এবমুক্তপ্রকারেণ ভেদেরু মোহিতাপ্রকানং অমোহিতাপ্রকানং তরে। বি পর্যায়ন্তেরু এতেরু মধ্যে কে সভ্যাঃ অনারোশিভপূর্ব-বংসবালভাবাঃ কভরেচ ন সভ্যাঃ কিং নাম সম্মোহিতান্ ভগবতা নীত্বা তংপরিবর্ত্তে নান্যে তাদৃশা মারয়া নির্ম্বার্ত্তাগায়ী ছাপিভাঃ। কিছা ভগবতা সহ ক্রীড়ক্ত এতে মারানির্ম্বিতাঃ। কিছা মরা প্রাক্তিয়েব তে দৃশ্যক্তে এতে বেতি চিরং ধ্যাত্বাপি নিজবিচারাদিপ্রসান্ত্রনিক্তিং নেটেই ন শক্ত ইতার্থঃ। স মারাবিদ্ধারকোহপি আয়ভুঃ স্বভঃসিক্কানোহপি ভগবত্বাক্তিব আছুং নেটেই ইতার্থঃ॥

নবোহরন্ অমাররা বংসাদ্যাজাদনাৎ সংখাহিত্মিজ্রিতার্থ:। এবং তদভিপ্রারাহ্সারেগৈব সংশব্ধ: বিভূমিতি সর্ধব্যাপক-

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

ইতো হেতো: ন কেবলমত্রৈব ' স্থানে কিং তহি ' অবং ব্যাপ্য তত্ত্ব গোকুলেহপি জীড়ভঃ ॥ ৩৯ ॥ '
বোহিতাপুসরানং অমোহিতাপুসরানং তরোবিধিব্যর এবং প্রকারেখেতে বু তেদের অনারোপিতপুর্ববংসবালভাবা: মারাহতানাং বা

#### विवयनाथहळ वर्जी।

নিকটে গড়া তৰ্জন্যা সাভিনর মাহ। ইতঃ প্রদেশাদত্ত কিঞ্চিদ্ধে এতে বংসবালা বর্তস্তএব তত্ত বিষ্ণুনা সমং ক্রীড়স্তঃ কুত্রত্যান্তে কীদৃশা সন্ধান্তমাহিতেভয় এভয় ইতরে॥ ৩৮॥ ৩৯॥

এতেবু তেনেছিতি কিমেতে ইং প্রকৃতা ক্টবাং কৃষ্ণস্থা:। কিখা এতএব কৃষ্ণস্থা ক্টবা তে প্রকৃতা: কিখা উভরে এব কৃষ্ণস্থা: প্রকৃতাৰ কৃষ্ণেনিব কাশি প্রকাশিবরে চালিতা:। কিখা কৃষ্ণেন বংসবালানাং প্রকাশদ্দীকরণাং উভরে এব প্রকৃতা: কিখা মরি-ত্র প্রধা পশাতি সতি এতএব কৃষ্ণেন তর নীয়ত্তে পুনর্ত্তাগছতি মির তে এবাজ নীয়তে। ভবতু তহি যুগপদেবোভয়ত্র দৃষ্টা-নিকিপানীতি তথা কৃষাণি তাহ্বক্ত দৃষ্টা চিরং খ্যাছেতি ভবতু খীয় সর্ক্তভাবৈহাহ্মবশ্যং জ্ঞাস্যামীতি বহুসমাধিনাণি জ্ঞাত্ং নৈবা-শৃষ্ণিভাহে সভ্যা ইতি। এতেৰু ভেদেবু মধ্যে সভ্যা ভগবংশক্ষপভূতা ন সভ্যা বহিরক্ষমারাস্থাই ইতীমং ভেদ্ভ কথ্পন জ্ঞাত্ং সংলক্ষ্ণভাবিৰহীকর্ত্ত্বি নেঠে ন শশাক।

ভঙক বন্ধ বোহসমূজাবর্জে নিগপাভেত্যাহ এবমিতি। সন্ধোহয়ন্ বংসবালভেয়েন মোহয়িত্মুণক্রমাণঃ জলো একাটি তারব-বাররা ত্বনেব বিক্রো প্রক্তরা হেতুদা বিমোহিতঃ ভগবত্মাররা বিশেবেণৈর মোহিতঃ। মোহিতুদ্যাপি একাণ এবং বিক্রলীকরণ-

বংশ সহিত সকল বালকই আমার মারাশব্যার শ্রান আছে অদ্যাপি তাহাদের পুনরুখান হয় নাই ॥ ৩৯ ॥

আমার মারার সোহিত সে সকল বালক হইতে ভিন্ন, এ সকল বংস ও শিশু কোণা হইতে হইল ? ইহারা এখানে কি রূপে আদিল ? ক্লাড: এ সকল মারাক্ত্রিত বালকই স্থংসর পর্যান্ত এ বানে বিষ্ণুর সহিত জীড়া করিতেছিল ॥ ৩৯ ॥

সে যাহা হউক, মনেক কৰ প্রাপ্ত তর্ক বিতর্ক ও চিন্তা করিয়াও এক্সা ঐ দিবিধ বালকাদির মধ্যে কোন্ গুলি সত্য, ও কোন গুলি অসত্য, কোন প্রকারে নিশ্চয় করিতে পারিলেন না, স্নতরাং মোহ

# তম্যাং ত্রেয়বিষ্টারং থালোতার্জিরিবাইনি। মৃত্তীত্রমায়ৈশ্যং নিহন্ত্যান্থনি মুঞ্জতঃ ॥ ৪১ ॥

# \* शिधतवांगी।

নতু মারাপ্রয়া তার কুতোমোহ ইত্যত আহ তম্যামিতি। মহামায়বিনি ভগবতি অন্যথারারা আবরণবিক্ষেপকখাতাবে দৃষ্টাত্তরন মাহ তম্যাং তমিপ্রারাং রাজ্ঞাং নৈহারং হিমকণপ্রতবং তম ইব। তদ্ধিতার্থোপসর্জনায়াপি তম্পো নৈহারমিতি বিশেষণং ছাল্লসং। তর্মো যথা পৃথগাবরণং ন করোতি কিন্তু তত্তিবে লীয়তে যথাচ খাল্যোতার্কি রহনি ন পৃথক্ প্রকাশং করোতি তথা মহতি পুরুবে যুক্তঃ পুংস ইতরা নীচা মায়া তত্ত্ব ন কিঞ্জিং করোতি কিন্তু আগ্রনি স্বাস্থিবে আশ্রং সামর্থ্যং নিহ্নীতি॥ ৪১॥

### देवस्वद्यावनी।

স্থান্থারেরা তস্য দৃষ্ট্যাচ্ছাদনং চ ঘটতেতি ভাব:। ততো বিমোহং মোহরিতুম্শক্যমপীত্যর্থ:। কিঞ্ বিশ্বমোহন্মপি অজঃ স্বরস্ত্রিতি পূর্ববং। এব শক্ষাভ্যাং নতু ভগবনার্যা নতু ভগবান্ বেতি বোধাতে ॥ ৪০ ॥

তচ্চোচিতং এবেভ্যাহ তম্যামিতি। যদত্র টীকায়ামাবরণবিক্ষেপক্রম: সন্মতঃ তদমুন্বত্য ব্যাখ্যায়তে। তম্যাং নৈহারং তমো যথা তমীং না বণোতি কিন্তু তচ্চ স্বরমেব তত্র লীনং সং তমীতম: সান্দ্রীকৃত্য নীহারমেবারণোতি যথা চাহন্যহং স্থিতস্য পূর্ণস্য চন্দ্রস্যাচিন্তিরশি স্ব্যাচিঃ স্বত্তরা প্রত্যায়রতি তথা খন্যোতার্চি কর্ত্ স্ব্যাচিরিশ স্বতরা প্রত্যায়রিত্থ ন শক্রোতি কিন্তু খন্যোতমেব প্রতিহত প্রভাবন্থন আপরতি তবং মহতি মায়াং প্রযুক্তানস্যেত্রস্য মায়া মহছেকি মাবরীত্থ ভাবান্তরক বিক্ষেপ্তঃ, অসমর্থা স্তী স্বাশ্রয়তয়ায়্রেনে ব্যাদিশ্য তদেব নিহন্তীত্যর্থ:। অব্যয়ম্পি বচ্ছকোছন্তি। যথা। যথা তথৈবৈবং সাম্য ইত্যমর: ॥ ৪১ ॥

#### क्रमममर्खः ।

কথং মৃত্তুনার ভগবন্মারা করিওত্বমিতি ভাবরিতা ইতি ভাবং ॥ ৪০ ॥ ইতর্স্য কুল্রস্য মারা অপ্রভাবদর্শনা তাং যুঞ্জতঃ পুংসঃ আত্মনি ঐশ্যং হস্তি ॥ ৪২ ॥

### वीविश्वनाथहक्तवर्खी।

রূপে বিমোহনে ভগরতি মান্ত্রপুর্যাগরণে থেব কারণমিতার্থ:। নতু স্বর্মার্টের একা বিমোহিত ইতি ব্যাপ্তেরং। মান্ত্রীয় স্থাপ্রব্যামোহক্ষাস্ভবাৎ উত্তরলোকে দৃষ্টাভবিরোধাচন । ৪০ ॥

মহামারাবিনি ভগবভানামারা আবরপবিক্ষেপে। কর্ত্ মশক্ত বভী আগ্রমের তিরন্ধরোভীতি দৃষ্টান্তাভানামান তম্যাং তামস্যাং রাজ্যে নৈহারং তমোবং নীহারস্বন্ধিতম ইব ইবার্থেছত বছলে:। ইব বধা চ সাদৃশ্যে ইত্যতিধানাং। নৈহারং তমো তমা যথা তমীমানরীত্বমসমর্থং তমীতমং সাজীকতা তেন অমেবার্ণোতি নীহারক তিরন্ধরোতি তথৈব অন্ধমারা ভগবন্ধং মোহন্তিক্মসমর্থা ভগবন্ধানের
বিপ্লীকতা অমাব্তবতী অন্ধাণনের তিরশ্চকারেতি। দৃষ্টান্তেই নির্দেশন অন্ধমারা অপি হেতৃত্বস্তীত্যপরিত্রান্ দৃষ্টান্তাভ্রমার
ধন্যোত্তি । রাজো কথা প্রদ্যোত্তে তথা দিবলেইপি মংপ্রভা প্রদ্যোত্তামিতি ধন্যোতেন প্রকৃত্তি দিবলেইউন্লিভ্রন্ব
ম শক্ষোতি প্রত্যুত তমেব প্রষ্টতেজ্বরং স্কান্ জাপুর্তি তথৈরানাবৈশ্বর্যবানপি ক্রন্ধা ভগবত্যপি মারন্ধা নিক্রের্যাং প্রস্কার্যনি
ভ্রতজ্য এবাত্দিত্যতো মহতি পুরুষ্ধ ইত্র্যায়া ক্র্মী আক্রনি আন্ধান স্বান্ধত প্রম্পানস্য প্রংসঃ প্রশানিষ্ঠাং নিহত্তি ॥ ৪১ ॥

শূন্য অপ্নচ বিশ্বমোহন ভগবান্ বিফুকে মায়া দারা মুশ্ধ করিতে গিয়া আপনিই বিমোহিত বৃত্তী

হে রাজন ৷ তদিলা রজনীতে হিমক্রপ্রভার অজ্ঞার মৃত্যু পৃথক আরমণকারী হয় না রাজির অস্কারেই লীন হয় এবং রাজিকালে ধলোতের জ্যোতিঃ মৃত্যু দিবলে পৃথক প্রকাশ হয় না, স্থাকিরণেই লীন হইয়া যায়, তজ্প যে পুক্র মহৎ পুরুষে আসমায় যোগকরেন তাহার প্রতি ঐ প্রযুক্ত ইতর মায়া কিছু করিতে পারে না, সাপুনারই সামর্থ্য বিনট করে । ৪১ ।

তাক সংক্র কংসপালার পশুভোষ্কর তংকণাই। কিনুস্ত কাজামার পতিটকাশেরবাসস: ॥
চতুর্জাঃ শহ্চজ্রণদারাজীবপাণ্ড: । কিরীটিনঃ কুওলিনো হারিপোর্বনমালিনঃ ॥ ৪২ ॥
প্রাবহসাঙ্গদ দোরত্ব কম্ক্রণ পাণ্য: । নৃপুরেঃ কটকৈ ভাতাঃ কটিসূত্রাঙ্গরীয়কৈঃ ॥ ৪০ ॥
আভিনুমন্তকমাপূর্ণা স্তলসীনবদামভিঃ। কোমলৈঃ সর্বগাত্রের ভূরিপুণাবদর্পি তৈঃ ॥ ৪৪ ॥

### औषत्रयामी।

জন্যদপ্যাশ্চার্য্য মাই তাবদিতি। বংসপাত্মা বংসাং পালাশ্চ সর্বের্যাইবিষাণাদয়শ্চ ॥ ৪২ ॥ শ্রীবংস প্রভাযুক্তানি জঙ্গদানি দোঃবু যেষাং রক্ষময়ানি কছুবং ত্রিধারাণি কন্ধণানি পাণিরু যেষাং তেচ তেচ ॥ ৪৩ ॥ তথা ভূবি বহু জন্মার্জিতং পুণাং তদ্যুকৈ র্জনৈর্পিটিত:॥ ৪৪ ॥

### ৰৈষ্ণৰতোষণী।

এবং নোহেন দীনতাং গতে বন্ধণি শ্রীভগবানপাচিরাৎ এই । মঞ্মহিষমনাদি বিদিতি তদভিপ্রায়্লারেইণব ক্লপাং ব্যতনোদিত্যাহ তাবনিত্যাদি নবকেন। অকান্ত পূথক্ প্রিক্তে। পশাস্তমন্তমনাদৃত্য তদ্ষ্টিশক্তিমনপেক্য অদৃশ্যক্ত স্থানেব তদ্টো
ব্যক্তীভূতাঃ স্থাকিমাত্রেণাভিব্যক্তেঃ কর্মকর্ত্বং। চতুর্ লা ইত্যতা চতুর্ জ্বাদিনা বিষ্ণুষ্মৰগম্যতে মায়াদ্যধিষ্ঠাভূষেনত্ প্রথববিতীয়পুক্ষব্যমবগংস্যতে। তত্মাৎ ক্লামি তরিযুক্তোহং হরোহরতি তবশং। বিষং পুক্ষরপেণ পরিপাতি ত্রিশক্তিব্যলক্ত্যা প্রার্লাং প্রতি চ তত্তং কার্যায় সর্কাজিব্যলক্ত্যা প্রারো বিষ্ণোবেবাবির্ভাব প্রবণাত্রয়াণামভেদ জ্বাপনার্থমেব ব্যামিপ্রস্থেনাবিভাবোহ্যং জ্বেয়ঃ॥ ৪২॥

শ্রীবংদো নাম দক্ষিণন্তনোর্দ্ধে স্ক্রেরায়াণ দক্ষিণাবর্ত্তঃ শ্রীভগবডোহসাধারণ লক্ষণং। বছা শ্রীবৃক্তং বংসং বক্ষঃ তংঃ প্রভাবৃক্তমি-ত্যাদি। বছা শ্রীবৃক্তং বংসং বক্ষো বেষামিত্যাদি বোজ্যং। উরো বংসঞ্চ বক্ষণ্ড ইত্যমরঃ। কটকৈঃ পাদবদরৈঃ পারিশেব্যাং। অন্যত্তিঃ। তত্র ক্ষোমুখাগ্রভাগে ত্রিধারত্বান্তথোক্তং। বছা ক্ষবো বল্যাঃ ক্ষণানি মণিবন্ধবন্ধনানি হত্তস্ক্রেরি । ক্রিলেহ্ন স্যাছ-লয়ে শত্রে ইত্যমরস্য নানার্থাং। কৃষণং ক্রভূষণমিতি নুবর্গাং। তত্র তত্র ক্ষীরস্বামিনা তথা তথা ব্যাধ্যানাচ্চ ॥ ৪৭ ।

ভূরিপুণ্যৰত্তিঃ সাধকৈ স্তন্ত্তৎ প্রতিমাদিব মনসা কর্মণা চাপিতৈঃ ইতি প্রীত্যা তেবাং ধারণং বহুকরণঞ্চ স্থচিতং ॥ ৪৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

कंटेरेकः भागवनरेग्नः॥ ४०॥ ४४॥

# वीविचनाथठकवर्षी।

তাবদিতি যাবদেবং ব্রহ্মা মীমাংসমানো ব্যামুছতি স্বেত্যর্থঃ।, বৎসা পালাক পণ্যতোহজন্য পণ্যস্তমপ্যজননাদৃত্যেতি। ভোঃ সত্যলোকবাসিন অজ সত্যং ত্মজ এবাসি জন্দাৈর বৃদ্ধা বিষং হজনি জন্মানাররা মোহরিত্মিচ্ছসি কথঞিৎ আত্মপি তাবরলাকোসি।, পদ্যেতি ব্যদ্শ্যস্ত বরং বৃদ্ধাবনীরা ভূগং চরজো বংসা অপি বৎসাংশ্চাররস্তো গোপবালা অপি এবং ভবানেতি জ্ঞাপরস্ত ইব তদ্ টি-গোচরাঃ স্বর্থেবন্ত্রন্ স্প্রকাশভাদিতি ভাবঃ ॥ ৪২ ॥

শ্রী রেখা তদ্যুক্তানি বংগানি বক্ষাংগি বেবাং তে চ। অঞ্চনযুক্তা দোষো বাহবো বেবাং তেচ রক্ষং কৌতত্ত্বদুক্তা: ক্ষরি অভিনরে আজি কার্যক্তা কিবলং তেচ। ক্ষরি আজি কার্যক্তা পানবার বেবাং তেচ তে। কটকৈং পাদবসরৈ ॥ ৪০॥ ,

ভূরিপুণ্যানি প্রবশ্কীর্নাদিভব্দনানি তরতা ভক্তসহব্রেণার্পি জৈ: ॥ ৪৪ ॥

নে যাহা হউক; ঐ সময় অন্য এক আক্ষর্য ব্যাপার হইল, সমুদায় বৎস ও বৎসপাল তথা সমস্ত যাই শৃক্ষ প্রভৃতি সদাধি, দশনকাপ্তি একার সমক্ষে তৎকণাৎ ঘনতাম, পীতকোশেয়বসনধারী, চতুভূ জ, শখ্য চক্র গদা পদা হস্ত, কিরীট কুওল হার এবং বনমালায় অলম্ভত দৃষ্ট হইতে লাগিল ॥ ৪২ ॥

আর স্কলেরই বাসুতে শীরংবের প্রভায়ক ক্ষুক্র, সকলেরই হতে রন্ধ্যয় ও ক্ষুব্ৎ তিধারাবিত করণ, সকলেই নৃপ্র, কটক, কটিসূত্র, তথা অনুরীয়ক বারা উল্যোতিত ॥ ৪০ ॥

অবং তন্থার সকলেরই চরণ ও মন্তক পরিপূর্ণ দৃষ্ট হইল ॥ ৪৪ ॥

চল্রিকাবিশাদম্মেরে: সারুণাপারবীক্ষিতে:। বকার্থানিব রক্ত: সন্থাত্যাং অক্ট্রপালকা:॥ ৪৫॥ আত্মাদিত্তত্বপর্যাত্তির্ ঠিমন্তিশ্চরাচরে:। মৃত্যগীতাদি মৈকাহৈ: পৃথক পৃথক্তপাসিতা:॥ ৪৬॥ অণিমাদ্যৈম হিমভিরজাদ্যাভির্বিস্তিভি:। চতুর্বিংশতিভিত্তত্ত্ব: পরীতা মহদাদিভি:॥ ৪৭॥

#### वीधवयामी ।

চক্রিকাবিশদিমিত্যুকৈঃ সহারণশুণেন চ বর্তমানা যে অপালা তৈর্বীক্ষিতেঃ অকার্থানাং অভক্রমনোরণানাং রক্সংস্থান্তাঃ এই -পালকা ইব ব্যল্শান্ত সম্ববিশদিমিতেন পালকা ইব রক্ষোবদরণশুণেন চ স্কুটার ইব তাদৃক্ কটাকৈলে গতিমানা ইত্যর্থ: ॥ ৪৫ ॥ আন্ধা এন্ধা তদাদিন্তমপর্যাকেঃ। নৈকাহৈ রণেকাইণে: ॥ ৪৬ ॥

অজাদ্যাভি ম রিবাবিদ্যাদিভিঃ বিভৃতিভিঃ শক্তিভিঃ। মহদাদিভিরিতি মহৎস্ত্রেরাঃ পৃথক্তবিবক্ষরা চতুর্বিংশতিত্বং। তবৈ রূপংকা-রুপ্রৈঃ॥ ৪৭॥

### देवक्वरजावनी।

কেবৈরবঃ বিভবাহল্যেন বর্গনেব চল্লিকানিভবিশদীভূতৈক তৈরিতার্থঃ। টীকারান্ত বিভ এব বিশদভাবিশেষণং তাৎপর্য্যন্ত্রণাং দত্তমিত জ্ঞেরং। বরা চল্লিকাবিশুরুং বধাস্যান্তথা ক্ষেত্রৈঃ শ্বরমানৈঃ মৃহপাচক ইতি বং ক্রিরাবিশেষণেন সমাসঃ। শ্বকার্থানাং শ্রুই পালক। ইতি তাদৃক্কটাকৈরের তদৈকসাধ্যবতাং শ্বকশ্বোক্তানাং একান্তিভক্তানাং তাদৃশাভীইনিছেঃ। তত্রাক্রণকটাকৈঃ প্রতার ইতি তত্রস্থাক্রপত্তপাস প্রকৃতিভ্রাদক্ষাত্তিনের তিহিষয়কবিচিক্রকামানাং উৎপাদনাং। শ্বিতব্রুকটাকৈঃ পালকা ইতি নিব্বাহানীর বিচারের ক্ষীরমাধানামিনি তেবাং তেনের ব্রক্ষণাং পোষণাক্ত। ইবেত্যুৎপ্রেক্ষারাং। অন্ধ্রবিশদ্ধনন্থানীর ভিয়াং রক্তাস্বাভ্যামিব্রেড ॥ ৪৫ ॥

চরাচরৈ ব্যবন্ধকান্ত্র: তত্ত্বধর্ষিক্তি:। নৃত্যাপীতাদরে। বে নৈকার্য: অনেকার্থণাপকরণানি তৈ:। পৃথক্ পৃথগিতি ব্যাধিকারাহসারেশ উপাসনা সামগ্রীভেদাং। ইঞ্চ বালকাদীনাং ভেষাঃ প্রভ্যেক্ষেক্ত ব্রহ্মাণ্ডেশর্থমূক্তং। তথাচাগ্রে ব্রহ্মাণ্ডেশর অপন্তান্ত্রিভি ॥ ৪৬ ॥

महिमक्टिवचर्याक्टेशः॥ ४०॥

#### क्रमनमर्जः।

অরণবিশদহানীরাভ্যাং রম্বঃসন্ধাভ্যামেবেভূয়ৎপ্রেক্ষা॥ ৪৫ ॥ চরাচরৈ ব্রুদ্ধিদ্বাভূদৈবকৈঃ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥

#### अविषनाथहक्तवर्का।

চক্রিকাবং বিশদং বথাস্যান্তথা শ্বেররত্ত ইতি চক্রিকাবিশদংশ্বরীণি মৃত্পাচক ইতিবং সমাস: অরুণাপাক্রেন সহ বর্তমানানি বংনি সন্মুখবীক্ষিতানি তৈঃ প্রকার্থানাং অন্তব্দানীর প্রভক্ষননোর্থানাং রক্তঃ সন্থাতাং স্লষ্ট্পালকা ইব ব্যদৃশ্যক রক্তমেবারুণ গুণেন প্রস্তারইব সম্বেদ্ধেব বিশদ্বিভেন পালকা ইব ॥ ৪৫ ॥

बादाव बना। निक्टिं बतकार देश: ॥ ८७ ॥

মহিমভিবৈশবৈত্যঃ। অবল মারা জনাদ্যাভিঃ শক্তিভিঃ। চতুবিংশভিভিরিতি মহতত্ত্বস্ত্তত্ত্বরোঃ পার্থক্যবিবক্ষরা। তথৈ গ্রহ-কারবৈঃ॥ ৪৭॥

অপিচ সকলেই চল্লিকার ন্যায় বিশদ হাস্থ তথা অরুণবর্ণ**রুক্ত অপাল-দর্শন্**যারা রক্তঃ ও সন্ধ্রতণ আপন আপন ভক্তদিগের মনোর্থ সকলের অফা পালকবৎ প্রকাশ পাইতেছিল। অর্থাৎ সন্ধ্রতণসূপ বিশ্ব স্মিত দারা পালকের ন্যায় এবং রজো গুণবৎ অরুণ গুণ দারা অফার ন্যায় ত্রিয়া তাদৃশ ক্টাক্রে উদ্যোতিত হইতেছিল। ৪৫॥

আর মুর্ভিমান প্রকাশি তথ পর্যান্ত সমুদায় চর্নী ও অচর মৃত্য গীতাদি বছবিধ অর্চণ থার। তাহা-দিগের পূথকু পূথকু উপাসনা করিতেছিল ॥ ৪৬॥

जारते नकरें नहें जागियानि धेचर्या, जाविनानि शक्ति धवः सद्द्रणति उपूर्विः शक्ति उपद्धिः धवः जार्थ टवाक रहेन ॥ ४९ ॥ কাল সভাৰ সংস্কার কাম কর্ম গুণাদিভিঃ। সমহিধ্বস্তমহিভি মুর্তিমন্তিরুপাসিতাঃ॥ ৪৮॥ সত্যজ্ঞানানস্তানন্দমাত্রৈকরসমূর্ত্তরঃ। অস্পৃত্তভূরিমাহাস্ত্র্যা অপিত্পনিষদ্শাং॥ ৪৯॥

# • दीश्त्रवामी।

কালাদিভিশ্চ তংসহকারিভি: তত্র স্বভাব: পরিণানহেতু: সংস্থার উবোধক: স্বনহিধ্বত্তমহিভি র্ভগবন্ধহিল্লা তিরস্কৃতস্বাতদ্রৈ-ক্রফ: সর্ক্রেনিমান্যে:॥ ৪৮ ॥

সর্বেষাং মৃর্ত্তিমবেহপি বিশেষমাই সত্যক্ষানেতি। সত্যাশ্চ জ্ঞানরূপাশ্চ অনস্তাশ্চ আনন্দরূপাশ্চ তত্তাপি তদেক্ষাত্রা বিজাতীয়-সম্ভেদরহিতাঃ তত্ত্রাপিচ একরসাঃ সদৈকরূপা মূর্ত্তরো যেষাং তে। যথা। সত্যক্ষানাদিমাত্রৈকরসং বধুক্ষ তদেব মূর্ত্তি হেঁথামিতি

### देवश्वरकाष्ट्री।

গুণা: সন্থাদয়:। আদিশক্ষেন ক্ষাতিনামাদয়:॥ ৪৮॥

এবং মূর্ত্তবেংপি বিবিধবেংশি পরত্রকৈকরূপত্বন বৈশিষ্টমেক্সমপ্যাহ সত্যেতি। তত্র সত্যা এক রসাক্ষ কাল্যাপি কারণজেনাখ্রবেদে চ অক-প্রবাং। তত্তকং। কাল বভাব ইত্যাদি। সর্বে হনিমিষা জ্ঞিবে বিহাত: পূরুষাদ্ধীতি শ্রুতে:। বিশেবেণ বিবিধং বা দ্যোততে দীপ্তিং করোত্রীতি বিহাৎ নিমেষাক্সরিমেষোন্মেযপ্রভাবাঃ কালাবরবা ইত্যর্থ:। বোহরং কাল অস্য তে হব্যক্তব্বে চেষ্টান্মাই রিত্যাহ্যক্তবাং। জ্ঞানরপাঃ ব্যঞ্জাশ্বেনাজড়রাং। তত্তকং পশ্যতোহন্দ্র্যা তৎক্ষণাং ব্যল্শান্তেতি ন চক্ষ্বা পশ্যতি রপ্রসা ব্যম্বেব বৃণ্তে তেন লভা অন্যৈব আহ্বা বিবৃণ্তে তহং যাং। আদিত্যবর্ণং তমসঃ পরভাৎ ইত্যাদি শ্রুতে:। নিত্যাব্যক্তোহিপি ভগবানীক্ষতে নিজশক্তিত:। ইতি নোরারণাধ্যান্যাচ্চ।

অনস্থাঃ পরিচ্ছিরপ্রারবেহপ্যচিত্ত্যপক্তা বিভূষাং। যদ্ভেত্মের প্রাদেশমাত্রমভিবিমানমায়ানং বৈশানরমুপান্ত ইতি প্রতেঃ। নচান্ত ন বহি র্বস্য ইত্যুক্তরান্ত। আনন্দমাত্রাঃ নিরূপাধিপরমপ্রেয়ান্সদস্বর্ধাংশত্বাং তছকং কিমেতদভূত্মির বাহ্নদেবেহবিলাত্মনি ইত্যাদি আনন্দং ব্রহ্মণোরপমিতিশ্রতেঃ। বিদিতোহদি ভবান সাক্ষাদিত্যাত্বকান্ত বছত্বং চৈকস্যাবিভাবান্তেদবিবক্ষা।
আনন্দমাত্রমজরং পুরাণমেকং সন্তং বছধা দৃশ্যমানমিতি প্রতেঃ। যুগ্পদনন্তগুণরপদৈস্ব সত অস্যেচ্ছান্ত্রসারেণ বিশেষদর্শনাং।
অত্যে বালবংসাদিরপক্ষ তত্র নাগস্করুং। তহকং। মণি র্যথা বিভাগেন ইত্যাদি। অত্যবৈক্ষবিবক্ষা টাকায়ামাহ বহুতি। বক্ষাতেচ
শ্রীমতাক্রেণ বহুমুর্ত্ত্যেকমূর্ত্তিকমিতি। এবং প্রতিপ্রমাণকত্বাং। অস্য চ স্ত্ত্যেত্যাদি বাক্যস্য পঞ্চমবেদভাং। সর্ক্রেদান্ত্রসারং
হীতি। সর্ক্রেদেতিহাসানাং সারং সারং সমৃত্ত্রমিতি ন্যাবেন তৎসাররপদান্ত। তৈরপুগ্রনিকভ্বেন বেদান্তো ন ব্যাধ্যাতঃ।
বক্ষাতেচ অত্যিরসনমূত্রক্ষকমিতাবিতি। সদে র্যত্যর্থিক জ্ঞানার্থকত্বং। তচ্চেশ্বক্রানাদ্বর মাজ্মানমের। ঘতো বাচো নিবর্ত্তন্তে ইত্যাদি রীত্যা বা তথোকং আনস্ত্যানাদিরং। ভূরি মাহান্ত্রা শক্ষেন নির্বিশেবপ্রতিপাদনং চ নিরন্তঃ। মাত্রপদেনত জ্যোতি-

#### - क्यममर्जः ।

নত্যেতি। কিঞ্চ। সত্যাঃ দর্ককারণছেন। জানকংগাঃ শুপ্রকাশত্বেম। জনস্বা বিভূছেন। জানন্দা মিরুপাধিগরমান্দানছেন। এক-

# विविधनाथककं वर्षी।

কালাদিভিক তংশহকারিভি:। শাত্র স্বভাব: পরিণামহেতু:। সংবার উদোধক:। সমহিধ্যক্তমহিতি র্ভগবন্ধহিরা তিরস্কৃত-স্বাডরে:॥ ৪৮ ॥

নচৈতৎ সর্বাং তগ্বতা মারবা দর্শিতমিতি মন্বব্যমিত্যাহ সত্যেতি। সভ্যাশ্চ জ্ঞানরপশ্চ অনবাশ্চ আনন্দর্গাশ্চ তত্রাণি তদেকমাত্রাবিজ্ঞাতীর সভেদরহিতাঃ তত্রাপ্যেকরসাঃ কালপরিচ্ছেদাভাবাৎ সদৈকরণা মূর্ত্তরো বপৃংবি বেবাং ৫ত। যথা। সভ্যং বিজ্ঞানমানন্দং ক্রম্প্রতিষ্ঠিত বিজ্ঞানমন্তং ক্রমেতি আনন্দং বন্ধণো রূপমিত্যাদি ক্রম্যুক্তং সভ্যাদিরপং বন্ধ ভাষে মূর্ত্তরো বেবাং তে। নহু দৃশ্যম বহুম বিবিধয়াদিকং বন্ধণো নৈব ক্রবতে বেদান্তদর্শিন অত্তাহ অম্প্রেতি। উপনিবদঃ পশান্তি ভক্তাভাবারত্ব ক্রম্থি

পশিচ কাল সভাব সংস্কার কাম কর্ম ও গুণাদি যে সমন্ত পদার্থ, সে সকলের সহচর ভগবদাহিমা-খারা যাহাদের সভজ্ঞতা ভিরক্ষত হয়, সে সকলও মূর্জিনান্ হইয়া ঐ সমন্ত ব্যক্তির উপাসনা করিতে লাগিল ॥ ৪৮ ॥

ट्र महाताख । मठा क्यांन ध्रवः चनक-चानमभाष्टिकक्रेश क्यांक ठारां है जारांतितात मृद्धि

এবং সক্দদর্শাজঃ পরং ব্রহ্মাত্মনোহথিলান্। যস্ত ভাসা সর্বসিদং বিভাতি সচরাচরং ॥ ৫০॥ ততোহতিকুত্কোদ্তান্তিনিভৈকাদশেক্সিয়া। তদ্ধানাভূদকন্ত ফীং পূর্দেব্যন্তীব পুজিকা॥ ৫১॥

### धीरवचामी।

অতএব উপনিৰং **আত্মজানং দৈব দৃক্ চকুর্যেবাং তে**ৰামপি হি নিশিতং অস্টভূরিমাহাত্মাঃ ন স্ট স্পর্নযোগ্যং ভূরি মাহাত্ম্যং যেবাং তে তথাভূতাঃ সর্বে বাদৃশ্যন্ত ইতি ॥ ৪৯ ॥

এবং সক্ত্ সহ একদৈব দদর্শ পরব্রহ্মণো বিশেষণং যস্যেতি ॥ ৫০ ॥

অতিকুতুকেন আশতর্ণে উক্তা দৃষ্টা: পরাবর্তা হংসপৃঠে নিপত্যেতি বা। কুতুকশব্দে তৃতীয়ায়াশ্ছান্দসো পুক্। যথা। উক্তা ইতিচ্ছেদঃ অতিকুতুকেনোক্তা: বিলোডা: বিপর্যাত্তঃ সন্নিতি যাবং। অতিকুতুকোৰ্ত ইতি পাঠান্তরেতু অতিকুতুকেন উৰ্তঃ কুভিতঃ। তেবাং ধায়া তেজনা তক্সক্ষেদ্রিয়ো একা তৃথীং নিশ্লোহভূং। তত্র দৃষ্টাতঃ পুদেবী একাধিঠাতী কাচিদ্দেবতা অভা

### বৈষ্ণবভোষণী।

রাদি ধর্মাণাং শুক্লাদিগুণানামিব তদ্ধমাণাং তংশকপান্তঃপাতিছং বিবিক্ষিতং প্রাক্তবাগদ্ধকত্বক্ষ নিষিদ্ধং। বংগা। ন তস্য কার্য্যং কর-ণঞ্চ বিদ্যুতে ন তংসমশ্চান্তাধিকশ্চ দৃশ্যুতে। পরাস্য শক্তি বি বিধৈব ক্ষমতে স্বান্তাবিকী জ্ঞান বল ক্রিয়াচ ইতি প্রত্তে:। অতএব প্রকৃতিক্ষোন্তাং পূর্বাং স ঐক্ষত স স্বাসীং ইত্যাদি॥ ৪৯॥

শক্তব্যুগপদিতার্থ: পরং একা সত্যং জ্ঞানাদিরপং তর্হি কণং দৃষ্টিবিষরত্বং তত্তাহ বস্যেতি। অতঃ ব্রঃ প্রকাশাত্বাৎ সর্বপ্রকাশত্বাচ্চ তিনিজ্ঞিরাণি অশক্তা প্রকাশ্য ব্রমণি প্রকাশতে ইতি ভাবঃ। অতএব ব্যদৃশ্যক্ত ইতি কর্তারং বিনৈবোক্তমিতি দিক্। কিন্তনেন প্রকাবেন প্রকাবিষয়ে বিশ্বেন বালকানাং মহিনৈব দর্শাতে আ। মম লীলেরং এতাদৃশ্যেব সিধ্যতি। অন্যথা মায়িক স্টেরেবাকরিষ্যত ইতি জ্ঞাপনার ইতি গামতে॥ ৫০॥

অথ তস্য মোহমাহ তত ইতি। তদ্ধামা তেবাং প্রভাবেণ অস্তি তেবামন্তিকে তিমিতৈকাদশেন্ত্রিয়ো নিশ্চেটঃ সন্ ভৃঞ্চীমভূৎ কিঞি-ৰক্তৃমণি ন শক্ত্বানিত্যর্থ:। তত্র কিরীটাদিশোভস্য স্তর্কায় চ তস্য উপমা পূর্দেবী নানা পরিছেদেঃ পুরক্তনারাধ্যা প্রতিমেবেতি।

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

রদা: কালকারণত্বেন। অতএবৈকত্বং পৃথক্প্রকাশত্বেন চ পৃথক্ত্রশণীতি জ্ঞেরং॥ ৪৯॥

এবং চেৎ কথং দদর্শ ভত্তাহ যস্যেতি। তৃস্য সর্বপ্রকাশকভাৎ অপ্রকাশকভাচ্চেত্যর্থ:॥ ৫০॥

তেষাং ধারা প্রভাবেন অভি তেবামের স্মীপে কাচিৎ পুদ্রী পুরজনারাধ্যমানা যথা সশোভা নিশেচ্টা চ সৈব ইতি অনেন

#### श्चीवित्रनाथहळावळी।

জানপ্তীত্যুপনিষদ্শো দার্শনিকা স্তেবাং তৈর্ন স্পাষ্টমপি কৃরিমাহাত্মাং ঘেষাং তে। ভক্ত্যাহমেকরাপ্রাস্থ ইতি ভক্ত্যা মামভিজানাতি বাবান্ যশ্চান্ধি তত্মত ইতি। ন চক্ষা পশ্যতি রূপমস্য যমেবৈষ বৃগুতে তেন শভ্যস্তীস্য আত্মা বিবৃগুতে তত্মং আমিতি। আদিত্যবর্গং তমসং পরস্তাদিতি আনন্দমাত্রমজরং পুরাণমেকং সন্তং বহুধা দৃশ্যমানমিতি বহুমূর্ত্ত্যেকমূর্ত্তিকমিতি। সর্ব্ধে নিজ্যাঃ শাখভাশ্চ দেহা স্বস্যুপরাত্মন: । হালোপাদানরহিতা নৈব প্রকৃতিজাঃ কচিং। পরমানন্দ সন্দোহা জ্ঞানমাত্রাশ্চ সর্ব্বত্তু ইত্যাদি শ্রুতি অসিদ্ধং বৃদ্ধবোহপ্যপ্রাত্তরূপ গুণাদিমবং তিন্তু ক্রিমান্ত ক্রিমানজ্বতি জ্বেরং ॥ ৪৯ ॥

বস্য পরত্রস্থা: ॥ e • ॥

অভিকোত্তেন উক্ত্যানি বিলোডানি স্থিমিতানি আনশন্তকানি একাদশেলিয়াণি বস্যুসং। উৰ্ভ ইতি পাঠে অতি কুডুকেন কুডিডঃ তেবাং ধানা তেজসা তৃষ্ণীং কিমপি ৰজুং চেটিতৃঞাশকোহত্ব। অত দৃষ্টাৰঃ পুদেবী বহুলোকৈঃ প্ৰামানা

হইরাছিল অভএব ভাহাদের মাহাত্র্য জ্ঞানচকু আত্মজ জনগণেরও স্পর্শ যোগ্য হয় নাই॥ ৪৯॥

হে রাজন্য এই অকারে একা ঐ সমস্ত আত্মাকে সেই পরএক রূপ দর্শন করিলেন, বাঁহার দীঞি বারা সমুদার চরাচর জগৎ প্রকাশমান হইতিছে॥ ৫০॥

তুদনন্তর আশ্চর্যাইছু দৃষ্টি পরাবর্ত্তন করিয়া অথবা নিজবাহন হংসপৃষ্ঠে নিপত্তিত হইয়া নিশ্চল

ইতীরেশেহতর্ক্যে নিজমহিমনি স্বপ্রমিতিকে প্রঝান্ধাতোহতিমিরসনমুখ্রস্থাক্মিতো।
অনীশেহপি দ্রুত্ব্যুং কিমিদ্মিতি বা মুছতি স্তি চ্ছাদালো জ্ঞাত্বা সপদি প্রমোহজাক্সবনিকাং॥৫২

### श्वित्रवामी।

অন্তি সমীপে পুত্ৰিকা চতুৰ্মুধী কনকপ্ৰতিমেব॥ ৫১॥

এবং মোহমগ্রমজমূজ্জহারেত্যাহ ইতীতি। ইরেশে ইরা সরস্বতী তত্তা ঈশে ব্রহ্মণি কিমিদমিতি মুহুঁতি সতি পশ্চাদ্ ই মৃণ্যনীশে সতি প্রমোহজঃ প্রীক্ষঃ সপদি অজাজবনিকাং মায়ারপাং তিরস্বরিণীং যয় অভ্তং দর্শিতং তাং চছাদ বিভাবাভাব আর্বঃ। তিরোধত্ত অপসারিত্বানিতার্থঃ। অথবা অর্থং লোকপালাভিমানী মমৈম্বর্যং ক্রষ্ট্রং অযোগ্য ইতি ভভোপরি মায়াংপ্রসারিত্বানিতি ক মুহুতি সতি অতর্ক্য তর্কাগোচরে নিজোহসাধরণো মহিমা যস্য ত্মিরিতি মোহে হেতুঞ্জঃ দর্শনাযোগ্যমার ত্রীণি বিশেষণানি স্প্রমিতিকে স্বপ্রকাশক্ষ তৎ কং সুধং চ ভামিন্ অভ্যাব অজাতঃ প্রকৃতেঃ পরত্র পরাম্বন্ অভ্যাব অভ্যাব আরুকিঃ শ্রুতি-

#### देवस्थवट्यायनी ।

অন্যত্তি:। তত্ত্ৰ দৃষ্টাঃ পরাবর্ত্ত্য তদ্ধীনাং চতুর্দিকু স্থিতস্বান্তাভিঃ পর্যায়েণ দৃষ্টে তার্থা। তারিছিতি হংসপৃষ্ঠে ইত্যর্থা। ধর্মরত্বান্তিসর্গ-লোপঃ॥ ৫১॥

ইতি পূর্ববিদ্যাবিদ্যাবৃত্তিক থাং অবিদ্যারপেণ তিরম্ববিদীং বৃদ্ধান প্রতিঃ। আন প্রথমপক্ষে নামরা অবিদ্যাবিদ্যাবৃত্তিক থাং অবিদ্যারপেণ তিরম্ববিদীং বৃদ্ধান প্রতিঃ প্রতি শ্রীকৃষ্ণরপাস ব্যবধায়িকাং। তথা যায় বিদ্যারপরাহতর্ক্য ইত্যাদি পঞ্চবিশেষণক থাদন্যাদৃশ্যং তদভূতং দর্শিতং তদ্ধপেণ প্রকাশিকামপি তাং অপসারিতবান্ ইছি তমেতং পক্ষং অবৈষ্ণবৃত্ত্বকৃষ্ণশঙ্ক্য পক্ষান্তর মাহ অথবেতি। অন তস্য স্বপ্রকাশিষাং স্বপ্রকাশতাশক্তিরেব দর্শনে হেতুং মায়াম্বনিদ্যাবৃত্ত্যাবরণধন্মিব বিদ্যাবৃত্ত্যাচ ন তক্ত তস্যা অপি প্রকাশক্ষ্য তস্য প্রকাশন সমর্থা ইত্যুক্তং। তদেবাহ পর্ঝাক্ষাত ইতি। অতন্তাদৃশ বৈভবং প্রতি ব্রহ্মদৃষ্টিতো মায়াপসারণেন তদ্দর্শিতং। তত্ত্ব প্রসারণেন থাছাদিত্যিতি প্রসারিত্যাণি প্রসারিতবানীতি ছদেরস্বভূষ্ভগ্রহাণ। মায়ায়াশতাণ্যস্তকর্ম্বাং ইতিশক্ষঃ অথবেতি পক্ষসমাপ্ত্যর্থঃ। উত্তরগ্রহ্য উভয়্রাম্বিত্যাৎ। ক মৃছতি ইতি কুর তস্য মোহঃ

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

প্রকারেণ তাং তত্পরি চছাদ চ্ছাদয়ামাসেত্যস্তর্তণ্যর্থছাৎ।। ৫১॥

কুত্র মোহস্ততাহ নিজমহিমনি বাদৃশ্যন্ত ঘনশ্যামা ইত্যাদি অবৈভবে তৰিশেষণানি অপ্রমিতিক ইত্যাদীনি। মা শন্দীন্তরা শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

গ্রামদেবতা তদ্যা অস্তি নিকটে পুত্রিকা বালকেন খেল্যমানা অপুঞ্জিতা কুদ্রা মৃথয়ী পঞ্চালিকেব॥ ৫১॥

তাবনাত্রএব মঞ্মহিমনি নিমক্ষন্ত্র্বাসমর্থং ব্রহ্মাণমাণোক্য ততঃ পরঃসহত্রের্ দর্শন্তিব্রেছ্সাধারণের্ নিজমহামঞ্মহিমন্থ ত্যনাধিকারিণমভিম্ব্য মঞ্মহিমদর্শনাং সমাপরামাসেতাাই ইতীতি। ইরেশে ব্রহ্মণি ইরাসরস্থাতি ত্যা ঈশে মহাব্দিমতাপীতার্থঃ।
কিমিদমিতি মুহুতি সতি পশ্চাদ্র ই্মপ্যনীশে সতি পরমোহলঃ শ্রীক্ষঃ জালা স্থৈরস্মান্ত্রতবে তদ্বোগ্যতাং বীক্ষ্য সপদি সক্ষালবিনিকাং যোগমারাক্রপাং তির্ক্রিলীং চছাদ যয়া প্রিনে ভ্রামান্ শ্রীদামাদিবালকান্ তৃণং চরতো বংসান্ বংসাবেরকং স্কাজাদ্য
স্বর্পভ্তান্ বংস্বালকাদীন্ প্রভাবের চতুর্ভাদিছেন দর্শরামাস তামস্বর্বাপরদিত্যর্থঃ। বা বাতবং ব্রার্ণোতি স্বাভবব্রেব্ দর্শরতি সা মার্ক বাজু বাত্তবেক নামপি মধ্যে কিমপ্যার্ণোতি কিমপি দর্শন্তি সা বােধুমানেতি মারা বােগমার্রো র্জেনালাশবেনাত বহির্দা নারা ন বাাবােরা। ক মুহুতি নিজমহিন্দি দর্শিতচতুর্ভ্রাদিরপ্রমহৈশ্বেঃ। কীদৃশে স্বতর্ক্যানি বৃত্ত প্রত্তিনা বিভ্রাছে । তে ব্রক্রাধিষ্ঠাত্রী দেবীর
স্মীপে বালকের জীভ্নক স্বরূপ একটি চতুমুর্থী কনকপ্রতিমা রহিয়াছে ॥ ৫১ ॥

হে রাজন্! যে একা তর্কের অগোচর, "তাহা নয়, তাহা নয়," এই রূপ সর্ব্ধ নিরসন্ধারা সর্ব্ধ প্রকাশক জ্ঞান স্বরূপ, প্রকৃতির পর এবং ক্রেরিছিত, বাঁহার মহিনা অসাধারণ, সেই প্রকাণ ঐ প্রকারে, ইহা কি, বলিয়া আশ্চর্ষ্য প্রকাশ করত মুগ্ধ ও দর্শদাক্ষম হইলে, পরম তেজঃ স্বরূপ ভগবান্ বিষ্ণু জানিতে পারিয়া তৎক্ষার সামারপ ক্রনিকা অপস্তত করিলেন ॥ ৫২ ॥ ততোহৰ্বাক্ প্ৰতিল্বাক্ষঃ কঃ পরেতবছ্থিতঃ। কৃচ্ছাছুন্মীল্য বৈ দৃষ্ঠীরাচফেনং সহাত্মনা॥৫৩॥ সপদ্যোতিতঃ পশ্যন্দিশোহপশ্যৎ পুরস্থিতং। রুশাবনং জনাজীব্য ক্রমাকীর্ণং সমাপ্রিয়ং ॥৫৪॥ যত্র নৈসর্গত্র্বিরাঃ সহাসন্মুগাদয়ঃ। মিত্রাণীবাজিতাবাসক্রতকুট্ তর্বাদিকে॥ ৫৫॥

# बीधत्रवामी।

শিরোভি মি তি জানং যদ্মিনু তদ্মিন স্কপে॥ ৫২॥

অর্থাক্ বহিঃ প্রতিলক্ষানি অক্ষীণি যেন সং। পরেতবৎ মৃতো যথা কথঞ্জিৎ প্নক্ষতিষ্ঠিতি তথা দৃষ্টী নে আণি ॥ ৫৩ ॥ জনানামালীবৈয় জে মৈরাকীণং সমাপ্রিয়ং সম্ভতানি আসমস্তাৎ প্রিয়াণি যদ্মিন্ ভং ॥ ৫৪ ॥

তদাহ বত্রেতি। নিদর্গছবৈর্ধরাঃ স্বাভাবিকাপ্রতিকার্য্যবৈর্বস্তোহপি নরাঃ সিংহাদয়ত মিত্রাণি ইব বত্র সহৈশাসন্ অজিতস্যা-

### বৈষ্ণবজোৰণী।

ইত্যর্থ:। অরপে ঘনশ্যামাদিরপে নিজমহিমনি ইতি বছবীহি:। বছা। নিজমহিমনীত্যেব বিশেষ্যং কর্মধারয়াং। তাদৃশ চতু-ভূজিবৃদ্ধে তহৈভব ইত্যর্থ:। অন্যৎ সমানং॥ ৫২॥

উথিত ইতি মোহেন হংসপৃঠে পতনং বোধয়তি। ইদং মমতাম্পদং বিশ্বং আত্মনা দেহেনাহস্তাম্পদেন সহিতং তদ্যাপি বিশ্বতত্বাং॥ ৫৩॥

তত্ত পরমক্রপরা শ্রীকৃষ্ণ স্তব্যে স্বাস্তব্যক্তবিভবং প্রকাশিতবান্ ইত্যাহ সপদীতি ত্রিভিঃ। যথা পূর্বং বৃন্ধাবনাধিষ্ঠানক শ্রিকৃষ্ণাথাং পরমন্বরূপং ধরা মারাজ্বনিকরা আছোদ্য স্বশক্তিবিশেবেণ স্বরূপবৈভবান্তরং দর্শিতবান্ তাং অপসারিতবানিতি প্রাচীনতৃতীয়-মোকার্থী। তত্তত স্বতেকোভিঃ সর্বাছ্যাদকেন অপ্রাক্তেন পরমন্বরূপেণৈর প্রকাশত ইত্যাহ তত ইতি চতুর্জিঃ। অর্বাচি সংপ্রত্যাবতীর্ণে শ্রীকৃষ্ণাথ্য পরমন্বরূপে পূনর্ল রূদ্ষিঃ সন্ ইদং শ্রীকৃন্ধাবনমাত্মনা সহ ব্যচষ্ট। তদেব বিবৃণ্গোতি সপদ্ধীতি । অভিতো দিশঃ পশ্যন্ স্পদ্যের বৃন্ধাবনমপূশ্যং। স্বন্ধা। নারা লক্ষ্যাঃ শ্রীরাধার্মপারাঃ প্রেয়ং। রাধা বৃন্ধাবনে বনে ইতি মাৎস্যপান্ধাদিত্যঃ। ব্র্যা। মরা তবৈর লক্ষ্যা সহ বর্ত্তিত ইতি সমঃ শ্রীকৃষ্ণ স্তব্য আ সম্যক্ প্রিয়ং। বৃন্ধাবনং গোবর্দ্ধনমিত্যাত্যক্তং। বহা। মারা স্তব্যাএব প্রিয়ঃ শ্রীকৃষ্ণস্তের সহ বর্ত্তমান্থিতি এবং চেৎ সমানাং আত্মারামাণানপি আ প্রিয়নিতি কিয়ং॥ ৫৪॥

তলক্ষণমাহ যতেতি। তৈ ব্যঞ্জিতমেব। যথা। নিস্পৃত্তৈরিরা অহিনকুলাদয়ঃ সহৈবাসন্ ততঃ স্তরাং নুমুগাদয়শ্চ মিত্রাণীবাসন্

### क्रममन्दरः।

শ্রীরাধাদেব্যা সহিতঃ সমঃ শ্রীকৃষ্ণ: তস্য আ সম্যক্ প্রিরং। রাধা বৃন্ধাবনে বন ইতি ॥ ৫২।৫৩॥ বৃন্ধাবনং গোবর্জনমিতি প্রসিদ্ধে: ॥ ৫৪॥ অঞ্জিতাবাসরূপঞ্চ তৎ ফুতরুট্ত্র্বাদিকঞ্চ তৎ তত্ত্বিন্॥ ৫৫॥

### জীবিখনাথচক্রবর্তী।

মিতি শ্বপ্রকাশক তৎ কং অধ্রপক তালিন্। অতএব অকাতঃ প্রক্তেঃ পরত পরিলিন্। অভন্নিরসনমূখেন বন্ধকৈঃ অভ্নং অনশুঅহুশ্মিত্যাদিকৈঃ শ্রুতিশিরোভি ব্লিজভিবাক্তিক মিতি জানিং যত তালিন্ অরুপ্নি ৫২ এ

অৰ্থাক্ বহিং প্ৰক্ৰিকানি অকাণি বেন সং। পরেডবৎ মূজো যদি কথকিং পুনক্তিঠিতি তথেতার্থং। ইদং ক্বগৎ মম্তাম্পদং আত্মনা অংস্কাম্পদেন বহ অপশ্যৎ। ত্বোরপি বিশ্বতপূর্ক্ষাৎ॥ ৫৩॥

ততক প্রমত্বপরা ক্ষক্তত্বৈ শ্বমাধুর্ব্যবৈত্রং প্রকাশিকবানিজ্যাহ সপদ্যেবেভি। সম্যাগাসমন্ত্রাং পরক্ষরং প্রিরাণ্যের যত ছেং ॥ ৫৪॥
তদেবাহ, নৈস্বাং নিস্বােশং নির্থে। ছুইর্জারং থেবাং তেছপি মন্ত্র্বাামাদরো মিতাাণীর সুহৈবাসন্। অফিভস্যাবাসেন ক্রভাঃ

মহারাজ! মায়া অপসতে হইবামাত্র ব্রহ্মা বহির্ভাগে লব্ধদৃষ্টি হইলেন এবং মৃত ব্যক্তি ফ্রেপ কথঞ্চিৎ উথিত হয় তাহার ন্যায় উথিত হইলেন। ডদনস্তর অতিকফ্টে নয়ন উশ্বীলন করিয়া আপ-নার সহিত এই জগৎ দেখিতে পাইলেন॥ ৫৩॥

সকল দিক নিরীক্ষণ করিতে ২ হঠাৎ, সমুখবিত ছম্পাবন তাঁহার দৃষ্টি গোচর হইল। ঐ অরণ্য লোকদিপের জীবিকোপযোগি বছবিধ তক্মগতায় দাকীর্ণ মতএব তাহার চারিদিকেই নিরন্তর প্রিয় বস্তু মকল, বর্জ্যান ছিল। ৫৪॥

্ৰপুণন, যে সকল মনুষ্য সিংহাদি জীব ৰ্জাৰ্ডঃ পরস্পন ক্ষপ্তিনিবার্ম্য বৈর ধারণ করে ভাহারও

# তত্রোবহৎ পশুপবংশশিশুখনাট্যং ব্রহ্মাবরং পরমন্তমগাধবোধং।

### अधितवामी।

বাদেন ক্রতাঃ পলায়িত। কট ভ্রাদয়ঃ ক্লোধলোভাদরো যন্মাৎ তথাভূতং বুলাবনমপণাৎ । ৫৫ ॥

তত্র পরমেষ্ঠী ব্রহ্মা পূরা পূর্ববদেব ব্রহ্ম অচষ্ট অপশাৎ। কথং ভূতং পশুপবংশশিশুদ্ধনাট্যমূদ্ধহৎ নাট্যমিতীক হেডু: অধ্য-

### देवकवरजीवनी।

ইত্যর্থ:। তত্র হেড্: অবিভেদ্য যোগাদিন। মহাপ্রেরাদেন হৃদ্যপি বশীকর্ত্মশক্যদ্য প্রীভগবড: আবাদ: সদাবস্থিতি: তেন তক্রপেণ নিজমহিল্লা ক্রতং কট্ তর্যাদিকং যন্ত্রাৎ তৎ ॥ ৫৫ ॥

তত্ত তত্ত স্বৰ্ধ দলং দাক্ষাৎ চকারেত্যাহ তত্তেতি। ব্ৰহ্মেতি প্রাণিঞ্চিকানাং তেবাৎ তেনৈবাবির্ভাবাদি দর্শনেন তদাদ্যুদ্যোৱেকক্ষমণাদ্যেন চ তত্ত্বক্ষণাক্রান্ত্রবাহ। নহু সম্প্রতি দৃশুনান প্রপঞ্চয়াত্রং কাবণমন্ত তত্তাহ অবসং একনেবাহিতীয়ং ব্রহ্ম ইতি শ্রুতেঃ
সজাতীয়ভেদরহিতং ততাে দৃষ্টং পরিত্যক্তা কিমর্থ মদৃষ্টং কর্মেত তত্তেদমণ্যেকং তত্ত্ব তত্ত্ব স্থাক্তাক্ষাত্রসহায়ং পূর্ব্যক্তা বহুদৃর্ত্তিব্রেহ্ণি সত্যজ্ঞানদিক্ষমণৈক্মৃত্তিক্মিতার্থ:। অনেন বিজ্ঞাতীয়সংভেদশ্চ নিষিদ্ধ:। কেষাঞ্চিৎ স্বগতভেদ নিষেশ্য শক্তিশক্তিমতোরভেদ বিব্দয়া। এবং সর্ব্যারণবেন সর্ব্যব্যমনত্ত্বং তথা সর্বজ্ঞাহ সত্তা সংকর্ম সর্বাত্রক্য স্বর্মণ তচ্ছক্তিশাদিভিরগাঁধ
বোধস্বঞ্চ প্রসিদ্ধ:। মহাপ্রদাদিকারণনরাহ্ণতিবেন সর্ব্যহ্ণমন্ত্রহাণ ব্রহ্মস্থাং ব্রহ্মস্থা নরাহাতি পরং ব্রহ্ম অপশ্রমিত্যক্তং। ব্রহ্মত চ
তদ্তেস্যেত্যাদি তদেব মন্ত্রত পারমৈখর্যক্ত লোকবন্ত্রশীলাকৈবল্যং ইতি স্থান্ধেন সর্বানীলানিয়ান্ত্রতাদ্যারলীলন্ত্রমেন নাট্যং বৈচিত্রীভিক্রবং পরম চমংক্রের্কারকং উৎ সর্ব্বোংক্রইত্যা বহৎ যত্ত্বন বিত্রদিতি তত্ত্রচ তাদৃশব্রক্ষ্যাদিধর্যাগামপূণ্পসক্ষ্যতা ক্ষমনীং ব্রহ্মানিচঞালপর্য্যক্তবন্ধনাহরাং নিজ্বনপ্রেম্বণ্ডাম্বীং কামপি লীলামন্ত্রত্বানিত্যাহ বৎসানিতি। সর্ব্যং বিধিক্রতং ক্রম্ম: সহসাব-

# क्रममनर्छः।

তত্ত্বেতি এক অনৈ্ত হণ্তেহংস্ত্যাদি ন্যায়েন নরাক্তিতহৈব পরবন্ধ তদপশাৎ। অতএবাৰ্মমিত্যাদি এবমপি লোকবন্ধু নীলা-কৈবল্যমিতি ন্যায়েন সর্বলীলাবিধানস্যাপি তম্য তাদৃশাবিজাবাভীইলীলা মহন্তভুতবানিত্যাহ তত্ত্বেতি। প্রিগোপরান্ধক্লতিলক

### **बीविधनार्थहळ्वर्खी।**

পলায়িতা কট্ ত্বাদয়: কোধলোভাদৰো যত্মাৎ তত্মিন্॥ ৫৫ ॥

তত্ত স্বস্থানপত্তানি চতুত্ জ্বাদীনি যোগমার্থবাছ্যা একমেবাছয় ব্রেছেতি প্রত্যুক্তং দর্শিত সর্ক্রন্থস্ন্ত্তং স্বরণং তং দর্শরামানেত্যাহ। তত্র বুলাবনে পরমেটা ব্রহ্মা ব্রহ্ম অচই অপশ্যং। কীদৃশং পশুপবংশলিওছেপি প্রৌচপরমচতুরোচিতং নাট্যং মংপ্রান্থ মরা মোহিত প্রেতি ব্রহ্মাণং মিধ্যাতিমানং গ্রাছ্যিত্বং শাছলে বংসানদৃষ্ট্যপি পুলিনেহপি স্থীনদৃষ্টাপাদর্শনাতিনরং নটানাং কর্ম উত্তর্হ। দর্শিতানাং ব্রহ্মাদি স্থলবাহাই বিদ্যান্ত্রালাং বোগমাররাছ্যালনাদ্বরং সর্ক্র্যুল্ভ স্বরূপথাং পরং দর্শিতেভাতিইছ-ভবেভা হুপাপ্রেষাং চিদানলমর পরংসহত্রমহাবৈভবানাং বিদ্যান্ত্র্যান্ত্রং পরভে ইত্তরতো বিচির্দিতি বংস্বালাহেবণং প্র্বেব্রহ্মা মায়ামোহিত্ত্বাং খ্রাপ্রেষাং। উক্তলক্ষারাট্যাৎ বংসান্ স্থীংশ্চ পুরের পরিত ইত্তরতো বিচির্দিতি বংস্বালাহেবণং প্র্বেব্রহ্মা মায়ামোহিত্ত্বাং খ্রাপ্রিমান্ত্রাত্র । অধুনাতু মায়ানিম্ক্র্যাং শাছলে তৃণং চরতো বুৎসান্ পুলিনে চ ভ্রানান্ বালান্ পশাতা স্থাপন্ত্রায়িক বংস্বালকাংশ্চ অপশ্যতা তেন মন্মোহনার্থমিভন্মমানুমিমিত্যবর্গতং। অভ্যুত্র নামীডাতে ইত্যগ্রিম-ছতিবাক্যেন বংস্বালান্ বিচিরতে ইতি বিশেষণং নোপন্যতঃ। স্বর্গভূতানাং বাহ্যদেব্যস্থীনাং বভেদানাং যোগমার্থমেবাজাক্ষাণ্ড ভ্রুমনোহর্মহামধুর্লীলাময়ন্থাং স্থাণিকবলং। অত্ন ক্রিংশিকারিণি নিক্সটে ধর্মধর্মিভাবর্হিতং নির্যালাং

তথায় পরস্পার মিত্রবৎ বাদ করিতে ছিল, আর দে স্থানে ভগবান অচ্যুতের নিবাদ এই হেছু তথা হইতে ক্রোধ লোভাদি যেন পলায়ন পরায়ণ হইয়া অদৃশ্য হইয়াছিল। ৫৫॥

সে যাহা হউক, সেই বিপিনে একা পূর্বের ন্যায় পরএককে গোপবালকের ন্যায় নাট্য ধারণ করিতে দেখিলেন। ফলতঃ অভয়ু অনন্ত এক এবং অগাধবোধ স্বরূপ হইয়াও ভগবান্ সে সময় ভক্ষ বংসান্ সথীনির পুরা পরিতো বিচিষ্ণদেকং সপাণিকবলং পরমেষ্ঠ্যচক্ট ॥ ৫৬ ॥ দৃষ্ট্বা হরেণ নিজধোরণতোহবতীর্ঘ্য পৃথ্যাং বপুঃ কনকদশুমিবাভিপাত্য।

স্পৃষ্ট্বা চতুর্মুক্টকোটিভিরজ্যু যুগাং নম্বা মুদক্রমম্বজলৈরক্বতাভিষেকং ॥ ৫৭ ॥

### विधत्रवामी ।

মিত্যাদি: অবরঞ্ বংসান্ বিচিৰং একঞ্সধীন্ অগাধবোধঞ্ রিচিম্বং অনস্তঞ্পরিতো বিচিম্বং পরঞ্প শিশুত্বমূর্ছং ব্রহ্ষচ স্পাণি-ক্বলমিতি নাট্যমেবোর্ছদিত্যর্থ: ॥ ৫৬ ॥

নিজধোরণতঃ স্ববাহনাৎ স্বরেণ বেগেন অবভীর্য্য দওবল্লখা চতুর্ণাং মুক্টানাং অত্যৈরজিবু যুগলং স্পৃষ্ট্। মুদঞ্জন্ত রানন্দাঞ্জ-রূপেঃ স্বজ্ঞতিব্যক্ষকরোদিতি ॥ ৫৭ ॥

# বৈঞ্চৰতোষণী।

জগামহেতি তেষাং জ্ঞাতত্বাং পূরেব বিচিয়দিতার্থ:। অন্যত্তংব্যাধ্যাবং। এবং বংসরং যাবন্তেনৈব রূপেণ বংসবালকতয়া তৎপরোক-মবস্থিতি স্তস্ত গম্যতে। এজে গমনঞ্জ স্বস্থার প্রকাশবৈতেন জনকশ্রতদেবগৃহগমনবং। তৎপ্রকাশে কালগমনঞ্জ স্থীনামিব ভ্রমাপি সংক্ষেপেণৈব জাতং কবলাদীনাং তথৈব স্থিতেরিতি জ্ঞেয়ং॥ ৫৬॥ •

কথং নত্বা ইত্যেতদাহ পৃথ্যামিতি। পাদৰবেন তেন দেবাভিমানাপগমমিপ বোধয়তি অন্যথা নহি দেবা ভূবং স্পৃনন্তীতি ন সিধ্যেৎ কিয়বেদং তদ্ধু বিভাগামিহ অন্ম ইত্যাদি বক্ষামাণাং কনকেতি তদপুৰ ঈষদ্ৰক্ষণীতবৰ্ণৰাং। চতুৰ্মুকুটাগ্ৰেঃ স্পৃষ্ঠা ইতি চতুৰ্দিকু স্থিতানাং চতুৰ্ণামিপি ক্বতাৰ্থতায়ৈ ক্ৰমেণ পৰিবৃত্তা। ভূমো ললাটপাতনাং পশ্চাদানন্দোদেয়েন চুম্বনিবাজ্পিশানং মুখৈরিপ ক্বতবানিতি জ্বোং। অক্বতাভিষ্কেমিত্যুপপতৈতা। অনেনাশ্রণাং অত্যন্তবাহ্ন্তাং বোধ্যতে ॥ ৫৭ ॥

### क्रमनमर्जः ।

লীলন্তমেব নাট্যং তদ্বচ্চমংকারকারকং তত্ত্বস্কৃতিয়া বহৎ যদেন বিভ্রৎ ত্ত্রাপ্যুপসজ্জনীকৃতং পরব্রহ্মন্তাবাং নিজজনপ্রেমবশতামনীং কাঞ্চিৎ তদম্ভরীণাং লীলামস্থূত্বানিত্যাহ বংসানিতি। অন্যৎ চীকাদৃষ্টং ॥ ৫৬ । ৫৭ ॥

#### ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তা।

জ্ঞানমাত্রং যন্ত্র প্রতি প্রদিদ্ধং তদপি বোগমায় বৈ তদ্ টীঃ প্রতি চিদানন্দময়ানামপি রূপগুণনামলীলাপরিকরধামাদীনামাচ্ছাদনাজ্জানমাত্রদৈর প্রকাশনাং সঙ্গতনিত্যেবমেব মিথোবিজ্ঞার্থা অপি প্রতিয়ো নিবিরোধমের সঙ্গমিরতবা ইতি দিক্ তত্র পশুপবংশ-শিশুরং নাট্যমেবোদ্বর্গ অরপমিতি ব্যাখ্যানং প্রীভাগবতদ্য মোহিনী বপ্রতিপাদকমেব। নৌমীড্য তে হতু বপুরে ইত্যুত্তরত্র নৌমীভ্যুক্ত্বণ প্রস্তৃত্য ভগবতঃ কর্মকে জ্ঞাতে প্রয়োজনাপেকায়ামেবস্থতো, ভগবানেব প্রয়োজনমিতি ব্যাচকাশানাং আমিচরণানামপি নাভিমত মিত্যবদীয়তে। নহবাত্তবীভ্তং বর স্বতিপ্রয়োজনীক্রিয়তে ইত্যবধেদং ॥ ৫৬॥

দৃষ্ট্ তি। ইদমের নরাক্সতি পরং ব্রহ্ম সর্কাম্লভ্তমিত্যবগমা। ঘরেণ ছরয়া নিজধোরণতঃ স্থবাহনাৎ পৃথ্যাং বপুরভিপাত্যেতি নহি বেবা. ভ্বং স্পৃ শন্তীতি নিয়মোল্লভ্রনালু ক্লণোহদ্য দেবে আভিমানাপগমো ভ্রেয়ঃ। চতুর্ণাং মুক্টানামগ্রের জিলু যুগাং স্পৃষ্টে তি চতুর্কিক স্থিনাং চতুর্ণামপি মুখানাং বলেন ক্ষকাভিমুখীকরণাং অভিবেকমর্থাদি তি যুগ্মস্যাকরো দিকু খায়োখার ভূমে ক্রভপতনে ক্রাণাং বাহল্যেন পুরোবেগাচ্চরণয়ে নি পাতো জেয়ঃ। ক্রাণাং ভক্তা ছভাবরপত্বেন পাবিজ্ঞাৎ স্থানগাং ॥ ৫৭ ॥

দ্রব্যের প্রাদ হত্তে করিয়া ইতন্ততঃ বংদ ও বয়স্যগণের অন্বেষণ করিতেছিলেন, রাজন্! যিনি অদিতীয় তাঁহার বংদ অন্বেষণ, যিনি একমাত্র তাঁহার দখা, অগাধবোধরূপির জ্ঞানার্থ অন্বেষণ, অনস্কের ইতন্ততঃ অনুসন্ধান, পরপুরুষের শিশুছ এবং পরপ্রক্ষের হত্তে ভোজনীয় কবল, এ সকল নাট্য ব্যক্তীত কিরূপে সম্ভবিতে পারে॥ ৫৬॥

সে যাহা হউক, অন্ধা পরত্রন্ধ বিষ্ণুকে ঐ রূপ অবলোকন করিবামাত্র বেগে আপন বাহন হইতে অবতীর্গ হইলেন "এরং স্বীয় কলেবরকে কনকদণ্ডবঁৎ ভূতলে পাতিত করিলেন।" তদনন্তর মন্তক চতুইয়ন্থ চারিটা মুক্টের অগ্রহাগ দিয়া চরণহয় স্পর্শ করত প্রণাম করিয়া আনন্দাঞ্চর শোভন দিলেল অভিষেক করিতে লাগিলেন॥ ৫৭।

উত্থায়োখায় কৃষ্ণস্থ চিরস্থ পাদয়ো: পতন্। আতে মহিছং প্রাাদৃষ্টং স্মৃছা স্মৃছা পুন: পুন:॥৫৮ শনৈরথোখায় বিমৃদ্ধ্য লোচনে মুকুক্ষমুখীক্য বিনয়ক্ষর:।

কৃতাঞ্চলিঃ প্রশ্রমবান্ সমাহিতঃ সবেপথু র্গদাদয়ৈলতেলয়া ॥ ৫৯ ॥

॥ #॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষকে ব্রহ্মমো-হাপনোদনং নাম ত্রেয়াদশোহধ্যায়ঃ ॥ #॥ ১৩॥ #॥

### धीशवयामी।

চিরস্য চিরং পাদয়োঃ পতন্ আন্তে॥ ৫৮ ॥

সবেপধু: দৃকলা:। অতএব গালাদমরাহত্তকরণমেতৎ ইলরা বাচা ঐলত অত্তেৎ ॥ ৫৯॥

॥ \* ॥ टेंकि मन्द्रम व्यव्यापनः ॥ \*॥

#### देवक्षवरज्ञायनी।

উত্থারোপার পতন্ পুন: পুনশ্চিরমান্তে আসীং লকার ব্যত্যর শ্হান্দস:। সাক্ষাং পশ্রত ইবোক্তেরোপচারিকো বা। তত্ত্ব পতনে হেতু ম হিত্মিতি। উত্থানে হেতুত্ব তচ্ছীমুথ দিদুকৈব জ্ঞের:॥ ৫৮॥

শনৈরিতি ভক্ত দ্রেকেণ প্রণামপরিত্যাগাশক্ষে:। কিশ্বা প্রৈমভরাক্রাপ্তা স্বভাবত এব জাড্যাপত্তে: লোচনে বিমৃজ্যেতি গলদক্রধাররা সম্যাপর্শনাশক্ষে:। অন্তলোচনদ্বেংপি লোচনদ্বাক্তি: শ্রীভগবদভিমুথবর্ত্তাপেক্ষরা। মুকুক্সমিতি মুক্তিদাত্তার্থন্থেপি মুক্তিদাস্বাধি স্বিদ্যাল উচিচ্ বিলোক্য পকাবিশিবলৈ নিম্বাধি ক্রমণাং বিশ্বর বিশ্বর প্রাধিত কর্মাধিত ক্রমণাং বিশ্বর প্রিটিভ্রেমণাতিতি গমাতে। সমাহিত ইতানেন স্বেপথুর্গাপাদ্যেতি প্রেমসম্পন্ধলক্ষণেন চ স্তোক্রত পরম সম্যাক্ত স্বৈচিতং। এলত এটা। লকাবোচ্চারণং গলগদভাবাক্তরণেন্ত এটা। লকাবোচ্চারণং গলগদভাবাক্তরণেন্ত্র এ

অন্যোক্তং পূর্বপূর্বং চোত্তরোত্তরমপি ক্টং। সর্বনেতক্ষহাশ্চর্যাং বিলোলয়তি মন্ত্রনঃ॥ •॥

॥ \*.॥ देखि औदेवकवरछावनगाः "मनमिष्टिश्रयाः वरतामनः ॥ \*॥

## ক্রমসন্ধর্ভ:।

পুন: পুনশ্চির্মাত্তে ঐলৎ ঐট্ট॥ ৫৮। ৫৯॥

॥ • ॥ देखि क्षीनंतम क्रमनन्तर्छ करवाननः ॥ • ॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

পত্তরাত্তে ইতি বছতরপ্রণামাত্তে আনন্দজাড্যোদয়াৎ বর্ত্তমান প্ররোগো মুনে ত্তদানীং তৎসাক্ষাৎকারাম্ভবাৎ ॥ ৫৮ ॥
লোচনে ইতি বিষং পাণিব্রেন লোচনব্রন্যেব যুগপক্মার্জ্জনোপপত্তে:। গদসদয়া গদসদভাববত্যা ইলয়া বাচা ঐলত ঐট্ট
অস্তৌৎ ॥ ৫৯ ॥

॥ + ॥ · हेजि नात्रार्थमर्निन्गाः हर्षिणाः जक्काद्रजनाः । खात्रामर्रमास्य मनस्य नक्षकः नक्षकः नजाः ॥ + ॥

আর ইতিপূর্ব্বে ভগবানের যে মহিমা অবলোকন করিলেন তাহা পুনঃ ২ স্মরণ করিয়া বারম্বার উত্থান পূর্ববিক অনেক ক্ষণ পর্যান্ত তদীয় পাদপদ্মে পতিত হইয়া থাকিলেন । ৫৮॥

তাহার পর ধীরে ২ গাত্রোখান করিয়া লোচনহয় মর্দ্দন করিতে করিতে নতকন্ধর হুইয়া ভগবা-নের প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলেন এবং বিনীত ও বদ্ধাঞ্জলি হুইয়া সমাহিত চিত্তে কাঁপিতে ২ গলগদ-বচনে শুব আরম্ভ করিলেন ॥ ৫৯ ॥

॥ 🛊 ॥ 🛮 रें छि मर्भाय वार्यानम ॥ 🗫 ॥

# ঞীত্রকোবাচ।

নোমীত্য তে হত্ত্রবপুষে তড়িদম্বরায় **গুগ্লাবতংস পরিপিচ্ছলসন্মু**ধায়।

## **শ্রীধরত্বামী**

চতুৰ্দশেহমুতং দৃষ্ট্। পূৰ্বাগন্ধক নিশ্চয়ং। অনীশঃ কর্তু মক্ষৌৰীৎ ক্লফং বন্ধা বিমোহিতঃ॥ • ॥

স্বন্ধ তাগরাধেন ভিন্না সকল্পভন্না ভগবন্দহিমানসনবগহিমানো যথাদৃষ্ট স্বন্ধপমেৰ কীৰ্ত্তন্ত্বাহ নৌশীতি। হে ঈভ্য স্বভ্য তে তৃত্যং নৌমি দ্বিতীয়ার্থে চতুৰ্থী। অথবা। নৌমীত্যুক্ত্বা প্রস্বতক্ত ভগবভঃ কর্মমেৎজ্ঞাতে প্রয়োজনীপেক্ষান্নামেবস্থ্তো ভগবানেব প্রয়োজনমিতি তাদর্থো চতুৰ্থী। যদা। তে তৃত্যং দ্বামেৰ প্রসাদয়িত্বং দামেৰ নৌমীত্যর্থঃ। অধ্বৰং বপুর্বস্থ তদ্বৈ। ডড়িদম্বরং বস্য তদ্বৈ।

### देवक्षवरकावनी।

তবং বস্য দ্ধপন্ত জ্ঞাতপরনৈশ্বর্ধ্যমাধুর্যন্তজ্ঞপনেব নিজপরমপ্রধার্থবেন স্থোত্মপ্রক্রমন্তে নৌমীতি। ছে ঈডা ইতি অমেব স্থাতিবাগা ইত্যর্থ:। পরব্রদা ন্তবিশ্বর্ধ্যমাধুর্যারেরবাদ্য সর্ক্রপ্রাপিঞ্চিকাপ্রাপঞ্চিকনির্গমপ্রবেদদর্শনাও। অতঃ স্তোমি ত্বাং কিমর্থং তে তুত্তাং ত্বাং প্রাপ্ত:। ক্রিয়ার্থোপপদন্ত কর্মণি স্থানিন ইতি এধোভ্যো ব্রন্ধতীতিবং চতুর্থী। নম্ব। ব্রন্ধরণের ক্রপান্তরেণ বা মংপ্রাপ্তি: প্রান্তরাই অপো বিভন্তী ত্যন্ত: নবীনভামমেবন্তবং দিল্প: ক্র্মঞ্চানি বস্থ তড়িবং পীতাবরং যত্ত তত্ম। নমু ঈদৃশাং শ্রীবৈত্তেশ্বরাদয়োহিপি সম্ভবন্তীত্যাশক্ষাই গুল্পাবতংশেত্যাদি পরিত: পিচ্ছানি যত্ম তৎ পরিপিচ্ছং বর্হাপীড়ং। বহা বনোত্তবা নানাবর্ণপ্রস্থাদিময়ঃ শ্রন্ধো যত্ম তন্ম তক্র বিশেষতো বাল্যলীলয়াক্টিতিত ভামেবোদিশতি ক্রন্ধেতি। অব ক্রলং দধ্যোদনগ্রাসো বামহন্তে বামকক্ষে বেব্রবিষাণে অঠরপটসদ্ধৌ বেণ্রিতি পূর্বেক্তিন্ম্যারেণ বোদ্ধবাং তান্তেব লক্ষণানি অসাধারণলক্ষণানি অতএব তঃ শ্রী: শোভা ষদ্য তক্ষৈ। মৃহপদ ইতি বাল্যমেবাভিপ্রেতং সাক্ষান্তদম্বিতং পিতৃত্ব প্রভূত্ব গুক্তবাদিনা প্রমণ্টেরিতিবিতালব্যাদিকং চ সংগৃহন্ সর্বান্তে সর্ব্বিশেষণাশ্র্মভীষ্টং বিশেষণমাহ পশুপ্সা প্রীনন্ধরাক্ষম্ব অক্সমান্ত্র

### ক্রমসন্দর্ভ:।

এবং শ্রীমল্লনন্দনচরণারবিন্দমেব পরমপুরুষার্থতয়া নিশ্চিত্য তজপুমেৰ ক্ষোতু মুপচক্রমে নৌমীতি॥ ১॥

### 🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভক্তিজ্ঞানমহৈশ্ব্যমাধ্ব্যাকৌ পতন্ বিধিঃ। অস্তৌং প্রীতিবিধৌ প্রশোত্তরকোকং চতুর্দ্দে। মন বন্ধবিণ্ভাবং বন্ধান্দ পরিচিন্তঃ। হসত্ত সন্তো ক্রিছেমি ন স্বস্বাস্তবিনাদকং। প্রীমান্দ কুপদান্তোক্তধ্যানমাত্রৈকসাহসং। বিধিন্তবাস্থ্যে পারং বিঘানতি মনো মম। নিধিনস্চিদানন্ত্রপদ্পত্তং প্রীগোপেক্রনন্দনং সাক্ষাদমভ্য তবৈবাস্ত্তভক্তিনিষ্ঠন্তমেব বিধি বর্ণমতি। নৌমীতি। হে ঈডা অধুনৈব দৃষ্ঠব্রমাদিন্তপ্রপ্রান্তবিজ্ঞান বিদ্যান্ত বিধিন্ত বিধি বর্ণমতি । নিমীতি। হে ঈডা অধুনৈব দৃষ্ঠব্রমাদিন্তপ্রপ্রান্তবিজ্ঞান বিদ্যান্ত বিধিন্ত বিধি বর্ণমতি প্রান্তবিজ্ঞান বিদ্যান্ত বিধিন্ত বিধিন্ত বিধিন্ত বিধিন্ত বিধিন্ত বিধিন্ত বিধিন্ত বিধিন্ত বিধিন্ত বিধান বিদ্যান্ত বিধিন্ত বিধিন্ত বিধিন্ত বিধিন্ত বিধিন্ত বিধিন্ত বিধান বিদ্যান বিধান বিধিন্ত বিধিন্ত বিধান বিধান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিধান বিদ্যান বিদ্যা

চতুর্দশ অধ্যায়ে অন্তর্ত দর্শনের কারণ নিশ্চয় করিতে না পারায় জন্মার মোহ এবং তৎকর্তৃক শ্রীকৃষ্ণের স্তৃতি॥ ॰॥

হে রাজন্! নিজকৃত অপরাধনিমিত ভীতিবশতঃ কম্পিত কলেবর হইয়া ভগবন্ধহিমার পার না পাওয়াতে যথাদৃষ্ট রূপমাত্র কীর্ত্তনপূর্ব্বর ত্রেজ্ঞা কহিলেন, হে ঈড্য! ( স্তবনীয় ) অপনাকে প্রসম করাইবার নিমিত্র, আপনারই তাব করি:। প্রভো! আপনার শরীর নব নীর্দের স্থায় স্থামর্ব। স্থায় বদ্ন বিদ্যুৎসদৃশ পীত, গুঞ্জার কর্ণভূষণ এবং ময়্রপুচ্ছের শিরোভূষণে আপনার ক্রেড্রা ক্রেড্রা দিরোভূষণে আপনার ক্রেড্রা ক্রিড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রিড্রা ক্রেড্রা ক্রিড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রিড্রা ক্রেড্রা ক্রিড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রিড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্রা ক্রিড্রা ক্রেড্রা ক্রিড্রা ক্রিড্রা ক্রেড্রা ক্রিড্রা ক্রেড্রা ক্রিড্রা ক্রেড্রা ক্রেড্র

# বন্যস্রজে কবলবেত্রবিষাণবেণু-লক্ষজিয়ে মৃত্বদে পশুপাঙ্গজায় ॥ ১ ॥ অস্থাপি দেব বপুযোমদমুগ্রহস্থ স্বেজাময়স্থ নতু ভূতময়স্থ কোহপি।

### थीधत्यामी।

গুল্লাভিরবতংসৌ কর্ণভূরণে পরিপি**ছ্ঞ বর্থপীড়ং তৈ ল'সমুধং বস্য তদ্মৈ। বস্তা: প্রজো** যস্য তদ্মে। ক্রসাদিতি **ল'ক্ষভি: ঞ্রী: শো**তা যস্য তদ্মে। মৃদু পানৌ যক্ত তদ্মে পশুপাকজার পশুপস্য অকলার নন্দস্যাক্ষরার ॥ > ॥

নত্ন নিনিতি প্রতিজ্ঞার কিং স্বরূপাছ্বাদমাত্রং ক্রিরতে ইত্যত আহ অস্যাপীতি। ভো দেব অস্যাপি স্থলভত্বেন প্রকাশিত-ক্রাপি তব বপুষঃ অবতারক্ত মহি মহিমানং অবসিত্য জ্ঞাতুং কোহপি ব্রহ্মা অহমপি ন ঈশে ন শক্রোমি। বহা। কন্চিদপি ন ঈশে সমর্থঃ আসীং। স্থলভত্বার বিশেষণ্ডরং। মদস্প্রহস্য মুমান্থ্রহো ষ্পাং ত্রুদ্ধপ্রহং তস্য কিঞ্চ স্বেচ্ছামন্ত্রস্থানাং তক্তানাং বংগ যথেছা বৈষ্ণবড়োষণী।

পুজার তত্ত্ব কুমারত্বেন স্বতএব নিত্যং তত্ত্বং সমবেতস্থাৎ । ইত্যেতৎ শ্রীবালগোপালরপং স্বামত্র প্রাপ্তর্থ সোমেব নৌমীতি পরম-লালদরা প্রাগেব প্রয়োজনমূদিইং॥ ১ ॥

অস্থাপীতি তৈ ব্যাধ্যাতং। তত্ৰ নৰিত্যাদ্যম্ভে উৎকৰ্ষবৰ্ণনমেৰ হি ছতি ন'মেন্ডি হেত্রধ্যাহার্যঃ। তব ৰপুৰ ইতি চত্থ্ চর্ণাদ্ব্যাপি তবেতি যোজনরা সাধিতং। তব ষ্বপুৰং কলিনবতারক্ততেতার্থঃ। কীদৃশস্থাপি তস্য তথাই অস্যাপীতি। জগতি স্থলতম্বন প্রকাশিত্যাৎ ত্রেদ্বানির্দেশং প্রাপ্ততেতার্থঃ। মদস্প্রহস্তেতি মদীরস্টেপালক্ষাদিতি ভাবঃ। তদেত্রতেতু নমু ভূতময়-সোতি তবর্পপঞ্চমব্যাদিভাগমর এব পাঠঃ। নতু তং পঞ্চমপ্রথমাদিভাগময়ঃ। নতু বা তংপ্রথমপঞ্চমাদিভাগমরঃ। উত্তরব্যাখ্যায়াং তয়ে। ন'তু তয়োরস্পর্শাৎ তম্মান্তরু প্রথমব্যাখ্যায়াং নম্বিতি ব্যাখ্যাতং তংখলু স্থকারস্বৈত্য তুকারার্থতয়া,শ্বীকারাজ্ব-জেয়ং। নেশে মহিত্বসিত্সমত্যমার্কা বোজনরা বা অত্ত মুস্ত বিতর্কার্থো জ্বেয়ঃ। বিতীরার্থে নমু নিশ্চরার্থে জেয়ঃ। নিবিতি তবর্গপঞ্চমান্তপঠিক্ত টীকায়াং মূলেচ প্রায়ঃ সর্ব্বিত দৃশ্রতে। তম্মাদ্থবেত্যন্ত পাঠান্তর ইত্যেবার্থো জ্বেয়ঃ। সাক্ষান্তবৈতি স্বয়ং ভগবতস্তবেত্যথঃ। কেবলন্তেত্যবকারব্যাখ্যা তন্তন্বতারান্তীত্য বিরাজ্যান্ত্রপ্তার্থঃ। গুণাতীতন্তেতি তত্যচ পুক্ষ বিদেবী ব্রহু

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

## পূর্বমহিদং দৃষ্টা বিমৃত্তঃস্কৃতিমূপেক্ষমাণ ইব সসন্তমমাহ অস্যেতি ॥ ২ ॥

### **बिविश्वनाथहळावर्डी**।

যস্যেতি গোপবালোচিতাচরণগৈয়ৰ ভণীর সর্কাচরণেভাঃ শৈষ্ঠাং। সৃদ্ অতিস্কুমারৌ পদৌ বস্যেতি তাভাাং বনত্রনগদর্শিনাং কারণাপ্রেমম্ভেশংপাদকবং পশুপাদকারেতি এবস্থনেবাদিভোগি আমন্ত্রন্ম সৌভাগ্যাধিক্যং ব্যক্তিং॥১॥

নমু তো ব্ৰহ্মং অগবৈধায়। বিপতিঃ অহন্ত বন্যগোপালপুত্ৰছং পুরাতনঃ অহন্ত বালত্বং বেদার্থতাৎপর্যবিজ্ঞবাৎ প্রমবিধান্
সদাচারপরারণঃ অহন্ত বৎসচারকর্বাং জ্ঞানল্নঃ আর্জাচারগন্ধমপাজানংতিষ্ঠন, প্রামারপ্যাদনকবলং ভ্ঞানত্বং মারী প্রমন্থী সাক্ষাৎ
প্রমেশ্বর এব অহন্ত অলারামোহিতো মনোজ্ংখেন বনং পর্যাটাং তাব জ্ববং কর্ত্ত্বং নাহামীতি বক্রোক্তিমালদ্য সত্যমজ্ঞানামহাপরাম মহমক্রনমিতি ব্যালয়নীয় অস্যেতি। হে দেব অন্যাপি বালচেষ্টামরস্য প্রকৃতিমোগ্ধস্য তাব বপুরো মহিমানমবদ্যিত্ব জাত্বং নেশে ল শক্ষোমী
কিম্ত কৈশোরনীল্যা প্রকৃতিরিধামাণমহাচাত্র্যায় বপুরোহণি মহি জাত্বং নেশে কিম্ত তব আত্মনো মনসো বা স্থাম্ভৃতি অস্যা
নির্মাতশন্ত্রমানস্থানজ্যার বিশ্বিষ্ঠান বিশ্ব ক্রোক্তিমাল্য তাবি ক্রিক্তিমাল্য বিশ্ব ক্রাক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য বিশ্ব ক্রিক্তিমাল্য বিশ্ব ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য বিশ্ব ক্রিক্তিমাল্য বিশ্ব ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য বিশ্ব ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমালয় ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমাল্য ক্রিক্তিমালয় ক্রিক্তিমাল

চিহু মারা আপনার অতিশর শোভা হইয়াছে। এভো! আপনার ছইটা পাদপদা অতিশয় মৃছ, আপনি গোপরাজ-নন্দের অঙ্গল্প । ১॥

ভগবন্! আমি আপনার তব করিতে প্রতিজ্ঞা করিয়া যে এ রূপ স্বরূপাসুবাদ করিতেছি ইহার কারণ আছে। হে দেব! স্থলভত্বরূপে প্রকাশিত আপনার এই যে বপু: অর্থাৎ অবতার, ইহারও মহিমা-নিরুদ্ধ মনের দ্বারাওক্ষণত হইতে, স্থামি সমর্থ ইইলাম না কিয়া অন্যেও 'জানিতে পারিবে না।' ভগবন্! আমি আপনার এই অবতারকে স্থলভ বলিতেছি কেন, ইহা হইতে আমার মহৎ অনু-

# নেশে মহি অবসিতুং মনসান্তরেগ সাক্ষাত্তবৈব কিষ্তাক্ষত্থামুভূতে: ॥২॥

# जीधनवासी।

তথা তথা ভবত:। তহি কিমিতি জাতৃং ন শকাতে অত আহ নতু ভ্তমন্ত্রস্য ভদ্ধসন্তান্তকস্য যদা অগৈ বিং পুনঃ সাক্ষান্তবৈব কেবলস্য আত্মধামূল্তবেব অমুধামূল্তবেব অবধামূল্তবাজিলা অবতারিশাে গুণাতীতস্য মহিমানং আত্তবেগাপি নিক্লেনাপি মনসা তে। জ্ঞাতুং সমর্থাে ভবেং। অথবা ভ্তমন্ত্রস্যাপি বিরটি ক্লপস্য তব ছিন্নিন্ন্যস্য বপুনঃ মহি অবসিতুং কোহপি নেশে তদা সাক্ষান্তবৈবাসাধারণস্য নিন্ন্যন্ত্রভাব হিতস্য উক্ত লক্ষ্ণস্যাস্য মহি মহিমানং অবসিতুং কোহপি নেশে ইতি কিমুত বক্তব্যমিত্যর্থঃ ॥ ২ ॥

#### रेवस्थवरङायनौ ।

বৈশুণা তওদাণ পরিজিয়াধিকারশ্রেতার্থ:। অম্থাম্ভ্তিমাত্রস্ক্রাপি তওদবতারিবং মহিমবর্ক। এতদাবানন্দ্রভালনি ভূতানি মাত্রাম্পজীবন্ধীতি কো ছেমান্তাংক প্র প্রাণাদ্যদেষ আকাশ আনন্দোন স্থাদিতি। পরাস্থ শক্তি বিবিধৰ ক্রমতে স্বাভাবিকী জানবল্ ক্রিয়া চেতি ক্রতিপ্রান্ধাণান গম্যতে নচ নির্বিশেষত্র ভেলাবির্জাবিবিশেষত্র বন্ধান্ত। অথবেতি জ্ঞা বিরাজ্ রূপদ্যাপি হজের প্রাক্তান্ত তথাপি ভূমন্ মহিমা গুণত্ত তেই ত্যাহ্য তরবকাক্তরে স বিশেষতৈর তলাধিক্যং ব্যাধ্যাত্তত। অথবেতি জ্ঞা বিরাজ্ রূপদ্যাপি হজের প্রোক্তাধ্বং স্বয়ন্ত ভগবতি তন্ধিন্ প্রমন্ত প্রতিপাদয়তি ম । অম্যিরের পক্ষে তহুত্তমর্ন্বান্তি চিংম্কপাঠা সক্ষতে। তহুতি: সক্ষেরাব্রন্ধন্ত পর্যাধ্যায় প্রতিপাদয়তি ম । অম্যিরের পক্ষে তহুত্তমর্ন্বান্তি চিংম্কপাঠা সক্ষতেতে। তহুতি: সক্ষেরাব্রন্ধন্ত পর্যাধ্যায় প্রতিলিত্তি হি তন্ত্যাধ্যা। পূর্বান্ধন্ পক্ষেত্র তহু স্ক্রেমানন্তোব্রাচ্চ । নিয়ন্ত নিয়ন্যভেদরহিতক্তেতি বিরাজ্ রূপতা স্বনিয়ন্যতেত্ত্ত ভ্রত্ত ইতি প্রতে:। লোকনাথো মহন্ত্রেমিতি সহন্ত্রনামন্তোব্রাচ্চ । নিয়ন্ত নিয়ন্যভেদরহিতক্তেতি বিরাজ্রা। নচ স কন্তচিন্নিয়ন্য ইতি বিবক্ষা। উক্তলক্ষণভোতি অন্ত বৃধ্রিত্যাদি বিশেষণে দ পিতিপ্রত্যথি:। অথ স্ব্রাধ্যা। নহু মনৈত্যক্রিন্ন দ্বিতির চতুর্ভ্রন্তেশেক্ষাপি বণু ক্র্যাপীতি যোল্যাং। নারায়ণোহন্ধং নরভ্রনায়নাদিতি হি বক্ষাতে। বপুষো বিশেষণানি মদন্ত্রহ্বেন্ত তাদীনি। সাক্ষান্তবৈবেতি পূর্ববং। আহ্বনা স্বন্ধন কন্তা স্থাম্ভূতি র্বস্য। অন্নাবেদ্যানন্দ্রেল্ড স্কর্লেন্ধ্ একমণি বণু ক্ত্যাপীতি যোল্যাং। মেত্র মদ্ম গ্রহ্তেতি তদ্দন্নবিহি স্বর্হিনা জ্যাত ইতি ভাবং॥ ২ ॥

### श्रीविश्वनाशहकवर्त्ती।

পঞ্চকং মমাপি জ্ঞানসন্তাবনায়াং ন শাস্ত্ৰাভ্যাসতপোনোগাদিকং হেতুঃ কিন্তু কুপাকটাক্ষকণ এবেতি ক্ৰবন্বপু বিশিন্তি। ম্যাপরাধিন্যসমূগ্রহো মহিশ্ব্যদেশনোথমোহোত্তরকাল দর্শনদানাদ্ধমিতো যদ্য তদ্য। অহুগ্রহে হেতুঃ। স্বেচ্ছামন্ত্রস্থানানাং প্রেমভিজনতাং বথা যথা যা ইচ্ছা-দিদৃক্ষা-দিসেবিষাদি স্তন্মন্ত্রস্থাভক্তবংসলন্তাং তত্তংসম্পাদকদ্যেত্যুর্থঃ। অতো ম্যাপি ভক্তাভাসবন্ধাদপরাধিন্তেইপান্ত্রহলেশপ্রাপ্তাধিকার ইতি ভাবঃ। নিষ্কান্থ্রহে নরবপ্র্যাবিত্যত আহ নতু ভ্রতমন্ত্রস্থা ভ্রতমন্ত্র হি বপুর্জভং নতু চিন্নরং। অতএব ব্রহ্মসংহিতারাম্কং। অস্থানি যদ্য সকলেক্ত্রির্বিষ্ঠীতি এতচ্চ সর্ক্তের্বিষ্কার্থং তদেত্র গোবিনভাস্তানাং যথাকালং আন্যান্ অবতারান্ প্রভাব ক্রের্বিষ্কারত। কর্ত্বানি ব্যাকাল্যনান্ প্রভাব নতু সাক্ষান্তং প্রাদি । সতু স্বচক্র্তামের পশ্তি স্থানাত্রামান প্রােত্র স্থানিভ্যামিপি পশ্তি ইত্যাদি বিবেচনীরং। মথবা অস্থাপি দেববপুরো দেবাকার্ম্য অর্থুনৈর তরা দর্শিত্র্যা বাহ্রদেব্র্কের ম্বান্ত্রাই নতু ভ্রত্রস্থাস্ত্র ভারতিক। ইত্যাহ নতু ভ্রত্রস্থাস্ত্র হিল্ল ম্যান্ত্রক ভারত্রীয়েখাংশিন স্থাক্তর দিহিসংপাদকন্তেইপিন ব্যানি ভৌগ্রবি নরবপুরঃ সর্কাংশিনঃ স্বর্গ ভগ্রতঃ কথন্ত্রস্থা ক্রিন্ত্র ব্রহ্বের্ স্বান্তারান্ত্র স্থানারবের্ অস্কৃত্তি র্যাণ্ড ভ্রের্য ভ্রের্য স্থান্ত্রনান্তর স্থানার্ন্তর স্থান্ত্রকার স্থানার্ন্তর স্থানার্ন্তর স্থানার্ন্তর স্থানারবের্ অস্কৃত্তি র্যাণ্ড ভ্রা । ২ ॥

গ্রহ লাভ হইল, আর এইরূপ ভক্তজনের যথা ২ ইচ্ছা, ভরজেপ হয়, কিন্তু হে দেব! অন্যান্য মূর্তির ন্যায় ইহা ভূতনয় নহে, এ রূপ অচিন্তা ও শুদ্ধদর্ময়। প্রভা! যথন এই রূপেরই মহিমা জানা যায় না তথন কেবল আত্মপ্রামুভবমাত্রস্বরূপ গুণাতীত অবতারী যে আপনি, আপনার প্রকৃত মহিমা অবগত হইতে কোন্ ব্যক্তি সমর্থ হইবে । ( অপর মূলশ্লোকে "নমু ভূতময়দ্য" এই পাঠ সঙ্গত হইলে তাহার অর্থ এই) যথন ভূতময় বিরাট্ রূপি আপনার অর্থাৎ আপনার নিষম্য বিরাট্ বপুর মহিমা অবগত হইতে কেহ সমর্থ হয় না তথন অনাধারণ নিয়ম্য ও নিয়য়্ছ ভেদরহিত উষ্টা সর্প আপনার মহিমা জানিতে কে সমর্থ হয় । ২॥

জ্ঞানে প্রয়াসমূদপান্য নমস্তএব জীবস্তি সমূখিরিতাং তবদীয়বার্তাং ।
স্থানস্থিতাঃ প্রুতিগতাং তমুবান্ধনোভি র্বে প্রায়শোহজ্ঞিতজ্ঞিতোহপ্যসি তৈস্ত্রিলোক্যাং॥ ৩॥
শ্রেয়ংস্তিং ভক্তিমূদন্য তে বিভো, ক্লিশ্যস্তি যে কেবলবোধলক্ষয়ে।

## श्रीश्रत्यामी।

তহি কথং অজ্ঞা: সংসারং তরেয়ুরত আছ আন ইতি। উদপাস্য ঈষদপ্যক্তবা সন্তিমুখরিতাং অতএব নিত্যং প্রকটিতাং ভবদীয়-বার্ত্তাং অস্থান এব স্থিতাঃ তৎসদ্ধিমাত্রেণ স্থতএব শ্রুতিগতাং শ্রবণপ্রাপ্তাং তত্বাদ্মনোভিঃ নমস্তঃ সংক্র্বস্তো যে জীবস্তি কেবলং যদ্যপি নাঞ্ছৎ ক্র্বস্তি তৈঃ প্রায়শ দ্রিলোক্যাং অতৈ রন্ধিতোহপি দং জিতঃ প্রাপ্তোহদীতি কিং জ্ঞানশ্রমেণেত্যর্থ:॥ ৩॥

ভক্তিং বিনা জ্ঞানং নৈব সিধ্যেদিত্যাহ শ্রেষ্ট স্তিমিতি। শ্রেষ্ক্রসাং অভ্যদ্যাগবর্গলক্ষণানাং স্থতিঃ শরণং যভাঃ সরস ইবু নিঝ'-

### বৈষ্ণবতোষণী।

অতএব ভক্তান্তদৰেষণশ্ৰমং পরিত্যক্তা ভক্তিবিশেষরূপতয়া অদীয়র্মপঞ্চলীলাবার্ত্তামেব শৃণুন্তি তেন বশীকুর্মন্তি চ তাদৃশন্দপ থামিত্যাহ কানে ইতি। জানে বদীয়য়র্মপৈর্যামহিমবিচারে। স্থানে স্তাং নিবাস এবাব্যগ্রতয়া হিতাং নতু তীর্থপর্যানাদি কেশান্ কুর্মন্ত: তরাদিভিয়্মমন্ত: সৎ কুর্মন্ত: তর তরা সৎকার: শ্রবণসময়েহঞ্জনিবদ্ধনাদি: বাচান্তমোদনাদি: মনসা চান্তিক্যাদি:। সন্মুথ্নিতাং সন্তঃ অন্তোক্তি সর্মেলিয় ক্ষোভপরিহারাদ্যর্থং প্রায়ো মৌনশীলা অপি মুধ্রিতা মুখরীকৃতা য়য়া তাং আহিতাম্যাদিছিতি নির্চায়াঃ পরনিপাতোহিপি ভবদীয়ানাং শ্রীমন্ত ক্ষরাজাদীনাং বা বার্তাং অক্সকৈ:। যবা ভবদীয়বার্তাং ক্ষীবন্তি উপজীবন্তি তদেক কীবন্তমন সাল্যা শ্রা বাদ্যান্তাত্যহিল তরহু কো সদা ক্রমীত্যর্থং যবা তরাদিভিরেব সাক্ষাৎ প্রাপ্তো ভবসি অত্র তরা প্রাপ্তি: সহস্তাদিনা শ্রীপাদান্তস্পর্শনাদি:। বাচা আহ্বানাদিনা সমাগ্যনাদি:। মনসা চ সংকল্পেন্ব দর্শনাদি:। যবা সহার্থে তৃতীয়া তরাদিভিঃ সহিতোইন্সিত: তব তরাদীন্তপি তৈর শীক্তানি ইত্যর্থ:। তত্র তনোর্মশীকরণং তন্তক্তপার্বে সাদাবিছিত্যাদি: বাচন্তদাণুণকথনাদি: মনসাচ তচিন্তমাদি:। অন্তৎ সমানং॥৩॥

নহু তবিধাং ভক্তিং ত্যক্ত্ৰ মন্মহিমপূৰ্ব্যবসানো দৰ্শনায় তহ্চিতশ্ৰৰণমননাদিভি: কেচিক্স্জানাভ্যাসিনোহপি দৃখ্যন্তে তত্ৰাহ শ্ৰেয়

#### ক্রমসন্ধর্ড:।

যত্মাজ্ জ্ঞান ইতি॥ ৩॥

#### **बीविधनाथहक्वरहीं।**

নমু তহি তিমেব বিদিয়া অতিমৃত্যুমেতীতি শ্রুতেরজ্ঞানালোকাঃ কথং সংসারং তরেমুন্তরাহ জ্ঞান ইতি। উদপাস্য ঈষদপ্যক্তয় সমূধ্রিতাং সন্তো মৌনশালিনোহপি স্বমৃধ্রেণ মুধ্রিতা মুধ্রীকৃতা ষরা তাং। ভবদীয়ানাং বা বার্তাং হানে সতাং নিবাস এব স্থিতাঃ নতু তীর্থাক্সপ্যটন্তঃ সন্তঃ শ্রুতিগতাং তৎসন্নিধিমাত্তেশ স্বত্রতা শ্রুতিগতাং তহবান্ধনোভিরারক্ত পরিসমাপ্ত্যো নমন্তঃ। তত্র তথা পাণিভ্যাং সহ শীক্ষা ভূমি স্পর্শেন। বাচা কৃষ্ণক্রথাইর তদাস্বাদকেন্ডো বৈষ্ণবেভ্যণ্ড নমন্ত ইতি বচনেন মন্যা শ্রুতাঃ কথায়াঃ অবধারিকরা বৃদ্ধা প্রণমন্তো যে জীবন্তি কেবলং যদ্যপি নাহাৎ কুর্বন্তি তদপি তৈঃ প্রায়শন্তিয়েলাক্যামহৈল্যভিত্রি তিবি ব্যালিকর্মুক্তিভিন্ত ন বশীক্তো ভবস্যতঃ সংসারতরণং কথাশ্রোতৃণাং কিং চিত্রমিতি ভাবঃ। অতত্বৎ কথৈক্ষো জ্ঞানমেব ভল্পানং তেন সংসারমণি তরগ্রীতি শ্রুত্যপোঁ জ্ঞের ইতি ভাবঃ॥ ৩॥

শ্রবণকীর্ত্তনাদিনামেকতবরাপি ভক্তাা ক্বতার্থীভবস্তি। যহকেং নৃসিংহপ্রাণে। পত্রের্ প্লেষ্ ফলেষ্ তোয়েমকীতলভােষ্ সদৈব

পরস্তু হে ত্রহ্মন ! আপনার মহিমা এবছিধ হুন্তেয়ে হইলেও সংসারী নিস্তারের অসম্ভাবনা দেখি না, যে সকল ব্যক্তি জ্ঞান বিষয়ে অত্যক্ষও প্রয়াস না করিয়া সন্থানেই অবন্ধিতি করত সাধুজন কর্তৃক নিত্য প্রকৃতি তদীয় বার্ত্তা যাহা সাধুজনের সন্ধিধিমাত্ত্রে আপনাহইতে প্রুতিপথে প্রবিষ্ট হয়, কায়-ক্রোকাকের সংকার পূর্বক অবলম্বন করিয়া থাকে আহারা যদিও অন্য কোন কর্মা না করুক, তথাচ ত্রিলোকীমধ্যে অন্যান্য সকলের অজিত হয়েনিও আপনি তাহাদের কর্তৃক প্রায় জিত হয়েন, অর্থাৎ আপনি অন্যের মুদ্ধান্ধা হইলেও তাহারা আপনাকে প্রতি হইতে পারে ॥ ৩ ॥ • • •

ক্তি যে স্কল প্রত্থাগ্য লোক পরম জেয়ের ক্ত্র স্বরূপ ভক্তি পরিত্যাগ করিয়া কেবল বোধ

# তেষামসৌ ক্লেশন এব শিষ্যতে নানাদ্যথা সুলতুষাব্বাতিনাং ॥ ৪ ॥ । পুরেহ ভূমন্ বহবোহপি যোগিনস্তদর্পিতেহা নিজকর্মালব্রয়া।

# क्षित्रवामी।

বাণাং তাং তে তব ভক্তি উদন্য তাক্ া শ্রেষণাং মার্গসূচানিতি বা তেবাং ক্লেশন এব শিষ্যতে। অয়ং ভাব:। যথা অরপ্রমাণং ধাসং পরিত্যন্ত্র অন্তঃকণ্ঠীনান্ স্থূল্যাসাসাশাং অবান্যে অপম্বন্ধি তেবাং ন কিঞ্চিং ফলং। এবং ভক্তিং তুল্লীক্বত্য যে কেবলবোধনাচায় প্রযতম্বে তেবামপীতি ॥ ৪ ॥

ভক্তৈব জানং নান্তথেতি অৱ স্বাচারং প্রনাণয়তি প্রেতি। হে ভ্ৰন্ ইংলোকে প্রাং যোগিনোহণি সন্তঃ যোগৈ জানমপ্রাণ্য

বৈষ্ণবতোৰণী।

ইতি শ্রেসাং দর্কেবাদেব স্থানিতি অবান্তবকলবেন স্বত্রব জ্ঞানমপি ভবিতৈব ইতি স্কৃতিছং। তথাভূতামপি মধুররপাদি বার্ত্রা মরীং ভবিং উদক্ত উচৈতরবহেলয়া দ্বে কিপু হিতান্ত মনাদ্ভাতার্ত্র ৷ কেবলক তি বিধ্নত কিপু করা স্বাহিত্য মনাদ্ভাতার্ত্র ৷ কেবলক তি বিধানিত ৷ তেরু ভবাহ্রাহাহদয়াদিতি ভাব: ৷ ক্লিক্সন্তি ভচ্চিত প্রবণমন্নাদ্র্র্থমিত ভতো গমনাদিভিঃ র্মান ক্রিন্ত্র ৷ কেবলক তিবিধনতি শুক্রব লিব লামানিভিঃ প্রাম্প্রাহাহদয়াদিতি ভাব: ৷ ক্রিক্সন্তি তের্তিত প্রবণমনানার্থমিত ক্রাহ্রাহার বামনাদিভিক্স প্রাম্প্রাহাহদয়াদিতি ভাব: ৷ ক্রিক্সন্তি ত্র্তিত প্রবণমনানার্থমিত ক্রাহ্রাহার লামাদিভিক্স প্রায়ং ক্রিক্সনানার ক্রিন্ত্র ভাবতা তেরাহ্রাহার নাক্রাহার ক্রিক্সনানার ক্রিন্ত্র ভাবতা তেরাহ্রাহার নাক্রাহার ক্রিন্ত্র লামাদিভিক্স প্রব্রাহার নাক্রাহার ক্রিন্ত্র লামাদিভিক্স কর্মানিত ক্রিন্ত্র লামাদিভিক্সনান ক্রিন্ত্র লামাদিভিক্সনান্ত ক্রিন্ত্র লামাদিভিক্সনান্ত লামাদিভিক্সনান্ত ক্রিন্ত্র লামাদিভিক্সনান্ত লামাদিভিক্সনান্ত

শ্রেষ:স্তিষ্ক ন কেবলং বাল্মানেণ কিন্ত পূর্কং বছলোহত্বতং এবাস্তীত্যাহ পুরেতি। তৈব'্যঞ্জিতমেব ভত্ত লব্ধরা। ধর্ম: স্বস্থৃতিতঃ
পুংসাং বিষক্ষেনকথাত্ব যং। নোৎপাদয়েদ্বদি রতিং শ্রম এব হি কেবলমিতি জারেন কথাক্ষচিত্রপরা দুংসমীপং প্রাপিত্রা

### क्रयममर्छः।

নমু কেচিম্বক্তিনপি পরিত্যক্ষা জ্ঞানে প্রযতমানা দৃষ্ঠান্তে তত্রাহ শ্রেয়:স্তিমিতি ॥ ৪ ॥

কিঞ্চ পুরে হেতি। নিজকর্মণজ্বা কথাকচিরপকথোপনীত্যা কচিরপরা আত্মতব্যারত্য শ্রীভগবত্তবপর্যান্তমহত্য তে তব

# **बिविधना**थहक्कवर्जी।

সংস্থা ভাজা স্থলভা পুকাৰে পুকাৰে মুক্তি কিমৰ্থং ক্রিয়তে প্রয়ন্ত উপদি বে তাং পরিহায় জ্ঞানে প্রসামত ছেবাং ছংখনেব ফলতীতাহি শ্রেয়ামুত্রাদ্যাপবর্গ লক্ষণানাং স্তিঃ সরণং যদ্যাং সরস ইব নিঝারাণাং তাং তব জ্ঞান্থং উদ্দ্যেতি শ্রীশামিচরণানাং ব্যাখ্যা শ্রেয়াংশি জ্ঞানকর্মাদি নানাদাধন সাধ্যানি ফলানি যদৈর স্থাতাং ভক্তিং তাঙ্কে তার্থং। তেবাং জনৌ বোধং ক্লেশণঃ ক্লেশং লাতি দলাতীত সং শিষতে পর্থাবিসিতো ভবতি। তর দৃষ্টান্তঃ । স্ব্র্বাববাতিনাং জ্লেশনাং তথুসং পরিত্যজ্ঞা বতততঃ পরিশ্রম্যানীয় পর্যতপ্রমাণং স্ব্রুষপুঞ্জং সঞ্চিতা তদ্যান্তঃকণহীনধান্তাভাসদ্যাব্যাক্ত কুর্মতাং জ্লানাং যথা স স্বৃল্ভুবং ক্লেশনঃ কেবলং হতাদিবেদনামাত্রক্রপ্রশা ॥ ৪ ॥

এবং শোক্ষরেনার্যরতিরেকাল্যাং ভগবংপ্রাপ্তে ভক্তিমেব হিরীক্তা তত্র সদাচারং প্রমাণরতি পুরেতি। হে ভূমন্ প্রভা ইছ জগতি গোলনা ভক্তিযোগবন্তঃ। এবং তব্যবার্শিতা ঈহা চেষ্টা বৈশ্বস্তল্পন্মর সর্ব্বেলিরব্যাপারং কুর্বাণা ইতার্থঃ। ভক্তিবোগলাভার্থ ক্রেশ করে তাহাদিগের ত্বাবৃদ্ধাতি লোকদিগের ন্যায় ক্রেশই অবশিক্ত থাকে অর্থাৎ যেমন অল্পনাল ধান্য পরিত্যাগ করিয়া অন্তরে কণমাত্র হীন স্থুল তুষ যাহ। ধান্যবং প্রকাশ পায়, তাহা লইয়া অবঘাত করিলে কোন ফল লব্ধ হয় না, তেমনি ভক্তিকে তুচ্ছ করিয়া কেবল বোধলাভার্থ যত্নকারি-দের কিঞ্চিন্মাত্র ফল লাভ হয় না, ক্রেশমাত্র পর্যাব্দান হইয়া থাকে ॥ ৪ য়

হে ভূমনু ! \* ইহলোকে পূর্বকালে বস্তু থোগী হইয়াও বোগদারা জ্ঞানপ্রাপ্ত না ছওয়াতে তোমার প্রতি লৌকিক চেফা সকলও সমর্পণ করিয়াছিলেন, পরে ভোদাতে নিজ কর্মার্পণে লব্ধ এবং বিরুধ্য ভক্তৈয়ব কথোপনীতয়া প্রপেদিরেইক্ষোইচ্যুত তে গতিং পরাং ॥ ৫॥ তথাপি ভূমন্ মহিমা গুণদ্য তে বিবোদ্ধ মহ ত্যমলাস্তরাত্মভিঃ।

#### शिशतकामी।

পশ্চাৎ স্বদর্পিতেহাঃ দ্বি অর্পিতা লোকিক্যপি ঈহা চেষ্টা হৈঃ নিজকর্মণন্ধ্যা স্বদর্পিতে নিজ্যৈ ক্র্যান্ত ক্রা স্বদর্শিতেহাচ নিজ্ঞানিক্র্যাণিচ তৈল ব্রেয়েত্যকং পদং বা। কথোপনীত্যা কথ্যা স্বংসমীশং প্রাপিত্যা ভক্তৈয়ে বির্ধ্য আত্মানং জ্ঞাত্ম আঞ্চঃ স্থাপন তব প্রাং গতিং প্রাপ্তাঃ ॥ ৫ ॥

এবং তাবৎ সগুণনিগুণিষ্ট্রাক্কভয়ো রপি জ্ঞানং হুর্ঘটনেবেতি ত্বংকথা প্রবেশনৈব ত্বং প্রাপ্তিন ন্যথেকুকেং ইদানীং যহাভয়ো রবিশেবিদ হুর্জের্ম মুক্তং তথাপি গুণাতীতস্য তব জ্ঞানং কথিছিং ভবেৎ নতু সগুণস্য তব অচিস্তানস্কগুণছাদিতি স্তৌতি লোক্বনে তথা পীতি। হে ভূমন্ অপরিচ্ছিন্ন অগুণস্য তে মহিমা অমলান্তরায়ভিঃ প্রত্যাহতে ক্রিমে বি বাদ্ধং বোধগোচরীভবিত্মহতি যোগ্যা ভবতি অথবা বিবাদ্ধং জ্ঞাতুমহতি অহ তি লক্যত ইতার্থঃ। যথা। মহিমেতি মহিমানং কশ্চিদিবোদ্ধ্যহতীত্যর্থঃ। কথা স্বাম্ব

#### देवस्ववरकावनी ।

সতাং প্রদেশাদিতাদে। তজ্জোষণাদাখপবর্গবন্ধনি শ্রদ্ধা রতি রিত্যহুপারেণ কথনীয়ক্ষচিক্রপয়া আত্মানং দুপরমাত্মানং ত্বাং বিজ্ঞায় ভক্তি বিরিক্তি ভাগবৎপ্রবোধ ইতি ভারেন প্রেমর্দ্ধিক্রমতোহহুভূর পরাং অন্তর্নদাং তব গতিং সামীপাং প্রপেদিরে প্রপত্তিসহিতং প্রাপ্রিত্যর্থ: । ভূমন্ হে অপরিচ্ছিন্নমাহাত্ম্যেতি ত্বভক্তরেতল্ম কুনেবেতি ভাবং। হে অচ্যুতেতি ইত তব ভক্ত্যা কথঞ্চিদপি ইইসিদ্ধেশ্যতি নাজ্যেবেতি ভাবং। যথোক্তং কাশীথণ্ডে। ন চাবস্থেহথ যজ্জা মহত্যাং প্রশাসদি। অতোহচ্যুত্তঃ ক্তো লোকে ত্বনেকো বিষ্ণুরবায় ইতি॥ ৫॥

তদেবং যদ্যপি জ্ঞানে প্রয়াগমিত্যাদিনা জ্ঞানমাত্রস্যাধৃগ্যতমুক্তং তথাপ্যতি বিশেষ ইত্যাহ তথাপীতি হাভ্যাং। অগুপুস্য কচিদধিকারিনি অপ্রকাশিতগুণস্য সতঃ। বিবাদেং বৃদ্ধে প্রকাশিতৃং পচে বিক্লিভিবিক্লেদনাবং কর্মনিটো বিকারাদিং কর্জ্নিষ্ঠণত তস্য হেতৃত্বলক্ষণো ভাবং সর্ক্রক্ষাক্ষাতো গৌণম্থ্যভাবেন বাচ্যো ভবতি অস্তর্ভুতগার্থহাং। অতো বৃধ্ধাতোরপি প্রকাশমাত্রহং ইন্দ্রিক্রগকপ্রকাশকহেতৃত্বক বিদ্যতে। তদেবং কর্মনিষ্ঠপ্রকাশমাত্রবিক্ষয় ওদনং প্রতীতিবং বিবাদে মহ্তীত্যপি স্যাং। অহতি অহতি ইত্যনেন বোধগোচরীকর্ণ শক্ত ইত্যবং। অন্যকর্ভ্রপান্য যোগ্যো ভবতীত্যকে স্থাপ্র তাং-

#### ক্ৰমসন্দৰ্ভ:।

পরমান্তরকাং গতিং <mark>দামীপ্যং প্রপেদিরে সপ্রতি</mark>পত্তিকং প্রাণুরিত্যর্থ: ॥ ৫ ॥

অথাপি ভূমন্ यहाপি বিব্ধোত্যকং তথাপি তব কথিগিরিবের্শেষজ্ঞানং স্যাদিপি বিশেষগুণজ্ঞানস্ভ স্যাদিত্যাহ ॥ ৬॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

শ্রহাবতাং বর্ণাশ্রমকর্মানধিকারারিজকর্মপ্রবণকীর্ত্তনাদেব তেন লক্ষা বিশেষতপ্ত কথরা শ্রুতকীর্ত্তিপ্রত্যা উপ আধিক্যেন নীতরা প্রাপিতরা ভক্তা প্রেমণকণ্টেয়ব বিবৃধ্য বিজ্ঞায় স্বজ্ঞপঞ্চালীলাদিক মমুভূরেত্যর্থ:। পবাং প্রেমবং পার্যদেষলকণাং গতিং প্রাপ্তা:। যথা। বথা কেবলবোধো বিফল স্কথা কেবলযোগশ্রেত্যক্র সদাচারং প্রমাণরতি প্রেতি। বহুকালং যোগিনো ভূষাপি যোগং নিম্বলং জ্ঞান্বা স্বিয় অপিতা মহা চেষ্টাচ নিজকর্ম্যত তাভ্যাং লক্ষ্য ভক্ত্যা জ্ঞানমিশ্রহের বিবৃধ্য স্বাং জ্ঞানা ॥ ৫॥

এবং ব্যাপি কেবলয় প্রেমডকৈর তব সাক্ষাদেতৎস্বরূপায়ভবো ভবতি তপাশি কেবলজান্স্য বিগীতসাম্ভক্তি নিপ্রজ্ঞান্মণি তব নিবিশেষ ব্রহ্মস্বরূপায়ভবে কারণং ভবতি কিন্ত জ্ঞানঞ্চ মন্ত্রি সংন্যদেদিতি তহুকে জ্ঞান সংন্যাসানস্তর নেবেত্যাহ তথাপীতি।
বদ্যাপি কেবলা ভক্তি ন্প্রান্ত্রদণীত্যর্থ:। হে ভূমন্ ভূংপ্রাহ্ভাবন্তদ্দ্ ক্রমধুরৈতক্রপপ্রাহ্ভাববন্ অগুণস্য প্রাক্তগুণরহিত্ত তব বহিনা মহস্বং বৃহত্তরূপ একো ধর্ম:। মনীয়ং মহিমানঞ্চ প্রব্রেক্তি শন্তিং।

বেংসাভহগৃহীতং মে সংপ্রদৈ বিবৃতং ধ্বদীতি ছত্তকে: সা ব্রন্ধণি স্বমহিমন্যপি নাথেতি ধ্রুবোক্তেশ্চ মহিমশ্লেন প্রসিদ্ধ তোমার কথাশ্রবণে উপজ্ঞাত ভক্তিযোগে আজ্মতত্ত্ব অবগত হইয়া হুখে তোমার পরম গতি প্রাপ্ত হইয়াছেন অতএব সদাচারেও সপ্রমাণ হইতেছে যে ভক্তি দ্বারাই জ্ঞান হয়। ৫॥

হে অপরিচিছে ! যদিও সগুণ নিগুণ উভরই অবিশেষে ছুজের তথাপি প্রত্যাহ্নত ইন্দ্রির সকল তারা অগুণের মহিমা সহজে জ্ঞানগোচর হইবার সম্ভব, যে হেতু আত্মাকার অন্তঃকরণের সাক্ষাৎকার

# অবিক্রিয়াৎ স্বাসুভবাদরূপতো ছনন্যবোধ্যাস্বতয়া নচান্যথা॥ ৬॥ গুণাত্মনন্তেহপি গুণান্ বিমাতৃং হিতাবতীর্ণস্য ক ঈশিরেহস্ত।

#### প্রীধবস্থামী।

ভবাং আত্মাকারান্তঃকরণদাক্ষাৎকারাৎ। নমু। অন্তঃকরণমপি সবিকার্মের বিষয়ীকরোতি নুকথং আত্মাকারতা তদ্যেত্যত আহ অবিক্রিয়াদিতি। বিক্রিয়া বিশেষকার অন্তরিতাং বিশেষপরিত্যাগ এবাত্মাকারতেত্যর্থঃ। নমু। অন্তঃকরণদাক্ষাৎকার বিষয়ত্বে হনাত্মরপ্রসঙ্গঃ স্যাদত আহ অরপত ইতি। রূপং বিষয়ঃ অবিষয়াৎ বৃত্তিবিষয়ত্মনবাত্মনো নতু ফলবিষয়ত্মতোনায়ং দোষ ইতি ভাবঃ। কথং তহি ক্রিঃ অনন্যবোধ্যাত্মতা অপ্রকাশকত্বেনের নত্মন্থা ইদং তদিতি বিষয়ত্মনেত্যর্থঃ। অথবা মা সুর্বতোহ-ত্যরক্ষা লক্ষীরপি অন্তণস্য তে মহি মহিমানং অমলৈরন্তর্গ ভিডিরিক্রিরেরপি তথা যাদ্যন্ত ে তেন স্বরূপেণ বিবাদ্ধু কিমহ তি নাহ তিত্তেবেত্যর্থঃ। কথং তহাইতি তদাহ স্থান্তবাদিত্যাদিনা। উক্রাথ্মেবৈতৎ ॥ ৬॥

গুণাস্থান: গুণানামাস্থান: গুণাধিষ্টাতুত্তে তব গুণান্ ৰিমাতুং এতাবস্ত ইতি গণিয়িতুমপি ক ঈশিরে সমর্থা বভুবু রতন্ত ছিশেষবার্তা

### বৈষ্ণবতোষণী।

পর্যাং। মহিমা মহিমানমিতি স্থপাং স্থপ ইত্যাদিনা স্থভাবাং। অনন্যবোধ্যাস্থত্যা চিদেকাকারাংশেন জীবেশরোরভেদভাবন্যা। অন্যবৈত্য। তত্ত্ব বৃত্তি নির্বিষয়ং চিন্তমেব ফলঞ্চ বিষয়াকারিচিদাভাসযুক্তং তদেবেতি জ্ঞেয়ং। যদা যদাপি ভক্তাব বিবৃদ্ধ্যে তৃয়ক্তং তথাপানস্ত কল্যাণ গুণ মহোদধে স্তব সম্যণ্ জ্ঞানং ন স্যাদেব কিন্তু ক্সাচিদেকস্য স্থলা গুণস্য মাহাম্মাজ্ঞানং ক্সাপি জনস্য যং কিঞ্চিদেব ভবেদিত্যাহ তথাপীতি। তে গুণাং করণাদিলক্ষণাস্তেষাং একোহপি তস্য মহি মহিমা তস্য মান্সন্ত্যঃ সম্পদ ইত্যর্থ:। তাঃ কন্চিহিবোদ্ধ্য স্থাইত তচ্চ স্বাম্ভবাং স্বাম্ভবং স্বকীয়াম্পীলনং অমুস্ত্য যথা স্বাম্ভব স্থা নতু সর্বপ্রেত্যর্থ:। কথন্ত্তাং অবিক্রিয়াং ক্রিলায়ান্তর্ম ক্রিরার্শ্বনাং। স্বাম্ভবাং ইত্যপেক্ষ্যামাহ অনন্যবোধ্যাত্মত্যা আর্থৈকজ্ঞেয়স্বরূপন্তেন অরপতঃ রূপাতে ইতি রূপঃ অনিরূপ্যাদিত্যর্থ:। নচান্যথেতি স্বাম্ভব্যাতিরেকেণ্চ স্বাম্ভবাতিরেকেণ্ বিবোদ্ধ্য মহ্তীত্যর্থ:। এবং শ্রীভগবন্ধু ন্স্যাপি ব্রহ্মস্বর্মভ্রেত্র । ৬॥

গুণাত্মন ইতি তক্র পূর্ববিদ্ধারে পূর্বৈরাবতারিকা উত্তরত্বিং দ্বিয়ং যথা বিশেষতঃ স্বয়মবতীর্ণস্যাস্য তব গুণানাং মাহা্ত্ম্যমিয়ত্ত্বমপি ন

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

গুণাত্মন ইতি হিতাবতীর্ণদ্য ক্লপদ্মা প্রকটিতগুণদ্যাপি॥ १॥

## **अ**विधनाथहळ्कवर्खी ।

পরং ব্রহ্ম বিবাদ্ধ্য স্বয়মেব বিবোধ্যা ভবিতৃ মহঁতি। পচ্যতে ওদনঃ স্বয়মেবেভিবৎ কর্মণঃ কর্ত্ত্বং যথা কুঠারঃ স্বয়মেব বৃক্ষং ছিনত্তীত্যত্র করণস্য কর্ত্ত্বং বিবক্ষিতাং। কথা দিনিতাং। ভাইনের ত্র্রান্ধভিঃ স্বায়ভবাং স্বকর্মকাদম্ভবাং। নম্ব্রভবঃ থক্ত্বংকরণরৃত্তিঃ
সাচ ক্ষ্মদেহ বিকারমন্ত্রী নির্বিকারং ব্রহ্ম কথং বিষয়ী ক্র্য্যাদিতাতো বিশিন্ধি স্ববিক্রিয়াং ন বিদ্যতে বিক্রিয়া বিকারো যত্র তথাভূতাং
বিকারো হি মারাধর্মঃ সচ মারোপরমে কৃতঃ স্থাদিতি লিক্দেহাভাব এব ব্যক্তিঃ। নম্ব। তদপিব্রহ্বণেইবিষ মুক্তেনাম্ভববিষয়্ত্বানিচিত্যাদিত্যতঃ পুনর্বিশিন্ধি স্কর্মপতঃ রূপং বিষয় ভাদিতরাং বিষয়াকার্ত্বহিতাং ব্রহ্মাকারাদিত্যর্থঃ। ব্রহ্মণো ব্রহ্মাকারাম্ভব্ববিষয়ত্বং ন
দোষ ইতি। নম্বির্ধি কিং তরোধে প্রকারান্তরং ত্রাহ স্বান্ধবাধ্য স্বান্ধা স্বর্ধাং যত্ন তত্ত্বা নৈবান্ধা স্বর্ধাং।
ত্যাদ্যঃ। যথা বিষয়াকারাম্ভব পূর শক্ষাকানীন্বিষয়ীকরোতি ন ব্রহ্ম। তবৈধ ব্রহ্মাকারাম্ভব এব ব্রহ্ম বিষয়ীকরোতি
ন শকাদীনিত্যর্থঃ॥ ৬॥

অপ্রাক্ত কল্যাণগুণময়ং তদেবং ভগবৎস্বরূপং তু প্রেমভক্ত্যা বিনা বিজ্ঞাতুং কেছপি মায়াসিদ্ধৃত্তীর্ণা অপি বিদ্যাবস্থোহপি

হইয়া থাকে। বিশেষাকার রহিত হওয়াতে ঐ আত্মাকারতা অসম্ভব নহে, পরস্ত যদিও অন্তঃকরণ সাক্ষাৎকারের বিষয়, তথাপি ফলবিষয় না হওয়াতে অনাত্মত্ব প্রসন্তি নাই। প্রভো! স্প্রকাশত হেতু উহার স্ফুর্তি হইয়া থাকে, অন্যপ্রকার ইইলে তাহা হইত না॥ ৬॥

হে দেব ! ছুমি এই বিখের হিতার্থ গুণাবিকার করত অবতীর্ণ এবং গুণসকলের অধিষ্ঠাতা,

# কালেন বৈৰ্বন বিমিতাঃ স্থকল্পৈ ভূপিংশবঃ খে মিহিকা ফ্যভাসঃ॥ ৭॥

### **औ**धत्रचामी

দ্রত:। কথস্তুত্ব্য তব অস্য বিশ্বস্য হিতার পালনায় বহুধা বহুগুণাবিকারেণ অবতীর্ণস্য। নন্ধ। কালেন নিপুলৈ: কিম্পক্যমত আহ কালেনেতি। বা শ্রেণা বিতর্কে স্থকলৈরতিনিপুলৈ ব হজন্মনা কালেন ভূপর্মাণবো বিমিতা বিশেষেণ গণিতা ভবেয়ু:। তথা থে মিহিকা হিম্কণা অপি তথাহাভাস: দিবি নক্ষত্রাদি কিরণ প্রমাণবোহিপি॥ ৭॥

### देवश्वदकांवनी।

কেনচিদ্পি জাতুং স্যাদিত্যুপক্রমবৎ শ্রীকৃষ্ণ এবীস্তর প্রকরণস্যাপ্যর্থং পর্য্যবসাময়তি গুণেতি। यश। গুণানামাত্মনশ্চেতমিতুঃ পূর্ক মব-তারাস্তরৈ র্জগত্যপ্রকটনেন প্রস্থানামিব গুণানামধুনা প্রকটনেন প্রবোধনাও। গুণান্ প্রকটয়ত ইত্যর্থ:। यहा। গুণা আত্মন: স্বরূপভূতা যুস্যেতি নিত্যমপ্রাক্কতত্বং চোক্ষং। তথাচ ব্রহ্মতর্কে। গুগৈ: স্বরূপভূতৈত্ত গুণ্যসৌ হরি রুচ্যতে। ন বিষ্ণো ন'চ মুক্তানাং কাপি ভিল্নে। গুণো মত ইতি। তথাচ শ্রীবিষ্ণুপ্রাণে। স্বাদ্যো ন স্কাণে যত চ প্রাকৃতা গুণা:। স তন্ধ: সর্বান্তন্ধভা: পুমানদা: প্রসী-म्जू। ज्ञान मक्ति वरेनचर्यावीदारज्जाः गार्भवरः। ज्यवष्ट्यवागानि विना रहरेवर्धनामिजिः। शार्माखतथर् । याश्रमे निर्धन-ইত্যক্ত: শাল্রেবু জগদীবর:। প্রাকৃতৈ হেরসংযুকৈও গৈ হেরজমূচ্যতে ইতি। একাদশেচ। মাং ভজ্জাওণা: সর্বেনিও গংনির-পেক্ষকং। অ্বনং সর্বভূতানাং সাম্যাসঙ্গাদয়ো গুণা ইতি। ব্যাখ্যাতঞ্চ তৈরেব। অগুণা গুণপরিণামান ভবস্তি কিন্ত নিত্যা ইতার্থ:। বিশেষেণ তাবনাহাম্মা ইয়ৎসংখ্যাবৃত্তদেতি। মাতুং গণ্ডিতুং কে ঈশিরে অপিতুন কোহণীতার্থ:। তত্র কৈমৃত্যং অস্য জগত: সর্বেষামের জীবানাং হিতামারতীর্ণস্য তদর্থং প্রকটিতগুণস্যাপি। অমমর্থং। যুস্য জীবস্য যেন যথা হিতং স্যাৎ তথাদৌ গুণ-ন্তদ্র্যং প্রকট্মিতুমপেক্ষ্যতে। তত্র জীবানামানস্ত্যং তত্রচ খভাবানামানস্ত্যং তত্রাপ্যবস্থাদি ভেদেনানস্ত্যং অতন্তদর্থং গুণানামপ্যা-নস্তাং তত্তবিধিতেদেন প্রমানস্তাং স্যাদেবেতি তদাণনা ন সম্ভবেৎ .কিমৃত কালদেশাদ্যপরিচ্ছিলে অলোকে বিহরত ইতি। বৈ-বি'মিতান্তেহপি ন ঈশিরে ইতি পূর্বেণাবয়:। যদ্যপি ভূপাংখাদীনামপি যথোত্তরং স্কল্প তয়ানন্ত্যং তথাপি শ্রীসকর্ষণাদিজানেন তদ্য-ণ্নম্পি সন্ধাব্যতে ব্রন্ধাত্তেন পরিচিছ্নছাৎ অনন্তকোটি ব্রন্ধাও প্রমাণ্ প্রমাণাশ্র লোমকুপ্বিবর গ্রাক্ষ্যা মহাপুরুস্যাপ্যংশিন-ন্তব তৎ কথং স্যাদিতি ভাব:। স্নোক্ষয়েহ মিন্ সগুণ্স্য শ্ৰীক্ষ্ঠস্যেৰ মহিমি হৰ্মোধাতিশয়ো দৰ্শিত:। তম্মাদপ্যনেন কৃতবিবৃতাব-স্যাপি দেববপুষ ইত্যত্র নিশু পদ্য বন্ধণো নাদাবন্ধীক্বত:। এতব্যাহ্নসারেণ বিরাট্প্রতাবন্ত স্বতো বহিভূতি এবেতি। দোহপি নাদৃত:। তঁলাত্তৈরপাস্যাপীত্যাদি লোকব্যব্যাখ্যাব্যমিতি পূর্বপক্ষত্যা দর্শবিদা লোকব্যে ছলির তরপক্ষ: ক্লত ইতি নাসামঞ্জ্য মস্তব্যং॥ ৭॥

### 🖫 বিশ্বনাথচ ক্রবর্তী।

ন শকু বৃত্তি বদি ন মে জগজ্জনা অন্ধাদয়ত্বং পশ্যস্থো হপি ন জানস্তীতি কিং বক্তবাং তব মহামধুরান্ গুণানপি সংখ্যাত্মপি ন শকু বৃত্তি তথাধুৰ্য্যান্থভববাৰ্তা দূরে বৰ্ততামিত্যাহ গুণা আত্মানং শ্বরপভূতা বস্যেতি গুণানাং নিত্যমঞাকৃতহঞ্চোকং। তথাচ বন্ধতিকে। গুলাই কি জানিব ইতি । অপি হর্পে গুণাত্মনন্ধ তব গুণান্ বিমাতৃং এতাবন্ধ ইতি গণিয়তৃং কে ঈশিরে শকু বৃত্তি অপিতৃ নৈব। আমভাব আর্বং। অস্য বিশ্বস্য হিভার সংসাররোগনিবৃত্তরে অবতীর্ণস্য বেতি বিতর্কে। যৈঃ স্করের রতিনিপুণ্ডাং সন্ধর্ণাদিভি ভূপ্রমাণবোহপি বিমিতা গণিতা ততোহপ্যধিকাঃ ধে মিহিকা হিমকণা অপি তথা ততোহপ্যধিকাহ্যভাগ: দিবি স্থ্যাদীনাং কিরণপ্রমাণব গুণাপি তে সন্ধর্ণাদ্যা যান্ অদ্যাপি গারস্তো গায়স্ত স্টামানং নৈবাগু বৃদ্ধীত্যর্থ:। যহা গুণে জিগুণমন্ধে জগতি আত্মা পালনার্থং মনো যস্য তথা ভূতভাপি তব গুণান্ বিমাতৃং ন ঈশিরে কিং পুনগুণাতীতমহাচমৎকারি দ্বি চৌর্যাদি ক্রীড়াজুন ইতি॥ १॥

তোমার গুণের বিশ্লেষ বিষরণ দূরে থাকুক "তাহা এক পরিমাণ" বলিয়া গণনা করিতেই বা কোন্
ব্যক্তি সমর্থ হইবে ? ভগবন্। যে সকল নিপুশব্যক্তি বহু জন্ম ও বহুকালে ভূমির পরমাণু আকাশের
হিমকণা এবং স্বৰ্গন্থ নক্ষত্রাদির কিরণপ্রমাণু গণনা করিতে পারেন, তাঁহারাও আপনার গুণ গনপায়
সমর্থ নহেন॥ ৭॥

তত্ত্বেহসুকম্পাং স্থসমীক্ষমাণো ভূঞ্জান এবাত্মকুতং বিপাকং। ছন্ধাগ্বপূর্ভি বি দধন্নম স্তে জীবেত যো মুক্তিপদে স দায়ভাক্॥ ৮॥ পশ্যেশ মে ২নার্য্যমনস্ত আদ্যে পরাত্মনি ত্বয়পি মায়িমায়িনি।

# वीधत्रश्रामी।

তমাছজিবেব সঙ্গছত ইত্যাহ তত্ত্বেহমুক স্পামিতি। স্থামীক্ষাণা কদা ভবিষ্যতীতি বহু মন্যমানঃ স্থার্জিতঞ্চ কর্মফলমনাসকঃ সন্ ভূঞান এব নাতীব তপ আদিনা ক্লিশ্যন্। এবং যো জাবেত সম্জৌ দায়ভাগী ভবতি ভক্তস্য জীবনকাতিরেকেণ দায়প্রাধাবিব মুক্তৌ নান্যহ্পযুজ্যত ইতি ভাবঃ॥৮॥

তদেবং স্থবা ভগবস্তং ক্ষমাণয়িতুং স্থাপরাধং নিবেদয়তি পশ্যেতি। হে ঈশ মে অনার্য্যং দৌর্জন্যং পশ্য যদহং মায়িনামিপি মায়িনি

## देवस्थ वरकायणी।

তত্ত ইতি। এব শব্দো যথাপেক্ষমগ্রেহপারবন্ধনীয়:। আত্মনা ক্রতমর্জিতমিত্যবশ্যভোগ্যতোক্তা। অতত্ত্ব স্থবহংথাদিক-মমন্যমান ইত্যবঁ:। বিপাকং বিবিধকর্মকলং। পুরেহ ভ্মন্নিত্যাদি রীত্যা তিনিধকথয়াভিক্চিতীক্বতায় ভূভাং হ্বায়পুর্ভিন মো-বিদধদিতি তত্র স্বাশক্তিং কুর্মন্নিতি ভাব:। উপলক্ষণগৈতকৈন্যাল্মকস্য ভক্তান্তরস্য মুক্তিনামকং পদং চরণারবিলং। যেনাপবর্গাধ্যমদ্রবৃদ্ধি ভেঁজে থগেল্রধ্বজপাদমূলমিতি প্রথমে। যরা। অত্ম সর্গোবিসর্গণ্চ ইত্যাদৌ নবমপদার্থক্রপাল্ম শুক্তেরপি পদে আশ্রমে দশমপদার্থকিপে। দশমে দশমং লক্ষ্যং ইত্যাদি নির্মীতে দ্বি স দায়ভাগ্ ভবতি ভাতৃবৃদ্ধন ইব স্বমেব তস্য দায়ত্বেন বর্ত্তমে। অতো বরাক্যা মুক্তেরণি কা বার্তা ইত্যর্থ:। অত্ম তদাধ্যায়াং নান্যদিতি বৃদ্ধিপৌক্ষাদিকং নিষিদ্ধং তনিনাপি জীবর্তঃ প্রস্যু দায়প্রাপ্তেঃ অত্যাপি জীব্রং ভক্তিমার্গস্থিতহং জ্ঞেয়ং দৃত্য ইব শ্বস্থীত্যাহ্যকেঃ॥ ৮॥

ভত্ত জ্ঞানস্যাপ্রযোজকতে স্বর্মের দৃষ্টাভীকুর্কন্ ততৈত্ব স্থাপরাধমপি ক্ষমাপরিত্মুপক্রমতে পশ্যেতি। স্বার্যায় স্ক্রন স্তস্য ভাবঃ

#### क्रममन्दः।

তত্তে ইতি॥৮॥

পশ্যেতি আর্য্য: স্থলন ন্ত্রণ্ড আর্য্যং তেন বিজ্ঞানপি গম্যতে। তিছিপরীত্মনার্য্যং দৌর্জন্যং মৃত্ত্বঞ্চ তত্তদৌর্জন্যমাহ।

# শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

তদেবমন্যৎ সর্ব্যাধনং পরিত্যক্তা ভক্তিমেব কুর্বাংগু লভতে ইতি প্রকরণাথোহবগত স্তত্র কীদৃশঃ সন্ কুর্যাদিত্যপেক্ষায়ামাহ তত্তে ইতি। যত্মাদেবং তত্ত্রতা প্রিকাশ ধর্মায় হাপবর্গ্যা নাথোহথায়োপকল্পতে ইত্যত্র প্রতিপাদিতং ভক্তেরপানস্থ সংহিত্তকাং তদপরাধকলং হংথক ভ্রানএব তং তবামকল্পাং স্কৃষ্ সুমাগীক্ষাণঃ সময়ে প্রাপ্তং স্থং হংথক ভগবদক্ষণ্পাকলমেবেদ্নিতি জানন্। পিতা যথা স্পুত্রং সময়ে সময়ে হয়ং নিধরসক কপদ্মৈর পায়য়তি আশ্লিষ্য চুম্বতি পাণিতলেন প্রহরতি চেত্যেবং মম হিতাহিতং পুত্রত্ত পিতেব মংপ্রভূরের জানাতি নত্ত্বং ময়ি স্তর্ভেক নাজি কালক্ষাদীনাং কেষামপাধিকার ইতি সএব ক্লপরা স্থ্রুংথে ভোজয়তি চ। ত্বং সেবয়তি চেতি বিম্পা। যথা চরেবালহিতং পিতা স্বয়ং তথা ত্মেবার্হ দি নঃ সমীহিত্মিতি পৃথুরিব প্রত্যহং ভগবস্থং বিজ্ঞাপয়ন্ ক্লাদিতি ন সমুর্বাদ্ নাতীব ক্লিশান্ যো জীবেত স মৃক্তিন্চ পদ্ধ তয়ো দ ক্লিং তল্পন্ সংসারম্কেটা স্ক্রবান্তি বিষয়ায় দায়প্রাপ্তেটা জীবন্দমের কারণং তথা ভক্তস্য জীবনং তচ্চেই ভক্তিমার্কে ছিতিবের দৃত্র ইব শ্বস্থাস্থ্ত যুদ্ধি তেইছবিধা ইত্যাহাকেরিতি ভাবঃ॥ ৮॥

অহত ভক্তিলেশনপি ন কুর্বে প্রভ্যতাপরাধপ্রমেবেতি সাহতাপমাহপশ্যেতি। ছে ঈশ মে অনার্য্যং আর্য্য: স্কানা বিজ্ঞান

পরস্ত আপনার অমুকম্পা নিরীক্ষণ করিয়া আর্থাৎ কবে আপনার দয়া হইবে এই প্রতীক্ষায় স্বোপার্জিত কর্মফল ভোগ ও কায়মনোবাক্যে স্থাপনার প্রতি নমস্কার রচনা কর্ত্ত যে ব্যক্তি জীবিত থাকেন, তিনিই মুক্তি বিষয়ে দায়ভাগী হমেন, ফলতঃ ভক্তব্যক্তির জীবন ব্যতিরেকে অন্য কিছুই দায় প্রাপ্তিবৎ মুক্তিবিষয়ে উপযোগী নহে ॥ ৮॥

হে রাজন্ ! ত্রহ্মা এই প্রকারে ন্তব করিয়া পরে ক্ষমা করাইবার নিমিত্ত আপনার অপরাধ নিবে-

# প্ৰিমন্তাগৰতম্।

२५०

মায়াং বিতত্যেকিত্মাস্কবৈতবং হৃহং কিয়ানৈচ্ছমিবার্চিয়গো ॥ ৯॥ • অতঃ ক্ষমস্বাচ্যুত মে রজ্যেভূবো হৃজানত স্তুৎপৃথধীশমানিনঃ।

### औधत्रवामी।

বিনোহকে ছব্যপি অনারাং প্রদার্থানৈ অধ্যানীকিছুং ঐচ্ছং অভিলবিতবান্ অহো এবং কর্তুং ছব্যহং কিয়ান্ন ক্ঞিৎ যথা অগ্নৌন কিঞ্জিতবং ॥ ১ ॥

রলোভুবং রজনো জাতস্যাতোহজানতঃ অত্বএবাজাবলেপাক্ষতমোহকচকুবঃ অজো জগংকর্তাহমিতি মদেন গাঢ়তমো রূপেণাকী-

# देवक्षवरञावनी।

আর্ব্যং তত্ত্ব বিশ্বস্থাপি ক্রোড়ীকরোতি অতন্ত বিপরীতং দৌর্জন্যং মৃঢ্বং চানার্ব্যং পশ্যেতি তদ্য প্রাকট্যাদিকং বোধিতং। তত্ত্ব কিলে অপ্রভৌ তত্ত্ব চাদ্যে পিতরি ব্যাপি দৌর্জ্জাং অনত্তে অপরিচ্ছিন্ননিহিন্ন পরাশ্বনি আ্বানাংপ্যাশ্বনীতি মৃঢ্বং তত্ত্বজ্ঞানত্বেং পি নায়িমারিনি মায়াং বিতত্যেতি পরমমৃঢ্বং কিং তৎ আল্বনন্তব বৈভবং মাহান্ব্যামীক্ষিত্বং কৈছেং বং। ত্রস্তুং মঞ্মহিদ্বমন্ত পশিত্যা হিছে কিলান ক্রাক্তি নায়াং বিত্তা ত্রস্তুং কিলান কো ব্যাক্তিয়া। হি নিশ্চরে। নম্ন মাহাল্মাং ত্রস্তুং চেত্রহি কো দোষ ক্রতাহ দ্বাহাহায়াং ত্রস্তুং তত্তাপি মান্নাং বিত্তা ত্রস্তুং কিলান কো ব্যাক্তাহায়িত কির্বাহান ক্রেট্র ক্রিট্র ক্রেট্র ক্রিট্র ক্রিট্র ক্রেট্র ক্রেট্র

#### क्रमन्दर्धः।

আলো খব্যপীতি। মৃত্যং অনতে পরাক্ষনীতি পরমমৃত্যং মারিমায়িনি মারাং বিতত্যেতি বদ্যপি এটুং মঞ্মহিওমিত্যুক্তং তত্রাপি অপর্বং পর্যবদ্যতীত্যাহ আহ্রেতি। কির্থে দৃষ্টান্তঃ। অন্যৌ আচি রিবেতি। বিক্ষোন্ত নীণি রূপাণি ইত্যাদ্যস্পাবেণ প্রথমপুরুষত্যা স্তৌতি ॥ ৯ ॥ ১০ ॥

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

গুদ্য ভাব আর্ব্যং তিবিপরীতমনার্ব্যং দৌর্জনাং মৌচ্যঞ্চ পঞ্চেত্যবধার সম্চিতং দণ্ডং ক্ষমাং বা কুক্লাভথা মাদৃশানাং দৌর্জভ্মোচ্চে এব বর্দ্ধিয়াতে ইতি ভাবঃ। কিং তলোর্জনাং মৌচ্যঞ্চত্ত আহ আদ্যে ক্ষান্যভাবং পিতরি তলাপি হরি হথেন সহচরৈঃ সহ ভূজান দৌর্জনাঃ। অনতে ২পরিছিইরবর্ব্যে পরান্ধনি আন্ধানাংশ্যাক্ষনীতি মৃচ্তং। নারিমাধিনীতি প্রমম্চ্তং। এবভূতেংপি ছির মাদাং প্রাব্ধি আহিশ্বর্ধ্য মীকিত্ মহনৈছেংহি অহো অহং ছিরি কিয়ান্ কিম্পরিমাণকঃ অর্চি জ্বালা যথা মহাগ্রেকভূষ তমেব দগ্রুবিছেং॥ ৯ ॥

দৌর্জন্যাচিত্তন্য দশুস্য মৌলোচিতারা: ক্ষমারাশ্চ সম্ভবেহণি মহাক্রণালোত্ত্ব ক্ষমবোচিতেত্যাহ অত ইতি। হে অচ্যুত্ত বৃত্ত তঃ সহাক্রণান্বাণিগুবেন্তান্ত্যতিরহিতঃ অহঞ্চ মহানীচঃ অতো মমাণবাধ্ধ ক্ষমত্ব। নীচে দ্বাধিকে স্পর্কেতি নীতেরিতি ভাবঃ বি নহানীচন্ত্রমাধ্ রক্ষোভূবঃ ক্লেবেন রজসো ধূলেঃ পুত্রস্য অত এবাজ্ঞস্য অতএব হৃতঃ পৃথগেব ঈদূশো হৃহমিত্যতিমানবতঃ। ক্লিবামিন্থ বির্ণোতি। অকাবলেশঃ অক্সত্তব্যক্ত এবাজ্ঞতমঃ স্মানাত্রাভাব আর্বঃ তেনাত্মানি চক্তৃংবি যস্য। তেন মরি তং-

দন করত কহিলেন হে ঈশ ! আমার দের্জিন্য দেখ, তুমি অনন্ত, আদ্য, পরমান্ধা, মায়াবিদিগেরও মোহনকারী, আমি আপনার, প্রতি স্বীয় মায়া প্রসারণ করিয়া আত্মৈশ্বর্য নিরীক্ষণ করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলার। অহো ! যুঁজাপ অমি হইতে উথিত শিথা অমির প্রতি কোন কার্য্যকর হয় না তজ্ঞপ আপনার প্রতি ঐ রূপ করিতে গিয়া আমি কিঞ্ছিৎকরও হইতে পারি নাই ৮৯॥

হে অচ্যত! আমি রজোগুণে উৎপম হইয়াছি এ কারণ অভ্ত, স্কুতরাং তাহাতে আমার নেত্রের স্কীভূত হইয়াছে,অভএব 'আপনা হইতে আমি পৃথক ঈশর' এই রূপ অভিমান করিতেছি। প্রভো!

অজাবলেপান্ধতমো শ্বন্ধচকুষ **এবোহসুকল্প্যা ময়ি নাধবানিতি ॥ > ॥**কাহং তমোমহদহং খচরামিবা**স্ সম্বেছিতাওখটনগুৰিত** জিকায়ঃ।
কেদ্যিধাবিগণিতাওপরাণুচর্যা বাতাধ্বরোক্ষবিবর্ম্ম চ তে মহিছং॥ >> ॥

### श्रिभाषां मी।

স্থাতে নেত্রে যদ্য অতত্ত তঃ পৃথগীশমানিনঃ। অন্যত্ত প্রেভুজেন বর্তমানোহপি মন্নি নাথবান্নস্ত্ত্য এব অত এবোহমুকল্প্য ইতি মতা কমস্বেতি॥ ১ • ॥

ব্ৰহ্মাণ্ড বিপ্ৰহত্ত্বপূৰ্ণীৰ্যৰ এবেতি চেৎ তত্ত্বাহ কাহমিতি। তমঃ প্ৰকৃতিম হান্ অহম্বারঃ খং আকাশং চরো বাষুঃ অধিবেজঃ বাৰ্জাল ভূচ প্ৰকৃত্যাদি পৃথিবটেন্তরে সংবেষ্টিতো যোহণ্ড্ৰটঃ সত্ৰৰ তামিন্ব। আত্মানেন সপ্তবিত্তিকায়ো যদ্য সোহহং ক কচতে মহিত্বং কথং ভূতদ্য ঈদ্ধিধানি যান্যবিগণিতানি অণ্ডানি তান্যেব প্রমাণৰত্তেষাং চর্যা। পরিশ্রমণং তদর্থং বাতাধ্বানো গ্রাক্ষাইব রোম্বিবরাণি ৰদ্য তব অতোহতিত্ত্ত্বাৎ ক্ষাহ্তক্ষ্পোহহ্মিতি॥ ১১॥

### देवकवट्यावनौ ।

ত্যাহ অন্তেতি। হি প্রসিদ্ধৌ। দ্বমপি জানাসীতি ভাব:। হে অচ্যতেতি দ্বমেবাচ্যুতনামা। অতঃ স্কুদেব প্রপদ্ধোৰ ইত্যাদি রূপ-ব্রতাদপি ত্বাচ্যুতি বোঁগ্যেব। অস্থাকঞ্চ তন্নামতানহ দাদেব তাদৃশচ্যুতিরপি ন সম্ভবতীতি ভাব:। এবোহ্যুক্শ্নাঃ কঞ্চ নাখ-বানিতি দাদ ইত্যেবং। নমু প্রমেটিন তব দাস্তং কিমর্থং ত্রাহ মন্থিত। ভগবতি নিমিত্তে মদেকপ্রাপ্তাধমিতি॥ ১০॥

অহো অতিকৃত্ততানাংহং পরমনহন্তমং স্থাং ক্ষমন্তিকৃষণি নার্হামি। বত আস্তাং তাবং সর্বপ্রপঞ্চাপ্রপঞ্চবাস্পেবস্থং সর্ব-প্রপঞ্চনাথবেছণি দত্তো মন বহরত্তরমিতি বক্তৃং সম্বর্ধণবিশেষমহংশ্রেই প্রথমপুরুষদ্বেন স্তৌতি কাহমিতি। ব্রহ্মাণ্ডস্য ঘটরূপকৃত্বং স্বর্ধনাত এব নশ্বরতাভিপ্রায়েণ কায়ত সপ্তবিভন্তি মিক্সপুরুষদ্বিবক্ষরা মহাপুরুষত্ত কুনব বিভন্তিতানেক ইতি মৃহং স্পত্তিপ্রবার্মের নির্ক্রম প্রবেশাভ্যাং ঈদ্ধিধেত্যান্ত্যকং রোমবিবরস্বং স্ক্রভনৈকদেশস্থং। তত্তকং প্রীবিক্সপুরাণে। বস্তাযুত্তাংশাংশে বিশ্বশক্তিবিয়ং হিতেতি। মহিন্ধং মাহান্ত্যাং অতঃ স্বয়মেবাস্ক্রপাং কর্তৃ মহ্ণীতি ভাবং॥ ১১॥

#### ক্রমসন্ধর্তঃ।

কাহমিতি দিতীয়পুরুষতয়া স্থোতি॥ ১১॥

### ञीविधनाशहक्ववर्षी।

কারণ্যচন্দ্রোদরেনৈর মদার্শ্রতমস্পরতে সতি তং দৃশ্যো ভবিষ্যসি নান্যথেতি ভাবং। কেন বিচারেণ ক্ষমে ইভি চেওজাহ। এব এখা অহকল্যো মদহকল্পার্হ: যতো হন্যত্র নাথভাভিমানবামপি ময়িত্ নাথবান্ দাদ এব। বুখা বৌল্যাম্ব্যপি স্বাভন্তঃং কুর্মিরপি বস্তুতো মুমায়াধীনতাৎ অধীন এবেতি মভা। প্রতন্তঃ প্রাধীনঃ প্রবাল্যথবানপীত্যমরঃ॥১০॥

নমু বিশ্বস্তানি প্রসিদ্ধ এব নহমীশমানী মম তু কিনৈশ্বগ্যং তদ্জহীত্যত আহ কেতি। তমং প্রকৃতিশ্চ মহাংশ্চ অহমহন্দারশ্চ থমাকাশঞ্চ চরো বায়্শ্চ অগ্নিশ্চ বার্জলঞ্চ ভূশ্চেত্যেতি স্তব্ধে সংবেষ্টিতো বো হত্তবট স্তান্ধিস্পাতালাদি সভাবোকাইক্সং স্বশানেন সন্তানিক স্থানিক বিজ্ঞান্ধি কান্ধি কান্ধিক কান্

"এ ব্যক্তি অন্যত্র প্রভুত্ব রূপে বর্ত্তমান হইলেও আমারই ভৃত্য অতএব এ আমার অমুকম্পানীর" মনে করিয়া আমাকে ক্ষমা করুন ॥ ১০॥

ভগবন্! প্রকৃতি, মহৎ, অহন্ধার, আকাশ, বায়ু, তেজঃ, জল এবং পৃথিবী এই দকলে পরিবেদ্ স্থিত যে অগুঘট, তাহাতে আত্মপরিমাণে সপ্তবিততিমাত পরিমিত আমার শরীর, আমি কোথার? আর তোমার মহিমাই বা কোথায়? অতএব ব্রহ্মাণ্ড বিগ্রন্থ বিলাম আদি আপনাকে ঈশর বলিতে পারি না। ব্রহ্মাণ্ড আমার শরীর বটে কিন্তু এতাদৃশ অসংখ্য ব্রহ্মাণ্ডরূপ পরমাণু সকলের পরিজ্ঞান্ নার্থ গ্রামান্ত আমার শরীরের প্রভাকে রোমবিবর, অতএব আমি অভিকৃত্য, আমাকে অক্কম্পা কর॥ ১১॥

SRS

উৎক্ষেপণং গর্ত্তগতক্ত পাদয়োঃ কিং করতে মাতৃরগোক্ষাগনে ।
কিমন্তি নান্তি ব্যপদেশভূষিতং তবাতি কুক্ষেঃ কিষ্কাপ্যনন্তঃ ॥ ১২ ॥ ।
কগত্রয়ান্তোদধিসংপ্লবোদে নারায়ণক্ষোদরনাভিনালাৎ।

### विधंत्रवामी ।

অণিচ গর্ত্তগতস্য শিশোঃ পাদরোকংকেপণং মাতৃঃ কিমপরাধায় ভবজি লোকেইন্তি নান্তি ব্যপদেশাত্যাং ভাবাভাবশন্ধাত্যাং স্থ ক্ষ কার্য্যকারণ শইন বা ভূষিতং অভিহিতং এতেবাং শন্ধানাং ভূবি বিষয়ে উষিতং হিতমিতি বা সর্বাং বন্ধি ত্র্তার্থঃ। হে অধোক্ষ তব কুক্ষেরনতঃ বহিঃ কিরদ্পি কিঞ্জাত্রমণি কিমন্তি ন কিঞ্চিন্তীত্যর্থঃ। অতঃ সর্বস্য বংকুক্ষিগতত্বন মমাণি তথাত্বাং মাতৃবদপরাধঃ সোচ্ব্য ইতি॥ ১২॥

কিঞ্ বিশেষতোহপি ঘতো মম জন্ম প্রসিদ্ধমিত্যাই জগত্রয়েত্যাদি। জগত্রস্তাত্তে প্রসন্মে য উদধীনাং সংপ্রবঃ সংপ্রেষ তামিদুদে

### देवकवरलावनी।

কিঞ্চ মাদৃলৈঃ ক্রিরমাণোহণ্যপরাধ ত্বরি ন বটেতৈব যততাদৃশানস্তকোটিএকাতানাথোহিপি ত্বলম্বস্থল এতদৈকএকাতামণি মাতেবোদরে বিধার বিরাজস ইতি বিতীয়পুরুষভেদহিরণ্যগর্ভাত্তবামি প্রজার বিশেষ পুরুষভেন ভৌতি উৎক্রেপণমিতি। অধোক্ষজেতি অনিযম্যতেনাধাক্রতং ,অক্রজমিক্রিরং সামার্থ্যং যেন হে ভাদৃশেতি মমেক্রিরজ্ঞাণি ত্বশতার বিরি মৃচ্চে দীনেনহপরাধো গৃহীতব্য ইতি ভাবাঃ। ক্রিশেলনাত্র সমষ্টিজীবস্য স্ক্রদেহ হিরণ্যগর্ভ স্থা দেহরূপ বিরাজো ব্যাপকোহচিত্তাপক্তিমর তাদেহ এব উচ্যাতে॥ ১২॥

বিশেষতশ্য ক্বপরা পিতৃতামপি প্রাণ্ডেন ছরা কন্তব্যমেবেতি বিভীনপুক্ষভেদান্তরানিক্ষবিশেষবিরাভন্তর্বামিপুক্ষভেনাপি ভৌতি জগজনস্য সাবরণজন্ধাঞ্জনাত্তে প্রাক্তপ্রলয়ে তদবসানে ইত্যর্থ:। তত্র ব্রহ্মকরাটো যহুদধিসংপ্রবস্যাদমনপিষ্টমুদক্ষ তত্ত্বেত্যর্থ ইতি তেরামভিপ্রান্ন:। বহা জগজনস্য যোহন্ত: সর্বাধোভাগ তার বহুদধি সংপ্রবোদকং গর্ডোদকং পর্ত্তোদাধ্য একার্ণব তারে-ত্যেবার্থ:। ব্যাধ্যান্তরং। ব্রহ্মণো জন্মকালং ব্রহ্মকরাদিকং ন বোধয়তি ইতি উদ্বশেষ ভাদানীং তদগভং সর্বাং প্রচরতি নালং ক্ষলদাধ্যকেন কমলং লক্ষ্যতে। বহা। নলিনে তু নলং মতমিতি বিশ্বকোরালাং কমলং। স্বার্থে তছিত:। ভশ্বাং তুশকোনাঞ্জতো বিশেবং

### क्रममन्दः।

উৎক্ষেপণ্মিতি। তত্ত্ব স্থাস্থ্য বিশেষতঃ পুত্রস্থমের স্থাপরতি ॥ ১২ ॥ স্বপ্রয়েতি । পুন: সম্ভুমেণ তাভ্যাং বৈশিষ্ট্যং বদরপি তৎপুত্রস্থমের স্থাপরতি ॥ ১৩ ॥

#### विविधनार्थहळावर्खी।

কিন্ধ সমাপরাধো হবশানোচ্বো যত সং মাতেতি। বিতীরপুক্ষরেশ পল্পনাতিন সহৈক্যং ভাবয়রাহ উৎক্ষেপ্ণনিতি। পর্ত-গত্যা শিশোঃ পাদরোক্ষৎক্ষেপ্পং মাতৃঃ বিমপরাধার ভবতি নৈব। অতীতি নাতীতি বা বাপদেশেন ভ্বিতং পরমতং বিধত্য সমত-হাপনসমূচিতোপপত্তিভিঃ সত্যাবেন মিধ্যাবেন বা অন্থিরীকৃতং বন্ধ ক্ষাত্রপং কিয়দ্পি একস্তৃবনাত্মকম্পি কিং তব কুক্ষে রন্ত-ব কিরতি অধি স্বত্তরের অভ্যে মবাপি তথ কুক্ষিলভন্তাৎ প্রস্য মাত্রা ত্বা অপরাধ্য সোচ্ব্য এব পিতাহ্মস্য ক্ষাত্রা মাতা ধাতা পিতা-মহ ইতি স্বত্তেরিত্যর্থঃ ১২ ॥

্লছ প্রে হি নাতৃঃ কুন্ধেককাজ্ঞতি। , নতু নদা কুকাবেব চিঠেতীতি চেকত জাহ। অগুনায়স্থাৱে প্রাক্তি উদ্ধীনাং সংগ্রহ

ত্বে অংশক্ষ । গর্ভত শিশু জননীর জঠরে থাকিয়া যে পাদ বিক্ষেপ করে তাহাতে কি জননীর প্রতি তাহার অপরাধ হয়। লোকে ভাব অভাব শব্দে অভিহিত যত বস্তু আছে তথ্যখ্যে কিকিয়াত্র বস্তু আপনার কৃষ্ণির হৃদ্ধিয় নহে, সত্ত্ব সমস্ত বস্তু আপনার কৃষ্ণিক হওরাতে আমিও আপনার কৃষ্ণির সম্প্রতিক্ষণানীর নামে আপনাকে আমান অপনাধ সহা করিতে হইবে॥ ১২॥

হে ঈশর! "ত্রিজগতের অত্তে অর্থাৎ প্রলয়কালে যথন সাগর গণের পরস্পার সন্মেলন হয় তথন জর্ম-শারি মারায়পের উদয়ত নাভিনাল ত্তিটো বিনিগতি হয়েন? তেই যে একটা প্রদাদ আছে ভাহা বিনির্গতো হজন্তি বাঙ্ন বৈ মুষা কিং শ্রীশ্বর ত্বন বিনির্গতোহিশ্ন ॥ ১৩ ॥ । নারায়ণন্ত্রুং নহি সর্বদৈহিনামাত্মান্ত্রশীশাধিললোকসাক্ষী।

### • श्रीभवयात्री।

উদকে নারায়ণস্যোদরে নাভিস্তস্যা নালাৎ অজাে বিনির্গত ইতি যা বাক্ সা তাবক্স্যা ন ভবতি বৈ নিশ্চিতং তথাপি হু হে ঈশ্বর ত্তঃ অহং কিং ন বিনির্গক্তোহন্মি নোৎপল্লেহন্মি অপিতু ত্তত এবােৎপল্ল ইত্যথ:॥ ১৩॥

তহি বং নারারণস্য পুল: স্যা: মম কিমায়াতং তত্রাই নারায়ণস্থমিতি। নহীতি কৃষ্কা স্থমেব নারায়ণ ইত্যাপাদরতি। কুতোহয়ং নারায়ণ ইতি চেদত আহ সর্বদেহিনামায়াদি। এবমপি স্বং নারায়ণো ন ভবিদ নারং জীবসমূহোহরনং আশ্ররো ষস্য স তথেতি স্থমেব সর্বদেহিনামাম্মসালারায়ণ ইতি ভাবং। হে অধীশ স্বং নারায়ণো নহীতি পুন: কাকু: অধীশ: প্রবর্ত্তক: ততক্ত নার্স্য স্থয়নং

### देवस्थवरकावनी ।

বোধয়তি বিনাপি মাতৃব্যববধানমুংপল্লম্বাৎ। অন্তএব বিশব্দদ অতএব নির্গত ইতি চির্মুদ্রান্তঃস্থিতিঃ হুঁচিতা। হে ঈশ্বরেতি পুন-র্ভগবতি পিতৃদৃষ্টিমধোগ্যাং মন্বা॥ ১৩॥

• অঙ্গং তবৈৰ ৰূপং একং অতে। মুধ্যক্ত নারায়ণক্ত তৰাঙ্গভাদেৰ তক্তচ নারায়ণকং নারাশ্রমকেন তু গৌণমিত্যাহ তচ্চেতি। অতো ইচিন্তাশক্তৈয়ব তিৰিগ্ৰহক পরিচ্ছিনাপরিচ্ছিন্নত্বং নতু নারাশ্ররত্বেন নারপরিচ্ছিন্নত্বিতি ভাবঃ। অন্তর্ভৈরে। তত্ত্ব তচ্চেতি জলাদ্যাশ্রয়ত-মিতার্থ:। বহা। পুন তত্ত প্রতাবব্যাজেন তাদৃশে শ্রীকৃষ্ণ এব অবাস্তরপ্রকরণমিদং পর্য্যবসারয়তি অধীশ ঈশো মহৎ্স্রস্তা প্রথম: পুরুষ: হে স্বয়ং ভগবস্থাপ্তস্থাপুনি বিরাজমান। যথোক্তং বিতীরে। আন্যোহবন্তার: পুরুষ: পরস্তেতি। তৈব ধ্যাতঞ্চ। পরস্য ভূয়: প্রকৃতি প্রবর্তকঃ ৰস্য সহস্ৰ শীৰ্ষেত্যাত্যকৌ শীলাবিগ্ৰহ: স আদ্যোহ্বতার ইতি। অতো নুরাণাং তৃতীরপুরুষভেদানাং তত্তমূতস্থানাং তথা তত্তদণ্ড-,সংস্থিতানাং বিতীয়পুরুৰভেদানাঞ্ সমূহো নারং তচ্চ তৎসমষ্টিরূপো মহৎত্রটিৰ ততত্ত্বসাপায়নং প্রবৃতির্যন্তাদিতি স দমেৰ মুখো নারায়ণ ইতার্থ:। অত: নর্বদেহিনামাঝা দর্বভৃতত্ত্তীয়: পুরুষ: তথাধিললোকদাক্ষী অওছ্দিতীয়পুরুষ:। তথা নরভ্জলা-রনাৎ নরাজ্ঞাতানি তবানি ইত্যত্সারেণ যে নর ভূবো মহদাদয়: তৎ সাহিত্যপাঠাৎ জনক নর প্রভব্মেব ততো আপো নারা ইত্যাদ্য-কুসারেণ তজ্ঞপশ্চাপো যঃ কারণজ্ঞাণ্বস্তদাশ্ররভাগ। প্রথম পুরুষশ্চ যো নারারণঃ স ভং হি নিশ্চিতং নাসি কিন্ত তত্তজ্ঞপো নারারণ-ন্তবাদং দং পুনরদীতার্থ:। যথোক্তং। বিফোর ত্রীণি রূপাণি পুরুষাধাান্তথো বিহু:। প্রথমং মহতঃ প্রষ্টু দিতীয়ং বওসংহিতং। তৃতীয়ং সর্ব্বভুতত্বং তানি জ্ঞাত্তা বিমৃচ্যতে ইতি। অতত্তদকোৎপল্লছাদপি তবৈব পুত্রো ভবেরমিতি ভাব:। এবমেব দ্বিতীয়ে। ভূমেঃ স্থরেত-ন্মেত্যাদে কল্মা সিতক্ষ্ণকেশৌ জাত ইত্যাদে শ্ৰীবন্ধবাক্যে য়ং সিতক্ষ্ণকেশং যত্ৰ তত্ত্বৰ্ণস্থচকে সিতক্ষ্ণী কেশৌ দেবৈ দ্'ষ্টো সোহপি যস্যাংশেন স স্বয়মেব জাত: স্ত্রিত্যর্থ:। সিতক্বফকেশত্বঞ্চ মোক্রধন্তীরনারারণোপাথ্যানদর্শিতনানারশ্বিছ্ববিষয়তাং। তথাচ সহস্রনামভাব্যধৃতং ভারতীয়ং শ্রীভগবহচনং। অংশবো বে প্রকাশন্তে মম তে কেশসংক্ষিতা:। সর্বক্সাঃ কেশবং তশারামাহ মু নি-সত্তযেতি। এবমের প্রথমে। জগৃহে পৌরুষং রূপং ভগবান্ মহদাদিভিঃ। সস্কৃতং বোড়শক্লমাদৌ লোকসিস্ক্রা। ষস্যাস্থসি শরানস্য ষোগনিজাং বিতৰ্ত:। নাভাছ্ৰাৰ্থাদাশীৰু কা বিশ্বস্তাং পতি:। বদ্যাব্যবদংস্থানৈ: করিতো লোকবিন্তর:। ভবৈ ভগবতো রূপং

### ক্রমসন্দর্জঃ।

নারারণবং হবা জাধীশ প্রথমপুরুষস্যাপ্যপরি বর্তমানো সারারণত্থ। নরাণাং বিতীয় তৃতীর পুরুষভেদানাং সমূহো নারং তথ শীবিশ্বনাণ্চজবর্তী।

একীভাব তত্ত্বকে। অক্সৰিতি অনো নিৰ্গতো হস্ত নবাস্থিত। সু ভো তদপি স্বজোহং ন বিনিৰ্গতঃ স্থাপিতু নিৰ্গত এবে-ভাৰঃ॥১৩॥

ভর্তি বং নারায়ণস্য প্র: স্যান্তেন মন কিং জ্ঞাহ নারায়ণত্বং ন হীতি কাকা নারায়ণো ভবস্যেবেতার্থ:। হে অধীশ দ্বীশানাম্বারিপতে। বিইতাহিমিদ কংলমেকাংশেন স্থিতো শুলগদিতি দহকে: সর্বদেহিনামান্ত্রাসি আন্তর্গানিকালারা সাকীচেত্যক ত্রেকাংশ এব সোহবগরাত ইতি দ্বেন স ইত্যর্থ:। নম্ন ব্রহ্মহণ ক্ষরণ মিধ্যা নহে, কামেণ আমি কি আপনা হইতে উৎপন্ন হই নাই ? অর্থাৎ আপনা হইতেই সামান্ত্র ইতি হুইরাছে। ১৩ ॥

ছে অধীশ! স্পাপনি কি নারায়ণ নহেন ? আমি নিশ্চয় কছিভেছি আপনিই নারায়ণ, বে

# নারায়ণোহঙ্গং নরভূজলায়নাত্রজাপি সত্যং ন তবৈব মায়া ॥ ১৪ ॥

### **औ**धत्रश्वामौ ।

প্রবৃত্তি র্যাদিতি স তথেতি পুনস্থমেবাসাবিতি। কিঞ অমথিললোকসাক্ষী অথিলং লোকং সাক্ষাৎ পশ্চসি অতো নারং অয়সে জানা-সীতি ত্মেব নারায়ণপদবৃৎপত্তী তবেদেবং তত্তু অঞ্জা প্রসিদ্ধমিত্যাশস্থাই নারায়ণোহস্পমিতি। নরাত্ত্তুতা যেহথাঃ চতুবিংশতি-তথানি তথা নরাজ্ঞাতং যজ্জলং তদয়নাদেখা নারায়ণঃ প্রসিদ্ধাং সোহপি তবৈবাসং মূর্ডিঃ। তথাচ স্মর্যাতে। নরাজ্ঞাতানি তথানি নারাণীতি বিহুর্কুধাঃ। তসা তোহায়নং পূর্বং তেন নারায়ণঃ স্মৃত ইতি। তথা আপো নারা ইতি প্রোক্তা আপো বৈ নর-

### देवकृषरकाषगौ।

বিশ্বন্ধ স্বম্জিতি । পশ্বস্তাদো রূপমানত চক্ষা সহস্রপাদোর ভূজাননাত্ব মিতৃতি । স্ত্র প্রথম দেব কৌমারং সর্গাশিতি ইত্যাদিনা বাবিংশত্যবতারাংশ্চ প্রোচ্য ক্ষম্যাপি তদস্তংপাতিবেন সাধারণ্য প্রাপ্তে বিশেষমাহ এতেচাংশকলাঃ প্ংসঃ ক্ষম্ব ভগ্ বান্ স্বমিতি । এষামর্থ: । ভগবান্ প্রমপ্রধার্ম: । লোকানাং ব্রহ্মাণ্ডানাং দিহক্ষা হেতৃনা পৌরুষং রূপং জগুছে প্রাহ্মতার কথড়তং মহদাদিতিই সংভূতং মিলিতং অন্তর্ভূতি মহদাদিতবং প্রল্বাদৌ সোহস্কঃ বিহুদ্ধিতভূতস্ক ইতি ভূতীয়ন্ত্রাং । বোড়শকলা । শ্রীভূহি কীঠিরিলা দীলা কান্তি বিল্যুতি সপ্তকং । বিনলাদ্যা নবেত্যেতা মুখ্যা বোড়শ শক্ষম ইতি ভক্তিবিবেকাকে: তাঃ বোড়শ কলা যদ্য তং । ইদমাদ্যং পুরুষ্রপমূক্ । বিতীয়মাহ যন্ত্রান্ত্রদীতি । ব্রহ্মান্তর্ত্তা তদহপ্রবেশেনান্ত্রদি প্রলম্বলানিগত্তা কাহ যদ্যাব্যবেতি । যদ্য নাভিহ্নদান্ত্র্যা । কিং স্বর্গং পৌরুষং রূপং তবৈ প্রসিদ্ধে বিশুদ্ধবিধাত্র বিশ্বনাভির্যক্তর্যাং তং প্রচুর্মত্যের্থ: । নাতঃ পরং পরম যন্ত্রতং স্বরূপমি তিতৃতীয়োকে: । তচোর্জিচ্ছোতং বলবং পরমানলরপ্রথাং । কো হ্যোন্তলিভাদি শ্রুষ্যে । তদ্যাকারমাহ পশ্যন্ত্রা ইতি । তদ্যাব্যাবানাহদ এব গর্জোদশায়ি পুরুষ এবেতি । অথাবৈত্র তদ্য পুরুষদ্যাপ্রবারিণং শ্রীভ্রগ্রন্থং পরিচায়ন্তি এত ইতি । পুংসং পুরুষদ্য এতে কৌমার্দ্রগাদ্যাঃ অংশুকলা: তবিবেক ক্তন তৈরের ক্রতঃ । ক্রমন্ত্র ভগবান্ তুশন্ধে ভিরোপজ্যে।

নঃ পৌকষং রূপং জগৃহে কৃষ্ণ এব স ইত্যর্থ:। তত্রাপি স্বয়মান্থনৈর নতু তংপ্রতিরূপ্তেন দীপাও দীপবও এবঞ্চ স্বয়ং শ্রীস্বামিপালৈরপি অথাহনংশভাগেন ইত্যত্র ব্যাথ্যাতঃ। অংশেন প্রুষরপেণ ভাগো মায়রা ভজনমীকণং যেন তেন সর্বাথ পরিপূর্ণরূপে। ইতি বিব্যক্তিয়পি তথাচ বক্ষাতে শ্রীবস্থাদেবেন যস্যাংশাংশভাগেন বিশ্বস্থিতিলয়োত্তবা ইতি। তৈরের ব্যাথ্যাস্যতে চ। যস্যাংশঃ পুক্ষ অস্যাংশো মায়া ইত্যাদি। যথা ব্রহ্মাংহিতায়াং কৃষ্ণজ্বে। যসৈয়কনিশ্বিত কালম্পাব্দস্থ জীবস্তি লোমবিল্লা জগদগুনাথাঃ। বিষ্ণু মহান্ স ইহ যস্য কলা বিশেষো গোবিন্দমাদিপ্রুষং তমহং ভজামীতি। তন্ত্রাং সাধ্কং নার্ম্যণোহক্ষমিতি। দৃষ্টঞ্চ তত্রব তাবং সর্ব্বের বংস্পালা ইত্যাদৌ। বক্ষাতেচ অনুদ্রের অদ্যতেন্যত্যাদৌ। অথ প্রকৃত্যমুস্রামঃ। নহু মায়িকজ্লাস্তঃপাতেন তদ্পি

### . क्रममन्दः।

সমষ্টিরূপ: প্রথমপুক্ষ এব ভদ্যাপায়নং প্রবৃত্তি রক্ষাৎ স:। অভ: সর্কলেহিনামাত্মা ব তৃতীয়পুক্ষো যশ্চাধিললোক সাকী বিতীয়পুক্ষো যশ্চ নরভূজলায়নাৎ তৃতীয় পুক্ষবো নারায়ণ: সন্নসি কিন্তু-স স তবাক্ষং ত্বং পুনরজীতাঁথ:॥ ১৪ ॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

বাং ক্ষনামা বৃন্দাবনস্থা। সতু নারশব্দোক্তলনস্থানারায়ণনামেতাতা। কথমহমেব স ইতি তআহ। নরভূজনারনাৎ আপো নারা ইতি প্রোক্তা আপো বৈ নরস্থনবা। অয়নং তস্য তাঃ পূর্কাং তেন নারায়ণঃ শৃত ইতি নিজকে ন রায়্ভূতলনবিজিছি যো নারায়ণঃ স তবালং ছদংশ্রাদিতি ভাবা। অতত্তংকৃদ্দিগতোহপাহং ছংকৃদ্দিগত্তবা। কিল্প স্থেছাময়স্য নতু ভূতময়স্যোক্ত আপানি সর্বব দেহির আত্মা এরূপ হইয়াও আপনি নারায়ণ নহেন এমত নহে, কারণ নার অর্থাৎ জীব সমূহ আপনার অয়ন (আত্রয়,) অতএব সর্বব দেহির আত্রয়ত্ব প্রযুক্ত আপনিই নারায়ণ। অপার হে দের! আপনি অথিল লোকের সাক্ষী অর্থাৎ সমুদায় লোককে সাক্ষাৎ দর্শন করিতেছেন, ইহাতেও নারায়ণ শব্দবাচ্য,কারণ নার অর্থাৎ লোক সমূহকে যিনি অয়ন অর্থাৎ পরিজ্ঞান করেন তিনিই নারায়ণ। ভগবন্! নর হইতে উদ্ধৃত যে সকল পদার্থ অর্থাৎ চতুর্বিংশতি তত্ব, তথা তাহা হইতে উৎপন্ন যে জল, ত্মীত্র অয়ন আ্রায়্র হওয়াতে যে নারায়ণ প্রসিদ্ধ, তিনিও আপনার মূর্তি ইহা সত্যই আপনার মায়া নহে॥ ১৪॥

# তচ্চেজ্জলস্থং তব সজ্জগৰপুঃ কিং মে ন দৃষ্টং ছগবংস্তদৈব হি। কিংবা স্থদৃষ্টং হুদি মে ছদৈব কিং মো সপদ্যেব পুন ব্যদর্শি॥ ১৫॥

#### শ্ৰীধরস্বামী

স্নবঃ। অয়নং তদ্য তাঃ পূর্বং তেন নাবায়ণঃ শ্বত ইতি। নহু মন্মুর্তেরপরিচ্ছিন্নতাং কঁথং জলাদ্যাশ্রয়ং অত আছ ভচ্চাপি সভ্যং নেতি॥ ১৪॥

অপরিচ্ছেদনেবোপপাদয়তি তচ্চেদিতি। জগদাশ্রয়ভূতং তব তবপুর্জলস্থমিত্যেবং যদি সং সত্যং স্যাং তহি তিদেব ক্ষণনাল-মার্গেনাস্তঃ প্রবিশ্ব সংবংসরশতং বিচিন্নতাপি ময়। হে ভগবন্ধচিষ্টেশ্বর্য্য তার কিমিতি নাপৃষ্টং বাহুদৃষ্টং সভব বপুরস্কাকরণদৃষ্ঠাং চেভিনা স্বাপি কিমিতি নো ব্যদর্শি ন দৃষ্টং তদা এব তপঃ করণানস্তরং সপদ্যেব স্কৃষ্টমতো মায়েব। অতস্ত্রমূর্ত্তে দেশিবিশেষপরিচ্ছেদঃ সত্যো নভবতীতি ॥ ১৫॥

### देवक्षवट्यावशी।

মনাঙ্গং কিমু জগদিব মায়িকং নহি নহীত্যাহ তচ্চ তবাঙ্গং সত্যমেব নতু মায়া মায়িকমিত্যর্থ:। অপীতি সম্ভাবিতমেবেদমিত্যর্থ:॥ ১৪॥ সম্ভাবনামেব দর্শায়তি তচ্চেদিতি। তত্তব সং পারমাথিক সত্যং এব বপু জলহুঞ্ছেৎ তত্তএৰ জগদিতি জগদাত্মকঞ্চেৎ তত্তদা কিং ন্যা সমষ্টিজীবত্যা সংগ্রজগদাত্মকেনাপি ন 'দৃষ্টং। তথা কিং বা হৃদি তৃতীয়োক্তান্থসারেলৈব দৃঢ়সনাধিযোগবির্ভবোধেন ময়া অ অন্ধূ নাতঃপরং পর্ম যন্ত্রবতঃ অরপ্মিত্যাদি তত্ত্বত মহ্কান্থসারতঃ সচ্চিদানক্ষনত্বন দৃষ্টং বাশক্ষ্যাত্মগাংশ্নশু কিছা বহির্ ভৌসত্যাং নো ব্যদ্দীতি॥ ১৫॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

তচ্চেজ্ঞালস্থ মিত্যাদ্য ষ্টকং॥ ১৫। ১৬ । ১৭। ১৮ । ১৯। ২০। ২১ ।

#### 🗷 विश्वनाथहळ वर्छी।

ভুক্তা তব বালবপু বাস্থদেববপুণ্চ সচ্চিদানন্দময়ত্বেনৈব বৰ্ণিতং তথা তচ্চাপ্যস্থং নারায়ণাখাং সত্যং সর্বাকালদেশবর্ভি জন্ধসন্মাত্মক-মেব নতু বৈবাজস্বরূপমিব মায়য়া মায়িকমিত্যর্থ:। চকারাদন্যদপি মংস্যক্সাদ্যস্থাদ্যস্থাদ্যস্থান্য

নমু নারায়ণস্বরূপং তদ্দদি শুদ্ধদ্বার্থকং তহি প্রাকৃতে গর্ভোদে এব পরিচ্ছিন্নং কুতঃ সদা দৃশ্যতে নহি সর্বব্যাপক্ষ্য তস্য গ্রেলিমারপরিছেনঃ সন্তবেং তত্ত ত্বা ত্ত্তলস্ত্বনেব ন নিয়তনিত্যাহ তই নারায়ণাথ্যং বপুত্ব সজ্ঞাং সং বর্তমানং জগং যত্ত তং জালস্থনেব চেং তহি তলৈব ক্মলনালনার্গেনাস্তঃ প্রবিশ্য সম্বংসরশতং বিচিত্বতাপি নয়া হে ভগবন্নবিচিন্তাযোগমায়েশ্ব্য কিং ন দৃইং। নমু তত্ত্ব জ্লণ্ডব স্থিতং ত্বা ত্বজানান্দ্ইনিতি চেং, তদা আং ধ্যায়তা মন্না তদৈব ক্লাপি সুঠু কিং বা দৃষ্ঠং। তৎক্ষণএব তত্ত্বাপি কিং প্র নিয় দ্শাত্যত তত্ত্বপুত্তব জ্লাহ্রেন পরিচ্ছিন্নমপি অচিষ্কাশক্যা অক্ষিগতীক্তজগৎকজ্বোপরিচ্ছিন্নজ। সর্বত্বৈব দেশে কালেচ বর্তমাননেবাপি ত্বীয়্যোগমায়য়া আবেরণপ্রকাশাভ্যামেব দৃশ্যতে ন দৃশ্যতে চেত্যবগতং॥ ১৫॥

হে দেব! জগতের অত্রিয়ভূত আপনার ঐ শরীর কল্পান্তে জলশারী ছিল, ইহা যদি সত্য হয় তাহা হইলে আমি আপনার নাভিকমলের নালরূপ বর্জ যোগে আপনার অভ্যন্তরে এবিউ হইয়া শতবংসর পর্যান্ত অন্বেষণ করিয়াছি, সে সময়ে কেন তাহা দৃষ্ট হয় নাই। যদি বলেন আপনার শরীর বাহ্ দৃষ্ট হয়য়া পরে অন্তঃকরণ দৃশ্য হয়, তাহাতেও বক্তব্য এই, তথন আমি তাহা হদয়েতেও দেখিতে পাই নাই পরস্ক তৎকালেই আমি তপস্থা করিবামাত্র তৎক্ষণাৎ স্বন্দররূপে দৃষ্ট হইয়াছে, তাহাতে উহা মায়ামাত্র এখনও এমত বোধ হইজেছে। অতএব আপনার ক্রির দেশ বিশেষে যে পরিঢ়েছদ তাহাও সত্য নহে॥ ১৫॥

অত্রৈব মায়াধমনাবভারে হৃদ্য প্রপঞ্চ্য বহিঃক্ষৃট্স্য। কুৎস্নদ্য চান্তর্জঠরে জনন্যা মায়াত্বমেব প্রকটীকৃতং তে॥ ১৬॥ যদ্য কুক্ষাবিদং সর্বাং সাত্মং ভাতি যথাতথা। তত্ত্বয়াপীত্ব তৎসর্বাং কিমিদং মায়য়া বিনা॥ ১৭॥

### व्यीधत्रवामी ।

অপিচ যদি জলাদি প্রপঞ্চ: স্তাং স্তাং তহি তেন তব পরিছেলে। ছবেৎ সতু মায়াবিলসিত ইতি ওরৈব দশিত্মিত্যাই শ্লোক-জ্বেণ। হে মায়াধ্যন মায়োপশ্যন অবৈবাবভাবে বহিঃক টুস্যাপি জঠরমধ্যে জনস্তাঃ প্রদর্শনেন ॥ ১৬॥

নমু বহি: সত এবাস্বৰ্জঠেরে প্রতিবিশ্বোহন্ত কুত: সর্ব্বথা মায়াত্বং তত্তাহ। যস্য তব কুক্ষো সর্ব্বমিদং যথা ভাতি তৎ সর্ব্বমিহাপি ৰহিরপি তথৈব ভাতি কিঞ্চ সাত্ম: তৎসহিতং তত্তত্মান্তদিদং ত্বয়ি মায়য়া বিনা কিং ঘটেত। অন্তং তাব: ত্বয়ি প্রতিবিদ্ধশেচদাহা-

### বৈষ্ণবতোষণী।

অত তদপি তবাক্ষং ন জলাদ্যাশ্রয়ং নাপি জগদিতি নিশ্চিতং তত্র ত্বমেবং দৃষ্টাস্ক ইতি ব্যাক্ষেন পুন: শ্রীকৃষ্ণবিগ্রহমেব প্রনত্ত্বস্বধ্বন বাধ্যতি অত্রৈবেতি ত্রিভি:। নায়াধ্যনাবতার ইতি তৎসম্বন্ধালং ন সোঢ়ং অঘাদীনামণি তৎসম্বন্ধাপাকরণদৃষ্টেরিতি ভাব:। তচ্চ যুক্তং স্বয়ং ভগবত্বেন পরাৎ পরত্বাৎ। তথাচৈকাদশে। নারায়ণে তুরীয়াথ্যে ভগবচ্ছকশন্তিত ইত্যত্র ব্যাথাতং তৈরেব। বিরাড় হিরণাগর্জণ কারণং চেত্যুপাধর:। ঈশস্য যত্রিভি ই নিং তুরীয়ং তৎপদং বিছ্রিতি। অস্য বহি: ক্রুট্যা প্রপঞ্চস্য নিজাস্তর্জাঠরে জনস্রাভাং প্রতি দর্শনেনেত্যর্থ:। মায়াত্বং পুর্বোক্তং যন্তদীয়জলাদি প্রপঞ্চাশ্রয়ত্বস্য নায়িকত্বং তদেব ব্যক্তীকৃতং। যদ্বা। বিশেষেণ তাৎপর্যাং জগদিদং বহিবের ক্ষুটং নাস্তরিত্যস্যার্থস্যেতি অথোহমুব্যৈব মনার্ভক্য্য যা কশ্চনৌৎপত্তিক আত্মযোগ ইতি তথ্যৰ স্বাভাবিক চিস্ত্যশক্তিমরপরিচেছদাপরিচেছদনির্গ্রাৎ দেবমায়াত্বস্য পরিহারত্বান্ত। শ্রীশুকেন নচান্ত ন বহি র্যস্য ইত্যাদিনা তাদৃশত্ব নির্গাৎ জগতঃ স্বাভাবিকনের ত্বাশ্রম্বত্বং ন সম্ভবতীতি ভাবঃ॥ ১৬॥

তদেবোপপাদয়তি যদ্যেতি। যদ্য দাবরণদ্য ব্রহ্মাণ্ডদ্য কুক্ষাবিদং দর্কং দায়ং ত্বংদহিতং ভাতি তদুক্ষাণ্ডমিহ এতদ্রপে ত্বয়পি ভাতি

# প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

নম যদৈবে জগতোহস্তর্বন্ধিনি জলে তরপ্র স্থিতং তদেব জগতৎকুকো তিষ্ঠতীত্যসঙ্গতং। নহি গৃহস্যান্তর্বন্ধিনি এটে তদেব গৃহং তিষ্ঠেলিত্যতঃ শুদ্ধসরাত্মক বপুরি তিমিম্মানায়িকাদন্যদমান্তিকমন্যদেবরা জগতুবেদিত্যবসীয়তে। এবঞ্চ সতি ন জং মংকুজিগত ইত্যাশক্ষ্য কুলিগতস্য জগতো বহিষ্ঠজগদৈক্যং বদন্ত্রে মায়িকজং প্রতিপাদয়তি দ্বাভ্যাং। অত্রৈবেতি হে মায়াধমন মায়েপশমক অস্য বহি-ক্টুটেয়ের প্রপঞ্চ কুলেগতা কুৎস্বস্যাপি অস্ক্র্রির প্রদর্শনয়েতি শেষঃ। জনন্যাঃ জননীং শ্রীষ্টেশাদাং প্রতীত্যর্থঃ। মায়াজং মায়িকজং অতো হুন্তর্কযোগমান্ত্রের অন্বপুর্জগদন্তবর্ত্তাপি সর্বজগদ্বাপকং যুগপদেবেতি ধ্বনিঃ। তেন চ সাক্ষান্তবাপি কুলিগতোহহমধুনাপিবর্তে ইতি সাক্ষান্ত্রম্পনিঃ॥ ১৬॥

কু কিন্তু বহিষ্ঠ রো র্জগতোরনরোঃ সর্ক্র পৈবাঁতে দাদে বৈকাং ঐক্যাদেব কু ক্ষিন্ত দাঁ মায়িক অমবধারিত মিত্যাই যদ্য তব কু ক্ষে ইদং বিশ্বং যথাভাতি তথৈব ইহ বহিরপি স্থিতং বিশ্বং ভাতি। নমু বহিঃস্থিত দ্য বিশ্বস্য কু কৌ প্রতিবিশ্ব এবায়ং তথাই দায়ং অং-সহিত্যেব। নহি দর্গণে দর্শণো দৃশ্যত ইতি ভাবং। তেন বহিঃস্থিতং মায়িকমেব বিশ্বং অংকু কৌ দৃষ্টং। স্বয়ীতি। যথা কু ক্ষিত্তং বিশ্বং অদ্ধিকরণকং তথা বহিষ্ঠমপি বিশ্বং অদ্ধিকরণক মিত্যুর্থঃ। তত্ত্বাহৈলক গুগরাক্ষাগ্রাভাবাৎ ইদং জঠরগতং বিশ্বং কিং

অপর হে মায়োপশমন! আপনি এই অবতারেই বহিঃ স্থব্যক্ত এই সমস্ত জগৎ প্রপঞ্চ আপনার জঠর মধ্যে জননীকে দেখাইয়াছেন, তদ্ধারাও এ সকলের মায়াত্বকেই প্রকটকরা হইয়াছে। অতএব জলাদি প্রপঞ্চ সত্য না হওয়াতে তদ্ধারা আপনার পরিচেছদ সভ্য নহে॥ ১৬॥

ভগবন্! আপনার সহিত এই সমস্ত জগৎ আপনার,কৃষ্ণিতে যে প্রকারে প্রকৃশ পায় সে সকল বাহিরেও সেই প্রকারেই প্রকাশ পাইয়া থাকে, প্রভো! মায়াব্যতিরেকে কি আপনাতে এ সকল ঘটিতে পারে ? অতএব বহিঃস্থিত জগৎপ্রশক্ষ আপনার জঠরমধ্যে প্রতিবিম্বিত হইয়াছে ইহাপ্র . অদ্যৈব ছদ্তেহ্ন্য কিং মম ন তে মায়াত্বমাদর্শিক্ত-মেকোহ্নি প্রথমং ততো ব্রুজস্থল্বৎসাঃ সমস্তা অপি। তাবস্তোহ্নি চতুর্জা স্তদ্ধিলৈঃ সাকং ময়োপামিতা-

# औरतयामी।

বিলোমত্যা প্রতীয়েত নতু তদন্তি তব চাদর্শস্থানীয়স্য ত্বি প্রতীতি ন্স্যাৎ। অতঃ সর্বাণা মিথ্যাত্মেবেতি॥ ১৭ ॥

অপিচ ন কেবলং জনুন্যা মমাপি তথৈব দর্শিতমিত্যাই অদ্যৈবেতি। অদৃতে জাং বিনা অস্য বিশ্বস্য মায়াজং জ্য়া মুমেব তদপ্য-দ্যৈব কিং ন দর্শিতং কিন্ত দর্শিতমেব তথাহি একোহসীত্যাদি। তত্ততো ময়া সহাধিলৈগুলাদিভিক্ষপাসিতান্তাবস্ত এব চতুর্জা

### देवक्षवरकावनी।

তত্তমাদুত্তর্কজাঝায়য়া বিনা তদিদং কিং সম্ভবতি তেন ত্বংসম্বদ্ধাভাবাৎ ন সম্ভবত্যেবত্যর্থ:। তত্মাচ্চ নেদং তামিমপারমার্থিকং সং ইতি ভাব:॥ ১৭॥

জনভা অহভবোহপ্যান্তামিত্যাহ অলৈ ইতি। তৎপদেনাত্ৰ দাক্ষান্তজ্ঞপং বালবংসচতু কাদিলকাণং দাক্ষান্তজ্ঞপমপ্যচ্যুতে প্রোবদাক্য জীড়ন্তং দদ্শে সকলং হরিমিতি। তাবং সর্ব্ধে বংসপালাঃ পশুতোহজ্বয় তৎক্ষণাং। ব্যদ্পান্ত ঘনশ্রামাঃ পীতকোশেয়-বাসস ইতি। সত্যজ্ঞানানন্তানন্দমাত্রৈকরস মূর্ত্ত্ব ইতি চোক্তবাং। অস্যেত্যনেন চাত্র তদশুচ্চতে। আবাদিন্তভ্ঞপ্যতিত্ব মূর্ত্তিয়িত্তি কাহিরিঃ। নৃত্যগীতাদি নৈকাহৈ পথকু পৃথগুপাসিতা ইত্যাদৌ স্বমহিধ্বন্তমহিভিরিত্যক্তবাং। সমায়েত্যনেন স্বাধিষ্ঠানব্রদ্ধাপ্তদাতে। বিৰক্ষিতঃ। ততশ্চ অদৃতে বাং বং সাক্ষাজ্ঞপবালবংসচতু ভূক্ষি দ্বাঞ্চ বিনা যদ্ধিলং দ্বিতন মস্য জগত স্বাহিমধ্বন্তমহিনত্বা দ্বিতিস্য কিং মায়িকত্বং ন সম্যাদ্বিতং কিন্তু দ্বিত্যেবেত্যুর্থঃ। অথ সর্ব্যেব তদ্ধিতং

### এীবিখনাগচক্রবর্তী।

মাষ্যা বিনা অপিতৃ মায়িকমেব। তাত্ৰ স্বজ্ঞানামুভবো মদমুভবাচ প্ৰমাণমতো মায়িক জগন্মধাবত হিং স্বংক্ষিণত এব ভবামীতি মুছবি জ্ঞাপাদে উৎক্ষেপ্ণং গঠগতদোত্যাদাতঃ ক্ষমন্ত্ৰতি ভাবঃ॥ ১৭॥ . • •

কিঞ্চ অংকুলিগতং জগংবহিঠং তবাদিপুক্ষণ্য বোনক্পগতং চ জগংসহল্রং সর্জ্যং নায়োপাদানকজাৎ মায়িকমেবেত্যেতাবৎকাল-পর্য্যন্তং নয়া অবধারিত্বের। কিন্তু অতর্জ্যনহামহৈশ্বগ্যা তব অদীয়ন্ত্রন্ত্রাম্বাক্তং চিনায়মপি জগংসহল্রমন্তীত্যদৈর্বাম্প্ত-মিত্যাই অদৈবিদ্যা মধ্মহিমনি মদ্ষ্ঠিয় জগংসহল্রম্য কিং অদৃতে জগংসহল্রমন্ত্রি কিং বন্ধ অদিনাভূতং অপিতু সর্জ্যের অংশক্ষণভূত-মেবেতার্থঃ। অতএব মন মাঃ প্রতিত তে অয়া অদ্যা ন মায়াজং আদেশিতং কিন্তু চিনায়জ্মেব দর্শিত্যিতি ভাবঃ। কৃত ইত্যত আহ একোহদীতি প্রথমমেকজ্মিন। ততঃ স্বর্জপশক্ষৈত্ব ব্রজ্মজ্বদো বালা বংসাঃ সমস্তা অপি অমেবাভূঃ। ততো যোগমারের তানাজ্যাদ্য প্রকাশিতাঃ স্বর্জপশক্ষিয়াদত্ত্র জ্লাল্মভূঃ। কীদৃশাঃ অথিলৈরাম্মাদিল্ডল্পর্যাইগুণিক্রমেরের ময়া মাদ্শেন ব্রজ্মণাপি চিনায়েরনিবোলানিতা শুতশত তাবস্থাব জগতি চিনায়ব্রমাঞ্চান্ত্র্য। তত্ততো যোগমারের অদিজ্ব্যা তান্ সর্জানাজান্য প্রকাশিতং অপরিমিত্বোন্ত্রমণ বা ব্রজ্মপ্রমেকং শিব্যতে সম্প্রত্যপি মন্ত্রাপ্রাণ যোগমায়য়া মদ্ষ্টীঃ প্রত্যনার্ত্যের ভবান্ বর্ততে ইত্যর্থঃ। অত মন্ত্রম্ভ্রমত্র নির্দেশন ব্রজ্মস্ক্রদাদীনাং জগদজানাং ভগবতা মায়াশক্তিং বিনেবাবিতাবিত ছাচিনায়জ্মস্থ্যবার্থীয়ং মায়য়া

বলিতে পারা গেল না, কারণ তাহা হইলে আপনি আদর্শ স্থানীয় হইয়া পড়েন তাহাতে আপনাতে প্রতীতি হয় না, স্বতরাং জগৎপ্রপঞ্চ মিধ্যামাত্র । ১৭॥

প্রভো! আপনি যে কেবল জননীকেই মারা দেখাইয়াছেন এমত নয়, আপনা ভিন্ন এই বিশের
মায়াছ আমাকেও কি দেখান নাই? অদ্যই দেখাইলেন,তাহার নিদর্শন এই যে,প্রথমে একাফী ছিলেন,
তাহার পর আপনিই সমন্ত ব্রজবাসী বান্ধব এবং সমুদায় বংস হইলেন, আমি সে সকলকে আবার
চতুতুজি নিরীক্ষণ করি, তদনন্তর আমি অথিলতত্বাদি সহিত উপাসনা করিলে সেই সমন্ত ব্যক্তি চতু-

স্তাবস্ত্যের জগন্ত্যভূস্তদমিতং ত্রহ্মাদমং শিষ্যতে ॥ ১৮॥ অজানতাং তৎপদবীমনাজন্যাক্মাজনা ভাসি বিতত্য মায়াং। স্ফাবিবাহং জগতোবিধান ইব স্বনেষোহস্ত ইব ত্রিনেত্রঃ॥ স্থরেষ্ ষিঘীশ তথৈব নৃষপি তির্যুক্ষ্ যাদঃস্থপি তে হ্জনস্য।

# अध्वत्रामी।

অপি জগন্তি বন্ধাণানীতি প্রাগন্তমণি দৃইনিতি জ্ঞাতবাং॥ ১৮॥

নমু বন্ধন তব মরা দর্শিতং গুদ্ধমেব চৈতন্যং কথং প্রপঞ্চবং মারেত্যাতে সত্যং কিন্তু অদিতীয়ে দ্বি নানাদং গুণাৰতার মৎস্যা-দ্যবতার্কৌদ্ব কার্য্যবেশন স্বতন্ত্রমারানিবন্ধনমিত্যাহ স্লোক্বরেন অজানতামিতি দুৎপদবীং দুৎস্বরূপং অজানতাং অনাদ্মি প্রক্তিট

## देवकवरकावनी।

বির্ণোতি একোহনীত্যাদিনা। তত্ত্ব, মারিকামারিকনর্মদর্শনাদ্যস্তঃবিতং তবৈব কজ্ঞপনেব পূর্ণং ব্রন্ধেত্যপি দর্শিতং প্রশাসকণাক্রান্তদাদিত্যাহ বন্ধান্তঃ শিব্যত ইভি স্বাহ্বপদেন শাক্রাস্তরপ্রশিদ্ধং বন্ধু স্কা তদশ্যেতদেব ইতি দ্যোতিতং। ন স্থানতোহণি প্রস্যোভয়শিক্ষং সর্প্রক্র হীক্রি ক্লাব্রাং বিক্যান্তেচ স্বয়নেব সহো ভাগ্যমহোভাগ্যমিত্যাদি॥ ১৮॥

ভাষে গুলাবকার নাবতারে বিপাবন মূলং ইত্যাহ অজানতামিতি বাভ্যাং। মমিতাস্য ভাসীতানেনাবরঃ। কর্ত্র ক্রিরাবর-কৈন্দ মুখাবাহ। বিধানে পালনে এব ইব এতংকার্য পরিছিল্ল ইব পালনমাত্র কর্তেবেতার্থঃ। বিধোক কৈন্দান ক্রেনিবজনানোকিরিত জ্বেরং। যথা বিতীরে প্রীক্রেনিবেকিং। ক্রজামি তরিযুক্তোহংং হরো হরতি ভবনং। বিষং পুরুত্তরেশন পরিপাতি ক্রিলাভিত্র ইতি। অজনস্য প্রাক্তবজ্জন রহিত্যা স্বরূপশক্তা স্বরুমাবিভাবাং। তচ্চ কেবলং ভক্তপরিপালনাত্ত্বভিত্র নারাকার্যাণাং শক্তিমাহ অস্কামিতি। প্রভা হে অচিত্তাপজিবুক্ত বিধাতঃ হে অনজাবতারকর্তঃ। অত্যানানেতিতানির বা টিকাবতারিকা নক্র ক্রেনিস্তা ত্রার্মভিপ্রার:। ঈবরঃ থলু স্বাধীন এব তংসর্কং। জীবদীম্বাধীনতরা মান্ত্রাধীনীকৃতঃ প্রপঞ্জান্তরে ত্রেমানারং বিগ্রহাদিকং প্রাপ্রোতি তত স্ক্রাবিষ্টন্ট ভবতি রক্তর্যন্তার্মভ্বেন চিজ্রপ্রানাবিদ্যাক্র ক্রপণ্ডন তং স্ক্রিত্তে

# **बिविधनाथहळ्कवर्छी**।

অনুরিতামুক্তে: দদৃতে কিমিত্যুক্তেশ্চ বুগতান্ত স্থতরামেব ॥ ১৮ ॥

হুৰ্গমনহিমন্তৰ চিম্মন্ত্ৰপতাং বাৰ্তা দূরে তাবদান্তাং ৰহিপুখানাং মতে তু ত্বমণি মারোপাধি মারাময় এব তবসীত্যাহ। অধানতামিতি বংশদবীং বংগ্ৰাপকং বন্ধ ভক্তিযোগমজানতাং জানিমানিনাত্ত মতে ত্বমনাত্মনি প্রকৃত্তি ছিত এব মাহৈত্ব ত্বং আত্মনৈৰ স্বাতজ্যেনৈৰতি তব জীবাহিশেশঃ। মারাং বিততৈয়ৰ ভাগি আকারশ্তোহপ্যাকারবন্ধেন ভাতে৷ ভবসি। প্রেটী মজোভানে ৰথা অহং। বিধানে পালনে স্বেন এব বং বিক্সুরিব। অত্তে তম্যা ত্রিনেত্রো কল্ল ইবেতি। নিরাকার্যাপ্যান্থনা মারিকাকারাঃ বথা ব্রশ্ববিক্সভাতথা মারিকমেৰ জলত্বং নারারগ্রপং অবতারান্চ সর্কে মারিকরপা মার্টিয়ব বংশ্বালচত্ত্র জাদীন্ কণিকান্ ম্পরিমানৈতি তে প্রাছ্রিত্যথা ॥

স্পততৈঃ স্বভন্তানাং পরাভবাভাবার্থং বং স্বপদ্ধীজ্ঞাপনং প্রায় স্তদর্থনেব তব সর্কেহ্বতারা ইত্যাহ স্করেছিতি। অসতামসাধ্নাং বর্ষের জ্ঞানবন্ত ইতি বো ফ্টোম্বত্তন্য নির্ম্নহার। স্তাঃ ভক্তানাং স্বীয়স্চিদানন্দময়রপগুণশীলাম্ভাবনয়া অমুগ্রহায়। বহুকং।

পুল হইরাও তত সংখ্যক ব্রহ্মাও হয়। একণে অপরিমিত অবয় ব্রহ্মমাত্র অবশিষ্ট আছেন ॥ ১৮
প্রতা। আপনিই প্রকৃতিত্ব আত্মা, যে সকল ব্যক্তি আপনকার স্বরূপ জানে না তাহাদের নিকট আপনি সকলে নামা বিভার করিয়া প্রকাশ পাইতেছেন, যেমন অগতের স্তিতে আমি, পালনে আপনি, সংহারে ত্রিলোচন প্রকাশ পান। ছে ইশ। হে প্রতা। ছে বিধাতঃ। জ্মরহিত হইয়াও আপনি দেব, ঋরি, মসুষ্যা, তথা সমূহ তির্যাক্ যোনিতে যে জ্ম তাহা অসং ও চুর্মান্তনের নিগ্রহ এবং

জন্মাসতাং চুন্মদনিগ্রহায় প্রভো বিধাতঃ সদমুগ্রহায় । ১৯॥
কো বেভি ভূমন্ ভগবন্ পরাত্মন্ যোগেখরোভীর্ভবভন্তিলোক্যাং।
কাহো কথং বা কতি বা কদেতি বিস্তারয়ন্ জীড়দি ষোগমায়াং॥ ২০॥
তত্মাদিদং জগদশেষমসংস্ক্রপং স্বপ্লাভমন্তবিষ্ণং পুরুত্থহঃখং।

### श्रीभन्नवामी।

স্থিত আয়ৈয়ৰ স্বং **আত্মনৈৰ স্বাভ**ন্মোণ স্বায়াং বিভত্য ভা**দি ক**ধং জগতঃ স্প্টাবহমিব ব্ৰহ্মেৰ বিধানে পালনে এ**ধ স্বমিৰ অন্তে** ত্ৰিনেত্ৰ ইবেডি॥১৯॥

নমু স্বাতম্ভ্রে কৃথং কুৎসিতের মৎস্যাদির জন্ম কথং বা বামনাদ্যবতারে যাক্রাদিকার্পণ্যং কথং বা অন্মিরবতারে ক্লাচিম্ভরপলায়-নাদি অত আহু কো বেতীতি। অমুথ্যে সম্বোধনৈ ফুজ্রেরম্বনেবাহ ভূমন্নিত্যাদিভি:। তব উতী লীলান্ত্রিলোক্যাং কো বেতি ক বা কৃথং বা কৃতি বা কৃদা বেতি অচিন্তঃং তব মারা বৈভবমিতি ভাবঃ॥ ২০॥

নতু ভবতু অবতারাণামচিস্কামহিমা প্রপঞ্চস্য তু অসতে কথং সত্তপ্রতীতিরিতি ইমাং আশ্ছাং সপরিকরামুপসংহরন্ পরিহরতি

# বৈষ্ণৰতোৰণী।

ভবেৎ এব বৈলক্ষণামিতি কিন্তু মায়াশক্ষ্ম স্বরূপশক্তিবাচিন্তেনাপি প্রতিপাদয়িষ্যমাণবাতক্ষতস্বস্ভয়োবেকস্বমের দর্শন্তিব্যাতে ॥ ১৯ ॥

এবং সর্বামের নির্মণ্য সংল্যেণাই কোবেন্তীতি। ভূমন্ হে অপরিচ্ছিন্ন ভগবন্ হে সর্বৈশ্বগ্যকৃত্ব পরমান্ধন্ হে সর্বাস্থামিন্ সর্বান্ধরণেতি বা যোগেশর হে স্থাভাবিক বোগশক্তা সর্বাক্ষাবাপক ভবত উতীলীলা। অহো বিশ্বরে। ক কথ্যা কদা বা স্থারিতি কোবেতি কিন্তুপরিচ্ছিন্নভাগেপরিচ্ছিন্ননাং তাসামাধারং সর্বৈশ্বগ্যকৃত্বভাগাং প্রকারং পর্মান্ধরভাগানির ভাং সর্বান্ধরণ ক্ষাব্দির বিশ্বরাধ্য ক্ষাবিদ্যান বিশ্বরাধ্য ক্ষাব্দির বিশ্বরাধ্য ক্ষাব্দির বিশ্বরাধ্য ক্ষাব্দির বিশ্বরাধ্য ক্ষাব্দির বিশ্বরাধ্য ক্ষাব্দির বিশ্বরাধ্য ক্ষাবিদ্যা বিশ্বরাধ্য ক্ষাব্দির বিশ্বরাধ্য ক্ষাব্দির বিশ্বরাধ্য ক্ষাবিদ্য ক্ষাব্দির বিশ্বরাধ্য ক্ষাবদ্ধ ক্ষাবদ্ধ ক্ষাবদ্ধ ক্ষাবদ্ধ ক্ষাবদ্ধ ক্ষাবদ্ধ ক্ষাবদ্ধ ক্ষাবদ্ধ ক্ষাবদ্ধ ক্যাবদ্ধ ক্ষাবদ্ধ ক্য

যশাদেবং ছমেবৈষ সর্বকারণং তত্মান্মায়াতঃ প্রধানতঃ উদ্ভবৎ প্রশীনং ভবচ ছয়োব ছামাশ্রিত্যৈব সদিব। ছদীয়ং স্বরূপমিদং নিজ্যাধ্যাদং বা যৎ সম্বস্ত ভদিবাবভাতি ছদীয়তত্তৎসত্তয়ৈব যৎ কিঞিৎ তত্তৎসত্তাং প্রাপ্নোতীত্যর্থঃ। মায়ায়া অপি ছচ্চ ক্রিছেন

#### 🕮 विचनाश्रुक वर्षी।

সন্তঃ নচেল্লাভরিদং নিজং ভবেদিত্যাদি॥ ১৯॥

নত্ন ক্ষণ্য মম ভূভারংরণার্থমেব জন্ম রাম্যা রাবণবদার্থমেব ভক্লাদ্যবভারগণস্য তত্তৎসমন্বর্ধপ্রপ্রতিনার্থমেবেভি প্রদিদ্ধি ন ভূ
জানিমানিনাং হুম দিনাশার্থং। সভ্যং। তব প্রাহ্ ভাবাদিলীলানাং কুল কুল বিষয়ে কিং কিং প্রয়োজনং কদা কদা বা কিন্নভাগ বা তা ইতি কাং স্মোন জাতুং কোহলি ন প্রভবতীত্যাহ কোবেন্তীতি। ভূমন হে বিশ্বব্যাপকানন্তম্ভ হৈ ভগবন্ ভূমত্বেহলি মহৈ ক্ষর্যাপরিপূর্ণ হে পরাত্মন্ ভগবন্বেহলি পরমাজ্বরূল। হে বোগেশ্বর যোগমান্ত্রেরাহ্নভাব্যমানভূমভাদিমহামহৈশ্ব্য। উতী-র্জনাদিলীলাঃ বিলোক্যাং বিলোকী মধ্যবর্তিনীলালাঃ কো বেন্তি ন কোহলি। যতঃ কাছে। ইত্যাদি নম্ম তবানন্তা এব সূর্ত্রো বিশ্বব্যাপিকাঃ ষহৈ ভ্রম্বিত্যঃ পরমাজ্বরূপ। নভূ ভৌতিক্যঃ বৈলোক্যান্তর্বিভিনীরেব ভক্তবিনোদনার্থা লীলাই ক্রেন্তঃ সর্ব্বা এব সন্দেব যুগপদেব ক্রীড়ন্ত্রীতি কথং সম্ভবেদিত্যত আহ বিস্তার্রন্ধিতি। অচিন্ত্যপক্ত্যা বোগমানৈব ভন্তহুণাসকভক্তান্ প্রতি ভাসাং বর্থা সময়ং প্রকাশনাব্রণাভ্যামেব ক্রীড়ানির্বাহ ইত্যর্থঃ॥ ২০ ॥

তত্মাৎ ইদকারাম্পদং জ্বগদেব স্থামিকং মধ্যমপরিমাণবজ্বেহপ্যেতৎপরিচ্ছেদকং অবপুত্ত শুদ্ধসন্তাত্মকদেবেতি প্রকরণমূপসংহরতি

# সাধুদিগের প্রতি অমুগ্রহনিমিন্তমাত্র ॥ ১৯॥

হে ভূমন্! হে ভগবন্! হে পরাত্মন্! হে যোগেশ্বর! ত্রিলোকীমধ্যে কোন ব্যক্তি কোথায় কি প্রকারে কত এবং কবেই বা আপনার উতী (লীলা) জানিতে পারে?, ফলতঃ আপনার শান্ধাবৈভব অচিস্তা! আপনি যোগমায়া বিস্তার করিয়া সত্যই ক্রীড়া করিতেছেন । ২০॥

অত্তরে অসৎ স্বরূপ, স্বপ্ন তুল্য, প্রতিভাগ শূন্য, তুঃখ বহুল, এই স্বশেষ জগৎ নিত্য স্বৰ্ধ ও

# ছয়োব নিতাপ্ৰথবোধতনাবনত্তে মায়াত উদ্যুদ্ধি য়ৎ সদিবাবভাতি॥ ২১॥

# शिवज्ञामी।

তত্মানিতি। অন্তবিষণং নিরস্তপ্রতিভাসং দ্বয়ের উন্যৎ উদ্ভবৎ অপি বং নশ্যং। সনিবেত্যুপসকণ্মেতং। নিতামির স্থামির

### रेक्कवरठाक्ती।

ত্ত্বাশ্রমতানাত্রতঃ সন্তাবাদিতি ভাবঃ। তাদুশ্ববাতিরেকেতু অসংস্কর্মণ শুণবিধাণ্ডুল্যং অনুষ্ঠেপ অদক্ষ ভৌ স্থলাভং দ্বিরার্থ-প্রাপ্তাভারাৎ তত এবাত্তদিবণমিত্যাদি নিত্যা অধ্বেধিরূপাচ ধেয়ং পরব্রশ্বভাবেন নির্মীতা তত্ব তংশ্বন্ধণে স্ভিদানন্দরূপায ক্ষারাক্রিষ্টকারিণে ইতি তাপনীঞ্তিহ্যণীর্ধপঞ্চবাত্রোঃ। অত্র একদেশস্থিত্যাগে র্জ্যোৎসা বিস্তানিণীত্যাদি দশ্বিষ্যমাণবিষ্ণু-পুরাণবাক্যং বৈধর্ম্মাচ্চ ন স্বপ্নাদিবদিতি বেদ'ভিত্ত্রঞ্চ বিচার্য্যং অকৈতদ্পুত্তেং ভবতি মায়াশব্দেন ক্চিন্মিপ্যাভিব্যঞ্জক: শিক্ষাবিশেষ উচাতে কচিন্দুৰ্বিতৰ্ক্যতাব্যঞ্জকশক্তিবিশেষোহপুচোতে অত্ৰ প্ৰথমং ইক্সজালপৰ্যাদ্বন্তদ্বিজেৰু দুষ্ট: সূচ ৰপ্ৰতাাণিতজ্লাদিনা তেষান্ত ন ল্লাং করোতি স্বাপ্রধানানাহকরাং। অন্যেষাঞ্চাপাতমাত্রে ভ্রমেহপি ন দুষ্ট্যাদিকং হরতি মুগতৃঞ্চাতুলাত্রাং। বিভীয়ন্ত্র মুনিদেবাদো শ্রতঃ। যথা তৃতীয়ে খ্রীসনকাদিবৈকুপ্রগমনে। তদীয়বোগুমায়াশশঃ স্বামিতি ব্যাথাতঃ স চায়ং ন পুর্বভুল্যঃ খ্রীকর্দ্ধ-মাদীনাং তৎক্ষিতবিহারবিমানাদিভিঃ স্বার্থকরত্বাৎ প্রীপ্রহায়াদীনাং যুদ্ধাদৌ শক্তচ্ছেদাদিদর্শনালঃ সোহরং মুক্তাদিযু তপ্রাদি-ময়: এতগবতি তু স্বাভাবিক:। যথা। সর্বভূতেরু সর্বাত্মনু যা শক্তিরপরা তব। গুণাশ্রমা নম স্তব্যে শামতারৈ স্করেশর ইতি শ্রীবিষ্ণু-প্রাণোক্তায়া অপরাধ্যশক্তে। অন্ধার্যায়ী স্কতে বিশ্বমেতদ্মিংশ্চান্যো মাননা সংনিক্তর ইত্যাদি শতে মানাখ্যনা ক্থিতনা স্বাভাবিক্তমমিধ্যাব্যঞ্জক্তং বিষ্ণুপ্রাণ এব দর্শিতং। শক্তরঃ সর্মভাবানামচিন্ত্যাঞ্চানগোচরাঃ। অভোভো ব্লহ্মণন্তান্ত সর্মাদ্যা-ভাব শক্তমঃ। ভবস্তি তপতাং শ্রেষ্ঠ পাবকস্য যথোঞ্চতা ইতি। একদেশস্থিতস্যাগে র্জ্যোংমা বিস্তারিণী যথা। পরস্য ব্রহ্মণঃ শক্তি-ন্তথেদমখিলং জগৎ ইতি চ। মাধান্ত প্রকৃতিং বিদ্যানায়িনত্ত মহেবরং ইতি শ্রুতিশ্ব প্রতশ্বেন স্বভাবনাহ নতু ভৎ পর্যায়ং বিদ্যাদিতি ভাগনতাংপর্য্যত্রাংনুদ্য বিধেয়য়প্রাপ্তে: পর্যায়মাত্র কথনে লক্ষণভাতাবাজ্ঞানাসিক্ষে:। মায়িনস্ক মহেশর্মিত্যত্র অনুদ্য বিধেরস্বলৈয়ব লব্দেশ্চ। কিন্তু মারিনং মহেশ্বরমিতি মহেশ্বর্দ্য মার্রাপ্রিতন্তং বোধরতি। তত্ত মহেশ্বর্দ্ধযোগ্ধরক্ষং জ্ঞান কৃত্রিমং-চেত্যায়তি। ইচ্ছো মায়াবান পুরুষ: শূর ইতিবং। মায়ায়া বহিরল্পবেংপি স্বাভাবিক্তমেকদেশস্থিতস্যাগ্রেভি দৃষ্টাস্থেনৈব লক্ষং। মারামা বহিরদ্বতে নতদোবেণ মহেশ্বরতং লিপ্তং স্যাৎ। যথোক্তং প্রথমে শ্রীমদর্জ্জনেন। ত্মান্যঃ পুরুষঃ সাক্ষানীশ্বরঃ প্রকৃতেঃ পর:। মারাং ব্রাদস্য চিচ্ছক্ত্যা কৈবল্যে স্থিত আন্ধনি ইতি। সেরমেব চিচ্ছক্তিঃ পরান্তেন বিষ্ণুপুরাণে প্রোক্তা। যাতীতগোচরা বাচাং মনসাঞ্চ বিশেষণা। ত্ঞানিজ্ঞানপরিচ্ছেদ্যা বন্দে তামীশ্বরীং পরামিতি। অস্যাএব বরাত্বেনাস্তরক্ষত্বং পর্মাচিস্কার্যং বিবিধ-রুত্তিত্বং মহেশ্বরতাপর্য্যারকত্বমপ্) দিইং। ন তস্য কার্য্যং করণঞ্চ বিদ্যুতে ন তংসমশ্চাভাধিকশ্চ দৃশ্রুতে। পরাস্য শক্তি বিবিধৈব শ্রমতে স্বাভাবিকী জ্ঞানবলক্রিয়াচেতি। **অত্থলুন তংসম**শ্চাভাধিকশ্চেতি প্রাত্কারোপোপ্জীব্য ব্রস্তরাভাবজ্ঞাশিত্ত স্বাভাবিকত্ব্য প্ৰমাচিস্তাত্বন্ত চ বোধকং। তৃতীয়ে শ্ৰীদ্ৰকাদিবৈকুষ্ঠগ্যনে যোগমায়েতি নিৰ্দিষ্টা চিচ্ছক্তিত্বন স্থামিতি ব্যাখ্যাতা তববাদিভিশ্চ স্বভাষ্যে বোশমায়াচ তথেচ্ছাশক্তিরেব চ। মায়াশকেন ভণ্যক্তে শক্তবার্থবেদিভিরিতি। শক্ষংগ্রাদ্ধমুদাস্বত্য স্বরূপভূতরা নিত্যশব্দ্যা মায়াথ্যরা যুত:। অতে। মায়ামরং বিষ্ণুং প্রবদৃত্তি সনাতন্দিতি প্রতিমণি প্রমাণীকৃত্য যোগমারাশব্দুব-নামা শব্দোহপ্যেত্বাচিত্বন দক্ষত:। এরামাহজচরণৈত মারা বযুনং জ্ঞানমিতি নির্ঘণীস্থতপর্যায়শলা: ক্ষভাষ্যে লিখিতা:। তৃতীয়ে স্বামিভিশ্চ সা বা এতস্য সংস্কট্ট: শক্তি: সদস্দাজিক। মায়ানামেৰে হাত্ৰ ত্ৰই দৃষ্ঠাহসন্ধান রূপেতি। আল্লেছাইগতাবাজেতাতা-স্থেছামারেতি। কালব্ত্তাতু মায়ায়াং গুণম্যামধোক্ষা। পুক্ষেণাপ্স ভ্তেন বীর্যাধত বীর্যান্। ততো ২ভব্মহ্ত্ত্মব্য-ক্তাং কালচোদিতাদিত্যব্যক্তমণি মায়াশন্দেন বোচ্যতে ম। প্রান্থোমায়ান্ত মে ভর্তু নান্যা মে ধ্রণি বিমোহিনীত্যাদৌ মোহিনী শক্তি-त्रि। मार क्रभानस्यार्थार्यास्ति विश्व श्रकात्न। मात्रा न्याम्ब्स्यतीवृत्कााति जिकाश्वर्यस्य । कृतानत्त्राकृति ज्यत्रायाः

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তশাদিতি। স্থান সার্ধকালিকসন্তারহিতং শরপং যস্য তং। অতুএব সমাভং স্থান্মজ্ঞানবদল্লকালনিষ্ঠি। নতু স্থাপ্নিকবন্ধবদস্য জগতোমিধ্যান্তং ব্যাধ্যেরং প্রধানপুংভ্যাং নরদেবস্ত্যক্তনিতি সপ্তমোক্তেঃ সত্যং হেবেদং বিশ্বস্থলতেতি মাধ্যভাষ্যপ্রমাণিতৃ-

নিত্য জ্ঞানরপী অনস্ত যে আপনি, আপনাতে মায়াদারা উদ্ভূত হওয়াতে যদিও শৈষে বিনশ্বর, তথাচ

# একস্থমাত্রা পুরুষঃ পুরাণঃ সত্যঃ স্বরংক্যোতিরনস্ত আদ্যঃ।

# शिपवचामी ।

ৰোধননিব চ অধিষ্ঠানভূত্য্য তব গুণৈক্তবা তথা ভাতীতার্থ: ॥ ২১ ॥

স্বনেব তু নতা ইতাহি এক স্থমিতি। একস্বং সতা: কৃত: আত্মা গুলামসতাং গৃষ্টং ন চান্ধা গৃত্ত: অত: সতা: কিঞ্ যধিকাববং তদ-সতাং নচ অবি জন্মানয়ো বিকাবা: সন্ত্ৰীতাহি আদা: কারণং অতোন জন্ম আদাত্তে হেতু: প্রাণঃ স্ট্যাদি কার্যাং পূর্ক-মিল বর্তমান ইতার্থ:। অতা হেতু: পুরুষ ইতি। তথাচ শ্রুতি:। পূর্কষেবাইনীহাসমিতি তৎ পুরুষসা পুরুষমেতি জন্মান্তরান্তিম্বলক্ষণং বিকারং বানষ্থিতি নিতা ইতি সন্তিন ইতার্থ:। পূর্ণ: অজন্ম প্রথ: অক্তর: অমৃত ইতি চতুর্তি: পদ্য: ক্রমেণ বৃদ্ধিবিপরিণামাপক্ষয়

# देवक बरका वर्गी।

দৃশ্যতে। অতৈব ত্যাং ত্যাবহৈবাৰ ইতাদৌ তছেকেন প্ৰতাবদাত্ৰমজ্যিতং সত্য তৎ প্ৰকাশনেহপি দোষাবিশেষাৎ দৃষ্টান্তেচ তাদৃশ্বাৎ তদৈবং তত্ৰ তথা বথাবধং মাধাশলো বোলনীয়। প্ৰীৰামিব্যাব্যা চেতি সৰ্কং সমন্ত্ৰসং। অত্ৰচ প্ৰকরণে মাধাশকো ত্তুক্তিক্তিবোলিন। তত্বকং। মংশ্বানি স্বৰ্জ্তানি নচাহং তেৰ্বস্থিতঃ। নচ মংশ্বানি ভূতানি পশ্য যে বোগমৈশ্বরং ইতি। অত্যে বতে বহু স্পর্ণো নান্তি তত্ৰ তস্য স্থিতবং মিধ্যেতি মিধ্যাত্বমণি ত্ব্যাধ্যাতং যুক্তং। কিঞ্চ বা প্রাধ্যাক্তিক্তেন উক্তা দৈব বৈকুন্তাদৌ শ্বরপবিভূতিবাঞ্জি। বধা ন মত্র মাধ্য কিমুতা পরে হরেরম্বতা যত্র হ্বরাহ্যার্চিতা ইতি বিতীরে। দর্শনাদান লোকং স্বং পোপানাং তমসং পর্মিত্যান্ত ইতীরেশে তর্কা ইত্যাদিকং স্ত্যজানেত্যাদিকঞ্চ পূর্বত্র। এতক্সনী বিভূতিস্চানশ্বা। বধা বিতীরে তত্ত্বে । নচ কালবিক্রম ইতি শ্রীবিঞ্পুরাণে। কলা কাষ্টা নিমেবাদি কালস্ত্রস্য গোচরে। বস্য শক্তি ন ত্বন্সা প্রদীদ্ স্ব মে হরিরিতি। কলামুহুর্তান্বিন্সস্করণলো ন যবিভূতেঃ পরিপামহেত্রিতি চ। অত্য তর্ধস্যেত্যুক্তবাৎ তলবংশতাবৈষ্বা মহতী শক্তিং। বা বুপরা সান তাদৃশী কিন্তু বথা তত্ত্বিত বস্যাযুক্তাযুক্তাংশাংশে বিশ্বশক্তিরিরং হিতেতি। স্বর্গাদ্যা ভাবশক্তর ইতিচ। একামশেচ। এবা মারা ভগ্বতঃ সৃষ্টি হিত্যক্তকারিণীতি তদেবমপি বথাহং বিবেচনীরং॥ ২১॥

পুনরবাস্তর্গপ্রকরণং তথৈবোপসংহরতি এক ইতি। যশ্বারারারণ অমিত্যাদি একোহনীত্যাদিচ ভশ্বাং স্পান্নিকরলোহয়ং প্রকে এরাশ্বা সর্বেরাং প্রাপঞ্চিকাপ্রাপঞ্চিকানাং সূল্যরপং। তমেকং গোবিদ্দং স্ক্রিদানকবিপ্রহং ইতি সাক্ষাং প্রস্কৃতিপরে বোহর-মাশ্বা পোপালঃ কথং অবতীর্ণো ভূম্যাং হবৈ ইতি গোপালভাপনী শ্রুতে:। বক্ষাতেচ সর্বেরামেক ভাবানামিত্যাদি। কৃষ্ণমেনমবে-ছিম্মিত্যাদিচ। তত্তাত্মর্যমেব সাধ্রতি পুরুষ ইত্যাদিনা তত্ত পুরুরো বোহসাবৃত্তমং পুরুষো গোপাল ইতি শ্রুতঃ। পুরাপো গুড়ঃ

#### क्रमममर्जः।

धक्छ १॥ २२॥ २०॥

#### **अ**विश्वनाष्ठळ वर्जी।

শ্রতেশ্চ অন্তা পুথা বিষণা জ্ঞানমবিদ্যয়া বস্য তৎ। নিতামিতি সন্ধিনী স্থাৰিতি জ্লাদিনী বোধ ইতি সন্ধিত এতং স্বৰূপশক্তি-ত্রিতয়ায়কভাৎ সদানন্দ চিন্ময়া: তনবো ৰদ্য তামিন ছবি অধিষ্ঠানে মায়াতঃ কারণাত্নাৎ উদ্পদ্ধং অপি বং অন্তং গছেদি সদিব সার্ব্বকালিকমিব। বহা। যশ্মাৎ সদম্প্রাহকানি তৎস্বরূপাণ্যের বঙ্গলানি তত্মাদিদং অসদেব অসং স্বরূপং অবলম্মান্তং নমু মিথ্যাভূতস্য জগতঃ কিং ভন্তাভন্তবিচারেণ ত্রাহ স্প্রাভং স্থাবর ভাতীতি তৎমিধ্যাত্বেন ন প্রতীতমিত্যুর্বাঃ। কিছ অভধিবণছাৎ পুরুত্থেত্বেলভন্তমণি সদিব বিষয়ানন্দপ্রা উত্তম্মিবাভাতি॥ ২১॥

কিঞ্চ ত্বানন্তমূর্ত্তিবেহণি দ্বমচিস্তাশক্তা। একমূর্তিরেবেত্যাহ এক ইতি বং এক আত্মা প্রমান্মেত্যর্থঃ। জীবাদ্ধনাং বছদেনেক্তা-ভাবাং। নয় প্রমান্থা নিরাকার এবু ন পুৰুষ: পুৰুষশন্ধন্যাকৃতিমত্যের পদার্থে রুড়ে। কিষন্যঃ পুৰুষ ইবার্কাচীনঃ ন পুরাতনঃ। নমু নন্ধপুত্রবাদ্বাচীনোহপাহং পুরাতনো ভবতঃ ভত্যৈ বাভূবং নতু বধার্থতয়েতি ভত্তাহ্বং নন্ধপুত্তাহিশি সভাঃ তৈকানিক

নিত্যবৎ প্রকাশ পাইতেছে **অর্থাৎ আপনি অধিষ্ঠান হওয়াতে আপনার গুণে দেই সেই প্রকারে প্রকা**-শিত হইতেছে॥ ২১॥

ভগবন্! এক আপনি সত্য, যে হেছু আপনি আত্মা অর্থাৎ দৃশ্য নহেন, হুত্রাং যিনি আত্মা, তিনি অবশ্য সত্য, প্রভো! আপনি আদ্য অর্থাৎ সকলের কারণ, অতএর আপনকার জন্ম নাই। ভগবন্! আপনি যে গাদ্য (কারণ) তাহার হেছু এই, আপনি পুরাণ অর্থাৎ সুইটাদি কার্যাের পুর্বাঃ-

# নিত্যোহকরোহজত্রহথো নিরঞ্জনঃ পূর্ণোহম্বয়োমুক্ত উপাধিতোহমুতঃ ॥ ২২ ॥

# वीधवयांगी।

বিনাশান্ বারয়তি। পূর্ণতে হেত্রনম্বঃ অন্বর ইতি চ দেশকালপরিক্ষেদরহিতঃ। বস্তপরিক্ষেদরহিতোহিণি। অনুচেকোপণাদনার চতুর্বিধিক্রিয়াফলং বারয়তি স্বয়ংক্যোতিঃ নিরশ্বন উপাধিতো মুক্ত ইতি পদত্রেবাখাঃ ভাবস্তত্রোৎপত্তিঃ আদা ইত্যনেনৈব নিরাক্বতা প্রাপ্তিরণি ক্রিয়া জ্ঞানেন বা ভবেৎ ক্রিয়ায়া প্রাপ্তিরাজ্বপদেনেব নিরাক্বতা। জ্ঞানতঃ প্রাপ্তিঃ বারম্বতি স্বয়ংক্যোতিরিভি। বিক্রতিরণি তুরাপাকরণেনাব্যাতেন ব্রীহীণামিব উপাধাপাকরণেন ভবেৎ তচ্চাসক্ষতন্তায় সম্ভবতীত্যাহ মুক্ত উপাধিত ইতি। সংক্ষারোহণি কিমতিশ-

# देवकबरकावनी।

পুরাণপুরুষো বনচিত্রমান্য ইতি বক্ষামানাং। সত্যঃ সত্যব্রতং সত্যপরং ত্রিসত্যমিত্যাহ্যক্তছাং। স্বয় জ্যোতিঃ। যো বদাণং বিদ্ধাতি পূর্বং যো বিদ্যা তথ্য গাপয়ভিন্ম ক্ষকঃ তং হ দেব মাক্সবৃদ্ধিপ্রকাশং মুমুক্র শরণমমুং ব্রজাদিত অজুতেঃ। অনন্তঃ। নচা-ভর্ন বহির্যসা ইত্যাদি। যোহয়ং কাল ভ্রস্য তে ইত্যাহকছাং। জালঃ। ঈশ্বয়ঃ পরমঃ ক্ষক ইত্যাদি ব্রহ্মসংহিত্যয়ং। বিদিভাহসি ভ্রান্ সাক্ষাদিত্যানি প্রীবস্থদেববাক্যাদেনি ত্যঃ নিভ্যোনিত্যানাং চেতনদেতভনানামেকো বহুনাং যো বিদ্ধাতি কামান্ তং পীঠগং যে মু যজন্তি বিপ্রান্তেশং দিনিঃ শাইতী নেতরেয়াং। এতছিক্ষোঃ পরমং পদং যো নিভ্যোক্যক্তাঃ সংযুক্ত ন কামান্। তেরামসৌ গোপরূপঃ প্রযন্ত্র বিপ্রান্তেশক্ষ পদং তলৈবেতি অজুতেঃ। আক্ষর বন্ধাং ক্ষরমতীতোহয়ং আক্ষরালপি চোরম ইতি প্রীক্তাতঃ। অল্পপ্রম্থঃ ক্ষরান্ত্রমে নিত্যানিকৈ করণং ইতি অজুতিঃ। কেবলামুভ্রানক্ষর্ম ইতি প্রীক্তদেববাক্যাদেঃ। নির-জনঃ বিশুদ্ধবিজ্ঞানি বিদ্যানিকৈ করণং ইতি অজুতেঃ। ক্রেম্বান্ত্রমান মাপ্তমর্কার্থমিতি শ্রীনার্মবাক্যাং পূর্ণঃ। তে হোচুক্রপাসনমেত্রস্য গোবিক্ষভাথিলাধারিলো ক্রহীতি ভজুতেঃ কোবেত্তি ভ্রমন্ত্রা সমাপ্তমর্কার্থমিতি শ্রীনার্মবাক্যাং পূর্ণঃ। তে হোচুক্রপাসনমেত্রস্য গোবিক্ষভাথিলাধারিলো ক্রহীতি ভজুতেঃ কোবেত্তি ভ্রমন্ত্রানা ব্রহ্মবাক্রান্ত্রা বিভেতীতি ভজুতেঃ। মর্জ্রোমৃত্রুর্বালভীতঃ পলান্ত্র গোক্রমি নিত্যাদি বাক্যাদেঃ। ভর্ম স্থান্তর্রমাজ্বেদ্যাহ্যং। যোহসৌ সোর্যে ভিন্নতি যোহসৌ গোব্রু ভিন্নতি আহসৌ গোপান্ত্র তি ভ্রমন্তর্বানং পালান্ত্র বিভিতীতাাদি ভজ্বতেরের। তত্র টীকায়াং পদক্রেশে চতুর্বিধং ক্রিল্যক্ষণং বারয়তি ইতি ভ্রমনেং

# ক্রমসন্দর্ভঃ।

নৰাত্মা ধলু ভদাবত্বা জীব এব মূলং। ততভজ্জানেনৈৰ জাতঃ প্ৰশক্ষজজ্জানেনৈৰ নশ্যেং। তত্ৰ তাদৃশমতজ্জানাং কিমিতি

## **बीविषमा**थ6कवडी ।

সভাবান্ প্রাণ প্রত্ব ইত্যর্থঃ। নথদ্য প্রথম কালকর্মাদিপ্রকাঞ্চয়দহমণি কিং তবৈব। ন। স্বাংক্র্যোতিব্ত স্প্রকাশঃ। কিং স্থ্যাদিবৎ পরিছিরঃ। ন। অনস্তঃ ন বিদ্যুতে হস্তঃ কালতো দেশতক বস্য সঃ। নবন্যেহপাবতারী এবস্তুতা এব তেরামহং কত্মস্তর্জাহ আদ্যঃ স্বং তেরামপি মূলতুতো হবতারীভার্থঃ। নথহং বিপরার্ধান্তে কিংনতংক্রপেশ্বাবাহাদ্যামি নবেত্যত আহু নিতাঃ। জগদদং প্রতিনমণি স্তামণি বিপরার্ধান্তে স্বরূপেশাহান্তিয়াননিত্যমূচ্যতে। স্বন্ধ তদাপি নলপ্রাকারেগণি স্থাসাসীতি নিতা উচ্যুদে। স্বদাবার্য্য পূর্ববন্ধস্বরূপর বেহুদে। বাহুদে। বাহুদা। বাহু

বধি বর্ত্তমান আছেন। তাহার কারণ শ্রুতিতে আপনাকৈ পুরুষ শব্দে বলিয়াছেন, পুরুষের অর্থ সৃষ্টির পূর্ব্বে বর্ত্তমান। অপর আপনি নিত্য অর্থাৎ সনাতন, ইহাতে আপনকার জন্মান্তর ও অন্তির লক্ষণ বিকার নাই, আর আপনি গূর্ণ, অজক্রহুখ, অক্ষর ও অন্তুত, হুতরাং আপনার বুদ্ধির বিপরিণান, অপ-ক্ষয় অথবা বিনাশ নাই,অপিচ আপনি অনক্ত ও অন্তুত্ত অত্তর্বাহ কাল দ্বারা পরিচেছদ এবং কোন এবন্ধিং ত্বাং সকলাক্সনানপি স্বাস্থানমাস্থাস্বতয়া বিচক্ষতে। গুর্ব্বর্কলক্ষোপনিষৎস্কৃচকুষা যে তে তরন্তীব ভবানৃতাস্থুধিং॥ ২০॥ আন্তানানেবাত্মতয়া বিজ্ঞানতাং তেনৈব জ্ঞান্তং নিথিলং প্রপঞ্চিতং।

### अधितचामौ।.

য়াধানেন মলাপাকরণেন বা তত্তাতিশরাধানং পূর্ণছেনৈব নিরাক্কতং মলাপাকরণং বারয়তি নিরঞ্জন ইতি নির্মল ইত্যর্থ: ॥ ২২ ॥

তশ্বাদেবস্তুতজ্ঞানাশ্বচাতে ইত্যাহ এবৰিধমিতি ৰাজ্যাং। তাং যে বিচক্ষতে সমাক্ পশান্তি কথং আগ্নাত্মত্মা আত্মা প্রত্যক্ তদ্য স্বরূপত্বেন নটৈত থ পুত্রাদিখিব গৌণমিত্যাহ স্কলাখনামিপ স্বাস্থানং কেন গুরুরেধার্কস্তস্থাল্লকা উপনিষজ্ঞানং ওদেব স্বচক্-স্বেন ভব এবানুতামুধি অং তে তরস্তীব ॥ ২৩॥

স্ব্রত জ্ঞানেন তর্থীতি। তচ্চ তর্প্তীবেতি তচ্চাম্বাভাব্যা জ্ঞানেনেত্যর্থত্তরং প্রতিজ্ঞাতং ক্রমেণোপপাদ্যতে। তত্ত্রাতানিন মেবাতাব্যত্যনেন শ্লোকেন জ্ঞানেন তর্প্তীভূগপপাদ্যতে। জ্ঞানসংজ্ঞাবিত্যনেন তর্প্পীবেত্যেতং। ত্বামিত্যাদি শ্লোক্ষয়েন তু

# देवस्वद्यावनी ।

# সমাপয়তীতার্থ:॥ ২২॥

এতাদৃশবজ্ঞানেনানায়াদেনৈর সংসারামূচ্যকে ইত্যাহ এবমিতি। এবধিধং পূর্ব্বোক্তপ্রকারকং ছাং প্রীকৃষ্ণং সকলাপ্রনামণি জীবভেদানাং পূর্ব্বোক্তপুর্ব্বপ্রভাগে কর্মানাং ক্ষৈক্ষেশানাঞ্চ পূর্ব্বাক্তপ্রকারকং ছাং প্রাক্তিয়া সকলেত্যাদিনা বথোকং তথৈব নতু কেবলগুদ্ধান্দ্রাদিতয়েত্যর্থং। বিচক্ষতে আত্মাদিতঃ সর্বতঃ পরমপ্রেমাপ্পদর্থেনামূভবন্তি সাক্ষাক্ষ্ণদেই ছাং তাদৃশো গুরুরেবার্কঃ নত্তন্যোপদেই বং দীপাদিস্থানীয়ং। তিন্ধিচ কৃষ্ণমেনমবেহি ত্যাত্মান্যথিলাত্মনাং ইত্যহুসারেও প্রীগুক্দেবাদিঃ। উপনিষ্কৃত্বীগোপালতাপন্যাদ্যা। বোহসৌ বন্ধ পরং বন্ধ গোপাল ইত্যাদিরপা। ভবো জন্মমন্থাদিমনং সংসারং। ত্যান্তবাত্দাপ্রবিদ্ধান্থেণ্ড ত্যাভ্রাক্ষেণ্ড ত্যাভ্রাক্ষেত্যাদি রীত্যা গোবৎস্পাদায়মানত্মিব শক্ষঃ॥ ২০॥

নয়ায়া থলু ভ্জাবহো জীব্এব মূলং তত্ত্বজানেন এব জাতঃ প্রাপ্তভ্জানেনৈর নশ্ভেৎ কিং ভগবজ্জানেনেতি বিপ্রতিপ্লা-নিরাকরোতি আত্মান্মেবেতি আত্মানং ব্যমেবাত্মভয়া মূলস্ক্রপত্তেন বিজানতাং জীবানাং ভবস্তং তু তক্রপত্বেনাপানিজানতাং

# ক্রমদন্দর্ভ:।

কেষাঞ্চিন্নতমিত্যাশস্কাহ আত্মানমিতি আত্মানং শুদ্ধজীবমেবায়ত্যা মূলস্বরূপত্বেন বিজানতাং ডাং তু তজ্ঞপত্বেনাবিজানতামিত্যেব-কারার্থঃ। তেনৈব মূলেন অদ্ভানেনেৰ হেতুনা লক্ষছিদ্রা, মায়য়া নিথিশং দেহাদিকং প্রপঞ্চিত শুদ্ধে জীবে অহংমম্ভয়াধ্যস্তং

#### শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবৰ্তী।

অক্ষেতি প্রত্যুক্তমমৃতশব্দবাচ্যং নিক্পাধি অক্ষৈব। প্লেষেণ ন বিদ্যুতে মৃত্যু র্যন্তাং স ইতি॥ ২২॥

কিঞ্চ অদীয়নির্বিশেষব্রহাণ রাপাদাক। অপি অয়ি পুরুষাকারস্বরূপে প্রমাত্মতেন ভক্ত্যা ভাগ্যবশাদ্দি প্রাপ্তনিষ্ঠা: স্থান্তর্ভি তে শাস্তভা: সংগীয়স্ত ইত্যাহ। এবম্বিধ উক্তলকণং আং সকলাআনাং সর্বজীবাজ্মনাং স্থামানং মুক্তমেন মনোন্যনাহ্লাদকআং শোচন-মান্যানং পুরুষস্বরূপনের আত্মাত্মতা প্রমাত্মতেন ভক্ত্যা যে পশ্যতি প্রমাত্মতা ক্লেড জাতা শাস্তীরতির্মতেতি প্রীভতির্গান্তাক্তে:। কেন গুরুরেরার্কস্তমান্ত্রার প্রমাত্মতা আত্মতা বিষৎ সৈব স্থান্ত্রেন তদর্থাবিগাহনোত্থন জ্ঞানেন ভব এব অন্তাম্বিভং তর্জীব॥ ২৩॥

নম্ব তরন্ত্রেব তে কিমিতি তরস্তীর্কেত ক্রমে তথা ভবস্য চান্তবং বা ক্তন্তর তেবাং জ্ঞানিনামাশ্রণীয়ে বিবর্ত্রানমতে শ্রগদিদমন্তমেব ইত্যত তত্তর্গমন্তনেব তরস্তীবেত্যুচাতে ইত্যাহ আস্থানং জীবং আস্বত্যা জ্ঞানানন্দময়াশ্রবেদ অবিজ্ঞানতাং কিন্তু অবিদ্যা

বস্তু স্থারা পরিচ্ছেদ শূন্য । অধিকস্তু আপনি স্বয়ংজ্যোতিঃ নিরঞ্জন এবং বিদ্যা ও অবিদ্যা দ্বিবিধ উপাধি
হইতেই ভিম ॥ ২২ ॥

•

ভগবন্! আপনি এবস্থিধ এবং দকলের আত্মা, যে দকল ব্যক্তি সম্যক্ প্রকারে আপনাকে আত্ম-স্বরূপে নিরীক্ষণ করেন তাঁহার। দিবাকরস্বরূপ গুরু হইতে অধ্যয়ন্ত্রারা লব্ধ উপনিষ্ধ রূপ স্থলর নেত্র ছারা সংসার রূপ অনৃত সাগর উত্তীর্ণ হয়েন। ২৩॥

, আত্মরূপে পরিজ্ঞাত না হইলে অজ্ঞানবশতঃ সমুদায় প্রপঞ্চ প্রকাশ পায় কিন্তু জ্ঞান হইৰীমাত্রই

# জ্ঞানেন ভূয়োহপি চ তৎ প্রলীয়তে রজ্জ্বামহের্জোণভবাভবো যথা। ২৪ । অজ্ঞানসংজ্ঞো ভববস্কনোকো ধৌ নাম নাজো স্ত ঋতজ্ঞভাবাৎ।

# दी धतत्रामी ।

মাত্যাজ্যতয়। ইত্যুপপালতে। নহু জ্ঞানেন ভবং কৰ্থং তয়ধীতি ত্যাজ্ঞাননুশ্বাদিত্যাস মাত্যান্দ্ৰবৈতি। তেনৈবাজ্ঞানেনৈব প্ৰপঞ্চিতং প্ৰপঞ্চঃ। বুজ্জ্বানহে ভৌগ্ৰহাভ্যাবিতি দৰ্শনীৱন্যাধ্যাদাপ্ৰাদৌ যথেতি॥২৪।

নত্ন জ্ঞানিন ভবত্তোব কিমিধন্তাতে তরতীব ইতি তত্তাহ অজ্ঞানমংজ্ঞাবিতি। অজ্ঞানেন সংক্রা ময়োতৌ ভববন্ধমোকে।
ভবেন ব্যৱস্থাক্ষত ভৌদৌ নাম প্রসিদ্ধৌ ঋতজ্ঞ ভাবাং ঋতশ্চাদৌ জ্ঞান্তেতি যো ভাবত্তবাদনেট্য নতঃ। নত্ম কবং মহান্ প্রবাপঃ

### বৈষ্ণ বতোষণী।

ইত্যেবকাবার্থঃ। তেনৈর ম্বেন ভগবদজ্ঞানেনৈর হেতুনা নিথিলং প্রাপঞ্চিতং জাতঃ তং দোষনসহিষ্ণা ভগবদজ্ঞান নামনা বিস্তারিতং দোনিকং তেবাং জাতঃ। স্বরূপাক্তরান্দেশিক তদীয়ত্যা সম্পন্নং তথাজ্জ্ঞানেন ম্বেন ভগবদজ্ঞানছেদকেন ভগবজ্ঞানেনির স্বরূপাজ্ঞানং তদধ্যাসহেতুবজ্ঞানমপি প্রলীয়তে তৎপ্রলয়মের দৃষ্টাস্তেন স্পষ্টং বোধয়তি ব্যামিতি। অত্রৈক্ষেণাছিনেনা স্বর্ধাঃ। ভরং বিতীয়াভিনিবেশতঃ স্যাদীশাদপেত্যা বিপর্যমেশ্বতিঃ। তন্মাম্মাতো ব্রু আভ্রেন্তং ভক্ত্যেক্ষেশং গুরুলের ভাষা ইতি তৈশ্চ ব্যাপ্যাতং। বতোভ্রং ভন্মায়মাতো ভবেততো বুধো বৃদ্ধিমাংজ্ঞানের ভ্রেন্থ উপাসীত। নয় ভ্রাং দিতীয়াভিনিবেশতো ভবতি সচ দেহাইছারতঃ সচ স্বরূপাক্রুবগাং কিনত্র তদ্য মায়া করোতি অত আহ ইশাদপেত্র ইতি। উশবিম্বস্য তন্মান্ত আত্রিতঃ স্বরূপাক্রুবিভাবতা। বিপর্যমে দেহোইশীতি ততো দিতীয়াভিনিবেশাদ্বাং ভবতি। এবং হি প্রসিদ্ধং লৌকিকী-স্বাণি নায়াস্থ। উক্তঞ্চ শ্রভাবতা। দৈবী হেবাং গুণমন্ত্রী মন মায়া হ্রত্যয়া। মানের যে প্রপ্রায়েশেতাং তরম্ভি তেই ইত্যাদি। বন্যপ্রের তথাপীস্বরভন্ধমাত্রস্যাপেক্ষরা তত্রচ প্রতিপত্তিমাত্রস্য নচাংশিনঃ নচাত্ত্রস্য শ্রীরাননাম্যাপি ভাত্ত্রবণাং। ত্রাং তত্র জ্বীবস্বপাস্থত্বর এর সম্যাপ্তক্তে পরিপূর্ণাবিভাবিস্য স্বয়ং ভগবতত্ত্রজ্ঞানং প্রমং মহদেবেতি ত্যাচ কলং স্বন্ধিচ গ্রমপ্রেনাাদ্যপ্রহিত ভাবঃ । ২৪।

অন্তবং দর্শরতি অজ্ঞানেতি। গ্রত শব্দেনাত্রাব্যভিচার্ত্রচাতে জনকেন জ্ঞাতা ভাবশব্দেন পদার্থবিশেষঃ। খৃতশ্চানী জ্ঞানতি প্রজ্ঞান সচাদৌ ভাবশেষিত প্রজ্ঞানত এব এবাজস্রচিত্যাত্মনীত্রাম্বাদিয়তে তর খৃতাজস্র্যোরেক দং ব্যক্তনেব জ্ঞানিবেক দং প্রকাশক্ষণ স্থ্যাদেঃ প্রকাশনান্ধনভিত্তাংশি চেতনক্ষণদ্ধাং। যং প্রশ্বপ্রকাশনজ্ঞানর্থিত তর্জ্ঞাত স্যাদেব ভাবাত্মনোবেক দ্বত্ব ভাবস্থিত প্রকাশনতি চেত্যগ্রাতি নিকজেঃ আত্মনীত্যাত্মান্মিত্যাত্যাং জীবস্কাপনেবাত্র পূর্বত্বত প্রদ্যে লভ্যতে। তথ্যবা

# क्रममर्फः।

ছাতং। তথার্জানেন মূল্যবজানফেদকেন স্বস্থানেনৈর তদ্ধাাদহেত্রজানমপি প্রলীয়তে তংগুলয়মের দৃষ্টান্তেন বোধয়তি বজামিতি। তথা ঢৈকাদশে বক্ষাতে। ভয়ং বিতীয়াভিনিবেশতঃ সাদীশদপেতসোত্যাদি॥ ২৪॥

অন্তত্তমেব দর্শগতি অজ্ঞানসংজ্ঞাবিতি। আল্লশেলোত পূর্বতি চ পদ্যে শুদ্ধদীবশ্চোচ্যতে। নতু আভগবান্ তত্তিবাক্তানবন্ধমোক-

# **औ**विश्वनाथहळ्कवर्छी।

আবরণাজ্জাতুমশকু বতাং তেনৈবাজানেন নিথিলং প্রপঞ্চিতং সর্কা: সংসারোহভূং। ভূয়: পূন্দ সাংখ্যযোগবৈরাগাতপোভক্তিভিবায়নো দেহব্যতিরিক্ত্রেন যজ্জানং তেন তৎ সর্কাং প্রপঞ্চিতং বিলীয়তে। বধা রজ্ঞাং অহে জ্ঞোঁগদ্য সর্পন্রীরদ্য অজ্ঞানজ্ঞানাভ্যাং ভ্রাভবৌ অধ্যাসাগ্রাদৌ ॥ ২৪ ॥

অতএব ত্বদ্যান্ততং অন্তর্গদেব তত্তরণ্দ্যাপান্ততং স্পষ্টরতি অজ্ঞানেতি। অজ্ঞানেন সংজ্ঞা যয়ে। ত্বিক্রনাক্ষেণ তবং দংসারস্তর্গণা বন্ধক ত্রাক্ষণ তৌ থা নাম জ্ঞানে জ্ঞান্দিতি যাবং শ্বন্ধানে জ্ঞান্দিটা থা ওঃ ভৌ ক্তল্পত প্রভাবে পুনরায় তাহা বিলীন হইয়া যায়। অতএব সংদারের মূল যদি অজ্ঞান হইল তবে জ্ঞান দারা ঐ সংদার উত্তীর্ণ হওয়া অস্ক্রব নহে কারণ, জ্ঞান অজ্ঞানের বাধক ॥ ২৪॥ .

ভগবন্! অজ্ঞানদারা লক্ষণজ্ঞ যে ছুইটা প্রদিদ্ধ ভববন্ধ ও ভবমোক্ষ, দে ছুইটা পূথক্ পদার্থ সত্য, কিন্তু ঋতজ্ঞভাব অর্থাৎ অন্যভিচারিজ্ঞান ইইতে পৃথক্ নহে, কারণ অথগ্রামুভবন্ধরূপ বিশুদ্ধ অজঅচিত্যাত্মনি কেবলে পরে বিচার্য্যমাণে তরণাবিবাহনী॥ ২৫॥ স্থামাস্থানং পরং মস্থা প্রমাস্থানমেবচ। আস্থা পুনর্বহিমু গ্য অহো হ্জজনতাজ্ঞতা॥ ২৬॥

# **औ**धव्यामी।

ক্রিরতে প্রমার্থবিচারাদ্িত্যা**হ অভ্যেত্তি। অব্ভান্তবস্তর**পে পরে শুদ্ধে আত্মনি নাজানং নচ বন্ধ: অতএব ন জ্ঞানং নচ নোঞ্চ ভরণো রাত্রাহনী ইতি ॥ ২৫ ॥

নহ পরমাতা জানাৎ অজ্ঞানকতো, বন্ধো নিবর্ত্তাং আতাত্তরৈব জ্ঞানাদিতি কোহরমাগ্রহ ইত্যাশহ্য যদধ্যাসাদাতানঃ স্বরুপা-ক্রিড্রদপ্রাদেন তব্রেব জ্ঞানং যুক্তমিতীমমর্থং বিশ্ববেনাক্রোশরিবাহ তামিতি। স্নামাত্যানং পবং দেহাদিং মন্বা আতানি দেহাদি বৈষ্ণবহঁতাবলী।

জ্ঞান জ্ঞানাৰন্ধমাক বিচারার্হ্যং। প্রকাশনাক ভগবদাচিত্যং বৃদ্ধর বিজ্ঞান প্রক্রান্ত। তত্মানরমর্থ:। যৌ ভববন্ধমাকা শতক্ষভাবাদনার তঃ মারার্ডিরূপযাং তৌ তত্মির জ্লাচিত্যং শতক্তভাবেতু বিচার্যানে। ন তঃ। তত্রানরেঃ স্বক্রোহে নাতি বেতি বিচারে ক্রিয়মাণে তু তল্প নসন্তবত ইত্যর্থ:। তহি কথং তৌ ক্লুবত স্তত্তাহ অজ্ঞানেনৈর সংজ্ঞা প্রতীতির্বয়ো তৌ তথা দৃষ্টাতেন দর্শরত। যে অহনী লিলস্মবায়ন্যায়েন রাত্রাহনী তরণেরন্যৌ তঃ কাল্র্তিরূপত্বাং তেতু তরণী তথা বিচার্যানে বধা নসন্তবত ইত্যর্থ: ॥ ২৫॥

বৈত্ব সকলাঝনামপ্যাত্মানং বাং আত্মমাত্ৰতথা বিচক্ষতে তে ছতিমূৰ্থা এবেড্যাহ ঘামিতি। প্রমাত্মানমেব ছাং প্রং কেবলমাত্মানং ওজনীবস্থকপং মথা। অপ্যর্থে চকার:। আত্মা আতত্তাচ্চ মাতৃত্বাং আত্মাহি প্রমো হরিরিতি স ভবানপি অপুনর্কহিমূর্ণ্য: তাং। অভাবে ন হু নো নাচেত্যমর:। ন পুনর্কহিং শ্রীর্ন্দাবনে মৃগ্যতে কিন্তু ওজনীবস্থকপডেদেন দেহান্তরে এব মৃগ্যতে ইত্যর্থ:। অহো বিশ্বরে ইয়মজ্জনতারা অজ্ঞতা। পূর্কোকত বিবিধবৈশকণ্যত হান্যনম্প্রানাৎ। বছা। আত্মানং সর্কোয় মৃল্যস্থপং ঘাং প্রং অনাত্মানং মত্মা তথা পরং ছত্তোহন্যমেব তাদৃশ্মাত্মানং মত্মা যং কল্চিদ্ন্যো ভবেদিতি কর্মিত্মা বহিত্বংপাদাজ্মদ্নাদস্মানন্যত্র আত্ম মৃগ্যো ভবতি মৃগ্যত ইত্যর্থ: ইয়মহো অজ্ঞজনতারা অজ্ঞতা। যহা তং কেবলং আত্মানং জীবস্ত ওজ অক্ষণ্যমেব মতা তত উৎকর্ষাবান্তে। বিইভ্যাহমিদং

#### ক্রমসন্মর্ভ:।

বিচারাহ থিং। প্রকরণেহন্দিরাভাগমনাত ডগবদাচিবার যুদ্মন্তবচ্ছক্রোঃ দর্মত্র যুক্তভাং ॥ ২৫॥

যে তু সকলা মনা প্যাশ্বানং দ্বাং জন্যথা বিচক্ষতে তেওতি মুর্থা এবেত্যাহ দ্বামিতি। আত্মানং সর্জ্বোং মূলস্বরূপং বাং পরং জনাত্মানং মত্রা যং কশ্চিদন্যো ভবেদিতি কর্মিয়া বহিত্বংপাদাজসদনাদ্বাদন্যত্ম আত্মা মুগ্যো ভবতি মৃগ্যত ইত্যর্থ:। ইয়মহো অজ্ঞজনতারা অজ্ঞতেতি। যবা। দ্বাং কেবলং জীবস্য শুদ্ধস্বরূপনের মত্বা তত উৎকর্ষাবাপ্তে) পরমাত্মানমন্তর্গামিনাত্রক্ষ বাং মত্বা তথা বা যদি মন্যতে তদাপীত্যর্থ:। অজ্ঞজনতারা অজ্ঞতবৈর পরিশিষ্যতে। বিষ্টভ্যাহ্মিদং কুৎস্বমেকুলাশেন স্থিতো জগদিতি ভগ্রহাক্যাং। যত্ত। আত্মা মুখার্ভতছেক বাচ্যো বহিমুগ্য এবেত্যপ্রলিনা শ্রীচরণৌ দর্শরতি। যদ্যেবং

# গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

ভাবে তিরিরজ্প্রচিত্যাত্মনি তৎস্বরূপে জীবে কেবলে দেহাদি সক্ষরহিতে বিচার্য্যমাণে সভি ন তঃ ন সম্ভবত ইত্যবরঃ। দৃষ্টাস্তেন দর্শরতি ৷ যে অহনী নিঙ্গ সমবারন্যায়েন রাজ্যহনী তরণেরন্যৌ তঃ। তে তু তরণৌ তথা বিচার্য্যমাণে যথা ন সম্ভবত ইত্যর্থঃ॥ ২৫॥

বে বাজাবিদ্যন্যা: প্রবাকারং বাং নাজিরত্তে তএব প্রেজিন হুল্ত্বাববাতিন ইত্যাহ বামিতি। চ অপ্যর্থে। প্রমাল্পান-বেবাপি বাং প্রধাকারং পরং ভদ্ধপর্যাত্যহিন্যং মান্ত্রাশ্রমণ আত্যানং মবা আত্যা প্রমাত্যা প্রস্তাভাবিত্রের মৃগ্য:। অবে ভদ্যা অজ্ঞজনতারা অজ্ঞতা অত্যভ্তেত্যর্থ:। অব্যর্থ:। বিবর্জপরিণামাদরোবাদা: থলু চিন্তিরে মান্ত্রিকে জগত্যের প্রবর্জনে। মত্ পূর্ণচিতি ব্রহ্মণি তথা শালং ব্রহ্ম বপুর্দধিদিতি ভৃতীরাং। যত্ত্বপূর্জাতি বিভূষণার্থের আভ্রমণারম্ভিত্য। বভ্ব ভেনের আত্যা ও দেহাদি সঙ্গ রহিত আত্ম ব্রহ্মপ জীবের বিচার করিলে অক্ত্যান অথবা বহ্ন কিছুই থাকে না, অভ্রেব দিবাকরে বেমন দিবা এবং রাজি কিছুই নাই তদ্ধ তাহাতে জ্ঞান ও মোক্ষ কিছুই নাই ॥২৫॥

প্রভো! তুমি আজা, তোমাকে পর (দেহাদি) জ্ঞান করিয়া অর্থাৎ আত্মাতে দেহাদি অধ্যাস ক্রিয়া, আর পরকে (দেহাদিকে) আত্মজান করিয়া অর্থাৎ দেহাদিতে আত্মার অধ্যাস করিয়া অক

266

# অন্তর্ভবেহনন্ত ভবন্তমেব হৃতভাঙ্গন্তে। মৃগয়ন্তি সন্ত:।

# विधव्यामी।

মধ্যসা তথা পরং দেহাদিমায়ানং মতা দেহাদাবাত্মানমধ্যস্য আন্ত্র নাষ্ট আত্মা বহি মৃগ্যতে ইতি চিত্রং। ন হি গৃহে নাইং বনে মৃগ্যত-ইতি ॥ ২৬ ॥

বিবেকিনন্ত প্রত্যক্ষরপ্রদেব প্রমাত্মানং বিচিন্নতীত্যাহ অন্তর্ভব ইতি। ভবতীতি ভবং চিচ্কড়াত্মকং শরীরং তর্মধ্যে এব স্বাং

# বৈক্ষবতোষণী।

কংলনেকাংশেন হিতোজগণিতি ভগবছাক্যানম্সন্ধানাং যক আত্মা মুখাবৃত্তভ্জ্জনাচ্যো বহিৰুগ্য এবেতি তৰ্জনীযুগলেন চন্ধান্ত কন্মলযুগলং দৰ্শনতি বদোবং ন আং তদাহদপি অসদন এব বিছা মনসি সমাধান্তং ন পুনরত্ব প্রীক্ষাবনে সমাধাসাং। নহি গৃহে নইং বনে মুগ্যত ইতি ভাবং। সন্ধিন্ধহোধেন। জন্মনাজনতারা অজ্ঞতেতি বা। বছা। বে জীবভব্তেশ্বংভ্রবিদোহপি সর্জং পরিত্যজ্য তাদৃশং প্রীকৃষ্ণং সংপ্রতি প্রীকৃষ্ণাবন এব মুগ্যন্ত তান্ ভৌজি। প্রথমং তাবং পরং কেবলং অহৈতোপাদনরা আমাআনং জীবস্ক্রপাদতিবিক্তমগুলুর ততঃ পরমাত্যানমেব চাম্ভূর পুনরধুনা আত্যা তলক্ষণং সর্কেষাং মূল্যক্রপং ৰহিশ্চকুরাদি গোচরে মুগ্যঃ সম্পদ্যতে ত্যাদহো বিজ্ঞানতারা বিজ্ঞতেতি। অজ্ঞানাজতেতি কৃতিং পাঠঃ। তত্র চাজ্ঞান্ধেনাম্ভ্রনশন্ধবিক্ত এবাত্র বাধ্যেরং। অত্র মুগ্য অহো ইত্যত্র রোক্ষাতারং সদৈন্যরোদন বচনছেন মুগ্য ইত্যকার্স্য প্রভ্রাং অভো রোরপ্রভাদপ্ত ইতি স্ত্রং ন প্রবর্ততে ইতি॥ ২৬॥

পূর্পনি হেডুমাই হে অনন্ত সর্পব্যাপিন হি যন্ত্রাৎ অন্তর্ভবে ব্যষ্টিসমষ্টিরপেস্য ভবক্ত জগতৌ মধ্যে সত্তো বিবেকবতঃ ভবতঃ আঁকুক্ষ-মেব মৃগরতি। সর্প্রদেশ স্থাপিন প্রথাপুণ্ডিমব প্রাপ্তঃ তেষাং মনোরথঃ স্বন্ধ ভগবান্ ভবানেবচ তাদৃশ ইতি কিং কুর্পত্তঃ। অভং ছদ্বাভিরিক্তমন্যদন্যদপরিতোবেণ ত্যক্ততঃ। নমু জগদেব মমাবরণং তং কথমত্র সংগ্রোপ্তিঃ ক্তাৎ উচ্যতে ভবেদেব মবিবেকিনাং বিবেকিনাং বিবেকিনাও গুঢ়স্য কারণস্য তব ভত্তকা গুল্লশাভাসভাবিতং কার্যজ্তং ভদেব প্রত্যাহকং তত্তচান্ত নাম সক্ষপমসক্ষপমপানবিব্যন্ তদ্ব-শ্রমাতো। দুক্তত ইত্যাহ অসত্তমপীতি। সম্ভ ইতি সাধারণবিবেকিনঃ পূর্ণেষাং ত্রিশেষাণাং দৃষ্টাক্তাঃ। অভ্য চ ভদংশত্যাগে ব্যষ্টি-

# क्रमनमर्जः ।

তহ হিমপি স্বসদন এব বিবা মনস্যেব সমাধাস্যং ন পুনরত্ব বুলাবনে সমারাস্যং। ন হি গৃহে নষ্টং বনে মুগ্যত ইতি ভাবং। স্থিত্হলো ইহলো ইহলো ইহলোই ক্রেলাবন । জ্ঞানাজনতারা অজ্ঞতেতি বা। বহা। স্বর্ধং পরিত্যক্ত্য স্ব্রুতি আইক্রেক্সমুখ্যান্ ভৌতি। এবং পরং তাবং কেবলং অবৈতোপাসনরা হাং আহ্বানং জীবস্বরূপানতিরিক্তমনুত্র ততঃ পর্মান্তানমেব চাত্ত্র পুনরধুনা আত্যা সর্কেবা মূলস্বরূপং বহিস্ক্র্যাদিগোচরং মুগ্যঃ সম্পাদ্যতে। তত্মাদহো বিজ্ঞানতারাঃ আইক্রাদিরপারা বিজ্ঞতেতি। অজ্ঞানাজতা ইতি কচিৎ পাঠিঃ॥ ২৬॥

অত চাছত্তমশক্ষরভিজমুখ্যোহপি ব্যাথাতিং শক্ততে। পূর্বত হেছু:। ভবত্ত: শুকুঞ্চমেব। অতত্ত্বভিত্তিকমনাদন্যদ্পরিভো-

# अविधनाथहळ्यकी।

স বামন ইতাইমাৎ। সত্যজ্ঞানানস্থানন্দ্রনিকরসমূর্বর ইতি দশমাৎ। গোবিন্দং সচিদানন্দবিগ্রহং বুলাবনস্থরভূকহন্তলাসীনমিতি তাসাং মধ্যে সাক্ষাযুদ্ধগোপালপুরী হীতি গোপালতাপনীশুতেক। পূর্বজনাত্মকে ভগবন্ধপ্রীদাবপি। যে তু শুভিন্ধতীক্ষণাভাবাদকাক্ত্র তথ্ঞাপি বিবর্তমন্ধপরশারকৈব প্রবর্তমন্ত্রে প্রশাস্তি তে ত্বো শলেন একণা অক্টো শোচ্যেরু মধ্যে বিশ্বরস্ববিব্যীচ্জিরে ইতি। সক্তর্জনাক্ষতেত্যপি পঠিঃ ॥ ২৬ ॥

বিজ্ঞান্ত খাং মারোণাধিকেন মন্যতে কিও লীবান্তানমেবাততবেৰ মারামালিনাতো বিচ্যতীকর্ত্তু তবেব কেবলং ওকং মূগ্যন্তী-ত্যাহ অন্তর্ভবে শরীরমধ্য এব বর্তমানং অনতভবং অনত্তা, অসংখ্যা তবা নানা বোনিরু জন্মানি বস্য তং প্রসিদ্ধমন্তকং জীবান্ধানং

লোকেরা এই দেহের মধ্যে নই আত্মার অশ্বেষণ বাহিরে করে, এ কি চমৎকার'? গৃহে নই বস্তুর কি কথন বনে অশ্বেষণ করা উচিত ? যাহাহউক, অজ্ঞ ব্যক্তিদের এই অজ্ঞতা অতিশয় আশ্চর্য্য ?॥২৬ পরস্তু, সাধু ও বিবেকী জনগণ চিচ্জাত্মক শরীর মধ্যেতেই অসৎ পদার্থ পরিত্যাগ করিয়া

# शिधवयामी।

মুগারু রি। অভং জড়ং তাজ স্তঃ অপবদন্তঃ। ন্যুসতো জ্ঞানেনালং কিম্সতো ২পবাদেনেতা শৃক্ষা অসতো ২পবাদং বিনাধিষ্ঠানতবং

# देवकवरञावनी ।

প্রক্রিয়েয়ং প্রথমতো দেহাদীনাং জড় মলিনাদিদ্বাৎ ক্রমশস্ত্যাণেন তচ্চেতনাদিহেতুঃ ওদ্ধ আত্মোপলভাতে নির্বিশেষত্রদদ্ষিত্ত या निवृ তি অত্ত্তাং তব পাদপল্লধ্যানাছৰজ্জনকথা শ্রবণেন বা স্যাৎ। সা এক্ষণি স্বমহিমন্যপি নাথ মাভূদিত্যাদিঞ্ববাক্যা-দিভ্যো বন্ধণোহি প্রতিষ্ঠাহমিত্যাদি শ্রীগীতাদিভাশ্চ পরিষ্ঠতৈব ততঃ ভঙ্কনিবদ্যাপি প্রকাশকঃ। কেচিৎ স্থদেহাস্তর্সদর্গবিশা প্রাদেশমাত্রং পুরুষং বসন্তঃ। চতুর্ভুক্ষমিতি দিতীয়োক্তেন্তদন্তর্গামী। তস্যাপি ততারগুণোলাদেন ততঃ পূর্ণো গর্ভোদশায়ী তৃতীযে ৰ্ণিত: সমষ্ট্যন্তর্গামী তদ্বতারাশ্চ। ততোহপি সর্ব্যব্দ্রাণ্ডদমষ্ট্যাম্বর্গামী আদ্যোহবতার: পুরুষ: পরস্যেতি হচিত:। কারণার্ণব-শারী প্রথমপুরুষ:। ততো বিইভ্যাহমিদং কুৎস্নমিত্যাদি। যদ্যাযুতাযুতাংশাংশে বিশ্বশক্তিরিয়ং ছিতেত্যাদি দৃষ্টা সাক্ষাং বনেব। অগ সমষ্টাবণি পূর্কমিজ্রচজ্ঞাদিময়ং বিরাভূপং মামেবেশবং মন্যত্তে পশ্চাত্ত্ব্যাপি নশ্বত্তাদিনা তদন্ত্র্যামীত্যাদি পূর্কবিৎ। তত্ত্বাদধুনা কেনাপি ভাগ্যোদয়েন সাক্ষান্তবৈৰ লাভে সতি সাধুক্তং স্বামাস্থানমিত্যাদি অত্যেরং শ্রীবৈষ্ণবপ্তক্রিয়া যহে বি মদেকং চিম্বন্ত মারা-শ্রহং বিদ্যামরং তহে ব তক্মায়াবিষয়মবিদ্যাপরিভূতং চেত্যক্তমযুক্তমিতি জীবাতা পরমাতানোর্বিভাগোহবগত:। ততণ্চ বরূপ-সামর্থ্যবৈলক্ষণ্যেন তদ্বিতমং মিথোবিলক্ষণস্বরূপমেবেত্যাগতং নচ পরিচ্ছেদপ্রতিবিশ্বাবিষ্ঠা বিভাগঃ স্যাৎ তত্র বহাপাধে-রনাদিবিদ্যকত্বেন বাস্তবত্বং ভর্জ বিষয়স্য তস্য কথমপি পরিচ্ছেদবিষয়ত্বাসম্ভবঃ। নির্দ্ধক্ষস্য ব্যাপক্ষ্য নির্ব্যবস্য প্রতিবিশ্বতাযোগো-<mark>ছপি উপাধিসৰদ্ধাভাবাৎ প্ৰতিবিদ্বভেদাভাবাৎ দৃশ্বভা</mark>ভাবাক উপাধিপরিচ্ছিন্নাকাশহুদ্যোতিরংশস্যৈর প্রতিবিধাে দৃশ্যতে নত্বাকাশস্য দৃশ্যবাভাবাদেব। তথা বাতত্তবপরিচ্ছেদাদৌ সতি সামানাধিকরণ্য জ্ঞানমাত্রেণ নতন্ত্যাগত্ত ভবেৎ। শাল্লে কচিৎ প্রতিবিশ্ববাদাদীকা-বৃদ্ধিহাসভাক্তমন্তর্ভাবাহ্ভরসামঞ্জস্যাদেবমিতি স্থারেন্উপাধে রাবিদ্যকত্বে তু বাস্তব-রশ্চ তৎসাদৃশ্যেনৈব অত্বদ্গাহণাৎ। পরিচ্ছেদাদ্যভাষাৎ প্রাক্তনো মান্তাশ্রমিত্যাগ্রভেন্নাত্মকে। বিরোধ স্তদবস্থ এব স্যাং। তথা শুদ্ধায়াং চিত্যবিদ্যাকরিতোপাধৌ তস্যা-মীৰরাপ্যারাং বিদ্যোত্যসমঞ্চসাচ কল্পনা স্যাদিত্যাদ্যসূদক্ষেয়ং। তত্মাদেক্ষেষ তৎ প্রমত্ত্বং বাভাবিকাচিত্যাশক্ষ্যা সর্কাদেব চতু-দ্ধাবতিষ্ঠতে। স্ব্যান্তম ওলম্বতেজ ইব বহিশাগুলতম্হিৰ্গতর্শ্যাদিরপেণ। অচিন্তাশক্তিমং চ মণিমন্ত্ৰনং বিধ্যাদীনাং কারণ-গণ কারণে তালিদ্বাশ্চর্যাং। স্রুতেন্ত শব্দমূলত্বাদিতি আত্মনি চৈবং বিচিত্রাশ্চ হীতিচ স্থায়েন আত্মেশ্বরো ২তর্ক্যদহত্রশক্তিরিতি ষষ্ঠে২প্যেতদ্দর্শিতং। অতম্বত্তংসমাবেশাদ্যমুপপত্তি শ্চাভিন্তাশক্তিত্বেনৈব পরাহতা। হর্ষটঘটকত্বং হৃচিস্কাত্তং যেন ধলু সাশক্তিরপরিচ্ছি রমণি পরিচ্ছিরত্বেন দর্শরতি যথৈব দর্শরিব্যতে একদেশস্থিতস্যাধেরিতি। সা শক্তিশ্চ ত্রিধা অন্তরন্ধা ডটন্থা বহিরদা চেতি স্মত্রা-স্তরন্ধ্যা অরূপশক্ত্যাধারা পূর্ণেইনব অরূপেণ বৈকুণাদিঅরূপবৈভবেন চাবতিষ্ঠতে। তটস্থারা রশ্মিস্থানীয় চিদেকাত্মরূপগুজজীব-রূপেণ। বহির্দ্ধা নারাধ্যরা আভাদগতবর্ণশাব্দালীয়তদীয়বহির্স্পবৈভবজ্ঞ ায়প্রধানরূপেণ চেতি চতুর্ঘান্ধ। বংথাক্তং শ্রীবৈষ্ণবে। একদেশস্থিতস্যান্ত্রে র্জ্যোৎস্না বিস্তারিণী যথা। পরস্ত ব্রহ্মণঃ শক্তিভথেদমধিলং জগদিতি। শ্রুতৌ চ। যদ্য ভাদা দর্কমিদং বিভাতীতি। অতএব তদাভ্রমেন জীবস্যৈব তটস্থাক্তিবং প্রধানগা চ মারাস্ত ভূতিম্মভিপ্রেত্য শক্তিত্রং ভত্তৈব দর্শিতং। বিষ্ণু-শক্তিং পরা প্রোক্তা ক্ষেত্রজ্ঞাধ্যা তথা পরা। অবিদ্যা কর্ম্মণংজ্ঞান্তা তৃতীয়া শক্তিরিষ্যত ইতি। তত্র পরাম্বাভীত গোচরা বাচা মিত্যনেনোক্তা। কেত্রজাখ্যা জীবস্থৃতা দেয়মপরা প্রথম ড্তীয়য়ো ম ধ্যবর্তিনীতৃতীয়া দেয়মপি পরেতি বা। তথাচ শ্রীগীতাস্থ ভুম্যাদিত্যা ভেদং প্রাপ্তা প্রকৃতিরষ্টধেতুক্।। প্রাহ। অপরেমমিতখন্যাং প্রকৃতিং বিদ্ধি মে পরাং জীবভূতামিতি। সর্বভূতের্-সর্বাত্মন্বিতানেনাক্তাতু অবিদ্যা কর্ম কার্যাং যদ্যা অপরায়াঃ দা তংসংজ্ঞা মান্বেতার্থঃ। অভএব জীবদা রশ্বিদানীর্বাৎ মণ্ডব-

### क्रममन्छः।

ষেণ ত্যজন্তঃ। ভূবন্য খং কাৰ্যভূতহাং তদন্তৰ্ঘাদান্বস্থন্য তুদ্ধণনা চ বদংশবাতত তব দৰ্শনঞ্চ কুক্তমেৰ। বতঃ কাৰ্যমাত দৃষ্টিনাম

# 🗷 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

মৃগরন্তি। কিং কুর্মন্তঃ স্নতং আয়তিরং সারিকং সারাঞ্ তাজন্তঃ অপবদন্তঃ। নমু চিয়য়স্য জীবান্ধনো জানেনাকং কিং চিত্তির-স্যাপবাদেনেত্যাশস্থ্যাধান্তস্যাপবাদং বিনা অধিষ্ঠানতন্ত্বং ন সম্যক্ জ্ঞারত ইতি সভাং ব্যবহারেণাই অসপ্তমিতি অতি সমীপে অসত্ত-মপ্যাহ্মন্তবেশ সায়মহিরিতি তদশবাদং বিনেতার্থঃ। সন্তং গুণং রজ্জ্বং সন্তঃ কিমু যতি জানন্তি নৈব জানন্তি তথৈব। অসলো-ক্ষাং পুর্ক্ষ ইতি শ্রুতে জীবান্ধনঃ পূলক্ষ্মদেহগন্তনা নৈবান্তি তথ্যসম্ভাবাদের দেহো দৈহিকাঃ শোক্ষোহাদরশ্চ তক্ত নৈব- ষ্মান্তমপ্যস্ত্যহিমস্তরেণ সন্তং গুণং তং কিমু যান্তি সন্তঃ ॥ ২৭॥ অথাপি তে দেব পদাসুজৰয়প্রসাদলেশামুগৃহীত এব হি।

# नी धत्रवामी ।

নজারত ইতি সতাং ব্যবহারেণাহ অসম্ভমিতি। অন্তি সমীপে অসম্ভমপাহিমস্থবেশ ভাইবেশং বিনেতাল:। সাদ্ধান্তব্য নজ্জাং সম্ভ

# देवकदरहावनी ।

বিলক্ষণং মাথাব্যবধানতিরোধাপনীরবৈভবন্ধং যুক্তং। তদন্তরং হুক্তং। যথা ক্ষেত্রজ্ঞশক্তিং সা তাবতন্যেন বন্ধত ইতি। আবাস্থ্যসত্তিইছব্যহিরক্ষাদিনৈর ভেষামেকাত্যকানাং তত্র সামাং নতু স্বর্গাত্যনেতি তত্তৎস্থানীয় হাতি নিক্। নতু তত্তজ্ঞাবং তত্তভাবদোষা অপি নাবকাশং লততে। অত্ন বিশেষবিবেকাঃ আভাগ্যতসন্দর্ভট্টীকয়োধ্যবেশাক্ষীয়া ইতি নিক্। ২৭ ॥

শদ্যপ্যেবনপরিচ্ছিন্নং অনাহাত্যাং প্রক্ট্রেনর তথাপি ছংপ্রসাদেনৈর তবিবেকস্য তৎপরিসরগ্যনং ভারত্বভাহে অথাপীতি যোজনাত্র ক্ষান্ত। তত্র চাথাপি তব মহিন্ন তবং জানাতীত্যনেন পূর্বপ্রকরণে বিবর্তবাদমন্ত্রাথ্যাপনমূলক প্রক্ট্রেনর পদার্থান্ত দর্শান্ত। দেব হে সর্বপ্রকাশক সর্বত্র প্রকাশমানেতি বা। যন্ত্র। দীব্যতি জ্ঞীরন্দাবনে সনা ক্রীড়জীতি দেব ভ্রম্য সম্বোধনং। প্রসাদঃ ক্রপা তস্য লেশেনাপাস্থগৃহীত এবেতি। যমেবৈর বৃগ্তে ইত্যানি ক্রতিং হ্রমতি ভক্তাত্র পদান্ত্র শব্দ প্রয়োগঃ হি নিশ্চিতং। ভগবন্ হে নিজকারণ্যাদিগুণপ্রকটনপরেত্যর্থঃ। অন্ধং প্রসাদে হেত্রভঃ। মহিন্ন: ক ট মস্যাপি দেববপুর ইত্যানিভি বপরিছিন্দ্র ত্রোপক্রান্ত্রস্য কো বেতি ভ্রমন্ত্রাদিনা তথাভ্যান্ত্রস্যাপি তবং শ্বরপং য্বকিঞ্চিন্ত্রতি। অন্তঃ প্রসাদহীনঃ। একঃ একাকী

#### ক্রমসন্দর্ড:।

সভাপি কার্য্যে তত্ত্বৈব তৎ কারণং দৃশ্য ইত্যাহ। অসম্ভমিতি। সম্ভ ইতি সাধারণবিবেকিনঃ পূর্বেষাং স্থিনোধাণাং দৃষ্টান্ত:॥ ২৭॥
তথাপি তিবিবেকস্য বংপর্য্যস্তগমনং বংপ্রসাদেনৈব স্যাদিত্যাহ। অথাপীতি ভক্তা পদাৰ্ভ্রশন্প্রয়োগ:। লেশে হ্যুক্তিতথ্য বর্দ্ধিকোঃ ক্রমেণ পূর্ণপ্রাপ্তাভিপ্রান্তেশ মহিমঃ ঐশর্য্যাদ্রপ্রাদিরপমাহাত্যাস্য। মমকু তাদৃশপ্রসাদস্য করং যভ্জানং

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

সন্তি। তদপ্যবিদ্যবৈত স্থিন জীবাতানি দেহে। ২ধ্যন্তঃ। তত্তত কদাচিহ্ছুতেন জ্ঞানেন নায়য়াতা দেহ ইতি তদ্য দেহ-স্যাসতোহপ্য প্ৰাদং বিনা সতাং শুদ্ধং জীবাতানং কিং জানস্তি নৈব জানস্তীত্যুগঃ॥ ২৭ ॥

কিঞ্চ জীবাতানো বৃদ্ধান্ত বৃদ্ধান বৃদ্ধান্ত বৃদ্ধান্ত বৃদ্ধান্ত বৃদ্ধান্ত বৃদ্ধান্ত বৃদ্ধান্ত ব

তোমার অবেষণ করিয়া থাকেন। ভগবন্! অসৎ ত্যাগের কারণ এই তহ্যতিরেকে অধিষ্ঠান তত্ত্ব পরিজ্ঞাত হয় না। ফলতঃ যদিও সর্প না থাকে তথাচ তাহার নিষেধ না করিলে সাধু পুরু ধেরা কি রজ্জু জানিতে পারেন ? কথনই পারেন না। অতএব আত্মরূপে জ্ঞান স্বারাই মুক্তি হয় অত প্রকারে হয় না, ইহা নিশ্চিত হইল ॥ ২৭॥

হে দেব! হে ভগবন্! যদ্যপিও মোক জ্ঞানলভা তথাচ তোমার পাদপদ্ম ছয়ের প্রসাদশেশে যে ব্যক্তি অমুগৃহীত, তিনিই দ্বনীয় মহিমার তত্ত্ব অবগত হয়েন, তত্ত্যতীত অন্য কোন ব্যক্তি অসং জানাতি তবং ভগবন্মহিন্নো নচান্য একোহপি চিরং বিচিম্বন্॥ ২৮॥ তদস্ত মে নাথ স ভূরিভাগো ভবেহত্ত বান্মত্তভু বা তিরশ্চাং।

# क्षिश्वचामी।

কিব্ যতি জানস্তি। অবি সন্তমপি গুণমিতি বা নজানস্তীত্যর্থ:। তল্মাদাম্মতহ্যৈব জ্ঞানাক্সিরিতি ভাব:॥ ২৭॥

নম্ব এবং জ্ঞানৈকসাধ্যে মোক্ষে কিমিতি ভক্তির্পদোষিতা অত আহ অথাপীতি। বদ্যপি হন্তপ্রাপানিব জ্ঞানমুক্তং অথাপি হে দেব তব পাদামুক্ত মব্য অবদেশস্যাপি যঃ প্রসাদলেশোহপি তেনামুগৃহীতেনামুগৃহীত এব ভগবত তাব মহিত্র তাবং জানাতি হে ভগবন্তে মহিত্র অবমিতি বা একোহপি কশ্চিদপি চিরমপি বিচিম্বন্ অতদংশাপবাদেন বিচারবৃত্রপীতার্থঃ ॥ ২৮॥

তত্তকাত্ত্রিভাগঃ মহন্তাগাং অত ভবে ত্রক্ষক্মনি অন্যত্ত তিরশ্চামপি মধ্যে বক্ষক্ম তিরিন্ বা যেন ভাগোন ভবদীয়ানাং জনানা-

# देवकबट्डावनी।

নিঃসঙ্গ: সরপীত্যর্থ:। শ্রেষ্টো রুজাদিরপীতি বা বিচিয়ন্ তবং কীদৃক্ কিয়বেতি শাক্ষাভ্যাসেন বিচারস্বন্ বোগাভ্যাসেনচ মৃগ্রন-পীত্যর্থ:। লেশেত্যুক্তিক্তক্ত বৃদ্ধিকোঃ ক্রমেণ পূর্ণপ্রাপ্ত্যুক্তিপ্রায়েণ॥ ২৮॥

মনতু তাদৃশপ্রসাদস্য করাং বজ্জানং তদ্যাপি য় ক্রম্পাসনং তদ্যাপি বং করাং সাক্ষাংকারঃ সএব সহসা সংবৃত্ত স্থানেতদেব প্রার্থির ইতি নৌরীত্যাদি প্রতিজ্ঞানের সন্ধর্মনূর সর্বং প্রকরণং তাদৃদে প্রীক্তক্ষ এব পর্যাবসারস্কার যাবংস্মান্তি। তত্ত্বাং নাথ হে সর্বকামপরিপূর্ক পার্মেট্যপদ্প্রাপকং বন্ধ ভাগাং তন্মহন্ন ভবতি কিন্তু সএব ভূরিভাগাং মহত্তাগাং বত্তবজ্ঞানানেকোংশীতি সেবারাঃ সম্যক্ষান্যপেকরা অতএব নিশক্ষঃ। তত্ত্বত ব্রক্ষমনি অন্যত্ত তৎপ্রতিযোগিছুরিগাদিতির্ব্যগ্রোনী বা ন ম্যাগ্রহঃ। কিন্তু তত্ত্বতাবেবেতি বাশক্ষাভ্যাং স্চ্যতে হরিণাদিযোনী সেবাচ স্বেহনে রজ্ঞাদিমার্জনারাবহেলনাদি ক্রপা গ্র্মা। সাচ তির্বিধানাং দৃষ্টের কিল প্রার্থতে পদ্যবন্ধনিদং ইথং বা সক্ষমনীরং। বদ্যপ্রেবং তব মহিনা তথাপি তৎপদাব্রধ্রস্য বং প্রসাদো

### क्रमनन्धः ।

তিস্যাপি বং কলম্পাদনং ভদ্যাপি বং ফলং দাক্ষাংকারঃ দএব সহসা সংর্ত্ত ভন্মাদেতদেব প্রার্থর ইতি॥ ২৮॥

নৌমিত্যাদি প্রতিজ্ঞামের সঙ্গমরন্ সর্বপ্রকরণং শ্রীকৃষ্ণ এর পর্যাবসায়িত্মাহ। ভদন্বিত্যাদিনা যারৎসমাপ্তি। অন্যত্র হরিণাদিযোনৌ বা সেবা চাত্র প্রেহেন রক্ষমাদিমার্জনায়াবহেলনাদি রূপা সাচ ভদ্বিধানাং দিট্টোর কিল তং প্রার্থাতে ॥ ২৯ ॥

#### শীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

# विठात्रग्रज्ञश्रि॥ २৮ n

ভো বন্ধন্ সাধ্যসাধনতবজ্ঞশিরোমণে অবৈতাৰ ব্যঞ্জিতলক্ষণরো উক্তিজ্ঞানরো মধ্যে তব কুত্র স্পৃহেত্যত আহ তদন্ধিত। হে নাথেতি সংবাধনেনৈৰ ব্যঞ্জিতারাং সত্যামপি দাস্যস্থারাং ভো বন্ধন্ উৎকর্বনিকর্বো স্মাক্তরা বিচার্ব্যেৰ সর্ব্বোৎক্ষইং বন্ধ স্পষ্টং প্রার্থ্যবিত চেৎ স এব মে ভূরি ভাগো মহদেব ভাগাং মনসা নির্দারিত্তমেব বর্তত ইত্তি ভাবং। বেন ভূরিভাগেন অত্ত ভবে বন্ধান্ধনি বা তিরশ্চামপি মধ্যে বজ্জন তেলিন বৈতি ব্রক্ষন্মারভাতির্ব্যগ্রোনিপর্ব্যন্তং বাবস্থি জন্মানি সন্তবন্ধি তেলপি কালি জন্মনীতি ভাবং গজোগুরোবিদ্বৃপ্থ ইতি বচনান্তির্ব্যাবানাপি ভক্তিশ্রবাথে। তিরশামপীতি বহুবচনেনাপি শব্দেনচ মোক্ষান্ধ কলাঞ্জনিং দ্বা স্বস্তু অতার্থে সহক্রমন্তবার্থনীপি ব্যঞ্জিতা। ভবদীয়ানাং জনানাং মধ্যে একো বং কশ্চিদ্পি নিত্তরাং সাধকত্বসিত্তরোদ্ধারোং সেবে। তদেবং নোমীডাতে ইভ্যেকেন মাধুর্ব্যং জন্মাপি দেবেত্যাদিভি তদন্ত মে নাথেত্যকৈঃ পদ্যৈরেশ্বয়ং বিবৃত্বতা বন্ধণা ত্রন্থ্য এব জ্ঞানে প্রধানমিতি তত্তে হন্ধকম্পানিত্যাভ্যাং কেবলারা ভক্তেশ্বংকর্বঃ। স্বামান্ত্রান্ধ মধ্যে ক্ষানতাং তংপ্পবীমিত্যাভ্যাং কেবলজ্ঞানস্যাক্ষেপ:। শ্রেরংক্তিমিতি পুরেই ভূমনিত্যাভ্যাং কেবলারা জ্ঞানতন্তনা ক্রমেনতি অথাপি তেদেবেত্যাভ্যাং ভক্তিমিত্রং জ্ঞানং। এবিষধং বাং সক্লাত্যনামিত্যনেন শাস্তভিতঃ। তদন্ত মে ইত্যানেন দাসভিতিং। তদন্ত মে ইত্যানিকাভিত্যভা ব্রন্থা আহোহতিধনা ইত্যাদিভীরগাত্যক বাংস্ব্যাদিরতিমন্ত

পরিত্যাগ না করিয়া চিরকাল বিচার করিরাও তাহা জানিতে পারে না ॥ ২৮ ॥
• অতএব হে নাথ! এই অক্ষজন্ম অথবা শরে অন্য কোন পশু পক্ষ্যাদি মধ্যে যে জন্ম হইবে

বেনাহমেকোহপি ভবজ্জনানাং ভূত্বা নিষেবে তব পাদপল্লবং॥ ২৯॥ জহোহতিধত্যা ব্রজগোরমণ্যঃ স্তত্তামৃতং পীতমতীব তে মুদা। যাসাং বিভো বৎসতরাক্সজাত্মনা যত্তপ্তয়ে হদ্যাপ্যথ নালমধ্বরাঃ।

#### धीधत्रश्रामी।

মেকোহপি यः কশ্চিদপি ভূষ। নিষেবেহত্যর্থ: সেবেয় ইত্যর্থ: ॥ ২৯ ॥

দেবাদিজন্মনোহপি যত্র কুত্রাপি তত্তক্তিমজ্জবৈদ্ধ শ্রেষ্ঠমিত্যোৎস্থক্যেন দপ্তভি: শ্লোকৈরভিনন্দতি অহে। ইতি ধন্যা ইত্যা-

## বৈষ্ণবতোষণী।

হয়ুগ্রহঃ ওস্য লেশোহপি যত্র **কিম্ত পূর্ণঃ স তেনামূ**গৃহীত এবেতি ভবজ্জনানাম**মূ**গত রূপ একোহপি কশ্চনাপি ভূত্বেতি চ ॥ ২৯ ॥

নহ ভবেমং নাম দর্বপূর্ণস্থয়াপি দেবিতুমন্থেবণীয়ঃ। কিন্তু ভবান্ পর্মেষ্ঠামজ্জনাশ্চাত্র গোপা গোরক্ষকাএব তত্মাং কথিছিং যাদবাদি সঙ্গএব বংপ্রাপ্ত্র্মহিব্যাণীত্যাশস্ক্র এষামেব মহিমা সর্ব্বতঃ পর ইতি তদেকদেশোদাহরণেন ব্যঞ্জয়তি তেনচ স্বাভিলায়ং হচয়তি অহা ইতি প্রথমত এব বিশ্বয়বাচকপ্রমোগোহয়মত্ব্বীব বিশ্বয়েন অভিধন্যাঃ ক্রভার্যতা পরমকাষ্ঠাং প্রাপ্তাঃ। কে তে। ব্রহ্ম গোরমণা ইতি বহুম্মন্যাইত্রব কদ্যা অপি তথা ভাগ্যং ছল্ল'ভমিতি বোধয়তি কথং ধন্যাস্তরাহ হে বিভো পরিপূর্ণ তে ব্যাণি যাদাং বন্যামৃতঃ পীতং বিভূমমেব দর্শয়তি অথ কাংল্যৈ সর্ব্বেরপ্রমেরা ইত্যর্থঃ। তে যদ্য তবাদ্যাপি বেদদ্যানাদিবাত্তিহিতানামধ্বরাণামপানাদিকালতোহদ্যপর্যাস্তং ভৃপ্তয়ে সম্ব্রোমনাত্রায় নালং ন সমর্থাঃ পরিপূর্ণবাদে বৈতি ভাবঃ। তথাভূভেনাপি পীতঃ অন্যামৃতাশিনোহিপ ব্যক্তরাগমাত্রোপলীবিনম্বন্ধ তত্ত্বচ তের্চ ন সাদরঃ তত্মাদহো কিমিদমমৃত্যমিতি ভাবঃ। তত্ত্রাপি বন্যমিত্যনেন তাদ্শদ্যাপি তদ্য তছেরীরোভ্ররসবিশেষাম্বাদনমিতি তথা পীত্যমিত্যর্থবৈশিষ্টেন স্বাং শ্রীমূথেন চ্ষিত্যমিতি তত্ত্রচাতীবেত্যনেনাত্যন্ত্রমিতি তত্ত্রচ মুল্তরোভ্ররচমৎকারবিশিষ্টাং বোধয়তি। কিঞ্চ ন কেবলমন্থিন ব্যক্ত তাদামেব প্রমবিশিষ্টানাং কাদাচিৎকমেবেদৃশং ভাগ্যং নচ কর্ম্বাভ্রমতাবে। যত্ত্রেরেহদ্যাপ্যথ নালমধ্বরা ইতি যদেব ভূশবন্মাহান্ত্রাং মহিধচমংকারকরং অপিতৃ ত্বাদিমাত্তেম্বেন নিত্যমেব চ কিমপি তিবিরালতে। অক্ষকাগ্রম্বাহেণ ভ্রমহাহান্ত্র্যাধান্ত্রাবাত্রাহাা্যামিত্যন্তি অতিশ্বমন্ত্রীতি শ্বরন্ধ্ব

#### ক্রমসন্দর্ভ:

কে তে তবংসাহিত্যযোগ্যামজ্জনা ইত্যাশঙ্কা তানেব ব্যঞ্জয়িপুমাহ অহো ইতি। যথা। অহো ইতি ন কেবলমত্র তাদামেবে দৃশুং ভাগ্যং তচ্চ তথং কাদাচিংকমেব নচ যভ্গুয়ে ইতি বদেব ভবন্ম।হাত্মাং অপি তু তথাসিমাত্রেথেব নিত্যমেবচ কিম্পি তথিবাজতে ॥

ভবন্ধাহাত্মাপি ন তাদৃশতাযোগ্যমিত্যন্তি অতিশরাস্তরমপীতি অরন্ধিব পুনরতীব চমৎকারমাহ অহে। ইতি। অহো আশ্চর্য্যে। ভাগ্যমনির্ব্তনীয়ন্তৎপ্রসাদঃ। বীঙ্গা তদতিশয়তাপ্রাগন্ধ্যেন। পুনঃ পুনশ্চমৎকারাবেশাৎ কেষাং তত্রাহ। নলগোপত্রকৌকসাং ত্রজস্থমাত্রাণাং পশুপক্ষিপর্যান্তানাং। কিং তৎ যেবাং প্রমানলং মিত্রং স্বাভাবিকবন্ধুস্থনোচিতপ্রেম কর্ত্ব। ক্লীবস্থং ছালসং তেন চ বিজ্ঞানমানলং ত্রম্বেতি শ্রতিবাচ্যং তৎ স্চয়তি। যৎকিঞ্চিদানক এব থলু সর্ব্বে তাদৃশপ্রেমকর্ত্তারো দৃশ্যম্ভে নম্বানলঃ কুত্রচিৎ।

# শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবৰ্তী।

এব স্বোব্যস্তে ইতি স্বতার্থতাৎপর্যানিকর্ব: ॥ ২৯॥

কিঞ্চ তত্র স্বয়ক্তেশতি নির্কাষ্ট্র মনৈতাবত্যের প্রার্থনা সম্চিতা স্বংপ্রাদাং ফলবতী ভূরাক্ষ্ণ যে তু স্বয়ক্তেশত প্রকাশে ব্যাধিক তিলালাং পদবী প্রার্থিয়িকুম্বোগ্যা সম্মাদিভির্তিহল লা কেবলং তুমত এবেত্যাহ স্বং। ইতি বাভ্যাং। ব্রহাণ্থা গাবো রমণ্যো গোপ্যক্ত অভিধন্যান্ত্রাপ্যহো ইত্যাকর্য্যাভিধায়কপদেন বাজ্যন্সা গোচরাক্ষমৎকারাতিশরো ব্যক্তিত:। তমেবাহ তে স্বা সচ্চিদানন্ত্রপোপাণি বাসাং শুন্যং দেইকোব্য়বন্তনোদ্ধরং সমূতং পীতং তত্রাপি মুদা তত্রাপ্যতীবেতি পুনং পুনং পানেহপি সেই জন্মে সামার যেন সেই মহৎ ভাগ্য হয়, বাহাতৈ আমি ভবদীয় পুরুষ দিগের মধ্যে যে কোন ব্যক্তি হইয়া তোমার পাদপল্লব সমধিকরূপে সেবা ক্রিতে পারি॥ ২৯.॥

বিভো! কি আশ্চর্যা! অজস্থ গো এবং গোপীগণ অভিশয় ধন্য, কারণ সমস্ত মজ্ঞ অদ্যাপি বাঁহার তৃপ্তি নিমিত্ত সমর্থ হইল না সেই তুমি প্রতিক্ষণ তৃপ্তিপ্রকাশ পুরঃসর ঐ সকল গো ও গোপীর

# অহোভাগ্যমহোভাগ্যং নন্দগোপত্রজৌকসাং। যন্মিত্রং পরমানন্দং পূর্ণং ক্রন্ধা সনাতনং॥ ৩০॥

# औरत्रश्रामी।

দিভিঃ। ব্রজগোরমণ্যঃ ব্রজস্থা গাবো গোপ্যশ্চ তে দ্বা বৎসতরাল্প্রভাত্মনা বৎসানাং আত্মভানাঞ্চ স্বদ্ধপেণ। যদ্য তব ভূপুরে অদ্যাপি দর্বের বজা ন সমর্থাঃ তেন দ্বা প্রতিক্ষণং ভূপুতা যাসাং স্থন্যমন্তরূপং পীতমিতি॥৩০॥

# বৈষ্ণবতোষণী।

স চমৎকারমাহ অহে। ইতি। অহো আশ্চর্য্যে। ভাগ্যমনির্শ্বচনীয়ন্তৎপ্রসাদঃ। বীঞ্চা তদ্বিভাগ্রিতা প্রাগদ্ভোন পুনঃ পুনশ্চমৎকারাবেশাং। নতু কথং **প্রথমতশ্চমৎকারমাত্তং ব্যঞ্জয়দি যেবাং তৎ তান্ কথ**য় তত্রাই শ্রীমন্নন্তরাজত্রক্ষাদিমাত্রাণাং প্রপক্ষিপর্য্যস্তানাং কথমাশ্রর্য্যু: কথং বা ভাগ্যং তত্তাহ প্রমানন্দং যৎ তদেব যেষাং মিত্রং স্বাভাবিক্বক্সনোচিতপ্রেম কর্ত্তাদৃশপ্রেম্বিষয় ইত্যর্থঃ। তথাচ বক্ষাতে জ্রীগোপৈঃ। ছস্তাজশ্চানুরাগোহস্থিন্ সর্কোষাং নো ব্রজৌকসাং। নন্দ তে তনয়েহস্বাস্থ তন্তাপ্যৌংপত্তিকঃ ক্রথমিতি। আন-ন্দ্যা ক্লীবন্ধং ছান্দ্যং। তেন চ বিজ্ঞানমানন্দং এক্ষেতি শ্রুতিবাচ্যং তংস্ফার্মত। যত্র কাপ্যানন্দ এব ধলু তাদুশপ্রেমকর্তারো দৃশুস্থে। নম্বানন্দঃ কুত্রচিৎ এষু মানন্দোহপি তৎকর্তা তত্ত্ব ক্রতিমাত্রবেদ্যম্বেন পরমঃ থণ্ডায়ততারত্য্যবৎ স্বরূপত এবালৌকিক্সাধুর্য্যঃ ষত আশ্চর্যাং ভাগাং চেতি ভাবঃ। অন্যদপ্যাশ্চর্য্যময়মিদ্মিত্যাহ সনাতনীং তত্তাদৃশম্পি নিত্যং ক্যাচিৎ কুজানন্দোহ্পি ন নিত্যো দৃশ্যতে এযাত্ত তাদৃশোহপি,পুনঃ কথস্তুতং। **অথ কন্মা**হ্চ্যতে বহ্নবৃংহতি বৃংহয়তি চেতিশ্রতঃ। বৃহত্বাৰ্<sup>ং</sup>হ্মদাচে যৰু ৰূপরমং বিহ্বিতি বিষ্ণুপ্রাণাচ্চ। বৃহত্তমত্বেন ব্রহ্মসংজ্ঞমপি। অথানন্দস্ত মীমাংসা ভবতীত্যারভ্য যে তে শতমিতি বারং বারং মহুষ্যানন্দান্মৎপর্যাস্তা-নলং দশধা শত শত গুণাধিক্যেন গণরিত্বা মত্তো হপি শতগুণমানলং পরব্রহ্মণঃ। প্রোচ্যাপি সম্রমেণ যতো বাচো নিবর্ত্ততে অপ্রাপ্য মনসা সহ। স্থানন্দং বন্ধণো বিশ্বান্ন বিভেতি কুতশ্চন ইত্যনেনানস্ত্যং স্মুখা বাশ্বনদাতীতে সর্বতো বৃহত্তমন্ত্রেন শ্রুতিভিগ্নতিমপী-তার্থঃ। ততঃ সানলভৈতাদৃশ্বমেতাদৃশর্হতোহপ্যনেন মিত্রবং কচিদ্টমিতি ভাবঃ। নচৈতাবদেব কিং তহি পূর্নিপ্যমৃতং সৌরত্যাদিভিরিব স্বাভাবিকরপগুণলীলৈম্বর্যমাধুরীভি: দর্ব্বাভিরেব পূরিতং সং। এতদণি কুত্রাণি ন দৃষ্টং ঐতং নচ তাদৃশ মিত্রমিত্যর্থঃ। অতাপরোক্ষেহপি জ্রীক্বকে পরোক্ষবৎ নির্দেশঃ কৌতুকবিশেবায়। কিঞ্চ মিত্রত্বমত্র বিধেবং প্রমানন্দমন্দ্যং। ততশ্চান্দ্যধর্মবিধেশ্ববৈশিষ্ট্যার প্রযুক্তান্তে ইতি মিত্রতায়া অপি তত্তত্তাবো লভ্যতে। মনোরমং স্ক্রণমিদং কুগুলং জাতং ইতিবং যুক্সতে চ অনুদাস্ত বিধেয়তাদাঝ্যাপরবেন বিবক্ষিতথাৎ তত্র চ পরমানন্দত্বং পূর্ণত্বঞ্চ তস্তাঃ সিদ্ধমেব তংপ্রেম রূপত্বাৎ সনাতনত্বমিপি তম্ম সনাতনথাৎ নিৰুপাধিত্বেনোক্তৰাৎ , কালবৈশিষ্ট্যানিৰ্দ্দেশন কালদামান্যলাভাৎ। অভাত্ৰ শ্ৰীকৃত্মিণাদেশ দৃষ্ট্ৰাৎ এযামপি তথৈব শ্রতি তন্ত্রাদৌ দৃষ্ট্রাচ্চ। এবং পূর্ব্ববং শ্রীকৃঞ্চন্য স্বয়ং ভগবস্তমণি দর্শিতং। তথা নিজ্ঞাভিলাধন্য যুক্ততা চেতি ॥ ৩০ ॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

এব্যানন্দ এব তৎক্তা। তত্ত্ব চ শ্রুতিমাত্র বেদ্যত্বেন পরমধ্তামৃততারতম্যবৎ স্বরূপত এবালোকিত মাধ্যাং নচৈতাবদেব। কিং তৎ পূর্বনিপি অমৃতং সৌরভ্যাদিরিব স স্বরূপত গুণলীলৈখর্যাং মাধুরীভিঃ সর্ব্বাভিরেবামর্য্যাদমেব সং এতদলি কুত্রাপি ন দৃষ্টং শ্রুতঞ্চ নচ তাদৃশং মিত্র মিত্যর্থং। পুনং কথস্তুতমণি ত্রন্ধ আনন্দানস্ত্যেন সর্ব্বতো বৃহদ্পি। আনন্দ্য্য তাদৃশবৃহত্বং তাদৃশবৃহ্ব ক্রি তাবং। অন্যদপ্যাশ্বর্থ মিদ্যিত্যাহ স্নাতনং তত্তাদৃশবৃদ্ধি নিত্যং ক্যাচিৎ ক্রুতানন্দাহিপি নিত্যে দৃশ্যতে। এষাত্ত তাদৃশোহপীতি॥ ৩০॥

# **बिविधनाथहळ्नवडौं।**

মৃদঃ প্রতিক্ষণবর্দ্ধি ছবেষ তত্ত্রাণি গর্মাং বৎসতরাল্পনেতি দোহনাদি ব্যবধানস্যাসক্তম্বং গোপীনামাল্মজাল্পনেত্যন্থা তৎপ্রাপ্তাভাবঃ তত্ত্বাণি বিভা ইত্যতিলোভাৎ স্বস্যু বহুস্বরূপীকরণেনেতি তাসাং মধ্যে একস্যা অপ্যেক স্তনোথো রসোহণি ত্বা ত্যক্তুমশক্য ইত্যানন্দমাত্র স্বরূপস্য তবাপ্যানন্দকত্বাত্তাসাং বপুষঃ সচিদানন্দত্বে কে নাম সংশেরতে ইতি ভাবঃ। যস্য তব তৃপ্রে তৃপ প্রীণনে যং আং প্রীণ্যিত্মিত্যর্থঃ। অদ্যাপি অনাদিকালতঃ প্রবৃত্তা অদ্যপর্যান্ত্রা অপি সর্বেহপি যক্তা অল্যাদিকতা মন্ত্রাহ্মানপাবিত্র্যাদ্যবিক্লা অপি নালং ন সমর্থাঃ॥ ৩০ ॥

বৎসতর ও আত্মজ , স্বরূপ হইরা মহাহর্ষে অমৃতরূপ ছগ্ধপান করিতেছ। অহো নন্দগোপ এবং ব্রজবাসি মানবদিগের অত্যাশ্চর্য্য ভাগ্য। প্রমানন্দ রূপী স্নাতন পূর্ণব্রহ্ম তাঁহাদের মিত্র হইয়া-ছেন ॥ ৩০॥

# এমাস্ত্র ভাগ্যনহিতাচ্যুত তাৰদাস্তামেকাদদৈৰ হি বয়ং বত ভূরিভাগাঃ।

### डीधत्रवामी ।

কিঞ্চ এবাং ভাগ্যন্ত তাবং মহিতা মহিমা আন্তাং কন্তাং বজুং শক্তোতি। শর্মাদয়: শর্মোহহুরাবাধিষ্ঠাতা আদির্যেবাং চক্রাদীনানে-কানশানাং তে তথা বয়ঞ্চ বয়মিত্যান্ত্রানমেবাহ বহুমন্তমানঃ এবং মনোবৃদ্ধাহন্তাবচকুবাদ্যধিষ্ঠাতার জয়োদশ দেবা এতাবং মতে অং। ভূরি ভাগাঃ যন্ত্রানেতেবাং স্ববীকাণীন্ত্রিয়াণ্যেব চবকানি পানপাত্রাণি তৈঃ। তে চতুর্দশন্ত চিন্তাধিষ্ঠাতুঃ অন্ত্রী এবং উদজে বারিজে তব্যানপু মকরন্ত্র স্ত্রদেবামৃতং স্বাত্ব আনবং মাদকং পিৰামঃ। এতহুক্তং ভবতি। যদা প্রত্যেকমিন্ত্রিয়াভিমানিনো বয়ং কীর্ত্তিসৌক্র্যান

# বৈষ্ণবতোষণী।

#### ক্ৰমসন্দৰ্ভ:

এষামিত্যাদি পঞ্চকং॥ ৩১॥ ৩২॥ ৩৩॥ ॥ ৩৪॥ ৩৫॥

#### শ্রীবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

রাগাত্মকবাংসল্যপ্রেমবতীঃ স্তব্য রাগাত্মকদথ্যপ্রেমবতঃ স্তবন্ধের তন্ত্রেণ বাংসল্যাদিসর্ববতীরতোহপূর্গিলাক্যতি অতো ভাগ্যমহোভাগ্যমিতি। বীপ্সা অত্যানল্চমংকারেণ। পরমানল্মিতি ক্লীবন্ধমার্কং। তেন চ সত্যং বিজ্ঞানমানলং ক্রন্ধেতি প্রতিবাচ্যং ব্রহ্ম স্ট্রন্তি। পরমণ্যেন ক্রন্ধস্য তৎপ্রতিষ্ঠাভূতন্বং পূর্ণদেন ব্রহ্মস্বর্ধণানামংশাবতারাণাং ব্যার্ত্তিঃ। এতাদৃশং ব্রহ্ম যেবাং শ্রীদামানি-বালকানাং মিত্রং স্থা। মিত্রন্তম্য ত্বংকাল ভবন্ধং বারয়ন্ বিশিন্তি। সনাতনং সার্কালিকমিতি মিত্রহস্য সার্কালিকদ্বেন শ্রীদামানি নিনামিনি সার্ক্ষালিকদ্বং জ্ঞাপিতং। অয়স্ত্রমো ব্রাহ্মণ ইত্যুক্তে ব্রাহ্মণাবোত্তমন্থাতিবিদ্ধিত্বাহপ্যত্তম ইতিবদ্বাদি নিরম্বন্ধের সনাতনন্বং বিব্দিতং। তথা মিত্রশক্ষ্য বন্ধ্যাত্রবাচকদ্বাদেরক ব্যাধ্যেয়ং। শ্রীমনল্বান্ধব্রন্ধবাদিমাত্রাণাং পশুপক্ষিপ্যয়াগাংশ সর্ক্ষোনেবাহো ভাগ্যমহোভাগ্যং কিং পুন ন লিস্য ত্ব্যা ত্বনীয়গোপানাঞ্চ। কিং তৎ বেবাং বাৎস্ব্যাদিসর্ক্বিধপ্রেমব্রতাং প্রমানন্দং ব্রহ্ম সনাতনং মিত্রং বন্ধঃ। বন্ধুণোভিত্তীতিকর্জ্। বন্ধ্যতে গোপাং। ছন্ত্যঞ্জন্তার্থ আয়াতঃ। তেন গ্রামানল্বন্দ তে তন্মের হ্রান্থ ভ্রমাহ্যাহণাহিংপ্তিকঃ ক্থমিত্যত এর ব্রন্ধবাসিকাহণিতিকাস্থিবাগোর পূর্ণব্রহ্মতার্থ আয়াতঃ। তেন গ্রামানল্বন

হে অঁচ্যুত! ঐ সকল ব্যক্তির ভাগ্যমহিশার কথা একণে দূরে থাকুক, কে তাহা বলিতে সমর্থ হইবে ? আমি এবং একাদশ ইন্দ্রিয়ের অধিষ্ঠাতা সেই একাদশ দেব তথা অহয়ারের অধিষ্ঠাতা শর্কাদি,আমরাও মহাভাগ্যশালী, েয হেড্ ইন্দ্রিয়রপ চষক (পানপাত্র) দারা আপনার পাদপ্রেয় এতদ্বীকচষকৈরসকৃৎ পিবামঃ শর্কাদয়োহজ্যুদজমধ্বমৃতাসবং তে॥ ৩১॥ তদ্ভবিভাগ্যমিহ জন্ম কিমপ্যটব্যাং যদোগাকুলেহপি কতমাজ্যুরজোহভিষেকং।

## এীধরস্বামী।

সোগন্ধান্তে কিক দেশদেবিনোহপি কুতার্থান্তনা সর্ব্বেক্তিয়েঃ সর্ব্বদেবিনাং এতেষাং কিং বর্ণাতে ভাগ্যমিতি॥ ৩১॥

অতোমণা প্রাথিত তদস্ত মে নাথ স ভূরিভাগ ইতি মন্তদেতেদেবেতাাহ তন্তুরি ভাগ্যমিতি কিং তৎ ইহ মনুষ্যলোকে যৎ কিমপি জন্ম তত্রাপি অটব্যাং যৎ তত্রাপি গোকুলে যৎ। অহো সত্তালোকং বিহায় অত্র জন্মনি জাতে কো লাভঃ অত আহ অপি কত-মাতেঘু রজোহভিষেকমিতি। গোকুলবাসিনাং মধ্যেহপি কত্মস্য যস্য ক্সাপাতিঘুর্বস্বাহভিষেকো যশ্মিন্তৎ। নমু কুতো

# বৈষ্ণবতোষণী।

কত্বেন চাসবং তয়োৰ লৈক্যং তদ্ৰপং। যথা এতেচ তে হয়ীক চয়ক তি:। এতছক্সপ্ৰয়োগাশ্চাত্যস্তচনৎকারে। অমৃতা মৃত্যুহীনা মুক্তান্তেষামপ্যাসবং মাদক্মিত্যুৰ্থ:॥ ৩১॥

তদেবং তেবাং মহামাহাত্মমন্ত্রদন্ জাতদৈন্ত্তজ্ঞনান্তঃপাতিতয়া অচ্চরণ্দেবেছামপি ধাষ্টের্টনবাকরবমিতি ব্যঞ্জয়ন্ বং কিঞিতজ্ঞনচরণরজ এব বহু মন্মানঃ প্রার্থিতে তদিতি তৎ প্রতিকৃশং মুক্যাদি পঞ্চং ইহেত্যাদি পদ পঞ্চকেন নিরন্তং তত্র জন্মেতি মুক্তিরিছ নধুরামণ্ডল ইতি বৈকুষ্ঠাদিকমপীতি স্বার্পাদি। অটব্যামিতি মথুরাদি। গোকুল ইতি মধুরনাদি তত্রাপি কিমপি দুর্পাদি মৃহত্বত্বমিত্যভিপ্রায়। তবৈবাজির রজোভিঃ সম্যাভিষেক্সিদ্ধেঃ। তচ্চরণ্দেবায়ামস্তরীণাভিলাঘাচা। অভিষেক্ ইতি সর্পাদদালাভাহকেং। অন্যত্তঃ। যথা। নমুক্থং সাক্ষাক্ষোপাদিজনৈব ন প্রার্থিতাং তত্রাহ বদিতি যদ্য গোকুলস্য তথাসিনাগ্র্যা নিথিলং ভগবান্ মুকুল এব তত্র যং স্বয়ং ভগবান্ পরাংপরত্বাং সাধ্যিত্মশক্য ইত্যর্থঃ। সাধিতোহিপি যো মুকুলং প্রায়শো মুক্তিনেব দাতা নতু ভক্তিযোগমাত্রমপি তমেতং বিনা মজ্জনঃ ক্ষণমপি যজ্জীবিতুং ন শক্ষোতীত্যর্থঃ। ইতি পরমপ্রেমবিশেষবন্ধ-মুক্তা আতাং তাবদনৈয়ন্থ গোধাজং ছল্ল ভপ্রেমবঞ্চ বদ্য পাদ্যজ্ঞাতভিরন্যাপি ত্বি সাক্ষাদ্বাৰতীর্ণহিপি দৃশ্যত এব কত্মং ক্রার্পাহিমেতি জ্ঞাতু মিষ্যত এব নতু তদন্তঃ প্রাপ্যত ইত্যর্থঃ। যতো বাচ ইত্যাদি ক্রতেঃ। অতং পরমপ্রাচীনমাদৃশসর্ক্রা প্রদাশতত্বভ্রভ্রানে ত্বপাদাজক্সীগোপাদিজ্ব

#### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

স্প্রানন্দরন্তি ব্রন্ধবাদিন ইতি তে সচ্চিদানন্দময়া এবাথচ প্রম্বিশ্বয়রস্বিষ্ণীভূতা ইতি ধ্বনিতং॥ ৩১॥

াককৈভি অ'জবাসিভি ব'য়মপি ভ্রিভাগাঃ ক্রিয়ামহ ইত্যাহ এবান্ত ভাগ্যস্য মহিত। মহিমা তাবদান্তাঃ কন্তাঃ বক্তঃ শক্রোতি।
বসনেকাদশ এতেরামিক্রিয়াধিষ্ঠাতারোহপি ভ্রিভাগাঃ। বত এতেরাং হ্রবীকাণীক্রিয়াণ্যের চরকানি পানপাত্রাণি তৈন্তব অল্যু দল্লোক্রাক্রমলরোর্মান্ত্রিরিজতয়াম ধু তত্রত্যাভিমানাধ্যবসায়সকল শব্দ স্পর্শ রূপ রস গন্ধ কীর্ত্তন সন্থাহনান্তিকগত্যাত্মকং তদেব অসতং স্বাহ্ আসবং মাদকং শর্কাদয়ো কন্তাদর ইত্যলীলস্যেক্রিয়য়ব্য়াদাধিষ্ঠাত্দেবতাব্য়স্য ত্যাগাৎ চিন্তাধিষ্ঠাত্ ব'ল্লেদেবস্যাপি তদ্দেব দৃষ্ঠা ত্যাগাদেকাদশৈরপিবামঃ। অত্র যদ্যপোর্যামন্তরাত্মন এব বিষয়ভোগো নতু তত্তৎকর্তুণামিক্রিয়াধিষ্ঠাত্ণামিত্যধ্যাত্মনিদ্রামন্তরথাপি বুদ্ধা ত্রন্ধা তিষ্ঠিতি চক্ষ্ ক্র্যান্তিষ্ঠিতি তং তমধিষ্ঠাতারং বিনা তত্তদিক্রিয়ং শ্রীকৃষ্ণনিষ্ঠানামপি রূপরসাদীনাং গ্রাহকং ন স্যাদিতি সামান্য দৃষ্ঠ্যা অধ্যাত্মবিদাঃ প্রবাদোহপি প্রীকৃষ্ণে রত্যোৎকণ্ঠাবতাং বন্ধাদীনামানন্দহেতৃঃ কর্ত্রমাত্রেণৈর ভোক্তৃত্বাভিন্যানবীকারাং তথৈব স্বেয়াং প্রাক্রত্তেহপি অপ্রাক্রতত্ত্বদিক্রিয়াধিষ্ঠাত্ত্বাভিমানাচ্চ। প্রেয়ামের বিলক্ষণেয়ং প্রক্রিয়া দৃশ্যতে চান্যত্র পদ্যাব্লাটানে মিথ্যাপ্রাদ্বিদ্যানিক্রিরাদীতি। অন্যথা চিদানন্দমন্ত্র বসুষাং শ্রীভগবৎ পরিবারাণামিক্রিয়াদীনান্মপি ভগবত ইব তন্ময়ন্ত্রনেব নতু প্রাকৃতবং সন্তবেৎ কুতন্ত্ব প্রপঞ্চগতানাং ব্রন্ধাদীনাং প্রবেশ ইতি ক্রেয়ং। যদা। কাদাচিৎকেনাপি তলাধ্রীলাভেন স্বেমাপি ভাগ্যভিনন্দিতি থবামিতি ভাগ্যমহিতা একা অদ্বতীয়া অমুপ্রস্থেহা:। দলৈব দশাপি বরং

মকরন্দ, যাহা অস্থাতু মাদক স্বরূপ, তাহা পানু করিতেছি॥ ৩১॥

অতএব মসুষ্য লোকে, তন্মধ্যেও অরণ্যে, তন্মধ্যেও গোকুলে, যে কোন জন্ম হওয়া মহৎ ভাগ্য, হারণ তাহাতে গোকুল বাদি যে কোন ব্যক্তির পদ্ধূলি দারা অভিষেক হইবার সম্ভাবনা আছে। যজ্জীবিতং তু নিথিলং ভগবান্ মুকুন্দস্তদ্যাপি যৎপদরজঃ শ্রুতিমূগ্যমেব ॥ ৩২ ॥ এষাং ঘোষনিবাসিনামুত ভবান্ কিং দেব রাতেতি ন-

# धिधतयामो ।

গোকুলবাদিন এব অভিধন্যাঃ তত্ত্বাহ যদিতি বেৰাং জীবিতং নিথিলং মুকুল ইতি মুকুলপরমেব জীবনমিত্যর্থঃ। হল্ল'ভতা মাহ অদ্যাণীতি। ফ্রতিমৃগ্যং বেদৈরপি মৃগ্যত এব নতু দৃশ্যত ইত্যর্থঃ॥ ৩২॥

অপিচ কিং বর্ণাতে ক্বতার্থস্বনেতেবাং ধেবাং ভুক্ত্যা ভগবানপি ঋণী আত্তে। নত্ন। কিং দাভুমসমথোহহং যেন ঋণী দ্যাং অত আহ উত অপি ভবানপি এবাং ক্রাপি কিং বিশ্বফলাং সর্ক্ষলাত্মকাং স্বত্তঃ পরং ফলং রাতা দাস্যতি ইতি নশ্চেতঃ অয়ৎ সর্কাত্র গৃছৎ

#### देवस्वद्यायनी।

প্রার্থনৈতি ভাব:। এবং অহোহতিধন্তা ইত্যাবতা শীব্রজবাসিভেদানাং যথা পূর্কমাহাস্কাকৈমৃত্যং দর্শন্তিছা শীব্রজেশব্রের তদ্ তীব বোধিতং সাক্ষাত্রদপ্রস্তাবন্দ তৌ প্রশংসিত্নপি কোহহং বরাক ইতি বিক্রা স্থায়ন্ত স্থাপরাধন্ত মূলজ্ঞাত্যাং ন প্রস্তুতা এব। অতশ্চ তদাচ্ছাদনায় লক্ষানন্দ্রিশেষান্তরাত্র এব প্রথমত উপন্যন্ত। ইতি জ্ঞেয়ং ॥ ৩২॥

নহ তবিষ্ণায়াপি মদ্যেবং চরণরজ এব পরমফলত্বেন দাস্যে। কিঞ্চ। পূর্বং তবতা তাং লক্ষ্মেব তাং টোমীতি প্রতিজ্ঞাতং অধুনা প্নরেতচ্চরণরজ্পএর প্রার্থতে ভজেরং নিষ্ঠা তবিষ্ণানামিতি সন্ধ্প্রশ্নমাশক্ষ্য তথৈবাহ এরামিতি পূর্বেক্ষিক্ষাহাত্মানাং। উত প্রার্থা। বিশ্বক্লাবপীতাপি শব্দায়র:। ততশ্চাস্যাঃ প্রীব্রস্ক্রেক্ষিং তব স্থানং নান্তি এতংস্বর্গাদ্র্বং চ ফলং নান্তীতি ক্রচ দাতেত্যর্থ:। অয়দিতি নঞ্পূর্ক্মিন্ধাতোর্গং। অন্তঃ পরং ফলং ক্রাপালানদিত্যর্থ:। মুস্তীতি নিশ্রাশক্তঃ সতাং সভাব-

# विविश्वनाथहक्कवर्की।

দিক্পাল দেবতা ভূরিভাগা ভবাম:। কুত ইত্যত আহ। এতদিতি স্বতর্জন্যা সনেত্রশোরাণি স্পৃশতি। শংসচারণায় ব্রানিশা-স্তব্য তব চরণসৌন্ধ্যমৌন্ধ্যামৃতং নেত্রশ্রোকৈঃ পিবাম ইতি॥ ৩১॥

তিখাজগদৈখন্যার প্রাপ্তার প্রাপ্তবার মোক্ষার চ ময়া জলাঞ্জলির তঃ কেন প্রকাবেশৈবাং ব্রন্ধরাসিনাং চরণগলয়ে। লন্যুত্ব ইতি বিভাব্য সনিশ্চয়মাই তদেব মে ভ্রিভাগ্যং ভবজিতি শেষং। যদি শ্রীমংকুপাকটাকা ক্ষেষ্টা ভবকীতি ভাবং। কিং তং ইছ মটবায়ং বুলাবনে যথ কিমপি কোমলত্বপূর্বাদিজন্ম যতুপরি অংপ্রিষ্পরাদিরজনাসিকাচরণবিনাসিসোভাগ্যং সন্তবেং। নথ-বির্নিচ্জর্ল তে লোভং বিহার প্রযোগ্যমন্যৎ প্রার্থরতে চেৎ তহি গোকুলেইপি হনগর প্রান্থাদাবিপ কত্মস্য হেণীর সৌচিককাক হিজিপাল্যক ত্রস্যাজিলু রজসোহভিবেকো যত্র তথা ভূতং শিলাপীঠ পট্টকাদিজন্ম ভবতু। নথেষাং রজবাসিনামেতাবন্ধাহাত্মবেই কো হেতুং কথং বা জগৎ প্রস্যুক্ত জগৎক্রই পরমেন্তিন স্তবৈষাং নীচলাতীনাং পাদধূলিলিক্ষায়ং নান্তি লচ্ছেতি তত্তাহ যেধাং জীবিতং জগবান ভগং শ্রীকানমাহাজ্যেজ্যমন্থানার্থবর্গাং গৌলগ্রাহালীনাং পাদধূলিলিক্ষায়ং নান্তি লচ্ছেতি তত্তাহ যেধাং জীবিতং জগবান ভগং শ্রীকানমাহাজ্যেজ্যমন্থানার্থবর্গাং গৌলগ্রাহালী বিত্ত ভবিন্ধানি মন্দ হসিতাদ্যেক ত্বীবনোপায়ং। তেন বিনা সদ্য এবানী মিরস্তে ইতি ভাবং। নিধিল্যিতি কিঞ্চিদপি লীবিতং ন ভোজনপানাদিহেতুক্মিত্যর্থং। অতোহদ্যাপি যেধাং পদবুজংক্রাভিভিন্ন্থাতে এব ন ভূপায়ং প্রাপ্তেভ ইত্যতোহহং রক্ষাপি কিং বেদেভ্যোহপ্যমিকো বৃত্ত এতংপ্রার্থনে মন লজা স্যাদিতি ভাবং। অতো ন্যাত্রদন্ধ প্রার্থিতং তং ক্ষ্য বৈশ্বজিক্ষান্ধ্য বিত্ত কিন্ধানাম্পতিমধ্যেন নাম বাগায়গামুতাস্থোধি নিমজ্যাতি তদেবং প্রার্থিতং ॥ ৩২ ॥

কিঞ্চ যেষাং পাদরজো ময়া লোভাং প্রার্থতে তল্পভাতাং ন লভ্যতাং বা ময়েতি স্পাঠং ন ক্রবে চেং মা জহি । কিন্তুনাদেক যং পূচ্চাতে তহন্তরমবশ্যমের দেগীত্যায় এষাং এভ্যো ভ্রান্ কিং রাতেতি কিংক্লং দাস্যতীতি । উত প্রশ্নে । ইত্যুহং পূচনীত্যগং । নয়

প্রতো । গোক্লবাসিরাই এরপ ধন্য কেন ? তাহার কারণ বলি, তাহাদের সমুদায় জীবন সেই মুকুল-পরায়ণ, বাঁহার পাদধূলি অদ্যাপি প্রতিগণ অস্বেষণ করিতেছেন ॥ ৩২ ॥

হে দেব! ইহা বিচার করিয়া আমাদের চিত্ত মুগ্ধ হইতেছে, বোধকরি একণে ঐ সকল ঘোষ-নিবাদিদিগের প্রতি সর্ব্ব ফলাত্মক আপনা হুইতে প্রেষ্ঠ আর্থ্য কিছু অন্য ফলদান করিবেন, প্রভোগ শ্চেতো বিশ্বফলাৎ ফলং ছদপরং কুত্তাপ্যয়ন্ত্তি। সদ্বেশাদিব পূতনাপি সকুলা ত্বামেব দেবাপিতা নদ্ধামার্থস্কৎপ্রিয়াত্মতনয়প্রাণাশয়াত্তৎকৃতে॥ ৩৩॥

তাবদ্রাগাদয়ত্তেনাস্তাবৎ কারাগৃহং গৃহং। তাবশোহোইজ্যি নিগড়ো যাবৎ রুফ ন তে জনাঃ ॥৩৪

### ञीधतत्रामी।

বিচাররং মুম্বতি। সামেব দত্তাং নৃগামিতি চেং নহি নহি সংখ্যাদিৰ পূতনেতি। সতাং ভক্তানাং যো বেশ স্তদম্কারমাত্রেণ পাশিষ্ঠা পূতনাপি তামেবাপিতা প্রাপিতা। তহোঁতংসহদ্ধিনাম্পি দাস্যামীতি চেত্তত্তীহ সকুগেছি। বকাঘাস্থরসহিতা এষাম্পি তাবদবেতি চেং অপর্যাপ্তমিত্যাহ্ যদিতি। যেষাং ধামাদর ত্বংক্তে ত্বদর্থমেবেতার্থঃ॥ ৩০॥

নমু ৰিগত রাগাণিদোষাণাং সন্নাসিনামনি ন মুক্তঃ পরং কিঞ্চিত্ত কর্থমেষামপর্যাপ্তমিত্যত আহ তাবদিতি। হে ক্লঞ্চ রাগাদন্ত

# देवक्कवराज्यावनी ।

যুক্তানাং ব্রহ্মবাসিবিশেষাণাং ধাত্রীজনানাং বেশাৎ লৈভে গতিং ধাত্রাচিতাং ততোহস্তমিতি তৃতীয়োক্তে:। ইবৈতি তত্রাপি হিংসামরদস্তেনৈব নতু ভক্তেগতার্থ:। অভঃ সমানফলবং কথং স্যাদিতি ভাবং। পূতনাপীত্যনাস্থ কা বার্ত্তেগ্রথ:। অপিশক্ষেহং
বিধাবাসমন্যত্রাপি যোক্তঃ। সকুলেতি প্রাক্তনাধুনিকতংকুলোংগ্র্মহিতা। গোকুলপ্রতিকক্ষত্বেন নির্দ্ধেশাং। বকাষয়োক্ত
বত্তর এব তৎস্পর্শোহস্তান্তেবিব থামেবেতি পূতনায়াঃ সাক্ষাং। অস্তেম্বান্ত তগবন্দ্বিগাং পূতনামুবর্তিথেনৈব। বকাষয়োক্ত বিরোধিবেশাস্ক্রিমাত্রমিতি ক্রেয়ং। আপিতা থবৈবেতি শেবং। অস্তংনিকপাধিহিতকারী প্রিয় তাদৃশপ্রতিবিষয়ঃ। ওৎকৃত ইতি
প্রত্যেকং স্বাভাবিক্রমেব তেষাং তদেকার্যথং। তব পূনঃ তত্তেদেনানেকপ্রিয়্মনার্থমিতার্থঃ। তদেবং তে পূর্ণা এব প্রভিগবচরণান্ত প্রত্যুপকারাসামর্থোনাপূর্ণা ইব ভততন্তেল্য কিমিব দাসান্তি। অতোহহমপি ভবতামৃণিক্রেন পারবস্তমাশক্ষ্য তাদৃশনিজাভিলাবসিদ্ধয়ে তচ্চরণরক্ষঃশরণ এব ভবিতুং যুক্ত ইতি ভাবঃ। তদেবমপি প্রকৃষ্ণত্রাসিনোরব্যভিচারিত্বমেব ব্যক্তিতং। তথা
প্রবিপ্রভব্যারং প্রমণিক্রান্তঃ হচিতঃ। তাদৃশ্বহণীকারময়প্রেয় এব পরমফলত্তাং। ৩০ ॥

নমু ধামাদীনাং মদেকার্থতদ্বৈর ধদি তেষাং মহিমা তর্হি ভবানপি নিজগৃহং তথৈবাচরেদিতি চেৎ আন্তাং তাবদেষামান্মনোহপি

#### क्रीविधनाथहक्कवर्छी।

সর্পাবেদার্থ ভবজেন ত্বির চেত্রসা বিচার্যী ব্যুয়ের জায়ভাং ত্রাহ নোহন্দাকং চেৎ ইতি বছরচনেন ন কেবলং মনৈক অপিতু কজেন্ত সনকাদীনাং নারদাদীনাঞ্চ সর্প্রেরামের সর্বজ্ঞানাং চেতো মুছতি। চেতঃ কীদৃশং বিশ্বকলাৎ সর্ব্বজ্ঞলাত্বহাহিণি অপর্যন্ত্র ফলং ক্রাণি দেশে কালে বা অয়ং বৃদ্ধা হেধা অধিয়াণি অপ্রাপ্ন বং। ইন্ পতৌ শ্রন্তঃ। অয়মর্থঃ। সর্ব্বকলন্ধপ্রমেতিরনাদিত এব প্রাদিদ্ধাত্বন প্রাপ্ত এব বর্তুরে। অত এব ময়া এযাং ভবানিতি। বন্ধীপ্রযুক্তা। বদি তু অভোহপাধিকমনাৎ কিঞ্চন বন্ধ প্রশালত এব স্থায়াং তদিবৈতেভালেয়কেন যোগামভবিষাং তন্তু নাজীতামাকং চেতোমোহে হেতুরিতি। নহা এক্ষন্ সতাং তং তথানভিজ্ঞানা তিবিলি কিল্পান্ত কিল্পান্ত কিল্পান্ত কংলানাল কংলা ভবিষ্টানা ক্রিয়ামাণ্যিক ইতি মবৈর কিভিমিতি চেৎ সতাং প্রভা ভবিদি দিন ন্যায়েন ক্ষীবনে এবেডাাহ স্বেশাদিব স্বেশাদেবেতার্থঃ। পূত্রনা পালিষ্ঠাণি অকুলসহিতাণি ভামের আপিতা ছবৈর ভাং আলানং প্রাণিতা। তথা বেষাং ধামাদয়ে মমতাজ্ঞান তিবিলি ক্রিয়ামাণ্য ক্রিয়ামাণ্য ক্রিয়ামাণ্য ত্র ক্রিয়ামাণ্য ক্রিয়ামাণ্য ক্রিয়ামাণ্য ক্রিয়ামাণ্য ক্রিয়ামাণ্য ক্রিয়ামাণ্য ক্রিয়ামাণ্য ক্রিয়ামাণ্য তিবিলি ক্রিয়ামাণ্য ক্রেয়ামাণ্য ক্রিয়ামাণ্য ক্রিয়ামান্য ক্রিয়ামান্য ক্রিয়ামাণ্য ক্রিয়ামাণ্য ক্রিয়ামান্য ক্রিয়ামান্য ক্রিয়ামান্য

নৰেতে গৃহস্থা: প্ৰকলতাদিদংসারজালে নিপ্তিতা ইতি সন্নাসিভিক্চাতে সতাং অনকণপুৰুষম্ভলকণকলতাদিমত এতে

তোমার ভক্তদিশের বেশের অমুকরণমাত্র করিয়া পাপিষ্ঠ পৃতনাও বন্ধুবান্ধব সহিত যধন আপনাকে প্রাপ্ত হইয়াছে, তপ্তন যাহাদের গৃহ, ধন, স্কন্ত্বৎ, প্রিয়, আন্ধা,তনয়, প্রাণ, আশন্ত এসমন্তই আপনাতে অর্পিত, তাহাদিগকে তদপেক্ষা শ্রেষ্ঠ ফল না দিলে উচিত হইবে কেন ?॥ ৩০।

ু মুদি বলেন রাগাদিবিহীন সম্যাসিদিগেরও আমা-অপেকা শ্রেষ্ঠ ফল কিছু নাই, আমাকে প্রাপ্ত

## बीस्त्रवामी ।

স্তাবদের স্থেনাঃ চৌরা ভরত্তি তথা তবৈৎ গৃহমপি কারাগৃহং বন্ধনাগারং মোহোহপি তাবদন্তি নিগড়ঃ পাদশৃত্বলং যারত্তে তনীয়া জনা ন ভবন্তি অধীয়ানাত্ত বাগাদরস্থলিগ্ন মোচকা এবেতি ন যতিভাো বিশেষোভজনং ত্বধিকমিতি ভাবঃ ॥ ৩৪ ॥

# देवकदण्डावगी।

ওনেকার্থত্বনারাজালগণেতে লাহপি মহতরং ভাবমাহার্যুৎ মাদৃশান্ত ভবছুর্থ্যমপি ছুর্ঘট্যিতাহি তাব্দিতি। অয়মর্থ:। রাগো বিষয-প্রীতি স্তদানয়স্তন্ম বিষয়লাভালাভহানিয়ু হর্ষবিষাদশোকাদ্যাঃ গৃহং বিষয়দাত্রং মোহোরাগাদিহেতুরবিবেকত্তেচ ভত্তছিক্রি-রাষাং রাগম্থনিরীক্ষা এর সর্ব্ধ ইতি প্রথমং স্এবোক্তঃ। তল নিরুপাধিপ্রেমাম্পদ্স্যাস্থ্রনোহপ্যাস্থ্রবেন স্বমের রাগভ স্বাভাবিক-পরমনোগ্য প্রেম । অতন্ত রক্ষণনিজ স্বামিনমন্ত্রপূলতৈ যুব ক্রমন্ত্রের জনানাং ভত্যাসনা ক্রপাং ছভজনসামগ্রীং হরংশেচীর এব তত্তত্তদ্ম-বর্তিনোহপি তাদৃশা:। অব গৃহময়োবিষয়োহপাবশিষ্টদগুনাগৈব কারাগারীক্ততঃ ভাব। ত্রংপানাত্মরণবিরোধিবোধপ্রদ্বাব। নোহো-২প্যদৌ তেন তেনাবস্থাবৈশিষ্ট্যং প্রাপ্তত্ত স্বয়ং নিগড়াবতে। নষ্টেংপি তার্শকারাগৃহে রাগাদিমরস্ত ভল্লাবশেষেণাপি তুৎপাদা-প্ৰস্বলোমুধহাশকে:। তদেবং দ্বদীয়ামুক্তে তে তাৰন্তাদুশা ভৰতি যাৰজনাত্তে তব ন ভৰন্তি দ্বয়া ন স্বীক্রিয়ন্ত ইত্যর্থ:। জাতেত তাবক্ষে রাগাণীনামপ্যাত্মনোহপ্যাত্মনন্তব প্রাপ্তে সত্যাং তৈনাল্লাপ্যান্ত্রিরত ইতি স্বয়নেব তে দোষা অপগচ্ছস্তীতার্থঃ। অত রাগদ্য তৎপ্রাপ্তি:। যা প্রীতিরবিবেকানাং বিষয়েম্বনপায়িনী। সামপুর্বরতঃ দা মে হৃদ্যান্নাপদর্পতু। ইত্যুম্দারেণ গৃহগু স্বদ্-পিতত্বেন মোহব্যচ ত্বংপ্রেমমন্ত্রেনতি অতএব তে তাবভাবকানাং শিরোনণলো নাদৃশক্ষে তচ্চরণরেগুপ্পর্শিপণে মংকিঞ্চিত্রপ্রাপ্তা-বণ্যভিলাৰিণ এৰ কথমেতং কক্ষাং প্ৰাপ্ন ম ইতি ভাৰঃ। যদ্ধ। নমু তেখাং গ্ৰাহ্যপকাৰাদমৰ্থনপি মাং সদা সেবমানান্তএৰ দুষণীয়ান্তত্তাহ হে ক্লফ সর্বাচিত্তাকর্ষক যাবতে তব জনা ন ভবন্তি সাক্ষাৎ সেবাং ন প্রাপ্ন বঙা তার্থ:। অর্থাৎ বছকা ভাবৎ তেখাং তৎস্মতৌ স্বাভা-বিকভোজনেজ্ঞানয়ে নিবাসস্থানং কদাচিন্নিজাদিনা অধিস্থাতিগক্তণো নোহোহপি তাবৎ প্রমত্থেদা এব ন ভণ্ডি। যথা। তব রাগা দয়ন্তবলীলান্তানমপি তৎপ্রেমমূর্চ্চাপি তাবং প্রমন্থংপদা ভবন্তি যাবং সাকাৎ স্বংসেবাং ন প্রাপ্পুরন্তীতি পূর্ব্ববং । তদেবং সতি তব মোহন ৰুমেবৈষাং এঞ্চবাসিনামলি ত্বাহসরণে কারণং ত্থানেষাং কোদোষ ইতি ভাবঃ কিমর্থং ত্রাহ প্রপন্নজনতা নিজ্ঞজনরূপা মদাদিক্সপাচ। প্রধিতুং প্রথমিতুং। ঐশ্বর্য লীলাভোহগান্তা লীলায়া ভক্তপরমানল প্রদত্তাদিত্যর্থং। তছক্তং নদাঃ কিমকরোদু ক্ষন্ ইত্যাদো গারস্তেহদ্যাপি ক্রয়ো বল্লোক শমলাপহ্মিতি। বেন যেনাবভারেণ ইদ্যাদি যচ্চুণুভোহপৈতার্ভিরিত্যাদি॥ ৩৪॥

# শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

গৃহস্থা বর্জ্ঞাং দেশান্তরন্থা যে ঘণ্ডক্রপৃথ্যান্তেইপি সন্নাসিভ্যোপাধিক। ইত্যাহ তাবদিতি। রাগাদ্যো রাগদ্বেদাভিনিবেশান্তে চ মহাচোরা জীবনিইজ্ঞানান্দাদিমহাধনান্যপ্রতা প্রমেশবে বাজনি একে মা ফ্রেক্সিডি বৃদ্যা কর্মাধিকার্যয়ে গাইস্তাকারাগারে মোহনিগড়েন নিবলা জীবাং হাপান্তে। হে কুফ জনা জীবা যাবতে মন্তকাপ্রহল্ঞান্ত্রেন অদীয়া ন ভবন্তি তাবদেব রাগাদ্যক্তেনাঃ চৌরাঃ। অদীয়েরে সভি তেষাং ঘণ্ডক্রেবে রাগা ভজিপ্রতিক্লে বস্তনাব ছেবঃ। অধ্যেবাভিনিবেশ ইভি প্রত্যুক্ত ব্রিষ্ঠিজ্ঞানান্দা-দিক্মপ্যানীয় দধানান্ত এব পর্মসাধবা ভ্রা নিত্যমুগকুর্সতে। এবমের গৃহং জন্তাভকর্মাধানং যৎ কারাগার্মাসীত্রদেব তেবাং অংপরিচ্ব্যাকীর্ত্তনাদিসাধনং অদীয়নিত্যধানপ্রাপ্তকং ভবেও এবং নোহবিষ্যা মন্তক্তবাও সোহিপি অংপ্রেমান্ত্রাক্রপমাহত্যাপক ইতি ক্রমেত্রংস্ক্রক্তাং সন্ন্যাদিনো গভস্তাং। সে, ক্রচ্ছোমহানিহ ভ্রাব্রমপ্রবেশাং। ধ্রুবর্গনক্রমস্থেন তিতীর্ম্বস্তিল্যান্ত্রান্ত্রণ সন্তক্ত্রাক্রানিক্রিত্রভাঃ সন্ন্যাদিন্ত্যোহিপি ভক্ত্যা প্রমাধিক। যে, দেশান্তরস্বর্গ ইত্তভাক্তিভাঃ পরঃস্বন্ধগুণ্ডাহানি তের্মা অধিক্তমা হে ব্রজ্বাদিন কৈরেভিছং সাজাংপূর্ণব্রম্বক্রপোহিপি পুজাদিকপ্রবেশ স্বাধীনীক্ত এব বর্ত্তদে ইভি ভাবঃ॥ ৩৪॥

হইলেও আমার ভক্তগণের পর্যাপ্ত ফল হইবে না এ কি কথা ?। উত্তর, হহ কৃষ্ণ ! রাগাদি তভ পর্যাপ্তই তক্ষর এবং গৃহও তাবং পর্যাপ্তই কারাগৃহ, 'আর মোহও তাবং পর্যাপ্তই পাদশুঘাল হইয়া থাকে,যতদিন এ. সকল আপনার জন্ম না হয়। ফলতঃ আপনার ভক্তদিগের রাগাদি আপনাতে অপিত হওয়াতে সে সকল বন্ধনের কারণ না হইয়া বরং সোচন কারণ হইয়া থাকে। অতএব, আপনার ভক্ত ও সন্যাদিদের কিছু বিশেষ নাই। বরং ভক্তদিগের ভজন অধিক আছে॥ ৩৪॥

প্রপঞ্চং নিপ্তাপক্ষোহিপি বিড়ম্বয়সি ভূতলে। প্রপন্নজনতানন্দসন্দোহং প্রথিতুং বিভো॥ ৩৫॥ জানস্ত এব জানস্ত কিং বহুক্ত্যা ন মে প্রভো। মনসো বপুষো বাচো বৈভবং তব গোচরঃ॥৩৬॥

# श्रीधतवामी।

নত্ত অতএবাংমেতেবা পুজাদিরপেণ বর্তে ইতি চেত্ততাহ প্রপঞ্মিতি। প্রপন্ন যা জনতা জনসমূহস্তস্যাঃ আনন্দানাং সন্দোহং প্রথমিত্মিতি ন হি কপটপুজ্ঞভাদিনা তাদৃগ্ভকেরানৃণ্য সম্পদ্যত ইত্যুর্থঃ॥ ৩৫ ॥

তদেবমাদিত আরভ্যাচিস্ত্যানস্থ ওণথেন স্বয়ং ছজেরিস্বেম্কং। কেচিত্র জানীম ইতি। স্থিতান্তান্ত্পংগলাহ জানস্থ ইতি। মম মন-আদীনাং তব বৈভবং ন গোচবো ন বিষয় ইতি॥ ৩৬॥

# देवस्वद्याम्यो।

নৰহো ভাগামিত্যাদৌ মিত্ৰহন্য কালবিশেষানি দিষ্টিছেন প্ৰমানন্দাদীনামহন্য ধর্মাণাং তন্মিন্ বিধেয়ে সংক্রমণেনচ ব্রজোকোভি: নমং মন লীলাষা নিত্যহন্তিপ্রেতং। এষাং দ্বিত্যাদাবেকেত্যনেন তনেবং নির্দিষ্টং। ভত্তুরীত্যাদৌ বৈকুণ্ঠাদিপরিত্যাণপূর্বকমেবাং চবণবন্ধঃসম্বন্ধন অজন প্রার্থ্য প্রবেষামনাদিশ্রতিমৃগ্যমজ্রপপুরুষাপ্রাপ্তিঞ্চ জীবনরূপাং সমর্প্য তদেব দৃঢ়ীকৃতং
এবাং ঘোষেত্যাদৌ মন তদ্পবিগণনাসমর্থব নানাদিকরূপরক্ষরায়াং পুলাদির্মপোহণতত্ত্রপ্রাপ্তা তদেবানীতং। তাবদিত্যাদৌ
তত্র বিঘাতকা সন্থবাতদেব পর্যাবসায়িত্য তত্ত্বপাস্থাং নোমীড্যেত্যাদৌ ভেষাং এষাং সম্বন্ধি যদেত্র্যম রূপং তদেব নিজ্পুক্রার্থকেন প্রতিজ্ঞাকং। তত্র কৈন্চিং প্রপঞ্চরীতিদ্ধ্যা লীলের্ম্যথিত্যাদক্ষেত্ত তত্র কিং বক্তব্যং ত্রাহ প্রপঞ্চমিতি। নিত্যমেবৈত্যঃ
সমং লীলায়্যনানন্থং নিম্পুপঞ্চঃ প্রপঞ্চন্দিভূগিলাহিপি মধ্যে মধ্যে বেত্যৈ সমং ভূতলে বতীর্য্য প্রপঞ্চং বিজ্লম্বি নরাস্তব্যজ্জনাদিলীলায়াহকুর্বরূপি নহান্তমেব তত্ত উৎকর্ষং দর্শর্ষীত্যর্থঃ। নমু কিমর্থমিদং ত্রাহ প্রপঞ্চেতি। মৃদ্যুপি ত্র্যাং নিত্যায়াং ভূতলাপ্রকটলীলায়াং প্রপন্ধজনসমূহানামেষামনিত্যানাং চাম্মাকং যথা বাং দর্শনেন চানন্দো ভবত্যেবৃ তথাপ্যস্তাং ভূতলে প্রকটায়াং জন্মাদিলীলায়াং ছানন্দানাং সন্দোহং প্রথিতা ভবতীত্যেত্বর্থমিত্যর্থঃ। ৩৫।

তদেবম্ভাপি দেববপুষ ইত্যাদিভি: সামান্যত স্তদ্য মহিলো ছস্তক্ষং দ্বিতিং। পুনশ্চ প্ৰেশ যে নাৰ্যামিত্যাদিভি: স্বন্ধৰিজ-মান্ত্ৰালক্ষ্যা: স্বৰ্ণস্যাচ বিশেষত: অথ অহোহতিধন্তা ইত্যাদিভিস্তবিজ্জনপ্ৰেম:। এবাং বোষনিবাদিনামিত্যাদিনা কাক্ল্যান্ত।

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

তদেবমন্যাপি দেবৰপুৰ ইত্যাদিভিস্তন্যানেকথা এন্তৰ্জন্মৰ প্ৰদৰ্শ্য ভত্তং নিজপণং প্রিত্যঙ্গন্ উপক্রমার্থমেবাভীপ্তবেনাভিপ্রায়ং কৃপসংহর্তি জানত ইতি। হে ক্লফ্ট সর্ব্বেক্তিয়াকর্ষকগুণক্রপ অন্তন্ত্রানীহীতি গমনাত্রজ্ঞেবং নাত্রেচ্ছয়া প্রার্থতে। কিন্তব স্থানা

# **बी**विश्वनाथठकवर्डी।

নম্ব ব্ৰেছ মিলেকৎ প্ৰাদিভাবং পূৰ্ণবন্ধণো মম ন বন্ধ ইতি কেচিল্লন্য সভাং তে ভ্ৰান্তা এবেতাহ প্ৰপঞ্চনিতি। নিজ্ঞপঞ্চোধি প্ৰপঞ্চ বিভ্ৰম্ব কিলা বিভ্ৰম্ব কিলা বিভ্ৰম্ব কিলা বিভ্ৰম্ব কিলা বিভ্ৰম্ব কিলা বিভ্ৰম্ব কিলা প্ৰাদ্যে মথা চেইছে তথৈৰ ধ্বমপি চেইদে ইত্যথা। তেন জীবানাং যথা পিতৃপ্ৰাদিভাবো হ্বান্তবন্তথা তব ন। তব তুস নিজ্পঞ্চবান্তবো নিত্য এবেতি তব লীলা নিত্যা প্ৰপঞ্চীতাপি প্ৰপঞ্চান্তব্বগম্বীতি সিদ্ধান্ত উক্তঃ কিমৰ্থং বিভ্ৰম্ব প্ৰপন্ত জন তা তদ্যাৰ ন্তাৰ কিলা বাদনোথ আনন্দ্ৰ কৰে প্ৰথমিত্য ব্ৰহ্মানন্দাং বৈক্ষী বলীলানন্দাদি বিভ্তীকৰ্ত্য ভূতল ইতি। অন্ধ ভাবঃ। প্ৰকাশে দীপো নাতিশোভতে যথা নীলকাচাদি পাত্ৰে। তথাৰ চিনাৰে বৈকুঠে চিন্ননী লীলা নাৰ্ভিচমৎক্ষোতি যথা নামাময়ে প্ৰপঞ্চে ইতি যদ্যপি ব্ৰহ্মপ্ৰকাশি চিন্নৰমেৰ তদ্পি ক্ষণ্য প্ৰাক্তপ্ৰস্বাধান্ত্ৰিক ভ্ৰম্ব বৰুঠে চিন্ননী লীলা নাৰ্ভিচমৎক্ষোতি যথা নামাময়ে প্ৰপঞ্চে ইতি যদ্যপি ব্ৰহ্মপ্ৰক্ষাত্ৰিকে কৰে। ইতি মামপি প্ৰপন্ন মধ্যে গণ্যতে ভাবঃ॥ ৩৫॥

সতাং তর্হি মংস্বরূপন্য মনুজবাসিনাং মদীয়দীলায়া মন্তকেশ্চ সর্ব্বমেব তবং মদ**েগ্র**২পি স্প্রভিভ্নেবং ব্যাচক্ষাণা ভবিষধা

কিন্তু আপনি তজ্জন্য ইহাঁদের পু<u>লুরূপে বর্তমান নহেন, আপনি বস্তুতঃ নিপ্রাপঞ্চ, কেবল ভক্ত-</u>জনগণের আনন্দবিস্তারার্থ এইরূপ প্রপঞ্চ বিস্তার করিতেছেন, প্রভা! কপট পুলুত্বাদি কি তাদৃশী ভক্তির বিনিষয় হইতে পারে ?॥ ৩৫॥

. হে ভগবন্! আর বাধাছল্যে প্রয়োজন নাই, যাঁহারা জানেন তাঁহারা জাতুন, কিন্তু আপনার

অনুজানীহি মাং কৃষ্ণ সর্বাং স্বং বেৎিদ সর্বাদৃক্। স্বামের জগতাং নাথে। জগচৈতত্তবার্পিতং ॥৩৭

ত্রীধ্রস্বামী।

জগদীশবাদ্যতিমানং পরিত্যজ্যাহ অনুজানীহি ইতি। স্বমহিমানং অস্মদাদীনাঞ্চ কানবলাদি সর্বাং ব্যাবে বেংদি যতঃ সর্বাদৃত্ জগতাং নাথস্ত ব্যাবেত্যতাবং জ্ঞাতং অতো মমতাম্পদং জগদেতৎ শরীর্ঞ তবার্পিতং ॥ ৩৭ ॥

#### বৈক্ষবতোষণী।

প্রপঞ্চমিত্যাদিনা লীলায়াশ্চেতি তর্ত্তরিরপণং «পরিত্যজ্যোপক্রমার্থমের নিজাজীষ্টছে নাতিপ্রারমূপসংহ্বতি জানস্ত ইভি। প্রভো হে বিচিত্রানত্ত মহাপ্রভাব তব বৈভবং বেদাদিভিঃ শ্রুতমপি মম মনসো ন গোচরো ন পরিছেদ্যং সামক্ষ্যেণ দৃষ্টাদিরপম্পি বপূর্-শুচকুরাদিগোল্কস্য ন অতএব ন বাচন্তস্মান্নোমীত্যাদিনা যং প্রাথিতিং তদেব প্রাথিরে ইতি ভাবঃ॥৩৬॥

অথ তত্তৎ প্রকরণতে যা দৈন্যাত্মিক। ভক্তিরের তৎপ্রাপ্তিকারণতেন দর্শিতা তামেবাবিদুর্ব্রন্থক্তাং প্রথমতে হৈ হল সংশক্রিয়াকর্বকরণতাণ অনুজানীহি। অনেন গননাম্জেয়ং নায়েজ্যা প্রার্থিতে কিন্ধুতাবন্থানানর্গতীয়ের ইতি সাচ প্রার্থিত স্যাপি তস্য
নৌনিতয়েতি ভাবং। ত্মিচ যায়েরিজং যথা বক্তব্যং তৎ সর্বং প্রকল্তমেবেত্যাহ সর্বাং অবৈভবং নছৈভবঞ্চ অমনোগতং মন্মনো
গতং চ স্থনিগুঢ়লীলবং নদযোগ্যবঞ্চ ইত্যাদিকং স্থমের বেৎসি ধনাহমিতি। অভস্থসাজ্ঞাং বিনা তৃণাদিরপোণোপ্রায়ং তৃণাদীনাং
স্নোভাগ্যং আসাদিয়তুং নশক্রোমীতি ভাবং। বিষয়মপি নত্যক্তবুং শক্রোমীতাছ স্থমেবেতি। তব তয়ৈর মহামর্পিতং। দাসস্যাজ্ঞা
ন্থাপিতত্বমের যুক্তমিতি ভাবং। যদি চৈবং ক্রমে অপস্থতাত্মনাং বাসবৎসানাং দর্শনং বিনা কথ্মসূজ্ঞাং যাচসে তত্রাপ্যেবং নিবেদয়ামীত্যাহ সর্বাং তং বেৎসি সর্বান্থিতি নাত্র জ্ঞাপিতং॥ ৩৭॥

#### ক্রমদন্দর্ভ:।

নহ তথ্যবৈতি ভাব: ॥ ৩৬ ॥

সর্বনিতি তথাপ্যতাবস্থানাজ্ঞায়া অলাভাৎ কথং স্থাস্যামীতি ভাব:। বিষয়মণি ন ত্যক্তুং শক্রোমীত্যাহ তবেতি। তব ববৈষ ম্যাপিতং দাস্যাক্ষাস্থায়িত্বমের চ যুক্তমিতি ভাব:॥ ৩৭॥ ৩৮॥

# শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবন্তী।

অশিন্ অগতি কিরব্যে বর্ত্ত । তান্ জিজাসে কথরেতি ব্রোক্তিমাশ্যা সত্রপং সকলাং সাহ্যতাগমাহ জানস্ত এবেতি। যে জানস্ত তে জানত অহন্ত মহামূর্য এবালীতি ভাবঃ। নহু তহি কথমেতাবংকণপর্যান্তং জ্ববে এব তত্রাহ কিং বহুক্তোতি। ওদথে বহুক্তিবেব মূর্য্ব্দ্যোতনীত্যর্থঃ। নহু ব্রহ্মন্ নিজপটং জ্বহীতি তত্রাহ নেতি। তব বৈভবমৈশ্ব্যাং মন ননসোন গোচর ইতি ধ্যানেনান্ত-প্রাপ্তাভাবাৎ বপুর ইত্যধুনৈব চকুষালি বাচ ইতি গুণাঝনতেহলি গুণান্ বিমাত্মিতি মন্না তাবহুক্ষেব। যরা। তব মনসো বৈভবং মন ন গোচর ইতি স্বন্দনি যথ কিমপ্রান্তি তব কিং মরা আছুং শক্তেত সাক্ষান্তবৈব কিছুতাশ্বস্থান্তভ্তেরিতি পূর্ব্ধেমৰ মহকেঃ। এবং তলপুর ইতি তরপুরি কিং কিমন্ত্রীতি তব বাচ ইতি তব বেদলকণ্যরাং বাচি কিমন্ত্রীতি মাক্ষান্তব তু মন্নি মৌনবলাং বচনগন্ধস্যাপ্য-প্রাপ্তিরের। তল্পাৎ কে ধলু তুদ্ধে মদাদ্রো বরাকা ইতি ভাবঃ॥ ৩৬॥

নত্মৰ বৈভবং তব নাম গোচরতাব বৈভবং অংশ বেদ্ধি ন বেতি তত্ৰ কিমহমত্ৰ প্ৰছাত্তৱং কুৰ্যানিতি ব্যালয়ন্ সলচ্জং সনিবিধান নাহ অহজানীহীতি। অৱভাবিত গাৰ্থং অহজাপেরতার্থং। অত্ত হলে কণমপি স্থাত্মবাগ্যমতিনীচং নামাজ্ঞাপল। যাদ্শোহহং তাদ্ধং হলং সত্যলোকমেৰ গছেরমিতি ভাবং। হে কুঞ্চি চিত্তম্ভ অমতাকর্ষদেয়ে। কিন্তু তই বিভাগ্যমিহ জন্মতি মংপ্রাণনালাং দ্গিলিভেনাপাদ্ধিতি প্রমান্তরনৈনোক্তমতঃ কিং কুর্মে তথাং তংশ্বিনভোজনকেলের ক্রায়ং কুর্মিলয়মপরাধী অলীলাপ্রাতিক্ল্যান্দের প্রাণালাভ্রচনক্ষালেপ্রসালাপ্রায়হ্বহমিতে। আইতেয়ৰ দ্রন্পসরামি স্থাবদ্যান্দ্রিয়া প্রিনে ভূজানৈঃ প্রির্গণিঃ সহ

# বৈভব আমার কারমনোবাক্যের বিষয় সহে॥ ৩৬॥

হে কৃষ্ণ ! **ভাষাকে অনুজ্ঞা করুন, প্রস্থান** করি, প্রতা ! আপনকার মহিমা এবং আমাদের জ্ঞান বল প্রভৃতি সমুদায় আপনিই জানিতেছেন, ভগবন্ ! আপনিই সমস্কলগতের নাথ, অতএব মমতা-ম্পদ এই জগৎ এবং আমার এই শরীর আপনাকেই অর্পণ করিলাম ॥ ৩৭ ॥

# জীকৃষ্ণ বৃঞ্জিকুলপুজরবোষদায়িন্ ক্মানিজ্জর দ্বিজপশৃদ্ধিকৃদ্ধিকারিন্।

# विश्ववामी।

তদেবং কিন্ধরং প্রস্থাপয়েত্যাদরেণ নমন্ধরোতি প্রীক্ষতি। বৃষ্ণিক্লস্য পদ্মস্য প্রীতিদাতৃত্বন হে স্থ্যোপম। ক্লাচ নির্জ্রাং দেবাশ্চ দিলাশ্চ পশবশ্চ ত এবাদধয়তেবাং বৃদ্ধিকারিন্ধেন হে চক্রোপম। উদ্ধর্মঃ পাষগুধর্মক্তদেব শার্করংতম উদ্ধরতীতি তথা। অনেন দ্রোপম হে কিতিরাক্ষসঞ্জ কিতৌ বে রাক্ষসাঃ কংসাদরঃ উদ্যান্ধে তেভোগা ফুক্তীতি। পুনঃ স্থ্যোপম স্থ্যাত্যপমাপি নানিতি মন্বাহ আর্কং অর্কমভিব্যাপ্য সর্ক্ষোমহন্ পূজ্য ভগবন্ আক্রঃ ক্রপর্যান্তঃ তেভুত্যং নমঃ। সম্প্রংসক্মোক্ষণকৌতৃক্ফত

## বৈঞ্চৰতোষণী।

শ্রীতি সাদর সর্বসম্পদমূভর পূর্বকং প্রণামার প্রথমতঃ ক্ষেতি স্বরূপনায়া সংখাধনং পূনঃ ক্রমেণ বহিব হিবি শেষণং ব্যয়য়ন্ জন্ম কর্ম্ম নামভিরপি সংঘাধরতি বৃষ্ঠীত্যাদিনা। বৃষ্ণিকুলং শ্রীবস্থদেবাদিকং শ্রীনন্দাদিকঞ্চ পূর্ব্বাক্তপ্রামাণ্যাৎ তত্র প্রস্তব্যের শ্রীনন্দাদিকংশ পূর্ব্বাক্তপ্রামাণ্যাৎ তত্র প্রস্তব্যের শ্রীনন্দানং গোরাহ্মণহিতাবতারতাপ্রসিদ্ধেঃ। উদ্ধর্মা ভগবিষ্কৃত্যা ধর্মাঃ ক্ষিতিরাক্ষ্মাঃ উদ্ধর্ম প্রবর্ত্তনা কংসাদরক্ষ্য। চন্দ্রপ্রার্গ্রেশিভয়্ববিদ্ধা ধর্মাঃ ক্ষিতিরাক্ষ্মাঃ উদ্ধর্ম প্রবর্ত্তনা ক্ষেত্রনা কর্মত্বার্বিকা বিবক্ষয়। কীর্ত্তিপ্রভাপপ্রশংসাদ্যোতনেছয়ের চ হে ভগবন্ এবস্কৃতশ্রীকৃষ্ণরূপত্বন স্বরং ভগবনিত্যর্থ:। তথার্কং স্কৃত্ব ভূলোকব্যাপকপ্রকাশমর্কমারভ্য মহাবৈকুষ্ঠপর্যস্ত মহান্ পূল্য। যরা। এতচাপুর্বং দৃষ্টং ত্মের কর্তুন্মহিদি নান্যঃ কোহপীত্যাহ অহাতীত্যহান। হে সর্বাং কর্তুং যোগ্য সমর্থেতি বা। অত আক্রঃ মজ্জীবনকালরপান্ করানভিন্যাপ্য। যরা। আকরং ত্বীয়গুলাবতংস্বহ্ণিণীড়াদিকং বামহন্তস্ক্বলাদিকং চ ভূষণমভিন্যাপ্য তথা আর্কং অর্কোনাম বৃক্ষে ভগবদনহাপ্রপ্রাবিতংস্বহ্ণিণীড়াদিকং বামহন্তস্ক্কবলাদিকং চ ভূষণমভিন্যাপ্য তথা আর্কং অর্কোনাম বৃক্ষে ভগবদনহাপুলো বৈষ্ণবান্মনান্ত্রীরানামন্ত্রহাং। তেবাং

### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্মী।

সহাসোকিপ্রত্যুক্তিকোতুকং ভোজননীলাশেষং সমাপদ্ধেতি ধ্বনয়:। অয়মহস্বতিতারল্যাৎ পুন: পুন: কিং বা বিজ্ঞাপয়ামীত্যাই সর্ক্ষমন্দানীনাং মনোবপুর্বাচাং বৈভবং অমেব বেৎসি কিঞ্চ নাহমস্য জগতঃ প্রষ্টু আরাথা কিন্তু অমেব জগতামন্যেরামপি বহুনাং নাথা। অত এতচ্চ জগ্ৎ কুপ্রতরং তব অনীয়মেব অযাপিতং। যমিচ্ছসি যোগ্যমস্য জানাসি তমস্যাধিকারিণং কুর্বিতি ভাবা॥ ৩৭॥

যান্ত্রি মামপরাধিনং বিজ্ঞার ন ব্রবে তদপি খনেত্রাভ্যাং সায়্গ্রহাবলোকনামূভত্ত মহুং দেহি। যথা তেনৈবাহারেণ নিভ্যং প্রাণান্রকল্ করপর্যান্তঃ প্রতিবৃং প্রভবিষ্যামীতি ব্যক্তর্য প্রথমতি প্রক্রেক্তি। হর্ষ্যস্বরূপং দক্ষিণং নেত্রমালক্ষ্যাহ বৃষ্ণিক্লপদ্মস্য যোবং প্রভ্লেষ্ডঃ তৎপ্রদায়িন্ মামপি পদ্মসন্তানং কুপরা প্রফ্লেরেভি ভাবং। চক্রত্ররূপং বামং নেত্রমালক্ষ্যাহ ক্লাং ক্লাতল্থা মহুযাদরঃ নির্জরাঃ স্বর্গন্তা দেবা দ্বিলাং পশবশ্ব বৃদ্ধাবনস্থাঃ পক্ষিণো গাবশ্ব ভএবোদধরন্তেরাং বৃদ্ধিকারিন্ মামপি দেবাধমং কুপরা বৃদ্ধরেভি ভাবং। যুগপদেব নেত্রে যে এব পৃশবভাবালক্ষ্যাহ। উদ্ধর্মঃ পাবগুধর্মঃ স এব শার্কর্মকত্রমসং। শার্করন্থক্রমস ইত্যমরং। তৎ হরতীতি তথা তেন স্বপ্রভাগে মারাচিকীর্বালকণং মন পাবগুং কুপরা হর যথা। পুনরেবং না কুর্যামিতি ভাবং। কিতৌ রাক্ষ্যা অঘাহরাদরন্তেভ্যো জ্বন্থনি ব্যাহিং গালি ব্যাহিং দদাসীত্যভন্ধর্মগুরুক্বৎস্কৃদ্ধবিদ্রোহিত্বাৎ সভ্যলোকপ্রক্ষরাক্ষ্যং মামপি দগুপ্রদাননাপি সংস্কৃত্বতি ভাবং। স্বপ্রভাগরম্প্রহং নিগ্রহং বা দুই। দাসো জীবিভূম্ংসহতে ওলাসীন্যং দুই। ভূ ন প্রাণান্ ধর্ভুমীটে ইতি ভাবং। হন্ত হন্ত মহামহেশ্বরোহপি বেজপঞ্জাগৈরিকপিঞ্জাদিরচিতাক্রো গোচারক্বালকৈঃ সমং খেলন্ ক্র্যান্তাভানেচিত্যং মংপ্রভাবিতি পূর্বং বিচারিত্বতাত্ত্বমভিত্তেন ময়া বেলপরান্ধং ভানপি প্রসাদ্যামীতি মনসি বিভাব্যাহ আক্রং ছ্লীয়ণ্ডঞাদিকেশমভিব্যাপ্য আর্কং ক্লিক ভাবনত পুলাকর ভাবনিত পুর্বং বিচারিত্বতাত্ত্বমভিত্তেন ময়া বেলপরান্ধং ভানপি প্রসাদ্যামীতি মনসি বিভাব্যাহ্ আক্রং ছ্লীয়ণ্ডঞাদিকেশমভিব্যাপ্য আর্কং ক্লিকা ভাবনি বিভাব্যাহ আক্রং ছলীয়ণ্ডঞাং মন্ত্রভিত্তনে

হে রাজন্! ব্রহ্মা এই প্রকার স্তব করিয়া পরে প্রস্থানাসুমতি নিমিত আদরপূর্বক নমস্কার করিতে লাগিলেন, হে প্রাকৃষ্ণ। আপনি র্ফিকুলরপ কমলের প্রীতিপ্রদ অর্থাৎ সূর্য্যোপম এবং দেব দিজ পশু ও পৃথীরূপ সমুদ্রের বৃদ্ধিকারী অর্থাৎ চক্রোপম তথা পাষ্ঠুরূপ নৈশান্ধকারহারী এবং

२৯৯

উদ্ধর্মশার্করহর ক্ষিতিরাক্ষমগ্রুগাকল্পমার্কমর্ছন্ ভগবন্ধমন্তে॥ ৩৮॥

শ্ৰীশুক উবাচ॥

ইত্যভিষ্ট্য ভূমানং ত্রিঃ প্রিক্রম্য পাদয়োঃ। নম্বাভীষ্টং জগদ্ধাতা স্বধাম প্রত্যপদ্যত ॥ ৩৯ ॥ ততোহমুজ্ঞাপ্য ভগবান্ স্বভূবং প্রাগবস্থিতান্। বৎদান্ পুলিনমানিন্যে যথাপুর্ব্বস্থং স্বকং॥৪০

# वीशत्रवामी।

বিলম্ভিপ্রমুদে২ছ্তং। নিথিলরপ্মদোদধদ্যুতো হবতু স বঃ কলয়ন্ ব্রহমক্ষলং ॥ ৩৮॥ পাদরো ন'ব অভীষ্টং স্কৃতিং প্রিতং অভিপ্রেতং বা ॥ ৩৯ ॥

অন্তঞাপ্য অন্তঞাং প্রদাপ্য পৃষ্টে তার্থঃ বভুবং ব্রহ্মাণং। যথাপূর্বং সথায়ো যদ্মিন্ তৎ স্বকং পূলিনং ॥ ৪ • ॥

### देवकवरजावनी ।

মুদে ভতি ব্ৰিন্ধী ব্যাখ্যাতেরং যথামতি॥ ৩৮॥

ভূমানং সর্কবৈধাপরিছিরং ইত্যেবং অভিষ্ঠুর অভিষ্ঠুতা অভিত: স্তথা। যথা সর্কব্যাপক তথাবস্থিতং ভক্ত্যা ত্রি: পরিক্রম্যা ভীষ্টং সামীপ্যথাক্রায়াং ক্রতমৌনেন শ্রীক্ষেনাভিত্রেতং ধাম। যতো জগদ্ধাতা অন্যথা তৎপদত্যাগে বিশ্বস্ট্যাসিদ্ধে:। এবং যাবদ্ধিকারমবস্থিতিরাধিকারিকাণামিতি ন্যায়েন তদত্তে তদভীষ্টসিদ্ধি ভবিষ্যতীতি জ্ঞাপ্যতে । ৩৯॥

স্বভূবং আত্মকাং ইতি স্কাপরাধক্ষনাদিকং স্চিতং। অনুজ্ঞাপ্যেদানীমপ্যানয়ানীতি সন্মিতং পৃ**ই। অনুজ্ঞাপনঞ্চেদং অ**সার্ক্জাদি-ব্যঙ্গনোপালান্তনোংপ্রাসশিক্ষাক্যান্ত্রহবিনয়াদিব্যঞ্জক্ষপীদং ব্যঞ্জতি তাদৃশন্তর্গির বালবংগৈ নমি মুখং কিন্ত তৈরেব

#### क्रममन्दः।

ষ্ণভীষ্টদামীপ্য ৰাজ্ঞায়াং কৃতমৌনেন শ্রীভগবতাভিপ্রেতং স্বধাম। ভূমানমেবাভী**ই**ং॥ ৩৯॥

অর্জ্ঞাপনেন চৈবং জ্ঞাপিতং তাদৃশস্বরূপেরপি বালবংগৈ ন মম লীলাস্থং কিন্তু তৈরেবেতি। স্বকং নিজ্ঞাজনস্থানং হথাপূর্ব্ব-স্থমিতি প্রাক্ প্রাক্ষেবাবস্থিতানিতি ॥৪০॥ ৪১॥ ৪২॥

## 🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

কর্তুং সমর্থ। তে তত্তংসহিতায় তৃত্যং নম:। সর্ধাসংশয়হৎ সর্বভক্তিসিদ্ধান্তসন্তি:। আন্ত প্রশ্বন্ত ভিত্তে নম চাকচিত্রিতা ॥৩৮ অতীইং ভগবতা প্রস্থাপিয়িত্মিতি শেষ:। যতো জগদাতা অন্যথা সহসা তৎপদত্যাজনে বিশ্বস্তেরসিদ্ধে:। তত্র বাবদ্ধিকার-মবস্থিতি রাধিকারিকাগামিতি ন্যায়েনাধিকারান্তে তদভীইং সেৎস্যতীতি বৃদ্ধাতে ॥ ৩৯ ॥

স্বভূবং ব্ৰহ্মাণং অন্তঞ্জাপ্য আজ্ঞাপ্যেতি মৌনেনৈব। অনুজ্ঞানীহি মাং ক্ষেত্যাঞ্চাপ্ৰাৰ্থনে ক্ষতে মৌনং দক্ষতিলক্ষণমিতি ব্ৰহ্মণা সহসাবগমাং। মৌনত্যাগাভাবস্ত প্ৰপ্ৰংশশিশুদ্দশায়ামলীকৃত্য ব্ৰহ্মণাহনাৰ্থং নাট্যস্যায়স্তপ্ৰিদমাগুদিছাৰ্থং। তত্ত্বতো বংসানদৃষ্টে ত্য প্ৰিনেহণিচ বংসপান্। উভাৰণি বনে ক্ষেণা বিচিকায় সমন্তত ইতি বংসবালকাবেষণনাট্যায়স্তঃ। নৌমীড্যেত্যাদি ব্ৰহ্মন্তত্তি প্ৰব্ৰায়াং কৃতন্তো। হয়ং চতুকুৰ্থং কিং চেইতে কিং বা মুহ্জতি ইতি স্বৰংসাবেষণ ব্যাগ্ৰোহং গোপশিশু-

ধরাতলে রাক্ষসহস্তা অথবা সূর্য্যাদি পূজনীয়গণেরও পূজনীয়, স্থতরাং কর্মকালপর্যান্ত আপনাকে আমি নমস্কার করি॥ ৩৮॥

শুকদেব কহিলেন, উক্তপ্রকারে স্তব করিয়া তিনবার ছই চরণে পরিক্রমাপুর্বক জগদিধাতা একা দেই অভীষ্ট অর্থাৎ পূজিত বা অভিপ্রেড ভূমা (মহাপুরুষকে) প্রণাম করিয়া নিজধানে প্রস্থান করিলেন ॥ ৩৯ ॥

ভগবান্ হরিও ব্রহ্মাকে জিজাস। করিয়া পূর্বাবন্ধিত বংস সকলকে আপনার পুলিনে আনয়ন করিলেন। তথায় তথনও পূর্ববং তাঁহার সকল স্থা উপন্থিত ছিল। ৪০। একস্মিন্নপি যাতেহকে প্রাণেশং চান্তরাত্মনঃ। কৃষ্ণং মায়াহতা রাজন্ ক্রণার্দ্ধং মেনিরেহর্ভকাঃ ॥৪১॥ কিং কিং ন বিস্মরন্তীহ মায়ামোহিত চেতসঃ। যম্মোহিতং জগৎ সর্ব্বমন্তীক্ষ্ণং বিস্মৃতাত্মকং ॥ ৪২॥

# ত্রীধরস্বামী।

নয় এতাবতং কালং কথং তে তত্ত্রোপবিষ্ঠা: কথঞ্চ ক্ষ্ৎপিপাসাদি বিশ্বরণং অত আহ এক শ্বিত্রিতি শ্লোকত্ত্বেণ। অপেহপি জাতে প্রাণেশং শ্রীকৃষ্ণং অন্তব্যাচ বিনাপি প্রিয়বিরহে ক্ষণোহপি বর্ষাধিকো ভবতি তথাপি মাধাহতাঃ ক্ষণার্দ্ধং মেনিরে ॥ ৪১॥ যয়া মায়য়া মোহিতং জগং অভীক্ষং পুনঃ পুনবিশ্বতাত্মকং বিশ্বত আত্মৈব যেন তত্ত্বিধা ॥ ৪২ ॥

### বৈষ্ণবভোষণী।

মন লীলাহ্বং। ততো ব্রহ্মাহজ্ঞাপনানন্তরং প্রাক্ প্রাথদেবাবস্থা চেষ্টাদিভিরবস্থিতান্ যথাপুর্বং পূর্ব্ববদ্বস্থাচেষ্টাদনতিক্রমেণ বর্ত্তনানাঃ সথায়ো যত্র তৎ স্বকং সভোজনস্থানং প্রিনমানিন্যে তত্র সক্বলপাণে: ক্রন্ধস্যাগতস্য তৈঃ পূর্ব্বদেব দৃশ্যমানস্যাৰস্থিতিশ্চ পূর্ব্বদেব জ্ঞেয়া। এতৎসর্বসমাধানক শ্রীক্রফেচ্ছাসম্বলিত্মায়াবৈভব্মেব তথা মাত্রাদিভির্বাবহারৌপরিকং ক্রনাদিতত্ত্বালকাদি-চরিতং স্থতমপি প্রাচীনের সার্বারিত্থ নেষ্ট্যিত্যপি বোধ্যং॥ ৪০॥

তথা তেষাং কালাজ্ঞানক মায়বৈৰেত্যাহ স্বস্য প্ৰাণেশং আত্মানং শ্ৰীকৃষ্ণস্য মায়াহতা ইতি বা হতা: প্ৰতিবন্ধা:। ননোহত: প্ৰতিহত: প্ৰতিবন্ধো হতশ্চ স ইত্যমর:। প্ৰাণেশত্বে হেডু: কৃষ্ণং বলবেক্ৰকুমারং। কিঞ্চ অৰ্ভকা: ক্ৰণাৰ্দ্ধং প্ৰস্পঞ্চকং মেনিরে। অত্র ক্ৰেষাং প্ৰতীতে মুহুৰ্ত্তবামদিবস্থাতাদিপরিবর্ত্তনং বিনা এব তস্য কালস্য স্থিতে:। হে রাজ্ঞান্তি প্রমাদ্ভত্বাং॥ ৪১॥

তত্র দৃষ্টান্তমাহ কিং কিমিতি। ইহ জগতি অভীক্ষমিতি স্কুৰ্ত্তৌ শাল্পে বাহজাতস্যাপি দেহম্বয়াতিরিক্তস্য তস্য মুহুবি শ্বরণাং ইতি মারামহিমোক্তঃ। অতো ভগবদিচ্ছাবলায়ান্তস্যান্তাদৃশেষ্পি মোহনত্বং ঘটত ইতি ভাবঃ॥ ৪২॥

# শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ন ব্দ্যে ইতি ব্যঞ্জকেন মৌনেনৈব তদ্যৈব নাট্যস্য পরিসমাপ্তিরিতি। স্বাধীনপ্রক্ষণোহগ্রে ক্লেন নিজমহৈখর্যস্যাজ্ঞানখভিনীবতে স্বেতি তল্লাট্যশন্তে। তল্লোবহৎপশুববংশশিশুদ্যনিট্যমিত্যাদিনা বাৎস্ব্যাদিরস্পরিকরপ্রজ্বেখর্যাদীনামগ্রেত্ তল্পহা-প্রেনাধীনেন ক্লেন নিজমহৈশ্ব্যস্য তল্পহাপ্রেমাধুর্যসাচ্ছাদি তস্যাজ্ঞানং ষ্থার্থমেবেতি তল্প ন ত্যাভিনম্ম ইতি। ন তল্লাট্যশন্দেন বাচ্যমিতি বিবেচনীয়ং। প্রাক্ প্রাথদেব ত্গচরণাদিচেষ্টাদিভিরবন্থিতান্। স্বকং স্ভোজনস্থানং প্রেনমানিন্যে কীদৃশং। যথাপূর্বং পূর্বেগাপবেশাদিকমনতিক্রম্য অপরিত্যজ্য বর্তমানাং স্থায়্যে বল্প তং। সমাসাস্থ্যার্থ:। যথা যথাবদেব স্থিতাং পূর্বস্থাঃ স্বর্গপ্রত্যা বল্প তং॥ ৪০॥

পত্র তাবং কালাজ্ঞানং তথৈব কবলপাণে: রুঞ্চ্যাগত্র্যা তৈঃ সহ তথৈব তোজনলীলালেধাদিকং ছণ্ডর্কথোগমান্ধাবৈভব্যেবে-ত্যাহ একস্মিরিত্যাদি চ্ছুর্জিঃ। আত্মনঃ স্বদ্য প্রাণেশং রুঞ্চমন্ত্রা বিনাপি শোগমান্ত্রা আহতা আহুতাঃ॥ ৪১॥

মোহনদাধৰ্ম্মেণ ৰোগমারারা বহিত্তকমারাং দৃষ্টান্তয়তি কিং কিমিতি। বিশ্বত আত্মা যেন তৎ তথৈব বোগমাররা বর্ষং ব্যাপ্য কৃষ্ণবিরহত্বংখং তে বিশ্বারিতা ইতি ভারঃ ॥ ৪২ ॥

হে রাজন্! আপনাদের প্রাণের ঈশর ঐক্ষ ব্যতিরেকে অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণরূপ প্রিয়বিরহে যদিও পূর্বোক্ত বালকদের পক্ষে কণকালও বংসরাধিক বোধ হইত তথাপি তাহারা মায়ায় মুগ্ধ হইয়া থাকাতে সম্পূর্ণ এক বংসর অতীত হইলেও তাবংকালকে অর্ধক্ষণমাত্র জ্ঞান করিল॥ ৪১॥

রাজন্! মায়ামোহিত ব্যক্তিদের কি না বিশারণ হয় ? দেখ এই জগৎ মায়ামোহিত হওয়াতে পুনঃ ২ আত্মাকেই বিশাৃত হইতেছে॥ ৪২॥

উচুশ্চ স্ক্রনঃ কৃষ্ণং স্বাগতং তেহতিরংহসা। নৈকোহপ্যভোজি কবল এহীতঃ সাধু স্ক্রজাং ॥৪০॥ ততো হসন্ স্বীকেশোহভ্যবহৃত্য সহার্ভকৈঃ। দর্শয়ংশ্চশ্মাঙ্কগরং ন্যবর্তত বনাৰু জং ॥৪৪॥ বহু প্রসূনবনধাতুবিচিত্রিতাঙ্গঃ প্রোদামবেণুদলশৃঙ্গরবোৎসবাঢ্যঃ।

## वीधत्रवाभी।

অত এবমূচুশ্চ তে স্বরাহতিবেগেন স্থাগতং সম্যগাগতং একোহণি গ্রাস স্থাং বিনা অস্থাভি ন হিলাইত এহি সাধু অধিকোপণ ভূজ্যতামিতি॥ ৪৩॥

অভাবহাতা ভুকু । ॥ ৪৪ ॥

त्थाकारमा त्या त्वन् कित्रदेवक्रवन्तरस्थनात्ताः मन्त्रनः । शृनन् जेननानदेनतास्त्रम् । त्यानीषृथवन्तरकृतिः त्यानीषृगम्दनवक्रता वृत्तिकर्तनः

#### देवक्षवरज्ञायनी।

স্বাগতং সর্মবংসানয়নপূর্মকং স্থাথনাগতমিত্যর্থ:। এবং বর্ষেহপাতীতে তথৈব কবলাদিস্থিতি: শ্রীভগবদিছাবৈভবেন জ্বেয়া। অন্যক্তি:। যথা। স্বয়াপ্যকোহপি কবলো নাভোজি শ্রীহন্তে পূর্মকবলর্ত্তে:। অতঃ ইতঃ অম্বিন্ সর্মেষাং অস্মাকং মণ্ডলমধ্যস্থানে এহি প্রবিশ সাধুবংসাব্যবেষণে সংপ্রত্যপি তৎসম্ভালনে বা জাতং বৈয়গ্রাং ত্যক্ত্বা সমাগ্ যথাসান্তিথা ভূজাতাং॥ ৪৩॥

হসত্রিতি তেষাং মায়ামুগ্ধানাং বাক্যশ্রবণাৎ ছংগানিবাঞ্জকোক্ত্যশ্রবণেন প্রহর্ষোদয়ান্ত। দ্ববীকেশ ইতি তেষাং পরসপ্রেষ্ঠণাৎ ব্রন্ধং প্রতি নাবর্ত্তত নিবর্ত্তেতি পাঠে স এবার্থ:। পরস্থৈপদমার্থং আজগরং চর্ম্ম দর্শর্মিতি অধান্মরবধস্য ব্রন্ধে কথনায়। ইতি ভক্তর্মাণি শ্রীভগরতা তাবৎকালং মায়য়াচ্ছান্য তথৈব রক্ষিতমাসীদিতি জ্বেয়ং॥৪৪॥

ইতি নিজপ্রিরসহচরবালকবংসসঙ্গতিজনিতহর্বভরতো বন্যবেশাদিবিশেষেণ ব্রজ্জনীজনানাং নেআনন্দং সঞ্জন্ বজান্তর্জগাম ইত্যাহ বহেতি। বনধাতু বৈরিকাদি:। বনপদং গৃহণভাস্থবণাদিব্যবচ্ছেদার্থং বহু দিভিবিশেষেণ বিচিত্রিতানি ভূষিতান্যঙ্গানি যেন

#### ক্রমসন্মর্ভঃ।

উচ্চ স্থান: রক্ষং স্বাগতং তেহতিরংহসেতি চ বৎসানিতো বৎসপান্ধীদ্বান্যত্রেতানেনান্যত্র সঙ্গীক্ষিতানামপি তেবাং পুনস্তত্রাব-শ্বাপনং। তেবাং তু তদপি ন জ্ঞাতমাসীদিতি জ্ঞাপরতি। অত্য সর্ব্ধা হৃত্বপপত্তি মারিইরব বারিতা সা চ মারা ত্রন্ধণোহপি আভিগ্রদত্ত-মোদিতবাত্তদীবৈব জাতেতি জ্ঞোরং। অতঃ শ্রীসকর্বণেনোক্তং প্রারো মারান্ত মে ভর্তুরিতি। অভীক্ষং যরা মোহিতং॥ ৪০। ৪৪॥

# वैविषनां थठवा वर्षी।

অর্ভকা উচু:। অতিরহ'না স্থেইনবাগতং। দূরগতবংসানরনে ঘটকৈকা অবশ্যং ভবিষ্যতীত্যন্মাভিবিচারিতং স্বয়া তু ক্ষণার্ছে-নৈবাগতমিতি ভাব:। একোহপি কবলোগ্রাসন্থরা বিনা নাভোজি তন্মাদিত এহি॥ ৪৩॥

হৃসন্নিতি তেবামানন্দর্শনাৎ। অভ্যবদ্ধত্যতি বর্ষে গতেহপারব্যঞ্জনাদীনাং ক্ষণার্দ্ধমাত্রপরিণামিদ্বং জাতং তচ্চরণবৈরসাং জন-মতীতি ভাবঃ। দর্শরন্নিত্যহো সধায়ঃ অদ্য মুতোহরং সর্গো বসারস্তাদিকলিলো বর্তত এবেতি পশ্যতেতি তবধস্য একে প্রধ্যাপনার্থং বোগমাধ্যিক ভাবৎকালপর্যান্তং তন্তদাচ্ছাদিতমাসীদিতি ক্ষেন্তং বনাৎ বনবিহরণাৎ ক্রকং জগামেতি শেবঃ॥ ৪৪॥

বস্তুত: তাবৎকাল গত হইলেও ঐ সকল বালকের ক্ষুধা বা তৃষ্ণা কিছুই বোধ হয় নাই, যাহা হউক, তাহারা শ্রীকৃষ্ণকে দেখিতে পাইয়া কহিতে লাগিল মিত্র। তুমি বড় শীঘ্র আদিলে, তোমাকে রাথিয়া আমরা একগ্রাদও ভোজন করি নাই, এখানে আইদ, ভোজনার্থ উপবিষ্ট হও॥ ৪০॥

তদনস্তর শ্রীকৃষ্ণ হাস্য করিতে ২ সেই সকল শিশুর সহিত ভোজন করিলেন, তাহার পর অজগর চর্ম্ম দেখাইতে দেখাইতে তাহাদের সহিত বন হইতে ত্রেল প্রত্যাব্ত হইলেন ॥ ৪৪ ॥

হে রাজন্! ময়্রপুচ্ছ এবং পুষ্পা তথা বনধাতু বারা জীক্ষের সকলঅক চিত্রিত হইয়াছিল, তিনি অয়ং বংশী শৃলাদির উদামধ্বনি বারা উৎসবাহিত হইয়াছিলেন, উপলালন বারা বৎস সকলকে

ৰৎসান্ গৃণন্নসুগগীতপবিত্তকীর্তি পোপীদৃগুৎসবদৃশিঃ প্রবিবেশ গোষ্ঠং ॥ ৪৫ ॥ অদ্যানেন মহাব্যালো যশোদানন্দসূমুনা। হতোহবিতা বয়ং চাম্মাদিতি বালা ব্রজে জগুঃ ॥৪৬ রাজোবাচ ॥

ব্রহ্মন্ পরোদ্তবে কৃষ্ণ ইয়ান্ প্রেমা কথং ভবেৎ। যোহভূতপূর্বস্তোকের স্বোদ্তবেলপি কথ্যতাং ॥৪৭
ভীধ্রহানী।

क्ना नः ॥ ८० ॥

যশোদানলক্ষুনা ইতি বহুনামৃক্তিঃ সহৈব দর্শিতা। কেচিদাক র্যশোদাক্ষুনা অপরে আছ ন'লক্ষুনেতি। বদা যশোদাং নল্মতীতি যশোদানলঃ সচাসৌ ক্ষুণ্চেতি তথা তেন অস্মানহাব্যালাং বয়ঞ্চ অবিতা রক্ষিতাঃ॥ ৪৬॥

ব্রজৌকসাং স্বতোকেষু সেহবল্ল্যান্দমন্বহমিত্যাদিনা স্বতোকেভ্যোহপি প্রপুত্রে ক্লফে প্রেমাধিক্যমুক্তং তত্র পৃচ্ছতি ব্রহ্মন্নিতি ॥৪৭॥

## देवक्षवरजावगी।

কিখা স্থিতি ব্যা অতঃ প্রোদামো অত্যুক্তঃ যো বেণুন্ন শৃকাণাং রবঃ তেন স এব বেণ্সবঃ কিখা সচ উৎস্বশ্চ নৃত্যক্রীড়া গীতাদি ক্পন্তেনাচ্যঃ প্রম্যমুদ্ধিমান্। অতএবাসুগৈত্তৈরেব বালকৈনীতা হ্রভ্রেণ গীতবং অধ্যরং তালাদিসহিত্যুক্তঃ কীঠিতা পবিত্রা নির্মানা জগংপাবনী বা কীর্ত্তির্ঘাস্থরাদি বধরণা যস্য গোপীশব্দেন শ্রীযশোদাদায়ঃ স্বর্ধা এব ব্রম্প্রিয়ঃ। তাসামপীদানীমেব শ্রীকৃষ্ণহর্ষ-ভ্রেণাধিক নেত্রানন্দোৎপত্তেঃ। এবং স্থাণ্ডেন শ্রীকৃষ্ণাবির্ভাৱেড্যোহপ্যোযাধিক্যং দর্শিতং॥ ৪৫ ॥

মাতৃকুলোৎপ**রৈ বঁশোদাস্থন। অনৈ্য ন**্নস্থুনা ইতি প্রোক্তমিতি জ্ঞেয়ং। য**ৰা। অ**তিসভোৱেণ হয়সোঁবাবিশেষতঃ প্রদংস। হাভ্যামপি তাভ্যাং গোকুবকুবভাগ্যদ্যোতনায়॥ ৪৬॥

নমু ক্ষেহন্তাব্ত্রিধা দৃশ্যতে বিষয় সৌন্দর্যোগ মমতাবিশেষেণ স্বাভাবিক দৈছিকসম্বন্ধ বিশেষেণ চ তত্র প্রথমং প্রাথদেব ষাবং বংসপেত্যাত্মকর্মাৎ। দিতীয়শ্চ তদ্বদেব তত্তংসম্বন্ধস্যানতিরেকাৎ। যুশ্চ তৃতীয়: প্রীপ্রছায়াগমনে তন্মাতরি শ্রুত: সম্বত্ত বিপরীত এব তহি কথং ব্রেজীকসাং স্বতোকে বিত্যাদিক মুক্তমিতাভিপ্রেত্য বিশেষ বৃভূৎসয়া পর বিরোধি বিষয় বা পৃচ্ছতি ব্রন্ধরিতি প্রীক্তষ্টে

# ক্রমসকর্ডঃ।

(श्रांभा: श्रीयत्मामामत्रः ॥ ८० । ८७ ॥

क्राक श्रीमांसामिनांसत्रशंखाः वाटक त्या यावान् ॥ ४१ ॥

## **औ**विश्वनाथककवर्ती।

शृगन् উপलानदेनवास्ववन् शांशीनाः वरमलानाः मृत्राम्रश्मवक्रभा मृत्रि पर्तनः यमा मः ॥ ८८ ॥

যশোদাৰন্দরোর্ভাগ্যমানন্দো যশো বা যত্মান্তথাভূতেন স্থ্নেক্তি শাকপার্থিবাদিত্বানাধ্যপদলোপী কর্ত্মধারয়ন্তত্মানাহাব্যালাং বয়ং চ অবিতাঃ ॥ ৪৬ ॥

ব্রজৌকসাং স্বতোকের মেহবল্লাক্ষমন্তং। শনৈনিঃসীম বর্ধে যথা ক্লকে অপূর্ববিদ্যাদিনা স্বতোকেভ্যোহপি পরপুত্রে ক্লেডপ্রমানিক্যং ব্যঞ্জিতং। তত্র পৃদ্ধতি ব্রহ্মতি পরেয়বে নন্দপুত্রে স্বোদ্ধবের স্বস্থাক্রছিপি যং প্রেমা অভ্তপূর্বঃ ব্রহ্মমোহনাং পূর্বাং নৃত্তঃ। লোকে হি অতিগুলবন্তমাদপি পরপূত্রাং গুলহীনেহপি স্বপুত্রে প্রেমাধিক্যং দৃশ্যত ইত্যতো লোকবিরুদ্ধভাদিদং পৃচ্চাতে ইতি ভাবঃ॥ ৪৭ ॥

আহ্বান করিতে ২ ব্রজে উপনীত হইয়া গোষ্ঠে প্রবিষ্ট হইলেন। গোপীগণ তাঁহাকে নিরীক্ষণ করিয়া নয়নের উৎসব বোধ করিতে লাগিলেন॥ ৪৫॥

তদনস্তর ঐ দকল ব্রজবালক স্বন্ধ পিত্রাদির সমিধানে বলিতে লাগিল, অদ্য শ্রীকৃষ্ণ বনে একটা নহাদর্প নিহত করিয়াছেন, আমরাও ইহাঁ কর্তৃক বিশেষরূপে রক্ষিত হইয়াছি ॥ ৪৬॥

রাজা পরীক্ষিৎ, কহিলেন ত্রহ্মন্ ! আপনি অথ্যে বলিয়াছেন ত্রজ্বাসিদিগের নিজপুত্রাপেক্ষা শ্রীকৃষ্ণে অধিক প্রেম হইয়াছিল, জিজ্ঞাস। করি আত্মজ তনয় সকলেও যে প্রেম পূর্ব্বে কখন হয় নাই অপরোৎপন্ন শ্রীকৃষ্ণে ত্রজ্বাসিদের তত্যেহধিক প্রেম কি প্রকারে জন্মিয়াছিল ?॥ ৪৭॥ শ্ৰীশুক উবাচ॥

সর্ক্ষোমপি ভূতানাং নৃপ স্বাজ্মৈব বল্লভঃ। ইতরেহপত্যবিত্তাদ্যা স্তম্মভতীয়েব হি ॥ ৪৮ ॥ তদ্রাজেন্দ্র যথা স্নেহঃ স্বস্থকাত্মনি দেহিনাং। ন তথা মমতাবলম্বিপুত্রবিত্তগৃহাদিষু॥ ৪৯ ॥

### खीरत्यामी।

শ্রীকৃষ্ণস্য সাক্ষাদাত্মন্ত স্থিমাত্মীয়েভাঃ প্রেমাধিকাঃ যুজ্যত ইতি বক্তুং প্রথমং তাবদাত্মনঃ স্বতঃ প্রেষ্ট্রমন্যেষান্ত তত্পাধিক্মিতি দুর্শায়তি পঞ্চিঃ সর্ক্ষোমিত্যাদিভিঃ॥ ৪৮॥

কুতত্তথা দর্শনাদিত্যাহ তদিতি। তত্মাদেব কারণাং। স্বস্থকাত্মনি অহ্বারাস্পদে ॥ ৪৯ ॥

# বৈঞ্চৰতোষণী।

প্রানাগাদিনামরূপাভ্যাং ব্যক্তে নতু স্বস্থরপেণৈর ব্যক্তে তশ্মিন্ য: যাবান্ অত্র পরোত্তবং নদক্ষাত্মজ উৎপন্ন ইত্যক্ত সিদ্ধান্তাহ্যাবে-থৈব উক্তং। অন্যথা শ্রীমন্নন্ধগণাদে প্রত্যাপি অরং পূর্বপক্ষঃ প্রসংজ্ঞত সচ প্রাণকৃত ইতি। যথা। যথা ক্লফে অপূর্ববিদিতি দৃষ্টা-স্তিতে প্রাক্তক্ষ এব পূর্বপক্ষ এতংপক্ষে বিষয়সৌন্ধ্যাস্যাধিক্যমন্ত্যের কিন্ত ততোহপি মমতা দেহসম্বন্ধযোরাধিক্যং বিব্হিক্তং ভচ্চ দিলাস্থবিশেষবৃত্তংসর্গ্রেত জ্ঞেয়ং॥ ৪৭॥

পরমাত্মা প্রীক্ষাছ্দৌ সর্বেষামেব প্রিয়াদাত্মনাছণাধিকপ্রিয়: কিমৃত আত্মীয়েভাঃ স্থাদবিধয়েভা ইতি বকুমাদাবাত্মনঃ
বতঃ প্রেষ্টবসন্যেষাং তত্নপাধিকমেবেভাাই সর্বেষামিতি পঞ্চভিঃ। তত্র প্রথমং স্বাত্মেতি দেহদেহধিবেকেনাইস্তাম্পদমাত্রম্ভত
মমতাম্পদে ব্যবছেদার্থং। স্বান্ধশন্ত প্রতিস্থং অমৃভবাপেক্ষয়া। হে নূপেতি ত্বাদুশস্যাস্য স্বধর্মতঃ প্রজাপালনম্পি তথৈবেতি ভাবঃ।
হীতি তত্রাহুভবপ্রামাণ্যং বোধয়তি॥ ৪৮॥

তদেব ৰাতিরেকেণাহ তদিতি। তত্রাহক্কারাম্পদ ইত্যুবৈষ্ট্রাব ডেষাং ব্যাখ্যা পরত্র পদ্যেত্ অহস্কারাম্পদেছুপি দেহ আত্মেতাাদিকা জ্ঞেয়া। পাঠাস্তরস্ক ন সঙ্গতং অন্যৈব বিবক্ষিতথাং। মমতাবলম্বীতি ষ্ঠার্থস্য ব্যবহিতথাং ন্যুনতা যোগ্যেবেতার্থঃ। হে রাজেক্র ইতি সামাজ্যেহপ্যাত্মবং স্লেহোনাস্তীতি ভবতা জ্ঞায়ত এব ইতি ভাবঃ॥ ৪৯॥

#### ক্ৰমদৰ্শ জ:।

পরনায়া ঐক্রেন্ডাংসী স্প্রেরামেব প্রিয়াদায়নোহপ্যধিকপ্রিয়: কিম্ভাদ্ধীয়েডাঃ ইতি বক্ত্মাদাবাদ্ধনঃ শ্বতঃ প্রেচ্ছিন্
মন্যেরাং তর্পাধিকমেবেত্যাহ সংর্রামিতি পঞ্চতিঃ। অত্র প্রথমতঃ শ্বাদ্বেতি দেহদেহিবিবেকনাহস্তাম্পদমাত্রম্চাতে মমতাম্পদে
প্রেমব্যবচ্ছেদার্থং। শ্বশন্ত প্রতিশ্বং অনুভাবাপেক্ষয়া। ভূতানামিত্যৌপচারিকভেদেন ॥ ৪৮ ॥
তদেব ব্যতিরেকেশাহ তদিতি ॥ ৪৯ । ৫০ ॥

# ত্ৰীবিশ্বনাধচক্ৰবৰ্তী।

ভো রাজন্ মমতাম্পদেভাঃ পুশ্রাদিভাঃ সকাশাদহস্তাম্পদে আত্মনি প্রেমাধিকামিতি লোকরীতিঃ প্রথমং দৃশ্যতাং তত এবাস্য সিন্ধাস্থো ভবিষ্যতীভাগ্ন সর্বেনামিতি পঞ্চভিঃ। বল্লভঃ লোকদ্ট্যা আত্যন্তিকশ্রীতিবিষয়ং। কুসচ প্রতিদেহমেকৈক এব ন তথান্যে ইত্যাহ ইত্যের ইতি॥ ৫৮॥

वथा निक्रभाधिकः ॥ ४२ ॥

শুক্দেব কহিলেন রাজন্ ! সকল প্রাণির আজ্মাই পরমপ্রিয়, অপত্য ও বিত্তপ্রভৃতি অন্যান্য বস্তু আজ্মার প্রিয় বলিয়াই প্রিয়তর হইয়া থাকে ॥ ৪৮ ॥

হে রাজেন্দ্র ! এই কারণেই দেহিদিগের অহ্সারাম্পদ স্বস্থ দেহে যজ্ঞপ স্কে হয় মমতাবলন্বি পুত্র বিত্ত গৃহাদিতে তজ্ঞপ হয় না ॥ ৪৯॥

দেহাত্মবাদিনাং পুংসামপি রাজন্যসত্তম। যথা দেহঃ প্রিয়তমস্তথা ন হুন্দু যেচ তং॥ ৫০॥ দেহোহপি মমতাভাক্ চেত্রহ্মো নাত্মবৎপ্রিয়ঃ। যজ্জীর্য্যত্যপি দেহেহক্মিন্ জীবিতাশা বলীয়সী॥ ৫১

# वीधवयामी।

অহস্কারাম্পদেইপি দেহে আত্মাধ্যাসভারতম্যেন প্রেমতারতম্যং দৃশ্যমানং তল্লিবন্ধনমেবেতি দর্শমিতৃং মৃঢ়াম্চ্ভেদেন বিশেষ-মাহ দেহাত্মবাদিনামিতি দ্বাভ্যাং। তং দেহমন্থ যে ভবস্তি পুদ্রাদরতে তুন তথা প্রিয়তমা ইত্যর্থ: ॥ ৫০ ॥

যদ্যস্মাজীর্য্যত্যপি আসন্নমরণেহপি জীবিতাশা ভবতি। অয়ং ভাব: ন জীবিষ্যতীতি নিশ্চিতে দেহেইপি যংপ্রেমাম্পদত্বং তদান্ত্র-গতমেব সংগচ্ছত ইতি। অথবা যং যশ্মিন্ দেহে জীর্যাত্যপি জীবিতাশা অবিবেকদশাদ্যামাসীং সোহপি বিবেকিনো বদা মমতা-ভাগ্ ভবতি তত্ত্ব তদা নাতিবাহেতি॥ ৫১॥

# देवकवरकावनी ।

দেহ এবাত্মেতি বাদিনাং অত্যস্তাবিবেকিনামিত্যর্থ: তন্মতেহপ্যাত্মন এব প্রিয়তমত্ব পর্যাবস্যেৎ আত্মতরৈব দেহেছভিমানেন প্রিয়তমত্বাৎ। হি নিশ্চয়ে। তথে চকার:। হে রাজনাসন্তমেতি কেচিদ্রাজনা। দেহাত্মবাদিনোহসন্ত এব আত্মবাদিনশ্চ সন্তঃঈশ্বরাদিন: সত্তরা: তেরু শ্রীক্রফৈকপ্রিয়ত্বাত্বং সত্তম ইতি ভাব:।। ৫০।।

মমেতি দেহং মন্যমানানামবিবেকিনাং মতমালম্ব্যাই দেহোহপীতি। তৈর্ব্যাখ্যাতং। তত্র প্রথমপক্ষেহপীতি সম্ভাবনামাং পুত্রাদ্যপেক্ষরা সমুক্তরে বা দ্বিতীয়পক্ষে হবিবেকদশায়াং ইতি বলীয়দীতি বিশেষণেনাক্ষিপ্যতে। এতংপ্রতিযোগিতয়া বিবেকিন ইত্যপি। অসৌ দেহোহপীত্যনয়ের বিতরের ব্যাচটে নোহপীতি। নাতীবাহা ইতি গ্রিয়তাং কীবতু বেত্যপেক্ষাধিক্যং নাতীত্যহাং। ইদং নাত্রবং প্রের ইত্যস্য ব্যাখ্যানমিতি। বহা। আত্মবং পূর্ব্বমবিমেকানাত্মতয়া গৃহীতোহহন্তাবিষ্কাে দেহত্তম্বং প্রিরো ন ভবতীত্যর্থং। যদবশাক্ষীর্যাতি রোগাদিনাভিভ্তেহন্দ্রিন্মমতাম্পদে দেহবিব্রে জীবিতাশা অয়ং দেহন্তিইতু ইতি বাহাপি অবলীয়দী পূর্ব্বাপেক্ষা অয়াপি ভবতি বিবেক্তাহন্দ্রিয়াত্মতাপ্যমনাতিপ্রিয়্বভাবাং॥ ৫১॥

#### क्रममसर्जः।

নমেতি দেহং মধানানাং বিবেকিনাং নতমাণ্যাহ দেহোহণীতি। অত্ত্র দেহাদহস্তা মমন্তরোরণগমেনাত্মগতনেব সংগচ্ছত ইতি টাকা যোজ্যা। পূলাদ্যপেক্ষা সমুক্তরার্থেহিরমণি শক্ষঃ। টাকারাঞ্চ। অবিবেকদশারামিতি বলীয়ন্ত্ববিশেষণেনাক্ষিপ্যতে। এতৎ প্রতিধাগিতরা বিবেকিন ইত্যাপি সোহণীত্যসৌ দেহোপীত্যনরোর্ব্যঞ্জমিতি জ্বেরং সরলার্থন্তরং। যন্ত্রান্মমতা ভাতত্বাদেব পূলাদাবিব দেহে জীর্ঘাতি ভগ্য দেহস্য জীবিতাশা বলীয়সী ভবতি। মমতা চাত্মসম্কাদেবেতি ॥১১॥

# विश्वनाथहकवर्षी।

সচাত্মামৃঢ়েদেহি এব জ্ঞায়তে ইতি তন্মতেনাহ। দেহ এবাত্মেতি বিদিত্ব শীলং বেষাং তং দেহং অস্কৃতবন্ধি বে পুঞাদয়তে তথা ন প্রিয়তমা ইত্যর্থ: ॥ ৫ • ॥

দেহাত্মবাদিনাং তেষামপি কদাচিদীষ্বিবেকে সভি আত্মৈব প্রিয়: সাারতথা দেহ ইত্যাহ দেহােংপি অহন্তাম্পদীভূতােংপি দেহ-ঈষ্বিবেকেন বিদ মমতা চাক্ স্যান্তদালোঁ দেহ আত্মবৎ প্রিয়োন ভবেং। কিন্তাত্মান্তবােধেনৈর প্রিয়: স্যাদিভার্থ:। তত্র লােকা-স্থভবমেব প্রমাণয়ভি যদিতি। সর্বাত্র দেহত্যাপে আত্মনােহ্ডিকট্টং দৃষ্ট্ব। ভদন্তিকট্টং মমাত্মনাে মা ভবন্ধিতি ব্লৈয়ব আত্মন্যতিক্ষেহাদেব দেহে স্বীবিতাশা অধিকা ভবন্তীতার্থ:॥ ৫১ ॥

বে সকল পুরুষ দেহাত্মবাদী অর্থাৎ দেহে আত্মাধ্যাস করিয়া থাকে তাহাদেরও দেহ যজেপ প্রিয়তর দেহের পশ্চাৎ হয় যে সকল পু্জাদি, ততাবৎ তক্ষপ প্রিয়তম নহে॥ ৫০॥

কিন্ত যদ্যপিও দেহ মমতার ভাজন তথাচ তাহা স্বাস্থ্যৎ প্রিন্ন হইতে পারে না, যেছেড় দেহ জীর্ণ ইইয়া স্বাসন্ম মৃত্যু হইলেও জীবিতাশা বলবতী হইন্না থাকে॥ ৫১॥ উচুশ্চ স্থহন: কৃষ্ণং স্বাগতং তেহতিরংহ্সা। নৈকোহ্প্যভোজি ক্বল এহীতঃ সাধু ভুজ্যতাং ॥৪০॥ ততো হসন্ স্থীকেশোহভ্যবহৃত্য সহার্ভকৈ:। দর্শয়ংশ্চর্মাজগরং ন্যবর্ত্ত বনাধু জং ॥৪৪॥ বহ প্রসূনবনধাতুবিচিত্রিতাসঃ প্রোদ্ধামবেণুদলশৃঙ্গরবোৎস্বাঢ্যঃ।

# वीरत्रशमी।

জত এবমূচ্শ্চ তে বরাহতিবেগেন স্বাগতং সম্যগাগতং একোহপি গ্রাস স্বাং বিনা অস্বাভি ন'ভোজি ন ভুক্ত:। ইত এহি সাধু অধিক্ষেপণ ভুজ্যতামিতি॥ ৪৩॥

অভাবহৃত্য ভুকু 1 ॥ ৪৪ ॥

প্রোদ্দামো যো বেণ্ । দিরবৈর ৎসবজেনাতাঃ সম্পন্ন: । গৃণন্ উপলালনৈরা ছবরন্ । গোপী দৃগুৎসবদৃশিঃ গোপী দৃশামুৎসবদ্ধা দৃশিদ শনং

#### देवकवटजावनी।

স্বাগতং সর্ববংসানরনপূর্বকং স্থোনাগতমিতার্থ:। এবং বর্বেহপাতীতে তথৈব কবলাদিস্থিতি: শ্রীভগবদিচ্ছাবৈভবেন জ্বো। অন্যক্ত: ! বরা। ত্বরাপ্যকোহণি কবলো নাডোজি শ্রীহতে পূর্বকবলরতে:। অত: ইত: অস্মিন্ সর্বোবাং অস্মাকং মণ্ডলমধ্যস্থানে এহি প্রবিশ সাধুবংসাদ্যবেবণে সংপ্রত্যাপি তৎসন্তালনে বা জাতং বৈর্ত্তাং ত্যক্তা সম্যুগ্ যথাস্যাত্তথা ভূজাতাং॥ ৪৩॥

হসন্নিতি তেবাং মায়ামুগ্নানাং বাক্যশ্রবণাৎ ছংধানিব্যঞ্জকোক্ত্যশ্রবণেন প্রহর্ষেদিয়ান্ত। ক্রীকেশ ইতি তেবাং পরস্বপ্রেষ্ঠগ্রাং ব্রক্ষং প্রতি ন্যবর্ত্তত নিবর্ত্তেতি পাঠে স এবার্থঃ। পরক্রৈপদমার্বং আজগরং চর্ম্ম দর্শননিতি অধান্তর্বধদ্য ব্রজে কথনায়। ইতি তচ্চমানি শ্রীভগরতা তাবংকালং মায়য়াচ্ছাদ্য তথৈব রক্ষিত্তমাসীদিতি ক্তেয়ং॥ ৪৪॥

ইতি নিজ্ঞারসহচরবালকবৎসদসতিজনিতহর্বভরতো বন্যবেশাদিবিশেষেণ অজন্তন্তীজনানাং নেত্রানলং সঞ্চরন্ ব্রজান্তর্জগাম ইত্যাহ বর্ষেতি। বনধাতু গৈরিকাদি:। বনপদং গৃহলভ্যস্থবণাদিব্যবচ্ছেদার্থং বর্ষাদিভিবিশেষেণ বিচিত্রিতানি ভূষিতান্যসানি যেন

#### ক্রমসন্ধর্ত:।

উচুশ্চ স্থলনঃ ক্লাং স্থাতং তেহতিরংহসেতি চ বৎসানিতো বৎসপানীস্থান্যত্রেত্যনেনান্যত্র সক্কণীক্ষিতানামপি তেবাং পুনন্তঞাবস্থাপনং। তেবাং তু তদপি ন জ্ঞাতমাসীদিতি জ্ঞাপরতি। অত্য সর্বা ফুমুপপত্তি মারিবের বারিতা সা চ মারা ত্রন্ধণোহপি শ্রীভগবদমূমোদিতবাত্ত্বীরের জাতেতি জ্ঞোং। অতঃ শ্রীসম্বর্ধণেনোক্তং প্রারো মারাস্থ মে ভর্ত্তরিতি। অতীক্ষং ধরা মোহিতং॥ ৪৩। ৪৪॥

#### **बै**विषेत्रार्थहळ्चर्यो ।

ব্দর্জকা উচ্:। অতিরহংসা স্থেইনবাগতং। দ্রগতবংসানরনে ঘটকৈকা স্বৰশ্যং ভবিষ্যতীত্যন্মাভিবিচারিতং স্বরা তু ক্ষণাস্থেন নৈবাগতমিতি ভাব:। একোহপি কবলোগ্রাসম্বরা বিনা নাভোজি তন্মাদিত এহি॥ ৪৩॥

হসন্নিতি তেবামান-দদর্শনাং। অভ্যবহুত্যেতি বর্ষে গতেহপ্যরব্যঞ্জনাদীনাং ক্ষণার্দ্ধমাত্রপরিণামিদ্ধং জাতং ভচ্চরণবৈরস্যং জন-রতীতি ভাবঃ। দর্শব্বিত্যহো সথারঃ অদ্য মৃত্যোহয়ং সর্পো বসারকাদিকলিলো বর্ত্তত এবেতি পশ্যতেতি তহুধস্য ব্রন্তে প্রখ্যাপনার্ধং বোসমারৈব তাবৎকালপর্যান্তং ভন্তপাচ্ছাদিতমাসীদিতি জ্ঞেরং বনাং বনবিংরণাং ব্রন্ধং জ্ঞামেতি শেবঃ॥ ৪৪॥

বস্তুতঃ তাবৎকাল গত হইলেও ঐ সকল বালকের ক্ষ্মা বা তৃষ্ণা কিছুই বোধ হয় নাই, যাহা হউক, তাহারা শ্রীকৃষ্ণকে দেখিতে পাইয়া কহিতে লাগিল মিত্র। তুমি বড় শীন্ত আদিলে, তোমাকে রাশিয়া আমরা একগ্রাসও ভোজন করি নাই, এখানে আইস, ভোজনার্থ উপবিষ্ট হও॥ ৪০॥

তদনস্তর শ্রীকৃষ্ণ হাস্য করিতে ২ সেই সকল শিশুর সহিত ভোজন করিলেন, তাহার পর অজগর চর্মা দেখাইতে দেখাইতে তাহাদের সহিত বন হইতে ত্রেজে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন॥ ৪৪॥

হে রাজন্! ময়ুরপুচ্ছ এবং পুষ্পা তথা বনধাতু দারা জীক্তের সকলঅর চিত্রিত হইয়াছিল, তিনি স্বয়ং বংশী শুঙ্গাদির উদ্ধাধননি দারা উৎস্বান্থিত হইয়াছিলেন, উপলালন দারা বৎস সকলকে

বংসান্ গৃণশ্বসুগগীতপবিত্রকৃীর্তি র্গোপীদৃগুৎসবদৃশিং প্রবিবেশ গোষ্ঠং ॥ ৪৫ ॥ অদ্যানেন মহাব্যালো বশোদানন্দসূমনা। হতোহবিতা বয়ং চাম্মাদিতি বালা ব্রজে জগুঃ ॥৪ওঁ রাজোবাচ ॥

ব্ৰহ্মন্ পরোন্তবে কৃষ্ণ ইয়ান্ প্রেমা কথং ভবেৎ। যোহস্তপূর্বস্তোকেরু স্বোন্তবেদ্ধ কথ্যতাং ॥৪৭
শীধ্রশামী।

यम् मः॥ ८० ॥

যশোদানশহুখনা ইতি বহুনামূক্তিঃ সহৈৰ দৰ্শিতা। কেচিদাহ বঁশোদাহুখনা অপরে আছ ন নিক্সুনেতি। যদা যশোদাং নন্দয়তীতি যশোদানশঃ সচাসৌ হুহুণেচতি তথা তেন অস্মানহাব্যালাং বয়ঞ্চ অবিতা রক্ষিতাঃ ॥ ৪৬॥

ব্রজৌকসাং স্বতোকেষু ক্লেহবল্ল্যান্দমশ্বহমিত্যাদিনা স্বতোকেভ্যোহপি পরপুত্রে ক্লক্ষে প্রেমাধিক্যমুক্তং তত্ত পৃচ্ছতি ব্রন্ধল্লিত ॥৪৭॥

### देवक्षबद्धावनी ।

কিষা স্থিতি ব্যা অতঃ প্রোদামো অত্যুক্তঃ যো বেণুদ্ব শৃঙ্গাণাং রবঃ তেন স এব বোৎসবঃ কিছা সচ উৎসবশ্চ নৃত্যক্রীড়া গীতাদি রূপন্তেনাচ্যঃ পরমসমৃদ্ধিমান্। অতএবামুগৈতৈরের বালতক্ষীতা হর্ষভরেণ গীতবং স্কুস্বং তালাদিসহিত্যুক্তঃ কীর্ত্তিতা পবিত্রা নির্ম্মলা জগৎপাবনী বা কীর্তির্বাস্থ্রাদি বধরণা যায় গোপীশব্দেন শ্রীযশোদাদয়ঃ সর্ব্ধা এব ব্রশ্বরিয়ঃ। তালামপীদানীমেব শ্রীকৃষ্ণহর্ষ্ক ভরেণাধিক নেআনব্দোৎপত্তেঃ। এবং স্থ্যাংশেন শ্রীকৃষ্ণাবির্ভাবেড্যন্তেভ্যোহপ্যোমাধিকাং দর্শিতং॥ ৪৫॥ .

মাতৃকুলোৎপ**লৈ যশোদাস্ত্না অনৈ**য় ন নিস্ত্না ইতি প্রোক্তমিতি জ্ঞেয়ং। যহা। অতিসভোষেণ হর্সৈয়বাবিশেষতঃ প্রশংসা হাভামেপি তাভাগে গোকুবকুবভাগ্যদ্যোতনায়॥ ৪৬॥

নম নেহভাবত্রিধা দৃশ্যতে বিষয় সৌন্দর্যোগ মনতাবিশেষেণ স্বাভাবিক দৈছিকসম্বন্ধ বিশেষেণ চ তত্র প্রথমং প্রাথদেব যাবং বংসপেত্যাছাক্তম্বাৎ। দ্বিতীয়শ্চ ত্বদেব তত্তংসম্বন্ধস্যানভিরেকাং। যুশ্চ তৃতীয়ঃ শ্রীপ্রছাম্মাগমনে তন্মাতরি শ্রুভঃ সম্বত্র বিপরীত এব তহি ক্থং ব্রজৌকসাং স্বতোকে মিত্যাদিক মুক্তমিতাভিপ্রেত্য বিশেষ বৃত্ৎসন্মা পর বিরোধি বিষয়া বা পৃচ্ছতি ব্রক্ষরিতি শ্রীক্তফো

#### क्षप्रमन्द्रकः

(शांभाः चीयर्गामामयः॥ ८८। ८७॥

क्रास्थ क्षीमामामिनामक्र शाखाः वारक त्या यावान् ॥ ८९ ॥

# শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

গুণন্ উপলালনৈবাহবয়ন্ গোপীনাং বৎসলানাং দৃশামুৎসবরূপা দৃশি দর্শনং যস্য সং ॥ ৪৫ ॥

যশোদাৰলয়োভাগ্যমানলো যশো বা যত্মান্তথাভূতেন স্থনেতি শাকপাথিবাদিতালধ্যপদলোপী কর্মধারয়ভত্মানহাব্যালাং বয়ং চ অবিতাঃ ॥ ৪৬ ॥

ব্ৰজৌকদাং স্বতোকের কেহবল্লান্তমন্ত্র। শনৈনি:দীম বর্ধে যথা ক্বঞে অপূর্ব্বদিত্যাদিনা স্বতোকেভ্যোহিপি পরপুত্রে ক্লেপ্রেমানিকাং ব্যঞ্জিতং। তার পৃচ্ছতি ব্রন্ধতি পরোদ্ধবে নামপুত্রে স্বোদ্ধবের স্বস্থান্তেছিপি মং প্রেমা অভ্তপূর্বাং ব্রন্ধমোহনাং পূর্বাং ন্ত্তঃ। লোকে হি স্বতিশ্রণবন্তমাদপি পরপূত্রাং গুণহীনেহিপি স্বপুত্রে প্রেমাধিকাং দৃশ্যক্ত ইত্যাতো লোকবিক্দ্বাদিদং পৃচ্ছ্যতে ইতি ভাবং॥ ৪৭ ॥

আহ্বান করিতে ২ ব্রব্ধে উপনীত হইয়া গোষ্ঠে প্রবিষ্ট হইলেন। গোপীগণ তাঁহাকে নিরীক্ষণ করিয়া নয়নের উৎসব বোধ করিতে লাগিলেন ॥ ৪৫॥

তদনন্তর ঐ সকল ব্রজবালক স্বন্ধ পিত্রাদির সমিধানে বলিতে লাগিল, অদ্য শ্রীকৃষ্ণ বনে একটা মহাসর্প নিহত করিয়াছেন, আমরাও ইহাঁ কর্ভৃক বিশেষরূপে রক্ষিত হইয়াছি॥ ৪৬॥

রাজা পরীক্ষিৎ' কহিলেন অন্ধন্ ! আপনি অত্যে বলিয়াছেন অজবাসিদিগের নিজপুত্রাপেকা শ্রীকৃষ্ণে অধিক প্রেম হইয়াছিল, জিজ্ঞাসা করি আত্মজ তনয় সকলেও যে প্রেম পূর্বে কখন হয় নাই অপরোৎপন্ন শ্রীকৃষ্ণে অজবাসিদের ততোহধিক প্রেম কি প্রকারে জন্মিয়াছিল ? ॥ ৪৭ ॥

200

শ্ৰীশুক উবাচ॥

সর্বেষামপি ভূতানাং নৃপ স্বাজ্যৈব বল্লভ:। ইতরেহপত্যবিতাদ্যা স্তদ্মভতীয়েব হি॥ ৪৮॥ তদ্রাজ্যের যথা স্নেহঃ স্বস্থকাত্মনি দেহিনাং। ন তথা সমতাবলম্বিপুত্রবিত্যুহাদিয়ু॥ ৪৯॥

# व्यिषत्रयामी।

শ্রীকৃষ্ণগ্য সাক্ষাদাত্মন্তান্ত্রিরাত্মীয়েডাঃ প্রেমাধিক্যং যুক্তাত ইতি বক্তুং প্রথমং তাবদাত্মনঃ স্বতঃ প্রেষ্ট্রমন্যেষান্ত তর্ণাধিক মিতি দশয়তি পঞ্চিঃ সর্বেষামিত্যাদিভিঃ॥ ৪৮॥

কুতত্তথা দর্শনাদিত্যাহ তদিতি। তত্মাদেব কারণাং। স্বত্মকান্মনি অহঙ্কারাম্পদে ॥ ৪৯ ॥

## देवकवरजावगी।

প্রদামাদিনামরপাত্যাং ব্যক্তে নতু স্বস্থরপেণৈর ব্যক্তে তত্মিন্ যঃ যাবান্ অত পরোত্তবন্ধং নলন্ধাত্মল উৎপন্ন ইত্যক্ত দিদ্ধান্তাম্পাবে-গৈব উক্তং। অন্যথা শ্রীমন্নদ্দযশোদে প্রত্যাপি অন্তঃ পূর্বপক্ষঃ প্রদক্ষেত সচ পূরাণক্ষত ইতি। যহা। যথা ক্লফে তপূর্ববিদিতি দৃষ্টা-ন্তিতে প্রীকৃষ্ণ এব পূর্ববিক্ষ এতংপক্ষে বিষয়সৌন্দর্য্যস্যাধিক্যমন্ত্যের কিন্ত ততোহপি মমতা দেহসম্বদ্ধয়োরাধিক্যং বিবিক্ষিতং তচ্চ দিদ্ধান্তবিশেষবৃত্তংস্ব্যেতি জ্বেয়ং॥ ৪৭॥

পরমান্ধা প্রীক্ত ফোইসৌ সর্বেরামেব ' প্রিয়াদান্মনোহপাধিক প্রিয়: কিমৃত আত্মীরেভা: স্থপদবিষয়েভা ইতি বক্ মাদাবায়নঃ
বতঃ প্রেষ্ঠবমন্যেষাং তহপাধিকমেবেভাাই সর্বেরামিতি পঞ্চিঃ। তত্র প্রথমং স্বাত্মেতি দেহদেছবিবেকেনাইস্কাম্পদমাত্রমূচতে
মমতাম্পদে ব্যবছেদার্থং। স্বশন্ত প্রতিস্থং অন্তরাপেক্ষয়া। হে নৃপেতি ত্বাদৃশদ্যাদ্য স্বধর্মতঃ প্রকাপালনমপি তথৈবেতি ভাবঃ।
হীতি তত্রামূভবপ্রামাণাং বোধয়তি॥ ৪৮॥

তদেব ৰাতিরেকেণাহ তদিতি। তত্রাহস্কারাম্পদ ইত্যবৈদ্যব তেবাং ব্যাখ্যা পরত্র পদ্যেত্ অহস্কারাম্পদেহপি দেহ আছেতাদিকা জ্ঞো। পাঠাস্তরম্ভ ন সম্বতং অসৈয়ব বিবন্ধিতত্বাং। নমতাবদাধীতি ষ্ঠার্থস্য ব্যবহিতত্বাং ন্যনতা যোগ্যৈবেতার্থ:। হে রাজেক্র ইতি সামাজ্যেহপ্যাত্মবং স্লেহোনাজীতি ভবতা জ্ঞায়ত এব ইতি ভাব:॥ ৪৯॥

# ক্ৰমদন্দৰ্ভ:।

পরমাত্মা শ্রীক্রফোহদৌ সর্বেধামেব প্রিয়াদান্মনোহপ্যধিকপ্রিয়: কিম্তান্ত্রীয়েভ্যঃ ইতি বক্ষাদাবান্ত্রনঃ শ্বতঃ প্রেচ্ছন মন্যেষাং তত্বপাধিকমেবেত্যাহ সর্বেধামিতি পঞ্চতিঃ। অত্র প্রথমতঃ শ্বান্ত্রেতি দেহদেহিবিবেকেনাইস্কাপদমাত্রমূচ্যতে মমতাম্পদে প্রেমব্যবক্ষেদার্থং। স্থানক্ষ প্রতিশ্বং অনুভাবাপেক্ষয়া। ভ্তানামিত্যোপচারিকভেদেন ॥ ৪৮ ॥
ভিদেব ব্যতিরেকেশাহ তদিতি ॥ ৪৯ । ৫০ ॥

# 🚨 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ভো রাজন্ মমতাম্পদেভা: পুত্রাদিভা: সকাশাদহস্তাম্পদে আত্মনি প্রেমাধিকামিতি লোকত্বীভি: প্রথমং দৃশ্যতাং ওত এবাস্য সিদ্ধান্তো ভবিষ্যতীত্যাহ সর্কোষামিতি পঞ্চতি:। বল্লভ: লোকদৃষ্ট্যা আত্যন্তিকশ্রীতিবিষয়:। সচ প্রতিদেহমেকৈক এব ন তথান্যে ইত্যাহ ইতরে ইতি॥ ৫৮॥

यथा निक्रमाधिकः ॥ ८२॥

শুকদেব কহিলেন রাজন্ ! দকল প্রাণির আত্মাই পরমপ্রিয়, অপত্য ও বিত্তপ্রভৃতি অন্যান্য বস্তু আত্মার প্রিয় বলিয়াই প্রিয়তর হইয়া থাকে ॥ ৪৮ ॥

হে রাজেন্ত ! এই কারণেই দেহিদিগের অহ্সারাম্পদ স্বস্থ দেহে যজ্ঞপ স্নেহ হয় ন্যতাবল্ঘি পুত্র বিত্ত গৃহাদিতে তজ্ঞপ হয় না ॥ ৪৯॥ দেহাত্মবাদিনাং পুংসামপি রাজন্যসত্তম। যথা দেহঃ প্রিয়তমন্তথা ন ছুকু যেচ তং ॥ ৫০ ॥ দেহোহপি মমতাভাক্ চেত্তর্হসোঁ নাত্মবংপ্রিয়ঃ। যজ্জীর্য্যত্যপি দেহেহস্মিন্ জীবিতাশা বলীয়সী ॥ ৫১

# वीधवयामी।

অহঙ্কারাম্পদে হপি দেহে আত্মাধ্যাসভারতম্যেন প্রেমভারতম্যং দৃশ্যমানং তরিবন্ধনমেবেতি দর্শরিত্থ মৃঢ়াম্চ্ডেদেন বিশেষ-মাহ দেহাত্মবাদিনামিতি ঘাভাং। তং দেহময় যে ভবস্তি প্রাণয়ত্তে তুন তথা প্রিয়তমা ইত্যর্থঃ ॥ ৫০ ॥

যদ্যসাজীর্যাত্যপি আসন্নমরণেহপি জীবিতাশা ভবতি। অন্নং ভাবঃ ন জীবিব্যতীত নিশ্চিতে দেহেহপি যংপ্রেমাম্পদত্বং তদাল্প-গতমেব সংগচ্ছত ইতি। অথবা যং যত্মিন্ দেহে জীর্যাত্যপি জীবিতাশা অবিবেকদশারামাসীৎ সোহপি বিবেকিনো যদা মমতা-ভাগ্ ভবতি তত্ম তদা নাতিবান্থেতি॥ ৫১॥

# देवक्षवरजावनी ।

দেহ এবাত্মেতি বাদিনাং অত্যন্তাবিবেকিনামিত্যর্থঃ তন্মতেহপ্যাত্মন এব প্রিয়তমন্ত্র পর্যাবস্থে আত্মতবৈর দেহেছভিমানেন প্রিয়তমন্ত্র। হি নিশ্চয়ে । মুর্থে চকারঃ । হে রাজনাসন্তমেতি কেচিন্তাজন্যাল্লীদেহাত্মবাদিনোহসন্ত এব আত্মবাদিনশ্চ সন্তঃঈশ্বরবাদিনঃ সন্তরাঃ তেরু শ্রীক্রইঞ্কপ্রিয়ন্ত্রান্থং সত্তম ইতি ভাবঃ ॥ ৫০ ॥

মমেতি দেহং মন্যমানানামবিবেকিনাং মত্তমালন্তাই দেহোহণীতি। তৈর্ব্যাধ্যাতং। তত্র প্রথমপক্ষেহণীতি সম্ভাবনারাং পুজাদ্যপেক্ষয়া সমুক্তরে বা দ্বিতীরপক্ষে হবিবেকদশারাং ইতি বলীয়দীতি বিশেষণেনাক্ষিপ্যতে। এতংপ্রতিযোগিতরা বিবেকিন ইত্যপি। অসৌ দেহোহণীত্যনরোর দ্বিতরোরর্থং ব্যাচষ্টে সোহণীতি। নাতীবাস্থা ইতি প্রিয়তাং জীবতু বেত্যপেক্ষাধিক্যং নাজীত্যর্থ:। ইদং নাজ্যবং প্রের ইত্যাস্য বাংগানমিতি। যথা। আত্মবং পূর্কমবিমেকানাত্মতরা গৃহীতোহহস্তাবিষরো দেহত্তবং প্রিয়েন ভবতীত্যর্থ:। বদ্দাভাতির রোগাদিনাভিভূত্হে স্থিন্ মমতাম্পনে দেহবিষরে জীবিতাশা অরং দেহত্তিই ইতি বাহাণি অবলীয়সী পূর্কাপেক্ষা স্বয়াণি ভবতি বিবেকতোহিস্মাত্মতাপ্যমেনাতি প্রিয়্মভাবাং॥ ৫১॥

# क्रमममर्जः।

মনেতি দেহং মবানানাং বিবেকিনাং মতমালব্যাহ দেহোহপীতি। অত্ত দেহাদহস্তা মমতব্যোরপগমেনাত্মগতমেব সংগচ্ছত ইতি টীকা যোজ্যা। পূজাদ্যপেক্ষমা সমুক্তমার্থোহয়মপি শবং। টীকায়াঞ্চ। অবিবেকদশারামিতি বলীয়ন্ধবিশেবণেনাক্ষিপ্যতে। এতৎ প্রতিধাগিতয়া বিবেকিন ইত্যপি সোহপীত্যদৌ দেহোপীত্যনরোর্ব্যঞ্জমিতি জ্ঞেয়ং সরলার্থকরং। ফ্রান্মমতা ভাক্তাদেব পূজাদাবিব দেহে জীর্ঘতি তদ্য দেহস্য জীবিতাশা বলীয়দী ভবতি। মমতা চাত্মসম্বর্গাদেবেতি ॥১১॥

# প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

সচাঝাম্টেদেহি এব জ্ঞারতে ইতি তন্মতেনাহ। দেহ এবাঝেতি বদিত্ব দীলং বেবাং তং দেহং অহতবস্তি যে প্রাদরত্তে তথা ন প্রিয়তমা ইত্যর্থ: ॥ ৫০ ॥

দেহাত্মগদিনাং তেবামণি ক্ষাটিদীব্দিবেকে সতি আছৈব প্ৰিন্ধ: স্যান্নতথা দেহ ইত্যাহ দেহোহণি অহস্তাম্পদীভূতোহণি দেহ-দীব্দিবেকেন বদি মনতাভাক্ স্যান্তদাসো দেহ আত্মবৎ প্ৰিন্ধোন ভবেৎ। কিম্বাআহ্বোধেনৈৰ প্ৰিন্ধ: স্যাদিত্যৰ্থ:। তত্ৰ লোকা-সূভ্যমেব প্ৰমাণ্যতি যদিতি। সৰ্ব্বিত্ৰ দেহত্যাগে আত্মনোহতিকটং দৃষ্ঠ্। তদ্ভিকটং মনাত্মনো মা ভব্দিতি বুদ্ধাৰ আত্মনাভিম্নেহাদেৰ দেহে জীবিতাশা অধিকা ভব্তীতাৰ্থ:॥৫১॥

যে সকল পুরুষ দেহাস্থবাদী **অর্ধাৎ দেহে আত্মাধ্যাস করিয়া থাকে** তাহাদেরও দেহ যজপ প্রিয়তর দেহের পশ্চাৎ হয় যে সকল পুজাদি, তন্তাবৎ তক্ষপ প্রিয়তম নহে॥ ৫০॥

কিন্ত যদ্যপিও দেহ মমতার ভাজন তথাচ তাহ। আজ্বৎ প্রের হইতে পারে না, যেছেছ দেহ জীর্ণ হুইয়া আসন মৃত্যু হুইলেও জীবিতাশা বলবতী হুইয়া থাকে ॥ ৫১ ॥ তত্মাৎ প্রিয়তমঃ স্বাত্মা সর্কোষাপি দেহিনাং। তদর্ধমেব সকলং জগচ্চৈতচ্চরাচরং॥ ৫২॥ কৃষ্ণমেনমবৈহি ত্বমাত্মানমথিলাত্মনাং। জ্গদ্ধিতায় সোহপ্যত্র দেহীবাভাতি মায়য়া॥ ৫৩॥

# वीधववामी।

ভদর্থনের সকলং প্রিয়মিতার্থ:॥ ৫২॥ প্রেত্তমাহ ক্ষমেনমিতি॥ ৫০॥

#### বৈষ্ণবজোৰণী।

চরং দেহাপত্যাদি অচরং গেহাদি তদাত্মকমেতজ্জগচ্চাপি সকলমপি বংকিঞ্চিদিত্যর্থ:। এতেনাম্বন: স্থবরূপত্মক বেদিতং ॥৫২॥ এবং দেহত্বাতিরিক্তন্য গুলুসাত্মন: স্বতঃ প্রিয়ত্মকুন বিবিদ্যতমাহ ক্রক্মিতি। ক্রবিভূ বাচক: শব্দো নশ্চ নির্কৃতিবাচক:। তয়োবৈক্যং পরং ব্রহ্ম ক্রঞ্চ ইত্যতিধীয়তে ইত্যেতল্লক্ষণত্মন তরামানমেনং শ্রীবশোদানন্দনরূপং অথিলানামাত্মনাং স্থামওলস্থানীয়ন্য তদ্য রশিপর্মাণ্ট্রানীয়ানাং গুলানামপি ক্ষেত্রজ্ঞানাং পর্মস্বরূপত্মন পর্মাত্মানমবেহি তহি কথং লোকে দৃশ্যত্মা ভাতি তত্ত্রাহ জগন্ধিতায়েতি। সোহপি সর্বাজ্ঞাপর্মস্বরূপোহপি পর্মক্ল্যাণগুলত্বেন পর্মকাক্ষণিক্ষাৎ স্বভক্তপ্রেস্ক্রেন জগতোহপি হিতারাত্র জগতি ভাতি করে কল্পে স্বরূপশক্তা প্রকাশতে। নমু। যদি তাদৃশ এব ক্ষণ্ডহি দেহাক্ষবিভাগাদিনা তহিক্দ্রেশ্য ইবাভাতি তত্ত্বাহ

### ক্রমসন্দর্ভ:।

এবমায়ন: चত:প্রিরজেন মুধ্যবরপত্ত বোধিতং॥ ৫২॥

অথ বিবক্ষিতমাহ। ক্লঞ্মিতি এবং শ্রীষশোদানক্ষনরূপং অত্র জগতি জগতোহিতায়াভাতি স্বয়ং প্রকাশতে। দেহীব দেহায়-বিভাগাদিনা ত্রিক্ষধর্ম ইব মায়নৈবাভাতি ন কেবলং সর্কোষাং জীবানামেব প্রমন্তরূপং অপিতু অত্তে সর্কোষাং জড়ানাং॥ ৫৩॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তত্মাদিভিচরং পুত্র কলত্রাদি। অচবং গৃহঘটপটাদি। তেন লোকদৃষ্ট্যা পুত্রাদিভ্যঃ সকাশাদাত্মন এবাভ্যস্তিক প্রীতিবিষয়ত্বং প্রতিপাদিভং॥ ৫২॥

বিবিক্ষিতং সিদ্ধান্তং প্রতিপাদরং শুন্ধুন্তা তস্যাপ্যান্ত্রন আপেক্ষিকপ্রীতিবিষয়ন্ত্রন আতান্তিকপ্রীতিবিষয়ণ কেবলং ক্ষ্পিস্টাবেতাাই ক্ষ্ণমিতি। অধিলামামান্ত্রনাং জীবানামপ্যান্ত্রান্ত প্রমান্ত্রান্ত্রন ক্ষ্ণমেবিই তেন প্রাদির্ প্রীতির্যথা দেহার্ত্রোদেন দেহে চ প্রীতির্যথা আত্মান্তর্রেরেন তথিবান্ত্রনাল্য প্রিতিঃ পরমান্ত্রান্তরেরেন সচ পরমান্ত্রা ক্ষ্ণ এব মুর্ভঃ পূর্ণ এব। যত্ত্বং। বিইত্যাহিদিদ ক্ষণমেকাংশেন হিতো জগদিত্যকঃ ক্ষ্ণমেবাত্যন্ত্রিক প্রীতিবিষয়ন্ত্রিক প্রীতেঃ পরাকাটেতি অপুরেভোছিপি তত্র যথ প্রেমানিকাং তত্বপপাদিতং। কিঞ্চা স্বীনানাং ভক্তাতার্থ মান্ত্রা ক্ষানাবরণাক্ত ভত্তৈক প্রকাশে। তদিংভাল্যনের মান্ত্রকাশ্বানান্ত্রনাং কথমন্ত্রিত প্রাদিনের লোকানাং প্রীতিবিষয়ন্ত্রেরা ল তদ্মিন্ ব্রুবাসিনান্ত্র মান্ত্রীত হাত্তিকপূর্ণহাক যথার্থ এবাহ্নত্ব ইত্যতন্তেরাং স্বপূর্দিভোছিপি তন্ত্রিন বৈ ভৌতিক্রেহনাত্রত্বা ন তন্ত্রিন বর্বা নাম্বিন মান্ত্রির মান্ত্রা মুট্ কাঁব ইব ভৌতিক্রেহবানু প্রতীয়ত ইত্যর্থঃ। যথা। নায়ট্যর যো দেহত্বানির মান্ত্রোপাদিরির প্রতীয়তে নতু স মান্ত্রোপাদিরিকার্যঃ । জত্মব বর্ত্রাভিক্রের বিভাগির ইত্র ভৌতিকরেহ্র স্বীপাদৈরিপ স্থিতিং প্রবেষ্ট্রসাল্যন্ত্রন না নতু প্রমান্ত্রী বিদ্যান্তর ক্ষা ক্রেরা ক্রের্য ক্রের্য ক্রিলিলার ক্রের্য ক্রেরা সোহিপি অন প্রক্রিন্ত্রের ক্রের্ব ক্রের্ন ক্রের্বের ক্রের্য ক্রের্য ক্রের্য ক্রেরা সোহিপি অন প্রক্রিন্ত্রের ক্রের্ব ক্রের্য ক্রেরের ক্রের্য ক্রের্য ক্রের্য ক্রেন্সালাকেন প্রকাশতে ইতি অনুর্ক্তিনিক্রয় তক্র হিন্তরের স্বা গ্রহতেন স্বান্ত্রিক্রের ক্রের্য প্রমান্ত্রন প্রন্তির ক্রিনির্যঃ ক্রেনের ক্রের্য প্রন্তিতির ক্রেরের ক্রের্য প্রন্তির বির্যার ক্রেনের ক্রেন্স প্রন্তির সাল্লের ক্রেন্তর বির্যার ক্রেরের ক্রেন্তর ন প্রন্তির ক্রিলাশ্বর ক্রেন্তর ক্রেন্তর ক্রেন্ত্র ক্রেন্তর ক্রেন্ত্র ক্রেন্তর বির্বার ক্রেন্তর বির্যার ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত ক্রেন্তর ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্রেক্র ক্রেন্স্র ক্রেন্ত্র ক্রিক্র ক্রেন্ত্র ক্রিক্র ক্রিন্ত্র ক্রিক্র ক্রিক্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রিক্

শত এব দেহিগণের আত্মাই প্রিয়তর, আত্মার নিমিতই চরাচর সকল জগৎ প্রিয় হইয়া থাকে ॥৫২ রাজন্ ! তুমি ঐ জীক্তকে অধিল দৈহির আত্মা বলিয়া জান, তিনি ভগতের হিতার্থ মায়া বারা ক্ষানে দেহির ন্যায় প্রকাশ পাইতেছেন ॥ ৫৩ ॥

বস্তুতো জানতামত্র কৃষ্ণং স্থাসনু চরিষ্ণু চ। ভগবক্রপমধিলং ন্যান্যদ্বস্থিহ কিঞ্চন ॥ ৫৪॥

# शिश्तवारी।

ন কেবলনামনামায়া অপিতু জগতামপীত্যাহ বস্তুত ইতি। সর্বজ্ঞগৎকারণমিতি ক্রন্ধং জানতাং পুংসাং স্থাবরং জ্লমঞ্চ সর্বাং ভগবজ্ঞপং ভগবানেব রূপং মস্য তৎ নান্যুৎ ॥ ৫৪ ॥

### देवस्वरायनौ ।

মান্তব্যতি আত্মারামাণাং তৎপ্রিয়ন্তনানাঞ্চায়াধিকনিকপাধিপরমপ্রেমাম্পদসর্ব্বাংশব্দেন তদ্যতিরিক্তবস্তমভেদাভাবাদিতি ভাবং।
নিক্লাঞ্চিরমপ্রেমাম্পদত্তং থবাত্যুত্মানন্দত্বপ্রতি অভএব শ্রীবঞ্জাচার্যাগ্ধতং মহাবারাহ্বচনং দেহদেহিবিভাগোহত নেশ্বরে বিদ্যুতে কচিং। ইতি। তদেবমস্থরাদীনাং মান্নাবরণার তথা ভাতি। নাহং প্রকাশ: সর্ব্বায় যোগমান্নাসমাবৃত ইতি শ্রীভগবদগীতাস্থ চ। তত্ত্র যোগমান্না মূর্যট্রটনাকারি কিমপি মম বৃদ্ধি সেচিবমিতি শ্রীত্বামিচরণাশ্চ। তংপ্রিয়ন্তনানাং ভংগ্রেমভাবিতাক্তংকরণে কীরে দিভোৎপলবদেকজাতীয়ত্বেন প্রেমাম্পদভাস্বভাবোহসৌ সমাধুনীতিঃ অধিক্যাভাতি অন্যক্র যথোচিতমিতি স্থিতে সর্ব্বাতিশন্তিত প্রেমস্বভাবানাং শ্রীব্রক্তবাসিনাং কিমুত্তিভ ভাবং॥ ৫৩॥

ন কেবলং সর্কেবাং ক্ষেত্রজ্ঞানামের প্রমন্বরূপং অপি তু অত্তে সর্কেবাং জড়ানাং আদি। সর্ক্ষেবাং সাক্ষান্তজ্ঞপাণাঞ্চেত বজুং ত্বা ভূমন্বমাহ বস্তুত ইতি। বস্তুতন্তত্ত্বে । ক্ষাং জ্ঞা জপতি জানতাং বিচারর্ভাং তবিচার্জ্ঞানাং ইত্যর্থ: । সৎ স্থাবর্জ্জমর্পনিধান্য দচ্চ ভগবতোরূপং নারায়পাদ্যতিধন্ধিলং তন্তৎ সর্কং ইহ জ্ঞাক্ষে এব তদন্তভূতিকেনৈব স্কুরতীত্যর্থ: নানাং কিঞ্চন যন্ত্র্ নাত্তি ভ্রমান্ত্যের ইত্যর্থ:। কারণাংশিনো বিজ্ঞানে কার্যাংশরো বিজ্ঞানাং তহতিরেকেণ তহাতিরেকাচ্চ। মহাসমুদ্রস্য সাগরতরঙ্গ-কেনাদিবং। স্ব্যান্তরীণমঙ্গাত্রক্স্য বহিন্দ্রভাকিরণপ্রমাণ্গণ মরীচিকাদিবদিতি জ্ঞেরং। তহক্তং হিতীরে। সোহরং তেহতিহিত স্থাত ভগবান বিশ্বভাবন:। সমানেন হরেন নাদ্যান্থাং সহস্চ যদিতি॥ ৫৪॥

#### क्रममर्खः।

আদে । সর্ক্ষোং সাক্ষাক্রপাণাং চেতি বক্তৃং তস্য ভূমন্থনাহ বন্ধত ইতি। বন্ধতঃ তব্তঃ প্রীক্ষণং অত্র জগতি জানতাং জনানাং বিচারস্বতাং তিকিচারক্ষানামিত্যর্থঃ। যং স্থাবরক্ষমত্রপমধিলং বচ্চ ভগবতো রূপং নারায়ণাদ্যভিধমধিলং তভং সর্কং ইহ প্রীকৃষ্ণ এব তদন্তভূ তিন্ধেনৈব ক্ষুব্রতীত্যর্থঃ। নান্যৎ কিঞ্চন। যন্তত্র নাস্তি তর্মান্ত্যেবেত্যর্থঃ। কারণাংশিনোবি জ্ঞানেন কার্য্যংশরোবি জ্ঞানাৎ তত্মাতিরেকে ব্যতিরেকাচ্চ মহাসমূল্য সাগরভরক্ষ কেনাদিবৎ। স্ব্যস্যাক্তরীণ মঞ্চনাম্ক্স্য বহিন্দ্রণ পর্মাণ্গণ মরীচিকাদিবদিতি ক্ষেমং॥ ৫৪॥

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

সম্মানৰ শকাদিরিব প্রাইতি, শক্য ইতি ভাবং। অতএব ভাগবতামৃতধৃতং নারামণাধ্যাত্মকানং। নিত্যাত্যকোহণি ভগবানীকাতে নিজশক্তিতং। তামৃতে প্রমানন্দং কং পশ্যেতামিতং প্রভূং। ইতি তত্রত্যা কারিকা চ। ততঃ স্বয়ং প্রকাশস্বন্ধত্যা স্বেছা প্রকাশস্বন্ধতা নিজশক্তিতং। তাম হিতমন্যদেশীয়ানামস্কৃত্যকানাং স্বক্সাণ্টিদানেনৈৰ স্বমাধ্ব্যপ্রাহণং প্রতিক্লানাং কংসাদ্যস্থরাণান্ত পিত্যুবিতরসনয়া মৎস্যতিকাভোজনমিব প্রাকৃতিব্বেবিক্রিক্তমাধ্ব্যপ্রহণরহিত্যেৰ দর্শনং ধ্যানাবেশ সিদ্ধাৰ্থ আবেশক্ষরক স্বাধার্থাতাশ্যেত্ব নিম্নাক্ত বিভাগে বিভাগে বিভাগে বিভাগে কিছি । বিজ্ঞানিম্পর্কাশস্বাদান্ত্র মহাবারাহ্বচনাদেব প্রতিক্লানামিপ বদ্যপি সন্দেহ্বাভান্তি ভাদপি দেহদেহিবিভাগেছিক নেখবে বিদ্যতে কচিদিতি মধ্বাচার্যায়ত মহাবারাহ্বচনাদেব শাল্পকৈ দেখিতি বক্তুমবোল্যভাদিবশক্ষিব্রোগং ॥ ৫৩ ॥

কিঞাপেক্ষিক প্রেমাম্পদানি যে চাল্পদেহপুদ্রাদ্যা স্তেপি বিচারবতঃ স এবেত্যাপেক্ষিকপ্রেমাম্পদত্মিপ তলৈয়বৈত্যাহ বন্ধত ইতি। বস্তত ভিত্তর্থঃ। কৃষ্ণং আনতাং প্ংসাং মতে স্থাবরজ্ঞসম্প সর্বাং তজ্রগমেব তলৈয়ব সর্বাক্ষাবিতি ভাবঃ n as n

বস্ততঃ বে সকল পুরুষ সর্বজগতের কারণরপে প্রীকৃষ্ণকে জানেন তাঁহাদিগের সমক্ষে স্থাবর জ্বম সম্দার জগৎ ভগবজপে প্রকাশ পার, তাঁহারা নিশ্চর জানেন যে তহাতীত অন্য কোন বস্তুই এই জগমণ্ডলে নাই॥ ৫৪॥ সর্বেষামপি বস্তৃনাং ভাবার্থো ভবতি স্থিতঃ। তস্যাপি ভগবান্ কৃষ্ণঃ কিমতদ্বস্ত রূপ্যতাং ॥৫৫॥ সমাজিতা যে পদপল্লবপ্লবং মহৎপদং পুণ্যযোশ্রারেঃ।

#### खीरवचामी।

কুত ইতি তত্তাহ সর্কেষামিতি। ভাবার্থ: পরমার্থে ভবতি ভবৎপরিণামং প্রাপুবৎ কারণং ভদ্মিন্ তস্যাপি ভবতঃ কারণস্যাপি ভগবান ক্ষো ভবৎকারণং অতঃ কিং অতৎ শ্রীকৃষ্ণব্যতিরিক্তং বন্ধ রূপ্যতাং ॥ ৫৫ ॥

ভন্মাৎ ঐক্বিষ্টাব প্রমায়তাৎ তদেকশ্রণানামযন্ত্রসিদ্ধো মোক্ষ ইতি প্রকরণার্থসুপসংহরতি সমাপ্রিতা ইতি। পুণ্যং যশো যস্য সং পুণ্যধশাঃ সচাসে মুরারিশ্চেতি তস্য। পদপল্লব এব প্রবস্তাং যে সম্যক্ ক্ষাপ্রিতাঃ মহৎপদং মহতাং পদমাপ্রয়ং। যহা। মহচ্চ তৎ

# বৈঞ্চবভোষণী।

বিচারনেবাহ সর্বেষামপি প্রাক্তবাপ্ত কৃতবন্ত্নাং তাৰরূপো যোহর্থং সন্তা স তবন্তি তৎসন্তাপ্রসন্তাবতি উপাদানাদৌ বন্ধনি স্থিতঃ স্যাথ। এবং বন্ধত্পাদানাত্মকং বন্ধ তস্য সর্ব্বসাপি ভগবাংকত্তৎসর্বশক্তিবিশিষ্টঃ প্রীক্ষণ্ণ একস্তাদৃশ ইত্যর্থঃ। অদ্যৈব বৃদ্ধতহস্য কিং নম ন তে ইত্যাদিকস্য প্রক্রেইবাক্ত্ত্ত্ত্ত্তাদিতি তাবঃ। তথাদেতৎসর্বকারণাদিত্বন স্বয়ং ভিরাদপি তথাদন্যৎ কিং বন্ধিতি তরিরূপ্যতামিত্যর্থঃ। তদেবং তস্য সর্ব্বমূলাতাত্ত্বে সিন্ধে তেবাং বালবৎসানাঞ্চ তৎপ্রান্থভাবত্তে স্থিতে স্বতাবত এব ভাদৃশ-প্রেমান্সদন্তং পূর্ব্বক্র্যা প্রীক্রন্তবাসিষ্ তচ্চাধিকং যুক্তমেবেতি জ্ঞাপিতং। ত্ববা। নম্ভ কথং এব্ প্রীবশোদানন্দন এব সর্বান্থোচ্যতে। যদি ভগবজ্ঞপত্ত্বেনাচ্যতে তহি সন্ত্যন্যানি বহুনি তজ্ঞপানীত্যাশ্র্যাহ বন্ধত ইতি। স্থান্ত্রস্থা প্রবিদিচরিক্ত্ তন্ত্রদ্বতারাদি তন্তন্ত্রপাণ ভগবজ্ঞপং ইহ প্রীক্তমে এব ইত্যাদি পূর্ববং। কিঞ্চ। সর্বেষামিতি ভাবানাং পদার্থানাং যধ্যে ভাবঃ প্রেমা তজ্ঞপ এবাথঃ প্রক্রাথঃ স্থিতঃ পর্যাবিত্তা ভবতি। তাংপর্য্যপর্য্যবদানবিষ্ধাে ভবতীত্যর্থঃ। তস্য প্রেমাহিপি ভগবান্ কৃষ্ণ ইতি পূর্ববং। তং তিরোহিত্যক্বিলক্ষণগুণরপ্রস্বাহিপি সর্বতঃ পূর্ণপ্রমানন্দ স্ক্রপং বিনা তস্যাপ্যলক্ষপ্রতিষ্ঠন্ত্রাং তন্ধান্ততেহন্যক্র নিরূপ্যতাং যং প্রেম্যোগ্যং স্যাদিতি তদেবমণি পূর্ববং স্বাভাবিকপ্রেমান্সদম্বদ্ধেৰ স্থাপিতমিতি ॥ ৫৫ ॥

তদেবং প্রেমদম্বভাবাদিপি প্রীক্ষাদ্বাস্থ্রাদিবৎ অষ্যুক্তানামের মোক্ষমাত্রং পরমং ফলং। তত্মাদ্বাদ্যাং তত্তমাধুর্যজ্ঞানেন মোচকতামাত্রং গুণমুপাদায়াপি তৎপদমাশ্রয়তাং প্রীত্রন্ধাদিবৎ প্রমঞ্জ্যো তত্তিত পরম তৎপদ প্রাপ্তিরের পরমং ফলং মোক্ষ ভাবী ভবন্ ভূতোবেতি তদাশ্রয়ামোদেন নামুসন্ধাতুং শক্যঃ স্যাদিতি স্ক্প্রকরণার্থমুপসংহরতি সমাশ্রিতা ইতি পুণাং তদ্ধেতুশ্চাক্

#### ক্রমসন্ধর্ভঃ

বিচারমেবাই সর্বেষামিতি। সর্বেষামিপি প্রাক্ত তাপ্রাকৃত বস্থান ভাবক্রপো বোহর্থ: সন্তা সন্তবন্তি তথ্য প্রান্তবিতি উপাদানাদে বন্তনি ছিত: স্যাৎ এবং যদবং উপাদানাদ্যাত্মকং বন্ত ত্যা সর্বস্যাপি প্রাকৃতাপ্রাকৃতস্য ভগবান্ তন্তং সর্বশক্তিবিশিষ্ট:। এক ক্ষান্ত এক তাদ্শ ইতার্থ:। তদেব তস্য সর্ব্বস্থান্তে সিদিতেরাং বালবংসানাক্ষ তথ্যাত্রভাবে হিতে সভাবত এব তাদ্শ প্রেমান্তব্যভাবিকপ্রেমাত্মপ্র প্রীত্রজবানির অধিকং ক্ষুরন্তীতি যুক্তমেবেতি ভাব:। তদেবং প্রেমন্তবাবাং প্রিকৃত্যান্ত্রাদিবদ্যুক্তানামেব মোক্ষাত্রং প্রক্রার্থ:। অন্যেবাং তু তন্মাধ্যাজ্ঞানেন মোক্কতামাত্রং গুলমুপাদাদ্যাপি তৎপদমাজ্মতাং প্রক্রান্তির প্রক্রার্থ:। মোক্ষ ভাবী তবন্ ভূতো বেতি তদাল্যামোদেন নাহসন্ধাতুং শক্য: স্যাৎ। তদানীস্তন্যান্ত্রগোপবালকবৎ ইতি ॥ ৫৫ ॥ সর্বপ্রকারণার্থস্পসংহর্তি সমাল্রিতা ইতি ॥

# विविधनाथहक्कवर्जी।

কুত ইতি তদাহ সর্কেরামপি স্থাবরজন্মানাং ভাবঃ। ভবস্তাশাদিতি ভাবঃ কারণং প্রধান। তজপেহর্থঃ স্থিতঃ স্থিরো ভবতি তস্যাপি ভাবস্য ভাবঃ কারণং ক্রফ এব অতঃ কিং অতং শ্রীক্রফাব্যতিরিক্তং বৃস্ত রূপ্যতাং। যথা। বজুনাং বৃদ্ধীস্রিয়াণাং ভাবার্থো ব্যল্যোহর্থঃ আয়া স্থিরো ভবতি তস্যাপ্যংশঘাভবাল্যোহংশী শ্রীক্রফাঃ। অতঃ কিং অতং তত্তিরং বন্থ কিং কিমর্থং রূপ্যতাং স এব কেবদং সেবা ইতার্থঃ॥ ৫৫॥

ওলেবং সাধিতং **এক্ক ইস্যব প্রেমাম্পদত্তং ভচ্চরণাশ্ররণৈক হেতুকান্মারাতরণাদেবাল্লভবগোচরীতবতী**তি ভচ্চরণাশ্রবিণামেব

হে রাজন্। যাবতীর বস্তুর পরম অর্থ কারণেতেই অবস্থিত হয়, সেই কারণেরও কারণ ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ, অতএব শ্রীকৃষ্ণ ব্যতিরিক্ত বস্তু কি, নিরূপণ কর ॥ ৫৫॥

হে মহারাজ! ভগবান্মুরারির যশঃ অতিপবিত্র যে সকল ব্যক্তি মহাজনগণের আশ্রয়রূপ পদপল্লবকে আশ্রয় করে তাহাদিগের নিকট ভবসাগর বৎসপদমাত্র হয় এবং তাহারা প্রম্পদ ভবাস্থ্যবি হসপদং পরং পদং পদং পদং यघि भाः न टिकाः॥

এতত্তে সর্ব্বমাখ্যাতং যৎ পৃষ্টোহহমিহ ত্বয়। যৎ কৌমারে হরিকৃতং পৌগণ্ডে পরিকীর্ত্তিং ॥৫৬॥
় এতং প্রছন্তিশ্চরিতং মুরারেরঘার্দনং শাদলজেমনঞ।

ব্যক্তেরং রূপমলোর্কভিষ্টবং শৃণুন্ গৃণয়েতি নরোহথিলার্থান্।

#### গ্রীধরস্বামী

প্ৰথেতি তথা তেষাং ভবাস্থ্যিৰ্বংস্প্ৰমাত্ৰং ভবতি। কিঞ্চ। প্ৰং পদং শ্ৰীবৈক্ঠাখ্যং পদং স্থানং ভবতি বিপদাং যথ পদং আশ্ৰয়ন্তং পুনঃ কদাচিদ্পি তেষাং ন ভবতি ন ততঃ পুনৱাবৰ্ত্তপ্ত ইতাৰ্থঃ॥ ৫৬॥

সুস্কৃত্তিশ্চরিতং মুক্ষস্থেছিংন্যান্যশিক্যাদীনিত্যাদিনোক্তং অধার্দনক শাবলজেমনং ভোজনং ব্যক্তব্যং ব্যক্তাং জড়প্রপঞ্চাৎ ইত্তরৎ শুদ্ধসন্ত্যাত্মকং বংসবংস্পালরূপং। যথা। ব্যক্তেত্রশিচ্ছিলাসন্তং। রূপ্যত ইতি রূপং অক্সন্য উক্সর্যান্ত্রন্

## देवस्थवरकांबनी।

বা যশো বস্য তাদৃশতয়া মহিধবর্ণয়ান গুণো ব ইতার্থ: । যক নরকাস্থরসেনাপতেমুরস্য হস্তা অঘনরকসদৃশানেকমোক্ষণতেত্যর্থ:।
তস্য শ্রীকৃষ্ণস্য পদমেব পল্লব: সৌকুমার্যাদিগুণৈ স্বত: পরমন্থ্যদ ইত্যর্থ:। স এব পরম: তাদৃশস্থ্যদ্যজ্ঞানেন তত্তরণোপায়
মাত্রতয়া জ্ঞাত ইত্যর্থ:। অত্র পল্লবপদেন তেবাং ক্রেমাদিকং পদ্য মহৌষধিপল্লববন্মহাপ্রভাবত্বক স্টিতং। তাদৃশং তং তথা
বেসমাপ্রিতা তেবামপি বস্ত স্থভাবত: স্থোদয়েন ভবাস্থিব প্রপদং ভবতি তর্তব্যস্তীর্ণো বেতাপি ন জ্ঞায়েত ত্স্য ন তংফলমিতার্থ:।
কিন্তু পরং পদং তল্লিত্যধানৈব নিজপ্রেমান্স্যারেণ পদং স্থানং ভবতি বিপদাং যথ পদং জ্বং ততু ন ষতো মহতাং তল্লিত্যপার্বদানাং
পদ্যিতি। ব্দিত্যের প্রপঞ্জতি যদিতি॥ ৫৬॥

শ্রীব্রদাণ স্তং প্রার্থিতং দেৎস্যতি নবেতি সন্দিহানং প্রতি কৈমুড্যেনাহ এতদিতি। ব্যক্তেরং ব্যক্তানিতরং প্রপঞ্চাতীতমিত্যর্থ:। সর্প্রাণ্যবিতং ইদং অবার্দ্যনাদীনাং সর্প্রেষাং শ্রীভগবৎস্বরূপশক্তিবিলাস্থাং। অকারাস্তত্ত্যার্ধং শৃণ্ন্ গৃণন্ তত্তংপ্রবৃত্তিমাত্রেণৈবে-ত্যুর্থ:। তদৈব ক্ষুত্রা ফলোংপত্তেক। নর ইতি চাধিকারানপেক্ষমুক্তং।

#### कारमार्स्टः।

যদিত্যেব প্ৰপঞ্চৰতি যদিতি॥ ৫৬॥

প্রীব্রহ্মণন্তং প্রার্থিতং সেংস্যৃতি নবেতি সন্দিহানং প্রতি কৈমুত্যেনাহ এতদিতি ॥

## ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

সর্ব্বোৎকর্ষমভিব্যঞ্জয়তি সমাপ্রিতা ইতি। পুণাং চারু মনোহরং ধশো যস্য তস্য মুরারেং পদপল্লব এব প্লবস্তং যে সম্যক্ কৈবলোনাপ্রিতাং। কীদৃশং মহতাং পদমাপ্ররং। তেষাং ভবাষ্ধি বহিসপদং তীর্ণতর্ত্তব্যবস্তভানানাম্পদং ভবতি পরং পদং নিতাধাম প্রীকৃদ্দাবন বৈক্ঠাদি তেবাং প্রসাম্পদং বিপদাং বং পদং ছবি বরং তংখলু তেবাং কদাচিদ্পি ন ভবতীতি তেবাং মতিস্ততোহন্যত্র নাসজ্জতে
ইতার্থা ৫৬ ট

স্থান্ত ক্রিড: মুক্টছোহন্যোন্যশিক্যাদীনিত্যাদিনোক্তং। ব্যক্তাং প্রপঞ্চাদিতরং। স্বকারার্ডমার্যং। স্বল্পা উক্সাহান্ স্বভি স্ক্তোভাবেন স্তবন্তঃ॥ है

অর্থাৎ বৈকুণ্ঠ ধাম লাভ করে, বিপদ সমূহের যে পদ (আগ্রয়) তাহা কদাপি তাহাদের হয় না অর্থাৎ বৈকুণ্ঠধাম হইতে তাহাদিগকে পুনরারত হইতে হয় না। রাজন্! আমাকে বাহা জিজ্ঞাসা করিয়া ছিলে অর্থাৎ কৌমারকালে হরিকৃত কর্ম পোগওদমুয়ে কিরপে কথিত হইয়াছিল ? তাই সমুদায় তোমার নিকট কহিলাম ॥ ৫৬॥ .

হে ভারত! স্থলগণ সহ ভগবানের এই চরিত্র, অবাস্থর মর্দন এবং শাদলোপরি ভোজন তথা প্রাপঞ্চ ইতে ভিন্ন অর্থাৎ শুদ্ধসন্তাত্মক ভগবজেপ, আর ত্রন্ধাকর্তৃক কৃত স্থমহান্ স্তব্য, এসকল পাঠ ও এবং বিহারেঃ কৌমারেঃ কৌমারং জহতুর্ত্রত্ত । নিলায়নৈঃ সেতৃবদ্ধৈ মার্কটোৎপ্রবনাদিভিঃ॥৫৭ ॥ ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংদ্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং দশমক্ষকে অক্ষন্তবো নাম চতুর্দশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৪ ॥

প্রীবাদরায়ণিরুবাচ।

ততশ্চ পোগণ্ডবয়ংশ্রিতো ব্রজে বস্থুবস্থুকো পশুপালসমতো।

## ञीधत्रवामी।

স্তৃতিং এতং শুণুন গুণন নর: সর্কপুক্ষাথ নি আপোতি ॥ ৫৭ ॥

ইতি শ্রীপরমানন্দন্সিংহপদষট্পদ:। ব্যাকরোং শ্রীধরত্বামী ষধামতি বিধেঃ স্ততিং ॥

॥ \* ॥ ইতি দশমে চতুর্দশः॥ \*॥

ততঃ পঞ্চলে ধেরপালনং ধেরকার্দনং। কালিয়কেড়তো গোপরকণক নিরুপ্যতে। অহিবক্ত প্রবেশেন র্থা থিরান্ স্থীনতঃ। কৃষ্ণঃ প্রাবেশ্রং প্রুক্ত তালালিকাননং॥ • ॥

পঙ্পালসমতে পশুপালনে সমতে পশুপালানাং বা সমতে ঈব্দয়োবলাতিরেকমন্ত্রতবন্তাবিত্যর্থঃ। অতীব চক্রতুঃ। সর্বতঃ

## বৈক্ষৰতোৰণী।

কোমারশীলামুপসংহর্তি এবমিতি। এবমেতত্বপলকণকৈরিত্যর্থ:। অহতু: সংর্তবত্তী এক ইতি কদাচিদপ্যন্যত্ত কোমারশীলাসম্বন্ধা নাজীতি সর্ব্ধতো একস্যোৎকর্ষং স্চয়তি। নিলায়নং নাম কলিং নিলীয় ছিতোহন্যেন পরিষ্প্য দৃশ্যত ইত্যেবং মর্কটোৎপ্রবন্দ মাদিঃ প্রাণমং বেষাং তৈঃ সেতৃবকৈরিতি জীরখুনাথলীলাপ্নকরণং থবিদং। বছবং পৌনংপুন্যাৎ। এবং চাল্যমান্যন্ত্রমন্ত্রারশাদি তি-যুদ্ধস্ত্রান্যস্করণমণি গম্যং॥ ৫৭॥

## ॥ \* ॥ वे ि श्रीदेवकवर जावनाः मभमित्रनाः ठकुर्भनः ॥ \* ॥

ততঃ পঞ্চমবর্ধ ক্রীড়ানস্করং অর্থে চকারো ভিরোপক্রমাৎ। ব্রক ইতি পূর্ব্ববৎ এবমগ্রেহপি ক্ষেয়ং পশুপালস্মতাবিতি সমস্বতঃ শ্রীবৃন্ধাবনবিহারার্থং সাগ্রন্ধস্য শ্রীভগবতো গোপালনেচছা চিরং জাতান্তি। সাচ বাল্যদৃষ্ট্য শ্রীনন্ধাদীনাং স্নেহভরেণ সম্মতা ন স্যাং।

#### ক্ৰমসন্ত:।

पर्कति। श्रवनमानिर्धिवाः देख व हवः त्रीनः भूनगर ॥ ७०॥

#### ॥ \* ॥ देखि मन्द्रम ऋत्रमगर्छ ठळुर्फनः ॥ \* ॥

### 🕮 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ব্ৰহ্মন্ কালান্তরকুতং তৎকালীনং কথং ভবেদিতি রাজপ্রশ্লোত্তরং সমাণ্য পুনতাং কথাদেবামবদম্মান আহ এবমিতি। জর্তু: সংযুত্তবস্থো। নিলায়নৈঃ নিলীয়ন্তিতিতদ্বেষণাল্যৈ সেতৃবন্ধ লকাপ্রয়াণকীরান্তিমণনাদিভির্বতাবাস্তরচরিতে:॥ ৫৭॥

॥ 🖈 ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হরিণ্যাং ভক্তচেত্তসাং । চতুর্দলোহরং দশমে সঙ্গতঃ সন্ধতঃ সভাং ॥ 🗢 ॥

ধেন্নাং রক্ষণং জ্যেষ্টভাটিং খৈঃ সহ থেলনং। ধেরকস্য বধো রক্ষা বিষাৎ পঞ্চলে গৰাং॥ ততঃ পঞ্চনবর্ধকীড়ান ছবং পশ্নাং পালনে সমতৌ গোপৈঃ সম্বভীভূতৌ। তদিনত পাদ্ধে কার্তিকমাহান্মে দূইং। গুরুইমী কার্তিকে তু স্বতা গোপাইমী বৃধৈং। তদিনা- আবণ করিলে পুরুষের সমস্ত পুরুষার্থ লাভ হয়, হে মহারাজ! রামকৃষ্ণ ত্রেজ থাকিয়া উক্তপ্রকারে নিলায়ন অর্থাৎ শ্রুমারিতভাবে অবস্থিতি ও তদন্বেয়ণাদি, তথা সেতৃবন্ধ,মর্কটগণসহ উল্লেফন প্রোল্ফ-নাদি রিবিধ কৌমার ব্যবহারে কোমারকাল অতিবাহিত করিয়াছিলেন॥ ৫৭ ॥

॥ #॥ है जि नगरम छक्तिंग ॥ #॥

পঞ্চদশ অধ্যায়ে জ্রীক্ষের কর্তৃক ধৈত্ব পালন করিতে ২ থেতুকান্তর মর্দন এবং কালিয়ের বিষ ইতৃত্বে পোপ বালকদিগের রক্ষা, ইহাই বর্গিত হইতেছে॥ ।॥

एक एक व कि इंग्लिन जनन खत ताम कृष्क श्रीगण वर्षा वर्ष वरमत वग्नः कम शांख हरेला जरू मार्थ

গাশ্চারয়ন্তো সথিভিঃ সমং পদৈ র্নাবনং পূণ্যমতীব চক্রতৃঃ॥ ১॥
তন্মাধবোবেণ্যুদীরয়ন্ রতো গোপৈ গৃণিদ্ধিঃ স্বয়শো বলান্বিতঃ।
পশূন্ পুরস্কৃত্য পশব্যমাবিশবিহর্ত্বামঃ কুল্লমাকরং বনং॥ ২॥

## वीधव्यामी।

প্রসর্পণেন ॥ ১ ॥

স্বয়শে: গৃণভির্গোপৈরু ত স্তদ্বনং প্রাবিশং ॥ ২ ॥

## বৈক্ষবভোষণী।

অধুনা চ যথাকালং কিঞ্চিছয়োবলাভিরেকপ্রকটনেন সন্মতাভূদিত্যর্থ:। পশুপালানাং সন্মতৌ ব্যাথ্যা ভূ তয়োঃ পশুপালন-প্রাবীণ্যস্চিকা। পণ্ডিতসন্মত ইতিবৎ পশুনাং পালানাঞ্চ সন্মতৌ সস্কৌ শ্রীভগবতা পালিতানাং মুক্তস্তন্যত্বেন মাতৃসঙ্গে মিলিতানাং অপি তং ত্যক্তমুমনত্ব বংসানাং তন্মাতৃণাঞ্চ ভদমুগত্বেন ব্যাদীনামপি সাহচর্য্যেণ নিক্ষামানানামপি সর্বেষাং তস্যান্তিকে সমাগমাৎ তেন বিনা বনে পশুনামগমনাচ্চ তত্র ভাবিতি যুগলত্বেন নির্দেশাৎ সেহভর্ষদ্যোত্বনা ক্রীড়াসোঁইবার্থা। স্থিভিঃ সম্মিতি ততঃ প্রভৃতি পূর্বের গোপালনারিবৃত্তা ইতি জ্বেয়ং। যে থলু ততঃ প্রবেষ্যাে গোপা ইত্যাদৌ বর্ণিভা ইতি জ্বেয়ং। অয়ং ভাবঃ। পূর্বাং বর্ষান্ধরণে গোচারণে তন্মিন্ পূজ্রপস্য প্রতিনিধেরযােগাত্বাৎ শ্রীক্রক্ষেরেল ব্যমের গোচারণং। ততত্তৎসঙ্গান্তরােধন তৎ সব্যক্ষিরের ব্যস্থিতাের ভিল্লাইবার্ধেন তালারভেণ তৎসঙ্গান্তরাধন তালার্বাহরের ব্যস্থানার ভারিকে ভূলারভেণ তৎসঙ্গান্তরাধন তালানার্বাহরের ব্যস্তাহারণিং। অধুনা ভূ শ্রীক্রক্ষেন ভালারভেণ তৎসঙ্গান্তিং স্বাহ্মিরের তালিতি। এতচ্চ কার্তিকজ্ঞাইম্যাং। তথাচ পালো। কার্ত্তিকমাহাত্ব্যে। গুলাইমী কার্ত্তিকে ভূল্বা গোপাইমী বৃধ্যৈ। তদিনাবাহ্মিক্রের তালিতি। প্রবিত্ত ব্যস্তাহিন্ত শ্রীপাদান্তনিক্র প্রায়াং গ্রাহ্মির তালিক্ষা সর্বতঃ প্রস্তাহিত্ব। ১॥

এবং সামান্যেন ছয়েরিপি গোচারণাদিক মুদ্দিশ্যাধুনা বিশেষতো বিচিত্রমধুরক্রীড়াং বক্ষ্যন্ত্র চ প্রীভগবতঃ প্রাধানাং দিয়াভয়ন্ প্রথমদিনক্রীড়ামন্যবানির্দেশার্থমাহ তদিত্যাদিনা। তৎ প্রীর্দ্ধাবনাথাং কিষা স্প্রসিদ্ধমনির্বাচনীয়ং মাহাত্ম্যং বা। তছক্ প্রয়োগত প্রেমভরেণ স্বরণবিশেষাং। মাধবো লক্ষ্মীকান্ত ইতি বৃদ্ধাবনস্য সর্ব্ধসম্পদ্ভিরণাভিপ্রায়েণ। শ্লেষেণ বসন্ত ইব তছনাসকঃ। উচৈ রীরন্ধ বাদয়ন্। তচ্চ ভদন্তঃপ্রবেশেন স্থান্যেব হর্ষোদ্যাং প্রীর্দ্ধাবনবর্ত্তিনাং নিজপ্রবেশজাপনেন প্রহর্ষেণাংস্ক্র্যান্ত। ব্যা বৃদ্ধিরিতি বিহারারন্তে তেষাং তৎপ্রেমমন্ত্র্যভরোদন্তঃ স্ভিতঃ। আবিশং আবিবেশ প্রীত্যান্তঃ বিবেশ শ্লেষেণ পশুপক্ষিবৃক্ষাদন্ত্রকায়ে স্বক্রায়া সর্ব্বে প্রীক্রন্থাবিষ্টা বভূব্রিত্যর্থঃ। কুমুমানামাকর ইতি স্বভাবত এব সদা সর্ব্বপ্রসমৃত্রঃ। অনেন তথা পশ্রামিতি স্বত্রব পশ্নাং স্থাসিদ্ধা তৎপালনপ্রয়াসাভাবেন চ তথা পোণৈর্বত ইতি বলান্তি ইত্যেভাভ্যাঃ স্বধ্সামন্ত্রী দর্শিতা অভএব বিহর্ত্বকাম ইত্যেবাক্তং॥ ২॥

## ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী।

ৰাস্থদেবো হভূদেগাপঃ পূৰ্বস্ত বংসপ ইতি। পদৈঃ পদচিকৈ ধৰ্ম জাদিভিঃ। পুণ্যং চাক্স অতীবেতি পূৰ্বমূনবিংশতি চিহ্নানাং চন্নণন্নো-পৃত্যাজেথাগামতিক্সজন্ম স্পন্নীভাবাৰ্থ ॥ > ॥

তৰনং পশব্যং পশুভো হিজং আসমস্তাদ্বিশং। মাধ্ব ইজি প্লেবেণ বসন্ত ইব তছল্লাসক:॥২॥

পশুপালন কার্য্যে সম্মত ইইলেন অতএব স্থাদিগের সহিত গাভীচারণ করত ইতন্ততঃ প্রদর্পণ দারা রন্দাবনকে অতিশয় পবিত্র করিতে আরম্ভ করিলেন॥ ১॥

তিনি বলদেবের সহিত অন্বিত হইয়া বিহার কামনায় বেণ্ধনি করিতে করিতে স্থীয় যশোগায়ক গোপগণে পরিরত হইলেন এবং গাভীগণকে অথ্যে করিয়া পশুগণের হিতকর কুসুমাকর বনমধ্যে প্রেশ করিলেন ॥ ২ ॥ তমঞ্ঘোষালিমৃগৰিজাকুলং মহমনঃস্বচ্ছপয়ঃসরস্বতা। বাতেন জুন্টং শতপত্রগন্ধিনা নিরীক্ষা রস্তং ভগবান্ মনো দধে॥ ৩॥ স তত্র তত্রারুণপল্লবশ্রিয়া ফল্পসুনোরুভরেণ পাদয়োঃ।

## **बी**धवचामी।

তখনং নিরীক্য রন্তং মনো দধে। কথন্ত হা মঞ্ঘোবা যে অলিমৃগছিলা: ভ্রমরমৃগপক্ষিণতৈরাকুলং ব্যাপ্তং। মহন্মন: ৰচ্ছপয়:সর-স্বতা মহতাং মনসা তুল্যং স্বচ্ছং পয়ো বন্ধিন্ জ্থ সর আশ্রম্মেনাতি বস্য তেন বাতেনেতি শৈত্যমৃক্তং। শতপত্রগদ্ধিনেতি পরিমল-তেন জুইং বনমিতি মাল্যং স্চিতং॥ ৩॥

## देवकवरजावनी।

অন্যামপি তাং বর্ণয়ন্ শ্রীভগবতো বিহারারস্তমাহ তদিতি। মহাস্তো ভগবস্তস্তাঃ তন্মন:প্রধ্যম্বেনাত্যস্তমন্ত্রং শ্রীভগবিহারে যোগ্যখং চোক্তং কিন্তুত্র সমাসপ্রবিষ্ঠঃ সরম্বছকো বহুবচনাস্ত এব স্তেয়ঃ। তজ্জলকর্ণিকাব্যাক্তেন মহন্মনোর্জয় এবেতৃত্বপ্রেক্ষা চ ধ্বানতা। নিরীক্ষ্য সর্বতঃ প্রসন্মন্ত্রিপ্রসারশেনামুমূল্য মনো দধে প্রীত্যা মনোহভিনিবিষ্ঠং চক্রে। ভগবানপীতি তল্মাহন্দাতিশয়ো দ্যোতিতঃ॥ ৩॥

ত্র ত্র হানে যানে দর্পনৈবৈবেতার্থ:। ব্রী: সম্পৎ। ভরো ভার:। অঙ্কণেতি তৈ ব্যাখ্যাতং। যথা। তেন চ হেতুনা করণেন বা স্প্লভিখান্ এবং স্রৈট্যেন বনানাং পতীন্মহাক্ষামিত্যকং। যদ্যপি বানস্পত্যা ফলৈ: পুসাভিজ্যপুসাথনস্পতিরিত্যমরোক্যা বনস্পতিশব্দেন বৃক্ষসামান্য: নোচাতে তথাপি লিঙ্গস্বায়ায়ায়ভিছ্বেদ বানস্পত্যা অপি গৃহত্তে। অর্মনিতি নর্পন্যাত্তকং কুর্কান্তি। গোপ্য ইবেত্যাদৌ তংপ্রাকট্যাৎ। তত্তিলিভিচাঞ্চল্যক্রীভোপোবলকছেন এবমিত্যাদিনা বক্ষসাণাক্ত। ততিকবান্ত্যেন স্বয়হত্যা সহ স্ক্লিকীড়াপরছেন বাল্যসখ্যাংশপ্রাবল্যাৎ তথৈবাত্রজন্য তদানীং গৌণ্ডমালস্থ্যাহ অগ্রজমিবতি। অপ্রজমিপ অ্যানিবেতি চ তথিবাভিপ্রায়:। দর্শনিষ্যতে চ তত্তাব্দয়ে ক্স্যাপি কদাচিত্ত্ত্তং কচিৎ ক্রীড়াপরিপ্রান্ত ইত্যাদিভ্যাং অতোধ্রাজভাবাংশস্ভাবেন নর্ম্ম চেদং স্ততিরীত্যৈর কৃতং। নবেবঞ্চেৎ শ্রেষ্ঠনাদগ্রাজেনৈব কথং ন তক্ষৈ নর্ম্ম নির্মিতং তত্তাহ আদি গুণাদিনা প্রেষ্ঠন্যানী পুর্যুক্ত

## এ বিশ্বমাপচক্রবর্তী।

তংগঞ্জেরাইলাদকং বনং নিরীক্ষ্য মঞ্ঘোষা অলয়ো মৃগা ছিজা: পক্ষিণশ্চ তৈ ব্যাপ্তমিতি বিবিধেন নৌষর্যোপ শ্রোক্রস্য বাতেন জুইং সেবিতমিতি ব্যঞ্জিতেন মান্দ্যেন মহতাং মনঃপ্রথাং মনঃসদৃশং শীতলমধুরস্বদ্ধং পয়ো যত্র তৎ সর আশ্রম্ভেনাতি যস্য তেনেতি শৈত্যেন চ। ত্রিজিরস্য মাধুর্যোপ রসনায়াঃ শতপত্রগদ্ধিনেতি সৌরভ্যেণ নাসায়াঃ শতপত্রস্য সৌন্ধর্যোপ রসনায়াঃ শতপত্রগদ্ধিনেতি সৌরভ্যেণ নাসায়াঃ শতপত্রস্য সৌন্ধর্যোপ রসনায়াঃ শতপত্রগদ্ধিনেতি সৌরভ্যেণ নাসায়াঃ শতপত্রস্য সৌন্ধর্যাপ নিক্রমাণ্ডালিকঃ ॥ ৩ ॥

জরণপদ্ধবানাং জ্রীঃ শো । তয়া সহ অধাম্থবেন পাদম্পর্শনাং ফ্লানাং প্রস্নানাঞ্চের্ডরেণ পাদয়োঃ ম্পৃশস্তঃ শিথা বেবাং তান্ বনস্পতীন্ বৃক্ষান্ বিলোক্য স্ময়ন ইতি বিবিক্ষতস্য বনস্পতীনামুংকর্ষস্য পর্যাবসানং ব্যোৎকর্ষ এব স্যাং। স্বোৎকর্ষস্য চ স্বয়ম্ক্র্যনোচিত্যাং। মুদেতি আনন্দর্জনিতেন গান্ধীর্যাভাবেনোক্ত্যা বিনা স্থাত্মশক্তেশ্চ বামে স্থাভাবেথেন স্মিতেনানেন স্মাব্যাংকর্ষারে ব্যাজিতঃ। জতএবাগ্রিমঙ্গোকে আদিপ্রথেতি স্বনামাপি তস্য সংস্থাধন করিষ্যতে। ইবেতি মদ্ভিপ্রায়মিমং মনগ্রজান বিশ্বতানিতি স্মিতনিক্রার স্বয়্রত্যথাঃ। তথাহি। শ্রীবৃন্ধাবনতহাসিনাধুর্যোবনচেত্সা। তৎস্কবে হরিশারকে নিজোং-

হে রাজন্! রন্দাবন অতিশয় মনোভাবন, স্থমধুর রবকারি ভ্রমর এবং মুগ ও পক্ষিগণে সর্বাদা পরিব্যাপ্ত, তথায় মহজ্জনগণের মানদের ন্যায় স্থনির্মাল জলে পরিপূর্ণ সর্বোবর থাকাতে তাহা আশ্রয় করিয়া পবন সর্বাদা গমনাগমন করে,আর শতপত্র সকলের গত্তে সেই বায়ুর স্থাক সোগদ্ধা জন্মিয়া থাকে॥ ৩॥

সে যাহা হউক, আদিপুরুষ ভগবান্ ঐ বনে জ্ঞান করিতেই দেখিতে পাইলেন স্থানেই বনস্পতি

স্পৃশচ্ছিখান্ বীক্ষ্য বনস্পতীমুদা স্ময়নিবাহাগ্রজমাদিপ্রুষঃ ॥ ৪ ॥ অহো অমী দেববরামরার্চিতং পাদাস্কুং তে স্থমনংফলার্হণং।
নমস্ত্যপাদায়শিখাভিরাত্মনস্তমোহপহত্যৈ তরুজমু যৎ কুতঃ ॥ ৫॥

## विधतवामी।

অকলপলৰ শ্ৰিষা সহ **স্পস্তঃ** শিপাঃ শাথাগ্ৰাণি যেবাং তান্॥ ৪॥

অংহা দেববর অমী রুক্ষা: তে পাদাপুলং নমস্তি শিথাডি: স্থমন:ফলাহ শমাদার ত্রুজন্ম যেন কডং তস্য তমসং পাপস্য অপহতৈয় নাশায়। অথবা যেন হরা ঈশবেশ সর্বোপকারকং তরুজন্ম কডং তং ছাং নমস্তি এবং দ্লাঘ্যেছপি জন্মনি যদজ্ঞানরূপং তমোহস্তি তদ্যাপহত্যৈ ॥ ৫॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

শ্চেতি এবং কৰিনা তু স্বিনোদং তত্তম্প্ৰস্থীত্তময়ী শ্বতিস্থপি তত্মিশ্লেব প্ৰ্যবসায়িতা এতদ্পি কৰ্ত্তব্যেষু স্বন্ধবিশেষেষু চিত্তোলাসেন প্ৰথমমেকং ক্ৰীড়নমেব ব্ৰুং মনো দুধে ইত্যুক্তছাং। এবং সন্প্ৰচনম্পি ভগৰ্দ্নিশ্ভিছাৎ সৰ্কং ষ্থাবদেব জ্বেষ্ং মূ৪॥

অহো ইতি প্রহর্ষ আশ্চর্য্যে বা। জমী ইমে স্থাবরযোনরোহণি হে দেববর সর্জনেবোত্তম স্থানসং পূল্ঞ ফলফ তল্ল্বার্হণং পূজোপ করণমাথানং লিখাভিরপ্রভাগে প্লেবেশ নিরোভিরপাদার উপাদেরত্বেন গৃহীদ্বা তে তব পাদাদ্ধং নমন্তি নমস্ক্র: শিখাভিরেব তব পাদাদ্ধে সমর্পরিভাগে। কীদৃশং। পাদাদ্ধে সমর্ভরন্তীত্যথা। কীদৃশং পাদাদ্ধং। জমরা ব্রহ্মাদিদেবা মুক্তাশ্চ তৈরপ্যান্ধিতং। নহ কথং স্থাবরাণামীদৃশং জ্ঞানং ত্রাহ্ তম ইতি। যেবাং ঈদৃশো ভাবতেরামজ্ঞানং নান্তি এব প্রভাত তমোহপহতৈত্য প্রভাগে গুলুত ভমোহপহতত্য প্রভাগে শৃণুত্বক তমোনাশার বং বৈং প্রির্দাবনসম্বন্ধি তর্মজন্ম রুভং অস্থান্ধতং। যাবা। তমোহপহতত্য পত্তপক্ষাদিবং তংকসম্বাদ্ধি ক্রায়নান্ধ নান্তি। কে তেথমী বং যৈ ক্রমজন্ম রুভং প্রাপ্তমিত্যর্থং। এবং নিত্য সিদ্ধান্ প্রতি বিবন্ধিতং সাধনসিদ্ধান্ প্রতি ত্ মুখ্যামনং তমোহপহত্য তবাপ্রান্তি হংবনাশার বদিত্যাদি বথা ব্রহ্মণা প্রাথিতিমিতি ভাবং। এবং সর্ক্র প্রচারেণ মৃহং সর্কেরামেণ্ড স্থং কার্যানিতি হৈব্রবিহারেভ্রের। প্রোক্তং ॥ ৫ ॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

স্বানিতি নৰ্ম্বােডিকং কুৰ্বস্থি। গোপ্য ইবেন্ডাানে তৎপ্ৰাকট্যাৎ তত্তদিতি চাপল্যক্রীড়োপোদলকত্বন এবমিন্ডাানিনা বক্ষ্যনাল্বাচ্চ তচ্চ সব্যস্কতয়া সহ সর্বানা ক্রীড়া- পরত্বেনকাম্মোন সধ্যাংশভাবাৎ তত্তৈবাহ অগ্রন্ধনিবৈতি। অতস্তত্তত্তাবেন নর্ম চেদং স্তাহ্নি বিতিত্যব কৃতং এবং সনর্মবিচনন্দি ভাগবতস্বাৎ সর্বাং বথাবদেৰ জেন্তঃ॥ ১ । ২ । ৩ ৪ ॥

অহো ইতি॥ ৫॥

## बीवियनाथठकवर्ती।

কর্ষাবসায়িনং। তমালোচ্য ততো রামমপদিশ্য ব্যধারি স:। অতোহত্র নৈব তাংগর্য্যং রামোংকর্ষান্থবর্গনে। সংগ্রভাবান্তম্ রামে নর্মনেদমুদীরিতং ইতি ভাগবতামূতীয়া সার্দ্ধকারিকা। আদিপুরুষ ইতি তদ্মুজ্বত্বেহপি স্বরং ভগবত্বান্তদাদি:॥৪॥

বীম পুশক্লাদিভি: স্বপ্রভা: প্রক্ষা চরণাবর্চরাম ইতি মনোমূলাণং যুদ্ধাক্ষহং জানামীতি স্ববিজ্ঞত্বং প্রমভকান্ প্রির্নাই বনীমর্কান্ কটাকেণ জ্ঞাপয়য়প্রজমাহ সহাে ইতি। শিথাভি: স্বস্থানেরভিরপারন: তত্তপাদায় পাদামুজ্য নমস্তীতি ভক্তাা শিরােভিত্রির চরণযােত ভদপ্রস্তীত্যথি:। কিম্থা। আজুনস্তমসোহপরাধ্যাাপহতৈ বেনাপরাধেন ক্রডমুৎপাদিতং ত্রুজ্ম। হস্তামাভিরপরাধ্
এব কশ্চিৎ ক্রতঃ বং ক্ষুস্তিধিগমনাস্মর্থ্যস্থাক্য তর্জ্জম বিধাআ ক্রত্মিতি ভেষাম্ম্রাগোখ্য বচনম্বাধ্বোচ্ডগবান্ বস্তুতন্ত্র ব্রস্তানিভিরপি প্রার্থানাবাদ্দ্ববিনীয়তক্জমনাপ্রাধ্কলমিতি জ্ঞেরং॥ ৫॥

সকলের শিথাএভাগ ফলপুষ্পের গুরুতর্জারে অবনত হইয়া অরুণবর্ণ পল্লবের কান্তি সহিত ত্বদীয়চরণ স্পর্শ ক্রিতেছে অতএব বিশ্বয়ান্তিত হ্ইয়া হুর্বে বলদেবকে সম্বোধিয়া বলিলেন॥ ৪॥

হে দেববর ! এই সকল রক্ষ শিখাগ্রভাগ দারা পুল্প ফল উপহার লইয়া ভোষার পাদপদ্মে প্রণাম করিতেছে ইহাদের মানস এই যে, যে পাপে স্থাপনাদের তক্ষত্রম হইয়াছে দেই পাপ শান্তি পাইতে পারে॥ ৫॥

এতেহলিনস্তব যশোহধিললোকভীর্থং গায়ন্ত আদিপুরুষামুপথং ভজন্তে।
প্রায়ো অমী মুনিগণা ভবদীয়নুখ্যা গৃঢ়ং বনেহিপ ন জহত্যনঘাত্মদৈবং॥৬॥
নৃত্যন্তামী শিধিন ঈভ্য মুদা হরিণ্যঃ কুর্বন্তি গোপ্য ইব তে প্রিয়মীক্ষণেন।
সূকৈশ্চ কোকিলগণা গৃহমাগতায় ধন্যা বনৌক্য ইয়ান্ হি সভাং নিদর্গঃ॥৭॥

### श्रीधत्रश्रामी।

হে অন্য বনে গুচ্মণি থাং ন ত্যন্ধন্তি ঘাঁষ্ট্ৰ মন্ত্ৰ্যবেশেন নিপুচ্ছে স্বিত মুন্দ্ৰোহণি অণিবেশেন নিপূচ্য আং ভলঞীত্যৰ্ব: ॥ ৬॥ ইয়ান্ হি সতাং নিদৰ্গ ইতি যদক্তি অম্বিন্ তলগৃহ্মাগতায় মহতে সমৰ্পয়ন্তীতি ॥ ৭ ॥

### বৈষ্ণবতোষণী।

এত ইতি শ্রীনদলুল্যা দশ্যতি। অবিশেষণাথিলনোকানাং তীর্থং সংসারমলপাবনং ছম্বন্ধিয়াব্দ্যাতকগুকরপং বা অর্প্রথং পথি পথি ভল্পন্থেরের রাং। অর্পদ্মিতি পাঠেইপি তথৈব। তচ্চ বুক্তমেবেত্যাই হে আদিপুরুষেতি। সদা স্বতঃ সর্কেষাং রংক্রের্ডরের রাং। অর্পদ্মিত ইব প্রায় ইতি ভবদীয়া ভবতো নানা রূপস্তোপাসকা যে তেম্বপি পূর্ণস্থ সদগ্রজরূপ্য ভবত উপাস্ক্রার্থ্যা বে মুনয়ঃ। পর্যসন ননিন্টিতৈত রূপন্ত জ্লানে তত এবান্যর মৌনশীল্মেন চান্তা ইত্যর্থঃ। তেষাং গণাং অতএব শেষেণ মুনয়োইপি অর্গা বেষাং তে মুনীশ্বরা ইত্যর্থঃ। শ্রীব্রহ্বাপি তুর্ম ভক্ত লাভাং তে বনে শ্রীর্লাবনে গুড়মভরপোণাসকৈরজ্ঞাতমিপি অর্কের ক্রিই ক্রির্ডাবিশেবায় নিলীব স্থিতম্বি ন অহতি তক্র হেত্রাশ্ববৈদ্যতি ভবদীয়ম্থা ইতি চ অন্যোক্ত মিথো হেত্রং। তে অন্যান্ধিন বিদ্যান্ত ভক্তানাং অবং বিদ্যান্ধ হৈ অপরাধার্যাহিন্ পর্যকারণিকেতি যাবং। অন্যান্ধনৈব্যাক্তি বাবং। তাদের মেষামন্ধীইসিরিঃ কার্য্যেতি ভাবঃ। প্রায় ইতি বিতর্কে শ্রীনার্যাদিবদ্যদেশার্যানপ্রমহন্ত ভ্রম্বেষণালগভ্যাদিসামাধে। ৬ ॥

হে ঈভ্য স্ততিষোগ্য ইতি শ্বিষা বিমুখীভবন্তমিবাগ্রন্থমিকরোতি। মুদেত্যন্ত সর্কৈরপা**ন্ধক:। ঈক্ষণেন** প্রিমং প্রীতিং ভাবং তে ডুভ্যং জনমন্তি। ক্ষচার্থানাং প্রীয়মাণ ইতি সম্প্রদানত্বং গোপ্য ইবেতি বীক্ষণক্ত স্কুছ্ত্মা প্রোমা চু শামাৎ দৈর্ঘ্য চাঞ্চল্য

### क्रममन्द्रः।

ভবদীয়া ভবতো নানারপ্ল্যোপাসকা যে তেল্পি পূর্বস্য মদগ্রন্তর্পস্য ভবত উপাসক্ষাৎ মুখ্যা যে মুনম্বত্তেয়াং গণা যনে শ্রীকুলাবনে গুড়মন্যরপোপাসকৈরবজ্ঞাতমিতি ন জহাতি হে অন্য অপ্রাধাগ্রাহিন্॥ ৬॥ ৭॥

## विविधनाथहक्तवर्डी।

ভত্ৰত্যান্ জন্মান্ ভৌতি ৰাভ্যাং। এতে হলিনো ভ্ৰমরাঃ অনুপথং স্বলস্থারভান্ত্যারিহাং। বনে কচিজহস্যলীলার্থং পূচং সহ চরাল্যাম্যনিপি স্বাং ন কহতি ন ত্যক্তি। হে অনম্বৈতি অত গমনেপ্যেষাং স্ববং স্বং ন গৃহ্যাসি। তত্মাণেতে ভবদীয়ম্পা। এব স্নিগণা রহস্যলীলাম্মনশীলা ভ্রমরী ভবস্তি তেন ভো ভ্রমরা মদ্ভিরহস্য কুল্লম্পি প্রবিশ্যাম্মং সৌরভাম্যাসাদ্যত্মাসকুচতেতি তান্ প্রতি প্রসাদো ধ্বনিতঃ॥ ৩॥

তে গৃহমাগতায় ছাং গৃহমাগতং সন্মানরিতৃং স্থকৈঃ প্রিযং কুর্কান্তীতি পূর্কেশ্বৈবাধ্যঃ। ইয়ান্ সভাং নিমর্গ ইতি নৃত্য সহর্ষাব-লোকনপ্রিরবচনৈগৃহাগতস্য সাধো সম্মানননিতি সভাং স্বাভাবিকোধ্য ইত্যর্থঃ॥ ৭ ॥

হে অনধ ! হে আদিপুরুষ ! এই সকল জমর জনীয় অধিল লোকপাঁবন যশ গান করত তোমার পথের অনুগামী হইতেছে। আমার অনুমান হয় ইহারা তোমার সেই সকল মুখ্য মুনি, তুমি ইহাদের অভীষ্টদেব, একারণ বনে গৃড় হইলেও তোমাকে ত্যাগ করিতেছে না অর্থাৎ তুমি মনুষ্যবেশে নিগৃড় হওয়াতে, মুনিরাও মধুকর বেশে তোমার উপাসনা করিতেছেন ॥ ৬ ॥

অপিচ, হে ইড্য (স্তবযোগ্য)! এই দকল ময়ুর তোমারে অবলোকন করিয়া সহর্ষে নৃত্য করিতেছে, আর গোপীগণের আয় এই দমস্ত হরিণী দৃষ্টি দারা এবং এই দকল কোকিল স্থমধুর রব দারা তোমার প্রিয় করিতেছে। প্রভো! সাধুদিগের স্বভাব এই আপনাদের ফাহা কিছু থাকে গৃহাগড় মহাজনকে তাহা দমুদায় দমপ্ করে॥ ৭॥

ধত্যেয়নদ্য ধরণী তৃণবীরুণ স্বৎপাদম্পৃশো জ্বনলতাঃ করজাভিমৃষ্টাঃ।
নদ্যোহদ্রয়ঃ থগমুগাঃ সদয়াবলোকৈ র্গোপ্যোহস্তরেণ ভুজয়োরপি মৎম্পৃহা ত্রীঃ॥৮॥

## द्यिश्वचामी।

তৃণবিরুধশ্চ তব পাদৌ **স্পৃশস্তীতি তথা করজাভিষ্টাং নথৈং স্পৃটাং সদর্বৈরবলোকনৈং শ্রীরপি যদ্মৈ স্পৃহন্ধতি কেবলং তেন** ভূজযোবস্থবেণ বক্ষসা পোপ্যো <mark>যভা ইতি ॥ ৮ ॥</mark>

## देवश्चवरङावनी ।

সংপ্রমায় দিনা তৎশারণাচ্চ অতএব খ্রীরামপ্রেরস্থাইপাক্তা জ্বোঃ। ইবং পৌগগুৰারত্য তাত্ম তক্ত ভাবোদয়: স্চতঃ প্রমতেজস্বি-বেন পৌগগুএব কৈশোরাংশাবির্ভাবাং তাদামপি তাদৃশ্বাং। স্টক্তঃ শ্রোত্রস্থদশলৈঃ তত্তৎকৃতঃ গৃহমাগতায় অভ্যাগতায়েত্যর্থঃ। তচ্চ বাক্ চতুর্থী স্কৃত্তি ভারেন যুক্তমেবেত্যাই ইয়ানিতি॥ ৭॥

এবং তৎকর্ত্কদেবয় তান্ স্বত্ব। প্রীরামকর্ত্কপ্রসাদেনাপি ধরণাদিসহিতানের স্তৌতি ধল্লেডি। ইয়য়াদিতো বর্ত্তমানা বিচি আবতারম্পর্নাভাগ্যবতী বিশেষতঃ শ্রীবরাহশেষপ্রসাদাতিশয়লক্ষমংহায়াপি আল্য ওদবতার এব ধয়া পরনপ্রশংসনীয়াভূং। আতাং তাবলতা ধয়াবং তৎসন্তবানাং মধ্যে লিছিল ইমাঃ প্রীর্শাবনবর্ত্তিয় স্তৃণবীক্ষধঃ তৃণলতাদ্র্কাদ্যা অপি ধয়াঃ যতন্ত্বং পাদস্পৃশঃ এবমুত্তরে চ ধল্লেয়মিতি বচনলিঙ্গবাডায়েনায়্বর্ত্তাং। ওদিতি ছাল্সো উদোল্ক্। অতো ম্থাস্থানমাকর্ষণীয়ং। যথা জমলভাশ্চ কর্টেরঙ্গুলীভিঃ কিশ্লমাদীনাং সৌকুমার্যস্পর্শায় ভূষাণাদ্র্থচ্ছেদ্নায় বা স্পৃষ্টাঃ সন্তঃ। মালত্যোইদিশি বঃ কচিচিল্ডাাদিবং। করজা নথা ইতার্থে তু তৈরভিমর্শো নাম নাগরতা স্ক্তকঃ কিশ্লয়াদৌ লেখো জ্রেয়ঃ। সচ প্রিগোপীনামুদ্দীপনার্থঃ পঞ্চতেমালতা ইত্যাদি বং। তথা এতা নদ্য এতেছদ্রমেছিপি স্বংপাদস্পৃশঃ সন্তঃ ইতি গম্যং যোজ্যং বা। তেমু তক্তৈব প্রাধাস্তাং লদ্য
ভবেন্ত্যাদৌ গৃহত্তি পাদ্যুগলমিতি হস্তায়মন্তিরিত্যাদৌ যন্ত্রামক্ষচরণস্পর্শপ্রমাদ ইতি হক্যমাণাক্ত। অথ গোলীপর্যায়াং স্থাম-

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

গোণ্য ইবেতি নেঅগুণেন তৎশ্বরণাৎ। স্বাথ গোপীপর্যাবাং শ্যামশারিবাং তহি কথঞ্চিদকোলগ্বাং দর্শয়ন্ শ্লেবেণ গোপ্য ইতি নেঅগুণেন তৎশ্বরণাং। রামপ্রিয়াভিঃ কাচিদ্রামস্য ভাবি বিশাস্তচনেয়ং ॥ ৮॥

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

এবং তত্তংকর্ত্কদেবয়া তান্ স্তথা শ্রীয়ামকর্ত্কপ্রসাদেনাপি তানেবায়্টকেরন্যৈন্চ সহিতান্ স্তৌতি। ধন্যেয়ং ধর্ণী অদ্যেতারবারত ফুলকালমালম্যেকিঃ কুতো ধন্যেয়মিতি চেং ধরণীস্থানাং তৃণাদীনামপি অংসম্পর্কাদের ইত্যাহ তৃণানিচ বীরুধন্চ তাস্ত্রং পাদাভাং স্পৃক্ স্পর্নো বাসাং তথাভ্তা বতঃ ক্রমা লতান্ধ করকৈঃ পুস্তোটনার্থং নবৈধরভিম্নীঃ স্পৃষ্ঠা যতঃ নদ্যাদ্য়ন্চ সক্ষপাবলোকৈঃ। বহা। দন্ অয়ঃ শুভাবহো বিধির্যেভ্যন্তথাভূতৈরবলোকৈঃ সহিতা যতঃ। কিঞ্চিংস্থলম্পীতলাং গোপীংগ্যায়াং শারিবাং বল্লীং বক্ষিনি কৌছুকেন প্রিয়মাণাং বিলোক্যাহ গোপাঃ শ্যামবল্লোহপি ভূজরোরস্থরং বক্ষন্তেন সহিতা যতঃ শ্রীঃ শোভাপি যদৈ স্বৃহ্যতি সা। যা বল্লী শোভামপি শোভ্যতীত্যত এব বক্ষদি ছয়া প্রিয়ত ইতি ভাবঃ। প্রেমা। গোপ্যো ব্রজ্জন্মগ্যঃ যৎ স্পৃহা যতম পুরুষ্বি লাবা। ক্রমোর্যাঃ কারিকাঃ। সদা বক্ষংস্থলস্থা বৈকুঠেশিতুরিলিরা। ক্রফোরঃস্পৃহ্রিমাত্র রূপং বির্গ্তেহ্ধিকং। পোনানিকমুপাথাননত্র সংক্ষিপ্য লিথাতে। শ্রীঃ প্রেম্যু ক্রম্কেটাফ তত্র লুকা ততন্তপঃ। কুর্বতীং প্রাহ্ তাং ক্রমঃ কিং তে তপদি কারণং। বিশ্বিহীর্ষে ছয়া গোঠে গোপীরূপেতি সা ব্রবীং। তৎছ্র ভিমিতি প্রোক্তা লক্ষীন্তং পুনরব্রীং। স্বর্গবেথব তেনাথ বস্তমিচামি বক্ষদি। এবমন্বিতি সা তম্য তম্বপা বক্ষদি ছিতেতি॥ ৮॥

সে ধাহা হউক, অদ্য এই রুদ্দাবন ভূমি এবং অত্তন্ত ত্ণলতাগণ ধন্য হইল, যে হেতু তোমার পাদ্দর স্পর্শ করিতেছে। এথানে তোমার নৃথরে স্পৃষ্ট হওয়াতে অত্তত্য এই সকল বুক্ষলতাকেও ধন্য বলিয়া প্রশংসা করি। অপর এথানকার নদ নদী পর্বতি তথা মৃগও পক্ষিগণও ধন্য, যে হেতু ফ্দীয় সদয় অবলোকন প্রাপ্ত হইতেছে। আর এই গোপীগণ ধন্য, কারণ লক্ষীও এক সময়ে যাঁহার নিমিত স্পৃহান্বিত হন,ইহারা তোমার সেই ভুজদ্বরের মধ্যভাগ (বক্ষঃহল)অনায়াসে লাভ করিতেছে ॥৮

এবং বৃন্দাবনং শ্রীমৎ প্রীতঃ প্রীতমনাঃ পশূন্। বেমে সঞ্চারয়ন্ধদ্রেঃ সরিদ্রোধঃস্থ সামুগঃ॥ ৯ কচিন্গায়তি গায়ৎস্থ মদান্ধালিম্মুত্রতৈঃ। উপগীয়মানচরিতঃ পথি সঙ্কর্যান্বিতঃ। অমুজন্পতি জন্নতঃ কলবাক্যৈঃ শুকং কচিৎ। কচিৎ সবস্তু কুজন্তমনুকৃজতি কোকিলং॥ ১০॥

#### **শ্রিধরস্বা**মী

এবং শ্রীমদ্দাবনং প্রতি প্রীতঃ দন্ অদেঃ সমীপবর্তিদরিতটের পশুন্ সঞ্চারয়ন্ সাছগঃ প্রীক্ষনা রেমে ॥ ৯॥ তামের রতিমাহ দশভিঃ কচিদিত্যাদিভিঃ॥ > ০॥

#### देवकक्टकावनी।

শারিবাং তহি কথঞ্জিবকো লগাং দর্শন্ত প্রেবেণাহ গোপ্য ইতি। মংপিতৃব্যাদবতীর্ণন্ত পুনম্পপিতৃ ধর্মতাং প্রাপ্ত গোপকভা পরিণ্যনমেব ভবিষ্যতীতি স্চন্নস্ত ইতি ভাব:। তদেবং ভাবী যত্ত প্রেমান্তং প্রাপ্ত প্রাপ্ত কাভিন্চিদেগালীভিঃ সহ বিহাবহুত স্চনা কতা যংস্ত্তে শ্রীবৈকুঠনাথবকঃ স্থিতা লক্ষীরপি যংস্থা ন কেবলং স্থামাত্রং কিন্ত বক্ষাতে চাল্লনাগপত্নীভিঃ। ব্যাপ্ত শ্রীক্র লিনাচর ব্রপ ইতি। এবনভাত গোকুলে তদপ্রাপ্তিঃ শ্রীগোপীনামিব তদনভাদ্বাবাৎ তাস্ত তদধিকারিণীদ্বস্গত্বাচেতি ভাবঃ। অত্র সর্প্রেয়ং স্বেশ্বিয় ব্যাপ্ত তত্ত প্রসাদভ পরাকাঠা প্রাপ্তানিশেষাক্তিরিতি ক্রেয়ং ॥৮॥

জবং সনন্দ্রপন্দিপ্রকারেণ শ্রীকুলাবনং ব্যাপ্য প্রীতঃ সন্ কালাপ্রভাবদেশানামিত্যাদিনা কর্মসং। অক্রে: শ্রীগোর্জনভ্ প্রীতম্প্রত্যাঃ সামাত্রিশেষাভ্যাং ভেদঃ॥ ১॥

প্রতিমনদোরতিং দর্শরন্ বর্তমানপ্রয়োগেশ সাধারণদিনগতামেবাই ক্চিদিত্যাদিনা। পূর্বং কেচিছেণূন্ বাদমন্ত ইত্যাদিন্। বালকানামেব প্রাধান্তেন তত্তকৌড়োকা ইদানীয় প্রতিমনন্ত্বন সাক্ষাং প্রীকৃষ্ণতৈবেতি বিশেষঃ ক্ষাণিং পণি। প্রথাতি পাঠে ক্মিংশ্চিং প্রদেশে কদাচিদিতি বা এবমগ্রেংপি। মদেন প্রীকৃষ্ণাবনপুশারস্পানক্ষেন প্রীভগবৎসান্নিধ্য সৌভাগ্যক্ষেন বা অন্দের্ মহামত্তেমু তাদ্শেষ্ণীতি গানমাধুর্গ্যভিপ্রেতং সহর্ষণশক্ষঃ প্রীভগবতা সহ তত্তাপৃথক্তরা গানাভিপ্রায়েন। অন্তর্ত তথেক প্রীতিপরৈ র্গোপেঃ। অত্ত ভ্রমরাণাং স্বজাতীয়ত স্বর্মাত্রত গানং প্রীভাগবতত্ত্বদুস্নারিস্বর্দ্য তত্তিতরাগ্র চ। অন্তর্তানাম্ভ তয়ো গাঁতবন্ধত চেতি মিথোন্মিলনং জ্ঞাং॥

কলবাকৈ রিতি শুকাদপ্যন্তমজল্পনং বোধয়তি এবং বল্থিতিচ। ১ ।।

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

এবং সনশ্বর্ণনাদিপ্রকারেণ বুন্দাবনং ব্যাপ্য প্রীত: সন্॥ ১॥ ১०॥

### ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

এবমিতি স্পঠং। যহা। ইথমএজং পরিতোষ্য গোপ্যাহন্তরেণ ভূজয়োরিতি নিজোক্তাবোদীপ্তকলপ্তৎসক্ষ এব গাং দথিংশ্চ নিযুজ্য ভোং শ্রীমদার্য্য কণ্যত্মত্র স্থবলেন সার্দ্ধং গোবদ্ধনকলরারোধনি বিশ্রম্যাগন্তান্মি স্বন্ধ্য কণ্যত্মত্র স্থবলেন সার্দ্ধং গোবদ্ধনকলরারোধনি বিশ্রম্যাগন্তান্মি স্বন্ধ্য কালিন্দীরোধংস্থ তাবদ্ধরেন তাজুণ তাতা বিষ্ক্র পোণ্ডেছিনি কৈশোরাবির্জাবাজ্যহান ব্রহ্মবালিভিঃ সার্দ্ধং রেমে ইত্যাহ্য এবমগ্রন্ধন্ত্যা তদাবৈর পশ্ন বৃদ্ধাবনং সঞ্চার্য্য সর্ভাব আতি মানসগলারা রোধংস্থ রেমে ইত্যাব্যঃ। শ্রীমতী ব্রহ্মবাবিদ্ধ্যাব্যের প্রীতা প্রেমবতী যন্মিন নঃ। কুলাল-কর্তা হিতিবং প্রীতেত্যা বিশেষ্ট্রেকর্যা পরনিপাভঃ। অতএব প্রীত্যনাঃ স্বাহালিভঃ স্থীভিঃ সহিতঃ ব্যাধ্যান্যান্য রহস্যভাবেতস্যাব্রকং রন্ধ্র্য কনক্ষলপূট্মিব ব্যাধ্যান্তর্মব্তারিকাং বিনৈবান্তি। তদ্বণা শ্রীমন্ত্রো ব্লদেবাদ্যাঃ প্রীতা যন্মিন্ সঃ। সাহাগঃ সন্ধ্রিঃ সহিতঃ। জন্যং সমন্ধাং॥ ৯॥ ১ ॥ ॥ ১ ॥

হে রাজন্ ! শ্রীকৃষ্ণ এবম্প্রকারে শ্রীসমন্বিত বৃন্দাবনের প্রতি প্রতিষনা হইয়া পর্বাত সঙ্গীপবর্তি নদীতটে পশুচারণ করিতে করিতে অমুচরগণের সহিত সহর্ষ মনে ক্রীড়ারম্ভ করিলেন ॥৯॥

কোথাও অলিকুল মদমত হইয়া গুণ গুণ শব্দে গান.করিলে পথমধ্যে বলদেবের সহিত অন্বিত হইয়া যথন আপনি তদ্ধপ গান করেন, সেই সময় অমুচরগণ তাঁহার চরিত কীর্ত্তন করেন কোথাও শুকপদ্ধিকে মধুরাক্ষুট বাক্যে জল্পন করিতে দেখিয়া তাহার সঙ্গে স্বায়ং জল্পন করেন। কোথাও কোকিলদিগকে মনোহরস্বরে রব করিতে দেখিয়া আপনি তদসুরূপ ধ্বনি করিতে থাকেন। ১০ ম

কচিচ্চ কলহংসানামনুক্জতি কৃজিতং। অভিনৃত্যতি নৃত্যন্তং বর্হিণং হাসয়ন্ কচিৎ।
নেষগঞ্জীরয়া বাচা নামভি দ্রগান্ পশুন্। কচিদাহ্বয়তি শ্রীত্যা গোগোপালমনোজ্যা ॥১১॥
চকোরক্রোঞ্চক্রাহ্বভারদ্বাজাথ্যবহিণঃ। অনুরৌতি সান্দ্রানাং ভীতবদ্যাত্রসিংহয়োঃ॥ ১২॥
কচিৎ ক্রীড়াপরিশ্রান্তং গোপোৎসঙ্গোপবর্ষণং। স্বয়ং বিশ্রাময়ত্যার্যাং পাদসম্বাহনাদিভিঃ॥১৩

### ত্রীধরস্বামী।

বহিণং নৃত্যন্তমন্ত্ অভিনৃত্যতি বহিণ্মভিমুখো নৃত্যতীতি বা স্থীন্ হাসয়ন্॥ ১১॥

চকোরাদীনমুক্ত্য নৌতীত্যর্থ:। কদাচিচ্চ সন্থানাং মধ্যে ব্যাঘসিংহয়োস্তাত্যাং ভীতবদ্ধবতি সদ্বেদ্ পলায়মানের পলায়তে ইতার্থ:। তয়ো: মস্থানাং বলোদ্রেকাণাং ভীতবদ্ধবতীতি বা॥ >২॥

আর্যামগ্রন্ধং বিভানম্বতি বিগতশ্রমং করোতি॥ ১৩॥

### रेवक्षवरखावनी ।

চশকে। বল্ যিতি সম্চিনোতি অর্থস্থবৈ বহিশং অভিলক্ষীকৃত্য নৃত্যতি তদভিমুখঃ সন্ নৃত্যতীত্যর্থ তেষাং ব্যাধ্যানে উত্তর-আগ্যনুরাকর্ষণীয়ঃ। তজ্জাতিন্তোনৈৰ তরিজ্যাং সধীন্ হাসয়ন্॥

পশ্নিতি শ্লেষেণ শ্রীকৃষ্ণপার্য তো দ্রগরালিব্দিজমুকং। মেন পূর্ববিদাত্মপশ্চাৎ এব তৎকুরণাৎ দ্রগুরজানমপি ন জাত-মিতি ভাব:। মেবেতি জন্পার্জিতং লক্ষ্যতে তহলান্তীরয়েতি মহাপুরুষ স্বভাবত এব॥ ১১॥

শ্বিচিদিতাত্বৰ্ত্তত এব চকোরশ্চন্সিকাপানী ক্রেঞ্চিকাটকন্মভন্ধী চক্রাহ্বশ্চক্রবাকঃ ভরবান্ধ এব ভারঘান্ধঃ বার্থেংশ ব্যাঘ্যাটাখ্যঃ প্রনী চকোরাদীনাং কঞ্চিৎ কচিদ্বন্ধতা রৌতি সর্বানের বৃগপদযুক্ততা রৌতি সর্বাশিক্রমবাৎ ইতৈতার্যতাং তত্রাপি পূর্ববেষাধাং। ভীতবং ইতি ক্রীড়াকৌতুকেন বতি প্রত্তান্ত হরোহিংশ্রঘাভাবেনাপি বস্ততন্তভালাং ভরাভাবাৎ অত্র তেবামুভরপক্ষে ব্যাঘ্যাদি বলাতিশ্বানাং স্থকে ভীতা যত ইত্যর্থঃ। হলা। স্বানাং মধ্যে যো ব্যাদ্ধ সিংহলোঃ স্থকে ভীতত্ত্বচলত্ত্রোতি তেবামীষ্ত্রদর্শনকৌতুকার্থমিতি ভাবঃ ॥ ১২ ॥

আদি শহাং বিজনাদীনি॥ ১৩॥

## ক্রমসন্দর্ভ:।

এবং প্রথনগোচারণাদিপ্রসঙ্গে সাধারণ দিনগতাং লীলামাহ। কচিদিত্যাদিনা বহি নমভিলক্ষীকতা নৃত্যতি পশ্নাং দ্রগাত্ম পশ্চাদেব প্রীক্ষপ্রমন ক্রেঃ। সন্থানাং মধ্যে যো ব্যাহ্রসিংহয়ে। জীতঃ তদ্ফান্নরৌতি স্ম তেষামীবন্তমদর্শনকৌত্কার্থমিতি ভাবঃ॥ ১১। ১২॥ ১০॥

#### श्चीवधनायहळ्वर्शे।

বহি শিং অভিলক্ষীকৃত্য নৃত্যতি স্থীন্ হাসয়ন্ বহি শ্মেব রসোলাসয়ন্ ॥ ১১ ॥

কিন্তু সন্থানাং প্রাণিনাং মধ্যে ব্যাছ্রসিংহয়ো: শব্দেন ভীতবদ্ধবিত স্থিব প্রায়মানের স্বন্ধনিপ প্রায়তে । বস্তুতস্ত - স্বস্যু স্বাভাবিক শৌধ্যেণ ভ্যাভাবো বৃত্তিপ্রত্যুব্যোক্তঃ ॥ ১২ ॥ উপবর্ষ শীর্ষোপধানং ॥ ১৩ ॥

কোথাও কলহংসগণের নিনাদ শুনিয়া স্বয়ং তদমুরূপ গান করিয়া উঠিতেছে। কোথাও কোন ২ সহচর বয়স্যদিগকে হাস্যান্থিত করাইয়া নৃত্যকারি ময়্রের অভিমুখে আপনি নৃত্য করিরতেছে। কোথাও বা গো এবং গোপালদিগের মনোহর মেঘগম্ভীর স্বরে দূরগামি পশুগণকে সম্মেহে আহ্বান করিয়া প্রত্যানয়ন করেন॥ ১১॥

কোন সময়ে চকোর, বক, চক্রবাক, ভারদ্বাজ (গোলা ভারুই পক্ষি) তথা ময়ুরদিগের অনুকরণ করত তদসুরূপ ধানি করেন। কোন সময়ে হিংত্র প্রাণিগণ মধ্যে ব্যান্ত্র ও সিংহ হইতে ভরাতুরের ন্যায় হন্ অর্থাৎ তাহাদিগকে দেখিয়া জন্তুগণ পলায়ন করিলে আপনিও পলায়নপরায়ণ হয়েন॥ ১২॥

. কোনস্থানে অগ্রজ (বলদেব) জীড়ায় পরিশ্রান্ত হইলে গোপবালকের জোড় উপধান করত শয়ন

করাইয়া নিজেই পাদস্বাহনাদি ছারা তাঁহাকে বিশ্রাম করান ॥ ১৩ ॥

নৃত্যতো গায়তঃ কাপি বলতো যুধ্যতো মিথঃ। গৃহীতহস্তো গোপালান্ হসন্তো প্রশশংসতুঃ। কচিং পল্লবতলেধু নিযুদ্ধশ্রমকশিতঃ। বৃক্ষমূলাপ্রিতঃ শেতে গোপোৎসঙ্গোপবহ গঃ॥ ১৪॥ পাদসন্বাহনং চক্রুঃ কেচিত্রস্য মহাত্মনঃ। অপরে হতপাপানা ব্যজনৈঃ সমবীজয়ন্।

## औधतवागी।

নিথো নৃত্যাদীন্ কুর্বতো গোপালান্ প্রশশংসভু: ॥ ১৪॥

### देवकाबरकाशनी।

ন্ত্যত ইতি কালি প্রশশংসতুঃ। বল্পতঃ উৎপ্লুত্যাৎপ্লুত্য গতিবিশেষং কুর্বতঃ। মিথোহস্যোস্থাসাসক্যেত্যর্থঃ। অন্যতিঃ। যদা। তৌ কালি নৃত্যতঃ কালি গায়ত ইত্যেবং কালীতি সইব্রিপি বোজাঃ। কিঞা। কালি মিথোগৃহীতহন্তৌ কালি হসন্তৌ ভবতঃ। যদা। পদ্দ্রমিদং বিশেষণদ্বেন সর্ববৈত্র যোজাঃ। কালি গোপালান্ হসন্তৌ অহো ইমে গানেন সন্ধর্বগণতিরন্ধারিলো নৃত্যেন বিদ্যাধরগণবিত্ত্বকা যুক্তেন ত্রিলোকীজিত্বরা ইত্যাদি পরিহাসং কুর্বত্তে। প্রশংসতুরের তত্ত্তে। মাহাত্মাবিশেষখ্যাপনাং। উপসংহ্রিষ্যান্ বিশামক্রীছাং বদন্ গোপানাং সৌভাগ্যতরং বর্গমতি কচিদিতি ত্রিভিঃ। পলবেত্যুপলক্ষণং কোমলনবদলকোরকপূলাণাং তল্পেমু বৃত্ত্বং পূথক্ পৃথক্ পঞ্চবৈমিলিতা নির্মিতত্বেন বাহল্যাং। ততশুচ বহুতরেম্বলি তেমু তেখাং প্রীত্যৈ তত্তদলক্ষিত স্তত্তং প্রেমোদ্যোধিতেন নির্মাক্তবিশেষণা বহুরূপত্তির শেত ইতি বিজ্ঞাপয়তি। এবং ঈশচেষ্টিত ইতি বক্ষ্যমাণ্টমেখ্য্যমত্রালি সঙ্গতং স্যাৎ। নিযুদ্ধং তৈরের সহ বাহ্যমুদ্ধং তেন শ্রমঃ শ্রীগণ্ডাদিবিষয়কমৌক্তিকস্থন্দরপ্রশেষণিকরঃ। তেন কর্শিতো হুর্বল ইব। অনেন স্থীনামিলি তাদৃশং বলবন্বং স্থাচিতং৷ তথাচাগ্রেম। গোলৈং সমানগুণশীলব্র্যোবিলালৈরিতি। তদেবমলি তেষাং স্থামহন্ত্রনাব্রানে বলবন্বং স্থাচিতং৷ তথাচাগ্রেম। গোলৈং সমানগুণশীলব্র্যোবিলালক্ত্রের তেষাং উদ্যামং স্তন্ত্র্যতীতি। গোলেতি তে কিঞ্জিং জ্যেষ্ঠা জ্যোঃ। ত্রোপ্রহণ্নরচনং তংস্থেলাভারের তেন তং কুতং। কিশ্বা রচিত্ন্যালি তেনৈর তদর্থং ত্যাগো জ্যেয়। ১১ ॥

কেচিদিতি বছৰং ক্রমেণ পরির্ত্তা শ্রীমংপাদাজ্যোর্মন্তভিঃ সংবাহনাৎ কিয়া বছলশ্যাস্থ প্রত্যেক্তিচতুরতয়া তত্র প্রস্তের রতিপ্রায়েণ। মহাত্মন ইতি ছালদং। নহাত্মানঃ পরমভাগ্যবস্ত ইত্যর্থঃ। যহা। তত্ত মহাগুণণাদ্যগ্রন্ধসা। তত্ত্বাদৃশ তংক্ষরায়ন্ধনং পাপা। বৈঃ ইত্যাত্মানমধিক্ষিপতি। তেবাং নিত্যতাদৃশত্তেহিপি অয়মাত্মাপহতপাপাে্তিবং তং প্রয়োগঃ। এবমিনং পদং প্রেণি পুপরেণাি বাজাঃ। সমাক্ মলমধুরচালনাদিম্ভয়াহবীলয়ন্। তত্তাবসরস্য যোগ্যানি তস্য শ্রীভগবতাহিপি সদুশানি বা গীতাদীনিতি শেষঃ। বিশেষমপ্যাহ মনোজ্ঞানি চিত্তাকর্যকাণি বিচিত্রাভ্তর্যতালাদিম্যভাং। শ্রীনিতি বিশ্বাম স্বর্গ বিশেষমপ্যাহ সনোজ্ঞানি স্থাবিত্র ব্যাস্থাহিত বালাম্যাল্য সন্ধান্তে

#### क्रयमक्र र्छः।

ভরেধিতি বছ য়ং তত্র ভত্তানেকেন প্রকারেণেতি দ্যোতকং মহাস্থানঃ মহাস্থানঃ প্রমভাগ্যবস্থা। জ্পাং স্থাপাং ভবজীভূপেদ পাধুনেন ৭১৪ তদ্য মহা ওপগণদ্যেতি হতঃ আদৃশ তৎ দেবা ভরায়ক্ষপঃ পাপুন যৈ বিভ্যাস্থানমধিক্ষিপতি ভেষাং নিভ্যভাদৃশ বেইপায়মাস্থাপ্থত-পাপ্যেতিবভংগ্রয়োগঃ ॥

### ब्यैविश्वनाशहक्तवर्डी।

ংসভৌ রক্তবামৌ নৃত্যাদীন কুর্বতো গোপালান্ প্রশশংসভুঃ॥ ১৪॥

কোথাও স্থাপনারা ছই জাতায় পরস্পার হস্ত ধরিয়া হাসিতে ২ নৃত্য, গীত, উল্লক্ষন ও প্রোলক্ষনাদি করিয়া মল্লযোদ্ধা পোপালদিপের প্রশংসা করেন। কোনস্থানে নিযুদ্ধ স্থাৎ বাহুমুদ্ধে পরিশ্রম বশতঃ ছুর্বিলের স্থায় হইয়া রক্ষমূলে পল্লবশয্যায় গোপবালকের জোড়ে মন্তক দিয়া শ্রম করেন॥১৪॥

অন্যে তদমূরপাণি মনোজ্ঞানি মহাত্মনঃ। গায়ন্তি স্ম মহারাজ স্নেহরিমধিয়ঃ শনৈঃ॥ ১৫॥ এবং নিগৃঢ়াত্মগতিঃ স্বমায়য়া গোপাত্মজত্বং চরিতৈর্বিড়ম্বরন্। রেমে রমালালিতপাদপল্লবো এাম্যৈঃ সমং আম্যবদীশচেষ্টিতঃ॥ ১৬॥ জ্রীদামা নাম গোপালো রামকেশবয়োঃ স্থা। স্বলন্তোককৃষ্ণাদ্যা গোপাঃ প্রেক্ষেদমক্রবন্॥১৭॥

## श्रीधतपामी।

राक्रेनः अञ्चलां निर्मिटेणः ॥ ५०॥

ঈশচেষ্টিত ইতি নিগৃঢ়স্বভাবত্বেংপি অন্তরা অন্তরা ঈশসোব চেষ্টিতানি দৃশ্যক্তে যদ্দিন্ সঃ॥১৬॥

স্বৈশচেষ্টিভন্তমেৰ দৰ্শন্তিভূমাহ শ্ৰীদামেতি। স্কোকস্কুষ্ণ: কল্ডিং ॥ ১৭॥

## देवक बरकावनी।

निर्द्भभार পূর্বব্যাকে বাক্যম্বয়েনাপি সম্বন্ধো দ্রপ্তবাঃ n ১৫ n

অত্বামপ্যন্যাং গোপনীলাম্দিশন্ তাদৃশনীলারাশ্চ তদতিপ্রিয়ন্ধং প্রতিপাদয়রুপনংহরতি এবমিতি। হাবির্ভাবান্তবে রমালালিতপাদপমবোহিপি এবং বুলাবনবিহারপ্রকারেণ রেমে রতিং প্রাপ। তদেবমত্র স্থথে তাদৃশম্প্যাপ্যনাদর: হচিত:। কিং কুর্মন্ চরিতৈর্নলাম্বার উৎপর ইত্যাদিরপৈরলোকিকৈ লোকিকং গোপাস্কারণ বিভ্ননন্ধ হীনোপমারপং কুর্মন্ অলোকিকং গোপাস্কারণ আত্মনি দর্শয়িরত্যর্থ:। নমু শ্রীভগবতঃ কথমাত্মজাং তত্রাহ সে যে শ্রীনন্দশাদাদয়ঃ পিত্রাদিরপাত্রেয়াং মায়য় কপয়া বাংসল্যবশতয়েত্যর্থ:। অতএব নিতরাং গুলা সর্বেষাং অপ্যাম্যা আত্মগতি মহাপ্রমান্তমান্তমানুদ্দীবিশেষো যয়য় অতএব কৈশ্চিদ্ প্রাম্যার্ক্রভিঃ সমং কশ্চিন্থায়ো বন্ধরিবেতি। আত্মজন্ববৎ সংখ্যহপি:তাদৃশোপমন্থমিতি ভাব:। নমু তহি সর্বিত্রোচামানং শ্রীভগবত্রপ্রপ্রকান কর্বার্ত্রপ্রশাদক্ষিতি ভাব:। নমু তহি শিক্তার্ন্তাপ্রকান কর্বার্ত্রপ্রপ্রকান কর্বার্ত্রপ্রপ্রকান কর্বার্ত্রপ্রপ্রকান কর্বার্ত্রপ্রপ্রকান কর্বার্ত্রপ্রপ্রকান কর্বার্ত্রপ্রপ্রকান কর্বার্ত্রপ্রপ্রকান কর্বার্ত্রপ্রশাদক্ষতীত্রপ্রশাদ সভাত্রির্বার্ত্রপ্রকান কর্বার্ত্রপ্রশাদক্ষতীত্রপ্রশাদ্যান্ত্রীত্রপ্রশাদক্ষিত্রপ্রকান সভাত্রির্বান্তম্বান্তম্বান্তমান কর্বার্ত্রপ্রশাদক্ষিত্রিত্রপ্রশাদক্ষিত্রিত তাল্নী সভী

এবং প্রথমদিনক্রীড়য়ছন্যদিনক্রীড়ামুপলক্ষ্যাধুনা কদাচিত্রিজ্ঞপ্রিয়জনপ্রীত্যৈ গোপালনে কিঞ্চিবৈশ্বর্যমপি সাক্ষাং প্রক-টিতমিতি প্রসন্ধাদাহ শ্রীদানেত্যাদিনা। তত্ত শ্রীরাম্য্য সংখতি নির্দেশস্তন্দুদ্ধে তবৈয়ব প্রাধান্যাং। স্কুবলাদ্যান্ট স্থায়:।

#### ক্ৰমসন্ত:

তদহরপাণি তদবসরাহাণি॥ ১৫॥

এবং গোচারণগীলাসামান্যপ্রসঙ্গে কাদাচিৎকমণ্যাহ শ্রীদামেতি। স্তোকক্লফ ইড্যের নাম নতু স্তোক্তে বিশেষণং ভদুগ্রে ভন্নাম-

## ঐবিখনাপচক্রবর্তী।

তদক্রপানি যশাংগীতি শেষ:॥ ১৫॥

খ্যোগমায়রা আর্তাবৈশ্বর্যাঃ স্বরং গোপাশ্বশ্রেছিপি চরিতৈ গোপাশ্বশ্বং ভূপালপ্তাইং বিভ্নরন্ তিরকুর্বন্ সোহপোরং লীলাং কর্ত্ব্ন জানাভীতি ভাবঃ। গোপো গোপালকে গোঠাখাকে পৃথ্বীপতাবলীতি মেদিনী। ঐপর্যাদ্ট্যা রমালালিতপাদপলবোহপি তদাবরণাং কৈন্চিল্যাবৈদ্ভিঃ সহ কল্ডিল্যাবেশ্বনিব রেমে ন কেবলমাবৃত্যের তদিশ্ব্যমিত্যাহ অস্ত্রমারণাদিপ্রভাবে। ঈশবৈশ্ব্যমিয়ং চেষ্টিভং যাস্য সং॥ ১৬ ॥

ঈশচেটিভেবনেব দশ্যিত্মাহ শ্রীদামেতি। প্রেমেতি ক্লক্সামাবেব বব্যাক্ষেন তালকলানি ভোক্সিত্রমিতার্থ:॥ ১৭॥

চিত হইয়া তাঁহার অনুরূপ মনোহর সবে ধীরে ধীরে গান করিয়া থাকে ॥ ১৫॥

হে রাজন্। লক্ষ্মীদেবী বাঁহার পাদপদ্ম লালন করিয়া থাকেন সেই হরি এই প্রকার অলোকিক চরিত ছারা গোপাত্মজত প্রকাশ করত গ্রাম্যসহচ্রগণের সহিত গ্রাম্য বালকের স্থায় ক্রীড়া করেন, যদিও তিনি স্থকীয় মায়াশক্তিছারা আপনার স্বভাব গোপন করিয়াছিলেন, তথাচ মধ্যে মধ্যে তাঁহাতে পরমেন্বরের থায় চেন্টাশীলতাই দেখা যাইত—॥ ১৬॥

'তাহার দূক্তান্ত এই যে, রামকৃষ্ণের দথা জ্রীদামনামক একজন গোপবালক তথা হ্ববল, স্তোককৃষ্ণ-

রাস রাম মহাসত্ত্ব কৃষ্ণ ছুই্টনিবর্হণ। ইতোহবিদূরে স্থমহন্ত্বনং তালালিসঙ্কুলং। ফলানি ভত্ত ভূরীণি পতত্তি পতিতানি চ। সন্তি কিন্তুবরুদ্ধানি ধেমুকেন ছুরাত্মনা।

### देवकवरजावनी ।

শীদার: প্রান্তি দেশ: স্থির ম্থাবেন বজে ত্মিরাস্য কেবলক্ষণার। প্রচারণায়ামন্যায্তাং। স্থাককৃষ্ণ ইতি চতুরক্ষর-নেব নাম জ্বেরং। তত্র চেপমেব লভাতে বালস্যাস্য রূপং কৃষ্ণমন্থাচ্ছদেব বর্ততে। তত্মালাম চ তমপুগমিষ্যতৎপ্রণাবিশেষায় সম্প্রন্যত ইতি বিচার্য্য সম্যাঞ্জনতা তৎপিত্রা তাদৃশং নাম প্রকাশিত্মিতি। প্রেলাইতি নতু তালফললোভেন। নচ হুই-বধার্যং বা কিন্তু প্রিম্পন্স্রীতিবিশেষার্থং। ুকিঞ্চিনিইস্ব্যপ্রার্থনিলক্ষণপ্রেম্মস্তাবেন । বলা। অব্যাজেন প্রীকৃষ্ণমামরোবের তাদৃশভোজনসম্পাদনেজ্যময়েনেতার্থং। তত্রচ স্থাময়প্রেমেতি লভাতে। স্থাঞ্চ সালাভ্যেনৈব ভ্রতীতি মিথংপ্রভাবাদিজ্ঞান-মরমেব। যথোক্তং তৈং। অক্ষান্ কিমত্র প্রসিতা নিবিষ্টানয়ং তথাচেদ্বব্দ্বিভ্রণাতি। বক্ষাতে চানস্তবং রাম রামেভি। ভত্রাহ্মপুনেন তত্তব্দ্বসাহচর্যাপ্রার্থনাবং বীররসম্বাভাবিকস্থাময়প্রেইনেব্দ্মিতি স্থিতং॥১৭৫

হে বামেতি বমনে ক্রীড়মীতি তয়ামনিকক্তেরেতামণ্যেকাং ক্রীড়াং কুক কিখা রমন্ত্রমি ক্রাব্রমি ব্রতি তরাখান্ রম্বেতি তাবং। বীপা আদরে প্রোৎসাহনার্থমত্ত্র থানেবাদে) সংখাধ্যাম ইতি ভাবং। হে মহাস্বেতি তব কিমপ্যান্ত্রং নাজীতি ভাবং। হে ক্ষেতি পরমানন্দপ্রনাহার্যকে সর্বাক্রিক্তাদখাকমিপি হ্রথং কর্ত্মহ্নীতি ভাবং। হে হুইনিবহ্ণেতি বৎসাহ্রানীনাং তত্মাৎ সাক্ষাধ্বদৃষ্টেঃ। অত্যালবনরোধকধেহকবধার্থমিপি তালপাতনাদিকং যুক্তমেবেতি ভাবং। এবং হুইনিবহ্ণেতি শ্রিক্ষবন্দ্য সার্থকত্বং বদ্ধা মহাস্বেতি তত্মলয় বিফলত্বং দর্শক্তমেবোত্তেল্লান্ত। ইতঃ প্রগোবর্জনাদিত্যর্থ:। প্রায়ন্ত্রক তদা গোচারণাৎ। তথাচ প্রাহরিবংশে। তৎপ্রসঙ্গ এব আলগ্রহুত্তী সহিত্রী গোধনৈং সহ গামিনো। গিরিং গোবর্জনং রম্যং বহুদেবহুতার্ত্রী ইতি। অবিদ্রে অনতিদ্রে প্রিগোবর্জন পূর্কতঃ ক্রোশ চত্ইয়ান্তরে ব্রেড়ে। তথাচ বারাহে। অন্তি গোবর্জনিং নাম ক্রেক্ছরুত্রং। মধুরাপশ্চিমে ভাগে অনুরাদেবাজনহুমমিতি। তথা। অতি তালবনং নাম ধেহকাহ্বরক্তিং। মধুরাপশ্চিমে ভাগে অনুরাদেবাজনহুমিতি। তথা। অতি তালবনং নাম ধেহকাহ্বরক্তিং। মধুরাপশ্চিমে ভাগে অনুরাদেবাজনহিন। অত্রু নৈঝাবর্জনিং। যতু প্রীহিবিংশে। গোবর্জনস্যান্তরতো যমুনাতীরনাঞ্জিং। দদৃশাতেইথ তৌ বীরৌ রম্যং তালবনং মহদিতি। অত্র গোবর্জনিংনাান্তরভাগে তদন্তর্গতেশানকোণ হিত্মা দদৃশাতেইতি নালোপে পক্ষী। যমুনাতীরনাঞ্জিত মধুননমধ্যন্থিতায়া মধুপুর্ব্যা মধুব্নসীয়ং পরস্তাদ্যিকোণহ্বম্নাভাগান্তমারভ্য রেথাজণতর। হিত্য তস্য বন্স্যেকপ্রান্তর্ত্রীরভাগং তালসীনামাত্র প্রানে। মধ্যবাস্থা ভাগ স্তংপুর্ঘা নৈঝাতকোণহুং তস্যচ

#### क्रमम्बर्छः ।

করণানহ ছাং। প্রেমা প্রিয়েঘনোচিতপ্রার্থনাময়েন অব্যাজেন তয়োরেব তাদৃশভোদ্ধনেছাময়েন চ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ॥ ২২ ॥ ২৪ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥

#### श्रीविश्वनाशहकवर्को ।

ইতো গোবদ্ধনাদবিদ্বে কোশচভুইয়ান্তরে তারক্ষা ইতি তালদীতি খ্যাতপ্রদেশগতং বনং। অন্তি তাশবনং নাম ধেত্বকাল্যরাকিতঃ। মণ্রাপশ্চিমে ভাগে অদ্বাদেশবোজনমিতি বারাহাক্ষেঃ। পশ্চিমে পশ্চায়বে ভাগ ইতি নৈশ্বিকোণে ইতি ব্যাধ্যেয় তত্ত্বৈব তদর্শনাৎ। তালানামালিতিব্যাপ্তিং। শ্লেষেণ। তালানামালিবণ্ডেনাভিত্মাভ্জাভীয়ত্বং ধ্বনিতং॥ কিন্তু ধেত্বেকন অবক্ষানি বশীক্তানীত্যত এব হে রাম তব মহাসত্বপরীক্ষা হে কৃষ্ণ ভবাপি ছ্টনিবহ্ণত্বস্থীকা অন্য কর্ত্যম্ভাতি ভাবোহনং তয়োঃ স্ব্যভাবেন বলিচ্ছজানাল প্রেমি বিক্ষাতে। প্রভাত বীররসোৎসাহোদীপনত্বেন সংক্ষাত এবেতি জ্ঞেয়ং॥

# প্রভৃতি গোপবালকগণ একদা প্রেম হেতু এই কথা বলিলেন—॥ ১৭ ॥

হে রাম! হে রাম! হে মহাবল! হে শ্রীকৃষ্ণ। হে ছুউদমনকারিন্। এই গোবর্দ্ধন পর্বতের অনতিদূরে একটা স্থমহৎ কানন আছে, সেই বন বহুতর তালতক্রতে সমাকীর্ণ, তথার নিরন্তর ভূরি ভূরি তালফল পতিত হইতেছে এবং পতিত হইয়া রহিয়াছে, কিন্তু জুরাত্মা ধেমুকার্ম্বর দে সমস্ত তাল-ফলকেই অবকৃদ্ধ করিয়া রাথিয়াছে। হে রাম! হে কৃষ্ণ। সেই অস্তর সমধিক বীর্যাশালী, তাহার রূপ্

সোহতিবীর্য্যোহস্থরো রাম হে কৃষ্ণ খররূপধূক্। আত্মতুল্যবলৈরন্যৈজ্ঞাতিভিঃ পরিবারিতঃ। তত্মাৎ কৃতনরাহারাদ্ ভীতৈন্ ভিরমিত্তহ্ন। বিদ্যত্তেহভুক্তপূর্ব্বাণি ফলানি স্থরভীনি চ॥ ১৮॥ এন বৈ স্থরভিগদ্ধোহবিষ্চীনোহবগৃহতে। প্রযক্ষতানি নঃ কৃষ্ণ গন্ধলোভিতচেতসাং। বাঞ্চান্তি মহতী রাম গম্যতাং যদি রোচতে। এবং স্কন্ধচঃ শ্রুছ্পিয়চিকীর্যা।

## শ্রীধরস্বানী।

ভাবালি সমূলং ভালানাং পড় জিভিব্যাপ্তং ॥ ১৮ ॥ বিৰুটীনঃ স্বৰ্ধতঃ প্ৰস্তঃ ॥ ১৯ ॥

### देवकवरकावनी ।

পশ্চিন্যাং তারফ্রনামান্যতংগ্রান্থ ইতি। তথি শেষক প্রীইরিবংশে। সতু দেশং সমঃ বিশ্বঃ প্রহান্ রক্ষ্যুত্তিই। দর্ভপ্রার স্থান্ত্রে লোইপারাণ্বর্জিত ইতি। ততঃ কিমিত্যাশক্ষ্য সাহিলাধমপ্রদৃতি ফলানীতি। পতন্তি পতিতানি চেতি নির্ভর স্বরং পক্ষেনাতিমপুর্বং বৃথান্যরম্ভক ব্যক্তিই তথা পাতনপ্রবাদোহিলি নিরন্তঃ। ইতি প্রারে। ভাদমাদে ক্রীড়েয়ং তব্রিরের সর্বেরাং তালানাং পাকাং। এবনিষং লীলা প্রীবিষ্ণুপ্রাণাছাক্রান্ত্রাবেণ প্রীমক্তকালিয়দমনানন্তরং ক্ষেমং। তত্র বিষ্ণুপ্রাণে ক্রমপ্রাপ্তর্বের কারণং। হরিবংশে তু। দমিতে সর্পরালে তু ক্ষেন্তন যমুনাইদে। ইত্যারহা সা লীলা বর্ণিতেতি স্পইনের তলিতি। নমু তহি গুলাভির্ণরা তানি বন্যবেন সাধারণানি স্বয়নানীয় স্থাং ত্রাহ্রবক্ষরানি। নমু ত্রা কিং হৈঃ প্রার্থাং জ্রাহ্রাত্রনিতি। অতত্য হো নিপ্রহীতুং যুদ্ধান্ত এবেতি ভাবং। তত্তীত্যাচন কৈশ্চিদ্পি তংকলানি ভূকানি সন্তীত্যুত্তর্বিত্ত স্থাহাং। অতিবীর্ব্যা মহারল ইতি রামং প্রত্যুক্তি মণিংস্ব্যান্তনায় থ্ররপ্রপ্রিতি কৃষ্ণং প্রত্যুক্তি প্রিত্ত তেখানাপ ত্রাত্ত স্থাহারাং দিশিতং। তথ্যাদিতি সার্দ্ধক হ্রান্থাতানেবাভিন্তর্বায় ক্রতনাহারাদিতি অতান সেব্যুতা মিত্যুক্তি প্রায় ইত্যতং সতু নাপ্রের্ধান্ত ইতি ভাবং। কিংক জ্রাতিভিরিতি তেখানাপ তথাতাহিদিবন্দশে ভালমানে বৃষ্ট্যকুকুলপৌরস্তারাতাং। এবং ফলানাং উংক্টবং নিক্টবর্তিরক্ষ স্চিতং। তদেতং স্বরং শীক্ষরাম্বোরক্সত্যির মন্ত্রাপ্রতং তত্ত তাভাং নর্ম্পা জন্যাজ্যত্নের ক্রমণ স্বান্তি ক্রেমণা স্বান্তি ক্রেমং। ১৮॥

চতু্থ্যথে ষ্টা। ক্ষেত্যাদি মূল্কভরসধোধনমভিবৈষ্ণ্যং স্চয়তি ক্ষণদ্ধতি। শ্লেষণাস্থাকং কদাপি লোভো নাসীং নবনীতাদি-লুক্ষ্যাস্য সম্পর্কেণের লোভিত্তভেসামিতি শ্রীষামং প্রত্যেবোজিঃ তেন্চ নক্ষণা নিজ্জভিপ্রার্থনদোষে। নির্ভঃ এবং মূহঃ

### वीविधनाषठकवर्छी।

সোহতিবীৰ্য্যেত্যাদিনা তথোঃ পরাক্রমোতেজনং॥

আববোরতা তদ্য তদীয়ানাঞ্জিবীশ্যং থপুপায়মানং ভবিষাতীতি চেন্তইং চলতং ত্রত্যান্তরানির্ভান্ তালভোজিনক দত্ত্য-দাশিয়ং কুঞ্তমিত্যাস্তত্মাদিতি। নতু কদ্যাং দিশি তদ্দং তদ্ ক্রতেত্যত আহং। এধ বৈ গ্রুঃ ভাদমাদীয়প্রাচ্যদ্মীরণেনানীত ইতি ভাবঃ॥ ১৮॥

অত্যন্ত ভয়ঙ্কর, দে একাকী নহে, আত্মতুল্য বলশালি-অন্যান্য বহুতর জ্ঞাতিবর্গে দর্বদা পরিরত থাকে। হে অমিত্রহন্! দেই অহার নরভোজী, অতএব তাহা হইতে ভীত হওয়াতে কোন মানবই দেই বনের হান্দর হারভি ফল কখন ভোজন ক্রিতে পায় না, হৃতরাং তথায় রাশি ২ ফল পতিত হইয়। রহিয়াছে ॥ ১৮ ॥

এই দেখ সেই "সকল পক তাল ফলের সকল দিকে প্রস্ত স্থরতি গন্ধ পাওয়া যাইতেছে। হে ক্ষা! সোগজ্যে আমাদের চিত্ত প্রলোভিত হইতেছে আমাদিগকে ঐ সকল ফল দাও। হে রাম!

প্রহন্য জগ্মতু প্রেটিপর্রতী তালবনং প্রভূ। বলঃ প্রবিশ্য বাহুভ্যাং তালান্ সংপরিকম্পয়ন্। ফলানি পাত্যামান মন্ত্রীপ ইবৌজনা॥ ১৯॥

ফলানাং পততাং শব্ধং নিশম্যাফ্ররাসভঃ। অভ্যধাবৎ ক্ষিতিতলং সনগং পরিকম্পয়ন্॥ ২০॥ সমেত্য তরসা প্রত্যগ্ দ্বাভ্যাং পদ্ত্যাং বলং বলী। নিহত্যোরসি কাশব্ধং মুঞ্চন্ প্র্যুসরৎ থলঃ॥২১ পুনরাসাদ্য সংরক্ষ উপক্রোফা পরাক্ স্থিতঃ। চরণাবপরে রাজন্ বলায় প্রাক্ষিপদ্রুষা॥ ২২॥

### श्री धत्रश्रामी ।

मनगः मतृकः मशर्सकः व।॥ २०॥

প্রত্যক্ রাভ্যাং পশ্চিমাভ্যাং দ্বাভ্যাং। কাশক্মিতি গর্কভশকামুকরণং। পর্য্যারৎ পরিতোহধাবদিত্যর্থ:॥ ২১॥ উপকোঠা গর্কভ:। পরাক্ প্রতিমুখ:। অপবৌ পশ্চিমৌ। বলায় বলং হস্তুং॥ ২২॥

### देवस्ववरङावनी।

প্রার্থনেহপ্যনঙ্গীকারমিবালক্ষ্য সপ্রধাররোবমাছ বাঁশ্বান্তীত্যাদি॥

রতে। সাহায্যার পরিতো বেষ্টিতৌ প্রভূ তেষাং প্রহর্ষার্থং অসামর্থাং দর্শগ্রেষ্ঠা ॥

বলনেবস্যানে প্রবেশাদিকমানে প্রাথিতত্বাব্রতঃ শ্রীকৃঞ্স্যাপি তৎ কীর্ত্তয়ে তক্র গৌণায়মানত্বাং। তালানিতি বহুত্মেকস্য কম্পানেনৈব সংঘট্টিতানাং তেষাং বহুনাং কম্পাং সম্যক্ পরিতঃ। কম্পায়দ্ধিতি বিকীর্য্য দ্রে পতনন্ত নস্থ শির্দীত্যেতদিছ্যা॥ ১৯॥ সপর্বতং ক্ষিতিত্তলং সর্বাং পৃথিবীং পরিতঃ কম্পায়দ্ধিতি ত্যা পুর্বোক্তং অতিবীর্যত্বং দর্শিতং॥ ২০॥

নিতরাং হয়। প্রস্তা যতে। বলী সাধারণদেবতাপেক্ষা। বলববেন বলিমানীতার্থ:। কাশকং কুৎসিতশকং। আর্থা কাদেশ:। পর্যাসরং পুনঃ পদ্যাং হননে ছিদ্রাবেষণায় পরিতো ব্রাম যতঃ থলতাদৃশহ্লেটঃ॥ ২১॥

আনাদ্য নিকটীভূর। উপক্রোষ্টা নিকটে কা শক্ষং কুর্বন্। পরাক্ বিম্থং হিতঃ সন্পুনবেত্য॥ ২২॥

## श्रीविधनाथठकवर्वी।

নোহস্মভাং প্ৰাবচ্ছ যতোহস্মাকং ৰাঞ্জি॥

প্রহন্যেত্যহো গর্দভোপ্যেবং বলীত্যসম্ভাব্যস্থাকু বৈব বা জ্রথেতি ভাষঃ ॥ ১৯ ৫

সনগং কুলপর্বতৈরপি সহিতং॥ ২০॥

প্রত্যগ্রাভ্যাং পশ্চিমাভ্যাং রাভ্যাং। কাশক্ষমিতি গর্মভশকামুক্তবণং পর্যাসরৎ পরিতো ধাবং॥ ২১॥

সংরক্ষঃ কোপী উপক্রোষ্টা নিকট এব কাশদং কৃৰ্ধন্ পরাক্ পৃষ্ঠীক্কতাস্থিতঃ ॥ ২২ ॥

ঐ দকল ফল ভক্ষণার্থ বহুকাল ইইতে আমাদিণের দমধিক বাঞ্ছা আছে, যদি অভিলাষ হ্য় গমন কর। হে রাজন্! স্থানগণের এই প্রকার কথা শুনিয়া তাহাদিণের প্রিয়কার্য্যের দম্পাদন কামনায় দেই তুই প্রস্থা অধাৎ রাম ও কৃষ্ণ হাদ্য পূর্বকি গোপগণে পরিবৃত হইয়া দেই তালবনের প্রতি যাত্রা করিলেন। বলদেব তালবনে প্রবিষ্ট হইয়া মদমত গজরাক্ষের ন্যায় মহাবলে ভুজবুগলে তালবৃক্ষ দকলকে কম্পিত করিয়া দমূহ তালফল পাতিত করিতে আরম্ভ করিলেন॥ ১৯॥

হে মহারাজ । তাল পতনের শব্দ শ্রবণগোচর হইবা-মাত্র গর্দভাকার ধেমুকান্থর বেগে পর্মতি সহিত ভূতল কম্পিত করত তৎক্ষণাৎ দেই দিকে ধাব্যান ছইল ॥ ২• ॥

অপিচ, মহাবল ধেনুক সম্বর সমীপে আসিয়া পশ্চাৎ ভাগের ছুইটা পা দিয়া বলদেবের বক্ষঃস্থলে আঘাত করিল, পরে কুৎসিত গর্দভশব্দের অনুকরণ করিতে ২ চতুর্দ্ধিকে দৌড়িতে দাগিল॥ ২১॥

তদনন্তর রাসভ (গর্দভ) মূর্ত্তিতে পুনরায় নিকটে আদিয়া প্রচণ্ড ক্রোধে সম্মুধে দাঁড়াইল এবং বলদেবের বিনাশকরণ মান্দে রোষবশতঃ পশ্চাদ্যাগের ছুইটা পা ভাঁছার প্রতি প্রদারণ করিল॥ ২২॥ স তং গৃহীত্বা পদয়োত্র মিয়িছৈকপাণিনা। চিক্ষেপ তৃণরাজাত্রে ভ্রামণত্যক্তজীবিতং।
তেনাহতো মহাতালো বেপমানো মহচ্ছিরাঃ। পার্যন্থং কম্পায়ন্ ভগ্নঃ স চাম্মং সোহপি চাপরং॥২৩
বলস্থা লীলয়োৎস্ফুখরদেহহতাহতাঃ। তালাশ্চকম্পিরে সর্ক্রে মহাবাতেরিতা ইব॥ ২৪॥
নৈতচ্চিত্রং ভগবতি হুনস্তে জগদীখরে। ওতং প্রোত্মিদং যুস্মিংস্কুস্কুম্বন্ধ পুটঃ॥

## विभवयामी।

তৃণরাজন্তাল: ॥ ২৩॥

উৎস্টেন ধরদেহেন হতৈরাহতাঃ চকম্পিরে অকম্পন্ত ॥ ২৪ ॥

## বৈষ্ণবতোষণী।

একেনৈব পাণিনা পাদয়োগৃহীয়া ভ্রাময়িশ্বাচ। প্রপদোরিতি পাঠশ্বার্য: পাদয়োরএভাগ ইত্যর্থ:। পূর্বস্ত তৎপ্রহারাঙ্গীকার:। স্থানবধান প্রকাশনেন স্বদ্য ভেনাকোভ্যম্বং প্রথাপয়িতুং॥

চকারাদপরোহপি পদ্মিত্যেবং বহুবো বহুন্ কম্পারস্তো ভগা ইতি জ্বেরং । ২৩॥

এবং সন্ধিক্টা ভয়া: দুরস্থাস্ত কম্পিতা ইত্যাধ বৰস্যেতি॥ ২৪॥

ইদঞ্চ। ন তদ্য চিত্রং পরপক্ষনিপ্রহন্তথাপি মর্ত্যাম্বিধদ্য বর্ণাতে। ইত্যেবং বক্ষ্যমাণরীত্যা প্রতিযোদ্ধাদ্যমূর্পমাত্রশক্তিপ্রকাশধানিবা নরলীলারৈব ক্বতমিত্যাশ্চর্যাত্তন বর্ণাতে নতু ঐশব্যলীলারেত্যাহ নৈতদিতি। অচিত্রত্বে হেতু ভগবতি শক্ত্যা সমগ্রেখব্যাদি বৃক্তেহনতে স্বরূপেণাপ্যপরিচ্ছিন্নে তথাপাধিসম্বন্ধনাপি জগদীশ্বরে ওতং প্রোত্মিত্যাদি লক্ষণেচ। দৃষ্টাস্কেহপি তভ্নাং কারণজেন প্রটাদন্তবং। অত্র তাদৃশভগবন্ধাদিকং প্রক্রিফাংশেষু মুখ্যম্বাদ্যুক্তমেবেতি ভাবং॥

### ক্রমসন্দর্ভঃ।

কিঞ্চ ইদঞ্চ ন তদ্য চিত্ত্ৰং প্ৰপক্ষ নিগ্ৰহন্তথাপি মৰ্ক্তাছবিধদ্য বৰ্ণ্যত ইতি ৰক্ষ্যমাণ রীত্যা প্রতিযোধাদ্যস্থৰপমাত্র শক্তিপ্রকাশ কার্য্যাৎ ধারিণ্যা নবলীলহৈব ক্বতমিত্যাশ্চর্য্যত্বেন বর্ণ্যতে ॥ নৈতদিতি দৃষ্টাস্তেছপি তস্তুগাং কারণদ্বেন কার্য্যাৎ পটাদন্যত্বং ॥ ২৫ ॥

## **এীবিশ্বনাণচক্রবর্তী।**

তং ধেমুকং প্রপদো: পদয়োরগ্রভাগে ইত্যর্থ:। তুণরাজস্তাল:॥ ২৩॥

উৎস্প্টেন থরদেহেন হতৈন্তালৈরাহতাঃ প্রাপ্তাতাঃ॥ ২৪॥

বিশ্বং ওতং অন্স তম্বসু পট ইব প্রথিতং প্রোতং তির্য্যক্ তম্বসু পটবদেব প্রথিতং দর্বতোহমূল্যতং বর্তত ইত্যর্থ: ॥

হে রাজন্! বলদেব এক হাতে সেই ছুইটা পা ধরিয়া অনেক ক্ষণ ঐ অহ্রকে বারম্বার উৎক্ষেপণ পূর্বক ঘুরাইলেন, পরে পুনঃ পুনঃ ঘূর্ণনে তাহার জীবন ত্যাগ হইয়াছে জানিয়া তাল তরুর উপরি দিকে ফেলিয়া দিলেন। হে মহারাজ! ধেমুকাস্থরের শরীরক্ষেপণে মহচ্ছিরা রহৎ তালরক্ষ আহত হইয়া কম্পিত হইল এবং ক্ষণকাল পরেই পার্যন্থ রক্ষকে কম্পিত করিয়া ভাঙ্গিয়া পড়িল, সেই ভগ্ন তরুর ভারে নিকটম্থ অ্যান্য রক্ষ কম্পিত হইয়া ভগ্ন হইল এবং তাহাও আর একটাকে কাঁপাইয়া ভাঙ্গিয়া পড়িল॥ ২০॥

ফলতঃ, বলদেবের লীলা বশতঃ প্রক্লিপ্ত ধেমুকাস্থরের গর্দভদেহে যে দকল তালরক্ষ কম্পিত হইল সেই দকল বৃক্ষ কর্ত্বক আহত হওয়াতে মহাবাতাহতের ন্যায় দম্দায় তালবন কম্পানান হইয়াছিল॥ ২৪॥ •

• হে মহারাজ ! বৈত্র যেমন তস্ততে ওত প্রোত, তজ্ঞপ এই বিশ্ব যে অনস্ত জগদীশ্বর ভগবানে দর্বতোভাবে অনুসূত্ত হইয়া রহিয়াছে সেই ভগবানে ঐ বিষয় আশ্চর্য্য নহে। সে যাহা হউক,

ততঃ কৃষ্ণ কা রামক জ্ঞাতয়ো ধেমুকস্থা যে। ক্রোফারোহভাদ্রবন্ সর্বো সংরক্ষা হতবাদ্ধবাঃ॥
তাংস্তানাপততঃ কৃষ্ণো রামশ্চ নূপ লীলয়া। গৃহীতপশ্চাচ্চরণান্ প্রাছিণোতৃণরাজস্থ ॥ ২৫॥
ফলপ্রকরসংকীর্ণং দৈত্যদেইহর্গতাস্থভিঃ। ররাজ ভ্: সতালাগ্রৈ র্থনিরিব নভস্তলং।
তয়োস্তৎ স্বন্ধান ক্রিমান্য বিবুধাদয়ঃ। মুমুচ্ঃ পুষ্পবর্ষাণি চক্রু বাদ্যানি ভুক্তবুরঃ॥ ২৬॥

## खीरतवामी।

যদিমিদং বিশ্বং ওতং উর্জ্বন্তম্পু পটইব প্রধিতং। প্রোতং ভির্যাক্ত্ব তন্তমু পট ইব প্রধিতং সর্বতোহসুত্যতং বর্তত ইত্যর্থ:॥ ২৫॥

ঘনৈনভ ইব ভ্রত্তলং ররাজ। তত্র ফলপ্রকর সংকীর্ণমিতি দৈত্যদেহৈঃ ফলতালার্থ্যেশ্চ সংকীর্ণমিতি অঙ্গণেখতনীলঘনসাদৃশ্যসম্পাদনং॥ ২৬॥

## देवकबरकावनी।

কৃষ্ণনিত্যাদাবৃক্তি: খ্রীবদদেবস্য পরাক্রমণৃষ্ট্যা ভয়াতস্ত্যাগেন তদভিত্রবণাৎ কিছা অপ্রজ্ঞেয়া স্বয়মগ্রতো গমনাং। রামধ্যেতি পশ্চাদমূল্লেহেনে তস্যাপি তৎপার্শে গমনাং। অভিত্রবণেতু দ্বোরপি প্রাধান্যাচ্চকারে। ক্রোষ্টার ইতি মহাক্রোধানং কুর্বাণাঃ। হতবান্ধবা ইতিচ শোকেনাপ্যতিকোধান্নিক্র শক্যাতিশয়ং দর্শয়ন্ত ইতি ভাবঃ॥

হে নৃপেতি প্রহর্জেদ্যাং। यহা। নৃপদ্যেব লীলয়া রাজানোহি মৃগন্ধ ক্রীড়াকোতৃকেন মৃগান্ মন্তীতি অনারাস এব তাৎপধ্যং। তৃণরাজবিতি সমাসান্তবিধেরনিত্যতাৎ॥ ২৫॥

গতান্থভিরিতি দেহানামপ্রালনং বোধয়তি। অভএব ররাজ একজপক্ষীয়াণামানসজনকত্বাৎ। ভূভূমিরূপং তলং তালানাম-ধোদেশ:। কিস্বা। ভূরিত্যব্যয়ং ভূর্গোকাদিবৎ। যথা। স্থপাং স্থল্গিত্যাদিনা ওম: স্থভাব:। ভ্রতাব্যয়ং ভূর্গোকাদিবৎ। যথা। স্থপাং স্থল্গিত্যাদিনা ওম: স্থভাব:। ভ্রতাব্যয়ং ভূর্গোকাদিবং। যথা। স্থপাং স্থল্গিত্যাদিনা ওম: স্থভাব:। ভ্রতাব্যয়ং ভূর্গোকাদিবং। ব্যালিকতা ভূঃ ফলপ্রকরমংকীর্ণং যথাস্যাত্রথা ররাজ। নভস্তলং নভঃস্বরূপং। তলং স্বরূপাধার্যোরিতি বিশ্ব:॥

গোপানামেব প্রীত্যর্থমপি তত্তদনোষাং জাতমিত্যাহ তয়োজিতি হাস্তাং। তয়োজিদিতি বা পাঠ:। স্নহদিতি সপরিবারসৈয়ৰ তস্যাবহেলয়াশি মার্নিত্স্য পূর্বাকৃত দেবাদিভয়হং ভয়ক্ষরচরত্বঞ্চ বোধয়তি। আদিশসাধিদ্যাধরাদ্যো মহর্যাদ্যশ্চ ক্রমেণ তেষাং তত্তং কর্ম জ্বেয়ং। বাদ্যৈ গাঁতন্ত্যাত্যপি জ্বেয়ানি প্রায়োহত্যোতাং তেষাং সঙ্গতত্বাং॥ ২৬॥

#### क्रभागनार्डः।

দৈত্যদেহৈরপলকিতা ভূ: ফলপ্রকরদহীর্ণং যথাদ্যাতথা ররাজ নভতলং নতঃস্কর্মণং ॥ ২৬ ॥

### बी विश्वनाथहक्तवर्थी।

(इ नृष ॥ २ ॥

ফলপ্রকর সন্ধীর্ণ ব্যাস্যাত্থা ভূ ররাজ। কৈ: দৈত্যদেহৈ নি ভিন্ন তালাগ্রসহিতৈ:। তেখাং স্বত: শ্যাম্বাৎ ক্ধিরোক্ষিত-হাচে ঘনৈ: শ্যাম্বকৈ ন ভস্তলমিব। তলং স্বরূপাধার্বোরিতি বিশ্ব:॥২৬॥

তদনন্তর ধেমুকাস্থরের যে সকল জ্ঞান্তি গর্দভ রূপ হইয়াছিল, তাহার। ক্রুদ্ধ হইয়া রাম ও ক্ষের প্রতি ধাবমান হইল এবং রোষবশতঃ তাঁহাদের বাদ্ধবিদগকেও আহত করিল কিন্তু সে সকল অস্তরকে আসিতে দেখিয়া রাম এবং ক্রুফ্র পশ্চান্তাগের পদ্ধর ধরিয়া তালর্ফে নিক্ষেপ করিলেন ॥২৭॥

অতএব দৈত্যদিগের প্রাণশ্ন্য দেহ এবং তালফল তথা ভগ্ন তালাগ্র দ্বারা সন্ধীর্গ ইইরা সেই ভূমি সেইরূপ দীপ্তি পাইতে লাগিল, যেমন মেঘমালায় আকাশতল দীপ্তি পাইরা থাকে। সে যাহা হউক, রাম ও কৃষ্ণের এই প্রকার শ্ব্যহৎ কর্মের বিবরণ দেবতাদিগের পরিজ্ঞান্ত হইলে তাঁহারা স্বর্গ হইতে পুল্পবর্ষণ ও তুন্তি ধ্বনি এবং নানা প্রকার স্তব স্তৃতি করিতে লাগিলেন॥ ২৬॥

অথ তালফলান্যাদন্ মন্ম্যা গতসাধ্বসাঃ। তৃণঞ্চ পশবশ্চেরু ইতথেকুককাননে॥ কৃষ্ণঃ ক্মলপত্রাক্ষঃ পুণ্যশ্রবণকীর্ত্তনঃ। ভৃষমানোহ্সুগৈর্গোপেঃ সাগ্রজো ব্রজমাবিশৎ॥ ২৭॥ তঃ গোরজশ্ভুরিতকুন্তলবদ্ধবহর্বন্যপ্রসূনক্ষচিরেক্ষণচারুহাসং।

## খ্রীধরস্বামী

আদন্ অভক্রন্। ২৭॥

গোবজোভিশ্ছুরিতেমু কুস্তলেমুবদ্ধং বহং বন্যানি প্রস্নানিচ যক্ত কচিরমীক্ষ্ণং চাকহাসশ্চ যস্য তঞ্চ তঞ্চাদৃকিতদৃশঃ

## বৈফাবজোষণী।

গোপালা ইতাহুজ্1 মহ্য্যা ইত্যুক্তে তেতু মৃতগৰ্দভপ্ৰসঙ্গেন ছুণাং বিধায় নাদন্ কিছন্য এব মহ্য্যা ইত্যুধ্য । হত্তের্ত্ককাননে ইতি তুণবাছ্ল্যমপি হুচিতং ॥

এবং প্রসঙ্গেন দিনান্তবদ্য ধেতুক্বধলীলামপি সমাস্ত্র প্রথমগোচাবণিদিনসন্ধালীলাপি যথাযুক্তমিখং জ্বেরতি তদিনসন্ধান্ শীলামাহ বড় ভি: । অত্র সামান্যব্রজনদৃশ্যমানত্বেন বর্ণয়তি কৃষ্ণ ইতি । কৃষ্ণ ইত্যভিপ্রেতং সর্কচিত্তাক্র্যকত্বং দশ্যন্ বিশিন্তি কমলেত্যাদিনা। কমলপ্রাক্ষ ইতি সৌন্দর্যাং। শোণ্ছবিকোণ্তয়া বিস্তীর্ণতাকীর্ণতয়াচ কৈশোরাংশব্যক্তিরপি । পুণ্যে এবং কীওনে ব্দাস স ইতি সর্ক্যাল্যাহায়াং। অনেন ব্রজ্ঞানাং তদ্ভব্বাদেব বিরহার্ত্যপশ্ম স্তাব্কানাঞ্চ চিত্তোলাসং হৃতিত:। এবং স্বর্পশোভাং দশ্যিরা আব্বর্ণশোভামাই সুস্থান ইত্যাদিনা॥ ২৭॥

অপ তছ্য়জ্যিতবাল্যৈ শ্রীগোপকুমারীবিশেষৈরপি দৃশুমানস্থেন তং বর্ণয়ংস্তেষামন্থরাগোৎপত্তিং হচয়তি তমিতি ছাভ্যাং। ঈক্ষণমবলোকনং। পোরস ইত্যাদিনা। উপরি মধ্যে তলেচ শ্রীম্থশোভা দর্শিতা। অন্যবেষসন্তাবেহপি তত্তনাত্রদৈয়ব বর্ণনং সাধং
বনাদাগতকেন বৈশিষ্টাং। বেগ্রুণনং স্বভাবতএব তাদাং প্রহর্ষার্থমাকর্ষণার্থক। উপেতি রাগমাত্রগানসম্বেণ্রুণনোপগায়নস্থেন
গীতা কীর্ষি ব্যা তং! অত্র সাঞ্জতান্ত্রিস্থা ত্রান্ত্পগৃক্তপ্রায়ন্তাং। অত্রব ছলেন ব্যবহিত্তাদ্প্রক্জনসঙ্গতৌ হি ত্স্যাঞ্জেন
ভাবি এব প্রবলতে। ত্যা ব্রজাগননির্দ্ধাবে গোরজাভ্বিতেতি হচিত্রগোরজ উক্তির্বেণ্রুণনমন্থগোপগাত্রীতিত্বিতি হেভুত্রমং

#### ক্রমসকর:

বদা সাধারণ মহস্যা এবাদন্ নতু গোপাঃ। মৃতগর্মভপ্রসঙ্গে ঘুণাং বিধায়েতি ভাব:॥

ত এ সামান্য একজন দৃশ্যমান্ত্রেন বর্ণয়তি ক্লফ ইতি। একেন অপে পর্ম তেজস্বিত্বেন ঝটিতি তত্বত্লজ্বিতবাল্যৈ জীগোপকু-নাবীবিশেষ্ট্রেরপি দৃশ্যমান্ত্রেন বর্ণয়ংস্তেম্বান্ত্র্বাগোংপতিং স্পষ্টয়তি তমিতি দ্বাভ্যাং॥ ২৭॥ ২৮॥

## **ब**िविश्वनाशहळावळी।

মহ্যান্ত্রত্যাঃ পুলিন্দাদ্য এব নতু গোপালা আদন্ গদভরকোকিত্ত্বন ফলেষ্ ঘুণোৎপত্তে:॥

বনালোষ্ঠপ্রবেশলীলামাহ ত্রিভি:। ক্লঞ্চ ইতি ত্রজস্থানাং চিত্তাস্যাকর্ষণং কমলপ্রতাক্ষ ইতি নেত্রনাস্বোধাকর্ষণং। পূণ্যে ধন্যে প্রবংশ কণ্যে বিত্তথাভূতং কীর্ত্তনং বেণুগানং যস্য সং। ইতি শ্রোক্রস্যাপ্যাকর্ষণং ধ্বনিতং॥ ২৭॥

এজবালানাং বিশেষত আকর্ষণমাষ্ট্র। তং গোপ্যোহভাগমন্ গোরজোভিন্ছু রিভেষু ব্যাপ্তেরু কুন্তলেষু বন্ধং বহ'ং ৰন্যপ্রস্নানি চ

এদিকে ধেরুকাস্থরকে নিহত দেখিয়া সর্ব্ধ সাধারণ মানবগণ নির্ভয়চিত্তে তালবনস্থ তালফল ভক্ষণ করিতে প্রবৃত্ত হইল এবং পশুগণ নিরুদ্বেগচিতে তৃণভোজন করিতে আরম্ভ করিল। তৎপরে বাঁহার প্রবণ ও কীর্ত্তন পুণ্যজনক, সেই পদ্মপলাশলোচন ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ অসুচর গোপগণের উচ্চারিত স্তব প্রবণ করিতে ২ অগ্রজ বলরামের সহিত-ব্রজমণ্ডলে প্রবেশ করিলেন॥ ২৭॥

ে হে রাজন্ ! শ্রীকৃষ্ণকে দর্শন করিবার নিমিত্ত গোপীদিগের নয়ন উৎক্তিত হইয়াছিল। তাঁহারা প্রত্যেকে প্রবেশ সম্বাদ পাইবামাত্র সকলে মিলিয়া দেখিতে আসিলেন। গাভীগণের পশ্চাৎ পশ্চাৎ বেণুং কণন্তমনুগৈরূপগীতকীর্ত্তিং গোপ্যো দিদৃক্ষিত্দৃশোহভ্যগমন্ সমেতাঃ॥ ২৮॥ পীরা মুকুন্দমুখসার্ঘমকিভ্সিস্তাপং জহুবি রহজং ব্রজ্যোধিতোহছি। তৎ সংকৃতিং সমধিগম্য বিবেশ গোঠং সত্রীজ্হাস্বিনয়ং যদপাঙ্গমোকং।

## औरत्यामी।

निवृधिका वर्गनिदक्षीयुद्धा पृत्या यामार जाः॥ २५ ॥

মুকুলপ্য মুখপন্ন গছং পার্বং মধু অহি যো বিবহ তথাজ্ঞাতং তাপং সচ তাসাং সংক্রতিং পূজাং কাং মংক্রতিং কথ্যা ক্রতাং তামাহ প্রীডেতি। প্রীড়েন সলজ্জেন হাসেনী বিন্ধো যথা ভবতি তথা যদেতং কিং অপাসনোকং কটাক্দশনং তথা তাসাং সংক্রতং প্রাথোতি ॥ ২৯ ॥

### देनकवरज्ञावनौ ।

জেলং। অভিগমনে হেতুং দিদুক্ষিতাং সঞ্জাতদিদুক্ষা দূশো বাসাং ইতি দৃশাং করণছেপি দিদুক্ষাক ইত্রা নির্দেশঃ স্বাতস্তাং বেধেয়তি তজ্ঞ গাঢ়ান্তবাগনিতি। সমেতা অন্যোন্যং নিলিতা ঐকমত্যেন স্থাং। অতএব ভর্লজ্ঞাদিহানেশ্চ। তচ্চ স্বস্থাততঃ স্বাধানি ব্যাপ্দানেনাং একিকাধ্বনি বা পূর্বনেবাগতানাং উচ্চস্থানবিশেষে বা ক্ষেয়ং॥ ২৮॥

তত্ৰত বৰু তং তদাহ পীছেতি তৈৰ্ব্যাখ্যাতং। যথা ব্ৰহ্মোধিতঃ পূৰ্ব্বোক্তা শুৰিশেষাঃ মুকুলদ্য সৰ্ব্যংখনোচক থেন তাদ্শ নামঃ জীক্ষণম মুখ্যাবেখং মুখ্কমল্ভ সৌল্ধ্যুৱপ নকবল্দমকিভ্সৈঃ বকিভিবেৰ ভ্সাৱৈঃপানপাত্ৰঃ পীৱা দ্যাদাদ্যাদ্লি যওধিবসংভেন ব্ৰাপ্তদ প্ৰাপ্তিম। ভ্ৰাণ তাং জহঃ। বাত্ৰিস বিবহতাপং ভূ প্ৰাত্দিশনেন জহবেৰেতি ভাবঃ। যং যত্ৰৈৰ স্থীভো হাস্বিন্ধে ব্ৰ তাদ্শ্যপাদ্যোক্ষং কটাক্ষনিক্ষেপ্ৰপাং তংসংকৃতিং তাভিঃ কৃতং স্থানং স্ম্বিগ্যা, মুখা গোঠং গোঠাভনি জিগুহং বিবেশ্তি ।

#### क्रगमनार्डः।

অকীণোৰ ভূপাভংশানে বৃহঃ প্ৰবৃত্তৰং তৈ ছবিভূতৈঃ ব্যন্ধি পীয়া সংকৃতিমহে। স্বীড়ো হাধো ব্য তাদুশো বিনৰ বহসা প্ৰিয়ছনোটিত ব্যবহারে। যত্ৰ এতাদ্শং ব্যাসাভিথা বং সাংখ তজ্ঞামিত্যুৰ্থঃ। বদিত্যেতং প্ৰোক্তাং তাং কিং ক্লপাং অপাপ নোকাং কটাফ্লশ্নিক্পামিত্যুৰ্থঃ॥ ২৮॥

## चीविधनाधहक्तवर्छो ।

ব্যা কৃতির্মীকণং চারংখাসণ্ড যায় ঐকণ্যো শচাক্ছাসো বা যায় তং। নিদ্কিতাঃ সংজাতদশনৈতো দুশো যাসাং ১। ইতি গোপীক কি লাজা ভয়হেছুকং বজন মমান্যয়েয়া দৃশন্তনাক্বণয়ং পরিত্যজা পতন্ত কর্ত্বয় প্রাপ্তা ইতি ধ্বনিঃ। তেন চ প্রতিবেশিনাং শ্রোত্র বাণে জিয়াগাং বেণু মৌস্বর্যাক্স সোনভ্যালক্ষ্য নাংসর্যোগৈ ক্ষেথ্য ব্যাহ্য হতি ভাবঃ॥ ২৮॥

সভিগ্য কিং চকুরিতাত মাহ পীষেতি। মুকুল্লা মুথে সার্থং বিভ্রণ মধু অঞ্চিন্ত গৈ পীয়া নহপাস্ত্রিং প্রিভাবেন ক্ষ্ণাচ্ছিগোপীক্সান্যমন্ত্রীয়ে বং সাহজিকং বিভং তং তাভি নিংশিক্ত্যা দপুর্ব নেত্রেরের পাত্নিতি গণ্ডে। তত্ত বিতীয়ক্ত্রে ক্ষ্ণাত্রিবানে মতি হর্ষোবোহাস্তামাং যদৈবাদ্ধি তদৈবোদ্ভ্যা লক্ষ্যা সমপ্রাবলোকে। হাস্তার্তঃ বানকরক্ত্যার ওঠনক। কিঞ্চিৎ সংস্কুণত্ত্তদাবর ব্যান্তি বিনয়শ্চাভ্দিত্যেতং সর্ক্যাধুর্যমের ক্লোহস্কুল্বেত্যাহ তংসংকৃতিং তাল্নাবলোক্সন্ত্রপান প্রদান্ত্রিক ক্রপাং সংকৃতিং তাভিং কৃতং কিঞ্ছিপালনপ্রনানক্রণং স্থানন্মতার্থঃ বন্ধিল্যা সম্প্রাবিদ্ধানিয়াদ্ধিগ্য সর্মান্ত্রাল গ্রাম করাতে তাহাদের পুরোক্ষ্ত ধূলি দ্বারা শ্রীকৃক্ষের কুন্তল পুস্রিত হইয়াছিল, সেই ক্তলে মর্রপুছ্ছ তথা বন্যপ্রস্কুন বদ্ধ ছিল, আর তাঁহার দর্শন অতিশয় ক্রচির এবং হাস্য অত্যর্থ মনোহর, আর তিনি বদনে বেণু রাথিয়া বাদ্য করিতেছিলেন এবং অকুচরগণ নিরন্তর তাহার কীর্তি গান করিতেছিল। ২৮॥

ব্রজাঙ্গনাগণ স্বস্থ নেত্ররূপ তৃষিত ভঙ্গ নিকর দারা ডদীয় বদনারবিন্দ মক্রন্দ বিন্দু পান করাত্ত তাঁহাদিগের দিবাভাগের বিরহ জন্য সন্তাপ পরিত্যাগ হইল এবং শ্রীকৃষ্ণও তাঁহাদের সলফুলহান্য দার্ তয়োর্যশোদারোহিণ্যে পুত্রয়োঃ পুত্রবৎসলে। যথাকালং যথাকামং ব্যধন্তাং পরমাশিষঃ। গতাধ্বানশ্রমো তত্র মজ্জনোমর্দনাদিভিঃ। নীবীং বসিত্বা রুচিরাং দিব্যস্রগ্রন্ধমণ্ডিতো।

## रिकारकावनी।

এবং তাদামাননাং খাভ্যামুক্ । নাজোর্ধ যোরাহ তয়েরিতি খয়োরপি ছে প্রত্যের খপুত্রভাবেন লালনভরং বোধয়তি য়থাকালমিতি শরনাদে নামার প্রদোষাদে চ সময়ে বিধেয়ায়সারেল ইত্যর্থ: য়থা কামং পুত্রেয়া: য়য়োর্বা ইচ্ছায়সারেল। য়থেত্যাদিকয়ো
বিল্ফায়েল পাঠঃ কচিৎ। পর্মা উৎকৃষ্টা আশিষঃ উপভোগান্ সম্পাদিতবত্যো মতঃ পুত্রবংসলে। আনেন প্রাগন্ধারেলপ্রাপিণালিধন চুখনাদিকং কুশল প্রশ্ন সর্বাদ নিরীক্ষণাদিকঞ্চ তথা শুভান্তার্ত্রাদিকঞ্চ স্থতিতং ॥

আণীবিধিননেব প্রপঞ্চয়তি গতেতি যুগাকেন গতাধ্বানেতি নপ্রমোহশ্রমঃ সচেশ্বরহাৎ প্রীময়রলীলাঞ্চীকারেণ তন্তাভাবত্বন-শ্রমঃ শ্রম এবেতার্থঃ সংপ্রতি ক্ষণং বিশ্রান লীলায়াং বিগতাধ্বশ্রমাবিতার্থঃ। আদিশক্ষেন কেশপ্রসাধন জলমার্জনাদীনি। স্নেছভর সংজ্ঞান ক্রমোল ক্রমোলজনতাদাবুক্তিঃ। যথা জলেন ধূলিমপসার্য্য পশ্চাৎ স্থান্ধি ক্রেরোণ তং। নীবীমিতি অজহল্লক্ষণয়া পরিধান বস্তুঞ্চ উত্তরীয়স্য যজ্ঞোপবীতাং। প্রাগনপেক্ষর্যাৎ অঞ্লেপনাদি শোভা ব্যবধায়ক তয়া ত্স্যাগ্রহণান্ত। ভূষণানামহক্তির স্ত্রাদীনা-

### ক্রমসন্দর্ভ:।

প্রমানিষঃ উৎক্টোপভোগান্ ত্র গোর্চমধ্যে নিজাবরোধ প্রাদাদে গতঃ আধ্বনঃ অধ্বদয় প্রিমা যয়োঃ। টেরলোপ আর্যঃ দন্দের্পপাঠে গতাধ্য মানিত্যর্থঃ। ব্রুট্লুক্ ছালদাঃ। সম্প্রতি কাণং বিশ্রমাণীলায়াং বিগতশ্রমানিত্যর্থঃ এবং গোপালন ভূদাদ্যয়-করণোক্ত প্রকারেণ॥

## ত্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বথাকানং পুত্রোর্বাঞ্ভিং ভক্ষ্যাদিকমন্তিক্রম্য যথাকালং প্রদোষাদিকং ভোজনকালমন্তিক্রম্য প্রমাশিবো ভক্ষ্যপরিধেয়াদি-ভোগান্॥

ন এনোইন্দ্রম: দচেখরতাররলীলয়া তদ্যাভাবত্তনপ্রম:। গতোইধ্বনোইনপ্রম: স এব যয়োতৌ। নীবীং পরিধানবস্তুং ॥

বিনয় প্রকাশক কটাফ দর্শনরূপ সৎকার পাইয়া গোঠে প্রবিষ্ট হইলেন। তদনন্তর পুত্রবংসলা বশোদা এবং রোহিণীদেবী সময় ও অভিলাধাসুসারে সেই ২ পুত্রের প্রতি পরম আশীষ প্রদান করি- কেন। রামকৃষ্ণ ছই আতায় মজ্জন ও উন্মৰ্দনাদি দ্বারা পথপ্রান্তি নিবারণপূর্বক মনোহর বসন পরি-ধন করিলেন, পরে দিব্য মাল্য ও দিব্য গদ্ধে ভূষিত হইলেন। তাহার পর জননী স্থাদ অন্ন আনিয়া

জনম্যুপহৃতং প্রাশ্য ষাদ্মমুপলালিতো। সংবিশ্য বরশয্যায়াং স্থথং স্বয়পতুর্ত্র জে। এবং স ভগবান্ কৃষ্ণো রন্দাবনচরঃ কচিৎ। যথো রামমূতে রাজন্ কালিন্দীং স্থিভির্তঃ। অথ গাবশ্চ গোপাশ্চ নিদাঘাতপপীড়িতাঃ। ছুফং জলং পপুস্তম্যা স্তয়ার্ভা বিষদৃষিতং।

### বৈষ্ণবতোষণী।

মিব স্নানখাভাবেন তেষামপরিবর্ত্তনাথ প্রাতরেব তদাধিক্যোচিত্যাক্ত। জননীভাামুপদ্বতং পরিবিষ্টং প্রাশ্ব প্রকর্মেণ স্থানাশিত্ব। উপলালিতৌ তাদ্পাদি মুখবাদাপর্গ স্থানালি শিবোঘাণাদিভিঃ প্রতিলালিতৌ। জ্বে ব্রুজে ত্রধ্যেইবরোধান্ত ন হাপ্রাদাদে। তথাচ পালোক্তরথণ্ডে বর্ণিতং। তামিংক ভবনশ্রেষ্ঠে রম্যে দীপৈবি রাজিতে। শ্লেক বিচিত্রপর্যক্ষে নানা পূক্ষবিবাদিতে। তামিন্ শেতে হিনঃ কৃষ্ণং শেবো নারায়ণো যথেতি বর্শয্যায়াং দিব্যপর্যক্ষোপরি সংবিশ্ব শ্রীগাত্তং প্রদার্য জনেন ক্রীভার্থং নিদ্রাশং কণং বিলখো বোধ্যতে। তদেব স্বয়তি স্থং যথাস্যাদিতি। স্থি দাস্যাদি ক্রভোপন্থত তামুল্ সমর্পন চামরান্দোলন পাদাক্ষ স্থাহন ন্যা গোঞ্জিত গানাদি স্থাপ্রাব্যবিত্রেগ্রা

অত্রাধ্যায় সমাপ্তাকরণং ক্রম প্রাপ্তামিপ সর্ব্ধ হংখময় তয়া তাকাং কালিয় দমন লালামহ্ম্মতা বৈচিত্তাং। অহ্মত্রামাঞ্
তল্তাং আবেশাদের তাং প্রথম ভাগতোর কুমারদ্ধামিপ তন্মাত্রমূক্রাধ্যায়ঃ সমাপ্তিষাতে। পুনন্দ বিংরতাপি তত্র স্বয়ং ভগরতি
যম্নায়াঃ সদোধোনাপাত ইতি শ্রোত্বামপরিতোষমাশয়া বিলোক্য দ্বিতাং ক্রফামিত্যেকেনের পদ্যেন সালীলা ক্রমিয়্তে।
রাজপ্রশ্ন সম্দিশু মনোবেগছাদেরতু বিস্তার্থিরতে। অথ তথৈবোপক্রমতে এবমিত্যাদিনা এবং পুর্ব্ধান্ত প্রকারেণ গোপালন
ভূঙ্গান্ত্রকরণাদিনেতার্থ:। স ব্রজ্জনৈক জীবনভূতো কুলাবনচরো ভগরান্ ক্রফ ইতি ভগরতায়ামপি সার্গ্রিত স্থান্ত ।
ক্রিং ক্লাচিং গোচারণারস্তর্থমা নিদাবে। রামং বিনা ইতি অল্পানেন তাদৃশ সাহস নিষ্ধেময় মাতৃশিক্ষা কালিয়য়্ল প্রবেশো
নিরার্গ্রেতিত সন্তার ত্মিন্ দিন এব তব্র গত ইতি ভাব:। বৃত্তো বেষ্টিতঃ শ্রীম্পদন্দর্শনাদ্যর্থং সর্ব্বোমের প্রেমপ্রদ্ধা পরিতো
ভিকাগননাং বিশেষতঃ স্বেহন ব্রজেশ্বর্যা অঞ্শাসনাচ্য।

গাবশ্চ গোপাশ্চ অথানস্তরমের পপুরিতি গাবস্তাবদন্যত চালিতা অপি নিদাযাতপপীড়িতাঃ সত্য স্তক্ষণমুৰ্দ্ধাং যমুনাতীরাং দৃষ্ট্র পশু তরা তদ্দোষাজ্ঞানাদের ক্রতগত্যা প্রবিশ্ব পথুঃ। গোপাশ্চ তং পীড়িতা এব কিন্তু প্রসিদ্ধাং তদ্দোষং জানস্ত স্তাসাং মৃতিং দৃষ্ট্র। দাবীব জিহাসরা পপুরিতি জ্ঞেরং। অতএব গোপাশ্চেতি তদনস্তরমুক্তং। তাশ্চ তেচাগ্রগামিনঃ কতিচিদেব জ্ঞেরা আইক্ষেট্যাকাক্ষিমেন পশ্চাদিত্যক্তং তৈরশক্ষরাং। সংগ্যাভীত গোচারণার সমস্তাভাগশ এব গল্পং তেষাং যোগ্যহাং। পশ্চাশগমিনা আক্রিক্ষেন দৃশ্যমানানাং গবাং অগি তংপানাস্ত্রবাং দৃষ্ট্রে কারণমাহ বিষদ্ধিত্যিতি॥

#### क्रमम्बर्धः।

ত্রপ্রকাবণমাহ বিষদূষিত্মিতি।

## এবিখনাথচক্রবর্তী।

এবং কার্ত্তিক গোপাইনীদিন লীলাং সমাপ্য তর্ষীয় নিদাবগতস্য ক্স্যচিদ্দিনস্য লীলামাহ এব্নিতি রামন্তে ইতি জন্মক শান্তিক সানার্থং মাতৃভ্যাং তস্য তদ্দিনে গৃহ এবোপবেশিতভাং ॥

গাব ইতি পশ্চাৎ শনৈরাগছেন্তং ক্রঞ্মনপেক্য ত্যার্তন্তাৎ ক্রতগায়িন্যঃ ওদকুক্রতাঃ কেচন গোপাশ্চ ॥

দিলে ভোজন করিয়া রমণীয়শয্যায় শয়নপূর্বক পরমন্ত্থে নিদ্রা গেলেন। হে রাজন্। ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ রন্দাবনে পর্যটন করত ঐ প্রকারে কাল্যাপন করিতেছিলেন। এক দিবদ বলরামকে না বলিয়া অন্যান্য স্থায় পরিবৃত হওত কালিন্দীক্লে গোচারণ করিতে লাগিলেন। হে মহারাজ! কালিন্দীর জল মধ্যে কালিয়নামে একটা ভয়ঙ্কর বিষধর ছিল, তাহার বিষে কালিন্দীর জল সর্বদা ভয়ানকরপে দূমিত হইয়া থাকিত। গো এবং গোপগণ তমিকটে গিয়া নিদাঘ ও আতপে সাতিশয় আর্ত্ত হুইল

বিষাম্ভ শুজুপস্পূশ্য দৈবোপহতচেতসঃ। নিপেতু ব্যসবঃ সর্বে সলিলাত্তে কুরুদ্ধ।
বীক্ষ্য তান্ বৈ তথাভূতান্ কুক্ষো যোগেশ্বরেশ্বরঃ। ঈক্ষয়াহ্মতবর্ষিণ্যা স্বনাথান্ সমজীবয়ৎ ॥২৯
তে সংপ্রতীতস্মৃতয়ঃ সমুখায় জলান্তিকাৎ। আসন্ স্থবিস্মিতাঃ সর্বে বীক্ষ্যমাণাঃ পরস্পারং।
অন্ত্যংসত তদ্রাজন্ গোবিন্দাসুগ্রহেক্ষিতং। পীশ্বা বিষং পরেত্স্য পুনরুখানমাত্মনঃ॥ ৩০ ॥

### शिवतश्वामी।

সম্প্রতি সদ্যএব ইতা প্রাপ্তা স্মৃতি হৈ তে সম্প্রতীত স্মৃত্যঃ। যদা সম্যক্ প্রতীতা প্রতি প্রাপ্তা স্মৃতি হৈতে তথেতি॥৩০॥

### বৈফবতোষণী।

এতচ্চ সর্ক্ষা শ্রীভগনতো ভাবি লীলা বিশেষধিষ্ঠাতৃশক্তি বৈভবনেবেতাাই দেবো ভগবান্ তত্তেদং দৈবং লীলাশক্তিবৈ দবং তেনোপহতং জ্ঞানং নেষাং তে তত্ত্বং ঈশচেষ্টিত ইতি বক্ষাতেচ স্বচ্ছেনাছত কর্মণেতি উপস্পৃশ্য কিঞ্চিদাচন্য বিষাম্ভ ইতি পুন্কজি তাহিশেষ বিষক্ষা। ব্যাসৰ ইবাত্রচ তাদৃশ দৈবনেব কারণং॥

বৈএব ঈক্ষেত্যবিলদং বোধয়তি যতঃ স্থনাথান্ অনন্যগতীন্ অতএবায়তবর্ষিণা। আক্ষতানাং প্রাক্ত নম্ত্যিব তেষাং তদীনা নামেকং জীবনহেতুং কাক্ণাং বর্ষিতুং শীলং বস্তাঃ। বদ্ধা অমৃতং তাদৃশং কাক্ণাাশজলং তদ্ধিণা। নথোক্তং দিতীয়ে। এইৰ এজে বজ্পশূন্ বিবতোয়পীতান্ পালানজীবয়দম্ভাহ দৃষ্টিবৃষ্টোতি। সম্যগ্নানি শোকাদিনিরাসেন যুগপদেবাজীবয়ং স্থানকবোং। তাদৃশা শক্তিন ক্লিনা। কিন্তু স্বাভাবিক্যেবেত্যাহ যোগেশবেশ্ব ইতি বহুপাদনা বিশেষেণৈৰ যোগেশ্বাণামিপ তৃত্তিকিবিত্যথাঃ। ২৯ স্বিশ্বিতাঃ স্বযুগ্রেবিৰ স্কের্ধামেকদৈৰ সদ্যাং সমুখ্যানাং প্রস্পারং বীক্ষ্যাণা ইত্যন্তবিশ্বা স্ভাবাং।

গোবিল্প্য গোকুলেক্স্যান্ত্রহে ফিত্মযুমংসত অনুমিত্বস্তঃ। যথা বিষং পীথা প্রেত্স্যাপ্যায়নঃ পুনুক্থান্মিতি এতদপ্যভাৱ-বাং আয়ুনাং মোক্ষ্মনুক্ত্যতি জেয়ং হে রাজনিতি ভ্রাদৃশামেত্দ্যুক্তমেবেতি ভাবঃ ॥ ৩০ ॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

সন্ধান্ত্ৰপাৰি সমাধানাৰ্থনাছ দৈবেতি। দেৱো ভগবান্ ত্ৰেগ্ৰং ভাবিলীলাশক্তিং বৈভবং দৈনং। ব্যাসন ইব অত্ৰ চ তাদৃশ দৈব্যাসক কবিৰং জেলং ॥ ২৯ ॥

প্রনক্থানং গোবিশামুগ্রহেফিতং তদ্ধেতুকমন্ত্রমণ্যত ॥ ৩०॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

দেবো ভগৰাংস্তল্যেদং দৈবং লীলাশক্তিবৈভবং তেনোপহতবৃদ্ধয়ঃ। ক্ষেনোছুত কর্মণে ইতি বক্ষ্যাণরাং। ব্যস্ব ইতি লীলা-সেষ্ঠিবাধং বোপ্যায়েবৈৰ নিত্যানাম্পি তেখানস্নাজা্দ্য তথা দশ্নাং॥ ২৯॥

তে জনান্তিকাং সমুখায় স্থবিশ্বিতা ইতি মৃতা এব বন্ধং কেন জীবিতাঃ কেনাপ্যোধধেন বিষহ্বমন্ত্রেণ বা পরম্পারনিতি সংগ কিং গুণোত দুহস্যং জানাদীতি প্রত্যেক প্রশ্নাং। এবং মহাদন্দেহে প্রবর্তনানে ভো বন্ধায় আং মনৈবৈত্তৎ কারণং জনেন সর্ক্রগানি শ্বন্ধন্ত তি গর্গাচার্য্যবচন শ্বরণাৎ সম্যাবগ্রনিতি কেনাপ্যক্তে সতি সর্ব্বে এব সম্যক্ প্রকাবেণ প্রতীতা প্রতীতি বিষ্ণীক্তা শ্বাত স্ত্রদীয়া বৈ স্তথাভূতা আসন্নিত্যবন্ধ ॥

অন্ন অনন্তরনৈক্মত্যেন ব্রজর্মজেষ্টনের শ্রীনারায়ণেনাবিষ্টস্য গোবিন্দস্য অনুগ্রহেক্ষিত্মের কারণমংসত। যত্মং পীরা বিষমিতাদি॥৩০॥

এবং পিপাদায় আকুল হওয়াঁতে সেই ছুফ জলই যথেক পান করিল, হে কুরুদ্ধঃ! দৈবোপহতচিত্ত হইয়া দেই বিযাক্ত বারি পান করিবামাত্র দকল ব্যক্তিই গতাস্থ হইয়া জলোপান্তে পতিত
হইল। পরস্ত যোগেশ্বর দিগের ঈশ্বর ভগবান্ হরি যথন তাহাদিগকে তজ্ঞপ অবলোকন করিলেন
তৎক্ষণেই অমৃতবর্ষিণী দৃষ্টি ধারা পুনজ্জীবিত করিলেন। হে রাজন্! ভগবান্ আপনি ঐ সকল
ব্যক্তির নাথ, ইহাতে তাহাদিগকে ঐরপে পুনজীবিত করা ভগবানের বিচিত্র কর্মানহে॥ ২৯॥

. সে যাহাহউক সেই সকল ব্যক্তি জলসমীপ হইতে উত্থিত হইয়া পরস্পারকে নিরীক্ষণ করত দবিস্মাচিতে কিয়ৎক্ষণ দাঁড়াইয়া রহিল। তাহাদিণের স্মৃতি সম্যক্পকারে প্রতি প্রাপ্ত হইয়াছিল

॥ # ॥ ইতি শীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংদ্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং দশমক্ষে বৃন্দাবন ক্রীড়ায়াং ধেনুক্বধো নাম পঞ্চশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ >৫॥ # ॥

বাদরায় পিরুবাচ॥

বিলোক্য দ্বিতাং কৃষ্ণাং কৃষ্ণঃ কৃষ্ণাছিনা বিছুঃ। তস্যা বিশুদ্ধি ছিন্ম হিচ্ছন্ সূপং তমুদ্বাসয়ৎ ॥১॥ রাজোবাচ ॥

কথমন্তৰ্জলেহগাৰে ন্যগৃহ্লান্তগবানহিং। স বৈ বহুযুগাবাসং যথাসীদ্বিপ্ৰ কথ্যতাং॥২॥

## श्रीशतकामी।

## ॥ \*॥ ইতি জীদশমে পঞ্চদশ:॥ \*॥

বোড়শে কালিয়সোকে। নিগ্রহো যমুনাইদে। তৎপত্নীভি অতেনাথ ক্লেনাগুগ্রহা কৃতঃ। হলা রাসভদৈতেয়ান্ ক্র্বিচান ক্লানালং। প্রীতোহনুতাৎ ফণারঙ্গে কালিয়স্য কলানিধিঃ॥ • ॥

উদ্বাসয়ৎ নিঃসারিতবান্॥ ১॥

বছনি বৃগানি আবাদো বদ্য তম্হিং। স বৈ আহি: অজলচরোছপি তামিলস্তর্জনে যথা যেন প্রকারেণাদীং। অথবা ব্যনি

### देवकवटकावनी ।

## ॥ \* ॥ देखि औरवस्वरकांवगार मनगिव्यमार शक्तमः ॥ \*॥

কৃষ্ণামিতি বৰ্ণতো নামতশ্চ অতঃ স্থান্ত্ৰস্যা ছবিব্ৰত্ত্বনাবশ্যপ্ৰতিকাৰ্য্ত্ব্যভিপ্ৰেতং। ক্লফেনাহিনেতি মহাছবিব্ৰমন্ত্ৰ্যুক্তং ন কেবলং তস্যা এব তদ্ধিতারাভূৎ অপিতু সংব্ৰেমাপ যতঃ ক্লফঃ ক্ৰতি ছংখানীতি জলপানাদিসিদ্ধা ব্ৰহ্মস্য মহাতীৰ্থাদেবলাদিনা জগতামিপি দমনাদিনা কালিয়স্যাপি হিতাচরণাৎ বাল্যশীলারসাবিষ্টসাপি তস্য পূৰ্ব্বিৎ আবস্বে প্ৰথ্যমপ্যালয়ত ইত্যাহ বিভূবিতি॥ ১॥

ভগবান্ সর্বেণাপি প্রকারেণ কর্তুং সমর্থ: তথাপি কথং কেন প্রকারেণেতি বৈ চ। স চ ব্রুগুগাবাসমিতি বিশ্রুত্বাং বংনি

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

## ॥ 🕶 ॥ 🏻 रें ि श्रीनभरम जन्मन्दर्छ श्रकनभः ॥ 🛊 ॥

বহুগুগাবাসমিতি বিশ্বত্থাং বহুনি যুগানি আবাদো যত্ৰ তাদৃশং যথা ভৰতি তথা যথাস্যাত্তথা কথাতামিত্যেবাৰয়: ॥ ১ ॥ যব্যপি মুনীন্দ্ৰেণ তবিশেষত্থেশক্ষা সজ্জিপ্য কথিজং তথা তদজানেন বা তল্লীলা সামান্যাভিলাযাদেৰ তথা পৃষ্টমিতি দশ্যতি ॥ ২ ॥

### শ্ৰীবিশ্বনাগচক্রবর্তী।

॥ 🛪 ॥ ইতি সারাথদিশিন্যাং হ্রিণ্যাং ভক্তচেতসাং। 🛮 দশমেহত্মিন্ পঞ্দশং সম্বতঃ সক্তঃ স্তাং ॥ 🕸 ॥

ন্যগৃহ্ণৎ কালিয়ং ক্ষো দর্শবন্ স্বমপাদ্ জং। স্বতোহহিছি: প্রসন্ধান্ ধোড়শে নিরসারয়ৎ॥ • ॥

ক্ষঞাং যমুনাং উদবাদয়ৎ তন্মালিঃদারিতবান্॥১॥

বহুনি যুগানি ব্যাপ্য আবাসো যত্ৰ তাৰণা স্যাত্ৰণা আসীং বিশেষতঃ প্ৰকৰ্ষণ কথ্যতাং॥ ২ ॥

অতএব কালকৃট পান করিয়। মরণানন্তর আপনাদের যে পুনরায় জীবন লাভ হইল তাহাত্র প্রতি ভগ-বান্ গোবিদের অকুগ্রহ দৃষ্টিকেই কারণ বলিয়া মানিতে লাগিল ॥ ৩০ ॥

## ॥ 🛪 ॥ ইতি দশমে পঞ্চদশ ॥ 🕸 ॥

যোড়শ অধ্যায়ে যমুনাহ্রদে শ্রীকৃষ্ণকর্তৃক কালিয়নিগ্রন্থ এবং তৎপত্নীদিপের স্তবে তাহার প্রতি শ্রীকৃষ্ণের করুণা। ।

শুকদেব কহিলেন, হে রাজন্! কালমর্প কালিমবারা কালিন্দীর জল দুর্ষিত দেখিরা ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ তাহার বিশুদ্ধি অন্তেষণ করত সেই সর্পতে নিগ্রহপূর্বক তথা হইতে নিংসারিত করিয়া দিয়াছিলেন॥ ১॥

রাজা পরীক্ষিৎ জিজ্ঞাসা করিলেন হে বিপ্র! ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ কালিন্দীর অগাধ জলমধ্যে কালিয়

ব্রহ্মন্ ভগবতন্তস্য ভূমঃ স্বচ্ছন্দ্বর্ত্তিনঃ। গোপালোদারচরিতং কন্তৃপ্তোম্তং জুধন্॥ ০॥

কালিন্দ্যাং কালিয়দ্যাদীদ্ধু দঃ কশ্চি ছিষা মিনা। শ্রেপ্যমাণপয়া যশ্মিন্ পতস্ত্যপরিগাঃ থগাঃ ॥ ॥

## ञीधतवागी।

যুগানি আবাসো যথা ভবতি তথা বেন প্রকারেণ স বৈ তত্ত্রাসীদিতি কথাতামিতি॥২॥ গোপালেন গোপালনেন ষত্দারচরিতং তদেবামৃতং অতঃ কথ্যতামিতি॥৩॥ শ্রপ্যমাণং প্রামানং প্রো যস্য সঃ অতঃ উপরি গছন্তঃ থগা যশ্মিন্ পতন্তি॥৪॥

## বৈষ্ণবতোষণী।

যুগানি আবাদো যত্ত তাদৃশং যথাস্যান্তথা যথাসীত্তথা কথ্যতামিত্যেবাষয়:। বিপ্র হে পরমবিদ্যাপ্রবীণ। তথাচ যাজ্ঞবক্ষা:। জন্মন-আন্ধণো জ্ঞেয়: সংস্কারৈদ্বি জি উচ্যতে। বিদ্যয়া যাতি বিপ্রস্থং ত্রিভিঃ প্রোত্তিয়লক্ষণমিতি॥ ২ ॥

ষদ্যপি শ্রীমুনীক্রেণ তদ্বিশেষত্বংশশয়য়া সংক্ষিপ্য কথিতং। তথাপি তদজ্ঞানেন রাজ্ঞা তল্পীলা সামান্যাভিলাষাদেব তথা দৃষ্টমিতি তদ্বাক্যেনৈব দর্শয়তি। ত্রদ্ধয়িতি ভগবত ঐশব্যাদি ঘট্কযুক্তস্য ভূয়ং সর্বগাপি সর্বাতিশয়তস্য তত্ত্বাপি অছন্দবর্তিনঃ বৈর্বীলাপ্রকা শিনঃ এবমেবং ভূতস্য গোপালজাত্যয়ূরপং উদারং সর্বতোহিপি মহৎ প্রমানন্দ্যাভূ বা যচ্চরিতং ভজ্জ্য়মাণঃ কন্তৃপ্যেৎ অত্ত্তী হেতুরম্তমিবেতি॥৩॥

প্রিক উবাচ ইতি তদেবং নিশম্য সবাসনত্বন তত্মিন্ জাতদেহ: স্থত্:থাত্মকং সর্বমেব তাদৃশায় নিবেদনীয়মিতাভিপ্রায়েণ।
প্রিক্রকবাসিত্:খময়নিজ্যু:খাত্মকমপি তরিবেদয়ন্ শুক্বদ্যথাশ্রুতমেবোবাচ নত্বন্ত্রেব বিস্তার্যাপীত্যর্থ:। কালিল্যাং এদ ইতি
তস্যা দক্ষিণভাগে বর্ত্যমান্য তস্য তকার্ত্রম্বাং ভ্রাঃ প্রবাহন্ত্রেরত: পৃথগেবোহাঃ। অন্যথা তদ্ বিষ্কাল্যন বাদবকুলাবাসশ্রীমধ্প্র্যাদিব্যাপ্তে:। স তু কালিয়স্য বিষ্থিনা প্রণ্যমাণপ্রা আসাং উপরিগা উদ্ধং গছতঃ: খগা ইতি ত্রাপি দ্রগ্রমভিপ্রেতং॥ ৪॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

ব্ৰহ্মন্নিতি স তু তৎপ্ৰীতয়ে স্বত্নখকথানিবেদনায় চ নাত্যস্তমৰ্থেইভিনিবিশ্য যথা শ্ৰুতমেবোবাচেত্যৰ্থ:॥ ৩॥ ৪॥

#### ত্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

গবাং স্নেৰেণ সৰ্বভেক্তশ্ৰোত্ৰাণীক্ৰিয়াণাঞ্চ পালনেনোদারং স্থুপদাত্চরিতং ॥ ৩ ॥ কালিন্দ্যাং হ্রদ ইতি হরিবংশোক্তের্যোজনপ্রমাণস্তম্যা দক্ষিণে ভাগে তৎপ্রবাহেণাস্পৃষ্ট এব । অন্যুথা ভদ্বিসংপ্তকপ্রবাহবতী সা মথুরাদিদেশস্ত্তনেরব্যবহার্যোত্রবিষ্যদিত্তি জ্ঞেয়ং । শ্রপ্যমাণং পচ্যমানং পয়ো যস্য সঃ ॥ ৪ ॥

সর্পকে কি প্রকারে নিগ্রন্থ করিয়াছিলেন, আর সেই সর্প কি প্রকারে বছ্যুগপর্যান্ত তমধ্যে বাস করিয়াছিল বলিতে আজ্ঞা ইউক॥২॥

ব্ৰহ্মন্! ভগবান্ শ্ৰীকৃষ্ণ সৰ্বব্যাপী, স্বেচ্ছাত্মসারে সর্বত্তি বর্তমান হয়েন, ভাঁহার গোপালনদ্বারা যে উদার চরিত্র তাহা অমৃতস্বরূপ, সেই চরিতামৃত সেবা করিয়া কাহার ভৃপ্তি বোধ হইয়া থাকে ?॥ ৩॥

শুক্দেব কহিলেন রাজন্! কালিন্দীর মুধ্যে অন্যএকটা ব্রদ ছিল, তাহার অভ্যন্তরে কালিয় বাদ ক্রিত। কালিয়ের বিষামিদারা দেই হ্রদের জল পাক হইয়া সর্বদাই ফুটিত। অতএব তাহার উপর দিয়া পক্ষি প্রশৃতি থেচরগণ গমন করিলে ভন্মধ্যে পতিত হইয়া তৎক্ষণাৎ প্রাণত্যাগ করিত॥ ৪॥ বিপ্রাস্থা বিষদোর্শ্মিনারুতেনাভিমর্ষিতা:। খ্রিয়স্তে তীরগা ষদ্য প্রাণিনঃ স্থিরজঙ্গমাঃ॥ ৫॥ তং চণ্ডবেগবিষবীর্য্যবেক্ষ্য তেন তুন্তাং নদীঞ্চ ধলসংযমনাবতারঃ। কুষ্ণঃ কদম্বমধিরুহ্য ততােহতিতুঙ্গাদাক্ষোট্য গাঢ়রসনােন্যপত্তিষােদে॥ ৬॥ সপ্রিদঃ পুরুষসার্নিপাত্বেগসংক্ষোভিতােরগবিষােছ্সিতামুরাশিঃ।

#### मी धराया भी

কিঞ্চ বিপ্রস্থাতা অধুকণাযুক্তেন বিষোদকতরক্ষপর্শিমাক্ষতেন স্পৃষ্টা যদ্য তীরগাঃ যিরস্তে স হ্রদ আদীৎ ॥ ৫ ॥
তং কালিয়ং চণ্ডোবেগো যদ্য তদ্বিমেব বীর্যাং যদ্য তং। ক্ষত্বমিতি ভাবিশ্রীক্ষাচরণস্পর্শভাগ্যেন একস্ততীরেছপি ন শুকঃ।
অমৃতমাহরতা গ্রুতাক্রাপ্তথাদিতি পুরাণান্তরং। আক্রোট্য বাহুং করতলেনাহত্য গাঢ়া দৃঢ়বদ্ধা রদনা যেন দঃ ॥ ৬ ॥

তদা স্প্স্য হ্রদ: পুরুষশ্রেষ্ঠ্য পতনবেগেন সংক্ষোভিতানাং উরগাণাং বিবৈক্লমিতোহমুরাশির্যস্য স:। পর্যাক্ পরিত: ধুয়ং

### रेवक्षवरजामगी।

বিপ্রন্মতেতি প্রপ্যমাণপয়ন্তরা সদা জবেন তৎফণানামূচ্চলনাৎ ইতি মারুতস্যাপি দাহক স্বমূক্তং। অন্যশ্চ বিশেষং প্রীহরিবংশে।
দীর্ষং যোজনবিন্তারং ত্তুবং ত্রিদশৈরপি। গন্তীরমক্ষোত্য জলং নিক্ষপামিব সাগরং। হুংখোপসর্গং তীরের স্সর্পৈবি পূলৈ বি লৈ:।
বিষারণিভবস্যাগ্রেধ্নেন পরিবেষ্টিতং। তৃণেশ্বপি পতৎস্বপ্সু জলস্ত ইব তেজসা। সমস্তাদেঘাজ্বনং সাগ্রং তীরেশ্বপি হুরাসদ্মিতি।
এবং ভূমিগুহারাং তৎপুরী জলস্ত্তবিদ্যাে জলমধ্য এব বা ॥৫॥

বেগং শীঘ্রপ্রসর্পন্ট চণ্ডেতি অপ্রতিবার্যাত্বাদিতোরং নি:সার্য্য এবেতি ভাবং। তেন কালিয়েন হেতুনা। অধিকত্ব তচ্ছিধরে আকৃত্ব। তথাচ তত্ত্বৈব আরুত্-চপলং ক্লফঃ কদন্ধশিথরং মুদেতি। ততঃ কদন্ধ গাতৃরসন ইতানেন কেশাদীনামপি গাতৃবন্ধন্ধশিলকাতে। তথাচ তত্ত্বৈব বন্ধা পরিকরং দৃত্মিতি নাপতদিতাত্ত হেতুং থলানাং সংযমনায় অবতারং বলোকাদ্বতরণং কিন্তা মৎস্যাদ্যবতারা অপি যস্য স ইতি কালিয়দমনার্থিমিত্যর্থ:॥ ৬॥

পুরুষসারত্বাদেব নিপাতে বেগঃ। অন্যতৈঃ। যথা। পুরুষস্য ভগবতঃ সারেণ কিঞ্চিছলপ্রাকট্যেন যো নিপাতত্ত্ব্য বেগেন

#### क्रममण्डः ।

বিঞ্মতেতি জলস্তম্ভবিদ্যমা তন্মধ্য এব তৎপুরী হৃঃখোপসর্পং তীরেষু সমর্গৈবি পুলৈরিতি আহরিবংশদৃষ্ট্যা বিলেছপি ॥৫ ॥৬॥ পুরুষস্য ভগবতঃ সারেণ কিঞ্ছিদ্পপ্রাকট্যেনেত্যাদ্যপি গ্রাহ্থ।

## <u>ज</u>ीविश्वनाशहक्यवर्षी।

বিঞ্মতা অস্কণ্যুক্তেন বিষোদকতরঙ্গম্পর্শিয়ারুতেন অভিমৃষ্টাঃ ম্পৃষ্টাঃ॥ ৫॥

তং কালিরং কদষ্মিতি ভাবিনা শ্রীক্লচরণস্পর্শভাগ্যেন স একস্তত্তীরে ন শুষ্ক: অমৃতমাহরতা গরুত্মতাক্রান্তত্বাদিতি পুরাণাস্তব-মিতি শ্রীস্থামিচরণাঃ গাঢ়ং দৃঢ়ং বদ্ধা রসনা রসনাপদোপলক্ষিতাঃ কুন্তলোফীষাদয়োপি বেন সঃ। আক্ষোট্য বাহং করতলেনাহত্য ॥ ৬॥ ততশ্চ পুরুষস্য ক্লফস্য সারেণ বলেন যো নিপাতবেগস্তেন সংক্ষোভিতানাং উরগাণাং বিধৈক্লতোহস্বুরাশির্যস্য ঃ। বিশেণ

অপর তাহার তীর দিয়া যে দকল স্থাবর অথবা জঙ্গম প্রাণী গমনাগমন করিত, তাহারাও বিব-জলের তরঙ্গম্পার্শি এবং ফুট্টবারিকণাবাহিবায়ুকর্তৃক স্পৃষ্ট হইবা মাত্র তৎক্ষণাৎ মরিয়া যাইত ॥৫॥

হে রাজন্! ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ থলদমনার্থ অবতার গ্রহণ করিয়াছিলেন, তিনি ঐ ভয়কর বিষধরের প্রচণ্ড বিষবীর্য্য এবং তদ্বারা ঐ হ্রদের জল নিতান্তদ্বিত দেখিয়া তীরস্থকদমোপরি আরোহণ করিলেন। রাজন্! যদিও কালিয় কালকটের তেজে কালিন্দীতীরস্থ সমস্ত তরুলতা শুক্ষ হইয়া
গিয়াছিল তথাচ ভাবিশ্রীকৃষ্ণচরণস্পর্শ ভাগ্যবশতঃ ততীরবতী হইয়াও ঐ এক কদম্বতরু শুক্ষ হয় নাই
অথবা গরুড় অমৃতাহরণপূর্বেক পূর্বের ঐ তরুর উপরে বিসিয়াছিল, সেই অমৃতস্পর্শ হওয়াতে তাহা
অমর হয়। সে যাহা হউক, ভগবান্ সেই কদমোপরি আরা হইয়া দৃঢ়রূপে রস্না বন্ধন করিলেন,
পরে বাছ আন্ফোটন পুরঃসর সেই অত্যুক্ত তরু হইতে ঐ বিষ ক্ষলের উপর লক্ষ্ণ দিয়া পড়িলেন ॥৬॥

হে রাজন্! শ্রীকৃষ্ণ পৃতিত হইবা মাত্র সেই সর্পত্রদ তৎক্ষণাৎ সকলদিকে শত ধমুঃ পর্যান্ত

পর্য্যক্প্লুতো বিষকষায়িতভীষণোশ্বিধীমন্ ধনুঃ শতমনস্তবলস্য কিন্তৎ ॥ ৭ ॥ তিম্মন্ ব্রদে বিহরতো ভুজদশুর্থবার্ঘেমঙ্গ বরবারণবিক্রমস্য । আঞ্চত্য তৎস্বসদনাভিভবং নিরীক্ষ্য চক্ষুপ্রবাঃ সমসরত্তদম্ব্যমাণঃ ॥ ৮ ॥ তং প্রেক্টারম্বনাবদাতং শ্রীবৎস্পীত্বস্নং স্মিতস্থলরাসং ।

### শ্রীধরস্বামী

শতং প্রতঃ প্রস্তঃ। বিবেশ ক্ষারীক্ষতা ভয়করা উর্মরো বস্যা সং। বৈত্তিজ্ঞানিত্যাহ অনস্ত বলস্যেতি ॥ ৭ ॥

এবদে বিহরতো ভূমদণ্ডাহতোদক্ষোবং শ্রম্মা তওঃ স্থাদনাভিত্তবঞ্চ নিরীক্ষ্য তদসহমানঃ সর্পঃ সমস্রং সমাজ্যাম ॥

৫প্রক্ষীয়ক্ষ সূক্ষারক দ্নবহুজ্জানক ডং প্রীবংস্পীতবসনং শ্রীবংসেন সংযুক্তমূচ্চলং পীতং বসনং যস্য তং ভূজ্যাভোগেন চছাদ

## বৈষ্ণবজোৰণী।

জবেন সংক্ষোভিত:। সত্পবোরগ বিষোজ্ব বিজ্বাস্থানির্বাস সং ক্ষায়িতেতি পাঠ: প্রীচিচ্চুক্শ্রীসামিপাদানাঞ্চ সন্মত: ক্ষায়ীক্তা ইতি ব্যাখ্যানাং। ক্ষাব্যাহত্র কাথ্যরসো রক্তপীতবর্গো বা নির্বাসেহপি ক্ষাব্যাহন্ত্রীতাত্র ক্ষীরস্বামিন। তত্ত্ব্যাখ্যানাং। ধীমন্ হে বিবেকিরিতি রাজানমাশাস্মতি। ধরু: শতমিতি। ধরুৰ: প্রমাণমুক্তং। অইডির্বমধ্যে: স্যাদকুলং দাদশাকুলং। তালং ত্রিতালকো হস্তো হস্তো হা কিছুক্সচাতে। কিছুক্মং ধরু: প্রোক্তমিতি। স্বতঃ পূর্কং তাবং প্রদেশমতিক্রমাব বালা গাবশ্চ রক্ষিতা ইতি জ্বেরং। স্বনন্তং বলং শক্তির্বায়। তংক্র্ম। যবা। স্বনন্ত্র্যা নাগ্রাজ্ব্যাপি বিষাদি বলং ম্মান্ত্র্যা ত্রিষং কিং স্বপিত্

বিহরতো বিচিত্রশ্লবাদাসন্তারাদিক্রীড়াং কুর্বজঃ। বরবারণো দিগ্যন্তী তত্বছিক্রমস্য অঙ্গেত্যবারং রাজঃ শোক নিরাসার্থং সলালনসন্তোধনং॥৮॥

তাদৃশোৎপি ছষ্টোহসৌ তথাহচেষ্টতেতি কালিবস্য মহাপরাধং দর্শবন্ বিশিনষ্টি প্রেক্ষণীদ্বেত্যাদিনা ক্রীড়ন্তমিত্যক হেতু: অপ্রতি-

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

ক্ষায়িতেতি পাঠ: শ্রীস্থামীটিংস্থপ্যাপি মত:। ক্যায়ীক্কতা ইতি ব্যাপ্যানাং ॥ ৭ ॥ ৮ ॥

শ্রীষ্কং বংসং বক্ষো যদ্য পীতং বদনং যদ্য দ চ দ চ তং ভূজাকারহাত্তদ্য ভোগ এব ভূজা যতো ভূজগ ইত্যপুচাতে। তত্মান্তোগে-শ্রীবিখনাথচক্রবর্তী।

ক্ষামীকৃতা রক্তপীতবণীকৃতা ভয়করা উর্পায়ে যস্য সং। নির্যাসেহপি ক্ষায়ে জীরস্থামিনা তথা ব্যাখ্যানাং। পর্যাক্ পরিতঃ ধ্যু:শতং পুতঃ প্রস্তঃ। অপ্ততির্ধবনধ্যঃ স্যাদস্পং তৈ স্থিভি ইবেং। তালং ত্রিতালকো হত্যে হত্তে ছৌ কি দুক্চ্যতে। কি দুক্ষ্যং ধ্যু: প্রোক্তমিতি ॥ १॥

বিহরতঃ বিচিত্রজনবাদ্যনন্তারাদিনা ক্রীড়তঃ ভুজদণ্ডাভ্যাং ঘূর্ণা যেষাং তথা ভূতানাং বারাং জলানাং ঘোষং ক্রাণ্ডাত তত্তো খোষা-দেব স্বন্দন্যাভিডবং নিরীক্ষ্য তত্তং অসহমান: ॥ ৮ ॥

প্রেক্ণীয়মতি হথদমণি রূপং কালিয়ং প্রতি বিপরীতমভূদিত্যাহ তমিতি ধনবছজ্ঞাং শ্রীবংলে বিহারবলাং কায়াতং পীতবদনং প্রতি হইল, কারণ পুরুষপ্রেষ্ঠ ভগবানের পতনবেগে তত্রস্থ সর্পগণ সংক্ষোভিত হইয়া উঠিল, তাহাতে তাহাদের বিষের তেজে হ্রদস্থ জলরাশি উন্নত হইয়া উঠিতে লাগিল। অপর উগ্রতর অহিবিষে ঐ হ্রদের ভয়ঙ্কর তরঙ্গ ক্ষায়ীকৃত হইল। হে মহারাজ! সর্প হ্রদের ঐরপ প্রস্তুত হওয়া বিচিত্র নহে, ভগবান্ হরির অনন্ত বল, তাঁহার পক্ষে উহা কি আবার একটী কর্মা। ৭॥

শে যাহা হউক, বরবারণবং (শ্রেষ্ঠ হস্তিতুল্য) বিক্রমশালী ভগবান্ হরি দর্শব্রদে বিহার করিতে করিতে বাহদণ্ডে তত্রস্থ যে দকল জল আহত ক্রিতে লাগিলেন তাহার শব্দশ্রেবণ এবং তাহা হইতে আপনার দদনের অভিভব অবলোকন করিয়া কালিয়ের দহিষ্ণুতা হইল না, দে রোষবশতঃ তৎক্ষণাৎ বাহির হইয়া আদিল ॥ ৮॥

রাজন্ ! ভগবান্ প্রীক্তাফে প্রেক্ষণীয় স্থকুমার, মেঘবৎ উজ্জ্বলশ্যাম, পীতবসনধারী, শ্রীবংস শোভিত, তদীয়বদন ঈষৎহাদ্যে পরমহাদর এবং চরণদ্বয় লাক্ষারসভুল্য অরুণ, তিনি নির্ভয়ে হৃদ্য় ক্রীড়ন্তমপ্রতিভরং কমলোদরাজ্মিং দংদশ্য মর্শ্বস্থ রুষা ভুজগশ্চছাদ ॥ ৯ ॥
তন্মাগভোগপরিবীতমদৃষ্টচেষ্টমালোক্য তৎপ্রিয়সথাঃ পশুপা ভূশার্তাঃ।
কুষ্ণেহর্পিতাত্মস্থল্পকল্ত্রকামা ভূংথামুশোকভয়মূঢ়ধিয়ো নিপেতুঃ।
গাবো রুষা বৎসতর্য্য ক্রন্দমানাঃ স্বভ্রংথিতাঃ। কুষ্ণে ন্যস্তেশণ ভীতা রুদন্ত্য ইব তস্থিরে॥১০॥

## न्त्रियतचामी।

व्यदन्ष्टेयर ॥ २ ॥

স প্রিয়ো যেষাং তে তৎপ্রিয়াটেট তে স্পায়ন্টেতি তথা তে।। ১০।।

#### देवस्थवटकामगी।

ভয়মিতি তচ্চ কালিয়দ্য নির্কাদ্ধিবং স্চয়তি চক্ষু:প্রবা ইতি প্রস্তাবাদের জ্বেরং। কয়া ভূজ্যা ভূজাকার্যারেদ্য ভোগ এব সূত্র। যতের ভূজ্য ইত্যপুচ্চতে তত্মারোগেনেত্যর্থ: ॥ ৯॥

তদ্য প্রিষদ্ধা ইতি প্রমদৌহার্দ্ধ্কং। পশুপা ইতি অভাবদাবল্যেন্ অ্লিএচিডত্বং। ক্লেঞ্পিতিছিনঃ অ্লান্দ্যণ থৈতে তংদাহাব্যায় কৃতদর্পার্পনা ইত্যর্থঃ। তত্র স্থদ্য পিছ্লাত্রাদ্য়ং অর্থা দনানি কামা লোকষ্যভোগাঃ। স্থদ্ধেলন গৃহীত্যাগি
কলত্র্যা পৃথপ্তি র্নেশো বিশেষবিবক্ষা কিন্তু কলত্রপদেন কেচিল্লন্ধজ্ঞাপনীতা যে জ্যেষ্ঠান্তে চ স্থায়ো লভ্যন্তে ইতি তেষাং সর্বেযানন্যাপেক্ষরং। অত্যাভ্যাত্তীয়ে অভ্যর্থহ্বিভাঃ সন্তঃ আর্ভ্রবেণ ক্রন্ত্রো বা অত্ত্রত ছংগেনাধ্যশাকঃ বারং বারং লোচনং
ভ্যক্ত তং বিনা কথং ভবিষ্যান ইতি তাভ্যাং মৃঢ়া বিবেকছীনা ধী র্যেষাং তথাভূতা নইচেত্রনা বা সন্তঃ। যদা। নাগভোগপরিবীত
মালোক্যানে) ভূপার্ত্তাঃ অনুইচেষ্ট্রকালোক্য ছংখাম্পোকভারৈ মৃট্ধিলঃ সম্ভো নিত্রাং ছিল্প্লব্কব্রেচিইলানিনা নিপেত্রং। মৃট্ধীয়াদেব তং রবং ন প্রাবিশ্রিতি জ্লেয়ং। তজ্ঞলাল্লুত্রদেশপভনেপ্যেমাং বিষ্যাক্রান্ত

ক্রন্দমানা আর্ত্তনাদমুকৈ: কুর্মত্যা। ইবেতি লোকোকৌ। ক্রন্ত্যা: ক্রন্ত্যা: অঞ্চণি মুঞ্চ্যা:। তন্থিবে ইতি প্রম বংস্লানাং গ্রাদীনামতান্ত শোকেনাপি গুক্কতাপত্তে:। ক্র্যাচিংজ্কবিশেষ্যাতেন মৃত্যাপি প্রাণিন উদ্ধাবস্থিতিবং। আল্পান গ্রাদীন

#### क्रगमकर्छः ।

নেতার্থঃ। ভূজণ ইতি পাঠে ভোগেনেতি শেষঃ॥ ১।১•।১১।১২॥

## चीविधनाथहक्तवर्शे।

যস্য তং। यह।। শ্রিয়া লক্ষ্মীবেশরা যুক্তং বংসং হকে। যস্য পীতে বসনে যস্য সূচ সূচ তং। উরোবংসক বক্তে তামবং। ভুজরা ভোগেন ॥ ৯ ॥

পরিবীতং বেষ্টিতং। এনৃষ্টচেষ্টমিতি কালিয়দ্যোংসাহ্বর্দ্ধনার্থং কণং ভীতস্কর্বং জিতং। যথা। স্থাবে কালিয় স্থা যথেষ্টং প্রথমং দশ্যতাং বেষ্ট্যতাং অহং পশ্চাদ্দশং দশ্যিষ্যামীতি বীরদর্পেণ স্থিতং। পঞ্চপাং কেচিদ্যোপাঃ শালিক্ষেত্রস্থাঃ রুষকাশ্চ শীল্পমান্যতাং তে কীদৃশাঃ রুফে হর্পিতা লালনার্থমান্মাদ্যো থৈক্ষে।

क्षमञ्जा हेरविक क्रग्रेयब्रह्मशांक्षणाः स्थायाः ॥ ১० ॥

মধ্যে বিহার করিতেছিলেন। কালিয় বহির্গত হুইয়াই রোষবশতঃ তাঁহার মর্মান্তানে দংশন করিল এবং আপনার শরীরাভোগে বেক্টন করিয়া রাখিল॥ ১॥

দর্শনিরীরাভোগে পরিবেষ্টিত হওয়াতে শ্রীকৃষ্ণের 'চেফা দৃষ্ট হইল না। তাঁহাকে তজপ নিরীক্ষণ করিয়া তদীয় প্রিয় অথচ দথা গোপগণ অতিশয়ঃ জুঃখিত্র হইলেন এবং জুঃখ ও ,ভয়প্রযুক্ত হতবৃদ্ধি হইয়া পড়িতে লাগিলেন। হে রাজন্! শ্রীকৃষ্ণের অনিষ্টদর্শনে গোপদিগের এরূপ মোহ হওয়া বিচিত্র নহে, তাঁহারা আপনাদের আত্মা, স্কুছৎ, অর্থ, কলত্র, কাম, দকলই তাঁহার প্রতি সমর্পণ করি-

অথ ব্ৰজে মহোৎপাতান্ত্ৰিবিধা অতিদাৰুণাঃ। উৎপেতুৰ্ভুবি দিব্যাত্মন্যাসম ভয়শংসিনঃ॥ ১১॥ তানালক্ষ্য ভয়োদিয়া গোপা নন্দপুরোগমাঃ। বিনা রামেন গাঃ কৃষ্ণং জ্ঞাত্মা চারয়িতুং গতং॥১২ তৈতুনি মিতৈনি ধনং মত্বা প্রাপ্তমতিদিঃ। তৎপ্রাণা ত্তমনস্কাত্তে তুঃধশোকভয়াতুরাঃ॥ ১৩॥

### ञीधवयामी।

ভূবি ভূকল্পাদয়:। দিবি উকাপাতাদয়:। আজনি বামাঞ্জুরণাদয়:। আসন্নভয়ং শংসিতুং শীলং যেষাং তে॥১১॥ তান্ আলক্ষ্য গোকুলান্নির্জগাুরিতি তৃতীয়েনাথয়:। ভয়োদিগ্রা ভয়হেতোভীতা ভূষেন কম্পমানা ইতি বা॥১২॥ ন তং বিদ্যীতি অত্থিদ:॥১৩॥

## বৈশ্ববতোষণী।

গ্রাহ্যপ্লক্ষিতত্ত্বন মহিষ্যাদয়ো হরিণ্<mark>যাদয়শ্চ জেয়া: । পশ্ংশ্চেতি বক্ষ্যাণাৎ। তেষাং কিঞ্চিদ্রচরত্বন পশ্চাদাগননাদ্রান্নকিরিয-</mark> মিতি জ্ঞেয়:॥১০॥

অথানস্তর্মের দাকণাঃ স্বভাবতো মহাভ্যুক্ষরাঃ মহোৎপাতাশ্চ মহাত্রন্ত্রিমিত্ত স্বভাবতঃ ॥ ১১ ॥

তানিতি ত্রিকং বিনা রামেতি প্রম্পমর্থস্য স্থিপ্য গণ্ডীরস্য স্থা সাহায্যে রতস্য ত্যা স্মক্ষে তদ্ভুজ্স্য তাদৃশ্ব্যস্নতা ন স্থাবেদিতি ভাবঃ। অন্যতঃ। যধা। আলক্ষ্যের ভয়োধিগ্রা বভূবুঃ॥১২॥

অতএব নিধননেব প্রাপ্তং মহা নিতরাং ধনং স্বীয়যমূলাইদরপং স্ববিহারসর্বস্থমিতি সরস্বতীসস্থান:। অত্ত্রিদং তন্মাহাস্মনত্মল-ধানা ইত্যুৰ্থ:। নতু কথং তত্ত্বৈ তেষাং সন্দেহোস্থাতগুলাহ স এব প্রাণো জীবনং যেষাং অভন্তস্থিত্রের মনো যেষামিতি॥ ১০॥

#### ক্রমসন্দর্ভ: ।

নিধনমিতি নিতরাং ধনং এীযমুনাছদরপমিতি বাস্তবার্থ:॥ ১৩। ১৪॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ত্তিবিধাঃ ভূবি ভূকম্পানয়ঃ দিবি উন্ধাপাতাদয়ঃ আত্মনি বামনেত্রক্রণাদয়ঃ। ভগবতঃ থ্রমঙ্গলা শক্ষারাহিত্যেইপি বছ্ংপাত-প্রাকট্য তদ্যবাং গোপাদীনাঞ্চ ছঃথত্তনার্থং কিম্বা তত্তদ্ধিষ্ঠাভূদেবানামপি ক্লঞ্চে প্রীতিমন্বেনৈর্থ্যবিস্থাবণাং। ক্লঞ্গ্য ভ্রন্থ শক্ষিন উৎপাতং প্রকট্যানাস্ক্রিতি ॥ >> ॥

তানালক্ষ্য গোকুলন্নির্জগ্মু বিভি তৃতীয়েনারয়:। নিধনমেব প্রাপ্তং মত্বা নিতরাং ধনং শ্রীষমূনার্ফরপং স্ববিহারাস্পদ্নিতি স্বস্থতী-স্থাদঃ মহাশোকাৎ পশুনামিব বুদ্ধিবিবেকপ্রতীকার জ্ঞানশূন্যা বৃত্তিং সভা যেয়াং তে॥ ১২। ১০ । ১৪॥

য়াছিলেন। হে মহারাজ ! র্যভ, গাভী, রৃক্ষ, তথা বৎসত্রীগণও ঐ ঘটনা অবলোকনে ছঃথিত হইয়া ক্রন্দন করিতে লাগিল এবং শ্রীকৃষ্ণের প্রতি দৃষ্টি অর্পণপূর্বক্ ভীত হইয়া রোদনপরায়ণের ন্যায় দাঁড়াইয়া রহিল॥ ১০॥

এই সময় ব্রজমধ্যে ভূকস্পাদি আধিভোতিক এবং উল্কাপাতাদি আধিদৈবিক তথা বামাঙ্গফ ুর-ণাদি আধ্যাত্মিক এই ত্রিবিঙ্ক উৎপাত হইতে আরম্ভ হইল। ঐ সকল এপ্রকার দারুণ হইল যে, সক-লেই যেন আসম ভয় জ্ঞান করিতে লাগিল॥ ১১॥

স্থতরাং ঐ সকল উৎপাত অবলোকন করিয়া নন্দপ্রভৃতিগোপদিগের ভয়ে হৃৎকম্প উপস্থিত হৃইল, বিশেষতঃ বলরামকে না লইয়া শ্রীক্ষণ একাকী গোচারণে গমন করিয়াছেন, ইহা যথন জানিতে পারিলেন তখন নিতান্ত অধৈর্য্য হুইয়া পড়িলেন ॥ ১২॥

তাঁহারা শ্রীকৃষ্ণের স্বরূপ জানিতেন না; একারণ ঐ দকল তুর্নিমিত্ত হেতু তাঁহাকে নিধনপ্রাপ্ত মনে করিয়া তঃখ শোক ও ভয়ে আতুর হুইলেন, অধিকস্ত তাঁহার প্রতিই তাঁহাদের প্রাণ ও মন সম-

আবাল র্দ্ধবনিতাঃ দর্কে বৈ পশুর্ত্যঃ। নির্জ্ঞ প্রেণিকুলাদীনাঃ কৃষ্ণদর্শনলালসাঃ॥ ১৪॥ তাংস্তথা কাতরান্ বীক্ষ্য ভগবান্ মাধবো বলঃ। প্রহৃষ্য কিঞ্চিমোবাচ প্রভাবজ্ঞোহনুজ্স্য সঃ॥ ১৫

## গ্রীধরস্বামী।

পশুর্ভয়: অতিবংদলা: ॥ ১৪ ॥ কাতরান্ ভীতান্॥ ১৫ ॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

তে তদেক প্রিয়বেন প্রসিদ্ধাং পশুকৃত্তিকেন তদীয়বাংসল্যস্থভাবভাবিত। ইত্যর্থঃ। পশুন্দ্ তির্বাংগলগাংশে নেষাং ইতি বা অতএব দীনা ইতস্ততো মৃহঃ খলস্থো নিপ্তস্তশ্চেত্যর্থঃ। কুন্ধো ব্রহ্মনচিত্তাকর্ধকঃ কথং কুব্রাস্তীতি তদশনোংস্কাঃ স্ফঃ। স্ফা স্বভাবত এব তাদুশাঃ ॥১৪॥

তথা তাদৃশকাতগ্যং প্রাপ্তানপি তান্ বীক্ষ্য স গোকুলৈক প্রিয়োহপি বলা ভগবান্ সর্কাশক্তিম্কোহপি মাধবা সর্ক্বিদ্যাপতিব্যি অসমর্থ ইব কিঞ্চিন্ধতবান্ অস ইব চ ন কিঞ্চিন্দিট্বান্ কিন্তু তদুংখেন হংখিতোহপি তেষামেব কিঞ্চিন্ধ্যার্থং। প্রেতি। প্রকটা বহিবেব হসিয়া তৃঞ্জীমাসীং। অমং নিজাফুজস্য তবজা সিন্ধস্য হসতীতি নাল চিন্তেতি বোধমিতুমিতার্থং। এবং তেবাং প্রায়েবক্ষাব্যাগ্যাথ নাশ এব ক্রদা ত্যাবিভূতিঃ স্বভাবত এব সর্ক্রমাধানশক্তিমমন্তান্ত্রবন্ধীলয়া ইতি ভাবা। তহি কিথমীদ্শেহপি হংগ্সহটে স্বসামার্থাং ন ব্যক্তিত্বান্ ন চ তথ প্রভাবং স্পষ্টমুপদিষ্টবান্ তত্রাহ প্রভাবজ্ঞ ইতি তল্প জ্বেন তদিছাং বিনা তৎকর্ত্ব শক্তবানিত্রিং। মাধ্বপদং চেদং হরিবংশে বৃৎপাদিতং। মা বিদ্যা চ যতঃ প্রোক্তা ত্র্যা সিশো যতো ভবেং। তশ্বামাধ্বনামাসি ধবং স্বাতি কীর্ত্তি ইতি ॥ ১৫॥

## ক্রমসন্দর্ভ:।

#### बीजियाशहरू हो।

মা মবিদ্যা চ যতঃ প্রোক্তা ত্ত্যা দিশো যতো তবেং। তথ্যাঝাধবনামাসি ধবঃ স্বামীতি কীর্ত্তি ইতি ছরিবংশোক্তনিককে: প্রভাবং লীলেখর্য়ং জানাতীতি সং। তস্য স্বামুজমহাপ্রেমব্বেছপি প্রেয়া তদৈশ্ব্যানামাবরণং ক্ষেচ্ছায়রঞ্জিতলীলাশকৈয়েব জন্যথা প্রীনন্দাদীন্ শোকাবেগেন সর্পত্তদং মংকু শীঘং মিমংক্ষ্ন্ কো বার্মিছুং প্রভবেদিতি ভাবং। প্রহ্গ্যেতি মংস্করপেণ শেবনার্গেন সহ ক্রীড়ান বোচতে কিন্তু প্রাক্তক্ত্রকালিয়প্রধিমেনৈবেতি তস্য নরলীলন্ধসরণাং। কিঞ্চিলোবাচেন্ত তেবাং শোকান্ধানাং ক্ষক দিল্কুণাং উদাবরণস্যানৌচিত্যানশক্যন্তি। কিন্তু স্থেহাসশোকাভাবদর্শনং মতোন কিঞ্চিলনিইভাবমূহ্যিত্বা প্রাণজিহাসাং শিথিল্যামাস ॥ ১৫॥ `

অতএব আবাল বৃদ্ধ বনিতা সকলেই সাতিশয় কংসলতাপ্রযুক্ত কাতর হইয়া কৃষণদর্শনলালসায় গোকুল হইতে বহির্গত হইলেন॥ ১৪॥

ভগবান্ বলভদ্র অমুজের প্রভাব জানিতেন একারণ ঐ সকল ব্যক্তিকে ভাদৃশ কাতর নিরীক্ষণ করিয়া কেবল হাস্য করিলেন কিঞ্মোত্র কহিলেন না॥ ১৫॥ তেহমেষমাণা দয়িতং কৃষ্ণং সূচিতয়া পদৈ:। ভগবল্লক্ষণৈর্জ্যাঃ পদব্যা বমুনাতটং ॥ ১৬॥
তে তত্ত্র তত্ত্রাজ্যবাঙ্গুশাশনিধ্বজাপপন্নানি পদানি বিশ্পতে:।
মার্গৈর্গামন্যপদান্তরান্তরে নিরীক্ষ্যমাণা ব্যুরঙ্গ সম্বরাঃ ॥ ১৭॥
অন্তর্গ্রে ভুজগভোগপরীতমারাৎ কৃষ্ণং নিরীহমুপলভ্য জলাশয়ান্তে।
গোপাংশ্চ মূচ্যিণান পরিতঃ পশৃংশ্চ সংক্রেক্তঃ পরমকশ্যলমাপুরার্ত্তাঃ ॥ ১৮॥

### ত্ৰীধরস্বামী

ভপৰন্তং লক্ষরন্তি যানি পাদানি তৈঃ পদে: স্চিতরা পদব্যা মার্গেণ॥ ১৬॥

পদৈম গিজ্ঞানপ্রকারমাহ ইতি। বিট্পতে: শ্রীক্লঞ্চ্যা অন্যেবাং পদানাং অন্তরাস্তরে মধ্যে মধ্যে ডন্তদপোহেন গবাং প্রতীনাং মার্গে সম্বর। অপ্রমন্তা বোগিনস্তন্ত্রপাধ্যপবাদেন যথা পরং তবং মুগরন্তে ত্বদিতি ভাবঃ ॥ ১৭ ॥

ততঃ দর্পশরীরবেষ্টিতং ঐক্তিঞ্চ দ্রাল্লিরীক্ষ্য গোপান পশৃংশ্চ তথা নিরীক্ষ্য আর্দ্তাঃ পরং মোহমাপুঃ ॥ ১৮ ৪

## বৈষ্ণবভোষণী।

অবেষমাণা অবিচ্ছন্তঃ তত্ৰ হেতুদ দ্বিতং তত্ৰ হেতুঃ ক্বঞ্চং॥

ভত্ত তত্ৰ শ্ৰীচরণন্যাসভূবি। বিশোবৈশ্যা: গোপরূপা:। ভতো গোকুলপতেরিত্যর্থ: ৰস্বাদ্যভাবশ্ছান্দ্র:। অন্যপদান্তরান্তর ইতি চিরং প্রস্থিতন্য পশু পশুপবর্গ পরিবেষ্টিত্য্যাপি তদ্য পদানি ন কেনচিদাক্রান্তরীতি বোধরিতা ভূম্যৈর তাবদাস্মভূষণত্বেন রক্ষিত্তবং সর্কেষামপি প্রেমাম্পদত্মচেতনৈর্বাম্বাদিভিরপাক্ষোভাত্বেন মহাপ্রভবত্বমিতি হেতৃত্ত্বং সন্থাবরতি এবমেবোক্তং ভগবল্লকণৈরিতি ভতত দাক্ষান্ত্য্য তাদৃশানাং তাদৃশ প্রেমাম্পদত্বে কালিয়ালক্ষ্যতেচ কো বিশ্বর ইতি ভাবং॥ ১৭॥

मृष्धियगान् स्मार्शजान् পत्रिजः मर्सरमय जीतः वााभा ॥ >৮ ॥

### 🖺 विश्वनाथ ठळ वर्खी।

ভগবন্তং লক্ষরতি যানি তৈ: পদৈ: স্থচিতরা পদবা। ১৬॥

পদৈঃ পদবীজ্ঞানপ্রকারমাহ তে ইজি বিশ্পতেঃ বিশাং বৈশ্যানাং গোপানাং পতুরেধ্যক্ষস্য কৃষ্ণস্য। বছাভাব আর্যঃ। অন্যেষাং পদানামস্তরাস্তরে মধ্যে তদপোহেন গবাং শ্রুতীনাং মার্গে স্বরা অপ্রমন্তা ঘোগিনস্তত্ত্পাধ্যপ্রাদেন যুগা পরং তবং মৃগর্স্তি তহ্দিতি ভাবঃ॥ ১৭ ট

শানানতো গোপগোপীজনানাং বৈক্ষবামাহ ততশাস্তহ্ল ছদমধ্যে ভ্ৰগভোগপনীতং সৰ্পদানীববেটিতং ভো বালকা: বৃত্তান্তং তাবং কথমত কিং কালিয়েনৈব তীরাৎ ক্ষোবলাদাক্ষয় জলে পাতিতঃ কিখা কৃষ্ণ এব তীরাদবলুত্য জলে পতিতঃ তত্রাপি অবৃদ্ধা অন্যায় ক্যাচিদাদেশেন বেত্যাদি প্রশ্নে মৃ্ছিত তবৃদ্ধী ন বকুং কিমপি চেটিতঞাসমর্থান্ গোপান্ বীক্ষ্য প্রমক্ষালং ত্রা ছুচ্ছিতঃ স্কাশাদপ্যতি মৃ্ছিণিঃ ১৮॥

তাঁহারা ইতন্ততঃ শ্রীকৃষ্ণের অম্বেষণকরত যে দকল পদে ভগবান্কে লক্ষ্য করাযায়, দেই দকল পদদারা সূচিত বল্ল যোগে যুমুনাতটে গমন করিলেন॥ ১৬॥

হে রাজন্! যেমন অপ্রমন্ত যোগিগণ শুতিবর্ম যোগে গমন করত অন্যান্য পদের মধ্যে তত্ত্পাধির অপবাদপূর্বক পরমতত্ত্ব অস্বেষণ করিয়া থাকেন, তেমনি ঐ সকল ব্যক্তি গাভীসকলের বজ্মে গমন করত অন্যান্য পদের মধ্যে শ্রীকৃষ্ণের ধ্বজ,বজ্জ, অন্ত্শ, পদ্ম, যবযুক্ত পদ নিরীক্ষণ করত ত্বাস্থিত হইয়া গমন করিলেন ॥ ১৭॥

তৎপরে যথন দুর হইতে দেখিতে পাইলেন ফ্রদমধ্যে ঐক্স দর্পশরীরে বেষ্টিত ও নিরীছ হইয়া রিষ্কাছেন এবং তৎসমীপে গোপালগন মুগ্ধ হইয়া রহিয়াছে আর গাভীসকল চতুর্দ্ধিকে রোদন করিয়া বেড়াইতেছে, তথন অতিশয় আর্ত্ত হইয়া পরম কশাল প্রাপ্ত হইলেন ॥ ১৮॥

গোপ্যোহ্মুরক্তমনদো ভগবত্যনম্ভে তৎদোহ্দিশ্মিতবিলোকগিরঃ শ্মরস্তাঃ। এস্তেহহিনা প্রিয়ত্তমে ভূশন্তঃখতপ্তাঃ শূন্যং প্রিয়ব্যতিহৃতং দদৃশুদ্রিলোকং।

## वी दत्रवामी।

ব্রিষেণ জীক্ষেন বিরহিতং ত্রৈলোক্যং শূন্যং দদৃশুঃ ॥ ১৯ ॥

#### देवस्व वटकायगी।

এবং সর্বেধামের সামান্যেন ত্রবহামুক্। তত্ত্বর শ্রীগোপীনাং বিশেষমাই গোপ্য ইতি ভগবতি সর্বৈধ্যাযুক্তেংতো ন বিদ্যুত্ত আন্তো নাশো ভকানাং যন্মান্তগাভূতেহপরিপ্তির ইতি বা ইত্যহিগ্রসনাসম্ভব উক্তঃ তথাপ্যহিনা গ্রন্থে তদিছ্টোর ভোগেনাক্রাম্তে সতি অত্যর্বহংশক্তাঃ যতোহস্ত্রক্রমনসঃ সভাবতো নিরম্বরপ্রেমবত্য ইত্যর্থঃ। তথা তামিরণি সভাবতঃ প্রিয়ত্তনে আহ্বা প্রিয়ং পরমান্ধা প্রিয়ত্তর ততাহিপি বিশিক্ষয়ং শ্রিক্তঃ প্রিয়তন এবেতি ততঃ প্রেমভ্রাক্রাম্কা তত্ত্বানহসন্ধানাদিত্যর্থঃ। যদা ভগবতি পরমক্ত্রন্থে হনপ্রে অপরিচ্ছির ওণে তথা প্রিয়ত্তন কস্যুচিং প্রিয়ত্তরে তাদান্ধ প্রিয়ত্তনে যতঃ সদাহরক্রমনসঃ। অধুনাত এবে গ্রন্থবং সর্বাতেভাগেন পরিবেন্ধিতে সতি তদ্য সৌহদেন প্রেয়া যাঃ মিতাবলোক্সিরঃ তাঃ স্বরম্ভ্যো ভূপত্থেতথাঃ সত্যঃ প্রিয়েব্বের কর্ত্রা বিশেবেণাতিশয়েন হুতঃ স্বর্জন্তন দর্শনারাহন্ধবিধরায়মাণতাং বিধার বিমারিত্রমিত্যর্থঃ। প্রায়রতিক্রমতি পাঠে চ ব্যতিকরঃ দমাখ্যাতো বাসনে ব্যতিসজ্জনে ইতি বিশ্বপ্রকাশাং। ব্যসনং বিপদি ভংশ ইত্যমরকোমান্ত প্রিয়েণ হেতুনা ভ্রষ্টমিতি তথৈবর্থঃ। টীকারাং বিরহিত্রমিত্যস্য চ ত্যাজিত্রমিত্যর্থ ইতি তথৈব তাংপর্য্যঃ তত্ত্বাদৃশং ক্যাচ্ছূন্যং দদৃভঃ শ্ন্যমিতি শোকবেগেনাত্মন ইব জগতামপি স্বরণমননাং নিজপ্রিয়ত্ত্বা ভাবেন সর্বান্যকাকার্য্যননাশ্য॥

নম্ব ত্রাতা হস্ত কীদৃশী জাতা ইত্যপেকারাং শোকভরেণ কিঞ্চিদের প্রকাশরন্ সর্ক্রামের তাসাং দশাবিশেষমাই তাইতি তাং প্রেজিনঃ শ্রীষশোদাসথোহন্যাং শ্রীগোপ্যংন পত্তি ক্রিরপি ত্থে কুলং য্যান্তদপত্যং পরমন্ত্রেপারপুল্নিত্যর্থ:। জত-এব তং অনুলক্ষীরতা তদর্থং প্রকর্পের সর্ব্বেতাহধিকত্রা তপ্তাং প্রিটানিতি পাঠে ক্রদং প্রেরেই মারকামিতার্থ:। তুল্যবাথা অপি স সমাক্ অনুস্থা নিরন্তরং গৃহীয়া ধ্রা ভচঃ শোকাশ্রণি প্রবন্ধাং প্রাহ্রণেণ মুক্তয়:। তালাং পূত্রাদিতে। দৈবক্তরক্ষাময়ী:। বংসবকাদিবধর্নপাং তছেবিয়েময়ীশ্র অন্ত প্রিয়ক্ষাং কণয়ন্ত্যঃ সত্যঃ তাদৃশা মহাত্তী বহুবোহপি হতা অরং সর্পভ্রেকে: কো নাম বরাকং এনং হত্বা অধুনৈবায়াসাতীতি ত্রাচ্যান্ত্রাধিত্যথ:। তথা কঞাপিতিদৃশশ্র সত্য আসন্ পশ্রাম্ভকত্ল্যাশ্রাসিলিত্যর্থ:। বিশেবভন্তায়াং শোকোক্রি: শ্রীবিক্পুরাণে। সর্ক্রা যশোদ্যাসার্কিং বিশামোহ্র মহাত্রদে। নাগরাজ্যা নো গ্রুমশ্রাকং যুল্গান্তে ব্রুকে। দিবসং কো বিনা ক্র্যাং বিনা চল্লেণ কা নিলা। বিনা ব্রেণ কা গাবো বিনা ক্ষেক্তন কো ব্রুম:। বিনা ক্রতা ন্যাস্যাম: ক্লেক্রানেন পোকুলং। অবণ্যং নাতি-সেব্রেক বারিহীনং যথা সরঃ। যত্র নেন্দীবর্ষলপ্রথাকান্তিরয়ং হরিঃ। তেনাপি মাতর্বাসেন ব্রিরন্তীতি বিস্তরঃ। উৎফুল্ল

#### क्रममर्चः।

তাঃ পূর্বপূর্ব্বোক্তাঃ শ্রীষণোদা সংখ্যাহন্যাঃ। তান্তাঃ পূতনাদিভ্যো রকামধীঃ॥ ১৯ গ

#### श्रीविद्यमाणहरूवर्की।

তত্রাপুরাগবভীনাং বৈক্লবামাহ। তগবতি পরমস্থারে অনম্বন্তনে তস্য সৌহৃদং স্থাবিষয়কং প্রেমন্ত্রিতং বিলোকং নহসি ক্লতাং গিরং সৌরতবার্ত্তাক স্বরস্ত্রা ত্রিলোকং প্রিমেণ বাভিক্ষতং বিরহিতং ত্রিরহদাবাগ্রিভস্মীভূতদ্বাফ্রন্যং ব্যতিস্ত্রিতি পাঠে প্রিয়েটবিব বিশেষেণাতিশরেন চ হতং স্বদশান্তংগতিতি ক্লতং দদ্ভঃ॥

তত্র বাৎসলাবতীনাং বৈদ্ধবামাহ তাঃ প্রশ্বিদ্ধাঃ প্রদ্ধাঃ অপতাং অত্থলকীকৃতা প্রতিপ্রাণ করাপজ্জ রাং প্রবিষ্টামিতি পাঠে অপতা এব লীনতাং প্রাপ্তাং মৃচ্ছি তানিতি যাবং। কৃষ্ণমাতবং যশোদাং মন্ত্রপূত্ততাধুনাপ্যসাঃ শরীরে প্রাণাঃ প্রায়ো বর্তত্ত তদিদং নাপেক্ষণীয়মিতি তদ্ভ্রাভাগমক্তেকতা শীতলস্বিলেনাজ্লালাক্তিকং মুধ্য মৃত্রুতঃ প্রক্ষালা ব্রজ্পির্দা কৃষ্ণয় কথাতান্তাঃ

হে রাজন্! গোপীদিগের অন্তঃকরণ ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণের প্রতি অনুরক্ত ছিল অতএব সর্বদাই তাঁহার সোহদ্য, সহাস্ত দর্শন এবং সন্মিত বচন স্মরণ করিতেন, সেই প্রিয়তম সর্পগ্রস্ত হইলে তাঁহারা অত্যক্ত ছঃবিত হইলেন এবং প্রিয়বির্হিত হওয়াতে ত্রিভুবন শূত্য দেখিতে লাগিলেন, তদনস্তর কৃষ্ণমাতা যেখানে সন্তানার্থ সন্তাপ করিতেছিলেন তথায় তাঁহার নিক্ট গিয়া তুল্যবেদনা ব্যক্ত কর্ত তাঃ কৃষ্ণমাত্রমপত্যমনুপ্রতপ্তাং তুল্যব্যথাঃ সমনুগৃহ শুচঃ প্রবন্ত্যঃ।
তাস্তা ব্রজপ্রিয়কথাঃ কথ্যস্তা আসন্ কৃষ্ণাননেহর্পিত দৃশোমূতকপ্রতীকাঃ।
কৃষ্ণপ্রাণান্নির্বিশতো নন্দাদীন্ বীক্ষ্য তং ব্রদং। প্রত্যধেৎ স ভগবান্ রামঃ কৃষ্ণানুভাববিৎ ॥১৯
ইথং স্বগোকুলমনন্যাতিং নিরীক্ষ্য স্ত্রীকুমার্যতিত্বঃথিতমান্ধ্রতাঃ।

### जी धवनाशी।

অনন্যগতিং আত্মানমিথং নিরীক্ষ্য অতএবাত্মহেতোঃ স্বগোকুলং অতি ছঃথিতমাজ্ঞায় উর্গবন্ধাং উদ্ভিচ্চদিত্যর্থ: ॥ ২০॥

## বৈষ্ণবভোষণী।

প্রজ্বনস্পষ্টকাস্তি বিলোচনং। অপশ্যস্তো হরিং দীনাঃ কথং গোষ্ঠে ভবিষ্যথ। অত্যর্থ মধুরালাপ জতাশেব মনোধনাঃ। ন বিনা পুওরীকাকং যান্যামো নন্দগোকুলং। ভোগেনাবেষ্টিভস্যাপি সর্পরাজস্য প্রভাতঃ। স্মিতশোভি মুথং গোপ্যঃ ক্ষস্যাস্মহিলোকনে ইতি॥

কথঞ্চিনোহোপশনে কালবিলষেচ ব্রদং নিংশেষেণ প্রবিশতং নন্দাদীন্ সর্কানেব ব্রজ্জনান্। স ব্রজ্বজার্থং ভগবতা গৃহে তাকো যং বন্ধুবংসলবেন প্রসিদ্ধো বা। নহু তেষাং সর্কোষাং প্রতিষেধনং স কথং কর্তুং শক্ত তাহ ভগবান্ সর্কাশিক্ত যুক্তঃ। কাংশিচ-দ্যুক্ত যুক্তা কাংশিচ বলেন কাংশিচ দতঃ প্রেরণয়া চ। এবং সর্ক্রমণাদ্রামঃ। নহু সোহিপি নাম কুতঃ স্বস্থ আসীং তত্রাহ কৃষ্ণস্য যং প্র-ব্রক্ষ্তের্ভগবতোহ হভাবং বেতীতি তথা সং॥ ১৯॥

ইখননেন সর্বেষাং তেষামপি মোহাদিনা প্রকারেণ ন বিদ্যতে হন্যাগতিঃ রক্ষকো যস্য তথাভূতং আল্লানমিতি শেষঃ। পতিমিতি পাঠে সএবার্থঃ। উদভিষ্ঠৎ প্রীক্ষণঃ অন্যকৈঃ। যদা সচ মুহূর্ত্তং স্থিমা উরঙ্গবদ্ধাছদভিষ্ঠৎ। মুহূর্ত্ত স্থিতে হৈতুঃ মঠ্যপদবীং যং প্রতি দণ্ডোবিধীরতে তস্য দোষো লোকে দর্শতে ইতীদৃশীং তদীতিমহ্বর্তমান ইতি। উথানে হেতুঃ স্বমান্ধীয়ং গোকুলং ইখং নিজোখানং বিনা ন জীবিষ্যতি নেতি প্রকারেণ ন বিদ্যতে হন্যা গতিঃ রক্ষকো যস্য কিষা ন বিদ্যতেহন্যা যতাহিবেইনে স্বস্যাবন্থিতি- স্থমাদপরা গতির্গমনং যথেতি তবৈব প্রবেশনিশ্বয়ে যসেয়ত্যর্থঃ। তাদৃশং নিরীক্ষ্য তচ্চেটাদর্শনেন নিশ্বিত। অমো লুগভাব আর্থঃ। তত্রাপি সন্ত্রীকুমারং কংম্মিতার্থঃ। সাকল্যেহ্বায়ীভাবঃ। চেটাদর্শনমেবাহ আত্মহেতোরতিছঃথিতং ছঃথপরা কার্চান্ধাধ্যং সম্যত্ত জাত্রা ইতি স্বভাবতো জনমাত্রম্য ছঃথাসহিক্ষতা তন্মিন্ বর্ত্ত এব তত্রাপি স্বীর্ম্য তত্রাপ্যায়ানবাণ্ডিহেভূক-

## क्रमनन्दः।

সচ মুহুর্ত্তং স্থিত্বা উরগবন্ধাহদতির্গত। তাবৎ স্থিতো হেতু: মর্কাপদবীমন্থবর্তমান উত্থানে হেতু:। স্বমাত্মীয়ং ইখং গোকুলং নিজ্যো

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

উচৈচঃ কথ্যস্তাঃ তচ্চেত্তনা প্রাপনার্থমিতি ভাবঃ। তাঃ কীদৃশাঃ শুচঃ শোকস্য প্রবস্তান্তা বিষয়াপগা ইত্যবরঃ। স্বতরকোন্যান্তি প্রাব্যস্তা ইতি ভাবঃ। অস্তে তুমুতক্স্যের প্রভীকা অব্যবা যাসাং তাঃ॥

প্রতাষেধদিতি ভো আর্য্যপাদাঃ অনেন সর্বহর্ত্মণি যুষ্মঞ্জনিষ্যথেতি গর্গবচনাদ্য্য ত্রেতাদৃশহর্ণোত্তরণং কিং চিত্রমিতি বিচার্য্য বিবেকং ভঙ্গত। যুদ্মান্ত ব্রুদং প্রবিষ্টেষু পশ্চাৎ অন্ত্যাগতস্যাস্য মদমুজ্স্য লালনপালনাদিকং কৈঃ কর্ত্তব্যং গোপায়স্ব সমাহিত ইতি গর্গমহর্ষিনিদেশ লজ্মনে প্রবৃত্তাঃ কথং স্থেত্যাদিবাকৈয়নিত্যর্থঃ। ভগবান্ ইতি তক্ত সামর্থাং॥ ১৯॥

অননাগতিমিতি পুংস্থমার্যং। আজি য়া সমাক্ জ্ঞাত্বা মুহুর্তং ঘটিকাদ্বয়ং স্তব্ধ ইব স্থিতা কিং রে কালির স্বয়া বিক্রমনর্বস্থমহং

সেই সেই ব্ৰজপ্ৰিয়কথা ক**হিতে আগরম্ভ করিলেন, প**রে শ্রীকৃষ্ণের' আননের প্রতি আপনাদের নয়ন অর্পণ করিয়া মৃতকের আয় নিশ্চে**ই হইয়া রহিলেন।** তদনস্তর শ্রীকৃষ্ণের প্রতি যাহাদের প্রাণ সেই নন্দাদি গোপগণ যথন ঐ ব্রদ মধ্যে প্রবেশার্থ উদ্মুখ হইলেন তথন ভগবান্ বলভদ্র দেখিতে পাইয়া তাঁহাদিগকে নিবারণ করিলেন, কারণ তিনি শ্রীকৃষ্ণের প্রভাব জানিতেন ॥ ১৯॥

়রাজন্! ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ আপনাকে এই প্রকার দেখিয়া এবং আপনার নিমিত্ত স্ত্রী ও বালক সহিত সমস্ত গোকুলকে অত্যন্তহুঃখিত জানিয়া মুহূর্ত্তকাল অবস্থান পূর্ব্বক উরঙ্গ (সর্প) বন্ধ হইতে উথিত আজ্ঞায় মর্ত্রপদবীমনুবর্ত্তমানঃ স্থিয়া মুহূর্ত্মুদতিষ্ঠত্রঙ্গবন্ধাৎ ॥ ২০ ॥ তৎপ্রথ্যমানব পুষা ব্যথিতাত্মভোগস্ত্যক্তেশুন্ধমষ্য কুপিতঃ স্বফণান্ ভুজঙ্গঃ। তক্ষে শ্বদন্রজুবিষাস্বরীষ স্তব্ধেক্ষণোলা কুম্থোহরিমীক্ষমাণঃ॥ ২১ ॥ তং জিহ্বয়া বিশিথয়া পরিলেলিহানং বে স্কণীহ্যতিকরালবিষাগ্রিদ্স্তিং।

#### .লীধ্বস্থায়ী।

তস্য প্রথামানেন বপ্রা ব্যথিতাক্মণরীরো ভ্লসং কুওলমুষ্চ্য তং তাতৃ। কুপিতঃ ফণাহয়ময় খসন্ কেবলমীক্সমাণঃ তস্থে কণভূতঃ খসনরস্থে বুনাসাবিবরেষ্ বিষং যস্<sup>ত</sup>তথা অথরীয়ে। মওপাকভালনং তহং সভ্তানি তকানি ঈকণানি যস্তথা উল্কুকানি মুখেৰু যস্য সূচ্য চুল্ম চুল্ম ১ ॥

হরিশ্চ ক্রীড়ন্ তং অমুং দর্পং পরিদ্দার। অতিকরালা বিষামিগুক্তা দৃষ্টির্গদ্য তং। জিহরমা হিশিগণেতি প্রতিমুগং॥ ২২॥

### বৈক্ষবতোষণী।

ছঃখস্য তত্রাপ্যায়হঃখহঃখিতস্যেতি ক্রমজ্ঞাপনেনোথানেতি স্বরা বোধিতা। এবং তছ্থানাদিকা সর্কৈব লীবা ব্রজ্জনেন দ্ভৈতি গ্রমুতে ॥ ২০ ॥

উথানপ্রকারমের দর্শালয় সানিমাই তদিতি তস্য শ্রীক্ষ্প্য প্রথামানেন স্বয়ং বিস্তার্য্যমানেন কিঞ্ছিছ্ন্য্যমানেন বপুরা বাথিত: অত্যায়ির পীড়িত: আত্মভাগো বস্য আত্মশ্রেন ত্রাত্যস্তমধ্যাসং সংবল্য পীড়াবৈশিষ্টাং দ্যোতিত:। ত্রশক্ষান্যারণতা বিবক্ষা। অন্যবৈশ্ব জল্ধিষভর্জনপাত্রং। হরিং ত্রতিমানদোধহরণাং নিজাবাসহরণোদ্যমন্ত্রা। অন্যবৈশ্ব ত্রত্র কুণ্ডলং বেইনং॥ ২১॥

স্কণী প্রতা মুহলি হন্তমিতি যুগপদেব ঘাত্যাং ঘ্যোঃ পরিলেহনাৎ অস্য জাতি স্থতাব্যেপ্যধুনা কোপেনাতিশ্যোহভিপ্রেতঃ তেনাতিঘোরত্বং স্চিতং। অতএব করালেতি পুনক্জিশ্চ। হি ক্রীড়য়েব পরিতঃ স্বার ভ্রমণারৈতস্য সর্ক্তো বভাষেত্যর্থঃ। হথা থগেক্তঃ শ্রীগরুড় ইতি প্রবল্পেন ক্রীড়ায়াং শীঘ্রায়াং বা দৃষ্টাস্তঃ। সঃ কালিয়োহপি দংশনাব্যরং প্রকর্ষেণ প্রতিপদং সম্যুগীক্ষ্য

### ক্রমসন্দর্ভ:।

খানং বিনা ন জীবিষ্যতীতি প্রকারেণ ন বিদ্যতেহন্য: পতিঃ রক্ষকো যদ্য তাদৃশং নিরীক্ষ্য দৃষ্ট্য তথানি সন্ধীকুমারং শীক্ষ্যনিত্যর্থঃ প্রকারণেবাহ আত্মেত্যাদি ॥ ২০। ২১। ২২। ২৩। ২৪। ২৫॥

#### ঐবিশ্বনাথচক্রবন্তী।

দ্শিত এব সম্প্রতি গোণবালকোপায়ং বিক্রমলবং দর্শয়তি পশ্যেত্যুক্তা উরঙ্গ উরগঃ তম্বরাৎ উদ্ভিষ্টং॥ ২০॥

উথান প্রকার্মের দশ্রন্ কালিয়স্য প্রানিমাই। তদিতি তেন ক্রফেন প্রথ্যমানং বেষ্টন্দময়গতসঙ্কোচনাং পরিত্যজ্য বিস্তার্থ্যনানং বরপু ভূজিজজ্বাদিকং তেন ব্যথিতঃ জ্বটারিব পীড়িতঃ আত্মনো ভোগো বস্য সং। বেষ্টন্ময়্মচ্য তং ত্যক্রা অফণান্ উন্নম্য ধসন্ কেবলনীক্যমাণ এব তত্থো। কীদৃশঃ অসনর্দ্ধের নাদাবিবরেষু বিষং যস্য। তথা অম্বরীবং জ্বাহিবজর্ভনপাত্রং ভাঁড় ইতি খ্যাতং তরং তপ্তানি স্তর্জানি ইক্লণানি যস্য। তথা উল্লুকানি নিঃসর্স্তি মুখেভ্যো যস্য সূচ্স চ স চ সং॥ ২১॥

দে খীষে হৃত্তগৌ পুনঃ পুনলিহ্তঃ তমমুং পরি পরিতঃ স্সার। তং ভ্রময়িতুং তস্য সর্বতো বল্লানেতার্থঃ। স্কালিয়োহপি

হইলেন,কারণ তৎকালে মর্ত্যপদবীর অর্ধাৎ মনুষ্যধর্মের অনুবর্তী হইয়াছিলেন ॥ ২০ ॥

রাজন্! ভগবানের বিস্তারশালিশরীরে ঐ ভুজসের কলেবর ব্যথিত হইল, সে কুণ্ডল উন্মোচন পূর্বিক তাঁহাকে পরিত্যাগ করিয়া কুপিত হইল এবং ফণা উন্নত করিয়া নিখাস ফেলিতেই কেবল নিরীক্ষণ করিয়া দণ্ডায়মান থাকিল। তাহার নাসারশ্ব দিয়া বিষ বহির্গত হইতে লাগিল এবং নয়ন দয় পাকভাণ্ডবং সন্তপ্ত ও অত্যন্ত স্তব্ধ হইল আর বদন উ্ল্যুক (অক্লার) সদৃশ হইয়া রহিল॥ ২১॥ ভগবান্ হরি ক্রীড়া করত থগেন্দ্রের (গরুড়ের) ন্যায় সেই সর্পের চৃতুর্দ্ধিকে ভ্রমণ করিলেন। তাহার প্রত্যেক মুখে সুইটা শিখা যুক্ত জিহ্বা ছিল, তাহার দারা সে বারন্ধার স্ক্রম্ব লেহন করিতেছিল,

জীড় মমুং পরিস্নার যথা থগেন্দ্রে। বভাম সোহপ্যবসরং প্রস্মীক্ষমাণঃ ॥ ২২ ॥ এবং পরিভ্রমহতৌজসমূমতাংসমানম্য তংপৃথুশিরঃ স্বধির আদ্যঃ। তদ্মুর্দর ব্রনিকরম্পর্শাতিতাঅপাদাস্ক্রোহখিলকলাদিগুরুর নর্ত্ত। তং নর্ভু মুদ্যতমবেক্ষ্য তদা তদীয় গন্ধর্কসিদ্ধ মুনিচারণ দেববংবঃ। প্রীত্যা মুদক্ষপণবানক বাদ্যগীতপুপোপহার কুতিভিঃ সহসোপসেছঃ॥ ২০॥

### গ্রীধরস্বামী

এবং পরিভ্রমণেন হ'তং ওজে। যদ্য তং উন্নতাবংসৌ যদ্য তং তদ্য মূর্দ্ধস্ক যে রত্ননিকরাতেষাং স্পর্শেনাত্যরুণং পাদাকুজং বদ্য দঃ। নম্ম কথং চঞ্চলেষু শিরংস্থানত তত্রাহ অথিলকলানাং নৃত্যবিশেষাণামাদি গুরুঃ॥ ২৩॥

### देवकवट्यावनी।

মাণ অভীক্ষং বত্রামেতি সর্পেণ ক্রীড়াকৌশলমূক্তং ॥ ২২॥

পরিত্রমহতৌজগমপি উন্নতাংসং অতএব আনম্য তং শ্রীহন্তেন। তথা শ্রীহরিবংশে। শির: স রক্ষো জগ্রাহ স্বহন্তেনাবন্ম্য চেতি। পৃথি তি তদ্রস্বোগ্যতোকা। তন্মুর্দ্ধেতি সৌন্দর্যবিশেষ: স্পর্শেতি লাখববিশেষত্তংগিপ অতিকোমলত্বাং তামত্বং। আদি গুরুত্বে হেতুরাদ্য: অনেন কালিস্বস্থা চ মহাভাগ্যবং স্থাচিতং॥

নৃত্য স্থার্থং তহপকরণনাই তমিতি অবেক্ষ্য অবেত্যেতি বা পাঠঃ সমানার্থঃ। ঈক্ষেরিনশ্চ জ্ঞানার্থছাৎ তদীয়া: শ্রীগরুড়াদ্যঃ পার্ষদাঃ। গদ্ধবাদ্যাদ্য বাদবিনশ্চারণা উপদেহঃ অদেবন্তঃ। গীতৈর্গদ্ধশি প্লৈশ্বোঃ তদ্ধবশ্চেত্যর্থঃ। উপহারা বিবিধগদ্ধস্থাদিয়কৈঃ দিলাঃ। স্থৃতিভিশ্চ মূনর ইত্যেবং বিবেচনীয়ং। ক্রমাতি ক্রমোহর্বভবেণ বাদরায়ণেরনমুসন্ধানাৎ। যথা প্রতিষ্ঠা সর্ক্ষোমপি সর্ক্ত প্রবৃত্তিরভিপ্রেতা॥ ২৩ ॥

### 🗐 विश्वनाथहळ् वर्छी।

দংশনস্য অবসরং সমীক্ষ্যমাণ এব বভাম ক্লকর্কভ্রমণলাঘবাদংশনাবসরং ন প্রাণেতি তির্যাগৃত্রমিধেলয়াপি তং জিগারেত্যর্থ: ॥ ২২ উন্নতাব্যুকাবংসৌ ঘদ্য তং আনম্যেতি পরিভ্রমহতৌজস্বাৎ ভ্রমণাসমর্থদ্য তদ্য শিরাংদ্যেব একহতেইনবানম্য তত্রাধিরতঃ দ্বনতঃ।
শিরং স ক্লেডাজগ্রাহ স্বহতেনাবনম্যেতি হরিবংশোক্তে: । তদ্য মুর্দ্ধরু যে রত্ননিকরান্তেষাং কঠোরাণাং স্পর্শোলতিক্রুমারতাদতিতান্ত্রমণং পাদাস্কং যদ্য সং । স্থালী শরাবাদিস্কলা জ্ঞাপনার নটা নটন্তি অয়ন্ত দর্শকলানামাদিগুক্তাং চঞ্চলেরু কালিয়ন্ত্রিক নবর্তেতি স্বকলাভিজ্ঞদর্শনেরং ব্রহ্মশ্বরীর পূর্ব্রাগবতীর জ্ঞের। ॥

নর্জুং নর্জিত্রং তদীয়েতি বাদ্যং বিনৈব স্বমূথেনেবোচ্চারিতৈতৈস্থথৈশলৈ প্রভুন্ত্যতি। তথনং কং সমন্ত্রং প্রতি স্থিতা ইতি বিচার্যোতি ভাবং॥ ২৩॥

আর তাহার দৃষ্টি দাতিশয় ভয়ুঙ্কর এবং বিষাগ্নিতে পরিপূর্ণ হইয়াছিল, রাজন্। কেবল ভগবানই দেই ভুজঙ্কের চারিদিকে ভ্রমণ করিলেন এমত নহে, দেও দংশনের প্রতীক্ষায় ভ্রমণ করিতে লাগিল॥ ২২ ॥

হে মহারাজ! ঐ রূপ ভ্রমণ দারা যথন দেই সর্পের সামর্থ্য বিনফ হইল তথন তাহার উন্নত কর অবনত করিয়া তদীয় বিস্তীর্ণ মস্তকে ভগবান আরোহণ করিলেন, অতএব মস্তকন্থ রত্ন নিকরের স্পর্শে ভগবানের পাদপদ্ম অপূর্ব্ব তাত্রবর্ণ হইল'। তথন তিনি নৃত্য প্রভেদের গুরু অতএব চঞ্চল মস্তকের উপরেও নৃত্য করিবার উপক্রম করেলেন। হে রাজন্! শ্রীকৃঞ্চকে নৃত্যার্থ ক্তোদ্যম দেখিবা মাত্র গন্ধর্ব্ব, সিদ্ধ, মুনি চারণ, এবং দেবতাদিগের বধুগণ প্রীতি পূর্ব্বক দেই সময় মৃদক্ষ, পণৰ, আণকবাদ্য তথা গীত এবং পুলোপপহার ও স্তব স্তুতির সহিত সহদা সমীপে আদিলেন ॥ ২০ ॥

যদয় চিহরো ন নমতে হঙ্গ শতৈক শীষ্ঠ গুত্ত শমর্দ খলদ ওধরো হ জিবু পাতৈ । কীণা মুষো ভ্রমত উল্পান্যতো হস্ত গুলো বমন্ পরমক শালমাপ নাগঃ॥ ২৪॥ তদ্যা কিভি গ্রল মূহমতঃ শিরঃ স্থান্থ সমূমমতি নিশ্বসতো ক্ষোটিচঃ।
নৃত্যন্ পদানুনময়ন্দময়াৰ স্তুব পুটিপাঃ প্রপ্জিত ইবেহ পুমান্পুরাণঃ॥ ২৫॥
তচ্চিত্রতা ওববিরু গ্রফণ। সহস্যোরক্তং মুথৈ কুরু বমন্নূপ ভগগাত্তঃ।

### अध्यक्षामा ।

শতমেকানি মুখ্যানি শীৰ্ষাণি যদ্য তদ্য ক্ষাণায়ুৰোহপি পুন ভ্ৰিতো যং যং শিরো ন নমতে স্তর্কাং ন জহাতি নৃত্যজ্লেনাজিযু -পাতৈ ও এনমর্দ তদাচ আদ্যতো মুথেভ্যো নত্তো নাদিকাবিধরৈভ্যোহস্ত্ কিধিবং ব্যন্॥ ২৪॥

পুনর নি ক্ষা উতিত নি স্থিতো যদ্ধং সম্রমতি ভত্তং পদাঘাতেনাহ্বনময়ন্। ইং অমিরবসরে হাটে প্রাণিটিঃ শেষাসনঃ পুরাণ পুরুষ ইব যশোদানন্দনঃ পুলৈঃ প্রপ্জিতঃ। যদা। গন্ধর্কাদিভিঃ পুলৈঃ প্রপ্জিতো গোণৈঃ প্রাণঃ প্যানিব দৃষ্ট ইতি। বৈষ্ণবতোষণা।

একশব্দেন মুখ্যৰাচকেনান্যান্যপি বহুনি সন্ধি ইতি বোধ্যতে। অগ্ৰেফণাসহলোকে:। কীণায়্ৰ: মৃতপ্ৰায়স্যেত্যৰ্থ: উল্ণং উদ্ধটং প্ৰচ্বমিত্যৰ্থ:॥ ২৪॥

সর্বাঙ্গবৈবশ্যেহণ্ণি অকিভির্গরলমূদ্দত ইতি ছইশ্বভাবনির্দেশ:॥ ২৫॥

তদ্য তথা অনির্কাচনীয়ং চিত্রং বিবিধং ভ্রাস্থিরেচকাদিগতিভেদং যত্তাগুবং তেন বিশেষতো ক্ষমং জাতত্রণং ভমং বা ফণানাং সহস্রং যক্ত সং। অথ সাক্ষাং শ্রীচরণক্কতদণ্ডাং সহজান্তদেশিকরেণ শ্রীবলিবত্তংস্পর্শাং বিশুদ্ধভাবোৎপত্ত্যাচ শ্রীভগবস্থং জ্ঞাতবান্ প্রপদশ্চেত্যাহ শ্বন্ধেতি। তং শ্রীকৃষণং চরাচরাণাং গুরুং জনকত্তাদেব যতঃ পুরাণং পুরুষং সর্কোধাদ্যমিত্যর্থঃ যতো নারায়ণং লোক-

ক্রমসন্ধর্ম।
তং ঐক্তিং নারামণং স্থ্যা সপত্নীত্যা শ্রুতমত্মসন্ধায় এবং শ্রুণাপত্ত্যা ক্ষান্তবস্তমণি তদপেক্ষমা শির্দ্যেব স্থিতং তৎপত্ন্যা প্রদেশশ্রীবিখনাথচক্রবর্তী।

শতং একানি মুখানি শিরাংসি যদ্য জদ্য কথে ফণাস্থ্যোকে:। যদ্যং ন নমত্যুকীভবতি তাতৈব সংসাক্ত কাজ্যুপাতৈ স্তানেব কণান্মদি। তদাচ আন্ততে। মুখেভ্য: নজো নাদাবিবরেভ্য: অস্থ্যন্॥ ২৪॥

ত্ব্য শির: স্মধ্যে বং বং সম্লমতি তত্তদেব পদা পাদপ্রহারেণ অন্ত্রমন্ন তিমিন্নসরে হুটে গদ্ধেদিভি রুখ্যনালৈ: গৃল্প: প্রপ্তিত ইব প্রসন্ন সন্তে্বানেব হিতার্থং ছুটং তং দ্মলামভূব ॥ ২৫ ॥

প্রমভক্তাভিত্তৎপত্নীভি: ক্বপারূপং ভক্তিবীজং পূর্ব্যমুগুনপি পূর্ব্যপ্রাধন্ধনিতকৌধ্যদেষিব্যাপ্তে কানিয়্স্য ত্যায় ছঃ-করণে হুইক্ষেত্রে ইব প্ররোচ্মুসমর্থমেবাদীং। তবা তু এিচরণম্পর্ণেন তংক্তদগুপ্রাপ্তাচ তত্তদোষক্ষে সতি সহদৈর তদ্ধকি

হে রাজন্! কালিয় নাগের একশতটা প্রধান মস্তক, সে ক্লীণায়ুঃ হইয়াও পুনঃ ২ ভ্রমণ করিতেছিল অতএব তাহার যে মুগু নত না হইল ধলদগুধারী ভগবান্ হরি নৃত্যছলে চরণাথাতে সেই সেই মুগু মর্দিত করিয়া ফেলিলেন, তাহাতে সেই ভুজক মুখ ও নাগিকা বিবর দ্বারা উল্লণ শোণিত ব্যন করত প্রম মোহ প্রাপ্ত হইল॥ ২৪॥

হে ভারত । কালির নাগ তদনন্তর পুনরায় চক্ষুদ্বি গরল উদ্গীরণ করত রোঘে নিশাস পরিতাগি করিতে লাগিল। শ্রীকৃষ্ণ তাহার মস্তকোপরি নৃত্য করিতে করিতে যে যে ফণা সমুদ্রত
দেখিলেন পদাঘাত দ্বারা তাহা অবনত করাইয়া তাহার দমন করিলেন। সেই সময় গদ্ধবিদি
দেবগণ হাই হইয়া শেষশায়ী পুরাণ পুরুষের স্থায় যশোদানন্দনকে বিবিধ পুজ্যোপহাব দিয়া পূজা
করিলেন। ২৫॥

সে মাহা হউক, ঐ রূপ আশ্রুষ্ঠা মৃত্তের যথন সহজ্ঞ ফণা বিরুগ এবং গাত্র ভগ হইল তথন কালিয়

স্মৃত্বা চরাচরগুরুং পুরুষং পুরাণং নারায়ণং তমরণং মনদা জগাম। ২৬॥ কৃষ্ণদ্য গর্ত্তজগতোহতিছরাবদমং পাষ্টি প্রহারপরিরুমফণাতপত্রং। দৃষ্ট্রাহিমাদ্যমূপদেহুরমুষ্য আর্ত্তাঃ পত্ন্যঃ প্রথদেনভূষণকেশবদ্ধাঃ॥ ২৭॥

## धीधवयागी।

যন্ত্ৰা পুলৈ: প্ৰপু**জিত ইব প্ৰদন্ত: দন্ দ**ময়ামতৃৰ ক্ৰপন্না হিতং ক্বতবানিত্যৰ্থ: ॥ ২৫ ॥

অরণং শরণং॥ ২৬॥

গর্ভে জগ**ন্তি যন্ত তন্তা**তিভরেণাবসন্নং **আক্রান্তং। পান্ধি** পাদ্পৃষ্ঠং আদ্যং **ঐক্নফং প্লথন্তে।** বিশ্রংসমানী বসনাদরো বাসাং তাং॥ ২৭॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

পদ্মাকারনাভিমিতার্থ:। কিয়া। সর্ব্বজীবানামাশ্রয়ং এতে সর্ব্বথা শরণাপত্তী হেতবং স্থত্যেতি প্রাচীনেন তেন শতশং শ্রুতস্যাপি তক্ত দোরাত্ম্যানরাহিত্যাং। মনসেতি প্রমার্জ্যা তবামীত্যুক্তাবপ্যশক্তে:। যথা। মনসা শরণ গমনে হেতুং পুক্ষমন্ত্র্যামি তয়া হলয়ররণাগাং পুরি শেতে সদা বর্ততে ইতি তথা তং। যথা। তং শ্রীকৃষ্ণং নারায়ণং স্কৃষা স্বপত্নীভ্যন্তথাশ্রুতমন্ত্রমন্ত্রায়। শেষং প্রাথং ॥ ২৬ ॥ এবং শরণাপত্যা ত্যুক্তরণাঘাতদত্তে সম্যক্প্রসন্ত্র বাসাং স্কৃতকানামি হাইস্থামিসকোচাদনাগতচরীণাং স্কৃদ্ধেন স্বয়মের তস্য তাদৃক্যং সাধিতং তদপেক্ষালায়েতি তদর্থমের বাসাং স্কৃতকানামি হাইস্থামিসকোচাদনাগতচরীণাং স্কৃদ্ধেন স্বয়মের তস্য তাদৃক্যং সাধিতং তদপেক্ষালায়েতি তদর্থমের বাভ্যন্তাদৃশপ্রসাদদর্শনার্থমেরচ শিরস্যের বিলম্বমানে শ্রীভগবতি তাসাং প্রতিপতিমাহ ক্ষাত্রতি হাভাাং। গর্জজগত ইতি বিভূষাত্রকং নচান্ত্রন্থহিত্যেতি ন্যায়েন গর্জশক্ষেন হ্যান্তর্বাহাত ততে ব্যাপ্তসর্ব্যাহাত বিশ্বসাদিন। তামিংশৈববস্তুতে ভারতায়াঃ কৈমুত্যান্যৎ কালিয়াদেং সর্ব্ব্যাপি চুর্ণহং ন হায়তে তংখলু তত্যেহামন্ত্র নিজ্ঞাকি প্রাক্ট্যেতাপেক্ষা তএর সন্তবতীতি ভাবং। আতপ্রক্রপকেণ ফণানাং পরিক্ষাত্রা ত্রা ত্রা হাহিছিয়ো বিভ্রংশঃ কৃচিতঃ। উপসেত্রং পার্শে ক্রমঃ আর্ত্রাদের স্লাধ্বসনাদিকা ইতি মহাদৈন্যমুক্তং॥ ২৭॥

## ক্রমসন্দর্ভ:।

দিরে ইত্যাহ ক্ষক্ষেতি দ্বাভ্যাং। গর্ভজগত ইতি বিভূষাৎ ভূবি কায়ং নিধায়েতি তত্ত্ব মধ্যদীপঃ হুচিতঃ ॥২৬॥২৭॥ ২৮॥২৯॥ ৩০॥ ৩১ ॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বীজমঙ্গুবিতং বৃভূবেত্যাহ স্বংছতি। মহৈরিশো গ্রুড়াদপ্যদা প্রস্সহক্রগুণাধিকং বৃদ্ধং মধ্যেপ্লব্ধং তত্মামাংগত্নীভিক্সদিইভক্তিকে কোহ্যমেব প্রমেশ্বর ইতি স্বীয়স্থতিগোচরীক্বত্যেত্যথা। চরাচরগুরুমিত্যসাধারণং বৃদ্ধং দর্শয়মহমেব প্রমেশ্বর উপাদ্য ইতি ম্দ্মিপি মাং জ্ঞাপ্যম ক্রপ্যামচ্চিরোহর্পিত্তরশা শুরু ভ্রব প্রদীদ্ভি। ত্মিমমহ্মিদানীং শ্রণং ধামীতি। অরণং শ্রণং॥ ২৬॥

গর্ভে জগন্তি যস্য তদ্য অতএবাতিভরেণ আদ্যং শ্রীকৃষ্ণং আর্ত্তা ইত্যেতাবংকালপর্যন্তং যা পত্যাব্দাসীনা এবাসন্। বহিমূথো ২যং ভগবংকৃত দণ্ডেন ত্রিয়তে চেৎ ত্রিয়তাং। বন্ধং বিধবা ভূষা তগবস্তং তলামেতি যদা ভূমনসা শরণং গতস্য তস্য পত্যদৈন্যানির্দে বিমাদবিত্তক্মত্যাদিস্থারিলক্ষণং মুধাদ্যক্ষেষ্ দদ্ভ স্তদেবাহো অস্মন্তাগ্যবশাদ্যং বৈষ্ণবো হভূত্তদস্য রক্ষণে যতামহে
ইতি সংহতাতা তাত্র জাতলেহতাদার্তাই শ্রীমচ্চরণস্ত্রিধিমালস্কু:॥ ২৭॥

বহু মুখে রুধির বমন করিতে করিতে চরাচর গুরু পুরাণ পুরুষ নারায়ণের স্মরণ পূর্বক মনে মনে শরণাপন্ন হ'ইল॥ ২৬॥

রাজন্! যে ঐক্ষের উদরমধ্যে ত্রিজগৎ বর্ত্তমান, তিনি ফণার উপর আরোহণ করিয়া রহিলেন, স্থতরাং কালিয়কে অতিভরে আক্রান্ত ও তাহার ফণারূপ আতপত্রকে পাঞ্চি প্রহারে সর্বতোভাবে কর্ম নিরীক্ষণ করিয়া কালিয়ের পত্নীগণ অতিশয় আর্ত্ত হইল,তাহাদের বসন ভূষণ ও কেশবন্ধন গলিত হহিয়া পড়িতে লাগিল। তদনন্তর তাহারা সেই আদ্য পুরুষেরই নিকট শরণাপন্ন হইল ॥ ২৭॥

তাস্তং স্থবিগ্ননসোহথ পুরস্কৃতার্দ্ধাং কায়ং নিধায় ভূবি ভূতপতিং প্রণেমুঃ।
সাধ্ব্যঃ কৃতাঞ্জলিপুটাঃ শনলশ্য ভর্তু মোক্ষেচ্ছবঃ শরণদং শরণং প্রপদাঃ ॥ ২৮॥.
নাগপত্য উচুঃ॥
ন্যায্যো হি দণ্ডঃ কৃত্কিল্লিষেহস্মিংস্তবাৰতারঃ খলনিগ্রহায়।

### औरतचामी।

তাঃ সাধ্বয়ং শরণং প্রাপ্তাঃ সত্যঃ তং প্রশেষ্ণ স্থবিধ্যনসং অতিবিহ্বলচিত্তাঃ। ভূবীতি তামিন্ হানে জলাদধকাছা তীরে বা শ্যলহা পাপাক্ষনো ভর্মোক্ষেজ্বঃ ভর্বজ্মলং তস্য বা ভূতপতিং প্রাণিমাত্রস্য পতিং শরণদং আশ্রম্প্রদং॥ ২৮॥

প্রথমং তাবং কুপিতং ভগবন্ধং দণ্ডার্মোদনেন উপশম্মন্ত্য: স্তবন্ধি নায্য ইতি। তত্ত্ব। দণ্ডার্মোদনং ষড় ভিদ শভিস্ত হবে সুবিঃ। প্রার্থনং পঞ্চভিঃ শ্লোকৈ স্ততঃ পলগ্যোবিতাং। নচ নিগ্রহান্ত্রহক্ষপং বৈষ্মামিত্যাহধ্ৎিদে দুম্মতি। অনুশংসন্

### বৈষ্ণবতোষণী।

স্বিমং পতিমরণশক্ষা তদপ্যপরাধশক্ষা বা অতিজীতমতিত্ঃখিতং বা মনো যাসাং তাঃ। আরং প্রণামে প্রতিপত্তী বা প্রমটনত্তেন গুণবিশ্বে উক্তঃ। ভূবি কায়ং নিধায় দওবলিপত্তোতার্থঃ। এবং ক্রমন্ত মধ্যে কন্টিদীপো বোধাতে। যত্র ক্রীজাবিশেষার্থম্থিতঃ শ্রীকৃষ্ণঃ কালিয়েনার্তো গোক্লজনৈরদ্ভাতেতি বর্ণিতং পুরস্কৃতার্ভতং ক্রপালননার্থং। নম্ ভর্রপরাধেন ক্তোন বিভাতি আ তত্তাহ ভূতানাং প্রাণিনাং সর্কেষামপি পতিং তাসাং ভাদৃশতয়া ক্রিজং। তত্মায়্রেইপি ক্রানাত্র গন্তব্যমিতি ভাবঃ। অতএব ভর্তঃ শমলতা মোকস্তাগ স্তমিছেস্তাঃ। কৃতঃ সাধ্যঃ পতিব্রতাঃ শ্রীকৃষ্ণভক্ষিমত্যাত ॥ ২৮॥

অমিন্দথো ভাষ্য এব। তত্ৰ হেতুঃ ক্বতানি কিৰিষাণি গক্ষড়ে শ্রীষমুনার্শাবনয়ান্তজ্জীবসমূহে শ্রীভগৰতি চাপরাধা যেন তাদৃশে। যন্তবাবতারঃ প্রাকট্যমাত্রং থলানাং দাধুদ্রোহিণাং নিগ্রহায় ভবতি। এবং সাধ্নামন্থগ্রহায় চেতি স্চিতং। অভ্যথাতু ন নিগ্রহোহপি ন চান্ত্রহ ইত্যাহ রিপোরিতি। রিপ্ণাং স্বতানাঞ্চ সম্বন্ধে তুল্যা দৃষ্টি ইন্য তাদৃশস্য। ন থল নিগ্রহেংপি নৈম্পান্ত্যাই

## ঐবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

তান্তং প্রথমং প্রণেম ভূবীতি জ্বদ্যা মধ্যে কশ্চিদ্বীপো বুদ্ধাতে যবৈধ্ব স্থিতঃ ক্রফঃ কালিয়বেষ্টিতো গোকুলজনৈরদৃশ্যতেতি জ্বেয়ং। পুবঃ ক্রফ্যাত্রে ক্তা অভা বালা যাভিন্তা ইতি ক্রপাজননার্থং॥ ২৮॥

প্রথমং স্তবতাঃ কোণমুপশমরিতুং দণ্ডমনুমোদয়ন্তি ৰাব্য ইতি। আনেন সাধুজোহলক্ষণসা অধলত্বসা ক্লমবশ্যপ্রাপাং প্রাপ্তি, মিতি ভাবঃ। শিষ্টপালনজ্ঠনিগ্রহকৃত তবকু কাপি বৈৰমাং নৈবাজীত্যাহঃ। রিপো: অতানাং রিপুত্তের অপিকারাং অফতের চ্ তুল্যদৃষ্টে:। রিপোরপি পুত্রসা শিষ্ট্ত প্রহলাদস্য পালনদর্শনাং অস্যাপি স্বত্স্য নরকাত্বরসা ব্ধদর্শনাত্তেতি ভাবঃ। নচ থল-নিগ্রহেষ্পি নৈত্বিয়মিতাট্র্ধবিদে ইতি থলত্বহেতুকনানানরকছঃধোপশমপুক্ষকনিতাত্ব্যম্মাদ্যাকলক্ষণং ফলমেব দীরতে ময়েতাত্ব্যংস্কৃ

তাহার। সাধ্বী ক্রী,একারণ কৃতাঞ্চলিপুটে নিকটবর্ত্তিনী হইয়া পাপাঝা পতির মোচন বাদনায় জলাশয় তীরে নিজ নিজ শরীর স্থাপনপূর্বক সর্বপ্রাণির পতি আশ্রয়প্রদ হরিকে প্রণাম করিতে লাগিল।
রাজন্! তৎকালে ভয়বশতঃ নাগপত্নীদিগের চিত্ত সাতিশয় বিহ্বল হইয়াছিল। তাহারা ভগবানের
আশু দয়া হইবে বলিয়া শিশু সন্তান গুলিকে অত্রে করিয়া লইয়া গিয়াছিল॥ ২৮॥

প্রথমতঃ কুপিত ভবান্কে দণ্ডানুমোদন দারা শাস্ত করত নাগপত্নীগণ বুলিতে লাগিল ভগবন্! আপনি থলদিগের নিগ্রহ নিমিত্ত অবতার গ্রহণ করিয়াছেন। আমাদের পতি কালির খল; এ পাপ করিয়াছিল, ইহার এ রূপ দণ্ড স্থায়্য বটে। প্রভো! শক্রতে এবং পুজেতে আপনকার সমান

রিপোঃ স্নতানামপি তুল্য দৃষ্টি ধ্ৎসে দমং ফলমেবামুশংসন্ ॥ ২৯ ॥ অমুগ্রহোহয়ং ভবতা ক্বতো হি নো দণ্ডোহসতাং তে থলু কল্মমাপহঃ । যদ্দদশ্কস্মমুষ্য দেহিনঃ ক্রোধোহপি তেহমুগ্রহ এব সম্মতঃ ॥ ৩০ ॥ তপঃ স্নতং কিমনেন পূর্বাং নিরন্তমানেন চ মানদেন।

## व्यथत्रवामी।

व्याद-११५वन् ॥ ३० ॥

নিএহোহপার্থহারেত্যক্তং ইদানীমন্ত্রহ এব ন নিএহ ইত্যাহ্রম্ব্রহ ইতি। নোহস্মাকং যক্ষাদস্য সর্পবং দ্খতে অতন্তর্মূল পাপ নিধর্তকো দণ্ডোহম্ব্রহ এব জ্যোধ্যেন প্রতীয়মানোহপীত্যর্থ:॥ ৩০ ॥

নহাংশ্চার্যলুগ্রহ ইতি ভ্যা পুর্মপুণামভিনদ্তি তপ ইতি। স্বরং মান্রহিতেন স্সন্যেভ্যা মান্দেন চ স্র্বং জীব্যুতীতি

### देवक्षवरकाषणी ।

ধংগে ইতি ফলং নানানরকাদিছ:খহেতুখলছোপশমনপূর্ব্বকং নিত্যস্থদানলক্ষণং ॥ ২৯ ॥

হি নিশ্চিতং নোহন্দান্ প্রতিদত্তো দণ্ডমেন দৃশ্চমানোহপায়মমুগ্রহ এব ভবতা কৃতঃ। সোহরমস্তাং কল্পরাপহ এব স্যাং। বদবন্ধাং কল্পবাদম্ব্য দেহিনঃ কর্মাভিন নিন্দেহং প্রাপ্ন কল্পতান দশ্বম্বতং কল্পতান ক্রান্দ্র দেহিনঃ কর্মাভিন নিন্দেহং প্রাপ্ন কল্পতান কল্পতান কল্পবাদম্ব্য ক্রান্দ্র ক্রা

তপ:ক্ষম্ভ্রাদি স্ক্র্ছ্ তপ্তং ক্বতং। সৌষ্ঠবমেব দর্শয়তি নিরস্তেতি। বিশেষণ্যয়েন তেন চ ঐচ্ছিকেন তস্য সন্তোষমসন্থাব্য পক্ষান্তর মান্তর্ধ ইতি। স্বধর্মো নিত্যঃ ক্বত ইতি শেবঃ। এবং স্বরূপেণ সামর্থ্যমূক্ত্বা বিশেষণেনাপ্যাহঃ সর্ব্বন্ধনামকম্পন্না ইতি। সমূকম্পা সর্বাস্থানা হিতাচন্ত্রণং তং পূর্ব্বক ইত্যর্থঃ। পূর্ব্বমিতি এতজন্মনি তত্তদমন্তবাৎ যতো যাত্যাং তপোধর্ম্মত্যাং কংসন্তোবার্থং ক্বতাত্যা

## ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

क्थेयदवर भगः मण्डः ४९८म् ॥ २२ ॥

ভশাং ফুঠেম্পি তব বস্তুভম্বপ্রত এব নিগ্রহাকার ইক্যান্তরম্প্রত ইতি। নো হস্মাকং দত্তঃ কলমং প্রাচীনবিবিধপাপং অপ্রস্তীতি সঃ। যতঃ কলম্বাং অসুব্য দেহিনো জীবস্য দন্দশূকমং। তস্মাং ক্রোধোহপীত্যাদি॥৩০॥

ইদানীত্ব নিগ্রহাকারেছিপি নৈবারমহ্প্রহা কিন্তু শিষ্টজনতাকষ্টলভামপি বন্ধরমনায়াদেনৈব লভতে আহল তু কিং প্রাচীনং অপ্পামন্তীতি বিতর্কয়ন্তা আহন্তপ ইভি। নিরস্তমানেন গর্জশূন্যবাদন্যকৃতসন্ধাননাভিলাবরহিতেন মানদেন অন্যেভ্যামানং দদতেতি তুপদ্যে বৈশুবীরত্বং ক্চিডং। বৈশ্বতরেষু তপত্রিক্মানিত্বমানদ্বাদর্শনাং। নাহং দানৈ ন তপ্সেভি অ্ছক্তেন্
রগতপদ্ত্বপ্রাহাদক্তাভাবাক্ত। সর্বজনাত্বকম্পনা উপলক্ষিতো বোধর্মঃ সক্ষত ইতি ধর্মগ্রাপি বৈশ্ববীয়ত্বং। কর্মিণাং সর্বা

দৃষ্টি, আপনি ফলই আলোচনা করিয়া দণ্ড বিধান করিয়া থাকেন ॥ ২৯ ॥

ভগবন্! আপনকার দণ্ড অস্থ জনের কল্মষ নাশক, ইহাতে কোন সন্দেহ নাই, আপনি এই দণ্ড করিয়া আমাদের প্রতি অনুগ্রহই প্রকাশ করিলেন, কারণ এ ব্যক্তির এক্ষণে যে সর্পশরীর দৃষ্ট হইতেছে ই হার সর্পশরীরের মোচন হইবে। অতএব সর্পত্তের মূলীভূত পাপ নিবর্ত্তনের কারণ হওয়াতে, আপনার দণ্ড যদিও আপাততঃ কোণ রূপে প্রতীয়মান হউক্, তথাচ অনুগ্রহ বলিয়াই স্মানাদের সন্মত হইল॥ ০০॥

তগবন্! এই ব্যক্তি স্বয়ং মান রহিত সত্য, কিন্তু অত্যের প্রতি মানপ্রদ হইয়া পূর্বে অপূর্ব তপস্থা অংবা সকল প্রাণির প্রতি অনুকম্পা করিয়া কি অনিবিচনীয় ধর্মই যে অনুষ্ঠান করিয়াছিল, বলিতে ধর্মোহথবা সর্বজনাত্রকম্পয়া যতো ভবাংস্তম্যতি সর্বজীবঃ॥৩১॥ কদ্যানুভাবোহদ্য ন দেব বিদ্মহে তবাজ্মিরেণুস্পর্শাধিকারঃ।

## श्रीभन्नवागी।

সর্বাজীবঃ॥ ৩১॥

নচ তপ আদি নিমিত্ত এব ভাগ্যোদয়: কিব্বচিম্বাং তব কুপাবৈভ্ৰমিত্যান্তঃ শ্লোকত্ত্যেণ ক্সাত্তাৰ ইতি। তপ আদিনা হি ব্ৰহ্মাদয়োংপি যত্তা: শ্ৰিয়ঃ 'প্ৰসাদমিচ্ছম্বি সা শ্ৰীল'লনাপি শ্ৰীরেৰ ললনা উত্তমা স্ত্ৰী যদ্য ব্ৰদ্পশ্লাধিকারত বাস্থ্যা তপ-

### देवश्ववद्यावनी ।

মিতি গমাং। সর্ব্বে জীবা যভেতি জীবেষু সংব্ধেষু সমানাদ্যভাবেন সন্মাননাম্ক শ্লাদিনাচ তব তৎপ্রভোজ্যেষসিদ্ধে:॥ ৩১॥

তব প্রিগোকুলেশ্বরপ্রাক্তির বেগুনাং স্পর্শন্ত এদিকার: অস্থাপরাধিন: কালিরস্য কতমস্য কারণস্যামূভাব: ফলং তর বিদ্মঃ।
তত্র হেত্র্যদিতি তাদৃশতপ্রমাদি প্রসাদ্যা শ্রীরপি ললনা প্রস্কুকোমলাপি যহাছরা কামান্ অন্তিধপ্রমধ্বসঙ্গম্যত প্রছোগান্
বিহায় গ্রহতা বন্ধনিয়মা সতী তপ আচরদেব নতু তং প্রাপেভার্থঃ। প্রাপ্তৌ সত্যাং ক্যামূভাবেহিস্য ন দেব বিদ্মতে ইতি
নোচ্যতে ইতি ভাবঃ। তচ্চ যুক্তমেব ইতি সম্বোধ্যন্তি দেব হে অন্ত্যানস্তমহিয়া দ্যোতমানেতি। এতহক্তং ভবতি শ্রীরেয়ং বৈকু
ঠেবরাদিপ্রেয়সীরূপা নতু গোপরামারূপা রেথাদিরূপাচ। গোপাস্তরেগ ভূজ্যোরপি যংশ্রহা শ্রীরিতি অন্তক্তেশ্বিরের পর্যাবসানাং
ক্ষেত্রবির্ধারপেণ তৃষামবন্দোভাগে স্থিত্বাচ্চ। তপোহত্র স্তাহাং স্পত্যারাধনং। অতএব পূর্বতে উৎকৃষ্টরং শ্রীকৃষ্ণস্য তেন সইহকাত্মা
জ্ঞানাত্রথাপি সৌন্দর্যাদিবৈশিষ্টেন লোভবিশেষাত্রাছত্বক যুক্তমিতি শ্রীত্বেন সর্বাসাং তাসামৈকাল্মে সত্যপি অন্যত্যায়া অভিলাব:। প্রাহ্রভিবভেনেনাভিমানভেদাং বথা বৈকুণ্ঠনাথাদিসঙ্গিনীম্বপি তত্ত্বন্ধীয় সীতাদীনাং শ্রীরামবিরহাদ্যং শ্রমতে ইতি ত্যাগিত
তপ্রাদিনা বিকালমপ্রাপ্তিরের বিবন্ধিতা। অপ্রাপ্তিকারণ্ড গোপীবন্তদনন্ত্রভাব এবেড়ি চ। যদ্যপি তাসাং প্রমতম্বনানাং
সঙ্গ এব শ্রীরন্ধাবনাম্বর্যন্ত্রাবা এব চ হেত্রন্তি তথাপি স্বাবমাননাং ত্রাসস্য চ তন্ত্রপ্রশ্বিরর ফ্লান্ডগোতাং তদপ্রতাব-

### ক্রমসন্দর্ভ:।

যবাজ্যেতি শ্রীরিয়ং বৈকুঠেখরাদিপ্রেয়দীরূপা। তপোহত্র ত্রীবাৎ স্বপত্যারাধনং। অতএব পূর্বত উৎকৃষ্টবং। শ্রীরেছেজ্ঞ নন্দনরপাবির্ভাববিশেষেহন্মিন্ লোভবিশেষাত্তধাঙ্করং চ যুক্তং। তদ্যাশ্চ তপ আদিনা ত্রিকালপ্রাপ্তিবেদ বিব্হিদ্তা ক্যাফ্ ভাবোহদ্যেত্যাদেং। অপ্রাপ্তিকারণক গোপীব্রদন্যবাভাব এব। যদ্যপি ভাদাং প্রমতম্ভকানাং দক্ষ এব শ্রীকৃদ্যবনাম্বর্কাদ এব

## विविधनाथहक्तवर्शी।

ভূতাপুক-পান্ংপত্তে। যত স্তপ্দো ধর্মাদ্ব হৈতো স্তব্যতি। অস্য শিরংস্ক রক্ষন্তীক্তের্ প্রহর্ষন্ত্যাচরণাং। সর্বজীবসন্থান-নাম্ক-পাদিনা সর্বজীবেষ্ সম্ভোধিতেষ্ সর্বজীবমন্দিরো ভবানপি সংভ্ব্যতীত্যর্থঃ। শ্লেষেণ সর্বাংশ্বং জীবয়সি ত্বস্তোয়কং ইনমেব কিং পাঞ্চি প্রহারে হ'ংসীতি দ্যোতিতং॥ ৩১॥

কিশ্ব তপ আদি হেতুক এব ভাগোদরঃ কিম্বত্র্কাং তব কুপাবৈভবমেবেদ্মিত্যাহঃ কদ্যেতি ত্রিভিঃ। অদ্য মংগনীচন্যাপি কালিব্দিদ্য তাবদমুভাবঃ ফলং তর জানীমহে। ফলমেব কিংদৃষ্টং তত্রাহঃ। তব নন্দপুত্রন্য অভিনুবেণোরপি স্পর্শে অক কৃকে গোহিবিকাবঃ সোহিপি তপ্সাদিস্কান্ত্রক্তিছ অরম্ভ অভিনুম্বকার্ত্কং স্পর্শং তঞ্চ নৃত্যলক্ষণং তরাপি ইপ্রশিবঃ প্র প্রাপেতি ভাগ্যম্য কিনান হিনা বাচ্চ ইতি ভাবঃ। ত্রনাদিস্কাভতেকভাহিধিকাপি প্রীন্তব নারাম্বন্দপ্য লগনাপি যায় গোপান্ত্রপম্য তব চরণস্থাবাজ্যা

পারিনা, যে হেতু আপনি সকলের জীবন দাতা, আপনি ইহার প্রতি সন্তোষ প্রকাশ করিতেছেন ॥৩১॥ তগবন্! অক্ষাদি দেবগণও তপস্যাদি দার৷ যে লক্ষ্মীর প্রসাদ প্রার্থনা করেন, সেই লক্ষ্মী ললনা হইয়াও আপনার যে চরণরেপুর স্পার্শধিকারবাসনায় অভান্য কামনা বিসজ্জ্বপূর্বাক অভধারিণী হইয়া বহুকাল তপস্যা করিয়াছিলেন, এই সপ্রের সেই চরণরেপু স্পর্শের অধিকার দেখিতেছি, এ ব্যক্তির ইহা কোন্ পুণ্যের ফল বলিতে পারি না, আমাদের বোধ হয় এই রূপ ভাগ্যোদ্য

যদ্বাঞ্জ্যা শ্রীল লনাচরতপো বিহায় কামান্ স্থচরং ধৃতত্রতা ॥ ৩২ ॥
ন নাকপৃষ্ঠং নচ সার্বভৌমং ন পারমেষ্ঠ্যং ন রসাধিপত্যং ।
ন যোগদিদ্ধীরপুনর্ভবং বা বাঞ্জি যৎপাদরজঃ প্রপন্ধাঃ ॥ ৩৩ ॥
তদেষ নাথাপ ছরাপমন্যৈস্তমোজনিঃ ক্রোধবশোহপ্যহীশঃ ।
সংসারচক্রে ভ্রমতঃ শরীরিণো যদিচ্ছতঃ স্যাদ্বিভবঃ সমক্ষঃ ॥ ৩৪ ॥

#### श्रीभत्रयामी।

আদাচরং অসা সর্পদা স কিং ক্বত ইতি কো বেজীতার্থ: ॥ ৩২ ॥

যত্তবপাদর**জঃ প্র**পন্নাঃ প্রাপ্তা পারমেষ্ঠ্যাদ্যপি তুচ্ছং মন্যক্তে ॥ ৩০ ॥

অহো তদেষ: অযত্তত এব প্রাণ অন্যৈ: প্রাদিভিরপি হ্রাণং। পুন: কথস্তুতং পাদরজ: যদিচ্ছত: সেব্যং মে ভবত্তিতি প্রার্থয়ত: এব সমক: প্রত্যক্ষ এব বিভব: অপেক্ষিতা সম্পদ্ধবতি ॥ ৩৪ ॥

### देवकवरजावनी ।

### ইতি জেয়ং ৫৩২॥

অহো অন্ত তাবৎ ত্ৰংপাদাক্তরোর রোব হতররেগুনাং স্পর্নমাহাত্ম্যং তদেকস্য যথা কথঞ্চিদাপ্রয়েণ মাহাত্ম্যপানির্বাচ্যমিত্যাহনে তি নাকপৃষ্ঠং ন বাছস্তি কিমৃত সার্বভৌমং এবং পারমেষ্ঠাং ইত্যাদি কর্ম্মকলং কৈমৃত্যেনোক্ত্রা যোগাদিফলং সমৃচ্চারেনাহঃ ন যোগেতি। অত্র টীকায়াং নাকপৃষ্ঠাদীতি লেখে পারমেষ্ঠ্যাদীতি লেখকল্রমাহ॥ ৩৩॥

অনৈয়র ক্লাদিভি: পরমোপাসকৈরপি ছংথেন প্রাপ্যং নজ্বদাপি প্রাপ্তং। এব মহাপরাধ্যপি বতন্তমোজনিতামস জাতিন্তত্ত চ ক্রোধবশ: তত্তাপি অহিষ্ শ্রেটোহপি তদেব প্রাপ্তঃ। এতচ্চ সাধনসহস্রাদপি ন ঘটতে ক্বেলছংকারুণাদেবেতি সম্বোধয়ন্তি। নাথয়তি দীনান্ যাচয়তীতি হে নাথেতি। কিঞ্চ। যদ্মিনান্সম্বন্ধনাত্তেণ সর্বেষাং সদ্য এব সর্বৈর্সিদ্ধি: স্যাং ইত্যাহ: সংসারেতি। দেহাভিমানিনোহপি বিভব: ঐহিকী পারলোকিকী চ বিভৃতি: প্রেমসম্পরা। এবং প্রাপ্যমৃদ্ধিইং। অভাধুনা সাক্ষাৎ ত্ৎপাদাক্সম্বন্ধীকৃত্তকণাগণোহয়ং ব্যক্তবিভববিশেষমের থলু প্রাপ্ত মহাতীতি ভাব:॥ ৩৪॥

## ক্রমসন্তর্ভ:।

চ হেতু রক্তি তথাপি স্বাবমাননাত্ত্বাসস্য তন্ত্ৰজ্পশূৰ্শ মন্ত্ৰন ফলাস্তঃপাতাৎ তদপ্ৰস্তাব ইতিবজ্ঞেরং॥৩২।৩১।৩৪।৩৪।৩৬।৩৯।৪১॥

### विविधनाथहक्तवर्डी।

#### তপ আচরৎ তদপি ন প্রাপ ॥ ৩২॥

এতাবন্মহিমন্তি ম'ৎপাদরেণুভিঃ কিং কলং স্যাদিতি চেন্মৈবং বাচ্যং তব চরণরেণব এব ফলং সর্বাফলেভ্যোহপ্যধিকমিত্যান্থ-নেতি। প্রপন্না এব বাশুন্তি কিং পুনন্তৎপ্রাপ্তাঃ অপবর্গমপি কিং পুনন্ কিপৃষ্ঠাদিকং॥ ৩০॥

অন্যৈৰ্শ স্থাদিভিরপি। কিঞ্চ। সর্কাফ শম্কুটভূতমণি বংশাদরজঃ সকামজন্যস্য ফলসাধনমণি ভবতীত্যাহঃ সংসারেতি। ইচ্ছতঃ সকামস্য শরীরিণঃ যং যতো বিভবঃ সমকঃ ইচ্ছাবিষয়ীভূতাদণি যতঃ অপেক্ষিতা সম্পত্তিঃ প্রত্যক্ষৈব ভবতীত্যর্থঃ॥ ৩৪॥ তপ্স্যাদি জনিত নহে, ইহা কেবল আপনার অচিস্ত্য কুপারই বৈভব॥ ৩২॥

প্রভো! আপনকার চরণরেণু দামান্য নহে, যে দকল ব্যক্তি ইহা প্রাপ্ত হন্, ভাঁহারা স্বর্গপৃষ্ঠ অথবা দার্বভৌম পদ কিম্বা পারমেষ্ঠ্য ( ব্রাহ্মপদ) অথবা পৃথিবীর আধিপত্য কিম্বা যোগদিদ্ধি অথবা অপুনর্ভব ( যাহাতে আর পুনশ্চ সংসারে জন্মমরণাদি হর না তাদৃশ নির্বাণ মুক্তি ) কিছুই বাঞ্ছা করেন না, অর্থাৎ আপনার চরণরেণু প্রাপ্ত হইলে স্বর্গাদি পদ ভুচ্ছ বোধ হইয়া থাকে॥ ৩০॥

হে নাথ! কি আশ্চর্য্য, এই সর্পরাক্ত তমোগুণের অংশে উৎপন্ধ এবং স্বভাবতঃ ক্রোধের অধীন হাইয়াও আপনকার চরণরেণু প্রাপ্ত হাইল, অন্য ব্যক্তিদের অর্থাৎ লক্ষ্মী প্রভৃতির ইহা স্থলত নহে। প্রভো! সংসারচক্রে নিয়ত ভ্রমণশীল শরীরী পুরুষ যাহা ইচ্ছা করিলে অর্থাৎ ''ইহা আমার সেব্য

নমস্তভ্যং ভগবতে পুরুষায় মহাস্থনে। ভূতাবাদায় ভূতায় পরায় পরমাত্মনে। ৩৫॥ জ্ঞানবিজ্ঞাননিধ্যে ব্রহ্মণে ২নস্তশক্তয়ে। অগুণায়াবিকারায় নমস্তে প্রাকৃতায় চ॥ ৩৬॥

### श्री धरुवामी।

নমস্বভ্যং ভগবতে অচিত্তৈ স্বর্থানি গুণায় তত্বপণাদনায় দশভিঃ শ্লোকৈবি শেষণানি। পূর্য্ অন্তর্থামিরপেণ বর্ত্তমানায় মহাত্মনে এব-মপি তাভিরপরিচ্ছিলায় কুতঃ ভূতাবাদায় আকাশাদ্যাশ্রমায় তদপি কুতঃ ভূতায় পূর্কমিপি সতে কুতঃ প্রায় কারণায় কিঞ্চ প্রমাত্মনে কারণাতীতায় ॥ ৩৫ ॥

কারণবং কারণাতীতত্বক সমর্থয়িত্মাহ: জানবিজ্ঞান নিধয় ইতি। জ্ঞানং জ্ঞানিং চিছ্নজিঃ তয়োনি ধিয়ে তাভাাং পূর্ণায় কৃথং তথাবং অত উক্তং ব্রহ্মণেহনস্তশক্তয়ে ব্রহ্মণে কৃথং তথাবং অত উক্তং ব্রহ্মণেহনস্তশক্তয়ে ব্রহ্মণে কৃথস্থতায় অপ্রধার অবিকারায় ক্থস্পতায় অনন্তশক্তমে প্রাক্তায় প্রকৃতি প্রবর্ত্তক ব্রহ্মনার কারণাতীতং প্রকৃতি প্রকৃতি প্রকৃতি কার অপ্রাক্তমান নিধিবালীশরঃ কারণং তত্ত্তয়াত্মনে নম ইতি ॥ ৩৬॥

#### देवक्षवरजावगी।

জ্ঞানস্বৰূপায় অথচ বিজ্ঞাননিধ**রে। কর্মধা**রয়ঃ। ত্রহ্মণে সঙ্গাতীয়বিজাতীয়াদিভেদরহিতস্বরূপায় অথচানস্তশক্তয়ে অগুণত্বেনা বিকাবায় অথচ প্রকৃতিপ্রবর্মকায় ইত্যতাম্ভূতত্বমেব পরত্রাপ্যেবমেব জ্ঞেয়ং॥ ৩৬॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

বজ্ভি: শ্লোকৈ: ক্পামেবং বির্ত্য দশভি: প্ন:। একাদশ নতীশ্চকুর্ভক্ত্যা কালিয়বোধিত:। ভক্তেরুপাদ্যজেনাহ:। ভগবতে অপ্রাক্তষ্টেড়খগ্যবতে। পুন্ধায় নরাকারায় মহাঝনে নরক্ত্যাপি দর্মব্যাপকায় যোগিভিক্ষপাদ্যজেনাহ: দর্মভূতনিবাদায় ভূতায় প্রাম্পি সতে॥ ৩৫॥

জ্ঞানিভিজ্পাস্ত্রনাক:। জ্ঞানবিজ্ঞানয়ো: সম্পদোনিধিরিব নিধিস্তব্য:। পুনর্ভক্তোপাস্যে নরাকারে তত্মিন্ মন্দ্রীভি: প্রস-জ্ঞিতান্ গুণবিকারাদি দোমান্ বারয়ন্তা আহে:। অনস্তশক্তয়ে অতর্ক্যানস্তশক্তিসমূজায়। অগুণায়াবিকারায় প্রাকৃত গুণবিকার-রহিতায়। অপ্রাক্তায় অপ্রাকৃতগুণবিকারসহিতায় ইত্যুর্থ:॥ ৩৬॥

হউক্" এইরূপ প্রার্থনা করিলে তৎক্ষণাৎ অপেক্ষিত সম্পত্তি প্রাপ্ত হয়, তাহা কি অনায়াদে লভ্য হইতে পারে ? ॥৩৪ ॥

ষাহা হউক, আপনকার ঐশ্বর্যাদিগুণ অচিন্তা, আপনাকে নমস্কার করি। আপনি সকল দেহে অন্তর্যামিত্বরূপে বর্ত্তমান এবং মহাস্থা, কিন্তু সকল দেহে ঐরপে বর্ত্তমান হইয়াও অপরিচ্ছিন্ন, যে হেতু আপনি আকাশাদি ভূতেরও আশ্রয় এবং পূর্বাবিধি বর্ত্তমান আছেন,অপিচ সকলের কারণ, পরস্তু স্বয়ং কারণাতীত ॥ ৩৫ ॥

আর আপনি জ্ঞপ্তি ও চিৎশক্তিতে অর্থাৎ জ্ঞান ও বিজ্ঞানে পরিপূর্ণ এবং নির্গুণ, নির্বিকার, প্রকৃতিপ্রবর্ত্তক, অনস্তপক্তি, ত্রহ্মস্বরূপ, স্ত্তরাং আপনাকে নমস্কার করি॥ ৩৬॥

কালায় কালনাভায় কালাবয়বদাক্ষিণে। বিশ্বায় তত্নপদ্ৰষ্ট্ৰে তৎকত্ৰে বিশ্বহেতবে॥ ৩৭॥ স্থুতমাত্ৰেব্ৰিয়প্ৰাণমনোবৃদ্ধ্যাশয়াস্মনে। ত্ৰিগুণেনাভিমানেন গৃঢ়স্বাস্থামুস্কৃতয়ে॥ ৩৮॥ নমোহনন্তায় সূক্ষায় কৃষ্টস্থায় বিপশ্চিতে। নানাবাদামুরোধায় বাচ্যবাচকশক্তয়ে॥ ৩৯॥

### গ্রীধরস্বামী

অনতশক্তিমাৎ কালশক্তা বিশ্বস্থানি রূপেণ ন্যায় কালার কালার কালাররপার কালনাভার কালশক্তাশ্রার কালাব্রবানাং স্ট্যাদিসন্বার্যানাং সাক্ষিণে ভতশু বিশার বিশ্বরূপার তহি কিং জড়োহহং ন হি তছুপদ্রটে নচ ত্রইনাত্রার কিন্তু তং করে নচ কর্ইনাত্রার বিশ্বহৃত্বে স্ক্রিবার্গরণার ॥ ৩৭॥

তদেবাহঃ ভূতমাত্রেত্যাদি। আশ্যশ্চিতঃ ভূতাদিরপায় অতঃ সর্ব্বকারকরপায়েতি অহস্কারাত্মত্মা নম্সান্তি ত্রিগুণেনেতি। এবং স্ষ্টিকার্য্যে যদ্ধি গুণোহভিমানত্তেন গূঢ়া যাংশভূতানামাঝুনাং অমুভূতির্যেন তক্ষৈ॥ ৩৮॥

জন্ত অহস্কারানাবৃত ইতি স্তবন্তি নমোহনস্তায় অহস্কারাপরিচ্ছেদাং। অতঃ স্ক্রায় অদৃশ্যত্বাং। অতএব কুটস্থায় উপাধিকুত-বিকারাভাবাং। অতএব বিপশ্চিতে সর্কজ্ঞায়। এবং বস্তত্বেন স্তত্তা অচিস্তাসায়ত্বেন স্তবন্তি নানাবাদায়বোধায় অন্তি নাতি সর্ক্তজ্ঞঃ

### देवकवरकावनी।

কালার কালশব্দিকমেন জ্জাপার। অথচ কাল্স্য কাল্চক্রন্য নাভ্য়ে মধ্যবলয়ায় তদাশ্রয়ায়েত্যর্থ:। সমাসাভত্মার্থ:। তথাপি কালাব্যুবানাং সাহ্মিণ এব নতু তেরু প্রস্কায় তদােষালেপাং। বিশায় বিরাড্রপায় ততুপ্রস্তে বিশান্ত্যামিণে ॥ ৩৭॥

ভূতাদীনামান্ত্ৰে চেত্যিত্ৰে জ্ঞানপ্ৰদায়েত্যথ:। অথচ গূঢ়া মায়য়া আছোদিতা স্বাংশভূতানাং জীবানামহুভূতিরাম্বতত্তানং যেন তথ্য নম:॥ ৩৮॥

অনস্তায় প্রমম্হতে অথচ স্ক্রায় কৃটস্থায় নির্বিকারায় অথচ বিপশ্চিতে বিচিত্রবৈদ্ধিগুরবে নানাবাদানমূবোধয়তি প্রবর্ত্তয়তি ইতি তল্পৈ যতঃ বাচ্যবাচক্ষো: অর্থ শক্ষো: শক্তির্যন্ধান্তলৈ ॥ ৩৯ ॥

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

কালবিশেষে দেশবিশেষে চ প্রাত্র্তিত জিন্তত্তংপরিচ্ছেদাদিদোধান্ বারয়ন্তা আহঃ কালার কালস্বরূপায় কালনাভার কালশক্তাশ্রমায় তথাপি কালাব্যবানাং স্ট্যাদিসম্বায়ানাং সাক্ষিণে এব নতুতেবু সক্তায়। বিশ্বায় বিশ্বরূপায়। তহি কিং জড়ো-২হং ন হি তত্ত্তি ট্রা নচ প্রষ্ট্যাতায় কিন্তু তৎকর্ত্ত্তি। নচ কর্ত্নাত্রায় কিং বিশ্বহেত্বে বিশ্বস্য হেতুসমুদায়ায়॥ ৩৭॥

নচ হেতুমাত্রায়াপি যতো ভূতাদীনাং আত্মনে.চেতরিত্রে হতোহভূতং চরিত্রং যতো জড়ানপি চেতর্যসি চেতনানপি জড়ীকরোবী-ডাহিং। ত্রিগুণো যোহভিমানত্তেন গূঢ়া আর্তা শোভনা আত্মনো জীবস্যাক্সভৃতি জ্ঞানং যেন তবৈ ॥ ৩৮॥

নত্ন কিষত্ৰ তবং তত্ৰাহু: অনস্তার অশ্যান্তং বহং ন প্রাপুদ ইত্যর্থ:। তত্র হেতু: ক্ষায় ছজেরত্বদিত্যর্থ:। নহ জীবামানং মদভিননেব পণ্ডিতা আছেন্তং কিমহমামানমেব মোহয়ানি তত্র মৈবং বাদীরিত্যাহু: কৃট্ছার। একরপ্রতা তু হু:, কালবাাপী স কৃট্ছ-ইত্যভিধানাং অমেকেনবাপ্রচ্যুত্তকরপেন সর্ব্ধালাং ব্যাপ্লোষি স তু দেবমহ্ব্যতিষ্যাগাদিভিরনেকৈ: প্রচ্যুত্ত স্বর্ত্ত কিঞ্চিদেব কালং ব্যাপ্লোজীত কথং অন্তিন্ত্র: স ইতি ভাব:। দেবমহ্ব্যাদিত্বং বস্ততো জীবস্য ন স্বর্গমিতি চেত্ত্বদিপ ত্বত্তঃ স্বর্ত্ত কালং।

ভগবন্! আপনি কালস্বর্রূপ, কালশক্তির আশ্রয়, কালাবয়ব সকলের অর্থাৎ স্ফ্ট্যাদি, সমবায়ের সাক্ষী, বিশ্বরূপ, বিশ্বের দ্রুফী, বিশ্বের কর্ত্তা, এবং বিশ্বের সর্ব্যকারণ, আপনাকে নমস্কার ॥ ৩৭ ॥

প্রতো! আপনি সমস্ত ভূত, ইন্দ্রিয়, প্রাণ, মন, এবং চিত্তের স্বরূপ, সৃষ্টিকার্য্যে যে ত্রিগুণাত্মক অভিমান, তদ্বারা আপনকার অংশভূত আত্মার অন্মুভাব গৃঢ় হইয়া আছে, আপনাকে নমফার করি॥৬৮ ভগবন্! আপনি অপরিচ্ছর অহঙ্কারে আর্ত নহেন একারণ অনস্ত, অদৃশ্য, এপ্রযুক্ত আপনাতে সূক্ষ্ম, উপাধিকত বিকার নাই, এই হেতু কূটস্থ অতএব সর্বজ্ঞ। প্রভো! আপনি মায়া ছারা ছস্তি, নান্তি, সর্বজ্ঞ, কিঞ্জিজ্জ, বদ্ধ, মুক্ত, এক, অনেক, ইত্যাদি নানাবাদের অনুবর্ত্তী হন্। অপর আপনি বাচঃ

নমঃ প্রমাণমূলায় কবয়ে শাস্ত্রোনয়ে। প্রস্তায় নির্তায় নিগমায় নমোনমঃ॥ ৪০॥
নমঃ কুঞ্চায় রামায় বহুদেবহুতায় চ। প্রত্যন্তায়ানিক্তরায় সাত্তাং পতয়ে নমঃ॥ ৪১॥

## ञीधवयामी।

কিঞ্জিজ্জঃ বন্ধো মুক্তঃ একঃ অনেকঃ ইত্যাদীন্ নানাবাদান্ অহকণন্ধি মান্ত্ৰাংহহবৰ্ততে যন্তকৈ। কিঞ্চ। বাচ্যবাচকশক্তয়ে অভিবেদ্ধা-ভিধানশক্তিতে দাদিপি নানাত্বেন প্ৰতীয়মানায়েত্যৰ্থঃ ॥ ৩৯ ॥

অনাবৃত্তথ্যের হেবস্তব্যে স্ক্রন্তা: তারন্তি নুন্দ: প্রমাণমূলার চকুরাদীনাং চকুরাদিরপার অতএব কব্যে স্বয়ং তল্লিরপেকজ্ঞানার কুত: শাল্রযোন্ত্রে বেদাত্মকনিশাসায়। কিঞ্চ। প্রবৃত্তায় নির্বায় নিগমার নমোন্ম: ॥ ৪০ ॥

কিঞ্চ অনাবৃতিখর্যাদের চতুমূর্ত্তিরূপেণ দর্ব্বোপাদ্যখেন নমন্তি নমঃ ক্লকায়েতি শ্লোকেন। রামায় সকর্ষণায় বস্থদেবস্থতায় চেতি।

### বৈষ্ণবভোষণী।

অতঃ প্রমাণং ঐতিগবতশাস্ত্রসারসংগ্রহাঃ বেদান্তস্য মুলার কারণারাশ্রয়ায় বা কব্যে অতঃসিদ্ধজানায় অথচ শাস্ত্রযোন্যে শাস্ত্রনেব যোনিঃ প্রমাণং যস্য শাস্ত্রযোনিয়াদিত্যত্র তথা তথা ব্যাথ্যানাং। প্রবৃত্তং নিতৃত্তঞ্চ শাস্ত্রং তত্তরকা অপি নিগমরপায় অভ্তরেন প্রন্মোন্ম ইতি॥ ৪০॥

কিঞ্চ বয়ং ভগবান্ প্রীক্ষেষ্ট্রপি ছমেকশচ্ছ্র্রিধশেচতি বদস্কান্তরৈব নতিং পর্যাবসায়য়স্তি নম ইতি সাজ্তামুপাদকানাং পত্যে ইতি পতিবেনৈক্যমের সাধিতং। অন্যথানর্থাপত্তিঃ স্যাং। তথাচোক্তং পঞ্চমন্ধে প্রীলন্ধীদেব্যা।স বৈ পতিঃ স্যাদক্তোভয়ঃ বয়ং সমস্ততঃ পাতি ভয়াতুরং জনং। স এক এবেতর্থা মিথোভয়মিতি। অন্যক্তঃ। বছা। ক্ষণায়েতি প্রস্তুতছাৎ শ্রীনন্দনন্দনর্পায় বকুং এজেশস্ত্রোরম্বেণ্ডুইং ইত্যাদি প্রদিদ্ধা রামায় চ তজ্ঞপার বস্থাদেবস্থায় চ তলৈ তলৈ তলে তৎসহবোগেন প্রহায়ায় আনিক্ষায় চ তদ্ব্যহাস্তঃপাতিনে এবমত্র ক্ষায়েতি বায়দেবাস্তর্মা ব্যার্স্তর্থং রামায়েতি সম্ব্রাস্ত্রকার অতএব বস্থাদেবস্থায়েতি ক্ষেণ ধর্মপুরাদে দ শর্থপুরাদেশ্চ তত্তংসহবোগেন প্রহায়ানিক্ষ্যোশ্চান্যছায়িতি তেন সাম্বতা যাদবা এব তদেবং নিতাম্বর্পা স্টিতং। তথাচ গ্রীগোপালতাপন্যাং। প্রাপ্য মথুরাং প্রীং রম্যাং সদা ব্রহ্মানিক্ষে প্রহামিক্ষাল্য সহিতা বিভূরিতি। ত্রিভিঃ রামানিক্ষ্য প্রহামিক্ষ্য প্রায়া সহিতা বিভূরিত। ত্রিভিঃ রামানিভিঃ

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

কৃষ্ণায় রামায় চ বাহ্দেবায় বহুদেবহুতায়েতি বাহুদেবাদিচতুর্য হাস্তরং ব্যাবর্ত্তিং॥ ৪১ ॥

### ত্রীবিশনাথচক্রবর্তী।

বিপশ্চিতে সর্বজ্ঞায় সতু অন্নজ্ঞ এব প্রাসিদ্ধ ইত্যর্থ:। কিঞ্চ তদপি জীবাঁথা ঈশবাদ্ভির ইতি ঈশবাভির ইতি জড় ইতি চেতন ইতি এক ইত্যনেক ইত্যাদিনা নানাবাদান্ অনুস্থাৎদি কৌতুকার্থমবকাশর্মীতি তুলৈ। অতএব ছিছেবিশাদেব তত্র মিথো বিবাদিনো মিথ: সন্থাদিনন্দ পণ্ডিতা: শব্দমেব প্রমাণীকুর্বস্তীত্যাহ্বতিয়ানামর্থানাং বাচকানাং শব্দানাঞ্চ নানাবিধা: শক্তায়ে যথাৎ তুলৈ॥ ৩৯॥

শিষ্টশক্ষনাত্রস্য প্রামাণ্যেইপি শ্রীভাগবতস্য সর্কাধিক্যমাহঃ প্রমাণমূলার শ্রীভাগবতস্বরূপার কবরে তৎকত্রে বেলবাসরূপার স প্রামাণ্যার্থমের ব্যাসরূপো ভবসীত্যাহঃ। শার্র্যোনরে অভএব শার্রস্য যোনরে প্রাছ্ডাবকার শার্রং শ্রীভাগবতমের যোনিঃ প্রমাণ্য যস্য শার্র্যোনিছাদিত্যকৈর ব্যাখ্যানাৎ তথা চতুর্বর্গপ্রতিপাদকং শার্র্মণি প্রমাণ্যিত্যাহঃ। প্রবৃত্তশার্রার নির্ত্তশার্রার তন্মূল-নিগ্রমশার্রার ॥ ৪০ ॥

সর্বশাস্ক্রপ্রতিথাদিতসারস্করণাণি তু তব চ্বার্টোবেতাছন্ম ইতি চকারারলস্থতার্ক। সাম্বতাং সাধ্তবংশোংপর-

ও বাচকশক্তি অর্থাৎ অভিধের ও অভিধানশক্তি ভেদের কারণেও নানারপে প্রতীয়মান হয়েন॥ ৩৯॥ ভগবন্! আপনি প্রমাণসমূহের মূল অর্থাৎ চক্ষুরাদি ইন্দ্রিয়েরও ইন্দ্রিয়েইরপ, অতএব আপনি কবি অর্থাৎ নিরপেক্ষ অথবা স্বতঃসিদ্ধ জ্ঞানবিশিষ্ট এবং নিথিকশাস্ত্রের যোনি, অর্থাৎ বেদ সকল আপন-কার নিখাস, আর আপনি প্রবৃত্ত ও নির্ত নিরম স্বরূপ, আপনাকে নম্কার॥ ৪০॥

প্রভা ! শ্বন্ধান্ত প্রকাশমান জীক্ষা, সক্ষর্ণ, প্রক্লান্ত এবং অনিক্রন্ধ আপকার এই চারিম্র্ভি,আপ-

নমো গুণপ্রদীপায় গুণাত্মাচ্ছাদনায় চ। গুণর্ভ্যুপলক্ষ্যায় গুণদ্রষ্ট্রে স্বসন্থিদে ॥ ৪২ ॥ অব্যাকৃতবিহারায় সর্বব্যাকৃতসিদ্ধয়ে। হ্যীকেশ নমস্তভ্যং মুনরে মৌনশীলিনে ॥ ৪০ ॥

### खीधत्रभामी।

বস্থদেবশনিতং ওদ্ধনৰং তত্ৰ প্ৰকাশমানায় বাস্থদেবায়েভাৰ্থনে সাম্বভাম্পাদকানাং প্তয়ে সালোক্যাদিনা পালকায় এবং চভুম্প্তিয়ে কৃষ্ণায় ভূভ্যং নম ইত্যৰ্থ: ॥ ৪১ ॥

কণং চতুম্র্তিতেত্যাহ: নমো গুণপ্রদীপায়েতি গুণা: অস্তঃকরণানি তান্ প্রদীপয়তি প্রকাশরতীতি তথা তল্মৈ চিন্তাদ্যধিষ্ঠাতৃত্বেন চতুম্ ্রিতেত্যর্থ:। নমু তথাপ্যেকদ্যৈর কথং চতুষ্ট্ং অত আহু: গুণাঝাচ্ছাদনায় চ তৈরের গুণৈরূপাসকানাং ফলবৈচিত্র্যাঝানামা-চ্ছাদ্য নানাত্বেন প্রকাশমানায়েত্যর্থ:। নমু তহি কথং প্রতীতিরত উক্তং গুণর্ভ্যুপ্লক্ষ্যার চিন্তাদীনাং চেন্তনব্যবসাঝাদির্ত্তিতির-প্লক্ষার উপ্লক্ষণমাহু: গুণ্ডট্রে তৎসাক্ষিণে কথ্ঞিত্ত্বপ্লক্ষ্য এব ন জ্ঞের ইত্যাহু: স্বস্থিদে স্বগোচরারেত্যর্থ:॥ ৪২॥

श्वरंगीठतच्यू भनका एक मर्गयरका नमस्त्र व्यवाक् जिरावाच व्यवकामिक देजार्थः मर्वराक् जिल्ला मर्ककार्या १ भिक्ष व

### देवक्षवरकाषनी।

শক্তা চ ক্লিণ্যেত্যযায়: । এবমেবোক্তং মধুরা ভগবান্ যত্তেতি বস্থদেবস্থতার চেতি প্রীক্ষণকে চকারাৎ প্রীনন্দগোপকুমারার প্রাগায়ং বস্থদেবস্থতার কিছে কিছিলাত ইতি ন্যারেন বস্থদেবস্থতার চেত্যর্থ: । প্রীরামপকে তাতং ভবস্তং মধান ইতি বক্ত্রং ত্রনেশস্থতরোরিতি ব্যব্ হারেণ শ্রীনন্দগোপকুমারার চেত্যর্থ: ॥৪১॥

তদেবং ভকান্ প্রতি গুণপ্রদীপার স্বরূপভূতানামৈর্য্যাদি গুণানাং প্রকাশকার। অভকান্ প্রতি তু গুণে: প্রাকৃতিরায়ান্ছাদনার। যদ্যপ্রের তথাপি তেবাং প্রাকৃ গুণানাং জড়ানাং অপি বৃত্ত্যা প্রবৃত্ত্যাপলক্ষ্যার তৎপ্রবর্ত্তক্ত ছেনাহ্নের্যার। তংপ্রবর্ত্তন্ত কর্মের কথং তক্রাহ ভদু দ্রে বীক্ষামাক্রেণেতি ভাবং স্বয়ন্ত স্বস্থিদে স্বপ্রকাশস্বরূপ গুণরপার। য্যা। এবং যাদবস্থানেহপি গোকুল-স্বন্ধ এব গরীয়ানিত্যাহং। প্রেমবশ্যভাদীনাং গুণানাং প্রকর্ষেণ প্রকাশকার তাদৃশগুণপ্রকাশেনাপ্যান্থাছিদিনার চ আর্তনিজ্যের্যার গুণাদামিত্রাত্মানমাছোদর্যান তথা তবৈ বা দামোদরত্বে শুবিশাদ্যা বছভিদ্যানভিব দ্বনাৎ তথাপি গুণানাং মনলার্জ্ক্নমোচনাদি লক্ষিতানাং দায়ামেব বা বহুনামপ্যপর্যাপ্রানাং বৃত্ত্যা বর্ত্তনেন জ্বোরা। কিঞ্চ গুণজ্বেই দায়াং তেষামেব ক্রেই ভীত্যা মূহদ শ্নিপ্রায়। অথচ স্বেষু ব্রস্য বালকের তদানীমপি নবনীতচোর্য্যাদ্যর্থং সন্ধিদং সঙ্কেতা যদ্যেতি ইদমন্ত্রমেব ॥ ৪২ ॥

অব্যাক্তত: প্রপঞ্চাতীতো বিহারো যদ্য অথচ দর্মত ব্যাক্ততেন তত্তলীলবেন দিন্ধি: প্রদিন্ধিবদ্য দর্ম ব্যাক্তিট্যাব দিন্ধিততলীলা

### ক্রমসন্দর্ভ:।

অব্যাক্তবিহারায় প্রপঞ্চাতীতলীলায় ॥ ৪৩ ॥ ৪৪ ॥

### **बिविधनाथहळ वर्छी**।

শুরাদীনাং পর্যাণাদীনাঞ্চ পত্তমে পালকায়॥ ४১॥

যতক্তেখেব গুণানাং প্রেমবশ্যথাদীনাং প্রকর্ষেণ প্রকাশকায়। তথা প্রকাশিতেন প্রেমবশ্যথগুণেন আজ্বছাদনায় আর্ত নিজৈবর্ষ্যায়। তদপি থং ভক্তিভর্থজ্ঞৈর্জাতব্দরূপ এব ভবদীত্যাহ:। গুণস্য ভক্তবাংসল্যাভিশরস্য র্ক্ত্যা অসাধারণসভ্যা উপলক্ষ্যায়
বয়ং ভগবস্তং বিনা কোহপ্যেবং ন ভবতীতি জ্ঞেয়ায়। যতো গুণস্তট্টে স্বভক্তস্য গুণমেব পশ্যতি নতু দোষগন্ধমপি যন্তবৈশ্ব। অভএব
বেষু ভক্তবেব সন্বিদ্যুভবো ক্স্য তবৈশ্ব॥ ৪২॥

লীলা প্রবেষান্তমন্য তব লীলামাৰ্থ্যাধিক্যমিত্যাহ:। অব্যাহ্নতঃ অনির্ধাচ্যখাদ্যংপাদিতঃ প্রাহ্নতো বা বিহারো যন্য ওলৈ । যন্ত। নাকে নমকার করি। ভগবন্! আপনি উপাদকদিগের পতি অর্থাৎ সালোক্যাদি মুক্তি ছারা উপাদ-কের পালক, আপনাকে নমকার॥ ৪১॥

প্রভা ! আপনি অন্তঃকরণ অর্ধাৎ অন্তরিস্কিয়গণ প্রকাশ করেন স্নতরাং আপনি চিন্তাদির অধিষ্ঠাতা অতএব চতুর্গুর্তি, অপিচ সেই সেই গুণে উপাসকদিগের ফলের বৈচিত্র্যবশতঃ আপনাকে আচ্ছন্ন করিয়া নানারূপে প্রকাশমান হন্। আর আপনি চিন্তাদির চেতনব্যবসায়াদি রুত্তি বারা উপলক্ষ্য এবং সন্তাদিগুণত্রয়ের সাক্ষী ও স্বগোচর অর্থাৎ আপনিই আপনার বিষয়,আপনাকে নমস্কার করি ॥৪২ তাগবন্! আপনকার মহিমা তর্কের অগোচর, আপনি সমস্ত কার্য্যের উৎপত্তি ও প্রকাশের হেতু,

# পরাবরগতিজ্ঞায় সর্বাধ্যক্ষায় তে নম:। অবিশায় চ বিশায় তদ্ধু ট্রেচাস্য হেতবে ॥ ৪৪ ॥

## अध्यक्षामी।

হেভূত্বেন উপলক্ষণযোগ্যারেভ্যর্থঃ। উপুলক্ষণাশ্তরমাছঃ হারীকেশ করণপ্রার্থক কিং বিষরশিক্ষা ন মুনরে আত্মারামার কিং সাধনবশেন ন হি ন হি মৌনশীলিনে মৌনমাত্মারামভা তৎস্বভাবার ॥ ৪৩॥

কুত: পরাবরণতিজ্ঞায় খূল স্কাণাং গতিজ্ঞবেন ন কাপি সজ্জমানারেতার্থ:। অপিচ সর্বাধ্যক্ষায় সর্বাধিষ্ঠাত্তে কুত এতৎ অবিশায় ন বিখং বিশ্বন্ তিল্লিয়েধাবধ্বে বিশায় চ বিশ্বন্ধায় তিবিত্তি ধিষ্ঠানায়েত্যুথ:। কিঞ্চ তদুট্রে অধ্যাসাপবাদসান্ধিনে; অপিচ অভ্যচ বিশাধ্যাস্য্য তদপবাদ্য চ অবিদ্যাবিদ্যাভ্যাই হেতবে। যহা। অবিশায় বিশ্ব তৈজ্ঞসাদ্যবহারহিতায় বিশায় চ মায়না স্বাংশৈস্তদবস্থায় তদ্ধ বৈ তাসামবস্থানাং ভাঝাভাব সান্ধিনে। অন্যং সমানং। তাহাং সর্ব্বেগতিজ্ঞস্কাধিষ্ঠাত্ত্বান্থানায় দিভি নির্তিশবৈশ্ব্যায় তুভাং নম:। বিশেষবৈশ্বস্থানীতিঃ পঞ্চপঞ্চাশতা হৃতঃ। অহিস্কীতিঃ প্রসন্ধোবিভাগামিব ভবেদ্ধিঃ॥ ৪৪ ॥

### देवकवरकावनी।

সাধকতা যদ্যেতি বা। তহকং। প্রপঞ্চং নিশ্রপঞ্চেংপীতি অব্যাক্তলীলভাদেব। পরিনিষ্টিতোহিপি নৈওঁণ্যে উত্তমংশ্লোকলীলয়। গৃহীতচেতা রাজর্বে আথ্যানং যদগীতবান্ ইত্যাদিকং ঘটত ইত্যাহঃ হ্ববীকেশ হে স্বন্ধিক্ষারামপর্য্যান্তানাং সর্ব্বেছিকপ্রবর্তকেতি। মুন্রে আত্মারামায় অথ্চ অকারপ্রশ্লেষে আমৌনশীলিনে ত্বিপরীত প্রীগোকুলানন্দনলীলায়। যহা। ন ব্যাক্তা ন ব্যক্তোন বিহারো দ্বিপরশ্চৌর্যাদিচেষ্টা যদ্য তথাপি সর্ব্বেরেব ব্যাক্তা তন্মাত্রাদিভ্যো ব্যাথ্যাতা দিক্তিভচ্চেষ্টা ফলং দ্বিপরেভিক্ষণাদিকম্পি যদ্য তথাপ সর্ব্বেরেব ব্যাক্তা তন্মাত্রাদিভ্যো ব্যাথ্যাতা দিক্তিভচ্চেষ্টা ফলং দ্বিপরেভিক্ষণাদিকম্পি যদ্য তথাপ সর্ব্বেরের ব্যাক্ষণাদিত বিহু সংক্ষাত্র ব্যাক্ষণানিত্র বিশ্বর ব্যাক্ষণাদিত বিহু সংক্ষাত্র ব্যাক্ষণাদিত বিশ্বর ব্যাক্ষণাদিত বিশ্বর বিশ্ব

তাদৃশাতক্য লীলতে হেতু: পরাবরগতিজ্ঞার তত্তদায়ত্বেন তত্তত্ত্ত্তায় নতু জ্ঞেয়ায় তথাপি সম্প্রতি সর্ক্ষেমধাক্ষায় অক্ষানি অধিকৃত্য বর্ততে ইতি প্রত্যক্ষায়। কিঞ্চন বিদ্যাতে বিখাং যত্র তথাপি বিখার স্বোদরে তদর্শিতবতে ইতার্থ:। তদ্ধু ট্রে বন্ধমোহা-পনোদনেহিশি অনাব্তজ্ঞানস্বভাবেন স্পাণিক্বল্যমেশে তদ্ধু নতু তত্ত্বাপারক্ত্রে। তথা তত্তত্ত্ত্ত্ক্রমণেণাস্য চ হেতবে

#### এ বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

নব্যাক্তো বিবাহাদিব্যাকাররহিত এব বিহারো যায় স:। সর্প্রেষাং ভক্তবিশেষাণামের ব্যাক্তানাং তংসেবোচিতবিশিষ্টাক্কতীনাং সিদ্ধির্মান্তমৈ। অতএব হুষীকেশ ভক্তসর্প্রেমাকর্ষক। ভক্তিহীনের মুন্ত্রে আত্মারামায় অতএব তেরু আতীপিতপ্রার্থকেরু সংস্থানশীলিনে ন কিমপি ক্রবতে তেভাঃ স্বং ছুংধাভাবঞ্চন দদতে॥ ৪৩ ॥

যতঃ পরেষাম্ংকৃষ্টানাং ভক্তানাং অবরেষাং নিশ্বষ্টানামভক্তানাঞ্চ গতিং প্রাণ্যং জানতে। সর্বাধ্যক্ষায় সর্বক্ষণাধ্যক্ষায় সর্বক্ষণাধ্যক্ষায় সর্বক্ষণাধ্যক্ষায় সর্বক্ষণাধ্যক্ষায় সর্বক্ষণাধ্যক্ষায় জালা বিশ্বায় জ্বাহা বিশ্বায় সময়ে বিশ্বং প্রষ্ঠুং তস্য বিশ্বস্য প্রস্তি তথৈবাস্য বিশ্বস্য হেতৃং প্রধানঞ্চ চেত্রিতৃং বিকার্নিতৃং বা তস্য দ্রষ্ট্রে। ক্রিয়ার্থোপপদস্যেত্যাদিনা চতুর্থী ॥ ৪৪ ॥

একারণ উপলক্ষণ যোগ্য। হে ইন্দ্রিয়প্রবর্ত্তক! আপনি মুনি অর্থাৎ আত্মারাম এবং মৌনশালী অর্থাৎ আপনার স্বভাবই আত্মারাম, আপনাকে নমস্কার করি॥ ৪০॥

প্রভো! আপনি পরাবর গতিজ্ঞ অর্থাৎ সুল ও সূক্ষা ভূতসমষ্টির গতি জানেন, একারণ কোনও ভূতে আসক্ত নহেন, অপিচ আপনি সকলের অধিষ্ঠাতা, আপনাকে নমস্কার। প্রভো! আপনি সর্কা-ধিষ্ঠাতা, কারণ আপনাতে বিশ্ব বর্ত্তমান নহে অর্থাৎ আপনি "তম তম "ইত্যাদি শ্রুতিতে প্রপঞ্চনিষেধের অবধি, অথচ বিশ্বস্বরূপ অর্থাৎ তদ্বিবর্ত্তের (রজ্জ্বসর্পবৎ বিশ্বের আরোধের) অধিষ্ঠান, আর আপনি বিশ্বের দ্রেষ্টা অর্থাৎ অধ্যাস ও অপবাদের সাক্ষী এবং অবিদ্যা ও বিদ্যা দ্বারা আপনকার ঐশ্বর্যা নিরতিশর আপনাকে নমস্কার করি॥ ৪৪॥

ত্বং হস্য জন্মস্থিতিসংয্যান্ বিভা গুণৈরনীছে। ২কুতকালশক্তিপুক্। তত্তৎস্বভাবান্ প্রতিবোধয়ন্ সতঃ স্মীক্ষ্যামোঘবিহার ঈহসে॥ ৪৫॥ তদ্যৈব তেহ্মুস্তন্ব স্ত্রিলোক্যাং শাস্তা অশাস্তা উত মূঢ্যোনয়ঃ।

## **बी**धत्रश्रामी ।

এবং তাবদ্ধান্থনোদনেন নমস্কারৈশ্চ ভগবস্তং প্রসাদ্যেদানীং ঘদধীনানাং প্রাণিনাং কোহপরাধ ইত্যাশন্বত্যঃ প্রাথিরস্তে ঘং হীতি
অস্য বিখন্য জন্মাদীন্ ঘনেবাকৃত অকরোঃ অতশ্চ তাং স্তান্ সংস্থাররপেণ সতঃ স্বভাবান্ ঘোরঘাদীন্ প্রতিবোধন্ ইত্যে ক্রীড্সি।
যথা। অস্য জন্মাদীন্ ঘনেব ইত্যে ইত্যয়ঃ। কথস্তুতঃ। অক্তা অনাদির্যা কালশক্তি থাং ধারম্বতীতি তথা। অন্যং সমানং॥৪৫॥
অতস্তাস্যের ত্বামৃন্তনবঃ তন্যস্ত ইতি ক্রীড়োপস্বরাঃ তথাপি ত্বাধুনা শাস্তাঃ প্রিয়াঃ কুতঃ স্তাং ধর্মপ্রতিপালনেছ্যা ইহতঃ

## বৈষ্ণবতোষণী।

স্থিত্যাদি কারণায় ইতি। এবং সর্ববিরোধাশ্রয়ত্বেটনবাচিস্ত্যশক্তিত্বং তেটনব চৈশ্বর্তামিতি পূর্ব্বমণি প্রতিপাদিতং অতো বিশেষ বিরোধাশয়ত্বাদ্বিপ্রাইস্যাপ্যস্থপ্রহোযুক্ত এবেতি ভাবং॥ ৪৪॥

নয়স্য কো দোষ: সর্পত্বদাত্ন নৈবেশ্বরস্য ইত্যাশস্থাত: ছমিতি পঞ্ছ:। হি এব। হে বিভো সর্বেশ্বর। জনীহ: তত্তদভিলাষশূন্য এব দ্বনিহসে করোষ। নিষেত্বিক্দং তরাহ: সত ইতি। তত্র ক্মনি সত: প্রকৃতিনীনপ্রাচীনকল্লগতসাধকভক্রন্সস্য সনীক্যা তহুছোধনার তং জাই নেব ক্তেন প্রকৃতীক্ষণেন ইত্যর্থ:। স্থিতৌ জন্মনগ্যেহবতীর্য্য তমেব সম্যক্ কুপাপুর্ক্বং সাক্ষাদবলোকিত্থ:
ইত্যর্থ:। সংখনে তমেবালিক্যাপি স্মীকিত্মিত্যর্থ:। মন্তকানাং বিনোদার্থং করোমি বিবিধা: ক্রিয়া ইতি পালাং। তত আমুসঙ্গিকতল্পান্যেষামপি তৎ স্যাদিতি ভাব:। নম্ব দর্থা সমীক্ষা তএবোদ্ধাজাং তত্রাহুরমোঘবিহার: যথা কথঞ্চিদপি তত্তৎসম্বন্ধস্যাব্যর্থহাদিত্যর্থ:। তেষামপ্যুহোধনে যুক্তিং অক্তকালশক্তিশ্বক্ কালস্বরূপরা স্বাভাবিক্শক্ত্যত্যর্থ: তয়া গুণিক্পলক্ষিতান্
স্বভাবান্ প্রাচীন কর্মসংক্ষারান্ প্রতিবোধয়ন্ধিতি তত্মাত্তথা কৃতং কর্মণোহনৈয়ব দোষ: নতু তব ক্ষারম্ব পর্যাগ্রন্দুইব্য ইতি ন্যায়াদিতি ভাব:॥ ৪৫ ॥

যত্মাদেবং সাম্যং তত্মান্তলৈয়ৰ ইত্যাদি ত্ৰিলোক্যাং বৰ্ত্তমানাঃ সৰ্কা এবেত্যৰ্থ:। অশাস্তা বোরাঃ। উত অপি মৃঢ্যোনয়োহপি হি নিশ্চবে বিশেষতত্ম্মা শাস্তা ইত্যাদি। এবমপীদৃশ ছ্ষ্টাস্থাহক্স্য তব প্রম কারণ্যমেব তাদৃশে ত্ব্যপি অপ্রাধিনোহস্য প্রম ক্রমসন্দর্জ:।

নহস্য কো দোষ: সর্পত্নাতৃত্মনৈবেশবস্যেতি চেদিত্যত আহত্বমিতি পঞ্চতি:। হি এব হৈ বিভো সর্ক্ষের অনীহস্তত্তদভিলাহ-শূন্য এব ত্বমীহসে করোধি নত্বেত্বিক্তবং তত্ত্বাহ: সতঃ প্রকৃতিলীনপ্রাচীনক্ত্রগতঃ সাধকভক্তবৃন্দস্য সমীক্ষা তহুবোধনার তদ্ম ই ু যেব ক্লান্তন প্রতীক্ষণেনেত্যর্থ:। মন্তানাং বিনোদনার্থং করোমি বিবিধাঃ ক্রিয়া:। ইতি পাল্লাৎ। তত আহুসঙ্গিকতরান্যেযামপি তং স্যাদিতি ভাব:। তত্মান্তথা কৃতকর্মানসৈয়ে দোধো নতু ভবেদিতি ভাব:॥৪৫।৪৬।৪৭।৪৮।৪৮।৪০।৫০।৫১॥

### 🖺 বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

স্বস্ট্যা প্রধানং চেতনযুক্তং বিক্বতঞ্চ ক্লবা মম কিং ফলমিতি চেত্ততাছন্ত্মিতি। সতঃ প্রধানস্য সমীকরা অস্য বিশ্বস্য পূর্বং করান্তে তত্তৈব দীনস্য তত্ত্বেশ্বভাবান্তুতাংন্তান্ সংসাবরূপে সতঃ স্বভাবান্ বোরন্তাদীন্ প্রতিবোধয়ন্ জন্মদীন্ ভবৈরন্তনাদিভি-রীহসে করোবি গুণানাং কর্তৃত্বস্য ত্ব্যুপচারান্ত্রতন্ত ত্মনীহঃ। অক্তা কণাদি বা কালশক্তিতাং ধারমতীতি সঃ। এবঞ্চ প্রধানগতক্লিক্সক্রপক্তব বিহারোহমোনঃ॥ ৪৫ ॥

কেনাভিপ্রারেণেরং অধ্যে ইতি চেন্তত্তাহ:। তদ্যৈর পূর্বোকলকণ্যা তব বিশহতৃত্বাধিশরপ্যা অমৃ: শান্তাদ্যান্তনব:। শান্তাদি

বিভো! আপনি অনীহ অর্থাৎ নিজ্ঞার হইয়াঁও কালশক্তিকে ধারণকরত গুণৰারা এই বিশ্বের স্ষ্টি, ছিতি ও প্রালয় করিরা থাকেন, অতএব এক্ষরণ সমীকা হেতু সংসাররপে বর্তমান তত্তৎস্থভাব ( শাস্ত বেগর ও মৃঢ়াদি অবস্থা ) প্রকটিত করত ক্রীড়া করিতেছেন। ভগবন্! আপনকার বিহার অব্যর্থ॥৪৫॥

ে হে দেব! এই সকল শাস্ত অশাস্ত মৃঢ়যোনি জন যদিও আপনকারই তকু অর্থাৎ ক্রীড়োপকরণ

শান্তাঃ প্রিয়ান্তে হাধুনা ২বিতুং দতাং স্থাতুশ্চ তে ধর্মপরীপায়েহতঃ ॥ ৪৬ ॥
অপরাধঃ দক্ত্ত্ত্র্বি সোঢ্ব্যঃ স্বপ্রজাক্তঃ । ক্সন্ত্রমহ্ দি শান্তাত্মন্ মূঢ্দ্য দ্বামজানতঃ ।
অনুগ্রুষি ভগবন্ প্রাণাংস্ত্যক্ষতি প্রসঃ । স্ত্রীণাং নঃ দাধুশোচ্যানাং পতিপ্রাণঃ প্রদীয়তাং ॥ ৪৭ ॥

#### श्विषत्रवामी।

প্রবর্ত্তমানস্য অতস্তানবিতুং স্থাতঃ স্থিতন্য ॥ ৪৮॥

এবঞ্চ ত্বাপ্রিয়াচরণান্যপরাধঃ সোচ্বা ইতি ॥ ৪৭॥

#### বৈক্ষবজোষণী।

পামরত্বেবেতি ভাবঃ। তে বয়স্য বাক্যভেদার পুনক্জিদোবঃ স্যাৎ। মধ্যমন্ত তে পদং শাস্তা ইতাস্য বিশেষণং ॥ ৪৬॥

অত্ত্বরা ক্ষন্ত এবেত্যাহরপেতি ভত্র পিট্রাং পিতৃত্ব্যেন স্প্রেলাক্ডেইপরাধঃ স্কুদ্পি সোচ্ব্যঃ সেচ্চ্ যোগ্যঃ তক্ষাং ক্ষনিত্যাদি। বন্ধ শাস্তাত্মখন্ত স্থাক্তি কিন্তু মৃচ্ন্য তামসজাতিস্থভাবেন জ্ঞানহীনত অত্তব স্থানজানতঃ স্বন্ধুত্বীলাদিদশনেনাপি স্থাং আত্মশস্কুবতঃ। যথা। স্কুদ্পি যো তঠা তেনাপি স্থ অই স্থাদিনা নিত্যেশ্বঃ কিম্ত ইতি॥

কিং কর্ত্যাং ক্মা কার্য্যেতি। অন্ত্রহ এব কর্ত্বং যোগ্য ইত্যাহঃ অৰিজি। কুতো ভগবন্ হে প্রমন্ন্যালো। বরা। হে সর্ক্জেতি নিজকারুণ্যমহিমানং স্থায়াবৈত্ত্বংচ অতএব জীবানামন্মাকং দৈন্তক ছং জানাস্যেবেত্যর্থঃ। এতচাবিলম্বেনেত্যাহঃ প্রাণানিতি। যরা। অলং হি প্রাণিনাং প্রাণা আর্জানাং লরণং ছহং ইত্যাদিনিজপ্রতিজ্ঞাং শারস্যেবেত্যর্থঃ। আর্জ্যং দর্শরম্ভি প্রাণানিতি। আহো বত ন ক্রিয়তাং বাশ্রিরমূগ্রহঃ অন্যাবব্দ্যং কর্ত্মুপ্র্জাত ইত্যাহঃ স্ত্রীণামিতি। সাধুভিঃ পোচ্যানাং জাত্যৈব স্থাত্ত্যাদ্যভাবাং ইতি প্রমন্বিরাং দর্শিতং। যরা। সাধু যথাতাং পুনরমপ্রাধ্ছাদিসম্পাদনেনেত্যর্থঃ। পভিরেব প্রাণঃ জীবনং প্রকর্মেণ্যাক্ষ্যকাদিনা চ নীরতাং ॥ ৪৭ ॥

#### **बी**विश्वमाश्वकवर्छी ।

স্বভাবান্ স্বমেব প্রতিবোধয়দি চেন্তত্ত্র বোরস্বভাবোহয়ং কালিয়ঃ স্বস্বভাবং ক্রোর্য্যং কথং ত্যক্তব্ধ শক্রোন্থিতি ভাবঃ। তথাপি তবাধুনা শাস্তাঃ প্রায়াঃ। কুডঃ সতাং ধর্মপালনেজ্রা ঈহতঃ প্রবর্তমান্দ্য স্বত্ত্তানবিভূং স্থাতুঃ স্থিত্দ্য ॥ ৪৬ ॥

অতঃ শান্তলোকবিপ্রিয়কারিবলকণোহস্যাপরাধোহতুদেব সচ সক্ত সোঢ়ব্য ইতি। অধুনা দগুরিত্বা শিকিতোহপুরং অ্দীন-শান্তজনের বদি পুনরপ্যপরাধ্যতি তদা ন সোঢ়ব্য ইতি ভাবঃ। ক্তমহসীত্যর্থপোনফক্তামভিবৈয়প্রাঞ্কং। ক্তমিত্যপ্রাধ্-মিতি শেবঃ। শান্তাত্মিতি ক্তৃত্ব হেডুঃ। মুঢ়স্যাকানত ইতি ক্তব্যুদ্ধে হেডুঃ॥

নমু চিকিৎসাস্য বাধ্বের ক্বতা রোগো গত এব। কিন্তু রোগদেবদুরীকরণার্ধং সপ্তাষ্টাঃ পাঞ্চি প্রহারা অবশিষ্যম্ভে তেমু সম্মতি-দীরতামিত্যত আত্তরপুর্কীবেতি। সদোবদেবোধস্থাহাম্ভপ্রদানেনৈর নাশনীয়ো নতু দণ্ডতীরৌষধপারনেন। যতোহসৌ সম্প্রতি প্রাণাংক্তাকতি। নমু ত্যজতু প্রাণান্ কিমনেন বিগীতেন সর্পনিরীরেণ জকঃ পরং দিবাদেহো মন্তক এব ভবিষ্যতি তত্তাহুঃ প্রাণামিতি। স্থান্দরীণামশাকং বৈধ্ব্যে সভি কন্চিদ্নয়ঃ পাপিষ্ঠঃ সর্পো বলাং কামন্নিতা ভবিষ্যতীত্যতঃ লোচ্যানামশ্বাক্ময়মের সম্প্রভূৎপন্নবৈষ্ণব্ ভাকত্বাং প্রাণঃ ক্লেন্সপদীভবন্ প্রাণভুলাঃ ॥ ৪৭ ॥

তথাপি আমাদের বোধ ছয় অধুনা শাস্তজনেরাই আপনকার প্রিয়, কারণ আপনি দাধুজনের ধর্ম প্রতি-পালনের ইচ্ছায় চেক্টা করিতেছেন,অতএব তাঁছাদিগের রক্ষা করিবার নিমত্ত অবস্থিত ইইয়াছেন ॥৪৬

কিন্ত আপনি স্বামী, আপনার ভত্তা একবার অপ্রিয়তা আচরণ করিয়া যে অপরাধ করিয়াছে তাহার মার্কনা করিতে হইবে। হে শান্তাত্মন্! এ ব্যক্তি অতি মৃত, আপনাকে জানে না ইছাকে কমা করিতে যোগ্য হয়েন। জগবন্!, অমুগ্রহ করুন, নজুবা এই লাপের এখনি প্রাণত্যাগ হয়, ইহার বিয়োগে আমরা আপনার শোকার্হ হইব, স্তরাং আমামের অর্থাৎ সাধ্গণের শোকার্হ মাদৃশ স্ত্রীগণের প্রাণ্যরূপ পতিকে প্রাদান করিতে আজ্ঞা হউক্॥ ৪৭ ॥

908

বিধেছি তে কিন্ধরীণামনুষ্ঠেয়ং তবাজ্য়া। যজু দ্বমানুতিষ্ঠন্ বৈ মুচাতে সর্বতোভয়াৎ॥
শ্রীবাদরায়ণিরুবাচ॥

শ্ৰীমন্তাগৰতম্।

ইত্থং স নাগপত্নীভি র্ভগবান্ সমভিষ্ঠ তঃ। মৃচ্ছিতং ভগ্নশিরসং বিসম্প্রাভিত্র কৃটনিঃ। প্রতিল্রেক্তিরপ্রাণঃ কালিয়ঃ শনকৈহ রিং। কৃচ্ছাৎ সমৃচ্ছ্রসন্ দীনঃ কৃষ্ণং প্রাহ কৃতাঞ্জলিঃ ॥৪৮ বয়ং থলাঃ সহোৎপত্যা তামসা দীর্ঘমন্তঃ। স্বভাবো স্কুন্তাকো নাথ ভূতানাং যদসলা হঃ ॥৪৯॥

## श्री धत्रवामी ।

নত্ন যুদ্মপুগ্রহেথন্যবাং মৃত্যুরেবেতি চেৎ নেত্যাছবি ধেহীতি। স্বদাক্তরা প্রাণিনো নাদ্যামেতি ভাব ইতি। ৪৮ ॥ যদসকাছ ইতি যতঃ স্বভাবোৎসদশূহরূপঃ। যন্ধা। যতঃ স্বভাবাৎ অসতি দেহাদৌ গ্রহঃ স্কুল্লভাইতি॥ ৪৯ ॥

## देवकवरजावनी ।

ভবাক্তরা যদম্রেরং বিধেরং তৎ কিন্ধরী: প্রতি সমাদিশ। ধবা। তবাক্তরৈব তব কিন্ধরীণাং সতীনাং অত্মাক্তমন্ত্রেরং। তবাজন্তেতান্য পরেণায়র:। যদ্যত্মান্তবাজ্ঞরা অমৃতিষ্ঠিন্ কর্ম কুর্মন্ যদম্প্রেরমিতি বা। বৈ প্রসিদ্ধে। সর্মতঃ সর্মত্মাদিপি সর্মান্তাণি বা। যবা। সর্মতো ভয়াসূচ্যতে ইতি ভগবল্লোক প্রাধ্যিরেবাভিপ্রেতা।

স স্বতিমাত্রপ্রীতঃ শ্রীর্নাবনবচ্ছলক্রীড়াস্থরসিকো বা। যদা। প্রত্থেকাতরো ভগবান্ শ্রীক্বঞ্চ অব্যিত্র প্রতিনঃ প্রচারে-উপ্পারসং অতএব মুচ্ছিতিং তত্যাক ॥

নিজহর্মদাদিদোবং হরতীতি হরিং যতঃ কৃষ্ণং সাক্ষান্তগবস্তং। দীনো গতাভিমান আর্ত্তো বা। আর্ত্তঘাদেবাশক্তা পরীবন্ধ শওবং প্রণনামেতি জ্বেয়ং। প্রকৃষ্টং দীনজনানাং বক্তু মুচিতমাহেতি। আতো ভগবতি নিজদোষারোপণ্যিব যৎ করিষ্যতে তদপি দৈজে নৈব স্বস্য ভদ্ধীনতারামেব তাৎপ্র্যাৎ॥ ৪৮॥

ভথৈবাহ বয়মিতি চতুর্জি:। উৎপত্ত্যা সহ জাতিকভাবেনৈবেত্যর্থ:। নাথ হে ঈখরেতি তমপি বং থওয়িতুং সমর্থোহসীতি ভাব: ॥৪৯॥

## **बी**विश्वनाथहळावर्खी।

ভবত্বয়ং যুদ্মছাং পতিদ'ত্ত এব কিন্তু যন্ময়াদিশাতে তৎকর্জব্যমিতি তত্ত্ব সমন্ত্রমনবশ্যমেবেতাাছবিধেহীতি। তচ্চ ইতঃ স্থানা-দ্ব্যক্ত শীঘ্রং যাতেতাগ্রে ব্যক্তীভবিষ্যতি॥

অভিৰু ভ্যাং কুউনৈ: প্ৰহাৱৈৰ্ভগ্নশিৱসং কালিয়ং ভত্যান্ত। ভচ্ছীৰ্বেভ্য: সহসৈবাবপ্লুত্য ভদগ্ৰে তস্থাবিত্যৰ্থ: ॥
কুচ্ছু াদিতি কটাদেব কথঞিৎ কুতাঞ্চলি: সৰ্বান্ধৰাধাবন্ধাৎ নতু ভূমৌ দণ্ডবল্লিপত্য প্ৰণামসমৰ্থ ইতি ভাব: ॥ ৪৮ ॥
যদবতো হসতো বিক্লন্তেন জ্ঞাতস্যাপি বাগছেবাদেগ্ৰহো প্ৰহণং বিহুৰামপি কিং পুন্মু ছানামন্মাকমিতি ভাব: ॥ ৫৯ ॥

প্রভো! আমরা আপনার কিঙ্করী আমাদের প্রতি বিহিত আদেশ করুন, যাহা আজ্ঞা করিবেন তাহাই করিব,অর্থাৎ আপনি যদি আজ্ঞা করেন অতঃপর একেবারেই প্রাণিভক্ষণে ক্ষান্ত হইব। প্রভো! শুনিয়াছি যে, শ্রদ্ধাপূর্বক আপনার আদেশ পালন করিলে সর্ব্ব প্রকার ভয় হইতে পরিত্রাণ হয়॥

শুকদেব কহিলেন যে, নাগপত্মীগণ কর্ত্ব এই প্রকারে ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ স্তত হইয়া সেই ভগ্নত ও মৃচ্ছিত নাগরাজকে চরণদারা কুট্রব অর্থাৎ আঘাতবিশেষ করিয়া ত্যাগ করিলেন। হেরাজন্! দীন কালির পরিত্যক্ত হইবাসাত্র স্বীয়ইন্দ্রিয় ও প্রাণ পুনঃ প্রাপ্ত হইরা অতিক্ষে নিশাস ত্যাগ করিতে ক্রিতে ক্তাঞ্জলিপুটে হরিকে এইরপ নিবেদন করিল যে—॥ ৪৮॥

হে ভগবন্! স্বামরা জন্মাবিধি থল এবং তমঃপ্রাকৃতি, স্বতএব স্বামাদের শোক স্বতিকক্টেও শাস্ত হইবে না। হে নাথ! প্রাণিদিগের স্বভাব তুস্তাঞ্জ, যে হেডু তাহা ছুক্ট গ্রহ স্বর্গাৎ প্রেডাদির ন্যায়॥ ৪৯ ॥ স্থা স্কীমিদং বিশ্বং ধাতগুণবিসজ্জনং। নানাসভাবৰীর্য্যোজোযোনিবীজাশয়াকৃতি ॥ ৫০॥ বয়ঞ্চ তত্ত্ব ভগবন্ সর্বজাজ্যুরুমন্যবঃ। কথং ত্যুজামস্থ শায়াং দুস্ত্যুজাং মোহিতাঃ বরং॥ ৫১॥ ভবান্ হি কারণং তত্ত্ব সর্বজ্যে জগদীশবঃ। অমুগ্রহং নিগ্রহং বা মন্যসে তথিধেহি নঃ॥
শ্রীশুক উবাচ॥

ইত্যাকণ্য বচঃ প্রাহ ভগবান্ কার্য্যমাসুষঃ ॥ ৫২ ॥

### ভীগরখামী

গুণৈবিবিধতয়া স্ব্ৰাত ইতি গুণবিদক্ষ নিঃতত্তাপি নানাখভাবাদয়ো যস্য তং ॥ ৫০ ॥ জাত্যা জন্মনৈব উক্তমস্থা ধেঁবাং তে স্বয়ং কথং ত্যজামঃ ॥ ৫১ ॥ হি যন্ত্ৰান্তৰ স্বন্ধান্ত্যাগে ভবানেব কারণমিতি। স্বস্থাহং বিধেহি নিগ্রহং বা ঈশ্বয়ত্বাৎ ॥ ৫২ ॥

#### देवकवरजायनी ।

তদেবাভিব্যঞ্জয়তি ছয়েতি সার্কেন। নম্ব জ্বলা ক্ষাতে নতু ময়েত্যাশভাাই ছে ধাতরিতি। ছমেব তক্তপেণ ক্ষমীতি ভাব:। স্বভাব: শান্তথাদি: বীর্য্যোজসোদে হৈ দ্রিয়শক্তিভেদেন ভেদ:। যোনিবীলয়োম তিাপিতৃভেদেন চেদ:। আশয়ে বাসনা। আরুতি: রূপ:॥ ৫০॥

ভগবন্ হে সর্বেশ্বরেতি স্বকর্মনৈর সর্প। ইতি পক্ষো নিমন্তঃ কর্মণামপীশ্বরত্বাৎ তত্মাদস্বাভয়্তেটেশবাপরাধ্যেহয়ং জাত ইতি ভাবঃ। অতঃ কথমপি অতৈথীপি ছন্তাজাং॥ ৫১॥

স্বরং ত্যাগাশকৌ হেতুর্তবানিতি ত্বরা হেতুনৈব সা ত্যাজ্যা স্থাদিত্যর্থ:। মন্যসে বমিছেসি তমেব বিধেহীত্যর্থ: তত্ত্র সর্ব্ধং নিজমায়াবৈতবাদিক মন্মাকঞ্চ দৈজাদিকং জানাগীতি সর্ব্বজ্ঞ: ইত্যুক্তাহে হেতু: জগদীশবঃ পরম স্বতন্ত্র ইতি চ নিপ্রহে। তথাচ বিষ্ণুপুরাণে যথাহং তবতা স্টু ইত্যাদি। অভাত্তঃ। যদা। সর্ব্বজ্ঞ ইত্যুক্তাহনিপ্রহ্বোঃ কারণং বেৎসি। জগদীশব ইতি তরোবেকং বিধেহীতি ব্যাক্যার্থ:। তত্ত্বচ জগদীশব ইতি সত্যপি নিগ্রহকারণেহক্তাহমপি কর্তু: শক্ষোধীতি ভাবঃ॥

ইত্যাকর্ণ্যেত্যর্ক্কং। মরা যদাদিশ্রতে তদনেনাবশ্রং কার্য্যমিতি তহুক্যাভিপ্রারং জ্ঞাছেত্যর্থ:। কার্য্য জগদ্ধিতং তদর্ধং স্থেন মাহ্রত্বপেপ প্রকটো বো ভগবান্। যথা। কার্য্য ক্রীড়া মহ্র্যালীলরৈব মাহ্র্যং নতু তহুদ্রৌতিকদেহ বিশেষ্ড্রেনত্যর্থ:। যথা। কার্য্য নিজ্পেমভক্তিবিভারণাদিনা সম্পাদ্যা মাহ্রা যেন। মাহ্রের্বভারেণ ভেষামের প্রাধান্তাং। অভন্তস্য মৃল্যানে প্রীর্দ্ধাবনে

#### क्रममस्र

কার্যাং ক্রীড়া মছবালীলা ভয়ৈব মাসুবো নতু তৰস্তৌতিকদেহবিশেষদ্বোশীতার্থ: ॥ ৫২। ৫০। ৫৪। ৫৫। ৫৬॥

### विषमाथहळावडी।

खरेगर्विविधः मुक्क नः शृष्टिर्वज ७९। विविधषत्राह नानांत्रकावानस्य। यमा ७९॥ ८०॥

ছাত্যা জন্মনৈৰ বছকোপা: ॥ ৫১ ॥

ত্ৰ মায়াভাগে #

কার্য্যের্ এক্ষকতাদিত্তরেবপি কালিয়নিএহাদি কর্মান্ত নামুব এব নতু তত্তৎক্বতাসমূচিতচক্রপাণ্যাদিরপ ইত্যর্থ:। यहा। কার্যাং ক্রীড়া লীলা ভরেব মানুষঃ লীলাময়মানুষস্বরূপ ইত্যর্থ:। यहा। ক্যা এক্ষণেহিপ্যাক্র্যাক্রান্তানে নামুঘক্তে স:। यहा। ক্যার্যাং

হে দেব ! এই বিশ্ব গুণের প্রভাবেই বিবিধরপ দৃষ্ট হয়, ইহার বীর্য্য, সামর্থ্য, যোদনি, বীজ, আশায়(বাসনা) ও আফুতি (রূপ) নানাপ্রকার, আপনি এই বিশ্ব স্কুন করিয়াছেন॥ ৫০॥

ভগবন্! এই বিশ্বমধ্যে আমরা সর্প জাতি, জন্মবারাই আমাদের মন্যু গুরুতর। অণিচ, আমরা মোহাচ্ছন, ইহাতে আমরা আপনা হইতে আপনার মায়া কি প্রকারে ত্যাগ করিতে পারি ? ॥ ৫১॥

ভগবন্! যে হেছু আপনার মায়াত্যাগে সর্বজ্ঞ জগদীখন আপনিই কারণ, অত্এব অনুগ্রহ অথবা নিগ্রহ যাহা ইচ্ছা করেন তাহাই আমাদের প্রতি বিধান করুন। শুক্দেব কহিলেন রাজন্! কার্যার্ধ নাত্র স্থোং স্থার দর্প সমূদ্রং যাহি মা চিরং। সজ্ঞাত্যপত্যদারাত্যো গোনৃভিত্র জ্ঞাতে নদী ॥৫৩॥
য এতৎ সংস্থারেশর্ত্য স্তভ্যং মদমুশাসনং। কীর্ত্তয়মুভ্যোঃ সন্ধ্যো ন যুশ্মন্তয়মাপ্রুয়াৎ॥ ৫৪॥
যোহস্মিন্ স্লাহা ম্দাক্রীড়ে দেবাদীংস্তর্পয়েজ্জলৈঃ। উপোষ্য মাং স্মরন্নচেৎ সর্ব্বপাপেঃ প্রমূচ্যতে॥৫৫

### श्रीभद्रशांगी।

যতো গোতি নৃঁভিশ্চ নদী ভূজ্যত ইতি ॥ ৫৩ ॥ ন যুমতো ভয়মাপুষাং তস্য যুমাভিভ্যং নোংপাদনীয়মিত্যাক্ষা ॥ ৫৪ ॥ ইতোহপি নিৰ্গস্ভব্যমিত্যাহ যোহদ্মিমিতি। ছবি স্থিতে তম্ম ভবতীতি ভাবং ॥ ৫৫॥

### বৈষ্ণৰভোষণী।

সর্পাণাং স্থিতিরস্থাটিতেতি ভাব:। যথা। কাৎ ব্রহ্মণোহপি আর্য্যা: পূঞ্যতমা মাহযা: শ্রীনন্দাদরো যস্য স:। এবং তেষাং স্থার্থ-মিতি ভাব:॥ ৫১॥

হে সর্পেতি তত্র স্থিতাযোগ্যতাং যানে শক্তিঞ্চ দর্শরতি। আতএব স্থস্য জ্ঞাত্যাদিভিযুক্ত ইতি। স্থশকেন তেষাং তাদৃশহর্বিহ্ময়স্থং তদধীনস্থান স্থাতিক বিভিন্ন ৫৩॥

দাং প্রতি মমানুশাসনং নাত্র স্থেরমিত্যাদিলক্ষণমপি অন্ত তাবদক ক্রীড়াদিকং। সংস্ক্রাঃ সন্ধ্যাঃ । কীর্ত্তয়ন্ যং প্রেরং। তদেবং নাত্র ইত্যাদিপদ্যবরং সর্পোচ্চাটনে মন্ত্র এব জ্বেরঃ। তথাচ ঋথেদস্থং মন্ত্রান্তরং। যমুনান্তদে হি সো যাতো বো নারারণবাহনঃ। যদি কালিকদন্তক যদি কাকালিকান্তরং। জন্মভূমিপরিক্রান্তো নির্ধিবো যাতি কালিকঃ॥ ইতি॥ ৫৪॥

জলৈত্তৰ্গরেদিতি বিষোদ-দোষাগমঃ হচিতঃ। উপোষ্য তীর্থোপবাসং কৃত্ব। মাং চিন্তরন্ অর্চরেৎ স সর্কৈত্রিবিধৈঃ পালৈঃ প্রকর্থেণ বাসনারহিত্যেন মুচ্যতে ॥ ৫৫ ॥

#### अविश्वनाथककवर्ती।

#### মাপুৰসোৰ বস্য স: ॥ ৫২ ॥

ৰতো গোভিন্ ভিশ্চ নদী ভুলাতে ভটপ্ৰবাহাগত যাদপ্ৰফলজলানাং ভোগোচিত্যাং॥ ৫০॥

তব পাদস্পর্শে মম চ অদণ্ড ইত্যাবয়ো: কীতিরাচক্রার্কং স্থাস্যতীত্যাহ ব ইতি। ন যুম্মন্তো ভরমাপুয়াদিতি তেন পদাইয়মিদং সর্পোচ্চাটনে মন্ত্র এব জ্ঞেয়:। তথাচ ঋর্য়দস্য মন্ত্রাস্তরং। যমুনাত্রদে হি সো বাতো যোনারায়ণবাহন:। বদি কালিকদন্তস্য যদি কালিকাত্রয়ং। জন্মভূমিপরিক্রাস্তো নির্বিষো যাতি কালিক:॥ ইতি॥ ৫৪॥

ইতোহপি হেতোম্বরা নির্ণস্তব্যমেবেত্যাহ যোহস্মিরিতি ম্বরি স্থিতে তর সম্ভবতীতি ভাব: n ৫৫ ৪

নরাবতার ভগবান্ জ্রীকৃষ্ণ ঐ সকল কথা শুনিয়া এইরূপ প্রত্যুত্তর করিলেন যে,—॥ ৫২ ॥

হে সর্প! তুমি আর এথানে থাকিও না, পুত্র, কলত্র, বন্ধু ও বান্ধব সহ সমুদ্রে গমন কর, বিলম্ব করিও না, কারণ পো ও মনুষ্যেরা নদী উপভোগ করিয়া থাকে, তুমি এথানে থাকিলে ভাহারা এখানে আদিতে পারিবে না॥ ৫৩॥

অপিচ, তোমার প্রতি স্থামার এই শাসন, যে মানব ইছা স্মরণ এবং উভয় সন্ধ্যায় কীর্ত্তন করিবে সে ব্যক্তি কথন তোমাদের নিকট হইতে ভয় না পায় অর্থাৎ আমি আস্থা করিতেছি তোমরা কদাপি সে ব্যক্তির ভয় উৎপাদিত করিতে পারিবা না ॥ ৫৪ ॥

তথা যে ব্যক্তি সামার এই উদ্যানন্থিত হ্রদের জলে সান করিয়া ইহার দ্বারা দেবাদিতর্পণ করিবে এবং উপবাসপূর্বক সামাকে সারণ করিয়া সর্ক্রমা করিবে,তাহারা সর্ব্বপাপ হইতে মুক্ত হইবে, একার-ণেও তোমার এন্থান হইতে প্রস্থান করা কর্ত্বস হইতেছে। যদি ভূমি এখানে থাক, তবে কোন ব্যক্তি এন্থানে সামিতেই পারিবে না, সান পূজা করিবার কথা ত দুরে ধাকুক্॥ ৫৫॥ দ্বীপং রমণকং হিত্বা হ্রদমেতমুপাশ্রিতঃ। যদ্তয়াৎ দ স্বপর্ণস্বাং নাদ্যান্মৎপাদলাঞ্জিতং॥ শ্রীঋষিক্ষবাচ॥

মুক্তো ভগবতা রাজন্ কৃঞ্চেনাদ্ভকর্মণা। তং পূজয়ামাদ মুদা নাগঃ পত্নস্চ দাদরং।
দিব্যাম্বরস্ময়ণিভিঃ পরাক্ষিরপি ভূষণৈঃ। দিব্যগন্ধামুলেপৈশ্চ মহত্যোৎপল্যালয়া।

#### **की धवलायो** ।

নচ তব গ্রুড্ভয়ং ভবেদিত্যাহ দীপ্নিতি ॥ ৫৬॥

#### देवसम्बद्धांयनी।

রময়তীতি রমণং সজায়াং কন্। ইতি স্থাকারিছং। এতচ্চ তৎপ্রেীংসাংনার্থং। এতং কিঞ্চিদধিকযোজনমাত্রং। তদ্বীপাং প্রমাণেন স্থানতরমিত্যর্থঃ। উপাশ্রিত ইতি নিত্যাবাদছং নিরন্তং নাদ্যাং নারুং শক্ষুমাং যতো মৎপাদেতি। তচ্চ পূর্বমেব নৃত্যগতিবিলা-নেন কিং বা অধুনৈব প্রদাদীক্ষতং॥

মুক ইতি বিদদজ্জে তাদ্যাস্থাদমালং। এবমুকো ভগবতেতি বা পাঠঃ। অন্তক্ষণিতি নিগৃহীততন্না প্রদিনেংপাদৌ নিজপূর্ক্ষ্থবদতিহানং প্রাপ। যন্ত্রাং তৎ স্থানং তত্যাক্ষ ত্মান্তদগতং। বিশেষতণ্ট শ্রীবৈঞ্চবাশ্রস্য তদ্য দখা দ্বাল্যক্ষ শ্রীভগবংপাদাজিচিহ্নতো লাতং। কিঞা। ব্রহ্মাদিদেব্যলক্ষীপ্রার্থ্য তৎপাদাজবেণ্ভিত্তাদৃশন্ত্যনীলয়া চ পর্যাচিতাঃ দর্কে মূর্নানঃ দফলাবভূব্ং শ্রীব্রহ্মাদাদেক্ষ্য শ্রীভগবদ্দশাদনং লকং। তেন চ দাক্ষান্তমধুর্বচনামৃতং পীতং। পশ্চাং প্রমভক্তবং পূজাদিকঞ্চ কতমিতীথং বহিদ্ প্রা নিগ্রহ্যাপাত্মগ্রহবিশেবত্ব ক্রোধ্যাপি প্রমপ্রদাদের এব পর্যবেদানাং। অপিচ তাদৃশাপরাধিনোহপি ভব্র
দমিতদাৈর সতো হলা শরণাগভিমাত্রেণ তাদৃশাহ্মগ্রহাং। চলসি ব্র্ব্রাজার্যন্ পশ্ন নিলিক্ষ্পরং নাণ তে পদ্মিত্যাদিগীয়মানপ্রমদৌকুমার্যাশ্রীপদাজস্পর্শেন রক্ষনিকরাচিতত্বমূর্দ্বর্গনিং। তাদ্দৈশ্র্যাপ্রক্তনসময়ে মুনিসিন্ধাদিশীপোপাদিদাক্ষাদেব
মহান্ত্যকৌত্বাং। ত্রাপি পরিভ্রমং বিলোলং ফণগণেষু গতিকলা রক্ষণাচ্চ ইতি দিক্। এতচ্চ তদ্য ভগবতাবিশেরপ্রকটননিত্যাহ ভগবতেতি। ইদ্ঞাশেষং স্বপ্তক্ষাং শ্রীশুক্সদেবাহ্বদিতি শ্রীশ্বাং স্বর্গনি উবাচেতি স্তোক্তিণ। রাজন্ হে বৃদ্যা-

#### चिवित्रनाथहज्जवर्शी।

নচ তে গ্রুড়ান্তমং ভাবীত্যাহ দীপ্মিতি॥

অভ্তকর্মণেতি কালিয়াৰ্জস্থলীবস্য আণং কালিয়স্যাপি সক্ষ্যাণমিতি হিংস্যহিংসক্ষোকভ্ষোব্ধি কল্যাণমিত্যস্ত কর্ম। ক্ষেনেতি স্বভক্তাক্ষ্পাপ্রাধ্য স্থানিবিজ্ঞ ক্ষীবাশ্বাধ্য চ কর্মণং প্রমভক্তকালিয়পদ্মীপ্রীভানুরোধাং কৃত্মিতি ভাষঃ॥

সাদরমিতি পূর্বলোকোকে:। হে প্রতো হুইতায়া: পরমাবধিরপে ময়ি রূপায়া: পরমাবধিরপিত: ত্যা বন্ধে প্রাক্তাপ্রাক্ত লোকেষু মদন্য: কোহপি ধ্বন্ধবন্ধাকুশাদিচিছানি অমূর্দ্ধি ন ধতে তদহং সাম্প্রতং শ্রীমদঙ্গানি সম্প্রদংশোপবিষ্ণাহতপ্রানি প্রগদ্ধ-শীতলচন্দ্রনরসেন সন্ত্রীক এব পাদিভি: স্পান্। নমু লিম্পানি শৃক্ষারক্ষানি চেত্যত: ক্রণমত্ত্বে দিব্যাসনে উপবিশেহাপবেশ্য অবাঞ্জিতঃ পূর্মিষা লব্ধভগ্রংগ্রসাদস্কতো নির্ক্তামেত্যাহ দিব্যেতি সার্দ্ধব্যন। মণিভিরিতি রুঞ্জাহের্রাক্তানে ত্রকঃস্থ এবাসীং মঃ কৌস্বভঃ স এব তস্য নরলীলম্পোভাবায়াঘাভাভাবার্থং। তদেবাশক্ষিতং কালিয়কোষাগার্মধ্যে প্রবিধ্যেত্বি

হে দর্প! এছান হইতে নির্গত হইলে তোমারও গরুড় হইতে কোন ভয়ের সম্ভাবনা নাই, শীঘ তুমি এই হ্রদ পরিত্যাগ করিয়া রমণকদ্বীপে গিয়া আন্তায় লও,যাহার ভয়ে এই হ্রদ আন্তায় করিয়াছিলে দেই স্থপণ তোমাকে ভক্ষণ করিবে না, বিশেষতঃ তোমার মস্তকে আমার পদচিত্র রহিল, ইহাতেও তোমার নিকট গরুড়াগমন সম্ভাবনা নাই।

শুকদেব কহিলেন রাজন্ ! এই বলিয়া অদ্ভকর্মা ভগবান্ কৃষ্ণ কালিয়কে ছাড়িয়া দিলে, কালিয়-নাগ এবং তাহার পত্নীগণ হৃষ্ট হইল, পরে মহাসমাদরে তাঁহার পূজা ক্রিতে লাগিল। উৎকৃতি, বসন, পূজ্যিষা জগনাথং প্রদাদ্য গরুড়ধ্বজং। ততঃ প্রীতোহভাত্মজ্ঞাতঃ পরিক্রম্যাভিবাদ্য তং। সকলত্রস্থৎপুত্রো দ্বীপমরে র্জগাম হ। তদৈব সামৃতজ্ঞলা যমুনা নির্বিষাভবৎ। অমুগ্রহাত্তগবতঃ ক্রীড়ামানুষরূপিণঃ॥ ৫৬॥

॥ %॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষকে কালিয়দমনং নাম বোড়শোহধ্যায়ঃ ॥ %॥ ১৬॥ %॥

### शिधतयामी।

॥ \* ॥ देखि मन्दा द्वांड्नः ॥ \*॥

### বৈষ্ণুবতোষণী ৷

দিনা প্রকাশমানেতি এতদভূতকর্ম্বং সহেতৃকং স্বয়াববুদ্ধাত এবেতি ভাব:। নাগ: কালিয়:। মুদেতি শ্রীভগবস্তভদম্এহামুসন্ধানাং। সাদরং সপ্রেম। অতস্তাসাং হতৈরেব গন্ধান্তলেপনাদিকং জেয়ং॥

দিব্যেতি সাদ্ধৰমং। দিব্যেত্যাদিবিশেষণৈম'ৰ্ব্যলোকিকতো বৈশিষ্টাং। অতএব মাল্যাদীনাং বিহলোধাম্পর্শাদিকঞ্চ জ্ঞেয়ং। প্রায়ব্তেষাং সহল্পনিজ্ঞ । অব্যাহনাথং পুজ্মিত্তে তিংপৃজ্মেবেহ লোকে প্রএচ জগতি সর্ববৈত্ব স্বতো মঙ্গলং বৃত্তমিতি। গক্ষড়ধ্বং প্রশাল্যেতি প্রীগরুড়াদিপি ভরং নিবৃত্তমিতি ভাবং। প্রীতঃ সম্ভ্রমনাঃ। যদা। তিম্ন্ প্রীতঃ আতপ্রীতিঃ। যদাপি তদ্য গমনেন কল্যাদিসহিত্তম্যেব ভদ্য গমনং স্বত্ত এব সন্তব্তি। তথাপি সকল্যেতি জ্ঞাত্যপ্ত্যদারাট্য ইতি প্রীজ্গবন্ধিদেশাম্বর্তিত্বং জ্ঞাপিতং। হ ক্টমেব॥

সা সর্ব্বোপদাতকছ্বিষমম্বজ্ঞলাপি তত্র ব্রুদ্ধিশিষ্টে প্রদেশে নির্বিষ্ঠাপট্টোব তস্যা নির্বিষ্ঠ মুক্তং। ন কেবলং নির্বিষা অমৃতজ্ঞলা পরমমিষ্টতোয়া চ। প্রীজগবচ্চরণসংসর্গেণ পরমানন্দপ্রদল্জলাপি বাজবং। তাদৃশঞ্চ সামর্থ্যং তস্য কিঞ্চিদপীত্যাহ ভগবত ইতি। অত্র প্রয়োজনং ক্রীড়েতি। ক্রীড়াযুক্তশ্চাসো প্রসিদ্ধাস্থাস্থাবার বজ্ঞপমাকারন্তি দিয়তে যস্য সচ তস্য। তথাচ সা স্বমান্থালী স্যোদিতি ভাবেনেত্যর্থ: ॥ ৫৬ ॥

### ॥ • ॥ ইতি দশমটিপন্যাং বৈষ্ণবডোষণ্যাং বোডশঃ ॥ • ॥

### ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ \*॥ ইতি ক্রমদলর্ভে খ্রীদশমে বোড়শ:॥ \*॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

সময়ে কালিরপদ্ধীভিরপরিচিত এব স্বীয়রত্ববিশেষজ্ঞানেন কৌস্বতো দত্তঃ। বছুক্তং। কৌস্কভাথ্যো মণির্বেন প্রবিশ্য হ্রদমৌরগং। কালীয়প্রেয়গীরুলংইস্তরান্ধোপহারিতঃ। ইতি গণোদেশদীপিকায়াং। প্রসাদ্যেতি ভগবানপি কালিয়মূর্দ্ধস্বভয়হস্ততলনিধানেন তদীয়সর্বাঙ্গবাথামূপশনয়ামাসেতি ভাবঃ। গরুড়ধ্বজং প্রসাদ্যেতি ভো গরুড়বাহন প্রভো সম্প্রভাহং গরুড়স্য জোইভাতুদ পিষাহভূবং
ক্ষতঃ কদাচিন্দ্রদেশস্য গস্তব্যবে সত্যহমপি স্ববাহনত্বন স্বর্তব্যো নিমেবমাত্রেণৈর শতকোটিযোজনগামী দাসামূদাস ইতি ভছ্ক্তির্গমিতে। অতঃ কালিয়ায়ঢ় এব কংসনির্দিষ্টঃ ক্ষথো মধুবাং জগামেতি পৌরাণিকী কথা কচিৎ শ্রমতে ইতি॥

ক্রীড়ামানুষরূপিণ ইতি নিত্যধোর্টে ইনি:॥ ৫৬॥

॥ \*॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণাং ভক্তচেত্রসাং। দশমে ষোড়শোহধ্যায়: সঞ্চঃ সঙ্গতঃ স্কাং॥ •॥

মাল্য, মণি এবং প্রমোৎকৃষ্ট বহুমূল্য স্থান, তথা দিব্য অনুলেপন এবং মহতী উৎপ্লমালা, এই দকল বস্তু উপহার প্রদান পূর্বক পূজা করিয়া গ্রুড়ধ্বজ জগনাথকে প্রদান করিল। তদনস্তর প্রীত ও অনুজ্ঞাত হইয়া প্রদক্ষিণ এবং অভিবাদনপূর্বক স্ত্রী, পুত্র ও মিত্র সমভিব্যাহারে সাগরমধ্য সেই রমণক দ্বীপে গমন করিল। হে রাজন্। ক্রীড়ার্থ নিত্যই মনুষ্যদ্রীরধারি ভগবান্ হরির অনুগ্রহে প্রদান হইতে যমুনা বিষবিহীন এবং তাহার জল অমৃত্বৎ স্থাদ হইয়াছে॥ ৫৬॥

. ॥ \*॥ ইতি দশমে ষোড়শ॥ \*॥

শ্রীরাজোবাচ॥

নাগালয়ং রমণকং কথং তত্যাজ কালিয়:। কৃতং কিম্বা ত্বপর্ণস্য তেনৈকেনাসমঞ্জসং॥ ১॥ শ্রীবাদরায়ণিক্লবাচ॥

উপহার্ব্যিঃ দর্পজনৈম নি মাদীহ যো বলিঃ। বানস্পত্যো মহাবাহো নাগানাং প্রাঙ্ক্রি রূপিতঃ॥২ সং স্বং ভাগং প্রয়ছস্তি নাগাঃ পর্ব্বণি পর্ব্বণি। গোপীথায়াস্ক্রনঃ দর্ব্বে স্থপর্ণায় মহাত্মনে॥ ৩॥ বিষবীর্ঘ্যমদাবিষ্টঃ কাদ্রবেয় স্তু কালিয়ঃ। কদর্থীকৃত্য গরুড়ং স্বয়স্ত বুভুজে বলিং॥

### शिधतवामी।

নাগং সপ্তদশে নাগালযং তং নির্যাপ্যং। বৃদ্ধু স্থাংপিতঃ আন্তান্ স্পাংপ্ত দ্বাদপাং॥ • ॥
অসমজ্বসম্প্রিবং॥ ১॥

উপহার্ট্য ছিলোঃ। সর্গজনৈঃ সর্পায়ত্তৈজনৈঃ। বানস্পত্যঃ বনস্পতেম্ লৈ দেয়ঃ। নাগানাং তহাধপরিহারায যো বলি নিক্পিতঃ কল্লিতঃ ॥ ২ ॥

তেচ নাগাঃ স্বং স্বং ভাগং তৈজঁনৈদ ভিং স্থপণীয় প্ৰয়চ্ছেৰি। ততো ভীতাঃ। গোদীপায় রক্ষণায়॥ ৩/॥ বিষৰীয়াভাগং যো মদস্তেনাবিষ্টঃ কাজ্বয়েঃ কজ্সহতো। গ্ৰুডং ক্দৰীক্বিতা অবিগণ্য। যথা। উপহাৰ্থিঃ স্থপণ্য ভক্তৈঃ। দুপা এব বৈষ্ণবতোষণী।

অভীইলীলাসিক্কা শ্রীভগবতত্ত্বদভাদয়দর্শনেন শ্রীব্রজন্য চ স্বস্থতামাকর্ণ্য স্বস্থ প্রীয়মাণ: সন্ কথামধ্য এব কথাসোঁইবায় তংপুর্কারতং প্রছতি নাগেতি। নাগানামালয়ং স্বভাবতঃ সর্পবর্গত্ত বসতিস্থানং নতু গরুড্সেত্যর্থঃ। অতো বহবো নাগান্তবান্যে নিব্দস্থ্যেবৈতি ভাবঃ। নম্ম বছয়াদিতি তৎস্চিত্রেব তত্তাহ কৃতং কিমিতি। বা শবঃ কটাকে॥ ১॥

উপেতি ত্রিকং। হে মহাবাহো ইতি যথা মহারাজক্ত পরাক্রমেণ বৈরিণোহপি রাজানো বলিম্পহরঞ্চীতি ভাবঃ॥ ২॥

পর্বাণ পর্বাণি প্রতিপঞ্চশশ্রস্তং। মহাত্মনেহপরিচিছ্রশক্তমে ইত্যর্থঃ। অয়ং ভাগপ্রদানে হেডুঃ॥৩॥

পশ্চাধিষবীর্ঘাভাং মলাবিষ্ট: সন্। কাত্রেয় ইতি ভাতৃত্ব মদে হেত্তরং জ্রেয়ং। কদর্থীকৃত্য তদনাদরেণ তজুত্বতি বক্ষামাণা

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

ব্ৰীভগৰতো ব্ৰহ্ণ চ স্বস্থতামাকণ্য স্বস্থ: কথামধ্যত: এব তৎসোষ্ঠ্ৰায় পৃচ্ছতি নাগেতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তাক্ষ্যান্তীতিঃ কালিয়স্য তাক্ষ্যে দৌভরিশাপনাক্। ক্সঞাপ্তির্গোছ্হাং দাবাত্রাশং সপ্তদশেহতবং॥১॥

উপহার্ব্যৈ জন্মতের নাপহারীক্রিয়মাণৈ: সর্পর্কেপজনৈ:। বানস্পত্ত্যো বনস্পতেমূলে দেয়া। নাগানাং নাগৈর্গরুড়াৎ স্ববাধ-পরিহারায়। নিরূপিত উপকল্পিতঃ॥ ২॥

তত্র সর্ব্বে নাগাস্তং ২: স্বং ভাগং প্রথচ্ছন্তি। পর্বাণি পর্বাণি প্রতিপঞ্চাশি। গোপীথার রক্ষণায়। কিন্তু কালিয়স্ত তং ন প্রয়ছ্ডি প্রত্যুতান্যেদ ত্রুদপি স্বয়মেব বুভূজে ॥ ০ ॥

সপ্তদশ অধ্যায়ে নাগালয় হইতে কালিয়ের নির্গমন এবং ভগবান্ কর্তৃক স্বছঃখিত শ্রান্ত ও স্পু বন্ধুগণকে দাবানল হইতে পরিত্রাণ বর্ণন ॥ • ॥

রাজা পরীক্ষিৎ জিজ্ঞাসা করিলেন ত্রহ্মন্! কালিয় কি নিমিত নাগালয় রমণক দ্বীপ পরিত্যাগ করে, আর সেই কালিয় গরুড়ের কি অপ্রিয় কার্য্য করিয়াছিল ?॥ ১॥

শুকদেব কহিলেন রাজন্! নাগদিগের অধীন স্ক্রোং ভক্ষণীয় জনগণ নাগের পীড়াপরিহারার্থ যে বলি মাদে ২ রক্ষমূলে অর্পণ করিবার নিয়ম নির্দারিত ক্রিয়াছিল— ॥ ২ ॥

নাগেরা আত্মরক্ষণার্থ দেই বলির স্ব স্থাংশ, প্রত্যেক পূর্ণিমায় ও অমাবদ্যায় মহাত্মা গরুড়কে স্পৃণি করিত ॥ ৩॥

কিছু কাল পরে কক্রতনয় কালিয় স্বীয় বিষ ও বীর্যাজনিত মদে আবিষ্ট হইল অতএব গরুড়কে

তচ্ছুত্বা কুপিতো রাজন্ ভগবান্ ভগবৎপ্রিয়ঃ। বিজিঘাংস্থর্ম হাবেগঃ কালিয়ং সমুপাদ্রবং ॥৪॥ তমাপতত্তং তরদা বিষায়ুধঃ প্রত্যভায়াছখিতনৈকমস্তকঃ।

দত্তিঃ স্থপর্ণং ব্যদশদ্দদায়ুধঃ করালজিক্ষোচ্ছসিতোগ্রলোচনঃ॥ ৫॥

তং তাক্ষ পুত্রঃ দ নিরশ্য মন্ত্রনা প্রচণ্ডবেগো মধুদুদনাদনঃ।

## श्रीभवश्रामी ।

জনাত্তি ন'গোনাং সম্বন্ধী যশ্মিয়েইককো নাগো দীয়তে তথা হতো যো বলিঃ স্থপণায় নির্মাপিতঃ তত্র সং স্থং ভাগং দর্কো নাগাঃ প্রযুদ্ধি কালিয়স্ত ন প্রয়ন্ধ্র কিন্তুক্তি কালিয়স্ত ন প্রয়ন্ধ্র কালিয়স্ত ন প্রায়ন্ধ্র কালিয়স্ত ন প্রায়ন্ধ্র কালিয়স্ত ন প্রায়ন্ধ্র কালিয়স্ত ন প্রায়ন্ধ্র কালিয়স্ত কালিয়স্ত ন প্রায়ন্ধ্র কালিয়স্ত কালিয়াস্থ্য ন প্রায়ন্ধ্র কালিয়াস্থ্য কাল

বিষমেবাযুধং যস্য স:। প্রত্যভাষাং যোজুং প্রতি জ্বগাম। উথিতনৈকমন্তক উন্নমিতানেকফণ:। দদাযুধঃ দপ্তাযুধ:। করালজিহ্ব-\*চাসাবৃদ্ধ্বসিতোগ্রলোচন\*চ উচ্ছ্ সিতানি উব্জ্ স্তিতানি উগ্রাণি লোচনানি যস্য স:॥ ৫॥

তাক পুলো গকড়ঃ মধুসুদনস্যাসনং যত্মিন্॥ ৬॥

### বৈষ্ণবতোষণী।

उनीरगरङ्गा वनाम् धरुरारेनव वा कमर्थीक्ष्ट्या चत्रव चत्रस्य ॥

হে রাজনিতি বলিপ্রদরাজবিপ্রতিপত্তা ভবদাদিবদিতি ভাব:। যতো ভগবান্ সর্বশক্তিযুক্ত:। ভগবতঃ প্রিয়শ্চ পার্ষদপ্রবর-ইতার্থ:। অতো ভগবদদু টুনিগ্রহপরতয়া মহাবেগ: সন্ সম্যঙ্গারণোদ্যতভয়া সমীপ এবাগছৎ তদ্য ভুচ্ছত্বেহপি ধার্টগাৎ তাম্সবেন ভগবদনাদরস্বভাবতাচেতি ভাব:॥ ৪ ॥

বিষায়্ধঃ দ্বাদেব ফুংকারাদিনা তলোচকঃ সন্ প্রত্যান্তায়াৎ নিকটেডু দলায়্ধঃ সন্ব্যদশৎ। করালছর্বিষ্ণাল্ডর স্পর্শনাল্ডেণ হিংসকা জিহবা যদ্য উচ্ছৃসিতানি প্রদারিতানি উগ্রাণি দৃষ্টিমাত্তেণ ভক্ষীকরাণি লোচনানি যদ্য সূত্র সূত্র ॥

তৃকো মরীটি: ততঃ শিবাদিবাদদভাদ্যপাণ্ততন্ত্রন স্তরাপত্যস্য ভাক স্ত শ্রীকশ্যপসমহামুনে: প্র:। ইতি জন্মা তৎপ্রভাব: হচিত:।

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

विषायुषः क्रकात्रापिना प्तार। पनायुर्धा निक्ठीर ॥ ६॥ ७॥ १॥

## **अ**विश्वनाथठक वर्जी।

কদৰ্থীকত্য অনাদৃত্য তত্ৰত্য কৰ্ণেজপদৰ্পসুথাত্তভূত্বা ॥ ৪ ॥

বিষায়ুধঃ দুরাৎ ফুৎকারেণ তলোচকঃ নিকটে তু দদায়ুধো ব্যদশং। করালা জিহ্বা বদ্য উজ্তং খদিতং বদ্য উগ্রাণি লোচনানি ব্যাস্চ সচ সচ সঃ ॥ ৫॥

তাক্স্য ক্শাপ্সা পুল:। মধুত্বন স্যাসনং ব্সিন্ স:॥ ৬॥

গণ্য না করিয়া স্বয়ং সমুদায় বলি ভোজন করিতে আরম্ভ করিল। অথবা গরুড়ের ভক্ষ্য সর্পাণ এক এক নাগ দিব বলিয়া গরুড়ের নিমিত্ত যে বলি নিরূপিত করিয়াছিল, সকল নাগই তাহাতে স্বস্থ ভাগ প্রদান করিত, কেবল কালিয়ঃমদোন্মত্তা প্রযুক্ত তাহা প্রদান করিল না, নিজে দেওয়া ত দূরের কথা আন্যের প্রদত্ত বলিও নিজে ভোজন করিতে লাগিল। এই র্তান্ত প্রবণগায়ের ইইলে ভগবংপ্রিয় অর্থাৎ ভগ বানের শ্রেষ্ঠ পার্ষদ গরুড়ের অতিশয় কোপ হইল, তিনি প্রাণব্ধ কামনায় মহাবেগে কালিয়েন্দ্রিশানে ধাবমান ইইলেন ॥ ৪॥

হে রাজন্! গরুড়কে আসিতে দেখিয়া বিষার্থ কালিয় আপনার অসংখ্য ফণা উন্নমিত করিয়া যুদ্ধার্থ তাঁহার প্রতি গমন করিল। কালিমের জিহনা অভিশন্ন ভ্রানক, নিশাস বায়ু স্থদীর্ঘ এবং লোচন উগ্র হইয়া উঠিয়াছিল, অতএব দন্তরূপ অস্ত্রধারী ঐ নাগ দশনরূপ শস্ত্রধারা স্থপর্ণকে দংশন করিতে আরম্ভ করিল। ৫॥

মহাত্মা গরুড় ভগবান্ মধুসূদনের আদন ( বাহন ), ইহাতেই তাহার বেগ অতিশয় প্রচণ্ড ছিল।

পক্ষেণ সব্যেন হিরণ্যরোচিষা জঘান কদ্রোঃ স্তমুগ্রবিক্রমঃ॥ ৬॥ স্থপর্পক্ষাভিহতঃ কালিয়োহতীববিহ্বলঃ। হ্রদং বিবেশ কালিন্দ্যাস্তদগম্যং ছুরাসদং॥ ৭॥ তব্রৈকদা জলচরং গরুড়ো ভক্ষ্যমীপ্সিতং। নিবারিতঃ সৌভরিণা প্রদহ্য ক্ষুধিতোহ্হরং। মীনান্ স্তুঃথিতান্ দৃষ্ট্যা দীনান্ মীনপতে ছিতে। কুপয়া সৌভরিঃ প্রাহ্ন তত্ত্তক্ষেমনাচরন্।

#### औधत्यामी।

তন্ত গৰুজ্ঞ অগন্যং অগাধত্যা চ ছ্বাসদং ॥ ৭ ॥ তদগম্যকে কারণমাহ ত্রেতি নিবারিতাইপি॥ ৮॥

#### देवकवटकावनी ।

ভাকী তি বা পাঠ:। গৰ্গাদিভ্যো যভিতি গোত্ৰাপত্যবিবক্ষা। গৰুত্মান্ গৰুভ্তাক' ইত্যপ্তে । সচ কালিখন্ত কিমানিতি শ্বভাবিক-বিশ্বোশ্বরমপ্যাহ মধ্বিত। কালিয়েত্ তাদৃশ্বভাবে মাভুৱেব গুণস্থাব ইত্যাহ কজহতমিতি। শ্রীগৰুড্সাত্ সৌন্দর্যমপ্যাহ হিব-গোতি। সব্যেনতি অবহেলাং বোধ্যতি॥ ৬॥

অবন্যরপি ছ্রাসদং ছুস্পুবেশং॥ १॥

একদেতি চতুর্বিংশচতুর্বাদিশি পূর্ব্বি শীরঘুনাথপূর্বজনাদ্ধাত্মহারাজে পূণীং শাসতীতি জ্ঞেরং। জলচরমিতি সর্বেধামের সবে নাধারণমিত্যথা। তথ্য ভক্যং পক্ষিজাতাচিতনীল্স্য ত্যাহারজেন প্রাপ্তাং। অত্যবেশিতং। তথাপি মুনিবাক্যমাদরণীয়নিতি চেত্তবাহ কুধিত ইতি। শ্রীভগবহদের লীলরালীক্তকুদপি কুধান্তানাং ভক্ষণানহস্যাপি ভক্ষণে দোবাস্থতে:। এবং শ্রীগক্ষস্যাপরাধ্য পরিক্তা। কিন্তু ত্যা মুনেরেবাপরাধ্ ইতি ভাবা। কুধিত্য্য মহত্তম্য জক্ষণবিশ্বাচরণাং॥

জন্মণি মহাপ্রধিং ত্যাহ মীনানিতি ঘাভ্যাং। দীনান্ শ্বভাবত এব জলচরত্বেন কিঞ্চিদণি কর্তুম্শক্তে:। মীনণডৌ দর্ক মংস্ বক্ষকে হতে স্বষ্টু ছংখিতান্ দৃষ্ট্। এতেন ত্যাভিমৎস্যবিলক্ষণং স্কানস্বং জ্ঞাপয়তি দীন ইতি । স্প্রন্যস্থপাঠে সদৈব গ্রুড্ডিয়ে নার্চ ইত্যর্থ: প্রথমান্তপাঠো বা। মহাপার্ধদে ধ্রিটাদিনা বিবেকর্ছিত ইত্যর্থ:॥

#### क्रममम्डः।

ष्यत्नाङ् तात्रमः इच्चत्वमः॥ १॥

ভক্ষাং পক্ষিজাত্যুচিতলীলস্য আহারবেন প্রাপ্তং। অতএব ঈপ্পিতং। অতএব লীল্যা ভগবহদের কুধিত:।

### विविधनाथहक्तवर्वी।

भूताममः व्यनाध्यमध्यमध्यादेगात्रमि भृष्टादमः॥ १॥

গ্রুড়াগম্যতে কারণমাহ তত্তেতি মাতৃত্বে তি নিবারিতোহপীতি তবিন্ প্রমণহতি গ্রুড়ে অজ্ঞাগ্রানং ত্রিষ্টপ্রাতিকুনাং হৈছি সৌভ্রেরপ্রাধ্যয়ং। তদাজাস্থ্যনং প্রাণিহিংস্নঞ্জোপ্রাধ্যয়ং গ্রুড়্য্য নাচুত্তঃ স্কাশাদ্তিতেজ্ববিদ্যাদিতি জেগং॥

তত্ত্ব তৃতীয়মণরাধং তদ্যাহ মীনানিতি। তুপবেতি মীনান্ প্রতি যথা তদ্য কুপা তথা গকড়ং প্রতি কোপণ্ট গ্রমঃ। তত্রত্যানাং জীবমাত্রাণামেব ক্ষেমং কর্তু নিতি তত্ত কালিযাগমনেন তেবাং সর্কোবানকেনমেবাভূদিতি মহদপরাধিনঃ ক্রপাণি বিপ্রীত্যকলৈব ভবেদিতি দ্যোতিতং ॥

এই ব্যাপারে তাঁহার বিজ্ঞাতীয় ক্রোধ হইল, রোষবশতঃ কক্রপুত্রকে নিরস্ত করিয়া স্বর্ণবং দেদীপ্য-মান বামপক্ষের আঘাতে অতিশয় আহত করিলেন ॥ ৬॥

রাজন্! গ্রুড়ের পক্ষবারা আহত হইবামাত্র কালিয় অতিশয় বিহলত হইল এবং গরুড়ের ঘগষ্য ও অগাধতা হেতু তুর্ম কালিন্দীয়ুদে প্রাণভয়ে প্রবেশ করিল॥ ৭॥

হে পরীক্ষিৎ। কালিন্দীব্রদ গরুড়ের অগম্য কেনং, কারণ বলি শুন। একসময় গরুড় হ্রদের প্রধান একটী জলচরকে আপনার ঈপিতভক্ষ্য বোধ করিয়া ধরিতে বাইতেছিলেন,দৈবাৎ সৌভরির নয়নগোচর হওয়াতে তিনি বারণ করিলেন,কিন্তু কুধার্ত্তভাপ্রযুক্তগরুড় সে নিবারণ শুনিলেন না,প্রত্যুত্ত ব্যথ্র ইইয়া ঐ ভক্ষ্য হরণ করিলেন। সেই জলচর মীনদিগের অধিপতি, সে হতে ইইলে মীনসকল ছংথিত ইইল, ভাষা দেখিয়া সৌভরির চিত্ত দয়ার্ক ইইল অতএব তিনি ঐ জলাশয়ন্ত জলচরদিগের মঙ্গলাকাজ্মায় অত্র প্রবিশ্য গরুড়ো যদি মৎস্যান্ স থাদতি। সদ্যঃ প্রাণৈর্বিযুজ্যেত তথ্যমেতদুরীম্যহং ॥ ৮॥ তৎকালিয়ঃ পরং বেদ নান্যঃ কশ্চন লেলিহঃ। অবাসীদগরুড়াস্থীতঃ রুফ্যেন চ বিবাসিতঃ॥ ৯॥ রুফ্য ব্রদাদিনিজ্ঞান্তং দিব্যস্ত্রগৃদ্ধবাসসং। মহামণিগণাকীর্ণং জাঘুনদপরিষ্কৃতং॥ ১০॥

### **डी**धतयामी

নেলিহঃ সর্পঃ। অতন্তত্তাবাৎসীৎ॥ ৯॥ জাস্থুনদং স্থবর্ণ তেন পরিক্ষতং ভূষিতমিতি॥ ১০॥

### देवकवरकावनी।

অত্ত ব্রন্দে মৎস্যানিতি জলচরোপলকাং। সমন্বাক্যাবমন্তা শ্রীভগবংপার্বদপ্রবরোহপীতি বা। অহমিতি তপোবলান্যভিমানাং। এতেনৈব কিল বৈশ্ববাপরাধেন তস্য তপোভঙ্গাদিপরমানর্থ: 'ফলিত:। তচ্চ নবমন্তম্নে বর্ণিত:। কিঞ্চ তত্ত্বতাক্ষেমার্থ: সহলোহপি বিপরীত এবাভবং তত্ত্রান্ত তাবং জলচরাণাং বার্ত্তা কালিয়নিবাসেন তীরবর্তিনাং বৃক্ষাদীনামপি তথোপরি গচ্ছতাং থগাদীনামপি মরণং প্রাপ্তমিতি কেবলং শ্রীবৃন্দাবন্যমূনশ্রমাহান্ত্যোন শ্রীভগবংক্কপরা অনতিচিরেণ তদপরাধ: সদ্য: ফলমিব। বিবেকিনাং নরকত্ল্যমেব বিষয়ভোগং ক্লম্বা তেন পশ্চান্ত্রিগমিতি॥৮॥

তংপ্রোক্তরতং কালিয় এব পরং কেবলং বেদেতি জ্ঞীগরুড়ছেষেণ তদ্ভীত্যা সর্ব্বে নির্ভয়স্থানাছেষণাৎ পূর্বজন্মশতকৃতভাগ্য-বিশেষাচ্চ। ক্রফোন স্বানন্দকরেণেতি ভাবঃ॥৯॥
•

এবমুপোদ্বাতং সমাপ্য প্রস্তৃত্যাহ কৃষ্ণমিতি যুগাকং। জাঘূনদং দিব্যস্ত্বর্ণং ভক্ত্যা নাগরন্দপরির্তত্বাৎ তলাজু দাহিশেষেইণ্র নিজ্ঞান্তং সন্তন্পলভ্য দৃষ্ট্ব তাবদপি শক্ষা ভক্তবাং। নিজ্ঞান্সপি গতিলাব্বেইনৰ জলোপ্যুপিরি ক্রাইস্বৈতি জ্ঞেয়ং॥ ১০॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

মংস্যানিতি জলচরোপলকণং ॥ ৮ ॥
বেদেতি শ্রীনারদম্বারেতি জ্ঞেয়ং ॥ ৯ ॥
বিশেষেধিব নিজ্ঞান্তং উপলভ্যা দৃষ্ট্রা॥ ১০ ॥

## बीविधनाशहक्तवर्शी।

অত্র যদীত্যনেন পকান্তরমপি লভাতে। ততশ্লায়মর্থ:। অত্র প্রবিশ্ন যদি মৎস্যান্ থাদতি তদা সদ্যন্তৎক্ষণ এব প্রাণৈ বিষ্ত্রেত যদিচ মংস্যায় থাদতি তদাতৃ অসদ্য: কিঞ্ছিলত্ব এবেতি ভ্রমপ্রনেশমাত্র এব শাপ: মংস্যথাদনে তু শাপাতিশয়:। অত্রেত্য তিশাপং গক্ড: সর্বজ্ঞবাদেব জ্ঞাঝা নায়াত: কালিয়ত্বাথীয় তত্ত্রত্য সর্পম্থাজ্জ্ঞাত্বৈবাগত:। সৌভরেস্ত গক্ষ্য কুপ্যতো যদ্মিন্ কুপাংজ্লিই তস্য মীনস্যৈব সন্ধাহ্যিত। হ্বাসন্বোধ্যতাং যতশ্চ বিল্পান্ত্রক্ষানন্দ: স্বিস্কিত্তপ: স্প্রত্যোবনেনৈব মূল্যেন কামিনীবৃদ্ধ ক্রীয়া তাত্রিব নরকত্লো বিষয়ানন্দে নিম্জ্লন্বাধ্যতোগান্তে শ্রীকৃশাবন্যমূনাশ্রমাহাত্ব্যেনিব প্শ্চালিস্তারেতি নবনে ক্থা ॥৮॥ ১॥

উপোদ্যাতং সমাপ্য প্রস্তুতমাহ ক্লঞ্চমিতি ছাভ্যাং বিশেষণ নিজ্ঞানস্তমিতি জলোপ্যুগির্যোব চরণাভ্যামেব সম্ভরণলাঘ্রেনৈইবৃতি কালিয়াদিইং কমপি সর্পমলক্ষিতমারুকৈইহাবৈতি জ্ঞেয়ং। অন্যান্ধানাং জ্ঞলাপুত্তত্বে দিব্যস্থগৃদ্ধবাসস্মিতি বিশেষণং সাধুনোপ্পদ্যতে॥১০

কহিলেন, অতঃপর গরুড় যদি এখানে প্রবেশ করিয়া মৎস্য খায়, তবে সদ্যই প্রাণে বিষুক্ত হইবে, আমি
নিশ্চয় কহিলাম ॥ ৮॥

হে রাজন্! ঐ বিবরণ কেবল কালিয় জানিত, অন্য কোন দর্প অবগত ছিল না। অতএব গরুড়-ভয়ে ভীত হইয়া কালিয় তথায় বাস করিয়াছিল। শ্রীকৃষ্ণ তাহাকে সে স্থান হইতে নির্বাসিত করিয়া ইহা দিলেন॥ ৯॥

সে যাহা হউক, এদিকে জীকৃষ্ণ দিব্য বসন, দিব্য মাল্য ও দিব্য গন্ধ ধারণ পূর্ব্বক স্থবর্ণ ভূষিত এবং উৎকৃষ্ণ মণিসমূহে অলম্ভত হইয়া কালিন্দীহ্রদ হইতে নির্গত হইয়া আসিলে পর—॥ ১০॥

উপলভ্যোথিতাঃ সর্বে লক্ষপ্রাণা ইবাসবঃ। প্রমোদনিভ্তাক্সানো গোপাঃ প্রীত্যাভিরেভিরে ॥১১ যশোদা রোহিণী নন্দো গোপ্যো গোপাশ্চ কোরব। কৃষ্ণং সমেত্য লক্ষেহা আসঞ্জা নগা অপি॥ রামশ্চাচ্যত্মালিস্য জহাসাস্যানুভাববিং। প্রেম্না তমক্ষ্মারোপ্য পুনঃ পুনক্ষদৈক্ষত॥

### औधत्रवामी।

অপব ইক্রিয়াণি প্রমোদনিভূতায়ান আনন্দপূর্ণমনস: ॥ ১১ ॥ লক্ষেহা: লক্ষ্টেষ্টা: । নগা বুকা অপি পূর্বং ভূকা: সন্তঃ সদ্য এব বিরুঢ়া ইত্যর্থ: ॥ ১২ ॥

### देवकबरजावनी।

সর্ব্বে বক্ষ্যমাণাঃ অত্তেতনানামের স্তর্জানামিপ তেয়ামেকদোখানে হেতুমাহ লর্মপ্রাণা ইতি। তত্র মেলনে ক্রমঃ প্রমোদেতি সার্চ্বেন। গোপাঃ মথায়ঃ। পূর্ব্বত এব তীরাগ্রমবলম্বা স্থিতয়াৎ অভিরেভিরে পরিরেভিরে॥ ১১॥

ত ৬: শ্রীষশোদাদয়: সেহক্রমেণাগ্রতোহগ্রত আগত্য তত্ত্বৈব স্থিতশাৎ। তত্র শ্রীষশোদা ব্রহাং প্রস্থিতানাং সর্বেধানগ্রামিনী তস্যা এবাসমোদ্ধিবাৎসল্যাৎ। ততঃ শ্রীরোহিণী তয়া সংখ্যন স্বাসনন্দেন্ত তৎসহযোগাৎ। ততঃ শ্রীনন্দত্মপ্রতাৎসন্যাৎ গোগোগে গোপাশ্চ ক্রমেণ দম্পত্যোনি ক্টস্থা ক্রেমাং। কেষাঞ্চিৎসব াসনদ্ধাং কেষাঞ্চিৎ অসুযারিছাত। সমেত্যেতি পূর্ববং। তাবং ত্তরীভূয় কেবয়ং দ্রীর এবাসন্। পশ্চাং সম্পরেণাথিতমাত্রং নতু ধাবিত্বং শক্তাং। সমেত্য তু আলিক্ষনাদিচেষ্টাবস্থো বভূব্রিত্যর্থং। কিং বত্তনেত্যাহ শুকা ইতি। নিকটে তাবং স্কোৎপন্তিরেব নান্তি দ্রতন্ত্র যে বার্গত্যা শুকা শ্বামীং এব তাদৃশ্রীক্রঞ্লীলয়া বা হংশকুনাস্তর্বং শুকাত্তেহপি অনুরাদিবিকাশচেষ্টাবস্তো বভূব্রিত্যর্থং। লক্ষনোর্থা ইতি পাঠন্ত স্বাম্যস্মতঃ॥

অথ তাদৃশত্ঃথিব্ৰজ্ঞনসঙ্গমায় দত্তাবসরেণ শ্রীরামেণ সঙ্গমং বর্ণয়তি রামশ্চেতি সান্ধকং। চকাবাং পূর্বং ব্রস্থাসিশোকেন রামশ্চান্তঃশুক্ষঃ পশ্চাং লব্দেহস্তমালিক্য জহাদেত্যর্বঃ। অচ্যুতং ন কথিকদিপি মাহাত্ম্যাচ্চুত্য। কুতো জহাদ তদাহ অস্যাচ্যুত্যায়-

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

তাবদ্দি শহয়। গুৰুত্বাং পূৰ্বে ঈক্ষমাণাঃ দৰ্বে গোপাঃ স্থায়োহপুৰে নানাবিধাঃ॥ ১১॥

সমেতিতাবালিসনে চেটাবজো বভূব্রিতার্থ:। তদানীং ব্রজবাসিসধর্মতাপ্রাপ্তা। নগা অপি পূর্বং ওকাং পশ্চান্তরেহা:। অজুবোদগমনাদি চেটাবস্ত আসন্। তরিষভকাণামতিপ্রাচীনত্বাচিক্লান্যপি তদা নাগরিতি। জহাদেত্যক্ত হেতুরস্যেতি। অতো নিজ্ঞজ্ঞখন্যমিদং ভদ্রং কৃত্যিত্যগাল্ভনপূর্বকমেবেতার্থ:। গ্রাদিষু তত্তৈব বিদ্যানিশ্বপি কুধাদিক্ষিত্তং তেবাং বিষশ্পর্কশক্ষা শ্রীক্ষায়ায়-

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

অসব ইক্রিয়াণি প্রমোদনিত্তামান: আনন্দপূর্ণমনস:। গোপা: স্থায়: তেয়ামের তারল্যেন প্রাথমাটিত্যাৎ॥ ১১ ॥

ততো হা পুদ্র জীবসীতি গলগদেরবাগুকলজ্জাভয়প্রশ্রমদিনিরপেকা অতিবিহবলা শ্রীমশোদা ততত্তৎস্থীদতিনিবিত্তয়া তদভিতঃ প্রাপ্তান ব্যা রোহিণী। ততঃ প্রেনোংকটাচুল্কিতগান্তীয়ো বিল্লাসহিষ্ণু: জ্রীদংমর্জমধ্য এব প্রবিশা নলাঃ। ততেছেন্যা গোপো বংসলা গোপাশ্চোপনন্দাদয়ঃ। চকারেণায়রাগিণঃ পূর্বরাগবত্যো গোপাশ্চ দ্রতো লোচনাঞ্জীভিরেব সমেতা পরিষ্কানিভি: সঙ্গতীভূব লক্তেটা লক্কবাঞ্জি মৃতা ইব জীবস্থো বভূবঃ। কিং বহনা নগান্তীরে বৃক্ষাভাবাদ্দ্রে বৃন্দাবনস্থা বৃক্ষা মপি তৎসাধ্ব্যপ্রাপ্তা কৃষ্ণমন্ত্রী শোকাং ওকাতং পুন দৃষ্টা লক্ষেহা অস্কুরপ্লরপূলাহাদানবত্তঃ॥

জংাদেতি ধনোঁহিলোবং কর্তু যুজাত ইত্যুক্। তংপ্রভাবজ্ঞোহপি প্রেয়া পুনঃ পুনক্তকর্থে ঐকতেতি কালিয়হতকেন কচিতং কত্র নাভ্রিতি নাভাল্যৎ ॥

বিগত প্রাণ পুনশ্চ সমাগত হইলে ইন্দ্রিয়গণ যেরপ হয়, তজ্ঞপ গোপগণ শ্রীকৃষ্ণকৈ দেখিবামাত্র উথিত হইলেন এবং আনন্দপূর্ণ হইয়া প্রীতিপুর্ব্ধক আলিঙ্গন করিতে লাগিলেন॥ ১১॥ হে কৌরব! যশোদা,রোহিণী তথা অন্যান্য গোপী এবং নন্দ ও আর২ গোপসকলও শ্রীকৃষ্ণকৈ দেখিতে পাইয়া স্বস্থ বিনক্ত চেইটা পুনঃ প্রাপ্ত হইলেন, আর শুষ্ণবৃদ্ধগণও তাঁহার দর্শনে সুদ্যঃ জীবিত হইয়া উচিল। বলদেবও শ্রীকৃষ্ণকে দেখিয়া আলিঙ্গন করিলেন। যদিও তিনি শ্রীকৃষ্ণের অনুভব জানিতেন বলিয়া অত্যে হাদ্য করিলেন। তথাপি স্নেহবশতঃ কোড়ে আরোপণ করিয়া পুনঃ২ নিরীক্ষণ করিতে

পাবে। বুয়া বৎসভর্ষ্যো লেভিরে প্রমাং মুদং ॥ ১২॥

নন্দং বিপ্রাঃ দমাগম্য গুরবঃ দকলত্রকাঃ। উচুন্তে কালিযত্ত্যে। দিউটা মুক্তন্তবাল্লজঃ॥ ১০॥ যশোদা চ মহাভাগা নন্টলব্ধপ্রজা দতী। পরিষজ্ঞাক্তমারোপ্য মুমোচাশ্রুকলাং মুত্ঃ॥ ১৪॥ তাং রাত্রিং তত্ত্ব বাজেন্দ্র ক্ষুতৃভ্ত্যাং শ্রমকর্ষিতাঃ। উমুর্ত্রজৌকদো গাবঃ কালিন্যা উপকূলতঃ।

### श्रीधतवामी।

ননং তে বিপ্ৰা উচু:। কিং ডৎ দিষ্টোভ্যাদি॥ ১০॥

नदेनक अदा नदेशीया भूनल का अदा गया गा॥ ১॥॥

শ্ৰমেণ কৰিছা: উপকৃষত্ত: কুলোপাত্তে॥ ১৫॥

#### देवसम्बद्धांसभी।

ভাবং ইচ্ছামাত্রেণ সর্বাসামর্থ্যং বেত্রীতি তথা স:। 'মতো নিজ্বজঁছ:খময়মিদ্ধ ভক্তং ইত্যুপালস্ত্রনপূর্বকমেবেতার্থ:। নগা অভ্যেহপি সর্ব্বে। গাবো সুধা বংসতরা ইতি পাঠ: কচিং॥ ১২॥

তবৈর বিশেষতো ত্রাহ্মণানাং হর্ষভরেণ বাক্যমাহ নন্দমিতি গুরুবঃ পুরোহিডাঃ। অন্তে চ বিপ্রা: সমাগত্যেতি প্রাণেব তেন সহ এফারির্গতাঃ অধুনা তরিকটমাগত্যেতার্থঃ। তে প্রমবৈক্ষবত্বাদিনা প্রসিদ্ধাঃ। দিষ্ঠা ভক্তঃ। অহো ত্বাহ্মকং চ ভাগ্যমিতার্থঃ। অতোহতিহ্যষ্টো ভূষা স্নমহোৎসবং বিধেহীতি ভাবঃ॥ ১৩॥

মহাপ্রেমা পুন: শ্রীবশোদরা মিলিডমিত্যাহ যশোদেতি। তথে চিকার: প্রীনন্দতোহপি বিশেষাং। মহাভাগরমাহ নটেতি। যতঃ সতীতি তস্যাঃ কথমস্তপা স্যাদিতি ভাববিশেষেণাভিপ্রেতং। যয়। শ্বভাবতঃ শ্রীকৃষ্ণবেহাদিনা সর্বোৎক্রটা। যয়। তাদৃশী ভবস্তী কলাং ধারাং মৃহ্রিতি কদাচিং পূর্ববৃত্তস্বত্যা হু:থোদয়েন কদাচিত প্রাপ্ত্যানন্দেনাশ্রধারামোচনন্দ বিরামেহপি উফ্শীতভাভেদেন পৌনঃ-পুরাং॥ ১৪॥

কথাক্রমেণান্তামপ্যভ্তলীলামাহ তামিত্যাদিনা। রাত্রিমিতি শ্রীক্ষক্ত কালিয়দমনাদিনা তেন সহ ব্রজনানাং প্রত্যেক্ষেলনে নচ দিনাবদানতঃ। তাং তদ্দিনসম্বন্ধিনীং তাদৃশপ্রমানক্ষ্মনীং বা। যত্র ক্লেন সহ সঙ্গমন্তন্মিন্ প্রদেশে এবোরুঃ। তত্ত্বৈ হেতুঃ ক্ষুত্ত্ভাাং রোদনাদি শ্রমেণ চ ক্লীক্বতাঃ দৌর্বাল্যঃ প্রাপিতা ইত্যর্থঃ। তত্ত্ব ধেবাদিমু তত্ত্বৈ বিদ্যমানাত্মপি ক্লুধাদিক বিত্তং তাগাং

#### ক্রমদলর্ড:।

প্রয়োজনাই॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥

উপকূলত: কিঞ্চিৎ কূলং পরিভাজ্যেভার্থ: ॥ ১৫ ॥

### श्रीविश्रनाथहक्तवर्जी।

প্রবেবা ভাগুর্যাদিপুরোহিতা:॥ ১৩॥

আদৌনইপ্রায়া পশ্চান্তরা প্রজা বরা সা। অক্ষারোপ্য পরিষজ্যেতি পূর্বং বহুলোকাপেক্ষাবশাং তাদৃশপরিষ্পালাতাদিতি ভাব: ॥ ১৪ ॥

অতঃ পরমদ্য রাত্রৌ বরং ক্লফং নির্নিমেবং পশ্যন্ত এব স্থাস্যামঃ। ভাগ্যাদগতোহপি কালিরঃ পুনর্যদি বৈরং সিষাধ্যিরুরায়াতি তদা মিলিতীভূম লকুটে বারয়ামঃ। নতু দর্শনব্যবধায়কং স্বন্ধগৃহং যাম ইতি সর্বেষাং মনোরথমালক্ষ্য নন্দাদ্য বিজ্ঞাক্সঃ উপ-

লাগিলেন। অপর শ্রীকৃষ্ণকে দৈখিয়া গো র্য তথা বংসতর সকলও পরমানন্দ প্রাপ্ত হইল॥ ১২॥

অনন্তর গুরু ও বিপ্রগণ সন্ত্রীক হইয়া নন্দ সন্ধিানে আগমনপূর্বক আনন্দে কহিতে লাগিলেন যে হে গোপরাজ! তোমার পরম ভাগ্য তাহাতেই তোমার পুত্র মহাদর্শ কালিয় কর্তৃক এন্ত হইয়াও পুনর্বার মুক্ত হইয়া আদিল ॥ ১৩॥

যশোদাও মহাভাগ্যশালিনী, কারণ নউপুত্র.পুনর্কার লাভ করিয়া অঙ্কে স্থাপনপূর্বক আলিঙ্গনকরতঃ মুহুমূ হিঃ আনন্দাশ্রু মোচন করিতে লাগিলেন ॥ ১৪॥

হে রাজেন্দ্র ! ব্রজবাসিগণ এবং ধেনুগণ যদিও কুধা ও তৃষ্ণাবশতঃ পরিপ্রাপ্ত হইয়াছিল

তদা শুচিবনোজ্তো দাবাগ্নিং সর্বতো ব্রজং। স্বপ্তং নিশীথ আরত্য প্রদগ্ধ মূপ্চক্রমে।
তত উত্থায় সম্রান্তা দহমানা ব্রজোকসং। কৃষণং বযুত্তে শরণং মায়ামমুজমীশরং।
কৃষণ কৃষণ মহাভাগ হে রামামিতবিক্রম। এব বোরতমো বহ্নিস্তাবকান্ প্রসতে হি নঃ॥১৫॥
স্কৃষ্তরামং স্থান্ পাহি কালাগ্রেঃ স্কুদঃ প্রভো। ন শক্ষুমস্বচ্চরণং সংত্যক্ত মুক্তো ভয়ং।

#### श्रीभवतामी।

কালামে: মৃত্যুক্লামে: ন মৃত্যোধিভিম: কিন্তু অচ্চরশবিরোগালিত্যান্ত ন শিকুম ইতি। বিমোহা নহি দণ্ডেন ততঃ স্বং শ্বণং

বৈষয়বতোষণী।

বিষদম্পর্কশঙ্করা শ্রীক্রফারাত্বপ্রোজনাং। ততঃ স্বয়নপাত্বপ্রোগাং কালিন্দ্যা উপকৃলতঃ বিষজলাদি ভণেন তদুদ্রত জলান্তিকং পরি-তাজোতার্থং। অন্তথা দাবাগ্লিনা সর্বতে আবর্ণাসিলে:॥

তদা তদ্রাত্রানের শুচিপ্রির্মন্য: তংসম্বন্ধি বনং শুকারণামিত্রপুঃ। তত্রোর তঃ অয়ঞ্ দাবাগ্রিরপঃ কালিয়স্থ: কংসাত্তরঃ কশ্চিন্তুর ইতি কেচিদাতঃ ॥

সরাভাং সদ্যতংপ্রতিকারাদ্যজ্ঞানাং। যথা। নিংসারণার্থমিতস্ততঃ কৃত পশ্মির্মণা ইত্যর্থং। যতো দ্যুনানা দ্রুমুপ্রুম্যনাগাং মার্যা কাপট্যেনৈর মহল্পত্নে প্রাক্তমন্থ্যতেন জুরস্থা। বস্তত্ত নরাক্তিপ্রব্রক্তেন তর্পেণৈবেশ্বদ্ধং কিশা মারা কুপা তদ্যুক্তং নহজং বিভূল্যাদি সাম্যান। যথা। নাগা লক্ষ্যা দিখবং অনিন্মপি মহলং মহ্ব্যলীলং ইতি কাফ্গ্যাদ্যতিশ্বং ক্টিতঃ। ত্রাপি কৃষ্ণং ত্র ব্রহ্মন প্রাণনাথং অতঃ শ্বণং যয়ং॥

তং প্রকারনেবাই ক্ষেতি। বীপা সম্মনে সেইভরস্থাবেন বা নহান্ ভাগো ভাগ্যমন্ত্রাদ্শানাং যন্ত্রাদিতি তৎসাক্ষাং অন্যাকং হুংখং নোপযুক্তনিতি ভাবং। অনিতোহনস্থা বিক্রম: শৌর্যাং যদ্য ইতি বগদেবং প্রতি সংঘাধনং তব বীর্যোণ দাবামির পি নির্পাতীতি ভাবং। এবং তদাপি তেষাং মহাপ্রভাবস্বজ্ঞাননেব জাতং নবৈম্বর্যাক্রানমিতি ভাবং। এই তি প্রত্যক্ষরং শীঘ্রং বা বোধ্যতি ঘোরত্য: অপ্রতিকার্যান্ত্রাই বুল্লান্ত্রকপ্রাপ্তরাধা। প্রদত্ত নিংশেষেণ সংহরতীত্যথং তাবকানিতি কুপালননার্থং প্রদায়েবাগ্যম্ব বোধনার্থং বা তবকনমকাবেকবচন ইতি তদ্ধিতনিমিত্রকাদাদেশ স্ক্রাদ্বদ্বৈক্রস্থাব সম্বন্ধঃ প্রতিপদ্যতে। হি নিশ্চিতং। তং বারু ম্বেবিভেলপ্রতিপাদনার্থমিতি জ্বেরং॥ ১৫॥

স্থান্ জাতীন্ আস্মীযান্ বা স্থোভনং স্দেষবাং তান্ সভাবেন তদেকনিঠানিতাথং । প্রভো হে সর্ধং কর্ং সমর্থ ন কুতোগি ভবং বস্থাবং । অতঃ সম্যক্ জন্মপি বিষ্কৃত্যা তাজুং ন শকুন ইতি ॥

#### ক্রমদন্দর্ভঃ।

অক্তোভয়মিতি **ওচে**রণপ্রাপ্তিং বিনা অন্যৎ সর্বনেবাল্লাকং ভ্যহেতুরিত্যুর্থ:। অপিবং রুপাবেশেন পানাভিন্যেনৈর যধ্যত

#### क्विविधनाणहळ्वा ।

ক্লতঃ বিষক্তাদিভয়াৎ ক্লসমীপং পরিত্যক্ষ্য উবুং। অন্যথা দাবাগিনা সর্কত আবরণাদিছে: ॥

শুচিত্রী ম: দাবাম্মিরমং কংসামুচর: কালিয়স্থ: কন্চিদন্ত্র ইতি কেচিদাত:॥

ব্ৰজৌকসং ব্ৰহ্মক্ষীৰণান্যাঃ মাৰ্যা অভ্নেশ্বৈৰ মনুহাং অৱপভ্তয়া নিতাশক্যা নায়াগায়েতি লাভেঃ। শ্বণং ব্যুবিতাটো অবাকং প্ৰাণসক্টসময়ে অবিধানে অবিশানে পাল্যতি অনেন স্কৃত্যাণি, স্মন্ত্ৰবিহাণেতি গ্ৰেণিক্সেমিং সম্ভ্ৰিনাবায়ণাবিষ্ঠং কুফ্নেৰ নাৰায়ণ্ডেন বিস্ভা বিপ্তৱণাৰ্থং শ্বণং যাম ইতি বিষ্ণাতি ভাবং ॥

হে রামেতি তন্তাপি তদিনে সর্বজ্ঞত্ব দর্শনাদরমণি রুফলাতা দেবাবিপ্ত ইত্যন্তুমানাৎ ॥ ১৫ 🕏

কালো মৃত্যুতজ্ঞপাৰ্যে:। যুড্যো দতি ২৬বণেন সহ বিয়োগো ভবেং সতু ছংসহ ইত্যাহ্ ন শিকুম ইতি ॥

তথাচ সেই রাত্রি কালিন্দীর তীরসমীপেই থাকিল। নিশীথকালে দৈবাৎ শুচিবন হইতে উদ্ভ লাবাঞ্জিপ্ত ব্রজবাসিদিগকে চারিদিকে বেফনপূর্পক দগ্ধ করিতে উপক্রম করিল। ব্রজবাসিরা অগ্রিম্পার্শ সমন্ত্রম নিদ্রা হইতে উথিত হইলেন এবং মায়াকশত মানবরপ্রধারি পরমেশ্বর শীকুফের শ্রণাপম হইয়া কহিতে লাগিলেন যে, হে কৃষ্ণ ! হে কৃষ্ণ ! হে মহাভাগ ! হে রাম ! হে অপরিমিত্বিক্রম ! এই ঘোরতম দাবানল স্বদাশ্রত মাদুশগণকে গ্রাস করিতেছে॥ ১৫॥

হে প্রভো! এই কালাগ্রি অতিশয় হস্তর, আমরা তোমার স্থন্দ্, আমাদিগকে ইহা হইতে রক্ষা

ইত্থং স্বজনবৈক্লব্যং নিরীক্ষ্য জগদীশ্বরঃ। তমগ্রিমণিবতীত্রমনন্তোহনন্তশক্তিধৃক্॥ ১৬॥
॥ \* ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষদ্ধে রুন্দাবনক্রীড়ায়াং দাবাগ্রিমোক্ষণং নাম সপ্তদশোধ্যায়ঃ॥ \* ॥১৭॥ \* ॥

শ্রীশুক উবাচ॥

**ડ**હહ

অথ কৃষ্ণঃ পরিরতো জ্ঞাতিভিমু দিতাত্মভিঃ। অনুগীয়মানো ন্যবিশদুজং গোকুলমণ্ডিতং॥ ১॥

### डीधतवामी।

গতান্। গোপানপাদনভোহসাবনস্তবনবহ্নিত:॥১৬॥

॥ • ॥ ইতি দশমে সপ্তদশ:॥ • ॥

অষ্টাদশে ততো গ্রীমে বসস্ত গুণলক্ষিতে। ' অঘাতয়ম্বলেনালং প্রলম্বং লীলয়া হরি:। কৃষা নৃত্যং ফণাগ্রের্ কালিয়্স সংক্তির্কং। বলং প্রলম্ভ্রশংসমারোহয়দরাতিহা॥ ১॥

#### বৈষ্ণবজোষণী।

ইখং স্বপ্রেনৈকম্লকানেককাকু ক্যাদিপ্রকারকং নিরীক্ষ্য অন্তত্ত্ব তং তাদৃশং অতন্তীব্রং হংসহং তথাভূতমণি অপিবং। কারুণ্যমন্ প্রেমাবেশেনৈবেতি ভাবং। নকু ভবতু তদাবেশন্তেন কথং তৎপানং দ্যাদিত্যাশন্ত্য গূঢ়মণি তদৈখব্যং স্বয়নেব ব্যক্তীভবতীতি অভিপ্রেতা দিনান্ত্যা কি কার্যাতি অগতামপীশ্বরং সর্বেষ্ তত্তচ্জু ক্রিপ্রেদ ইত্যর্থং। তত্মাদেবাগ্নেরণি শক্তেং কো নাম বিক্ষম ইতি ভাবং। নকু গোপবালকরপঃ সমস্তাত্মিগ্রং কথং অপিবং তত্ত্বাহ অনস্কন্তাদৃশদ্যৈব বিগ্রহ্য বিভূত্বেন স্বয়মণি সমস্তাৎ প্রকাশমান ইত্যর্থং। নচ তত্মাত্র-শক্তিব্যপ্যাশ্চর্য্যমিত্যাহ অনস্কশক্তিধ্গিতি। অত্তবে শ্রীগোপা অপি নিবার্যাত্ত্বং নাবসরং লক্ষ্যতি ইত্যর্থং॥ ১৬॥

॥ \* ॥ ইতি শ্রীবৈষ্ণবতোষণ্যাং দশমটিপ্পন্যাং সপ্তদশঃ ॥ \* ॥

অণ প্রাতর্ক্ত তিভিরিতি তদাপি তদ্ভাবমাধুর্য্যাপরিত্যাগো দর্শিত:। পরিতোর্ত: মেহাতিরেকেণ সর্ক্ত আবরণ্ডয়া বেষ্টিতো

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

বান্। তত্র হেতুঃ জগদীখরঃ অধ্যাদীনাং সর্কোষামেব তত্তজ্ঞেপ্রবর্ত্তকনিবর্ত্তক:। সমস্তাদগতাগ্নিপানে গুকি:॥ অনস্ত সর্কাত প্রকাশমান স্ববিগ্রহ:। তাদৃশশক্তাবনভ্তত্তং অনস্তশক্তিগ্নিতি॥১৬॥

॥ ॰॥ ইতি দশমে ক্রমসন্দর্ভে সপ্তদ্শঃ॥ •॥

অণ প্রাত র্গোকুলেন গোদমূহেন মণ্ডিতং যথাক্তাং ॥ ১ ॥

#### শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

স্বজনবৈক্লব্যং দৃষ্টে ত্বজনবিষরকস্তৎপ্রেটনৰ তেষাং রক্ষণার্থং তটমখর্য্যনমুসন্ধাপয়ামাসেতি ভাবঃ। নতু প্রমস্কুমারঃ কথং তীব্রমগ্রিমপিবত্তবাহ অনন্তশক্তিশ্বক্ তহ্ম সংহারিকা শক্তিরেবাপিবৎ। তত্মিন্ শক্তিমতি তৎপানোপচারমাত্রমিতি ভাবঃ॥ ১৬॥

॥ \* ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। দশমেহস্মিন্ সপ্তদশঃ সঙ্গতঃ সভাং॥ \* ॥

গ্রীমর্ত্ত্বর্ণনং কেলো কৃষ্ণঃ প্রীদামবাড়ভূৎ। রানঃ প্রলম্বদাকৃষ্ণাহরিত্যপ্রাদশে কথা॥ ১॥

কর, আমরা মৃত্যু হইতে ভীত নহি, কিন্তু পাছে তোমার চরণ হইতে আমাদের বিয়োগ হয় তজ্জন্যই ভর করিতেছি, যে হেতু তোমার চরণে কোথা হইতেও ভয় হয় না, অতএব আমরা ইহা পরিত্যাগ করিতে পারিব না। হে রাজন্! জগদীশ্বর ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ আত্মীয়জনগণের এইপ্রকার কাতরতা নিরী-ক্ষণ করিয়া সেই ভীষণদাবানল পান করিলেন। তিনি নিজে অনস্ত ও অনস্তশক্তি ধারণ করেন, তাঁহার ঐ কর্মা বিচিত্র নহে॥ ১৬॥

## ॥ ०॥ ইতি দশয়ে সপ্তদশ॥ ०॥

অফীদশ অধ্যায়ে বসন্তওণে লক্ষিত **এীম্বন**য়ে শ্রীকৃষ্ণকর্তৃক বলভদ্র দ্বারা প্রলম্বাস্থ্রের বধ এবং কালিয়ের ফণাপ্রে সানন্দে নৃত্য করত প্রলম্বের স্কন্ধে বলদেবের আরোহণ বর্ণন ॥ ০ ॥

'শুকদেব কহিলেন তদনন্তর ঞীকৃষ্ণ হুষ্টচিত্ত জ্ঞাতিগণে পরিবৃত হইয়া ধেনুগণমণ্ডিত অজমণ্ডলে

ব্রজে বিক্রীড়তোরেবং গোপালচ্ছদ্মনায়য়া। গ্রীম্মো নামর্ত্র ভবন্ধাতিপ্রেয়াঞ্রীরিণাং। সচ রন্দাবনগুণৈব্সস্থ ইব লক্ষিতঃ। যত্রাস্তে ভগবান্ সাক্ষাদ্রামেণ সহ কেশবঃ॥ ২॥ যত্র নির্বরিদ্রেশিনির্ভস্বনঝিল্লিকং। শশুক্রচ্ছাকরজী যক্রনমণ্ডলমণ্ডিতং॥ ৩॥

### धिधववामी।

त्शानां निष्कृतामायुर्वा (शानां निन्दम् व ष्कृत्य यनाः उपा मायुर्वा ॥ २ ॥

বসস্তসাম্যমাহ চতুর্ভিঃ। যত্ন গ্রীত্মেহপি নিঝ রাণাং নিয় বিদেন ঘোষেণ নির্ভস্থনাঃ ছয়ধ্বনয়ঃ ঝিলিকাঃ কঠোরধ্বনিস্ক্ষকীটা যত্মিন্ তথাভূতং বৃন্দাবনং ভবতি। কিঞা । শখণ্ডেষাং নিঝ রাণাং শীকরৈরমুক্তৈঃ ঋজীষাঃ মিধা যে ক্রমান্ডেষাং মণ্ডলৈম ভিজঃ॥ ৩॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

অমুগীয়মানশ্চ গোকুলমণ্ডিত্মিতি প্রাক্ গবাং প্রবেশাং ক্রিয়াবিশেষণং বা প্রাতবেব গোপ্রবেশনং তহপদ্রবন্দোরকত্বেন দব্দগ্গত্বেন চ তংপ্রদেশং ত্যুক্ত্ব ক্রোশমাত্রস্থিত্য ব্রজ্য প্রতশ্চারণেচ্ছয়া ইতি জ্ঞেয়ং। তাদৃশকুষময়গতভদ্যাত্রাপরিবর্তনেচ্ছয়েতি বা। বিশেষ-তস্ত কারণং মহয়া ইব গশবোহপি তং ব্রজং প্রবিশন্তং ত্যুক্তুং নাশকুবন্ধিতি॥ ১॥

গোপালনং ছন্মতি যা মায়া তস্য ছন্মতা বাদিনাং বঞ্চনং তয়া ক্রীড়তোন্তান্তান্ বঞ্চিষ্টা বিহরতোরিত্যর্থ:। ব্যা।গোপালনমণি ছন্মক্রীড়ান্তরাভিপ্রায়শালি বত্র তাদৃশী যা মায়া জনবঞ্চনং তয়া ক্রীড়তোঃ বিচিত্রক্রীড়াবিশেষানপি কুর্বতোঃ। নাম প্রাকাশ্রে গ্রীন্থ ইতি গ্রীমান্তরমভবদিত্যর্থঃ নাতিপ্রেয়ানিত্যতিশব্দো জলকেল্যাদীনাং কিঞ্ছিৎ প্রিয়তাপেক্যা।

সচ সোহপি তলগুণানাং নিত্যবসম্ভদানিধ্যকরত্বং কিন্নলা মাহাক্সমিত্যভিপ্রেত্যাহ ্যত্রেতি। তত্মাত্র্রিব ছুটাক্সা হতঃ কেণী জনার্দ্ধনা। তত্মাৎ কেশবনামা ত্বং লোকে গেয়ো ভবিষ্যদীতি শ্রীবিষ্ণুপ্রাণোক্তরীত্যা কেশবোহত্র শ্রীকৃষ্ণ এব অতএব ভগবান্ পরিপূর্ণ সর্বভগঃ। আতে নিত্যমেব বিহরতি। বর্তমানপ্রয়োগস্ব শ্রীশুক্স্যা স্থাক্ত ব্যুস্থারেণ ॥ ২ ॥

যত্রেতি পঞ্চকং তথনসবিশদিতি পঞ্চমনাম্বয়াৎ। তথাপি পৃথগক্ষিয়াতে বৈশদ্যায়। যত্র বৃন্ধাবনে সামান্যেন সর্ক্ষমেব স্থানং নির্মারেত্যাদি লক্ষণং শখদিত্যাদি লক্ষণঞ্চ। মধা। নির্মার নির্মাদেন বর্ষাভ্রমজনকেন নির্বস্থনা যে ঝিল্লয়ঃ তৈঃ কং স্থণং ছংথাভাব-ইতি যাবৎ। তাদৃশক্রমমগুলৈম গুনক যত্র ভবতি ভাবে নিষ্ঠা। অত্র টীকায়াং তেষামিতি যত্তীনির্দ্ধেশাং মণ্ডলৈরিত্যেব বুগতে।

#### क्रगमन्द्रः।

তদ্দিনে তংপ্রদেশস্থ দাহাৎ এজাৎ পরতশ্চারণার্থং গোপালনং ছল্মেতি। যা মায়া তদ্য ছেম্মতা বাদীনাং বঞ্চনং তয়া ক্রীড়তোঃ তান্ বঞ্যিয়া বিহরতোরিতার্থঃ। তলশুণানাং নিত্যবসন্তদালিধ্যকরমাহাম্মানিত্যভিপ্রেত্যাহ যুৱাস্ত ইতি। নিত্যমেব বিহরতি ॥ ২ ॥ যুৱা বুলাবনে তদ্দন্যবিশ্দিতি পঞ্চির্বয়ঃ॥ ৩॥

#### चौविश्वनाथठकवर्त्वी।

গোপালনং ছন্ম বনগমনায় মিৰং যস্তাং তথা ভূতা যা মায়া প্ৰজেক্সকামতাময়ী জনবঞ্চনা তয়া বিক্ৰীড়তোৰ জিবালাভিঃ সহ বিহ-রতোরিভি। বলদেব্যাপি পুমক্ কান্তা গোপ্যঃ আনন্দর্ব্যাবনে দুটাঃ। মুলেহপুগেরিটায়াকীভবিষ্যান্তি॥ ২॥

বসস্তসাম্যমাহ চতুর্ভি:। যত্র বৃন্ধাবনে গ্রীমেহপি নিঝ রাণাং নিস্তাদেন ঘোষেণ নির্ত্তস্থনা আছেরধনয়ো থিলিকা: কঠোর-ভাষিস্ক্রকীটা যন্মিন তথাভূতং স্থলং ভবতীতি শেব:। শশতেবাং শীকরৈবন্ধৃকণৈধ জীবা: নিশ্ধা যে জনাতেবাং ন ওলৈন ভিতং ॥ ৩ ॥

# প্রবেশ করিলেন। ভাঁহার অনুগামি লোকেরা সঙ্গে ২ যশ কীর্ত্তন করিতে ই চলিল॥ ১॥

হে রাজন্! যাহাতে গোপালনমাত্র ছল্ দেদীপ্যমান, তাদৃশী মায়াযোগে রামকৃষ্ণ ত্রজনধ্যে ঐ প্রকারে বিহার করিয়া বেড়ান্ ইত্যবদরে শরীরিদিগের অনতিপ্রিয়তর এীয় ঋতু আদিয়া আবিভূতি হইল। কিন্তু সেই গ্রীয় যেথানে ভাগবান্ কেশব, বলদেবের সহিত বাস করিতেছিলেন সেই
রন্দাবনের গুণে বসস্তের ন্যায় লক্ষিত হইল॥২॥

বে হেতু নিদাঘ সময়েও বৃন্দাবন মধ্যে নিঝার সকলের ধ্বনি দ্বারা কঠোরভাষি ও কুদ্র ঝিল্লী-নামক কীটদিগের ধ্বনি আছেম হইয়া গেল আর সকলপ্রদেশ নিরস্তর ঐ সকল নিঝারের জলকণায় मतिरमतः ध्यायवरणार्भिवायुना कस्नातकरक्षारभनरतं पूरातिणा।

ন বিদ্যতে যত্র ব্রজ্ঞোকসাং দবে৷ নিদাঘবহ্ন্যুক্ভবোহতিশাদ্বলে॥ ৪ ॥ অগাধতোয়হ্রদিনীতটোৰ্শ্ধিভির্দ্রবৎপুরীষ্যাঃ পুলিনৈঃ সমস্ততঃ।

ন যত্র চণ্ডাংশুকরা বিষোল্লণা ভুবো রসং শাদ্বলিতঞ্চ গুহুতে ॥ ৫॥

### शिधतकामी।

যত্র গ্রীমে বনে বা নিদাঘো গ্রীমন্তেন তৎকালীনবহুগর্কাভ্যাক ভবতি যো দ্বস্থাপঃ। অভিশাদ্ধে অভিহ্রিভঙ্গাকীর্ণে। যথা। অভিক্রারশাদ্ধণেহপি স্থানে॥৪॥

নমু শাঘলমেৰ কুতস্তাং তত্তাহ অগাধেতি। অগাধানি তোয়ানি যাসাং তাসাং ইদিনীনাং তটপ্পৰ্লিভিক্তিভিভিভিত্ৰ পুলিনৈৰ্ভ্ৰৎ পূৰীষং পঙ্কো যস্যান্তস্যা ভূবো বসং শাঘলিতং শাঘলক্ষণতাঞ বিষৰ্ছ্ৰণা অপি সুৰ্য্যক্ষামো ন গৃহতে ন হৰন্তি তথনং অবিশ্দিত্যভৱেণাখ্যলেও

## देवस्थवटकावनी ।

ম গুপৈরিতি পাঠে তু কথঞ্চিদেব সা যোজ্যা॥ ৩॥

যত্র চ বৃন্দাবনে সবিদিত্যাদিনা বামোঃ স্থানতাাদিকমুক্তং। অথমেকো দ্বাভাবে হেতুং। অতি শাহল ইতাক্তং। তথাচ শ্রীবিষ্ণূপ্রাণে। ততন্তত্তাতি রূকেংপি বর্মকালে দিজোত্তম। প্রাকৃত্কালে ইবোড্তং নব শস্পং সমন্তত ইতি। দ্কার্মধ্য এব পাঠঃ। নজ্পাদাজ্ঞলচ্ ইতি স্বতেঃ॥ ৪॥

কুতত্তদাহ অগাধেতি। অগাধতোরত্বেন সদৈবোর্মীণামুদ্ধর স্থোতির হৈ চিতং। উর্মিভিরিতি নিমিত্তং পুলিনৈবিত্যুপাদানং তত্তকর দাং দ্বং স্নাক্তং পুরীবং মৃদ্ধস্যান্তস্যা ইত্যর্থ:। ভীষর্থং গৌরাদৌ পঠনীরং। শাহলিতমিতি আচারার্থ কিবন্তাভাবে নিষ্ঠা। অন্যতৈঃ। যথা। অগাধেত্যাদিকং পুলিনবিশেষণং। সমন্তত ইত্যস্য পরেণাধ্যঃ যত্র চ জীবৃন্ধাবনে স্ব্বিত্রাপীত্যর্থ:। হুদিনীনাং বাহ্ল্যাং॥ ৫॥

#### क्यमन र् ।

উর্নিভিরিতি নিমিত্তং॥ ৪॥

পুলিনৈরিভাপাদানং। দ্রবং সদার্ড্র পুরীষং মুদ্যভা স্তভাঃ শাৰ্ষলিতমিত্যাচারাথিকিবস্তাডাবে নিষ্ঠা ॥৫॥

## श्चीविधनाथहळावळी ।

সরিদাদীনামূর্ম্যো যতন্তেনেতি শৈতাং। কহলারাদীনাং রেণূন্ হর্জুং নিঃশব্দে নালক্ষ্যতয়। চোর্য্নিত্রং শীলং যুস্যেতি সৌগন্ধ্য নাল্যে দ্বস্তাপঃ। অন্যত্র নিদাঘো দাবানলভবস্তাপো ভ্রতি সোহত্র নাস্তীত্যাহ। অতিশাদ্দে অতিকোমলহ্রিতভ্গাকীর্ণে॥ ৪ ॥

অর্কভবতাপাভাবে পুর্নোকক্রমমণ্ডলমণ্ডিতথ্যের হেতৃবন্তি হেত্তরমপ্যাহ। অগাধতোষা হ্রদিনান্তাদাং তটম্পশিভিক্রিজিভিজ বং সদৈবার্জং পূরীষং পক্ষং যন্তান্তথাভূতায়া ভূবো রসং ন গৃহতীভাবয়ঃ। গৌরাদিখাং ভীষ্। রসং কীদৃশং সমস্ততঃ পদ্ধিবাঃ পূলিনৈঃ শাদ্দিতং শাদ্দলমুক্তীকৃতং। বিশ্বতো লুগিতি মতুপো লুক্॥ ৫॥

# স্মিধি রক্ষাওলে মণ্ডিত হইল॥ ৩॥

অপিচ, ঐ সময় সরিৎ,সারোবর এবং প্রস্ত্রবণ সকলের তরঙ্গে সঙ্গত হইয়া কমল কহলার ও উৎপল বেণুহ্রণপূর্বক প্রন বহ্মান হইল, অতএব স্থানসমূহ অত্যন্ত হরিদ্ধি তৃণে স্থাতিল না হইলেও অর্থাৎ উত্তপ্ত স্থানেও ব্রজবাসিদিণের উপর গ্রীষ্মকালীন দিনকর অথবা অনল জনিত সন্তাপ হইল না॥৪॥

হে রাজন্! যে হানের নদী সকলে অগাধ জুল এবং সেই সকল জলের তরঙ্গ তট্মপর্শ করিয়া চলিত হওয়াতে পুলিন দারা ভূমির পঙ্ক নিরস্তর দ্রব হইতেছিল, অতএব তিথাংশু সূর্য্যের কিরণ বিষবৎ উল্লণ হইয়াও যে হানে রভূমির রস এবং শাদ্ধভাব অর্থাৎ শীতলত্ব হরণ করিতে সমর্থ হয় নাই॥ ৫॥

বনং কুস্নিতং শ্রীময়দচ্চিত্রয়গিছিজং। গায়য়য়য়য় ভ্রময়ং কৃষ্ণৎ কোকিলসারসং॥
ক্রীড়িয়য়য়াগন্তৎ কুফো ভগবান্ বলসংষুতঃ। বেণুং বিরণয়ন্ গোলৈগোধনৈঃ সংর্তোহবিশং।
প্রালবহ স্তবক প্রথাতুক ত ভূষণাঃ। কৃষ্ণরামাদয়ো গোপা নন্তু যুর্ধুর্জপ্রঃ।
কৃষ্ণয়য় নৃত্যতঃ কেচিজ্লপ্রঃ কেচিদবাদয়ন্। বেণুপাণিদলৈঃ শ্লৈঃ প্রশাশংস্র্থাপরে।
গোপজাতিপ্রতিছিল্লা দেবা গোপালরপণং। ঈড়িরে কৃষ্ণরামঞ্চ নটা ইব নটং নৃপ॥ ৬॥

### डीधतकामी।

নৰভ=িত্রা মৃগা ছিলা=ত যদিন্ গায়ভো মুখুরা ভ্রমরা=ত যদিন্ কু**লভঃ কোকিলা সারসা=**ত যদিন্ ভছনমবিশং ॥ ৬ ॥

#### বৈষ্ণ বতোষণী।

পঞ্চকান্তবেব বনমিতি যুগাকং। শ্রীমথং স্বতঃ বিশেষতশ্চাহ কৃষ্ণমিত্যাদিনা কুষ্ণমিতং প্রফুল্লাশেষপূশ্ব্যাপ্তমিত্যাং। এবিং বিজ্ঞালন্দিন গৃহীভানামিপি ময়ুরাদীনাং পৃথগুক্তিবনার্জ, শ্রীণামিপি সম্বলনং বোধয়তি। জীড়িষ্যমাণঃ লীড়িষ্যানিক জীড়াবিশেষাপেকরা। যতঃ ক্লফঃ জগচিত্তাকর্ষকলীলঃ অতএব ভগবান্। বলদেবেন সমাগ্যুত ইতি বিশেষেণাক্তিরতা তেন প্রয়েজনবিশেষার্থং বিরণয়ন্ চিজ্রীড়িষানকোন তত্ত্বাহনেজ্য়া চ বিশেষতো বাদয়ন্ অতএব গোপেঃ গাব এব ধনানি তৈশ্চ সমাগৃতঃ। গোধনানামিপি গোপজ্রীভায়ামুপযুক্তমাং॥

গোপা ইতি গোপক্রীড়ারাং নিজাভীষ্টবং স্পষ্টয়ন্ তত্র চ রামক্রঝাদয় ইতি পরমবিত্রবাহিপি স্বস্য তদানীমনানির্বিশেষতয়া শ্রীবামক্রয়রো র্গোপক্রত্তা তয়োরপি তদাবেশাভিমানো সংমন্যমানতাদৃশক্রীড়ায়াঃ পরমাতিপরমানশম্মতং ঝঞিতবান্। অথ ত্রীলাবেশাদিক্ষেব ব্যল্পতি নন্তুরিত্যাদিনা ॥

তত্ত্ব বৈদেশিকরোরির নটবেশেন শ্রীদামসভায়াং সমাগতয়োঃ শ্রীকৃষ্ণরাময়োম্খ্যদেন প্রথমতঃ শ্রীকৃষ্ণস্য নৃত্যং বর্ণমতি শ্রীকৃষ্ণেতি দাল্যাং। অপরে শ্রীদামানরং সভাপত্ত্যং। অথ কাংস্যান সাধুসাধ্বিতি প্রশাশংস্থা। এবমন্যতোহিপি বিশিষ্টং তস্য নৃত্যকৌশর্বন

অথ শ্রীদামাদীনাং সভাপতিভয়া নিবিষ্টানামগ্রতঃ সমুপার স্থিতানন্যায়টবেশান্ প্রশংসকানপি গোপান প্রশংসনীয়শ্রীয়ফানি-বৈশিষ্টায় প্রশংসতি গোপেতি। দেবাঃ শ্রীক্লফোপাসনপটলাদৌ তত্ত্বপাস্ত্রেন প্রসিদ্ধা ইতি সমানমহিমবং ব্যঞ্জিতঃ। তহি কথং তালৃশমহিমব্দেন ন কৈশ্চিৎ প্রতীয়স্তে কথবা ভবস্তিঃ প্রতীয়স্তে তত্তার্ দেবা অপি গোপজাত্যৈর প্রতিক্ষরা গুণাদিভিস্ত স্পষ্টাঃ অবি-

### • क्यमसर्छः।

প্রশংসনীরমহিমদ্যোতনায় প্রশংসকান্ প্রশংসতি গোপেতি। গোপা: শ্রীক্রফোপাসনপটলাদে তদ্বপাসাত্ত্বন প্রণিদ্ধাং শ্রীদাস স্থামবস্থদামাদর:। ইতি সমানমহিম্তং ব্যক্তিং। তহি কথং কৈশ্চিস্তাদৃশমহিম্ভেন ন তে প্রতীয়ত্তে কথং বা ভব্দ্তি: প্রতীয়ত্তে তত্ত্বাহ। দেবা অপি পোপদ্ধাত্ত্যের প্রতিচ্ছন্না গুণাদিভিত্ত স্পটা:। নমু। তেয়াং গোপনাতিত্বং কুতন্তত্ত্বাহ গোপালকপিণমিতি। নিজা-

### **बि**विश्वनाथहक्कवर्छी ।

গোপা ইতি। রামস্যাপি গোপাতিমানগং। ক্লেণাসকৈ উকৈকপান্তবাদাগমাদিদু তথা প্রসিদ্ধা চ দেবা: কিন্তু গোপজাতা। ক্লেণাসকৈ উকৈকপান্তবাদাগমাদিদু তথা প্রসিদ্ধা চ দেবা: কিন্তু গোপজাতা। প্রতিছ্লা ইতি। তেখাং দেবানামপি গোপজাতিম্মিত্যগং। যথা। গোপজাতিমুক্কসংধ্যু মধ্য এব প্রতিছ্লা নরবেশেন

অপিচ, যে বন দর্বপ্রকার কুইনপরিপূর্ণ এবং অতিশয় শোভাযুক্ত, আর যেথানে মুগ ও বিহঙ্গণ বিচিত্র রব এবং অমর ও ময়রগণ ইমধ্র গীত আর কোকিল ও সারসগণ অব্যক্ত ধ্বনি করিতেছিল, সেই বনে ক্রীড়া করিবেন বলিয়া গোপ ও গোধনে পরিবৃত হইয়া ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ বলভদ্রের সহিত বেপুধানি করিতেই প্রবেশ করিলেন। হে রাজন্! র্শাবনে প্রবিত্ত ইয়া রামকৃষ্ণ প্রভৃতি সমস্ত গোপ নবীন পত্র, ময়ুরপুছে, স্তবক এবং মাল্য তথা গৈরিক ধাতুতে বিভ্ষিত ইয়া নৃত্য গীত এবং বাহুমুদ্দ করিয়া ক্রীড়া আরম্ভ করিলেন। যথন শ্রীকৃষ্ণ নৃত্য করেন তথন কতকগুলি গোপাল বাদ্য করে, কতিপয় বালক গান গায়, অপর গোপালেরা বংশী, করতল ও শৃঙ্গ বাজাইয়া প্রশংসা করে। হে নৃপ!

ভামণৈর্লজ্ঞানিঃ কেপেরাক্ষোটনবিকর্ষণৈঃ। চিক্রীড়ড় র্নিযুদ্ধেন কাকপক্ষধরো কচিৎ। কচিন্নত্তাৎস্থ চান্যের গায়কো বাদকো স্বরং। শশংসভূ মহারাজ সাধু সাধ্বিতি বাদিনো ॥ ৭॥ কচিন্নিস্থাঃ কচিৎ কুজ্ঞৈঃ কচামলকম্ষ্টিভিঃ। অস্পৃশ্যনেত্রবন্ধান্যৈঃ কচিমাৃগ থগেহয়া॥৮॥

### क्षिथ्रयामा ।

কাকপক্ষঃ চূড়াকরণাৎ প্রাক্তনাঃ কেশাঃ। প্রামণাদিতিঃ প্রকারৈর্নিযুদ্ধেন বাহযুদ্ধেন চিক্রীড়ডুঃ॥ ৭ ॥ কুল্ডিঃ কুন্তবুক্ষকোঃ অস্পৃশ্যং অস্পৃশ্যং নেত্রবন্ধণ তদাদৈন্দ্র্যাণাং থগানাঞ্চ চেইয়া॥ ৮॥

### বৈক্বতোৰণী।

বৈকিনাং যৎকিঞ্চিৎ সাধারণ্যেন প্রান্তি র্ডবিত নতু বিবেকিনাং প্রভাত তাদৃশেন তাদৃশনীলোপরিক্ষেন পরমগুণাবিদারেণ চ চমৎকারাজ্বিয় এব স্যাদিতি ভাব: । নহু । তেবাং গোপজাতিছমেব কুতস্তরাহ গোপালরপিণমিতি । নিত্যবোগে মন্ব্রিয়: । ততন্তদত্যস্তাভীইন্থ তস্য রূপস্য দর্শন্তিয়া তেবাং তদমূরপদ্মেবামূর্পমিতি ধ্বনিতং । এবং সমানরপবেবদ্ধ ব্যক্তং । সমানগুণদ্ধ ব্যন্তি নটা
ইবেতি । এবমন্যেদ্বি প্রশেষ্ ক্রেয়ং । সভঃ সর্ব্বধা তদেখাগ্যন্থাৎ দেবর্ষি ক্রীড়ন্বস্তি দেবা ইতিচ শ্লেবোজিং । হে নৃপেতি নরোত্তমডেন
ভবতৈবেদং ক্রায়তে এবেতি ভাবং ॥ ৬ ॥

অথ নৃত্যকোতুকানস্তরং কৃতং বৃহকোতৃকং বর্ণয়তি ভামণৈরিতি অন্যোন্যহত্তগ্রহণাদিনা ভামণে: লক্ষ্টন: অধোনিপাত্যা-রোহণৈ: ক্ষেণে: প্রতিলোমবিনোদনৈ: আন্দোটনৈ: কয়তলেন ভুজম্লাঘাতৈ: বিকর্ষণেরাক্রণে: নিযুহ্দন বাহ্যুদ্দন কাকপক্ষ: কেশগুন্দিতবেশীঅয়মিতি কেচিৎ ॥

অথ নিযুদ্ধ শ্রমানস্তরং কৌতুকেন শ্বরং নাট্য গুরুষমাণাভ্যাং গানাদিকমণি কুর্মন্ত্যাং ব্রীরামক্তমাভ্যাং প্রাণসামানানাং অন্যেষানানাং অন্যেষানাং কিনিয়া সাধাং চক্রত্য: এবং নির্ভরক্রীড়ারসাে দর্শিতঃ। মহারাজ হে রাজবর্গমধ্যে প্রীকৃষ্ণভক্তিবিশেবেণ প্রমশ্রেষ্ঠিভি ভবানেবেদং শ্রোতৃষ্ঠিভি ভাবঃ। এবং নৃত্যমিশ্রগানাহ্দারেণ ক্রমপ্রাপ্তং তদমিশ্রগানমপুষ্ট্মিভি প্রকরণাভিপ্রায়ঃ ॥ ৭॥

অন্যা অপি যুদ্ধাদি বিচিত্তলীলাঃ সংগৃহণতি কচিদিতি ত্রিকেণ। বিশ্বাদিভিঃ ক্বথা যাঃ ক্রীড়ান্তাভিন্চেরতুঃ এবং লোকসিদ্ধাভিরন্যা-ভিশ্ব ক্রীড়াভিন্টেরতুরিত্যবয়ঃ ॥ ৮॥

#### क्रमनवर्षः।

বোগে মন্বর্ধীয়ঃ। ততত্ত্বদত্যস্তাভীইবং তত্ত রূপতা দর্শয়িত। তেবাং ভদমুরূপুদং দর্শিতং ॥ ७ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ 🕻

#### এ বিশ্বনাধচক্রবর্তী।

ভব নারদাদয়ো ভক্তান্তলীলাম্বাদার্থমিত্যর্থঃ। গোপালুক্রপিণমিতি নিভ্যযোগে ইনিঃ॥ ७॥

আফোটনৈঃ ক্রতলেন ভুজ্মূলাঘাতেঃ। নিযুদ্ধেন বাহ্যুদ্ধেন। কাকপকাণ্চ্ ড়াক্রণাং প্রাক্তনাঃ কেশা ইতি স্থামিচরণাঃ। কেশ-গুল্ভিবেশীন্তম্মতি কেচিং। ক্লাপ্রলাধ্বক্রালকা ইত্যানো॥ १॥

কচিবিবৈরিতি। নিক্ষিণ্যমাণয়ে বিবফলয়ো: পরস্পরাঘাতৈ:। এবং কুজৈ: কুস্তবৃক্ষকলৈ:। অস্পাতি স্পর্শান্য অদিৎসাচিকীর্বাভ্যাং ক্রীড়া তক্ত স্পর্শকর্ত্ পর: স্পরিতিনোডি।
চেক্ পর: নচেৎ পরাজয়:। সর্বাক ক্লুপরাকরয়োম্বিলীবেকাদিরেব গ্লাহ:। থগমুগেহরেতি। থগাদ্যাকৃতিমভাং মিথোযুদ্ধকৃকিভাদিকং

দেবতা সকল গোপজাতির বেশে অবতীর্ণ হইয়াছিলেন, নটেরা যেমন নটের সেবা করে তাহার ন্যায়

সে যাহা হউক, কাকপক্ষ অর্থাৎ কেশগ্রবিত তিনটা বেণী ধারণ করিয়া বলরাফহরি ভাষণ, উলক্ষন, উৎক্ষেপণ, আক্ষোটন এবং আকর্ষণ ইত্যাদি বিবিধ কোতুক তথা বাহুযুদ্ধ করিয়া কোনস্থানে জীড়া করিলেন, কোথাও অন্যান্য গোপ বালক নৃত্যে প্রস্তুত হইলে আপনারা ছইজনে গায়ক ও বাদক হইয়া সাধুবাদ প্রদানপূর্বক তাহাদের প্রশংসা করিলেন ॥ ৭॥

কোথাও বিশ্বকল দারা কোথাও কুম্বকল দারা, কোথাও অস্পৃদ্যত্ব ও নেত্রবন্ধত ইত্যাদি ছল

### **डी** धत्रचामी

দর্রপ্রাবৈ: মণ্কপুরিভি:। তানোলিকরা দোলালবনেন। নৃপাণামিব লীলয়া॥ ৯॥ নদাঃ অন্যঃ তোণয়ঃ কুঞানি চ এবু॥ ১৯॥

চারমতো: সভো: তখনে তলিবেব বনে। তরোলিং বিয়া ॥ ১১॥

## বৈক্ষবতোষণী।

উপহাসকৈ হ'াস্যজনকৈ ব'চিআফুকরণাদিভি:। কচিদিতি বিয়াবর্তনীয়ং। নৃপচেটয়া গিরিশিলাসিংহাসনকৌম্মচ্চ্ এচামরাদি-গরিচ্ছদক্ষপাত্রপুরঃসরকাদিমধ্যা ॥ ৯ ॥

নদোহজয়ঃ জোণ্যশাজিসয়য়ঃ কাঠাগারেছব্বাহিন্যাং শৈলসদ্ধী চ যোৰিতি। স্লোপী ন স্থী মানতেদে জোণঃ কাকে কুপীপতৌ ইতি ত্রিকাওশেষাং। বনে শ্রীর্দ্ধাবনে কাননের ভদত্তর্গিতের কাম্যকবনাদির। তত্ত্ব ত্রোবিহারবেশবিশেষশোক্তঃ শ্রীহরিবংশে। চারমুস্থে বির্দ্ধানি গোধনানি ভভাননো। স্থীতশম্পগ্রয়়ঢ়ানি বীক্ষ্যমাণে বনানি চ। খেলয়স্থে প্রগায়তৌ বিচিষ্থে চ পাদপান্। নামভিব্যাহরপ্রে চ সবংসা গাঃ পরস্তপো। নির্বোগপাশৈরাসকৈঃ হৃদ্ধাভাং ভভসক্ষণো। বন্মালা কুলোয়দ্ধো বালশুলাবিবর্বভৌ। স্বর্ণাঞ্জনবর্ণাভাাং অন্যোন্যসদৃশাশ্বরে। মহেক্রায়ুধসংসক্রো কৃক্ষাণো বন্যবেশধ্রাযুভাবিতি॥ ১০॥

এবনৈশ্ব্যবিশেষগর্জাং মধুরমধুরাং লৌকিকীং লীলামুক্ত্বধুনা জীবলদেবদারা বিহিতাং প্রকটেশ্ব্যাং অলৌকিকীমাহ পশ্নিত্যা-দিনা। যঃ কোহপি গোপন্তদিনে গৃহে ভিষ্ঠন তক্ষপীতার্থ:॥

দাশাহ হিতি প্রলম্বকচান্রেত্যাদিনা বহুকুলকদনে মুখ্যতন্ত্রাদৌ নির্দিষ্টস্য প্রলম্বস্য বধেন বহুকুলছিতবিশেষাপেক্ষা । তছেদনে হেতু: সর্বদর্শন: সর্বজ্ঞ: যতো ভগবান । বিচিত্তরন্ বক্যমাণপ্রকারেণ বিচারন্ত্রন্য লগ্যং স্থাং কর্ম চেষ্টামিতি যাবং ॥ ১১ ॥

#### ক্রমসন্ধর্ড:।

জোণ্যশ্চাজিসন্ধয়:। হ্রসাস্তরং বিচার্য্যং। কাননেরু অন্তর্বনেরু॥ ১•॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥

## विषनाथठक वर्षी।

কদাচিৎ প্রাবণগুরুত্তীরামারভ্য **গুলোলিকরা দো**ালোলনেন নৃপচেষ্টরা দানঘট্টপ্রদেশে নৃপস্যেব চেষ্টা ঘট্টকরজিম্বকরা এজবালা-নিরোধস্তরা স্রোণ্যকালিসক্ষর: ॥ ৮ ॥ ১ ০ ॥ ১ ০ ॥

চারয়তোঃ সতোঃ গোপরপী যঃ কোহপি গোপত্তদিনে কিঞ্চিৎ কুত্যার্থং গৃহে স্থিতক্তক্রপধারী তারো জিহীর্যা । বিচিত্তরন্ অনেনৈব প্রকারেশেমং বাতরিব্যাধীতি চিত্তরা নিশ্চিয়ন্ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥

করিয়া কেলি করিলেন, কোথাও বা মৃগপক্ষ্যাদির চেফী করত ক্রীড়ায় মুগ্ন হইলেন॥ ৮ ॥

কোথাও মণ্ডুকের ন্যায় উল্লেফ্ন, কোথাও নানাবিধ হাস্যপরিহাস,কোথাও দোলাবলম্বন, কোথাও নরপতিদিগের তুল্য লীলা ধারা ধেলা করিলেন ॥ ৯ ॥

তে রাজন্! এই প্রকারে রামকৃষ্ণ ছইজনে লোকপ্রসিদ্ধ বিবিধ ক্রীড়া করত, রন্দাবনে নদী, পর্বত, গহরে তথা কুঞ্জসমূহে এবং ক্রীড়াকাননে ও সরোবরে ক্রীড়া করিয়াছিলেন ॥ ১০ ॥

এক দিবস সোপগণের সহিত ছুইজনে পশুচারণ করিতেছেন, জীমত সময়ে প্রলম্বর গোপরপী হুইরা তাঁহাদের ছুই জনকে হরণ করিবার মানসে ঐ বনে আগমন করিল, যদিও ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ ঐ অহুরের অভিপ্রায় জানিতে পারিলেন তথাচ তাহার বিনাশবিষয়ে সকল করিয়া তাহাকে স্থা বলিয়া গ্রহণ করিলেন ॥ ১১ ॥ তত্তোপহুয় গোপালান্ রুক্ষঃ প্রাহ বিহারবিং। হে গোপা বিহরিষ্যামো ছন্দীস্থূয় যথাযথং॥১২ ভত্ত চক্রুঃ পরিবৃঢ়ো গোপা রামজনার্দনো। কুক্ষণজ্ঞটিনঃ কেচিদাদন্ রাম্য্য চাপরে। আচেক বিবিধাঃ ক্রীড়া বাহ্যবাহকলক্ষণাঃ। যত্তারোহস্তি জেতারো বহস্তি চ পরাজিতাঃ॥১০॥ বহস্তো বাহ্যমানাশ্চ চারয়স্তশ্চ গোধনং। ভাণ্ডীরকং নাম বটং জগ্মুঃ কৃষ্ণপুরোগমাঃ॥

### শ্রীধরস্বামী

নথাযথং বয়েবিলাদ্যমূরপং ছন্টীভূয ॥ ১২ ॥ পরিবৃঢ়ৌ নায়কৌ তত্র কেচন ক্লফসব্দ ট্রিনঃ ক্লফপক্ষীয়াঃ ॥ ১৩ ॥ বাহ্যমানাঃ পুঠেনোহ্যমানাঃ ॥ ১৪ ॥

### বৈষ্ণবুতোষণী।

ওত্র তম্বধে নিমিত্তে প্রকর্ষেণাই প্রলম্বস্যাপি মনোরমন্তাৎ বিহারবিৎ ষত্ত: স এব তত্র সর্ব্ধতোই উক্ত ইত্যর্থ: ॥ ১২ ॥
ব্যাপা ইতি সভ্যাপি সংগ্রমামান্যে বর্গভেদেন তয়ো: পৃথক্ পৃথক্ তদ্বিশেষবতাং তেষামসংক্ষাচাতিশরবং জ্বীভারসায় বৈপরীত্যেন
পারিব্রটো চকু:। এবনেষ চ তম্মোমিথি: প্রণমোহিপি বিবৃত্ত: স্যাং। যথা হরিবংশোক্তজ্বজ্বীভায়াং স্বস্থতা: প্রীবলরামপক্ষে তংস্তাশ্চাত্মপক্ষে তেন হাতাঃ ততঃ প্রীদামাদয়ো রামসক্ষা ট্রনো জাতাঃ। রামেতি রমণাভিপ্রায়েণ। জনার্দনেতি তত্তৎক্রীভাতিঃ
বননোর্থপূর্কত্যা সংব্রিগাচ্যমানস্থাভিপ্রায়েণ॥

বিবিধা: হরিণা ক্রীড়নাখ্যাদয়:। তথাচ বিষ্ণুপুরাণে। হবিণা ক্রীড়নং নাম বালক্রীড়নকং ততঃ। প্রক্রীড়িতাহিতে সর্বেছী

বাহ্যমানা উহ্নমানাঃ স্করাক্ষ্টাঃ। তাগুনিকমিতি সংজ্ঞায়াং কন্। নাম প্রসিদ্ধৌ। সচ বর্ণিতঃ প্রীহরিবংশে। দদর্শ বিপুলোদগ্রশাথিনং পাথিনাং নবং। বিতং ধরণ্টাং মেঘাভং নিবিড়ং দলসঞ্চলৈঃ। গগনাদ্ধৌশিতাকারং পবনাভোগকারিণঃ। নীলন্চিত্রাঙ্গবর্ধেশ্চ দেবিতং বহুডিঃ ধরণঃ। ফলৈঃ প্রবালেন্দ ঘনৈঃ সেক্সচাপধনোগমং। ভবনাকারবিটপং লভাপুশস্ক্ষযিত্তং। বিশালম্লাবনতং পবনাজ্যাদ্ধারিণং। আধিপত্যমিবান্যেয়াং তদ্য দেশদ্য শাথিনাং। কুর্বাণং ভতকর্মাণং তিরোবর্ধমনাতপং। ন্যগ্রোধং পর্বতাগ্রাভং ভাপিরং নাম নামত ইতি। তত্র পমনং নিদাবকীভৌচিত্যাৎ॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

वास्माना উस्मानाः ॥ ১८ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ २० ॥ ३०॥

### শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবৰ্তী।

भविवृत्ति नावत्को कृष्णमा मञ्बद्धा प्थलकाजाः ॥

কিন্তু বাহ্বাহকলক্ষণাঃ। অভার্থং বির্ণোতি বত্তেতি। পিহিতফলাদিজ্ঞানবদ্ধো জেতারং আরোহন্তি তদজ্ঞানবন্তঃ প্রান্তিতা বহুন্তি॥ ১৩॥

ভা গীরকং বটং জগ্মুবিতি স এব বটো হবরোহণছানক্ষিত ইত্যর্থ:। তবৈবারোহণছলমণি তৎসমীপবর্তি জ্ঞেরং॥ ১৪॥

তদনস্তর বিহারবিজ্ঞ ঞ্রিক্ষ সেই স্থানে গোপালকদিগকে স্বাহ্বান করিয়া এই বাক্য বলিলেন, আহে গোপগণ! আইদ আমরা বয়স্ও বল ইত্যাদির সনুসারে দ্দীস্ত(মুগা) হইয়া ক্রীড়া করি ॥১২

এতৎ প্রবণে গোপগণ সেই স্থানেই রামক্ষণকে নায়ক স্বর্ধাৎ ক্রীড়ার অধ্যক্ষ করিল, পরে কতক গুলি বালক ক্ষেত্র পক্ষ হইল এবং অন্য কতকগুলি বালক বলদেবের পক্ষ আপ্রয় করিল। তাহার পর বাহ্য ও বাহক রূপ বিবিধ ক্রীড়া আরম্ভ হইল। হে রাজন্। সেই দকল ক্রীড়ায় যাহারা জয়ী হইল, তাহারা বাহ্য হইয়া এক ২ জনকে বাহক করিয়া তত্ত্পরি আরোহণ, আর পরাজিত ব্যক্তিরা বাহক হইয়া রহন করিতে লাগিল॥ ১০॥

এই প্রকারে প্রীকৃষ্ণাদি গোপালগণ পরস্পার বাহক এবং বাছ হইয়া গোচারণ করিতে২ ভাতীরক

রামসজ্ঞাষ্ট্রনো যহি শ্রীদামর্ষভাদয়:। ক্রীড়ায়াং জয়িনস্তাংস্তানুছঃ কৃষ্ণাদয়ে। নৃপ ॥ উবাহ কৃষ্ণো ভগবান্ শ্রীদামানং পরাজিতঃ। রুষভং ভদ্রসেনশ্চ প্রলম্বো রোহিণীস্কৃতং ॥ ১৪॥ অবিষহং মন্যমানঃ কৃষ্ণং দানবপুঙ্গবং। বহন্ জ্রুতবং প্রাগাদবরোহণতঃ পরং॥ ১৫॥ তমুগ্রহন্ ধরণিধরেক্রগোরবং মহাস্করো বিগতর্যো নিজং বপুং।

## चीधनवामी।

ক্ষুদৃষ্টিবঞ্দায় অবকৃষ্তেহস্মিলিতি অবরোহ্ণং মর্য্যানা ততঃ পরং দূরমগাং ॥ ১৫ ॥

ধবণিধরেক্রবং গৌরবং যদ্য তং নি**জং আত্মরং বপুরাত্তিতঃ। পুরট**পরিচ্ছদ: স্বর্ণালভাব:। তড়িদ্যুমান্ বিহাদীপ্রি**মান্।** ইত্যাক্ষাবোপমা। উভুপতিবাড়িতি রামোপমা। উভুপতিং বহতীতি উভ্পতিবাট্। যদি যথোচিতত্থানের তিরা বিহাতে ভবিষ

## বৈষ্ণবতোষণী।

पर्वि (य य श्रीनासत्वजानयः क्रीज़ांबाः अधिता वजूत्खरि जाः खान् कृशानय **উ**हत्रिजाययः ॥

ভগবানিতি মুদ্মাকং যো ভগবান্ সোহত্মাকং ব্ৰুবাসিভিঃ প্রাঞ্জিত ইতি নর্ম চ ব্যঞ্জিতং। রোহিণ্যাঃ স্ত্মিতি তেন ডংগ্রভাবা-জ্ঞানস্যাপেক্ষ্যা ॥ ১৪॥

নহ তথাপি কংসদা মুখ্যানিং শ্রীক্লকং হর্তুং কথমরং নাচেইত ইত্যাহ অবিসন্থমিতি। শ্রীরাম্বারা নার্যানুং শ্রীক্লেন তভেন্ত আর্ত্য বতেজস আবিস্কৃত্য। অতএব ক্লুফ্পকীরো ভূষা বলদেবং বহন্ সন্ যতো দানবের পুস্বর বলাদিনাতিশ্রেষ্ঠ অবরোধণতঃ ভাতীরস্করণে তথাচ শ্রীবিস্পৃবাণে। তে বাহয়স্তবন্যানাং ভাতীরস্করমেতা বৈ। পুননিবর্তিতাঃ সর্বে যে যে গুর্গং প্রাজিতাঃ। স্কর্ষ্প্র স্কর্মেন শীল্লমুংক্লিপ্য দানবঃ। ন তত্বো প্রজ্ঞানিব স্বত্ত ইব বারিদ ইতি॥ ১৫॥

ধরণিধবেক্তঃ স্থানকক্তমাদপি গৌরবং ভারো ষস্য শীমাতিক্রনে ভাতে বিহস্য বিশ্বিতা বিশ্বয় চ ক্রমণ ভাগা। চবেকপ্রকটনাং উং উচ্চৈ: ক্লব্ধে বংরিতার্থ: স মহাস্থরোহপি অতএব নিজমান্ত্রং বপ্রান্থিত:। তথাচ তত্ত্বৈব। ক্রমহন্ রোহিশের্য্য স ভাবং দানবো

#### श्रीविद्यनाथठकवर्ती।

কৃষ্ণবিষ্যু মন্যান ইত্যত এৰ রামং হর্মনাঃ কৃষ্ণকীরো হত্দিতি ভাবঃ। স্পাক্ষতে হরিনিভানবাহণং ম্যানিস্ফাং। কৃষ্ণবৃত্তিব্যানায় ভতঃ প্রমণি প্রাগাং॥ ১৫॥

তং উংকটবলতরৈব বহন্। যতো ধরনিধরেক্স: ক্ষমেক্স: তবং গোরবং নদ্য তং। তিয়া সীমাভিবিক্সগ্রন্দর্শনেন বিশ্বিত্য কুলাবাধিক্য প্রকটনাব। ততক বাদুম্বামর্থাদেব বিগতবেগঃ। ততক তেন বপুনা ক্ষম্পবাক্ষ্মং ক্ষমাধ্যাদের বিগতবেগঃ। ততক তেন বপুনা ক্ষম্পবাক্ষ্মং ক্ষমাধ্যাদের বিশ্বিত্য রাহিতঃ বভৌ পুবটপরিজ্বং ক্ষর্পাক্ষারবান্ অব্বত্তিজ্বানান্ উত্পতিং বহতীতি মঃ। ক্ষমাক্ষ্মাধ্য উপনা ক্র্যান্ত্রানান্ত ক্ষমান্ত ক্ষাক্ষ্মান্ত বন্দলিধানে গিয়া উপনীত হইলেন। হে রাজন। বলদেবের পক্ষায় প্রদিষ্য ও রুষভাদি বালকগণ যথন ক্রীভায় জন্মী হইত তথন শ্রিক্ষ্ প্রভৃতি গোপালগণ তাহুদিগকে পুঠে করিয়া বহন ক্রিতেন। একবার ভগবান্ শ্রিক্ষ্ণ প্রাজিক্ত হইয়া শ্রিদামকে এবং ভদ্মেন ব্যভকে আর প্রাল্ভান্ত্র

এই সময় দানববর প্রলম্ব শ্রীকৃষ্ণকে স্বদহ্য মনে করিয়া তাঁছার দৃষ্টি পরিহার বাসনায় ( শ্রীকৃষ্ণ যাহাতে স্বামাকে দেখিতেও না পায়েন এই জ্ঞানে ) বলদেবকে লইয়া দূরে গমন করিল। ১৫।

রোহিণীনন্দনকে পৃঠে করিয়া বহন করিতেছিল। ১৪ ।

হে রাজন্। বলভদ্র শ্বমেরুপর্বতিসদৃশ অতিশয় গুরু, চাঁহাকে বহন করাতে মহাস্থর প্রলম্বের শের বিগত হইল। অতএব সে খীয় আস্থারিক কলেবর অবলমন করিল এবং স্থানে অলঙ্গত হইনা, মদি মধোচিত স্থানে স্থিনবিত্যুৎ ও উপরে উড়ুপতি চন্দ্র থাকেন তাহ। সুইলে বারিধরের সন্দ্রপ শোভা স আস্থিতঃ পুরটপরিচ্ছদো বভৌ তড়িদ্যুমানুড়ুপতিবাড়িবাসুদঃ ॥ ১৬ ॥
নিরীক্ষ্য তরপুরলমন্বরে চরৎ প্রদীপ্ত দৃগ্তুকুটিতটোগ্রদং ট্রকং।
জলচ্ছিখং কটককিরীটকুগুলজিষাদুতং হলধর ঈষদত্রসং ॥ ১৭ ॥
অথাগতস্মৃতিরভয়ো রিপুং বলো বিহায় সার্থমিব হরস্তমাত্মনঃ।
রুষাহনচ্ছিরদি দৃঢ়েন মুষ্টিনা স্থরাধিপো গিরিমিব বজ্ররহংসা॥ ১৮ ॥

### গ্রীধরস্বামী

উপরি চোড়ুপতিস্তদা দোহমুদো যথা ভাতি তম্বভাবিত্যর্থ:॥ ১৬॥

অলং অতিবেগেন প্ৰদীপ্তে দৃশৌ যশ্মিন্ তৎ ক্ৰক্টিতটসংলগ্লা উগ্ৰা দংষ্টা যশ্মিন্ তৎ প্ৰদীপ্তা দৃক্ ক্কৃটিতটং যশ্মিন্ উপ্তা দংষ্টা যশ্মিন্ তক্ক তচ্চেতি বা। জলস্কাঃ শিখাঃ কেশা যশ্মিন্ তৎ ॥ ১৭ ॥

স্বাগতস্থতিরভয় ইব। আত্মনঃ দার্থং গোপসমূহং বিহায় হরস্তং রিপুং অহনং। অথবা বিহায়দা আকাশমার্গেণ আত্মনঃ প্রাপ্তং অর্থমিব হরস্তং। বক্তরহংদা বক্তবেগেন মৃষ্টিনা॥ ১৮॥

## देवकवरजावनी।

ভম:। বরুধে স্মহাকায়: প্রার্থীব বলাহক ইতি॥ ১৬॥

ঈবদত্রসং বাল্যক্রীড়াবেশেনেতি পূর্ব্ব পূর্ব্ববং॥ ১৭॥

অথানস্তরমিতি কিমরং মাহুবো ভাবো ব্যক্তমেবাবলখ্যতে। সর্কাশ্বন্ সর্ক্ওহানাং গুহুগুহুাবুনা হুরেত্যাদিকাৎ ঐতিক্পুরা-পাছ্যকাতং প্রতি শ্রীকৃষ্ণস্য বচনাৎ সদ্য এবাগতা স্তি দৈ ত্যিবধার্থনিক্সাবতারপ্রয়োজনস্মরণং যুস্য সং। বলো মৃষ্টিনা রিপুমহনৎ মহন্কং কেন ক্ষিব স্বরাধিপো বক্সবহংসা গিরিমিব ॥ ১৮॥

#### श्रीविधनाषहकवर्ती।

তড়িদ্যুতিঃ বনদেবস্যোজুপতিঃ॥ ১৬॥

অলমতিবেগেন প্রদীপ্তে দৃশৌ যত্মিন্ ক্রকুটিতটদংলগা উগ্রা দংখ্রী যত্মিংস্তচ্চ তচ্চ তৎ। বপুনিরীক্ষ্য ঈরদত্রসদিতি দাকাং প্রমাত্মনাথিতি তদ্য তাদোহত্বং তদৈখব্যজ্ঞানস্য ক্ষেনের অযোগমান্ত্র্যা আবরণাং। তত্তামূদাকারমস্করবপুরেতত্ত্বা। বর্দ্ধতাং যথা মদগ্রজ বপুশ্চক্ষপ্রদেশ এবোত্তিটেদিতি ক্ষণ্য কৌতুক দিদ্দৈর কারণং তদৈখব্যজ্ঞানানাবরণেত্ অস্করবপুং প্রাকট্যারস্ত এব নায়ং। গোপঃ কিন্তস্ব এবেতি বিছ্বা বলদেবেন সদ্যক্তমধ্য তৎ কৌতুকং ন সিন্ধোদিতি ক্রেয়ং॥ ১৭ ॥

লকাভীষ্ট: ক্রঞ্চ: সাগ্রজে বিভাতি সতি তত্র প্নরৈশ্যাজ্ঞানং সহসৈবার্পরামাসেত্যাহ অথ আগত শ্বতিরিতি কিমরং মানুষো ভাবো ব্যক্তমেবাবলম্বাতে সর্বায়ন্ সর্বপ্রহানাং গুহুগুহুগুরানা হয়েতি বিষ্ণুপুরাণোক্তক্ক্ষবাক্যাল্লকনিক্রৈশ্যাজ্ঞান:। বিহারসা আকাশ-মার্গেন। আজুন: প্রাপ্তমর্থং ধনং হরস্তমিব রিপুং মৃষ্টিনা অহনং। ক: কেন ক্মিব স্থ্রাধিপো ব্যক্তরংহ্সা গিরিমিব॥ ১৮॥

হয় তদ্ধপ শোভা পাইতে লাগিল॥ ১৬॥

তাহার দৃষ্টি সমধিক দীপ্তি<sup>4</sup>ালিনী হইয়া উপ্রদংখ্রা ও ক্রক্টিতটে সংলগ্না হইল, আর মস্তকের কেশ-কলাপ জ্বন্ড অনলশিখার সদৃশ্দীপ্তি পাইতে থাকিল, বিশেষতঃ কিরীট এবং কুগুলাদি-ভূষণের জ্যোতিতে অন্তুত হ্যাতিমান্ হইয়া উঠিল। জ্বতএব ঐ অম্বরচারি কলেবর অবলোকন করিয়া হলধর স্বাধ এক্ত অর্থাৎ কিঞ্ছিৎ ভীত হইলেন॥ ১৭॥ •

পরস্তা, তৎপরেই তাহার স্মৃতি অপগত হইল, অতএব সভয় হইয়া সমভিব্যাহারি গোপগণকে পরিত্যাগপূর্বক আত্মাপহারি সেই রিপুর মস্তকে ক্রোধে এমনই দৃঢ়তর মুষ্টিপ্রহার আরম্ভ করিলেন, যেমন দেবরাজ ইক্ত বক্তবেগ মুষ্টি দারা পর্বতোপরি আঘাত করিয়াছিলেন ॥১৮॥

স আহতঃ দপদি বিশীণ্মস্তকো মুধাৰমন্ধিরমপক্ষতোহস্তরঃ।
মহারবং ব্যন্তরপতৎ সমীরয়ন্ গিরির্যথা মঘবত আয়ুধাহতঃ।

দৃষ্ট্ব। প্রলম্বং নিহতং বলেন বলশালিনা। গোপাঃ স্থবিমিতা আসন্ সাধ্ সাধ্বিতি বাদিনঃ ॥১৯ আশিবোহভিগ্ণস্তত্বং প্রশশংস্থ স্তদ্ধ্বং। প্রত্যাগতমিবালিদ্য প্রেমবিহ্বলচেতসঃ।

পাপে প্রলম্বে নিহতে দেবাঃ প্রমনির্কাঃ। অভ্যবর্ষন্ বলং মাল্য়ঃ শশংস্থঃ সাধুসাধ্বিতি ॥২৫ ॥ \* ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে প্রলম্ব-বংগা নামান্টাদশোহধ্যায়ঃ॥ \* ॥ ১৮॥ \* ॥

ञिक्तवामी।

অপস্ত: পতস্তি: মহাববং সমীরয়ন্॥ ১৯॥ তদহ'বং প্রশংসাহ'ং॥ ২০॥

॥ \* ॥ टेकि मन्य रहोमनः ॥ • ॥

देवस्थवरकावनी ।

অপন্ত ইতি অপনার ব্যাধিনেবাতিব্যাকুলঃ দল্লিত্যর্থ: ॥

বলশালিনেতি তংগ্রন্থতিবলবিশেষাভিত্যক্ষে:। তথাচ শ্রীহরিবংশে। বলস্ক বলদেৰ্স্য তদা ভূবি জনা বিহং। প্রলম্বে নিহতে নৈত্যে দেবৈরপি হ্রাসদ ইতি। স্থবিশ্বিতাঃ সস্কঃ ভৎকপটগোপবেশাদিনা॥ ১৯॥

আশিৰ ইখং চিরং সামুদ্ধ: অথং বিহরমুদ্ধান্ পাহীত্যাদি প্রকারা:। অভি অভিত: তত্ত্ত ভত্ত সর্বাত্তিব হৈতু: প্রেমেতি ॥

ন কেবলং তএব সম্বন্ধী বভূব্ং দেবা অপি প্রমানন্দং প্রাপ্তা ইত্যাহ পাপ ইতি। প্রমন্ত্রে অগহণজাবক ইত্যথা। নিতবাং হতে অপুনরার্ত্তিমূক্তিপ্রাপ্তা। তথাচ দিতীয়ন্ধনে। যে চ প্রলম্ব ধর দহর্ত্তি কেশ্যরিষ্ঠ মন্ত্রেভ কংস ববনাং কুজ পৌ গুলাদ্যা:। অন্য চ শাব কপি বন্ধন দত্তবক্ত সপ্তোক্ষ সম্বন্ধ বিদ্রপ ক্ষিম্প্যা:। যে বা মৃধে সমিতিশালিন আত্তাপাং কাষোজ্ঞ মংস্য কুক্ত ক্ষম্ম কেবমাদ্যা:। যাস্যস্তাদর্শনমলং বলপার্থভীম ব্যাজাহ্বয়েন হরিণা নিলম্বং তদীয়্মিতি। অত্ত কেচিদ্মলদর্শনো প্রক্ষান্ত্র্যাদি কেচিত্তিদ্বিল্যমিতি বিবেচনীয়ং॥ ২০॥

n 🕶 ॥ ইতি শ্রীবৈষ্ণবতোষণ্যাং দশ্মটিপ্পন্যামপ্রাদশ: ॥ 🕶 ॥

ক্রেমসন্সর্ভঃ।

॥ 🛊 ॥ ইতি ক্রমসন্দর্ভে দশমেহপ্তাদশঃ ॥ 🛊 ॥

এবিশ্বনাথচক্রবারী।

অপস্ত: গতম্তি: অপসারবাধিগ্রন্থ ইবেত্যর্থ:। মহারবং স্মীরলন্॥ ১৯॥ তদহ'ণং প্রশংসাহ':॥ ২•॥

॥ \* ॥ ইতি সারার্থদিনিরাং হবিণ্যাং ভকচেতসাং। দশমেইটাদশোহধ্যারঃ সক্তঃ সক্তঃ সতাং॥ \* ॥

হে রাজন্ ! আহত হইবামাত্র তৎক্ষণাৎ ঐ অস্ত্র বিশীর্ণশিরা হইল এবং স্মৃতি অপগত হওয়াতে শোণিত বমন করিতে ২ চীৎকার করিয়া প্রাণ বিয়োগানন্তর, বেমন দ্বেরাজের বজ্রে আহত হইয়া পর্বত পতিত হয় তজ্ঞাপে পতিত হইল। যাহা হউক, বলশালি বলদেবকর্তৃক প্রলম্ব নিহত হইলে গোপগণ তাহা দেখিয়া সাধুবাদ করত যারপর নাই আশ্চর্যান্বিত হইল ॥ ১৯ ॥

এবং স্থাশীর্কাদবাক্য উচ্চারণ করিতে ২ প্রশংসার্হ ঐ মহাস্থার যথেক প্রতিষ্ঠা করিতে লাগিল।
স্থান্ধর পুনঃ প্রত্যাগত ব্যক্তির ন্যায় তাঁহাকে পুনরায় প্রাপ্ত হইয়া আলিঙ্গনপূর্কক প্রেনবংশ
বিহলচিত্ত হইয়া রহিল, হে রাজন্! পাপাত্মা প্রলম্থ নিপতিত হইলে দেবগণও পরম স্থাহ ইয়া
বলদেবের উপর মাল্যবর্ষণ করিলেন এবং সাধু ২ বলিয়া বার্ম্বার প্রশংসা করিতে লাগিলেন॥ ২০॥
॥ ০॥ ইতি দশ্যে স্কেট্র্নেশ ॥ ০॥

বাদরায়ণিরুবাচ॥

ক্রীড়াসক্তের গোপের তলাবো দ্রচারিণীঃ। সৈরং চরস্ত্যো বিবিশুস্তৃণলোভেন গহরে:॥১॥ অজা গাবো মহিষ্যশ্চ নির্বিশক্ষ্যো বনাদনং। ঈষিকাটবীং নিবিবিশুঃ ক্রন্দস্ত্যো দাবতর্ষিতাঃ॥২ তেহপশ্যন্তঃ পশূন্ গোপাঃ কৃষ্ণরামাদয়স্তদা। জাতাসুতাপা ন বিভূবি চিশ্বন্তো গবাং গতিং॥৩

### भिगवत्रामी।

ভিনবিংশে নিবিইজ গোলগোকুলযচুচ্ছা। সুঞ্বিগ্নরণাথে ররকজনিপানতঃ॥ ० ॥ দূবচারিণীঃ দূরচারিণ্যঃ॥ ১ ॥

বনাঘনাপ্তরং নির্বিশত্যো দাবেন তর্ষিতাস্থ্যিতাঃ ক্রন্সস্তাঃ ঈ্ষিকটিবীং অত্যচ্ছিত্রঘনত্পবিশেষারণ্যং নিবিবিশুঃ ॥ ২ ॥ কুফুর্কাসৌ আদী যেযাং তে নতু তৌ॥ ৩॥

### বৈষ্ণবত্তোষণী :

প্রদাসায়োকি কর্মেংপ্রালী কিকীনেবান্যাং লীলাং ক্রমপ্রাপ্তানেবাহ ক্রীড়েত্যাদিনা। তেবাং বা তা অসংখ্যা গাব:। সমাসাস্তবাভাব আর্থ:। গহরঃ হুর্গমবনং তৃণলোভেনেতি প্রীগোকুলানন্দকর্ত্ত্বসান্দাচারপাবেশ:। ততন্তবোভততনেতি জ্রেয়ং। যজ্জীবিতস্ত নিধিলং ভগবান্ মুকুন্দ ইত্যাদৌ তথা প্রসিদ্ধে:। প্রীর্নাবনে যত্ত কুর্লাপি মুকুর্জমাত্রেলাদরপূর্ণন্য নাক্যম্বাচ্চ॥ > ॥

ন কেবলং গাব এবান্যেংশি সর্ব্বে গশব ইত্যক্তপোষন্যায়েনাহ জন্ধা ইতি অজ্ঞানীনাং গমনে ধ্বাপূর্ব্বং শৈঘাপেকরা তৎক্রমেন নির্দেশঃ। ঈষিকাটনীং প্রায়োষসুনাতীরপরিত্যক্ততদূরবর্ত্তি ক্লকনৈকতলাং। অতএব দাবেন অগ্নিসদৃশেন গ্রীমকালীনতাপেন তর্ষিতাঃ তৃষং প্রাণিতাঃ অতএব ক্রন্বন্তো বভূবুঃ॥ ২॥

ক্ষতি তৈ ব্যাখ্যাত্মেৰ তথাপি তয়ে: সাক্ষাৰ্ভনানয়োরপি গোপানাং প্রদর্শনাদিকং তয়ে: কৌতুকপরভরেতি জ্ঞেরং।
যথা। ক্লঞ্জামৌ আদৌ বর্ত্তেে ষেধামিতি উভাবপি বনে ক্লো বিচিকার সমস্তত ইতিবৃদ্ধবাদিক্ষেংময়লীলাবেশপক্ষে তদ্ধুৰস্থিজ্ঞানঃ॥৩॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:

इक्कामान्य रेंडि जन्न नमःविद्यानत्त्वन नीमात्वमः॥ १॥ २॥ ०॥ ४॥ ०॥

### ত্ৰীবিশ্বনাধচক্ৰবৰ্তী।

উনবিংশে মুস্তিতাকান্ মুঞ্টিব্যাং দ্বানলাং। স্কন্ তাভীয়মাপ্য স্থান্ মুক্তাকান্ ব্যুধান্রিঃ ॥ • ॥ তত্তদন্তরং দুর্চারিণীঃ দুর্চারিণাঃ ॥ > ॥

ঈষিকাণাং শরাথ্যতৃণবিশেষাণামটবীং। দাবেন গ্রীম্ন স্থ্যাতপোপতাপেন। ছর্বিতাঃ ভৃষ্ণাং প্রাণিতাঃ ॥ ২ ॥ জাতামুতাপা ন বিহু ন বিবিহঃ। গোবিষয়ক প্রেইয়বাবৃত জ্ঞানাঃ॥ ৩॥

উনবিংশতি অধ্যায়ে শ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক মুঞ্জারণ্যে প্রবিক্ত গোপ ও গোকুলদিগকে অরণ্যায়ি হইতে তৎপান দার। রক্ষাকরণ বর্ণন ॥

শুকদেব কহিলেন রাজন্! গোপাল সকল ক্রীড়াসক্ত হইয়া থাকিলে তাহাদের গো সকল দূরে গিয়া চরিতে আরম্ভ করিল এবং স্বেচ্ছাক্রমে চরিতে ২ তৃণলোভে গহরর মধ্যে প্রবিষ্ট হইল॥ ১॥

অজা, গাজী ও মহিধীগণ এক বন হইতে অন্য বনে গমন করিয়া তৃণাহার করিতেছিল, হঠাৎ বনাগ্রি তাপে সন্তাপিত ও তৃষিত হওয়াতে চীৎকার করিতে ২ ঈিষ্কাট্বী মধ্যে নিবিই হইল ॥ ২ ॥

এ দিকে রামকৃষ্ণ প্রস্থৃতি গোপ বালকগণ পশুদিগকে দেখিতে না পাইয়া সমধিক সন্ততাপিত হইলেন, যে হেছু নানা প্রকারে অন্বেষণ করিয়াও সে সকল কোথায় গেল, জানিতে পারিলেন না ॥৩॥

ত্ণৈন্তংখুনদচ্ছিনৈর্গোপ্পদৈরক্ষিতৈর্গবাং। সার্গমন্বগমন্ দর্কেন ফা জীব্যা বিচেতসং॥ ৪॥
মৃঞ্জাটব্যাং ভ্রাক্টমার্গং ক্রন্দমানং স্বগোধনং। সম্প্রাপ্য ত্বিতাঃ প্রান্তান্ততন্তে সংন্যবর্ত্ত্যন্।
তা আহুতা ভগবতা মেৃণান্তীরয়া গিরা। স্বনান্ধাং নিনদং প্রুত্থা প্রতিনেতঃ প্রহর্ষিতাঃ॥ ৫॥
ততঃ সমন্তাদ্দবধুমকেতুর্বদূচ্ছরাভূৎ ক্ষরক্রনোকসাং।
সমীরিতঃ সার্গিনোল্বণোলা,কৈর্বিলেলিহানঃ স্থিরজঙ্গমান্ মহান্।

#### শ্ৰীধবস্বামী

ভাসাং খুবৈদ ডিশ্চ ছিলৈজ্বৈ গেলিপলৈ অভিতৈশ্চ ভূপাদেশৈ জ্বৈণ্কা গ্ৰাং মাৰ্গমন্থ নতাজীবাল গ্ৰজীবিকাসাধনা: ॥৪॥ মুগাটবাপি সৈব ॥ ৫॥

গোপানাং নাশ্হেতু ব'নবহিঃ সর্বতঃ প্রাহ্রভ্ং সার্থিনা বায়ুন্। ৪ ৬ ৫

#### देवक्षवरज्ञावनी ।

গোষ্পদৈর্গোভিঃ দেবিতৈম হির্ণ: । যতোংছিতৈঃ তংখুরাদিভি লিখিতৈঃ । গোষ্পদং দেবিতাদেবিতপ্রমাণেছিতি শক্ষতেবন্যত্র হুরভাবাং॥ ৪॥

সমাক্ সর্বান্ধলন্থাদিনৈক তৈবে প্রাপ্ত । সমাক্ দ্বা একী করণাদিনা ন্যবর্ত্ত্বন্ প্রভাৱাশ্চ বছলগরিভ্রনণাদভবন্ ॥
সম্প্রাপ্তান্ত্তাকর তঁংপ্রকাবং বদন্ প্রিগোপালচ্ডামণিনা গোগোপসস্তোষণমাহ তা ইতি। মেঘগন্তীরহোতাত্র মেঘশন্তেন মেঘগন্তি তিং
লভ্যতে সর্বত্র তুগন্তীরশন্যং থলু ত্রদৃশ্যতলস্য গর্ত্তা বিশেষণং ভবতি লক্ষণয়া তু তত্ত্বজন্মপি বিশিন্তি তথা হিথিতো নাদশ্চ
প্রায়ে গুরুহ্বন্ গন্তীরতার উপচর্যাতে মেঘগন্তান্য তহং গুরুঃ স্যাৎ তন্ত্রগতা গীশ্চ স্ববভ্যাদৃশী স্যাদিতাভিত্রেভ্যাহ মেঘগন্তীর্য়া
গিরেতি। ততশ্চ মেঘগন্তীব্রা গিরা যং স্বস্থ নাম তত্তারণং তেনাহুভাঃ স্ত্যন্তংস্থানিং নিন্দং মধুবভারস্থরণিশেবং শ্রে প্রহ্রাঃ প্রহুহাঃ স্বত্তা প্রহুহাঃ স্বত্তা প্রহুহাঃ প্রহুহাঃ

ততস্ত্ৰিলেৰ সময়েহভূহ উদ্ভঃ। যদৃদ্ধা অক্ৰাং। অনুমণি প্ৰলম্মণ কন্টিদৈতা ইতি। কেচিদাতঃ বুলাননে দ্বনিষ্ণাং উদ্ধোলাটুকৈ: উকাসদৃশকুণিকৈ: বিলেলিগাম: বিশেষেণ গোলিহন্ দংদ্যমান ইত্যথঃ। যতো মহান্ ব্যাপকঃ॥

## जीविष्नाशहक्वरही।

ভাসাং গ্ৰাং খুৱৈদ দ্বিক ছিলৈজ্বলঃ গোষ্পদৈ নাজিত ভূপিদেইশশ্চ লক্ষিতং গ্ৰাং মাৰ্গং। নষ্টান্ধীবাা বিগতগীবিক যোধনাঃ ॥ ৪ ॥ মুক্লাটব্যাং ভট্ৰেৰ শস্ত্ৰৰে সম্প্ৰাপ্য ভা গ্ৰাণ্যাঃ নাৱৰ্তমন্ প্যাৰ্থজীয়ামুখ্য ॥ ৫ ॥

সম্প্রাপ্যেত্রতং ৩ৎ কেন প্রকারেশেত্যাকাজনায়ামাহ রুফ ইতি। আয়োনং দর্শয়ন্ থা আহ্বয়ামাস। তা গবাদয়:॥ ৬॥ তদেবং গোভি: সঙ্গতীভূর যদৈব তথনামিজনিতুনৈছংগুদৈব তে দাবানলেনাপ্রিয়তেত্যাহ তত ইতি। দবোবনং তৎসম্বনী ধ্যকেতুর্বি:। ষদ্দেয়া আ ক্ষিক ইতায়মিশি প্রবিধাণ ক্তিকৈতা ইত্যাহঃ। সাব্ধিনা বায়ুনা। উত্থানেতিতীবৈক্লাকঃ॥

পশুগণই গোপালদের জীবন সাধন, দেই পশু বিনত হওয়াতে সকলে অচেতন হইলেন এবং পশু-দের ধুর ও দশনে সংছিন্ন তৃণ তথা গোষ্পাদে অঙ্কিত ভূপ্রদেশ লক্ষ্য করিয়া তাহাদের পথ অনুসন্ধান করিতে আরম্ভ করিলেন ॥ ৪॥

অনেক ক্ষা পরে মুঞ্জাটবীর (শরবনের) মধ্যে ভ্রন্টমার্গ হইরা ক্রন্দনকারি গোধন সকল নয়নগোচর হইল অতএব যদিও আপনারা ত্বিত ও প্রান্ত হইরাছিলেন তথাচ তথা হইতে নির্ভ হইলেন না। রাজন্! ভগবান সেই সকল গাভীর চিহ্ন পাইয়া যথন গন্তীর বাক্যে তাহাদিগকে তাহ্বান করেন তৎকালে তাহারা স্বস্থ নামের ধ্বনি শুনিয়া সহর্বে প্রতিপ্রনি করিয়াছিল। ৫॥ •

় সে যাহা হউক, তদনন্তর বনবাসিদিগের ক্ষয়কারী মহান্দাবানল অনিলপ্রেরিত হইয়া ভয়ানক শিধাসঞ্চালনপূর্ব্যক স্থাবর ও জঙ্গমকে গ্রাস করিতে২ যদ্ছাক্রমে চতুর্দিক্ হইতে উদ্ভূত হইল। চারি- তমাপতন্তং পরিতো দবাগ্রিং গোপাঃ সগাবঃ প্রদর্মাক্য ভীতাঃ।
উচুশ্চ কৃষ্ণং সবলং প্রপন্ধ। যথা হরিং মৃত্যুভয়ার্দিতা জনাঃ।
কৃষ্ণ কৃষ্ণ মহাবীর্য্য হে রানামোঘবিক্রম। দাবাগ্রিনা দছ্মানান্ প্রপন্ধাং প্রাভুমহ্ থঃ।
নূনং তদান্ধবাঃ কৃষ্ণ ন চার্ছ ন্তাবসাদিতুং। বয়ং হি সর্বধর্মজ্ঞ ত্বাথান্তৎপরায়ণাঃ।

#### देवक वरकावनी।

আপতত্তং বেগেনাগছত প্রসমীক্য অত্যন্ত হৈ সহস্তর্ঞ বিচার্ব্যেত্যর্থ: । অত্য প্রোপা গোপালনায় নিযুক্ত সাধারণা এব শ্রীনানার তদক্ষপিন্দারিকা বিদ্ধান নাজীতি। অতঃ প্রপন্ন দবস্মীপাদার্গম্য শরণমারতাঃ ভীতত্বে হেতুং স্থাবং গোভিঃ সহিতা ইতি গোর্বিয়োরপ্রজ্জনিস্যতি হ্রম্বাভাব আর্থ:। গোপাশ্চ গাব ইতি পাঠে গাবশ্চাচ্রিত্যায়াতি তত্র ব্যক্তরারস্ত্রণাং তা অপ্যচ্রিত্যবিশ্বর্থাঃ ে গোপাঃ স্ব গাব ইতি পাঠে স্ব প্রসিজে । হরিমিতি তলৈত্বিম্বর্থাঃ শে দৃষ্টান্তঃ। মৃত্যোম্বরণপরম্পরালক্ষণসংসারাৎ ভয়েনাদ্বিতা জনা ইতি সভ্যার্ক্ত্যান্ত নতু মরণমাত্রত্যাণাংশে অতশ্চ কেবলং প্রভিগবদ্বিয়োগত এব ভীতা ইতি পূর্বব্দোধ্যং তচ্চাত্রে ব্যক্তং ভাবি॥

মহন্বীর্যাং প্রভাবো যদ্য ইতি অবিষহং মন্যমানঃ ক্লঞ্চং দানবপুস্থৰ ইতি দৃষ্ট্রীত্যা শ্রীক্লঞ্চং প্রতি সন্বোধনং। অমোথবিক্রমেতি শ্রীবলনেবং প্রতি মহাদৈত্যদ্য মৃষ্টিনেকেনৈব বধাৎ। অমিতেতি পাঠোহপি তথাভিপ্রায়াৎ এবং ত্রাণদামথ্যমূক্তং প্রপন্নান্ শ্রণাগতানিতি মহাভয়স্বভাবেন॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

ত্বশাস্থ্য ত্বংস্থান্থ বজোহিপ। চকারোহপার্থে। অবসাদিতুং অব সমস্তাং সাদে। যেয়াং তহদাচরিত্মপি। তভশেচতি বিশেষণ নিশাম্য। নিশম্যযোগস্য হুর্ঘটনায়া বীর্য্যং মাহাস্মাং দাবাগ্রেঃ সকাশাদাস্থনঃ কেমং রক্ষাহেতুং বীক্ষ্য তদীর্য্যস্থাগদ্ধকত্বং নির্স্যতি যোগমায়ায়া স্বাভাবিক্যা চিচ্ছক্যাস্থভাবিতং॥

#### श्रीविधनाथठकवडी।

উচ্দেতি। অনেন সর্বহর্গান্তি ইতি গর্গোক্তিমহস্বত্যেতার্থ:। গোপাশ্চাগান ইতি গোপা: স্থাব ইতি গোপা: স্থাব ইতি ব্যাপা: স্থা

অবসাণিত্ং অব সমস্তাৎ সালো বেষাং তে হবসাদান্তবদাচরিতুমপি নাহ ত্তীত্যাচার কিবস্তান্ত মুন্॥

দিকে দাবানল দর্শন করিয়া গো এবং গোপগণের যৎপরোনান্তি ভয় হইল এবং মানবগণ যেমন মৃত্যু ভয়ে পীড়িত হইয়া ভগবান হরির শরণাপদ হয়,তাহার ন্যায় সকলে বলভদ্রের সহিত শ্রীকৃষ্ণের শরণাপদ হইয়া কহিতে লাগিল, হে কৃষ্ণ। হে কৃষ্ণ। হে মহাবীর্যা। হে রাম। হে অমোঘবিক্রম। আমরা দাবাগ্রিতে দহমান হইয়া শরণাপদ হইতেছি, আমাদিগকে পরিত্রাণ করিতে যোগ্য হও। হে কৃষ্ণ। এই সকল ব্যক্তি তোমার বান্ধব, ইহাদের অবসাদ হওয়া উচিত হয় না। হে স্ক্রিণ্মিক্ত।

শ্ৰীশুক উবাচ॥

বচো নিশম্য ক্পণং বন্ধূনাং ভগবান্ হরিঃ। নিমীলয়ত মা ভৈষ্ট লোচনানীত্যভাষত ॥ ৬॥ তথেতি মীলিতাক্ষেরু ভগবানগ্রিমুল্লণং। পীতা মুখেন তান্ কুচ্ছাদেযাগাধীশো ব্যমোচয়ৎ ॥ ৭॥

### এ ধরস্বামী

কুজুাৎ গৃহৰরপ্রবেশত্ট্ শ্রমাদিজনিকাৎ তৎক্ষণমের ভাগুীরং নীয়া তানমোচ্যুদিতার্থ:॥ १॥

### देवकवरकावनी ।

সভাবত এব হরিঃ সর্বাহংথহর্তা তত্রচ ভগবান্ ভক্রবাৎসন্যাদিনিজবিশেষগুণপ্রকটনপর:। তত্রাপি বন্ধুনাং যক্সিতং পরমানদন্দিতি ন্যাবেনাইছাক মিত্রাণাং রূপণং কাতর্য্যুক্তং বচ:। লোচনানি নিমীলয়তেতি জীড়াকৌতুকস্বভাবেন বস্তুত্ব্যু ভাব:। এতে মদেকরেংক্রান্তভিত্তাঃ নিজক্মোনপেক্ষয়াপি মৎক্ষেমের নিজজীবনতোহপ্যপেক্ষেত্ত। অতো মমাগ্রিপানং নিরীক্ষ্য মদনিষ্ট-শক্ষয়া সহসা দাবাগ্নিমপ্যেতং কিল প্রবিশের্ঃ। অতোহমুমেবালক্ষিত্নের পাস্যামীতি। কিঞ্চ। অলক্ষিতং জীড়ার্থং ভাত্তীরং তান্
শীত্রং নেতুং তথোক্তং। নন্বহো পরমকৌতুকিন্ লোচননিমীলনেন কথম্যিপরিহারগুত্তাহ মাত্রৈষ্ট। রক্ষিতাশ্বীতি ভাবঃ॥ ৬॥

তথা এবমবিত্যথ : ইত্যেতহ্ত্বা ইত্যথ :। নমু তাদৃশাগ্নি: শ্রীমুখেনাহোবত কথং পীতস্তরাহ যোগাধীশ: ছর্বিত কৈয় খর্য-বিশেষক স্বানী। তছ্ত্যা পানকগণ্ড যতামিব গতমিতি ভাবঃ। বিশেষেণামোচয়ৎ ভাণ্ডীরপ্রাপণাৎ। মুখেন পানাভিপ্রায়ঃ প্রাগেবোদিই:॥ १॥

#### बीविधनां भठकवर्ती।

নিমীলয়তেতি তেষাম্মিপানদশ্নানোচিত্যং তথৈবালকিতং ততঃ স্থানাতেষামতিশাস্তানাম্ভিসম্ভানাম্লিতমেবাতিস্থীতল-স্ক্ষোষ্টাণ্ডীরতস্বতলপ্রাপ্ণোচিত্ত্যঞ্পরামুণ্যেতি ভাবং। ন্যাহো কৌতুকিন্ লোচননিমীলনে কথম্মিপরিহারস্করাহ্মা তৈটেতি। ততে৷ হন্যথান্য ন আণ্ডেত্বজীতি ভাবং॥ ৬॥

ভো বয়স্যাঃ বাহ্নবিষাদীনাম্পশ্যকং মণিমন্ত্রমহাইধাদিকময়ং ক্লফো বছতরং জানাতীতি তচ্চ বিবিক্তং বিনা ন সিন্ধ্যেদতোহয় জনসক্ষয়ে সন্ধাকং লোচননিমীলনমেব বিবিক্তমিত্যভিপ্রেতিটেববং জ্রতে তছয়ং দৃঢ়তরমেব স্বস্থনেত্রে নিমীলয়াম ইভূাক্রা তে ন্যানীলয়নিত্যাহ তথেতি ভগবান্ নহৈশ্ব্যাশক্তিয়ক্তঃ। তীব্রমপি তং পীত্তেতি তৎপিপাসায়াং জাতায়াং তদিছলপ্রতিক্লমাচরিত্রম্পমর্থঃ।
দোহধিরেব মহাবিত্যং সদ্য এব পরমন্থাতলক্ষান্ধমধুররস্থানকীভূম তদীয়করকমলতলে মদৈব গণ্ড্রমাত্রীবভূব তদৈব যোগাধীশো
মুখেন পীত্রেতানেন তদীয়া যোগমায়েব শক্তিঃ প্রকটিভূয় তদপ্যতং স্বরতামন্থরাগার্দ্রচিত্ততকানাং হঃসহ হঃথপ্রদামত্যুক্ত্বা তৎ করতলাদাছিল্য সৈব মুখেন পণাবিতি লতাতে যোগা যোগমায়া তস্যা অধীশত্বান্তিরিহেব তৎপানোপচারে হন্তুদিতি ভাবঃ। মহা। মুখেন
উপায়েন পীত্রা কঃ উপায়ন্তর্ত্রাহ যোগাধীশ ইতি যোগ ঐশ্বর্যাশক্তিরেবেতি ভাবঃ। মুখংপ্রসরনে বক্তে প্রারম্ভোপায়রেবানপীতি নেদিনী।
ক্ষত্রাং গহররপ্রবেশ ইউ প্রমাদিলনিতাং তংক্ষনের ভাতারং নীয়া তানমোচয়্যিত্যর্থঃ। তত্রণ্ড ভােং স্থালো মহাগ্রেঃ প্রতীকারো ময়া ক্রতঃ সাম্প্রত্রেকণিয় জালারতেতি ক্লেনেরাক্তান্তেন পুনরক্ষীগুল্মীল্য আত্মানং মোচিতং গাশ্চ মোচিতা নিশ্বয় জ্বাহা বিশ্বিতা
আাদিলিত্বরঃ। কীল্পাঃ ভাণ্ডীরমাপিতা তেনৈবেতি সর্ব্বে যোজাঃ॥ ৭ ॥

আমরা তোমাকে আপনাদের নাথ এবং আপনীদের পরম আশ্রয় জানিয়া থাকি।

শুকদেব কহিলেন ভগবান্ হরি বন্ধুবর্গের ঐ রূপ কাতর্য্পূর্ণবাক্য শ্রবণ করিয়া করুণাপ্রকাশ পুরঃ-সর কহিলেন ভয় নাই তোমরা নয়ন নিমীলন কর॥ ৬॥

রাজন্! এতৎ প্রবণে 'গোপগণ তাহাই' করিতেছি বলিয়া নিমীলিতলোচন হুইলে যোগাধীশর ভগবান্ সেই উত্থপ দাবানল আনন ছারা পান করিয়া নির্বাণ করিলেন। অনন্তর গোপদিগকে ভাণ্ডীর বনে আনিয়া গহুরপ্রবেশ, পিপাসা ও প্রান্ত্যাদিজনিত ক্লেশ হুইতে পরিত্রাণ করিলেন॥ ৭॥

ততশ্চ তেহক্ষীগুর্জাল্য পুনর্ভাগ্ডীরমাপিতাঃ। নিশম্য বিশ্বিতা আসন্ধাত্মানং গাশ্চ মোচিতাঃ। ফ্রক্ষ্ম্য যোগবীর্যাং তদেযাগমায়ানুভাবিতং। দাবাগ্নেরাত্মনঃ ক্রেম্বং বীক্ষ্য তং মেনিরেইমরং। গাঃ সংনিবর্ত্ত্য সায়াক্তে সহ রামো জনার্দ্দনঃ। বেগুং বিরণয়ন্ গোষ্ঠমগান্দোপৈরভিষ্ঠুতঃ।

## देवकवरकावनी ।

ত ও পানানস্করণ নৃনং প্রভিগবছকা এবাকণ্ড্রীল্যান্থানং মোচিতং গাল্চ মোচিত্বা নিশম্য নিশাম্য দৃষ্ট্য বিশ্বিতা আসন্।
ন কেবলং মোচিতাঃ পুনর্জা গুনিনাপিতাল্চ নিশাম্যেত্যের পাঠঃ কচিং। মোচিতা ইত্যর্থবশাধিভক্তিবিপরিণামেনোভয়ারন্ধরঃ।
ত র প্রিম্নাদিনিণকুলে প্রিক্লাবনমধ্যে স্পানো ইতি প্রাস্কিনিবালয়গ্রামতো বায়ব্যদিনি ভাগ্ডীর ইতি যং প্রসিক্ষেম্মাভিদৃ ইচিবা মন্দ্রশাব্যক্তি তরাম থাতিত প্রেদেশা মন্দ্রাইন্টি বিস্পান্ত ন এব ভাগ্ডীরবটো জ্বেয়ং তদক্ষিণতঃ জ্বোলপঞ্চকং
নাবক্সাটবী চ তরিকটতঃ অগ্নিবারেতি প্রসিদ্ধ গ্রামান্তে গ্রাহ্মা। তথা মধ্যে চাস্য মহাশাধো ন্যপ্রোধ ইত্যাদিনা প্রহারিবংশে
প্রীক্লাবন এব ভাগ্ডীরস্বাবনং। ভবিষ্যান্তরে চ মল্লঘাদীপ্রসঙ্গে। ভাগ্ডীরে যো মলক্ষ্মী প্রক্রিক্ষে নির্দানিত্তসম্য তবৈর মহামল
ইতি প্রাসিদ্ধি। অতো বাহ্দেবেতি প্রসিদ্ধা তন্দেবতা চ সৈব জ্বো। এবমের বহুয়ো বাহ্মানান্দ চারন্ধস্কত গোধননিত্যক্তং
প্রীক্লাবনত আরক্ষায়ং জীড়ারা অবিজ্বেদে সক্ষেত্ত। অনক্ষাবান্ম্যার্ণাদিনা তদসিদ্ধে:। এবং কিং বিশ্রামানি ক্ষডোগিভবনে ভাগ্ডীরভ্নীকহীত্যাদি প্রাচীনবৈষ্ণবক্ষীনামপি মতনব্যাকুলং স্যাৎ তত্নত প্রীবরাহোক্তং লোকে ভাগুহুবেতি খ্যাতং
ভাগুইদাগ্যতীর্থনের যুদ্ধায়া উত্তরকুলে জ্বেয়ং ॥

অথাপি তেষানিথং সতাং ব্রশ্নপ্রবাস্ত্ত্যেত্যাদিয় সর্ব্যেজিলাবিত শুর্জনৈত্তীমতাং তদাছাদকনৈ মর্য্যজ্ঞানং ন বভূব কিন্ত কথকিং প্রভাবজ্ঞাননেবালায়তেত্যাহ। রুষ্ণদ্য বোগমায় নিষ্ণাধিক চিন্তা শক্ত্যা অনুভাবিতং ব্যঞ্জিতং। বোগো হপূর্ব্যাধিদংপ্রাপ্তাবিতি
বিশ্বপ্রকাশাদপূর্ব্যাবস্থ্যাপ্তিদম্পাদকং ব্যাব্যং প্রভাবস্ত্যাক্ষ্য মন্ত্রা তং অনরং দেববিশেষং মেনিরে । কীদৃশং বার্যং দাবাগ্রেং দকাশাদ্যাদিশ করিং প্রকাশ হাতি ভাবং।
কর্মাদিশ ইতি ব্রহ্গনি । ব্লা। ন বিদ্যাতে মরো মরণং দক্ষাত্তং এতদাশ্রমেণ মরণাদ্যি ন বিরংং প্রাক্ষ্যাম ইতি ভাবং।
করাদিন ইতি ব্রহ্গনিঃ দ্যা দুইং বাচ্যত ইত্যভিপ্রামেণ॥

## औरियनाथठकवर्छी।

তাদ্নৈখৰ্য্যদৰ্শনেহণি তেবাং বিশ্বন্ধপ্ৰেমনৈত্ৰীমতাং তদাচ্ছাদক মৈখব্যজ্ঞানং অৰ্জু নাদী নামিব ন বভূবেভাাই। ক্লাস্য বেগাসায়া শক্ত্যা অনুভাবিতং জ্ঞাপিতং বোগবীৰ্য্যং। মোগোহপূৰ্ব্বাৰ্থসম্প্ৰাপ্তি বিশ্বকোষাদপূৰ্ব্বাৰ্থসম্প্ৰাপকং বীৰ্য্যং প্ৰভাবং। তৎ আত্মক্ষেণ্য কংশং বীক্ষ্য কং প্ৰীক্ষ্যং অমবং দেববিশেষং মেনিবে নভূ তদণি এষাং সম্বন্ধস্য শৈথিল্যগদ্ধোহণি জ্ঞেয়ং। যতঃ থল্যমন্মাকং স্থা মহ্যাশক্য কৰ্ম্বক্রণাদেব এব ন মানুষ ইতি ততকৈতং নথত্বাৰ্যমণি দেৱা এবেত্যভূগ্যত্বে সংখ্যাসন্তবাদিত্যসূদায় আনন্দমন্তান্তে বভূবু বিভি ভাবং॥

জনান্ বনস্বস্থাবরজন্মলোকান্ স্ববিরহং দিৎস্থ: পীড়ন্ধতি ব্রক্তজনাংক স্বসন্ধাং দিৎস্কৃতং যাচয়তীতি স: ৪

হে মহারাজ! ক্ষণকাল মধ্যে ভাগ্ডীরবনে আনীত ইওয়াতে তাহার পর চক্ষু উদ্মীলন করিয়া গোপদিগের সাতিশয় বিশ্বয় জন্মিল, যে হেছু আপনাদিগকে এবং গো সকলকে আপদ্ হইতে সর্ব্ধ-তোভাবে মুক্ত দেখিতে পাইল। তাহার। শ্রীকৃষ্ণের অনির্ব্বচনীয় যোগবীর্য্য এবং যোগমায়ার অন্তৃত অনুভাব তথা দাবানল হইতে আপনাদের ক্ষেম অবলোকন করিয়া তাহাকে অমর জ্ঞান করিতে লাগিলেন। সে যাহা হউক, ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ ঐ প্রকারে গোধনগণকে নির্ভ করিয়া সায়াছে বল-দেব সহ বংশীক্ষনি করিতে ২ আপনাদের গোষ্ঠে আসিলে গোপগণ তাঁহার স্তব করিল এবং গোপী-

গোপীনাং প্রমানন্দ আদীৎ গোবিন্দদর্শনে। ক্ষণং যুগশতমিব যাসাং যেন বিনাহভবৎ॥৮॥
॥ क्ष । ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষদ্ধে দাবায়িমোক্ষণং নামৈকোনবিংশোধ্যায়ঃ॥ ক্ষ ॥ ১৯॥ ক্ষ ॥

औरवयामी।

কণেনৈৰ ভাঞীৰং প্ৰাণিতাঃ তত\*চ অকীব্ৰখীল্য বিশ্বিতঃ। ঞীদামাদি বগোপানাং আক্ষমাক্ত হ্ৰাতাং। বৈশ্বগ্ৰাবিৰক-বোৰন্বক্লিপান্তঃ ॥৮॥

॥ \* ॥ रेजि मन्द्रम छनविश्नः ॥ \* ॥

. বিংশে প্রার্ট্শরছেছাভাবর্ণনেন বনোচিতাং। প্রার্ট্ফীড়া নিরপ্যস্তে গোপরামযুজো হরেঃ॥ ∙ ॥

## देवसन्वरङाधनी ।

শ্রীগোপানাং দাবায়িতো মোচনপূর্বকং স্বপ্রাপ্তিপরমানন্দং বথা দদৌ তথা শ্রীগোপীনামপি বিরহায়িত্তংপূর্বকং তং দদাবিতি নিত্যমপি প্রস্তাবসাদৃশ্যন তদিনলীলাস্ক এবাহ গোপীনামিতি। পরমঃ পরাং কাষ্টামাপদ্ধ আনন্দ আসীং। কাষাং গোপীনাং তথাই ক্ষণমিতি। কুটিলকুত্বলং শ্রীম্থঞ্চ তে ইতি। ক্রটি গুগায়তে স্বামপশ্যতামিতি চ তাষামেব তাদৃশবচনশ্রবণাং। যদ্ধনি দৃশিষ্ প্রস্কৃতং শপস্থীতি তা এবাদিশ্য শ্রীমন্ত্রীক্রেণাপি সর্বাতিশরপ্রেমদর্শনায় বর্ণিতস্বাং। তংপ্রেম্বসীক্রপাণামিত্যর্থঃ। কীদৃশং তন্তানন্দত্ম পরমন্ত্র তথাপ্যাহ ক্ষণমিতি। অম্বন্ধানুনসাগ্যেরেরহাং স্বরূপেণ নির্দেষ্ট্য ন শক্যতে কিন্তু কথিক্ষং প্রতিযোগিম্থেইনবৈতি ভাবঃ। গোবিন্দর্শন ইতি সপ্রমী নির্দেশস্তদাপি তাষাং নিমেষাদি ব্যবধানে পূর্ববং বিরহাবন্তবে দর্শিতা। ক্ষণমিতি ন পুংসকত্বনার্বং। এবময়মাসাং ভাবপ্রেমপ্রপ্রমানরাগাম্বরাগমহাভাবাথ্যতয়। সপ্রমকক্ষানাক্রচায়া রতেঃ পরীপাকঃ শ্রীসন্মদত্মজনবৈর্বিনিতোভ্রনীন্মণৌ অবলোকনীয়ঃ॥ ৮॥

॥ \* ॥ इे जि बीरेवकवर जावनारः म्ममिष्टिक्षनाम्निविः मः ॥ • ॥

## ক্রমসন্দর্ভ:।

## ॥ \* ॥ ইতি দশমে ক্রমসম্মতে উনবিংশ: ॥ \* ॥

### গ্রীবিশ্বনাগতক্র বর্তী।

গোষ্ঠ প্রবেশসন্যে ব্রজ্ঞ্জানাং সর্বেধানের তৎসঙ্গনাদানন্দে সত্যপি ব্যক্তিয়াদীনাং প্রন্নবংস্লানামানলাধিক্যং চাহুদিশাধ্যায়ে বইপ্রস্থানেতাদিনা গোপীদৃগুৎস্বদৃশিং প্রবিবেশ গোষ্ঠমিতি পদ্যেন বণিত্যের অত ইদানীং প্রেম্পীনাং গোপীনামানল্যাহ গোপীনামিতি। প্রন্ত্রান্দ্র ইতি মুক্তপ্রগ্রেয়া ব্যা আনল্যা জাতিপ্রমাণাভ্যামাধিক্যমাত্যন্তিক্যের নত্বাপেক্ষিকং জ্ঞেষং। নত্র কাল্যা গোপান্তদ্যাধারণলক্ষণেন পরিচার্যেত্যত আহ ক্ষণমিতি। ক্রীব্রমাধং। যেন প্রক্রিয়াক্ষ্যান্ত্রিবেতি ক্ষণ্যা মুগ্শভার্মান্তং রতিপ্রেম্বেহ্মানপ্রবাগ্যমহাভাবানান্ত্রোন্তরাপ্রাপ্রমভানকানামন্তিন্যা নহাভাব্যা লক্ষণমি হাজ্ঞবানীল্মণে চ্ট্রত্তা মহাভাব্যার ব্যায় মুদ্ধ ভাব্যত্যা সুব্লাহ্যনিল্লীপ্রভৃত্য এব জ্ঞ্যাং॥ ৮॥

॥ 🚁 ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেত্যাং। একোনবিংশো দশমে সঞ্জীতঃ স্বতঃ স্তাং॥ 🚁 ॥ উপনানেন বস্তুনামুপাদেয়ক্তেয়তে। বিংশে প্রার্ট্শরচেছাভাবর্ণনে হদ্যোত্যকুনিঃ॥ ०॥

দিগের গোবিন্দদর্শনে পরম আনন্দ হইল, কারণ তদ্যতিরেকে তাঁহাদিগের পক্ষে কণকালও শত্যুগ তুল্য বোধ হইত॥ ৮॥

॥ । । ইতি দশ্যে ঊন্বিংশ ॥ \*॥

বিংশ-কাধ্যায়ে বর্ষ। ও শরৎ ঋতুর শোভা বর্ণন এবং গোপ ও বলদেব সহ ঞীক্ষের প্রার্ট্-কালীন ক্রীড়া বর্ণন ॥ ০,॥

## প্রীওক উবাচ॥

তথােস্বদ্ধতং কর্ম দাবাথেমে কিনাস্থমঃ। সোপাঃ স্ত্রীভ্যঃ সমাচ্ধ্যঃ প্রলম্বধমের চ।
গোপর্দ্ধান্চ গোপ্যন্চ তত্বপাকর্ণ্য বিস্মিতাঃ। মেনিরে দেবপ্রবর্গে কৃষ্ণরাম্যে বিজ্ঞান্য।
ততঃ প্রাবর্ত্ত প্রার্ট্ সর্বসন্মুদ্ধরা। বিদ্যোত্মানপরিধিবি ক্রিজিনভস্তলা॥ ২॥
সাক্রনীলাম্ব্রদর্ব্যাম সবিত্যুৎ স্তন্যিম্বুভিঃ। অস্পাইজ্যোতিরাচ্ছমং ব্রেলের স্বগুণং বভৌ॥ ৩॥

## धिषत्रभागी।

হেষাদেয়োপমানেন প্রার্ট শরদৃত্পিরো:। বর্ণনং ত্রংক্তেখ্ব্যক্ষলীলাবিবক্ষা 🕯 ১ ॥

তত্র প্রার্ট্ বর্ণনং তত আদি ছাবিংশত্যা সর্কোষাং প্রাণিনাং সমুদ্ধর উৎপত্তিতো জীবনত চ যদ্যাং দা প্রার্ট্। বিদ্যোতমানাঃ পরিধয়ং পরিবেশাং দিশো বা যদ্যাং দা। বিফুর্জিতং সংক্ষ্ভিতং নজন্তলং যদ্যাং দা॥ ২॥

সাকৈনি বিভৈনী লাখুদৈবি ছিদ্দ জি তদহিতৈরাজ্য়: সগুণ ও ও পরাজ্য়: জীবাখ্যং বিভ্যাপাজি তামুদানাং সম্বরজ্ঞ মোভি-

## বৈষ্ণবতোষণী।

তরোঃ শ্রীরামক্ষ্যোদ বিধিমোক্ষণরূপং প্রশেষবধ্রপঞ্চ যথা স্বং তৎ কর্ম সাময়িকব্যুৎক্রমনির্দেশঃ প্রাধান্যাণেক্ষয়। স্ত্রীভ্যঃ
স্বমাতাদিত্যঃ স্বসকোচাং তা এব আবয়িতুমিত্যর্থঃ। সম্যক্ তত্তৎ বিশেষত স্বাচ্ধ্যাঃ॥

তত এব সর্বেষামপি শ্রুতবভাং ভাবমাহ গোপেতি। সংস্বপি যুবস্থ গোপবৃদ্ধা ইতি তেখামপি চমৎকারাতিশয়েন রসাধিক্যাপেক্ষ্যা অতো গোপ্যোহপি তাদৃশ্রো জ্ঞেয়া:। দেবেরু প্রবর্মে কারপি বন্ধুজনোচিতপ্রেমাক্রাস্তচিত্ততমা নিশ্চয়াভাবাৎ ॥ ১ ॥

ক্রমপ্রাপ্ত: প্রান্ত শরৎক্রীড়াং বর্ণায় প্র শর্মাবনসম্বন্ধেনাত্যন্তমূল্লসন্তীং তহন্দীপনর্মপাং গ্রীমবন্তন্ত প্রান্তন্বাদী বর্ণায় বিশ্বতি । বর্ণনালকারায়াম্যালিকবেন দতাং হেয়োপাদেরতাঞ্চ দর্শয়তি তত ইত্যাদিনা যাবং সমাপ্তি। তত্র তথোরারস্তাদিক্রনেইণ্র বর্ণনং জ্বেয়ং। অন্যত্তে:। তত্র দিশ ইতি পক্ষে বর্ধারন্তে ঈযদ্ষ্ট্যা মরীচিকাহিমধ্ল্যাদ্যাচ্ছাদনেন দুরতো দৃষ্টিপ্রসর্গাং বিক্ জিতং গর্জিতং ॥ ২ ॥

অস্পষ্টং জ্যোতিঃ চক্সহর্ষ্যাদিকং যুত্র ভাদৃশং সং ব্যোম বভৌ। ভদ্দৃাবা স্বপ্রকাশান্তরং ব্যঞ্জামাস। অস্পষ্টক্ষ্যেভিষ্টে হেডুঃ

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

विकृष्टि उ: शक्षितः॥ >॥ २॥ ०॥

## विविधनाथहक्कवर्ती।

দেবপ্রবরাবিতি প্রেমপ্রাবল্যেন স্বসম্বন্ধত দার্চ্যাং পূর্ববিনাধুর্য্যন্যৈর পোষণং নত্বেষ্টেমর্থ্যক্তানং ক্রেরং। তৎকার্য্যস্য স্বসম্বর্দ শৈথিল্যস্য তৎসংযোগে কুত্রাপ্যশ্রবণাৎ ১॥

ততো গ্রীমানস্তরং সর্বেষাং সন্থানাং প্রাণিনাং সমুদ্ধর উৎপদ্ধিতো জীবনতণ্চ বস্যাং সা। প্রার্ট্ বর্ষা। পরিধিশুক্রাক্রোম গুলং। বিক্জিক্তং গজিক্তং তদমুক্তং নভস্তলং যস্যাং সা॥ ২॥

সাক্তিনিবিভৈনী লামুদৈবিহাকাজ্জি তসহিতৈরাছেল্লমাছেল্লখেন প্রতীতং সঞ্চণং ব্রহ্ম সমষ্টিবিরাড়াত্মা। বিহাকাজ্জি তামুদানাং স্বর্জ-

শুক্দেব কহিলেন হে রাজন্! গোপগণ গৃহে প্রত্যাগমন করিয়া রামক্ষের অন্ত কর্ম এবং দাবামি হইতে আপনাদের রক্ষণ তথা প্রলম্বাস্থর বধ প্রভৃতি সেই সকল বৃত্তান্ত গোপীদিগের নিকট বর্ণন করিল। তৎপ্রবণে বৃদ্ধ ২ গোপগণ তথা গোপীদিগের যারপর নাই বিস্ময় জন্মিল। তাহারা চমৎকৃত হইরা এই রূপ অনুমান করিতে লাগিল যে, রামকৃষ্ণ কখনই মানব নহেন, ইহাঁরা দেরপ্রবর, (দেবপ্রেষ্ঠ) লীলার্থ ব্রেজে আগমন করিয়াছেন । ১॥

অনস্তর যে কালে উৎপত্তি ও জীবন দারা সর্বাপ্রাণির উদ্ভব হয় এবং যাহাতে পরিবেশ অথবা দিক্ সকল বিদ্যোদিত হইয়া থাকে আর যে সময় নভস্তল সতত সংক্ষৃতিত দেখা যায়, সেই প্রার্ট্ কাল প্রবর্তিত হইল॥২॥

বিছ্যুৎ ও গর্জন সহিত নিবিড় নীলজলদে আচ্ছন্ন হওুয়াতে গগনমণ্ডলের জ্যোতিঃ অস্পন্ট হইল

অন্টো মাদান্নিপীতং যন্ত্ৰ্যা উদময়ং বস্থ। স্বগোভিমে ক্রিমারেভে পর্জ্জন্যঃ কাল আগতে ॥৪ তড়িত্বন্তো মহামেঘাশ্চণ্ডশ্বসনবেপিতাঃ। প্রীণনং জীবনং হুস্য মুমুচুঃ করুণা ইব ॥ ৫॥ তপংকশা দেবমীঢ়া আদীঘর্ষীয়দী মহী। যথৈব কাম্যতপদস্তমুঃ সম্প্রাপ্য তৎফলং।

## बीधनवामी।

### রুপমা॥৩॥

পর্জনাঃ সূর্য্য: স্বংগাভি: স্বরশ্বিভি:। কালে যথোচিতসময়ে। তত্ত্ব রাজোপমা। করাদানতঃ সন্যে পুনদানতঃ স্চিতাঃ॥ ১ ॥ অন্য বিখন্য প্রীণনং আপ্যায়নকরং জীবনুং উদকং মুমুচ:। কুপালবো যথা তগুং জনং নিরীক্ষা অনুকল্পমানাস্তদাপ্যায়নায় স্বজীবনমপি ত্যম্পত্তি তদন্মহাজ্যে মেঘান্তড়িলেত্তৈপ্তপ্তং বিষ্থং নিরীক্ষ্য স্বসনৈর্বায়ুভিবেপিতা জীবনং মুমুচুরিতি॥ ৫ ॥

## বৈষ্ণবতোষণী।

সাক্রনীলাধুদৈরাচ্ছন্নমিতি। কীদুদৈত্তেঃ বিহ্যন্তিঃ স্তনমিত্র ভিশ্চ সহিত্যৈঃ স্তনমিত্রবোহত কথঞ্চিছ্সপরতাদার্জিতমেবোচাংত । কিমিব বভৌ তত্রাহ ব্রক্ষিব। জীবাধ্যব্রশ্বাংশ ইব তচ্চ কীদৃশং সন্তবং সম্বরজ্ঞমোভিত্তংকার্যৈশ্চারতপ্রনপজ্যোতিরিত্যর্থ:। স্বাদি-श्वानीयाः भाषा यथायथः विटवहनीयाः ॥ ७ ॥

সন্থাদিবস্থানকমুদকদ্য করতং ব্যঞ্জাতি। তচ্চ পর্জন্যদ্য রাজত্বং অতএর নিপীতমান্ত্রমিত্যর্থ:॥ ৪ ॥

তড়িবস্ত ইতি। তৈ ব্যব্যাতং। তত্ৰ কুপালৰ ইতি কৰুণা ইত্যাস্য ব্যাখ্যানেন স্বভাৰকথনং। অমুকল্পমানা ইত্যুক্লপ্যা তৎ-কালমুদিত্যা বেপিতা; সম্ভ ইতার্থ: স্বন্ধীবনমণীতি তৃত্মিস্তাজে যদি তথানামাপ্যায়নং সাপ্তেদা তৃদ্ধি তাল্পীতার্থ:। বাযুভি-রিতি বছত্বঞ্চ ওপজেন লভাতে হি নিশ্চবে। যথা। তড়িত্বস্ত ইতি অরূপাতিশয়দ্যোতনার্থং করণা ইবেতাওপ্রেকা ত্যা। ঘটনাতু শ্লেষেণ চণ্ডশাসকম্পযুক্তাঃ সম্ভো রস্তিদেবাদিবজ্জীবনহেতুজ্ঞলমপি মুমুচুরিতি॥ ৫॥

তপ ইতি সাস্ত্ৰমাৰ্বং॥

বস্বিতি করাদানং তেন চ রাঞ্চোপম্যং ধ্বনিতং অতএব পীতমান্ত্রমিত্যর্থ:॥৪॥৫॥ তপ ইতি সাম্বৰ্ষপি। তপস্ত ভ্ৰপদা সংহতি দ্বিরূপকোবাৎ ॥৬॥ १॥ ৮॥ না

## **बीविधनाथठक वर्डी**।

স্তমোতিরূপমা। অত্র ব্যোমো নিলেপিছেন। বস্ততশ্বনাচ্ছদ্রছেনাস্থ্যান্যধিষ্ঠানমাত্রছাদু হ্রপা সংহাপমেরং যোগিভিঃ স্বীয়োপাস্য দৃষ্ট্যা डेशारम्या ॥ ०॥

পজ্জন্য: সূর্য্য:। স্বরোজি: স্বরশ্বিভি:। কালে সময়ে। অত পর্জন্যস্য রাজ্বং উদক্ষ্য কর্ত্বং নিপান্য্য গ্রহণত্বং মোচন্দ্য দানত্ব স্চিত্মিতি বন্ধন: স্প্রজাভ্য আদানত: সময়ে পুন: প্রদানত চ রাজোপমেয়ং নীতি দৃষ্টা রাজ্ভিরপাদেয়া॥ ৪॥

খসমো বায়ু:। 🌣 অস্য বিশ্বস্য সম্ভপ্তস্য প্রীণনং আপ্যায়নকরং। । অতএব জীবনং জীবনতুল্যং জলং করণা রূপালবে। দাতার ইব । তংপক্ষে বাসবেপাৰমুভাবৌ। জীবনং জীবিতমপি তপ্তং জনং বীক্ষতে তাজন্তি ব্যত্তিদেবাদয়ে। জীবনং অমাত্রাপায়কং জলমপীতি ইয়-मूलमा ज्लम् हेरा नवावी तनानवी देवक्र लाइनया ॥ ६ ॥

তপ্সা। পক্ষে প্রীয়েণ ক্লশা ততো দেবৈরুদ্রাদিভিঃ পর্জনোন চ মীঢ়া কামিতবস্কপ্রদানেন দ্বুলবৃট্যা চ সিকা। বর্ষীয়ধী প্রাঙ্গ-স্তরাং নভন্তল সগুণ ব্ৰহ্ম অর্থাৎ সন্তাদি গুণাবচ্ছিন্ন জীবের ন্যায় দীপ্তি পাঁইতে লাগিল ॥ ৩॥

অপর সূর্য্যদেব নরদেবের ন্যায় স্বীয় কিরণদ্বারা আট মাদ অবনীর যে জলময় ধন আকর্ষণ করিয়া-ছিলেন উপযুক্ত সময় উপস্থিত হওয়াতে মোচন করিতে আরম্ভ করিলেন॥ ৪॥

আর যেমন করুণান্বিত দাধুজন সংদারতাপে দস্তপ্ত জনকে নিরীক্ষণে অমুকম্পান্বিত হইয়া তাহার রক্ষার্থ জীবন পর্যান্ত বিদর্জন করেন তাহার ন্যায় বিহ্যাদ্যুক্ত মেঘমণ্ডল বিহ্যাৎরূপ নয়ন দারা জগৎকে নিদাঘ তপ্ত দেখিয়া দয়াদ্র হইল ও জগতের প্রীতিকর বহু২ জল মোচন করিতে লাগিল। ৫ ।

যদিও পৃথিবী গ্রীশ্ম হেডু অতিশয় কুশা হইয়াছিল তথাচ বারিদবর্ষণে সিক্ত হইয়া তদ্বৎ পুষ্ট হইতে

নিশামুখের খদ্যোতাস্তমদা ভান্তি ন গ্রহাঃ। যথা পাপেন পাষণ্ডা ন হি বেদাঃ কলো যুগে ॥৬॥ আছা পজ্জন্যনিনদং মণ্ডুকাঃ সম্ভু গিরিঃ। তুফীং শয়ানা প্রাগ্ যদদ্রাক্ষণা নিয়মাত্যয়ে॥ ৭॥ আদর্ৎপথগামিন্যঃ কুদ্রনদ্যোহসুশুষ্যতীঃ। পুংসো যথাহস্বতন্ত্রস্য দেহদ্রবিণসম্পদঃ॥৮॥ হরিতা হরিভিঃ শক্তৈরিক্রগোপৈশ্চ লোহিতাঃ। উচ্ছিলীক্ষুক্তছায়া নৃণাং শ্রীরিব ভুরভূং॥৯

## শ্রীধরস্বামী

তপদা এীম্বেণ রশা দেবমীঢ়া পর্জ্জন্য নিকা বর্ষীযদি উচ্ছ্না পুষ্টা কাম্যং তপো যদ্য তুদ্য তন্ং কামান্ প্রাপ্য যথেতি ॥ ৬॥ নিজ্যকশাবদানে আচার্য্যনিনদং শ্রুষা তছিয়া যথা অধীয়ম্ভে তম্বদিতি॥ ৭॥

অমুঙ্কাতী: অমুঙ্কান্ত:। অস্বতম্বদ্য ইন্দ্রিয়পরতম্বদ্য স্বতম্বদ্য নির্ভুশ্দ্যেতি বা ॥৮॥

হরিভিনীলৈ শইম্পর লিজুলৈ: নীলবণা কচিৎ। কচিদিক্সগোপৈ: কীটবিশেবৈলে হিতা। তত্র তত্র উচ্ছিলীলৈ শুভুত্রাকাইর-

## বৈষ্ণবজোষণী।

গ্রহান্ত ন ভাত্তি পাবণ্ডান্ডচ্ছান্তাণি ॥ ৬ ॥

বাস্ত্রন্ বিবিধং বিস্তার্যামাস্থ: প্রাক্ ভূষ্ণীং শ্রানাং নিজাগ্বরিশেষ্টেছেন বৃত্তাঃ মণ্ডূকাঃ ব্রাহ্মণাশ্চ নিভ্যধ্যানজ্পাদ্যর্থক্তমে।ন-খেনেতি॥ ৭॥

ক্লাচিছৎপথবাহিন্য এবাসন্ ক্লাচিদস্ভব্যস্ত এব চাসন্। নতু সৎপথগামিন্যো নতু বৈক্লারহিতাঃ। যগা স্বতন্ত্রস্থান্ত্রমন্ত্র সরতঃ প্রংসো দেহসম্পদো অবিপদম্পদশ্চেতি ॥ ৮,॥

ইক্রগোপে: ত্রীবৃন্ধাবন ইক্রচুড়েতি খ্যাত কীটবিশেষে: হরিতাদিকত্বং চেদং পটগৃহাদীনাং ॥ ১ ॥

## ঐবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

উচ্ছুনা চ। কাম্যং তপো যায় ওদা পুংসন্তর্গ কামান্ প্রাণ্য। বথেত্যুপনৈষা পরিণাম দর্শিতিঃ সন্তির্হেণ। দ পার্থাঃ পার্থশাক্রাণি হেকেবেয়মুপ্রা॥ ৬॥

নিত্যকর্মাবসানে আচার্য্যাহ্বানশবং শ্রুষা তচ্ছিষ্যা বঞ্চা অধীয়ত্তে তথদিতি ব্রহ্মচাবিভিত্রপাদের।॥ १॥

অমুভষ্যতীঃ অমুভষ্যস্তাঃ। বুৰ্মাণৈরলৈরপি জলৈকংপথগানিন্যঃ স্বতন্ত্রস্য শান্তশাসনং অমানয়তঃ দেহস্য সম্পদ্যে বৌধনসামর্থা-বিদ্যাদ্যা দ্রবিশসম্পদঃ পঞ্চমগ্রামাধিপত্যং। তা যথা নিক্রষ্টস্য কুমতেঃ প্রোদ্রেজ্কিন্তথেতি হেলৈবেয়ং॥৮॥

হরিভিনী লববৈ: শইস্প: কোমলৈ:। কচিং নীলবর্ণা ইক্সগোপেরকণবর্ণকী্টবিশেবৈ: কচিং লোহিতা। উচ্ছিলীক্সৈ শ্ছুআকারে-

লাগিল, যেমন কাম্য তপস্থির তপঃ ফল কাম প্রাপ্ত হইয়া পুষ্ঠ হয়, রাজন্! সকল সময়েই নিশামুখে গ্রহ সকলের দীপ্তি প্রকাশ পায় কিন্তু যেমন কলিযুগে পাপি পাষগুজনগণ দীপ্তি পায়, ত্রহ্মজ্ঞ ত্রাহ্মণদের প্রকাশ হয় না, তদ্বৎ এই কালে প্রদোষ সময়ে খদ্যোৎ সকল ছ্যুতিমান্ হইল, গ্রহদিগের প্রকাশ হইল না ॥ ৬॥

হে মহারাজ। ভেক সকল পূর্বাবিধি ভূষীভূত হইয়া শয়ান ছিল এই সময় মেঘধানি শ্রেবণ করিয়া তদ্বং বাক্য ব্যয় করিতে আরম্ভ করিল, যেমন নিত্যকর্মাবসানে আচার্য্যের ধ্বনি শুনিলে শিষ্যুগণ অধ্যয়ন করিয়া থাকে॥ ৭॥

হে মহারাজ ! ক্ষুদ্র ২ নদী সকল নিদাঘকালীন প্রথরতর দিনকর কিরণে শুক্ষ হইতেছিল একণে বর্ষাগমে সে সকল জলপূর্ণ হইয়া, ইন্দ্রিয় পরতক্ষ্র পুরুষের দেহও দ্রবিণসম্পদের ন্যায় উৎপ্রবর্তিনী হইল ॥ ৮ ॥

এই স্ময়ে অবনী কোথাও নীলবর্ণ নবীনত্ন দারা নীলবর্ণা,কোথাও ইন্দ্রগোপ কীটদারা লোহিত-বর্ণা এবং স্থানে ২ ছ্ত্রাকার উদ্ভিদে ছায়াহিতা হওয়াতে নরপতিদিগের স্নোসম্পদের ন্যায়

ক্ষেত্রাণি শস্যসম্পদ্তিঃ কর্ষকাণাং মুদং দত্য়। মানিনামনুতাশং বৈ দৈবাধীনমজানতাং॥ ১০॥ জলস্থলোকসং সর্কে নববারিনিষেবয়।। অবিজ্ঞন্ রুচিরং রূপং যথা হরিনিষেবয়।॥ ১১॥ সরিদ্ধিঃ সঙ্গতঃ সিন্ধুন্চ কোভ খসনোশ্মিমান্। অপক্যোগিনন্চিত্তং কামাক্তং গুণযুগ্ যথা॥ ১২॥

## গ্রীধরস্বামী।

ক্তিদৈ: ক্বতছায়া নৃণাং রাজ্ঞাং শ্রী: দেনাসম্পদিব ॥ ৯ ॥

ক্ষেত্রাণীতি তদাহি বৃষ্টেরবিচ্ছেদেন সন্তঃ প্রিয়ঙ্গু বিষ্ণো মুদং দদতি বিচ্ছেদেম শুষ্যজ্ঞা হতুতাগঞ্জে ॥ ১০ ॥

জ্বিত্রন্ অবিভক্ষ:। যথা হরিনিধেবরেজ্বি হরিদেবায়াং প্রার্ত্তা হি সদ্য এব সর্কে রুচিরা ভব্তি তস্যাঃ প্রমধ্যতাৎ প্রমন্থ-ছাচ্চ তত্তি । ১১ ॥

কামাক্তং কামৰাধনাযুক্তং ইতি খদনোশিধামাং গুণৈবিবলৈ স্কাত ইতি তথেতি দরিংসক্ষতি দামাং॥ ১২॥

## বৈষ্ণ্ৰভোষণী।

সমুক্তরে বৈশক্ষঃ। শ্যাসম্পত্তিঃ তত্তাবাভাবৈরিত্যর্থঃ। মুদ্মুতাপ্রোহেঁতুঃ মানিনাং তদভিমানবতাং দৈবাধীনং সর্ক্ষিত্যজানতাং বিধান্যবামপি ক্ষেত্রাণি দেহাঃ অন্যাভিঃ সম্পত্তিরিতি জ্ঞেরং॥ > • ॥

জলেতি তৈব্যাথ্যাতং তত্র সাধনাবস্থায়াং প্রমধর্মত্বং প্রসিদ্ধমের স্থ্রপত্তক। কর্মণ্যক্রিরনাশ্বাসে ধ্মধ্যাত্মনাং ভবান্। আপার-যতি গোবিক্সপাদপ্যাস্বং মধু ইত্যুস্সারেণ সাধ্যাবস্থায়ান্ধ প্রমস্থ্রপর্ক প্রফি প্রসিদ্ধমেব্তি বিবেচনীয়ং॥ ১১॥

শ্রিবলাবনেহতাবর্ত্মানস্যাপি সিক্ষোর্বর্ণনাং প্রার্ট্রভাববর্ণনাং। কিলা সিক্রির সিক্: শ্রীমথ্রামওলপশ্চিমসীমারাং বর্তমানং নানস্গলাপ্রভ্বকোটরাধ্যমহাস্করা জ্যের ॥ ১২॥

## क्रगमण्डः।

্লৈবাধীনমন্ধানতামতএৰ মানিনাং অহং মম্তাপরাণাং। কর্মকাণাং শ্স্যসম্পদ্ধি তৎসদ্ধাবাত্তাব্ধা মূদমত্তাপক দহঃ॥১০।১১।১২।১৩/১৪। ১৫।১৬।১৭॥

## श्रीविधनाधहकवर्ती।

ক্তিকৈন্তঃ কৃতছোৱা কৃতবেতকান্তিঃ। নুণাং রাজ্ঞাং জ্রীঃ সেনাসপ্পৎ হরিতাদিবর্ণপটুগেহযুক্তা। ইয়ং রাজ্ঞামুপাদেয়া॥ ৯॥

মানিনামিতি ক্ববিং নিক্টং কর্ম বয়ং প্রতিষ্ঠিত। ন কুর্মনে ইতি গর্মবতাং অমৃতাপং হস্ত হস্ত যদি কৃষিং ব্যমপ্যকরিষ্যাম তিন-তাদৃশী: শন্যসম্পদ: প্রাপ্স্যামেতি পশ্চারাপং ছহুমানিত্য এবেত্যর্থ:। যতো মুদ্মতাগাদিকং দৈবাধীনং তে ন জানস্থীত্যর্থ:। বংগ নিবৃত্তিকর্মপরান্ ব্রহ্মলোকং গছেতো দৃষ্ট্। প্রবৃত্তিকর্মপরাঃ স্বর্গন্থা অমৃতপ্রীতি গম্যোপমা ভকৈর্গো॥ ১০ ॥

অবিঅন্ অবিভক্ষঃ। মধেতি হরিদেবারাং প্রার্ভা অংশি সদ্য এব সর্কেক চিরা ভবস্তি তিস্যাং পরমধর্মছাৎ পরমক্ষণভাচে। তেম্বদিত্যপাদেয়া ॥ >> ॥

সিন্ন দীবিশেবং পাশ্চাত্যঃ। বিশেষণ্দ্য পুংশ্বনার্ষং। কানাক্তং কানবাদনাবৃক্তং ইতি স্বদনার্শ্বিদান্যং। গুণৈবিষয়েযুঁ জ্বাতে ইতি। স্বিৎসঙ্গতিসাম্মিতি হেয়া॥ ১২ ॥

## মানা হইল॥ २॥

পরস্তু এ সময় ক্ষেত্র সকল শাস্য সম্পতিদারা ক্ষকদিগকে হর্ষ প্রদান করিতে লাগিল অর্থাৎ এই কালে অবিচ্ছেদে বৃষ্টি হওয়াতে ক্ষেত্রন্থ প্রিয়ঙ্গু প্রভৃতি শাস্য অবলোকনে ক্ষরকদের আনন্দ জন্মিল কিস্তু যে সকল ব্যক্তি শাস্যদি দৈবাধীন, ইহা না জানে, বৃষ্টির বিচ্ছেদে যথন শাস্য শুক্ষ হয় তখন প্রস্কলই তাহাদিগকে সমধ্যক মনস্তাপ প্রদান ক্রিয়া থাকে ॥ ১০ ॥

সে যাহা হউক, যজ্রপ হরিসেবায় প্রবৃত্ত জনগণ সদ্যই রুচির হয়, নববারি-নিষেবণ ছারা জল ও স্থলবাসী সকল জীব তজ্ঞপ অচিরেই রুচির রূপ ধারণ করিল ॥ ১১ ॥

রাজন্! অপক যোগির কামাসক্ত ও বিষয়তৎপর চিত্ত যজপ ক্ষুক্ত হয়, এই সমায়ে সরিৎ সকলে সূসত এবং বায়ুবেগে তরঙ্গিত হইয়া সাগর তজ্জপ ক্ষুক্ত হইয়া উঠিল। ১২ ॥ গিরয়ো বর্ষধারাভির্হ ন্যমানা ন বিব্যপুঃ। অভিজ্য়মানা ব্যসনৈর্যথাধাক্ষজচেতসঃ॥ ১৩॥
মার্গা বজুবুঃ সন্দিগ্ধাস্ত বৈশ্ছরা অসংস্কৃতাঃ। নাভ্যস্যমানাঃ শ্রুতায়ো বিজৈঃ কালেন চাহতাঃ॥১৪
লোকবন্ধুরু মেঘেরু বিদ্যাত শ্চলসোহদাঃ। কৈর্য্যং ন চক্রুঃ কামিন্যঃ প্রুষ্থেরু গুণিষ্বিব॥ ১৫॥
ধন্মবিরিতি মাহেন্দ্রং নিপ্ত ণিঞ্চ গুণিন্যভাৎ। ব্যক্তে গুণব্যতিকরেইগুণবান্ পুরুষো যথা॥ ১৬॥

## अधितवामी।

অধোক্ষ এব চেতো যেষাং তে॥ ১৩॥

অসংস্কৃতাঃ অকুণ্ণাঃ নাভ্যস্যমান্য ইত্যয়ংস্কৃতসাম্যং। কালেন চাহতা ইতি তৃণাচ্ছাৰ্শন স্ম্যাং॥ ১৪॥

यथा कामिनाः भूम्हलाः ॥ ५०॥

নি প্রণিং জ্যারহিতমপি প্রণিনি গর্জিতশস্বতি অভাং অশোভতগুণব্যতিরাম্বকে ব্যক্তে প্রপঞ্চে অভণবান্নি ও প্রক্ষো যথা ইতি ॥ ১৬ ॥

## देवकावटकावनी ।

বর্ষধারাভিরিতি গিরিষু বৃষ্টেরাধিক্যাৎ। অভিত্যমানাঃ অভিভবচেষ্টাবিষয়ীক্রিয়মাণা অপি ন বিব্যুপ্: ন বিব্যুপিরে হুঃখং ন প্রাপ্: কিন্তু রক্ষআদ্যুপগমাদশোভইন্তবৈত্যর্থ:। ব্যুসনৈরোগাদিবিছে: প্রারক্ষয়াবশ্যভোগ্যন্তাং। তাং সেবভাং স্থরক্ষতা বহুবোহন্তরায়া ইতি ন্যায়াচ্চাভিত্যমানা অপি ন ব্যুপত্তে প্রভ্যুতাশোভয়বৈত্তব হুক্স্মাপগমাদিনা ভগৰৎস্মরণবিশেষপ্রসিদ্ধে:। টাকায়ামেব-কারক্তদব্যুপায়াং হেতু: ॥ ১৩ ॥

নাভ্যস্মানাঃ জনভাস্মানাঃ কালহতাঃ কালেন কলিযুগাদিনা হতাঃ শ্ৰুতন্ত ইব এৰ এব পাঠো বছত্ৰ তেৰাং ব্যাখ্যা দৃষ্ট্যা কেচিৎ কালেন চাহতা ইতি পাঠং কুৰ্বন্তি তন্মতে চ ইবাৰ্থ: ॥ ১৪ ॥

खिनियु देवमधामिविविधखनयुद्ध्ये अभि॥ २०॥

অগুণবান মায়াগুণাতীতে হিপি পুরুষ: ॥ ১৬।

## विषनाथहळ्वही।

ন বিৰাগু ন বিবাধিরে প্রত্যুত রজ আদাপগমাদশোভৱৈবেতার্থ:। বাসনৈরাধ্যাত্মিকাদিভিন্তাপৈরধেশিক্ষ চেত্রাদেব ন বাগস্তে। তপত্তি বিবিধান্তাশা নৈতান্মদ্মতচেতস ইতি ভগবহুকে:। প্রত্যুত দৈন্যবৃদ্ধ্য গর্কাস্থাদিমালিন্যরহিতা এব ভবস্তীতি সম্ভিক্পাদেয়া॥ ১০॥

নাভ্যস্তমানা ইভাসংস্কৃত সামাং কালহতা ইতি তৃণাচ্ছাদন সামাং অতএব মার্গাঃ শ্রুতরশ্চ সলিগ্ধা ইতীয়ং বটুভির্হের। ১৪॥ যথা কামিনাঃ পুংশ্চলাঃ। গুণিযু পুরুষেষু বৈদগ্ধাদিগুণবংশ্বপীতি হেয়ৈব॥ ১৫॥

নিগুণিং জ্যারহিতং গুণিনি গজ্জি তশব্দবতি। ব্যক্তে প্রপক্ষে গুণব্যতিকরাত্মকেহগুণবান্ মায়াগুণাতীতঃ পূক্ষো ভগবান্ ভাতি। বিবিধলীলাভিরিতি ভক্তৈরপাদেয়া ॥ ১৬॥

যেমন ভগবানের প্রতি বাহাদের চিত্ত আসক্ত, তাহারা ঝিবিধ ব্যসনে অভিভূত হইয়াও ব্যথিত হন না, তজপ এই কালে গিরি সকল রৃষ্টিধারায় আহত হইতে থাকিলেও ব্যথিত হইল না॥ ১৩॥

রাজন্! বর্ষার প্রভাবে শৃকল স্থানের পথ সংস্কারের অভাবে তৃণাচ্ছন্ন হইয়া তদ্রপ সন্দেহাস্পদ হইয়া উঠিল যেমন দ্বিজাতিগণ কর্ত্ব অনভ্যস্ত অতএব কালবশতঃ আহত হইয়া "প্রতি সকল আছে কিনা ?" বলিয়া সন্দেহাস্পদ হয়॥ ১৪।।

যজ্ঞপ পুংশ্চলীগণ গুণিপুরুষ সকলে হৈর্য্য অবলম্বন করে না তজ্ঞপ এ সময় চলসেছিল বিচ্যুৎ পটল লোকবন্ধু মেঘ সকলে স্থিরতা ধারণ করিল না।। ১৫।।

ইন্দ্রধন্ম বিশুর্গ (জ্যারহিত) তথাচ গুণি অর্থাৎ গর্জ্জিতশব্দ গুণমুক্ত আকাশে তবৎ প্রকাশ-মান হইল, যেমন সন্থাদি গুণসমূহাত্মক ব্যক্ত প্রপঞ্চ অগুণ পুরুষে ( আত্মার ) প্রকাশ হয় ॥ ১৬ ॥ ন ররাজোড়ু পশ্চন্নঃ স্বজ্যোৎসারাজিতৈর্ঘনিঃ। অহমাত্যা ভাসিতয়া স্বভাসা পুরুষো যথা॥১৭॥ মেঘাগমোৎসবা হুক্টাঃ প্রত্যনন্দন্ শিখণ্ডিনঃ। গৃহেযু তপ্তা নির্বিধা যথাহচ্যুতজনাগমে॥ ১৮॥ পীত্বাপঃ পাদপাঃ পদ্তিরাসন্ধানাস্ত্রমুঃ। প্রাক্ ক্ষামান্তপ্সা প্রান্তা যথা কামানুসেবয়া॥ ১৯॥

## শ্রীধরস্বামী

স্বভাস। ভাসিতরা সহমত্যেতি স্বৈচতন্যেনের প্রকাশিতেনাহকারেণ ছলো জীবে। যথা । বছা । অহং বিধান্দাতা শূব ইতি

মেবাগমেনোৎসবো যেষাং। অতো হৃষ্টাং॥ ১৮॥ নানাত্মমূর্ত্রঃ অনেক্রপদেহাং॥ ১৯॥

## বৈষ্ণবতোষণী।

স্বীন্নরা তুষারমন্যা ক্রোৎক্ষমা রাজিতে: প্রকাশিতৈ: সম্বন্ধিতৈশ্চ । ১৭ ॥

মেঘাগম এব উৎসবো যেবাং তে অতএব হাটাঃ প্রভানলন্ মেঘগজ্জি তাদ্যনস্তরমূচৈন দিদিকমকুর্বন্। যথা বৈষ্ণবগৃহত্যাঃ সমাগতে বৈষ্ণবে গীতানস্তরং নৃত্যগীতাদিকং কুর্বস্তি তথেতার্থ: এবং চাতকা অপি জ্ঞেয়া ইতি ভাবঃ॥ ১৮॥ তপদা এতাদিনা কামাঃ ক্লাকাঃ প্রাস্তাশ্চ নির্বাং। এবং এীমেণ পাদপানামপুছেং॥ ১৯॥

মেগাগমে এবাদবো বেষাং অতএব হুঠাঃ তান্ মেঘান্ প্রত্যনন্দয়ন্ ॥১৮।১৯॥

## **এবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী**

धीयत्रश्वामी ।

উ সু পশ্চক্র: অংজ্যান্ধারাজিতৈর্ঘনৈস্কধারময়ে: কুংহড়িকাথৈয়েনে হৈশ্ছন আছে ম্বাভাবেহপ্যাছ্ছনত্বন প্রতীতো ন ররাজ। বভাগা শীষ গুণময়ছ্ছবিরূপয়া অংশত্যা অবিদ্যা স্থশত্যা কীদৃখা ভাসিতত্যা স্বেনের প্রকাশিত্যা পুরুষ: প্রমেখনে। যথা ঘন্ছ্রদৃষ্টির্ঘন্ছরনক্মিতিবং ছ্রান্নে প্রতীত ইত্যর্থ:। জ্ঞানিভিরিয়মুপাদেয়া॥ ১৭॥

মেঘাগমেনোংসবো থেষাং তে। প্রত্যনন্দন্ মেঘসমুদ্ধগর্জিতাদ্যনন্তরমুক্তৈরানন্দনানাদিকমকুর্বন্ যথা বৈক্ষবগৃহস্থাঃ সমাগতবৈক্ষব-সপ্রেমানন্দগীতানন্তরমানন্দগীতনৃত্যাদিকং কুর্বস্তীতি বৈক্ষবানামুপাদেয়া॥ ১৮॥

নানাবিধা আন্ত্রনঃ স্বদ্য মূর্ত্রোহত্বপত্রপল্লপ্রাদ্যা বেষাং তে পকে নানান্ত্রানঃ পানভোজনরবণাদিনানাস্ভাববস্ত আন্ত্রানা মূর্ত্রো দেহা যেষাং তে। নিকামাণামিয়ং হেয়া॥ ১৯॥

অপর স্থীয় চৈতন্য দারা প্রকাশ পায় যে অহঙ্কার, তাহাতে আচ্ছন হইয়া অথবা আমি বিদ্বান্ আমি দাতা, আমি শূর ইত্যাদি স্থীয় প্রতীতিতে আরোপিত হইয়া জীব যদ্রপ দীপ্তি প্রাপ্ত হয় না, তেমনি আপনার জ্যোৎস্নায় উদ্দীপিত মেঘে মাচছন হওয়াতে চল্ডের স্থূপন্ট দীপ্তি প্রকাশ হইতে পারিতেছে না।। ১৭।।

যজপ গৃহাশ্রমে সন্তপ্ত জনগণ ভাগবতজনের সমাগমে আনন্দিত হয় তজ্ঞপ ময়ূরগণ মেঘাগমে উৎসব বোধ করিয়া হুট হুইল অতএব তাহার প্রতি আনন্দ প্রকাশ করিতে লাগিল। ১৮॥

এই সময়ে রক্ষ সকল অস্ব মূল দারা জল পান করিয়া তদ্ধপে অনেক প্রকার দেহশালী হইল, যেমন প্রথমাবস্থায় ক্ষীণ ও তপঃপ্রান্ত পুরুষেরা অভিলয়িত বিষয় প্রাপ্ত হইয়া তৎদেধায় অনেকপ্রকার মূর্ত্তি ধারণ করিয়া থাকেন ॥ ১৯॥ সরঃস্থান্তরোধঃ সূর্যুরঙ্গাপি সারসাঃ। গৃহেষশান্তকৃত্যেয়ু গ্রাম্যা ইব ছ্রাশ্যাঃ ॥ ২০॥ জলোটি নিরভিদ্যন্ত সেতবো বর্ষতীশ্বরে। পাষণ্ডিনামস্থাদৈ বেদ্যাগাঃ কলো যথা ॥ ২১॥ ব্যুম্ঞন্ বায়ুভিনুনা ভূতেভ্যশ্চামৃতং ঘনাঃ। যথাশিষো বিট্পত্যঃ কালে কালে দিজেরিতাঃ॥২২॥ এবং বনং তর্ষিষ্ঠং প্রকথ জ্বেজন্মুম্থ। গো গোপালৈর তোরস্তঃ স্বলঃ প্রাবিশদ্ধরিঃ॥ ধেনবো মন্দ্রগামিন্য উধোভারেণ ভূয়দা। যযুক্তগ্বতাহুতা ক্রতং প্রত্যা স্ত্তনাঃ॥ ২০॥

## **औ**धत्रवागी

অশাস্তানি প্রকণ্টকাদিযুক্তানি রোধাংগি ভটানি যেবাং তেশ্বপি নৃষ্থি তিরামবসন্ট। সারসাশ্চক্রবাকাঃ। অশাস্তানি ঘোরাণি অনুপ্রতানি বা কুত্যানি যেবু তেখ্বি গৃহেয়ু॥ ২০॥

क्रेयदत हेट्स ॥ २२ ॥

सूत्राः (श्रीतिखाः। আশিষः কাম।ন্। বিট্পতয়ো রাজান:। বনিজাং পতয়ো বা। বিজেরিভা: পুরোহিতৈরজা:॥ ২২॥ প্রার্থি কুডা: ক্রীড়া বর্ণয়ভি এবং বনমিতি স্থাভি:। বর্ষিষ্ঠং সমৃদ্ধং॥ ২৩॥

## देवक्षवरंजावनी ।

অশাস্তানি তরক্ষাতিশবেন মুহং পতত্তি রোধাংদি বেষু। সারসাং অনামৈর থ্যাতাং পুদ্ধরাজরাং। গ্রাম্যাং অবিবেকিজনাং। অতাপি হ্রাশ্যাং গৃহমের সর্কার্থপ্রদ্নিতি হুইাভিপ্রায়া অতএব যথা নিতরাং বসন্তীতি নিশকার্থং। অতএবাশ্চর্যোণ থেদেন বা অক হেরাল্যিতি ॥ ২০ ॥

ঈশ্বর ইত্যতিবৃষ্ট্যা দৈবেভাভিপ্রায়েণ। তদংশেনৈব ভদ্য পাষ্ডি স্থানীয়তা॥২১॥

চ পুন: অনবচ্ছিরবর্ধানস্করং। অথেতি পাঠেছপি সএবার্থঃ। ভূতেভাঃ কালে কালে যোগাং যোগাং কালং প্রাপ্যান্তং জলং দছরিতি বর্ধাস্তে জলস্ফোপাদেয়বাদমূতশব্দন্যাদঃ। এবং বিশব্দো বিশিষ্টার্থো জ্ঞেরঃ। বিজ্ঞৈ প্রেরিতা বিট্পত্য ইত্যবয়:॥ ২২॥ এবং বর্ধাকালং বর্ণায়িত্বা তৎফলং প্রীভগবতঃ ক্রীড়াবিশেষং বক্ষায়াদৌ বনপ্রবেশমাহ এবমিতি উক্তপ্রকারেণ যথা যথাহং বর্ণিতবান্তথা বর্ণায়িত্বতার্থঃ। তদমুসারেণেবাহমবর্ণয়মিতি ভাবঃ শ্রীমুধশোভালোভেন॥

ক্ৰীভানাহ ধেনৰ ইতি বড়ভি:। মলগামিন্যোহপি প্ৰীত্যাহ্তাঃ প্ৰীত্যৈৰ জ্ৰুতং বযুক্তেতাৰয়ঃ। প্ৰীতৌ লিঙ্গং স্ত্তস্তনা ইতি।

## ক্রমসন্দর্ভ:।

সার্বাঃ পু্ছরাহ্বয়াঃ অশান্তানি তর্পাতিশ্রেন মুহঃ পত্তি রোধাংসি নেষু। দ্বিজঃ প্রেরিতা বিশ্বত ইভাষ্যঃ ॥ ২০।২১।২২।২৩ ॥

## क्षिविधनाथहळवळी।

অশাস্তানি পদ্ধকণ্টকভঙ্গুর্বাদিদোবযুক্তানি রোধাংসি তটানি যেবাং তেম্বপি ন্যুনি তরামেবাসন্। ইয়ং হেয়ে॥ ২০॥ ঈশ্বরে ঈশ্বর্ডাভিমানবশাদ্তিবধোপদ্রবং কুর্বতি সতি । ইক্স ইতিকলিসাম্যমিয়ং হেয়া॥ ২১॥

হুরা: প্রেরিডা:। আশিষ: কামান্। বিট্পতয়ে। রাজানো বনিজাং পতয়ে। বা। দিজৈবিথৈরীরিডা: প্রেরিডা ইতি রাজভিকপাদেরা॥২২ ব্রা বণ্রিত্বা তাদাত্বিশীং লীলাং ব্র্য়তি এবমিতি সপ্তভি:। বর্ষিঠং সমৃত্তং ॥

স্তস্তনীঃ স্তস্তন্য ইতি প্রীতিচিহ্ণ ॥ ২৩ ॥

যজপ তুরাশয় গ্রাম্য পুরুষেরা যাহাতে ঘোরতর কৃত্য দেদীপ্যমান,তাদৃশ গৃহেও বাদ করে,তজপ চক্রবাকগণ যে সমুদায় সরোবারের তট ঘোরপঙ্ক ও কণ্টকযুক্ত, তাহাতেও বাদ করিয়া রহিল ॥ ২০॥

রাজন্! এইকালে দেবরাজ অনবরত বারিবর্ষণে প্রস্তুত হইলে জ্লপ্রবাহ সকল সেই প্রকারেই সৈতৃতেদ আরম্ভ করিল, যেমন কলিযুগে পাষ্ডুদিগের কুতর্কবাক্য বেদমার্গকে ভ্যাকরে॥ ২১॥

যেমন রাজগণ পুরোহিতদিগের কথিত বাক্যাবলী কালে২ গ্রহণ করেন তক্রপ মেঘগণ কালে কালে বায়ুকর্ত্বক প্রেরিত হইয়া প্রাণিগণের প্রতি অয়ুতবর্ষণ করিতে লাগিল ॥ ২২ ॥

হে রাজন্! এই প্রকার বর্ষার সময় জ্রীষ্টা করিবার মানদে গো এবং গোপালগবে পরির্ভ হইয়া বলদেবের সহিত ভূগবান্ প্রাকৃষ্ণ পক খর্জনুর ও পক জন্মবিশিষ্ট এক বিপিনে প্রবেশ করিলেন। यत्नीक्षमः প্রমূদিতা বনরাজীম ধুচ্যুতঃ। জলধারা গিরেন দিদাসরা দদৃশে গুহাঃ।
কচিম্বনস্পতিকোড়ে গুহায়াকাভিবর্ষতি। নির্বিশন্ ভগবান্ রেমে কন্দমূলফলাশনঃ।
দধ্যোদনমূপানীতং শিলায়াং দলিলান্তিকে। সম্ভোজনীয়ের্ভুজে গোপৈঃ সক্ষর্ণাশ্বিতঃ।
শাদ্ধশাপ্রি দংবিশ্য চর্কতো মীলিতেক্ষণান্। তৃপ্তান্ র্যান্ বংসতরান্ গাশ্চ স্বোধোভরশ্রমাঃ।

## शिवत्रवामी।

বনৌকসং প্লিনীং প্রদ্দিতাং ভগৰান্দ্দিত থা বনরাজী ম ধুচাতো মধুপ্রবাং দল্লে গিরেং সকাশাজ্ঞ লধারাণ্চ তাসাং নাদা-দাসরা নিকটবর্তিনী প্রভাগে যথা। বনৌকসং প্রমুদিতা আসন্তথা বনরাজীব নরাজরে। মধুচাত আসন্ গিরেজলধারাণ্চাসন্ তানেবস্থৃতান্ আদিদ্লে স্ক্তো দদ্শি ভগবান্। তথা জলধারাণাং নাদানগৃহাণ্চেতি॥ ২৪ ৪

## देवकवरजावनी।

ভনীরিতি পাঠে স্তত্তন্য ইতি প্রার্ট্কালে বিলেষভো জ্ঞানিসম্পদ্ধা শোভাবিলেষং ভতত্ত্বাগানিসম্পত্তী অপি নিগংপ্রেমবিলেষ-শ্চ ক্রীড়াপরিকরক্ষেন দর্শিতঃ ॥২৩॥

বনৌক্ষঃ পুবিন্যাদীন্ শুহানাং দৰ্শনে নাদ্য্য হৈছুতা দূৰবৰ্তিনীনামপি ভ্ণাদিতিরা**ছেয়ানাম**পি তাসাং প্রতিশ্বস্থাদয়েনাভিব্যক্ষে। দদ্শে দদ্শি ,

কচিৎ কলিংলিৎ কণাচিমা তগবানপীতি। অহো অস্যা লীলাযা: পরমমাধ্র্যানিতি ভাব:। কলম্লরোর্বর্জুলদীর্ঘতাভ্যাং ভেলো লোকপ্রসিম:। তয়ো: প্রার্থি কোমলম্বাদিনা উপাদেয়ম্বাৎ ফলত: প্রাতিক্রিশ:॥

উপানীতং অগৃহজনৈব স্থিক কৰিব। স্থীপং প্রাপিতং সভোজনীয়েঃ সহ ভোজনিত হৈয়ে আভীয়েঃ সহ। সংবাদাদিশ কবৎ সং-শব্দোহত সহার্থঃ। সভুজাতে এতিরিতি তৈঃ তেমনৈঃ স্তেতি বা। স্কর্ষণ ইতি তত্র স্থামেল্যাভিপ্রাবেণ ॥

শাঘল ইতি যুগাকং। চর্কান্তঃ রোমহার্মানাং। নিরীক্ষান্তি পরেণাররঃ ॥

## ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তত্র চ ক্লোটা বনৌকস:। প্রিলী: প্রম্দিতা: দদ্শে দদর্শ। বনরাজীর ধুচ্যুত: মধুনাং চ্যুৎ ক্লবণং যাত্র তথাত্তা দদ্শ গিরে: স্কাশাজ্জবধারা দূরবর্ত্তিনীরপি নাদাকেতোর্গিয়া নিকটবর্ত্তিনী দদেশ গুহান্চ দদশ্॥

মেণেংভিতো বর্ষতি সতি বৃক্জোড়ে শুহারাং বা নিংশেহেণ জ্তনভিক্ষতা বিশন্ জাবিশন্ কল্ম্লয়োব প্রিল বলীর্ঘ হাভাগং ভেগো জ্ঞের: ৪

উপানীতং ছাক ইত্যাখ্যমা অসিদ্ধং পৃথন্ধনৈঃ আপিতং শিলাদাং স্বিনাতিক ইত্যাদ্যপি কুওডটে ভোজনহুলো৷ দৃশাতে সইর্জ-রুপি জনৈঃ ॥ ২৪ ॥

স্তনভরে মন্দর্গামিনী ধেনু সকল শ্রীকৃঞ্চকর্তৃক আছুত হইয়া সত্তর সঙ্গে ২ চলিল কিন্তু তাহাদের স্তন হইতে ছগ্ন গলিয়া পড়িতে লাগিল॥ ২০॥

ছে কোরব্য! দেই বিপিন মধ্যে বৃক্ষ সকল প্রাঞ্জিত, বনরাজী মধুক্ষরণশীল এবং পর্বাত হইতে জলধারা পতিত হইতেছিল। শ্রীকৃষ্ণ চারিদিকেই সে সকল দেখিতে পাইলেন। তথায় জলধারার ধ্বনিতে গুছা সকল শব্দায়গান হইতেছিল। সে যাছা হউক, বনমধ্যে খ্যন বারিবর্ষণ হইল, তথন শ্রীকৃষ্ণ কোথাও বৃক্ষসূলে, কোথাও বা গুছামধ্যে অবঁছান করিলেন আর কল্দ সূল ও ফলমাত্র আহার করিয়া বেড়াইলেন। অপর সমীপে যে সকল দ্ধি অন্ন আনীত হইল জল সন্নিছিত শিলার উপর বিসিয়া সমভিব্যাহারি সক্ষরণাদি গোপগণ সহিত তাহা ভোজন করিলেন। হে রাজন্! সেই সময় শান্তলের উপর শ্যান ইইয়া নয়ন-নিদীলনপূর্বাক পরিতৃথ ব্য ও বংসতর তথা স্তনভরাক্রান্ত গাভী-

প্রারট্ প্রিয়ঞ্চ তাং বীক্ষ্য সর্বকালস্থাবহাং। ভগবান্ পূজয়াঞ্চক আত্মশৃক্ত্যুপর্ংহিতাং ॥২৪॥ এবং নিবদতোন্ত স্মিন্ রামকেশবয়োর্জে। শরৎ সমভবদ্যব্ত্রা অচ্ছাম্ব্ পরুষানিলা॥ ২৫॥ শরদা নীরজোৎপত্যা নীরাণি প্রকৃতিং যয়ুং। ভাষীনামিৰ চেতাংসি পুনর্যোগনিষেবয়া॥ ২৬॥ ব্যোমোহব্ত্রং ভূতশাবল্যং ভূবঃ পস্কমপাং মলং। শরক্ষহারাশ্রমিণাং কৃষ্ণে ভক্তির্যাহশুভং।।২৭

## बीधवयामी।

শরদং ৰণ্যতি এবং নিবসতোরিতাষ্টাদশভিঃ। বিগতানি অব্জাণি যস্যাং সা অচহানি অসূনি মন্যাং। অপ্রুষ্ণ শান্তোহনিলো যস্যাং সা চ সা চ ॥ ২৫ ॥

নীরজানাম্ৎপত্তি র্যয়া তয়া শরদা ক্রতয়া নীরজানাম্ৎপত্ত্যা বা॥ ২৬ ॥ ব্যোম ইতি ব্যোমাদীনাং চতুর্গাং চতুরো মলান্ শরদহরৎ। আঁশ্রমিণাং চতুর্গাং ক্লফে জাতা ভক্তি র্যথা অঙ্ভমত্থ্যং হরতি। তথাহি

## বৈষ্ণবভোষণী।

তত্তাপি স্থলীলাযোগ্যতাপাদনার্থমাত্মশক্ত্যাহলাদিনীনায়্যা উপর্ংহিতাং। অতঃ পুজয়াঞ্চক্তে সাধু অমন্যত। অন্যচ্চ তত্ত ক্রীড়াদিকমুক্তং শ্রীপরাশরেণ। উন্নতশিধিদারকে তত্মিন্ কালে মহাবনে। ক্রফরামৌ মুদা মৃত্তৌ গোপালৈঃ সহ চেরতুঃ। কচিনেগাভি
সমং রম্যাং গেয়তালরতার্তৌ। চেরতুঃ কচিদিত্যর্থং শীতবৃক্ষতলাশ্রের। কচিৎ কদৰ্যক্চিত্রৌ মায়ুরস্রগলক্ষ্তৌ। বিচিত্রৌ কচিদাসাতাং বিবিধৈগিরিধাত্তিঃ। পর্ণশ্যাম্বুর্ধৌ চ কচিন্নিজান্তরৈষিণা। কচিদগর্জতি জীমুতে হাহাকাররবৈষিণাবিতি॥ ২৪॥

এবমুক্তপ্রার্ট্ক্রীড়াবিশেষেণ তত্র এজে নিতরাং প্রমাসক্তা বসতোরিতি। তত্র শর্জ্রীবিশেষস্পাতিহেত্রক:। অত: সম্যগ্র ভবং॥ ২৫॥

তেষামুত্তরপক্ষে নীরজোৎপত্ত্যা সহ ইতি যোজাং ॥ ২৬॥

যথা ক্বফে জাতা ভক্তিরেকা সর্বেষামেবাশ্রমিণামশুভং মহাকষ্টময়ং তত্তদ্বশাস্থানং হরতি। তাবৎ কর্মাণি কুর্বীত ন নিবিদ্যেত যাবতা। মৎকথাশ্রবণাদৌ বা শ্রদ্ধা যাবল্ল জায়ত ইত্যাদেং। তথা শর্দপ্যেকা ব্যোমাদেরাব্রক্তাৎ ক্টময়মব্লাদিকং জহার।

## क्रममन्द्रः।

তত্রাপি স্বলীলাযোগ্যাযোগ্যতাপাদনার্থমাত্মশক্ত্যা হ্লাদিনীনায়্যা উপরুহিতং ॥२৪। ২৫। ২৬॥

ব্যোমোহব্ত্রমিতি। সাধনক্রেশেন তুল্যং ক্লেশভাত্ত ক্লেশেহধিকভরতেষামব্যক্তসক্তচেতসামিত্যক্ত শ্রীগীতাক্তঃ॥২৭।২৮।২৯।৩০ ৩১। ৩২।৩৩।

## औविश्वनाथठकवर्ती।

শরদং বর্ণরত্যেবং নিবসতোরিত্যপ্রীদশভিঃ স্বজানি অস্থান যাগাং অপরবো হনিলো যাগাং সা চ সা চ সা । ২৫ ॥
নীরজানামুংপত্তির্স্যাং তয়া শরদা হেতুনা। অত্র ভক্তিবোগনিবেবয়া সাম্যং শরদোভগবংক্রণেন সাম্যং নীরজস্মেতীয়মুপাদেয়া ॥২৬
ব্যায় ইতি ব্যামাদীনাং চতুর্বাং চতুরোমলান্ শরজ্জার। যথা আশ্রমিণাং চতুর্বাং সংসক্ষপ্রাহ্ছু তা ভক্তিরভঙং আশ্রমান্থসকল রোমন্থন করিতেছিল । ভগবান্ তাহাদিগকে সর্বাকানীন স্থাবহ দেখিতে লাগিলেন। পরে
বর্ষার শোভা নয়নগোচর হওয়াতে তিনি আপনার শক্তিতে বর্দ্ধিত ঐ শ্রীর সমাদ্র করিলেন ॥ ২৪ ॥

হে মহারাজ ! রামকৃষ্ণ ছুইজনে এই প্রকারে রুশাবনে বাস করিতে থাকিলে ক্রমে ২ বর্ষা অতীত ও শরৎ সমাগত হইল। অতএব মেঘ অপগত, জলাশয় সচছ এবং পবন অপরুষ হইয়া উঠিল ॥ ২৫ ॥ শরৎকালে স্বভাবতঃ জলাশয় সকলে কমল উৎপন্ন হয়, স্বতরাং ঐ কমল উপস্থিত হওয়াতে সম্দায় জলাশয়ের জল সেই রূপে নিজস্বভাব প্রাণ্ড হইল, যেমন ভ্রম্ট ব্যক্তিদের চিত্ত যোগসেবা করি-লেই পুনরায় স্বীয় প্রকৃতি প্রাণ্ড হয় ॥ ২৬ ॥

অপর, যেমন একুত্তের প্রতি উৎপন্না ভক্তি ব্রহ্মচারী, গৃহী, বানপ্রস্থ, ভিক্ষু, এই প্রকার আশ্রমি-

সর্বস্থাং জলদা হিছা বিরেজুং শুভারর্জসং। যথা ত্যক্তিষণাং শাস্তা মুনয়োমুক্তকি লিষাং।। ২৮।। গিরয়ো মুমুচুক্তোয়ং কচিন্ন মুমুচুং শিবং। যথা জ্ঞানামৃতং কালে জ্ঞানিনো দদতে ন বা॥ ২৯।।

## श्रिक्षामी।

ব্রদ্ধচারিণা শুর্কর্থোদকাহরণকুন্তং যথা ভক্তি ইরতি তয়া পূর্ণস্য তেনামুপ্যোগাৎ শুক্তিরপি কুতার্থস্য তস্যা নিয়োগাৎ এবং ব্যামঃ অব্ লং শরজহার। যথা চ গৃহিণোহপত্যাদিসাম্বর্যাং ভক্তি হ্রতি বিবিক্তবাসকচ্যৎপত্তে:। তথা ভূতানাং শাবল্যং সাম্বর্যাং শরজহাব বর্ষাস্থ হি বৃষ্টিভিয়া সন্ত্বা নিবসন্তি। যথা চ বৃক্তম্য মলধারণক্লেশং ভক্তিহ্রতি এবং ভূবং পদ্ধং শরং। যথা চ যতীনাং কামাদিবাসনানলং শীক্ষে ভক্তি হ্রতি। এবং অপাং মলং শর্দিতি॥ ২৭ ॥

তাকৈষণা: তাক্তা: পুত্ৰবিত্তলোকৈষণা থৈতে॥ ২৮॥

গিরম ইতি। অমং ভাব:। নছ পাধ্যারা: কর্মবিদ্যামিব জ্ঞানিনো জ্ঞানামৃতং সর্বতো বিতরস্তি অপিতু রূপয়া কচিদেব। এবং গিরম:

## বৈষ্ণবতোষণী।

এবং ক্টময়ত্বেনৈব সামাং। ক্রমরীত্যা তত্তবিশেষয়োঃ কথকিং সাম্য্যাথ্যায়াং ক্ষপি লক্ষণাপরস্পর্যা তত্তদহুষ্ঠানসামাত্য এব পর্যাবসামাং। কামাদিবাসনামাং গুরুবেদাবিদাশ্রমান্তঃপাভাভাবাত্তবাসক্ষর্যাথ্যমনিষ্মাদাহুষ্ঠান এব তাংপ্র্যাং। কিং বহনা বতীনামব্যক্রাসক্ষতিতাদিব্যপি ক্টমেব। ক্রেশােহ্ধিক্তরত্তেবামব্যক্রাসক্তচেত্সাং ইতি শ্রীভগবলগীতাভাঃ। অনাতঃ। তত্ত্বর্থিদিকাহবণকুত্তমিতি গুর্ব্বিম্পককুত্তাহরণাক্র্থমিত্যর্থ। কামাদিবাসনামলমিতি তত্তাসনারপাক্র্থমিত্যর্থ। এবং সাক্ষ্যান্দ্রিক্তঃ। ব্যাদিবাসনামলমিতি ত্তাসনারপাক্র্থমিত্যর্থ। কিন্তাশ্রমিত্যর্থ। কিন্তাশ্রমিত্যর্থ। কিন্তাশ্রমিত্যর্থ। কিন্তাশ্রমিত্যর্থ।

কিবিষং সংসারহেতুকর্মতত্ত্যাগাদেব ত্যকৈষণাঃ তত্মাদেব শাস্তা অকুভিত্তিতাঃ ॥ ২৮ ॥

গিরম ইতি তৈব্যাখ্যাতং। তত্ত্ব ক্লারাং হেতুং পাত্রসাদগুণ্যং জেয়ং। গিরিপক্ষেহিপ গদাযমুনাদিখাতরেখাত্বেব নতু ক্লণাত-

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ষ্ঠেয় কুত্যরূপং অমন্ধলং ছঃখং যথা হরতি। ভক্তিমতাং বর্ণাশ্রমধর্মানধিকারাদের তত্তদকরণাম। তথাহি অন্ধচারিণাং কর্মি ওরপ-সভিপ্রাপ্তগোচারণাদিকেশং ভক্তির্যথা হরতি তথা শরং ব্যোমোহব্লং আবরকং মেদং। অভ্যমিতি চ গাঠঃ। মথা চ গৃহিণঃ শ্রাদ্ধাদি বিধিপ্রাপ্তকুট্থাদিসান্ধর্যক্রেশং ভক্তিহুরিতি। তথা শরৎ ভূতানাং সাবলাঃ বর্ষায়্র বৃষ্টিভয়াদেকতা বসতাং সম্মন্ধং হরতি শবদারন্ত-এব তেষাং পৃথক্ পৃথক্ স্থানগননাং। যথাচ বনস্থস্য মলধারণক্রেশং ভক্তি হুরিতি এবং ভূবং পঙ্কং শরং। যথাচ যতীনাং প্রক্ষীবৈক্য-ভাবনাক্রেশরপং মালিনাং ভক্তিহুরিতি। ক্লেশোহধিকতরন্তেশামব্যকাসক্তচেতসামিতি গীতোক্তো। এবমপাং মলং শর্দিত্যপাদেয়া ॥২৭ ভাকেরণান্ত্যকাং প্রত্বিভলোকৈষণা থৈন্তে। ইতীয়মুপাদেয়া॥ ২৮॥

জ্ঞানানুতং ভগ্রত্তবোপদেশং জ্ঞানিনো নারণভরতপ্রহ্লাদাদয়ং। ব্যাধর্ছগ্ণদৈত্যবাণকাদিরু দদতে অন্যত্র ন দদতে ইতি

দিগেরই অশুভ হরণ করে, তাহার ন্যায় শরৎ ঋতু আবিভূতি হইয়া আকাশাদি চারিভূতের চারিটা মল অপহরণ করিল। অর্থাৎ যজ্ঞপ ব্রহ্মচারির ভক্তি জন্মিলে তাঁহার গুরুর নিমিত্ত উদকাহরণ কর্ম্ম নির্ভ হয়, কারণ ভক্তিতে সন্তুট হইয়া কৃতার্থ শিষ্যকে গুরু আর কোন কর্মে নিয়োগ করেন না, তেমনি শরৎ প্রবৃত্ত হইলে আকাশের মেঘ সকল নির্ভ হইল। এবুং যজ্ঞপ গৃহস্থাশ্রমির নির্জনবাদে অভিলাধোৎপত্তি হেতু পু্লাদির সম্বর্তা অপগত হয়, তজ্ঞপ, শরদাগমে ভূতগণের সঙ্করতা অপগত হইল। অপর, যেমন বানপ্রশ্রশ্রমির মলধারণজন্য ক্রেশ হরিভক্তির প্রভাবে বিনফ হয়,তবৎ শরহ প্রতি হেতু ভূমির কর্জ্ম বিনফ হইতে আরম্ভ হইল, আর যেমন যতিদের কামাদিবাসনারপ মল কৃষ্ণভক্তিতে দ্রীভূত হয়, তবং শরদাগমে জলের আবিলতা দ্রীভূত হইল॥ ২৭॥

এই কালে মেঘগণ সর্বাস্থ পরিত্যাগপূর্বাক শুভাবর্ণ হইয়া তজ্ঞপ বিরাজমান হুইল,যেগন পাপশূন্য মুনিগণ পুত্রও ধনাদিবিষয়ক বাসনা পরিত্যাগ করত শাস্তভাবে শোভা পাইয়া থাকেন ॥ ২৮॥ •

এই সময় পর্বতগণ দেইরূপে কোথাও নির্মাল জল বর্ষণ করিতে লাগিল, কোথাও বা কিছুই

নৈবাবিদন্ ক্ষীয়মাণং জলং গাধজলেচরাঃ। যথায়ুরশ্বহং ক্ষয়ং নরা মৃঢ়াঃ কুটুন্থিনঃ।। ৩০।। গাধবারিচরাস্তাপমিনন্দন্ শরদর্কজং। যথা দরিদ্রঃ কুপণঃ কুটুন্থাবিজিতেন্দ্রিয়ঃ।। ৩১।। শনৈঃ শনৈর্জন্তঃ পক্ষং স্থলান্যামঞ্জ বীরুধঃ। যথাহং মমতাং ধীরাঃ শরীরাদিয়নাত্মস্থা। ৩২ !!

## শ্রীধরস্বামী।

শিবং নির্মালং ভোমং কচিলুমুচু: কচিল্ল ন পুন: প্রার্মীব সর্বাত ইতি ॥ ২৯ ॥

গাধে কুদ্রে জলে চরস্তীতি তথা নীনাদয়: ॥ ৩০ ॥

অবিন্দন্ লেভিরে ॥ ৩১॥

শনৈঃ শনৈরিতি অত্র চ মমতানিব পঙ্কং অহস্তামিব আমতাং অপক্তাং ভছরিতি॥ ৩২ ৪

## देवकवटडावनी।

রেথাস্বিতি ক্চিদ্রণ হুণাং। মোচনবিষয়দ্যৈর উভয়ত্র বিবঙ্গিতবং নতু ডদাশ্রন্তাতি॥ ২৯ ॥

গাধজলচরত্বেন জলক্ষ্মজ্ঞানহোগ্যভোজা। তথাপি নৈবাবিদন্। দৃষ্টাত্তে চ কুটুবিজেন কুটুম্মরণাদিদর্শনাদায়; ক্ষ্মজ্ঞানং স্ভাবিত্যের ॥ ৩০ ॥

নচ তেষাং অলক্ষ্মানেন ভয়াদিরাহিত্যাং স্থাং কিন্ত হংখা মহৎ স্যাদেবেত্যাহ গাধেতি। শরদর্কম্পনিতি তাপস্য তৈক্ষ্মানুকাং। দবিদ্যোনিধ নিস্তত্ত্ব কুপণা ধনার্থোদ্যমক্লিইন্তত্ত্বাপি কুটুখী স্ত্রীপুলাদিভরণার্থবহলধনাপেক্ষক ইত্যর্থা। তত্ত্বাপ্যবিজিতে ক্রিয়া লোভাদি-পর ইত্যর্থা। তাপাং ত্রিবিধাং লভাতে ॥ ৩২ ॥

মমতায়া বাজুবিৰয়ভাৎ পজেনাহস্তায়াশ্চাস্তরবিষয়ভাদামতয়া সাম্যং॥ ৩২ ॥

## শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ক্তার্থীবৃভ্ষতিয়বোপাদের।। তেখাং গিরীপাঞ্চ স্বভাব এবায়মচিন্তান্তানাত্র বৃক্তি র্যোজনীয়া। পাত্রগালাুখ্যাদেহে ভূতে তেখাং ভূল্য-দর্শিন্তং তৎক্রপাশান্ত নিক্রপাধিন্তং ব্যাহতং স্যাদিত্যবধেষং ॥ ২৯॥

গাধে হরপ্রমাণে জলে চবন্তীতি তে মীনাদয়:। ইতীয়ং হেরা ॥ ৩০ ॥

অবিন্দন্ লেভিবে যথা দরিতা ইত্যতঃ পূর্কাশোকে সম্পানাঃ কুটুদ্বিনো জ্বেরাঃ। যথা। তেবানেব তাপং বর্ণয়তি গাবেতি ॥ ৩১ ॥ আত্মা ভক্তাপুক্লো জীবাত্মা প্রমাত্মা কৃষ্ণত তথাতিরিকেন্ত্ শ্রীবাদির্। তত্র তত্র তু অহস্তামনতে ব্যক্তন ভাবরিবেতি ভাবঃ। ইত্যুপাদেরা ॥ ৩২ ॥

করিল না, যেমন জ্ঞানিগণ ক্লপাপরবশ হইয়া কোন ব্যক্তির প্রতি জ্ঞানামৃত বিতরণ করেন, কাহাকেও বা কিছুই প্রদান করেন না, অর্থাৎ উপাধ্যায়গণের কর্মবিদ্যা উপদেশের ন্যায় দর্বত্ত জ্ঞানিরা যেরূপ জ্ঞানামৃত বিতরণ করেন না, তত্রূপ বর্ধাকালের ন্যায় শরৎকালে পর্বত্যণ দর্বত্ত নির্মাল বারিবর্ষণ করিল না॥ ২৯॥

এই কালে দিনকরের প্রাঞ্চর কিরণে প্রতিদিন জলাশয় সকলের জল পরিক্ষীণ হইতে আরম্ভ হইল কিস্তু যে সকল মীনাদি অন্তাল্ল জলে চরিয়া বেড়ায় তাহারা তদ্বৎ তাহা জানিতে পারিল না যেমন কুটুম্বাসক্ত ও মৃচ্ মানবগণ প্রতিদিন পরিক্ষীয়মাণ পরমায়ু জানিতে পারে না॥ ৩০॥

পরস্তা, যেমন অজিতেন্দ্রিয় দরিদ্র ক্বপণ কুটুম্বী জন সন্তাপ প্রাপ্ত হয় তাহার ন্যায় অল্ল জলচর মংস্যাদি জন্তগণ শরৎকালীন রবি জন্য সন্তাপ প্রাপ্ত হইল॥ ৩১॥

যেমন ধীর পুরুষেরা অল্লে ২ অনাত্ম (শরীরাদিতে)''মমতা ও অহস্তা' ইত্যাদি ভেদবৃদ্ধি পরিত্যাগ করিয়া থাকেন তেমনি শরৎকালের আগমনে স্থলী সকল মমতার ন্যায় পঞ্চ আর লতা সকল সহস্তার ন্যায় অপকতা অল্লে ২ পরিত্যাগ করিল ॥৩২॥ নিশ্চলামুরভূত্ঞীং সমুদ্র: শরদাগগে। আত্মসুপরতে সম্যাধ্রনির্পিরতাগমঃ।। ৩০।। কেলারেভ্যস্তপোহগৃহ্ন কর্ষকা দৃঢ়দেতৃভিঃ। যথা প্রাণেঃ অবজ্জানং তর্মিরোধেন যোগিনঃ॥৩৪॥ শরদর্কাংশুজাংস্তাপান্ ভূতানামুভূপোহহরং। দেহাভিমানজং বোধো মুকুন্দো অজ্যোষিতাং॥৩৫॥

## **अधितवागी**

আর্থ্যপরতে ত্যক্তক্রিয়ে মুনিরিব নিশ্চলাখু: স এব ব্যুপরতাগম: নির্ভবেদণোষ ইব ভূফীমভূদিতি ॥ ৩০ ॥
কেদারেভ্য: বদ্ধনেভূশালিক্তেভ্যো খৃট্চ) সেভূভি: অপোহগৃহন্ ততঃ পরং বৃষ্ট্যভাবাং । প্রাণৈরিন্তিয়ে: । ভ্রিরোধেন ইক্রিয়প্রতাহারেণ ॥ ২৪ ॥

দেহাভিমানজং বোধ ইব। ব্ৰজ্যোষিতাং মুকুল ইব চেতাৰ্থ:॥ ৩৫॥

## देवश्वदावावनी।

সমূজ ইতি পূর্বেজিসির্বং। সমাশুপরতে পরিতাক্তিরে। আয়নি স্বন্ধি। অন্যতঃ। তত্ত স এব সমূজ এব তৃফী-বভূবেতাযয়ঃ। ব্পেরতেত্যাদি হয়ং মুনিবিশেষণং ক্লেরং। বহা। কামাদিভ্যো বিরতে চিত্তে যতো মুনিরাত্মারামঃ অতএব বৃ্পবতাগমঃ গৃহীতমৌন ইত্যর্থঃ॥ ৩৩॥

ভাষা: সেতৃভি: কেদারেতাঃ প্রবন্ধীরপ: দৃট্টে: সেতৃভিরগৃহন্ অরকন্। প্রাটেণরিক্সিটের: ক্ডিতৈ ছবিভূতৈ: স্বেডা: প্রবন্ধানং যথা রক্ষীত্যর্থ:॥ ৩৪॥

শরদিতি লুপ্রোপমেরং। ব্যবহারিকাণাং ভাদৃশতাপ্ছরণে উড়ুপো বিশিষ্টঃ পারমার্থিকানাং বোধ আত্মজানং তদেকামুবক্রানাং এজবোষিতান্ত মুকুন্দ এবেতি ভাদাং বৈশিষ্ট্যং বোষিতং। আসাং তাণ-চানির্ব্ধচনীয়তাবিবক্ষরা প্রসিদ্ধতয়াচামুক্রোহণি কণং ম্থা-শতমিব যাসাং বেন বিনা ভবদিতামুসারেণ ক্লেয়ং। বক্ষাভেচ আহ্রিষ্য ইত্যাদে গোপ্যোহণি ক্লেফ্ডতচেত্স ইতি॥ ৩৫ ।

## ক্রমসন্দর্ভঃ।

কালে প্রাপ্তিসান্ধ্রণাতাবসরে অন্যথা তদভাবে কেদারেভ্যঃ শ্রবস্তীরিতি লিক্সবিপরিণামেন॥ অত্র প্রণালীভিরিতি শেষঃ। শ্রবদিত্যতা চায়ন ইতি শেষঃ॥ ৩৪॥

দেহাভিমানজমিতি শদঃ স্থানে অমাদেশঃ। ব্ৰজ্যোষিভামিতি সন্ধ্যাদিসমূলে দুৰ্শনাদিনা বিরহতাপানিতি ক্ষেত্রং॥ ৩৫। ৩৬। ৩৭॥

## এ বিখনাথচক্রবর্তী।

আৰুমূপরতে ত্যক্তক্রিয়ে সতি নিশ্চলচিত্তো মুনিরিব নিশ্চলাখুঃ সমুদ্রঃ মথুরাপশ্চিমদিশি শাতোবাস ইতি থ্যাতঃ। ব্যুপরতা-গমো নির্ভবেদঘোষো মুনিরিব। তৃক্ষীমিতীয়মুপাদেয়া ॥৩৩॥

কেদারেভাঃ অবস্তীরণঃ দৃট্চঃ সেভ্ভিরগৃত্নন্ ররক্ষঃ। যথা প্রাণৈরিক্সিটারিক্সিয়েক্সেটিভঃ অবজ্ঞানং তেষামিক্রিযাণাং নিবোধেন জাত্যাধারেণেত্যুপাদেরা॥ ৩৪॥

যথা দেহাভিমানজং তাপং বোধ:। যথাচ ব্জংঘাৰিতাং বিরহতাপং মুকুল ইত্যুগাদেয়া॥ ৩৫॥

হে রাজন্! আখার ক্রিয়া পরিত্যাগ হইলে মুনি যজ্ঞপ নিশ্চল হর্ম তজ্ঞপ শরদাগমে সাগর নীরব হইয়া উচিল ॥ ৩৩ ॥

অপর যেমন যোগিগণ ইন্দ্রিয়গণ দ্বারা বিগলিত জ্ঞান ইন্দ্রিয়প্রত্যাহরণ করিয়া প্রছণ করেন, এই সময়ে কৃষক লোকেরা তজ্ঞাপ স্বস্থ ক্ষেত্রে দৃঢ়তর সেতু করিয়া সেতুবদ্ধ কেদার হইতে জল প্রহণ করিতে লাগিল ॥ ৩৪ ॥

রজনীযোগে চন্দ্র শরৎকালীন দিনকরজন্য প্রাণিগণের সন্তাপ তদ্বৎ হরণ করিলেন, ষেমূন বোধ (আত্মজ্ঞান) দেহাতিমানজন্য সন্তাপ এবং মুকুন্দ ব্রজাঙ্গনাদের মনস্তাপ হরণ করিয়া থাকেন॥৩৫॥ খনশোভত নিশ্বেথং শর্জমিলতারকং। সত্ত্যুক্তং যথা চিত্তং শব্দব্রহ্মার্থদর্শনং। অথওমণ্ডলো ব্যোহ্মি ররাজোড়ুগুটণঃ শশী। যথা যতুপতিঃ ক্ষোে ব্ঞাচিক্রার্তো ভূবি॥ ৩৬॥ আশ্লিয়্য সমশীতোফং প্রসূনবনমারুতং। জনাস্তাপং জহুর্গোপ্যোন কৃষ্ণহৃতচেত্যঃ॥ ৩৭॥

## शिधप्रयामी।

শবদা বিনলান্তারকা যশ্মিন্ তং। শক্ষ্মপ্রণা বেদ্যার্থান্ পূর্কোত্তরমীমাংদানির্ণীতান্ দর্শয়তীতি তথা তদিব ॥ ৩৬ ॥
সমঃ অন্যাধিকঃ শীতঃ উষ্ণশ্চ তং। নতু গোপ্যঃ ক্ষন্ত্তচেতত্বেন তাদাং শৃত্যুস্থ ইতি। বহা নকার উপমার্থঃ তদা
কৃষ্ত্তিতেস ইতি চেতুস। কৃষ্ণমালিয়া যথেতার্থঃ॥ ৩৭ ॥

## देवक्षवट्यायनी ।

থমিতি থস্য স্থানে চিত্তং জ্ঞেরং। নিশ্বেষতারা: সত্ত্যুক্ত ওং তেন মেঘস্থানীয়রজন্তমোনিষেধাং। শরদ: শক্তর্জ। তারকাণাং তদর্থা: তারকাশক্ষেন্চ চন্দ্র এব মুখ্যবেন গৃহতে। তদীশবাং। তহুক্তং। নক্ষত্রেশঃ ক্ষপাকর ইত্যাদে:। তত্ত চন্দ্রস্থা অন্যেষাং বন্দেহথা ইতি॥

তথৈবাহ অথণ্ডেতি। চক্রদ্য পূর্ণিমাপেক্ষয়া শ্রীক্ষণন্য চ স্বয়ং ভগবত্তাপ্রাকট্যাপেক্ষয়া তত্র যদ্যপি বর্ষাস্থপি শশিনস্তাদৃশন্য সোড়ু-গণন্য স্বত্যো রাজ্যনান্ত্র্যব্যক্তি কিন্তু ঘনাচ্ছন্নতন্ত্রা ন দৃশ্যতে শর্দি তু তদভাবাৎ দৃশ্যতে তথা যহুপতেরপ্যপ্রাকট্যন্যয়াস্থ্যাব্রেণ যোজ্যং। যহুপতিরিত্যধিকোক্ত্যা যহুভিঃ সহ তম্য নিত্যসম্বন্ধো জ্ঞাপাতে। বৃক্তিশন্তনির্দেশোহত্র যহুরু তেবাং প্রাধান্যাপেক্ষয়া॥ ৩৬॥

নতু গোপ্য ইতি বিশেষোক্তিত্তত্ত্ব হৈত্মাহ ক্ষেতি। ততন্তেনোদীপনাং। প্রত্যুতাধিকং তাপং প্রাপুরিত্যর্থঃ। ষধাত্প্রয়োগ-ভনেব স্পষ্টাক্তবান্। যোগিনাং মনসি প্রবিশ্ব সম্পদে কল্পিত্বং আসান্ত মনো হয় বিপদে কলিত্বং যুক্ত এবেতি ভাবঃ। মুক্দো। ব্রজনোধিতামিতি তাসামুত্ররাবন্ধা দুষ্টান্থিতা। অনেন তু পূর্কাবন্ধেতি॥ ৩৭॥

## 🗷 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

শক্তরদ্ধণো বেদস্য অর্থাঃ নিতৃত্তকর্মজ্ঞানভক্তিযোগাঃ তেষাং দর্শনং জ্ঞানং যত্র তং। চিত্তং কীদৃশং স্বযুক্তং সাধুত্যকুং। তত্র থস্য চিত্তেন সাম্যং। নিমে হত্বস্যুক্তত্বেন। শক্তরদ্ধণা শরদঃ। নিতৃত্তকর্মজ্ঞানতপোযোগৈস্তারাণাং। ভক্তিযোগেন তারাপদগম্যস্য তার-কেশস্য। ইতীয়মুপাদেয়া॥

সম্পূর্মগুলব্দ্য স্বয়ং ভগবত্বেন সাম্যং। যহপতিত্বেন ওষধীশব্দ্য বৃষ্ণিচকৈন ন্দোপনন্দবস্থদেবাজ্বাদিভিদ্ শৈ দৃশ্যানাম্ভূগণানামিতীযং ধ্যানার্ম্পাদেয়া॥ ৩৬॥

সম: অন্নাধিক: শীতশোক্ষণত তং। নতু গোপ্যতাপং জহুৰ্যতঃ কৃষ্ণস্ততে সো বিবহিণ্যঃ প্ৰত্যুত তং মাক্তমালিব্য তাপং প্ৰাপ্বেৰেভি ভাবঃ। অন্ত প্ৰক্ৰমভন্নভাবাৰ্থং কেচিদেবং ব্যাচক্ষতে। গোপ্য ইত্যনস্তবং কৃষ্ণমিৰেভি শেষো দেয়ঃ। কীদৃশ্যঃ ন কৃষ্ণ-স্তানি অপি তু স্তান্যেৰ চেতাংসি যাসাং তাঃ। শিরশ্চালনে নঞ্। নৈক্কীর্তিনিক্ষণা ইতি বল্লোপাভাবঃ। চেতশ্চৌরা-ত্তমাহলাং স্বত্তে আদাত্মিৰি তমালিষ্যস্থোহপি তা তাল প্রাপ্রিভি ভাবঃ॥ ৩৭॥

শরদাগম হেতু গগণমণ্ডলে তারকা দকল বিমল হইয়া উঠিল, অতএব যজ্ঞপ শব্দপ্রক্ষের (বেদের) অর্থ অর্থাৎ পূর্ব্বমীমাংসা (কৈমিনিকৃত কর্মকাণ্ড মীমাংসাদর্শন) ও উত্তরমীমাংসা (ব্যাদকৃত জ্ঞানকাণ্ড ব্রহ্মমীমাংসা — শারীরক দূত্র — বেদান্ডদর্শন) দ্বারা নিণীত পদার্থেরদর্শক এবং দত্ত্তণযুক্ত বস্তু শোভা পায় তজ্ঞাপে গগনমণ্ডল এই দময় নিশ্মেঘ হইয়া শোভা পাইতে লাগিল। অপর আকাশের উপর নিশীথনাথ চন্দ্র অথণ্ডমণ্ডল (দম্পূর্ণ) হইয়া নক্ষর্ত্তগণ দহ তজ্ঞপ বিরাজমান হইলেন,যেমন যতুপতি কৃষ্ণ ব্রফিচক্রে পরিবৃত্ত হইয়া ভূমণ্ডলে বিরাজমান হয়েন ॥ ৩৬॥

ি ফেমন কফছতচিত্ত গোপীগণ চিত্ত দারা শ্রীকৃষ্ণকৈ আলিঙ্গন করত সস্তাপ পরিহার করেন, তহুৎ এইকালে জনসকল সমশীতোফ পুম্পবন আশ্লেষ করিয়া তাপ পরিত্যাগ করিতে লাগিল॥ ৩৭ ॥ গাবো মৃগা থগা নার্য্যঃ পুষ্পিণ্যঃ শরদাভবন্। অশ্বীয়মানাঃ স্বর্ধৈঃ ফলৈরীশক্রিয়া ইব ॥ ৩৮ ॥ উদহুষ্যন্ বারিজ্ঞানি সূর্য্যোত্থানে কুমুদ্বিনা। রাজ্ঞা তু নির্ভয়া লোকা আসন্ দৃস্যূন্ বিনা নৃপ ॥৩৯॥ পুর গ্রামেঘাগ্রয়ণৈরিন্দ্রিয়েশ্চ মহোৎসবৈঃ। বভৌ ভূঃ প্রশাস্যাত্যা কলাভ্যাং নিতরাং হরেঃ ॥৪০

## श्रीधतकारी।

পুশিংগোগর্ভিণঃ অধীয়মানাঃ স্বর্থৈঃ স্বণতিভিঃ স্থানছেন্ত্রোহপি বলাদমূগ্য্যমানাঃ। ঈশ্বরারাধনার্থাঃ ক্রিয়া বলাৎ ফলৈরমুগ্য্য-মানাঃ সমস্তভোগগর্ভা যথেতি ॥ ৩৮॥

কুমুৎ কুমুদং কুৎদিতে মূল্যদ্যেতি দক্ষ্যদাম্যং॥ ৩৯॥

আগ্রমণেন বারপ্রাণনাথৈ বৈ দিকৈ:। ঐক্তিয়ৈরিজিয়াথৈ লে কিটক চ মহোৎসবৈ:। কলা আভাং বানক্ষাভাং দর্শনাদি-মহোৎসবাভাং॥ ৪০॥

## देवकवट्यांवनी।

মৃগাং থগা ইত্যার্যং। মৃগ্যং থগাং। অস্তার্তিং। পূশাং ঋতুকারী ধাতুবিশেষত্বদ্বতাং সত্যং অর্ববিং প্রস্ববিংশব্দলাদক স্বস্ব-পুংভিং প্রার্থনাং বিনাপ্যস্বীয়মানা বভূব্য। ফলৈঃ ফলবিংশবদ্যানকৈরপূর্কেকৈরপূর্কেঃ॥ ৩৮॥

বারিজশব্দেনাত্র বার্গ্রবপূপমাত্রং গৃহতে নতু কমলমেব। কুমুদনিষেধাহপপতেরলোকশক্ষবং সামাজনেব আছ্সিতি। কুমুদানাং বাত্রিবিকাশিয়াদয়্যামাং। রাজ্ঞা তভোগানে সিংহাসনপ্রথমারোহে উদ্যমে বা লুপ্রোপমেয়ং। যথা দ্যানিতি বা পাঠ: নূহপতি দুষ্টাস্ত্যাপি দুষ্টাস্তস্চনা॥ ৩৯॥

প্রেষ্ শ্রীমথ্রাদির্ প্রামেধিব প্রামেষ্ শ্রীনন্দাবাদাদিষ্। আগ্রন্থ নিরিতি। নবারং নৈর নন্দারাং নচ স্থে জনার্দিনে। ন ক্রঞ্পেকে ধহবি ত্লায়াং নৈর কার্মেই ইত্যাহ্লারেণ বৃশ্চিকে প্রবেধন্যনন্তর্মের ইনং জ্ঞেয়ং শরন্তর্মাত্ত্বাহার। ঐক্রিস্টিম্নেই মহোংসবৈরিতি ইক্রমিজিয়কামস্থ ইত্যাক্তাং ইক্রপ্রামারৈরিত্যে । কার্ষিক্রমধ্যে হি তৎপূলা ব্রলাদে। প্রমানীৎ। তাং গগ্রিক্র শ্রিক্রতা গোবর্জনপ্রাপ্রপ্রাপ্রক্রিক্রতা গোবর্জনপ্রাপ্রপ্রক্রিক্রতি। ইক্রপ্রায়াক্তা লোকপ্রশারাপ্রক্ষ শ্রিক্রাজন মংস্যাতে। কীন্নী চুহ্বেঃ

## ক্রম**দশর্ভ:**।

মুগা: মুগা: থগা: প্ৰাণ ঋতুমত্য:। তা: স্বুবৈরবশ্য মৰীয়মানা অভবন্ কলৈরীশক্রিশা ইব ॥ ৩৮। ৩৯॥ হবে: কলা পুথী। আভ্যাং রামক্ষণভ্যাং॥ ৪০। ৪১॥

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

মৃগা: মৃগা: থগা: থগা:। স্বৃ**ট্টা: স্বস্থাতি**ভির্**বীয়মানা: অনিচ্ছস্তোহিপি সম্ভোগার্থমসুগ্য্যমানা: ঈশ**ক্রিয়া ভগ্রদাবাধনলকণা: ক্রিয়া নিশ্বামা অপি ফলৈ: স্থভোগাদিভি:॥ ৩৮॥

কুমুৎ কুমুদং কুংসিতেষু মুং যস্যেতি দহ্যসাম্যং॥ ৩৯॥

আগ্রাই নিবারপ্রাশনাথৈ বৈ দিকৈ:। নবারং নৈব নশারাং ন চ হাপ্তে জনার্দনে। ন ক্ষণপক্ষে ধর্মি তুলারাং নৈব কার্মেদিতি ব্যুতে:। প্রবোধন্যক্তে বৃশ্চিকে ইতি জ্ঞেয়ং। শরদস্তহাত্ত্ব শরদ্যবহার:। ইন্দ্রিরিক্সদেবতাকৈ:। ইক্সমণ্ডকাং পূর্কিদ্যাং শরদো বর্ণনিদিং। কীদৃশী ভূ: হরে: কলা শক্তি:। আভ্যাং রামক্কাভ্যাং। বহা। হরেশ্চক্রদ্য কলাভ্যাং শুক্ষিতীয়া সায়মুদিতাভ্যানুং-

রাজন্! শরদাগমে গো, মৃগ ও পক্ষিগণের নারী, ইহারা অনিচ্ছ ইংলেও স্বস্ব পতি কর্ত্ক অনুগ-ম্যমানা হইয়া তদ্বৎ গর্ত্তবাতী হইল,যেমন ঈশ্বরের আরাধনার্থ ক্রিয়া বলে ফলকর্ত্ক অনুগম্যমানা হইয়া ভোগগর্ত্তা হয় অর্থাৎ সমস্ত স্বর্গাদি স্থভোগের অবত্বে প্রদায়িনী হইয়া থাকে॥ ৩৮॥

অপর হে নৃপ! এই সময়ে দিবাকরের প্রকাশে কুমুদ্যতীত যাবতীয় জলজপুষ্প উৎসূল হইল, যেমন রাজার প্রকাশে দহ্য ব্যতীত সমস্ত লোক নির্ভয় ও প্রফুল্ল হয় ॥ ২৯॥ •

এই সময়ে পুর ও গ্রাম সকলে লোকিক বৈদিক মহোৎসবধারা পকশস্যুক্তা ভূমি শোভা পাইতে লাগিল সত্য, কিন্তু ভগবান্ হরির কলা (পৃথিবী) রাম ও কৃষ্ণদারা তাহাদের অত্যর্থ শোভা হইল ॥৪০ বণিঙ্মুনিনৃপস্নাত। নির্গম্যার্থান্ প্রপেদিরে। বর্ষক্ষা যথা সিদ্ধাঃ স্থপিশ্তান্ কাল আগতে ॥ ৪১ ॥ ৯॥ ইতি প্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে রুশাবন-ক্রীড়ায়াং প্রারট্শরঘর্ণনং বিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ২০ ॥ ৯॥

শ্ৰীশুক উবাচ॥

ইখং শরৎ সম্ভব্ধলং পদাকরস্থান্ধিনা। ন্যবিশ্বায়ুনা বাতং দগোগোপালকো বনং॥ ১॥

## শ্রীধরস্বামী

বণিজো বতয়ে। নৃপাঃ লাভকাশ্চ দৃষ্টাদৃষ্টাভাাং বর্ষজ্ঞাঃ সভো নির্ম্যাধীন্ বাণিজালাছন্দ্য দিখিলয়বিদ্যাদীন্ প্রণেদিরে প্রাপ-দ্যস্তু। যথা মল্লোগাদিসিকা স্থায়্য ক্লাঃ কালে স্থাগতে স্থপিওান্ যোগাদিপ্রাপ্যান্ দেবাদিদেহান্॥ ৪১ ॥

॥ • ॥ रेडि मन्य विश्नः॥ • ॥

একবিংশে শরস্ত্রমার্নাবনগতে হরে। তথেপুস্বনমার্কণ্য গোপীভিগতিমীর্যাতে ॥ • ॥

ইখং এবন্ত তং বনং তদেকার শরদা অচ্ছানি জলানি যন্তি ভারুনা বাতমসূগতং ব্যাপ্তমিতার্থ: ॥ ১॥

## देवकवटडावनी।

কলা শক্তি:। আভাাং রামক্ত্বাভাাং॥ ৪ •॥

বর্ষশন্ধঃ কালস্যাপি বাচীতি আয়ুরিতি ব্যাধ্যা। তত্ত জীবনার্যপরিমিত্তৈর ৎস্বৈরুদ্ধা ইত্যর্থঃ। স্নাতকানামুর্যান্তীর্যাচনাদিরূপাঃ সিদাঃ ভক্তাদিসিদ্ধাং স্বপিঙান্ প্রাপ্তব্যপার্ষ্দদেহান্॥ ৪১ ॥

H + H देखि ब्येटेवखवटखांवगाः मनमंग्रिमाः विःनः ॥ • H

এবং শরদং বর্ণরিত্বা বর্ষাবৎ তত্ত্ব প্রীভগ্রৎক্রীড়াবিশেষমার ইখমিত্যাদিনা বাবৎসমাপ্তি। তত্ত্ব তত্ত্পকরত্বেনাদৌ মনোহ্ব

## ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ • ॥ अप्रिम्पास क्रममन्मार्ड विश्मः॥ •॥

যাদবন্ধানেপাপাশ্চ মধ্বত্তেৰাং প্ৰিত্তি জীড়ারাং সামগ্রীবিবক্ষিতং। রেবেণ মধো ঋঁতুরাজ্স্যাপি প্রিত্তি তং-শ্রীবিশ্বনাধচক্রবর্তী।

রাজকীয়পুরুষপ্রভৃতিকৃতৈ র্যথা সৈব ভূরিতি ব্যাথা। যথেতি পদস্য শেবতে প্রক্রমভঙ্গাভাবার্থমুপাদেয়া। হরিশচক্রার্কবাতার্যন্তক-ভেক্যমাহিদিতি মেদিনী॥ ৪০ ॥

বণিজো বতরো নৃপা: মাতকাশ্চ যে বর্ষেণ রষ্টা। ক্রজা আসংজে বর্ষাতে নিক্রমা অথীন্ বাণিজাযাছেন্দ্র দিয়িজরবিদ্যাদীন্ প্রপে দিরে প্রাপদ্যন্ত। যথা সিদ্ধা বর্ষি: বায়ুর্ঘটকৈ ব ৎসরৈ ক্রজা: কালে হত্তসময়ে আরাতে স্বপিণ্ডান্ পার্বদাদিদেহান্ ইয়মুপাদেয়া॥ ৪১॥

॥ • ॥ देखि मात्रार्थमर्निन्ताः दर्थिनाः खळाठिच्नाः । विःलादशाद्वाद्व मन्या मन्नछः मन्छः मछाः ॥ \* ॥

একবিংশে বেণুগীতস্থরাস্তা গোপিকা মূহ:। বেণুর্লাবনমূগী দেব্যাদীনাং যশো জ্ঞ:। ব্দষ্থনং গতঃ ক্লফ্চরিত্রং মধুরং ব্যধাং। প্রেমনেত্রেক্ষিতং গোপ্যো গোঠস্থাদ্বর্ণয়ন্।। শরবং বর্ণয়িত্বা ভাদািজ্বিকীং বেণুগানলীলাং বর্ণয়িষ্যংস্তর্মধুরিমমভিতে বৃলাবনে

হে রাজন্! বণিক্, মুনি, নৃপ ও স্নাতক বিপ্রগণ বর্ধাপ্রযুক্ত একস্থানে অবরুদ্ধ হইয়াছিল এই সময়ে তাহারা স্বস্থ স্থান হইছে নির্গত হইয়া তদ্ধ্রণে আপনং অর্থ অর্থাৎ বণিগ্জনে বাণিজ্ঞা, ঋষিগণ স্বাচ্ছন্দ্য, নৃপগণ দিখিজয় এবং স্নাতকগণ বিদ্যাদি প্রাপ্ত হইতে লাগিল, যেমন মন্ত্রষোগাদি প্রভাবে সিদ্ধ পুরুষেরা আয়ুর দারা অবরুদ্ধ হইয়া থাকেন এবং তৎপরে কাল আগৃত হইলে যোগাদি প্রাপ্য নিজ নিজ দেহ প্রাপ্ত হইয়া থাকেন ॥ ৪১॥

॥ \*॥ इंकि मुनैरम विश्म ॥ \*॥

একবিংশতি অধ্যায়ে শরৎকালীন রম্য রুলাবনে জ্রীক্ষের প্রবেশ এবং তদীয় বংশীধ্বনি প্রবণে গোপীদিগের গান বর্ণন॥ ০॥

. শুক্দেব ক্হিলেন হে রাজনু ! শ্রদাগমে যেখানকার স্লিল নির্মূল হুইল এবং যেখানে পদ্মাক্র- কৃত্যমিতবনরাজিশুপিছেক্দিজকুলঘুইসরঃসরিক্ষহীধং। মধুপতিরবগাহ্য চারয়ন্ গাঃ সহ পশুপাল বলশ্চুকুজ বেণুং॥ ২॥

তৰুজস্ত্ৰিয় আশ্ৰুত্য বেণুগীতং স্মরোদয়ং। কাশ্চিৎ পরোক্ষং কৃষ্ণদ্য স্বদ্ধীভ্যোহ্মবর্ণয়ন্ ॥৩॥

## व्येथत्रवामी ।

ত চ: কুন্ত্মিতাস্থ বনরাজিষু ভূমিণো মতাঃ ভূ**লা বিজাশ্চ তে**ৰাং কুলানি তৈ পুঁৱাঃ স্বাংসি স্বিতো মহীগ্ৰাণ্ড যামিন্ ভছনং শ্ৰীক্ষোহ্বগাস্থ প্ৰতিশ্ৰ বেণ্মবাদ্বং ॥ ২ ॥ भ

তং শ্রীকৃষ্ণস্থ বেণুগীতং স্মরস্ত উদয়ো যসাৎ তং শ্রন্থা পরোক্ষং যথা ভবতি ত্রঝে স্থিতত্বাৎ ॥ ৩॥

## বৈষ্ণ বতোষণী।

জনবায়ুদ্দাশ্রাবেন প্রতণ্ট মনোহরতয়া বনমস্বদ্ধি দার্ছেন ত্রেখনিতি যত্তাহং বর্ণিত্রান্ প্রায়ন্তথা বর্ণন প্রকারেণেতার্থ: । সংগা-গোপালকো মধুপ্তিরিত্যবনঃ। যদ্বা। হৃৎপ্রাপ্তবর্ণনীয় রূপদীবাদিনা ভাববিশেরাবিশ্বাব্যে বিশেষ্যস্যাস্কারণাশকেবর্ণ শ্রীকৃষ্ণ ইতি বাক্যশেষো ক্রেয়ঃ। এব্যত্তা বর্হাপীড়মিত্যাদাবপি। অচ্যুত ইতি পাঠশ্চিংস্থ্পস্য সন্মতঃ অত্ত তু বন্যতি শেষঃ॥১॥

যাদবহালোপাশ্চ মধবং তেষাম্পতিরিতি জীড়ায়াং সামগ্রাং বিবক্ষিতং। স্লেবেণ মধোশ্ব স্থালস্যাপি পতিরিতি তৎপ্রবেশে স্থাপি বনশোভা স্মবিকৈব গশিতা। অবগাহ অভঃপ্রবিশুতি বনস্য স্থাতঃ প্রবেশেন তত্বজানং ধ্বনিতং। সহ পশুপালবলঃ ইত্যায় গাশ্চাবরিভিতানেনৈবাধয়ো যোগ্যঃ নতু চুক্লবেণ্মিতানেন চ। তত্বজ্জির আশ্রত্য ইত্যুত্র বাক্যে পূর্কবৈত্ব সামঞ্জ্যা প্রতিপত্তেঃ। চুক্ল ইত্যন্তর্ভগ্রেধিঃ । ২ ॥

তত্ত্ব তদেব বা কৃষ্ণস্য বেণ্ণীতং অস্থীতানস্তবং নিরম্ভবং বা অবর্ণযন্। তত্ত্ব হেজু: প্রস্যু উদয়: প্রাকটাং যত্র তাদৃশং বথা স্যান্তথা আঞ্চ্য। যদাপি তদা তস্য বেণ্বাদন বিনোদো বর্তত এব তথাপি তদানীং বয়েছিলেরেন প্রলম্মীবিলাসাবলোকনেন চ দীপ্রভাবস্য তাং সমাক্র ইং বেণ্বিশ্বামভাস্যতন্ত্রা তাসাং তাদৃশত্ত আত অতএব তদানীমেব তাভিত্তদ্বর্ণনঞ্চ। আঞ্চ্য দ্বতোছপি স্মাক্ শ্রম। কলভেছপি সর্ম্ব্যাশিস্ভাবাং। ঈ্রম্পি শ্রম্ভতি বা কাল্ডিভাববিশেষ যুক্তাঃ শ্রীরাধাদেব্যাদ্যা ইতি স্ক্র্যাদ্যমেব ব্রদ্ধনীণাং তদ্ববংশি সর্মভ্তমনোহর্মিতি বক্ষ্যাণাশ্রান্যাদীনাং বাৎসল্যাদেরেবাদ্যো নতু প্রস্য ইতি তাং পরিষ্ঠাঃ।

### व्यवनमर्छः।

প্রবেশে মর্কাপি বনশোভা সম্বিকৈব দর্লিতা। ইপ্রমিত্যাদি ॥১।২॥

কান্চিং প্রেরনীরূপান্তা এব ইত্যর্থ:। সর্বান্তান্তেব সর্বভেদা: ॥এ।।।।॥

## क्षीत्रनाथककवर्षी।

প্রথমং কৃষ্ণসা প্রবেশমাই ইঅমিতি। পদ্মাকরস্থানিনেতি পদ্মাকরসম্বন্ধাৎ দৌগদ্ধাং লৈতাক ক্রেয়ং বার্তিরিত্যুক্তে ব্যিন্নতোক-বচনেন বাতস্য মাল্যাক। ্গা গোপালকসহিতঃ। অত মধুপতিরিতি বিশেষাপদেনোত্তরলোকত্তনাম্বরঃ ॥ ১॥ '

কুস্নিতবনরাজিব ওাছিলো নতা ভূপা হিলাত ভেষাং কুলৈছুঁ টানি সরাংসি সরিতে। মহীধাত যথিন তহনং মধুপতিঃ ক্লফা অব-গাছেতি যসাবিগাহনেন বনং শোভতে ভজ মধো বসিস্বভাশি পতিরিভাভিলোভা মেংগে ধ্বনিতা। চুক্ল কুলমানাস। সহ পশুপাল বল ইতি বনাবগাহনে গোচারণে চ সাহিতাং নতু বেণুক্লনে। উত্তরলোকে ক্লফা বেণুগীতনিত্যুকোঃ । ২ ॥

তংকৃষ্ণত বেৰ্ণীতং আশ্ৰন্তা পৰোকং মধা ভাৰথেতি তাসাং ব্ৰঞ্জে হিতৰাং ॥ ৩॥

ন্থান্ধি বায়ু সকলদিকে প্রবাহিত হইল, তাদৃশ বুন্দাবনে গো এবং গোপালগণ সহ জীকুক প্রবেশ করিলেন॥ ১॥

জ্ঞীকৃষ্ণ প্রবিষ্ট ছইয়াই পশুপাল বালক তথা বুক্তন্ত বছ গোচারণ করিতেই বংশীধ্বনি করিলেন, হে মহারাজ! সে লময় তথায় পর্বতে, সরিৎ এবং সরোবর সকলের সমীপত্ব পূল্যিত বনরাজী মধ্যে পক্ষী ও মধুকর নিকর মত হইয়া সধুরস্বরে নব করিতেছিল। ই ।

म याहा रूछेक, अक्टरकृत त्य त्वभूतीक रूड्डिक मनमात छहन रुन्न, दकान र खबात्रना त्यह त्वभू

তম্বণিয়িতুমারকাঃ সারন্তাঃ কৃষ্ণচেষ্টিতং। নাশকন্ সারবেগেন বিক্ষিপ্তমনদো নৃপ ॥ ৪ ॥ বহাপীড়ং নটবরবপুঃ কর্ণগোঃ কর্ণিকারং বিভ্রমান্ত ক্রক্তিপাং বৈজয়ন্তীঞ্চ মালাং।

## द्यीधवयामी।

বিক্ষিপ্রমনসঃ ব্যাকুলচিত্তা: ॥ ৪ ॥

যাদৃক্ শ্রীকৃষ্ণত অরণং তাসাং মনসঃ কোতকং জাতং তদাহ বর্ছাপীড়মিতি। নটবর্রপূর্বি দ্রং বুলাবনং প্রাবিশৎ কথন্তু জং বনং অপদৈর্কিটত রমণং রতিজনকং গোপদুলৈ গীতকীর্ত্তিঃ তথা বর্ষ মন্ত্রমাপীড়ং শিরোভূষণ্ বিদ্রুৎ বর্ষ মাপীড়ো যাত্রিজিতি বপুষো বিশে-

## বৈষ্ণবভোষণী।

অতঃ স্বীয়াড্যঃ দ্বীভ্যঃ শ্রীললিতাদিভ্যঃ নিজমনোবাম্পোদিগরণায় তা অপি শ্রাবয়িতুমিত্যর্থঃ। স্বশক্ষেন সংগ্যাং স্ব ব্যাবর্ত্যক্ষ ইতি। তাসাং পরম শালীনত্বং দশিতং কিং বহুনা তর্ত্তাশি পরোকং অর্থাস্করাচ্ছরং সবিহিত্যং যথা স্যাত্তথা॥ ৩॥

শ্বরোদয়ত ক্রমমেবাই তদিতি। ততাদৃশং পরোকং যথা স্যান্তথা বর্ণয়িতুমারনাঃ আরন্ধবত্যোষ্পি নাশকন্ তথা বর্ণয়িতুং নাপারয়-নিত্যর্থ:। তত্র হেতু: শ্বেতি। কুতঃ ক্রফান্য সর্কচিত্তাকর্ষকত চেষ্টিতং তদ্বেণুগীতময়ং শ্বরত্তঃ অসুসন্ধানাঃ হে নূপেতি। তৎ কথনেন শ্বয়মেব ভাববিশেষ প্রাপ্তা কাতর্যোণ কিয়া তদ্যৈর ভাববিশেষোয়মালকা তৎসম্বরণার্থং স্বোধনং॥ ৪॥

তত্তভাববিশেষাত্তদেব বির্ণোতি বর্হেতি যুক্মকেন। নটবরবপুরিতি। বছত্রীহিরভেদেহলি ভেদোপচারাং। যক্ষান্তালীলৌপরিকং ব্যোগনায়াবলং দর্শয়তা গৃহীতং। বিশাপনং অস্য চ সৌভগর্জেং পরং পদং ভূষণভূষণাঙ্গমিতি ভস্যাণি বিশাপকতা নির্ণয়েন অভাবত-এব তাবত্তন্তবরবপুং সর্বতিদীয়রূপবৃন্দবিষ্ঠিং তত্রাপি তদানীং নটবেশমিতার্থং। যহা। তাদৃশবপুর্বিত্তং শইচ্ছোভাবিভাবেন পুফন্। নটবরেতি পাঠোহলি কচিদ্পতে। কর্ণিকারং পীতবর্ণমুৎপলাকারং পূব্দং বৈলয়জীনামিল পঞ্চবর্ণপুলৈত্র থিতা মালা তাং। বেণোরস্কুণি অধরম্বয়াপুরয়িতি ভত্তা ইব ভয়াদভাপি পরমমোহনত্তং হতিওং। বুলায়া অরণ্যমিতি ভঙ্গধিষ্ঠায়্যা তয়া ঐভিগ্বতঃ ক্রীড়াবিশেষোং হৃততামভিপ্রেত্য বিশেষতঃ সংস্কৃতমিত্যর্থং। অতঃ শৈরসাধারণৈঃ পদৈঃ সূর্ব্রাছিতেঃ রমণং তস্যাং সর্ব্বেয়ঞ্চ স্থাকরং। যহা। অপাদয়োঃ রমণং স্বতঃ প্রির্মেন রম্যকোমলধূলীপুশপরাগপত্রাদিময়ত্বন চ রতিজনকং এজভাপি বুলাবনাস্তর্ক্রিত ভ্রহিরেব বনত্বব্যক্তাপেক্রা বিশেষতঃ তংপদোপাদানং গোপর্কৈর্গীতা কীর্ত্তিং বিচিত্রসৌন্দর্য্যবিদ্বাদ্যাদিপ্রশংসারূপা যভ। যথা। তত্ত ভাববিশেষনালক্য গীতা কীর্তির্গোপনাং যদিন্ তাসাং সাক্ষাদহক্তির জন্ম। মৌক্তিকহারম্বর্ণাঙ্গদাদ্যল্লারস্যাবর্ণনং স্বত-

#### **জীবিখনাথচক্রবর্ত্তী**

তবেণ্গীতং বণিয়তুং আরক্ষাঃ আরক্ষরত্যোহপি বণিয়তুং নাশকন্। তত্র হেতুঃ শ্বরবেগেনেত্যাদি॥ ৪॥

তদৈব তাবাং মনৌবিক্ষেপকশ্বরবেগজনকং ক্রফচেষ্টিতং কিমিত্যপেকারাং প্রীশুক এব সর্বজ্ঞঘাবর্ণরতি। বর্ধনাপীড়ঃ শিরোভ্যণং যত্র তথাভূতং নটবরবপ্রিব্র কর্ণিকারমেকমেব কর্ণমোঃ কদাচিদ্দাকি ইতি শ্বস্ত যৌবনমন্ততামভিব্যঞ্জয়িতৃং। বিভ্রাদিতিতৃ ক্ষচেষ্টিতং তাদামতিশয়েন শ্বরবেগজনকং ভবতি। বৈজ্য়স্তীং পঞ্চবর্পপুশ্প্রথিতাং। বেণ্বাদনম্ৎপ্রেক্ষতে। রন্ধানিতি তেন শ্ববেণ্ং স্বাধরস্থধীয়েব নিশ্ছিত্রীকরেংনীতি ক্রফস্যেচ্ছা। স্বধরস্থধা তু বেণুং নিশ্রাণমিপ সংস্পর্ণেন চেতয়িছা স্বাণীকৃত্য তেন ত্রিজগদপ্রামাদ্য পশ্চাত্তং কঠোরমচেতনস্বভাবসন্ধিকারিণং জ্ঞাছা তদীয়ছিড্রেভ্যো নিঃস্ত্য ব্রন্ধবাদানাং কর্ণদ্বারেণ তন্মনঃ প্রবিশ্ব শংস্কলীকৃত্য তবৈর শ্বস্ক্বিক্রমান্ দর্শশ্বীমাণ্ডে দ্যোতিতং। স্বপদ্বো রাস্লাক্তক্দনাদিতীর্মণং যত্র ভ্লিতি ব্রক্ষাইন্দিষ্টাং প্রাবিশ্ব

গীত শুনিতে পাইয়া পরোক্ষে নিজ ২ স্থীদের নিকট শ্রীক্ষের বিষয় বর্ণন করিতে লাগিলেন ॥ ৩॥ কিন্তু শ্রীক্ষের বিষয় বর্ণন করিতে আরম্ভ করিয়াও তদীয় চেন্টা স্মরণ হওয়াতে গোপীগণ তাহাতে সমর্থ হইলেন না,কারণ শ্রীকৃষ্ণ স্মরণে ভাঁহাদের কামবেগ প্রবল হইল হুতরাং আপন আপন চিত্ত ব্যাকুল হইয়া উঠিল ॥ ৪॥

তে রাজন্। কি প্রকারে প্রীরুষ্ণের স্মরণে ব্রজাঙ্গনাদিগের মন ক্ষুদ্ধ হইল, বলি প্রবণ কর। গোপীরা মনে করিলেন শ্রীকৃষ্ণ নটবর শরীর ধারণ করিয়া স্বীয় পদে অভিত রমণীয় বৃন্দারণ্যে প্রবেশ

রন্ধুনি বেণোরধরস্থ্যা পূর্যন্ গোপর দৈর দারণ্যং স্বপদর্মণং প্রাবিশদ্যীতকীর্তিঃ॥ ৫॥ ইতি বেণুরবং রাজন্ সর্বাভূতমনোহরং। প্রুত্বা বজল্লিয়ঃ সর্বা বর্ণয়স্ত্যোহভিরেভিরে॥ ৬॥ গোপ্য উচুঃ॥
.

অক্ষণুতাং ফলমিদং ন পরং বিদামঃ সখ্যঃ পশূনতু বিবেশয়তো ব্যাস্যোগ

## श्रीभवत्यामी।

ষণং বা। বেণুবাদনমুংপ্রেক্ষাতে রক্ষান্ বেশ্বোরিতি অতো ন্নমধরস্থধৈব পূর্ণা বেণোকচ্চলস্তী সা গীতবং প্রসর্গিত্মহাতীতি ভাবঃ॥৫ অভিবেভিবে বর্ণয়ন্তঃ সত্যঃ পদে পদে প্রমানলমূর্তিং শ্রীকৃষ্ণং পরিব্রুষ্ণতাঃ ॥৬॥

অন্বৰ্ণন্মেৰাহ অক্ষৃত্যমিতি অয়োদশভি:। চকুমতাং তাবদিদমেৰ ফলং প্ৰিয়দৰ্শনং পরং অন্তং ন বিদান: ন বিমুইতার্থ: তচ্চ ফলং স্থিভি: সহ পশূন্ বনং প্রবেশয়তো রামক্ষবোর্জু; বৈ নি্পীতং তৈরেব জুইং দেবিতং নান্যৈরিতার্থ:। কণ্যসূতং বজুং

## বৈশ্বতাষ্ণী।

এব তন্ত নিভাসিদ্ধাং। যদা। বহুবেশতৈর মোহনখাং। কিখা শারং প্রথমদিনে বহুবিহারবেশার্থং বনপ্রান্তমাগত্য ক্বতেন কেবলবহুবেশেনের বনে প্রবেশাং। অত্র গোপর্টালরিতি বলদেবাহিপি গৃহীতঃ। তস্য যুগ্লম্বেনাম্বান্তঃ শ্রীগোপীনাং শ্রীকুইফ্কনিষ্ঠ বং তংপরিকরতীয়ের তু তংসাহিত্যেন বর্ণনিমিতি ব্যঞ্জয়তি ইত্যুক্তপ্রকারেণ। সর্বান্তাশের প্রোচ্বালাদিভেদেন বর্ত্তমানাঃ। অভিবর্তিরে দ্বাক্রান্তঃ শ্রীকৃষ্ণং ভাবনরা। কিখা ভাববিশেবোদয় সন্মোহেনাস্তোহন্তঃ তং মন্বা কিখা ভাববিশেবোদয় সন্মোহেনাস্তোহন্তঃ তং মন্বা কিখা ভাববিশেবোদয় সন্মান্তনার পর্বাণিনাং মনোহরং কিমৃত তাসামিতি অভিরেভিরে ইতি পাঠন্ত চিংস্ক্রতির সন্মতঃ। অভিতো রতিং প্রাপ্রিত্যর্থঃ। হে রাজ্বিতি পূর্বোক্ত নৃপেতিবং ॥ ৫ ॥ ৬ ॥

শ্রীগোপ্য উচ্রিতি। তেবামসম্মতং লক্ষ্যতেংগ্রবন্মেবাহেতি লিখিতখাৎ প্নক্ষক্ষেন একখাযোগ্যন্তেন চ তদনহাঁং। কিন্তু স পাঠঃ স্ক্রিব দুখাতে। যাসাং ব্ধ্যেত বাগর্থো যাসামেব প্রসাদতঃ। গোপীঃ প্রপদ্যে তা যাভিঃ স গভীরাশরো জিতঃ। অথ প্রেক্সিয়সারেণাহবহিত্বয়া রামসহিত্মেব বর্ণয়ন্ত্যোহিপি স্বভাবব্যঞ্জিতার্থবিশেষেণ তথা ন শেকুরিতি দর্শয়তি অক্ষণ্তামিতি। তত্ত্ব তেবাং ব্যাখ্যাসম্পতিঃ ক্রিরতে চক্ষ্তাং তাবদিদমেব ফলং বিদ্যঃ পর্যন্তং প্রিয়দশন্যপি ফলং ন বিদ্যঃ। নিষ্দিমিতি কিং তত্ত্বাহ

## ক্রমসন্দর্ভ:।

গোপ্য উচুরিতি ন টীকাসন্মতং। অনুবর্ণনমাহেত্যত্র পুনরুক্ত্যাপাতাৎ একছাযোগ্যছাচ্চ ॥৭॥৮॥

## এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

দিত্যক্ত পোষন্যারেনৈব ন পুনর্কক্তিঃ ততশ্চ কতিচিৎ কণানস্তরং ক্লঞ্চেষ্টিত অরণোথস্থরবেগবৈয়গ্র্যজ্ঞোপশ্যে ,বৃত্তে সতি বেণ্নীতং বর্ণমিতং সম্যাণশকল্পীত্যাহ। ইতীতি স্মাপ্তার্থকং অরবেগবিকেপে সমাপ্তে সতীত্যর্থঃ॥৫॥

ইতি হেতুপ্রকরণপ্রকারাদি সমাপ্তিধিতামর:। সর্বভূতমনোহরং। নহু রাসারক্তসমরগতমিব গোপীমাত্র মনোহরং বর্ণরস্তোহিভি-রেভিরে স্থিত্বং মন্মন: প্রবিষ্টাবৈবং ক্রয়ে যতোহহ্মপ্যেবং বিবক্ষো ইতি প্রত্যেক্মমুভ্বসাম্যোপলক্যা প্রস্পরালিজনং তাসাং॥ ৬॥

বেণুনাদ হৃধাবৃষ্ঠা নিজ্ঞ নায়েরিং। বাসাং নাং পারয়ামাস কৃষ্ণতা এব নো গতিং। ভোং সংখ্যা যুয়িছ গৃহনিগড়ে দ্বিভা বিধারা দত্তানি চক্রাণী ক্রিয়ানি কেবলং বিফলী কুক্থের এব তদিতোহন্য বনং ক্রতমেব গত্তা কিমপ্যভূতং বস্তদর্শনানৈ য়েছভব গোচরীক্বতা সফলজনানোভবতেত্যাহং। অকণ্তামিত্যার্থং। অকিমতামক্রামিদমেব কলং নতু পরং বিদামং বিদ্ধা ইত্যন্তমতে অন্যভ্রত্ নাম। অক্সন্ত তু নান্যং কিং তং। ব্রেশেইতয়োরামকৃষ্ণলো ব ক্রং অহকুলইব্লেবিতং বৈ নি পীতমিতি প্রকটোকরিলেন। তাঁহার মন্তকে ময়ুরপুছে ময় মুক্ট, কর্পদ্বে কর্নিকার পরিধান কনকবং কপিশবর্ণ বসন, গলদেশে বৈজয়ন্তী মালা। তিনি স্বয়ং অধ্রম্থা দিয়া বেণুর্ক্ষু পূরণ করিতেছেন, আর গোপগণ চারি দিকে তদীয় কীর্ত্তি গান করিতেছে॥ ৫॥

সে যাহা হউক, শ্রীকৃষ্ণের সর্ব্বভূত মনোহর সেই বংশীরব শ্রেবণ করিয়া যাবভীয় ত্রজাঙ্গনা ঐরূপ বর্ণন করিতে ২ প্রমানন্দমূর্ত্তি ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণকে আলিঙ্গন করিলেন ॥ ৬॥

গোপীরা কহিলেন হে স্থীগণ! চক্ষুমান্ ব্যক্তিদিগের প্রিয়দর্শনই চক্ষুর ফল, তদ্যতীত অন্য ফল আছে আমাদের বুদ্ধিতে এমত উদয় হয় না। পরস্ত যে সকল ব্যক্তি বয়স্যগণ সমভিব্যাহারে পশু সহ

## বক্তুং ত্রদ্রেশস্থতয়োরমুবেণু জুউং যৈর্বৈ নিপীতমনুরক্তকটাক্ষমোকং॥ ৭ ॥

## **छि**धवचामी

অণুবেণু বেণুবস্থবর্তমানং তং বাদয়ৎ তথা অমুরক্তকটাক্ষমোক্ষং সিগ্ধকটাক্ষবিদর্গং। অথবা থৈ নি পীতং তয়োব ক্রং হৈ জ্ ইং ইদমেব অক্ষণুতাং অক্ষো: ফলমিতি ॥ ৭॥

## देवक्षवरकाष्ट्री।

নিপীত্ৰমস্ভূতং জুইং আহাদিতং। অথবেতি যৈনি পীতং তয়েরর্জভ্রুং তৈ যাঁং তুইং তর্দিদমেব তেষামক্ষোঃ ফলমিত্যর্থঃ। উভয়ত্র তেষামাধাদিবিষক্ত নিতি অলে কথং বোধ ছিতুং শক্যক্ত ইতি ভাবঃ। কিঞা। বিশেষত মানির্দেশক ছবা প্রথমিন স্তর্মের নির্দেশঃ স্থাগাছেন সহসা নামপ্রকাশনাযোগাছাং। যরা। প্রেমভরোদর বৈবশ্যেন সদ্যভাষণেশ নির্দেশমক ছা প্রথমিন তথা তক্ত চাতেঃ সহিত্যাভিদাহত্রধা বা দর্শনমণীতি বিবক্ষিতং। তওঁ চোক্ষোঃ ফলং ন বিল্লো বয়মিতি। অভ্যজনাম্বনান্ধ নাম ইত্যর্থঃ। এবা সোরু ঠোক্তিঃ। অভোহ আকং চকুং সাফল্যং ন কিমিপ বৃত্তং। তদানীং তথা তদ্দর্শনাভাবাদিত্যর্থঃ। যদ্যপি বত্র তত্র বদা তদা যেন তেন প্রকারেণ তব্ ক্রু জোবণমের চকুং ফলং। ব্রমান্ধ ভাবাং তথ্য হুকু ফলত্যের তথাপি বনবিহারে তথা তদ্দর্শনাং হুকোন তথাকাং। অসমের হি নির্ভরপ্রেরা হত্ত্বগ্রাক্তিবিশেষলক্ষণঃ অভাবঃ হে সধ্য ইতি যুঘাভিরেতিরিভিলাঃ। আয়ত এবেতি ভাবঃ) অহু পশ্চাং হিছা বনাম্বনান্ধরং বা বিশেষেণ প্রবেশেন সক্ষেত্ত মধুনশন্দিনা প্রবেশরতাঃ। ব্রম্বেশী প্রীনন্ধ বস্থদের ইতি থাতা গোসু তিপ্রতি ভূতল ইত্যাদি। প্রীক্রিরংশোক্তাহ্বস্থারেণ বস্থদেবজ্ঞানি বহুলবাগাসমূদ্ধেঃ। ব্রন্ধেশা গোপরান্ধঃ প্রীনন্ধ এব ক্রান্ধ্রম স্থত ইত্যাদে তাতং ভবত্তং মহান ইতি প্রবিষ্ণেরাভেং অভ্যান তাত প্রত্তর ব্যামানে রামোহভিবাদ্য পিতরা বালীর্ভি রভিনন্দিত ইতি বক্ষাতে চ। অথ স্মরতাঃ ক্ষতেইতিমিতি দর্শিতং। অভাববান্নিতার্থে বথা ব্রমেশহত্রামান্ধা হন্তপন্ধাং বন্ধু স্থামন চক্রমণকন্দং মহাতে। বৈ প্রাস্থাং। বহা। ছন্দানি বাবহিতান্দেতি ভালিকাতি তালিকা স্থামন চক্রমণকন্দং মহাতে। বৈ প্রাস্থাং। বহা। ছন্দানি বাবহিতান্দেতি ভালিকতি ভালিকা অধিনির্দ্ধ স্থামন চক্রমণকন্দং মহাতে। বৈ প্রাস্থাং। বহা। ছন্দানি বাবহিতান্দেতি ভালিকতি তালিকা স্থামন কর্ম নিরন্ত্রং বেণুনা ভূইং সেবিতমিতি।

অথবা বৈ শব্য: সমৃত্যে । মানিনামস্তাপং বৈ ইতিবং। বেতি পাঠোংপি কচিং। বৈ নি পীতং সাদরং সমাক্ দৃষ্টং তথা বিশ্বকটাক্ষমোক্ষা বথা ভাত্তথা জুইক। বহা। অমুরক্জনানাং যুদ্ধাকং কটাক্ষমোক্ষা বন্ধিন। বহা। অমুরক্জনের কটাক্ষমোক্ষো বস্তা তদিতি সেবাছাং অথবিশেষসক্ষতি হেতুং। তেবামক্ষণ্তাং ইস্তিয়বতাং ইদং নিপানং জোবণকৈব কলং সর্কেজিরসাফল্যং বিদঃ নচান্তং কিমপি তরিপানাদি রূপক্ত পরমক্লরপত্রা সর্কেজিরকর্মসাক্ল্যাসিদ্ধে:। অরমপি নিগুঢ়োংভিপ্রার:। ইদমেব পরং কেবলং কলং ন বিদ্ধা কিং তৎ জুইং প্রীত্যা দৃষ্টং বং। তহি কিমন্তং ফলং তদাহুং বৈরধরামৃত্যানঘারা নিপীতং তেবাং বরিপানক্ষণং ফলং কিং নিদ্ধেবেতি। বন্ধা বক্তাং জুইং যথ ইদমেব চক্ষ্যতাং চক্ষ্য ফলং দ্বে বৈ শব্য: বৈরধরামৃত্যানঘারা নিপীতং তেবাং ফলং কিং বিজ্ববানিতি শেবং। তৎশ্বরদমান্তেশ বাশক্ষক্তগ্রেরা ব্যক্তং বক্তু মুশক্তেং কিখা বিদ্ধান্তনবর্গপ্রস্থাপাদানাং তাসাং প্রেমোক্তিব্রানিতি শেবং। তৎশ্বরদমান্তেশ বাশক্ষক্তগ্রেরা ব্যক্তং বক্তু মুশক্তেং কিখা বিদ্ধান্তনবর্গপ্রস্থাপাদানাং তাসাং প্রেমোক্তিব

## ঐবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

হর্প: স্বীয়ভাবংগাপনার্থ এব ব্রাক্সছচিদ শক্ষননান্দ্ প্রভিবেশিজনা: কণৌ দদতি তহি দদতু নাম কা তত্ত্ব চিন্তা সর্ব এব ব্রজবাদি প্রথিপনান রামক্ষয়ে ব ক্রু মাধুর্যাং বুধা বর্ণরন্তি তথা বয়মিশি বর্ণরাম ইতি স্বাভিপ্রায় জ্ঞাপনাং। জ্ঞান পশুপশিপর্যানাং সর্ব্বাদিনামের তবক্তু মানন্দপ্রদাং কেবলং দবীরদীনাং যুমাক্ষের নেতি ব্যক্তিং। ব্রেজশস্ত্তমারিতি ভাতং ভবক্তং মহান ইতি বস্থ-দেবোক্তে রামোহভিবাদ্য পিতরাবিতি ওকোক্তেশ । বলদেবল্যাপি ব্রেজশস্ত্তমং ব্রেজ প্রস্কিষ্কের। অভীন্দিভোহর্থম্বরং। ব্রেজশস্ত্তব্রেমি ব্রা জ্বপশ্চাম্বিলিনা মত্ত বক্তুং বেণুজ্বইং তহ। বৈ বে তি বা শব্দেন বৈজু বিঃ শৃত্তমের লিক্সাম্বিলিনা সাম্ব্রাং নান্যবাং বৈ ইতি পাঠে বৈ নিশ্চিতমের বৈ লাজ্যাইর্থ্যে অপি তাক্ত্যা-নিপীতং তেয়ামেবাক্সবতাং জনানাং চক্ত্রাদীক্ষিরাণাং সাম্ব্রহ নান্যবাং তদ্দ্য দীয়কাং কুলবর্ত্বানাং কর্থং সপ্তবেত্তবাহুং। অন্তর্কের জনের ক্টাক্স নেত্র ব্যক্ষের তহ তেন তর্থা সন্ধায় কটাক্ষণরো কর্ম্বর্কং নিপানং তু হ্রীমতীনাং কর্থং সপ্তবেত্তবাহুং। অন্তর্কের জনের ক্টাক্স নেত্র ব্যক্তি বি ক্রিক্সাম্বর্গানিক তথা সন্ধায় কটাক্ষণরো

বন প্রবেশকারি অজ্পতিতন্য রামকৃষ্ণের বদনারবিন্দ পান করিতেছে, যাহাতে নিরস্তর বেণু সংলগ্ন আছে এবং যাহাতে স্লিগ্ধকটাক নিক্ষিপ্ত হয় তাহাদেরই সেই সেই ফলক্ষুস্ত হয়, ততিম চূতপ্রবালবহ স্তবকোৎপলাজমালানুপৃক্ত পরিধানবিচিত্রবেশো। মধ্যে বিরেজভুরলং পশুপালগোষ্ঠ্যাং রঙ্গে যথা নটবরো কচ গায়মানো ॥ ৮॥

## में) **भ**तव्यक्ती

শক্তা আত্শচুতেতি। চৃতপ্রবানাদীনাং চিত্রাভিম লোভিবরপুত্তে ঈষদস্থরাস্থরতঃ সংঘাক্ত প্রিবানে নীলগীতাস্বরে তাড্যাং বিচিত্রে বেশৌ বয়োতে কচ কলাচিং প্রপালগোঠ্যাং গোপালানাং সভাষাং মধ্যে অলফ্ট্রপ্রিবিষ্টুঃ। অহো গোপানাং পুর্বাদ্যিতি ভাবং ॥ ৮ ॥

## देवकादराजावनी ।

গান্তীৰ্য্যবৈদ্যৰ তাদৃশস্বভাবাং। অভ্যং সম্মনং॥ ৭॥

তদেবমপার্থান্তরেণ নিজভাবন্ত ব্যক্তিং বিভর্ক্য প্নর্যাচাবধানেন বিভীয়পদ্যে তাং অপলেপুং। পুন্ত প্ৰমন্তরেধেণ তৃতীয়েন ন শেকুং। চতুর্থাদৌ কিঞ্চিদপি শেকুরিত্যাহ পঞ্চভি:। চ্তুদ্য প্রবালো নবপল্লবং শুবকং পুশ্পগুছেং। তার চ্তুপলবো নহং শুবকণ্ট শীফি। উংপলং তদন্তঃ কোষং কর্ণযোরজং পীলাকমলং দক্ষিণে করে এতানি চ মালাগ্রপুক্রপরিধানানি চ যানি তৈ বিচিত্রবেশো। পশুপালানাং গোষ্ঠাং মণ্ডল্যাং ত্রাপি মধ্যেংতো বিশেষেণ তেরু পৃথক্ পৃথক্ তত্তছোভাপ্রকটনেন। কিলা বিশিং রেজতৃং শুশুভাতে। যথা নটবরে রক্তে বিশিল্পত ইত্যাদি দৃষ্ঠান্তেন তরে। নূর্ভাদিকং সাছেন্দায়খণিকঞ্চ গোপানামপি তাদুশ্বেশবৈদ্যাদিকং বাদ্যাদিপবত্তক প্রতাত। অভ্যপা নূত্যাদিশোভায়া অনম্পতেঃ। কচ ক্র্যাচিদিতি ক্রীড়াবেশেন সন্ধা মধ্যে হনবন্থানাং। অলমিতি ব্রক্রমধ্যে তু বিবিধলকোচেন তাদুশগানাদ্যভাবাং বিরাজমানতাসম্পত্তেঃ। অথবা। আরু প্রাপ্তেকে সর্ক্রামিষে তাসাং বাক্যবেন ক্রমতঃ সর্ক্রোকানাং মিথং সম্বন্ধং কার্যঃ। তথাহি। অতো গোপানামের তেষাং চকুংসাক্ষ্যাং তদানীং তথা ভদ্মক্রনাই হিত পূর্ক্রোকাভিপ্রায়ঃ। ন কেবলং তেরাং তন্ধশানমত্তং বনমধ্যে বন্যবিচিত্রবেশয়োশ্বয়ো নিজ্মণ্ডলীমধ্যে সাক্রেলান নৃত্যগিভাদ্যস্ক্রশ্ব স্থাং আদিত্যাহান্ধ্যকে। গায়বানী গায়ন্তৌ। বলা। গায়েন গানেন মানং পূজা ব্যোং সর্ক্রোবিশিষ্টগানাং কচেত্যস্যাকৈর বাব্যঃ। নৃত্যাদাবেশেন সদা গানাকরণাং। যন্তা। ক্রিক্যায়মানে মানং আবাভ্যাং স্বন্ধ তেন গায়কোহন্তি অর্তাগে হন্ত গায়বিত্যাদির অর্তাগে বিলেই গানাধ্যীবিশেষং। অতো গোপা এব ধতা এব তেন প্রক্রোবেশ ত্যো-ব্রম্বর্যাক্র হলাকভ্যাদিনা স্ক্রনান্দাসিকরে। এব্যত্তিহিপি বাক্যথের উল্লে। তত্তে গোপিত এব ॥৮ ৪

#### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ন্চাতে যথ। ভদাঘাতেন বিহ্বলীভূয় লজ্জাধৈর্যাদিকদপি বিশ্বভ্য তং পাশ্তথেতি ভাবঃ ॥৭॥
এতাদৃশং বিভ্যনং স্বাস্ত কথং কুর্মন্ত সান্ত তে চিকেই । বলদেবদাহিত্যে দতি ত লাম্মন্তিগমিষাণা অভাবাং তন্ন ভবিষ্যতাতো দ্বতো বলিপলবর্দ্ধে বৈৰ তথা স্বন্ধন্য সৌন্ধ হাণামূতং গানামূতং চাম্বাদ্য নৃত্যাদিকঞ্ছ দৃষ্ট্য জ্ঞতনায়ান্যান ইত্যাক্ত ভূত্য প্রবালো নবপলবং বর্ষ স্তবকং পূল্য গুদ্ধেত চূড়ায়াং উৎপলে ভলস্তঃকোষৌ কর্ণিয়াং জ্ঞাং লীলাক্ষলং দক্ষিণকরে নালান্ত গলে তথা অন্ত্রপ্র ত্যা প্রভানি গাত্রসংলগ্যানি প্রিধানানি নাট্যোতিত্বক্তপীত্যিতবাসাংসি চ তৈ বিচিত্রো বেষো যয়েবিত্য । নটবরাবিতি স্থিত্য গায় কেয়ু নৃত্যম্বৌ ক্ত ক্লাচিচ্চ গায়মানে তাচ্ছীল্যে শানচ্। যথা। গায়ে গানে মানং স্কর্মের ব্যোক্ষ্য । যথা। গানে গানে নানো গ্রেষ্য ব্যোগ্য ব্যাক্ষয় । যথা। গানে গানে নানা ব্যাক্ষ ইতি প্রকারঃ ॥ ৮ ॥

## অন্য কোনজন তাহার আস্বাদ প্রাপ্ত হয় না॥ ৭॥

অন্যান্য গোপীরা কহিলেন আহা! গোপদিগের কি আশ্চর্য্য পুণ্য, রাম ও কৃষ্ণ সময়ে ২ তাহাদিগের সভামধ্যে নীল ও পীত অম্বরে বিচিত্র বেশ হইয়া যেমন রঙ্গন্থলে নটন্বন্য গোভা পায় তাহার
ন্যায় বিরাজ করিতেছেন। ভাঁহাদিগের সেই নীল ও পীতবসনে আত্র মুকুল, ময়ূরপুচ্ছ, উৎপল এবং
পদ্মমালা কিঞ্ছিৎ ২ অন্তরে সংলগ্ন আছে এবং কগন ক্রথন গ্রহজনে গান্ত করিতেছেন॥৮॥
•

## গোপ্যঃ কিমাচরদয়ং কুশলং স্ম বেণুদ্বিমাদরাধরস্থধামপি গোপিকানাং।

## শ্রীধরস্বাদী

জান্তা উচু: তে গোপ্য: আয়ং বেণু: কিং আ পুশামাচরৎ কতবান্। কথং যদ্যআৎ গোপিকানামেব ভোগ্যাং সতীমপি দামোদরাধর-স্থাং আত্তের্গে ধথেষ্টং ভূঙ্তের। কথং অবশিষ্টরসং কেবলমবশিষ্টরসমাত্রং যথা ভবতি। যতঃ যাসাং প্রসা আয়ং বেণু: প্রু:

## বৈষ্ণবতোষণী।

অহোবতান্ত তরাং গোণানাং ভাগ্যং বেণোরপি ভাগ্যং কিং বক্তব্যমিতি মহাভাবনা;রহ্মাদত্যা মিথ্যাকলনাপূর্ব্বকং দেখ্যাভি-লাষ্মাত র্ণোপ্য ইতি। অয়মক্ষাভিদু শুমান ইব নীরস্দারুময়ো বেণুঃ কিং কতমৎ পুণাং কুতবান অন্মিন্ জন্মনি পূর্বানিম্ব তৎপুণ্যে জ্ঞাতে বয়মপি তদর্থং যতাম ইতি ভাব:। শ্লেতি বিশ্বয়ে। তল্লিক্ষমাতঃ যাত্রসান্দামোদরেত্যাদি দামোদরশব্দেন তগ্যাস্থাকঞ তাদৃশবাল্যমারক্তা জাতেদৃশভাবাঙ্কুরতয়া স্বাভাবিকং সম্বন্ধবিশেষং স্চয়স্তি অতএব গোপিকানামশ্বাক্ষেব ভোগ্যং। অয়নিতি পুংস্বনির্দেশেন তস্য তারোগাযোগ্যতা চোক্তা। তথাপি ভুঙ্ক্তে তাদেক্ভোগ্যাম্বেন সদা পিবতি তস্য তদভাভোগাদর্শনাং। নত্ দামোদরাধরত্তৎসঙ্গানস্তরমপি সরদ এব দৃশুতে নতু শুক্তস্মাদদৌ ন কিঞ্চিদপি ভূঙ্কে তত্তাহরবশিষ্ঠো রদো রসমাত্রং যত্র তল্যথা স্যাং। স্থধাং ভুঙ্ কৈবুব কেবলং দ্রবমাত্রমেবাবশিষ্যত ইত্যর্থঃ। হে গোপ্যঃ ইতি তস্মান্তেগুজন্মনৈব সৌভাগ্যং নতু গোপীজন্মনেতি কুতো যুয়ং গোপ্যো জাতা ইতি ভাব:। অস্বাকমিতি বক্তব্যে গোপিকানামিত্যুক্তি র্গোকুলবাসিৎেনাস্কৎকোটপ্রবেশেহপি গোপিকা-বিশেষস্বাভাবাৎ ন তশ্বিধন্যাধিকার ইতি নিজাভিমানবিশেষাৎ বৈদগ্ধীরস্বিশেষাচ্চ। শ্লেষেণ তদেকাশ্রৈব দেহাদিরক্ষিকাণামিতি। কিঞ। তস্য যুম্মণীয়কা অস্য করে জন্মে বদনে চসদা বর্ত্তাং নাম অধর হধামপি স্বয়ং যুম্মৎসন্মতিং বিনৈব ভূঙ্তে ইতি ভাবা-স্তবং। অথবা তচ্চ কথং ভূঙ্ক্তে তত্তাহঃ অবেতি বণিষ্ঠং অবশিষ্ঠং। বষ্টি ভাগুরিরল্লোপমিত্যাদেন বিশিষ্টং অবশিষ্ঠং অনবশিষ্ঠং ইত্যর্থঃ। তাদুশো রুদো যত্র তথাভূতং যথা স্যাৎ রসমাত্রমপি নাবশেষয়তীত্যর্থঃ। यद्या। অবশিষ্টরুসো রাগো যত্র তদ্যথা স্যাৎ রাগস্যাবশিষ্টহাৎ ন কদাচিদ্পি বিরুমেৎ কিন্তু মুহুর্ভোক্যত এবেত্যর্থঃ। যশ্বা। স্থধাং কথস্ক ভাম্পি গোপিকানামবশিষ্টো যো রসঃ। তদেকাপেকরা তদিতরা-শেষরসপরিত্যাগাৎ তক্ষপামপি। অথবা কুশলাচরণে লক্ষণাস্তরমপ্যান্তর্ত্ত দিন্যো হ্রম্যাত্ত ইতি তদ্য তাদৃশং ভোগং দৃষ্টা পরমপুণ্যা হদি-ভোছপি লোভাধিকসিতকমলমিষেণ ক্ষ্যবচো জাতরোমহর্ষা বভূব্রিতার্থ:। অথবা যদবশিষ্ট্রদমিতি তু অতৈর যোজাং। বচ্ছকং বিধনব পূর্ব্ব হেতুত্বমদ্য চ প্রাপ্তে:। যদ্য বেণোরবশিষ্ঠ উচ্ছিষ্টো যো রদো নাদরপত্তং হ্রদিন্যোহপি ভূঞ্জতে আয়াদয়তি যত চ স্বা

## ক্রমসন্দর্ভ:।

यत्रा दिर्गातविभिन्ने উচ্ছিটোরদো নাদরপত্তং স্নানপানাদৌ ইদিন্যো জগংপাবন্যো ভূক্সতে অহো তদ্দর্শনাত্তরবোহপি ক্রয়বচঃ

কিঞ্চান্নন্তি বিভ্রনাক্তি নিঃক্ষিপন্ন বেণুরেবানর্থকারীত্যাহ:। হে গোপাঃ বেণুর্বলী কিং নিং কুশলং পুণ্যাচরং। বংশীমুবল্যাদিশনানং স্থানিক্তি তথপর্যাবার বেণুশন্সর পুংলং দারশন্তি ভ্রেষ:। যহা। কিং মঙ্গলমাচরং অপি তুন কিমপি হাবরভাতিতেনৈব লক্ষ্যত ইতি ভাব:। তদপি দামোদরল্যাধ্যমধা ভূঙ্কে ইতি কণং বয়ং সোচুং প্রভাবন ইতি ভাব:। তত্র হেতুর্ণোপিকানামিতি অধ্যম্থায়াং হি গোপিকানাম্মাক্তমেব সন্তং কুক্ষন্য গোপজাতিত্বাদ্মাকং গোপজাতিস্ত্রীঘাদিন্যান্ত্রাপ্তে:।
নিতাং রাত্রাব্যাভি: সংভূজ্যমানহাচ্চ বেণুস্ত বিজ্ঞাতীয়স্তরাপি কুক্ষরমিতত্বমাত্মনো মন্ধা কুক্তপ্রেমনীত্বাভিমানং ধতে। তত্রাপি
ধাঠোন পুন: পৌর্ষমাবিদ্ধত্য সংভূজ্জ তত্রাণি পরকীয়ং ধনং তত্রাপি বয়মেব নন্ত্রাং জনমেক্মপি সন্ধিনং করোতি ত্রাপি
চৌর্ব্যে কিন্তু ধনন্ত্রামান্ত্রাক্ত্র কুল্লারেশ ক্রিলা এব। কিঞ্চ। নায়ং কুৎকারং কিন্তু স্বভোগোধ্য মণিত্যের তচ্চালান্ প্রাব্যিতৈ্ব তত্রাপি ন বনিট: ন অবশিষ্টোরসঃ কিঞ্চিন্নাত্রাৎপি যত্র তদ্যথা ভার্থা ত্রুক্তে। বিষ্ট ভাগুরিরল্লোপমিত্যাদিনা অকার
বোপ:। ধনস্থামিনীনান্নাকং ক্ততে স্ভূক্তাবশিষ্টমপি কিঞ্চিন্ন ক্ষতীত্যহো ধাষ্ট্য মিতি ভাবং। কিঞ্চ। অকুশলবর্ত্রিনঃ সর্ব এব জনা

অন্য ব্রজাঙ্গনারা কহিলেন হে গোপীগণ এই বেণু কি অনির্বাচনীয় পুণ্য করিয়াছিল বলিতে পারি না, যে হেতু প্রীকৃষ্ণের যে অধরস্থা কেবল গোপীদিগের ভোগ্যা, এই বেণু তাহা সাতস্ত্র্যে যথেউ পান করিতেছে, তাহাতে কেবল রসমাত্র অবশিষ্ট আছে, এই বংশীর আরও সোভাগ্য দেখ, যাহা-দের জলে উহা পরিপুই হইয়াছিল সেই সকল হ্রদিনী (নদী)ও বিক্ষিত ক্মলছলে সেই প্রকারে

# ভূঙ্ক্তে স্বয়ং যদবশিষ্টরসং হ্রদিন্যো হৃষ্যন্ত্রেচোইশ্রু মুমুচু স্তরবো যথার্যাঃ ॥ ৯ ॥ রন্দাবনং দখি ভূবো বিতনোতি কীর্ত্তিং যদেবকীস্থতপদাসুজলরূলক্ষি ।

## शिशतकामी।

তা মাতৃত্ব্যা হ্রদিনাঃ হ্রষ্ত্রটো বিক্ষিতক্ষণমিবেণ রোমাঞ্চিতা লক্ষ্যন্ত। বেষাং বংশে জাতাত্তে তববোহপি মধুধারামিষেণ আনন্দাশ মুমুচ্য। যথা আর্য্যাঃ কুলবৃদ্ধাঃ স্ববংশে ভগবংদেবকং দৃষ্ট্য হ্রষ্ত্রটোহশ্রু মুঞ্জি তবং॥ ১॥

কাশ্চিদাহ: হে সথি র্ন্দাবনং ভূব: কীর্ত্তিঃ অর্গাদপি বিশেষেণ তনোতি কথস্তুতং যদেবকীস্থত্য্য পাদাসুলাভাাং লকা লক্ষী: শোভা সম্পৎ যেন তং। কিঞ্। গোবিন্দায় বেধুমহু বেধুমিনদশ্রবানস্করং মন্দার্জিতং নীলমেণং তং মহা মতা যে মন্বাভেষাং নৃত্যং

## देवश्ववत्त्रांष्ठनी ।

স্বচো ভবস্তীতার্থ:। কিঞা বস্য স্বজাতিসন্তবন্য বেণোন্তাদৃশং সৌভাগাং দৃষ্ট্র সর্কে স্থাববজাতবােহপি নধ্নিষেণাশ্র মুমুচ্:। তত্র দৃষ্টাস্তার্থ:। স্বাধাাক তত্রাং সমাজ এব তাদৃশং সৌভাগ্যমন্ত্রীশ্র মুঞ্জীতার্থ:। স্বাধাবক তত্রাং সমাজ এব তাদৃশস্ত সৈ্ত্রীক ব্যাবা কো দোষ:। অতারং গোশ্য: নিভূতং কুত্রাপি সংগোপ্য রক্ষণীয় ইত্যর্থ:॥ ৯ ॥

অহো কিং বক্তবাং শ্রীহন্তাদৌ বর্ত্তমান্য বেণােম হিষ্মাং বৃন্দাবনন্ত সৌভাগ্যং কিয়বর্ণাভামিত্যান্তর্বন্তি। হে স্থি বিতনাতি বৈকুঠেভাাহিপি বিশেষণ বিতাররতি যদবন্ধাং যহ নাবনমিতি বা। দেবকীস্ত্তস্য শ্রীকৃষ্ণত পাদাস্থলাভাাং করা লক্ষাং সর্পালামহিল্লোং সম্পালামহিল্লোং সম্পালামহিল্লোং সম্পালামহান্তমন শ্রীকৃষ্ণাবন্দান্তমন শর্মান্তমন শ্রীকৃষ্ণাবন্দান্ত বিশ্বনাথ এবং পারনদৌভাগাং স্তিতং। তাসাং দেবকী স্থতেত্যুক্তিং প্রাগরং বস্থদেবস্য ইত্যাদি গর্ণবাাক্যাহ্যারাং। তথাচাক্তি গোপনাথ এবং গোবিন্দালাহিদ্যাহিলা বাধ্যকেইপি গোবিন্দা ইতি কোষকারমত্যাশ্রিত্য তিন্দ্র স্থানি এব নাম। বে নামী নন্দ গ্যায়া যুগোদানেবকীত্যপি অতং স্থায়ভ্তম্যা দেবক্যা পৌরিলায়েরতি বৃহ্বিকৃপুরাণবহনাং। বিশক্ষোক্তং বৈশিষ্ট্যমাহ্য। গোবিন্দেতি গ্রামিলো গোবিন্দ ইতি গোপবর্গচ্ছামণি গোগোপালপরিরতো বহুত্বগো বিচিত্রক্রীড়ারসিকং শ্রীয়েশানন্দনো লক্ষিতঃ। অতো বৃন্দাবনস্যাগি ভাগ্যমন্থাভিরতিব্যবণীয় বিষয়মেবেতি ভাবঃ। অন্যাইতঃ। তন্ত্র মন্দাগিজিতং নীল্মেবং তং মন্থেতি মন্ত্রাণাং মন্তবে নৃত্যন্তে চ হেতুঃ। অন্যথাগ্রেয়া

## ক্রমসন্দর্ভ:।

সমুরাদিনিবেন রোমাঞ্চিতাঃ সভো মধুমিবেনাঞ মুমুচুঃ। কীদৃশা অপি যথাগ্যা মুনয়ন্তদশু নৈতথাভূত। অপীত্যর্থঃ॥ ৯॥
তস্যাং সমাজ ইত্যুক্তানুসাবেণ তয়াচোক্তিগোপনাথা ১০॥

## শ্ৰীবিশ্বনাগচক্রবন্তী।

স্তান্ধা এবেত্যাহঃ। যং ৰতোহধরস্থাভোগাং তং বীক্ষোতার্থ: হ্রদিন্যো নদ্য: স্থ্যক্তঃ উৎক্লকমলাদিমিধেণ পুলক্বত্যে। বভূবঃ তববো মক্রন্দমিধেণাঞ্চ মুমুচ্র্যণা আর্থ্যা ভগবদগুণান্ শ্রাহা আশ্রু পুলকাদি মন্তো ভবন্তি তবৈ তে বেণোমনিতং শ্রাহিত হুদিন্যোহ্যা স্থান্তরবোহ্যা স্থায়ো দ্তা এবেতি বেণুহুদিনী তরবঃ সর্বা এবাত্মাকং বৈরিণ এবেতি ভাবঃ। আডো হ্যং গোপ্যঃ নিভ্তং কুরাণি রক্ষণীয়ে। যথা কুষ্ণাধরং ন প্রাপ্রোতীতাস্থাখাঃ স্কারী ব্যক্তিতঃ॥ ১॥

তদীয়তাদৃশবিলাসাম্পদস্য বৃন্ধবিন্দ্য সম্প্রতি মাধুর্য্যমধিক মূলসতাত ত্তাদেব দিদৃক্ষমাণান্তক গছ্লামো বরং নাক কোংশি দোষ ইতানাা আহং। বৃন্ধবিনমিতি তুবং কীর্তিং অর্গাদিভাগবিশেষেণ তনোতি যদ্যতো দেবকী প্রত্যা যশোদানন্দনস্য পাদাঘুজাভাগি লকা লক্ষীং ধ্বন্ধকাদিচিইমন্ত্রী শোভাসম্পৎ যেন তৎ নহ্যেবস্তৃতং বৈকুষ্ঠবন্যপি সন্তবেদিতি ভাবং। দ্বে নান্ত্রী নন্দভার্য্যন্ত্রী গোভাবম্পা শৌরিলার্যেতি বৃহ্দিক্পুরাণং। এবস্তৃতং গোর্ভহ্লমপি সন্তবেদিতি চেদত আহং। লোমাঞ্চিত লক্ষিত হইতেছে, আর যাহাদের বংশে উহা উৎপন্ন হইয়াছিল সেই সকল তক্ত মধুণারা ছলে সেই প্রকারে আনন্দাশ্রু মেোচন ক্রিতেছে, যেমন কুলবৃদ্ধ পুরুষ্যেরা আপনাদের বংশে ভগবৎ-সেবক দেখিতে পাইলে রোমাঞ্চিত হ্যেন এবং আনন্দাশ্রু মোচন ক্রেন॥ ৯॥

কোন ২ গোপী কহিলেন হে সথি ! একণে বৃন্দাবন স্বৰ্গ অপেকাও ভূমির কীৰ্ত্তি বিস্তার করি-তেছে, কারণ দেবকীস্থত ভগবানের পাদপদ্মদ্বয় হইতে ইহার সম্পত্তি লাভ হইয়াছে, অপর এই বৃন্দা-বনে গোবিন্দের বেণুনিনাদ প্রবণ করিয়া মন্দ্র গর্জ্জন বোধে তাঁহাকে নীলমেঘ জ্ঞান করত যে সক্ল

# গোবিন্দবেণুমতুমভ্রত্রনৃত্যং প্রেক্ষ্যান্দ্রিসাশ্বরতান্যসমস্তমত্ত্বং ॥ ১০ ॥ ধন্যাঃ স্মান্দ্রতান্যমন্ত্রাহপি হরিণ্য এতা যা নন্দনন্দ্রমুপাত্রিচিত্রবেশং ।

## श्चीभवत्रामी ।

প্রেক্য সত্যসন্ত্র তর অদ্রিসাহযু অবরতানি উপরত্তিয়াণি অন্যানি সমস্তানি সন্থানি যশ্মিন্ তং। নৈতদন্যেরু লোকেষ্ বিদ্যতে অতো চুবং কীর্তিং বিতনোতীত্যুগং॥ ১০॥

অপর। আহু: ধন্যা ইতি। হে স্থি মৃঢ়গত্যঃ তির্য্যগ্জাত্যোহপি হরিণ্য এতা ধন্যাঃ কুতার্থাঃ বঃ বেণুরিফিতং বেণুনাদ্মাকর্ণ্য

## देवस्ववद्यांश्वी।

মিব তেরামপাবরত্তমেব স্যাৎ। তথাপালোকিকত্বং ত্বিক্মন্ত্যের ইতি। অথবা তাদৃশগ্রীক্ষণে প্রভাবিক প্রীত্যতিশয়বতাং শ্রীর্ন্ধাবন ময়ুবাণাং সম্বন্ধেন সর্প্রসামপি তজ্জাতী ভগবৎপ্রসাদাদনাত্রত্যা অপি এতৎসাদৃশ্রেনিব মেবে প্রীতিনন্তো জ্রেয়াঃ। ততশচ গোবিক্ষ্যা বেণ্যুম্ তল্লাদপ্রবামভাগ্রেহিপি সর্প্রাম্বর্তনীয়র্গী যলা। গোবিক্ষয় বেণার্যায়্য নাদাত্মপ্রনমন্তর্গনের মন্ত্রানাং ময়ুবাণাং নৃত্যং বিলিন্। যদ্যপি তত্ত্বেপ্রাম্বর্তনীয়র্গী যেই। বলা। গোবিক্ষয় বেংহিপি তথানি নৃত্যারীতিম্বর্প্রনাদ এব যথা ময়ুবাণাং নৃত্যে হেতুপ্রথানাের্যামবর্তারিবহুপি তথানি নৃত্যারীতিম্বর্প্রনান্তা বেলা নাম্বানাং সভাসদহনির প্রথাগাং গেলক্ষ্তার্তার বিশ্বপ্রকাশাং। কেলা মহুল শিল্পা বিল্বান্তার তিন্ধানি স্বানার আদি নাম্বানার বে। বলা। প্রেক্ষা নৃত্যক্ষণে বৃদ্ধাবিতি বিশ্বপ্রকাশাং। প্রেক্ষাং তির্বাহ্যানি যালানি ন্যুব্বাতিরিক্রানি সমস্তানি স্বানি প্রোণিনো বিলিন্। যথা। মন্তময়ুবন্ত্যং প্রেক্ষ গোবিক্ষরে বর্গানার ময়ুবাণাং নৃত্যং তংক্রেক্ষা হর্ষেণ গোবিক্ষন্ত বেণু স্তেন তল্বাদনমিত্যর্থ:। তমন্ত অন্তিসানির অবর্তানি বির্তানি অন্যানি প্রিভাবহুদানাদিব্যতিরিক্রান্ধেপ্রস্থাজনানি যেষাং তথা ভূতানি সমন্ত্র্যানি যালিন্। স্বৃদ্ধাং শ্রীবৈক্ষে প্রধানানি ব্যবাহ্যাকং তত্র তথা তাদৃশ্যবন্থানসিনির্যান্তির ব্যমধন্যা এবেতি ভাবঃ। তচ্চ তাগাং প্রেমবিশেষজ্বাবিকা তৃথ্যান্তিলক্ষণমেবেতি সর্প্রেলাহ্য। ১০।।

অহো অন্তবাং হরিপ্রিয়সর্মজীবাশ্রয়ন্ত শ্রীকুলাবনস্য মাহাত্মাং তদাশ্রমিকানাং পশুজাতীনামপি ভাগ্যং কিয়হ্বর্গতাং ইত্যাহ্ ধ্যাইতি। মূঢ়া বিবেকহীনা গতিজ্ঞানং যাসাং তথাভূতা অপি। মত্য ইতি পাঠে তথৈবার্থ:। হরিণা ইতি বনচারিণ্যোহপি এন্থা দুখ্যমানাইব। নক্ত শ্রীবলবেক্ত নক্নমিতি ধাহ্পবিশাদ্থিশগুণমহিষ্ঠাহং স্তিতং। এবং গুরোরপি ততা নামগ্রহণমিতি কোভ-

## ক্রমস**ন্দর্ভঃ**।

উত্তরত প্রীনন্দনন্দনহিতি তু গোপনাশক্তে:। বেণোরণিতং যত্র তথাভূতং।।

## প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

গোবিন্দস্য বেণ্ং বেণুবাদ্যং লক্ষ্যীকৃত্য বন্মন্তানাং মধুৱাণাং নৃত্যং তৎ প্রেক্ষ্য অদ্রিসাধুৰু অবরতানি উপরতক্রিয়াণি অন্যানি সমস্তানি স্বানি যত্র তং । অত্যান্মার্মপ্রয়েতি মধুবৈঃ প্রাথিতিস্য গোবিন্দস্য বেণুবাদনং তদীয়ং তালগত্যের মণ্ডলীভূয় নৃত্যতাং তেষাং মধ্য এব ত্যাণি সন্ত্যং বাদনং। তত্তস্থান্যেন সম্বয়স্তাং তেষাং পারিতোষিকস্বীয়দিব্যবহ প্রদানং তলৈ । তেন চ বাদকলোকরীত্যা সাহলাদং তাল ইয়া স্বানিক্ষার্মীর্মেটা স্বানিক্ষার্মীর্মেটা বিল্লাম্য ক্ষিম্যাণির তন্ধারণং তত্ত্বিয়াত্রিক্মান্সাব্দির্মান্ত্রামিত্রিয়াং সভ্যানাং ক্রক্ষ্মার কপোতাদি মুণ্ণশিক্ষামান্য লাত্যমিত্যাদিকং স্বাং দিদৃক্ষামহে ইতি ভাবং ॥ ১০ ॥

অহে। স্বৰণং তমনভিস্ত্য বয়ং ই্দ্ধিমত্যোহপি স্বজন্মবিফলীকুর্ণহে। যতো মৃঢ়া অপি সফলীভবস্তীতি দর্শয়স্থ্য আহর্ধ ন্যা ইতি। স্বেতি বিশ্ববে থেদে বা। এতাদৃশং ভাগ্যং স্বন্ধাকং নাভূদিতি ভাবঃ। বা বেগুরণিতং। বেগুরিফিতমিতি পাঠন্বয়ং। জুল্যার্থং

ময়ুর মত্ত হইল তাহাদের নৃত্য দেখিয়া তত্তৎ পর্বতের গুহায় অন্যান্য প্রাণি সকল উপরত ক্রিয় হই-তেছে, এ ব্যাপারত অন্যত্র কোথাও নাই অতএব রন্দাবনই পৃথিবীর কীর্তি বিস্তার করিতেছে স্কতরাং অবশ্যই বলিতে হইল ॥ ১০॥

অন্য ব্রজাঙ্গনারা কহিলেন হে স্থি ! এই স্কল হ্রিণী যদিও তির্যুগ্যোনিগত তথাচ ইহারা ধন্য, যেহেতু বংশীধ্বনি অবণ করিয়া বিচিত্রবেশধারি নন্দনন্দন জীক্ষের প্রতি প্রণয় অবলোকন

# আকর্ণ্য বেণুরিফিতং সহ কৃষ্ণসারাঃ পূজাং দধুর্ব্বিরচিতাং প্রণয়াবলোকৈঃ॥ >>॥ কৃষ্ণং নিরীক্ষ্য বনিতোৎসবরূপশীলং প্রুত্বা চ তৎ কনিতবেণুবিবিক্তগীতং।

## औधत्यामी ।

নন্দনদনং প্রতি প্রণয় সহিতৈরবলোকনৈবি রিচিতাং পূজাং সন্ধানং দধুং ক্তবত্যা। কিঞা। কুঞ্চদারে: পতিভি: সহিতা এব দধুং অত্যৎ পতয়স্ত গোপাং কুদ্রাং সমক্ষং তর সহস্ত ইতি ভাবং ॥১১॥

ষ্পনা উচুঃ। হে গোপাঃ আশ্চর্যাং শৃণ্ত। বনিতানামুংসবো যন্ত্রাৎ তদ্ধপং শীলঞ যধা তং ক্লঞং নিবীক্ষ্য তেন বাদিভবেণো-

## देवस्थवटडायगी।

বৈবভ্যেন বিক্ষিপ্তননদ ইত্যুক্ত হাং উপাত্তা: স্বীকৃতা: বিচিত্রা বেশা বন্যালা বহাপী ছ গুলাবতংশাদি রূপা যেন তং। বেণ্বিফিত-মিতি রাগস্থেনাপর্যাবদিতং প্রথম ফ্ংমাত্রমুক্তং। অপুকরণশ্লোহাং। রণিতমিতি পাঠোহিলি হুচিং। অপু টীকা পুন্র জ্বাতাং কৃষ্ণ এব সার: প্রনোপাদেয়ো বেবামিতি শ্লেষেণ চ স্বপত্রো নিন্তি। পূজামিতি তাবতৈব সর্প্রোপচাব পূর্বিং জাতমিতি প্রনিতং। অতএব দধুং পূপুর্ং। সর্প্রাভাহিধিকং চক্রিত্যর্থা। অতঃ ক্রিরাভোহিলি বৈশিষ্টাং বিশেষেণ রচিতং ইতি তক্র সর্প্রত হেতুং প্রণাবলোকৈরিতি ভাবমাত্রগাহিণন্ত টিতরেব পূজাদশেন্তে। বহুবং প্রশেষ। বিবক্ষরা স্বোত বিক্ষরে পেদে বা অহো বতামাকং স্বিশৃশং ভাগ্যং নাজীতি ভাবং। অনাত্রো। অথবা বেণোরিফিতং যক্র তাদৃশং সন্তং আকর্যা প্রবাদারা জ্ঞাজা উপাত্তবেশং সন্তং প্রণাবলোকৈ দিপুর্বশীকৃতবত্যং তৈরেব পূজাং প্রীতিবেবামিশি বিদ্ধুরিতার্থা। অত্র। অপ্রাবি ভূমিণতিভিরিত্যারভ্য দধন্দনন চুর্চ্বেশক্ষর ইতি মার্থবার্বং। সংশৃণুন্ বদ্মানাং স্তান্ রাবণস্য গুণান্ জনানিতি ভিত্তিকাব্যক্ত। প্রীমন্ত্রনান্দনস্য প্রব্যক্ষিণ কর্মপ্র ত্রেয়ং। অন্যৎ সমানং॥ ১১॥

অহো আতাং শ্রীর্কাবনবর্তিনীনাং ক্ষণান্তিকে চৰন্তীনামাসাং মাহান্তাং থেচরীণামপি ভাগাং কিং বর্ণামিত্যান্তঃ ক্ষ্ণমিতি। চিত্তাকর্বগং বনিতা উদস্বাগ্যোগাঃ স্থীজাতয়ঃ। শীলন্ত স্বস্থাবাঃ তেন কণিত্বা বেণোঃ বিবিজ্ঞং প্রতিক্ররাগামিশ্রণেন শুরুং। কিয়া পূলাবাদি বসলন্ধবিভাগং গীতং বিমানগতয় ইতি স্বপতিদাহিত্যং বৈমানিক্ষেনাক্ষাদাগমনং শ্রীক্ষণস্ক্ষাবোগ্যারং চোকং। তথাপি কামহতবৈষ্যাঃ সভ্যো মৃষ্কঃ। অত্র ক্ষশনেন বিশেষতো বেণ্ণীত শ্রবণেনচ তাল্শমোহো মৃত্ব এব। কিয়া। বদা বনৈব ক্লাদাস্তবন্তা তদৈব মোহ ইতি। নিরীক্ষা শ্রা চেতি দ্যোরাণ মোহে কাবণফ্রনা ত্রোবৈ প্রীতামপি ক্মনি মতং যদৈব ধলু ক্ষমপ্রাপ্ত বতাতি মোহেইনৰ বিমানতোহবতাগ্য শ্রীক্ষণান্তিক্মাণত্রং ন শক্তা ইতি

## ক্রমদন্দর্ভ:।

আকর্ণা শ্রোত্রবিষয়ীকৃত্য বিভিত্রবেশং সন্তং প্রণহাবলোকৈ দর্ধি বর্ণীকৃতবত্যং তৈরের পূজাঞ্চ দর্ধ্য কৃতবত্যং । ১১ ॥১২।

## ঐবিধনাথচক্রবর্ত্তী।

কিঞ্চান্থাকং গোপীনাং গোপে কৃষ্ণে রতি ন'হিচাবাহ্নচিতা। যতো দেব্যোহপি নাহুষে তম্ভুপি গোপে কৃষ্ণে রতিমতাং সত্য এব বদেব্যুষ্পি স্কুল্যুম্ভীত্যাশ্চ্যামিত্যাহঃ কৃষ্ণনিতি। বনিতানাং স্ত্রীমাতাণামেবাহুরাগিণীনামুংসবো যন্মাত্তগাভূতং ক্রপং শীল্ঞ যুষ্য তং

দারা বিরচিত পূজা প্রদান করিতেছে। হে দ্বি ! ইহারা আপনাদের ক্ষণার প্রিদিণের সহিত ঐ কার্য্যসম্পাদন করিতেছে, ইহাদের পতিরাও ধন্য আমাদের ভর্গণ গোপ, অতিকুদ্র, সমক্ষে তাহা সহিতেও অক্ষম ॥ ১১ ॥

অপর কতকগুলি ব্রজাঙ্গনা কহিলেন হে গোপীগণ! যাহা হইতে বনিতাজনের উৎসব হয় তাদৃশ রূপ ও শীলশালি প্রীকৃষ্ণকে দর্শন এবং তাঁহার বাদিত বংশীনিনাদ ও অসঙ্কীর্ণ গীত প্রবণ করিয়া বিমান- দেব্যা বিমানগতয়ঃ স্মরকুমসারা জশ্যৎপ্রসূনকবরা মুমুহুবি নীব্যঃ॥ ১২॥ গাবশ্চ কৃষ্ণমুখনির্গতবেণুগীতপীযুষমুত্তভিতকর্ণপুটেঃ পিবস্তাঃ।

## खिधत्रश्रामी।

রসকীর্ণগীতঞ্ শ্রুবা বিমানৈর্গছেস্ক্রো দেব্যো দেবানামকেষপি স্থিতাঃ মরেশ সুদ্ধনারাঃ বিক্ষিপ্তধৈর্যা মুমূহঃ। নোহে লিঙ্গমাহ-ভ্রশ্যং প্রস্কাঃ কবরাশ্চ ড়া যাসাং ডাঃ বিগতা নীব্যো যাসাং ডাঃ॥ ১২॥

জত্র সর্বাত্ত বজনীভেদায়াতীব সক্ষতি ব জিবা। জরণশঙ্করৈব উত্তভিতৈরয়মিতিঃ কর্ণপুটিঃ পিবস্তাঃ সতাঃ তথা শাবাশ্চ বৎসাশ্চ স্তন্ধানে প্রবৃত্তাঃ সমনস্তর্মেব গীতং শ্রুষ তদেব পীযুষ্মুভভিতকর্ণপুটিঃ পিবস্তাঃ সুতস্তনপয়ংকবলাঃ কেবলং স্তনেভাঃ ক্ষরিত-

## বৈষ্ণবতোষণী।

ভাব:। মোট্টান্নিতাথ্যো হত্বভাবেহিয়ং। যথোক্তং। কান্তশারণঝার্ত্তাদৌ হাদি তদ্ভাবভাবিত:। প্রাকট্যমভিলাষদ্য মোট্টান্নিতমুদীর্যতে ইতি। অহো বত্ত প্রমম্চানাং হরিণীনাং প্রমবিদগ্ধানাং স্থরস্ক্রীণামপি মোহনদ্যৈবস্ভৃত্স্য সর্ব্বদৌভাগ্যামৃতদিক্ষোর্য্য দর্শন-মপ্যনাপুবস্তীরশান্ ধিগিতি। কিলা। বনবিহারিণঅস্য তত্ত্ব তথা দর্শনাদ্যভাবাৎ ব্যমধন্যা এব তাস্ত ধন্যা ইতি ভাব:॥ ১২॥

অথা অন্তা গোপ্যা বাক্যমাহ গাব ইতি ত্রিভিঃ। তত্র প্রথমতো নিজভাববিরোধিমাতৃভাবাদীনাং গবাং বর্ণনং পূর্ববদবহিথার্থং প্রীতি দামান্তাংশে বিরোধাভাবাদ্বিক্ষিতোপ্যোগার্থঞ। অপ্যর্থে চকারঃ। লোকে দারাদারবিবেক্থীনত্বন থ্যাতা গাবোহিপি পীযুষরপকেণ মুখ্যা চক্রত্বং ক্রফমুখণব্দন অতিকোটিচক্রতাব্যঞ্জকেন পীযুষ্ট্যাব বৈশিষ্ট্যং স্চাতে। কৃষণঃ এলু প্রমানন্দ্যনমূর্ত্তিক্রতাত। শ্বেতি। বিশ্বয়ে তত্ত্ত্তজ্জালক্ষণং দান্তিকবিকারং প্রাপ্তা ইত্যশিং। গোবিলং নিজপ্রভূং ইতি প্রীত্যা স্পর্শনং বোধ্যতি। অন্যতৈঃ। তদসন্মতে মুত্ত্তনপ্য ইতি পাঠে মুতং কেষাঞ্চিদ্ভিনবানাং মুখাৎ করিতং তনপ্যঃ মাতৃত্তনক্ষীরং কেষাঞ্চিত্র তৃণ্চরাণাং তৃণপূরিতঃ কণ্ঠান্যশ্রোণং অত্তব সন্তব্তয়া ক্রিতঃ কবলণ্চ তৃণ্গ্রাদো যেষাং তে। যথা। আহ্বিন মনসি গোবিলং স্পৃশস্তঃ

## ক্রমসন্দর্ভঃ।

গাৰ ইত্যাদিত্ৰয়ং গোষ্ঠান্তরস্য ॥ ১৩॥

## **बीविश्वनाथहळावडी ।**

দেব্যো দেবানামকে স্থিতা অপি বিমানগতয়ো বিমানচারিণাঃ। স্বরেণ হয়শ্চালিতঃ সারো ধৈর্যাং যাসাং তা মুম্ছঃ। মোহে লিঙ্গমাহল শ্রুংপ্রস্থনাঃ কবরা যাসাং তাঃ। বিগতা নীব্যোহপি যাসাং তাঃ। মোটায়িতমিদং। বহুক্তং। কান্তস্থারণবার্তাদৌ হুদি তন্তাবভাবিতঃ। প্রাকট্যমভিলাষস্য মোটায়িতমিতীর্যাত ইতি। প্রমবিদ্ধাঃ স্ক্রাধিয়ো দেবান্তজ্ঞাত্বাপি স্ত্রীভ্যোন ক্রহুন্তি প্রত্যুত স্বীয়ং
ভাগাং মানয়স্তো নিত্যমেব তাঃ ক্রন্তং দর্শয়িতুং বিমানমারোহ আনয়ন্তি অস্বংপতয়ন্ত ক্রহুন্তোবেতাতো নিক্নন্তা মৃগ্য উৎক্রন্তা
দেব্যাহপি ধন্যা মধ্যন্তা মাহুষ্য এব ব্যমধন্যা ইতি ভাবঃ॥ ১২॥

নচ স্ত্রীন্ধাতীনাং সর্বাসামেতৎ কামবিজ্জিতমেবৈতনোহনমিতি বাচাং। যতো বৎসানাং গ্রামপি মোহনং পশ্যতেত্যাহং। গাবেশেতি। ক্ষরণশক্ষরৈবান্তভিতৈক্ষমিতৈঃ কর্ণপুটেঃ পিবস্তা এব তছুঃ। নচ তত্রাপি বাৎস্লাভাব এব মোহনে হেত্বস্তীতি বাচাং। যতো ভাবশ্ন্যানামপি তলীয়শাবানাং মোহনং পশ্যতেত্যাহং। শাবা বৎসাঃ স্তনপানে প্রবৃত্তাঃ সমনস্তর্মেব গীতং শ্রুষা তদেব পীয্যমৃত্তিতকর্ণপুটিঃ পিবস্তঃ স্ত্রনপানাসাম্প্যাৎ স্তনেভাঃ মৃতানাং প্রসাং কবল এব মুখেন তু নিগিলনং যেষাং তে তত্ত্বঃ জাড্যোদ্যেন স্তব্ধ বত্ব্রিত্যর্থঃ। তত্ত্ব ত্রাভ্রো গোবিন্দং দৃশা দৃষ্টৈ বাক্ষ্যানীয় নেত্রক্ষু ছারেণেবাস্তঃ প্রবেশ্য আত্মনি স্বমনসি

যোগে গমনকারিণী দেবাঙ্গনাগণ দেবতাদের ক্রোড়ে থাকিয়াও কামে অধৈর্য ইইয়া মুগ্ধ হন্। মোহের প্রমাণ এই, তৎকালে দেই সকল দেবীর কবরী হইতে কুস্থম পরিভ্রম্ট এবং নীবী শ্বলিত ইইয়া পড়ে॥ ১২॥

আরও কহিলেন এই সকল গাভী উন্নমিত কর্ণপুট্ধারা জ্রীক্লফের বদনারবিন্দ-বিনির্গত বেণুগানা-মৃত পান করিতে ২ এবং এই সমস্ত বৎস স্তনক্ষরিত ক্ষীরগ্রাস মূথে করিতে ২ বিম্মৃতক্রিয় হইয়া শাবাঃ স্মৃতন্তনপয়ঃকবলাঃ স্ম তস্থুর্গোবিন্দমাত্মনি দৃশাশ্রুফলাঃ স্পৃশস্ত্যঃ॥ ১০॥ প্রায়ো বতান্ব মুনয়ো বিহুগা বনেহস্মিন্ কুষ্ণেক্ষিতং ততুদিতং কলবেণুঞ্জীতং।

## बीधवयामी।

ক্ষীরগ্রাসা মুথেষু যেষাং তে তত্ত্বং বিশ্বতক্রিয়া বভূবুরিত্যর্থং। তত্ত্র হেত্বং গোবিলং দৃশা মার্গেণ আত্মনি মনসি স্পৃশস্ত্য আলিলস্ত্যং অতএব অঞ্চণাং কলা লেশা লোচনযোর্বাসাং তা গাবন্তে চ শাবাঃ॥ ১৩॥

ভো অম্ব মাতঃ অম্বিন্ বনে যে বিহগাঃ পক্ষিণস্তে প্রায়েণ মুনয়ো ভবিতুমহ স্থি কুতঃ ক্লফেকিডং ক্লফদর্শনং পূষ্পফলাদ্যস্তরং বিনা যথা ভবতি তথা ক্ষতিরাঃ প্রবালা যেযাং তান্<sup>8</sup> ক্রমভূজান্ বুক্ষাণাং শাখা আক্রম্ম তেন শ্রীক্ষেন উদিতং প্রকৃতিহং কলবেণুগীতং কেনাগি

## বৈষ্ণবতোষণী।

অর্পরত্তঃ সাক্ষাৎ সম্যাদর্শনাশক্তে:। তত্ত্ব হেতুমাহ দৃশা নেত্তেপাঞাণি কলরন্তি বর্ধস্তীতি তথা তাঃ। অঞ্ধারয়া দৃট্যাচ্ছাদ্নামনদৈব পশাস্ত ইত্যর্থ:। অতস্তদর্শনমাত্রাভাবেন বয়মধন্যা এবেতি ভাবঃ। ১৩॥

অহো অন্বতরাং শ্রীকৃষ্ণপাল্যমানানাং গবাং ধন্যত্বং বন্যানাং বিহগানামপি ভাগাং কিং বর্গমিত্যাহঃ। প্রান্থ ইতি বাহল্য মৃন্রাদীনাং কেষাঞ্চিৎ প্রেমন্ত্যাদিনা প্রমভক্তসাম্যাৎ। বতেতি বিশ্বরে। হে অন্বেতি অন্নং ভাবাবিষ্টপ্রমদান্তনকথাস্বভাবঃ যৎ থলু
তচ্চ্নাহপি তৎসন্থোধনং। স্বস্থীভ্যো হন্তবর্গমিত্যুক্তবাৎ। ক্লফেকিতং স্বকর্ত্কং কৃষ্ণস্য দর্শনং তৎকর্ত্কং বা স্বদর্শনং যত্র তৎ
যথা দ্যাৎ তথা ক্রমভূজানাক্ষয় ক্ষৃতিপ্রধালানিতি তেরামপ্যক্লরাদিবিকারো দর্শিতঃ। বিহগানামপি তদ্দনে ব্যবধানং প্রথভোগসাধনক্ষ দর্শিতং। তথাপি ক্লফেকিতং যথা স্যাত্তথা শূণ্তি মীলিত দৃশং অর্ক্মৃতিভদৃশঃ। মহাপ্রেমসম্পত্যা অলসদৃষ্ট্র ইত্যর্থঃ।
বিগতা মনঃশ্রবণবাগিক্রিয়েভ্যো নির্গতা অন্যা মুরলীবাথ্যতিরিক্ষা বাচো বেষাং! অতত্তবে ধন্যা ইতি ভাবঃ। অন্যক্তিঃ। তত্র
ভাবার্থে ক্লচিরশক্ষাভগবদ্পিতকর্মাণীতি বোদ্ধব্যমিতি। অথবা প্রায় ইতি বিতর্কে। মুন্র আয়ারামাঃ শ্রীসনকাদ্যোহন্মিন্ বনে

#### ক্রমসন্দর্ভ:

ক্লফেক্ষিতং তেনৈব প্রথমমবগতং তত্মাছদিতং ব্যক্তঞ্চ। ক্লচিরেভি ক্রমাণানপি বিকারঃ স্থচিতঃ॥১৪॥

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ম্পৃশস্ক্যঃ স্বমনসঃ ক্রোড়ে এব বাৎসল্যাৎ স্থাপয়স্কান্তস্থা। তথা অশ্রন্যানন্দাৎ কলয়ন্তি ধারয়ন্তীতি তাঃ। এবঞ্চ সর্ব্বপ্রাণিনাং রুঞ্চেনিরূপাধিরেব প্রেমা কিন্তু তে সংযোগাৎ ধন্যা বয়ন্ত বিচ্ছেদাদধন্যা এবেত্যেতাবানেব বিশেষ ইতি ভাবঃ॥ ১৩॥

বংসা অপি বিষয়গ্রাহিণো বিষয়রস এব তত্রোপাধিরস্তীত্যত আত্মারামা মুনয়ে। জ্ঞানেন সর্বানেব ভাবাংস্ত্যকরস্থা নির্দ্ধিকারা: ক্ষেণ্ডন ক্ষোভ্যিত্ব ন শক্যা ইতি বাচাং যতন্তানপি স্বমাধুর্যোগাক্ষ্য সম্মোহয়তীত্যাহ: প্রায় ইতি। বতেতি বিসমে। অন্ততি স্থীং প্রতাপি সম্বোধনং ভাবাবিউপ্রমদানাং স্থভাব এবৈষঃ। বিহগা মুনয় এব ভবেয়্রিত্যর্থ:। বনবাসদৃভ্রিশীলনমৌননৈশ্বল্যাদ্যসাধারণধর্মদর্শনাং। যে ক্রমভ্লান্ আক্রহ বেণুগীতং শৃণু স্থি। ক্রচিরপ্রবালানিতি ক্রমভ্জানামপি বেণুগীতানন্দাং মুনিজনস্পর্শানন্দাং চাঙ্করাদিবিকারো দর্শিতঃ। কলয়তি জগচিতঃ ক্লোভয়তীতি কলবেণুগীতঃ। কীদৃশং। ক্রফেন্সিভং ক্রফে এব ঈন্সিভং নতু শক্রপরমেন্তিক্রন্তবিস্থ্র্ গানপ্রস্ত্রিপ্রধ্ব পৃষ্টং মুনীনামেবমেষামতিপ্রাচীনস্বাং তত্র তত্র সর্ব্বোবারিতগতিস্থাৎ বহুশোহবক্লিতভন্তন্দ্রীভ্যাচ্চ তত্তৎ ক্রতসঙ্গীত- শাস্ত্রাভিজ্যবাচ্চিত ভাবঃ। নচাস্য গানস্য কোহপ্যন্যঃ প্রত্য সন্তবেদিত্যাহঃ। তহুদিতং ত্রমাৎ ক্রফা

পড়িতেছে, ইহার কারণ এই বোধ হয় ইহারা দৃষ্টিপথদারা মনোমধ্যে থেঁন ঞীকৃষ্ণকে আলিঙ্গন করি-তেছে, তাহাতেই ইহাদের লোচনে অঞ্জলেশ দৃষ্ট হইতেছে॥ ১৩॥

আরও কহিলেন হে মাতঃ! এই বনে যে সকল বিহণ আছে তাহারা প্রায় মুনি হইবার যোগ্য, যে হেতু যে প্রকারে প্রীকৃষ্ণ দর্শন হয় সেই রূপ ক্রিয়া মনোহর প্রবালশালি তরুশাখায় আরোহণ পুরঃসর প্রীকৃষ্ণের বাদিত মধুর বংশাগীত প্রবণ করিতেছে। ঐ দেখ কোন প্রকার অনির্কাচনীয় স্থানেন্দ্র হওয়াতে ইহাদের নয়ন নিমীলিত হইতেছে,ইহাদের বদনে আর বাক্য নাই। ফলতঃ,মুনিগণ যেমন যে রূপে প্রীকৃষ্ণ দর্শন হয় তত্ত্বপ করিয়া বেদোক্ত কর্ম্মকল পরিত্যাগ করত বেদরপ তরুশাখায় আরো-

## আরুছ যে জ্বনতুজান্ রুচিরপ্রবালান্ শৃণুন্তি মীলিতদৃশো বিগতান্যবাচঃ ॥ ১৪ ॥ নদ্যস্তদা ততুপধার্য্য মুকুন্দগীতমাবর্তলক্ষিতমনোভবভগ্নবেগাঃ।

## শ্রীধরস্বামী।

স্থানে নীলিতদৃশঃ ত্যকান্যবাচঃ সন্তঃ যে শৃণ্**তীতি** তথা হি মুনয়ঃ শ্রীকৃষ্ণদর্শনং যথা ভবতি তথা বেদোককর্মকলতাাগেন বেদজ্ঞন শাথাক্স ক্ষিত্র প্রবাল স্থানীয়ানি কর্মান্যেবাশাদদানাঃ স্থানঃ সন্তঃ শ্রীকৃষ্ণগীতনেব শৃণ্ডি অতস্থএবৈতে ভবিতৃমর্হতীতি॥ ১৪॥ আশ্রাং তাবং সচেতনানাং কথা নদ্যো**হিলি আয়েঠিঃ** পবিভ্রমণৈল ক্ষিতেন স্টিতেন মুনোভবেন ভগ্গো বেগো যাসাং তাঃ আলিস্ক-

## देवकवरकावनी।

বিহগা এব বভূবু রিত্যর্থ:। অত্র প্রয়োজনমাত্য ক্ষেত্যাদিনা। ক্লেনে ঈশিতং খ্রমেবোৎপ্রেক্লিডং করিডং পূর্বিং তাদৃশাভাবাৎ তেনৈবােদিডং উত্তরোভরপ্রকটিড গুণমিতি বেণুগীতদা ব্রহ্মসমধিতােপাাকর্ষকতা দর্শিতা। কলয়তি জগচিত্রমাকর্ষতি ইতি কলং বেণােগাঁজং তাদৃশ মুনিবে লিক্ষাহ্য কচিরপ্রবালান্ বিচিত্রােপশাধামঘান্ ক্রমভূরান্ বেদশাধারপান্ আরুহাাতিক্রম তদভিনিবেশমূপি পরিত্যন্তা মীলিতা মুন্তিতা আছেরা দৃক্ দেহাদিজ্ঞানং বৈত্তথাভূতা অপি দন্তঃ বিগতা অন্যেষাং ক্লক্রাতিরিক্তানাং বাক্ কথাপি কিং পুনর্বিচারাদিকং বেভাঃ॥ ১৪॥

এবং পূর্ব্ববহিত্বাদণি কর্ত্ মশকু বতাঃ স্বর্গান্তরূপমেবাস্থবর্ণান্ত্যো রাগোৎকটোন স্বং ভাবং অচেতনোহপ্যুৎপ্রেক্ষণ্ডে নদ্য ইতি প্রীকালিনীমানসগঙ্গাদান্তনা তৎকণ এব তত্তাদৃশপ্রসমোহনং উপধার্যা স্বত এব নিক্টায়াতং সাবধানং ক্রপ্তেগর্ডঃ। সর্বানন্দ-শিরোমনিনা নিজসঙ্গমেন সর্বত্থাস্থান্তিং দদাতীতি সুকুন্ত্রদা গাঁতং প্রমানন্দজনিতরাগং আবর্জেতাতিক্রোভো দর্শিতঃ। উর্দ্বিভ্রে ক্রমণোপহারাঃ স্তাতৈরেবালিঙ্গনেন স্থাতিনার্তং ধ্বা স্যাত্তবা তৈরেব স্বারেঃ পাদযুগলং গুক্তীতাব্রঃ। তত্ত চাঙ্গ ক্রমঃ। প্রথমং তাবদাবর্তে বিভিন্নানি ক্রমান্থাপহরন্তি। তৎপশ্চাং পাদযুগলং গুহুন্তি তদনন্তর্ক প্রবৃদ্ধত্যা বক্ষঃস্থলপর্যজনপি বেইয়িঘা নিজসন্তাতি। এতত্ত্বং ভবতি। নদ্যো মোহনবেণ্গীতঃ ক্রন্তাং স্বপ্তিস্কুলাভিন্নমন্ত্রাং বিস্কৃল আতৈয়ের প্রিক্রমণিবিশেষতাত বৃন্ধানন্ত্রানি ক্রমানোবোপহারো যাসাং তথাভ্তাঃ সত্য উর্ন্ধিভিরেব দীর্ঘের্বাভিন্ন ব্রোক্র্যানে পাদযুগলং প্রহণানিক্রাভ্রাং স্বিন্দ্র স্থানিক্রাক্র স্থাতি তত্ত্ব স্বারেরিতি। বামনপ্রাবোক্তম্য প্রাচীনস্য দৈত্যবিশেষত্য স্বন্য হস্তা নারায়ণেন সমোহ্যমিতি নাস্য ভলনে পাতিন্ত্রভারণ ইতি ভাবস্কীতি চ। অভস্তাএর প্রমধন্যা ব্রস্ক প্রভিগ্রাক্তিত নাদির্ গাচ্নিক্রেং। নত স্বপতিগ্র্কভাপ্রবাহো প্রসঃ নাপ্যশাক্ষ বহবে। ভূজা দীর্ঘা বা বৈত্তৎ পাদপল্নমেক্ষণি স্থান্থনীক্রতা স্থনানির্ গাচ্নিক্রেং। নত স্বপতিগ্রুক্ত ভাপ্রারেরে প্রমান নাপ্যাক্ষ বহবে। ভূজা দীর্ঘা বা বৈত্তৎ পাদপল্লমেক্ষণি স্বন্থনীক্রতা স্কনানির্বাচ্বাক্র বহবে। ভূজা দীর্ঘা বা বৈত্তৎ পাদপল্লমেক্ষণি স্বন্ধ্রীক্রতা স্থনানির্বাচনির প্রসঃ নাপ্যাকার বহবে। ভূজা দীর্ঘা বা বৈত্তৎ পাদপল্লমেক্ষণি স্বাহ্বীক্রতা স্থনানির্বাচনির প্রসঃ নাপ্যাক্র বহবে। ভূজা দীর্ঘা বা বৈত্তৎ পাদপল্লমেক্সণি স্বাহ্বীক্রতা স্থনানির্বাচনির বহবে। ভূজা দীর্ঘা বা বৈত্তৎ পাদপল্লমেক্সণি স্বাহ্বীক্রতা স্বনানির স্বাচনির বহবে। ভূজা দীর্ঘা বা বৈত্তৎ পাদপল্লমেক্সণি স্থান্ত্রীক্রতা স্বানির বিল্লাক্র বহবে। ভূজা দীর্ঘা বা বৈত্তৎ পাদপল্লমেকস্বনি

## ক্ৰমদন্ধ :।

নদ্য ইতি বেণুবাদ্যমাধুর্যোণ জলক্ষাদের্জনবৃদ্ধা ভচ্চরণপীঠপর্যস্তাগমনাং এবমনুদাগমনমপি ॥ ১৫ ॥

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

নেব উদিতং আবিভূতিং কৃষ্ণ এবাদ্য অষ্টেতি গীতদানে স্বেদান্ধ বাজিতং অতএব ব্ৰহ্ম ক্ৰাদিভিবিব ক্লেষ্টেন স্বস্থীতশাস্ত্ৰমণি প্ৰাহকা সম্ভাবাদেৰ ন ক্ৰত্নিতি জেলং। অতএবাতাপূৰ্ব্বগীতব্ৰসামাদ্বশানীলি হৃদ্য:। বিগ্ৰা অনাদ্য ব্ৰহানকাম্ভব্যাণি বাক্ প্ৰস্পাৰকণনং যেষাং তে ইতি সম্প্ৰতি তমণি পৰিতাজ্য আমী কৃষ্ণানক্ষতা এবাভ্ৰন্নিতি ভাবং॥ ১৪॥

কিঞ্চ। ক্ষাস্য সর্কমোহনবেহণ নারীজাতিমাত্রমোহনত্বমতাধিকমিত্যাত্ ন'দ্য ইতি। আবর্তিঃ পরিভ্রমৈ ল'কিতেক মনো-ভবেন কামেন ভগ্নো বেগো যাসাং তাঃ । অতএব ধৈর্যালজ্ঞাদ্যপথমাং সমুদ্য অপতিঃ প্রত্যাগমনাং জলাতিবৃদ্ধা উর্দ্ধা এব ভূজা-তৈর্যাদালিস নং তেন স্থগিতঃ সংবৃতঃ নিশ্চলীভূতঃ কুলান্তিত্স্য মুরারেঃ পাদমুগলং গৃহন্তি আলেবু ধার্যন্তি কমলং পাদমুপহরস্তাঃ। যা। বিশা। ক্ষীতলং কুগদ্ধং জলং। সলিলং কমলং জলমিত্যমরঃ। স্বীয় জলেন কালনার্থং পাদ্যোপহারং প্রেদদ্য ইবেত্যর্থঃ। কিশা। কমলা

হণ করিয়া রুচির প্রবালবৎ কর্ম্ম সকল সম্পাদন ক্রেন এবং তাহাতেই স্থা ইইয়া প্রাকৃষ্ণ গীতই প্রবণ করিয়া থাকেন, অত্রত্য পক্ষিগণও তজপ করিতেছে, অতএব ইহারাই সেই সকল মুনি হইতে পারে॥১৪ আরও কহিলেন স্থি! সচেতনের কথা কি, অচেতন নদী সকলও প্রীকৃষ্ণের বেণুগান প্রবণ করিয়া বেরূপে আলিঙ্গন হয় তজ্ঞপ করিয়া তরঙ্গরূপ হস্ত দিয়া ক্যনোপহার আহ্রণ করত তাঁহার পাদমুগল আলিঙ্গনস্থ গিতমূর্বিছের বারে গৃঁহুন্তি পাদযুগলং কমলোপহারা: ॥ ১৫॥
দৃষ্ট্বাতপে ব্রজপশূন্ সহ রামগোপৈঃ সঞ্চারয়ন্তমসূবেণুমূদীরয়ন্তং।
প্রেমপ্রবৃদ্ধ উদিতঃ কুন্থমাবলীভিঃ সধ্য ব্যধাৎ স্ববপুষামূদ আতপত্রং॥ ১৬॥

## अधिवयामी।

## বৈষ্ণবতোষণী।

মালিকাম: ইতীদমত তবং। যথা প্রীক্ষচক্সভাদৃশং বেণুগানমাচরতি তদা শুক্ষশাধাক্ষরশিলাদ্রবপ্রবাহস্তস্ভাদয়ে। ভবস্তি। ততো জলভ্তন্তেন প্রবৃদ্ধলা নদ্যভাষিষ্ চতপ্রদেশেংপি সক্মলতরকাঃ স্মাগভ্য তৎপাদক্ষলং স্পৃশভ্তি ভচ্চ দৃষ্ট্। তাঃ সচেতনত্বন প্রতি-যন্ত্রীতি ॥ ১৫ ৪

অথ দৃষ্ঠ্ । ইত্যাদিব্যেন পূর্কবিদ্বহিথা তদশক্তিভাং গোষ্ঠান্তরং তত্র পূর্কবিদ্যেতনে ভাবং ক্রয়স্তোইপি স্থান্যরস্বর্ণন্যা নিজ্বস্নাজ্যাদ্য ইবাহং দৃষ্ট্ তি । বিহ্যুন্যরচক্ষেতি শেষ: । আতপ ইতি তাপাধিকাং। ব্রুপশ্নিতি তদাহল্যাং তৃণবাহল্যাং পেক্যাবশ্যং তত্র স্থিতি: । সংহতি বহুলজ্যাপেক্যা অনু পশ্চাৎ নেবাকর্ষণার্থম্জেরীরয়ন্তং তত্ত্রব প্রেম প্রেমাণং ব্যাপ্য উদিতঃ প্রবৃদ্ধতি উৎক্লতম্বাৎ । কুষ্মং নেবপূপ্পং জলং । নেবপূপ্পং বনরস ইত্যভিধানাৎ । তভাবলীভিবি শুনিকরৈঃ সহিতেনেত্যর্থ: স্থাবিতি বর্ণাদিসাম্যাৎ স্বস্য বপুরা সজলপেহেনেব অনুদেত্যকেঃ স্বপুরেব ছত্তং কৃত্বানিত্যর্থ: । ছত্ত্রমপি কুষ্মাবলীযুক্তং ভবত্যেব । এবং স্থান নিজং দেহং ধনঞ্চাপিতবান্ । অতোহসৌ প্রমধন্যঃ অস্মাকঞ্চ তদানীং তদ্ধনিস্যাপ্যসম্পত্তঃ ভাগ্ছীনতরৈবেতি ভাবঃ । অত চেদং ভবং যদাতপে গাশ্চারয়ন্তঃ স্থায় থিয়া ভবন্ধি গাবশ্চ বিক্ষিপ্তত্যো ভবন্ধি তদা তাগাং মেঘানাং চাকর্ষণায় তণ্ডলামা মলার্রাগং বাদয়তি । তত্ত্বাদ্শলীলা ফ্রা কাশ্চিদেবমুৎপ্রেক্ষন্ত ইতি ॥ ১৬ ॥

## এবিখনাগচকবর্তী।

স্বৰ্ম্বসম্পত্তিস্তামৰ্পন্ত্যঃ স্বৰ্মণং প্ৰীণন্তিকৃমিতি ভাবঃ। তাদাং পতিঃ সমুজোহণি তা নৈব ছেটি যথাস্থপতয়ো হস্থানিত্যহো ব্যয়ে-বাধন্যা ইতি ভাবঃ॥ ১৫॥

হস্ত হস্ত স্থাভাববস্তোহণ্যাত্মানং কৃতার্থস্তীত্যাহ:। দৃষ্টে তি প্রেইরব প্রবৃদ্ধং যাবত্যা স্ববৃদ্ধ্য গোণোপালসহিত্স্য আতপনিবারণং ভবেত্তাবৃতীং বৃদ্ধিং প্রাপ্ত ইত্যর্থ:। কুস্থমাবলীভিরিতি মেদপুশাং খনরস্য ইত্যভিধানাং জলকণাবলীভি: সহ স্ববস্থা স্থাঃ কৃষ্ণস্যেতি রস্বৃষ্ট্যা সন্তাপং বিদ্বেদ স্বৰ্ণবেদ স্থাইছিল। শীতবন্তবেগ্নাদ্যোঃ সাম্যং দৃষ্ট্য চ স্থিভাবমভিমন্ত্রমানঃ আতপত্তং ত্বারব্যক্তিত্তং ব্যধাদিত্যাকাশস্থো মেষোহ্পি তং স্থেয়তি কেবলং ব্যমেব তং স্থ্যিত্থ ন প্রাপ্ত ধিগ্রানিতি ভাবঃ॥ ১৬॥

গ্রহণ করিতেছে। হে গোপীগণ! ঐ দেখ পরিভ্রমণদারা নদীসকলের মনোভব সূচিত হইতেছে এবং তাহাতে তাহাদের বেগ ভয় হইয়া থাইতেছে॥ ১৫॥

অপর গোপীগণ কহিলেন দথি! জলধর স্বয়ং যেমন লোকের আর্তি হরণ করে প্রীকৃষ্ণও তজ্ঞপ লোকার্তিহারী অতএব প্রীকৃষ্ণ অসুদের বন্ধু, ঐ দেখ ,বারিধর নিজবন্ধ প্রীকৃষ্ণকে গোপগণ সহ রোদ্রে রোদ্রে পশু চরাইতে এবং ক্ষণে ২ বেণু বাজাইতে দেখিয়া ছঃখিত ইইয়া অত্যে প্রীকৃষ্ণের উপরে উদিত হয় এবং পুনরায় প্রেমবশতঃ প্রবন্ধ ইইয়া পুল্পসমূহ অর্থাৎ তৎসদৃশ ভূষারবিন্দু এবং স্থীয় শরীর দারা ছত্তী রচনা সম্পাদন করিয়াদিল ॥ ১৬ ॥

## পূর্ণাঃ পুলিন্দ্য উরুগায়পদাব্ধরাগঞ্জীকুরুমেন দয়িতান্তনমণ্ডিতেন।

## শ্রীধরস্বামী।

স্নীংকাবমাতঃ পূর্ণাঃ কৃতার্থাঃ প্রিন্দাঃ শবরাজনাঃ কথমিতাত আতঃ। প্রথমং দরিতানাং স্তনেষু মণ্ডিতেন অমুলিপ্তেন পুনশ্চ রতিসময়ে উক্লায়স্য শ্রীকৃষ্ণত পদাক্তয়োরাগেণাকণেন শ্রীঃ কান্তির্যত তেন কৃত্বমেন পুনস্তস্য বনস্থলীযু চংক্রমণেন তৃণেষু

## বৈষ্ণবতোষণী।

অথ নিজভাবপ্রকটনময়েন পদ্যেন নিজরসবর্ণনং। সঙ্গতিত্বেবং আন্তাং তাবং। তৎস্কাস্য মেঘস্য ভাগ্যং অন্তান্ধন্তীগামপি কিং বর্ণামিত্যাছ: পূর্ণা ইতি। তত্র পূর্ণা ইত্যনেনাহে। বয়মপি যথাকথঞ্চিত্তংসহদ্ধেন। তথা ভবিতুং পারয়াম: কিন্তু নাত্তি তাদৃগ্ভাগ্যমিতি পুলিন্ধ্য ইত্যানেন তাদৃশীভ্যোহপি শোচ্যা বয়মিতি। উরুনা বেণুনা গায়তীত্যুরগায় ইত্যানেন নিজাধৈর্য্যে তৎকর্তৃককারণবিশেষোপ্য-ন্তীতি পদাক্সবোরাগরূপং যৎ তত এব হেতোরস্বাদ্দৈকগম্য কান্ত্যামোদাদি শ্রীবিশেষযুক্তঞ্চ যতেন কুছুমেন ইত্যনেন তাদৃশ পাদাক্সপর্শনায় মন: স্পৃহয়তীতি। দ্য়িতা তাদৃশ নাগরদা তাদৃশীং বিনা প্রিতেরদম্ভবাং যা কাচিৎ প্রেয়দী নিগুঢ়ং বিদ্যুতে তদ্যা: ন্তনাভ্যাং মণ্ডিতং শোভাবিশেষমানীতচরং মতেনেত্যনেন তাদাত্ত্ব, তত্ত্বিলাদাত্মকং তাদৃশং ভাগ্যমন্মাকম্ভিদ্রাদ্রতর্মেবেতি। ভদ্দনিত্যনেন ভংসম্বন্ধিনোহপি ঝটিভি ভল্লীলাহুস্কাপনেন স্বভাবেনৈব বা তাদৃশ মোহনত্বং কিং পুনস্তংস্যতি। ভূণেত্যনেন তাদৃশ-জন্মাপ্যস্মাকং ভব্ছিতি শিম্পস্ক্য ইত্যাদিনা। অহো হর্ষভরস্তাদামিতি চ বোধয়ন্তি। প্রথমং তাদৃশলোভনস্বভাবাক্টতয়া ঘাণ-প্রস্কো ভবত্বিতি জাতম্বাধিত্তৎপ্রাপ্ত্যা তদংশেন শাজে। ভবত্যের ততন্তাসামভবদমাকত্ব ন তদংশেনাপীতার্থ:। ভততা অণ্যমদ-পেক্ষয়া পুর্বা ইত্যাহো ছুর্ভাগ্যমিতি ভাব:। অত্তৈতছ্কং ভবতি। তদিনং তাদামথিলং বচনং ভাবমাতাবগতমপি যণাবদেব। তাদৃশ-গাঢ়ভাবস্য দুরতোহপি স্থবিষয়সাক্ষা**ুকারহেতু**থাং। যস্যান্তি ভক্তির্জগবত্যকিঞ্চনা ইত্যাদিভ্য:। সতত্তদেতদহবদিষ্যতে পট্টন-হিষীভিরপি। কাময়ামহ এতদ্য শ্রীমংপাদরজঃ শ্রিয়ঃ। কুচকুত্বনগন্ধাঢ্যং মৃদ্ধ্য বোঢ়ুং গদাভৃতঃ। এজল্লিয়ো ব্যাঞ্জি পুলিক্ষান্তৃণ-বীক্ষ ইতি। তত্ত্ব স্ত্যুক্সায়পাদাক্তরাগেত্যনেন সহ দ্য়িতান্তনমণ্ডিতেনেত্যুক্ত্যা তৎকুত্বমং দ্য়িতা গুনতন্ত্স্য পাদলগ্নমিতি লক্ষাতে। সাচ দ্বিতা শ্রীপদেনান্দিতা তদিদং বর্ণয়ন্তীবু তাম্বপি বিশিষ্টা। ক্ষিণী দারবত্যান্ত রাধা বৃন্দাবনে বন ইতি মাৎস্যাদি-প্রাসিদ্ধা শ্রীরাধৈব লভ্যতে। শ্রিম: কাস্তা: কাস্ত: পরমপুরুষ ইতি ব্রহ্মসংহিতা দর্শনান্ত জ্বদেবীমাত্রাণাং শ্রীতে প্রাপ্তেহপি। দেবী कुक्तमत्री (প্রাক্তা রাধিকা প্রদেবতা। সর্বলন্ত্রীমন্ত্রী সর্বকান্তিঃ সম্মোহিনী পরা ইতি বৃহদ্যোত্মীয়ে তু তদাধিকাং দুশাতে।

## ক্রমসন্দর্ভঃ।

পূর্ণা: পূলিন্দ্য ইতি। অত্র দয়িতা কাশ্চিদ্বেণ্নাক্টা মৃচ্ছি তাশ্চ ততা মৃচ্ছাশান্তয়ে যে চরণপ্রবেন স্পর্ণমাত্রকৃতমিতি বিবেচনীয়ং।

শ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ইদানীং সৌন্দর্য্যাদি বেণুগানাদিরপগুণাবপ্যনপেক্ষমাণং কিঞ্চিৎ সম্বন্ধমাত্মেণৈৰ তথ্যাহনত্বং প্রতিপাদয়স্ত্যঃ প্রেমঃ সপ্তম্যা ভূমিকারা মহাভাবক্ত মাদনাথ্যং মহাসারং ভাবমভিব্যঞ্জয়ন্তাঃ শ্রীব্যভানুকুমারীচরণপদ্ধজ্যতার আহঃ পূর্ণা ইতি । পুলিন্দ্যঃ সবরাদ্ধনা এব পূর্ণা ব্যত্তপূর্ণা এবেক্যাতন্তদীয়ং তপোজিজ্ঞাসমানাশ্চিকীর্বাম ইত্যমুরাগোধ্বনিতঃ। নমু কেন পূর্ণাক্ত আহঃ উন্ধ্যায়পদাজক্ত রাগোরঞ্জনং যত্ত তেন শ্রীকুর্মন। নমু তৎপদ্ভিশ্বতং তৎকুর্মং কুতন্ত্যং তাৰত্ত্রাহ্যা দিয়িতান্তনমন্তিতেন দ্যিতাসভোগান্তদীয়ক্তনসহক্ষীতি ভাবঃ। অতন্তদীয়পরমসৌভাগ্যক্ত প্রতাবভিলাবে চ সাহসং কর্ত্ মশকুবতীভির্ম্মাভিঃ পুলিন্দ্য এব অনুষত্ত ইতি ভাবঃ। বদ্যপত্র দ্যিতা সৈব স্বয়ং শ্রীব্যভামকুমার্য্যের তদপ্যমুরাগাধিক্যোনের ভদমাননং। নমু তেন পুলিন্দীনাং তাসাং কিং তত্ত্বাহু। তৃণের্ ক্রিক্তি লাবঃ। দ্যিতাসভোগানস্তরং কৃষ্ণক্ত বনবিহারাদিতি ভাবঃ। নমু ততোহপি কিং তত্ত্বাহু: তস্য তৃণলগ্যকুর্মক্ত দর্শনেন স্বরুক্ত কন্দর্পপীত। যাসাং তাঃ। ন জানীমহে কৃষ্ণকর্ণনে তাসাং কিমভবিষ্যাদিতি ভাবঃ। তত্ত্ত কৃষ্ণাদ্বেরতা কিম্বক্রা স্থাননের

অন্য গোপীগণ কহিলেন অহে। ! শবরস্ত্রীগণ ধন্য, তাহারা ক্তার্থ হইল, করিণ যে ক্রুম প্রথমে দয়িতাদের স্তনে অসুলিপ্ত, পরে রাত্তিকালীন রতিসময়ে জীক্ষের পাদাজের অরুণিনায় কান্তিপ্রাপ্ত এবং যাহা পুনঃ ২ বনস্থলীপরিজ্ঞমণহেতু তৃণসকলে সংলগ্ন, সেই ক্রুম লইয়া আপনাদের স্তন ও

## তদর্শনস্মররুজন্ত্র্ণরূষিতেন লিম্পন্ত্য আননকুচেযু জন্ত্রদাধিং ॥ ১৭ ॥ হস্তায়মদ্রিরবলা হরিদাসবর্ধ্যো যদ্রামকুষ্ণচরণস্পর্শপ্রমোদঃ।

## अधनवामी।

ক্ষিতেন লগ্নেন তথাভূতস্য কুষুমভ দৰ্শনেন অৱ**ৰুজ: অৱ এৰ কৃতা কৃক্ তাপো যাসাং তা: তেন কু**ষুমেন **আননেষু কুচেযু কা**মতপ্ৰেরু লিম্পন্ত্য: তদাধিং কামব্যথাং জহু: অত্সাঃ কৃতাধা ধিগন্যা মাদুশীঃ যা এবং ভূতমপ্যাধি শমনং ন ল্ডুছে॥ ১৭॥

হত্ত্তি হর্বে হে স্থাঃ অয়মজির্গোবর্ধনঃ ধ্রুবং হরিদাসেরু শ্রেষ্ঠঃ কল্চিং তাং কৃত ইত্যত আহ্ বন্ধালামক্ঞচরণম্পানন

## বৈষ্ণবডোৰণী।

অন্যন্যাঃ প্রিয়ঃ ক্যাম্ভাবো হস্য ন দেব বিশ্বহে ইত্যাদৌ নিরক্তবাং। স্বাধিণ্যান্ত তদানীনসম্বাদিতি স্ক্মন্চায়ং দিবস এব ইতি সম্ভাব্যতে তবৈৰ পুলিন্দীনাং প্রনণাং। কুম্নানাং লেপনক্ষণাপ্রবিব্যাচ্চ। ব্য়োঃ সম্বদ্ধায়ণ ন সম্ভোগবিশেষজপঃ রাসপ্রসঙ্গে। ভগবানপি তা রাজীঃ শারদোংফ্রমিরিকা ইতি ততৈবে নবসক্ষমস্য প্রতীয়মানম্বাং। অন্যথা তৎপরীক্ষার্থং পুনস্কেনোংশেকা বচনস্যাসক্তব্য প্রতীতেঃ। তদিদং বেণুপ্রকরণে ভণিতহাং বেণুস্বকেনৈবেতি গম্যতে উক্লগায়েত্যনেন এব বেণুসম্বন্ধঃ। এব হি স্চিতঃ। তামাং ক্লাচিং বেণুক্তাক্ষায়াজস্যা লব্ধ মৃক্ত্য শাস্ত্যে সক্ষ্যে বিল্লে বক্ষাস্থাসতঃ কেবলেন চরণসঞ্জীবনীপল্লবেন স্প্রন্ধাদ্যাপি সম্যক্ স্বোচানপগমান্ত্রমের স্তার্লিক্রামেতি লভ্যতে। কান্চিং পরোক্ষং ক্ষ্পেস্যাভ্যক্তমাং যাস্ত তদন্যাঃ তাসান্ত্রমের পূর্ণাঃ পুলিন্দ্য ইত্যানি বচনং। তাসাঞ্চ প্রায়ে জাত পূর্বাম্বাগাণামীধ্যানবসর্বাদন্য সক্ষম ক্রণেংগি রাগ এব হিগুণিতঃ। বহিন্ত্রম্বাক্ষক তব পাদতলং রমায়া দত্তকণং ইত্যাহ্যক্তিত্ব কুমারীণাং স্বন্ধিংস্তংশীক্বত্বমের হৃত্র তংশ্বনত্বাতিদিষ্টং। অভিরামিতা আনন্দিতা ইত্যথং॥ ১৭॥

গোষ্ঠ্যস্করবার্ত্তাপি তথৈব রসাস্তরাচ্ছন্না অতএবমাহর্দ্ধ ভাগং হস্তেতি। অয়মিতি তদানীং প্রীগোবর্দ্ধনাস্থিক এব তাসাং নিবা-সেন সাক্ষাদস্থ্যা দর্শনাৎ জগতোহশেবং পাপং হংথং চিত্তক যণাযথং হরতীতি হরিং। তদধিষ্ঠার্তী দেবং শাস্ত্রে লোকে চ প্রসিদ্ধা তং-অভাবকেরু তস্য দাসেরু মধ্যে শ্রেষ্ঠাঃ। তর্ব্যন্থ্যের ফলাভিব্যক্তিবারা দর্শন্তি যন্ত্রামেতি। প্রক্রেইামোদো হর্বঃ রোমাঞ্চ স্থোনন্দা শ্রাদি

## ক্ৰমসন্দভঃ

অভাবসংক্রাপনাশক্তি পক্ষে রমণং রামঃ জ্রীড়া তাল্যুক্ত স্য ক্লঞ্চায় চরণরোঃ স্পর্শেন প্রমোদো যস্ত তরো শ্চরণরোঃ ॥১৮॥

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

তংকতসভোগলিপনা কুচেষ্ চ লিপান্তাঃ সভাঃ কৃষ্ণসংভূকনতা তদাধিং কন্দর্পপীড়াং জহঃ। অহো তংকুদ্মতাপান্তং কোছপি শকি বিশেষ ইতি ভাবঃ। বন্ধত তচাপি জন্মধান্তাইপি সক্কাপি ন প্রাপ্তন্ত ভাবঃ। পদ্যমিদং শ্রীমছক্ষ্ণনীলমণৌ মাদনমধিকতা সদা ভোগেছপি তক্ষদ্ধনাত্রাধার স্ততির্বাধাইত্য তোদাহতঃ। সদা ভোগেছপীতি মাদনত ভাবসমন্তিরাং সর্ব্বে সন্তোগাঃ সর্ব্বে বিহারাশ্চ মাদনে বর্ত্তক এব অত্র বিহারেছপি সন্তোগন্তদানীং সহসৈব কৃষ্ণতাবিভাবাং তেন সহ জ্বেঃ। অতএবাত্র প্রক্রমে বর্ণনত্ত্যাহভিরেভিরে ইত্যাত্র সহ সৈবাবিভূতিং কৃষ্ণমালিজ্বিত্বতা ইত্যপার্থমাতঃ। স্ব্রিভাবোল্যমোল্লানী মাদনোহন্তং পরাংপরঃ। রাজতে জ্লাদিনীসাম্বোধারামেৰ বঃ সন্তেতি তবৈবাজেরন্যবজ্নীক্ষেনাপি নেদং ব্যাথায়ং॥ ১৭॥

হস্ত সংখ্যা মহদাশ্ররণং বিনা নৈব মনোরথঃ কবতি। সহস্কৃষ্ণ হরিভক্তানামেব তেষামপি মধ্যে শ্রীগোবর্দ্ধনোগিরীক্ত এব মুখ্য ইতি গাগী মুখাৎ শ্রুতং ভদদ্য ক্রত্য মানসগলায়াং স্বাখা তদ্ধিবৈব্তস্য শ্রীহরিদেবনায়ো নারায়ণসৡ দর্শনার্থং যাম ইত্যত্ত গুরুজনানামপি নৈব বিপ্রতিপতিঃ ক্রফোছপি তত্ত্বেব খেণতীতি বৃক্তিং নিশ্চিতবত্যঃ স্বর্মণং তমভিসিধীর্ষবঃ শ্রীগোবর্দ্ধনমের সগণক্রফাবাঞ্চিত-সাধকং স্বৰাজ্বিসদ্ধিং অবস্থি। হরেদাসের নারদাদের নারদাদিরপি বধ্যে মুখ্যা যে ত্রেয়ো হরিদাসা বৃধিষ্টিবোদ্ধ গোবর্দ্ধনাত্তেশ্বপি মধ্যে অসমজিরের হরিদাসবর্যঃ। হরিদাসস্য রাজ্বের রাজস্বং মহোদর্মিতি বৃধিষ্টিরে ক্রফং সংসারয়ন্ রেমে

বদনে লেপন করত কামব্যথা বিদর্জন করিতেছে। যদি বল শবরাঙ্গনাদের কামব্যথা কি প্রকারে হইল ? উত্তর তাহার এই যে, উল্লিখিত কুকুমদর্শনেই তাহাদের কামতাপ জন্মিয়াছিল। ১৭॥

হে স্থীগণ! এই অন্তি (গোবর্জন) নিশ্চয়ই হরিদাস সকলের মধ্যে শ্রেষ্ঠ, যে হেডু এই গিরি

মানং তনোতি সহ গোগণয়োভয়োর্যৎ পানীয়সূযবসকশরকশম্লৈঃ ॥ ১৮ ॥ গা গোপকৈরমুবনং নয়তোরুদারবেণুস্থনৈঃ কলপদৈত্তমুষ্ঠৎস্থ সখ্যঃ।

প্রমোলো যদ্য দ:। তুণাত্মালামমিষেণ রোমহর্ষদর্শনাং। কিঞ্চ বৃদ্যস্থানাং পূজাং জনোতীতি সহ গোভির্গণেন স্থিসমূহেন চ বর্ত্তমানয়ো তারো: কৈ: পানীরৈ: স্থবলৈ: শোভনতুল: কলরৈ: কলৈ মু লৈখণোচিত: অতোহয়মতি ধন্য ইতি ভাব: ॥ ১৮॥

হে স্থাঃ ইদং ছতিচিত্রং গোপেঃ সহ গাঃ বনে বনৈ স্ঞারয়তোত্তয়ো রামকুফ্রোঃ মধুরপদৈঃ মহাবেণুনাদৈঃ শ্রীরিষু যে গতি-মন্তব্যেষামস্পন্দনং স্থাবর ধর্মঃ তর্মণাং পুলকে। জঙ্গমধর্ম ইতি। নিযুক্তান্তে গাব আছিছিরিতি নির্যোগাঃ পাদবন্ধনরজ্জবং অধ্য্য-

## देवकवरणावनी ।

প্রস্তুপ তুণাছ্যকামার্ক্রতা জলবিন্দুপ্রাবাদিলকণ:। তনোতীতি সর্বৈরন্যৈরপি ক্রিয়মাণং মানময়ং বিস্তারেণ করোতীত্যর্থ:। পানীরানি পেয়ানি कॅनर्मश्वामीनि । দীর্ঘত্তনার্যং ছলোহতুরোধাৎ । স্ববসাধি কোমলানি পৃষ্টিবর্দ্ধনানি ছগ্ধসম্পাদকানি । যথা । পানীয়ং স্থবতে কর্ম্তি পানীরস্থবো নিঝ রা:। ভূ ইতি কচিৎ পাঠ:। উপবেশাদ্যর্থং স্বন্দরস্থানমিতার্থ: কন্দরা গুহা: তৈন্দ ততাত্য রত্নপর্যাঞ্চ পীঠ-প্রদীপাদর্শাদ্যোপাপলক্যাঃ ব্থাসম্ভবক তৈত্তেবাং মনো জ্ঞেয়ং। হে অবলা ইতি তত্ত্ব বৃত্মাকং শক্তাভাবেন এতাদৃশ সেবা ভাগাং ন ংটেত ইত্যহো বতাভাগাবৈভবমিতি ভাব:। অতঠেত:। অত চ অকণুতামিতি বদবহিখায়ামপ্যথান্তর ব্যক্তির্যথা রামো নীল চারু শিতে ত্রিবিত্যমরকোষান্রামো রমণীয়ো যং ক্রফজ্জ চরণয়োঃ স্পর্শেন প্রমোদো যক্ত সং। তরোশ্চরণয়োঃ। যথা। তাদুশ রঞ্চরণ্রোঃ ম্পর্শপ্রমোদো যত্মাৎ ঋত্মুরূপ শৈত্যাদি গুণকত্বেন ত্বশিলানাং বিধানাৎ। যত্মা রাসক্রীড়ারপং বজ্ঞীকৃষ্ণশু চরণং আচ-র্বং তক্ত স্পর্ননেন দানেন প্রমোদো যস্য সং। বিশ্রাপনং বিভরণং স্পর্শনমিত্যমর:। সর্বদা সদা তৎ ক্রীড়াসম্পাছনোৎস্থক ইত্যর্থ:। যথা তেন প্রমোদরতি তম্মান স্বগচেতি তথা সঃ। যথা। তাদৃশ কৃষ্ণচরণহোরিব স্পর্শ প্রমোদে। যত এতৎ স্পর্শনেন তৎ স্পর্শনানন্দ-তের সিদ্ধে নিরস্তর বিচিত্রপ্রেমবিহার শ্রেণীভিত্তজরণম্পর্শময়ত। ইবাশিন্ সম্পত্তে । ততেতি বক্তব্যে তয়োশ্চরণরোরিত্যাদরেণ ॥>৮॥ অহে। কিং বক্তব্যো হ্রিদাস্ব্যাত্ত্বন যথার্থ নাম্নোস্যাহ্তিপতেম হিমা কিন্তু সর্ব্বেপ্যত্রত্যাশ্চরাচরাঃ প্রম ধন্য! ইত্যাহঃ গা ইতি।

## क्रममन्दः।

নরতো: সতো: । উনারেতি]বিশেষণাৎ শ্রীক্রঞ্চেত্র বেণুর্বোধ্যতে সর্বতোপি গুণসংখাত্তস্য তন্ময়তাং ক্রীড়াময়তাং ॥১৯॥

## শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

श्तिमात्मा उद्योकनामिष्ठाक्षत्व रखात्रमिष्ठत्वना श्तिमानवर्गः हैठानिन् भर्कत्विन श्तिमानभन्धात्रांगारः। यन्नाजामकृकत्यान्वत्र স্পর্নেন শিলাজবাদ্যভিব্যঞ্জিত: প্রমোদো মত স:। চরণম্পর্শে সতি শিলানাং প্রসাধর্ম্ম প্রাপ্ত্যা ধ্বজবজ্ঞারুশাদিমচরণচিত্রং নির্বর্তুণোক্রমানরোম্পুলকানরোহপি প্রমোদব্যঞ্জকা জেলা:। স্বত্র রামপদপ্রয়োগো ভাব গোপনার্থ:। শ্লেষেণ রামো নীল চাক দিতে ত্রিম্বপীত্যমরকো বারমণীয়ো য: ক্লুক্তক্ত। হে অবলা ইতি পতিপারবশ্ববভীনাং যুত্মাকং তদাশ্রয়ণমেব বলং বুদ্ধাতে ইতি ভাব: যং বৃত্তঃ প্রেমেলালের হেতোঃ মানং তৎ প্রসাদনীং পূজাং তনোতি সহগোভি র্গণেন স্থিসমূহেন চ বর্তমানয়োত্তরোঃ। কৈ:। পানী-য়ানি পাল্যাচমনীয় - পানার্থং স্থান্ধশীতলনিক রজলানি তথা নৈবেল্যার্থং পানীয়াং পেয়া মধ্বাত্রপীবাদিরসাল্চ। ক্ষবসানি অর্ব্যার্থং पूर्वा शवाः **आगार्थः ऋशक्षळ्यामणभृष्ठि**वर्क्षनक्षप्रम्णानकानि कृगानि ह। मीर्घवमार्थः। यवा। भानीतः **ऋतः है** छि भानीतस्या नियंतान कमता উপবেশশয়াবিলাসাদ্যর্থং শীতোঞ্চসময় প্রথমা গুহান্চ গুক্ষণার্থং কমমূলানি চ। তত্তা রম্বর্ণাঙ্গপীঠপ্রদীপা-मर्नामद्वात्रात्रनकाटेखः॥॥ ১৮॥

কিঞ্চ ততাভিসরণে বিল্যোন কার্য্য অভাত্থাবীনস্য বনাশ্বর গ্রমস্ভবাদিত্যাত্য। গা ইভি। গোপ্তৈরিত্যত্ত পারাং কন্। অতো গোপারত্তি কৃষ্ণ: সেহাৎ পাল্যস্তীতি সেবল্চ প্রতিপ্রাভরেষ। প্রীমশোদরা তথৈব ভরিরোগাং। বনে বনে গান্তরোন রতোঃ

রামকুষ্ণের চরণস্পর্শ বারা প্রমোদিত হইয়া পানীর, শোভন তৃণ কন্দর এবং কন্দ ( মূল ) বারা গো ও वयमा मम्ह मह वर्षमान बामकृत्यन पूछा विखान कतिएएह । ५৮ ।

्टर मथीगर्ग दर्भाश्चर्यमत महिल वटन वटन दर्भागात्रमकाती त्रामकृष्क देशी मक्टलेन नामवक्रम त्रेष्ट **এবং তাহাদের পাশবারা চিহ্নিত হইয়া আছেন অর্থাৎ তাহারা মন্তকে পাদবন্ধন রক্ত্রবং করে** 

অস্পন্দনং গতিমতাং পুলকস্তরূণাং নির্বোগপাশকৃতলক্ষণয়োবি চিত্রং॥

## श्रीश्रामी।

গ্রাং ধর্ষণার্থা: পাশান্ত তৈ: ক্বতং লক্ষণং চিত্রং যয়ো: শির্দি নির্যোগবেইনেন স্বন্ধত্ব পাশেন চ গোপপরিবৃঢ় প্রিয়া বিরাজমানয়ো-

## देवकवरणावनी।

অনেন তাসাং গ্রামসংখ্যেরবাৎ দ্রগামিতীকন বিত্তীর্ণদেশগজীবগণস্থ্যাভূতং বিবক্ষিতং। অনুবনমিতি অত্রাপাবান্তরভেদেন ততঃ স্বেধামের তথকনেন সর্ব্ধতঃ পুণাহীনত্বং গোপকৈরিতি দ্যায়াং কন্। তৎ পরিবারত্বেন মেহবিষ্মত্বাৎ। অতো গোপায়ন্তি ত্ব:খভরস্থানাৎ এক্রিঞ্চং রক্ষন্তীতি শ্লেষণ্ড। অস্মাকন্ত ন তাদৃশপ্রেমদেবাদোগ্যতেতি ভাব:। নরতোরিতি তত্র তত্র গমনে তয়ো: স্বাচ্ছেন্যাং ঘটতে হা কট্টা নত্তস্থসন্নিধাবিত্যেতৎ উদারেতি তত্ত্র তেষ্•তদ্য প্রমানন্দ্রাত্ত্ব। বেণি,তি তদীয়স্বনেইপি বৈশিষ্টাং কলপদৈরিতি ধ্বনৌ তু মধুরাক্ষতে কল ইত্যভিধানাং। মাধুর্ব্যেবৈও তাবন্মনোহরত্বং তত্র চাক্ষুট্ডাং কেয়ং সল্লেভোক্তিরিতি নানাভাবাক্রাস্তা তদতিশ্রিষ্ণ। यथा। নুপুর্কলশ্লযুক্তিঃ পদে: পাদবিক্ষপৈরিতি ত্রিলাসম্মরণং বছষ্ণ গৌরবেণ। তত্ত্ত্ৎ বিতি এব কম্বন্তুক্তভ্ৰেন পতেদিত্যেতে। স্থ্য ইতীদং ভবত্যোহপি জানস্কীত্যেতে। অম্পন্দনং কিঞ্চিলনস্যাপ্যভাবঃ গতি-মতাং প্রশাস্ত চছক্রিবুকুলনাং অপি নিত্যতংক্তাবানাং নদ্যাদীনামপি বা। অতঃ কিমুতাত্মাকং দূরগমনমিত্যেতৎ পুলকাতকগামিতি অরোমকাণামপি অস্কুরোডেদমিষেণ রোমাঞো যুগপদেব জায়তে ইত্যেতং। অতঃ কম্পোহপি লক্ষিতন্তেন স্থাবরজঙ্গময়োর্ছ রো ধর্ম-বৈপরীত্যমপি। নির্বোগেতি সর্ব্বাসামেৰ গবাং স্থানীলত্বেন পাশান্তরামূপ্যোগাৎ নির্বোগাধাঃ পাশো নির্বোগপাশঃ সচ চপলস্বভাবানাং পশনাং দোহন্যমনে গোৱানজ্জাসক্তাপাদবন্ধনরজ্জুত্তেন ক্রতলক্ষণৈ:। গুণে: প্রতীতেতু ক্রতলক্ষণাহতলক্ষণাবিত্যমরাৎ পর্যসৌন্দর্য্য-গুণেন প্রতীতে । তত-চানেন মূকা তবকজুষ্ঠাপ্রবলপ্টময়তা তসা ধ্বনিষা সোহয়ং চোফীষাহাপরি শোভাং দধানো গোপবেশঃ সর্কোবাং মনোহর্তাপি তাদাং শ্রীগোপস্থলরীণান্ধ বিশেষতো জ্ঞেমা। স্বদেশজাতিবমানদৃশং বেশাদিকং হি সর্কোষ্ঠীব রোচকং ক্তাদিতি। বিচিত্রমিতি তত্র তত্ত্ব স্থেষাং বিশ্বর মোহ<sup>\*</sup> ইদং মথাযোগ্যং বছত্ত্ব যোজনীয়ং। অথ পূর্ব্ববং কেবলক্লক্ষৈকবিষয়ভাব-বাঞ্লক ভাষমর্থ:। অহো দ্বাঃ ক্টং গোচারণমিষেণ সগণসভাতৃকোংসৌ বনং ভ্রমন্ কিতব ইব লক্ষ্যত ইত্যাহ গাঁ ইতি। নির্যোগ-পাশাভাাং ক্বতং সিঞ্জলকণং কিতবোচিতপদবন্ধনিচিছং যয়োত্তথাভূতরোর্গোপবৈশ্বদ্ধিপরসো: তেয় বত্তনাঞ্চ রক্ষকৈঃ পৃষ্টপালাগৈঃ সহানবো: গা বনাঘনং নয়তোম ধাে য উদার: সর্ধবরীয়ান্ তসা বেণ্সনৈর্জকমানাং অপ্রক্ষনত্ং স্থাবরাণাঞ প্রকোংছ:। কীদুলৈ মেহিনমন্ত্ৰকানোহরাব্যক্তপলৈ:। অতো মহাবৈণৰিক এৰাত্ৰ কিতৰ মূপা:। অন্যে তু তদক্ষায়িন এব। তত্মান আভিবিধ ভক্ত ভূ মোহনবিদ্যাক্সকো বেণুর্ভবতীভি ন´শ্রোভব্যঃ। অন্যথা ডাভ্যাং নির্যোগপাশাভ্যাং এব নুনং ভবন্মনোবদ্ধং ভবিষ্যতীতি ভাবঃ এবং দৰ্বপা স্বমোধ্ছ:ধমেব বিবক্ষিতমিতি স্থিতং ॥

এবং বহুণীলাবর্ণমামাসিরে কৃতি বা ময়া বর্ণনীয়া ইত্যুপসংহর্তি ঈদৃজ্ঞে। জগলেমাহিন্যো যাঃ জীড়াঃ। এবং বিবিধহে হেডু-

### জীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

সতোরিদং বিচিত্রং ভবতীতাবর: কিং তং। হে সধ্য: তম্বভ্ৎস্থ শরীরিদ্ মধ্যে যে গতিনস্তত্তেষাং বেণুস্থনৈবস্পান্দনং স্থাবেধধাঃ। তর্জণাং পুলকো জনমধ্য ইতি। নির্যোগাধাঃ পাশো নির্যোগপাশঃ সচ চপলানাং বৎসানাং দোহনসমূহে গোবানজভ্যাসন্থতা গলবন্ধনবজ্ঞঃ।
তেন কৃতলক্ষণয়োঃ সৌন্ধ্যবিশেষ লাভেন খাতেয়োঃ। গুণৈঃ প্রতীতে কুকুলক্ষণাহিত লক্ষণাবিত্যমবঃ। তত্তচায়ং মুক্তাগুবকভূষাগ্রহয়ঃ পীতপ্রমায় উধ্বীৰবন্ধভূষণবিশেষ ইব গোপালকপ্রবাঞ্জকোদ্র গুণাং মনোমোহন এব জ্ঞোঃ॥

উপসংহরতি। এবমিতি বৃশাবনচারিণো ভগবৃত এবদিধা অন্যা অপি যাঃ ক্রীভাবর্ণরস্কো বভূবৃতক্ষয়তাং তৎপ্রচুণতাং ক্রীভা প্রাচুর্ব্যং বর্থ প্রাপুঃ। স্বকাশ্তমভিস্তা তত্তংক্রীভাবতো বভূবৃরিতার্থঃ। নহা। সময়ে হচিসরশ্রীতায়া গোপাঃ এবদিধা ভগবতঃ ক্রীভা

পাশস্থাপন করিয়া পোপদিগের জীর সহিত বিরাজ করিতেছেন। আর মাধ্য্যাস্পদ বেণুর নিনাদদারা শরীরিদিগের মধ্যে জীব সকলের যে অস্পদ্দন এবং তরু সকলের যে পুলক হইতেছে ইহা অতিশয় বিচিত্র। হে রাজন্! রন্দাবনচারি ভগবান্ হরির এবদিধ ক্রীড়া প্রস্পার বর্ণন করিতে ২ গোপীগুণ

॥ \* ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষমে শ্রীগোপি-কাগীতং একবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ \* ॥ ২১ ॥ \* ॥

গ্রীশুক উবাচ॥

**८ इम्र एक थार्य मानि नन्य बक्**रमातिकाः। **८ इक्षर्** विष्यः पूक्षाना कालाग्र ने क्रिन बलः।

## <u>ज</u>ीसरकारी

রিতার্থ:। গোপীনাং কামত: ক্বফে নিংশীম প্রেমদক্ষম:। কাত্যায়ন্তচ্চ নােছুত তৎপ্রস্তাদমহাংসব: ॥ ১৯ ॥

॥ \* ॥ रैंकि मन्य धक्रिः ॥ \* ॥

ন্ধাবিংলে গোপক্সানাং বস্ত্রাহরণলীলয়া। বরং দ্বা গতঃ ক্বকো যজ্ঞশালামিতীর্য্যতে ॥ • ॥ প্রথমে মাসি মার্গনীর্বে ॥ > ॥

## देवकवरणायगी।

ৰ্ভগৰত: নিজাশেষমাধুৰ্য্যং প্ৰকটমত:। তত্ৰ বৃন্দাবনচারিণ ইতি তাচ্ছীলোন তত্ত নিত্যতাদৃশলীলবং তাসাঞ্চ নিত্য তাদৃশ ভাৰত্বঞ ব্যঞ্জিত:। বৃন্দাবনবিচারিণ ইতি পাঠেতু তবৈশিষ্ট্যং তত্ত তা: সর্বা এব ক্রীড়া বর্ণমন্তাং সত্যক্তরমন্তাং ক্রীড়ামন্তাং যযু: ভদাবিষ্ট্রাং প্রাত্ত: ॥ ১৯ ॥

॥ \* ॥ हे जि बीरेवक्षवरजावनारः वीषणमण्डीक्षनारमकविः ॥ \* ॥

এবং প্রায়োরজায়রাদাগতানাং ব্ঢ়ানাং পূর্বাহ্রাগং শরৎপ্রদঙ্গে বর্ণয়্ডা হেমন্তপ্রসঙ্গে কুমারীণাং পূর্বাহ্রাগপ্রক্রিয়ামাহ হেমন্ত ইত্যাদিনা ব্রন্ধমিতান্তেন। তদিদং বর্গয়য়ং শ্রহরিবংশে বিবিক্তং। য্বতীর্গোপকন্যান্ত রাব্রে সঙ্কান্য কালবিদিত্যনেন। নত্ন তত আরভ্য নন্দস্ত ইত্যাদিনা শ্রাধিকাদীনাং প্রমর্মাত্বং স্থাপিতং। যত্তাহ্যা শ্রিল লনা চরত্তপ ইত্যানেন চ প্রবিজ্ঞানন্ত তদেক প্রেম্পীত্বং দর্শিতং। নায়ং প্রিয়েহক ইত্যাদিনা দর্শয়য়য়তে চ। দামোদরাধরস্থধমিপি গোপিকানাং ইত্যানেন চ তদেব দূটাক্তং। রাসপ্রসঙ্গের ইতি চ বক্ষাতে। আগমে চাস্তাম্পৃষ্টতরিত্যক্রের্মীত্বেন চ তত্পাদনা বিধীয়তে। শ্রীমদ্দাক্ষরস্থ তরামব্যাথ্যাত্ম গৌতনীরে শ্রীনারদেন গোপিকানাং পতিরেবেতি পর্যাপণং কৃতং। শ্রীরক্ষসংহিতায়াং। শ্রিয়ং কায়া কায়ঃ প্রমপ্রক্ষ ইত্যাদিনা তথেব নিশ্চীয়তে। তাপনী শ্রতী চ স বো হি স্বামী ভবতীতি তদেব সাক্ষাৎ শ্রমতে। তথা যদ্ধামার্থস্থং প্রিয়াত্মতনয়া ইত্যাদিনা তৎপিতৃতিঃ শ্রীকৃষ্ণান্যত্র তদেক্যোগ্যানাং তাসাং দানং ন শ্রদ্ধীয়তে দানে চ সতি জহামত্বন ব্রতক্রশাহ্বতনয়ভিঃ স্থাদিন

## क्रमनमर्फः।

॥ \*॥ देखि जीमभारम क्रममनार्ष्ड अकविःभः ॥ \*॥

এবং বাঢ়ানাং পূর্বাহ্বাগং শরৎপ্রসঙ্গে বর্ণয়িত্বা হেমন্তপ্রসঙ্গে ত ভু জকুমারীণাং বর্ণয়তি হেমন্ত ইত্যাদিনা এজমিতাতেন ॥ ১ ॥

## ঐবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

ভগবৎকর্ত্তকা: ভগবৎকর্মকাশ্চ মিথো রহসি যয়: প্রাপ্: ক্রীড়স্ক্য ক্রীড়রস্তাশ্চ বভূব্রিতার্থ:। মিথো হন্যোন্যং রহস্যপীত্যমর:। ততঃ পরং তন্ময়তাং ক্রীড়া তাদাত্মমানন্দমোহক প্রাপ্:। ব্যাধ্যেমমবশ্যোপাদেয়া অগ্রিমগ্রন্থে যহাত্মকাক্রেত্যক স্বয়াভিরমিত। ইভূয়কে: ॥১৯

॥ \* ॥ ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। একবিংশোহত দশমে সক্তঃ সক্তঃ সতাং ॥ \* ॥

ছাবিংশে চণ্ডিকাপুছা গোপীভিব দিসাং হুভি:। সংলাপো বরদানত স্থৃতি: ক্বফেন কীর্ত্ত্যতে ॥ • ॥
বাঢ়ানাং শর্দি কুফাসুরাগং বর্ণবিদ্ধা অনুঢ়ানামপি গোপীনাং তমন্ত্বর্ণবংস্তাদাং নিত্যসিদ্ধকুক্ষপ্রেদ্ধনীভাবানামপি কুফপ্রাপ্তিকামন্ত্র

## তশ্যয়তা প্রাপ্ত হইয়াছিলেন॥ ১৯॥

## ॥ \*॥ इंछि नगरम् धकविः म। \*॥

ছাবিংশতি অধ্যায়ে বস্তহ্রণ লীলাধারা গোপকন্যাদের প্রতি শ্রীকৃষ্ণের বর্ষান, তদনন্তর যজ্ঞ-শালায় গমন বর্ণন ॥ ০ ॥

শুক্দেব কহিলেন হে রাজন্! হেমস্তের প্রথমে অর্থাৎ অগ্রহায়ণমাদে নন্দ্রজ্ঞের কুমারিকা

আপ্রান্তান্তিনি কালিন্দ্যা জলান্তে চোদিতেইরুণে। কৃষা প্রতিকৃতিং দেবীমানর্চ্ নূর্প দৈকতীং। গক্তিমাতিন্যঃ স্থরভিভিব লিভির্ধ্ পদীপকৈঃ। উচ্চাবচৈন্চোপহারৈঃ প্রবালফলতণ্ডুলৈঃ॥ ১॥ কাত্যায়নি মহামায়ে মহাযোগিন্যধীশ্বরি। নন্দগোপস্থতং দেবি পতিং মে কুরু তে নমঃ॥

## देवकवरणायनी।

ত্যাদি শ্রীকরিণী হ্রচনবতদেকালখনং জীবনমপি ন সন্থাবাতে। অন্তপুরুষসম্বন্ধেন স্তরাং তর্হি কথম্চাতে ব্াচানামিতি অত্র সমাধীয়তে তত্তংশ্রুতার্থিপপত্যার্থপিত্তি প্রমাণেন লীলাশকৈয়ব মারাদিশ্বারা মিথৈয়ব তং প্রপঞ্চিতং। য এতংপিতরং তাশ্চ সর্ফ্রেরজবাসিনশ্চ তথাসূত্য ভ্রান্তা বভূবং। তথাপি স্বাভাবিকবাসনা ময়া শ্রীকৃষ্ণিকপত্যাশ্যা তা অপি জীবনং ররকুং পুরুষান্তর সম্বন্ধ তাসাং স্থান্ত্রক্ষনারা মার্থের নিবারিত ইতি লভ্যতে। তথাচ নাস্থন্ থলু ক্ষায় মোহিতান্ত্রস্য মায়্যা। মন্ত্রমানাঃ স্থাম্থিন্ স্থান্ দার্ন্ ব্রান্তাক্ষর ইত্পলকণীকরিষ্তে তদেতদিপ যথাহধনে। লন্ধনে বিনষ্টে তিচিন্তর্যান্তরিক্তান বেদ ইতিব্রাসাং উৎকণ্ঠা বর্জনার্থনেব। অত্র চ ব্লো কুমারীভেদেন বিবিধা স্থিতিস্ক বৈচিত্রী পোরার্থনেবৈতি দিক্। রাসপ্রসালে তু বিশেষতঃ স্থাপিরিয়তে অথ প্রস্তমন্ত্রস্যাম শ্রীনলক্ত ব্রেজ হা কুমারিকা ইত্যোদাসিভোনৈব নির্দেশাৎ স্থোত্রস্বিপঞ্জাদিসম্বন্ধরহিতা গৃহীতাঃ পাঠান্তরে চ শ্রীমন্ত্রনত্ব গোপান্তেরাং কুমারিকা ইতি স এবার্থঃ। তত্তকং যুবতীর্গোপকন্যাশ্চ ইতি। কনু প্রত্যায়ে বাল্যবিবক্ষরাহ্রার্থে কাত্যান্ত্রনী বৈঞ্চবী শক্তিন্তস্যার্চনরূপং ব্রতং॥

তাসাং তাদৃশীং তদহরাগচেষ্টাং দর্শয়ণ্ড চিকীষ্ নৃ জনানপি বাধয়ন্ তংপ্রকারমেবাহ আপুত্তেতি সাহ্দিব্রিভি:। আপুত্তেতি 
য্য়কং অন্তর্গাদিনা হেমন্তরতে কুজুং দর্শিতং কালিন্দা এব জ্লান্তে অন্যাপি ঘট্টবাদিনী দেবীনায়া প্রাসিদ্ধে ব্রজ্মটে। অন্তর্ণ
স্থাসারথৌ দেবীং কাত্যায়নীং সৈকতীং প্রতিকৃতিং কুত্বা তদভিয়ত্বেন প্রতিষ্ঠাপ্য ইত্যর্থ:। সৈকতীমিত্য চিরাং সাধ্যসাধনত্বেন।
হে নৃপ ইতি অপ্রার্থীযৌবনা অপীদৃশেন রাগেণ ভজন্তি ইতি বিচারয় প্রকৃষ্ণমোহনতামিতি ভাব:। স্বভিভিরিতি যথাপেকং সহর্পরিপ
যোজাং। বছরং তত্ত্বাত্ল্যাং বলিভির্মভ্রণাহ্যপচারে: উচ্চাব্রেরনান্দ বিবিধৈতঃ। তানেবাহ প্রবালেতি। অত্রক্রমভঙ্গ:
প্রীকৃষ্ণহ্রত্মনন্থাৎ তাসাং তদিস্বতে:। প্রীবাদরায়ণ্ডেরের বা তব্যুত্ত কথনে সন্মোহাং॥১॥

কাত্যেতি দাৰ্দ্ধকং। কাত্যায়নীতি তন্মনিংশপ্ৰকাশকৰাং মহাধৰ্মদাতৃৰং স্চিতং। হে মহামায়ে হে ভগৰতো মহাশক্তিরূপে ইত্য ভীইপ্রাপ্তিযোগ্যাং শক্তিমন্মভ্যমণি দাতৃং দমর্থাদীত্যর্থ:। অত্র কাপি ছর্ঘটতা চেক্তত্রাপ্যাহ্ণ হে মহাযোগিনি ছর্ঘট্যটনাদমর্থে নম্বন্যাং কাঞ্চিদেবতাং ভব্দধং ইতি স্বনিষ্ঠাং পরীক্ষমাণাং প্রত্যাহ্য। হে অধীমরি ন স্বত্ত উর্দ্ধং কাচিদেবতা ইত্যর্থ:। নন্দগোপস্থতং প্রীম্মন্দ

ক্রমসন্দর্ভ:।

কাত্যায়নী বৈষ্ণবীশক্তি:॥

## ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

লোকরীতৈয়ব হেমস্তে দেবীপূজামাহ হেমস্তে ইতি। প্রথমে মার্গশীর্ষে তাদাং ক্লফকাস্তানাং ভেদবন্ধমিদং প্রীহরিবংশ বিষ্ণুপ্রাণ ব্রহ্মপুরাণাদাবপি দৃষ্টং। যুবতীর্গোপকন্যাশ্চ রাঝৌ সকাল্য কালবিদিত্যাদিভি:॥

विनिञ्जि जिल्लारेनद्वमाशाकाराहा । > ॥

হে কাত্যায়নি নন্দগোপস্থতং মে পতিং কুরু। নমু কুর্মিত্যনেন মধ্যের কিমিতি তত্র স্বাতম্ভ্যমর্প্যতে। অহন্ত তদর্থং ত্ৎ-পিতরৌ প্রেরমিয়ামি মাত্রং তত্মাৎ কার্মেতি দেহীতি বা প্রযুজ্যতামিত্যাশক্ষ্য সবৈক্ল্যমাহ। হৈ মহাযোগিনীতি তেন সংযোগ-ত্তমৈব শীঘ্রং সম্পাদ্যো নতু পিত্রাদিব্যবধানোপত্রবেশ। প্রমোৎকঠাবতীভির্ম্মাভিঃ কাল্যবিল্যস্যাসম্ভূত্মণ্

দকল হবিষ্য ভোজিনী হইয়া কাত্যায়নীর অর্চনরূপ ত্রত আরম্ভ করিলেন। অরুণোদয়কালে যমুনা জলে সান করিয়া ভাঁহারা জলসমীপে দৈকতী অর্থাৎ বালুকাময়ী প্রতিমান্থাপনপূর্বক প্রগন্ধি গন্ধ, মাল্য, ধূপ, দীপ, বলি (পূজার উপহার) প্রবাল, ফল, তুওুল, তথা অন্যান্য উচ্চাবচ (নানাপ্রকার) উপহার দিয়া দেবীর পূজা করিতে লাগিলেন॥

সেই সকল কুমারী " হে কাত্যায়নি ! হে মহামায়ে ! হে মহাযোগিনি ! হে অধীশ্বি ! অনুগ্ৰহ

# ইতি মন্ত্ৰং **লপভ্যতাঃ পূজাঞ্জ**ুঃ কুমারিকাঃ॥ ২ ॥

## শ্রীধর শামী

মহামায়ে ইত্যাদিসধোধনৈ তাব ন কিঞ্চিদাৰ্শক্যমিতি স্চরভো মে ইতি প্রত্যেকং প্রার্থ্যন্তে॥ ২॥

## देवश्वराज्यां ।

রাজকুমারমিতি নিজভাবান্তরপালম্বন নির্দেশন্তেন তলৈ সংক্ষাপাদেরতেন কর্বন্দপি প্রচিতং। অত্র নলেতি সাক্ষান্থাপ্তরনাম গ্রহণং গোপেতি বিশেষণঞ্চ তভজ্ঞসায়াগতিষশক্ষা। নমু তৎপ্রাপ্তরে তমেবারাধ্রত তত্রাহা। হে দেবি ক্রীড়ারসাভিজ্ঞে তদর্থং সাক্ষাৎ তৎপ্রার্থনং ন রসাবহমিতি জানাস্যেবেতার্থং। মে ইত্যেকত্বং প্রতি আইং পৃথক্ জপাৎ ইতি এতং মন্ত্রং প্রক্র্যাঃ। নিজ এবাসৌ প্রক্ষেক্তন পতিপ্রদোন্তর তভল্চায়া দেব্যাং অরপশক্তিম্বনের মন্তব্যং ন বহিরক্ত জগৎকারণশক্তিম্বং পূর্ক্স্যাঃ। ন বিক্লা বিনা লক্ষ্মী ন হরিঃ পদ্মজাং বিনেতি ভগবদৈত্যাৎ। উত্তর্জাং যস্যাংশাংশাংশভাগেন বিশ্বন্তিত্যপ্রান্ধান ইত্যাদিনা তদপেক্ষরাতিত্যক্ষ্মান। যাতীতগোচরাবাচাং সনসাঞ্চাবিশেষণা। জ্ঞানিজ্ঞানপরিজ্ঞেদ্যা বন্দে তানীধরীং পরাং। স্বর্জ্তের্ স্ক্রান্মা বা শক্তিরপরা তব। গুণাপ্রান্ন নমন্তব্যে শাশ্বভাব্যৈ ক্রেশ্বর। ইতি বিষ্কুপ্রাণপদ্যাভ্যাং তাদুশভেদপ্রাপ্তঃ।

তথাচ নারদপঞ্চরাত্রে প্রতিবিদ্যাপন্থাদে। কানাত্যেকা পরা কান্তং দৈব ছুর্পা তদান্মিকা। যা পরা পরনা শক্তির্মাধারিক্
স্বরূপিনী। যাগা বিজ্ঞানমাত্রেণ পরাণাং পরমান্মনঃ। মুহুর্তাদেব দেবসা প্রাপ্তির্ভবিত্ত নানাথা। একেরং প্রেমস্বর্ধস্বভাবা
গোকুলের্বরী। অনয়া স্থলভো জ্ঞের আদিদেবোহখিলের্বরঃ। অস্যা আবরিকা শক্তি মহামারাখিলের্বরী। যারা মুগ্ধং জগং
সর্ব্ধং সর্ব্বে দেহাভিমানিন ইতি। কাতঃ প্রথমবাষ্টাদশাক্ষরীত্যধিষ্ঠান্ত্রীতি গমাতে। ছুর্গা মহামারেত্যাদিনামাদিসাম্যোনের ভূ
ভ্রমো ভবতীতি ক্রেম্বং। অথবা মন্ত্রেহ্ বিষঃ পাদো নিক্রাভীষ্টনায়া যোক্ষ্য ইত্যেব বিষিঃ স্যাবং। ততো ব্রন্ধর লোকবল্লীলক্ষাং মারোপাদনব্দের লভ্যতে তাসাক্ষ পরমপ্রেমোল্লাস বিলসিত্যের তথোপাসনং প্রেমের চ তথা তৎপ্রাপ্তি ন তথোপাসনেন ইতি
বিবেক্তবাং। আত্র কেচিদনন্যন্ত্রা যদন্তব্য মন্যত্তে তেন তদীয়প্রেমগন্ধসন্থন্ধগাহানি স্ক্রমণ্ড সর্ব্বের্জ কারণেন পারবৈশ্বর্ধান্ত্রভ বিহারেণ পরস্বসাধ্যস্বরূপপ্রেমবিচারে ভূ সচ প্রেমা কেবল মাধুর্যান্ত্রভাবির্জারী। অনন্তভক্তিপ্রবৃত্তিকারণেন পারবৈশ্বর্ধান্ত্রভ বেন নতু সম্ব্রমাৎ সংক্রিয়তএব প্রেমের চ ভগবানপি বুশীক্রিরতে। নতু তেন তথৈব নেমং বিরিক্ষ ইত্যাদ্যে ইত্যাদ্যে ইত্য

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

ইত্যেবং মন্ত্র: অতঃ প্রাক্ সিদ্ধ এবাসৌ। তত্র যদি তৃতীয়পাদাভীষ্টনায়ো যোজনীর ইত্যেব রিধিঃ স্থাতদা লোকবল্লীলয়া মায়ো-পাসনমেব যদি তু সোহপি পুর্বাসিদান্তদা স্বরূপ শক্তাপাসনমেবেদং॥ ২॥

## ত্রীবিখনাগচক্রবর্ত্তী।

নীতবেন বিবাহাযোগ্যবাং। হে দেবি মুখাং বিবাহং বিনৈব কেবলগাৰ্কবিবাহেনৈব মে পতিং কুৰ্বিতাৰ্থ:। অধীশ্বরীতি তত্র তব কিমপ্যশক্ষং নাজীতি ভাবং। নহু তব ক্ষে পতিভাবক্ত বংশিত্ভামজ্ঞাতবে বদভীটঃ ক্ষালসঙ্গং কথা সাধু দেংভতীত্যভূজাই মহামারে মায়ন্না মংশিতবেনী তথা মোহর বথা কদাচিদপি গোপান্তরেণ মহিবাহ ভাতাং ন ভাবতে ক্ষালসঙ্গ রহন্তঞ্চ নচ জ্ঞাতুং শক্ষতে। বহা। দীবাতি ক্রীড়তি দেবনতি ক্রীড়মতীতি বা দেবী স চাসৌ পতিশেতি তং। তাদৃশং পতিবং বিবাহং বিনৈব নিকাতীতি মম গোপান্তরব্যুত্তেংপিংল কাপি ক্তিরিতি ভাবং। ইত্যেবং প্রত্যেকং মন্ত্রার্থং পৃথক্ পৃথক্ বিচিন্ত্যেভার্থং। ইনং তাভিকপাশিতা চিচ্ছক্তি বৃত্তিস্বরূপভূতা যোগমানৈর নতু বহিরজা মায়া বহুক্তং নারদগঞ্চরাত্রে প্রতিবিদ্যাসন্ধাদে। ভানাত্যেকাপরা কান্তং সৈব হুর্গা তদান্মিকা। যা পরা পরমা শক্তিম হাবিফুল্বরূপিণী। যন্তা বিজ্ঞানমাত্রেণ পরাণাং পরমান্তনং। মুহুর্তাদেব দেবস্য প্রাপ্তিত্বিতি নাত্রপ। একেয়ং প্রেমসর্কান্ত স্থতার জ্ঞিক্ষেন্ত্রী। অনয়া স্থলতা জ্ঞেন্ত আদি পেবাংখিলেশ্বর। অতা আবিকাশিক্তম হামান্নাথিলেশ্বরী। যন্ত্রা মুখং জগৎ সর্বাং স্ক্রে দেবাগিনান ইতি। অতঃ সর্বের্ ক্রফ্যত্রেরু হুর্গাথিচাত্বেবতেত্যাগমে শুদ্ধবন্ধকার বিভান ক্ষালি। ক্রান্তনানানালাভিধানা যোগমানির ক্রাথিচাতী সৈক শ্বাভিক্রপানিতা হুর্লা মহামান্ত্রেরাদি নামানি

করিয়া আমাদিগকে নন্দগোপের হৃতকে পতিরূপে প্রদান করুন, আপনাকে নমস্বার করি" এই মস্ত্র জপ করত পূজা করিলেন॥ ২॥ এবং মাসং ব্রতঞ্জের কুমার্য্য: ক্ষ্রেচতসঃ। ভদ্রকালীং সমানর্চ্চু প্রাশ্বন্দ হতঃ পতিঃ॥ ৩॥ উষহ্যপায় গোত্রৈঃ বৈরন্যোন্যা বন্ধবাহবঃ। কৃষ্ণমুক্তৈর্জগুর্যাস্ত্যঃ কালিন্দ্যাং স্লাভুমন্বহং। নদ্যাঃ কদাচিদাগত্য তীরে, নিঃক্ষিপ্য পূর্ববং। বাসাংসি কৃষ্ণং গায়স্ত্যো বিজহু; সলিলে মুদা॥৪

ক্ষতেতত্ত্বেবাহ ভূষারন্ত্রও: পতিরিত্যানর্চ্রিতি॥ ৩॥ ব্রতস্ত পূর্কাঙ্গমাহ উবসীতি। গোত্রৈন নিভি: অন্যোজা বৃদ্ধবাহন: পরম্পরং গৃহীতপাণয়:॥ ৪॥

# देवस्थवरकाषणी ।

নামং প্রিয়োহকেত্যাদৌ শ্রীজ্ঞবাদিন এব সর্ব্বোপরি প্রশংস্যন্তে তথৈবাজোক্তং নক্ষোপস্থভমিতি নতু শ্রীভগবন্ধমিতি। তৃত্মাতাসাং শুদ্ধমধুরপ্রেম্ন এব কিল বিলাসোহমং নাজনিতি সর্ব্বোপর্য্যেব স্থিতমিদং ॥ ২ ॥

মাদেতি স্বল্পেটনৰ কালেন তাসাং তাদৃশ্যপি সিদ্ধিনিতি ভাব:। ক্ষেষ্ণ চেতো যাসামিতি তস্যা: সমর্চ্চনমপি ক্ষার্চ্চনমেবেতাভি-প্রেতং অতএবাত্রে চ'বরদানায় শ্রীক্ষ্ণসৈবাগমনং বক্ষাতি ভুয়াদিতি পুজাদৌ সহল্প:॥ ৩॥

প্রেমা বিশ্বতমণি প্নতাদাং অম্বাগণবিপাটীনমং বতপূর্বাদং শব্রহাই উষদীতি উষম্যথায় ইতি তাদাম্ংকঠা গোতে ন'মিভি: বৈবিতি পরস্পরকার্য্যাধকতং। হৈতে তৃতীয়া। নিথতত্বমানিভিরাইতা ইত্যথং। শৈব গৈ: দই ইতি বা অন্যোহন্যাইতি শীক্ষরাগনীয়ক মত্যেন মিথ: কেহবিশেষ: ক্ষমিতি চেতোবছচনস্যাপি তদেকনিষ্ঠতা তত্রাপূট্চেরিতি তদাবেশ:। কালিল্যাং স্নাত্মশ্বহমিতি দ্বণগননং নিত্যমেক রসত্ত্বক দিশিতং এবমনুরাগবৈশিষ্ট্যমেব সর্বাথা বর্ণিতমিতি॥

ক্লাচিত্তঝাসাত্তে পৌর্থনাসাং। পূর্ববিদতি স্টেদ্ব নগ্নতয়া সান্মিত্যাদিকং বোধাতে এতক বালাভাবাদেব। মুদা বিহারে হেতৃ: কৃষ্ণং গায়স্তা ইতি তলগানানন্দেন হেমন্তজ্বেহিপি শীতাদ্যক্তে:। যথা। মুদেতি ব্রতম্য তদিনে পূর্ণছাৎ অতএব কৃষ্ণং গায়স্তো বিজহুরিতি দেহানমুস্থানেনচ কৃষ্ণচেত্ত্বনেব বিশেষতং। এবং মানস্বাচিককায়্লিককতানত্বং দূর্শিতং॥ ৪॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:

বৈর্ণেট্রে: বর্ণে: সহ॥७॥८॥७॥१॥৮॥৯॥১०॥১১॥১২॥

#### **बै**विश्वनाथठकवर्त्ती ।

সাম্যেনৈর লোকানাং ত্রমো ভরতীতি জ্বেরং। ব্রহ্মসালোকবলীলম্বানারোপাসনেহপি ন দোবং। জত্র কেচিদননামন্যা যদন্যথা মন্যত্ত ন তে ভদীরপ্রেমগন্ধসম্বন্ধরবাহ্মপি স্পৃশন্তীতি শ্রীবৈষ্ণরভোষণী ॥ ২ ॥

নন্দুতঃ পতিভুরাদিতি সন্ধর্য়েতি শেষঃ॥ ৩॥

আপ্লুত্যান্তনীত্যক্তং তৎ পূৰ্বজনসমূত্বতাহ উষসীতি। হৈ: বৈগোঁজৈন নিভিননি ধন্য কুলানি কিনিতি বিলয়নে ইত্যেবমাহৃত। ইত্যর্থ:। কদাচিদিতি প্রতপূর্ণদিনে পৌণনাস্যামের এবং মাসং প্রতং চেক্রিতানতরে কুলাং। কত্রবোৎসবার্থং কুমারীভিন্তাভিঃ সমানবাসনত্বন প্রবল্পদিশীভূতা ব্রতামনন্দিন্যাদ্যা অপি নিমন্ত্যানীতাঃ পূকাসমাপ্তানতরং তাতিঃ সহৈবাবভূধ সানদেশোহয়ং জ্বাবিহারো জ্বেয়ঃ॥ ৪ ॥

হে রাজন্ ! শ্রীকৃষ্ণে চিন্তার্পণপূর্ব্বক অজকুমারীগণ এই প্রকারে একমাস কাল অতাচরণ তথা "নন্দস্থত স্থামাদের পতি হউন্" এই কামনায় ভদ্রকালীর স্মর্চনা করিতে লাগিলেন॥ ০॥

তাঁহারা প্রভূষে গাত্রোত্থান করিয়া স্বং নাম সহ পরস্পার হস্ত গ্রহণ পূর্বক যমুনায় সান করিতে যাইতেন এবং চলিতে করিতে উচ্চৈঃস্বরে শ্রীকৃষ্ণের গুণ গান করিতেন। একদিন অর্থাৎ মাসাস্তে পূর্বিমার দিবস নদীতীরে উপস্থিত হইয়া অন্যান্য দিনের ন্যায় বসন স্থাপন পূর্বক শ্রীকৃষ্ণের গুণ গান করিতে ২ জলমধ্যে কেলি আরম্ভ করিলেন॥ ৪ ।

ভগবাংস্তদভিপ্রেত্য ক্ষো যোগেশরেশর:। বদ্ধস্যৈরাগতন্তত্ত বৃতন্তৎকর্মসিদ্ধয়ে ॥ ৫॥ তাসাং বাসাংস্থাদার নীপ্সাক্ষ সম্বরঃ। হসন্ভিঃ প্রহাসন্বাচাল গরিহাসমুবাচাল ॥ ৬॥

## व्यथनवामी।

যোগেশ্বরাণামীশ্বর ইতি প্রত্যেকং তাদৃঙ্যুনোরথপূরণসামর্থাং দর্শবৃতি তাসাং কর্মণ: সিদ্ধয়ে ফলদানায়েতি ॥ ৫ ॥ নীপং কদস্বং বালৈ: সহ ॥ ৬ ॥

## বৈষ্ণবতোষণী।

ষোগেশরাণাং লব্ধ সার্বজ্ঞাদি সিন্ধীনাং আরাধ্যঃ অতএব ভগবান্ নিতাশাভাবিকসার্বজ্ঞাদিশক্তিযুক্তোহদি তত্ত বত্যাবৈত্ব কার্ব্যং অভিপ্রেত্তা নিজ্ঞানাদিরীতিবিশেবেণাস্মীরৈবেতি তদ্য তাদৃশ্বংপ্রেমময়লীলামাধুর্যাবেশো দর্শিতঃ। তথাদি দেবতাস্ত-রোপাদকেভ্যোহিশি শ্বয়ং ফলদানে যুগপদ্ধিল বস্ত্রহরণে চ শক্তিদ শিতা। তত্র হেতুঃ ক্ষেক্তাদৃশ্বেইনব প্রদিদ্ধ ইত্যর্থঃ। বালৈ-রিতি জ্ঞেয়ং। তৈ বৃত্য স্নাগত ইতি তে চ পরমাস্তরকা দামস্থানবিশ্বদাম কিরণয়ো জ্ঞেয়াঃ। যথোক্তং গৌতমীয়ে। দামস্থানব্দাম কিরণয়ো জ্ঞেয়াঃ। যথোক্তং গৌতমীয়ে। দামস্থানব্দাম কিরণীর্গর্মপূপ্রেই। অস্তঃকরণরপাত্তে ক্ষেদ্য পরিকীর্ষিতাঃ। আন্বাভেদেনের পূজা যথা ক্ষেক্তিথেব তে ইতি। অস্তঃকরণরূপা ইতি ক্রেমনা বৃদ্ধাহকার চিত্তমনোরূপা ইত্যর্থঃ। তৈর্বত ইতি হাসাদিবিলাসার্থং জ্ঞেয়ং॥ ৫॥

বালৈ: সহ সত্তরং ভীত ইব ত্রায়ুক্ত: পরপ্রেং তৃঞ্চীমাসাদ্য তাদাং বাদাংদি প্রয়োজনবিশেষায় উপাদেয়তেন, গৃহীত্বা নীপমাক্ষ চ দ্বৈর: সন্ তৈরেব হসন্তি: সহ ত্রুঞ্চ প্রহসন্ তেন চ হাসেন ক্তান্সন্ধানা: সপ্রণয়েষ্যং জ্ঞাত্বৈবাজ্ঞাত্বেব চাক্রবাণা: প্রতি পরিহাস-মিতি। কথং শীতজ্ঞলে চিরং বত কম্পমানান্তিষ্ঠথ উথায়াদ্র'ং পরিত্যন্তা শুক্ষমেব বাস: পরিধীয়তামিতি তদেবং কর্ম ত্বানেব ত্বা-

# শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

যোগেখরাণামপীশ্বর ইত্যনেন সর্বজ্ঞং। তাসাং প্রত্যেকং তাদুল্মনারপপুরণসামর্থ্যং। তাভিঃ স্বেকণপথে এব স্থাপিতানান্মবিলানামিপি বস্থাণাং চৌর্যসামর্থ্যং। প্রাণত্যাগাদিপি তাদুলক্ষাত্যাগমধিকং নিশ্চিষতীনাং তাসাং কুলকুমারীণাং জলাহ্রখাপন স্বপ্রথমনাদিসামর্থ্যং। দৃঢ়সর্বাঙ্গানাং রহং প্রাপ্তানাং স্বশ্যানামিপি তাসাং তাদাঝিকসন্তোগাভাবসামর্থ্যক্ষ দ্যোতিতং। বর্ষস্যৈর্থ্ ত ইতি বালৈরিতি বক্ষ্যমাণত্বাং। ছিত্রবর্ষীয়াং স্ত্রীপুংসভেদবিবেকশ্ন্যাং পৃথুকা দিয়াসস এব স্থিবেনাভিমতাঃ। গোচারণাদাবিপি কৃষ্ণসঙ্গ স্বত্যক্ষে ক্রেরাঃ। বহুকেং ক্রমনীপিকায়াং। জন্মস্থপীবরক্টীরত্তীনিবন্ধব্যালোলকিন্ধিণিঘটাইতর্টিভিঃ। মুঝেতরকুন্থ-ক্রিত্রক্ত্রিভ্রন্তর্মজ্বতনৈঃ পৃথুকৈঃ পরীতং ইতি বৈক্ষবতোবণ্যাং তেতু দাম স্থান বস্থদান কিন্ধিণ্যঃ কৃষ্ণান্থ:করণক্ষণত্তে গৌত-মীয়তক্স দুটা ইত্যুক্তং॥ ৫॥

হসন্তিব বিদ্যালয় বিদ্যা

যোগেশ্বরদিগের ঈশ্বর ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ ভাষা অবগত হইয়া তাঁহাদিগের কর্মের ফল দান নিমিত বয়স্য বালকপণ সহ সেই স্থানে আগমন করিলেন ॥ ৫॥

় এবং ভাঁহাদিগের বসন হরণ করিয়া সত্ত্র কদম্বতরূপরি **আরোহণ করিলেন। পরে হাস্যকা**রি

জ্ঞাগত্যাবলাঃ কামং স্বং স্বং বাসঃ প্রগৃছতাং। সত্যং ক্রুবাণি নো নর্ম্ম যদ্যুমং ব্রতকর্শিতাঃ॥৭ ন ময়োদিতপূর্বাং বা অনৃতং তদিমে বিদ্বঃ। একৈকশঃ প্রতীচ্ছধাং স্টেহবেতি স্থমধ্যমাঃ॥৮॥

#### औरद्यामी।

হে অবলাঃ নো নৰ্ম ন পরিহালো ক্ষাং ধ্যং ব্রতশ্রাস্তাঃ এ ৭ ॥ একৈকশো বা আগতা শীকুক্ত সহৈব বা। ন ত্রামাক্ষাপ্রহ ইতার্থ: ॥ ৮ ॥

#### বৈষ্ণবভোষণী।

নিব ইতি ন্যায়েন নাযুক্তমিত্যাদি মিথ:সন্থাদপুর:সরং সনর্মরাক্যমিত্যর্থ:। হ ক্টমেবোবাচ ইত্যর্থ:। বালৈরিতি তংখেলনাথং প্রৈর প্রোচানাং তরিকটসন্ধিনাঞ্ পরিত্যাগেন বালকৈরের স্থিভিন্ততো নাৰ্দ্যং॥ ৬॥

পরিহালোক্তিদেবাই অত্রেতি ছাত্যাং। অত্রাগত্য ইতি নির্ভরস্কৃষ্টিবিষয়ং দর্শনতি তত্ত্বৈব বস্ত্রপক্ষে পর্য্যান্তিরিতি ব্যাজেন। কামং যথেইং প্রকর্ষেণ গৃহতামিতি কটিত্যাগমনার তাঃ প্রোংসাইরতি তথা স্বস্যোদাসীন্যেন চৌর্ছেইংপ্যোদাশীন্যমত্র চ ইমানি কেনচিচ্চোরণাপ্রত্য কদবেইস্থিন গোপ্যমানানি ময়া দ্রাদ্ট্য সমাগতমিতি স্বচ্যতি স্থং স্থমিতি। সর্পাভিরেবাগত্য নিজং নিজং গৃহতাং নহেক্যা বিত্রাভি: কতিভিন্দিদা সর্পাদামেব প্রহীতব্যং কদাচিক্যু সাস্থ কপটবতীভি: পরিবর্ডিতাশীতি ভাবঃ। গৃহঢ়োভাবস্থন্য এবোহঃ। নহ তবোক্তৌ ন প্রতীমন্তত্রাই সত্যমিতি ক্রবাণীত্যার্থ: ব্রবাণীত্যের কচিৎ পাঠঃ। নহ নর্মণা মিথ্যাপি ক্রয়া: তত্রাহ নো নর্ম ইতি নবেত্দপি তব নর্মেবেত্যাহ। হে অবলা যান্ত্র্যমিতি অবলাস্থ তাঙ্গণাদ্যপ্রাথ্যা বনমপ্রাথায় ত্রাপি ব্রক্রশাস্থ তপস্থিনীর্ নর্মেণোহত্যযোগ্যম্বাদিতি ভাবঃ। অনেন চ স্বয়ং ন চোরিতং কিন্তন্যেনবৈতি ব্যন্ত্য প্নরৌদাসীন্যব্যন্তকনর্মণা তাসাং মনঃ ক্ষোভ্যতি অধুনা কিং কর্ত্য শক্ত্রেতি ভীতিদর্শননর্মণা সাম্বর্থতি চ॥ ৭॥

নমু সপ্রহাসোকে রসত্যতৈবাবগম্যতে তত্তাহ নেতি। উদিতপূর্কং পূর্বপূর্বং উক্তং যতৎ অনৃতং মিথ্যা নৈব ভবতি। যথা। অনৃতং ন ময়া উদিতপূর্বং কদাচিদপানৃতং পূর্বং নোদিতমিত্যর্থং। তচ্চ ইমে মম সহচরা বিছঃ এবামেব মদীয়াশেষর্ভিজ্ঞানাং। নমু তঃ-

## গ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

মেব বৈমানিকীভি দে বীভিরত্রাগত্য ত্র্গাদেবী পূজাতে। নহ ভো: পূজ্মত্ব নাম দেবীং বজাণি ত্যক্ত্বা তা: কথং গতা: অমি বালা-ন্তবং ন জানীথ অদ্য রজন্যাং পূন: পূজ্মিব্যন্তীভিন্তাভি: সাথা পরিধাতৃং রিক্তানি ভো: ক্লফ বনেব তবং ন জানাদি। অদ্য দিন এব পূজ্মিব্যন্তীভির্মাভিরেব সাথা পরিধাতৃং বনদেবতাধারা উচ্চশাধোপরি বজাণি রক্কিতানীতি ॥ ৬ ॥

হ শংলাক্তং শপষ্টং পরিহাদমাহ অত্তেতি । সত্যং যুয়াকমেবৈতানি বস্ত্রাণি চেৎ কামং যথেইমেবাত্রাগত বং বং পরিচিত্য মং প্রাঠ্য বার্থং লপণং করা ধনরক্ষকায় মহুং পারিতোষিকমেবৈকং হারং দরা বাদো গৃহতাং। বং ব্রমিতি সর্বাভিরেবাগত্য নত্ত্বকয়া দ্বিত্রতির আগত্য বত্ত্বলাভবতীনাং ব্রীণামধিক গ্রহণদ্যাপি সম্ভবিষ্ণুরাং। নহু গঙ্কং ন শকুমন্ত্র সহাসমাহ। হে অবলাঃ মন্যে ব্রতকাশ্রাদেবাত্রাগত্তং ন শকুপেতি ভাবং। যদা। তহি ন দাস্যামি প্রবিষ্ণায় মম কিং কর্ত্তুং শকুপেতি ভাবং। নহু কপটিনন্তবাক্তে ন প্রতীমন্তত্ত্বাহা। সত্যং তথ্যমেব ক্রবাণীত্যার্বং ব্রবাণীত্যপি কচিৎ পাঠং। বহা। সত্যং শপ্থং করা ব্রীমি। সত্যং শপ্থত্থ্যয়েবিত্যাবং। নতু মন্দ্র বতো ব্রতেন ক্লীকৃতা যুষং। তপ্রিনীর যুম্বাস্থ দগ্যভক্তিত ধ্রভিত্তি ভাবং॥ ৭ ॥

নমু মিথাবাদিনন্তৰ শপ্ৰেছপি ন বিশ্বসিম ইতি তত্ৰ সরসনাদংশমাহ নেতি। উদিত পূৰ্মীমিতি সুপ স্থপতি সমাস:। অনৃতং ন পূৰ্মমুদিতমিতি এতজ্জনানি এতাব্যয়ং পৰ্যায়ন্ত অনৃতং ন পরিচিনোমি অতা কিং প্রমাণমিতি চেদিমে বালা এব বালানাং বথা দুই-গ্রাহিশভাবিত্বাদার্জনাচেতি ভাব:। নমু দূরতো হৃত্ত কলে ব্রাণি কিপান্তাং বাল্ছারা বা দীয়ন্তাং তত্ত্ব হন্ত এতানি সুখ্দীয়ান্য

বালকদের সহিত হাসিতে ২ পরিহাসপূর্বক বলিলেম॥ ৬॥

শহে অবলাগণ ! তোমরা এখানে আসিয়া যথেচ্ছাক্রনে স্ব স্ব স্বন গ্রহণ কর, আমি সত্য বলি-তেছি পরিহাস করিতেছি না, যে হেছু এক্ষণে ভোমরা ব্রতশ্রাম্ভ মাছ ॥ ৭ ॥

আমি এখনও মিখ্যা বলিতেছি না, পূর্বেও কখন মিখ্যা বলি নাই, এই সকল বালক তাহা জব-

তস্য তৎ ক্ষেবিতং দৃষ্ট্বা গোপ্যঃ প্রেম পরিপ্লুতাঃ। ব্রীজ়িতাঃ প্রেক্ষ্য চান্যোন্যং জাতহাদা ন নির্যয়ঃ।
এবং ব্রুবতি গোবিনের নর্মাণাক্ষিপ্তচেতসঃ। আকণ্ঠমগ্রাঃ শীতোদে বেপমানাস্তমক্রবন্॥ ১॥

#### डी ध्वयामी ।

কে নিতং পরিহাসং প্রেমপরিপ্লুতাঃ প্রেমরসম্যা: ॥ ১ ॥

## देवकवट्डायनी।

রস্যা অপি ত্বংসদৃশা ইতি চেক্তরাহ একৈকশ আগত্য স্বীরং বস্ত্রং গৃহীত। যদি পূর্ব্বপূর্বস্যামন্যথা স্যাত্তিদ্ব উত্রোজরাভিম বচনং মিথায় মন্ত্রা নাগস্তব্যমিতি ভাবং। অহো প্রথমোশানে সর্বাসামসন্ত্রতি স্যাহিপিতার্যাঞ্চ ক্স্যাঞ্চিদন্যাসাং ক্রমণ্টনা হুর্ঘটা স্যাদিতি কিমেবং বিলম্বাচরবেন বা মম বচ্চি মনসি চ কাপি বক্রতা নাস্ত্রেবৈতি বোধরন্ পক্ষান্তরমাহ সহেতি। উত বাশস্বার্থে। হে ক্রমধ্যমা ইতি ক্রশমধ্যানাং যুদ্ধাকং শীতান্ত্রসি চিরম্বিভিডিম হৈ ক্রপরতীতি ভাবং। যুদ্ধাকং মধ্যভাগাদিসৌন্ধ্যমেব প্রস্তুমিষ্তে নচ ববৈত্র বৈত্র মধ্পেয়োলন্মিতি তু নিগৃঢ়ো ভাবং॥ ৮॥

প্রেমপরিপ্লুতা ইতি গোণীবিশেষণথেন স্থভাবত এব প্রেমবিশেষবতাঃ সম্প্রতি তু তৎক্ষে, লিতং পরিহাসোক্তিং দৃষ্ট্র জ্ঞাষা অধিক-প্রেমরসে নিমগ্রা ইত্যর্থঃ। তত্র চ জাতিস্বভাবেন ত্রীড়িতাঃ ব্রীড়গা হর্ষেণ চান্যোনাং প্রেক্ষ্য জ্ঞাতহাসান্চ সত্যো ন নির্যয়ঃ॥

এবং ক্রবতীতি পুন: পুনন্তথৈব নানাপ্রকারং বদতীত্যর্থ:। গাং বাচং নিজবশ্যতরা বিস্পতীতি গোবিস্ক্তিমিন্নিতি শরমবাগিতাতি-প্রেতা নর্মাক্ট চেতত্তেনৈবাক্রবন্ অন্যথা নাবিষয়নিত্যর্থ:। কিঞ্চ। বেপমানাত্তক হেতু প্রক্রিয়া শীতোদকেহপ্যাক্ঠনগ্রা:॥ ৯॥

## এবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

দীরানি বা মরা জাতুমশক্যানি কথং দীয়ন্তাং। অন্ধনিধ ধার্নিকৈং পরন্তব্যাণি নথাগ্রেণাপি ন স্পৃশান্তে তন্মাং বৃহমেবাগত্য প্রতীচ্ছত বং স্থং পরিচিত্য গৃহণীত বতঃ পারকাং বন্ধ ন গৃহামি ন দদামি নাপি স্পৃশামীতি মন নিয়মঃ। নমু বয়া ধ্রেইন করিষ্যমাণাছিড্যনান্তীত্যৈব কুলকুমার্য্যো বয়ং ত্বংসমীপং ন ষামন্তব্যাহ একৈকশ ইতি। প্রথমং যুদ্মাক্ষবরা কাচিদিহাগদ্ধ তু তস্যামবিভ্যিতারাং সত্যামন্যা অন্যা অপ্যায়ার। সহৈবোক্তেতি যুগপন্থহবীনামাগমনে জ্ঞীণাং বিভ্যনাসন্তবাচ্চেতি ভাবঃ। হে স্থমধামা ইতি শিবাংসি থ স্ত্রমাক্ষশ্বেনোচাত্তে তানাতিম্বারাণি ভবত্যঃ কুপরা মাং যদি দর্শরন্তোব তদা মধ্যমান্তান্যপি স্বার্থাণ মাং দর্শয়িত্ং কা লজ্জেতি ভাবঃ ॥ ৮॥

ক্ষেণিতং রহস্যপরিহাসং দৃষ্ট্ব প্রেমপরিপ্লুতা ইতি মন্যামহে ইমমেব কাস্তং স্থপনিত্বমাকমহস্তাম্পদান্যস্ক্রপাণি কিং ভবিষ্য-স্তীতি মনোহত্বলাপানন্দেন মগা বহিত্বতোতাং প্রেক্য ত্রীড়িতা ইত্যন্তি কমলেকণে তামাহবয়ত্যরং তথাহি অনি অধামুধি তমেব বাহি স্থাং পার্বস্তীতাতোতাং জাতহাসাঃ পরিজহস্তবেব নতু নির্যয়ঃ॥

এবং নানাপ্রকারং নর্দ্ম ক্রবতি সতি গোবিদে গা নর্দ্ম ধ্রবাচো বিন্ধতীতি তন্মিন্। তচ্চেদং নর্দ্ম ডোঃ থপ্রনাথ্য বিদ যুবং নাগছ্থ তদা এতৈরেব বাসোডিঃ দাথানিবলৈ হিন্দোলিকামুপধানাদিকক বিরচ্যা ময়া শধ্যতে রাজাবদ্য কৃতভাগরং মাং নিজ্ঞান ক্রভাগরিতি ডো গোপাল তব গাবভূগলোভেন গহরং প্রবিষ্ঠান্তত্ত্বাঃ পরাবর্ত্তিছেং ক্রভমিতো যাহি ভো ভো গোপবালা ক্রতমিতো গৃহক্বতার্থিং ব্রজং ব্রজত পিজাদি গুক্জনান্ মা অসমত্রসমভূহেরথ। ভোং পিছচ্ছ বয়মিতো মাসং ব্যাপ্য গৃহং ন যামঃ পিজাদি গুক্জনান্ নাদেশেনৈব কাত্যায়নীব্রতং সমাগ্য থাসমাক্রমুদ্বাসব্রতং ক্রেঃ। ভোতগেবিনাঃ অহমপি ব্রদ্ধনিপ্রভাবাহ্ত ত্র্হবাদবৈরাগ্যঃ

গত আছে, অতএব ছে স্থমধ্যমা স্থানীগণ! তোমরা একে ২ অথবা সকলে মিলিয়া আসিয়া বসন গ্রহণ কর ॥৮॥

হে রাজন ! শ্রীকৃষ্ণের এইরূপ পরিহাদ অবগত হইরা গোপকুমারীগণ প্রেমরদে ময় হইলেন এবং পরস্পার পরস্পারকে নিরীক্ষণ করিয়া হাদিতে লাগিলেন, কিন্তু কেহই জল হইতে নির্গত হইতে পারিলেন না, শ্রীকৃষ্ণ বারস্বার ঐ প্রকার করিতে থাকিলে পরিহাদ বাক্যে তাহাদের চিত্ত আকিও হইল এবং শীতল সলিলে কণ্ঠপর্যন্ত ময় করিয়া শীতপ্রযুক্ত কম্পান্থিত কলেবরে বলিতে লাগিলেন॥৯॥

মানয়ং ভোঃ কথান্তান্ত নন্দগোপস্থতং প্রিয়ং। জানীমোহঙ্গ ব্রজন্নাঘ্যং দেহি বাসাংসি বেপিতাঃ॥১০
শ্যামস্থন্দর তে দাস্যঃ করবাম তবোদিতং। দেহি বাসাংসি ধর্মজ্ঞ নোচেন্তাজ্ঞে ক্রবাম হে॥

## श्रीश्वत्रामी ।

তত্র মুগ্না উচ্: অঙ্গ ভো: প্রীকৃষ্ণ অনরং অন্যাব্যং মা কৃথা: ॥ ১০ ॥ প্রোচা উচ্: নোচেৎ রাজে নন্দার কংসার বা ক্রবাম হে প্রীকৃষ্ণেতি ॥১১ ॥

## देवकावटकांवनी।

আদে সায়াহ: মেতি প্রাগেব মা শক্ষ নির্দেশে ব্যথ্যতা অনয় করণদার্চ্যার্থং বা। তো ইতি অন্ধেতি সপ্রেমার্থিনিংতএব দ্বিক্তিঃ নন্দাগাস্য হতং জানীম ইতি। তং গোপকুমার: বরঞ্চ গোপকভাকাঃ ইত্যন্ত্বান্ প্রত্যেতাদৃশমভাষ্যং কর্তুং নাহ সি স্নেবেণ নন্দাত ব্রন্ধনিত । নন্দো যো গোপঃ ব্রন্ধন্ত্বস্য হৃত্যতি প্রকাশ আমার যুব্বাক্ত তব ভার এবোচিতঃ নতু স্বপিত্প্রতিক্লং হংথদানাদি কর্ম ইতি। যথা নন্দভ গোপং স্বত্যিতি সর্ক্বভালীব্য ব্লক্ত তব বিক্লাচরণং ন যুক্তনিতি ভাবঃ। অত্র তু ত্রামগ্রহণং সংরম্ভভোদাসীভাভ চ ব্যঞ্জনায়। তচ্চ স্থাবব্যক্তো লক্ষা। তত্র চ প্রিয়ং প্রিয় ইতি জানীমঃ অতোহন্দাক্ষপ্রস্থায়নেবেতি ভাবঃ। কিঞা বজে ব্রন্ধধ্য ব্রেজন বা শ্লাব্যঞ্চ জানীমঃ অতো ব্লন্দিয়তংক্ষাচরণমগৃক্তমেবেতি ভাবঃ। দানে হেতুঃ বেপিতা বয়ং। যথা বেপিতাঃ প্রতি ইতি কুপাং জনমন্তি॥>•॥

# **ब**िविश्वनाथठकवर्ते ।

সম্প্রতি মাসং ব্যাপ্য অত্তৈব নভোবাসত্রতং চিকীর্ষামি। যদি চার্ম্বক্পথের তদান্বিতোহ্বরুত্ব যুমাভি: সমমুদ্রাস ত্রতমের কর্ত্ত্র্প্রামীতি নর্ম্বণা আদিপ্রচেতস: শঙ্ক্যা ততোহপ্যধিকজলে আকঠমগ্না: বেগমানা: শীতেন শঙ্কাহর্ষোৎস্ক্যাদিভিশ্চ ॥ ১ ॥

প্রথমং সায়া আহ: অনয়মতাযাং মারণাং। নহু মুঝা গৃয়ং মাং নৈব পরিচিছ্থ। যতো মযাপানীতি কল্কং দাতুং ন শক্ষেষ্ব তরাহং। তাছিতি অতান্ ব্রজ্বানিপ ন জানীম এব তাছতিপ্রসিকং নন্দরাজস্য স্বতং জানীম এব গোপোভূপেংপি দৃত্যতে ইত্যবিধানাং। ত্রাপি ব্রজ্বমাত্রস্যাপি প্রায়ং ত্রাপি প্রিয়ং। তো নির্ক্ত্রয়ং ব্যাহং রাজ্য পুত্তত্বি কথং মহানীতিং। রাজপুত্রা অপি কচিদনীতিমন্ত ইতি চং কথমহং ব্রজ্পাঘ্য প্রিয়ণ্ড নহানীতিমংস্থ প্রায়া প্রীতি বর্গ সভবেদিতি ভাবং। নহু সভ্যং ব্রেয়ো বৃধ্বং বন্ধুমনভিজ্ঞান্তল্পাং কুপরৈবাপরাধং কাছা বাসাংসি দেহি বেপিতা ব্যমিতি কুপাং জনয়ন্তি॥ ১০॥

পুনর পি সামৈবাছ:। ভাম দাভোভবামেতি দন্তাসকারপাঠিনিং প্রথমন্মত:। ভামেতি ভালবাশকারপাঠে দাতঃ সত্যক্তবোকং করবামেতি। রাজ্ঞি দ্বির প্রজানামন্দ্রাকং দাভং স্মৃতিভমেবেভি ভাব:। বস্তুতন্ত তানিবেগৈ স্বানামন্দ্রানাহ:। স্থান্তবিদ্যাভির্যদাভং সভবেভ্ত অবাংকং করবামেতি। কান্চিং প্রথরা ভেদং প্রযুদ্ধতে। হে ধর্মজ্ঞেতি স্ত্রীধনহরণালগ্রীদর্শনাচ্চ তবাধর্মের ভাবীতি ভাব:। তভাধর্মান্তব্যান্তবাদ্যাতি ভাব:। তভাধর্মান্তবাদ্যাতি ভাব:। তভাধর্মান্তবাদ্যা

অহে প্রীকৃষ্ণ। অন্যায় কার্য্য কেন-করিতেছ ?, আমরা জানি তুমি নন্দগোপতনয়, ত্রজের স্লাঘ্য এবং আমাদের প্রিয়, আমাদের বস্তুগুলি দাও, এই দেখ আমরা শীতে কাঁপিতেছি॥ ১০॥

প্রোঢ়া গোপীগণ বলিতে লাগিলেন, হে শ্যামহন্দর ! আমরা তোমার দাদী, তুমি যেমন বলিবে আমরা সেই প্রকার করিব, হে ধর্মজ্ঞ । আমাদের বদন প্রদান কর । যদি না দাও তবে রাজাকে বিশ্বেয়া দিব ।

শ্রীভগবাসুবাচ ॥

ভবত্যো যদি মে দাদ্যো ময়োক্তঞ্চ করিষ্যথ। অত্তাগত্য স্ববাদাংদি প্রতীচ্ছত শুচিস্মিতাঃ। নোচেমাহং প্রদাদ্যে কিং জুদ্ধো রাজা করিষ্যতি॥ ১১॥

ততো জলাশয়াৎ সর্বা দারিকাঃ শীতবেপিতাঃ। পাণিভ্যাং যোনিমাচ্ছাদ্য প্রোত্তেরঃ শীতকর্শিতাঃ॥১২ ভগবানাহতা বীক্ষ্য শুদ্ধভাবপ্রসাদিতঃ। স্কন্ধে নিধায় বাসাংসি প্রীতঃ প্রোবাচ সন্মিতং॥১৩॥

वीधतचामी।

প্রোত্তেক: নির্গতা:॥ ১২॥

আহতা ঈবদক্ষতযোনীবীক্ষ্য॥ ১৩॥

#### देवकवरकायनी।

তাসাং তথালীকারেণৈব পরালয়ং করোতি ভবতা ইতি সার্ধকং। আদরব্যঞ্জকভবচ্ছপপ্রয়োগশ্চায়ং প্রোৎসাহনার্থ:। অশবেদন চ নিজপরিধান্মবিশ্রমাশুস্থীত্মুপ্রুলাত ইতি ভাবং। হে শুটিশ্বিতা ইতি ঈদৃশেন শুদ্ধমিতেনাবগমাতে শীতাদিহঃখং নান্তি বেপনঞ্চ কপটেনৈবেতি। যহা। শুটিশ্বিতাঃ সত্যঃ প্রতীচ্ছত মুধ্মানৌ চ সত্যাং ন দাসামীতি ভাবং। নোচেদিতার্দ্ধং কাচিৎকং ন প্রদান্তে প্রকর্ষেণ ন দাসামীতি যদি বা কিঞ্চিদ্দাং তদা থগুশো বিদার্য কিঞ্চিং কিঞ্চিদেব প্রত্যেব দাসামীতি হচ্যতে। রাজা গোপরালঃ কুদ্ধোহণি সন্ কিং করিষ্যতি অপিতৃ ন কিঞ্চিদেবেত্যর্থঃ। প্রে মরি সেহবিশেষাৎ ইত্যুক্ত্বা কানিচিত্তাদাং বল্লাণি স্বভাসনানি কথা কানিচিৎ শ্ব্যাং রচয়িছা কানিচিৎ ধ্বজ্পতাকাবিতানাদিত্যা নীপশাথোপশাথাদিষ্ বদ্ধা কানিচিৎ দোলাং রচয়দ্বা দোলগন্ কাচিদিতন্তভন্তন্ধি চিক্লেপেতৃয়হং ক্বন্ধে নিধান্তে বিচিত্যক্ত্ব নিধানত ব্লুস্মাণ্ডাং॥ ১১॥

তত্ততং তদাগ্ৰহং দৃষ্ট্ । ইত্যৰ্থ:। দারিকা ৰালা: শীতেনৈব বেপিতা: কম্পিতদেহা অশি পাণিভ্যামাচ্ছাদ্য বেপনঞ্চ সাধিক-মেব প্রেমস্বভাবজং প্রোক্তরণে হেডু: শীতেন কুশীকৃতা হীনবলন্ধমাপাদিতা ইত্যর্থ:॥১২॥

ভাষেন ভাবেন প্রেমা প্রাদিতঃ পূর্বত এবাধুনা চ আহতাঃ হস্তের্গত্যর্থিদাগত। বীক্ষ্য প্রীতঃ সন্ বাসাংগি সর্বাণোবাবিচিত্য ক্রমসন্ধর্ম:।

আহতা আগতা:। यहा। আহতা শীত পীড়িতা:। তথাচ বিশ্ব:। আহতং গুণিতেহপি স্যাত্তাড়িতেপ্যানকেহপি চেতি॥ ১৩॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবন্তী।

তাদাং বচোভিবেৰ তাঃ পরাজিত্য নির্কাচনী কুর্মনাহ ভবত্য ইতি প্রথমমেতেনৈব ভবতীনাং সত্যং পরীক্ষে। সত্যাৎ প্রচুতাভাস্ত ভবতীভাো নৈব প্রদাসে ইতি ভাবঃ। শুচিম্বিতাঃ সত্য ইতি যদ্যত্ত ধর্মপরীক্ষারাং মুখন্নানিঃ স্থান্তদিপি নৈব দাস্যে ইতি ভাবঃ। বস্তুত্ত শুচিঃ শৃকারস্ত্রমন্ত্রমন্ত্রিত। স্বামিন্ত্তং ভাবং জ্ঞাপন্তি। কিঞ্চ। মন্ত্রিপ্রবাদ সামৈব বঃ কার্যাসাধকং নতু ভেদ ইত্যাহ নো চেদিতি ॥ ১১ ॥

তত ক অয়ি সথা: স্বাচিব পরাভূতা বয়মভূমৈব যদি পুনর্থাপি বিলম্বিয়ামহে এত রুধা এব কশ্চিদনা মন্বাশ্চেদায়াতি তদা কুটমিতোহপি মহাবিভ্রনাশ্ধৌ পতিব্যাম:। কিঞ্ছ। এত দলপশিপ্রাধ্যাশা মহাবলবতী হর্মারা বভূব যা ধ্বত্রৈব নিমজা মর্জুমপি ন দদাতি। তদেত বিধারাশাকং ললাটে লিখিতমন্যথা ন ভবেদিতাতোহস্যা প্রিয়তম্বৈয়াব হঠং পুরস্কৃতা স্বহঠং রসাতলে প্রস্থাপ্য লক্ষাথৈ জলাঞ্জনিং দলা নেত্রাণি মুক্তরিলা প্রাথের ক্রমন্বীরাণ্যাজ্বাদ্য জলাদ্যাতিইং গজ্বাম ইতি মন্ত্রণাং নিথোদ্দীকৃত্য তাঃ ক্রঞ্বনীপং ক্রমুরিত্যাহ তত ইতি প্রোত্তেক্য নির্জন্ত্রঃ ॥ ১২ ॥

আ সমাক্ প্রকারেলের হতা মুতা ইব বীক্ষা কুলজানাং মরণাদপ্যধিক ঈদুশো লজ্জাত্যাগঃ সোহপি মদমুরোধেনৈবাভিঃ ক্বত ইতি

শ্রীকৃষ্ণ কহিলেন, হে শুচিস্মিতা অবলাগণ! তোমরা যদি আমার দাসী হইলে এবং আমি যাহা বলিব তাহা স্বীকার করিতেছ, তবে আমি বলিতেছি এখানে আদিয়া আপন আপন বদন গ্রহণ কর, আমার নিকটে আদিয়া না লইলে কখনই দিব না, রাজাকে বলিয়া দিবে, দিলেই বা ক্ষতি কি, রাজা ক্রেছ হইয়া আমার কি করিবেন॥ ১১॥ •

হে রাজন্! সেই সকল অবলাই ত্রতকর্ষিত হইয়াছিল, ভাহারা শীতে অতিশয় কম্পিড, আপন আপান করতল দিয়া অধোদেশ আছোদন করত জলাশায় হইতে নিগতি হইলেন ॥১৩ ॥

শীকৃষ্ণ তাঁহাদিগকে ঈষ্ৎ অক্ষতযোনি নিরীক্ষণ করিয়া তাঁহাদের শুদ্ধভাবে প্রসম হইলেন, পরে

# যুমং বিবন্ত্ৰা যদপো ধৃতত্ত্ৰতা ব্যগাহতৈতভত্নদেবহেলনং।

#### **डी**श्रवामी

ধৃতব্রতা: সভ্যো বিবস্তা অপোব্যগাহত অপুসাতা ইতি যং তদেতং উ এব দেবছেলনং অপরাধ এবেতার্থ:। ব্রতবৈত্তণা

## देवक्षवरठावनी ।

বৃক্ষন্য ক্ষমে নিধায় প্রকর্ষণ শিক্ষার্থমিব না বারপ্রধাননৈনোবাচ সন্মিতমিতি তাসাং চিরং তথা স্থাপনে বক্ষামাণেহলি নর্ম্যাংশার্শাং ।
নবাহতা ইত্যজাগতা ইত্যথোঁ নযুক্তঃ অপ্রযুক্ষবাহচ্যতে কাব্যক্পবর্তিনামিদং মতং। নতু বেদাদিশক্ষমহোদধিবর্তিনাং যথাহ। মহাভাষ্যে সপ্রবীপা বস্ত্রমতী ত্রয়ো লোকাশ্চভারো বেলাঃ সাক্ষাঃ সরহস্তাঃ অনেকধা ভিন্না একশত মধ্বযুগশাথাঃ সহস্ত্রবন্ধা সামবেদএক বিংশতি বল্পিছে চাং নবধাথর্কণো বেদাঃ বাকে। বাক্যমিতিহাসঃ, পুরাণং বৈদ্যক্ষেতাবন্তঃ শক্তরোগমনিশ্যাপ্রফুকাঃ শক্ষা
ইতি বচনং কেবলং সাহসমিত্যাদি কোষকারমতেহপ্যাহতা ইত্যক্ষাস্তার্থো ঘটতে যথা। বিশ্বপ্রকাশে। আহতং গুণিতেহপি
স্থাৱাড়িতেহপ্যানকেপি চ ইতি গুণিতত্বকাল দিলাদি গুণিতরা পূর্বাগাক্ষ্যা ডোরিকাদেবা সক্ষাক্ষণং ভদ্দজাপি ক্ষাতঃ ব্যং
আত্মন্ত্র তথাকরণং কিস্তাহতশক্ষ্য ব্যাধ্যায়াং ক্ষীরস্বামী আহত্যমূদেবাবিত্যিতি প্রাহ প্রত্র তাসাং বিধ্যাতন্ত্র গ্রমতে তক্ত তাসাং
তথা বীক্ষণে চমংকারাভিশ্যদ্যাতক্ষিত্যলমেত্রা ক্রনয়া॥ ১৩ ॥

নমু বাল্যে ন দোষ ইতি চেত্ততাহ ধৃতত্ততা ইতি। ধদেতদিতি সাকান্যবাহুত্ত্বাদত প্রতারণং ন কিঞ্ছিৎ সন্তবেদিতি ভাবং।
দেবতা জলাধিঠাতুর্বরুণতা নারায়ণস্য বা হেলনমবজাংজ্ঞলিং বদ্ধা তঞ্চ মুর্দ্ধনি নত্ত্যতেতি ভিরাভিপ্রারং। তত্তত নমঃ ক্রত্যেত্যুক্তে
একহত্তেন নমনোদ্যমালক্ষ্য একহত্তপ্রশামশেত্যাদিবচনপাঠেনাঞ্জলিং বন্ধেতি তত্তাপ্যধেহঞ্জলিবদ্ধনম্ভিপ্রেত্য মৃদ্ধী ত্যুক্তমিত্যুক্তং।

#### 🚨 বিশ্বনাথচক্তৰভী।

মনদৈবাধিগতো যং শুদ্ধো নিরূপাধির্ভাবং প্রেমা তেন প্রদাদিতং। স্কন্ধে নিধারেতি তাসামঙ্গদৌরভ্যপ্রাপ্তিলোভানের অথচ ভব-তীনামধোবল্লাগুলি ময়া স্বস্কন্ধে ধার্যতে ইতি তাস্থ স্থপ্রণয়ং আদরক্ষ দর্শিতং। প্রকর্ষেণাবাচ সপরামর্শম্বাচেত্যর্থং ভ্রায়ং পরামর্শং। স্বীল্লাতিমাত্রেণাপি হৃদ্ধরং কৃত্যমাভিম বিপ্রেমোপরোধেন কৃতং। কিঞা। ইতোহণ্যক্তদাত্যন্তিকং হৃদ্ধং কৃত্যমন্তি। ভদেভাভিঃ শক্যমশ্বসং বৈতি মহিষয়ক প্রেমঃ শক্তেরিয়তাং দিদৃক্ষে ইতি সন্মিতমিতি। ভোঃ স্মৃথেনেবাকীকৃত মন্দাস্যং করবাম ভবোদিত মিতি যুয়বচনস্য পরীক্ষা মধুনাহং করিষ্যে ভতো যত্যত্তীর্ণা ভবিতুং শক্রুপ তদৈব যুম্বসনানি মদীদাত্মমনঃপ্রাণশরীকৈঃ সহিতান্যেব কৃষ্যা দাস্তামীতি ভাবং॥ ১৩॥

হস্ত হস্ত প্লোহয়মপরাধো যুয়াকং ব্যক্তো হস্থিতাহি যুয়ং বিবস্তা সন্তো বদপো বাগাহত ব্যগাহধ্বং তদেতং উ এবার্থে দেবজ জলাধিষ্ঠাতু ব'য়ণজ নারায়ণস্য বা হেলনমপরাধঃ। নয় দেশাচারোহয়ং বিশেবতো বালানাং নাপরাধন্তবাহ ধৃতবাতা ইতি। অমুভিতজাত এতজ ফলভাবত্বগুল্পাবীতি ভীবয়তে হস্ত হকৈতাল্শ বিভ্রমমভূর্ তফলঞ্চ ন ভবিয়তাতো মৃতা অপি বয়ং বিশেবতঃ
মুঠু মৃতান্তদলং প্রাণত্যাগবিল্যেনতি মনোহয়লাপ্বতী বিশীর্ণ সর্বাদীবিণ্ণা অতিবিহ্বলা বীক্ষা হস্তাসাং না প্রাণাঃ প্রথান্থিতি
সদ্য এবাতিক্রপয়া স্বরমেব তদ্য প্রানশ্ভিকে বদন্ ভোঃ স্থশালেয়া মা ভৈষ্টেত্যামাসমতি। বছেতি ব্রিয়োহি যদ্য দাস্যো ভবন্তি স্ববাদাং করেলবদরো নারায়ণ ইতি শাল্রাদেশাং নারায়ণ্লমাগুলৈরিতি গর্ণাদেশাত। সম্প্রতীয়হাল ব্যাকং নায়ায়ণত্মদভিম্বে
এব ছিতাঃ ক্ষত্রনোহপরাধ্য্যাপহত্তরে নিত্তরে নমঃ ক্ষাহধো বসনং ক্ষত্রীয়বল্ত গ্রহা তিত্ত শিরোভিরেব প্রথানে ক্রিয়াণি ত্বানাবিত্রীয়াণি করিয়ানীতি ভাবঃ। ততক্ত শিরোভিরেব প্রণামে ক্রিয়াণ্যাণে হংহো
ক্রেবা ম্বান্তানো গৌণ এবেত্যুক্তং একপাণিনা নমনোল্যমালক্ষ্য একহন্তপ্রণামশ্রেতি ব্রনপাঠেন প্রত্যবায়ং দশ্যিদ্বা

वाहारमत ववश्रम करक द्राधिया धौिष्टिम्स् क सामा कतिएक २ विमालन ॥ १०॥

তোমরা ত্রতক্ষ হইয়া বিবস্ত হওত কলে যে অহপাহন করিয়াছিলে ভাহাতে ভোষাদের দেবছেলন অপরাধ হইয়াছে: দেই পাপের অপনোদনার্থ আলন ২ মন্তকে অঞ্জনিবন্ধন করিয়া অংগভাগে প্রণাম বন্ধাঞ্চলিং মূর্দ্ধ্যপত্তয়ে হংহদঃ কৃষা নমোহধোৰদনং প্রগৃহতাং॥ ১৪॥
ইত্যাচ্যুতেনাভিহিতং অজ্ঞাবলা মতা বিবন্ধাপ্পবনং অত্যুতিং।
তৎপূর্ত্তিকামান্তদশেষকর্মণাং সাক্ষাৎকৃতং নেমুরবদ্যমূগ্ যতঃ।
তাস্তথাবনতা দৃষ্ট্য ভগবান্ দেবকী হৃতঃ। বাসাংসি তাভ্যঃ প্রায়ছৎ করণস্তেন তোষিতঃ॥১৫

#### শ্রীধরস্বামী

ভীতানাং প্রায়ন্চিত্তমিবাহ অস্য অংহনৃঃ পাপস্য নির্ভয়ে মৃদ্ধি অঞ্জলিং বদ্ধা অধোনমুঃ প্রণামং কৃতা॥ ১৪॥

ইতি দোৰবেনাচ্যতেনাভিহিতং বিবস্তাপ্লবনং ব্ৰত্ত চ্যতিহেত্ং মহা তত্ত ব্ৰত্য্য পূৰ্তিকামা তদশেষকৰ্মণাং তস্য ব্ৰত্য মশেষকৰ্মণাঞ্চ সাক্ষাং ক্কতং ফলভূতং তমেব নেমু:। যতঃ সএব অবদামুক্ পাঞ্চমাৰ্জন:॥১৫॥

# देवक्षयुः ठावनी ।

অধো বসনং পরিধানবস্তুমের উত্তরীয়বস্ত্রঞ্চ তথাপি ন প্রাপ্তব্যমেবেত্যর্থ: ॥ ১৪॥

অচ্যুতেনেতি কণাচিং কথঞিং অপি তথাকাক্ত সদর্থাচ্চ্যুতিন জিতীতি তাসামভিপ্রায়: হুচিতঃ যতো ব্রক্ত অবলাঃ ব্রিয়: তত্রচ অবলাশবেন কথঞিদিনি তথাক্যমত্যেতুমশক্ত ইতার্থঃ। প্রেমবশ্বাদিতি ভাবঃ। মথেতি বস্তুতো দেশাচারবাল্যাচারপ্রাপ্তবেনা-দোগং অভএব প্রলমা ইতি বক্ষাতে সাক্ষাং কৃতং পতিরূপং ফলং তত্ত্বপন্থাদেবাবদ্যম্গিতিতু তাসামভিপ্রায়ঃ॥
তথা তেন স্বোক্তেন প্রকারেণ বাসাংসি সর্বাণ্যেব পরিধানীধাত্তরীয়াদীন্ প্রকর্ষেণ প্রেমসম্বোধনাদিনা নীপাগ্রাদ্বরুড়ঃ সমিতি জ্বেয়ং

তথা তেন স্বোক্তন প্রকারেণ বাসাংসি স্ব্বাণ্যের পারধানীরোত্তরাদ্বাদা প্রক্রেণ প্রেম্বাধনাদ্বা নাপাঞাদ্বরুড়: সাদ্বাত জ্বের ধতঃ কঙ্গণ স্বত্তব স্ব্বিত্র দ্বালুঃ বিশেষতণ্ট তেন তোষিতাঃ যদ্দর্শনোৎকণ্ঠয়া নাগরজনোচিতভাবাবির্ভাবেইপি প্রাক্তবালচাপল্যনিবেদমাবিদ্ধতঃ। তেন তাসামভিমানলজ্জাচ্ছেন রূপেণ পূর্বাসুরাগজেন পরমার্তিমরেন দশাবিশেষেণ ল্বমনোর্থ ইত্যর্থঃ। দেবক্রীস্কৃত ইতি শ্রীপরীক্ষিতঃ প্রতি মূনীজ্রোজিঃ। সা হি ত্রোচিতা শ্রীকৃতীপ্রপৌক্রস্য শ্রীস্কৃত্তাপার্থীত স্বাল্যাকর এব স্ব্ববিশেষাৎ তথের ভবতাং প্রপিতামহীতি শ্রীভবেলাজিঃ। তথৈর চ দশমার্থে তৎপ্রেম্ন ইতি তন্ত্রাদেবাহস্যে ভবতামান্যনীভূতঃ সোহপি বাসাং প্রেষ্ক্রিরং চপলীকৃতস্তানাং মহিমা বিচার্য্যতামিতি ভাবঃ। এব মন্যত্রাপি জ্বেরং ॥ ১৫॥

#### क्राप्रसर्भः

অধোবসনং পরিধান বস্ত্রমের নম্বনাদিতি কাঠিন্যমির ॥ ১৪ ॥ সাক্ষাংকৃতং পতিরূপং ফলং ডজ্রপদ্বাদেবার্ল্যমৃগিতি তু তাসামতিপ্রায়ঃ ॥ দেবকীস্তুত ইতি শ্রীপরীক্ষিতং প্রতি মুনীক্রোক্তিং। মদালম্বনরূপান্তরূপ্যের এবমন্যত্রাপি দৃচ্ং ॥ ১৫ ॥

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

অঞ্চলিং তাঃ কারমানাসিরে। তত্তাপ্যধোহঞ্জনমভিপ্রেত্য মৃদ্দীত্যুক্তমিত্যাদাহং॥ ১৪॥

ততশ্চ ব্ৰ তবৈগুণাং মা ভবতু ভবজন্বাকং আতিকুলধৰ্মলজ্জাদি সৰ্মনাশোহণীতি নিশ্চন্নবতীভিন্তাভিৰ্যথিবৈ প্ৰেয়ান্ প্ৰাহ তথৈব কৃত্মিত্যাহ ইভি দোৰজনাচ্যুতেনাহভিহিতং বিবল্পাপ্ৰনাং ব্ৰত্য্য চ্যুতিহেত্ং মন্বা তদ্য ব্ৰত্যা পূৰ্ত্তিকামান্তান্তদশেষকৰ্মণাং তদ্য ব্ৰত্যান্তোৰামশেষকৰ্মণাঞ্চ দাকাং কৃতং নাধ্যকলন্বকুণং তং নেমু:। সৰ্মকল স্বৰূপে ভন্মিরেন সম্ভষ্টে কিং ফলমবশিষ্টং দ্যাদিতি ভাব:। নমু কলপ্রাপ্তিরপ্যন্ত দোৰোহপি ভবিষ্যুতীত্যত স্বাহ। যতেহিচ্যুতাদেব স্বৰ্দ্যমূক্ সৰ্মদোৰ্যনিবৃত্তিরিভ্যর্থ:। মৃগিত্যার্বং। ন হি তৎপ্রসাদ্বিষ্যীভূতানাং প্রভ্যুবান্নাদিলকাণ কোহপি দোৰ ইভি ভাব:॥

বাসাংসি সর্বাণ্যের যতন্তেন প্রণামেন স্ববাহিতার্থ সাধকেন তোষিত: ॥ ১৫ ॥

# कत्र, পद्रि वमन लहेख॥ ১८॥

হে রাজন্ ! ভগবান্ অচ্যত বিবন্তা হইয়া অবগাহনকে এই প্রকারে দোষ বলিয়া বর্ণন করিলে ব্রজাসনারা মনে করিলেন ইহাতে বুঝি আমাদের ব্রতভঙ্গ হইল, অতএব ব্রতপূর্ণতা কামনা করিয়া সেই ব্রতের এবং অন্যান্য অশেষ কর্মের সাক্ষাৎ ফলস্বরূপ সেই ভগবান্ ছরিকেই প্রণাম করিলেন, অতএব সেই সকল অবলাকনে তজ্ঞপে প্রণত দেখিয়া তাহাদের বসন প্রদান করিলেন। ১৫॥

দৃঢ়ং প্রলক্ষান্ত্রপাবহাপিতাঃ প্রন্তোভিতাঃ জ্রীড়নবচ্চ কারিতাঃ। বস্ত্রাণি চৈবাপহতান্যথাপ্যমুং তা নাভ্যসূত্রন্ প্রিয়সঙ্গনির্বৃতাঃ॥ ১৬॥ পরিধায় স্ববাদাংদি প্রেষ্ঠসঙ্গমসজ্জিতাঃ। গৃহীডচিতা নো চেলুস্তস্মিন্ লজ্জায়িতেক্ষণাঃ॥১৭॥

## अध्वयामी।

দৃদ্মতার্থং প্রণকাঃ বঞ্চিতাঃ বৃরং বিবন্ধ ইত্যাদিনা। অপরা লজ্জরা অবহাপিতান্ত্যাজিতা অত্যাগত্য স্বাসাংসি ইত্যাপ্রহেণ প্রস্তোভিতা উপহসিতাঃ সত্যং ক্রবাণি নো নর্ম ইত্যাদিনা। ক্রীড়নবৎ কারিতাশ্চ বন্ধাঞ্লিমিত্যাদি প্রারশিস্তাছলেনাভ্যস্রন্ দোষদ্ট্যা নাপ্যখন্॥ ১৬॥

প্রেষ্ঠ সলমেন সন্ধিতা: । অতো গৃহীওচিতা: সত্যোন চেনু: গৃহীতচিত্ত মাহ তদ্মিন্ শ্রীকৃষ্ণে লক্ষারিতেকণা: লক্ষা-বিলসিত্মীকণ: যাসাং তা ইত্যর্থ: ॥ ১৭ ॥

#### বৈঞ্চবভোষণী।

তেনেত্যুক্তমেব বির্ণোতি দৃঢ়মিতি। ক্রীড়নং ক্রীড়োপকরণং যন্তপুক্রিকাদি। প্রিয়ন্ত ওত সংখন সক্ষতাব নির্ভা:। यहा। প্রিরসক্ষেন প্রত্যুত নির্ভাশ্য বভূর:। অহো পশ্য গাঢ়প্রেমমাহাম্মামিতি ভাব:॥১৬॥

স্বাসাংসি নিজনিজবত্তাণি তেন পরিবর্ত্তা দন্তান্যপি পরিচিত্যাজ্যোহাং স্বীরস্বীরাজ্যের পরিধারেত্যর্থং। অন্তর্প্তঃ। বন্ধা। ব্রেপ্তক্ত প্রিক্ষান্তর সক্ষেদ্ধ সক্ষেদ্ধ নাজ্য আনঞ্জিতান্তর্ত্বিরের সক্ষান্তর আরক্ত ক্রের নাজ্য কর্মন ক্ষেত্র বিশ্বান করে বা দিরা ন চেলুক্ত এবেত্যর্থং। পঞ্চমার্থে বা সপ্তমী। বন্ধা। বাসংপরিধানানন্তরং লক্ষাতিশ্রাপগনে সতি গৃহীত চিত্তা উদিতভাবাং অতএব প্রেক্তিসমার তদৈব রহং পাণি এইণার সক্ষিতাং সক্ষাইব বর্ত্তমানাং অতএব প্রেক্তিসমার তদেব রহং পাণি এইণার সক্ষিতাং সক্ষাইব বর্ত্তমানাং অতএব প্রেক্তিসমার তদিব রহং পাণি এইণার সক্ষিতাং করণং বিক্তাপোর্ম ক্রের ক্রের বিক্রাপ্ত কর্ত্তা ক্রের বিক্রাপ্ত তি ক্রের ভারিকার করণং বিক্রতাপোর্ম ক্রির ব্রের ক্রের বিক্রির বিশ্বাপ্ত বিশ্বাপ্ত বিশ্বাপ্ত তি ক্রের বিশ্বাপ্ত তি ক্রির বিশ্বাপ্ত তি ক্রির তি । ১৭ ॥

## **अ**वित्रनाथठकवर्डी।

তিরকুর্কতোহিপ অপ্রিরসায়ক্ল্যং তাভিঃ কৃত্মনাৈ তুর্কর্কাবিদ্রেনাভিনন্তি। দৃঢ়মতার্থং প্রলক্ষা বঞ্চিতা যুবং বিধন্তা ইত্যাদিনা। ত্রণরা চাবহাপিতান্তাজিলা। অন্যালতাঃ অনাগতা অবাগাংশীত্যাপ্রহণ প্রন্তোভিতা উপহসিতাঃ সত্যং ক্রাণি নো নশ্ম ইত্যাদিনা। ক্রীড়নং ক্রীড়োপকরণং বন্ধপ্রিকাদি তবং কারিডাঃ ক্রতাঃ। বন্ধাঞ্জাদি প্রারশ্চিক্তক্ষেলেন নাভ্যক্ষন্ দোৰদ্ধ্যা নাগখন্। প্রির্ভ তথা ক্রতব্তেহিপি সঙ্গেন নির্তাঃ প্রিষ্কাদেব প্রির্ভাত হুংধ্রাদান্ত্রপি সুধ্বেনেবাস্থ্য হতি ভাবঃ॥ ১৬॥

প্রেষ্ঠিত সক্ষমন সজ্জিতান্তবিরেষাত্যধিকমাসকীকৃতা:। বধা কৃষ্ণেন তাসাং বসনানি গৃহীতানি তথা গৃহীতং ততাপি চিন্তং যাভিত্তা ইতি প্রশান্তব্যান্তব্যান্তব্যান্ত আৰু মধ্যেতাঃ প্রমাস্কা ইতি কৃষ্ণেন যথা জ্ঞাতং তথৈব কাত্যায়নীপ্রসাদাদমায়পি অনুমাসকা ইতি ডাভিরপাবগমা তদ্মিন্ প্রকৃষ্ণে ক্ষারিতং প্রাপ্তঃ ঈক্ষণং যাসাং তথাভূতাঃ সত্যো ভাষোথকাড্যাদের ন চেলুঃ। যা থলু কৃষ্ণেন নিক্ষারিতা ভাতিরপি ভিরক্ষতা ভদকেতাো নিস্তা দুরং গতাভূৎ সা ক্ষা পুনং প্রার্ত্যা যাত্রী নরনেন কৃতং তৎসাহায়েন

অহে পরীক্ষিং! তদনস্তর ঐক্ত্রু সেই সকল অবলাকে সংখাধন করিয়া পরিহাসবাক্যে লজ্জা প্রদান করত বলিতে লাগিলেন 'বিবস্ত্রাবগাহনে অপরাধ হয়' ইত্যাদি বলিয়া। কেমন তোমাদিগকে বঞ্চনা করিয়াছি, 'এখানে আদিয়া আপন আপন বদন গুহুণ করহ, এই আগ্রহ করিয়া কেমন লজ্জা বিসর্জন করাইয়াছি, 'মস্তকে অঞ্জলিবন্ধনপূর্বক অধোতাগে প্রণাম কর, ইত্যাদি বচনে কেমন তোমাদিগকে খেলানা তুল্য করিয়াছি, কেমন তোমাদের বদন হরণ করিয়াছিলাম। রাজন্! ঐক্ত্রু এই প্রকারে আপনার ধৃত্তীতার পরিচয় দিলেও দেই সকল অবলা 'দোষদৃষ্টিতে তাঁহাকে দর্শন করিলেন না যে হেতু প্রিয়সঙ্গবারা তাঁহাদিগের দোষদৃষ্টি নির্ত্ত হইয়াছিল॥ ১৬॥

তদনন্তর ব্রস্তাসনাগণ স্বন্ধ বসন পরিধান করিয়া প্রিয়তমসঙ্গমে বশীভূত হইলেন অতএব গৃহীত-চিন্তা হওয়াতে সেই স্থান হইতে বিচলিত হইতে পারিলেন না। রাজন্। প্রীকৃষ্ণের প্রতি তাঁহাদের তাদাং বিজ্ঞায় ভগবান্ স্থপাদস্পর্শকাম্যয়া। ধৃতত্ততানাং সক্ষমাহ দামোদরোহবলাঃ॥ ১৮॥ সক্ষয়ো বিদিতঃ সাধ্বেরা ভবতীনাং মদর্জনং। ময়াসুমোদিতঃ সোহসো সত্ত্যো ভবিতুমহ্ তি॥১৯

## विधतवामी।

দামোদরপদেন ভক্তবাৎসলাং দর্শয়তি অবলাঃ প্রতি॥ ১৮॥

ভো: সাধ্ব্যঃ ভবতীনাং মদর্চনমেব সকলো মনোরথঃ স চ লক্ষ্যা মুমাভিরক্থিতোহপি মরা বিদিতঃ স ময়া অহুমোদিত চ অতঃ সত্যো ভবিতুমহাতীতি ॥ ১৯ ॥

## বৈষ্ণবজোষণী।

সঙ্গন্ধ বিজ্ঞান পূর্ব্ধাক্তভাবাভিব্যক্ত্যা সাক্ষাদহভূষ সকলমেব দর্শয়তি স্বস্ত পাদরো: স্পর্শ: পদ্মীজেন ভক্ত্যাত্যস্তসালিধ্যমিত্যর্থ:। যথা। স্পর্শ: স্পর্শনং পতিছেন তাহ্র স্বসমর্পণং তৎসংখাপপাদনং তক্ত কাষ্য়রা ধৃতং নিরমেনাছ্টিতং রক্ষিত্যা ব্রতং যাভিস্তাগাং স্পাদস্পর্শক্ষেয় সকলং। তত্র পাদস্পর্শক্ষেন প্রেমবিশেষেণ পতিছং স্টিতং। দামোদর ইতি দামোদরত্বমারতাৈর তাহ্ব প্রেমবান্ ইত্যর্থ:। অবলা: কন্যথাদিনা স্থাতন্ত্রাহীনাঃ প্রতি ইত্যাধ্যৈক্ষাধ্যাজীইছং বিত্তি তাহ্ব ত্যা তাদৃশী ক্রপা যুক্তৈবেতি ভাবং ॥ ১৮॥

তত্র তদতীইপ্রাপ্তিং তথাপান্তবৈশক্ষণ্যঞ্চ প্রতিপাদরতি। হে সাধ্যাঃ পরমপ্রেমবাবসারগুণরপ্রতাঃ তেন চ মদেকাপেক্ষিতেত তার্থ:। যদা। সাংধ্যা মদপেক্ষিকাঃ ভবতীনাং মদর্চনং মদ্বিরক পতিভাবময়প্রেমাত্মকসন্থলা মন্না বিদিতঃ জ্ঞাতঃ সর্বার্থ: স চাহুমো-দিতঃ ভন্তঃ কৃতমিতি স্বাভিলাবসিদ্ধা সমাস্বাদিতঃ অতো ভবতীনাং কামনান্তরাভাবান্ মরাস্থনাদিঘাত স চাসে সভাঃ সদা-প্যবাভিচার্য্যের ভবিতুং যুক্তাত এব। কিং তত্র মমাল্লক্ষ বা বরাদিপ্রান্তেনেতার্থ:। সন্তাবনং যোগ্যতাধ্যবসানং। অর্থ থং যোগ্যথং। ইতি কাশিকারাং। সন্তাবনে হল্মিতীর্থ অর্থে ক্তেন্তি স্বেরোর্ভেলো বিবিকোইন্তি অধ্যবসান্মারোপণং রূপকালকারাদৌ প্রসিদ্ধ-মেবেতি সন্তাবনার্থছে চ ক্রিতে মহতাং সন্তাবিতং সত্যমেবেতি তথা ব্যাখ্যাতং॥ ১৯॥

# ঐবিখনাথচক্রবর্তী।

ক্ষুস্মীপং নীয়মানা ক্ষাল্লভাতিপ্ৰসাদা পুনন্তাসামদেষু পূৰ্বতোহপ্যধিকারং প্রাণেত্যুৎপ্রেকা ধ্বনিতা॥ ১৭॥

ভো রিদিকশেণর অন্নাভিত্র তিফলং প্রাপ্তমেব যদসাধারণং বিজ্বনং তথা ক্বতং তেনাপি প্রাণান্ নির্যাপিতাঃ প্রত্যুত ত্বদ্ধরোধেন সম্বোধিতা এব। কিঞা। জনাদলাহ্পাপ্য নানাচাত্র্যস্তা আমংসর্বালানীকিছা আমংপরিধানীরবাসাংশি স্বীয়ককধ্বানি ক্রিবোমভাং স্বমনোরত্বেন সার্দ্ধং দত্তবতা ত্বা যংকিঞ্ছিক্তং। তদ্য চ প্রত্যুত্রতথা আমাভিঃ সলজ্ঞাবলোকনমেব তৃভাং দত্তং আনেনাস্মাকং ত্ব্যুপরাধো বা তৎপ্রীণনং বেভাজানতীরস্মান্ত্রাঃ প্রতি যতে বিবিক্ষিতং তং প্রস্তাবনাদি জিলং ক্রিছি তৎজ্বুত্বৈব গৃহং যান ইতি। তিত্র প্রত্যুত্রর্যিয়তো ভগবতঃ দর্কাভিজ্ঞত্বনেকেন ততত্তৎ প্রত্যুত্রর্ফাই বিভিত্তাদামিতি ॥ ১৮ ॥

হে সাধ্যঃ ভবতীনাং মদর্চনং মদীয়হথোৎপাদকমিছবয়কারাধনমেব সহরে। মনোরথং স চ লচ্ছরা মুয়াভিরকথিতোৎপি ময়া বিদিতোহহুমোদিত চ। নিকৈতবছাৎ সত্যক্ষ অতএব ভবিতুমহ তোব ভবতীনাং মংহুধতাৎপর্যাং মমাপি প্রেমবক্ষরাং কাল থবসম্ভাবনেতি ভাবঃ। আল কুপাশক্তিরেব তাল্লধিকমুম্ভ বিতং তৎ প্রেমবশমপি ত ত্রনীলাবিষ্টমণি ভগবস্তুমৈশর্যাং কোরিয়্বা তৎ প্রোপ্তার্থককাত্যায়ন্যর্চনক্ষত্ত্বং জ্ঞাপরামাস। তৎকলঞ্চ প্রদাপরামাস। তান্ত নারায়ণসম ইতি গর্গোকৈত্যবায়ং স্বং নারায়ণং মন্যতে শ্রেতি জানন্তি শ্রেতি ক্ষের্থং ॥ ১৯॥ ব

লজ্জা বিলসিত হইয়াছিল, ইহাতে অনুমান হয় জ্ঞাকৃষ্ণই তাঁহাদের চিত্ত গ্রহণ করিয়াছিলেন ॥ ১৭ ॥
সে যাহা হউক, ভগবংপাদস্পর্শ কামনায় ধৃতত্ততা সেই সকল অবলার মানস অবগত হইয়া
ভগবান্ দামোদর সম্বোধনপূর্বক কহিলেন ॥ ১৮ ॥

অহে সাধ্বীগণ! তোমরা আমার অর্চনা করিয়াছ, তোমাদের বাহা মনোরথ লক্ষাপ্রযুক্ত তাহা বিজ্ঞাপন না করিলেও আমি জানিতে পারিরাছি, তোমাদের দেই মনোরথ আমি অসুমোদন করিয়া লইলাম, তাহা সত্য হইবার যোগ্য॥ ১৯॥ নময্যাবেশিতধিয়াং কামঃ কামায় কল্পতে। ভর্জিতাঃ কথিতা ধানাঃ প্রায়ো বীজায় নেশতে॥২০॥ যাতাবলা ব্রজং দিদ্ধা ময়েমা রংক্তথ ক্ষপাঃ। যতুদ্দিশ্য ব্রতমিদং চেরুরার্য্যার্চ্চনং সতীঃ॥

## भित्रवांगी L

অহ তীতি সম্ভাবনোক্যা আতান্তিকো ন ভবিষাতীতি হচিতং। তং কৃত ইত্যত আৰু ন মন্বীতি। কামায় পূন: কামভোগায় বিষয়মহিয়া কামভাপি শান্তিহেতুথাদিতি ভাবং। কামপ্ররোহে দৃষ্টান্তঃ ভর্জিতাঃ দগ্ধাঃ কথিতাঃ পরু। ধানাঃ ধ্বাদ্রো বীজায় অস্ক্রোকামায়। প্রায় ইতি স্বেচ্ছয়া পূনঃ প্রেরাহ্মপি স্চয়তি॥ ২০ ॥

বিদ্ধাং পূর্ণমনোর্থাং তদাহ ইমা স্মাগামনীরাত্রী ম'রা রংস্থেতি। স্বাধ্যা কাত্যারনী। সতীং স্ত্যা: ॥ ২১ ॥

## বৈষ্ণবজোষণী।

গ্রুজ্বনেবাহ ন ময়ীতি। ম্ব্যাবেশিতধিয়াং মনসাপি , মাং সেব্যানানাং ত্রুয়ায়াণাং কামো রাজ্যখারাল্যাদিবিবলঃ কামার কামখার ন করতে পর্যবস্তি। সতাং দিশতার্থিতমর্থিতো নৃণাং ইত্যাদৌ প্রীকর্দমাদৌ চ। প্রীবিষ্ণু পাসনাবং কিং পুন্ম বিস্কৃত্যবিদ্ধার্থনার কামখার ন করতে পর্যবস্তি। সতাং দিশতার্থিতমর্থিতো ভ্রুজিতা ইতি। প্রায়ে বিতর্কে। ধানা ভ্রুইবেলা ধানা ভ্রুইবে প্রোক্তা ধন্যাকে হতিনবাসুরে ইতি বিশ্বঃ। তাঃ স্বরূপতএব ভর্জিতাঃ পূনঃ কবিতা রন্ধিতাশ্চেত্যতিশয়বিবক্ষরা বীলার বীল্যখার নেশতে ন করতে। অথবা ম্ব্যাবেশিতধিয়াং মদেকপুরুষার্থনার্মাণামিত্যর্থঃ। তেবাং যং কামঃ মংপ্রেমসেবৈকবিবয়ঃ স কামার কামনাস্তরার ন করতে কিন্তু স্বনেবাশাদ্যা ভবতীত্যর্থঃ। কিং পুনর্ভবতীনামিতি ভাবঃ। তত্র বোগ্যো দৃষ্টান্তঃ। ধানাঃ স্বত্রব ভ্রুটাঃ পূনঃ স্বাদ্বিশেষার স্বতাদিনা ভর্জিতা শুড়াদিনা কথিতা নিশ্বকাশ্চ বীলার নেশতে কলান্তরোৎপাদনায় ন সম্পাদনীরা ভবত্তি কিন্তু স্বর্থনার্মান্যা ভবন্তি তথা জবতীনামিপি কামনান্তররহিতভাববিশেবসংস্কৃত্যবপ্রেমসেবাকামোহপীত্যর্থঃ এতাদৃশী মম কাপি মাধুরীতি ভাবঃ তথাচ তাভিরেবামুভূষ বক্ষতে স্বরতবর্ধনং শোকনাশনমিতি। এবমাসাং ভাবস্য পরম্পুরুষার্থশিরোমণিছং প্রভাগবতামূতে বির্ত্তমন্তি প্রভাগবত্যস্থিতে চ। কিঞ্চ। বাস্থন্তি বিল্যামুন্রো ব্যঞ্জেতি ন্যারেন পরম্পান্থানাং তেবাং বান্ধা বিষ্ক্রসাস্য কথং শান্ত্যন্তরাপেকা স্যাৎ। তন্মাৎ সত্যো ভবিতুমর্হত্যেব ইতি নিগমিতং। এযা স্বঞ্গবিত্যাপন্ময়ী মোহনী নাগরচর্য্যাপি ভগবংসম্বন্ধিতেন পারমার্থিক্যেব গ্য্যা। কচিউর্জিতেত্যাদ্যঃ একবচনান্তা নেরতে ইতি চ স চিৎস্থপন্মতঃ স্পষ্টার্থশ্চ। ২০॥

অভীইং সম্পাদয়তি যাতেতি যম্মদভীষ্টমঙ্গীক্লতমিতি ভাবং। তচ্চ ময়া এব সম্পাদ্যমিত্যভিপ্রায়েশাহ অবলা ইতি পূর্ববং। তহিঁ কুত্র যামেত্যপেক্ষয়ামাহ ব্রজমিতি। এবঞ্চেত্তহিঁ কথ্মবলাস্থনাম্ম কাক্ষণ্যমিত্যাশস্ক্য ক্টমেব তৎসম্পাদয়তি দিকা ইতি। যথা সঙ্কলং

#### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

যচ্চ কাচিংকং মদর্চনং সকৈতবন্ধানসত্যময়থার্থং তদপি ময়া অসালগুণাং সত্যমেব ভবিত্যহ্ মেবং কর্তুং শক্যতে কিং পুনঃ পরমন্তব্ধমহান্তমহান্তম ভবিত্যহান সদায় তংকলার অযথার্থার কামভোগার ন করতে কিছ বিষরমহিয়া কামলাস্তার এব তত্র দৃষ্টাস্তো। ভর্জিতা ইতি। অত্র ধানাশ্রেন যবা এবাচ্যস্তো। তে চ যবাং থলু পদ্ধিলে ভূমাব্প্রাং প্ররোহস্তি তএব স্থাকান্তর্মকু সুমাব্প্রান্তাপেন ভর্জিতা ভবস্তি ততো বৃষ্টিজলেন সিক্তাং ক্ষিতা বীজার অন্তব্যালাসমায় নেশতে ন সমর্থাং স্থাঃ। প্রার ইতি যথেতার্থঃ। যথাহ বিশ্বপ্রকাশঃ। প্রারশ্চানশনে মৃত্যো। প্রার্থান্তাত মেদিনী চ। নেষ্যত ইতি চ পাঠশিতংস্থাক্ষাত্তবৈত্রক্ষমার্থঃ ॥ ২০॥

প্রাথমিকজ্ঞ রমণস্য শুল: সময়ো রাত্রিরেবেত্যভিপ্রেত্যাহ বাতেতি। সিদ্ধা এব যুবং মাধুর্যাপোবকেণ নর্<mark>দীলদ্বেনৈর সাধ্কত্বা-</mark> ভিমান ইতি ভাব:। ইমা: স্রিহিতা:। রংস্থে রংজ্ঞের। যং রমণং। আগ্যা হুর্গা। সতী: স্তো**ভ্রত্য:**॥

হে ক্ষমরীগণ! যে সকল ব্যক্তির চিত্ত আমাতে আবেশিত হয়, তাহাদের কামনা বিষয়ভোগার্থ কলিত হয় না,কারণ যবাদি বীজ ভর্জিত ও কথিত হইলে তাহা হইতে অকুরোৎপত্তি হইতে পারে না॥২০

হে অবলাগণ। তোমরা সিদ্ধ হইয়াছ এখন একে গমনকর, আগামিনী সমূহরজনীতে আমার সহিত জীড়া করিতে পাইবে, যাহার নিমিত এই এত আচরণ করিলে এবং যাহার জন্ম কাত্যায়নী অচিত। হইলেন। প্ৰীশুক উবাচ।।

ইত্যাদিন্টা ভগবতা লব্ধকানাঃ কুনারিকাঃ। ধ্যায়ন্ত্যন্তংপদান্তোজং কুদ্রাদ্ধিবিশুর্জং। অথ গোপৈঃ পরিরতো ভগবান্ দেবকীস্তঃ। রুদ্দাবনাদ্যতো দূরং চারয়ন্ গাঃ সহাগ্রজঃ। নিদাঘার্কাতপে তিথাে ছায়াভিঃ স্বাভিরাত্মনঃ। আতপত্রায়িতান্ বীক্য ক্রমানাই ব্রজোকসঃ।

# देवक्षवरजायनी ।

ময়াদীকতা এবেত্যর্থ:। এবমলীকারময়ং বিবাহমেব সম্পাদ্য তদকত্তং ফলবিশেষমূপি সম্পাদয়তি ময়েতি। ইমা: সন্নিহিতা এব তাদৃশপ্রাধ্যাবশ্যকপ্রতাপনার্থং সাধনসাধুবাদেনৈবোপসংহরতি যায়ংপদ্নীত্তং চেক্রত্ততা ইতি শেষ:। সতী: হে সত্য: অতএব তা অপ্যাপ্রহেণ পত্যন্তরং নাজীক্তৰতা এবেতি তথাপি রহোব্যচ্তেনাভাব্যচ্বিদ্যুত্মেবাহ্বমন্তেতি চ বুধ্যতে। এতদন্যা এব হি পরকীয়ায়মানা ইতি তদেবমুক্তং। যুবতীর্গোপকভাশেচতি ॥

ইতি ব্ৰহং যাতেত্যাদিষ্টা:। লক্ক: কামো নিজবাস্থিতং যাতিত্তা: অতএব দেবীং তছুতোলাপনাদিকমপি প্রমানন্দান্ত্বত্য ইতি ভাব:। লক্ষ্ণমন্থেপি কৃদ্ধানুংথেনৈব ব্ৰহং প্রাবিশন্। কৃতঃ তদ্য পদান্তোলং ধ্যায়ন্ত্য এব নতু সাক্ষাৎ পশুস্তঃ তিনিছেনাদিত্যথ:। পদান্তোজমিতি বিশেষনির্দেশ: পতিভাবেন গৌরবাৎ তদানীং লক্ষ্যা নদ্রীভূয় স্থিতানাং তদ্মাত্তদেশনেন তদমুস্তেরেব প্রকৃতভাষা নিঃশন্ধঃ পুনর্বতার্থং ব্রজালযুন্গ্যনাভিপ্রায়েণ॥

অধুনা গোপকন্যান্ধ প্রশাদমুক্। ততত্তৎপ্রতাবদাদৃশ্রাদ্যজ্ঞপদ্ধী বৃ প্রদাদং বক্তু মারভতে। অথ লীলান্তরারত্তে দচ নিদাদসমর ইতি বিজ্ঞেরং নিদাদার্কাতপে তিথ্যে ইতি বক্তুমাণাৎ। অতএব সহাগ্রন্ধ: শ্রীবলদেবেন সহিতঃ গোপকন্যাবন্তর্বপদিনে তত্র তেন সাহিত্যভাবাৎ গোপৈ: পরিতো বৃত ইতি প্রাক্তিকক্তুমাণলীলারাং তেষামপেক্ষাবিশেষাৎ। দেবকীন্তত ইতি পূর্বন্ধাদেব হেতোঃ। বৃন্ধাবনাদ্যতো দ্রমিতি। প্রথমং তাবদিগরি ব্রজ্মরং কাম্যকবনং গতঃ। তত এবাস্য ধাতুরাগ্ময়বেশো বর্ণরিষ্যতে। পশ্চানিদাদ তৃষ্ণাগমিতধেক্ত্রলপারনার্থ বৃদ্ধান্ধ বিধার ষম্নামাগতঃ তক্ত ব্রজ্ঞানাগ্রন্ধ বাহ্নতাজ্ঞাবঞ্চনার্থ তক্ত প্রবিজ্ঞপদ্ধীবন্ধপ্রাক্তি ক্রেরং॥

তত্র র্লাবনক্ষণপ্রকারমাহ নিদাবেতি সপ্ততি:। আত্মান ইত্যুপলক্ষণং স্বস্য স্বেষাঞ্ছত্রারিতান্ এঞ্জৌকসোত্রস্বনবর্তিনঃ জ্মান্ বীক্যাহ ॥

#### ক্ৰমসন্দৰ্ভ:

অথেতি লীলাক্তরারন্তে স চ নিদাবসময় এব ৪

নিদাবার্কাতপ ইতি বক্ষামাণাৎ।

অথ গোলে: ব্রজৌকদো নিজ্পহ্বাসিন ইতার্থ:। অথ পূর্ব্ধবিদ্যাদবাকামেবেদং। শ্রীভগ্রদীরত্বেন প্রমার্থতামপি বহতীতি ভাব:।

#### अविचनाथहकवर्ती।

কৃজ্যদিতি। তেন তাসাং মনোনৈআদ্যাহরণাং॥
গোপকভাপ্রসাদস্য প্রস্তত্তারোহিতঃ স্তৌ। বঞ্জপত্নীপ্রসাদে। ২ততং বিবক্ষত্স্দ্নিঃ। অথেতি সম্বাভরব্যঞ্জং কলাচিং
নিদাঘার্তাবিত্যর্থঃ॥

শুকদেব কহিলেন রাজন্। ব্রজকুমারীগণ ভগবান্ কর্ত্ত এই প্রকার আদিউ হইরা লবকান হইলেন এবং তদীর পাদপথ ধ্যান করত অভিকতে তাঁহাকে ত্যাগ করত ব্রজে গমন করিলেন, তদ-নিশ্বর ভগবান্ দেবকীনন্দন গোপগণে পরিস্ত হইয়া গোচারণ করিতে ২ রন্দাবন ইইতে অধিক দূরে ৬য়া পড়িলেন। নিদামকালীন তীক্ষ দিনকর কিরণে তরুসকলকে ছায়াধারা আপ নাদিগের আতপত্র হে স্থোককৃষ্ণ হে অংশো শ্রীদামন্ স্থবলার্চ্ছন। বিশাল ব্যভৌজ্মিন্ দেবপ্রস্থ বর্ণপ ॥২১॥ পশ্যতৈতান্ মহাভাগান্ পরার্থকান্তজীবিতান্। বাতবর্ধাতপহিমান্ সহস্থো বারয়ন্তি নঃ ॥২২॥ অহো এবাং বরং জন্ম সর্বপ্রাণ্যপজীবনং। স্থজনস্যেব যেষাং বৈ বিমুখা যান্তি নার্থিনঃ ॥ ২০॥

#### <u>ज</u>िथतयागी

ভক্তাহক্ষণ্য কন্তান্তান্তি বিক্তি যজনাং। পদ্মপ্তাহততে বামহন্ কর্ম মহামদং॥ বিপ্রভাব্যায় অমুগ্রহায় যক্তবাটং গ্রুন্ বিপ্রাণাং কাঠিন্য বিভিন্নেত্য তেভাোহপি জমা শ্রেষ্ঠা ইতি তানভিনন্দ্তি চতুর্জিঃ। পশ্যতেতি হে ভোক ক্ষাদ্যো গোগা এতান্ জ্মান্পশ্যত পরার্থমেব একান্তেন জীবিতং যেবাং তান্। ভদাহ বাত বর্ষাদীন্ স্বয়ং সহমানা অক্ষাকং বারয়ন্তি॥ ২২॥

স্থলনস্য কুপালো: অর্থিন ইব॥ ২৩॥

#### देवकवटडावनी।

অথ প্রার্থিতিব্যান্ যাজ্ঞিকানপ্যনাদরণীয়তয়াবজ্ঞায় স্থিম্থ্যানভিম্থীকৃত্য তান্ ক্রমানস্তব্দিত্যাহ হে স্থোকেতি যুশ্মকেন। সম্বোধনে ক্রমোহয়ং যথাদৃষ্টিপ্রাপ্তনেব জ্ঞেয়:। এতে দশশ্রীকৃষ্ণস্য দশদিক্বেক্রণার্থং প্রেয়া বর্ত্তম্ব ইতি কেচিৎ সন্তাবয়্তি দশসংখ্যা-কর্থাৎ তত্র স্থোক্রফ্রান্সেইবাবইদিক্ দেবপ্রস্থবরূপপৌ ছ্রধারণ বর্ত্মাধনাদিনোর্ক্ষাধ্যোদ্যাহা। একাদশো ভল্রসেনস্ত গোপ-সেনাধ্যক্ষ: রামশ্চ সর্ব্যাপেক্ষকস্তদানীং দূরে স্থিত ইতি লভ্যতে ॥ ২১ ॥

মহান্ ভাগোভাগাঁঃ যেষাং তান্। তলক্ষণমাহ পরেতি। নোহক্ষাকং। কেচিয়াতাদীন্ স্বরং সহস্তে তপস্থিনঃ নম্বন্যেশং বাররতি নিশ্ধাশ্যাশ্চ দ্যালবো বা কেচিৎ প্রেষাং বাররতি স্বয়ন্ত ন সহস্তে কিন্তু তৎপ্রতীকারং কুর্কতে। এতেচ স্বয়ং সহমানাঃ পরেষাং বাররতি কীতি মহাভাগস্থং ॥ ২২॥

নচ কেবলং বাতাদিছ:খাৎ রক্ষান্তি সর্ব্বার্থক সম্পাদর্গীত্যাহ অং। ইতি ছাভ্যাং। অংগ ইতি বিশ্বন্নে হর্ষে বা। বরং সর্ব্বতঃ শ্রেষ্ঠং কুতঃ সর্ব্বেষাং প্রাণিনামুপজীবনং জীবিকাহেতুঃ। জীবিনামিতি পাঠেছপি স এবার্থঃ হেতুণিজন্তাং ণিনিঃ। তদেবাহ যেষাং ধেত্যো বিমুখা ন যান্তি জনাঃ। বৈ প্রসিদ্ধৌ ॥ ২৩॥

#### क्रमममर्छः ।

ষ্ঠাতো বিনোদেনৈব প্রত্যেকমুধ্যত্বাৎ সম্বোধয়তি হে স্তোকেতি॥ ২১। ২২। ২৩॥

## শ্ৰীবিখনাগচক্ৰবৰ্তী।

বরমুদার বৃক্ষবোনাবপি জন্ম সন্ধিঃ প্রার্থাং নতু রূপণকর্মিবিপ্রজাতাবিতীমমর্থং জ্ঞাপয়িতুং বৃক্ষান্ স্ত্রোতি স্থীন্ সংখাধ্য পশুতেতি চতুর্জিঃ। তোকরক্ষাদরোহঠাবইদিকু কৃষ্ণস্য রক্ষণকর্মস্থাছিতাঃ। দেবপ্রস্থবরূপণৌ ছত্রধারকব্মপোধকাবিত্যূর্দ্ধাধাদেশ-কৃত্যুরোঃ স্থিতৌ। একাদশো ভদ্রসেনত গোপসেনাধ্যক্ষঃ সর্বাবেক্ষকঃ॥ ২১॥

ভদানীং দূরে স্থিত ইতি লক্ষ্যতে বে বাতবর্ষাদীন্পরং সহমানা হল্মাকং বারয়ন্তি॥ ২২॥

श्वकतक प्राजित्यत्रक व्यर्थिता राहकाः॥ २०॥

ভূল্য নিরীক্ষণ করিরা শ্রীকৃষ্ণ ব্রজ্ঞবালকদিগকে বলিতে লাগিলেন হৈ স্তোককৃষ্ণ। হৈ অংশো। হে প্রিদামন্। হৈ স্বল। হে অর্জন। হে বিশাল। হে র্যভ। হে ওজ্মিন্। হে দেবপ্রস্থ। হে ব্রঞ্প। ॥ ২১॥

এই সকল বৃক্ষ নিরীক্ষণ কর। ইহারা মহাভাগ্যবান, পরার্থ ই ইহাদের জীবন, ইহারা স্বয়ং বাত বর্ষা ও হিম সন্থ করিয়া আমাদের তৃক্ষন্য ক্লেশ নিবারণ,করিতেছে॥ ২২॥

আহো! ইহারা সকলের উপজীবন, ইহাদের জন্ম অতিশয় ত্রেষ্ঠ, দয়ালুজনের নিকট যাচকদের ন্যায় ইহাদের নিকট হইতে প্রাণিগণ কখন বিমুখ হইয়া যায় না॥ ২০॥ পত্রপুষ্পফলচ্ছায়া মূলবক্ষলদারুভি:। গন্ধনিষ্যাসভস্মাস্থিতো কৈ: কামান্ বিভন্নতে।

এতাৰক্ষমসাফল্যং দেহিনামিহ দেহিয়ু। প্রাণৈরথৈধিয়া বাচা শ্রেয় আচরণং সদা॥ ২৪॥
ইতি প্রবালস্তবকফলপুষ্পদলোৎকরৈ:। তর্রণাং নম্মশাথানাং মধ্যতো যমুনাং গতঃ।
তত্র গাঃ পায়য়িছাপঃ স্মুফীঃ শীতলাঃ শিবাঃ। ততো নূপ স্বয়ং গোপাঃ কামং স্বাত্ন পপুর্জলং॥২৫
তস্যা উপবনে কামং চারয়ন্তঃ পশৃন্প। কৃষ্ণরামাবুপাগম্য ক্ষ্ণার্ভা ইদমক্রবন্॥ ২৬॥

#### **अ**धतवामी

নির্বাদো ঘনরস:। তোক্সা: পল্লবাদ্যস্থরা:॥ ২৪॥ ইত্যভিনন্দন ্ফলপুস্পপ্রবালাদিসমূহৈ ন তিশাধানাং তক্ষণাং মধ্যতো যমুনাং প্রাপ্ত:॥ ২৫॥ কুমারিকাভ্য: পূর্কমেব তল্পাকুলতরা অগৃহীতভোজ্যানামেন নির্বাৎ কুধার্কা ইত্যক্তং॥ ২৬॥

## বৈক্ষৰভোষণী।

তদেবাহ পত্রেতি। গন্ধো রসাদিভব:। অন্থি সারাংশ:॥

ফলিতমাহ এতাবদিতি। দেহিনাং বিচিত্রবহুলদেহভূতাং কর্ভূতানাং প্রাণাদিভিঃ ক্লতা দেহিবু জীবেরু প্রের আচরণং যং। পাঠা-স্তরে শ্রের এবাচরেৎ সদা ইতি যদেতাবজ্জন্মসাফল্যং ইতি তত্র প্রাণেরিতি প্রাণানাদরেণ কর্মভিরিত্যর্থঃ। ধিয়া সহপায়িচস্তনাদিনা বাচা উপদেশাদিরপরা এবাং সমুচ্জয়শক্ত্যভাবে পরপরোপাদানঞ্চ জ্লেয়ং॥ ২৪॥

অবকা: পুশাণাং গুচ্ছা: মধ্যেন মধ্যবর্ত্তিনেত্যর্থ:। এবং তিগ্মভাপাপ্রাপ্তি:॥

তত্র তস্যাং স্বয়ুষ্টা অতিখন্ধা: শিবা আরোগ্যকরত্বেন পুণাপ্রদত্বেন চ মঙ্গলকরা: ততত্তদনস্তরমেৰ যতো গোপা: তাদৃশধর্মা এব হে নৃপেতি তব প্রকাপালন্বত্বেষামপি গোপালনং ধর্ম ইতি ভাব:। খাছ বহু পশুসলৈত্তংকোতেইপি স্ব্যূইড়াদি গুণ্যুক্তমেবেত্যর্থ:। ইতি জলমাহাদ্ধাস্ক:। অতঃ কামং যথেষ্ঠং অতএব পুনর্জলপদং সার্থকং॥ ২৫॥

উপবনে প্রায়েছশোকতক্ষতিত ইতি জ্ঞেয়ং অগ্রে তথোকে:। অতঃ ফলাদ্যভাবোহণি হচিতঃ। কামং পশ্নামিচ্ছানুসারেলে-

## ক্রমসন্ধর্তঃ।

অস্থি সারাংশ: ॥ ২৪॥

স্মৃষ্টা: স্বতি স্ক্রা: স্বাহ্ন পশুনজৈ জলোভেহপি স্বমৃষ্ট্রাদি গুণ্যুক্তমেবেতার্থ:॥

व्यथं कांगः यर्षष्टेः व्यञ्जव भूनक्रन्भाः मार्थकः ॥२०॥

কুধার্তা ইতি 🖏 রুক্তরাময়োরপি কুক্ত্মানেন বিশেষার্তি জ্ঞেরা। নিজ তত্ত্রেপস্তংপ্রেমঘটিত ইতি জ্ঞেরং॥ ২৬॥

#### विषयनाथहळ्वका ।

নির্বাদো নিবিভ্রস:। অন্থি সারাংশ:। তোক্সা: পল্লবাদ্যকুরা:॥

জন্মनः সাফল্যমেতাবদেব॥ ২৪॥

প্রবালাদিভি ন তশাখানাং॥ ২৫॥ ২৬॥

ইহারা পত্র, পুষ্প, ফল, ছায়া, মূল, বন্ধল, কান্ঠ, গন্ধ, নির্যাস( ঘনরস) ভস্ম, অন্থি, তথা পল্লবাদি অঙ্কুর ঘারা সকলের কামনা: নিরস্তর পূর্ণ করে, না হইবে কেন ? দেহিদিগের প্রতি ধন, প্রাণ, বৃদ্ধি, বাক্য ইত্যাদি ঘারা যে কল্যাণাচরণ তাহাই ত দেহিদিগের জন্মের ফল ॥ ২৪॥

হে রাজন্! এই প্রকারে আনন্দ প্রকাশ করিতে ২ ভগবান্ হরি সেই সকল বৃক্ষের মধ্য হইতে যমুনার গিয়া উপনীত হইলেন। হে মহারাজ! প্রবাল, স্তবক, পুষ্পা, ফল এবং দলসমূহে সেই সকল তরুর শাখা বিন্তা হইয়াছিল। সে যাহা হউক, গৈগোল সকল যমুনা প্রাপ্ত হইয়া তথায় গাভীগণকে হুশীতল ও শুদ্ধ জল পান করাইলেন এবং আপনারাও প্রচুর পরিমাণে স্বাহ্ন উদক্ষারা পিপাসার নিইতি করিলেন॥ ২৫ ম

. হে নৃপ! যমুনার উপবনে সেই দকল গোপাল পশুচারণ করিতে ২ ক্ষার্ড ইইয়া রামক্ষসমীপে

cea

॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষমে যম্নাগমনং নাম দ্ববিংশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ২২ ॥ # ॥

শ্রীগোপা উচুঃ ॥

রাম রাম মহাবাহো কৃষ্ণ ছুইনিবহুণ। এষা বৈ বাধতে কুল্লন্তচ্ছান্তিং কর্তুমহুথঃ ॥১॥ শ্রীশুক উবাচ॥

#### শ্রীধরস্বামী

॥ \* ॥ ইकि मगरम वाविःगः ॥ \* ॥

ত্রয়োবিংশে ততো গোপৈরয়বাক্রাপদেশতঃ। তৎপদ্মন্থগ্রহাৎ ক্লফো দীক্ষিতানম্বতাপরং॥ ১॥

## देवकवरजावनी ।

তার্থ:। কুধার্ত্তা: ইতি প্রীকৃষ্ণরামরোরপি কুন্দুমানেন বিশেষার্তিজেয়া নিজতগ্নেপন্ত প্রেমণরিপাটী যাজিকান্ প্রতি তু বক্ষাতে রামাচ্তে বা লগতে বৃত্কি ভাবিতি দিনাজরবন্ত দিনে দধ্যাদনাদ্যনানরনঞ্চ কেনচি মিবেণ যজ্ঞপদ্ধীনামন্থ গ্রহার প্রীভগবতৈর ঘটিতং যাদামুংকর্ষার্থনের যাজিকানাং নিকর্বো দর্শবিষ্ঠতে তেষাং তদ্ধনির্থমের বৃক্ষাঃ দ্বাবিতা ইতি জ্বেয়ং।উপ সমীপে আগত্য বক্ষ্যমাণার্থস্য গৌরবার ইদং বক্ষ্যমাণং অত্যানবস্বেহধ্যায়াপাতো বক্ষ্যমাণলীলাবিশেষং স্বত্যা পূর্ববং ক্ষণং প্রীবাদরায়ণে: ভন্কতয়া তৎকণাবিজ্ঞেদাং এব্যন্ত আপুর্বং। হে নূপেতি বক্ষ্যমাণাক্ষ্যলীলাশ্রবণেহত্যক্তাবধানার্থং। ২৬॥

# ॥ \* ॥ ইতি শ্রীবৈষ্ণৰতোৰণ্যাং শ্রীদশমটিপ্পন্যাং ছাবিংশঃ ॥ \* ॥

অথ তে কুণার্ত্তা অপি স্থাস্থভাবান্ত্র্যবিশেষমবলয় তেন প্রস্তুতাং বৃক্ষাণাং সর্ব্যার্থদিতামমন্যমানাঃ সর্ব্যার্থণা মন্ত্র্যাণাং প্রচারং পরিত্যল্যান্ত্রানিহানীতবন্তং ত্যেব প্রার্থন্তে রামেতি। অন্যানপি রময়েতি ভাব:। বীপা কুণার্ত্তা। হে মহাবাহে। ইতি সামর্থামুক্তং মহাবার্থিতিপাঠে স এবার্থঃ কৃষ্ণ হে প্রমানন্দ্র্যন্ত্র্য ইতি ভাব:। বিশেষত হৈ ছইনিবহণেতি কুৎ থলু বৈ মহ্যান্ত ভাত্তা ইতি ভাব:। অন্যানং ছঃথপ্রদ্যেতং ক্রেরিমপি নাশ্রেতি ভাব:। স্বেহ্বিশেষণ ত্যােরভেনাৎ রৌ প্রত্যেব প্রার্থনিং। ত্রােদে রামস্থােধনং তর্ত্রবা্রেড্ভিঞ্চ লোক্ষর্যাদারূপেণ তল্গােরবের্টণব প্রীকৃষ্ণত্র ত্র্যাং। স্বর্গ্ণ বক্ষাতে কীর্ত্তার ইত্যাদি এবা ছঃস্হত্বেনাস্থ্রমাণা অর্থথ: বোগ্যাে ভবথ:। ইত্যাবশ্যক্ষমপি স্টিতং। বস্তুত ইয়মপ্যেকা ক্রীড়ৈব॥ ১॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ \* ॥ देखि क्रमनन्दर्भ मन्दम बाविः नः ॥ \* ॥

ভক্তারা ইতি জাতাবেকবচনং বভাবতঃ কুঞ্প্রধানচেত্রেনাছ:॥ ১।২॥

## শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

॥ \* ॥ ইতি সারার্থনর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেত্যাং। বাবিংশো দশ্মেহধ্যায়ঃ সক্ষতঃ সক্ষতঃ স্তাং ॥ \* ॥

অরোবিংশেহরবাক্ষানাদৃতৈতর্গালে: পুনশ্চ সা। পদ্মীনাং প্রেমবিপ্রাণামস্থভাপশ্চ বর্ণাতে ॥ • ॥

ক্ষ ইতি ক্ং থলু বৈ মন্ব্যক্ত ভ্ৰাভ্ব্য ইতি শ্ৰুভেরস্মাকং ক্ষেহাশক্রমধুনা হন্তং চেৎ শঙ্গুত্তদৈব ব্ৰয়োম হাবলছটংক্ছে সাথিকে জ্ঞান্যেতে ইতি নৰ্ম ব্যঞ্জিতং॥ > ॥

আগমনপূৰ্ব্বক বক্ষ্যমাণ বাক্য বলিতে লাগিলেন ॥ ২৬ ॥

# ॥ # ॥ देंजि मन्द्रम बादिश्म ॥ # ॥

ত্রয়োবিংশ অধ্যায়ে ছলপূর্বক গোপালগণ দারা। যজ্ঞদীক্ষিতদিগের নিকট অন্নযাক্রা এবং তদীয় পূজীগণের প্রতি অমুগ্রন্থ হেতু তাহাদিগকে অমুতাপিত করণ বর্ণন ॥ ॰ ॥

গোপবালকেরা বলিলেন হে রাম! হে মহাবাহো। হে ছুউদমন! জ্রীকৃষ্ণ। আদাদিগকে কুথার অভিশয় ক্লেশ দিতেছে, অনুগ্রহ করিয়া কুথা শাস্তি করিতে যোগ্য হও॥ ১॥

ইতি বিজ্ঞাপিতো গোপৈ ভগবান্ দেবকী হতঃ। ভক্তায়া বিপ্রভার্যায়াঃ প্রসীদম্বিদমত্রবীৎ।
প্রযাত দেবযজনং ত্রাহ্মণা ত্রহ্মবাদিনঃ। সত্রমাঙ্গিরসং নাম স্থাসতে স্বর্গকাম্যয়া। ২॥
তত্র গম্বোদনং গোপা যাচতা স্মন্ধিক্তিতাঃ। কীর্ত্তয়ন্তো ভগবত আর্য্যস্য মম চাভিধাং।
ইত্যাদিফা ভগবতা গদ্বা যাচন্ত তে তথা। কৃতাঞ্জলিপুটা বিপ্রান্দণ্ডবং পতিতা ভূবি।

### शिधतवागी।

ভক্তায়া ইত্যেক্বচনং সদ্যঃ সাযুজ্যাভিপ্রায়েণ॥

অশ্বহিসন্তি তিঃ আৰাভ্যাং প্ৰহিতাঃ সন্তো যাচধ্বং যুশ্মাকং কা তত্ৰ লক্ষ্যা নমু তথাপি অপাত্ৰছাদশ্মাকং কিমিতি দাস্যধীতি চেৎ-তত্ৰাহ কীৰ্ত্তনত্ত্ব ইতি ॥ ৩ ॥

## देवक्षवरकावनी।

ভগবান্ সর্কশক্তিমানপি ইদং বক্ষ্যমাণমন্ত্রবীং। কুতঃ বিপ্রভাষ্যায়া ইতি জাতৌ একতং সর্কাসাং তাসাং অবিশেষেণাপাদানার্থং তাঃ প্রতি প্রসীদন্ অন্ত্রহং কর্ত্তুঃ তক্তায়াঃ চিরং ভগবতি জাতরতেঃ তথাপ্যাদৌ বিপ্রের্ যাচনং তাসামের মাহাত্ম-প্রদর্শনায়। তচ্চাগ্রে ব্যক্তং ভাবি। নমু তাসাং ভক্তত্বং কথং জাতং তত্তাহ জগদীখরঃ তদানীং জগতাপি মধুর্মৈখর্গ্যং প্রকাশরতি তিন্ন্ প্রমন্ত্রকামক্ষ্যমানাং তাসাং ভক্তিং কথং ন জায়তামিতি ভাবঃ। দেবকী স্বত ইতি পাঠশ্চ কচিং॥

দেব্যাজনং যজ্ঞবাটং ব্ৰহ্মবাদিন: বেদঘোষণশীলাঃ নতু বেদার্থবিদ ইতি গুঢ়োহতিপ্রায়:। অতএব স্বর্গকাম্যয়া সত্রং যজ্ঞনাসতে অন্তুতিষ্ঠন্তীত্যর্থ:। হি নিশ্চিতং॥ ২॥

যদি তু সক্ষোচং মন্যাধ্বে ত স্থাবন্ধোরের নিদেশকারিছেনাত্মানং থ্যাপয়ত নতু পিত্রাদিনায়েত্যভিপ্রেত্যাহ অস্থবিসর্জিতা ইতি। তত্ত চ বিশেষমাহ কীর্ত্তরম্ভ ইতি। তগবতো মহাপ্রভাবন্যেতি তত্ত যুক্তিশ্চোক্তা। মমচ তৎসম্বন্ধেন ইত্যর্থ:॥

ইত্যাদিষ্টা ইতি তদাদেশগোরবেগৈবেত্যর্থ:। যাজ্ঞিকানাং দৌঃশীল্যং বিশেষয়িত্বং তেষাং সৌশীল্যমাহ ক্ততেতি॥

#### শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবৰ্তী।

বিপ্রভার্য্যায়া ইতি জাতাবেকত্বং ভক্তারা ইতি তাসাং ভক্তিমহুস্ত্য সদ্য এব প্রসীদন্। কিঞ্চ। তাবেকস্যাস্ত ভবিষ্যন্তীং দশমীং দশামসুস্কৃত্য প্রকর্ষেণ সীদন্ শোচমানশ্চেতার্থবয়লাভার্থমেকত্মিতি কেচিং॥

তপোবিদ্যাধর্মাদিমং ছপি বিপ্রের্ ভক্তাভাবার মে প্রসাদন্তপ আদিরহিতাম্বপি তৎপত্নীর্ ভক্তিসন্তাবাত্মংপ্রসাদ ইত্যর্থবয়-মেকস্যাং ব্রাহ্মণক্ষাতাবেব ক্রমেণ জ্ঞাপয়িতুং প্রথমং গোপান্ ব্রাহ্মণসন্নিধৌ প্রস্থাপয়রাহ প্রযাত্তিতি ॥ ২ ॥

যাচত যাচধ্বং। কীর্ত্তরন্ত ইতি আবাভ্যামণি স্থনামাণি প্রবোধরিত্মশক্যা ঈদৃশী তেবাং বিহুষাং নিজেতি জ্ঞাণরিত্মুক্তং আর্য্যস্য বলদেবস্ত প্রথমমভিধাং কীর্ত্তর ইতি মত্তো বৈশুজাতেঃ সকাশাদার্য্যং ক্ষত্রিরজাতিং কিঞ্চিদভাহিতিছেন দানপাত্রং মন্বাণি বদি তে বহিদ্পিনিনা বং কিঞ্চিদাস্ত্তিত তদপি ভল্তমিত্যভিপ্রায়েণ॥

ক্বতাঞ্জলিপ্টা ইতি স্বেষাং সৌশীল্যমভিব্যঞ্জারিত্বং তচ্চ তদানীং ভিক্ষাপ্রাপ্ত্যর্থকমেব। দণ্ডবৎ পতিতা ইভি স্বীরব্রজন্থবিপ্রোহিপি সকাশান্তানতিতেজন্মিনো মন্বা ইত্যর্থ: ॥

শুকদেব কহিলেন রাজন্! গোপবালকগণ ঐ প্রকার বিজ্ঞাপন করিলে দেবকীনন্দন ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ নিজ ভক্তা বিপ্রভার্যার প্রতি প্রদন্ম হইবার মানদে তাহাদিগকে কহিলেন তোমরা দেবার্চন স্থানে গমন কর, প্রশাবদি প্রাশ্লণেরা স্বর্গন্ধামনা করিয়া আঙ্গির মামক যজ্ঞ করিতেছেন॥ ২॥

সেধানে গিয়া অন চাহিয়া আন, আমরা স্থ জনে পাঠাইতেছি ইহাতে তোনাদের কজা কি? যদি এমত আশকা কর যে অপাত্র বলিয়া জাষাদিগকে অন্ন দিবে না, আমি বলিতেছি আর্যা জগ-বান্ বলভালের এবং আমার নাম গ্রহণ করিও। হে রাজন্! জগবান্ শ্রীকৃষ্ণ কর্ত্ত এই প্রকার আদিই হইয়া গোপবালক্ষণ যজ্জানে গ্রম করিশেন এবং ভূতলে দণ্ডবং পভিত হইরা কৃতাঞ্জি

হে ভূমিদেবাঃ শৃণুত কৃষ্ণস্যাদেশকারিণঃ। প্রাপ্তান্ জামীত ভদ্রং বো গোপালো রামচোদিতান্॥০ গাশ্চারয়স্তাববিদ্র ওদনং রামাচ্যতো বো লয়তো বুভূক্ষিতো। তয়োদি জা ওদনমর্থিনে। র্ষি শ্রদ্ধা চ বো ফছত ধর্মবিত্তমাঃ॥ ৪॥

দীক্ষায়াঃ পশুসংস্থায়াঃ সৌত্রামণ্যাশ্চ সভ্রমাঃ। অন্যত্র দীক্ষিতস্যাপি নামমশ্বন্ হি ছুষ্যতি ॥৫॥

#### শ্রীধবস্থামী।

অবিদ্বে বর্ত্তমানৌ সম্ভৌ বো যদরং তল্ল্পুতঃ অভিলয়তঃ। ওদনং শ্রদ্ধা চ বো মদান্তি তহি বিচ্ছতেতি ॥ ৪ ॥ দীক্ষিতা বর্ষমভোজ্যারা ইতি বদিব্যস্তীতি স্বয়মেবাশস্ক্যাহঃ দীকামার্ভ্য আধীবোমীয়পশালস্তনাৎ পূর্কং দোবং ন ততো হন্যক্র

#### देवक्षवट्डायनी ।

হে ভূমিদেবা ইতি ভক্তা সংখাধনং স্বভাবতঃ ক্রফপ্রধানচেতত্ত্বেনাতঃ ক্রফস্যেতি শ্রীক্রফোক্তিক্রমবিশ্বতিমন্ত্যাতঃ পামেতি। তত্র প্রেবণে ত রামাদেশ এব মুখ্য ইত্যর্থঃ। অতএব তৎসম্বরণার্থং মধ্যে ভক্তং ব ইতি সসন্ত্যাদ্যাক্রিয়া ৩॥

কিমর্থং প্রাপ্তাঃ স্থ তত্ত্রান্থগি ইতি। নমু কথমবিদ্রে তে) তত্ত্বাহ্গাশ্চারমন্তাবিতি। মানরক্ষামৈ তত্ত্বান্থগিগমনং পরিহতং। অন্নমিতি স্থামিপাঠঃ। ওদনমিতি পাঠো বছত্ত অর্থন্থ সমানঃ। ভিন্দা ত্রী ভক্তমন্ধোহন্দাদনোহন্ত্রী সদীদিবিরিত্যমরঃ। যথা। কুতো বৃভ্কিতেট তত্ত্বাহ্থগিশ্চারপ্রেই গোচারণেন তত্ত্ব চুল্বাগমনেন পরিশ্রমাদিতার্থঃ। বৃভ্কিতাবিতি তন্ত্বোরের বৃভ্কারাহন্ত্রাপ্তিসিন্ধেঃ। যথা। তেট কুতোহত্ত্ব নায়াতৌ তত্ত্বাহ্গাইতি। তৌ বিনা গবাং রক্ষা ন ভবেদিতি। নমু সম্প্রতি কুত্র তৌ তিঠতঃ তত্ত্বাহ্রবিদ্রে প্রায়োনকট এবেতার্থঃ। ইদং নিজবচনপ্রামাণ্যায় তেষাং সকোচনায় চ। রামাচ্যুতাবিতি ত্রাহ্মণেভ্যো ভবেন জ্যেইজ্যমেণ নির্দিষ্টং। লোকরমণাদ্রামঃ দর্মপ্রণাচ্যুতিরিহিত ইতি মাহান্মানলকরে ধ্বনিতঃ। বো যুম্মাকমেবান্নমিতি তদিত্বান্নং নিরন্তঃ। নমু তথাপি সত্তং পরিত্যক্তা গন্ধং ন শক্যতে তত্ত্বাহ্র্যছত অন্নাম্থের সমর্পরত ইতি। যদ্যস্তীতি বিনম্নং অণচ সতোহ্বিভ্যোহপ্রদানমধর্ম এবেতি গুঢ়ো ভাবঃ। আত্রান্ধ্রপ্রিত্যা ইতি। তমপ্রত্যুয়ঃ স্থত্যধ্বেন নতু তত্ত্বঃ ধর্মন্তব্যক্তানাং এবমগ্রে সক্রমাইতি চ॥ ৪॥

দীক্ষায়া ইত্যাহ্যক্তিকেবাং স্বাভাবিকপাণ্ডিত্যং ব্যনক্তি অতঃ পণ্ডসংস্থা চ জাতেতি অমুঠানবিশেষেণ পরিচিতং হীতি শাস্ত্রপ্রসিদ্ধ্যা

#### ক্রমসন্মর্ভ:।

ক্ষ্পেসেতি আকুক্ষে†কিঃ। ক্রমবিশ্বতিমভিনীয় তংসম্বরণাথ ৎ সাদরং কিঞাণাহর্জনিতি। আক্ষণাদেশবদাহঃ রামেতি ॥ ৩ ॥৪ ॥ দীক্ষামারত্য পণ্ডসংস্থানতঃ পূর্বং হ্যাতি। সৌকামণ্যাশ্চ স্বাটেশৰ হ্যাতি। ততোহনাক ন হ্যাতীত্যর্থ:॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥

#### **बिविधनाथहक्रवर्डी।**

ক্ষম্যাদেশকারিণ ইতি তদ্য নলরাজপুত্রত্বেন রামতঃ সকাশাদৈশব্যাৎ রামচোদিতানিত্যক্ষারা রাম এবারং প্রথমং ভিক্ষতে ইত্যভিপ্রায়েণ॥ ৩॥

বো যুমান্ লযত:। ভিকতে ওদনং অরঞ্জেত পাঠবয়ং তুল্যার্থং। মন্থ তৌ ব্রাহ্মণৌ ন ভবত ইতি ব্রাহ্মণভোজনাৎ পূর্বাং কথং দান্যানস্তবাহ: বুভূক্তিতৌ। অন্নয় ক্ষিতঃ পাত্রমিতি প্রমাণং জানীথৈবেতি ভাবঃ। কিমপাপ্রতিবদতন্তানালক্ষ্য পুনরাহ:। ছে দ্বিলা তয়োরথিনো বোঁ যদি প্রদ্ধা অন্তি তহি বিদ্ধৃত নো চেল্লেতি ক্রত বয়ং পরার্ত্য যাম ইতি ভাবঃ। ধর্মবিস্তমা অন্ত ধ্বম্বরাতি-বেক্রো ধর্মাধ্যে বিশ্বং পুনঃ কিং ক্রম ইতি ভাবঃ। প্রেৰণ ব্যান্টিয়ব সর্ব্জগণপাতিক্ষতীভূমান্তরভাতি তৌ রামক্ষণাবিভক্ষার্তীবিশ্বাবিশি প্রভা বহু তৃষ্কীং ভবণ অতো যুরং দ্বিলাঃ পিতৃষম্বাতা এবেত্যাক্ষেপ্ত। ধর্মবিস্তম্ ইতি বিপরীত্বক্ষণা ॥ ৪ ॥

দীকিতারং ন ভূমীতেতি বচনাৎ দীকিতা বর্ষজোল্যারা ইতি বদিবাজীতি বর্ষাশব্দান্থ । দীকারা দীকানতরং প্রসংহারা উপদেশাকুসারে যাদ্ধার্থ কহিলেন হে ভূদেব সকল। প্রবণ করুন, আমরা প্রীকৃষ্ণের আদেশকারী, আপনাদের নিকটে আস্লিম, আপনাদের মঙ্গল হউক, আমাদিগকে বলভদ্রের প্রেরিত গোপাল বলিয়া জামুন ॥ ৩॥

হে বিজর্প। রাম ও কৃষ্ণ এই স্থানের অদ্রে গোচারণ করিতেছেন, তাঁছারা বৃত্কিত হইয়া আপনাদের অন্ন অভিলায় করিতেছেন, আপনারা ধর্মজ্ঞপ্রের যদি তাঁছাদের প্রতি আপনাদের আদা থাকে, সেই চুই মহাত্মার প্রার্থিত অন্ন প্রদান কর্মন।। ৪।।

GE मुख्य मुक्त ! मीका आहर कृतिया आधिरमात्रीय প्रश्नातर्गत शूटक्ष मीकिलात अहरण एमाय,.

ইতি তে ভগবদ্যাক্রাং শৃণুস্থোহপি ন শুশ্রুদ্বঃ। ক্রুদ্রাশা ভূরিকর্মাণো বালিশা রন্ধনানিনঃ ॥৬॥ দেশঃ কালঃ পৃথগ্ দ্রব্যং মন্ত্রতন্ত্রন্থিকোহগ্রয়ঃ। দেবতা যজমানশ্চ ক্রভুদ্ধর্মশ্চ যন্ময়ঃ॥ ৭॥ তং ত্রক্ষ পরমং সাক্ষান্তগবস্তমধোক্ষজং। মনুষ্যদৃষ্ট্যা ছুপ্রাক্তা মর্ত্ত্যাত্মানো ন মেনিরে।

## ञीभत्रवामी।

তথা সৌত্রামণ্যাশ্চান্যত্র ॥ ৫॥

কুদ্রে বর্গাদাবাশামাত্রং যেষাং তে। ভূরীণি ক্লেশাধিকানি কর্মাণি বেষাং তে অতোহুজ্ঞাঃ রুধা জ্ঞানর্ক্ষা ইতি মানমন্তঃ॥ ৬ ॥
নম্ম কর্মক্রমমূলত্ব্য অদেশকালে অন্যার্থমন্ত্রমন্ত কৈথং দেয়ং তত্তাহ দেশ ইতি। পূর্থক্ চরুপুরোড়াশাদি দ্রব্যং। তন্ত্রং প্রয়োগঃ।
ধর্মোহপূর্কং॥ ৭ ॥

মহব্যোহ্যমিতি দৃষ্ট্যা মর্ত্ত্যাত্মানঃ দেহাভিমানিনো আহ্মণা বয়ং মহাস্ত ইতি মন্যমানাঃ ॥৮॥

## देवस्वदेखायगी।

নিশ্চিষ্কিং। দীক্ষামারত্য পশুসংস্থাতঃ পূর্কং.হ্যাতি ততোহন্যত তঙং পরং ন হ্যাতি সৌত্রামণ্যাশ্চান্যত্র ন হ্যাতি সৌত্রামণ্যাস্ত হ্যাতীত্যর্থং। তদেবমপ্রম্পি সময়াসময়াদিবিচারং জানত এব যাচামহ ইতি ভাবং ॥ ৫ ॥

ইতি শ্রীওকোজির্জগবতঃ সংক্ষির্যাপরিপূর্ণস্যাপি রূপরা যাক্রা তেনৈবারার্থং প্রেষিতত্বাৎ ন শুশ্রুই মহাজিমানেন তাং নাদৃত-বন্ধ ইত্যর্থ:। তক্র শ্রীভগবত্যনাদরেণ তান্ বিপ্রান্ সক্রোধং নিন্দন্তি কুক্তেতি সার্দ্ধরেন কুলোশা অপি ভূরিকর্মাণঃ বতো বালিশা অমব্দরঃ তথাপি বৃদ্ধমানিনঃ। যদা। শ্রমশ্রমেণাপি ভগবভজ্ঞা সহার্থ: সিদ্ধাৎ তদজ্ঞানাৎ বালিশা এবেতি। নমু কথং তত্ত্বং নার্ষিয়ন্তি তক্রাহ বৃদ্ধতি। আয়ানং জ্ঞানবৃদ্ধং মন্যন্ত ইতি॥ ৬॥

অথ তবদৃষ্ট্যা তেৰামজজং জ্ঞাপরন্ধাহ দেশ ইতি যুগাকেন। পৃথগছবিধং॥ ৭॥

ভগবতো দেশাদিমরতে হেড়: পরমং এক্ষেতি। অতো ভগবস্তং সকৈষ্ঠ্যপরিপূর্ণ অতো অধোকলং ইক্সিরাগোচরমিত্যপ:। তথাপি ক্লপরা সাক্ষান্ত্তাং। তমপি মন্থ্যদৃষ্ট্যা মর্ত্যবৃদ্ধ্যা ন মেনিরে নাদৃতবস্ত ইত্যর্থ:। কুত: গুল্লফা: বিচারহীনা: তদপি কুত: মর্ত্যান্থান:॥

#### क्रममर्ख्ः

প্রাক্তমিত্যেকদেশদৃষ্ঠান্তঃ ।চনামা> ৽॥১১॥১২॥১৩॥১৪॥১৫॥১৬॥১৭॥১৮॥১৯॥২ ৽॥২১॥২২॥২৩॥২৪॥

#### গ্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

আগ্নীৰোমীয়প্ৰধানস্থনাৎ পূৰ্ব্বং দোৱঃ। ন ততোহনাত্ৰ ভতঃ পরস্ত অন্নমন্ত্ৰন হ্যাতীতি পশুসংস্থা চেদানীং জাতৈৰেতি ভাবঃ। তথা সৌত্ৰামণ্যা অন্যত্ৰ ন হ্যাভি সৌত্ৰামণ্যান্ত সৰ্ব্বদৈৰ হ্যাতীভাৰ্যং॥ ৫॥

নম্ম তে শাস্ত্রজ্ঞা অপি কথং ন শুশ্রব্ত্তক ন বন্ধতঃ শাস্ত্রজ্ঞাঃ প্রত্যুত শাস্ত্রমধীত্যাধ্যাপ্য চ মূর্যা এবেতি সক্রোধং তানাক্ষিপতি সাহ্বিয়েন। কুলে অর্গাদাবাশামাত্রং যেবাং তে বৃহ্বমানিন এব নতু তে জ্ঞানবৃহ্বাঃ ॥ ৬ ॥

নম্ম শাজবিধিতদেশকালপাত্রাদিক্রমমূলভ্যা কথমন্যার্থমলমস্থ দৈদেরং ভত্তাহ দেশ ইতি। পৃথয়ছবিধং। চরুপুরোড়াশাদি জ্বয়ং। ভত্তং প্রয়োগঃ। ধর্মোহপূর্বং। যন্ত্ররঃ যদংশাংশবিভূতিরূপঃ। তং প্রমং ব্রহ্ম অধোক্ষজং ইন্দ্রিয়াগোচরম্পি রূপয়া প্রভ্যক্ষীভূত্যিত্যর্থঃ। মন্ত্রো জীববিশেষোহয়মিতি দৃষ্ট্যা মুর্ক্ত্যাস্থানো দেহাভিমানিনঃ॥ १॥

ভদ্তিমস্থলে এবং সৌত্রামণী হইতে অন্য দীক্ষিতের অমভোজন করিলে দোষ হয় না, অতএব তাঁহারা আপনাদের নিকট অম চাহিয়াছেন।। ৫।।

হে রাজন্! সেই সকল ত্রাহ্মণ এই প্রকারে ভগবানের যাদ্ধা শুনিয়াও শুনিল না, কুদ্র স্বর্গাদিতে তাহাদের আশামাত্র ছিল, বস্তুত ক্লেশাধিক কর্মই করিত অতএব তাহারা অজ্ঞ আপনাদিগকে রুণা জ্ঞান রুদ্ধ বিশিয়া মানিত।। ৬।।

হায় ! দেশ, কাল, চরু পুরোড়াশাদি পৃথক্ ২ দ্রব্য, মন্ত্র, প্রয়োগ, ঋত্বিক্, অমি, দেবতা, যক্তমান, যজ্জ এবং অপূর্বে এ সকল যাঁছার স্বরূপ ।। ৭ ॥

সেই সাক্ষাৎ পরব্রন্ম ভগবান্ অধোকজকে "ইনি মাসুষ" এইরূপ মনুষ্য দৃষ্টি করিয়া সেই শ্বল

ন তে যদোমিতি প্রোচু ন নৈতি চ পরস্থাপ। গোপা নিরাশাঃ প্রত্যেত্য তথোচুঃ কৃষ্ণরাময়োঃ ॥৮
তত্তপাকর্ণ্য ভগবান্ প্রহুদ্য জগদীমরঃ। ব্যাক্তার পুনর্গোপান্ দর্শয়ন্ লোকিকীং গতিং ॥৯॥
মাং জ্ঞাপয়ত পত্নীভ্যঃ সদক্ষণমাগতং। দাস্তি কামমন্ধং বং স্লিগ্ধাঃ মহুষিতা ধিয়া।

#### श्रीधनवामी।

লৌকিকীং গতিমিতি ন হি কার্যার্থিনো নির্বিদ্যন্তে কো বা যাচকো ন পরাভূষত ইত্যাদি লোকস্থিতিং দর্শরন্ ॥ ৯॥ কেবলং দেহেন গৃহে বসন্তি ধিয়া তু মবেদ্রবোধিতাঃ। যতো ময়ি স্থিগ্ধাঃ অতো দাস্যন্তীতি ॥ ১০॥

# বৈষ্ণবতোষণী।

ওমিতি স্বীকারে। দাস্যাম ইতি ন প্রোচুং ন দাস্যাম ইতি চ ন প্রোচুং । ছরভিমানগ্রন্ততয়াহত্যন্তাবজ্ঞানাং। হে পরস্তপেতি পরং মদলকণং শত্রুং ভবাদৃগেব নিয়ন্তং শক্ষোতি নত্বন্য ইতি ভাবং। তথেতি নিজোক্ত্যাদিকং বিপ্রচেষ্টিতকোচুং॥৮॥

যদ্যপি বাবেব প্রতি গোপৈরুক্তং তথাপি প্রীরামঃ শ্রীকৃঞ্চাক্সাহনাদরজাতক্রোধাৎ শ্রীকৃঞ্চাভিপ্রায়াক্সানাবা নৈবাবদং শ্রীকৃঞ্চ এব প্রত্যাহেতাহ তদিতি। উপ সমীপ এবাকণ্য তদনাদরছ্থেন গোপৈঃ শনৈবেবোক্তেঃ। প্রহুষ্য উচ্চৈছ্পিত্বা তত্ত্র হেতুর্জগদীখরঃ সর্বনিমন্তা ভগবান্ সর্বৈশ্বগ্যপূর্ণক অতঃ কৌতুক্সাত্রার্থং তথা যাচনং তরিরাশে চ হাস এবোচিত ইতি ভাবঃ। স্বন্যাইতঃ। য্বা। যত্র প্রক্ষের্ যাচিতং ন সিন্ধ্যেত্র তংপত্নীর যাচিতব্যমিতি যাচকান্ শিক্ষারিত্যপ্র:। সেয়মপ্যেকা কৌতুক্সারী লীলৈব বন্ধতন্ত পূর্বনিজপ্রোক্তরীতাা বুক্তেগ্যে মহুব্যাণাং নিকর্ষে জ্ঞাপিতে বিশেষাহপ্যত্রান্তীত্যভিপ্রেত্য স্বনিরন্তক্রানাং বেদপার্টনালৈকপরত্বাদিকং হরতিসানাদিদোবায় ত্রথাবৈর চ করতে নচ ক্রেমার অতন্তক্রহিতা স্বাপি মন্তক্রাঃ পর্যোত্তমা ইতি ত্রিপ্রপত্নীব্যবহারেণ লোকে দর্শরিত্মিত্যর্থ: ॥ ১ ॥

মামাগতমেব জ্ঞাণরত নচ বৃভূক্ষিতং নাপ্যর্বাচনাদিকং কুরুত যতো মদাগমনজ্ঞাপনাদেব দাস্তীত্যথ:। পদ্ধীভাল্ডেবাং যজ্ঞ-স্বন্ধিনীভ্যো ভার্যাভ্যঃ পত্যুনে বিজ্ঞসংযোগ ইতি করণাং। অনেন ধ্র্সক্ষ এব তৈঃ সহ তাসাং অবশিষ্টোহত্তি নতু কামসক্ষঃ

## ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ওমিতি ন প্রোচ্রিতি সম্প্রতি রাহ্মণভোজননিশাবেঃ পূর্বনেব গোণালকেভাঃ কথং দাস্যাম ইতি ভাবঃ। নেতি চ নাপ্রোচ্রিতি বিদি রাহ্মণাদিভোজননিশাব্যস্ত্রমরাহার্ক্রিতানি ভবিষ্যন্তি তদা দাভামোহণীতি ভাবঃ। তদা রাজ্ঞাহণি ক্রোধম্ভ্তনালকা সম্বোধয়তি হে পরস্তপেতি। তদানীং যদি বং রাজ। ২ভবিষ্যন্তদা বহ্মণাচ্ডামণিরণি তান্ বাহ্মণান্ শক্ষ্নিব অবশ্যমদণ্ডিয়িষ্য ইতি ভাবঃ॥৮॥

প্রহস্তেতি অজ্ঞবিপ্রেয়্ কোপানৌচিত্যাদিতি ভাব:। লৌকিকীং গতিমিতি ন হি কার্য্যার্থিনো নিবিদ্যায়ে কো বা যাচকো ন পরাভূয়ত ইতি লোকছিতিং দশ্যন্॥ ৯॥

े মামাগতমেব জ্ঞাপথত নতু বিবক্ষিতং বৃভ্কালকণমদুঃখঐবণস্য সদ্য এব তদতিস্ত্তাপকভাৎ। নতু তৰুভ্কাজা জ্ঞাপনং বিনাকখমলং তাদাস্ত্তি তত্তাহ। বোযুলভ্যং মৎসৰ্দ্ধেনৈৰ যুল্লভুক্ষাদৰ্শনেনৈৰ দাস্ত্তি। নতুতংপতলো বার্যিয়ত্তি ততাহ।

ছুপ্রজ্ঞ ব্যক্তিরা মানিল না। তাহারা দেহাভিমানী, "আমরা ব্রাহ্মণ, আমরাই মহং" এই অভিমানে উদ্মন্ত ছিল। অতএব গোপালদিগের উক্তি প্রবণ করিয়া হাঁ, না কিছুই বলিল না। হে রাজন্! গোপ-গণ নিরাশ হইয়া প্রত্যাগমনপূর্বক রামকৃষ্ণ সন্ধিকটে সকল বৃত্তান্ত অবিকল বর্ণন করিলেন।। ৮।।

তাহা শুনিয়া ভগবান্ জগদীশ্ব হাস্য করিলেন, পরে লোকিকী গতি অর্থাৎ কার্য্যার্থি লোকের ক্র হওয়া উচিত হয় না, কোন্ যাচক পরাভূত না, হয়, ইত্যাদি লোকস্থিতি বুঝাইয়া দিয়া পুনরায় গোপদিগকে কহিলেন।। ১।।

তামরা এবার গিয়া সেই আহ্মণগণের পত্নীদিগকে বল, বলভদ্র সহ প্রাক্তমণএখানে অসিয়াছেনা ক্রে সক্ষু অবলা কেবল দেহবারা গৃহে বাস করে বস্ততঃ মনের সহিত আমাতেই সদা অবস্থিতি

গত্বাথ পত্নীশালায়াং দৃষ্ট্বাদীনাঃ স্বলঙ্কতাঃ। নতা বিজ্ঞসতীর্গোপাঃ প্রজ্ঞিতা ইদমক্রবন্ ॥ ১০॥ নমো বো বিপ্রপত্নীভ্যো নিবোধত বচাংদি নঃ। ইতো বিদ্রে চরতা ক্ষেনেছেষিতা বয়ং॥১১ গাশ্চারয়ন্ স গোপালৈঃ সরামোদ্রমাগতঃ। বুভুক্ষিতস্য তস্যান্ধং সাকুগ্স্য প্রদীয়তাং॥ ১২॥

#### श्रीभवत्रामी ।

ইবিতা: প্রে ষিতা: ॥ ১১ ॥ স ঐক্তি গোপালৈ: মহ ॥ ১২ ॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

নয়ি গাঢ়ভাবতাদিতি মতং। কিঞা স্বিশ্বিভাসাং ভাববিশেষেণ তত্ত্ব শ্রীবলদেবস্য গৌণতয়া সম্বর্গনহিত্মিত্যক্তং। সম্বর্গতি তস্য মহিমনার্ম্বাৎ সাক্ষাৎ গ্রহণং। নমু পতীনামহজ্ঞাং বিনা কথ তা অপি দত্যঃ কথঞ্চিদ্দদানা অপি পতিভিঃ বার্য্যিতব্যা এব তত্ত্বাহ বিশ্বা ইতি মদপেক্ষয়া তাদাং তেষু নাদর ইতি ভাবঃ॥

অথ সিগ্ধা ইত্যাদি প্রভিগবর্ষটনানস্তরমের অন্যথা পুনর্যাচনার্থং যানমযুক্তং স্যাৎ। তাসাং সদবসর এব তেষাং গমনং জাতং ইত্যাহ আসীনা ইতি সন্তায়ত্বং থলু ত্রিধা স্থথায় স্যাৎ অব্যগ্রচিত্তবেন স্ববেশবেন সদ্যবহারত্বেন চ। তত্রাসীনা ইতি পতিপারব-শুনাবশ্যকং পাকাদি বৈষ্ত্রামূত্তীর্য স্নানা দিপূর্বকং গরম্পারং ভগবৎকথাবেশেন নিশ্চলত্য়া ক্রতোগবেশা ইত্যর্থ:। অলক্ষতা ইতি স্পবাহ ব্যবহারাত্তাব্দলক্ষতা এব প্রীভগবৎপ্রেমাবেশময়পুলকাদিভিস্ত স্থাচ্চ চালক্ষতা ইত্যর্থ: পর্মসন্তমায়াং বিজ্ঞাতাবিপি সতীরিতি ভগবস্তুক্ত্যা আতেন সর্বপ্রণোদয়েন পর্মসন্থাবহারগুণযুক্তাশ্চেত্যর্থ:। প্রশ্রিভাত্তে স্বভাবত এব কিন্বা তাসাং প্রীকৃষ্ণবিষয়ক্ষেত্র-বিশেষপ্রবিশেন ॥ ১০॥

লিগ্ধা মুমাৰিতা ধিয়া ইতি ক্লীকৃষ্ণবচনবদেব বীক্ষ্য তাঃ সমবধাপদ্বন্তি নমো বো যুল্লভামিতি বিপ্রপদ্ধীভা ইতি নমস্বার্যোগ্যতোকা তথাপি পূর্ব্বদেব নাতিবহিশ্চিতাঃ প্রত্যাহঃ নিবোধতেতি। বচাংশীতি বহুত্বমর্থগৌরবেশ অবিদ্রে নিকট এব ক্লেন যুল্লচিত্তাকর্ষকে-শেতি ভাবঃ॥ ১১॥

সদা শ্রীকঞ্চং রময়তীতি ইতি তত্মাৎ সঙ্কোচো নিরস্তঃ স্বয়ং ভগবতা মাহাত্মগোপনায় পূর্বং সন্ধ্বনামোক্তং এভিস্ত এতয়ায় তদভিক্চিত্রথাপনায়েতি যত্ত্বকুক্তমেব। সর্বাত্র গৌরবাধিক্যসৈয়েবিচিত্রাৎ। উত্তরত তুপদ্বীনাং তথৈবাভিক্চে: অদ্রমিত্রু পুনক্তিঃ অতিনৈকট্যেন তাসামাগনাথং সাহগ্রস শ্রীরামগোপবর্গসহিত্রা। প্রকর্ষেণ সরস্মিষ্টায়পানভ্তপাত্রাদিঘারা দীয়তাং

# শীবিখনাথচক্রবর্তী।

নিয় দিশ্ধা: স্বেহ্বত্য: পতিবারণং ন মান্যিষ্যস্থি যতে। ম্ব্যেব ধিয়া উষিতা: কেবলং দেহেনৈব পতিগৃহে বস্থীতার্থ: ॥ > ॰ ॥

অং। হতৈতাঃ কৃষ্ণ নামৈবানন্দমূচ্ছিতা অভূবং স্তদিমাঃ প্রবোধয়িতুং তব্তাস্তমুক্তমেব তং কিঞ্ছিশিয়া পুনক্তৈকজারয়াম ইতাভিপ্রেতাছিঃ। গাইতি। অদূরং নিকটমেবায়াতঃ। তদপি সমাগ্ প্রবৃদ্ধা আলক্ষা তদ্যামাকাজ্কাং প্রাৰম্ভি অতিলেহবতীতা

করিতেছে। আমার প্রতি তাহাদের অতিশয় স্নেহ, আমার নাম গ্রহণ করিলেই তোমাদিগকে প্রচুর অন্ন দিবে কোন দলেহ নাই, হে রাজন্! শ্রীকৃষ্ণের এই কথায় গোপবালকণণ পত্নীশালায় গমন করিলেন এবং তথায় উপবিষ্ট ও উত্তমালস্কারে অলঙ্কত বিজ্ঞসতীদিগকে প্রণাম করিয়া দবিনয় কচনে বলিতে লাগিলেন॥ ১০॥

হে বিপ্রপত্নীগণ! আপনাদিগকে প্রণাম করি, আমাদের বাক্য প্রবেশ করেন, এত্মানের অদ্বে শ্রীকৃষ্ণ আদিয়া ভ্রমণ করিতেছেন, আমাদিগকে পাঠাইয়া দিলেন॥ ১১॥

তিনি গোপবালকের সহিত গোচারণ করিতে ২ বলদেবের সঙ্গে দুরে আসিয়া পড়িয়াছেন, আ

শ্রুদার ক্রিয়াতং নিত্যং তদ্দানাৎ ক্ষ্ । তৎকথাকি প্রমনসো ব্যুক্রান্তসন্তমা: ॥ ১৩ ॥ চতুর্বিধং বহুপ্তশমন্তমাদার ভাজনে: । অভিসক্তঃ প্রিয়ং সর্ব্বাঃ সমৃদ্রমিব নিম্নপাঃ । । । নিবিধ্যমানাঃ পতিভিঃ পিতৃভিত্রা তৃবন্ধৃতিঃ । ভগবত্যুত্তমশ্লোকে দীর্ঘশ্রুপুতাশ্রাঃ ॥ ১৪ ॥ যমুনোপবনেহশোকনবপল্লবমণ্ডিতে । বিচরস্তঃ বৃতং গোপৈদান্তঃ সাগ্রন্তং ক্রিয়ঃ ॥ ১৫ ॥

## धिशतवामी।

তংকথাকিপ্তমনতাদৰ্শনোৎস্কাঃ অতত্তমুপাগতং শ্ৰুতা জাতগছ্যা বভূব্বিতি ॥ ১৩ ॥

ভোক্সভোক্সনেছচোষ্যতে দৈশ্চতুর্বিধং বছগুণং সংস্থারবিশেষৈর হিনো গুণাঃ রসসৌরভ্যাদরো যমিন্তং। ভাক্ষনৈঃ পাত্রৈর্ভাইগু-বর্ণ পত্যাদিভিব বিষ্মাণা অপি প্রিরং শ্রীকৃষ্ণং অভিসক্ষরভিক্ষা;। অপ্রতিব্য়ে দৃষ্টাক্ষঃ। সমুক্রং নিম্নগা নদ্য ইবেতি। অ্তা হেডুঃ ভগবতীন্তি। দীর্ঘং বছকালং শ্রুতেন শ্রুবণেন ধৃত আশ্রো বাভিন্তাঃ॥ ১৪ ॥

তথাগতা: সত্যো দদৃশু:॥ ১৫॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

পূর্বং তদাদেশেন কেবলং ব্রোরেবার প্রার্থনং অধুনা তু তদাদেশং বিনাশি সাহগ্যস্তি। ত্রাশি প্রকর্বেণ্ডি তাসাং ভগবতি ভজি-বিশেষপ্রব্যাদেঃ সন্দৈর্ব। ত্রয়ারত্যাগেনাপ্যাগ্যনস্ভাবনপূর্বকঞ্ছ ॥ ১২॥

হাৰণাং কদাচিদ্পি ন চাতো ভবতীত্যচ্যতন্তং উপায়াতং সমীপ এব সাক্ষাদায়াতং। অন্যত্তৈঃ। যথা। বিশেষতদ্চ ভৎকথ্যা ভস্য বুভুক্ষাবার্ত্ত্যাক্ষিপ্তমনসঃ॥ ১৩॥

চতুরিতি যুগ্মকং। ভাজনৈ: ভোজনপাত্রৈ: পাকপাত্রৈর্বা ক্বমা অরোঞ্চতাদিছিত্যর্থং সম্রমাদের বা,অভিসক্ররিত্যাদিনা তদেকাতি-মুধ্যং স্কৃতিতং। টীকায়াং ভক্ষাং চর্বাং চ্বাং ইতি। পতিভিরিত্যাদিকং যথা নিকটং জ্বেয়ং। নিবিধামানা ইতি তল্মৈ দেয়ঞ্চেদরং প্রস্থাপ্যতাং স্বয়স্ত্র মা যাতেতি তাসাং গ্যনমেব বর্জ্যতে স্বেত্যর্থঃ। প্রীভগবতা তদরশীকারাং॥ ১৪॥

যম্নেতি যুগাকং দদ্ভঃ ক্ষমিতি শেষ:। ন ভিষ্ঠতি শোকো যমাদিতি শ্লেষেণ তগ্য বনস্য তাসাং তদপ্রাপ্তিশোকহারিত্বঞ

#### rie.

## **अ**विचनाशकक्वाँ।

বিহ্বলয়ামাস্থরিত্যাহ বুভূকিতন্যেতি ॥ ১২ ॥

ৈ তস্য কথয়। বুভুকাবার্ডয়া আফিপ্তানি অরে পামর মনঃ কথং প্রিয়তমস্য বুভুকাশ্রবণেনাপি ন মূর্ছাতো জাগরি ধিক্ ছামিতেয়বং ক্ষিয়েছতানি অবমনাংসি যাভিতাঃ ॥ ১০ ॥

ें जक्षाहर्वाह्यादमञ्जिष्म कृष्टिं । সংস্থারবিশেবৈর্বহবোগুণা রসদৌরজ্যান যো যশ্মিংশুও। অভিসক্ষরিতি তাসাং তদানীং কৃষ্ণং আঁতি সর্বাসাং নারিকাছাতিমানমালক্ষ্যোক্তং। তত্ত প্রতিষ্ক্ষকাগণনে দৃষ্টাব্তঃ। সমুদ্রং নিম্নগা নদ্য ইব। তত্ত্ব হেতুঃ। ভগবতি দীর্ঘং বহুকালং শ্রুতেন প্রবণেন ধৃত আশ্রো যাভিস্তাঃ॥ ১৪ ১৫॥

চরগণ সহিত তাঁহার অত্যন্ত কুধা হইয়াছে, তাঁহার নিমিত্ত অনপ্রদান করুন ॥ ১২ ॥

রাজন্! বিপ্রপদ্মীদিণের চিত্ত কৃষ্ণকথাতেই আক্ষিপ্ত (আকৃষ্ট) ছিল, তাঁহারা নিত্যই কৃষ্ণদর্শনার্থ উৎস্কুক থাকিজেন, 'ভিনি সমীপে আসিয়াছেন' এই কথা শুনিধামাত্র ব্যস্ত হইলেন॥ ১০॥

তৎক্ষণাৎ বছ ২ পাত্রে বছত্তপযুক্ত অন এবং চর্ব্য, চ্ব্য, লেছ, পের এই চতুর্বিধ ভোল্য গ্রহণ করিয়া বেমন নদীসকল বেগে সমৃত্রে গমন করে তবৎ বীত্র প্রিয় প্রীকৃষ্ণের অভিমূপে গমন করিলেন। বাছাদের পঞ্জি পিতা, জাতা এবং পুত্রাদি সকলেই বারম্বার নিমারশ করিল, কিন্তু তাঁহারা কোন বাই মানিবেন না, ইহার কারণ বছকাল অব্ধি শুনিরা উত্তর্গ্রাক ভগবানে সম্ব চিত্ত ধারণ

ভাষ্ট্র সকলে সদর দিকটে উপনীত হুইয়া বেখিসেন বসুনার যে উপবন পশোকের নবপলবে

শ্যামং হিরণ্যপরিধিং বনমাল্যবর্হধাতু প্রবালনটবেশমসুত্রতাংসে ॥
বিন্যস্তহস্তমিতরেণ ধুনানমজং কর্ণোৎপলালককপোলমুখাজ্ঞহাসং ॥ ১৬॥
প্রায়ঃ শ্রুতঃ প্রেয়তমোদয়কর্ণপুরৈর্যন্মিন নিম্যাননস্তমধাক্ষিরদৈঃ ॥

## ञीधत्यामी।

হিরণাবৎ পরিধিং পরিধানং যস্য তং পীতাম্বর্মিতার্থ:। বনমালাৈর হৈ ধি তুভি: প্রবাদৈণ্চ নটবরেশে। যস্য জং অম্বতস্য স্থাবংশে বিজ্ঞাে নিহিতাে হত্যাে যেন তং। ইতরেণ হত্তেন লীলয়া অবং ধুনানং আময়ত্তং। কর্ণরাের্কৎপলে যস্য অলকাঃ কপোলরােন্বিশ মুধাকে হাসাে যস্য তঞ্চ তঞ্চ ॥ ১৬ ॥

বৃত্তের পি লয়েন দামরদ্যমাহ প্রায় ইতি বছণ: শ্রুতা বে প্রিরতমদ্য উদয়া উৎকর্বান্তএব কর্ণপুরা: কণৌ পুরম্বত্তি কুতাংখা

#### देवकावरकायगी।

ধ্বনিতং। বিচরত্তঃ ক্রীড়ত্তঃ গোপৈত্তবৈব ছিতৈরনৈয়র্ তমিতি শোভাবিশেষঃ স্ট্রতঃ। কিঘা বৃতমণি দদৃশুঃ তলৈয়বাধিকং প্রকাশনানদাৎ। সাগ্রজনিতি সর্ব্বস্থারতোহণি তদ্য দৌৰ্শ্ব্যবিশেষং জ্ঞাণয়তি জগ্রজন সহেতি বিগ্রহে স্থার্থবাবে ভূতীয়ায়া অপ্রধানে বিহিত্তাৎ। স্থায় ইতি তৎপতীনামভাগ্যং স্ট্রতং ॥ ১৫ ॥

হিরণাপরিধিং নটবেশমিতি বক্ষ্যমাণরাং প্রবর্ণরসরঞ্জিতভক্তিছেদকুঞ্জিত কটিবেষ্টনবন্তাং নটোচিতমেব। বনমালাং বনসম্বন্ধিনালাং বনসম্বন্ধিপুশৈরচিতং। দক্ষিণবামস্কাদারভা বৈক্ষিক্ষয় বর্ণাণি প্রবাদাশ্চ মৌলিভ্যণানি ধাতবং দৌগন্ধিকনামঃ কাম্যক্রনপর্বতবিশেষাল্লকাশ্চিত্রাক্ষতম্ম রচিতাঃ তৈ ন টবেশধরং। অহ্বতস্য নিরস্তর পার্শস্বপিবিশেষস্য ক্ষে বিন্যুত্তহতং। ইতরেণ দক্ষিণহত্তেন লীলাক্ষ্যলং আন্যন্তঃ। কর্ণোৎপ্রমান্ত্রনালাং কপোল্যামুপ্রাক্ষ্য চহাসং প্রকাশো যত্ত ত্যিতি॥ ১৬॥

অথানস্তরং সদ্য এবাক্ষিরটো ক্রপগ্রহণে সাধকতমনেত্রকো ক্রিয়ৈছ বিভূতৈরস্তর্মনিসি প্রবিশ্ব তেনৈব মনসা স্থাচিরং পরিরভ্য কজরা নেত্রাণি তানি দারাণীবার্ণানাঃ স্বাচ্ছকোন তামিরিলীয়েভার্থঃ। তাপং তদস্পর্শকং ক্লেশং বিজন্ধঃ। বিশক্ষেন পুনস্তদাপাতো নিরস্তঃ।

## ঞীবিশ্বনাপচক্রবর্ত্তি।

হিরণ্যং হিরণ্যরসাক্তং বল্পং পরিধিঃ পরিধানং ষস্য তং। বনমাল্যেন পঅপুশানরেন চরণপর্যান্তলম্বিতেন অংশ চূড়োপরিছেন ধাতৃভিরঙ্গরাগ্রেন করিতৈঃ প্রবিশ্ব শ্বণচূড়া তুল্বকান্তরেছ ন টস্যের বেশো যস্য। কিঞ্চ। স্বাভিযোগনপি তা অনুভাররান্মানেত্যাহ। অনুপ্রতস্য প্রিয়সধস্যাংনে ক্ষকে বিশ্বস্ত আলোধ পরিপাট্যা অপিতো বামহন্তো যেন তং। ইতরেণ দক্ষিণহন্তেন অবং লীলাক্ষলং ধুনানং খুর্থস্তং এতাদৃশ দর্শনপ্রধানেন ভাববতীনাং ভবতীনাং হৃদরক্ষলং সহস্তগতং কৃষা ঔংস্কোন খুর্থামীতি আনীতেতি দ্যোত্রস্তং। ঘরা। ভবতীভাববতীঃ পশ্রতো মন হৃদরক্ষন্যমীংসক্ষেণা ঘ্রাক্ষ বিশ্বস্থানিবে অবতীশ্বিদ্যামীতি মংকৃতাং স্বাভিযোগাদের নিশ্বিস্থাতি ব্যক্ষরন্থ। কর্ণোৎপল্যোশ্চঞ্চা অলকা যস্য। কপোল্রো: প্রস্তুতের মুধান্বস্য হাসো যস্য তঞ্চ তঞ্চ তথা ১৬॥

প্রায়ো বছণ: প্রতা যে প্রিয়তমসা, উদয়া উৎকর্ষান্তএব কর্ণপূরা: কর্ণালক্ষারা: কংগাঁ পূর্যতি কৃতার্থয়তীতি তথা তৈ যীনিন্ প্রীকৃষ্ণে নিমন্নমনস এব এতাবন্দিনপর্যান্তং আসন্। তং সম্প্রতি নেত্রখারৈরতঃ অন্তক্রণক্মলতরে প্রবেশ স্থানির প্রক্

মণ্ডিত, তথায় অগ্রজ দহ জ্ঞীকৃষ্ণ গোপগণে পরিবৃত হইয়া ভ্রমণ করিতেছেন ॥ ১৫ ॥

তাঁহার শরীর খাম বর্ণ, পরিধান শীতাম্বর, বনমালা, ময়্রপিচহ, মর্ণাদি ধাতু এবং প্রবাদ এই সকলে নটবৎ বেশ, তিমি অমুত্রতি সধার ক্ষমে একটা হত্তবিহাস্ত করিয়া আছেন, অভহতে দীলাক্ষ্ণ ঘুরাইতেছেন, কর্ণহায়ে উৎপল, কুপোলে অলকা এবং বদনকমলে মনোহন হাতা ॥ ১৬ ॥

হে নরেন্দ্র ! বহুবার প্রিয়তমের উৎকর্ষ থাবণে কৃতার্থীভূত থাবংশিক্রয় তথা লোচনরজ্বার। গেই সকল অবলার চিত্ত প্রিকৃষ্ণে আবিই হইয়াছিল, তাঁহারা তলেবাগে ভগবানের অভ্যক্তর প্রিকৃ অন্তঃ প্রবেশ্য হৃচিরং পরিরচ্য ভাপং প্রাক্তং যথাভিমতয়ে। বিজন্থ নরেক্তর । ১৭॥
তাত্তথাত্যক্তসর্ব্যাশাঃ প্রাপ্তঃ আজুদিদৃক্ষা। বিজ্ঞান্নাধিলদৃগ্দ্রকী প্রান্থ গ্রহদিতাননঃ ॥১৮॥
ব্রিভগবাসুবাচ ॥
•

স্বাগতং বো মহাভাগা আন্তভাং করবার কিং। যদো দিদুক্ষয়া প্রাপ্ত। উপপন্নমিদং হি বঃ ॥১৯॥

## श्रीश्रवामी ।

কুর্বান্থীতি তথা তৈঃ কণাভরণৈরিতি বা বন্ধিন্ শ্রীকৃষ্ণে নিমধমনসং আৰিষ্টচেতসঃ লোচনহানৈরতঃ প্রবেশ্য স্থচিরং উপগুছ তাশং অকঃ। অভিনতয়োহহংবৃত্তরঃ প্রাক্তঃ স্বয়ুন্তিসান্দিশং পরিপ্নত্য তন্মিন্ লয়ং প্রাণ্য যথেতি ॥ ১৭ ॥

অধিবদৃক্ জটা দর্কবৃদ্ধিদাকী তাত্তথা প্রাপ্তা বিজ্ঞায়াপি তথেওঁত হিবৃণোতি ত্যক্তদর্বাশাং ত্যক্তাঃ দ্র্বা আশা বাভিডাং। কেবলং আত্মনং স্ববৈদ্ধ দিদৃক্ষেতি ॥ ১৮ ॥

হে মহাভাগাঃ স্বাগতং ওভমাগমনং। তদেবাহ বন্ধরাং প্রতিবন্ধতিরভারেণ অস্বাকং দিদৃক্ষা প্রাপ্তা ইতি । ইদঞ্চ ব উপপন্ধং সম্পন্ধং যুক্তমিতি বা ৪১৯॥

#### देवकवरकावनी।

হা ন স্প্টোৎসাবিত্যংশত ধ্বংসাং। অভতৈ:। ভত্ত সামরতাং যথাপুর্বরসন্ধতিতার্থ:। ব্রেরপীতি বহির্ভেরপীতার্থ:। যা। অভি প্রাঞ্জাহতিমুগী মতি র্বেবাং তে যথা প্রাঞ্জং পরসভাগবতং পরিরভা নেত্রাদিভিরাদ্রিয় তাপং সর্বং জহতি তবং ॥ ১৭ ॥

আন্মনিদৃক্ষরেতি প্রথমং তত্মাত্রাভিলাবাৎ অথিলদৃশাং দর্কবৃদ্ধীনাং জন্তা দাক্ষীতি বিজ্ঞায়েত্যতা হেতুঃ। যথা। অথিলদৃশাং বৃদ্ধাদি জন্ত বাং জীবানামপি জন্তা। প্রহদিতানন ইতি মাধুর্বামরবঞ্চনাচাত্র্বাং ॥ ১৮॥

তথৈব সাদরমাহ স্বাগ্রতমিতি। আন্ততাং বিশ্রাম্যতাং। ততক কিং করবামেতি আদিশ্রতামিতার্থ:। তথাচ করবাদ্রেতি নোহস্মাক-মিতি চ বছর্নির্দেশ: সাধারণ্যাপাদনেন স্বৈত্তি নিষ্ঠতাচ্ছাদনার্থমৌদাসীন্যার্থক দিদুক্ষ্যেতি দর্শনাক্ষাত্মিছান্তরং নির্ভতি ॥ ১৯ ॥

## ঐবিখনাগচক্রবর্তী।

পরিরভা পরিরক্তদাতে টেব্রানন্দস্ভিত ভাতাত্তেন সইহক্যে সভি তাপং তদকম্পর্শাভাবন্ধনিতং ক্লেশং বিজহ:। তত্ত্ব দৃটার:। অভিমত-মোহহংবৃত্তরঃ প্রাক্তং ক্ষুব্রিসান্দিশং পরিরভা তদ্মিন্ লবং প্রাণ্য বধা ॥ ১৭ ॥

তাঞ্বাভূতা অন্তালীঃ পুরংছাপদিবৈব স্চিত্তা ভবতী দু হা অথিশানামপি দৃশাং বৃদ্ধীনাং এটা ॥ ১৮ ॥

কাসাভিসারিশী শোঁপীরিব মহাপ্রেমবভীতা অপ্যাহ স্বাগতমিতি বং শুভ্যেবাগনদং। যং যত্মাং প্রতিবন্ধকোটীরপি তিরস্কৃত-বত্যো দিলুক্ষা সং প্রাপ্তা ইবং ব উপপ্রং উপপ্রং উপপ্রতে দ্বৈবেতার্থঃ। মষতু এতং প্রত্যুপক্রণাসামর্থাং ন কিমপি উপপ্রমিতি ভাবঃ। অভো ব; কিং ক্রবাম কেবলং বণী তবামেতার্থঃ। অত এব মহাফাগাঃ মডোহপি মহাভাগ্যবতাঃ আস্যতাং ক্রণমিহোপবিশ্যতাং মদর্শনার্থমেবেতার্থঃ ৫ ১৯ ৪

হওয়াতে চিরকাল ভাঁহাকে আলিঙ্গন করিয়া তজ্ঞপে মনঃসন্তাপ পরিত্যাগ করিলেন, যেমন যোগিগণ অষ্থির দান্ধি প্রান্ত (চৈতন্য) কে আলিঙ্গন করিয়া সন্তাপ ত্যাগ করিয়া থাকেন তজ্ঞপ ॥ ১৭ ॥
কে বাহা হউক, এই সকল অবলা আত্মনিদৃক্ষায় অধিল আশা পরিহার পুরঃসর আসিয়াছেন,
হলিও স্ক্রান্তর্যামী ভগবান হবি ইহা অবগত হইলেন, ত্থাচ হাস্ত করিতে করিতে ভাঁহাদের প্রতি
এই বাক্য প্রয়োগ করিলেন ॥ ১৮॥

্ ভগৰান্ কহিলেন হে ভাগ্যবতীগণ! তোমাদের আগমন শুভ, যে হেছু কোন প্রতিবন্ধক না কানিয়া আমাদের দর্শনাকাজনায় উপস্থিত হইলে, ভোমাদের ইহা উচিত বটে॥ ১৯॥ নশ্বজা মরি কুর্বন্তি কুশলাং স্বার্থদর্শিনং। তহিতুকাব্যবহিতাং ভতিমাক্ষপ্রিয়ে বথা । ২০॥ প্রাণবৃদ্ধিনঃ বাধানাগরাধনাদয়ঃ। বৎসম্পর্কাৎ প্রিয়া আসংস্ততঃ কোমু পরঃ প্রিয়ঃ ॥২১॥ তালাত দেব্যজন পতয়ো বো বিজাতয়ঃ। স্বসত্তঃ পার্মিয়ান্তি মুখাভিগৃহিমেধিনঃ ॥ ২২ ॥

## खिश्रवामी।

যুক্তবনাহ নবিতি। আজুপ্রিরে আল্লা চাসে প্রিয়ণ্ড তশ্বিন্ মরি কুশলা বিবেকিনঃ অন্তএব স্বস্যান্ধনোহর্থং পশ্যস্তি যে তে বধাবিত্তবং কুর্ববিত্ত। যথাবন্ধনাহ । অজা সাক্ষাং। অজা হেতুং। অহৈতুক্যবাবহিতাং ফলাস্থসনানরহিতামতএবাব্যবহিতাং নিরন্তরাং ॥ ২০॥ আল্লাং সর্বাতঃ প্রেষ্ঠ স্বান্ধ প্রাণ্ডাতে । স্বাং জ্ঞাতর আল্লা দেহঃ এতে সর্ব্বে বংসম্পর্কাৎ বস্যাধ্যাসেন উপক্রণজেন বা ॥ ২১ ॥ তত্তবাধি স্কার্থনিত ব্যান্ধনার বিত্ত চেপত, আহ পতর ইতি। পার্মিব্যান্তি সমাধ্যান্তি পতীনামন্ত্রহায়েত্ত্বং॥ ২২ ॥

#### देवक्षवरकावनी।

ভত্ত ভাসাং নিজসক্তিপ্রাপ্তীজাং সম্প্রতি বঞ্চয়াই নহজেতি। জ্জা সাক্ষাদেব বিশুদ্ধামিত্যর্থ: । যতোহহৈতুকীত্যাদিনা। তত্ত ভক্তের্থণা বছমং এবাই অহৈতুকীতি আন্ধা: সকাশাদিপি প্রিয়ে পরমান্ধমাৎ। পরমান্ধমেন চ মম নিরম্ভরমূমৎসন্ধিয়ার সর্বপ্রত্যক্ষ-সকায়াগ্রহ: কর্ত্তব্য ইতি ভাব: ॥ ২০॥

পরমাত্মন এবাত্মন: সকাশাৎ। প্রিয়ন্তং সাধয়তি প্রাণেতি। আত্মাত্র জীব:। যস্য মম্ পরমাত্মন: সম্পর্কাৎ আত্মনোহপি মদংশত্তেনের তথাকানিতি ভাব:॥ ২১॥

ভাষাত দেববজনমিতি তু পাঠতেবা সক্ষতে শক্ষতে তথৈব পাঠধারণাং। তদবাত সাধ্বেদ যজনমিতি তু পাঠঃ প্রায়ঃ সর্ক্তাপি। স্থসত্তং স্থীয়ত্বাং অবশ্যসমাপনীরং সত্তং যজ্ঞং পারিরিয়ান্তি আরক্ষং সমাপরিবান্তি। স্থশব্দেন অন্যথা কথঞিং পরকীরমেব কার্রিজু-মহন্তি নত্বাত্মন ইত্যথাঃ। যতো গৃহমেধিনঃ যুদ্মাভিবিনা গাহ্স্যাভাবেন যজাত্বপত্তেঃ অতএব ভদপেক্ষরা দেবযজনং যাতেত্যুক্তং

#### **अ**विश्वनाथठकवर्ती।

পরমপ্রেমবতীনামণি তাসাং তদানীমেব মনোরপপূর্ত্তি ন' রসপূষ্টিং বহতি রসপূষ্টা চ বিনা লীলাচমৎকরোত্যতো ভগবতন্তংপ্রেম-বশ্বসাণি তদর্শনোথয়া রত্যা স্বাভিযোগং কতবতোহণি মনস্যক্ষাদেব লীলাশকৈয়ব ক্ষোরিতমৈশ্বয়ং তাসাং প্রসৃহং প্রতি পরাবর্ত্তনে কারণমভূহ। বদ্যপি প্রায়: প্রেমবজ্ঞনসন্নিধাবৈশ্বর্যাং নাবিতবিষ্ণু ভবেরদণি লীলাসেচিবার্থং বিরহেইৎক্ষ্যবর্জনয়া তাসাং প্রেমবর্জনার্থকাবির্ত্তবদেব তত্তগবতোরত্যাখ্যং ভাবং শমন্ত্রিরা বিবেকম্ৎপাদক্ষাসাসেত্যতো ভগবাংতদম্কুলমেবাহ নহিতি ছাত্যাং। ন কেবলং মন্ত্রি তবত্য এবাসজ্বতে কিন্তু বহুবো হনোহণি মন্ত্রি পরমেশরে ভক্তিং প্রতিহ কুর্মন্তি। কে তে কুশলাক্ষ্যাঃ। চাত্র্যানিবাহ স্থাপদিনিঃ। লোকে হি স্বার্থসাধকা এব চতুরা উচ্যন্ত ইতি ভাবঃ। আইছেক্নী স্বীন্নফলাভিস্কিরহিতা চ। স্বার্থহিতা প্রীতিব্যব্ধায়ক্ষানকর্মাদিব্রপ্রস্থানা চ-তাং। তব্র দৃষ্টায়ঃ। স্বান্থবিরে দেহাপত্যাদে মধা। ২০॥

বুদ্ধিপ্রবেশার্থমের দৃষ্টাব্যো দর্শিতঃ। বস্ততন্ত দৃষ্টাব্যাদেহাদেং সকাশাদপি দার্গান্তিকঃ পরমাত্মাহমতি প্রির এবেতি যুক্ত্যা প্রবেশ-সৃতি। প্রাণেতি। স্বং দেহং আত্মা ক্ষীবং যদ্য পরমাত্মনং সম্পর্কাৎ সত্তরাং। ততঃ পরমাত্মতঃ ॥ ২১॥

ৰশাৎ সচ প্রমান্ত্রী অহমের যুৱাভির্গর্গদিম্থাৎ শ্রুত এব যুৱালান্যালিব্য সদাবর্ত্ত এব। তত্তভাৎ দেববজনং বজাবটিং বার্ত। নাম জন্ত্রী সাক্ষায় ব্রং প্রমান্ত্রানং বাং হিছা কথাং গৃহং বামন্ত্রাই পতর ইতি। পারবিরাতি বুয়াভিঃ সহৈব সমাগ্রিব্যক্তি। স্ত্রাতি-কর্মান্ত্রি বের্ল্লপেন মরেবোক্তমিভি মংকার্যান্ত্রেধিক্ষেত্র বাস্ত্র। শ্রুক্তিক মুক্তি নাং লক্ষাক্তি তানঃ ল ২২ ল

যে সকল ব্যক্তি বিবেকী, বিচৰক ভাষা জীপনার অর্থ দেখেন, উছোর। প্রিয় জাজা যে আদি জামাতে সাজাই ক্লাপুসভান হহিত নির্ভাৱ অঞ্চি করিয়া থাকেন। ২৮ ।

ে তে অবলাগণ। আক্সাই সৰ্বাপেকা জেও বিয়ে। ফলতঃ বাঁহার সম্পর্কে ব্রাণ, বৃদ্ধি, কবং, কেই,
পুত্র, কলতা, জাতি, ধন ইত্যাদি প্রিয় হইয়া থাকে, তাঁহার অপেকা প্রিয় আর কে ইইটেড পাঁইে ১৯৯
অতএব তোমদা কৃতার্থ ইউলে ওক্সাণ সম্ভাজনে গঠন কর যদিক ক্ষেত্রালয়ক আই ক্ষিত্র বিশি

পত্ন্য উচুঃ ॥

মৈবং বিভোহর্ছতি ভবান্ গদিজুং নৃশংসং সত্যং কুরুদ্ব নিগমং তব পাদমূলং॥ প্রাপ্তা বয়ং তুলসীদাম পদাবস্থ উং কেশৈ নিবোঢ়ুমভিলজ্য্য সমস্তবন্ধুন্॥ ২৩॥

#### শ্রীধবকামী।

নৃশংসং পরুষং নিগমং প্রতিজ্ঞাং ন মে ভক্তঃ প্রণশাতীতি বেদং বা ন স পুনরাবর্তত ইতি পদাবস্টাং অবজ্ঞয়াপি দক্তং বছমানেন কেশৈনি বোঢ়ুং দাসীভবিত্ং ॥ ২৩ ॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

নচ গৃহানিতি। অতঃ শ্ৰীভগবদাক্ষয়া এব তাসাং বহিম্পিণতিপার্শে গমনং।তথা তদাক্ষা চ সর্পান্ত সদাজানাং সম্বন্ধনাহ কিরুক্-আচেতি জ্ঞেয়ং॥ २२॥

এবনীদৃশং বিজা হে বহিরম্বর্গাপকেতি অল্লাকং বাহ্নান্তরং চ সর্বং হ্মেব বেংসীতি ভাবং। ভবানিতান্যো বদতু নাম ক্লপাকোমলচিন্তো ভবাংস্ত বক্তুমপি ন যোগ্যো ভবতীতার্থং। যতো নৃশংসং ক্রুরং। যথা। রসার্ণবিকচন্দ্রোভবান্ নৃশংসং কঠিনং নীরসং বক্তুং
নাইতীতার্থং। নচ কেবল্মেবং তব বচসো নৃশংসতা মিথ্যাত্বমপি তাদিতাাশরেনাহঃ সত্যমিতি করবাম কিমিত্যেব বা নিগমো জ্ঞেয়ঃ।
প্রাক্ ভবানিতি ভক্তান্থনয়ার্থং পশ্চাং কুরম্ব অমিতি প্রেমেতি ক্রেয়ং। অত্র ভাভির্ভগবতো আল্লানতিক্রমরূপা নিগমমর্থাদাত্যুৎকর্পয়
নাবহিতেতি জ্ঞেয়ং। নন্থ মদর্থং কথমিব কুট্মানি তাল্লান্তে তত্রাহ্রভিল্ডেঘাতি তত্র লাত্মিতি ভাবং। নন্থ আল্লানীনাং যুমাকং
পত্যাদি পরিত্যাগো নযুক্ত ইত্যাহঃ প্রাপ্তা ইতি অত্যন্ত তির্ক্তবাচাধ্বনিরয়ং বাচ্যার্থং পরিত্যল্য বালার্থমেব বোধ্যতি ততশ্চ
সর্বাং ত্যক্ত্বা দাভ্যমেবালীকত্বতা ইত্যর্থং। তত্র তুল্গীদান্ধঃ পদাবস্প্তরং তন্মিন্তর্য্যং নিশ্চিত্য সর্বধর্মান্ পরিত্যল্য ইত্যেত্রিধভন্নক রীত্যা স্থান্যং প্রত্যাধ্যতি ॥ ২০॥

#### क्रीवित्रनाथहक्तवर्धी।

রাসারত্তে মহাপ্রেমব্তো গোপ্য ইবাছ:। মৈব্মিতি নৃশংসং পক্ষবং। নিগমং ন স পুনরাবর্ত ইতি বেদবাক্যং। যে যথা মাং প্রপান্ত তাংগুথৈব ভলাম্যহ্মিতি নিগমক্ষণং স্ববাক্যঞ্চ সত্যং কুক্রন। নহু ভবতীভি বিপ্রিলাতাভিমানো হ্ন্তালন্ত গোপ্যাপি পাদমূলং বহং দাসাথিং প্রাপ্তাঃ। ন ছি বিপ্রলাতাভিমানে স্ত্যেবং কোহপি লনো বকুং শক্ষোত্তা হস্মবাকেটনেব নিশ্চীয়তাং নান্ত্যালাকং লাত্যভিমান ইতি ভাবঃ। নহু গোপ্স্য মম গোপ্য এব দাসাং প্রেয়স্যশ্চ সম্চিতা ভবন্ধি তাশ্চ বহেয়া বর্ত্তবেশাং। সভ্যং বর্ত্তবাং বিরাল্ভাং নাম যদি স্বং বাক্ষণীদািশীঃ কর্ত্ত্বং বৃক্তো লিছে যি তহি কথং স্বাং হেপামস্বংপুরং নৈব যামো বৃন্দাবন এব বনদেবতা ইব বর্ত্তিবামহে স্বংসম্বন্ধনৈব কুতার্থাভিবিফ্যবো বয়মিত্যান্তঃ। বয়স্ক দ্বে স্থিয়া পদাবস্ত হৈ স্বংপদাৎ স্বদান্তিপ্রের্দীনাং পদসংস্থান্ত কটিতীভূয় স্বস্ত গৈর্যান্ত গোলাকাতি ভাবঃ। নহু তহি ভবন্ধবঃ কিং বদিয়ান্তি তত্তাছা। স্বভিন্ত্যান্ত ॥ ২০॥

যজ্ঞ আবশ্যক নাই তথাচ তোমাদের পতি বিপ্রগণ তোমাদের দারা গুহমেধী হইয়া আপন ২ সত্র সমাপন করিবেন ॥ ২২ ॥

এতৎ শ্রবণে বিপ্রপত্মীগণ বলিতে লাগিলেন বিভো! অর্থাৎ হে বহিরন্তর্ব্যাপক। এরপ পরুষ বচন বলিতে যোগ্য হয়েন না 'আমার ভক্ত কখনই বিন্ফ হইবে না" আপনিই প্রতিজ্ঞা করিয়া-ছেন, সেই প্রতিজ্ঞা সত্য করুন। আমরা সমুদয় বন্ধু বান্ধব বিস্থান করিয়া অবজ্ঞাতেও প্রদত্ত আপন-কার চরণতলের তুলসীদাম স্থাম মন্তক্ষারা বহুমানপূর্বকে বহন করিবার নিম্ভি ভবদীয় পাদমূলে উপস্থিত হইয়াছি॥ ২০॥ গৃহুন্তি মোন পতয়ঃ পিতরো স্থতা বান আত্বন্ধুস্ছদঃ কৃত এব চান্যে।

•
তত্মান্তবংপ্রপদয়োঃ পতিতাত্মনাং নো নাকা ভবেদগতিররিন্দম তি ধিধিছি॥ ২৪॥

শীভগবানুবাচ॥

পতয়ো নাভ্যসূমেরন্ পিতৃত্রাতৃত্বতাদয়ঃ। লোকাশ্চ বো ময়োপেতা দেবা অপ্যসুমশ্বতে ॥২৫॥

# बीधतवामी।

কিঞ্ন গৃহুত্তি নোহুমান্ হে অরিবলম কামলোভপাপাদিদমন ভবতঃ প্রপদয়োঃ পাদাগ্রহাে নি পতিতদেহানাং অন্যা ক্র্যাদি-গতিরপি ন তাবং মাভূৎ তুমান্তদাস্যমেৰ বিধেহীতি॥ ২৪ ॥

ময়া উপেতা অহজাতাঃ প্রত্যক্ষং দেবান্ প্রদর্ভাহ দেবা মণীতি ৷ ২৫ ৷

#### देवक वर्डावनी।

নমু সাধবোঁ দীনবৎসলা ইতি তেষাং হিতার্থং যাত। যথা। মদাজ্রাতোহকুতামপি কর্তু মুপ্যুজ্ঞাতে তত্তাত্ গুরুস্তীতি। নিজনিষেধোল জ্যনাৎ তত্ত গতান্ অপ্যুস্থান্ তত্ত্ব ন স্বীক্রিষ্যস্তীত্যর্থ:। অফ্যে তু প্রতিবৈশ্রাদয়ং সম্ভাষামপি ন ক্রিষ্যস্তীত্যর্থ:। তৃত্মাৎ পত্যাদিভির্ত্রহণাৎ প্রপদ্যোঃ পাদাগ্রস্মীপে পতিতাম্মনামন্যুগতিত্বেন তদেকাপ্রিতানামিত্যর্থ: ॥ ২৪ ॥

বো যুঘান্ ইতি যুঘভামিতার্থ:। নাভাস্বেয়রন্ দোষদৃষ্টিমপি ন কুর্যু: কথং ন গৃহ্লীয়ুরিতার্থ:। অত্তে সর্বে লোকাশ্চ নাভাস্বেয়রন্ কিমৃত স্নিথা তেংপীতার্থ:। কীদৃশীর্ম য়া উপেতা: অহজাতা: মমাফ্জাপ্রভাবেলৈবেতি ভাব:। অস্তবি:। তত্রাফ্জাতা ইতি সঙ্গে বতাধিদোষ্টেশ্বর স্বীকারাৎ তাদৃশ্তৈর চার্থশু যুক্তো:। প্রত্যক্ষিতি সন্তাবনাময়প্রকৃতি লিঙ্পরিত্যাগেন বর্ত্তমন্নময়লট্ প্রয়োগাৎ প্রত্যক্ষিবিত্যর্থ:। যথা। ময়া সহ উপেতা: সমীপং সঙ্গতা বো যুঘান্ পত্যাদ্যো নাভ্যস্বের্যন্। অহমীশ্বর ইতি তৈরপি জ্ঞান্তমানহাৎ ইতি ভাব: । যতো যজ্ঞকর্মণি তৈ: প্রত্যক্ষিকৃতা দেবা অপি অনুমন্তে স্পৃষ্টা: সম্ভো মামীশ্বর্যন মন্তন্ত ইতার্থ:॥ ২৫॥

#### ক্রমদন্দর্ভ:।

ময়া উপেতা **অহ্জাতা: সঙ্গ**তা বা বো যুখান্ <mark>অহমীখর ইতি তৈরপি জ্ঞাততাদিতি ভাব:। যথা যজ্ঞকৰ্মণি তৈ: প্রত্যক্ষীকৃতা দিবা অপি অহ্মৰতে। পৃ**ঠা: সভো মামীখরতেন মন্যন্ত ইত্য**ৰ্থ:॥ ২৫॥</mark>

# ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

কিঞ্। স্বগরস্থানিকতাস্ নিকাদিবনিতাজনম্থাদাকর্ণিত জ্জ্রপগুণমাধ্যা যদবধি বয়ং বয়:সদ্ধিমারতৈয়বাভূম তদিনত এব জ্যি ভাববতী গৃহকর্মণাপ্দাসীনা জন্মান্ ব্যভিচারিণীরিব দৃষ্ট্বা সন্দিহানাঃ পত্যাদয়ে। নৈব প্রায়ো ব্যবহরতীত্যাহঃ। গৃহতীতি স্থতাঃ সপস্থীপ্তাঃ অন্যে প্রতিবেশ্যাদয়ঃ। ততলাভিবৈয়গ্যে ক্লভাঃ প্লাগ্রে ম্র্ব্বা প্রথমস্তঃ স্গলাদমাহত্তমাদিতি। অন্যাকং অন্যাগতি বঁথা ন ভবেত্তথা বিধেহি। হে অরিন্দম সংপ্রাপ্তিপ্রতিবহৃক্তা ভ্রিতাদর এবারয়স্তান্ স্থমব কুপরা দময় ॥ ২৪ ॥

মনি প্রেমবত্যো যুবং মংক্রখপরা এবাতো মদনভিপ্রেডং চেষ্টিতং নার্হণ স্বর্চং মারুত্বং গৃহান্ গছতেত্যুকে ভো অভিজ্ঞানিরোন্মণে অহর্যালালাঃ কুলবত্যোবয়ং বচনোরজ্বনাং যাংজ্বীর ভা পুরাছহিত্ব এতাবদ্বে স্থিতা লালাট্ছেন বজে থাতিয়া ভবতঃ সমীপনাগছান: স্ব পুনস্তবৈব গছতীরস্বাংস্তে পত্যাদয়ঃ প্রেষু প্রবেষ্টুম্পাদদানাঃ কোপাদদা বধিষ্যস্ত্যেবৈতি জানীমন্তবাহ পত্য ইতি। বো যুমতাং দাভাস্যেরন্ দোবদৃষ্টিমপি ন কুর্তঃ কিমিতানিষ্টং শক্ষধের ইতি ভাবঃ। কিমুত পিত্রাদয়ঃ অভ্যেত লোকাঃ কীদৃশীম্বা সহ উপেতাঃ সক্ষতা অপি কিমুত সম্প্রাসক্ষতা এবেতার্ধঃ। অহমীশ্বে ইতি তৈরপি জ্ঞাত্যাদিতি ভাবঃ। যতো দেবা অপি

অপর একণে আমাদের পতিগণ অথবা পিতা মাতা কিন্তা পুত্র অথবা ভ্রাতৃ বন্ধু হুছদ্রণ আমাদি দিগকে এহণ করিবে না। হে অরিন্দম (কামক্রোধাদিদমনকারিন্!) আপনকার চরণাঙ্গ্র পতিভ হুইলাম আমাদের অন্ত গতি নাই, অতএব দাস্তই বিধান করুন । ২৪॥

ভগবান্ কহিলেন তোমাদের পতিগণ অথবা পিতৃ ভাতৃ পু্ক্রাদি তোমাদের প্রতি দোষারোপ করিবে না, আর আমার অনুজ্ঞায় লোক সকলও কিছু বলিবে না। এই বলিয়া প্রত্যক্ষে দেবতা দিগকে দেখাইয়া দিয়া বলিলেন ঐ দেখ দেবতারাও অনুমতি করিতেছেন॥২৫॥ নপ্রতিয়ে হকুরাপায় ছক্ষদকো নৃণামিছ। তমনো ময়ি যুঞ্জানা অচিরাম্মামবাপ্স্থ। প্রবণাদ্দর্শনাদ্ধ্যানাম্মরি ভাবোহমুকীর্ত্তনাৎ। ন তথা সন্নিকর্বেণ প্রতিযাত ততো গৃহান্॥ ২৬॥ প্রশুক উবাচ॥

ইত্যুক্তা विজপন্মন্তা যুক্তবাটং পুনর্গতাঃ। তে চানসূয়বস্তাভিঃ স্ত্রীভিঃ সত্রমপারয়ন্॥ ২৭ ॥

#### <u> এখরবামী</u>

তথাপি খাং ত্যক্ত ন শকুন ইতি চেভ্তাহ নেতি। প্রীতরে প্রধার অহরাগার বেহর্ছবে অকসক: অকাত্যাং সক:॥ ২৬॥ অনস্যবং অদোষদৃত্র:॥ ২৭॥

#### বৈষ্ণবভোষণী।

নশ্বমং প্রার্থিকার কা বার্তেতা। বা সমাধতে ইছ বাদ্ধপদ্মনি যুমাতিম মাদসদে। যুমছদিই দাস্যয় সান্নিধ্যং। নৃণাং জীব্যাতা। থানিত্বে প্রথমাতার ন ভবেৎ নিতরামপ্রাগায়েতার্থং। তওনাং লোকবিদিইছাৎ মমি নিজভাবেন মন এব যুগানাং অটিরাদ্দেহান্ত-এবেতি। অতেদন্ধ বিবেক্তবাং। প্রীক্রঞ্জন্য ভক্তাঃ থকু ছিবিধাঃ। উটন্থাঃ লীলাল্বঃপাতিনক্ত। অত্র তটন্থাঃ পরোক্ষ্যাপি তন্য পার্থম-শর্মালল্বাইবিধান্ধ তৎপ্রতিমান্থেকতরাং কেবমানা জানজ্বো বা অজানজ্বো বা চ তে ব্রাক্ষণালাতে চরণদেবাচরণাদকগ্রহণাদিনিজ্বভিক্ত্ব পরোক্ষ্যমুমোদত্তে। লীলাল্বঃপাতিনক্ত ছিবিধাঃ। তত্র প্রথমান্তম্য পার্থমন্থ্যমাল্যমানা দেবাদ্যাতেন পার্থমন্থ্যিণের ব্যব-ত্রিরস্তেহর পার্থমন্থ্যমন্ত্রেইকি তদ্য নরলীলাম্বল্যমানা ব্রান্ধান্য ত্বপ্রিচরণং কর্ছ্ণ তৎসকং প্রাপ্ত্রান্ধ সম্প্রাণ্ডা ব্যক্তিত তথ্যবিভ্রানাং ব্যান্ত্রিকিটিরানাং ব্যান্তিনামান্যাং প্রযোগ্যমের তৎপরিচরণং কর্ছণ্ড তৎসকং প্রাপ্ত্রাধিক্রাণ সম্প্রাণ্ডা যুক্তিবিত । ২৬ ॥

তাভি: ঐভগবদমুগৃহীতাভিরিতি সত্রস্য ঐভগবহৃপেক্ষরা দোবং পরিস্তঃ সাদ্যুণাবিশেষকাভিপ্রেতঃ। স্বাভিরিতি পাঠে নিজ-নিজাভি: ॥ ২৭ ॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

নম্ তহ'ল্পলোহণি ভবতু তত্তাহ। অহো বাদ্ধণজন্মনি ভবতীনাং ময়াল্পলে মৃণাং প্রীতয়ে সুথায় ন ভবতি অনুরাগায় তু স্বভরাং নেত্যর্থ: ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥

## প্ৰীবিশ্বনাণচক্ৰবৰ্তী।

যজ্ঞকর্মানি তৈঃ প্রত্যক্ষীকৃতা অত্রার্থে পৃষ্টা ভবতীরন্থমন্তে অনুমংস্যস্ত এব। মাং সর্কেশ্বরং। বিছ্যাং দেবানামপ্যত্রার্থে অনুমতি-বেব ক্ষুনপ্রমতিরিত্যর্থ: ॥ ২৫ ॥

অস্মননোবাস্থিতং কদাপি দেংশুতি ন বেতি দাবৈরপাকৈর্বং পৃচ্ছেথ তত্ত্বোত্তরং শৃণ্তেত্যাহ নেতি। গ্রীক্তরে প্রীতিং সম্পাদয়িত্যু অপ্তরাগঞ্চ সম্বর্দ্ধরিত্মিত্যর্থ:। কিন্তু মদ্বিহৌৎকণ্ঠামেবাফ্রাগাতিশয়বর্দ্ধকমিতি ভাবং। তত্ত্বাং ॥ ২৬॥

ইত্যক্তান্তা: ক্ষুণ্যাভিপ্রারং জ্ঞাত্বৈব গতা রাদারস্তে গোপ্যন্ত তদভিপ্রারং জ্ঞাত্বৈব স্থিতা ইতি প্রেমি ন কাপি কাপি হানিরিতি জ্ঞােরং ॥ ২৭ ॥

হে অবলাগণ! কেবল অঙ্গ সঙ্গ মানব সজ্ঞের হৃথ অথবা অনুরাগ বৃদ্ধির নিমিত হয় না, আমাতে মনোনিবেশ করিতে থাক, অচিরে আমাকে প্রাপ্ত হইবা। দেখ, প্রবণ, দর্শন অথবা অনুকীর্তনে আমাতে যজ্ঞপ ভাব জ্বামিতে পারে, নিকটে থাকিলে তজ্ঞপ হয় না, অতএব বলি তোমরা নিজ নিজ ভবনের প্রতি গমন কর ॥ ২৬॥

শুক্রদেব কহিলেন, সেই সকল বিপ্রবনিতা এই প্রকার কথিতা হইয়া পুনরায় যজ্ঞহলে গমন করিলেন। সেই বিপ্রগণও দোষ দৃষ্টি না করিয়া। সেই সকল যোষার (জ্বীর) সহিত সত্তকর্ম (যজ্জীয় কার্য্য) সমাপন করিলেন। ২৭॥

তকৈকা বিধ্বতা ভত্ত্র ভগবন্তং যথাঞাতং। ছদোপগুছ বিজহোঁ দেহং কর্মাসুবন্ধনং। ভগবানপি গোবিন্দস্তেনৈবামেন গোপকান্। চতুর্বিধেনাশয়িত্বা স্বয়ঞ্চ বুভুজে প্রভুঃ॥ ২৮॥

#### শ্রীধরস্বামী

দেহমিতি তদীয়ং দেহং বিহায় চৈতন্যেন ভগৰস্তং প্রাপ্তা ইত্যর্থ: ॥ ২৮ ॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

অচিরানামবাপ্যথেত্যক্তং। তচে কেবলং নাশাসনাধ্যৈ কিন্তু বাদ্মন্ধীকারায় ইতি দৃষ্টান্তেনাই তত্ত্বেতি। তত্ত্ব যজ্ঞবাটে একা সর্প্রাসামতিপশ্চাং হিতা বিশেষেণ বলাক্ তা ভগবস্থমিতি সর্প্রাতিশয়ি গুণক্ষপাদিকং হৃদ্ধিং। যথাক্রুডমিতি তত্ত্বাপি শ্রীকৃষ্ণক্ষপং। হৃদা প্রেমময় সন্ধ্রমিকেন দেহাস্তবেণোপ গুড় ভ্যার্ত্তিয়া সন্ধ্যাচপরিত্যাগেন শরণাগতাং মাং রক্ষ রক্ষ ইতি গৃহীন্ত্বেত্থা। তদ্য চ দেহদ্য ভগবংপ্রেমময়ত্বেন ভগবংসদ্বি নিদ্ধেত্বদ্র্গামিতাং নিজ্বদ্বি। ততঃ কর্মাত্বন্ধনমেব দেহং জহাবিতি সবিশেষণোক্তেন্ত্র তুলালিজনদাধনং প্রেমান্ত্রক্ষনমন্পীত্যর্থা। বিশক্ষং প্রার্ত্তিং নিষেধ্যতি। অতঃ পতিসন্ধ্রনাং দেহং পত্য এব দক্ষা বা শ্রীভগবং-প্রেমিনিকেন দৈহেন তং প্রাপ্রমিতি বিব্যক্ষিতং। যং যং চাপি শ্রুরন্ ভাব্মিত্যাদেঃ যে যথা মাং প্রপদ্যন্তে ইত্যাদেশ্চ শ্রীগীতাতঃ। প্রাপ্রিশ্বেষ শ্রীগোলোকাথ্যগোক্লদৈয়ের প্রকাশবিশেষে জ্যো। পূতনামোক্তে নির্পত্তিতাং অগ্রেচ নির্পয়িতব্যত্বাচ্চেতি॥

ইখং তাসাং ভক্তিবিশেষো ব্যঞ্জিতঃ তাহ শীভগবদম্গ্রহবিশেষকাহ ভগবানিতি তত্ত্বিবং বৃত্তং জাতং শীভগবানপ্যেব্যক্ষরাদিতাপি শক্ষার্থঃ। গোবিলঃ শ্রীগোকুলেক্স ইতি গোপপালনে যুক্তা। তেনৈবেতি গোপাপেক্ষান্নসান্নত্বং বোধ্যতে তথাপি পূর্বেহে তুর্ভগবান্ সর্ক্ষদপার্যাশ্রয়ঃ গোপকানিতি.তদমক শিত্তবং বোধ্যতি তেবু শীরামোহপি গৃহীতঃ তেখিব তত্মিনপি তদাগ্রহসভ্বাৎ। যতঃ প্রভ্বতভ্বতি ইত্যর্থঃ। স্বয়ক্ষ তান্ প্রতি পরিবেষ্য স্বয়মপীতি তাহে তাদৃশপ্রসাদে শীম্নীক্রস্য চমৎকারঃ। অত্তাপ্যরের্থি হেতুঃ প্রভ্বতি নির্গলায়গ্রহ ইত্যর্থঃ। ২৮॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

যথাশ্রতং তাদৃশ্যের তং প্রাহণত্যর্থ:। তচ্চাপ্রকটলীলায়ামেবেতি জ্ঞেয়ং॥ ২৮॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

তত্র যজ্ঞবাটে একা সর্বাসায়তি পশ্চাৎস্থিতা। অতএব বিশেষেণ বলাং যুতা কর্মান্ত্বন্ধনমেব দেহং জহৌ নতু প্রেমান্ত্বন্ধনং দেহং তদানীমেব মহাবিরহেইৎকঠাং প্রন্ধননারথেনোদ্ধাবিতং ভগবতা ক্ষিপ্রিপ্রেনোপপৃহিতঞ্চ তন্মাৎ তেন দেহেন চিন্ময়েন সর্বজনালকিতেন যুক্তা সতী সা শীঘ্রমেব ততঃ স্থানাদভিস্তা শীভগবস্তং প্রাণেতি। কর্মান্ত্বনমিতি পদস্থ বৈষ্ণ্যাদেবং ব্যাখ্যাতং। কিঞ্। মনতাম্পানি পত্যাদীংস্তাকে তি কিং চিত্রং অহস্তাম্পানং দেহমপি তাক াকাচিং স্বং প্রিয়ং ক্ষমভিসসারেতি প্রেয়: প্রভাবজ্ঞাপনার্থং ভগবংক্বপা তানেকামভিদারসময়ে কর্মান্ত্বন্ধং দেহং ত্যাজয়িবৈব প্রেমান্ত্বন্ধং চিন্ময়দেহং প্রাহ্মানাস। তদাভাসাং সর্বাসাং ভূ কর্মান্ত্বন্ধানেব দেহান্ স্পর্নাহ্বন্ধং প্রিয়ং ক্ষমভিস্বান্তন প্রেমান্ত্বনাহ্বন্ধং দিলম্বানেব চকারেতি তদিনতন্তাসাং ন স্বস্থ পত্যাহোর ইতি কিমশক্যং ভগবংক্সগায়া:। ত্রামেকাংশেনোংকর্মস্তান্তানাংশেনোংকর্ম ইতি তাসাং তার্তমাং ভূ ভিক্তশান্তেম্বনি ত্রান্ধ শক্তে বক্তুং। স্ব্যাসামেব তাসাং ভগবংক্রপাসিদ্ধনেব। যত্তং। ক্রপাসিদ্ধা যজ্ঞপত্নীবৈরোচনি শুকাদ্য ইতি॥

ভগবানপীত্যপিকারাৎ সা দেহং জহে ভগবানপি গোবিন্দঃ তস্যা গাঃ সংক্ষেয়াণি রমণার্থমলক্ষিতং তদৈব বিন্দৃতি স্বৈত্যথা ব্যাথ্যেঃ। তভ্চ তেনৈবেত্যের কারেণ গোপাপেক্ষয় অনুস্যালত্বং বোধিতং। প্রভুরিতি তদপি তেনের সংক্ষাম্দরাণি পুরন্মাদেত্যথঃ। গোপকানিত্যন্ত্কশায়াং কণ্ চকারেণ স্বয়ং ভোকুমনিচ্ছাপি বৃভুজ ইতি লভ্যতে। অন্চিছা চ প্রেমবভীনাং তাসাং স্কৃতেন সক্ষলভ্যেন পশ্চাতাপোদ্যাং ॥ ২৮॥

সেখানে একটা অবলা স্থানিকর্ত্ক ধৃতা হইয়া গৃহে অবরুদ্ধা হইয়াছিলেন, অতএব তিনি ষেপ্রকার প্রবণ করিয়াছিলেন ধ্যানযোগে সেই প্রকারে আপনার হৃদয়ে ভগবান্কে আলিঙ্গন করিয়া কর্মাত্বন্ধি কলেবর পরিত্যাগ করিলেন, অর্থাৎ চৈত্ত ছারা ভগবানে সম্বতা হইলেন। সে যাহা হউক, বিপ্রন্থ পত্নীগন প্রতিনির্ভ হইলে পর প্রাকৃষ্ণ তাঁহাদের আনীত সেই চতুর্বিধ অন্ধ ছারা সকল গোপালকে ভোজন করাইলেন এবং আপনিও আহার করিলেন॥ ২৮॥

এবং লীলানরবপু স্বোকমসুশীলয়ন্। বেবে গোগোপগোশীনাং রময়ন্ রপবাক্তৃতিঃ ॥ ২৯ ॥ অধাসুস্তঃ তে বিপ্রা অবতপ্যন্ কৃতাগদঃ। যথিখেশরয়ো বাচ্ঞামহন্ম নৃবিভূষয়োঃ ॥ ৩০ ॥

# श्रिषत्रवामी।

অফুনীলয়ন্ অফুকুর্বন্। গোগোপগোপীনামিতি কর্মণি বজী। রূপবাক্রুতৈরপেণ বাচা রুতৈ করিতে: রময়ন্ তা রময়িত্রু রেমে ইজার্পং ॥ ১১ ॥

অনুস্তিপ্রকারমাহ নরামুকরণবতোবি বৈধররোর্যাক্রাং বতোহহন্দ হতবস্কঃ তংকুতাগদো বয়মিতামুস্তোতি ॥ ৩০ ৪

# देवक्षवरजावनी ।

এতচ্চ যজ্ঞপদ্মস্থাহাদিকং তদ্যাধিনং চেষ্টিতং সৌন্দর্য্যাদিকঞ প্রীএজন্ধনপ্রমোদনারৈবেত্যুপসংহর্তি এবমিতি অনেনেদৃশং। বহুলং লীলান্তরমপ্যস্তীতি স্চিতং লীলান্যনরাকারবপ্রস্থীলয়ন্ অসুশিক্ষন্ মস্ব্যলোকে নিজতক্তিং প্রস্ত্রিপ্পত্তি । यহা নূলোকং তুর্বহারং অস্থালয়ন্ স্লাচর্ত্নিত্যহাঃ ২৯ ॥

পতরো নাভ্যস্রেরন্ ইত্যাদিনা লক্কডাল্ক্ডগবং প্রদাদানাং পদ্ধীনাং সদ্প্রভাবেণ তংপতীনামণি সদ্ধির্জাতেতি তাসাং মাহাদ্বামের দর্শবিত্যাহ অংথত্যাদিনা বাবংস্মান্তি। অথ তং প্রয়েকানতরং তে ছর ডিমানগ্রতা অণি অবত্যান্। নয় বিশেষররোর্যাক্রা কথং সন্তবেক্তরাছ ন্ বিভ্ররোলৌ কিকলীলাং বিভাররতোরিত্যর্থ। যহা। নুনন্মান্ত্রজিক্হীনান্ বিভ্ররত উপহস্ত ইতি
তথা তরোঃ। অন্মহাচ্যে প্রয়োগন্তদানীমণি ভ্রতিমানগ্রামুব্রে ল'জাতো বা ॥ ৩০ ॥

#### क्रममन्दः।

এবং তস্য সর্কমণি শ্রীগোকুলসৌধ্যাদ্রৈবেত্যাহ এবমিতি। অথেতি। পতরো নাভ্যক্রেরন্নিত্যাদিনা লন্ধভগবংশ্রসদেনাল্পশ্বরণ ক্রেরং॥ ২৯॥ ৩৯॥ ৩১॥ ৩১॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ৩৭॥ ৩৭॥

#### श्चीविश्वनाथहळवर्खी।

এবং ব্যক্তিকপত্নী ম' রমরামান পোপপত্নীস্ত রম্মামানেত্যাহ এবমিতি। নীনামরনরবপুরিতি সর্কাচ্চোহণি স্তাসকরতানিশক্তিড্যো নীনাশক্তেরভাহি তথাবু ক্রিলমরমণে নীনাসে চিবাভাব এব হেডুরিতি ভাবঃ। অহুশীলয়ন্ অহুসরন্ গোগোণগোণীনামিতি কর্মনি বল্লী। বংসলা গোপীনামপ্রামলিক ছাংসাম্যিকছাত গোণোহত মুবতর এব সভাতে। রূপেন বাচা ছুটেনেটেটিভেন্ড রমরন্ রেমে ইতি রানাং পূর্বং ব্রহ্মেবীভিঃ সহ ন রমণ্যিতি মতং প্রতিমিত্যেবিধা বহেলা হলা অণি বল্লীনা ম্যান্তা বর্ততে ইতি
ভাবঃ ॥ ২ন ॥

অধাহস্তেতি তেবানহস্মবণনির্কেদাদিকং ভাসাং দর্শনভাগ্যাদিতি জেরং। তেবানহতাপপ্রকারনাই যদ্যোবিবেশররোরপি বাজ্ঞাং অহয় হতবদ্ধে বরং তক্ষাৎ ভুভাগ্রো হতুনঃ। কীদৃশরো: নূন্ অস্মান্ বিভ্যেতে ইতি তরেঃ অরপ্রার্থনিনবাসান্ বঞ্চিত-বতেরিত্যর্থঃ ॥ ৩০ ॥

হে রাজন্! লীলার্থ নরদেহধারী ভগবাদ্ হরি এই প্রকারে মানবব্যবহারের অমুকরণ করত গোন্দার্য বাক্য এবং চরিত্র ঘারা গো পোপ তথা গোপীদিগকে ক্রীড়া করাইবার নিমিত্ত স্বয়ং ক্রীড়া করেন্য ২৯ ছ

অবস্তার সেই সকল প্রাক্ষণের বোধ হইল নরাসুকারী রামকৃষ্ণ সাঞ্চাৎ বিষেশ্র তাঁহাদের প্রার্থনা অথায় করাতে আনরা অপরাধী হইয়াছি; অভএব ঐ বিবর স্মরণ করিয়া অসুতাপ করিতে অধিবান । ৩০ । দৃষ্ট বিশাং ভগৰতি কৃষ্ণে ভিক্তিবলোকিকীং। আত্মান ক ভয়া হীনমত্ততা বাগহ রন্ ॥ ৩১॥
বিক্ জন্ম নিস্ত্রেল্যভিন্নিয় তং ধিবছজ্ঞতাং। ধিক্ কুলং ধিক্ জিয়াদাক্যং বিমুগা বে ছধোকজে।
নূনং ভগৰতো মায়া যোগিনামপি মোহিনী। যবরং গুরবো নূণাং স্বার্থে মুহাম হে বিজাঃ॥ ৩২
অহো পশ্যত নারীণামপি কৃষ্ণে জগদগুরো। ছরস্কভাবং যোহবিধ্যন্ত্যুপাশান্ গৃহাভিধান্॥৩৩

# अध्यक्षामी।

তদাচ ভার্য্যা গুরুনিব মানরস্থো ভগবস্তক্তিরহিতমান্ধানং ব্যনিক্ষন্ ইত্যাহ দৃষ্টে তি। আংশাকিকীং লোকাতীতাং ॥ ৩১ ॥ তিবুৎ শৌক্রং সাবিত্রং দৈক্ষমিতি ত্রিগুণিতং জন্ম। ব্রভং ব্রহ্মচর্য্যং ক্রিয়াঃ কন্মাণি দাক্ষ্যঞ্চ। ক্রিয়াদাক্যমিত্যেকং বা পদেং। ধিগি-ত্যাধিক্ষেপে যে বয়মধোক্ষক্তে বিমুখাত্তেযাং নো যৎ জন্মাদি তৎ সর্বং ধিগিতি ব্যগহ মিত্যর্থঃ ॥ ৩২ ॥

যোহবিধ্যৎ অচ্ছিনৎ তং হরস্কভাবং ভক্তিং পশ্যতেতি ॥ ৩৩ ॥

#### देवस्वद्यायनी।

ভগবতি সাক্ষাৎ পরমেশ্বরে তত্তাপি কৃষ্ণে নিজাপেইবর্ষ্যপ্রকটনেন সর্ক্রভিন্তাকর্ষকে। ন কেবলমন্বতপান্ কিছ্পতঞ্চাং সভো বিশেষেণ নিজ্ঞাপেষাভিমানত্যাগাদিনা অগর্ষ রংশ্চ ইত্যর্থং। অলোকিকীং লোকন্ব্যাপেক্ষাত্যাগাৎ ক্লঞাপ্রান্তা সদ্যোদেহত্যাগাচ্চাত্য যেহধাক্ষে প্রজ্ঞাপুত্তী প্রাহ্নভাবিনি পরমান্ত্রনাপ বিম্পান্তেরাং জন্মাদীনি ধিগিতি শৌক্রস্য জন্মনঃ। কিং প্নপ্রাহ্মণাং প্ণ্যাভ্জ্ঞা রাজর্বরন্তথা ইতি ন্যারেন ভক্তক্তী উপযুক্তমন্ত্রেংপি অনুযোজনাৎ। সাবিত্রস্য তদন্তিধারিন্তেন গান্ত্রজ্ঞানাং। গান্ত্রাভ্জ্ঞা তদন্তবিস্তারক্রপস্য প্রীমন্ত্রাগ্রতস্য তৎপরত্বাং। তত্ত্তং গান্ত্রীং ভগবৎপরত্বেন ব্যাব্যান্ত্রান্ত্রিপ্রাপ্ত্রের ক্রিস্থা প্রান্ত্রান্ত্র বিদ্যান্ত্রান্ত্র ক্রিপ্রান্ত্র ইত্যাদি দৈক্ষ্যান্যদীযোগাসনামন্ত্রাং বিদ্যান্ত্রাং অহং হি সর্ক্র্যজ্ঞানাং ভোজা চ প্রভ্রেরে চ। নতু মামভিজানন্তি তব্বেনাভ্জ্যবন্ত্রি তে ইতি তত্ত্বজ্ঞানাং। এবং ব্রতাদীনামপি কুলং বংশপরক্ষ্রাং। অহো কইং মান্নামেহিতানামন্ত্রের ইত্যাহ্র। বর্মনিতি বোগিনাং কর্মান্ত্রজ্ঞান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রনা যোগিদাভিমানাং। যন্ত্রা। যেগিনামপি কিম্তান্নান্ত্র কর্মিণামিদং নৃণাং যোগ্রন্ত্রজ্ঞান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রিক্রান্ত্র তাহুদিশ্য প্রীভ্রেন বাদিশা বৃদ্ধানিন ইতি। গুরুবং শ্রেষ্ঠা অপীত্রর্থঃ বর্ণানাং ব্রাক্রনাং ইত্যান্ত্রনেপদ্যার্থং। তহুক্তং তাহুদ্দিশ্য প্রীভ্রেকন বাদিশা বৃদ্ধানিন ইতি। গুরুবং শ্রেষ্ঠা অপীত্রর্থঃ বর্ণানাং ব্রাক্রনা হের্লান্ত্র ইত্যান্ত্রনেপদ্যার্থং। ৩২॥

অহো বত জীভোষ্পি বনং নিক্স্টা ইতি শোচন্তি অহো ইতি ত্রিভি:। অহো আশ্চর্বো। নমু স্ত্রীণাং পড়ারিতরশ্বিন্ ভাবোংছচিতঃ

#### विधनाथठकवरी।

ভত্তক বভার্যা অপি শুরুনিব মামরস্তো ভৃত্তিরহিত মান্ধানং ব্যানন্দরিত্যাহ দৃষ্টেবৃতি। অলৌকিকীং লোকেবসন্তবাং। ৩১॥
ত্রিবৃৎ পৌক্রং সাবিত্রং দৈক্ষমিতি ত্রিশুণিতং জন্ম নোহ্ত্মাকং যন্তবিহ্ন ব্যান্ধকের নাম্বকের ব্যান্ধকের ব্যান্

বোগিনাম**টাজবোগ**বতামপি কিং পুনরত্মাকং কর্মিণাং। গুরবং পরেবাং নৃণামধোপদেটারোহপি বার্থে মাররা মুজামহে ॥ ৩২ ॥ ্যাসাং পতিবক্তরাদিরূপেণ বরং গুরুবত্তা ইমাঃ ক্লতার্থা অভ্বন্ বর্মজকুপে পতিতা এবেতচাছরহো ইভি । হুর্মমোহত্মাতি<del>রহ</del>

আর আপনাদের বনিতাদিগের প্রীকৃষ্ণে অলোকিকী ভক্তি এবং আপনাদিগকে সেই ভক্তিতে বিহীন দেখিয়া অনুতাপ করিতে করিতে অত্যন্ত আত্মনিশা করিলেন। ৩১॥

তাঁহারা কহিলেন শুক্র, সাবিত্রী এবং দীকা এই তিন প্রকারে আমাদের যে জন্ম হইয়াছে পেই ত্রিবিধ জন্মকে থিক্, আমাদের ত্রন্নচর্য্যকেও ধিক্, বহুজ্ঞতাকেও ধিক্ ক্লকেও ধিক্, কার্ল আম্মান আধোক্ত ভগবানে বিমুখ। একণে নিশ্চয় ব্যোধ হুইতেছে ভাগবতী মায়া যোগিদেরও মোহক্ষিকা, যে হেছু আমরা ত্রান্ত্র, সকলবর্ণের শুক্ত, আমরাও আপন বিষয়ে মুগ্ত হুইনাম ॥ ৩২ ॥

আহো নারীদিগেরও জগদগুরু প্রাকৃষ্ণে ভ্রন্তভাব (ভক্তি) দেখ, এই ভাবে গৃহসংক্ষক কুছুলেন্দ্র

নাদাং বিজ্ঞাতিসংকারো ন নিবাদো গুরাবপি। ন তপো নাক্ষমীয়াংসা ন শৌচং ন ক্রিয়া: শুভাঃ॥ তথাপি ফুড্রঃস্লোকে ক্বফে যোগেশরেশরে। ভক্তিদ্তা নচাম্মাকং সংকারাদিমতায়পি।

### **अ**धवयांगी

ষিক্সাতিসংকার উপনয়নং। ক্রিয়া: সক্ষোপাসনাদয়:॥ ৩৪ ॥

### বৈষ্ণৰভোষণী ৷

ভত্তাহর্জগদগুরৌ পতিভোহপাসৌ প্রমাপেক্ষা ইতি ভাব:। ছ্রস্তং সর্ব্বাধকং ভাবং প্রেম অবিধাদিতি অতীতনি্র্দেশতাসাং সদ্য এব গৃহাদ্যাসক্ষ্যপগমাভিপ্রারেণ॥ ৩৩॥

আশ্চর্যাথমের ব্যানক্তি নাগামিতি যুগ্মকেন। বিজ্ঞাতিসংস্থার উপনয়নাদিত্তবর্ষবারং তথা শৌচং সামান্যধর্ম: । শুরুনিবাসাদরশ ক্রমেণ ব্রহ্মারিবানপ্রস্থাতিগৃহিধর্মা:। তত্র চ শোকাবেশেন ক্রমাতিক্রম:। কিছা। গার্ছ গুধর্মস্য বহুমানেন পশ্চামির্দেশঃ অতএব শুভা ইত্যুক্তি:। অধাপি তত্তপ্রহিত্ত্বেহপি ক্রফে দৃঢ়া ভক্তিরাসাং জাতা। তত্য মাহাছ্ম্যেন তত্তকেরপি মাহাছ্মাং বোধয়িতৃং তং বিশিংবত্ত। উত্তম:ক্লোকে বৈরিণামপি মোক্ষাদিদানাৎ পরমসংখ্যাতিমিতি। যোগানামীশ্বরা ভক্তিযোগবন্ধতেহামীশব্রে সেব্যাদেন লভ্যে ভক্তিদৃ ত্যি কৃতবিরোধরক্মাভিরপি পরিচ্ছেত্ মশক্যা। পুনরাশ্ব্যমেব ব্যতিরেকেণ প্রদূর্যতি। নচেত্যক বিজ্ঞাতিসংশ্বাদরঃ শ্বরং ভক্তেঃ কারণানি ন ভবস্তোব তদ্যুণক্সংসক্ষাসাং তৎকারণত্যা ন অমীভিরম্মাতৃং শক্ত ইতি প্রশুক্ষাভিপ্রায়ঃ ॥

উত্তমংশোকস্বমেব দর্শয়প্তি। নৃনং নিশ্চিতং সর্বাসামপি সিদ্ধীনাং মূলং তচ্চরণার্চনং ইতি নারেন তত্তকিং বিনা সর্বসাপার্থস্যা-সিদ্ধে:। স্বাথে বিম্ঢানাং অত্যস্তাজ্ঞানাং যতো গৃহেহয় গৃহক্তত্যন প্রমন্তানাং অনবহিতানাং নোহমান্ সারয়ামাস আত্মানং। যতঃ স্তাং স্বাধিকারপ্রাপ্তবেদোক্ততৎপরাণাং গতিঃ। যহা। স্তাং ভক্তানাং গতিরপি কেবলকার্ল্টানেবেত্যর্থ:। যহা স্ত এব তাবৎ প্রমদ্যালবঃ। স্তু তেষামপি গতিরাশ্রর ইতি। অহো আশ্চর্য্য উত্তমঃশ্লোকস্বাত্তেন বোধিতা অপি বয়ম্বিবেকা ন বুদ্ধক ইতি ভাবঃ॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্তবন্তী।

ভবিত্মশক্যোহন্ত ইয়ন্তা যস্য তথাভূতং ভাবং। হা প্রাণরমণ ক্লেন্ডাদি গদাদাক্ষরবচনকল্পাশ্রপুলকবৈবর্ণাদান্তাবজ্ঞাপিতং ক্লে প্রেমাণং পঞ্চত। নম্থ ন্ত্রীণাং পত্যারিতরন্মিন্ ভাবোহস্থচিতন্তনাহ। জগদা নৌ বদারোপাদের পত্যো ন্ত্রীণাং গুরুত্বং বিহিতং সাক্ষাভূতে ভন্মিন্ থন্ কো বিচার ইতি ভাবঃ। যো ভাবঃ মৃত্যুপাশান্ অবিধ্যং সদান্চিচ্ছেদ। গৃহাভিধানিতি গৃহপত্যপত্যাদিবাসামাসন্তিগ গঙ্কোহিপি সম্প্রতি ন দৃশ্যত ইত্যাদারভ্য এভাএবান্মাকং গুরুব ইতি পতিভিরপ্যদারভ্য ক্লান্ত্রাগিণ্য ইমা আদরণীয়া এব নতু মনসা ভাব্যা এব মন্তব্যা ইতি ভাবঃ॥ ৩০ ॥

নৰাসাং কঞাছরাগে হেত্রক্ষণাম্য ইত্যাহন দািমিতি। যোগেখরেশর ইতি সএব বডকেহে তুং জানাতাপণাদরতীতি চ মান্য ইতি তাবঃ। তেন ক্লফরাপগুণপ্রধাাণি বলত্মানিকাদিবনিতাজন সংসক্ষণো ম্নহেত্তৈর্জাতখালোক ইতি শুক্ষেবাভিপ্রারঃ॥ ক ভগবতঃ কালণাং ক বালাকং দৌরাভামিত্যাছন ভিতি॥

चनाथा निक्ताथि कांक्रमाः विना पूर्वकाममा चनाकिः किः व्यवाकृतः न किमनीकार्यः । जैनदेगाकमक्रवार्यनः सन् विक्वनः नावव-

## मरकिस एम ॥ ७७ ॥

কি আশ্চর্যা। এই সকল অবলার উপনয়নাদি সংখ্যার হয় নাই, ইহারা এক্ষর্যার্থ গুরুক্লে বাসও করে নাই, ইহাদের তপতা অথবা অত্মিবিচার কিছা শোচাচার অবলা সংক্যাপাসনাদি ওও জিয়াও কিছুই নাই, তথাপি যোগেখনদিপেরও ঈশ্বর যে ভগবান্ উত্তয়ংলোক শ্রীকৃষ্ণ, তাঁহার প্রতি ইহাদের ন্নং স্বাধিবিষ্টানাং প্ৰসন্তানাং গৃহেছ্যা। অহে। নঃ স্মারয়ামান গোপবাক্যৈঃ স্তাং গভিঃ। অন্যথা পূর্কামস্য কৈবল্যাদ্যাশিষাং পতেঃ। ঈশিভব্যৈঃ কিম্মাভিরীশসৈত বিজ্ञনং ॥ ৩৪ ॥ হিছান্যান্ ভজতে যং ত্রীঃ পাদস্পর্শাশয়াহসক্র। স্বাস্থাদোষাপবর্গেণ তদ্বাদ্ধা জনমোহিনী। দেশঃ কালঃ পৃথক্ দ্রব্যং মন্ত্রন্ত বিছাহগ্যঃ। দেবতা যজমানশ্চ ক্রত্মধ্রশিচ যম্ময়ঃ॥ ৩৫॥

# चीधत्रवामी।

স্বাত্মদোষাপবর্গেণ চাঞ্চল্যগর্কাদিভ্যাগেন ॥ ৩৫ ॥

#### देवक्षवटकावनो।

নমু গোপুৰাকৈ সর্মনেবাশার অ্যাচত নচ শার্মানাস তত্তাতঃ। অন্যথাস্থাহ্যম্মাশ্বন্ধরের। নমু পূর্ণকাম্থেন তস্যামে প্রেরাজনং মাল্ত ক্থার্সগোপনিমিত্তং যুজ্যত এব তত্তাতঃ কৈবল্যতি। কৈবল্যং মোকঃ প্রেম বা। কলান্তরান্সম্বন্ধেন শুদ্ধভাবিশ্বপ্রাক্তি কর্মান্যমালিয়াং অর্থানাং সতেঃ পত্যুরীলস্য তত্তৎপ্রসাদনে সামর্থস্যেত্যর্থঃ। ঈশিতবৈয়নি মুন্মাঃ কিঞ্চিৎ কর্ত্ত্মপ্যশক্তিঃ কিং ন কিঞ্চিদ্পি প্রয়োজনমিত্যর্থঃ। কিন্তীশস্যাপ্যতিশ্বিদ্ধরণ দ্যামাত্রেণাস্ক্রণমেব ভবতীতি॥ ৩৪ ॥

নত্ন যদ্যপাদৌ স্মারয়ানাস তার্ছ ভবন্তঃ কথং ন সম্মন্তব্যাহ হিছেতি। অন্যান্ হিছেতি ক্ষীরোদমধনাত্তে তস্যা নরমিবাবিভূতিায়াঃ ব্যবহুবালামুকরণদৃষ্ট্যা প্রোক্তং। অসক্তর্জতে সেবতে স্থং স্বয়মেবাজা যস্যান্তস্যান্তদংশাভাসভূতায়া জগলস্থা বে দোবাত্তনক্রাপেন ইত্যর্থঃ। এবং কথমপি তদ্যাজ্ঞা ন ঘটেতৈবেতি বোধিতং। তথাপি তস্য যাজ্ঞা জনানামস্মিধানাং সর্ক্রেয়মেব জীবানাং
নোহিনী নায়নীশ্বর ইতি মোহমুৎপাদয়তীত্যর্থঃ ॥

শ্বভোংপি মোহং দর্শন্তি দেশ ইতি যুগাকেন। স এব সাক্ষাং ওগবান্ শ্রীনারায়ণঃ তস্য দেহাদিয়য়থে হেতুঃ বিফুঃ সর্ববাণ্ক-ইতি তস্যচ সুক্রৈবেবাপাস্যমাইবোগেশরাণাং মুক্তানাসপীশ্বঃ অতো যজ্ঞাদীনামপ্রাকং অপি সএব সেবা ইতি ভাবঃ। যয়। মএব সাক্ষাং ভূতএব অতএব ভগবান্ সুক্রেশ্বগ্যপূর্ণ স্ত্রাপি অলেবৈশ্বগ্যপ্রকটনেন বিশ্ববাপকতান্ধিকুঃ অতো যোগেশরাগামপীশবঃ সেবা ইত্যর্থঃ। যয়। কিমর্থং জাত শুরাছঃ। যোগেশরাঃ স্থানিভাজি রোগান্তেবামীশবঃ। নিজভক্তস্থার্থমিত্যর্থঃ। হিশবেন তর শাক্ষাদি প্রমাণং স্চয়ন্তি। তচ্চ প্রাদিয়মেব মন্তকানাং বিনোদার্থমিত্যাদি বচনেভাঃ মুঢ়াঃ শাক্রার্থানভিজ্ঞাঃ। আভাাং বাক্যাভাগং বথা পূর্বনিজাভি তিবারিত্যিতি শ্রীক্তদেবাভিপ্রায়ঃ॥ ৩৫॥

### **এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।**

মেব যক্ষাদিত্যর্থ:। যথা। তক্ষাদেতৎ ঈশস্য ঈশকর্ত্কং অক্ষৎকর্মকং বিজ্যনং তিরস্বার:। ৩৪।

নমু ক্ধার্ত্বাদেবেদমর প্রার্থনং নতু কারুণ্যং নাপি পূর্ণকামন্বাদিকং গোচারণাদ্যমূপপত্তেন্তবাহুছি ন্থিত। অসকং মুহ: এ: সম্পল্লনী: স্বান্থনো দোষদ্য চাঞ্চাদ্য অপবর্গেণ ত্যাগেন বিশিষ্টা চাঞ্চাং পরিত্যন্ত্যেন্ত্যর্থ:। তস্যাপি বং ৰাজ্ঞাদিকং জ্ঞনান্ অস্ত্রিধান্ মোহয়তি নায়মীশ্বর ইতি প্রত্যারয়তি॥

মোহমেব বিরুণু স্তি দেশ ইতি ॥ ৩৫ ॥

দৃঢ়া ভক্তি ইইয়াছে, আমরা সুংস্কারাদিবিশিষ্ট ইইয়াও তাহা উপাৰ্জন করিতে পারিলাম না, নিশ্চয় বোধ ইইতেছে গৃহব্যাপারে প্রমন্ত ইইয়া আমরা স্বার্থবিষক্তা বিমৃঢ় আছি। যাহা ইউক, গোপদিগের বাক্য আমাদের স্কাতি স্মরণ করাইয়াছিল,নচেৎ কৈবল্য হেতু পূর্ণকাম এবং স্ক্রিকল্যাণ পতি পরমেখরের অস্মাদিতে প্রয়োজন কি! ইহা যে সেই পর্মেশরের বিভূষন মাজে॥ ৩৪॥

ফলতঃ স্বরং লক্ষ্মী পাদম্পর্ল প্রত্যাশায় আপনার চাঞ্চল্যাদি দোষ পরিহার পূর্ব্বক অন্ত সকলকে। পরিত্যাগ করিয়া বার্ম্বার বাঁহার উপাসনা করিয়া পাকেন, তাঁহার যাক্রা ক্ষমণার জনদোহিনী। বাহা হউক, দেশ, কাল, দ্রব্য, মন্ত্র, ঋষিক, অন্তি, দেবতা, যজমান, ক্ষ্ম এবং ধর্ম এ সকল বাঁহার স্বরূপ॥ ৩৫॥ मध्य ভগৰান্ সাক্ষাৎ বিষ্ণুর্যোগেশবেশবঃ। জাতো ষত্ত্বিত্যাশৃথা হৃপি মূচা ন বিহাহে।
তথ্য নমো ভগৰতে কৃষ্ণায়াকুঠমেধসে। যন্মায়ামোহিতধিয়ে। অমামঃ কর্মবর্ম হা
স বৈ ন আদ্যঃ পুরুষঃ স্থমায়ামোহিতাজনাং। অবিজ্ঞাতাত্ ভাবানাং ক্ষুমহ্ত্যতিক্রমং॥ ৩৬॥
ইতি স্বাঘমকুম্মত্য কৃষ্ণে তে কৃতহেলনাঃ। দিদৃক্ষবো ব্রজ্ঞাপ কংসাদীতা নচাচলন্॥ ৩৭॥

#### श्रीभव्यामी।

ইত্যাশৃথা: এবং সর্বত্ত শ্রুত বয়ং হি তথাপীতি ॥ ৩৬ ॥ নচাচলন্ তয়োদিশনায় ন জ্বগ্যু: ॥ ৩৭ ॥

#### বৈষ্ণবতোষণী।

মৃত্তমের দর্শয়ন্ত তংকারণ মায়াপ্রভাবেন বিশ্বিতাঃ সন্ত তদপগমার ভক্তা। সর্বজ্ঞং তদীখরমের প্রণমন্তি নম ইতি। ভগবতেৎচিন্তাঃ-নত্তৈখর্য্যায় অকুঠমেধনে অলুপ্রজ্ঞানায় স্বেষাং তবৈপরীত্যমাত্র্যনায়য়েতি। ত্রমামঃ পুনঃ পুনস্তবৈবাজিনিবেশং প্রাপুমঃ জলাব-ত্তাদির কদাচিদ্পি ততো নির্বন্ধঃ ন শক্রুম ইত্যর্থঃ॥

এবং প্রনিদৈক্তং গতা: এবং প্রনিদিক্তং গতা: শ্রীভপ্রবন্ধং ক্ষময়ন্তি স ইতি। স কৃষ্ণং দোহস্মাকং স্মৃতিক্রমণরাধং ক্ষন্তমইতি বোগ্যো ভবতি। তত্ত হেতু:।
স্বস্ত ততির মায়য় মোহিতিতিবানাং অতএব ন বিজ্ঞাতোহসূভাব ক্ষমাহাস্মাং হৈত্তেবাং। যদি চাস্মাক্সপরাধ ক্ষণাপি স আদ্য: স্ক্র্ম্বাধাদির প: ত্র্ণাদেবোৎপ্রানাং বিপ্রাণাং পিত্বদপ্রাধক্ষমা যুক্তেতি ভাব:। বরা। আদ্য: স্ক্র্মেষ্ঠ: অতো নির্দ্ধানাম্মাক্ষমণ্রাধং ক্ষন্তমইত্যেব। কিঞ্চ প্রি শ্রনাৎ প্রবোহস্থানী অতভেন তথা নিযুক্তা: ম: তবৈর ক্ষতবত্তা বয়মিতি। যথা আদ্য: প্রধাং প্রবোত্তম ইতার্থ:। দীনবাৎস্বা এক্ষণাদেবহাদিতি নিক্সাভাবিক্ষাহাজ্যাৎ ক্ষন্ত্রহতেবেতি ভাব:॥ ৩৬॥

শ্বনশাধারণং অবনপ্রাধং তদেব দশ্যতি। কৃতং হেলনং মহব্যদৃষ্ঠাবজ্ঞা থৈতে। অতএব দিদৃক্বোইপি সাধক্ষাপণায় নিলিক্সিছে-বোহপি এজং প্রতি নচাচলন্ সক্লপি পাদবিকেপং ন কৃতবস্ত ইত্যথং। তত্ত হেত্রণ কাংকানে কংসাতীতাং শ্রীভগবতি দৃঢ়বিখা-সাম্বংপত্তা নিজ্মনিষ্টশক্ষেত্যর্থঃ॥ ৩৭॥

#### এবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

অপরাধাদতিব্যপ্রা: প্রণমন্তি নম ইতি ॥ অতিকৈম্যপ্রতা ভগবত্তং ক্ষময়ন্তি দ বৈ ইতি । .অতিক্রমং অপরাধং ॥ ৩৬ ॥

নমু তহি তদানীমেব তজাশোকবনে গছা বিলয় ব্ৰজং বা গছা কণং ভগৰতঃং শ্রণং ন গতা স্তবাহ দিদৃক্ষৰ ইতি। তদানীং শোকাহভাপাদিমবাৎ সংবিক্ষত্যাভাবাচ্চাশোকৰনং ন গতা বিলবে সতি সায়াহে ব্ৰজং প্ৰতি গতা বৈক্ষত্যে সতি নচাচলাইতি চকারাচ্চলছো হপীজ্যাক্ষেপলনং। তত্ৰ হেডুং সংবিৰ্মাপি মনভোকঃ সহসৈবোদ্ধত ইত্যাহ কংসাদ্ধীতা ইতি। হচকৈয়কামৰ্ ভাতঃকংসো হৈ দ্বামাকং জীবিকাং হরিষ্যতীতি ভয়ব্যাকুলা ইত্যুৰ্থঃ। অতঃ পত্যাদিকৰ্জ্ব ব্যত্যাগাদিলক্ষণং ভয়ং ব্ৰহ্মণীনাং ক্ষক্ষণেৰ কিল ন প্ৰতিবন্ধতি স্বেত্যত্ত প্ৰেন্ধৰ হেডুং। ব্ৰহ্মণানাম্ভ মনংক্ষিতোভয়াভাগ এব তত্ৰ প্ৰতিবন্ধতি স্বেত্যত্ত ভগবআবৈৰ হেডু ক্ষেৰিঃ। ৩৭॥

দেই ভপনান সাক্ষাৎ যোগেশরদিপের ঈশর, বিফু, যতুক্লে জ্মা প্লছণ করিয়াছেন, যদিও এইরূপ স্বাত্ত প্রবণ করিতেছি, তথাপি আমরা এমত মৃঢ়, যে, তাঁহাকে জানিতে পারি নাই, একণে
অক্পনেধা দেই ভপনান প্রিক্ষকে নমন্ধার করি। বাঁহার মায়ায় মোহিত হইয়া আমরা কর্মমার্গে
ভ্রমণ করিতেছি। সেই আদ্য প্রেষ-আমাদিগের এই অপরাধ ক্ষমা করিতে যোগ্য হয়েন, তাঁহার
মায়াতেই আমাদের চিত্ত মোহিত হইয়াছে, তাহাতেই আমরা তদীয় অনুভাব জানিতে
পারি নাই। ৩৬॥

ছে রাজন্। সেই সকল বিপ্র এই প্রকারে প্রাকৃষ্ণের প্রতি অক্তেলন জন্ম আপনাদের অপরাধ স্মরণ করিয়া যদিও তাঁহাকে দর্শন করিতে ইচ্ছুক হইলেন তথাচ কংসভয়ে ভীত হওয়াতে কিছুতেই তথার ঘাইতে পারিলেন না ॥ ৩৭ ॥ ॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমস্ক্রে যজ্ঞ-পদ্মপ্রচর্য্যাগ্রহণং ত্রয়োবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ২০॥ # ॥

শ্রীবাদরায়ণিরুবাচ॥

ভগবানপি ত'ত্ত্রেব বলদেবেন সংযুক্তঃ। অপশ্রন্ধিবসন্ গোপানিক্রযাগরুতোল্যমান্।

#### **बि**श्त्रश्रामी ।

॥ 🛊 ॥ देखि समस्य व्यव्याविशमः ॥ 🛊 ॥

চতুবি<sup>ংশে</sup> মহেক্সসা মধং বাবির্তা হেজুভিঃ। ক্লফঃ প্রবর্তরামাস গোবর্জনমধোৎসবং। ভূস্বাণাং ক্রিয়াগর্কং নিরস্ত স্বঃস্থরে-যুচ। মঘবুল্লভঙ্গার তর্মধং সর্বাব্যবং॥ • ॥

ব্ৰাহ্মণাঃ কংশান্তীতাঃ স্বাস্ত্ৰমণ্ড এব ভগবন্তমভজন্ ভগবানপি তিত্ৰৈব নিবসন্ ইক্ৰযাগকতোদ্যমান্। গোপানপশ্যদিতি সন্ধঃ ॥১॥

## বৈক্ষবতোষণী।

# ॥ \*॥ देखि औरवक्कवटकावनहार मनमिश्रमहार खरमाविरनः ॥ \* ॥

পূর্বাং ব্রহ্মনারীঃ প্রতি যাতাবলা ব্রহাং সিদ্ধা ময়েমা রংজ্ঞথ ক্ষপা ইতি হেমন্তপতা যা নিজ্ঞালীকতা তাই শর্মাক্রিব্ তান্তিঃ সহ প্রজ্ঞাবানরমত তাঃ থলু শর্মস্তরা ব্যবহিতশরৎসম্বন্ধিত এব সন্তবন্ধি তদ্মণারস্তল শরংপূর্ণিমায়ামের নির্দ্দেশ্বতে সাচ শর্মধান্তা-বিনপূর্ণিমির সংবধাতে। কার্ত্তিক্ত্রপ্রতিপদি বেষা গোবর্দ্দিশ্বলা সাচ রাসলীলায়াং ব্রুণ্নেবিভ্রন্ত্রতা গোবর্দ্দিশ্বামনব্র্র্বালয় বর্ষণালাক্রমন্ত্রতা ক্রেণ্নেবিল্লা ততঃ পূর্বাং শর্মমেবারভ্যাগামিনীঃ ফাবংক্রমানেগাবর্দ্দিশ্বলা ব্রুণ্নেবিল্লাই ক্রেণ্নেবিল্লাই ক্রেন্নেবিল্লাই ক্রেন্নিবিল্লাই ক্রেন্নিবিদ্ধানির ক্রিলাই ক্রেন্নিবিল্লাই ক্রেন্নিবিল্লাই ক্রেন্নিবিল্লাই ক্রিলাই ক্রেন্নিবিল্লাই ক্রেন্নিবল্লাই ক্রেন্নিবল্লা

# क्रथमनर्छः।

# ॥ • ॥ ইতি ত্রীদশমে জ্রীকীবগোস্বামিক্বতক্রনসন্বর্ভে অফোবিংশ: ॥ • ॥

জগৰানপীতি। অত্ৰাণিশক্ষেন তত্ৰৈৰ নিবসন্ধিতীখং চৈবং লভাতে। এবং তে পদ্মীসম্বন্ধেনাতিবিশ্বকা অসন্ধিহিতানাচলন্। শ্ৰীবিশ্বনাধচক্ৰবৰ্তী।

॥ 🛊 ॥ 🏿 ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভব্নতেডসাং। ত্রয়োবিংশোহত্র দশনে সক্ষতঃ সক্ষতঃ সভাং ॥ 🛊 ॥

স্থাপিতা সহ সংলপ্য মধং ব্যাধ্য বিজ্ঞিন:। চ্জুবিংলে গিরীজ্ঞস্য মধং প্রাবর্ত্ত্যক্রি:। গোঠস্যাস্থান্যাং নিবসন্ প্রাতৃতিঃ সহ নক্ষ ইক্রবাগসংভারসিদ্ধার্থং গোপাছকেয়াল্যামাস। ভগবানপি ততৈবে নিবসন্ ইক্রেলাগ্রুতোল্যান্ গোপান্ স্পঞ্চিতি স্থান্ ॥

পূর্বপূর্ববর্ষ্ট্রবান্তস্যাভিজ্ঞাহিশ। সর্বাচ্ছেতি। বদাপাত্র্যামিবরূপেণেরবাসে বর্মেব প্রের্মিত ভদুপি দীলাকোতু-

# ॥ \*॥ इंजि मर्भार्य खरशविः म ॥ \*॥

চতুর্বিংশ অধ্যাত্ম হেতৃপ্রদর্শন পূর্বেক ইন্তর্যজ্ঞনিবারণ করিয়া জীকৃষ্ণকর্ত্ক পোষ্ধন্দহেশং-সবের প্রবর্ত্তন (আরাম্ভ বর্ণন)॥ ॰ ॥

क्षकराप्त कहिरानन, विधानन करमचरा य २ माखरम शाकियार क्रीक्राक्र क्रिनामना क्रिकेट नामिन

তদভিজ্ঞাহপি ভগবান্ সর্বাস্থা সর্বদর্শনঃ। প্রজ্ঞাবনতোহপুদ্ধ দ্বারক্ষপুরোগমান্॥ ১॥
কথ্যতাং মে পিতঃ কোহয়ং সন্ত্রমো ব উপাগতঃ। কিং কলং কস্য বোদ্দেশঃ কেন বা সাধ্যতে মথঃ॥২
এতদ্ ক্রছি মহান্ কামো মহুং শুক্রাব্রে পিতঃ॥ ৩॥

# विषत्रयामी।

বুণা সম্ভ্ৰমোন ভৰতি সংখাহয়নিতি চেৎ কিমত্ৰ ফলং কা'দেবতা কেনাধিকারিণা কেন সাধনেন বা সাধাতে ॥ ২ ॥ এতৰুহি মহান্ কামো মম জাবণে বর্তকে। যথা। তব মহান্ কামো দৃহত ইতি ॥ ৩ ॥

## रिकारणावनी।

ততক তস্য পূর্ব্বপৃষ্ঠা ইক্সমণস্য তথ। প্রীরন্ধনার প্রত্যন্তর্মিবামাণস্য তদ্ধিকস্যচার্থস্যভিজ্ঞাহিশি অপুছং। তত্রচ তগবানশি সর্ব্বস্বদ্ধ শনিধিকেন বিনয়াবনম এব সম্পুছং অভিজ্ঞানে হৈছু: সর্ব্বস্থাত্মা পরমাত্মেতি প্রামে হৈছু: সর্ব্বান্ত বার্থে প্রবর্ত্তরিত ইতি তথা স:। ভবতু নাম পূর্ব্বোং মন্তর্জপূজ্জনাম মন্তর্জপূজ্জনাম ত্র্বান্ত্র ক্রিভাগ্যমিত্যাদিলক্ষণমহামহিম্বাদ্ভিক্সস্য তত্রাশি মহাগর্বস্বান্ত্র পূজা মম হংধকরীতি সম্প্রতি পরমান্তরক্সোবর্ত্বনিজ্বৈর বৃদ্ধে ব্রুত্বের মুখ্তা আত্মীয়তাপেক্ষা বিশেষত্তঃ ত্রাপ্র প্রশ্ন এব জ্ঞোঃ॥ ১॥

কথাতামিতার্জকং। মে মহুং কথাতামিতি সর্বেহতে জানন্তি কেবলং মহৈব ন জ্ঞায়তে ইতি মাং প্রত্যেব কথাতামিতি ভাবং। এবা চ পিতৃসন্তোষ্থিমৌশ্ধপ্রায়লীলৈব। আবশ্যকতংশ্রবণায়। বো যুমাকং সর্বেবামেব নতু কেবাঞ্চিৎ। অত্যচ সম্ভ্রমন্ত্রা বিশেষঃ বৈষ্ণগ্রাং বা। শ্লেবেণ সম্যক্ অন এবেতার্থঃ। উপাগতো দ্বে স্থাতুং যোগ্যোহিপি সমীপং প্রাপ্ত উপর্যাপতিত ইতি বা॥ ২॥

কেনেতি তৃতীয়াস্তপদেন কর্ত্করণরো: প্রশ্ন:। এতদ্জহীতি পুনক্তিনিজ্ঞাবাতিশ্যবোধনার মহং মাং প্রীণিয়িত্মিতার্থ:। যথা নহ বালকে ছিন্ন তৎকথনেন কিং তত্রাহ। ভশ্রববে পুত্রভোজ্ঞাং পুর্য়িতুম্বখ্যং যুক্সত ইতি ভারে:। লেবেণ ভশ্রবুং ধর্মাজ্রবাং ইতি ভারেনাবশ্যকতোকা পিতরিতি পুন: সংঘাধনং লেহবিশেষজ্বনার॥ ৩॥

## ক্রমসন্দর্ভ:।

চকারাক্ষংকিঞ্চিং তংশাত্মধান যজ্ঞনেব কুর্কজো হতিষ্ঠন অথ কিঞ্চিংকালান্তরে ভগবানপি বলদেবেন সংযুত স্কলৈব নিবসন অবং যত্র নিবসতি তত্রাপীত্যর্থ:। ইত্যভিলাবদমঞ্জনতাং দর্শিতং। ব্রহ্মাদিছ্র ভং তৎ সংবাসমহেত্মেন্তা গ্রেন্তা ইক্রস্যাতিকোদিয়ত্বাং। বল-দেবেন সংযুত ইতি স কদাচিং সোঢ়ুং শক্রোতি বলদেবস্ত তংপরমন্তকৌ নৈবেত্যর্থ:। তস্য যক্ত্রস্তা অভি সর্ক্রোন্তাবেন সিদ্ধান্তাহ্য-দ্বানাদি প্রকারেণ জানাতীতি তদভিজ্ঞাদৃশোহণি পূর্কপূর্ক্রমণ্যরং জানাত্যেব তথাপি যং পৃছ্তি তৎ পুনরিক্রং প্রত্যনাদরেশৈ-বেতি গম্যতে ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥

#### **अ**विश्वनाश्वाक्तवर्थी।

কার্থমিতার্থঃ। সর্বাং ইস্কার্ববণ্ডনসপ্তরাত্রপর্যন্ত্রপ্রিয়জনসহরাদবিদাদাদিকসুদর্কং পশুক্তীতি সং॥১॥

মধো ভবিষ্যতি তংসিদ্ধার্থমরং সন্ত্রম ইতি চেৎ কিমত্র ফলং ক্সা বোদেশঃ কো দেবোহত পূজাদ্বেন নির্দিষ্ট ইত্যর্থঃ। কেস কর্ত্রো করণেন বা ॥ ২॥

নত্বাসক্ষা তব কিমেডৎ প্ৰেলেন তআহ মহান্কামোছভিলাবো মনাত বৰ্ততে। যথা ১ মহান্কামো যুখদাদীনামত দৃশ্যতে অভএব তং ভশ্ৰবৰে ভশ্ৰুং মাং প্ৰীণৱিত্মিভাৰ্থ: ॥ ৩॥

লেন, এ দিকে বলদেবের সহিত ভগবান্ সেই স্থানেই অবস্থান করিয়া গোপদিগকে ইস্রয়াগার্থ উদেঘাগ করিতে দেখিলেন। ভগবান্ সর্বাজ্ম। এবং সর্বদর্শী, ইহাতে যদিও স্বয়ং ঐ বিষয়ের তত্ত্ব অবগত হইলেন তথাচ বিনয়াবনত হইয়া নন্দ প্রভৃতি বৃদ্ধ ২ গোপগণকে জিজ্ঞাসা করিলেন ॥ ১ ॥

हि शिजः । जाशनामिरभन्न रकान् विषया धाँ छिएम्यांग छेशिक्ष ? इथा छिएम्यांगछ हरेरा शास्त्र ना, त्वांथ किन्न रक्ष हरेरव, योग छोहा हम छरवे धाँच कि कम, एमवणारे वा तक, कि धाकान का किन्न वा रहारा जायिकानी, कि साथन बानारे वा जाशूकान किन्नरा हम १॥ २॥

হে পিতঃ ! এ বিষয়ে আপনকার হুমহৎ কামনা দেখিতেছি গতএব আমি শুনিতে বাসনা করি, স্বিশেষ করিয়া বনুন ॥ ৩॥ নছি গোপ্যং হি সাধুনাং কর্ত্তং সর্ববিদ্যানীয় । অন্তঃস্থপরদৃষ্ঠীনাসমিত্রোদান্তবিদ্যাং ॥ ৪॥ উদাসীনোহরিবদ্বজ্য আত্মবৎ স্থহতুচ্যতে ॥ ৫॥

## सीधतवागी।

তৃকীং স্থিতং প্রত্যাহ নহীতি। সর্বাদ্মনাং সর্বাজ্মদৃষ্টীনাং অতএব ন বিদ্যতে স্থঃ পর ইতি দৃষ্টির্যেষাং পর ইতি দৃষ্টাভাবাদেব তিছেদামিত্রাদরে শিক্ষা বিশিষ্ট্র বেষাং তে কা করি কা নহি গোণনীয়ং কিঞ্চিদ্বীতার্থ: ॥ ৪ ॥

সভাপি ভেদদর্শনে উদাসীন: শত্রুবহর্জাঃ। আত্মতুলাখাৎ স্ক্র্যান্তেমুন বর্জনীয় ইত্যাহ উদাদীন ইতি ॥ ৫ ॥

## देवक्षवर्त्जामनी।

পূর্ব্বস্পায়ং জানাত্যের তথাপি যৎ পৃচ্ছতি তত্ত্রচ দোলু ঠনিব যৎ পৃচ্ছতি তৎ পুনরিস্ত্রং প্রতি অনাদরে গৈবতি গণ্যতে নারায়ণসমগুণআং তজ্জায়দানবর্ম্বাতিরাচে ইতি সংশ্যা তৃষ্ণীং স্থিতং প্রত্যাহ নহীতি সার্ব্ধেন। তত্ত্ব নহীত্যেকং উদাসীন ইত্যক্ষিকং সাধ্নামিতি তেষাং বিকর্মস্ব প্রব্ত্যা গোপ্যভাবাৎ সাধ্নামের লক্ষণং সর্বাত্মনামিত্যাদিবিশেষণ্ত্রেণ প্রমাত্মা তদ্ধীনাং
ইহ জগতি কুত্রাপীত্যর্থ:। অত তত্ত্বক্ষণবৃত্তির তিনি গোপ্যিতুং যুক্ষাত ইতি ভাবঃ ॥ ৪ ॥

নমু নিজহিতার্থং দেবতারাধকানাং কুতঃ সর্বান্মতা যুক্তা অতোহস্থপর দৃষ্টিস্থাদিকং তব নাস্তোব ইতি তবতু তথাপি নিয় গোপ্যিতুং ন যুজ্যত এবেত্যাহ উদাসীন ইতি। ধর্জ্যঃ মন্ত্রজ্জনাৎ অহত্ত স্থত্ব প্রমান্তর্জঃ পুত্র এবেত্যতো ন বর্জ্য এবেতি ভাবঃ ॥ ৫ ॥

#### ক্রমদন্দর্ভঃ।

নারায়ণসমগুণখাং। তজায়িদানবহৃদহননাচেতি সংশ্যা ভূফীং শ্বিতং প্রত্যাহ উদামীন ইতি॥ ৫॥

#### শ্ৰীবিখনাগচক্ৰৰতী।

রহস্যভাদনতিকোবিদবালকাদিষু বক্তুমনহ মিতি চেত্তত্র অস্যাতিকোবিদত্মকিবৈচিবৈত্যব দ্যোত্মলাহ ন হীতি। সর্ব্ব এবাঝান আত্মত্যা যেয়াং তেষাং অতএবায়ং সোহস্থিনকঃ অয়ং প্রো বহিনক ইতি ন বিদ্যুতে দৃষ্টি র্যেষাং তেষাং অতএব তত্তেদা-মিকোদাসীনবিদ্বা ন সন্ধীত্যাহ অমিকেতি ॥ ৪ ॥

গৃহস্থা বয়মেবজ্তাঃ সাধবো ভবিতৃৎ ন শকুম ইতি ৫5 তদিপি ময়েতদেশেপিয়িতৃং ন বৃজ্ঞাতে ইত্যাহ উদাসীনো হরিবদিতি।
তুল্যার্থকবিতপ্রত্যেরনারিণা তুল্য উদাসীনো বর্জ্য ইত্যর্থ: । অরিসাধর্ম্যঞ্চাস্যারিমিত্রত্বেনাদিকীর্বাবলারত্বদিতি
জ্ঞেনত এব। যো বিপক্ষঃ স্ক্রংপক্ষঃ স তট্রো নিগদ্যতে। ইত্যুজ্জননীলমণো তলক্ষণং দৃষ্টং। বজু দাসীনো নারিণা তুল্যোনাপি স্ক্রদা
তুল্যঃ স তুন বর্জ্যো নাপ্যপাদেয়ঃ স্কুত্যেঘিতাত এব স ন উইছিতঃ। স্ক্রদাস্থিত্বিদাস্থিকী ইত্যর্থ:। অহর পুত্রঃ স্ক্রদঃ
সকাশাদপান্তরক্ষ ইত্যর্থ:॥ ৫॥

তথাপি পিতাকে তুফীভূত থাকিতে দেখিয়া পুনরায় বলিলেন পিতঃ! ঘাঁহারা সর্বত্ত আত্মালিতে ও আত্মা ভিন্ন কিছুই দেখেন না অতএব যাঁহাদের ইনি আত্মীয়, ইনি পর,এতজ্ঞপ ভেদদৃষ্টি নাই, ভেদজ্ঞান না থাকা প্রযুক্ত ভাঁহাদ্বিগের মিত্র উদাসীন ও শত্রু কেই নাই, শে সকল পুরুষের কোন কর্মই গোপনীয় নাই ॥ ৪ ॥

স্থার যদিও ভেদজান থাকে তথাচ উদাসীন ব্যক্তিই শত্রুর ন্যায় পরিতাল্য হয়, ভ্রম্কন সাম্ব ভূল্য, তাহাকে মন্ত্রণবিষয়ে ত্যাগ করা উচিত নহে॥ ৫॥ জ্ঞাত্বাস্থা চ কর্মাণি জনোধ্যমসূতিষ্ঠতি। বিহুষঃ কর্মসিদ্ধিঃ স্থান্যথা নাবিছুষো ভবেৎ ॥ ৬ ॥ তত্ত্ব তাক্ষ্য ক্রিয়াযোগো ভবতাং কিং বিচারিতঃ। অথবা লোকিকক্তমে প্রুছতঃ সাধু ভণ্যতাং ॥৭॥ জ্ঞীনক্ষ উবাচ।

পজ্জ ন্যো ভগবানিস্তো মেঘান্তস্থাত্মমূর্তর:। তে২ছিবর্ষন্তি ভূতানাং প্রীণনং জীবনং পয়: ॥৮॥

## श्रीवत्रवामी ।

় কিঞ্চ স্থাৰিত আইবৰ ক্ষ্ট কৰ্ত্তব্যং নতু গতাপ্থগতিক্ষাত্ৰেশেত্যাহ আৰেতি অজ্ঞান্বাচ তত্ৰ বিচ্ছে। যথাৰৎ ক্ষ্মিলং স্যাৎ ॥ ৬ ॥

ভবতামনং ক্রিয়াদোগঃ শাল্পতো বিচারিতঃ প্রবুবঃ লৌকিক মাচারপরিপ্রাপ্তো বেতি সাধু সোপপত্তিকং ভণ্যতাং কথ্যতাং ॥৭॥ মাচারপরিপ্রাপ্ত এবেতি সহেতুকমাহ পর্কন্য ইতি। স্মামুর্ব্রয়ঃ প্রিয়মুর্ব্রয়ঃ। ততঃ কিমত মাহ ত ইতি ॥৮॥ 🕠 🦠

## देवक्षवटकावनो।

अकाषाठ मृष्टेभवन्भवरत्वकार्थः। कर्मानि मृष्टेामृष्टेफनानि क्वानियांशामीनि । यथा यथावर ॥ ७ ॥

তত্র তেরু কর্মস্থ ক্রিরাবোগ ইদমদ্ট জলং কর্ম ভবতাং কিং খলু বিচারিতঃ শাত্রৈকপ্রমাণৰাৎ তবিচারপ্রাপ্তঃ কিমখবা লোক-পরম্পারয়া এব প্রাপ্ত ইতি সাধু সোণপত্তিকং ভণ্যতাং। তাবদিতি প্রায়ান্তরং পশ্চাৎ কর্ম্বর্যমিত্যর্থঃ। আনেন তত্তদভিজ্ঞারশী স্চিতং। নিজাক্তিপ্রাহণায়॥ ৭ ॥

পর্জন্যো বৃষ্টিবারা ভপবানীশ্বর ইতি ভক্তিবিলেবেণ প্রীণনং সম্বর্পকং শীবদং মৃতপ্রায়াগাং তৃণাদীনাং প্রাণদং ॥ ৮ ॥

## क्ष्ममन्द्रः।

कर्त्राणि षृष्टीषृष्टेकनानि ॥ ७ ॥

ভত্তাদৃষ্টফল: ক্রিরাবোগো বিচারিত: শাক্তবারা জ্ঞাত: ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥

## গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্তী।

ক্ষিণ বৃদ্ধিনদন্তরক্ষনেন সহ বিচার্য্য জাবৈধ কর্ম কর্ত্তবাং নতু গতামুগতিক ভাবেনেত্যাহ জাবেতি। জ্ঞারা অজ্ঞান্তাচ কর্মাণি দুটাদুট্টক্লানি ক্ষুটাদি বাগাদীনি॥ ৬ ॥

ৰিচাৰ্য্য জ্ঞাবৈৰ ক্ৰিয়ত ইতি চেদত আহ। তত্ৰ কৰ্মস্থ মধ্যে ক্ৰিয়াযোগো ভ্ৰতাময়মদৃষ্টফল্এৰ কিং শাল্পপ্ৰাপ্তদেন বিচারিতঃ অথবা লৌকিক: লোকাচারপ্রাপ্তদেন ॥ ৭ ॥

লোকাচারপ্রাপ্ত এবেভি সোপপত্তিকমার পর্জন্ত ইতি। প্রীণনং সম্বর্গকং জীবনং মৃতপ্রায়াণ্যপি ভূণানীমি জীবরতীতি তৎ ॥ ৮ ॥

অপর লোকে কানিয়া ও না কানিয়া কর্ম করিয়া থাকে সত্য, কিন্তু হুহালগণ সহ বিচারপূর্বক কানিয়াই কর্ম করা উচিত, জানিয়া কর্ম করিলেই বিধান্ব্যক্তির ধ্থাবঁৎ কর্ম ফল হয়, অবিধানের হয় না ॥ ৬ ॥

অতএব জিজালা করি, আগনাদিগের এই যে কিয়া আরক ছইয়াছে এতথিবারে কি কি বিচার করিয়াছেন ? ইহা কি লাক্সতঃ প্রবৃত্ত অথবা লোকাচার প্রাপ্ত ?, পিতঃ! এতথিবারে উপপতির (বুক্তির) সৃষ্টিত বিষয়ণ বর্ণন করুন ॥ ৭॥

नम कहिरान दर छाछ। क्शनान् देख शब्ब क्रज़शी, रमयग्रका फाराज़ थिमम्हि, राहे गुकल रमच शानिज्ञाल श्रीक्रिकान अवर चीवन कांत्रन वाजि वर्षण क्रिजा शास्त्र ॥ ৮ ॥ তং তাত বয়মন্তেচ বামু চাংপতিমীশবং। দ্র বৈয়ন্তন্তেত্ত সা সিছৈ গজনত ক্রছুভিনরাং । ৯ । তাছেবেণোপজীবন্তি ত্রিবর্গফলহেতবে। পুংসাং পুরুষকারাশাং পর্জ্জত্ত কলভাবনং।
য এনং বিস্তাজন্ত্র্যং পারম্পর্য্যাগতং নরং। কামান্দ্রযান্তরালোভাৎ স বৈ নার্যান্তি শোভনং॥>•

## **टी ध्रशामी**

ভমিক্রং। বামু চাং মেঘানাং। তত্তেতদা তব্ ইপরদা । > ।

উপজীবতি জীবিকাং করমতি ধর্মার্থকামসিদ্ধরে। নমু কুব্যাদিতি জীবতাং কিমিজের্ম ডক্সাহ পূংসামিতি। ফলতাবনং কলসাধন। পর্জ্জন্যং বিনা কুয়াদি বৈফল্যাদিত্যর্থ: ॥ > ॥

## देवकदरकावनी ।

তাতেতি দ্বালনং সন্বোধনং। নিজোকৌ প্রভার্থ তবর্ধবিগদার্থক বরং গোপাঃ নচ গোপালনার্থ কেবলং বর্ষেব কিন্তন্যে নরাঃ সর্কো। নমু প্র্যঃ স্বর্নান্তি ভৌনং রসমান্তব্য বর্ষভীত্যাদি বচনাৎ প্র্যাব্ ষ্টিঃ প্রাসিদ্ধা তত্তাহ। বামু চাং মেঘানাং পতিং নেযক্ষপাশাং ক্র্যারশ্মীনামপি স্থবেশ্বর ইত্যর্থঃ। তথাচ শ্রীবিষ্ণপ্রাণে। ভৌমমেতৎ পর্যাহ্যঃ গোডিঃ প্র্যান্ত বারিছৈঃ। পর্জন্তঃ নর্কালোকন্ত ভবার ভূবি বর্ষতীতি। কুতঃ ঈশ্বরং দেবেক্রগালিতার্থঃ। অলপা তরমুৎপাদরেদ্পীতি ভাবঃ। যথা বৈষ্ণবপ্রবাণাং তবভাং নাম্তনেবতাপূলা যুক্তা তত্তাহ ঈশ্বরং অন্তর্গামিদ্টোত্যর্থঃ। অলপ সমানং। তদ্রেত্সা সিদ্ধৈরিতি তব্তত্তেম্পাক্রং স্বাম্যাভাবেনাদে তিত্তৎপূক্তির যুক্তেতি ভাবঃ। অলপাহত্রতক্রহাদিদোরপ্রদক্তেঃ। বজন্ত ইতি প্রথমপুক্রব্যার্থং মজামঃ। এরমপ্রে চোপলীবন্ধি ইতি। বলা প্রাতিপ্রায়ন্তানেন তথাগুলজ্মনত্রান্ধিজ্বদোরপরিহারার্থমন্তেযাং প্রাধান্তবিক্ষরা তৈঃ সহ বিশেষসম্ভিতন প্রথমপুক্রব্যাং॥ ১॥

নমু তর্হি তৈরমাকং কো নামোপকারঃ তত্তাহ তচ্ছেষেণেতি। ত্রিবর্গঃ ধর্মার্থকামাঃ সএব ফলং তত্ত হেতবে সিদ্ধার্থং। এবং দৃষ্টাদৃষ্ট-ফলহেতুতোকা। প্ংসামিতি তৈ ব্যাধ্যাতং। যথা নমু প্রুষপ্রথকৈ ধর্মাদিকং সেংস্থতি তত্তাহ প্ংসামিতি। দেবতাপ্রসাদেনৈব ধর্মাদিসিদ্ধো। পর্জ্জন্ত চ দেবরাজ্যাদিতি ভাবঃ। প্রুষকারাণাং উদ্যাদানাং॥

ব্যতিরেকে দোষমপ্যাহ য ইতি। কামাৎ অনৃষ্টবিষয়াৎ বেষাৎ দেবতাবিষয়াৎ তত্বপাদকবিষয়ায়। তয়াদ্বিরোধিকনহেতুক্তাৎ লোভাং দৃষ্টবিষয়াং। বাশকো হত্রাধ্যাহার্য্য:। শোভনং নাপ্নোতীহামুত্রচ তত্ত ক্ষেমং ন তাদিত্যর্থ:। অতৈবাং শুত্রজবাদিনাং ত্রিবর্গ-লিঞ্জা তদ্যোধলিহীর্যা চ শুক্তিফকনিবন্ধনেতি প্রতিপাদিতমেব। ততঃ সর্বস্বাদনাশিরোমণিতামেব ধত্তে ইতি বিবেচনীয়ং ॥ ১০ ॥

### এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তাতেতি সলালনসংখাধনেন। তাদৃশপুদাদেবতানামেবাহগ্রহেণৈব তাবদগুণবান্ যং পুত্র: প্রাপ্তোহস্যততংপুলা প্রত্যাধ্যানং যুয়া শুভংযুনা ন ক্রিব্যমিতি দ্যোতিতং। বস্তুতস্বজ্ঞে কর্তৃমাভিমানোহণি নোচিত ইত্যাহ। তন্তেত্সা তমু ইপয়স্থ সিলৈঃ॥ ১॥

তচ্ছেষেণ তালজাবশিষ্টেনায়েন উপজীবন্তি জীবিকামুপকরয়তি। নচ জীবিকাহিপি যথেষ্টবিষয়ভোগার্থেতাছ ত্রিবর্গেতি। পুরুষ-কারাণাং ত্রিবর্গার্থম্ন্সানাং কলং যদ্রিবর্গ্এব ভক্ত ভাবনং সাধকং। পর্জ্জভাত্ টি বুঁষ্টেরয়ং অয়াজ্জীবিকা জীবিকাতো ধর্মো ধর্মা হুদাম ইতার্থ:। যতো বস্তুতঃ পর্জ্জভ্রুএব ত্রিবর্গে মূলহেতুরতঃ পর্জ্জভ্রু এবেজাত ইতি ভাবং ॥

ব্যতিরেকে দোবনাহ ব ইতি। কাঁমাং স্বেচ্ছাত: লোভাং ক্রব্যব্যবাভাববিষ্মাং শ্রীষণা লোকহেতুকাং। ছেবাৎ দেবভাবিষ্যুক্ত কাং॥১০॥

আমর। এবং অস্থান্য মানবগণ মেঘপতি ঈশ্বর সেই ইস্তকে তাঁহারই বর্ষণকরা বারিতে স্থিতিছ স্লবক্ষোত ভারা যজ্ঞ করত অর্চনা করিয়া থাকি । ১।

তাহার অবশিষ্ট অংশ ঘারাই ধর্ম অর্থ কাম এই ত্রিবর্গ নিমিত সকলের জীবিকা কলিত হয়। হে বৎস। কুষ্যাদিঘারা জীবিকা হয় এমত বলিতে পাদা যায় না, কারণ পক্ত গ্রন্থই পুরুষদিগের পুরুষদার, সকলের ফল সাধ্য অর্থাৎ বারিধরের বারিবর্ষণ ব্যতিরেকে কুষ্যাদি কদাপি সফল হইতে পারে না। হে তাত। এই ইন্দ্রার্কন ধর্ম পারস্পর্যাপত আচারপ্রাপ্ত, যে মানব কান অথবা বেষ কিছা ভয় অমবা লোভ হেছু এই ধর্ম পরিত্যাগ করে তাহার কথনই কল্যাণ হয় না॥ ১০॥

## Baingipfegrais

याजिनमा नन्त्र छथात्मायाः अस्त्रीक्षाः । हेस्यात्र मण्डूः स्नत्रम् निष्ठतः थारः दक्षायः ॥ >>॥ स्थिलभवासूनाव ॥

কর্মণা জায়তে জব্ধ: কর্মণৈব প্রদীয়তে। ত্বং ছ:বং ভয়ং ক্ষেমং কর্মণোবাভিপদ্যতে ॥ ১২ ॥ অন্তি চেদীশ্বঃ কশ্চিৎ ফলরূপ্যহস্তর্মণাং। কর্তারং ভজতে সোহপি নহকর্ত্তঃ প্রভূহি স:॥১৩

## वीधत्रवागी।

ইস্তার মন্ত্যং জনরন্ধিতি কোপজনন্দারা গর্কপর্কতাদিজ্ঞমবতার্রিভূং দেবতামিরাকরণং ন্দ্রমেবাভিপ্রারঃ ॥ ১১ ॥ প্রথমং তাবৎ কর্মবাদেন দেবতাং নিরাক্রোতি কর্মণেতি ॥ ১২ ॥

নত্ন কর্মণ: কেবলাৎ কথং কলসিদ্ধি: ন্যাৎ অহো অনীক্তিয়ীমাংসানাং শ্বয়তিবিল্যিত প্রদাকর্মণ: ফলকারগথে বচনতো-হবপতে ক্রিং ততোহত্বপপন্নং নাম কেচিৎ পুনরতিসাহসভীভাঃ কর্মপরতন্ত্রমীশ্বরং মন্যন্তে তন্মতমন্দ্য নিরাকরোতি অতি চেদিতি। শবং কর্মতি রনিপ্রোহপ্যন্যেয়াং জীবানাং কর্মণাং ফলরূপী ফলদাতা কর্তারং ভক্তে তৎ কর্ম ফলদানেন ॥ ১৩॥

## देवकवरकावनी ।

ভবাদ্যেষাং ব্ৰচ্ছৌকসাং বচোনিশ্মোতি তেছপি শ্বরং বা প্রীনন্দেনৈব প্রমাণিতা বা তবৈবোচুরিতি। ইক্সায় মহাং জনরন্ধিত ত ভ বহিরজ্জননাদরণীয়ত্ত জ্ঞাপিতং পিতর্মিত্যভ প্রনাত্তরক্তং প্রমান্ত্রীরত্তক ব্যঞ্জিতং। কো ব্রহ্মান্ট্রীণ ক্রা ব্যোগিতা কিল্ল মহিন্না ব্যাপ্রোতীক্তি ক্তান্ত ব্রাক ইক্স ইতি বোধয়তি ॥ ১১ ॥

এবাং মংগিঞাদিরপনিত্যপরিকরাণাং পূলাগ্রহণে কো নাম ইন্দ্র ইতি তশ্মদহরণং যদ্যাপ মনসি বর্ততে তথাপি নরনীকা-পালনায় তদমূল্যাট্য কর্ম্মবাদত সর্প্রভাতিপ্রসিদ্ধর্যাং তত্মতাশ্রমণেনৈর প্রথমং পিলোক্তং পরিহরতি কর্মণেতি। প্রমীয়তে মিয়তে। অত্তে কর্মণেত্যত্র কর্জির তৃতীয়া। প্রলীয়ত ইতি পাঠেহপি স এবার্ধঃ। হিলীয়ত ইতি পাঠে। তু হেল্কাবের হি নিশ্চিতে। এবং জন্ম-মন্ত্রণে উক্তে জন্মমরণানত্তরঞ্ কর্মণের প্রথাদিকমাহ স্থমিতি। ক্ষেমং অভয়ং। কর্মণেতি পুনঃ পুনক্ষজিতদেক্তেভ্রাবিবক্ষয়া ভলাচ্যার্থমের শক্ষর্ম্বা। ১২॥

ফলং রূপরিত্থ দর্শবিত্থ দাতুং শীলং অস্তেতি ফলরূপী। ভল্কতে অহুসরতি। কর্মান্ত্রাবেইণর ফলদানাথ। ব্যতিরেকেণ দ্রুত্রতি নেতি। হি যতঃ কর্মাভাবে ফলং দাতুং ন শক্ত ইতার্থ: ॥ ১৩ ॥

## ক্রমসন্দর্ভ:।

এষাং মংশিতাদিরপনিত্যপরিকরাণাং পূজাগ্রহণে কো নাম ইক্স ইতি মন্মদহরণং যদ্যপি মনসি বর্ততে তথাপি নরলীলাপালনায় তদমুদ্বটো কর্মবাদমেবাবলয়াহ কর্মপেতি ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥

#### विविधनाथहळवडी।

ইন্দ্রায় ইন্দ্রমায়জননগ্য প্রয়োজনং তলার্মণগুনপ্রতিবর্ধগোবর্দ্ধনোৎসবপ্রবর্তনতত্ত্বলনিখিলপ্রিয়জনসহরাসলীলাবিলা সাদিকসুপরিষ্টাজ্জান্যতে॥ ১১॥

নরলীলতবৈব ইন্দ্রমথতকে কর্তব্যে যুক্তিমুখাপরন্ সন্ধিবিগীতমণি কর্মবাদমান্তিত্য দেবতাং নিরাকরোতি কর্মণেতি ॥ ১২ ॥
নমু জড়াং কর্মণঃ কেবলাং কথা কলসিন্ধিরতঃ কর্মকলদাত। ঈর্মরোহ্বপ্রাপেক্য ইত্যপি কেবাফিয়াতং তত্মাহ অন্তি চেদিতি।
ফলরূপী অঞ্জনকৃত্তকর্মণাং ক্লালাত। নোহপি কর্তারং ভলতে অহুসরতি কর্মাস্পারেণেব ক্লানাং। ব্যতিরেকেণ জুড়াভি নেতি
হি যতঃ কর্মান্তাৰে ফল্যু দাতুং ন শক্ত ইত্যর্থ: ৪ ১৩ ॥

তকদের কহিলেন, নন্দ এবং অন্যায় ব্ৰজবাসিদিগের ঐ দকল বচন প্রবণ করিয়া ক্রোধোৎপাদন দারা গর্বারূপ পর্বত হইতে ইন্তকে অবতারণ করাইবার অভিপ্রায়ে ভগবান্ কেশব পিতার প্রতিনিম্ন লিখিত বাক্য প্রয়োগ করিলেন । >> ।

जन्म कितान की विमाज कर्य बाजा छैर निम हम अवः कर्य बाना है विनम खाल हहेगा शांक, विनिम्न खाल हिया शांक,

ভারং কর্মে নিজিপ্ত হইয়াও অন্ত জীবদিগের কর্মকল দাতা কোন লখন যদ্যপি পাকেন তিনিও কার কল দান বাল্লা কর্ডারই ভালনা করেন, কেন্দ্রা যে ব্যক্তি কর্ম দা করে তাহার তিনি আছু নহেন ভার্মাৎ কল দানে সক্ষম হইতে পারেন না ॥ ১৩ ॥ কিমিন্দ্রেণেই ভূতানাং সং সং কর্মানুবর্তিনাং। অনীদে নাজধা কর্ত্ত্ব সভাববিহিতং নৃণাং ॥১৪॥ সভাবতত্ত্বোহি জনঃ সভাবননুবর্ততে। সভাবস্থনিদং সর্বাং সদেবাহ্যরমানুবং॥ ১৫॥ দেহানুচ্চাবচান্ জন্তঃ প্রাপ্যোৎস্কৃতি কর্মণা। শত্রুমি ত্রুদাসীনঃ কর্মের গুরুমীশবঃ॥ ১৬॥

## क्षित्रवामी।

অতঃ কর্মণ এব কলসিছেত্তংপারতত্ত্যে চ অজাগলন্তনভূল্যভার দেবতরা ক্লৃত্যমিত্যাহ কিমিল্রেণেতি। নমু কর্মণাপি প্রবৃত্তি-রস্তর্থাম্যপেক্ষরৈব কথং সর্মধা দেবতায়ামম্প্যোগ ইত্যাশস্ক্যাহ অভাববিহিত্মিতি। অজ্বাবেন প্রাক্তনসংস্কারেণেব বিহিতং যৎ কর্ম তদন্যথা কর্জুমনীশেন॥ ১৪ ॥

এত্রিবণোতি অভাবতর ইতি। প্রবৃত্তে: সংস্থারাধীনত্বাং কিমন্তর্যামিণেত্যর্থ: ॥ ১৫ ॥ তত্মাং, অফ্লাবতো নিশারক্ত কর্মণ এব সর্মকারণত্বাধ । কর্মের পুরুমিত্যাহ দেহানিত্যাদি সার্চ্বেন ॥ ১৬ ॥

## বৈষ্ণৰতোষণী.।

তত্তাপি ভূতানাং প্রাণিমাত্রাণাং কর্মান্নবর্তিনাং প্রাক্তনকর্মান্নসারেণ স্থহঃখং ভূঞামানামিক্রেণ কিং কর্মণ এব তত্তত্তাগকারগহাং। তেরু নৃণাঞ্চ কর্মান্তরোপার্ক্রকানাং বং বং বভাববিহিতম্ভ্রণা কর্তুমনীশেন তেন কিং বভাবত্তৈব তত্তৎকর্মপ্রত্তিকারণহাং॥ ১৪ ॥

সর্কমিতানেন গৃহীতানামপি দেবাদীনাং পৃথগুক্তির্বিচারাদিশভাবেহপি তদ্ভিক্রমণাশক্তে: ॥ ১৫ ॥

প্রাপ্যোৎস্কৃতি প্রাপ্নোতি ত্যক্তি চেত্যর্থ:। শত্র্বাদ্যোহপি কর্ম্বৈ একল্পৈর ক্লাচিচ্ছক্রতায়া: ক্লাচিচ্ছিত্রতায়া: ক্লাচিচ্ছলা-সীনতায়াশ্চ দর্শনাং। নহ জ্ঞানং বিনা কর্মপ্র প্রপ্রস্থেক্ত জ্ঞানার্থম্পদেষ্টায়মবশ্বমপেক্ষতে ত্ত্রাহ প্রকৃরিতি। অনৃষ্ঠং বিনোপদেশাঞাপ্তে: প্রাপ্তেম্প্রপদেশে তৎফলাদিসিক্ষে:। নহ কর্মণো কর্ড্যন তৎফল্লাতা প্রক্রপেক্ষাতে ত্ত্রাহ ঈশ্বরশ্বেতি। ঈশ্বরস্থাণি কর্মাহুগ্রাং তল্পিক তাল্শশক্ষে: ॥ ১৬ ॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

ভূতানাং প্রাণিমাত্রাণাং কর্মান্ত্রর্তিনাং প্রাক্তনকর্মান্ত্যারেণ স্থত্ঃখং ভূঞানানামিক্রেণ কিং কর্মণ এব তত্তোগকারণদাং তেরু নৃগাঞ্চ কর্মান্তরোপার্জ্ককানাং স্বং স্বভাববিহিত্যন্যথাকর্তু মনীশেন তেন কিং॥ ১৪॥

- স্বভাবস্যৈর ভত্তৎকর্মপ্রার্ত্তিকারণড়াৎ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥

## श्रीवित्रनाथहक्तवर्छी।

অতোহৰাগলন্তনত্ল্যাথার দেবতরা কৃত্যমিত্যাহ কিমিল্লেণেতি। মন্ত্র কর্মণাপি প্রবৃত্তিরন্তর্থাম্যপেক্ষরৈর কথং সর্বাধা ক্রেপ্রেলাগ ইত্যাশব্যাহ স্বভাববিহিতমিতি। স্বভাবেন প্রাক্তনসংস্কারেণ বিহিতং কর্ত্তব্যব্দেনাপস্থাপিতং যথ কর্ম তদেব কর্ত্ত্যমন্ত্রী দ্বীবং প্রের্মতি নত্তনাদিত্যতঃ স্বভাববিহিতমেব কর্ম অক্সথা কর্ত্ত, স্বসমর্থেন ইল্লেশ পুন্ধনীরেন কিং ম কিমপি ফলমিত্যর্থ: ॥ ১৪ ট

এতি বির্ণোতি। শভাবতর: প্রাক্তন্সংস্থারাধীন:। শভ: শভাবমস্প্লীকৃত্য তত্তৎকর্ণণি শ্বর্থেব প্রবর্ততে ইতাস্বর্থানি-ণাপি ন কিমপি ফলমিতি ভাব:॥ ১৫॥

তন্মাৎ স্বভাষতো নিশাল্লস্য কর্ম্মণ এব সর্মকারণম্বাৎ কর্মের পুষ্ণামিত্যাহ দেহানিতি সার্মেন ॥ ১৬ ॥

অতএব কর্ম হইতেই যদি ফল সিদ্ধি হইল এবং সকলে যদি কর্মেরই পরতন্ত্র হইরা পড়িল,তবে কর্মানুবর্ত্তি প্রাণিগণের ইন্দ্রে প্রয়েজন কি ? অজাগলন্তনত্ল্যত্ব হেতু তাহাতে কোন কার্মাই দৃত হর না। যদি বল অন্তর্গমি ব্যতিরেকে কর্মে প্রবৃত্তি জন্মে না, ইহাতে কোন দেবতার উপযোগিতা নাই এমত বলিতে পারি না, উত্তর, প্রাক্তন সংস্কার কর্তৃক কর্ম সকল বিহিত হয়, তাহার অক্তথা করিতে ইক্স বা অক্য কোন দেবতারই ক্ষমতা নাই ॥ ১৪॥

ফলতঃ প্রাণিমাত্রই স্বভাবের পরতন্ত্র, সকলে সভাবেরই অসুবৃত্তি ক্রিয়া থাকে অভএব স্থার, অস্তর, মানব সহ এই সমস্ত জগৎ স্বভাবেই অবস্থিত। ১৫।

অপর জীব সকল কর্ম বারাই উচ্চাবচ (বিবিধ) দেহ প্রাপ্ত হইরা পুনরার তাহা পরিত্যাগ করে, কর্ম বারাই দক্তে অধ্বা মিত্র কিয়া উদাসীন হয়, অতএব কর্মই সকলের ভক্ত, কর্মই করে আইং স্থাবতঃ নিজ্ঞার কর্মই সকলের কারণ, স্বভ্নাং কর্মই পুজা। ১৬। ভক্ষাৎ সংপূজ্যেৎ কর্ম সভাবস্থঃ স্বকর্মকৃৎ। ১৭ ॥ অঞ্চসা যেন বর্ত্তেত ভদেবাস্ত হি দৈবতং ॥ ১৮ ॥ আজীব্যৈকতনুং ভাবং ষত্ত্বসূপজীবতি। ন তত্মাদিদতে ক্ষেমং জানামার্য্যসতী যথ । ॥ ১৯ ॥ বর্ত্তেত ত্রহ্মণা বিপ্রো রাজজো নক্ষয়া ভূবঃ। বৈশ্যস্ত বার্ত্তয়া জীবেচ্ছুদ্রস্ত দিজসেবয়া ॥ ২০ ॥

## धिशतकाती।

नःश्वादि नःमानस्य ॥ १४ ॥

নমু দেবতোদেশক্রব্যত্যাগাল্যাক্সকাথ কর্মণং কথং দেবতাং বিনা সিন্ধিরিত্যাশক্ষ্য কর্মাক্ষ্যাত্রং দেবতেতি পক্ষমুপসংহর্মির হেতুবাদ্যাশ্রিত্য অন্যামের দেবতাং সমর্থয়তে অঞ্চলেতি ॥ ১৮॥

হেতৃবদেনৈৰ বিপক্ষে দোষমাহ আজীব্যেতি উপজীবতি সেবজে। ১৯॥

সহজিং বজুং দৃষ্টাস্তত্বেন বর্ণানাং ব্যক্তিভেদমাহ বর্তেতেতি ত্রান্ধণা বেদাধ্যাপনেন ॥ ২০ ॥

## देवकवटकावनी।

ভক্ষালা ক্ষত্বেরস্থানের্হেডোঃ স্বভাবন্থ: সংস্কারত এব স্বয়ং কর্ম নিশাদ্যতে ইত্যেতদৃষ্টিঃ সন্ধিত্যর্থ:। যথা। যথাৎ স্বভাব এব কর্মান্তরপ্রবর্তকঃ কর্মের ফলদাত তত্মাৎ কেনচিলোবেশ আন্ধান্যনর্হভাবান্তরাম্গমেৎশি যত্মাৎ স্বভাবস্থতদর্হভাবস্থ এব সন্স্বকর্ম-ইং তদর্হকর্মক্ষদের্চ লন্ কর্মেডি কর্মানীব্যমের সংপ্রায়েৎ নতু বহিন্ত দেবাদীনিত্যর্থ: অগ্রে তথৈব ব্যক্তঃ॥ ১৭॥

ভদেবাহ অঞ্নেতি। হি ষতঃ ভূথপূর্ককং বেন যো বর্ত্তে যৎ ব আজীবোৎ তদেবাত জনত দৈবতং ॥ ১৮ ॥

একতরং তাবং একং পদার্থং আজীব্য-জীবনোপায়ং ক্লবা তত্মানজন্মাৎ জারাদিতি তৎ সামানাধিকরণোন দৃষ্টাতঃ। জার্মিতি ক্রিং তথাপি তবেব তাৎপর্ব্যং পিআদিবত্যত্মৌদ্ধত্যমিদং তৎ কর্তৃ ক নীচারাধনজেন কোপেটনুব ইতি জ্ঞেয়ং॥ ১৯॥

অধুনা অক্সানীব্যপুদামের সাধরিভুমালাবাদ্মমো গোরুভিত্মাহ বর্ত্তেতি বাভ্যাং॥ ২০॥

### क्रममञ्ज्

ৰশ্বাং শভাব এব কৰ্মান্তরপ্রবর্তক: কবৈম্বিচ ফলদাত ডশাদোবেশ আহ্মণাদ্যনহ ভাবান্তরাহগমনে চিলি বহাং সভাবস্থাদহ ভাবান্থ এব সন্। শক্ষাক্ত ওদহ কৰ্মান্তৰ সন্। কবেতি কথাজীব্যমেৰ সংপ্ৰবেং। নহ বহিরস্থানে বিদিছিত। থিং। অধ্যে তথৈৰ ব্যক্তেঃ ১৭ ৫ ১৮ ৫

ভশ্বাদনাশ্বাৎ জারাদিভি তৎ সামানাধিকরণোন দৃষ্টাভঃ। পিত্রাদিখণেশ্রন্ধভানিদং তৎ ক'র্ছক নীচারাধনজেন কোধেনেভি জেয়ং॥১৯
শ্বকশ্বাজীব্যপূজামেব সাধ্যিতুমান্থনো গোর্ভিজ্মাহ বাভ্যাং ॥ ২০ ॥ ২০ ॥ ২০ ॥

## **अविश्वनाथठकवर्ती**।

সংপূত্তৰে সংখানয়ে কৰ্মসামান্যস্থাহি পূজাত্ত্বি কৰ্মবিশেষকরণে শাস্ত্রণের প্রমাণমিত্যাহ। স্বভাবত্বঃ প্রাজ্ঞানিবর্ণতঃ স্বস্থ বিহিত্তে কর্ম করোতীতি সং॥ ১৭॥

মতু তদপ্যত্ত দেবতোদ্দেশেন দ্ৰব্যত্যাগাত্মকভাৎ যাগত কথা দেবতাং বিনা সিদ্ধিরিত্যাশত্ত্য কর্মান্তমাত্রং দেবতেন্তি মতমনীকুর্মন্ ভেতুবাদমাপ্রিত্যান্যামের দেবতাং সমর্থয়তে অঞ্জমা স্থাধন বর্ত্তেত জীবেত ॥ ১৮॥

(बकुरामरेमर विशयक माध्याह आसीरवाकि। **উপন্ধী**ৰতি সেবতে॥ ১৯॥

তত্মানস্বাকং ৰ এবাজীব্যঃ সৈব দেষতেতি বক্তু: দৃষ্টাস্তত্মেনাক্তেযামপ্যাহ বর্তেতেতি বিপ্রান্ত বেদশান্ত্রাধ্যেব দৈৰতামি। রক্ষ্যা ভূব ইতি ভূরেব উদ্যা দেবজু।। বার্ত্তরেতি বার্তির ডক্ত দেবতা বিজন্তশ্রুষেত্তি বিজ্ঞা এব তন্ত দেবতা ইত্যর্থ:॥ ২০ ॥

অভএব বভাবস্থ হইয়া স্বীয় কর্মকারি পুরুষের কর্মেরই পূজা করা কর্ত্তব্য ॥ ১৭ ॥

वञ्च**ः** य योशांत बाता वर्जमान हम, छोहांत्र छोहां हे एनवछ। ॥ ১৮॥

নতুলা যে কাক্তি এক প্রকার ভাব অবলম্বন করিয়া অসতী নারীর জারসেবার স্থায় পুনরায় অস্ত ভাব সেবা করে, ভাহার ঐ ভাব হইতে কখনই কল্যাণ হয় না ॥ ১৯॥

্ৰতথ্য বিশ্ৰন্থতি বেদাধ্যমন খানা, ক্ষিত্ৰয়গণ পৃথিবীপালন খানা, বৈশ্ৰন্থতি ক্ষিবাণিজ্যাদি খানা এবং শুত্ৰগণ বিভশুক্ৰা খানা বৃত্তি করিয়া খাকে॥ ২০॥ কৃষিবাণিজ্যগোরকাক্শীদং ভূর্যমূচ্যতে। বার্ত্তা চভূর্বিধা উত্ত বঁয়ং গোর্ডরাইনিশং ॥ ২১॥ সত্তং রক্তস্তম ইতি ছিভূত্থপত্যস্তহেতবং। রক্তসোৎপদ্যতে বিশ্বমহাভাত্যং বিবিধং জগৎ। রক্তসা চোদিতা মেঘা বর্ষস্তাস্থান সর্বতঃ। প্রকাতৈরেব সিধ্যস্তি কিং মছেস্তঃ করিষ্যতি ॥২২॥ ন নঃ পুরো জনপদা ন গ্রামা ন গৃহা বয়ং। বনৌকসন্তাত নিত্যং বনশৈলনিবাসিনঃ ॥ ২০॥

## क्रिश्तवामी ।

বৈশ্বব্যক্তভাতুর্বিধ্যমাহ স্ক্রবীতি ক্রমিবাণিজ্যসহিতা গোরকা এবং ত্রেং কুশীদং বৃদ্ধিনীবনং চতুর্বং ॥ ২১ ॥

নমু গ্ৰামণি বৃত্তিম হৈক্সাধীনৈবেত্যাশস্থা নিরীশ্বসাংখ্যমতাশ্রেণ নিরাক্রোতি সন্ধতি সোক্ষরেন অস্তোন্যং জীপুরুষ-যোগেন। সর্বাত ইতি সমুজশিলোধরাদিখণি বৃষ্টিদর্শনাৎ ন প্রেক্ষাবং পূর্বাক্ষং বৃষ্টেছিতি ভাবঃ। তৈরেব মেবৈরেব সিদ্ধান্তি জীবস্তি॥ ২২ ॥

তথাপি বোগক্ষেমার্থং দেবতাপেক্ষেতি চেদত আছ ন নঃ পূর ইতি। 'পুরঃ পত্তনামি জনপদা দেশাঃ অত্মাকং বোগক্ষেমহেতু ব'ন-শৈলাদয় ইতি ভাবঃ॥ ২০॥

## বৈষ্ণবভোষণী।

অনিশমিতি বৈশ্রেদপি গোপদাৎ ন ক্লয়াদিকাপি বৃত্তিরিতি ভাব:॥ ২১॥

পূর্ব্বপূর্বং কারণক্লপং বিবিধং বিশ্বমভোগ্যং স্ত্রীপূক্ষবাদিযোগেন বিবিধং জগজ্ঞপং সহৎপদ্যতে। সন্ধাদীনাং ছিত্যাধিহেতুত্বং শুভাবত এবেতি ক্ষেমং॥

মহেন্দ্র ইতি সোপহাসং মেখানাং ততাপি রজোধীনভাৎ ॥ ২২ ॥

বনাত্মের ওকাংসি যেষাং তথা ভূতা জাতৈত্যর বরং অতএব ন কদাপাছাত্র প্রযাম ইত্যাহ নিত্যমিতি। হে তাতেতি তমার্করতি এবং শ্রীঃবার্ম্বনসমীপে নিজবাসন্ত স্থাচিতঃ ॥ ২৩ ॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ ৷

্ন ন ইভি ছাজ্যাং। তদানীং শ্রীগোবর্দ্ধনসমীপ এব ব্রহ্ণং বোধয়তি ॥ ২৩॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

স্বস্য বৈশ্যত্তাহন্তামপি বৈশ্যবার্তাং বিশিষ্যাহ ক্ষরীতি। ক্ষবিবাশিজ্যাত্যাং সহিতা গোরক্ষা কুশীদং বৃদ্ধিজীবিকা। গোর্ড্যঃ গোরক্ষণবৃত্তয়ং অনিশমিতি ক্ষাপ্যাপংকালেহপি ক্ষাদিক্যস্মাতি নিক্রিয়ত ইতি গাব এবাস্মাকং দৈবতত্বাং পূজ্য। ইত্যর্থ: ॥ ২১ ॥ নমু গ্রামপি বৃত্তি ম'হেক্সাধীনৈবেত্যাশক্ষ্য নিরীশ্বর সাংখ্যমতাশ্রহণ নিরাক্রোতি সন্ত্মিতি হাত্যাং। অন্যোদ্যং স্ত্রীপুক্ষব্যো-

র্বোগেন॥

সর্ব্বত ইতি সমুদ্রশিলোধরাদিবপি রৃষ্টিদর্শনায়াপ্রেক্ষা পূর্বক্তং বৃষ্টেরিতি ভাব:। তৈরেব মেবৈরেব সিদ্ধান্তি জীবস্তি ॥ ২২ ॥
কিঞ্চ গা বর্দ্ধরতীতি গোবর্দ্ধন ইতি ব্যুৎপত্তে র্যাথার্প্যেনবামুভূরমানত্বাদ্ধানার হৃতি গোবর্দ্ধনাধীনৈবেতি গোবর্দ্ধনন্দ পূজ্য ইত্যাহ।
নৈতি ছাত্যাং। পূরং পত্তনানি জনপত্না দেশাঃ কিন্ত গোধনচায়ক্ত্বাৎ বনৌকসঃ॥ ২০ ॥

তন্মধ্যে বৈশ্যদিগের বৃদ্ধি চতুর্বিধ, কৃষি, বাণিজ্য, গোরক্ষা এবং কুশীদ। আমরা গোপজাতি, গোরকাই আমাদের বৃত্তি, নিরস্তর তাহাই করিয়া থাকি॥ ২১॥

পিতঃ! সত্ত্ব, রজঃ এবং তমঃ ইতি তিনগুণ স্থান্ত ছিতি প্রলয়ের হেডু, রজোগুণ দারা বিশ্ব উৎপদ হয়, তদনন্তর পরস্পার হইতে অফাফ বিবিধ জগৎ হইয়াছে। ঐ রজোগুণকর্ত্ব প্রেরিত হইয়া মেঘ সকল সর্ব্বে বারিবর্ষণ করিয়া থাকে, প্রজাপ্ত সেই মেঘ দারাই জীবিত হয়, মহেন্দ্র কি ক্রি-বেন । ২২ ।

হৈ তাত ৷ আমরা বনবাসী, বন ও পর্বতে বসতি করি, পত্তন, দেশ ও আম এ সকল আমাণৈর কল্যাণ হেডু হইতে পারে না, বরং শৈলাদিই আমাদের যোগকেমের কারণ ১২০ ৮ ভদ্মদিয়খাং আক্ষণানামত্রেশ্চারভ্যক্তাং মধঃ। য ইস্ত্রমধনংভারাক্তিরয়ং সাধ্যতাং মধঃ॥ ২৪ ॥ প্রচ্যক্তাং বিবিধাঃ পাকাঃ সুপান্ডাঃ পায়দানয়ঃ। সংযাবাপুপশক্ল্যঃ সর্বদোহক গৃহতাং॥ ২৫॥

## शिशवचामी।

ব্রাহ্মণানশি সংগ্রন্ নিগ্যয়তি তত্মাদিতি। ত্রমুৎপ্রেক্তিযাগপ্রয়োগকরনামাহ ব ইক্রমণসভারা ইতি সার্ভপ্রভার। সভারা: সাধলানি ॥ ২৪ ॥

স্থাং মৌলাং। পাষদং কেবলে প্যাদী প্ৰকং। সংযাবাদ্যো গোধ্যাদিবিক্রিয়াঃ। ক্রমশ্চ স্থপায়সংগ্নাঃ শ্রুত্যা দোহস্যাথিতো-ইন্যোৰাং পাঠতঃ ॥ ২৫ ॥

## বৈঞ্বতোষণী।

তমাদালীবাদাৎ তব্ৰ বাদ্ধণানাং গবাদিবং প্রাগস্থকিঃ সর্বালীব্যতয়। সামান্তত এব প্রাপ্তেরিতি ভাবঃ। তথাচ মহঃ। উত্তমালোভবাইজ্যান্তান্ত্র প্রবিশ্ব। সর্বালিবং প্রাগস্থিকঃ সর্বালিবং রাজ্বণঃ প্রভুরিত। আলীব্যতয়েজকেরি বনভাস্থিকেরেওাল্বালিকরে।
প্রাপ্তেরের বা মুখ্যবাং। যথা স্থান্দে। অহা বৃন্দাবনং রম্যং যব্র গোবর্জনো গিরিরিতি। অব্র দেবতানাং সম্ক্রয়াং।
মধ্য টকবচনোকে দেবতাব্যারাধনাত্মক এক এবারং মথো জ্বেয়ঃ। বক্যতে চ তদ্বুব্যেণ গিরিবিলানিত্যাদি। ইত্যান্তিগোদিলমধ্বিতি । তথাপি কৃষ্ণবৃত্তমাং রূপমিত্যাদিনা তত্তিব মহিষদর্শনাং। তদভেদদর্শনাক্ত শৈলকৈর মুখ্যবাং অবগম্যতে। যদ্যণি প্রীর্ন্দাবনভূমৌ নন্দীব্রাইক্ট বরসায়্থ ধবলগিরিসোগিজিকাদ্রো বহবোহস্তরো বর্তত্তে। তথাপ্যবালিঃ শ্রীগোর্বজন এব ভ্রামনিক্তিবলাং।
পক্ষমে কুলাচলমধ্যে গণনেন তং পাদস্বরূপতভদভেত্তত্বৈ মুখ্যবাং লোকশান্ত্রয়েত্তত্বৈ পুল্লপ্রসিদ্ধেঃ পুল্লিত উত্তর্বাপ্রে
সমুদ্ধরণাপ্তবৈক্রেন্দেশ্বেবারক্টেত্যাদিপ্রসিক্তেন। তরামগ্রহণং অতিসন্নিহিতত্বেন ব্রল্গিমিনেশে তত্তৈব স্থিতত্বেনচ তত্তেব জ্বোণ্ড বিক্রেন্সান্তিনিরাকরণেন ইক্রপ্তা প্রবালকতাকেঃ। এবং জ্ব্যাহরণপরিশ্রমীভাবন্দ স্চিতঃ। এতচ্চ তত্তাধিককোপ্রনান্ত্রাগভ্রমিত । এবং পারন্দ্রশান্তিহনেনার্ব্যাগভ্রমিত। ২৪॥

নহেক্রযাগাদপ্যথং মথো বিশেষতঃ সংপান্য ইত্যাশ্রেন তৰিধিবিশেষমুপদিশতি পচ্যস্তামিতি চতুর্জি:। পাকাঃ পচনীয়া অন্নব্যঞ্জনানয়:। তথা ব্যঞ্জনানা। আদিশব্দেন গৃহীতানামপি সংযাবাদীনাঃ পৃথঞ্জিঃ প্রাচ্য্যাপেক্ষা। সর্বাদাহ্য বিবরণং যথা হরি-বংশে। ত্রিরাত্ত্রিকেব সন্দোহ্য স্ক্রোষস্য গৃহতামিতি। অন্যক্তঃ। তত্র শ্রুতা আনিত্তাপক্ষরণাত্রপমিত্যর্জ্ব। দোহস্য হ্রম্য অর্থতঃ প্রয়োজনবশাৎ প্রথমত ইত্যর্থঃ॥ ২৫॥

#### क्रयमञ्जर्भः।

জন্মানাজীবারাং। মত্র সর্বাত্ত প্রসিংকঃ প্রাহ্মণা অপি সংগৃহীতা। দেবতানাং সমূচ্চরাং মধন্য চৈক্ষাং দেবতাত্রয়ারাধনাত্মক-এবারং মধঃ। তথাপি গোবর্জনস্য মাহাত্মাবিশেষদর্শনাত্তনীয়তা প্রসিদ্ধিঃ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥

#### विविधनायहळवर्दी।

প্রাক্ষণানামাশিষো ইস্মাকং প্রত্যক্ষকা ইতি তেংগি পূজা ইতি স্বমতে তানপ্যস্কুরররাক্ষীতত্মাণিতি। সংভারাঃ সাধনানি ॥২৪॥

क्षिण অর্বাঞ্জনাদরঃ। স্থান্তা ইতি স্থান্য ঔঞাং। পার্নাদর ইতি পার্ন্য শৈত্যমণেক্ষিতং ভবজীতি ভাবঃ। সংবাবাদরে। গোপুষাদিবিজিরাঃ। সর্কোনেব ব্রন্থানিনাং বোধা বোধা প্রক্রিকাটি শিল্পানি বিজিরাঃ। ২৫॥

অতএব গো, ত্রাহ্মণ এবং পর্বতের যজ আরম্ভ করুন। ইন্ধ্রেয়জার্থ বে সকল দ্রব্য সামগ্রী সংগৃহীত হইয়াছে তদারাই এই বজ্ঞ সম্পূর্ণ হউক ॥ ২৪॥

পায়সাদি মুন্স ও সূপ পর্যান্ত বিবিধ প্রকার পাক তথা গোধুমাদি বিকার, পিউক এবং শকুলী প্রস্তুত হউক, আর সর্বে প্রকার দোহন গ্রহণ করা যাউক ॥ ২৫ ॥ কুয়স্তামগ্র: সম্যগ্রাক্ষণৈ র স্থানিভিঃ। অনং বছগুণং তেভ্যো দেয়ং বো বেশুদক্ষিণাঃ। অন্যেভ্যশ্চাশ্বভাগালপতিতেভ্যো যথার্হতঃ॥ ২৬॥ যবসঞ্চ গবাং দত্তা গিরয়ে দীয়তাং বলিঃ। স্থলক্কতা ভুক্তবন্তঃ স্থগুলিপ্তাঃ স্থানিসাঃ। প্রদক্ষিণঞ্চ কুরুত গোবিপ্রানলপর্বতান্। এতন্মম মতং তাত ক্রিয়তাং যদি রোচতে॥ ২৭॥

## औरतवागी।

যাগশোভার্থং প্রক্ষোৎপাদনার্থঞাছ ভ্রান্তানিতি। ধেনুদক্ষিণাঃ ধেনুসহিত। দক্ষিণাঃ তা এব বা দক্ষিণাঃ বো যুম্মাডিঃ ॥ ২৬ ॥ যবসং ভূণং ॥ ২৭ ॥

## देवक्षप्रकावनी ।

ক্রমবিধিমাহ হ্যস্তামিতি। বেদাভ্যাদপরৈত্র ক্রিলৈণেরয়য়ঃ সম্যক্ হ্রম্নাং। যথা। সম্যগ্তির ক্রিণেরিফবরাক্ষণৈরিত্যর্থং। বছবং পার্হপত্যাদিত্রয়াপেকয়া দক্ষিণায়েরপি তত্র রক্ষ্মাদিহননাপেকয়া গ্রহণং বছগুণমিতি বছবিধমিতি বা পাঠঃ॥

অন্যেত্যা ঋণিতিতরভা বিপ্রেভ্যো বৈশ্ববৈভ্যো দীনেভ্যো যাচকেভ্যান্ত। কিং বিশেষনির্দেশেন খাদীনভিব্যাপোবান্নাদিকং দেয়ং। যথাইতো যথাযোগ্যং দেয়ং কেবলমিক্সং বর্জারিছেতি ভাবং ॥ ২৬ ॥

গ্রাং গোভ্যঃ বলি গ্রূপুষ্পাত্যপচার: ॥

নচান্যকতাবদিদং হংখদাধাং কিন্তু পরমন্থ্যময়নেবেতাাই স্বলমিতি। ভূকবন্ত ইতাত প্রাক্ পশ্চাৎ ইব শব্দাপ্রয়োগো দরিদ্রং প্রত্যেব ত্বচনৌচিত্যাৎ। যদ্যপ্রেক্টিবাত্র গ্রাদীনাং পরিক্রমবিধানং তথাপি তত্তৎপূজান্তে পৃথক্ পৃথগেব জ্বেয়ং। পূজান্তকর্তবাত্রান্ত আত্র গোধনানি পূর্ক্তা গিরিং চক্রু: প্রদক্ষিণং ইতি গিরে: পরিক্রমঃ পৃথগেব বক্ষাতে। উদাহরিষামাণহরিবংশ-বচনেন্চ নান্যথার্থ: ক্রাতে। স্বলক্ষতা ইত্যাদিকানিত্র নতু বিশেষণানি কিন্তু প্রেরোচনার্থম্পলক্ষণানি ততো নাক্ষয়ে প্রশিক্ত তদভাবেছপি তরিঃস্কৃত্ত্রপি তৎসিদ্রে:। তত্মাদ্যবাদীনাং ভোজনাৎ পূর্কমেব পরিক্রমঃ। অন্তেম্ব মহাভোজনসমাধানারের তৎপশ্চাদিতি গ্রাঞ্চ পূজা ন স্কা্রাং অসংখ্যত্বাং কিন্তু ম্থ্যানামেব। তত্ত্যানাং পরিক্রমন্চার ইতি ॥

হে তাতেতি যদি মনি স্নোহো বর্ত্ততে তহি ক্রিয়তামিতি গুঢ়োইভিপ্রান্ধ: যদি রোচত ইতি পুঞ্চোরু তথৈবাকেযোগ্যন্ধাৎ। তেনচ বিনয়বিশেষেণ তৎক্বতাতামের সম্পাদয়তি॥ ২৭॥

## ক্রনসন্দর্ভ:।

ক্রমবিধিমাহ। হয়স্তামিতি। স্বলঙ্কতা ইত্যাদিকানি প্ররোচনার্থমূপলক্ষণানি নতু বিশেষণানি তানি বিনাপি ফলসিছে:। অত স্তত্তপুজানস্তরং তত্তংপ্রদক্ষিণা ভোজনানস্তরং ঞ্জীগোর্বন্ধনপরিক্রম:। গোধনানি পুরস্কত্যেত্যাদি পৃথগুক্তো । ২৬ ॥ ২৭ ॥

## औ বিশ্বনাপচক্রবস্তী।

যাগশোভার্থ: প্রকোৎপাদনার্থকাই হ্রস্তামিতি। ধেহুসহিতা দক্ষিণা: বো গুছাভি:। স্বনতে অন্তাঞ্পর্যন্তান্ সর্কানের এক-বাসিনো হতুকুলরলাহ অন্যেতা ইতি ॥,২৬॥

বলির্গন্ধ পূশাতাপচার: ॥ ২৭ ॥

অপর ব্রহ্মবাদী ব্রাহ্মণগণ সম্যক্ প্রকারে অমিতে হোম করুন, আপনারা তাঁহাদিগকে বছণ্ডণাই বিত অম এবং ধেমু সহিত দক্ষিণা দিউন। কুরুর, চণ্ডাল ও পতিত প্রভৃতি অন্যাস্থ ব্যক্তিদিগকৈও যথাযোগ্য দান করা যাউক॥ ২৬॥

সম্প্রতি গোসকলকে তৃণ দিয়া পর্বতকে পুজোপহার প্রদান করুন এবং উত্তম রূপে আছার করিয়া শোভন বসন পরিধান পূর্বক হান্দর রূপে অলম্বত তৃথা অমুলেপিত হইয়া সো, আমাণ, আমাণ এবং পর্বত এ সকলকে প্রদামণ করুন। হে তাত। আমার এই মত, যদি ইছো হয় তবে এই প্রকার করুন। ২৭॥

भवः भाजान्त्रगाजीगाः मञ्क पविद्या मथः।

धीलक खेबाहता ः

কাল্বাস্থনা ভগৰতা শক্রনপঞ্জিবাংসয়া। প্রোক্তং নিশম্য নন্দাদ্যাং সাধ্বগৃহ্স্ত তৰচঃ।
তথা ক্রিদ্রাদশুঃ সর্বাং যদাহ মধুস্দনঃ॥ ২৮॥
বাচয়িছা স্বস্তায়নং তদ্বোণ গিরিভিজান্। উপছত্য বলীন্ সম্গাদ্তা যবসং গ্রাং।

## **अ**ध्ययामी

সর্কান্ শিরংকম্পেনাস্থ্যোদয়রাহ গোব্রাহ্মণাত্রীণামিতি। মন্ত্রক্ষ মমচ ॥ ২৮ ॥
· তদ্পুব্যেণ তেন মহেক্সমধন্তব্যেণ গিরিধিজান্ প্রতি যথাযথং বলীমুপজ্তা দক্ষা আদৃতাঃ সাদরাঃ ॥ ২৯ ॥

## देवसव्दर्शवती।

কিঞ্চ অন্নং গোত্রাহ্মণান্ত্রীপাং মধো মহুং চ দ্বিতো হিত ইতার্থ:। হিতার্থবোগে হি চতুর্পী ভবতি। কথমণি স্বহিতং জ্ঞাত্বা মদ্বিত-তৈবচ ভবদেককর্ত্তবাতামমূল্য ভবস্তমিদং প্রার্থনে ন কেবলং যুক্ততামেব নিশ্চিত্যেতি ভাব: ॥

কালস্যাপ্যান্থনা প্রবর্ত্তকনেতি সর্ক্ষেরাং তদেকাধীনত্বং স্চিতং। আয়ং তহুচোগ্রহণে হেতুং। বহা। পরমণজিসবং। অত-ইজ্রদর্পন্তস্যেধ্বকর ইতি ভাবং। বহা বদা পক্রবাগং প্রবর্তি ত্রনানীং সএব প্রবৃত্তঃ। অধুনা চার্যমেবেতি তদিছ্টেরব সর্ক্ষং প্রবর্তিতে তামতিক্রমিতৃং কং পক্রোতীতি ভাবং। বহা। কালং শ্রামণ আ্লাবা দেহো বত্তেতি প্রামন্ত্র্যান্তর্গান তহুচনা-ক্রীকরণ্মিদং ন চিত্রমিতি ভাবং। শক্রস্য বো দর্গং প্রস্থানস্যাপি স্বপিত্রাদির প্রাক্তগোপদৃষ্টা তেবাং সহন্দেন স্বিদ্ধান মাত্র দৃষ্টা বাচ্মনাদরাক্সক:। যএব অহো শ্রীমন্মাহাজ্যং গোপানাং কাননৌক্রসাং। ক্রক্ষং মর্ত্যমুখানিত্য যে চক্রুদেবহেলনমিতি প্রাক্রটাল ক্রামান্য জিলাংসরাহতএব মহ্যং জনম্বিক্র্যকং। জন্যথা ভর্মেব স্যার্যস্থান। মহ্যজননঞ্চেদং তম্মস্থাবন্ধেনৈত তলতাস্কর্ণ্যনিক্রত্রেতি॥

শত এবাহ তথা চেতাৰ্দ্ধকেন। তৰিশেষক শীহরিবংশে। আনন্দজননো বোষে। মহাকুদিতগোকুল:। তুর্যপ্রশাদঘোষণ্ট বুষভাশাঞ্চ গর্জিতৈ:। হ্বারবৈণ্ট বৎসানাং গোপানাং হর্বর্দ্ধন:। দধ্যে হ্রনং সরাবর্ত্তঃ পর:কুল্যা সমাকুল ইত্যাদি মধুস্বন ইতি পরম্নামর্থ্যস্তানন শক্রাত্ত্বাং ভরাভাবং বোধয়তি স্নেবেণ মধুপবং সারপ্রাহী মিইরস্স্য বিশেবেণ ভোক্তা চেতি। ত্ব্য প্রিয়ভ্মদাস্বর্থামধ্প্রবর্ত্তনং তত্ত্বচ বক্ষ্যমাণতব্লিভোক্ষনাদিকং যুক্ষাত এবেতি ভাবঃ ॥ ২৮ ॥

ৰাচরিছেত্যাদি সাইছিলনকেন সকলবৈগ্ৰান্দ্যতে ক্রমস্ত একিকোকেবিধাহসারেণৈব ক্রের:। আদৃতা ইতি কর্তগ্যার্থং॥ ২৯॥

## ক্রমসন্দর্জঃ।

জন্মং গৰাদীনাং মথো মহুং মম চ দ্বিতো হিড:। শক্রস্য দর্পেহিরং শ্রীগোকুলে শ্রীক্রফেচ অবজ্ঞান্মক:। অহো শ্রীমদমাহাত্ম্য-মিড্যাদিনা ব্যক্তীভাবিতাং ॥ ২৮॥

বাচন্নিছেত্যাদিকং অনুবাদমাত্রং ন ক্রমতাংপর্যাকং ॥ ২৯ ॥ ৩ • ॥

## श्रीवित्रनाथठ जनवर्डी ।

मंदर वम । कानाचना हेळ्मधनःहात्रक्न ॥ २৮ ॥

তদুবোণ ইক্সণস্থাণ গিরিছিলান্ গিররে ছিলেন্সান্ত উপজ্ঞা দ্বা আদৃত্যা ক্ষেন গ্রাং গোন্ডা। অনভ্তিরনোরাংকৈ এইরপ বস্তু গো বিপ্র প্রভৃতির প্রিয় এবং আমারও অভীপ্সিত। শুকদেব কছিলেন হে রাজন্! কালক্ষণী ভগবান্ হরি ইক্রদর্গচূর্ণকরণ বাসমান্ত ঐ রূপ বলিলে নন্দ প্রভৃতি গোপগণ শুনিয়া সর্বতোভাবে তদীর বচনু এহণ করিলেন, আর তিনি যে প্রকারে যাহা ২ বলিলেন সেই প্রকারে তৎ সমুদ্রির বিধান করিলেন। ২৮॥

भारत चिख्यामन कतारेवा रिक्टयब्सार्च खेवा चौत्रा क्षत्र ७ क्ष्ट्रमविनिट्शत यथारवागा विन क्षान्त

গোধনানি পুরস্কৃত্য গিরিং চক্রুং প্রদক্ষিণং ॥ ২৯ ॥
অনাংস্থানুক্তানি তে চারুস্থ স্বলস্কৃতাঃ। গোপ্যশচ কৃষ্ণৰীর্য্যাণি গায়ন্তঃ স্থিকাশিমঃ ॥ ৩ ॥
কৃষ্ণস্ত্রতমং রূপং গোপবিঅন্তণং গতঃ। শৈলোহস্মীতি ব্রুবন্ ভূরি বলিমাদগৃহ্দুপুঃ ॥ ৩১ ॥

## श्रीभद्रशामी ।

অন্তুদ্ৰুজানি উত্তমান্তুত্তিযুঁজোৰি সৰিজাশিয় বিজাশীর্জিঃ সহিতাঃ ॥ ৩০ ॥ গোপবিলক্তণং গোপানাং বিশাসজনকং রূপং গতঃ প্রাপ্তঃ সন্ বলিমুপ্হারং আদৎ অপ্তুক্ষরং ॥ ৩১ ॥

## देवस्थवरकांवनी।

কথং চকু স্বত্তাহ অনাংসীতি। তৰিশেষশ্চোকো হরিবংশে। ততো নীব্রাজনার্থং বৈ বৃদ্ধশো গোকুলানি বৈ। পরিবজ্র গিরিবরং সব্বাণি সমস্ততঃ। তা গাবং প্রক্রতা হুটাং সাপীড়কনকালদাং। সম্রগাপীড়লুলাগ্রাং শতশোপ সহস্রশা। অফুলগ্মুন্চ গোপালাঃ কালরন্তাে ধনানিচ। ভক্তিছেলাফ্রিপ্রালা রক্তপীতাসিতাম্বরাং। মার্বচিত্রাল্ভিনো ভূজৈং প্রহরণাবৃত্তিঃ। মর্বপত্রচিত্রন্দ কেশ-বিদ্ধান্তিতঃ। বল্লাক্র্যিকা সমবারে তদাড়ুতে। অক্তে ব্রানাক্ষত্ত্র্তিত্তান্তিত না ব্রাক্ত্রিকিং গোপাং সমবারে তদাড়ুতে। অক্তে ব্রানাক্ষত্ত্রিক পরে মুলা। গোপালাত্ব্যে সা বৈ র্জগৃহ ব্রেগামিন ইতি। অত্ত গোকুলানীতি গোকুলত্তা জনা ইত্যর্থঃ। সর্বাণীতি তানিচ নিল্পনিক্রতিত্তা সহ বর্ত্তমানানীত্তার্থঃ। গোপ্যন্তানাক্ষত্ত প্রদ্ধিকং চকুঃ। চকারাভ্যামুভরেবামপি প্রাধান্তান পরিক্রমণে নির্কিশেষ মুক্রা শ্রীগোপীনাং কঞ্ছিবশেব্যাহি। ক্রমন্ত বীর্যাণি শ্রীগোর্ব্জন্যক্ত প্রবর্ত্তনান্তানি গারন্তা ইতি সম্বিজ্ঞানি ইত্তনেন বিপ্রা ক্ষপি সন্ত্রীকাং প্রদক্ষিণং চকুরিতি স্ক্রতে ॥ ৩০ ॥

ইক্রযাগাদপি অপ্রবর্তিরা যাগভাভ পরমোত্তমত্ব দর্শরন্ তামন্ বিখাদং নিতরাং জনরন্ জীগোবর্জনমিবেণ পৃথক্ বরং তল তেরিন বিভূবি তহলিম্বামিনং নিজদাস্বর্গ্য তং গোণাংশ্চ সর্কানানন্দরন্ বলিদানান্তর্মেব সাক্ষাত্ত্বলিং বৃভূজে ইত্যাহ ক্লছিতি। তুশকং

## ক্রমসন্দর্ভ:।

অন্যতম্মিতি তমপ্রতায়েন তদানীং তত্তংস্মাধানার্থং অভাভূপি বহুনি রূপাণি প্রাহ্যুতানীতি লভ্যতে। বহুনাং **প্রকর্বে** 

## **अ**विश्वनाथहकवर्ती।

বু হৈ যুক্তানি। তে গোপাশ্চ গোপাশ্চ প্ৰদক্ষিণং চকুং। সিজ্জাশিয়ং গীয়েমানাতি বিজ্ঞাশীর্ভি: সহিতাং। বিজকর্ত্কাশিবোহপি গায়ন্তা ইত্যর্থ:॥ ৩০॥

স্বপ্রবর্তিত্যাগদ্যাদাধারণমূৎকর্বং দর্শরংস্তত্ত সর্কেবাং বিখাদং জনয়ন্ স্বয়্রমেব দেবতারপেণ প্রত্যক্ষীবভূবেত্যাই ক্রফাছিতি।
অন্যতমং গোবর্জনপর্বতোপরি বিত্তীয়ং পর্বতিমিব সর্কেন্দ্রিয়বৎ স্বরূপং গতঃ প্রাপ্তঃ গোপানাং বিস্তম্ভং পর্বত এবায়মিতি বিশ্বাদো
যত্ত তা শৈলোহন্দীতি এতদ্বেশাধিপতিরহমেব যুদ্ধন্তক্ত্যা প্রদল্পঃ প্রাত্রভ্বং স্বশাভিমতং বরং রুগুতেতি ক্রবন্ বলিং নৈবেদ্যং দ্রহৈন্দ্রিক্টিইছ নিক্রামাদিবর্তিভি বা একবাদিজনৈরপরোক্ষতঃ পরোক্ষতো বা ধ্যানেন সমর্প্রমাণং সহস্রকোটহত্তত্তত স্থানাদতিন্দ্রিনিতিদীব্যক্তপানিভিরাদার তাংখ্যানানক্ষরাদং ভূত্তেক স্ব॥ ৩১॥

করিলেন এবং সাদরে গাভীদিগকে তৃণ দিলেন। তদনন্তর গোধন সকল অগ্রে করিয়া প্রতি প্রদক্ষিণ করিলেন॥ ২৯॥

তীহারা সকলেই উত্তমরূপে অলম্বত হইয়া প্রকৃষ্ট ব্যভ বুক্ত ভূরি ২ শকটে আরোহণ করিয়া-ছিলেন। গোপীগণও আহ্মণদিগের অশীর্বচন সৃহিত জীক্তের বীর্য্য গান করত শক্টাক্সড় হইয়া। ছিলেন। ৩০।

ভগবান শ্রীকৃষ্ণ গোপদিগের বিশাসজনক অন্ত প্রকার রূপ এহণ করিয়া "আমি শৈন" এই বাক্য উচ্চারণ করত পুজোপকরণ ভক্ষণ করিলেন। তৎকালে তাঁছার কলেবর নাতিশার দিশাল তিমা নমো ব্রক্সনে: সহ চক্রে ইত্মনাত্মনে ।অহো পশাত শৈলোহসো দ্বপী নোইমুগ্রহং ব্যধাৎ ॥৩২ এবোহবজানতো মর্ত্যান্ কামরূপী বনোকসঃ। হস্তি ছব্মৈ নমস্থামঃ শর্মণে চাত্মনো গবাং।

## विधववामी।

ভব্ম লান্ধনে আত্মনা স্বরং এজজনৈ: সহ নমশ্চক্রে। অহো ইতি সান্ধিলোকং পঠন্ ॥ ৩২ ॥ কামরূপী স্পাদিরূপ: তব্মৈ অত্তরে শর্মণে কেমার। কর্ম্মবালং প্রাক্ স্বভাবো গুণো বা কর্মালং বা, তহুশো বা মহেশ:। বার্কা-

## देवंकवरकावनी।

পূর্বভোবিশেষে। অন্তর্মতি বহুলাং প্রকর্ষেণ মহিধান্যং। অততাল সর্বকর্ম সমাধানার্থং সর্বগোপগোষ্ঠিসন্থোষার্থমলক্ষিতং বছলি ক্লপাণি আবিষ্ ভানীতি লভাতে। তামিল্ প্রকর্ষণ বৃহস্বাপেক্ষরেতিরূপমাকারং অতএব বৃহস্পর্যত তং। অতএব ভূরিং প্রচ্রতরমণি বলিং তং সর্বমেব অভ্তক । এবং সর্বগৌকুলবাসিনাং তালৃশপ্রেমেকাতত্তত চ তথা লালসাত তথা ভোলনমিতিচ জ্বেং। তছকং হরিবংশে। তং গোপাং পর্বভাকারং দিবাজগল্পলেশনং। গিরিম্দ্রি ছিতং দৃষ্ট্। ষ্ট্রা জয়াঃ প্রধানত ইতি॥ ৩১॥

তমা ইতার্দ্ধকং ক্লাই ইতান্ত্রতে। প্রজ্ঞানী প্রত্যাক্ষরে সহেতি প্রজ্ঞানামপ্রাধান্যং ব্যক্তা ভক্তাতিশরব্যাক্ষণং ব্যক্তিতং। চক্রেংযানেতি আকানান্যপ্রাধান্যং আলা ক্লাক্ষরাক্ষণ ক্লিত্রথাই ব্যক্তিহং ব্যধান্য চাল্যবিহণি পূর্বার্যকর্ষার্যক্ষিত্র স্থানি ত্র ব্যক্তিহং ব্যক্তিহং ব্যক্তিহং ব্যধান্য হল বিশ্বনার্যক্ষিত্র স্ক্রিত্রথাইং ব্যধান্য। রূপিন্তেন সাক্ষান্ত্রাণানান্দিনা চ॥ ৩২॥

অভকাংশ নিহ্তীতাহ এব ইতি অবলানতঃ অবজাং কুর্মতঃ। সর্মেধাং সাক্ষান্তদবশেষবলেঃ স্থানেব ভক্ষণং দৃষ্ট্ ভি ভাবঃ।
বহা যাগাকরণেনানাদরং কুর্মত ইতি পুনঃ পুনভালাগোশভিপ্রেতঃ। মর্ত্তান্ মরণধ্র্মণীলান্ ভক্রাপি বনৌকসং গৃহহারাদ্যাবরণশুন্যানিতি হননে স্কর্জং দর্শিতং। হে বনৌকস ইতি বা। চকারাদ্যবাদীনাং রোগোংপাদনাদিনা পীড়য়ভি চেতি। পাঠাভবে হি যত্মাং হক্তি অতো বয়ং নমস্যামঃ বন্দেমহি আয়ুনো গবাঞ্চ শর্মণে। যহা আয়ুনো যা গাবভাগামিতি গবাং শর্মণৈব তেহাং
জীবনসিকেঃ। অল পিত্রাদিছপি নমস্থারপ্রেরণেয়ং তেন রপেণাবভারাভ্রেরণে পুত্রভাভাবাং ন বিরুদ্ধা। নারায়ণাদির তেষাভবা ব্যবহারাং। এতদনস্তরং সাক্ষান্তস্য বৃহ্মুর্ভেরাদেশত শ্রীহরিবংশে। অদ্য প্রভৃতি চেল্লো হংং গোষু চেদভি বো দয়া। অহং
বঃ প্রথমো দেবঃ সর্মকামকরঃ ভভঃ। মম প্রভাবাচ্চ গবামমৃতান্যের ভক্ষাব। শিবশ্চ বো ভবিষানি মন্তকানাং বনে বনে। রংসোহহং
সহ মুমাভির্যধা দিবি গতন্তথা। যে চেমে প্রথিতা গোপা নন্দগোপপুরোগনাঃ। এষাং প্রীভঃ প্রয়ন্তনি গোপানাং বিপুলং ধনং।
পর্য্যাপুরন্ত বিপ্রামাং গাবো বংসসমাকুলাঃ। এবং মম পরা প্রীতি ভবিষ্যতি ন সংশ্যু ইতি॥

বাস্থদেবেন সর্বাধিষ্ঠাত্রা প্রচোদিতা ইতি তেষাং জত্পদিষ্টবিধানতিক্রম:। তত্ত্ব সর্বান্মনা স্থপদাতিবিশেষোহণি দর্শিতঃ।
যথা যথাবং। সহক্রফাঃ ক্রফেন সহিতা ইতি প্রীতিবিশেষোদয়েন তং তাক্তুমশক্তান্তেন মিলিছৈব গোবর্দ্ধনেশানকোণস্থ শীরাধা-

#### ক্রম্পর্শন্ত:।

ভ্ৰমপ্ৰকৃষ্টৰ্ক বৃহৰ্মাত্তেণ । ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩১ ॥

## প্রীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ততক তবৈ আন্ধনে আন্ধনা দেহেন শবং ব্ৰুক্তনৈঃ সহ নমক্তকে। আন্ধনে ইত্যাকারনোপ আর্থ:। আহো ইতি সার্দ্ধলোকং পঠন্॥ ৩১॥ ৩২॥

कांगक्रभी मर्भानिक्रमः। हि छत्रार॥

ব্দিরীখরশীমাংসাদাধ্যবােদ্ররীকৃতিতাদিক্রমণভদার্থং নতু তে সন্মতে সভাই। যথাতঃ প্রীস্থামিচরণাঃ। কর্মেরালং প্রাক্

### ह्य । ७५ ।

তদনম্বর অজবাসিদিগের সহিত আপনি আপনাকে নমস্কার করিলেন এবং এই বাক্য বলিতে লাগি-লেন, কি আশ্চর্যা দেখ, এই মূর্ত্তিমান্ পর্বতে আমাদিগের প্রতি অমুগ্রন্থ বিধান করিতেছেন ॥ ৩২ ॥ কামরূপী এই শৈল সর্পাদিরূপ হইরা, যে সকল বনবাসী অবজ্ঞা করিতেছিল তাহাদিগকে হত্যা করিতেছেন, আইস, আপনাদের এবং গো সকলের ক্ষেমার্থ আমরা ইইটিক নম্কার করি। হে রাজন্। ইত্যন্তিগোছিজনথং বাহুদেবপ্রচোদিতাঃ। যথা বিধায় তে গোপাঃ সহক্ষণ জ্ঞাই যধুং॥ ৩৩॥
॥ ২০। ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশনক্ষে ইন্দ্রমথভক্ষচতুর্বিংশোহধ্যায়ঃ॥ ২৪॥ ২৪॥ ॥

ত্রীবাদরায়ণির বাচ॥

ইক্সন্তদাত্মনঃ পূজাং বিজ্ঞায় বিহতাং নৃপ। গোপেভ্যঃ কৃষ্ণনাথেভ্যো নন্দাদিভ্যশ্চু কোপ হ॥১॥

## **औ**धत्रवाशी।

কর্ত্রী দেবতেতীয়মূক্তা দেবক্ষোভেষকাতী নম্বভীষ্টা॥ ৩০॥ ॥ ॥॥ ইতি দশ্যে চতুর্বিংশঃ ॥ ॥॥
পঞ্চবিংশে ক্ষা শক্ষে ব্রজনাশায় বর্ষতি। উদ্ধ তা গিরিমাগারাদরক্ষৎ গোকুলং প্রভঃ ॥ • ॥ ক্ষো নাথো বেষাং তেভাঃ ॥ > ॥

## বৈষ্ণবডোষণী।

কুঙাৎ ক্রোশৈকোপরি দ্বিতং ব্রজং ব্যুবিতার্থ:। ইথং দেবতানিরাকরণকর্মবাদাবভারণেন কর্মণাং প্রাধান্যং স্থাপিতং। তত্রচ সংস্কারবদেনৈর কর্মপ্রবৃত্তিরিতি সংস্কারস্য কর্মমূল্যেন কর্মনিষ্ঠতৈবাভিত্নপ্রতা। অতোহস্তর্যামিনা যথা প্রের্যাতে তথাস্থারত ইতি ন্যায়েন ঘটমানা কর্মানাস্ক্রিরিপি পরিস্কৃতা। তত্রচ সন্ধাদিগুণস্বভাবেন জীবিকাবশ্যং দিদ্ধোদিক তদর্থপ্রয়াসাভাবেন কদাচিৎ কর্মণো লোপন্ট নিরন্তঃ। যোগক্ষেমক্রিরোপজীব্যাবশাপ্রোক্তঃ। ইতি সর্ক্রণা কর্মণাং প্রাধান্যমেব দৃদীকৃতঃ ওচ্চ সর্ক্মশেষ-কর্মপ্রধাননিকভক্তিপরতার্থমেব। ভক্তিপরতারান্দ মুখ্যলক্ষণং তত্তকার্চনমিতি হরিদাস্প্রীগোবর্দ্ধনপূত্রনমিতি সিদ্ধান্তঃ। তত্ত্র নিগৃত্নারং শ্রীকৃষ্ণাভিপ্রারঃ। যোহহং পূর্ণপরমেখরঃ সত্রব তেরাং পূলাদিরপঃ তত্ত্বাং কো নামৈযামীখরঃ কা বা দেবতা অন্যাপর্বর্তকন্ত তৎপ্রেমমন্ত্রঃ সভাব এব স্যাৎ। যদিচ নরলীলয়া দেবতান্ত্রীকারন্তদা মরিকট্সন্থন্ধন্য এব যুজ্যেরন্ তথাপি নরলীলা-রক্ষার্থং ন তত্ত্বাঞ্জিত্বসূৎসহে ভুন্মারিরীশ্বরমীমাংসাসাংখ্যবাদাপদেশেনৈর তত্ত্বেধায়িত্ব তথা প্রবর্ত্তামীতি। তব্যনাত্রাপি সর্ক্রের্যাহং॥ ৩৩॥

💂 ॥ \* ॥ देखि औरेवक्षवटायगाः प्रममिष्यनगाः प्रकृतिरंभः ॥ \* ॥

বিজ্ঞায় সাক্ষাদমূভ্য় বিহতাং দ্ৰব্যাণামপ্যন্যত্ৰ ব্যৱাৎ। ক্ষঞ্চনাথেতাঃ তত্ৰাণি গোপেতাতাদৃশব্ৰৰ্বাসিভাতত্ৰাণি জীনন্দাদিভা-ইতি কোপেন ছ্ৰ্মান্মত্তা ছুৰ্কু দ্বিতা চ স্থচিতা। হ ক্ট্মেব। ভদমূ্ৰ্বপ্ৰাবহাৱাৎ। স ইতি কচিৎ পাঠঃ প্ৰমহ্ৰ্কু দ্বিবিভাৰ্থঃ ॥ ১॥

### क्रमममर्डः।

॥ \*॥ ইতি ত্রীদশমে ত্রীকীবগোম্বামিক্বতক্রমদলর্ভে চতুর্বি: ॥ \*॥

উভ অপ্যर्द मह भई क्रि:। (मरवस्मग्राभारयोगा श्रवहरकः ॥ > ॥ २ ॥ ७ ॥ ८ ॥

#### **ब**िविश्वनांशहक्तवर्छी।

স্বভাবো গুণো বা কর্মাঙ্গং বা তথশো বা মহেশ:। বার্ত্তা কর্ত্তী দেবতেতীয়মূক্তা দেবকোভেষয়তী নম্বভীষ্টা॥ ৩০॥

# \* । ইতি সারার্থদর্শিন্যাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। চতুর্বিংশোহত দশমে সম্পতঃ সক্ষতঃ সভাং ॥ \* ॥ পঞ্চবিংশে সকোপোক্রাবিক্রে নাশার বর্ষতি। প্রজন্য রক্ষামকরোহন্ত্যাচলমচ্যতঃ॥ • ॥

কঞ্চনাপেভ্যোহপি চুকোপেতি ইক্স মোট্যং তৎকোপস্য চ বৈষ্ণল্যং প্রথমত এব দর্শিতং ॥ > ॥

সেই সকল গোপ বাস্থদেবের মত্রণায় উক্ত প্রকারে পর্বত গো এবং বিপ্রদিগের যজ্ঞ যথাবৎ অমুষ্ঠান করিয়া তাঁহার সহিত পুনরায় ব্রজে প্রত্যাগত হইলেন॥ ৩০॥

॥ 🗰 ॥ 🏻 देखि मणरम ठजूर्विः भ . ॥ 🕸 ॥

পঞ্চবিংশ অধ্যায়ে জোধ বণতঃ ইন্দ্র কর্তৃক জজ বিনাশার্থ বারি বর্ষণ এবং জীক্ষকর্তৃক গিরি ধারণ পুরঃসর পোকুল রক্ষা বর্ণন ॥ • ॥

শুক্দের কৃত্তিনের বাজন ! সেই সময় কেবরাজ আপনার অর্চনার জনেছদ সমগত হইয়া নুলাদি যে সকল গোপগণের অক্তৃত্বই নাথ (প্রস্কৃ) জাহাদের প্রতি অভিশয় কৃপিত হইলের ৮ ১ ম পশং সম্বর্দ্ধকং রাম মেখানাঞ্চাজকারিপাং। ইন্দ্রঃ প্রাচোদয়ৎ কুছো বাক্যঞ্চাহেশনাম্যত ॥ ২ ॥

শহে প্রিয়মনান্দ্রায়াং পোপানাং কাননোকসাং। কুষ্ণং মর্ত্ত্যমূপাঞ্জিত্যপ্রেষ চকুর্দেবহেলনং ॥৩॥

যথাদৃদ্ধিঃ কর্মময়ৈঃ ক্রভুভিনামনোনিভৈঃ। বিদ্যামাধীকিকীং হিম্না তিতীর্ষস্তি ভবার্ণবং ॥ ৪ ॥

## अध्ययामी।

কুছঃ সন্ ইক্স: সম্বৰ্তকং নাম সম্বৰ্তঃ প্ৰশায়ঃ তৎ কৰ্তারং মেঘানাং প্ৰসিদ্ধং গণং প্ৰাচোদয়ৎ প্ৰেবরামাস। নমু কথং ক্কুনাথানাং বাতে প্ৰবৃত্ত ইত্যাশক্য আত্মসন্তাবনয়া নিপ্ততবিবেক্তাদিজ্ঞাশয়েনাহ বাক্যঞ্চাহেত্যাদি পঞ্চিঃ ঈশমানী অহ্মেবেশর ইতি গর্কন্বান ॥ ২॥

(प्रवाहननः (प्रवाध मर्भावकाः ॥ ७॥

অদৃট্য: অসমবৈ: কর্মনবৈ: ক্রিয়ানিকতির্ত্য: অভএব নামনোনিট্ড: নামমাত্রেণ বা নাব ইতি ব্যবহ্রিরত্তে তৎ সুদ্দৈ: আৰী-ক্রিকীং আক্সান্ত্রস্বতিরূপাং॥ ৪॥

### देवकवटकावनी ।

- ক্লান্ত: প্রানয়ন্তৎকারিণাং জতএব সম্বর্তকং নাম অপ্যর্থে চ শক্ষঃ। যদা চকারাদাবহুপ্রবহাদিবাতগণক। প্রকর্ষেণ গর্মোক্যা তেরামুৎসাহ্যদ্ধনাদিনা প্রেরয়াযাস। উত অপ্যর্থে স চ গ্রহারূপঃ দেবেক্স্যাপ্যবোগ্যে প্রবৃদ্ধেঃ ॥ ২ ॥

অহো আশ্র্যাং কাননৌকসামিতি নিক্সভ্তমজ্জকণিতিপ্রেডা। পত্যপণতিশক্ষণাপ্ররো নাম কুম ধর্মাধি প্রাপ্তঃ উপাপ্তায়ব্যতাবিচ্নত্য কতঃ তদেব মর্ডায়্পাপ্রিত্যেতি দেবজেনাশ্বনো মর্ড্যায়াহাত্মাসিকেঃ দেবেত্যুক্তং ন চ মনেতি। তথা অষরত্যাগেন মর্ড্যাপ্রারপল্পাবোগ্যতাবোধরার্থকৈতি মরি তাবদেববৃদ্ধিনিপি ন চকুঃ। অল্পতরাং দেবদেববৃদ্ধিনিতি তাবঃ। অল্পত বনবাসিলেন গোপজেন চ
পরমসাত্মিক্ষানিকং তেষাং কৃষ্ণং পরব্রহ্মাদিমস্ব্যক্ষপং ইতি তক্ত চ ভক্তবাংসল্যং। অত্তম্বর্থ ক্রক্ত দেবছেলনং বৃক্তমেবেতি সরস্বতীবাঞ্জিতত্ত্বার্থঃ ॥ ৩ ॥

অনৃচৈ: ক্ষিক্ষনকৈ: ৰত: কৰ্মিয়ৈ: তথা তিতীৰ্ষন্তি মৃঢ়া: তথা শ্ৰীক্ষম্পাশ্ৰিত্য মমাপ্ৰিয়ং গোপাশ্চকুরিত্যবিচারেণাবোগ্যাচরণমাত্রে দৃষ্টান্তঃ। যথা তথা মাং হিছা কৃষ্ণাশ্ৰরেণ গোপা ভর্ছ:খাদিকং তিতীৰ্ষনীতি ইক্স কোধাবেশেনাসমাধ্যং বাক্যং
জ্বোং। তথাৰ্থশ্চায়ং যথা বৈষ্ণবা: কম্মতি: সহাধীক্ষিকীং হিছা কেবলক্ষ্ণাশ্ৰয়েণ ভ্ৰাৰ্থণ ভিতীৰ্ষনীতি ॥ ৪ ॥

#### **अ**विधनां थहक वर्षी ।

্ কোপং বির্ণোতি গণমিতি। সংবর্ত্তঃ প্রায়ন্তৎকর্তারং মেঘানাং গণং চকারাদাবহঞ্জবহাদিসাংবর্তক্ষাতগণ প্রাচোদরৎ প্রেয়য়াস। ঈশমানী অহমেবেশ্বর ইতি গর্কবান্॥ ২ ম

শ্রীশ্চ নালাহর্বক মাহাস্কাঞ্চ তেবাং দক্ষৈকাং। মর্জ্যং মর্প্তেত্যো হিতং। দেবস্য মম স্কৃষ্টক হেলনমিতি সরম্বত্যপৌ বাজবং ॥ ৩ ॥ অদৃহৈ: অসমবৈং কর্মমবৈং কেবলক্ষ্পপ্রচুরৈরতএব নামেব নৌত্বৈদ্যান তু বস্ততঃ। আৰীক্ষিকীমাত্মাস্থানানরপাং। বস্তত্ত কর্মমবিং ক্রেড্ডাঃ সহ আৰীক্ষিকীং হিছা অবজ্ঞরা ত্যক্ত্য কৃষ্ণমাশ্রিত্যৈব বৈষ্ণবা বথা ভবাগবং তিতীর্বতীতি কৃষ্ণাশ্রম্পমাত্তেশৈব ভবাগবিস্তা গোবংস্পদত্তে আতে তত্ত্বপার্থপ্রস্থানিটিছাং। তেবাং তিতীর্বামান্তমিতি ॥ ৫ ॥ ৫

ইক্স ক্রুদ্ধ হইয়া অন্তকারি বারিদপ্টলীর যে প্রসিদ্ধর্গণ প্রলয় করে ভাছাদিগকে পাঠাইয়া দিলেন এবং আমিই ঈশ্বর এই গর্ক্সে পর্বিত থাকাতে এই বাক্য বলিলেন ॥ ২ ॥

বিষ্ণবাসি বৌপদিসের ধনমদের কি আশুর্য, মাহাস্ক্র । ভাষ্ট্রার মানুষ একটা কৃষ্ণকে আশুর করিয়া আমি বে দেব আমার স্বব্জা করিল ॥ ০ ॥

বেষক শক্ত প্রকাশে পাত্রাক্ষরের কথা জাতীকিকী কিন্যা প্রতিয়াক করিয়া পদুড় (ক্রিয়ানির্বর্ত্ত) বে সকল বাগ যান, বাছা নাম নাজে নোক সদৃশ, ভদারা ভবসাগর পার হইতে বাসনা করে॥ ৪ । ি । বাচালং বালিশং স্তর্মজং পণ্ডিভ্রমানিনং ক্রিফং মর্ত্যমূপাঞ্জিতা গোপা মে চজুরপ্রিরং ॥ ৫॥

এবং শ্রিয়াবলিস্তানাং ক্রেফন শ্রাপিভান্ধনাং । ধুমুক্ত শ্রীমদন্তভং পশুরুদ্ধক সংক্রাং ॥ ৬॥

## গ্রিধরত্বামী।

বাচালং বহুভাষিণং বালিশং শিশুং পণ্ডিতমানিনং পণ্ডিতম্বনাং অতস্করং অবিনীতং ইতি নিলায়াং বোজিতাপীক্রস্য ভারতী শ্রীকৃষণ স্থোতি তথাছি বাচালং শাল্লবোনিং এবমপি বালিশং শিশুবদ্ধিনতিমানং। স্তরং অন্যস্য বন্যস্যাভাবাৎ অনমং। অল্পং নান্তি জ্ঞোবন্দাক্র প্রথা কর্মানিক ক্রমণ ক্রমণ ক্রমণ কর্মণ পুরং ক্রম। মর্ত্ত্যং তথাপি ভক্তবাৎসন্যামন্ত্র্যভ্যা প্রতীয়মানমিতি॥ ৫॥

অবলিপ্তানাং মন্তানাং গ্লাপিতাত্মনাং বৃংহিতদেহানাং ধুকুত অপনয়ত শ্রীমদেন যঃ তত্তো গর্ক তং ॥ ৬ ॥

## বৈষ্ণবতোষণী।

বাচাল মিতাাদিকং সত্তক্তক শক্ষাবাদাবতরণাদ্যভিপ্রায়েণ গোপাইতি নিক্টখং মে ত্রিলোকীখরতেতি জ্মাদভরেণ স্থচিতং। অক্সতৈঃ। তল্পতিপক্ষে বাচালমিতি বাচা হেতুনা অলং সমর্থ ইত্যেবার্থঃ। মন্থ্যীয় নিচ্প্রতায়ন্ত নিন্দায়ামেবাভিধানাং। শিশু-ব্দিতি বালিশঃ শাবকে মূর্থে ইতি বিশ্বপ্রকাশাং। অক্ষবিদাং মাননীয়মিতি তংকত্কো মানো বিদ্যুতে যত্তেতি॥ ৫॥

এবং ছুর্বৃত্তাভিশরার্থং তেষাং দোষং তেনায়্মতের বোষভরং চ বোধরিরাহধুনা অক্তামাদিশতি এযামিতি ক্ষেন হৈতুনা প্রিরা পশুবর্গলকণশন্তা। মন্তানাং ইত্যানস্তরং বুংছিতদেহানাক্ষেতি বাহুং স্থং দর্শিতং। তত্র চ ক্ষেনেতি তংকতগোপালনাদিনা ক্ষীরাহ্যপ্রোগশপ্তেরিতি ভাব:। অভাইতঃ। তত্র ধমনং নাম সভেক্ষীকরণং তচ্চ বৃংহণতাৎপর্যকং শিচ্ প্রয়োগত তেযাং কৃত্বং ক্ষুক্ত হেতুক্ত্ স্মিত্যপেক্রেতি ভোৱং। যরাশ্বতঃ প্রিয়া স্থ্যাগাং বিশেষতঃ ক্ষেন সতেক্ষীকৃতিচিত্তানামিতার্থঃ।

#### क्यमनर्छः।

স্বতঃ শ্রেমাবলিপ্তানাং বিশ্বেতঃ শ্রীক্লফেন সতেজ্বীক্তচিত্তানামিত্যর্থঃ॥ ৬॥ १॥ ৮॥ २॥

### ब्रीविधनाथहळवर्छी।

্বাচালং মীমাংসাসাংখ্যানভিমতবিরুদ্ধবন্তভাষিণং। বালিশং মুর্থং অনধীত তত্তভাস্তভাদিতি ভাবঃ। তাৰুং অপিতুরতো-পাতিধাই গিলু বিনীতং। আজেং নিতাগোচারণাথ কিমপালান অং অথ চ পণ্ডিত অন্যং মর্থা মন্থ্যমাজিতা মে দেবসাজি সং চক্ত্র্ বন্ধর্থক বাচয়া সরস্বত্যা অলঙ্কতো বালিশো মুর্থেছিপি যন্মাত্তং। বাচা শক্ষীবন্ধোছয়ং। তাৰং বন্যস্যান্যস্যাভাবাদন অং। নাজি জ্ঞো যন্মাজং পণ্ডিতক র্কুকো মান আদেরে। ব্রুতে যস্য তং॥ ৫॥

অবলিপ্তানাং মন্তানাং যতঃ ক্লফেন শ্বাপিতঃ সতেলত্বীকৃত আত্মা মনোযেষাং বন্ধপিচ প্রিয়া চলানচর্চ্চয়েব অবলিপ্তানাং লিপ্তালানাং শ্রীমান্ যা ধবস্তত্তঃ জাড়াাভাবন্তঃ ধুমুত দ্বীকৃত্বত। তেন তথা বর্ষণ যথা তেবাং শীতজনিতপ্তস্ত ঔষ্ণানিধর্তকো ভবেদিতার্থঃ।

তৰ্থ গোপদকল বাচাল, বালিশ (শিশু) গুৰু (অবিনীত) অজ্ঞ, পণ্ডিতদ্মতা মাকুষ যে কৃষ্ণ তাহাকে আশ্রেয় করিয়া গোপগণ আমার অশ্রিয় করিল !॥

অর্থান্তর। দেবরাজ নিন্দা করিবার নিমিত্ত যে সকল কটু শব্দ প্রয়োগ করিলেন, অর্থপর্যালোচনা করিলে তাহাতে প্রাকৃষ্ণের ন্তবই বোধ হয়। তিনি ভগবান্কে বাচাল বলিলেন, বাচাল শব্দের অর্থ শাস্ত্রযোনি, প্রীকৃষ্ণ তজ্ঞপ হইয়াও বালিশ অর্থাৎ শিশুবৎ নিরভিমান। অপর 'স্তব্ধ' এই শব্দ প্রয়োগের তাৎপর্য এই যে তাঁহার অন্য বন্দনীয় নাই একারণ অন্তর। আর অক্ত এই শব্দের অর্থ তাহা অপেকা জ্ঞানবান নাই, পণ্ডিতন্মন্য শব্দের অর্থ ক্রেল্যবেতাদিগেরও বহু মাননীয় 'কুষ্ণ' অর্থাৎ সদানন্দ রূপী পরব্রহ্ম, তথালি নামুষ অর্থাৎ ভক্তবাৎসল্য প্রযুক্ত মনুষ্যবৎ প্রতীয়মান ॥ ৫॥

जिल्ला प्राप्त क्षेत्र प्रमाण के प्

প্রত্তিক ব্রাবতং নাগগারুহাতুত্তকে ত্রজং। মরুদ্গণৈর্মহাবেগৈর্নন্দগোষ্ঠকিয়াংসয়া ॥ ৭ ॥

ইঅং মঘৰতাজ্ঞপ্তা মেঘানির্ম্মুক্তবন্ধনাং। নন্দগোকুলমানারেঃ পীড়য়ামান্থরোজসা ॥ ৮॥ বিদ্যোত্মানা বিদ্যান্তিঃ ন্তনন্তঃ ন্তন্যিত্ব,ভিঃ। তীত্রৈর্মক্ষদ্যগৈর্ম্পা বর্যুক্তলশক্রাঃ॥ ৯॥

## भैषत्रवामी।

বিভ্রতন্তান্ প্রত্যাহ অহঞ্জেতি। অহুরজে অনন্তরমেব গমিবাামি মঞ্চলবৈণ্দেবিগলৈ: সহ॥ १॥

মথবতা ইত্রেণ নিমুক্তিং বন্ধনং বেবাং তে প্রলয়ভিপ্রায়েণ যে বন্ধা আদুন্তে তদা নিমুক্তবন্ধনাং সন্তঃ আদারৈ ধারাসম্পাতৈঃ পীড়ায়মান্তঃ ॥ ৮॥

ন্তনিরিত্ব ভিঃ অশ্নিভিঃ অনত্তো গর্জতঃ মকলাণৈঃ আবহপ্রবহাদিবাযুসমূহৈঃ হুলাঃ প্রেরিতাঃ জ্লশর্করাঃ জ্লোপলান্ ॥ ১ ॥

#### বৈষ্ণবজোষণী।

ভক্তিলক্ষ্যা সমৃদ্ধানাং তথা তরৈবােজ্জলিতচিন্তানাং ইতি তু তবার্থ:। কথং ধুনবাম ইতাপেকায়ামাহ পশ্ন সম্ফ্ ক্ষাং নয়ত পশুনামেব শ্ৰীমদহেতৃত্বাং। তবার্থে সম্ভ্রিবাস: বাহ্যমিতার্থ:॥ ৬॥

ঐরাবতমার ছেতি যুদ্মাকং জলাভাবে সতি সোধরং সাহাষ্যং করিষ্যতীতি ভাবং। মরুলগণৈরেকোনপঞ্চাশবায়্ভিং সহ। নলগোঠেতি ভবৈত্রৰ ব্রশীরং নতু মধুপুর্যামিতি চ সহ কংসেনাপি মৈত্রীচিকীর্বরাণি হুটিতং জিঘাংসয়া জিগমিষয়া ইতি তাভিকোহর্য:॥ १॥

. পীড়ন প্রকারমাহ বিদ্যোতমানা ইতি ছাভ্যাং। বিশেবেণ দ্যোতমানা ইত্যাদিনা বিদ্যুদাদীনামতিবাছণ্যং ভীষণস্বঞ্জ স্চিতং। স্থন-গ্লিফুডি গর্জস্তিরংশবিশেধৈঃ তাঁকৈরিত্যক্ত পূর্ব্বোণাগ্রন্ধঃ। জ্বলানি শর্করাশ্চ তদীয়াঃ করকাঃ॥ २॥

### **अविश्वनाशहकावर्शी।**

তথা পশূন্ ধুহত শীতেন কম্পরত। ততণ্চ ক্লাঞ্চন গোবর্জনে উঞ্তে সতি সংক্ষয়ং সমাঙি,বাসং তরণং নয়ত। অতিহ্রণদ-গোবর্জনতলনিবাসং প্রতিনয়নে যুম্মের কারণী ভবতেত্যর্থ: ॥ ৬ ॥

বিভাততান প্রত্যাহ অহঞ অহুব্রলামি জিখাংসয়া জিগমিষয়েতি বর্ষর্থঃ॥ १॥

নিমুক্তিবদ্ধনা ইতি যে খবেকাণ্ৰীকরণপট্রঃ প্রলয়কাল এব নিমুচাঙে। তেৎপি মেখা কোপেন ল্পুবিবেক্যাদপরিণামদর্শি-নেক্ষেণ মোলিতাঃ ॥ ৮॥

অন্ত্রিজু রিশ্নিভি অন্তঃ গর্জন্তঃ। মফলাণৈঃ সহ আবহপ্রহাদ্যৈঃ মুলাশ্চলিতা জলশর্করা জলোপলান্ বরুণুঃ ॥ ৯ ॥

হে বারিদ্চয়। তোমরা কেহ ভীত হইও না,আমিও নন্দগোষ্ঠের বিধ্বংসন বাসনায় ঐরাবত গজে আরোহণ করিয়া মহাবেগশালী মুকুনুগণ রহিত তোমাদের পরেই ব্রেফ যাইতেছি॥ ৭॥

শুকদের কহিলেন, যে দক্ষা মেল প্রলয়াভিপ্রায়ে বন্ধ ইইয়াছিল তাহার৷ দেবরাজের ঐ প্রকার আজ্ঞার বন্ধনোত্মক ইইয়া মহাবলে ধারা সম্পাত করত নন্দের প্রোক্ল নিপীড়ন করিতে আরম্ভ করিল ৷ ৮ বা বুলি বুলি বুলি বুলি বিশ্বনি ক্রিটিন ক্রিটিন করিছে

विद्याद नम्ब भावा विद्याद्य । प्रति के प्रति के प्रति । श्री के प्रति । भावा विद्याद । भाव विद्याद । भ

সুণাসুলা বর্ষধারা মুক্ষৎস্বভ্রেষভীক্ষশ:। জলেথি: প্লাব্যমানা ভূনাদৃশ্যত নভোষজ: ॥ ১০ ॥ অত্যাসারাতিবাতেন পশবোজাতবেপনা:। গোপা গোপ্যশ্চ শীতার্তা গোবিন্দং শীনণ: যয়:॥১১ শির: স্তাংশ্চ কায়েন প্রাচ্ছাদ্যাসারপীড়িতা:। বেপমানা ভগবতঃ পাদমূলমুপায়য়:॥ ১২ ॥ কৃষ্ণ কৃষ্ণ মহাভাগ অমাথং গোকুলং প্রভা। ত্রাভুমর্হসি দেবার: কুপিতান্তক্তবৎসল ॥ ১০ ॥

## व्ययत्रयामी।

সুণাবৎ স্থলাঃ অব্দ্রেষু মুঞ্চৎস্ক সৎস্থ নতোরতং নতং নিয়ং উন্নতং তৰিপরীতং বধা ভর্গতি তথা ভূন দিখত ॥ ১০ ॥ জাতবেপুদা জাতকম্পাঃ ॥ ১১ ॥ তক্র পশুনাং বানং বিশিনটি শির ইতি ॥ ১২ ॥

গোপগোপীপ্রার্থনামাহ। কৃষ্ণকৃষ্ণেতি ত্মেব নাথো যস্য তৎ গোকুলং গবাং কুলং বংশং নো≷মাংশ্চ দেবাৎ ইস্তাৎ আতুং রক্ষিভূমইনি॥১৩

## देवस्वरजावनी।

স্থা গৃহস্তস্থান্তবং স্থাঃ প্লাব্যমানা ভ্রভ্থ। যথা প্লাব্যমানা সতী ভূনাদৃশ্বত। অতো নতোরতঞ্চ স্থলং নাদৃশ্বতেত্যর্থ: ॥ > ॥ জাতবেপনা ইতি শীতার্তা ইতি চ পথাদীনাং সর্ক্ষেবামপি বিশেষণং। তত্র পশ্নাং বহিঃস্থবোনদৌ নির্দেশঃ। বহিঃস্থপ্রার্থেন তং পশ্চাদেশাপানাং অন্তঃস্থার্থেন গোপীনামিতি বিবেচনীয়ং। ইত্যাদিকঞ্চ সর্কাং শ্রীভগবতো ব্রক্ষনপ্রেমবর্জনগোবর্জনো-জ্বণ ক্রীড়েচ্ছবৈব শক্রাদীনাং শ্রীমদক্ষ প্রমানর্থহেত্তা প্রদর্শনেক্ষ্রা চ অক্তথা ভগবংপ্রিরাণাং তেবাং তত্তদদস্তবাৎ ॥ >> ॥

প্রছোদ্য প্রয়াসেনাচ্ছাদ্যিতা। নতু কথতে তাদৃশক্ষানা স্বাভাততাহ তগবতঃ অলৌকিকগুণছাতেয়ামপি তাদৃশঞ্জাবদয়াদিগুণবত্তরা কুরত ইত্যর্থঃ। অতঃ পাদমূলমূপাযযুঃ অত্যন্তনিকটং প্রাপ্তাঃ॥ ১২॥

ক্ষতে স্কৃত্থাকর্ষণাভিপ্রায়েণার্ত্তা বীপা হে মহাভাগ আত্মকং পরমভাগ্যক্ষপং। নোহত্মাকং গোকুলং গবাং কুলং বজনেব বা স্কৃথ আত্মহ্সি। যথা নোহত্মাংশ্চ দেবাদিক্সাং ভ্রামাগ্রহণং ৰেষেণ পাপবৃদ্ধ্যা বা। যথা দেবাভ্রাপি কুণিভাদিতি তৎপ্রতী-কারাসমর্থানত্মান্ স্থনেব আতুং যোগ্যোহ্সীত্যর্থ:। ভর্ছি ম্মাণি তত্ত্ব কা শক্তি ভ্রোছঃ প্রভো হে স্কৃশক্তিযুক্তেতি কালিয়-

## ক্রমসন্দর্ভ:।

প্লাব্যমানা ভূরভূং। অতএব নতোরতং স্থলং নাদৃশ্যত ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ শির ইতি অতো ব্রক্তপশ্নামণি তাদৃশজ্ঞানং স্চিতং ॥ ১২ ॥ ১৩॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥

## वीविश्वनाथहळवडी।

স্থারতেঃ পি বেশান ইত্যমরঃ সুণাবং সুলা অল্রেয়ু বর্ষংহ্ম প্লাব্যমানা ভূরভূং। ততশচ নতোয়তং স্থাং নাদৃশাত ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ শিরাংসিচ স্থাভা বংসাশ্চ তান্ কায়েনৈবাছাদ্য ॥ ১২ ॥

অনেন সর্বত্গাণি ব্রমঞ্জরিব্যথেতি গর্গোক্তিমহস্বত্য এতাদৃশমহাবিপত্তে জীনারারণ এব রক্ষণবিশ্যাসান্ রক্তীতি বিশ্বতা-

হে রাজন ! মেঘ সকল স্থাবৎ অর্থাৎ শুদ্ধের ন্যায় স্থল জলধারা অজতা বর্ষণ করিতে থাকিলে ভূমি জল রাশিতে আপ্লাবিত হইল অতএব কোন স্থান নিম্ন ও কোন স্থান উন্নত তাহাও দৃষ্ট হইল না ॥ ১০॥

অত্যর্থ বারিধারা পতন ও প্রবলতর প্রন্তহনে যাবতীর পশু কিশ্বিতকলেবর এবং গোপ ও গোপীগণ শীতে সাতিশয় আর্ত্ত ইয়া গোবিদের শরণাপন হইলেন। ১১॥

অর্থাৎ পশু সকল বারিধারায় শীড়িত ছইরা স্থা ২ কাল দারা মন্তক ও বংসগণকে সাচ্ছাদিত করত কাশিতে ২ ভগবানের পাদমূলে আসিয়া পড়িবা ১১২ ৪

আর গোপ ও গোপী সকল এই বলিয়া প্রার্থনা করিতে লাগিলেন, হে ক্ষণ হৈ ক্ষণ হৈ ক্ষণ হৈ ক্ষণ করিতে লাগিলেন, হে ক্ষণ হৈ ক্ষণ হৈ ক্ষণ হৈ ক্ষণ করিতে আমানিগকে এবং এই গোক্লকে পরিত্রাণ করিতে যোগা হটন টিউড।

শিলাবর্ষাতিবাতেন হস্তমানসচেতনং। নিরীক্ষ্য ভগবান্ নেনে কৃপিতেন্দ্রকৃতং হরিঃ॥ ১৪॥
অপর্ত্তান্ত্রণং বর্ষমতিবাতং শিলাময়ং। স্বযাগে বিহতেইস্মাভিরিন্দ্রোনাশায় বর্ষতি॥ ১৫॥
তত্ত প্রতিবিধিং সম্যগাস্মযোগেন সাধ্যে। লোকেশমানিনাং মৌচ্যাদ্ধনিষ্যে জ্রীমদস্কমঃ॥ ১৬॥

## औरत्यामी।

বিজ্ঞাপনাং পূর্ব্ধমেব কুপিজেনেক্সেণ কৃতং তথ্বং মেনে ॥ ১৪ ॥

কণং মেনে তদাহ অপথি তি অপগত শ্বীতুর্গদা তদ্বং অভিশন্নিতো বাতো যশ্মিন্ তং শিলামন্নং শিলাপ্রচ্রং ॥ ১৫॥
তত্ত্ব প্রতিক্ষাপূর্ব্বকং গোবৰ্দ্ধনাক্রণমাহ তত্ত্বতি প্রতিবিধিং প্রতিকারং অদামর্থেনে দাধন্নিবামি তেনচ মৌচ্যাৎ লোকেশম্নিনাং শ্রমদলকণং তমো হরিবামি। বহুবচনেন বরুণাদীনভিপ্রৈতি॥ ১৬॥

### देवस्व बट्ड | येवा ।

মৰ্দ্দনাদৌ তবালৌকিকশক্তিদর্শনাং ইতি ভাবং। নমু দেবেষু নিজশক্তিং দর্শমিষ্ঠুং নোপযুজ্যেত ওএ:হং হে ভক্তবংসলেতি ভক্তার্থং তবাক্ষত্যং ন কিঞ্চিদণীতার্থং॥ ১৩॥

শিলাবর্ষ্যুক্তেনাতিবাতেন পাঠান্তরে শিলাবর্ষদ্য নিপাতেন হক্তমানং অতএব অচেতনং মৃচ্ছিতপ্রান্নং গোকুলমিতি প্রকরণাৎ কৃতং কৃতিং॥ ১৪॥

পশ্চাৎ ক্রোধারবশেন স্বগতম্বাচেত্যাই অপন্ধিত্যাদি পঞ্চেন ইত্যুক্তে পরেণাধ্রাৎ। পৃথক্ তু ব্যাথাায়তে বর্ধং বর্ধতীতি তপন্তপাত ইতিবর্ধং করোতীত্যর্থ:। অস্মতিরিতি বছরং শ্রীনন্দাদ্যপেক্ষয়। শক্রমদভন্তনার্থং নিজপ্রোট্পেকটনেন বা নাশার গোঠত তব্তন্ত নিজ্মদত্ত্ব ॥ ১৫ ॥

সমাক্ সর্বেষাং অথপুর্বক নিজ্লাসবর্ষ্যমাহাক্সপ্রদর্শনাদি প্রকারেণ সাধ্যমি বর্ত্তনানসাদ্ধীপ্যে লট্ আক্সবোগেন সাধ্যে যোগসায়াপ্যয়া আভাবিকশক্ষ্যেতার্থ:। লোকেশসানিনামিতি বছবং কদণ্ডেনাজেষামপি শিক্ষাভিপ্রায়েণ॥ ১৬॥

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

আত্মযোগেন যোগমারাধ্যরা আভাবিকশক্যেত্যর্থ:। লোকেশমানিনামিতি বছরং তদ্পতেনানোধামিপি শিক্ষাভিপ্রায়েণ মন্তর । নান্যতঃ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥

#### अविधनायहळ्य हो।

গোপা: প্রার্থয়য়ে। ক্লেটি দেবাদিকাং॥ ১৩॥

কুপিতেনেক্রেণ কৃতং তছর্বং বিজ্ঞাপনাৎ পূর্কমেব মেনে ভগবলিত্যপার্যদানাক্ষি তত্তং ক**ইং লীলাশক্রৈ**য়াব প্রেমানন্দর্দদ্যোৎ-কর্বেণাখাদনার্থমুপস্থাপিতং লোভবতাং বুভূকুণাং কুং কৃষ্টমিব স্থোদক্ষাং স্থায়াক্মেবেতি জ্ঞেদং॥ ১৪॥

কুপিতেরাক্তং মদা বগতম্বাচ অপদি তি পঞ্চং তগবানেবেত্যাহ। অপগত ঋতুর্যস্য তদ্ধং শিলাময়ং শিলাপ্রচুরং॥ ১৫॥ প্রতিবিধিং প্রতিকারং আত্মনো যোগমায়মা গোকেশমানিনাং শ্রীমদলকণং তমোহরিয়ামি বছবচনং বরুণাদীনপান্তি-প্রৈতি ॥ ১৬ ॥

হে রাজন্! গোপ ও গোপীদিগের বিজ্ঞাপনের পূর্বেই ভগবান্ শিলাবর্ষণ ও অতিবাতে গোক্-লের অচেতনে বিনাশ অবলোকন করিয়া অনুমান করিয়াছিলেন যে, ইন্দ্র কুপিত হইয়া এই সকল করিতেছেন॥ ১৪॥

ভগবান্ বলিলেন বর্ধার সময় পত হইয়াছে তথাচ এই যে শিলাপ্রচুর বর্ষণ ও অত্যর্থ বায়ু প্রবা-হিত হইতেছে ইহার কারণ বোধ হয় আমরা যে ইস্তায়জ্ঞ রহিত করিলাম তজ্জন্য কোধে আমাদের বিনাশার্থ ইস্তা এই সকল করিতেছেন॥ ১৫॥

ভয় কি, আমি আপন দামর্থ্যানুসারে এ বিষয়ের প্রতিকার দাধন করিব। মৃঢ়তা প্রযুক্ত যাহার। আপনাদিগকে লোকপাল বলিয়া মানে, তাহাদের শ্রীমদন্তনিত তমঃ বিনাশ করা কর্ত্তব্য হয় ॥ ১৬,॥ নহি সদ্ভাবষুক্তানাং স্থরাণামীশবিস্মায়ঃ। মতোহসতাং মানভঙ্গঃ প্রশমায়োপকর্মতে ॥ ১৭ ॥ তস্মামাচ্ছরণং গোষ্ঠং নরাথং মৎপরিগ্রহং। গোপায়ে স্বাত্মযোগেন সোহয়ং মে ব্রত আহিতঃ॥১৮ ইত্যুক্তিবুকেন হত্তেন কৃত্বা গোবর্দ্ধনাচলং। দধার লীলয়া বিষ্ণুস্ক্রোকমিব বালকঃ॥ ১৯॥

## শ্রীধরস্বামী।

নমু দেবাঃ সাঝিকা স্বভ্তকাঃ কুতভেৱাং তনস্তত্তাহ নহীতি। সন্থাবঃ সবং সন্থতিক্ষা তদ্যুক্তানাং স্থরাণামীশা বয়মিতি বিশ্বরো-গর্ক্ষো হি যন্ত্রার্ঘটতে অতোহসম্ভত্তে কিঞ্চ তেষাং মানভঙ্গোহস্থাহ এবেত্যাহ মত্ত ইতি ॥ 🖇 ॥

গোপারে রক্ষরিব্যামি কিঞ্চ সোহরং মে ময়া ব্রতোনিয়মঃ সংকল্পো বা আহিতঃ ধৃত ইত্যর্থঃ॥ ১৮॥ ক্সত্বা উৎক্লতা ছত্রাকং উচ্ছিলীকং যগা॥ ১৯॥

## देवक्षवद्यामगी।

অসতাং শ্রীমদেন ত্শেষ্টেতানাং। অন্তরৈ:। যদা শ্রীমদং হরিষ্য ইত্যত্ত হেতুমাহ হি যতঃ স্থরাণামীশোহহমিতি বিশেষেণ স্মন্নোগর্ম। নোপকলতে যোগ্যোন ভবতি যতঃ সম্ভাবযুক্তানাং অতঃ শ্রীমদেনাসভামিপি তেষাং হিতমেব করিষ্যামীত্যাহ মন্ত ইতি নাস্ততঃ। মদৈশ্বগ্যন্ত্রীবেব তাদৃশযোগ্যন্তি ভবি:॥ ১৭॥

যত্মান্মনাত্মনির্বিশেষত্বেনাত্মছেপকোড়ীকুতানাং মৎপিত্রাদিগোষ্টবাদিনাং নাশার ইক্রো বর্ষতি তত্রচ প্রতিবিধিং সম্প্রত্যেব সাধ্যিবামি তত্রচাহ্যস্পিকভয়া লোকেশনত্রাণাং তমা হরিষো । তক্ত যুক্তং তত্মাদহনেব তদিদং গোষ্ঠং আত্মযোগেন সাধ্যে অসাধারণ স্বাভাবিকপ্রভাবেন গোপায়ে সম্প্রত্যেব গোপয়য়য়মি । ন কেবলং সম্প্রত্যেব কিন্তু সঃ পূর্ব্ব দিছা । অয়ং গোষ্ঠত পালনকপো মম ব্রত্যে নিয়ম এবাহিতো বিহিত ইত্যর্থা । কীদৃশং গোষ্ঠাং তত্রাহ অহমেব শরণং রক্ষিতা যত্ম তৎ যতো হহমেব নাথ ঈশবো যত্ম তৎ । কিঞ্চ মম পরিগ্রহং কুটুয়ং অতো অক্কভ্যেনাপি রক্ষ্যমিত্যর্থা । বুদ্ধেচ মাতা পিতরৌ সাধ্যী ভার্যা হতঃ শিশু । অপাকার্য্য শতং কুছা ভর্তব্যা মহুরব্রবীৎ ইতিবং । যথা মম শরণং আশ্রমং মম নাথং পরিপালকং কুতঃ অহমেব পরিগ্রহো ধন পুল্লারাদি সর্ব্বং যত্ম তৎ মদেক্রিয়মিত্যর্থা । তদেবমিক্রত্ম মছুরণভাদি বিক্রছধর্মত্বে হ্তাছ্রণাদিরূপ গোষ্ঠবাদিনাং বিরোধায় প্রবৃত্তমানানভঙ্কোহপি গোষ্ঠবাসিনাং যোগ্য ইতি বিবন্ধিত। ১৮ ॥

ইত্যুক্ত মহামেঘারস্তাদেব গোবর্দ্ধননিকটে সর্ব্বেধামানয়নমবগমাতে। একেন বামেন সব্যেন পাণিনেতি হরিবংশোক্তে:। কুথা ছিছেতি মূলতোর্দ্ধতশ্চ জ্যেং মানসগঙ্গায়া উত্তরতো বিচ্ছিন্নছাং। তেষাং সংরক্ষণার্থায় ধতো গিরিবরো ময়া। সোহন্নক্ট ইতি থাতি: সর্ব্বত: শত্রপ্রিত ইতি বারাহ প্রসিদ্ধত ততা ভাগভাগাপি পৃথক্ প্রসিদ্ধে:। ন কথমপি কলাচিদপি চলতীত্যচলপদশ্লেষ:।

## ক্রমসন্দর্ভঃ।

গোপায় ইতি বর্ত্তমানপ্রয়োগেন স্বাভাবিকরং ব্যঞ্জয়তি ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥

## গ্রীবিশ্বনাথচক্রবত্তী।

ন চৈব্যিক্রায়াভিক্রোণীয়নে ২হং স্পর্চ্ধে কিন্তু ভুদা মন্তক্রন্যোভূতং দোষ্মেব রূপরৈব চিকিৎসরশ্বীত্যাহ ন হীতি সন্তাৰঃ সৰং সন্তক্তিবা তাল্পুক্রানাং প্রাণামীশা বয়মিতি বিশিষ্ট্রয়ো গর্কোহি ধন্মার ঘটেত ভক্সাং সংপ্রত্যসন্মার্গে স্থিত্যালসভাং ভেষাং মানস্যাদরস্য ভঙ্গ এব প্রশমায় গর্করোগ্ন্যোপশাক্ষ্যে॥ ১৭॥

কিঞ্ যতন্তং কৃত্মিদমত্র স্কটমুপস্থিতং জন্মাদেগাঠমেতদেগাপারে মম শরণং গৃহরূপং। শরণং গৃহর্কিত্রোরিত্যনেকার্থবর্গ:। গৃহস্যাস্যাহ্মের নাথ ইত্যাহ মন্নাথং মই পরি,গ্রহাঃ পিতৃ ভ্রাতৃ প্রেয়স্যাদিয়ে ফর তং। ন কেবলমন্মাদের স্কটাদেগাপায়ে স্বিপি তু স্ক্রিয়াদ্পি স্কটান্মহাপ্রলয়কালাদ্পীত্যাহ স্প্রসিদ্ধোহয় ব্রভোনিয়মো নে ময়া আহিতো গৃহীতঃ ॥ ১৮॥

ইতি অগতমূক্ত্ব একেন হত্তেনেতি বামেনৈব। যহকেং হরিবংশে। স ধৃতঃ সক্ষতো মেবৈ গিরিঃ সব্যেন পাণিনা। গৃহভাবং

দেবগণ সত্ত্য অথবা সম্ভক্তি যুক্ত, তাঁহাদের আমরা ঈশ এরপ গর্ব সম্ভবে না, অতএব ঐ সকল ব্যক্তি অসৎ, আমি অসতের মানভঙ্গ করিয়া থাকি, তাহা শান্তির নিমিন্তই হইয়া থাকে ॥ ১৭ ॥

এই গোষ্ঠ আমার শরণাপন্ন হইয়াছে, আমি ইহার আশ্রেয় ও নাথ স্বতএব আপনার আন্ধা দিয়াও ইহাকে রক্ষা করিব, আমি এই প্রতিজ্ঞা করিলাম ॥ ১৮॥

ভগবান শ্রীকৃষ্ণ এই প্রকার কহিয়া এক হল্তে গোবর্দ্ধন পর্বত উত্তোলন করিয়া বালক যেমন ছত্রাক ধরে তাহার স্থায় অবলীলা ক্রমে ধারণ করিলেন॥ ১৯॥ অথাহ ভগবান্ গোপান্ হে হম্ব তাত ব্রজোকসঃ। যথোপজোষং বিশত গিরিগর্তং সগোধনাঃ। ন ত্রাস ইহু বঃ কার্য্যো মন্ধন্তান্তিনিপাতনাং। বাতবর্ষভয়েনালং তন্ত্রাণং বিহিত্ং হি বঃ ॥ ২০ ॥

### **औ**धत्रवामी

यर्णाप्रकावः यथाञ्चरः ॥ २०॥

## বৈষ্ণবভোষণী।

লীলয়াহনায়াদেন। যদা কটিতটে দক্ষিণ শ্রীহন্তন্যাদাদি ভঙ্গীবিশেৰেণ দধার। তথৈব প্রাচীন শ্রীমৃত্তি দর্শনাং। যতো বালক শ্রু আন্কামব বাল্যলীলামতিক্রমেনৈবেতার্থ এবমনায়াদোহপি দর্শিতঃ। নমু বালমৃত্তে স্কারণাদি সায়নেশঃ কং ঘটতে তত্রাই বিষ্ণুঃ আচিন্তাশক্ত্যা তক্রপত্বেইপি বিভূঃ। ক্রঞ্চ ইতি পাঠেপি সএবার্থঃ। তথৈব সহস্রনামস্তোত্রে । অনির্দেশ্য বপুঃ শ্রীমানমেয়াল্লা মহাজিন্ত্র-গিতি। অতো যথেচ্ছনের পর্বতাদীনামৃত্রপদাদিন্থিতির্জাতেতার্থঃ। ততঃ শ্রীবৈশন্সায়নোক্রিপি ঘটতে। সম্বতঃ সঙ্গতো মেইঘ্রিতি। তথা। আপ্লুতোয়ং গিরিঃ পর্কেরিতি বিদ্যাধরোরগাঃ। গন্ধর্বাপ্রসদৈত্ব বাচামুক্তর সর্বাশ ইতি। তচ্চ শ্রীগোবর্দ্ধনশৃলাত্রৈ মের্ঘরেনিক্রীভাবমেবেতি জ্বেয়ং। তত্র ব্রক্তর্ক্তর্কদানিসৌক্যায় শোভাবিশেষায় শ্রীক্রক্তর্ক্ত্রক ধারণসৌক্যায় চ ইদং ক্রতে উত্থাপনসময়ে লীলাশক্ত্যামুকুল্যেন পর্বতমধ্যাধোভাগাং বিচ্ছিদ্য কুট্রিমায়মানো মহাশিলাসমৃত্রয় একো মধ্যগর্তে স্থিতঃ। যং শিলাসমৃত্রয়মাক্রয় থং নিয়ং পর্বতমধ্যাদেশং শ্রীহত্তেন বিষ্টভাচ স্বর্থং দধারেতি জ্বত্র গর্তমধ্যে বহির্জ্বপতনাগ্রমননিবারণাদিসমাধানশত্রমাপ লীলাশক্ত্যামুকুল্যেনের জ্বেয়ং। তথাচ শ্রীহারিবংশে। স মৃতঃ সঙ্গতো মেইঘ গিরিঃ স্বেয়ন পাণিনা। গৃহভাবিং গতন্ত গ্রহাক্রাবেন বর্চসেতি। এবং বামকরেণ লীলায়া তন্ধারণং বন্ধতঃ নিজ্ঞীবনানপেক্ষয়া তদেকস্থাপেক্ষক্রাণাং ব্রজ্ঞানাং তেবাং স্বীয়াশ্রমবোধনেন স্থার্থমেব। জন্যপা তেষাং সর্বনাশতোহণি মহাছংপাপত্তেঃ। এব্যনাচ্চ তদ্য সর্বমেনবোহ্য ১১॥

হে হংখতি মাতুরাদৌ সংখাধনং সেংবিশেষেণ। পুলহেত্কেক্সকোধবৃষ্টিদৃষ্টা তথা বা পুলহংগণকথা। চিন্তা হংখা-কুলায়াং সান্ধনেচ্ছ্যাচ তত চ হে তাতেতি মেংগছুকমাং তদ্য প্রবেশ সত্যেব তদ্যাং প্রবেশান্ত। উপলক্ষণকৈতং শ্রীরোহিণ্যাদীনাং। হে ব্রক্ষোকদো যথোপজোধমিতি। যথা ব্রে বাসতথৈবাত্রাপি সম্পংস্যত ইতি ভাবং। নহ মধ্যে যোজনবিত্তারং তাবিদ্ধিণ মায়তমিতি শ্রীহরিবংশে ব্রস্বিভারস্য ববিত্তাৎ কথং গোবর্দ্ধনগর্প্তে ব্রেজোমাতি। উচাতে। তদ্যাচিন্তা মহন্তাপতেরিতি। তথাচ

#### **औवियना**थठळवर्डी ।

গত স্তম গৃহাকারেণ বর্চনেতি। ছত্রাকং শিলীকুমিব দধারেতি দিধীর্ষা সময়ে যোগমায়াংশভূতয়া সংহারিক্যা শক্ত্যা তাবতাপি-বৃষ্টিরাকাশ এব তথা সংলছে যথা স্বগৃহালিন্দাদতিবেগেন গোবর্জনমুক্র গুমভিক্রতবতো ভগবত উক্ষীয়াদি বাসাংস্যাপি নাতি স্তিমি-তানীতি জ্ঞেষং ॥ ১৯ ॥

যথোপজোবং যথাস্থং নত্ন কোশত্রয়মাত্রস্থা গোবর্জনসা তলে সর্ব্রজন্থা: কথং মাজ। উচাতে ভগবং পাণিম্পর্ণানন্দাদেব লকা চিন্তোজনা শ্রীগোবর্জনেন কুপিতেরপ্রক্রিপ্ত কুলিশভ্রমান্তমি স্বপৃষ্ঠে কুল্মহার প্রহারমিবাস্ত্রতা তথা সমাগবৃদ্ধাত যথা বোলনচত্ইর প্রমাণত্রজনগরন্থা জনাঃ সর্ব্রে এব গবাদি পশবশ্চ স্বতলে বথাবকাশমেব নিবাসমানিরে। অতএব হরিবংশে ভগবতোকং। শৈলোৎপাটন ভ্রেরা মহতী নির্দ্ধিতা ময়া। ত্রৈলোক্যমপূত্রহতে রক্ষিতৃং কিঃ পুন প্রস্থিতি। কিঞ্চ। গোবর্জনোপরিন্থানাং হরিণবরাহাদীনাং পশ্নাং পক্ষিণাঞ্চ সম্বৃত্ত মেইলি হরিবংশাক্তে ত্রিতহার চান্ বর্ষতো মেঘানালক্ষ্য ভদ্ধি শৃক্ষাণ্যাবর্ষিতাং ন ত্রিলমাত্রমপি ক্রমভূদিতি জ্বেরং॥ ২০॥

পরে গোপদিগকে সম্বোধন করিয়া বলিতে লাগিলেন হে অম্ব ! হে তাত ! অহে ব্রজবাসিগণ ! তোমরা গোধন সহ যথাসথে এই গিরিগর্জে প্রবেশ কর । আমার হস্ত হইতে পর্বত পতিত হইবে-এ আশক্ষা করিও না, আর বাত রৃষ্টি জন্ম ভন্ন করিতে হইবে না, তাহা হইতে এই ত্রাণের উপায় বিহিত হইল ॥ ২০॥ তথা নিবি বিশুর্গর্ত্তং কৃষ্ণাখাসিত্যানসাঃ। যথাবকাশং সধনাঃ সত্রজাঃ সোপজীবিনঃ॥ ২১॥
কুতৃড় ব্যথাং প্রথাপেক্ষাং হিত্বা তৈ ত্রজিবাসিভিঃ। বীক্ষ্যমাণোদধানাজিং সপ্তাহং নাচলৎ পদাৎ।
কৃষ্ণযোগাসুভাবং তং নিশাম্যেক্রোহতিবিশ্মিতঃ। নিস্তম্ভো ভ্রফ সংকল্পঃ স্থান্ মেঘান্ সংখ্যবারয়ৎ।

## প্রীধরস্বামী।

সব্ৰহ্মা: শক্টমগুলীসহিতাঃ সোপজীবিনঃ ভৃত্যপুরোহিতাদিসহিতাঃ॥ ২১॥ পদাৎ স্থানাৎ ৪ ২২॥

## रेवकवटकावनी ।

ছরিবংশে তেনৈবোক্তং। শৈলোংপাটন্ত্রেষা মহতী নির্মিতা ময়া। তৈলোকামপ্যংসহতে রক্ষিত্ং কিং পুনর্ত্রমিতি। গিরেগর্ত্তং তক্ষুলোংপ্লাটন্ত্তাগং গর্ত্তব সমাধানক বাতাদ্যাবরণাপেক্ষা। গাবং পশব এব ধনানি। বরা গাবো ধনানি চান্যানি তৎ সহিতাং। তদেবং স্ক্রিজ্বাসিনাং তং পশ্চাদেবাবগতহং ভ্রচন্ত্রত দক্ষিত্রশ্বেহং ধ্বনিতং॥

মম হস্তাদদ্রে: নিতরাং পাতনং পতনং তদাশক্ষা স্বার্থে ণিচ্। যদ্বা ইন্দ্রাদিনা কেনাপি পাতনং তত্মাজ্রাসঃ মদনিইশক্ষা বো যুমাকং কার্যাঃ কর্ত্তুং যোগ্যোন ভবতি ক্ষত্যানাং কর্ত্তির বৈতি ষষ্ঠী। অতো বো যুমাকং বাতবর্ধাভ্যাং ভয়েনালং প্রয়োজনং নান্তি। হি হ্মান্তেনাজিধারণেন ত্রাণং বিহিতং ময়েতি শেষঃ। বো যুম্মাভিরেব বিহিত্মিতি বা। শ্রীগোর্ম্কনার্চ্ত নাদিভিরিতি ভাবঃ॥ ২০॥

তথা তেন প্রকারেণোক্তিচাতুর্যোগ সাক্ষাধানকরে লীলয়া গিরিধারণেনচ ক্রমা ক্রফোন সর্বচিত্তাকর্যকাছুভানস্তলীলেন ভগ্বতা আখাসিতানি মান্দানি যেধাং তে। ধনানি গাবোহন্যানিচ বিবিধ্জব্যাণি তৎ সহিতাং ॥ ২১॥

কুৰ্ত্ভ্যাং যা ব্যথা তাং অংগং শয়নাদি তদপেকাক হিছা বিশ্বত্যেত্যুৰ্থ:। তৈন্তদেকজীবনৈ: তদ্বাক্ষণৈ কল্পির্বানিভির্গোপগোপীগবাদিভি:। বিশেষেণ মহাবিশ্বর পর্মমেহাদিনা ঈক্ষামাণ:। ইতি তত্ত্তাগে কারণং প্রয়োজনক। ক্ত্বা প্রভারণ
বীক্ষণারম্ভ এব তদপগমাং। তদ্বীক্ষণশুচ তদ্ধারণে সাহায্যমেব দর্শিতং। তেন মৃত্য ক্ষীভমনস্বাং। তথৈব শ্রীবিশ্বপুরাণেহিপি।
কুন্ধোংপি তং দধারেব শৈলমত্যন্তনিশ্চলং। ব্রৈজকবাসিভিহ্ববিশ্বিতাকৈ নিরীক্ষিতঃ। গোপগোপীকনৈদ্ধিত্ত প্রীতিবিশ্বাবিতে
ক্রেণাং। সংস্কৃষ্মানচ্যিতঃ কৃষ্ণঃ শৈলমধারম্বিতি। যথা হিছেতি কৃষ্ণকর্ত্কং জ্বেরং। আনেনেক্ষণেন তমোপি তত্ত্ব নাদীদিতি
গ্রমতে। পদ্দেকস্বাদ্পি পদাক্রনণস্থানারাচল্যিতি ধারণেতান্তানায়াস উক্তঃ॥

কৃষ্ণত যোগং স্বাভাবিকশক্তিবিশেবং তভাত্তাবং প্রভাবং নিশমা দৃষ্ট্। তথাচ বিশং। শ্রুতেটা দৃষ্টো নিশমনমিতি। নিতত্তো নই-মদং কুতঃ ভ্রষ্টং অধোগতং সকলো গোঠজিঘাংসালকণো যতা সং। স্বান্ মকলগণান্ মেঘাংশ্চানিবারণে স্বানিষ্টাপতেরিতি ভাবং।

#### क्रममन्द्रः।

সব্ৰহা: শক্টমগুলীগহিতা:। সোপজীবিন: ভৃত্যপুরোহিতাদি সহিতা:॥ ২১॥

কুন্তৃত্বাথাং হিছেতি তয়িরস্তর দর্শনানন্দানের। বহুক্তং বৈফবে। এজৈকবাসিভি ইইবিস্মিতাকৈ নিরীক্ষিতঃ। গোপগোপী জনৈছ টেইরিতি। অতা সপ্তাহ ব্যাপিনী। সাম্ভক্নেব্রুটাপি যন্ত্রাপ্বং নগুলং ন মনজ্জ তং খুলু ভগবচ্ছক্তিয়ের সদ্যঃ প্রঃ শোষণা-

হে রাজন্! প্রাক্ষের ঐ'কথায় গোপদিগের চিত্ত আশস্ত হইল, তৎক্ষণাং গোধন, শকট মগুলী তথা ভূত্য পুরোহিতাদি সহিত সকলে স্বচ্ছন্দে গিরিগর্তে প্রবেশ করিলেন ॥ ২১॥

ভগবান্ ক্ষুৎ পিপাদার ক্লেশ এবং স্থাপেক্ষা বিদর্জন কয়িয়া অবিচ্ছেদে সপ্তাই কাল গোবর্জন ধারণ করিয়া রহিলেন,তমধ্যে এক বারও স্থান হুইতে বিচলিত হুইলেন না। ব্রজবাদিরা বিসায়াপন্ন হুইয়া তাঁহার প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া রহিলেন। সে যাহা হুউক, প্রীক্ষের যোগামুভব অবগত হুইয়া দেবরাজ বিস্মিত হুইলেন এবং সংকল্প ভ্রফ্ট হওয়াতে নিস্তম্ভ হুইয়া, যে সকল সেঘকে বর্ষণ করিতে আদেশ করিয়াছিলেন তাহাদিগকে নিবারণ করিলেন। আকাশ নির্মেষ হুইল, দিবাকর প্রকাশ পাই-

• খং ব্যব্জমুদিতাদিত্যং বাতবর্ষণ দারুণং। নিশম্যোপরতং গোপান্ গোবর্জনধরোই এবীৎ ॥২২ নির্যাত ত্যক্ষত ত্রাসং গোপাঃ সন্ত্রীধনার্ভকাঃ। উপারতং বাতবর্ষং ব্যুদপ্রায়াশ্চ নিম্নগাঃ॥ ২৩॥ ততত্তে নির্যযু র্গোপাঃ স্বংস্থমাদায় গোধনং। শকটোটোপকরণং স্ত্রীবালস্থবিরাঃ শনৈঃ। ভগবানপি তং শৈলং স্থানে পূর্ববং প্রভুঃ। পশ্যতাং স্ক্রভুতানাং স্থাপয়ামাস লীলারা॥ ২৪॥

## वीधतवागी।

ব্যুদপ্রান্ধা বিগতোদকপ্রান্ধা: স্বরন্ধলা ইত্যর্থ: ॥ ২০ ॥ শকটোড়োপকরণং শকটৈরুড়ং উপ্করণং যথা ভবতি তথা ॥ ২৪ ॥

## देवस्वदकावनी ।

সংশব্দেন দুরভোহপি স্থিতি নিবারিতা॥

অতএবোদিত: দৃষ্টিপথং গত আদিতো যশ্বিংস্তং। দাক্ষণং ভীবণং উপরতং নিবৃত্তং অত্রচ নিশমা দৃষ্ট্ । ইত্যর্থং। উপারতং বাতবর্ষমিতি স্বয়নেব বিজ্ঞাপনাং। দর্শনক তির্গ্যক্কতহন্তেন গিরিং ধুরৈতি জ্ঞেরং। গোবর্জনধর ইতি শ্রীশুকদেবত সোৎসাহ নিজক্তিময়ং বাক্যং॥ ২২॥

হে গোপা ইতি ভবত্তি বৃষ্টিতোহধুনা গ্ৰাং রকাকতেতি লেখ:। ঝটিতি নিমগানাং ব্যুদ্পায়স্থং চ নাশ্চর্য্যং বৃষ্টানাং জ্লানাং প্ততামেব ঞ্জিগ্ৰহ প্রতাপতপনেন প্রায়ো বিলীনস্থাং। অভ্যথা প্রব্যুক্টারিনৈছৈঃ স্ক্লীয়াবনং ভাং। ধনানি গাবো গ্রাদীনি বা॥ ২০॥

ভততাদৃশ গিরিধারণ তাদৃশ বচনান ত্বরং। তে ইতি তথা তথা ভগবদঙ্গীকারেণ নির্জিতমহে জীব কাশ্চ যে তাদৃশা ইত্যর্থ:। উপকরণং ধনাদিকং স্ত্যাদয়শ্চ শনৈ নির্যযুং শৈছোণ সংমন্দাণতে: ॥

গোপাদরো নির্যয়: ভগবানপি তং স্থাপয়ামাসেত্যপিশদার্থ:। তত্র স্বস্থান ইতি স্থানাতারো নিবিদ্ধ:। পূর্ববিদিতি পর্বতি বৈপরীত্যাদিকং নিরস্তং। প্রভূরিতি তত্র শক্তি দ শিতা। অতএব লীলয়া সর্বেবাং মনোহারিণ্যা অনায়াসচেষ্ট্রা অতএব বিশরে-নানন্দেনচ সর্বভূতানাং ব্রস্ত্রানাং দিবিষ্ঠানাঞ্চ পশ্যতামিতি সপ্তমার্থে যদ্ধী ॥ ২৪ ॥

#### क्रममसर्भः।

পারতমিত্যাদি জ্ঞাপনাৎ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥

## श्रीविषमाध्यक्ष्यक्षी।

দিতি জেবং তথা ৰষ্টিৰটিকলৈয়ৰ কালস্য দিবসন্ধাৎ ঘটিকাগণনেনৈব ব্ৰহ্মনাং সপ্তদিবসজ্ঞানমভূদিত্যপি জেবং ॥ নিজ্জো নইমদঃ ন্যবারম্বদিতি ন জানেহদ্য ক্ষোমস্থং কং দণ্ডং দাস্যতীত্যভিজ্যং ॥ ২২॥

ব্যুদপ্রারাঃ বিগতোদক প্রায়া অন্তর্জনা ইত্যর্থঃ ॥ ২৩॥

শকটেবার্চাম্থাপকবণানি যত্ত তাল্বণান্যাত্তপা নির্ক্সঃ॥ ২৪॥

লেন এবং দারুণ বাত বৃষ্টি উপরত হইল অবগত হইয়া, গোবর্জনধারী ভগবান্ হরি গোপদিগকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন ॥ ২২ ॥

অহে গোপদকল। তোমদা এখন গোধন ও পুত্ৰ কলত সহ গিরিগর্ভ ইইতে বহির্গত হও, আর ভন্ম নাই, বায়ু ও বর্ষণ নির্ভ ইইয়াছে, নদীসকল সমজন হইয়া আসিল। ২০॥

ভাষার পর নেই দকল গোপ শক্ত দারা দ্বব্য সামগ্রী বহন পূর্ব্বক স্বং গোধন গ্রহণ করিয়া নির্পত হাইরা আনিলেন। তদনম্বন্ধ দর্শন কারি দকল ভূতের সমক্ষে ভগধান সেই পর্ববভটাকে স্বস্থানে পূর্ববং স্থাপন করিয়া দিলেন ॥ ২৪॥ তং প্রেমবেগালিভ্তা ব্রজোকদো যথা সমীয়ুং পরিরস্তণাদিভি:।
গোপ্যশ্চ সম্মেত্মপুজয়মুদা দধ্যক্ষতান্তি যু্যুঙ্কুং সদাশিষঃ॥
যশোদারোহিণ্টনন্দো রামশ্চ বলিনাম্বরঃ। কৃষ্ণমালিঙ্ক্য যুযুঞ্কু রাশিষঃ স্লেহকাতরাঃ।
দিবি দেবগণাঃ সিদ্ধাং সাধ্যা গদ্ধবিচারণাঃ। তুষ্টু বুমুমুচু স্বন্ধাঃ পুজ্পবর্ধাণি পার্থিব।

## **बी**शतकाशी

নিভ্তাঃ পূর্ণাঃ ষথা যথোচিতং পরিরক্তবাদিভিঃ সমীরুঃ উপজ্যাঃ সদাশিষঃ শ্রেষ্ঠানাশীর্কাদান্ ॥ ২৫ ॥

## বৈষ্ণবজোৰণী।

অধুনা পরমহর্বেণ প্রীভগবতা দহ দর্শেষাং তত্রত্যানাং দর্মাগমঞ্চ বৃদন্ প্রেমোজেকেণ গায়রিবাহ তমিতি গোষ্ঠরক্ষার্থং ধৃত গোবদ্ধনং। যথা প্রকাটতৈখার্যে মরি ব্রক্তোকদং দর্শের ব্রক্তবাদিক্ষাঃ পরিরম্ভণাদিভিঃ দনীয়ুং মিলিতবস্তঃ। তত্র হেতুং প্রোমোবেগঃ স্থানিমন্তকপ্রয়াদেন উল্লেখ্য তের হৈতুং প্রোমোবেগঃ স্থানিমন্তকপ্রয়াদেন উল্লেখ্য তের ক্রেন্ত্রে আদিশক্ষেন শুভাশীর্মাদ শ্রীমন্তকাঘাণচুম্বনপাদগ্রহণ বামবাহদক্ষন তদক্লিক্ষাটন স্তবন প্রম তৃংধাভাব প্রস্থাদয়ঃ। যথা যথোচিতং গুরু সম লঘুবর্গভেদেঃ। সম্বেহং যথান্তাত্যে বা স্থেহং। আশিম্য তৃষ্টান্ দ্ময় শিরান পালয় সর্কৈশ্বর্গবেবিতো ভব নিক্ষানানন্দর ইত্যাদ্যাঃ॥

গোপগোপ্যাদ্যপেক্ষরা পশ্চাং দ্বিভানাং পরমন্ধিনাং মাত্রাদীনাং সক্ষতিমাহ যশোদেতি শ্রীবশোদা সাহচর্ব্যে শ্রীনন্দ্রাদর বিশেষেণ বা তত্বাং প্রাক্ শ্রীরোহিণ্যা নির্দেশঃ বলিনাং বর ইতি। যদ্যপি তত্বাপি গোবর্দ্ধনধরণসামর্থামন্তি শেষরপেণ স্বাংশন মুদ্ধৈ কলেশে বেলয়া পৃথী ধারণাৎ তথাপি তত্রাপ্রবৃত্তি স্বাহিধ লীলায়া স্তদভীইষাদিতি ভাবঃ। যহা বলিনাং বর ইতি নির্ভ্তর গাঢ়ালিক্সমাভিপ্রৈতি স্বেহাতিশয়েন এপ্রতা জ্ঞানেনচ সর্ব্বে শ্রীক্ষেজ্বায়াং সক্ষত্যা মৌনং গোবর্দ্ধনোদ্ধরণাদে তৎ কীর্ত্তাপক্ষমা বা সাহায়্যমিতি পূর্বং তন্ধামাশ্রবণমিতি জ্ঞেয়ং। আশিষঃ এবং চিরমন্মান্ পালর সদা স্ব্ধীভব নিতাং পূর্ণমনোরপ এধ্বেত্যাদ্যাঃ। স্বেহেন কাভরা অধীরাঃ সস্তঃ। অত্র প্রাচীনগোবর্দ্ধনধরপ্রতিক্ত্রে কচিদ্প্রতে। মাতৃভ্যাং নবনীতাদি সমর্পণং পিতা ল্রাভ্যাঞ্চ শির্ষা শ্রীগোবর্দ্ধনাবন্ধভানিকমিতি। তচ্চ স্বেহকাতরা অধীরা ইত্যনেন স্বিভমিত্যবগ্যতে॥

ন কেবলং ব্ৰফ্লোকসাং দেবানামপি প্ৰহৰ্ষোক্ষাত ইত্যাহ দিবীতি ৰাড্যাং। নৰিক্সত মদভুকত্ব:খেহপি তাদৃশে কথং তে তথা ২কুৰ্বত তত্তাহ তুঠাং। ত্ৰ্মদেনাক্বত্যে প্ৰবৃত্তক্তেক্সত মানভক্ষেন শ্ৰীক্ষত্তচ মধুব্তবক্তীড়া প্ৰদৰ্শনেন হৰ্ষোদ্যাদিত্যৰ্থ:। হে পাৰ্থিবেত্যাশ্চৰ্য্যেণ সংখাধনং দেবেক্সত হংখেহপি তেৰাং প্ৰহৰ্ষাৎ যৰা বাজোপেক্ষা প্ৰজানাং দেশাধিকাবিণো হনপেক্ষাবত্তেষাং শ্ৰীভগ্ৰদপেক্ষা শক্ৰান-

### श्रीविश्वमाशहकवर्ती।

নিভ্তাং পূর্ণা: । যপা যথোচিতং গুরু সম শঘুবর্গভেদৈ:। পরিরম্ভণাদিতিং সমীয়ুর্শিলিতবস্ত:। আদিশকাৎ শুভাশির্ঝাদ
মত্তকাদ্রাণ চুখন বানবাহ সংমর্দন তদকুলিন্দোটন স্তবন শ্রমত্:খাভাব প্রশ্লাদরে। গুরুবর্গান। হাত পরিহাসাদরং সমবর্গা । পাদপতন
পাদসংমর্দনাদয়ো লঘুবর্গান জ্ঞেয়া:। গোপ্যোবংসলা:। চকারাৎ পুরোহিতপ্রা:। দধ্যাদিভি ম শল্পেটবা: অপূজ্য়ন্ সংমানয়ামান্ত:।
শুভাশিম: ছঠান্ দমর শিষ্ঠান্ পালর পিতরাবানন্দর ধনেখব্য সম্পারো ভবেত্যাশিবে। যুমুজু বৌজ্য়ামান্ত:॥

নিজমাত্রাদীনাং শ্বভিবিশেষমাহ ধূশোদেতি রামশ্চেতি তদ্যাণি বাংস্বারন্ধর্গে নিদেশো জ্যেষ্ঠনাদের নামুপ্পন্ন:। নমু প্রম-স্বেহ্বতা তেন শেষাখাস্বাংশেন পৃথীমপি দধতা স্বামুজ্স্য গোবর্দ্ধনধারণে কথং সাহায্যং নাচরিতং। উচাতে। ইন্ত্রমঞ্জক গোব-দ্ধনমধ্পাবর্তন্য়ো ম'য়েব রুতভাদহমেব গোবর্দ্ধনং ধুলা অলং রক্ষিয়ামি সোহরং কে ব্রুত আহিত ইভি তদীর সংক্রস্য তদংশেন রাদে-

পরে ব্রজবাসিগণ প্রেমবেণে পূর্ণ ইইয়া যথোচিত আলিঙ্গনাদি হারা জীকৃষ্ণের নিকটে গমন করিতে লাগিলেন, আর গোপীসকল স্নেহ প্রকাশ পুরংসর পরম হর্ষে পূজা তথা দিধি অক্ষতাদি হারা অশীর্কাদ প্রেগে আরম্ভ করিলেন। হে রাজন্! যশোদা রোহিণী নক্ষ এবং মহাবল রাম ইইারা স্নেহে কাতর হইয়া জীকৃষ্ণকে আলিঙ্গন করত আশীঃ প্রয়োগ করিলেন। স্বর্গে দেবতা, সিজ, সাধ্য,

শমত্বন্তরো নেত্রদিবি দেবপ্রচোদিতা:। জগুর্গন্ধপতয় স্তম্কপ্রমুধা নৃপ ॥ ২৫॥
ততোহসুরক্তি: পশুপৈ: পরিপ্রিতো রাজন্ যগোষ্ঠং সবলোহত্রজন্ধরি:।
তথাবিধায়স্থ কৃতানি গোপিকা গায়স্তা ঈয়ু মুদিতা হুদিস্পুশ:॥ ২৬॥

॥ \*॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দ্শমক্ষত্ত্বে গোবর্দ্ধনধারণং পঞ্চবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ । । । । । । । । ।

## श्रीभव्यामी।

ততো গোবৰ্দ্ধনস্থানাথ অস্য শ্ৰীকৃষ্ণস্য তথাবিধানি গোবৰ্দ্ধনোদ্ধরণাদি ক্লগাণি ক্লতানি কন্মাণি গায়ন্ত্র ঈর্ং যয়:। কণং ভূতা: এবং প্রেম্ম ক্লি স্পুশস্তীতি ক্লিম্পুশস্তা: যদা কণং ভূতস্য প্রেঠছেন ক্লাসাং ক্লি স্পুশতীতি ক্লিম্পুক্ তস্য ॥২৬॥ • •

॥ \*॥ ইতি দশমে পঞ্বিংশঃ ॥ \*॥

## देवकवरजास्त्री ।

পেক্ষা যুক্তিৰ ভচ্চ স্বয়া জ্ঞায়ত এবেতি ভাবঃ। মদ ভক্তেন স্বিক্ত ভাপি তথা ন ক্রোধ ইতি জ্ঞেয়ং॥

দেবৈঃ প্রকর্ষণ বিচিত্রতয়া বাদিতা ইত্যথঃ। যথা স্বর্মেব নৃত্যাচরণাদিনা এপ্রিতা বাদক্ষারা প্রবর্তিতাঃ সম্ভঃ দিবীতি পুনক্ষিঃ ইক্ষভয়াভারেন দিব্যেব তেষাং তওদাচরণভ্ত বোধার্থং। হে নৃপেতি প্রহর্ষণ যথা ভব্দিধস্য রাজ্যেমহোৎসব ইতি বা॥ ২৫॥

প্রহর্তেশব তম্ম গোর্চপ্রবেশং পূর্কবিদ্গায়িরবাহ তত ইতি পরিতঃ প্রিতঃ বৃত্তঃ যতো হয়রকৈ:। সত্রজরকার্থং ধৃতগোবর্দ্ধন:।
বংগার্চমিতি কচিৎ পাঠঃ। মধ্যে গোর্চং শ্রীনন্দম্ম বীমাবাসপর্যান্তং প্রবিবেশ ইত্যর্থঃ। প্রহর্বোদ্রেকেণ সর্কের্বামের তেবাং তেন
সহ তত্ত্বির গমনাং। হরিঃ শক্রক্মেরগোর্চার্তিহরশাং তং ক্রীড্য়া সর্ক্মনোহরণাচ্চ শ্রীগোপীনাঞ্চ সর্ক্তো হণিকং স্থমজনীত্যাহ
তথেতি গায়ন্তা ইতি তৎক্রমের গীতক্রণশক্তি দর্শিতা॥ ২৬॥

॥ \* ॥ हेकि औरेवस्ववटकांबनार मन्मिष्यिनार शक्विरणः ॥ \* ॥

#### क्रममन्डः।

শত্মেতি। অনুবোষাং দেবানামপি হর্ষকৌ তুকং দর্শরতি ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥

॥ \* ॥ रें कि ज्ञीननारम श्रीकीवरशाचानिक्षं क ममन्म र अधिवः नः ॥ \* ॥

## श्रीविषनाथठकवर्ती।

ণান্যথা কর্ত্মনোচিত্যাদশক্ষাত তলৈ ক্ষেত্ৰ সর্কালক্ষেত্রাং। তলিজ্বৈর তদংশেষু যথোপযোগি তদীয়শক ুদ্যাচেত্যপ্রিমগ্রছেংপি যথাস্থানং নিদ্ধান্তয়িষ্যতে ইতি। অত্র প্রাচীনশ্রীগোর্দ্ধনধরপ্রতিক্তেই ক্চিড্লাতে। সাত্ত্যাং নবনীতাদি সমর্পণং পিত্রা ভ্রাত্রাচ শির্ষা গোর্দ্ধনারষ্ট্রনাধিক্মিতি। তৎ স্নেহকাত্রা ইত্যনেন স্চিত্যবগ্যাত ইতি বৈষ্ণব্তোষ্ণী ॥

उद्योकता गर्भ कश्च उर्भ (नर्ग अभी डार्स निरी डि ॥ २०॥

তং প্রেরদীনাং তু সর্বজনাশক্ষিতং দ্রতঃ কটাকৈরের মিলনং রুত্তং গৃহগমনসময়ে সপ্রেমগানঞাহ। ততো গোবর্দ্ধনন্থানাংকৃতানি চরিআণি গারস্তা ইতি তৎক্ষণ এব গীতকরণে সামর্থাং। হানি প্রেমা স্প্রতীতি তা ইতি যাঃ কৃষ্ণং সদা ধ্যারস্তীতার্থা। যদা
দ্বিক্সিস মনসিচ স্প্রতীতি হানিস্কৃত্ প্রেষ্ঠস্তান্তি কৃষ্ণসা বিশেষণং॥ ৩০॥ . . . \*

॥ 🎍 ॥ ইতি সারার্থদশিন্যাং হবিশাং ভক্তচেডসাং। পঞ্বিংশোহত দশ্যে সম্বতঃ সম্বতঃ স্তাং ॥ 🖜 ॥

গন্ধর্ব এবং চারণগণ তুন্ট হইয়া স্তব ও পুষ্পার্ম্তি মোচন করিতে লাগিলেন, আর দেবর্ন্দ কর্তৃক প্রমোদিত হইয়া দেবলোকে শহাও তুন্দুভি শব্দায়মান হইল এবং তুন্দুজ প্রস্তৃতি গন্ধর্ব রাজগণ আনন্দে সঙ্গীত আরম্ভ করিল ॥ ২৫ ॥

হে রাজন্। তাহার পর অমুর ক্ত গোপরশে পরিরত হইয়া বলভন্ত সহ ভগবান্ হরি আপনার গোষ্ঠের প্রতি যাত্রা করিলেন। গোপীগণও তদীয় তথাবিধ হৃদয়ঙ্গম কীর্তি কদম্ব গান করিতে২ পর্ম-হর্ষে স্ব ২ ছানে প্রস্থান করিলেন॥ ২৬॥

ा 🛊 ॥ 🛮 देखि समार्थ अकविश्म ।। 🗢 ॥

## **वि**वापतां श्रिक्त कां ।।

এবং বিধানি কর্মাণি গোপাঃ কৃষ্ণত বীক্ষাতে। অত্থীষ্যবিদঃ প্রোচুঃ সমভ্যেত্য স্থবিশ্বিতাঃ॥১ বালকত্য যদেতানি কর্মাণ্যত্যভূতানিচ। কথমহত্যসোঁ জন্ম প্রাম্যেম্বান্মভূগুন্দিতং ॥ ২॥

## **डी**धतकारी ।

বড্বিংশে বিশ্বিতান্ গোপান্ কৃষ্ণসাস্তকৰ্মভিঃ। নন্দো গর্গোক্তমাশ্রাব্য ভটেদখর্গুধ্বর্ণরং ॥ • ॥ 'সমভ্যেত্য নন্দমভিগম্য ॥ ১ ॥

যদ্চু ন্তদাহ বালকদ্যেতি যদ্যস্থাৰতাত্ত্তানি কন্মাণি তন্মান্থান্মায়ু গোপেয়ু কথং জন্ম অইতি আয়ুকুগুলিতং আয়ানইং ॥ ২॥

## বৈষ বতোষণী।

ইখং শ্রীভগবতঃ শক্তাতিশয়দৃষ্টা ঐখগ্যজ্ঞানেন ব্রজনানাং তশ্মিন্ কদাচিৎ প্রেমহাসমাশস্কা তৎ পরিহারার্থং বিশেবতশ্চ গোপবর্গকৃত শক্ষারাঃ প্রীনন্দেন নির্দানাং প্রেমবির্গমিক্কি বোধনার্থং তৎ প্রেসঙ্গমার্ভতে এবমিত্যাদিনা যাবৎ সমাপ্তি ঈদৃশানালো-কিকানি ইত্যর্থঃ। বছবং পূর্ব্বাপেক্ষমা ন তহ্ম বীর্ষাং ঐশ্বর্যাং বিন্দপ্তি অমুসন্দধতীতি তথা তে। বতত্তে ইতি সদা তৎক্ষেব্বিশ-দ্বেন প্রেসিদ্ধা ইত্যর্থঃ। অতএব স্থবিশ্বিতাঃ সন্তঃ সম্যুগ্ভক্ত্যা প্রণতিপূর্বকং গোপরাক্ষমভিগম্য। যথা মিথঃ সন্ত্র। প্রকর্মেণ ন্যায় প্রদর্শনাদিনা প্রেম পর্যাবসানবেন বা উচুঃ॥ ১॥

ৰাশক্স্য চেত্যৰয়ঃ অপ্যথে চকারঃ বৈ কচিঘাল্যে বর্ত্ত্যানস্যাপীত্যথঃ। গ্রাম্যের গ্রাম্যার্যাৎ উত্তমতা হীনেরু আত্মনো ভুগুল্পি-তং নিন্দা যন্ত্রাৎ তৎ অসাবিতি পারোক্ষ্য নির্দেশেন তদানে বনং গত ইতি লক্ষ্যতে পরোক্ষ্য এব র্সাপতেঃ॥ ২॥

## ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ৰজ্ ব্লিংশেতু তদৈখগ্যানৈখর্য্যেকণশক্ষিন:। গোপান্ প্রবোধয়ামাস্ নন্দগর্গোক্তিগৌরবৈ:॥ • ॥

ইং কিল প্রীগোবর্দ্ধনধারণসনরে প্রীক্ষকলাবণ্যামৃতরসাধাদনিময়ানাং গোপানাং মনসি কোহপি বিচার উত্তবিভূ মবসরং ন প্রাণ। তদনস্করং স্বস্ধ গৃহং গতানাং তেষাং সর্কেরামেব ফ্রিদ সন্দেহ এক উদপদাত। অহা সংপ্রতি সাক্ষাভৃত্তিন গিরিধারণেন পূতনাবধাদ মোহপি দাবানলোপশমনাদরোহপ্যসৈর কর্মাণি প্রতীম তদা তদাতু রাহ্মণাশীর্কাদাং নলভাগ্যাতিরেকাং নারায়ণপ্রসাদপ্রাপ্তে হিছিন্ বালকে নারায়ণাবেশাঘা তেতে তে হভ্বরিতি বিতর্ক। বৃথৈব কতা বস্ততন্ত সাপ্তবর্ধিক বালকস্যাস্য সপ্তানিবাধি শৈলেক্রধারণং অনুনর্মং নিবিদ্ধা প্রমেশ্বরমেব কণস্বতি কিঞ্চামাকং সাংসারিকাণাং প্রাম্যগোপানামেতং পিতৃপিত্ব্য মাতৃবাদীনাং লালনৈ: প্রক্রমন্দ্রালনি বৈর্ক্রবাং তথা কুং পিপাসা দ্বিপ্রশেষ্ট্র দন্তান্ত প্রলপন বংসগোচারণাদিকং প্রমেশ্বরমে সতি কথং সম্ভবেদেত ভূ প্রমেশ্বরম্বং নিবিদ্ধা নরস্বনেব প্রতিপাদরত্যতোহক্ত তবং নিশ্বেভূমসমর্থা মহাবৃদ্ধিম স্বং ব্রহ্মান্তমেব পৃত্ত্বী নিঃসংশয়া ভ্রম ইতি মনসিক্রা তিস্যুব মহাস্থানীং প্রবিশ্ব তং প্রাম্মুরিত্যাহ এবনিতি॥ ১॥

অত্যস্তানীত্যতো নায়ং প্রাক্তোবালকঃ কিন্তীধরএব ইতি চেদত আহ কথমিতি অসাবিতি পরোক্ষনির্দেশেন তদাসোঁ বনং গত ইতি লভাতে। পরোক্ষ এব রসাপত্তে:। আয়জুগুলিভমিত্যাত্মনো জুগুলায়াং নিক্টোছপি ন প্রবর্মতে কিমুভ সর্কা প্রকৃষ্ট ক্ষমর ইতি ভাবঃ॥২॥

ষ্ড্বিংশাধ্যায়ে শ্রীকৃষ্ণের অন্ত কর্ম দর্শনে বিশ্মিত গোপদিগের নিক্টে নন্দ কর্তৃক গর্গ কথিত তদীয় ঐশ্বর্য বর্ণন ॥ ॰ ॥

শুকদেব কহিলেন সেই সকল গোপ শ্রীক্ষকের ঐ রূপ শূরি ২ অমৃত কর্ম অবলোকন করিয়া তদীয় বীগ্য অনবগত থাকা প্রযুক্ত অতিশয় বিশিষ্ঠ হইলেন এক নক্ষ স্মীপে গমন করিয়া করিছে লাগিলেন॥ ১॥

তোমার বালকের এই সকল কর্ম অভ্যাশ্চর্যা, ইনি গ্রাম্য গোপজাতি মধ্যে কি প্রকারে জন্ম গ্রহণ করিলেন এতাদৃশ জন্ম ইহার আপনার অনুর্য অর্থাৎ অযোগ্য ॥ ২ ॥ ষঃ সপ্তহায়নো বালঃ করেণৈকেন লীলয়া। কথং বিজ্ঞানিবরং পুক্তরং গল্পরাড়িব॥ ৩॥ তোকেনামীলিতাক্ষেণ পূতনায়া মহোজসঃ। পীতস্তনঃ সৃহ প্রাণৈঃ কালেনেব বয়ন্তনোঃ॥ ৪॥ হিন্নতোহধঃ শয়ানস্থ মাস্যস্থ চরণাবুদক্। অনোহপতদ্বিপর্যন্তং ক্লদতঃ প্রপদাহতং॥ ৫॥

## श्रिश्तवामी।

জত্যভূত কৰ্মাণ্যাহৰ দিশভি: য: সপ্তৰ্ম্বন ইতি কথং বিস্তংস্থিত ইতি পুষ্ণৱং পদ্মং গল্পৱাট্ মহাগল ইব ॥ ৩॥ মহৌজসঃ মহাবনাৰা: তনোৰ্বপ্ত: আযুৰ্বোবনং বা কালেন যথা পীড়বতে তদ্বৎ কথমিতানুবৰ্ত্ততে ॥ ৪॥ জনসোহধঃ শ্বানস্য মাস্যস্য মাসাক্তরং পরিচ্ছেদকা যস্য উদক্ উদ্ধং চরণো হিষতঃ চাল্বতঃ প্রণদেন পাদাগ্রেণাহতং বিপ্রাক্তং

## देवकवरठावेगी।

বালস্কলচ সপ্তথারনঃ সপ্তবর্ষনালবরাঃ জল্লাপ্যেকেনৈর ন কলাচিৎ পরিবৃত্তা করান্তরেণ জল্লাপি গিরিষু বরং শ্রেষ্ঠং পরম জল্পতরমিতার্জঃ। তলাপি লীলয়া কথং বিভাৎ স্থিত ইতাসন্ধাব্যদেনাত্যভুতদ্বং বাঞ্জিতঃ। বো বালঃ স কথমিতাধ্যাহারেণাদ্রঃ। লীলয়া
ধারণে লৃষ্টাব্রঃ। পুক্রমিতি এতেন সৌন্ধর্যাদিবিশেষােহপি স্টিতঃ। ক্সভােহেনী লৌকিকবালকো ন ভবতীতি ভাবঃ। বজু
বিষ্ণুপ্রাণাদৌ গ্রীমকালে রন্ধাবনমাগতসা সপ্তমবর্ধে গোপালনে প্রবিরিতি। তপা চোক্তং। কালেন গক্তাে তৌ তু সপ্তবর্ধী মহাব্রেজ। সর্বান্য লগতঃ পালৌ বৎসপালৌ বভ্বতুরিতি। অস্যার্থঃ শ্রীশ্বামিপালৈরের ভট্টীকায়াং ব্যঞ্জিতােহন্তি। এবং বৎসপালৌ
সক্তে কালেন গক্তা সপ্তবর্ষী গোপালনে সমর্থে বভ্বতুরিতি। বৎসপালৌ তু সংবৃত্তী রামাে দামােদরৌ তত ইতি পূর্বামুক্তরােও।
তদনভরক তিমিরেবান্দে পরমিন্ বা প্রার্ট্কীড়া ততঃ কালিয়মর্দনং ততাে ধেন্ত্কপ্রলম্বরার্বধঃ ততঃ শর্দি শ্রীগোবর্জনােক্রগণ্
মিতি তস্যিচ কর্মভেদব্যবহুরা ততশ্চ পৌগগুবরঃ শ্রিতাবিত্যাদিনা বিরোধঃ পরিহার্য্য ইতি দিক্ ॥ ৩ ॥

পূর্ব্বনিবোল্য ত্রহছেন তৎকৃত্বে বন্দিগ্ধানাপি প্তনাবধাদীন্যধুনা সাক্ষাজ্বীগোবর্গনোদ্ধরণদৃষ্ট্যা তদীয়ান্যেবেতি নিন্দিবলৈ হপাছভোকেনেতি নবভিঃ। আ সম্যক্ মীলিভাকেন ইত্যুক্তদিশা তেন চাভ্যন্তবালাখা বোধিতং। পানপ্রকার্শ্চ ত্র্পোধ্ ইতি দৃষ্টান্তেনাহঃ কালেনেতি ইতি শক্তিবিশেবঃ স্চিতঃ। কথমিত্যস্য সর্ব্ব্বাপ্যস্ত্রনীত্যুক্তা সেবেংগা আম্যেবু অস্থাবেগাতামেব সাধ্যন্তি বদা কথমিত্যস্যানহ্য্ত্যাপাত্রতানীত্যুক্তা সোধ্ধঃ অতঃ পর্যাব্দাতি ভোকেনিবেভ্যাদিভিশ্বতক্ষাণ্যেবোজানি ॥ ৪ ॥

প্রপদেন আ ঈবৎ হতং প্রস্তৃতঃ। রুদত ইতি পূর্ববং বাল্যাতিশরঃ স্বচাতে। তেন চাতুতত্বে হেতৃতরা শক্তিবিশেষ এব বোধ্যতে। এবমগ্রেহলি। অস্তৃতিঃ। তত্র মান্ত্রস্যাতি মাসমাত্রং ব্যাপ্য জাতবাল্যস্যেতার্থঃ। কালাদিত্যধিকারে তমধীটোভ্তোভ্তো ভাবৌ বেহ্য-

#### अविधनाशकक्रवर्ती।

বদিচ নেশ্বর স্তর্হি কথ্যেতানি কর্মাণি সম্ভবেয়্রিত্যাত্ র্বাদশভিঃ। ব ইতি বিভং স্থিত ইতিশেষঃ। পুছরং পদাং কথ্যিত্যস্য বিভক্তিবিপ্রিণাবেন যজ্জন্য চাগ্রিমশ্লোকেবস্তৃতি কেবা॥৩॥

ভোকেন বেন বালেন ঈষমুদ্ধিতাকেণ অলক্ষ্যাণতে দৃষ্টাতঃ তনো ব্যোষীবনং কালেন যথা পীয়তে তহও ॥ ৪ ॥ অনুসোহধঃশ্বানস্য মাস্ত্ৰস্বৰসঃ মাসাত্ৰসি যও পঞাবিতি যও । চরণৌ উদ্কু উদ্ধিং হিবতঃ চাল্যতঃ যস্য প্রাপদেন

ইনি বালক, বয়:ক্রম সপ্তবর্ষ মাত্র তথাচ মহাগজ যেমন পদ্ম ধারণ করিয়া থাকে তম্বৎ এক হত্তে অবলীলাক্রমে কি প্রকারে পিরিবর গোঁবর্জন ধারণ করিলেন ?॥ ৩॥

শপর, কাল মদ্রেপ কলেবরের আয়ুং আকর্ষণ করে তবৎ ঈষৎ নিমীলিভাক্ষ এই বালক কি প্রকারে মহাবল প্তনা রাক্ষ্যীর স্তনপান করিয়া ছিলেন। ॥ ৪ ॥

ইহাঁর যথন তিন মাস বয়স, তথুন একটা প্রকাণ্ড শকটের অধোভাগে শয়ান হইয়া উদ্ধি চরণদ্য চালন করত রোদন করিতে ছিলেন, সেই চরণ দ্য়ের অগ্রভাগ দারা আহত হইয়া সেই শকটটা কি এক হারন আসীনো ব্রিয়মাণো বিহায়সা। দৈত্যেন যক্তৃণাবর্ত্তমহন্ কণ্ঠ গ্রহাভূরং ॥ ৬॥
কচিলৈ গ্রুব বৈত্তাং আলো বন্ধ উদ্ধলে। গছম জ্বনামে ধ্যু বাত্তাং তাবপাতর ॥ ৭॥
বনে সঞ্চারয়ন্ বৎসান্ সরামো বাল কৈর্তঃ। হস্তকামং বকং দোর্ভ্যাং মুখতোহরিমপাট্য়ং।
বৎসেষু বৎসক্রপেণ প্রবিশস্তং জিঘাংসয়া। ইত্বা ন্যপাত্যতেন কপিখানি চলীলয়া।

## **अ**धवयामो

## অন: কথমপত ।। ।।

যো দৈত্যেন দ্বিমাণঃ স তং তৃণাবর্ত্তং দৈত্যং কথমহরিতার্থ: ॥ ৬ ॥ হৈয়স্বুবুষ্টে নবনীতচৌর্য্যে বাহত্যাং গচ্ছন্ রিঙ্গরিতার্থ: ॥ ৭ ॥ মুখতো হস্তং কামো যদ্য তং বক্ষেশসিরং বাহত্যাং মুখতঃ কথমপাট্রং ॥ ৮ ॥

### देवसः वरकावना ।

ধিকুত্যমাদাঘন্তি যথ থঞাবিত্যনেন যদিধানাথ। তাত্ৰ দিতীয় সত্তে তং ভূত ইতি তাবন্তং কালং ব্যাপ্য লব্ধসভাক ইত্যৰ্থে সভীতি ব্যাধ্যানাথ। তৃতীয়সূত্ৰে বন্ধদীতি বিশেষোণাদানাক। কিন্তু মাদশ্চ মাদশ্চ মাদশ্চ মাদশ্চ মাদা ইতি অন্নাণামেবৈক্শেষ্থকরণাথ আমিদিক্সচ পদা শক্টোপর্ব্ধ ইতি। তাত্ৰ মাস্ত ইতি শৈশিকো যথ। আন ইতি মাদানাং বছদ্বেছপি আন্ধ এব বিশ্রামাৎ কাপিঞ্লাধিকরণনালাবেন। তৈমাদিক্সত পদা শক্টোপর্ব্ধ ইতি প্রামাণ্যাক্তেতি জ্বেরং। দিতীয়স্ক্রক্ত দ্বাদ্য কর্ত্বাঃ॥ ৫॥

আসীন ইতি অত্যন্তবাশ্যমেবাভিপ্রেতং। সমাক্ চশিতুমপি পদা ন শক্ষোতীত্যভিপ্রায়াৎ কণ্ঠগ্রহণমাত্রেশৈবাতুরং বিহলেং ॥৬॥ কচিৎ ক্যাচিৎ অস্যাগ্রেহপি সর্কবৈবাহুর্তিঃ। বাহভাাং ভদ্গ্রভাগাভ্যাং ক্রাভ্যামিত্যর্থঃ। উল্থলকর্ষণায় তয়োরেকাধি-কোন প্রণোদনাং॥ ৬॥ १॥

সরামো বালকৈর্জ ইভি রামে বালকের্চ তত্ত্রেব সংস্থ স্এবাপাটয়দিতি সর্বেভা: শক্তিবিশেষো ধ্বনিত: । সুধতো মুখ্যারভা আরিমিতি তামস্যোনিতাং যদৃচ্ছয়। হস্তকামং। অপিতৃ অরিং ভগিনীবধলাতশক্তভাবাদাগ্রহেণাপীত্যর্থ:। পুর্বোক্ততত্ত্বধ্বাং-ক্রমন্তথা ব্যোমবধাতিক্রমশ্চ প্রম্বিত্মবোকাত্তিত্ত্বাং। এব্মগ্রেহ্পি॥

## ক্রমসন্দর্ভ:।

বাহ্ভাং গছ্মিতি উল্থলাকর্ষণায় অরিং শক্তছেনাসদাগ্রহপর্মপি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥

#### এবিখনাগচক্রবরী।

शामाद्यागाहरु: अन: भक्षे: विशर्याख: मर कथ्मशरु ॥ c ॥

যো দৈত্ত্যেন ছিমমাণ: দন্ তং তৃণাবৰ্ত্তং দৈত্যং কণমহন্ ॥ ৬॥

হৈয়ড়ববৈত্তন্যে নবনীতচৌর্য্যে বাছভাগং গচ্ছন্ রিক্লিতার্থ: ॥ १॥

দোর্ভ্যাং ধ্রা মুখতঃ মুখমারত্য ক্রমণাটরৎ॥

## প্রকারে বিপর্যন্ত হইয়া পড়িয়াছিল ?॥ ৫॥

হে গোপরাজ! জ্রীকৃষ্ণ এক বংসর বয়ংক্রমে বসিয়া থাকিতে ২ ভূণাবর্ত্ত দৈত্য কর্তৃক আকাশে অপহত হইতেছিলেন, তথন কি প্রকারে কণ্ঠ গ্রহণ দারা কাতর করিয়া সেই দৈত্যকে নিহত করেন ? ॥ ৬॥

আর জিজাদা করি নবনীত চুরি করিলে ইহার মাতা ইহাকে উদুধলে বন্ধন করিয়াছিলেন, ইনি তদবছায় বাছবয় বারা তুইটা যমলাক্ত্নের সধ্যে গমন পূর্বক কি রূপে সেই বৃক্ষবয়কে পাতিত করেন ? ॥ ৭ ॥

অপর ইনি বালক্রন্দে পরিবৃত হইয়া বলদেব সহ বনমধ্যে বংসচারণ করিতেছিলেন, সেই সমর বকাহার ইহার প্রাণবণ কামনায় আসিয়াছিল, ইনি স্বীয় বাহুদক্ষ দারা বকবেশধারি সেই পরির মুধ্ ধরিয়া কি প্রকারে বিদারিত করিয়া ফেলেন ? আরু বংস বিনাশ বাসনায় বংস রূপ ধরিয়া বংসাহার

হন্ধ রাসভদৈতেয়ং তৰজুংশ্চ বলান্বিতঃ। চক্রে তালবনং ক্রেমং পরিপক্ষণান্বিতং।
প্রলম্বং ঘাতয়িঘোত্রং বলেন বলশালিনা। আমোচয়য়ুজ্রপশূন্ গোপাংশ্চারণ্যবহ্নিতঃ ॥ ৮॥
আশীবিষতমাহীক্রং দমিতা বিমদং হ্রদাৎ। প্রসহোদাস্য যমুনাং চক্রেছসৌ নির্বিষোদকাং ॥৯॥
ফুস্তাজশ্চামুরাগোহত্মিন্ সর্বোধাং নো অক্রোকসাং। নন্দ তে তনয়েহস্মাত্র তন্তাপ্যোহপত্তিকঃ কথং॥১৭

#### **अ**धनवागी

আশীবিৰতমঃ অতিক্রবিবঃ সচাসাবহীক্ততে তং॥ ৯॥

উৎপত্তিক: বাভাবিক: কর্থমিতি কিং সর্কেবামান্মায়ং স্যাদিতি শল্পা॥ ১•॥

## देवकवरकावनी ।

জিবাংসরা সরামক্ত তক্ত লীলরা হতা পশ্চাৎ পাদ্ধরগ্রহণেন ভ্রমণাৎ ক্পিথানি চেতি মহারক্ষাগ্রবিক্ষেপ্দ্যোতনেন শক্তি-বিশেষঃ স্টেডঃ॥

বিপাৰিত ইতি ধেলকবংগছণি তাস্যৈৰ প্ৰাধান্যধিবক্ষা নৃন্মেতংপ্ৰভাবেণৈৰ ব্ৰক্তাছণি ব্ৰোদ্যাদেতীস্ককৰ্ত্ৰমিতি ভাব:। কেনং নিৰ্ভয়ং সংক্ষাণভোগামিত্যৰ্থ:॥

বলেন খাতায়িছেতি তত্ত্বাপি তথ্য মুখ্যছং স্চিতং। কুতো বলেনৈবাধান্তরশ্বছনোন তত্ত্বাহুঃ বলেতি তথ প্রভাবলন্ধবলবিশেববতা। অভত্তব্যিন্ বিদ্যাননে অন্যোদ ঘাতনা ন খোগ্যেতি ভাবঃ ॥ ৮ ॥

বিমদং বৰ্ণা স্যান্তৰণা দময়িছা। বৰা। বিমদং সস্তং ক্ৰদাত্ৰাস্য ॥ ৯ ॥

কিঞ্চ হুত্তাল্পতে তে তনরে তবৈব তনরৈ। হয় নামাক্ষিতি বিচারিতে ছপি ত্যক্ত্মশক্য: স্বাভাবিক ইত্যর্থ:। ত্রাপি সর্বেরাং অতো ভবতু বা স্বাকৃতি প্রকৃতি কুলরে স্বাচিত্তাক্রতিক্সনর স্বাচিত্তাকর্তিক নাগতীনাম্মাকং অত্রাচ্পা ছত্তাল্তস্যাপ্যমার্থি।

#### ক্ৰসন্ধৰ্ভ:

## কিঞ্চ। ছণ্ডাঙ্গশ্চেতি তত্মাদিকদ্বধর্মাদ্বেতোঃ॥ ১০॥

## গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

রাসভবৈতেরং ধেত্কং। বলান্বিত ইতি তত্রাপি ক্লঞ্চনা প্রাণান্যং বিবক্ষিতং ॥ ৮ ॥ আশীবিষত্যোছতিক্রবিষশ্চাদাবহীক্রণেচতি তং বিমদং যথাস্যাত্তথা দমিস্বা॥ ৯ ॥

এবমন্তেখনতে গিরিধারণাদর এডরিছা ধর্মা এব হেতবো দর্শিতাঃ। অন্তদাদিসর্বপ্রজ্ঞবাসিনিছকৈকো ধর্মো দৃশুভামিত্যাই ছ্যালকেতি। তে তন্যে তবৈব তন্যোনাংশাক্ষিতি সম্যাধিচারিতে সভ্যাপীতি ভাবং। ন কেবলম্মাকং বাংসল্যভাববতায়েব গোপানাং অপি তু সর্বেবাং বালাদীনামপি স্থ্যাদিভাববতাং দ্বীপ্ংসামপি আত্তর্যাণামপি বনৌক্সাং মুগপক্ষাদীনামপি অহুরাগং প্রতিক্ষণং নব্দ প্রতিক্ষণং নব্দ প্রতিক্ষণং নব্দ প্রতিক্ষণং সম্প্রতীত্তরহাগালকায় ওপাত্তর্যাক্ষণা বিশোলকায় । কেন প্রবিভাদিদেহজীবাদ্ধভা বথোন্তরাধিকপ্রেমান্সদেভোহিপ্যাতান্তিকপ্রেমান্সদং পর্নাইবার্মিতি ব্রুত্তে। ন হি কেবল নরত্বে সভ্যেবাং সন্তব্বতীতি ভাবং। সভাং তহি পর্যাহ্মিবার্মাং নিশ্চীরভামিতি চেন্তরাহং। বহুসগণ মধ্যে প্রবিশ্বা করিলে ইনি বধ করিয়া কি প্রকারে অবলীলাক্রন্তে তাহাকে এবং তাহার ছারা কপিত্ব ফল সকলকে নিপাতিত করেন ? অপিচ ইনি বলদেব সহ মিলিয়া রাগভ (গর্দ্দভ) ও তাহার বান্ধবগণকে কি প্রকারে বিনক্ত করিয়া ভালবনকে মাঙ্গল্য ও পরিপক তালফলে সমন্বিত করেন ? অধিকস্ত ইনি বল্দালি বলদেবের সহিত মিলিত হইয়া কি প্রকারে প্রল্খাহ্মেরের নিপাত পূর্বক ব্রেক্ষাসি পশু তথা পোপদিগকে দাবানল হইতে পরিব্রাণ করেন ? ৪৮ ৪

অপর ইনি কি রূপে অতিক্র ভুজগেন্ত কালিয়ের দমন পূর্বক বলে তাহাকে নির্মাণ ও নির্দাণিত করিয়া যমুনার জল বিষশুন্ত করেন ! ॥ ৯ ॥

আর হে নাল। তোমার এই জনদের প্রতি আরাদের সমুদার ব্রজবাসির দৃঢ়তর অসুরাগ এবং ইহাঁ-রও আমাদের প্রতি আভাবিক ব্রেছ কেন ছইয়াছে । ইনি ত সকলের আজা নহেন। ॥ ১০ ॥ ক সপ্তহায়নো বালঃ ক মহাদ্রিবিধারণং। ততো নো জায়তে শক্ষা ব্রজ্ঞনাথ তবাত্ম 📭 ১১॥ শ্রীনন্দ উবাচ॥

শ্রানাতাং মে বচো গোপা ব্যেতু শকা চ বোহর্ভকে। এনং কুমারমুদ্দিশ্য গর্গো মে যতুবাচ হ। বর্ণান্ত্রয়ঃ কিলাস্যাসন্ গৃহুতোহমুযুগং তমুঃ। শুক্লো রক্তন্তথা পীত ইদানীং কৃষ্ণতাং গতঃ। থাগায়ং বহুদেবস্য কচিজ্জাতন্তবাত্মজঃ। বাহুদেব ইতি শ্রীমানভিজ্ঞাঃ সম্প্রচক্ষতে।

## खी धत्रयायी ।

উক্তমপ্যতিবিশ্বরেনাভিনরেন বদস্তি ক সপ্তহারন ইতি ॥ ১১ ॥

প্রাক্ কের্ডামব পর্নাচার্য্যবাক্যং ভচ্চরিতপরিশীলনেন নির্তাশেষাস্ভাবনস্য নক্ষ্যা প্রীক্ষতভারদ্যোতকং জাতং স ইদানীং

## .বৈক্ষৰতোৰণী।

ছপি ঔংপত্তিকঃ জন্মদিনমারভা দৃষ্টঃ স্বাভাবিক এবেতার্থঃ। অত্তান্মিরিতি তত্তবৈলক্ষণ্যেন সম্প্রতি প্রস্তুয়মান ইতার্থঃ। অন্যত্তেঃ অত্ত কিমিত্যাতাৎপ্রেকায়াং মিথো দেহদেহিনোর্যথা তম্বৎ ইতার্থঃ॥ ১০॥

কে ভায়মর্থ:। সপ্তহায়নত্বন জন্মবৃদ্ধাদর: তদবস্থা গৃহীতা: তাজিশ্চ বালত্বং নিশ্চিতং। তচ্চাত্যস্তং বালাস্করেষু ব্যাপ্তিদর্শনাৎ তথা মধ্যজিধারণেন পুতনাদিবধহেত্প্পভাবত্বং স্বাভাবিকপ্রেমবিষয়াশ্রম্বঞ্চ গৃহীতং। তাভ্যাং বালাদন্ত্বং ওদন্যত্বেহিপি দেবাদিবং তথাপি পরম বিলক্ষণত্বং নিশ্চিতং। বালাস্করাদৌ ভ্রদদর্শনাং। তদেদং সপ্তেত্যাদিত্বে বালাদন্ত্বং ন সম্ভবতি গ্রহাজীত্যাদিব্দেচ পালত্বঞ্চ ন সম্ভবতীত্যর্থ:। তত্তস্মাদেকস্মিন মিপো বিরোধি ধর্মব্যাৎ শক্ষাবিপ্রতিগন্তিজ্ঞ: সংশর্ম। বালোহরং বালাদন্যঃ
প্রমাক্ষণ্যাদ্বোদিক্ষেতি॥ ১১॥

নিশাংশিষভগবদ্ধাপ্রবিত্ত প্রিমার্থনিবতীর্ণেছিয়ং সাক্ষাং প্রভিগবানেবেতি ব্যক্তমুক্তে কলাচিলৈম্ব্যক্তানেন ভয়গোরবাদিনা সেহহানিঃ স্যাদিতি শহমা শ্রীগর্গেণ সাক্ষাং পরমৈম্বর্যমন্তকা বাপদেশেনৈব তহাঞ্জয়তা যান্যক্ষরাণ্যকানি তৈরেবেদৃশস্বাভাবিক গুণবালকতা প্রতিপাদকতয়াবধারিতৈ গোঁপান্ প্রবাধয়য়াহ শ্রয়তামিতি মে মম গর্গহারা শ্রুতিতৎপ্রভাবস্য বচঃ। বঃ শহা ব্যক্ত্
কীয়তাং। অর্জক ইতি স্বস্য বাল্বেইনিব নিশ্চয়ং বোধয়তি। বহা বো যুয়াকং যো হর্জক স্কায়িতি মমের যুয়াকমপ্রয়ং বালক
ইতি স্নেইবিশেষমের বর্জয়তি। এনং ভবতাং পরমান্তরাগবিষয়ং পরোক্ষেহপাপরেক্ষরত্তিঃ। সদা তস্য সাক্ষাদিব ক্রদি ক্রতিঃ।
মে মম কুমারং প্রমিতি পূর্ববং পূনঃ পুনন্তবৈবেতি নিশ্চয়ায়। বহা। মে মাং একাকিনং বহচঃ হ ব্যক্তমের নচ সঙ্কেতাদিনেতার্থঃ।
বহা হ হর্ষে য়

## ক্রমসন্দর্ভ:।

भक्ता गःभवः ॥ ১১ ॥

বালএব বা পরম বিলক্ষণা দেবাদিবে তি শ্রমতামিত্যাদি ॥ ১২ ॥

## ঐবিশ্বনাথচক্রবতী।

অত্বাহ্ন সংক্রেব্রজবাদির্বনৌকঃস্কৃত তদ্যাপি অর্ত্রাগ উক্তলকণঃ কথং সম্ভবেৎ তদ্যাত্মারামত্বেন স্ক্রোদাসীন্যাদত্বাস্ত্ রিকেবোংপত্তিক্যা শক্তি ন' ষটত ইতি ভাবঃ ॥ ১০ ॥

উক্তনপ্যর্ত্তিধারণং প্রস্তত্ত্বাদতিবিশ্বয়েন পুনরাত্তঃ কেতি॥ ১১॥

অহে মন্তালকে ছিন্ প্ৰাক্ সিল্মহাপ্ৰভাবে মদিষ্টদেবস্য জীনারায়ণস্য ম্যাভিক্সপন্না মন্তিপদোহভিংক্সাবেশ্মালকৈয়তে সংশেরতে

ছে অজনাথ ! সপ্তবর্ষ বয়ক্ষ বালক কোথায়,আর প্রকাণ্ড পর্ব্বন্ত ধারণ কোথায়? অর্থাৎ তাদৃশ শিশুর ঐ কর্ম অত্যন্ত অসম্ভব,এই সকল কারণেই তোমার আত্মজের প্রতি আমাদের শ্লীভা জন্মিতেছে॥১১

এতৎ-শ্রবণে নন্দ কহিলেন অহে গোপগণ! আমার বাক্য শুন, এই বালকের প্রতি তোমাদের ভার অপগত হউক, এই কুমারটার উদ্দেশে গর্গমূনি আমাকে এইরপ বলিরাছেন, বুধা-এই বালক প্রতিষ্ঠান শতিষ্ঠান গরীর প্রহণ করিয়া থাকেন তাহাতে ইহার "শুল,রজ্জ এবং শীত" এই তিন প্রকার কর্নিইয়া- গিয়াছে, একণে কৃষ্ণত্ব প্রাপ্ত ইইয়াছেন, পূর্বে ক্রোন সময়েইনি বস্তুদেবের গৃহে জন্মপ্রহণ করিয়া-

বহুনি সন্তি নামানি রূপাণি চ হতল্য তে। গুণকর্মামুরূপাণি তান্যহং বেদ নো জনাং।

এষ বং শ্রেয় আধাস্যদেগাপগোকুলনন্দনঃ। অনেন সর্বান্তর্গাণি যুয়মঞ্জারিষ্যথ।

পুরানেন ব্রজপতে সাধবো দহ্যপীড়িতাং। অরাজকে রক্ষ্যমাণা জিগুদে সূ্যন্ সমেধিতাং।

য এতিম্মন্ মহাভাগে প্রীতিং কুর্বন্তি মানবাং। নারয়োহভিভবস্ত্যেতান্ বিষ্ণুপকানিবাহ্যরাং॥১২
তক্মানন্দকুমারোহয়ং নারায়ণসমো গুণৈং। প্রিয়া কীর্ত্যাকুভাবেন তৎকর্মহ ন বিস্ময়ঃ॥১০॥

## श्रीभद्रवामी।

ভেনৈৰ বাক্যেন গোপাছপদিশতি ক্ষয়তামিতি ॥ ১২ ॥

তত্মান্তস্য কর্মস্থ বিশ্বয়ো নাজীতি নন্দস্যোক্তি: ॥ ১৩ ॥

## देवकवटञ्चायनी ।

গর্নোক্তিমেবাই বর্ণা ইত্যাদিনা ন বিশায় ইত্যান্তেন। প্রাচীনপ্রকটার্ণোইত্সকের:। কিঞাত্র ভশারন্দকুমারোইয়মিতি প্রথমশ্বরণ: তৎ কর্মান্ন বিশায় ইতি চতুর্থ:। গর্নাবেল্ড ভশারন্দান্ত্রেছিয়ং তে ইতি প্রথমো গোণায়ন্থ সমাহিত ইতি চতুর্থ:। ইত্যদ্ধা
মাং সমাদিশ্য ইতি বক্ষ্যমাণাৎ। শ্রীনন্দ্রাক্যান্ত্র ভ্রাক্যমেবানেনান্দিত্মিতি লভ্যতে ভশান্বির্মার্থ পুশুক্রে সর্কোষাং স্বসাধারণ্যেন
মমতায়া গোপয়িতব্যতায়াশ্চ ব্যঞ্জনার্থমেব কিঞ্ছিৎ অন্যথা বিধায়ান্দিত্মিতি প্রেষণ যথার্থত্যা সম্পাদ্যতে স্ব ॥১২॥

নন্দকুমারোহগমিত্যত্র নন্দস্য তব কুমার ইতি ষ্ঠাতংপুরুষাৎ তথা তৎকর্দস্থ ন বিষয় ইত্যত্র তথাপি স্প্রাভাবেন পুত্রতয় বন্ধস্য তস্য নারায়ণতেবাল কর্দ্মর বিষয়ে। ন কার্য্য আশ্চর্যাং মন্ত্রাপায়নাত্রদাসীনেন ন ভাবাং ইতি তাৎপর্যাবগমাৎ। কিঞ্চ। তৎকর্দ্মতি ত্রপলক্ষণং স্বাভাবিকপ্রেমবিষয়াশ্রমত্বেহিপি ন বিষয়ং কার্য্যইতি শ্রীনন্দাভিপ্রায়ঃ। বস্তুতন্ত মিথোনিত্যস্বাভাবিকস্বন্ধো হৈত্রিতি ন জ্ঞায়তে স্থ। যদ্যপি পূর্বং তৈর্গর্বাক্যঃ জ্ঞাতমেবান্তি বক্রধানস্তরমহো ব্রহ্মবিদাং বাচ ইত্যাদি বচনাৎ। তথাপ্যধুনা তত্তদক্ষরেণ

#### ক্রমসন্দর্ড:।

তংকর্ম্ম ন বিষয় ইতি শ্রীগর্গস্যৈবাভিপ্রায়কথনং। তত্ত্তর ইতি শব্দোহপ্যবেতি গোপায়স্থ সমাহিত ইতি দম্পবোগালো-দাহতং। অংশং শব্দ্যাবেশিনং॥ ১৩॥

#### **बीविधनाशहकवर्जी**।

তদেতান্ শ্রীগর্গোইক্ষ্যব প্রবোধ্যামীত্যাশয়েনাছ ক্রম্নতামিতি॥ ১২॥

হে নল তথাদাং ক্মার ইতি গগোঁতে ন কেবলমন্তং মনৈব কুমারোহণি তু যুহাকমণীতাতোহন্দিন্ অধর্যে দৃষ্টেহণি বাংসলাহ প্রতিনিন্দানীঃশতঞ্চ ন ত্যাজানিতি বিবক্ষরৈ তথান্তলাহায়েই ইতি গগোঁকেরছকিঃ। নারান্ত্যন ইতি নারান্তাবেশানেব নবসং নারান্তং মণা প্রাক্তিনিলাণি প্রাসমেত্যাতে তথাদাং নেখারং নাপি নিজ্ঞী আঁবং কিন্তু লোকোজনকর্মা কোহণায়মখংকুলভ্বণ এব অতএব তেল গগেনৈব সর্বান্তে প্রাক্তং তৎকর্মন্ত ন বিষয় ইতি। তস্য লোকাতীতকর্মন্ত অত্যকুভদৃষ্ট্যা অমমীখন ইতি বৃদ্ধিন কর্ত্তাতে তেনৈব নিষিদ্ধান্তিন্দ্র গুলাক্ষণেশ চিনং জীবেত্যালীরেব কার্যা ন ছোদাসীভ্যতি কলতো গোপান্তৰ সমাহিত্তিলেন সেই হেতু অভিজ্ঞ জনগণ এখনও ইহাঁকে বাহ্মদেশার লিয়া থাকেন। নন্দ! তোমার পুজের শুণ ও কর্মের অসুরপে বহু ২ নাম রূপ আছে, সে সকল অনুক্রানি, অন্য ব্যক্তিরা তাহা অবগত নছে। ইনি গোপ ও গোকুলের আনন্দজনক হইনা তোমাদের মঙ্গল বিধান করিবেন। তোমরা ইহাঁর ছার্যা বস্তুতঃ সমস্ত তুর্গ (বিপদ্) উত্তীর্ণ হইবে। হে ব্রজপতে! পূর্বকালে একদা অরাজক হইলে সাধ্গণ দহ্যেশীড়িত হইনাছিলেন, ইনি রক্ষা করাতে সেই সকল সাধু সমেধিত অর্থাৎ বন্দীপ্ত হইনা দহ্যুক্তিক পরাজ্য করেন। অতএব বাঁহারা তোমার এই মহাভাগ পুজের প্রতি প্রতি করেন, যেমন অস্ক্রপণ বিষ্ণুপক্ষীয়দিগকে অভিভব করিতে সম্বর্ণ হর না, তেমনি সেই সকল ব্যক্তিকে অরিগণ ক্রমন পরাজ্যক করিতে পাছে না ॥ ১২ ॥

ছে নন্দ। তোমার এই পুত্র গুণ, সম্পত্তি, কীর্ত্তি এবং অসুভাব ছারা নারায়ণের সমান। এই সকল

ইভ্যদ্ধা মাং সমাদিশ্য গর্গে চ স্বগৃহং গতে। মন্যে নারায়ণস্যাংশং কৃষ্ণসক্লিইকারিণং। ইতি নন্দবচঃ প্রুছা গর্গগীতং ব্রজ্ঞাকসঃ। মুদিতা নন্দমানর্জ্যু: কৃষ্ণঞ্চ গভবিস্ময়াঃ ॥ ১৪ ॥

## द्यीधवयामी ।

ইতারা সাক্ষাৎ মাং প্রতি সমাদিশ্য গর্গেচ স্বগৃহং গতে সতি তদানীং তথা অমন্যমানোহপি ইদানীং ক্লঞং নারারণস্যাংশং মন্যে তত্ত হেতুঃ অক্লিষ্টকারিণ্মিতি॥ >৪॥

## বৈক্ষবভোষণী।

সমগ্রতয়েতি বিশেষ ইতি সপ্তবাক্যানি॥ ১৩॥

যতোহহং পিতাপি ততঃ প্রভৃতি তং খ্রীনারায়ণোপমমেব মন্যে ইত্যাহ ইতীতি অংশং তচ্ছক্ত্যাবেশিনং মন্যে বিতর্করামি ॥

নন্দগাবেছঃ তন্ধারা গর্গগীতক শ্রহা। যহা। গর্গগ গীতং গাথা শ্রীভগবন্দীতাদিবং গীতা বা যদিংতং। আনর্জঃ হন্দপৃহাদান্ধচন্দনবন্ধভূষণদিনা আদৌ নন্দস্যার্জনং শ্রীকৃঞ্চর তত্ত এবোংশর্মহাং উদ্যাণি পিতৃত্বেন মান্ত্রাহা। তচ্চ শ্রীকৃঞ্চ বনাদাগতে সন্ধার্মান্দিতি জ্বেয়ঃ। যহকেং শ্রীপরাশরেণ শ্রীকৃঞ্চং পোণাং সাক্ষাৎ এব পপ্রক্তুরিতি। তেন চ নিজাধিক জ্বানাং লক্ষ্মান্তরাণং প্রত্যুক্তং। যথা শ্রীকৃঞ্পুরাণে শ্রীকৃঞ্পুরাণে শ্রীকৃঞ্পুরাণে শ্রীকৃঞ্পুরাণে শ্রীকৃঞ্পুরাণে শ্রীকৃঞ্চ করাত। গতে শক্ষে তু গোণালাঃ কৃঞ্মক্লিইকারিণং। উচুং শ্রীতাা ধৃতং দৃষ্ট্র তেন গোবদ্বিনাচলং। বয়নন্দ্রাহাভাগ তবতা মহতো ভ্রাহ। গাবন্দ ভ্রতা আভা গিরিধারণকর্মণা। বালক্রীড়েরমতুলা গোণালাম্থ কৃঞ্চপ্রতান কর্মারণা ভ্রতা কেগুডাং। কালিয়াে দমিতস্তোয়ে প্রলাহাে বিনিপাতিতঃ। ধৃতো গোবর্জনন্দারং
শক্ষিতানি মনাংসি নঃ। সত্যং স্তাং হরেং পাদৌ শপামোহ্মিত্বিক্রম। যথা ভ্রীষ্ট্রমালোক্য ন স্বাং মন্যামহে নরং। প্রীতিঃ সন্ত্রীক্র্মার্ম্য ব্রক্স্য দ্বির কেশব। কর্ম চেদনক্ষ্যং বং সমক্রেজিনলৈরিণ। বালস্থং চাতিবীষ্টাং চ ক্রম চান্মান্ধলালনং। চিন্ত্রানান্মমার্মান্দাম্প্রকৃষ্ণ প্রথক্তি। দেবাে বা দানবাে বা দং যক্ষোগর্মর্জ এব বা। কিং বান্মাকং বিচারেণ বান্ধবােহিসি নমােহন্ত তে।
শ্রীপরাশর উবাচ। কণং ভূম দ্বাসী ভূক্ষীং কিঞিং প্রণয়হেলাবান্। ইত্যেবমুক্ততৈ র্নোধিবাহ কুফ্যো মহামুনে। মংসহন্ধনন বাে গোণা যদি লক্ষ্মান নালতে। গ্রাহ্বোবাহহং ভবতাং ক্রমা বাদ্বাহিক্ষ্মান্ত্রি। তথা বৈশপ্রায়নেনাক্তং তংগ্রিবিচনং। মন্তর্জ্বাং মাং যথা সর্কে ভবতাে ভীমবিক্রমাঃ। তথাহং নাবমন্তব্যঃ সন্ত্রীয়েহিম্মি বান্ধবা। যাল্যং ভবতাং শ্লাঘাে বান্ধবা দেবসপ্রভা। পরিক্তাতেন কিং কার্যাং যদেয়হাহছ্যহােরা মমে-

## ক্রমসন্দর্ভ:।

গর্পদ্য গীতং যত্র তং। আনচু: স্বস্থাহেভ্যোগন্ধনাল্যবস্তাদিনা। এতচ্চ সন্ধার্ত্তং। সংবাদস্ত প্রক্রমেণ বনং গতএবেতি গম্যতে॥১৪

#### ঐবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ইতি গর্গোক্তিরেবোক্তা। গোপানাং বিশ্বয়নির্সনেন সংশ্রাপনোদন্ক কুত্মিতি॥ ১৩॥

অংশং তচ্চক্তাবেশিনং মন্যে বিতর্কয়ামি। অস্থান্ অক্লিষ্টান্ কর্ত্তুং শীলং য্স্য তং ॥

আনর্জ্ন বস্ত্ররত্বর্ণ মুরোপহারেণ সন্ধানয়ামান্তঃ। ক্লফে বনাদাগতে সতি সার্গ্ধ তং পীতাম্বহারকটককুগুলকিরীটেরলঙ্কতা মুদ্ধ মন্ত্রজ্ঞ নত্বণ চিরং জীবেতুগপলালয়ামান্তঃ ৪ ৪ ৪

গর্গোক্তি পুনরুক্তি করিয়া নর্শ বলিলেন, অতএব হে গোপগণ! ইহাঁর কর্ম সকল বিস্ময়ের বিষয় নহে॥ ১৩॥

মুনিবর গর্গ সাক্ষাৎ আমাকে ঐ প্রকার আদেশ করিয়া স্বস্থানে প্রস্থান করেন, যদিও তৎকালে আমার মনে এইরূপ প্রতীতি হয় নাই তথাচ একণে আমি কৃষ্ণকে নারায়ণের অংশ বলিয়াই মান্ত করি, যে হেতু ইনি আমাদিগের অক্লিউকারী ( হুখকারী )।

হে রাজন্! ব্রজবীসী গোপগণ ঐ প্রকার গর্ম-গীত নন্দবচন প্রবণ করিয়া সাতিশয় হর্ষিত হই-লেন এবং বিস্ময় পরিত্যাগ করিয়া শ্রীকৃফের অর্চন করিতে লাগিলেন ॥ ১৪ ॥ বিশ্ব সংক্রিক

# त्मरव वर्षा व यस्त्रविश्ववक्षया बद्धाणाशक्रयानितेनः मीमरशानशचित्रवाञ्चणवनः मृख्रीमूकम्पूरिकात्रन् ।

#### श्चित्रवामी।

পোবৰ্দ্ধনোদ্ধনণ সপরিকরং পরিক্ষর প্রকটিতেবর্যাস্য প্রীকৃষ্ণ প্রীতিং প্রার্থিত দেব ইতি বন্ধবিপ্লবেন যা কট্ তরা দেবে ইক্সে বর্ধতি সতি। বন্ধাপাক্ষানিলৈং অদানিকলপর্করাতীরবায়্তিং সীদং পালপতান্ত সীদন্তং পালাং পদবন্ত স্তিম্বন্তং। তথা আত্মা ক্ষমেন পরণং বস্য তলোগার্চং দৃষ্ট্। অন্তকন্পী উৎস্মন্ হস্ন প্রৌচিমাবিদ্র্সন্ বা লৈলম্ৎপাট্য অবলো বালোলীলার্থমূদ্ধিনি লীক্ষ্ণতা তথা একেন করেণ বিভ্রু দধং গৈছিং অপাৎ পালিতবান্ এবং মহেক্সমন্তিং গ্রামিক্স ইত্যুত্রাধ্যায়ার্থক ক্ষরতি স এব-

#### বৈষ্ণবজোবণী।

ত্যাদি। তচ্চ শ্রীনন্দোররেণ হতদলেহা অণি পরমৌৎস্কেরন সাক্ষাজ্ঞীতগবষ্থাদেব শ্রোকুং অভ্রিকুং চ তদেবোচুরিত্বি কলনরা-পরিচার্যানিতি॥ ১৪॥

এবং সমাণ্যাণি পরমানন্দেন তদেব 'গোবর্দ্ধনোদ্ধরণ সপরিকরমহুত্মরন্ তত্র চ নিজ্ঞাবাশ্রহায় গোঠন্য নিজ্ঞাববিষয়েণ গবেক্তরামুখ্যাতেন শ্রীভগবতা কৃতাং রক্ষাং তদর্থমিক্তমখভদ্ধনীং চামুত্বতা বাঢ়ং প্রীরিমাণ তাং প্রীভিমেন সর্বপ্রধাধিকতয়ামুভ্তন্তন্ত তাঞ্চ পূন: শ্রীগবেক্তবিরচিত প্রীভামুগ্রীতদে সতি পরমাত্মানবতীং জানংত্তংপ্রীতিমেন প্রার্থমতে দেবেতি। তত্র দেবে বর্ধ-তীত্যত্র প্রতিকার্যাত্মং সত্রাসমিন দর্শিতং তত্রাপি যজ্ঞবিল্লবন্ধবত্যতিশন্ধঃ। অরপতোহপ্যতিশরমাহ বক্তেতি। পর্বেতি রেক্ষ সংযোগী পাঠা কচিং। বন্ধানিভি: দীদভাং পালাঃ গোলাঃ গেলাঃ বিশ্বমুক্তরতি অত্রথামুক্ষণীতি ভূমি মর্থবিলঃ। এবং কুপাব্যপ্রেছিপি তত্মিন্দু প্রত্যামেবা-সীদিত্যাই উৎস্বর্গরত্যানি ইন্ধং প্রতি সোংপ্রাসংস্বর্গরত্ত্বং। তালুল এব সন্ শৈলমুংপাট্য তত্রাপ্যেকেন বামেন করেণ। তত্রাপি বালো লীলাপ্রন্থোলনকম্ছিলীন্ধু যথা তহং। তত্রাপি বিভ্রং সপ্তাহোরাত্রানেকেরীত্যা দধং। তদেবং বিস্বর্গরেইংক্তমুর্থতিভিরাবিই আহ গোঠমপাদিতি সগর্ব হর্ষমাহ মহেক্তমনভিনিতি। গ্রামিক্রাছিপি মহেক্ত্রমান মহেক্তর্মিপ সমুত্রে নদীবং প্রবিশতীতি ভাবং। প্রীরাদিত্যাশীর্লিঙ্খ। তৎপ্রীত্রে জাতারাং মম প্রার্ভজনামুগ্রমিপ সেংজ্জীত ভাবং। তথাব গোর্চজনভাবেনাই ইক্রো গ্রামিতি নোহ্মাকং গোরুলেক্রো বা। তদেবং তদেব অসুক্রার্থিদেন দর্শিতং শ্রীরন্ধবিদ্ধার ক্রের্থাতি। ত্রারাণ্ডা প্রার্থিত। অরমর্থং। বীরং শ্রীক্রজন জ্বনো জাতমাত্র এব স্পৃধং প্রাক্রানান্বিগ্রান্তিপিংসাং রণং। অসুক্রম্বিদ্বেশ ক্রির প্রাণ্ডার্গরে ক্রির্বালিত। বিহান্তিপিংসাং রণং। অসুক্রম্বির সম্পানং স্বর্ধের প্রাণ্ডার ক্রানা প্রাণ্ডার । বিহাহ প্রান্ধান্ধ বিশ্বের বিশ্বের ব্যাংশ স্থাপন্ত। ইন্ধত্যর্নানাবিধান্ সংগ্রামাংশ্চনার ইত্রর্থং। কিঞ্চ। অরমর্থং। বীরং শ্রীকং প্রাণ্ডার রণং প্রাণ্ডার । ইন্ধত্যর্নানাবিধান্ সংগ্রামাংশ্চনার ইত্রর্থং। কিঞ্চ। অরম্বর্ধার রং প্রোণ্ডার রণং প্রাণ্ডার। ইন্ধত্যর্নানাবিধান্ সংগ্রামাংশ্চেরার ইত্রর্থং। কিঞ্চ । অরম্বর্ণার স্বর্নের গোলার বাং বিলার নিন্দিন্ত বিধানাংশিকার ইত্যর্থং। কিঞ্চালালাল স্বর্নের গোলার বিধান্ত বিধানাংশিকার ইত্যর্থিত। ক্রির স্বান্ধানার বাংলিকার বিধান্ত কর্মানাংশ্চিকার ইত্যর্থং। কিঞ্চালালাল স্বর্যের বিধানিকার বিধান্বিকার বিধানিকার ব

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

পুনস্তামের দীলাং স্থারন্ তার দশিতিগোকুলজণাতিশয়ং শীক্ষকং স্থাংস্তংকুপানের স্বপুরুষার্থকেন প্রার্থয়মানস্তমের নিকেই-

### बीविश्वनाथहक्तवर्धी।

ভো রাজনিজকোণোখিতাবজ্ঞানবর্ষাদিকানহাস্থটালোগের্জনমূত্তা তদাপ্রিতং গোঠং রক্ষ্ তরখপ্রবর্জনপথিতঃ কৃষ্ণো ব্রুলোকগর্জহয়া প্রীণাতি তথৈব ব্লাকোপেথিতাবায়জাদিদং জ্ঞাগাবতং বেদোদিখিতা উদ্ভূত যাং রক্ষ্ তৎপরারণমথপ্রবর্জনপথিতঃ কৃষ্ণো তভিরহিতদার্শনিকভূত্রলোকগর্জহয়া প্রীণামিত্যাশনেন পরীক্ষিতঃ বাজগোঁতং মানবন্ কৃষ্ণপ্রীতিং প্রার্থিরতে।
দেবে ইতি বজ্ঞবিপ্রবেন যা কট্তরা দেবে ইল্পে ব্রতি সতি বলৈর্জতিশত পক্ষানিলৈশ্চ সীদংপালপত্তি সীদ্তঃ পালাঃ পশব্দিরশত বিদ্ধিন ত্তরণা আছা প্রয়েষ শরণ ব্যাত দেশাইং তৃত্ব। অম্কশ্লী কুপাল্লংক্ষন্ ব্যাতিবাবিষ্ক্রন্ অবলো বালো লীলয়া বথা উল্লিলী ভ্র

অহো। যজ্ঞব্যাঘাত-জনিত ক্রোধে উদ্দীপ্ত হইয়া দেবরাজ ঘোরতরবর্ষণ করিতে থাকিলে বক্ত, করকা, তথা প্রবল প্রনে গোষ্ঠত্ব পশু, পশুপাল তথা অবলাসকল অবসন্ধ ইইতেছিল, তাহা অবলোকন করিয়া হাত্ত করিতে করিতে যিনি গোর্বর্জন উৎপাটন করেন এবং অবল বালক যেমন লীলার্থ উচ্ছিলীজু ধারণ করে তাহার ন্যায় এক হতে দেই গিরি ধারণ প্রংসর গোষ্ঠ রক্ষা করিয়াছিলেন,

উৎপাট্টেকেক্টেরণ শৈলমবলো দীলোচিছলীন্দ্রং যথা বিজ্ঞদেগার্তমপাশ্মছেন্দ্রমদভিৎ প্রীয়ান্ন ইন্দ্রোগবা॥ং১৫

॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে নন্দলোপসন্থাদঃ মড়্বিংশোধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ২৬ ॥ # ॥

প্রীবাদরায়ণিরুবাচ॥

পোবর্দ্ধনে ধতে শৈলে আসারাদ্রক্ষিতে ত্রজে। গোলোকাদাত্রজৎ কৃষ্ণং হুরভিঃ শক্র এব চ ।>

## श्रीभव्यामी।

স্কৃত: প্রীক্তকো নোহস্মান্ প্রতি প্রীয়াণ প্রীয়তাং। বড়বিংশে দশমে ব্যক্তঃ বড়বিংশো দশমো হরি:। ব্যনক ুপঞ্বিংশং মাং চড়-ক্সিংশতিতঃ পৃথক্॥ ১৫॥

॥ 🕶 ॥ 🛮 रेंकि मणरम युष् ्विः 📲 ॥ 🖚 ॥

সপ্তবিংশে তদালক্ষ্য কৃষ্ণস্য প্রাভবং পরং। বর্ণাতে স্থরতীক্রাভ্যামভিবেকমহোৎসব:॥ •॥ গোবন্ধনে ধৃতে শৈলে ইতি শক্রস্য ভয়েনাগমনে হেতু:। আসারাদ্রক্ষিতে ব্রঙ্গে ইতি স্থরভেহ র্বেণাগমনে॥ ১॥

## देवकवद्यावनी ।

রূপেণ অব অনায়াদেন সম্পদ: গোগৈর্দপ্তমন্নদিকং ভক্ষিতবান্। কিঞ্চ। স্পৃধৎ স্পর্ক্ষানং নাকং তৎপতিং নাকস্থং মেঘচক্রং চান্তভাৎ ত্তমামাস যতঃ পৃথুং অদ্রিং অনুশ্চৎ উৎপাট্য ধৃতবানিত্যর্থ:। স্বরসায়া সীলয়া এবেতি ॥ ১৫॥

॥ •॥ ইতি এীবৈষ্ণবভোষণ্যাং দশমটিপ্পন্যাং বড়্বিংশঃ ॥ •॥

গা নিতাং বর্দ্ধরতি তথা তন্মিরিতি তৎসাহায্যেন মহার্ষ্ট্যাহিপি তয়া গবাং হৃঃথশকা নিরন্তা প্রত্যুত তৃণাদধিক সম্পত্যা সমৃদ্ধিরের হৈচিতা। ব্রহ্ম শব্দেন ডব্রত্যা মানুষাঃ পশুপক্ষ্যাদর্শত গোলোকাৎ প্রাক্ততাৎ নম্বপ্রাক্ততাৎ প্রীগের্ন্তাক্র প্রকাশ বিশেষাং। ইক্সস্ তদীরস্ক্রভিস্কাসন্তাবাং। অপ্রাক্তগোলোকস্ত অষ্টাবিংশাধ্যায়ান্তে দশ্বিষ্যতে। ইক্সত তয়া সহাগমনং শ্রীকৃষ্ণত গোপ্রিমতাজ্যানাং। তব্যাপি তস্যা আদ্যাহাং। অব্য ইক্ষোহিপি তদানমনার্থং তব্র গ্রাহা ব্যাধারক্তি সম্বাত্তা। ব্রহ্মণা চোদিতা বয়্মিতি প্রবিভিষ্কাশ্যাং ত্রত্ ব্রহ্মণা প্রেষিত্তেনৈর সহাগতস্তত্যত প্রস্কৃত্যা সমং ব্রহ্মজ্ঞামাদায়াগত ইতি চ। অপ্যর্থে চকার:। মহাপরাধিকে জন্যা গমনং ন সম্ভবেং তথাপ্যাব্রক্ষেদিত্যুর্থঃ। অনন্যগতিক্রাং। ত্র হেতুং। ক্রফং স্বয়ং ভগবন্তং অতঃ শর্ণাগতবেং

### क्रममन्दः।

দেবত্বেন ব্যঞ্জাতি দেব ইতি॥ ১৫॥

॥ \*॥ हेि अभिवेतरशाचामिक्ट मनमक्रमनम्दर्ध वर्ष् विःनः ॥ \*॥

গোলোকাং প্রাক্কতাদেব নত্বপ্রাক্কতাং। ইন্সস্য তদীয়সঙ্গো ন সম্ভবতীতি। ইন্সং নত্বাভিষেক্ষ্যামো এক্ষণা চোদিতা বয়মিতি স্বভিবাক্যাচ্চেনং লভ্যতে। শ্রীপ্রহ্মপার্যে ভয়ালগতঃ শত্রুত্বদাজ্ঞয়া গোলোকাং স্বর্জিমানীয় পুনত্তথা তদাজ্ঞয়াগত ইতি॥ ১॥

## ত্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

সকেনৈব করেণোংপাটয়তি তথৈবোংপাট্য বো গোষ্ঠমপাৎ স গবামিক্সেতি ইক্স এবেক্সস্য মদং ভিনতীতি ন্যায়ঃ। ক্ষুকো নো মাং পরীক্ষিতং এতান্ শ্রোভৃংশ্চ প্রতি প্রীরাৎ প্রীণাতু ॥ ১৫ ॥

॥ 🛊 ॥ ইতি সারার্থদর্শিলাং হর্ষিণাং ভক্তচেতসাং। হড়িংশো দশমেহধারং সকতঃ সকতঃ সতাং ॥ • ॥

সপ্তবিংশে ভয়াদিক্সস্ততিস্তত্ত কুপা ইরে: । স্থরভ্যা চাভিবেকো যদেগাবিন্দেত্যভিধাভবং ॥ • ॥
স্থাদারাদ্রক্ষিতে ব্রঙ্গে ইতি শক্ষ্ণ্য ভরেনাগমনে হেতু:। স্থরভেক্ত ব্রস্কাঞ্জয় ভগবদভিবেকঃ শক্ষণাহায়ঞ্চ। ব্রহ্মণা চোদিতা

মহেন্দের মদভেদী গোদকলের ইন্দ্র সেই শ্রীকৃষ্ণ আমাদের প্রতি প্রীত হউন্॥ ১৫॥

॥ # ॥ है जि. मनास्य यु विश्म ॥ # ॥

সপ্তবিংশাধ্যায়ে শ্রীকৃষ্ণের অভ্ত প্রভাব অবুরোকন করিয়া হর্ছি ও হরেন্দ্র কর্তৃক অভিবেক

एकरापय कहिरतान रंगायकन अर्था शुंख बातः ब्रुडिशादा हरेएक खब्बमधन त्रिक स्वरता स्वास्ताक

বিবিক্ত উপসংগম্য ত্রীড়িতঃ কৃতহেলনঃ। পস্পর্ল পাদয়োরেনং কিরীটেনার্কবর্চসা । ২ ॥
দৃষ্টপ্রুতানুভাবোহস্থ কৃষ্ণস্থামিততেজনঃ। নফজ্রিলোকেশমদ ইন্মাই কৃতাঞ্জলিঃ॥ ৩॥

## शैशक्षामी।

তত্ত্তে আগতা কিং ক্লতবান্ তদাৰ বিবিক্ত উপসন্ধান্তাদিনা অধাহ স্বভিবিত্ততঃ প্ৰাক্তনেন গ্ৰছেন। বিবিক্তে একাডে পাদয়োঃ পশ্পৰ্শ নমশ্চকার ॥ ২॥

অস্য প্ৰীকৃষ্ণসা প্ৰতশ্চাসাৰস্ভাবন্দ প্ৰতাম্ভাৰঃ দৃষ্টঃ প্ৰভাম্ভাবে। বেন স ইস্ত: নইন্তিলোকেশোৎহমিতি মদো বস্য সং ॥ ৩॥

## देवक वरकावनी।

নাত্রজনিত্যর্থ:। স্থরভিপক্ষে কৃষ্ণং স্থানতিরভাশুনোকর্থকং। এবশব্দেন শক্রন্ত কৈবল্যং বোধ্যতে। বাহনাদি-পরিবারভ্যাগেনাগমনাং ব্রহ্মবিদেবমাতৃ গাং চাতিসংঘট্টভরা দ্বে স্থিতজাং। অত্র বিশেষ: ঐবৈশম্পায়নেনোক্তঃ। স দদর্শোপবিষ্টং বৈ গোবর্জনিশিলাতলে। কৃষ্ণমন্তিইকর্মাণং পুরুত্তঃ পুরন্ধর:। তং বীক্ষ্য বালং মহতা ভেজসা দীপুমব্যয়ং। থোগবেশধরং বিষ্ণুং প্রীতিং লেভে পুরন্ধর:। তং সামুজনদক্ষায়ং কৃষ্ণং শ্রীবংসলকণং। পর্যাপ্তনরন: শক্রং পুনং পুনক্ষেক্ত। অতঃ প্রীতিং লেভ ইতি পূর্বং প্রক্রন্ধতাত্ত দর্শনাসন্তাবনারাসীৎ ভক্তাগ্যাগমাদিতি ভাবং। কিঞ্চ তত্তৈব। তল্পোপবিইল্ মুধং পক্ষাভ্যাং পক্ষিপ্তাহর মুর্দ্ধি পক্ষাভ্যাং চকারোরগভোক্ষন ইতি। প্রীপরাশরেণাপি। গ্রুত্ত দর্শলিতরস্কর্মনিগতং ছিলং। কৃতজ্বাহং হরে মুর্দ্ধি পক্ষাভ্যাং পক্ষিপুস্বমিতি॥ ১॥

বিবিক্তে বিজয় ইতি গোক্লে তেবাং প্রকটাগমনব্যবহারাভাবাং। ক্ষমাপণার একান্তে ব্যবহারাদিছভাচ প্রীক্ষটেশ্যকাকিখেন ভাষ ছিভিন্স নভসি দ্রভন্তংহ্রভিসহিতং তং দৃষ্ট্। কেনাপি ব্যাজেনাগৃমনাং বিবিক্ত উপসঙ্গমোতি হারভিং বিনেতি গমাতে ভচ্চ শ্বমনবাসাবেকাকিতরা দীনো ভূষা প্রথমং মিলব্লিভি হারভ্যা এব প্রেরণরেভি জ্ঞেরং। তার হেষ্ডরং ব্রীড়িভঃ প্রাপ্তদক্ষঃ কুড়ঃ কুড়ং হেলনং হৃত্তক্যাদিনা ভগবদবক্তা বেন কিরীটেন্তি দশ্বংপ্রধামং বোধ্যতি অর্কবর্চসেতি তস্য তুংপানরোক্রপবোজিভস্য শোডাং বর্ণরিভি ৪২৪

ষ্মস্য বালগোপালরপদ্য কৃষ্ণস্য নরাকৃতিপরবন্ধণ:। দৃষ্ট: শ্রীগোবর্দ্ধনোদ্ধরণেন শ্রন্ত: শ্রীবন্ধানিমূখেনামূভাবো বেন দঃ। অমিতঃ জনবং তেলো যদ্য তত্তেতি। অর্কতুলাকিরীটতেলোমূলোপাদাবর্ককোট্যধিকতেলঃপুঞ্জ লাজন্মনান শ্রীপদান্ধনগাগ্রাংগু-

## क्रमम्बर्छः।

বিবিজে বিজ্ञনে শ্রীবৈশপায়নেন স্থানং চোজং। স দদর্শোগবিষ্টং বৈ গোবর্জনশিলাতলে ইভি। বিবিজ্জক দ্রতন্তং দৃষ্ট্য বহুলপুপাহরণাদিকমিৰেণ সধীনাং দ্রত প্রস্থাপনাং। শ্রীরামস্য চ তদিনে কথকিং অনাগমনাদিতি জেরং॥ ২॥ ৩॥

## **बै**विश्वनाथडळवर्जी।

বর্ষনিতি জত্তে:। পোলোকাৎ আক্তাদেব নম্ব্রাকৃতাবৈকুঠবিশেষাৎ ভদীর ক্রতেরিক্রনাহিত্যামূপপত্তে: ॥ ১॥

বিবিক্ত ইতি হত হত্ত শক্তহতক্স্য বন্ধপ্রহারৈর্মন গোবর্দ্ধনপৃষ্ঠং কীদৃশং কর্জারমভূদিতি দিদৃক্ষা কদাচিং প্রাতরেকাকিনৈৰ ক্ষেত্রন তত্ত্ব সমনাত্তি ব্যাতে দর্শনস্থানক হরিবংশে ব্যক্তং! স পদর্শোপনিষ্ঠং বৈ গোবর্দ্ধনশিলাতল ইতি। পূর্ব ভোং শক্ত বং প্রথমবেকক এব বর্হনাধিত্বপরিচ্ছাং পরিত্যক্ত্য দীনো ভূবা ত্বাপরাধং ক্ষমন্ত্রিভ্তেলেভাকরণাত্ত্বমাদ ভ্রমিণতেতি ক্রেড্যা প্রেরণাত্ত্বসম্প্রাত্ত ক্রেড্যা প্রেরণাত্ত্বসম্প্রাত্ত হিল্পা বিশ্ব কিনিদং তে মহাপারং বাংসল্যং দৃশুতে বহাল্যাদুক্ষবাং ভল্মবহস্তারং সাগসম্পি মামছু-কশ্পিভূমারাসীতি স্থানিতেলোকে সভি ব্রীড়িতঃ ॥ ২ ৪

আবে দৃষ্টা বনেঅভ্যানের পশ্চারপরাধিত্বং বসা নিশ্চিত্য পরিত্রাণোপায় জিজাস্থা মেরুপুঠং গছা প্রত্যা বন্ধুখানমুভাবঃ

# হইতে হরভি এবং ইক্স ঞ্রিক্সের সমীপে খাগমন করিলেন ॥ ১॥

দেবরাজ অবত্যন জন্ম লক্ষায় লক্ষিত হইয়া, নির্জনে সমিধান গমনপূর্বক আপনার যে কিরী-টের কিরণ অর্কভূল্য নেই কিরীট মারা জীকুক্ষের চরণবয় স্পর্শ করিলেন ॥ ২ ॥

শ্মিততেকা ভগৰানের অনুভার যেরূপ ঞ্চত ছিল প্রত্যকে সেইরূপ নিরীক্তি হওয়াতে শামি

8649

'ইন্দু উবাচ॥

বিশুদ্ধসন্ত্রং তব ধাম শাস্ত্রং তপোমরং ধ্বস্তরজ্বসন্ধ্রং 🕽 🖖 🦠

মায়াময়োধ্য়ং গুণসংপ্রবাহো ন বিদ্যুতে তেইগ্রহণাসুবন্ধঃ ॥ ৪ ॥

## **टी** पत्रशामी

তত্ত্ব মমাণরাধং ক্ষমখেতি বকুং তব তাবদপরাধো নাজ্যেব ধরাত্বএই এব ক্বত ইত্যাহ চতুর্ভি: বিশুদ্ধসন্থমিতি ধাম স্বরূপং শাস্ত্র-মেকরূপং অতএব তপোমরং প্রচুরক্কানং সর্বক্তমিতার্থ: কুত: ধ্বস্তরক্তমন্থং ধ্বতেহবিদ্যমানে রক্তমসী বন্ধিন্ অতএবার্যমন্ত্রাদিষ্ দৃশ্যমান: মারাকার্যারপো গুণসংপ্রবাহঃ গুণৈ: সম্প্রোহত ইতি তথা সংসার ইত্যর্থ:। স তে তব ন বিদ্যুতে বতঃ অপ্রহণেন অক্তানেন অত্বব্যত ইতি তথা সং সর্বস্তি বিশ সংক্রামান স্বর্থাত ইতি তথা সং সর্বস্তি বিশ ক্রামান স্বর্থাত ইতি তথা সং স্বর্থাত ইতি তথা সং স্বর্থাত বিত্ত তথা সং স্বর্থা সং স্বর্থা স্বর্থা বিত্ত তথা সং স্বর্থা স্বর্থা

## বৈষ্ণবভোষণী।

লছরীক্ত ভক্তারো দিবা ধন্যোতার্মান ইব বৃত্ত ইতি স্চয়তি। অতএব চ সদ্যোনই স্থিলোকেশ্যদ:। অমিততেজ্য ইতি পঞ্চয়ত্তং বা। হৈতাবর্থ: সূত্র ॥ ৩॥

ক্ৰেসন্দৰ্ভ:

বিশুদ্ধং স্বামতি ব্যাখ্যা ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥

## শ্ৰীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

প্রভাবো যেন স:॥৩॥

গর্কাদেব অন্নথং বিধপ্তা লোভাদেব বংসপ্রদানীয়ং নৈবেদাং ভোকুং গোবর্ছনমধং মিবমেরাকরবমহমিতি মন্তবং খং জানাস্যে-বৈতি অস্থিন ব্রুক্তালিক নাশকা ভো নাথ অনায়ামোহিতোপ্যকং অংকুপালেশেনাধুনা ছব্ভব্যেত্নাত্রং বৃহং জানামীত্যাই শুদ্ধমিতি ছাভাাং তব ধানস্বরূপং লাজ্যমুগ্রং তপোন্ধং জ্ঞানস্বরূপং তহি কিঃ সৃত্বপুণোখং ন বিশুদ্ধস্থং অপ্রাক্তং চিদানক্ষয়মিতার্থং। আতোরজ্ঞানগান্ত্রি সন্তাবনৈব নাজি প্রভ্যুতান্যগতরোরপি তরোছভোধ্বংস এবেত্যাই ধ্রুক্তং রুক্ত্যশত দ্বাৎ বংশ্বর্ণাদি কর্ত্বপ্রি রক্ত্যমণী নগুত ইত্যবং। অতোহস্বিন অগতাম্বাদির যো গুণানাং স্বাক্ প্রবাহং সংস্বিদ্ধান স্বাদ্ধান্ত্রং ন বিদ্যুতে গ্রহণস্থান্ত্রহান বিদ্যুত প্রবিদ্ধান্ত্র ক্ষিত্র স্বাদ্ধানী কর্ত্য ক্ষাতিং কৌতুক্বশাদন্ত নাজ কোহণি দোবন্ত্রাহ্ স্বগ্রুণামুবৃদ্ধং ন বিদ্যুতে গ্রহণস্যান্ত্রহান আক্ষাক্ষাণি বৃত্ত সংগ্রহণান্ত্র প্রাক্ষাক্ষাণ বৃত্ত সংগ্রহণান্ত্র প্রাক্ষাক্ষাণ বৃত্ত সংগ্রহণান্ত্র প্রবিদ্ধান্ত্র স্বাদ্ধান্ত্র প্রক্ষান্ত্র স্বাদ্ধান্ত্র স্বাদ্ধান্ত স্বাদ্ধান্ত্র স্বাদ্ধান্ত্র স্বাদ্ধান্ত স্বাদ্ধান্ত স্বাদ্ধান্ত স্বাদ্ধান্ত স্বাদ্ধান্ত্র স্বাদ্ধান্ত স্বাদ্ধা

ত্রিলোকের ঈশ্বর এই বলিয়া দেবরাজের যে অহঙ্কার ছিল তাহা বিন্ট হইল। একণে কৃতাঞ্চলি হইয়া বক্ষ্যমাণ বিনীত বাক্য বলিতে লাগিলেন।। ৩॥

ইন্দ্র কহিছেন ভগবন্। আপনকার স্থান শান্ত অর্থাৎ একরপ তপোমর এবং জানপ্রচুর অর্থাৎ সর্ববিজ্ঞ, তাহাতে রজ ও।তেনোওণ থবত হইরাছে, ছতরাং তাহা বিশুলসন্ত অতএব অস্থাদৃশ জন সমি-ধানে-দৃত্যমান এই যে নারাময় সংসার যাহা অজ্ঞানে অনুবন্ধ, (মোহনয়) ইহা আপনকার নাই দিও॥ কুতো মু তদ্ধেতৰ ঈশ তৎস্কৃতা লোভাদয়ো বৈহৰুইলিইভাৰী:।
তথাপি দণ্ডং ভগ্ৰান্ বিভৰ্তি ধর্মাক্ত গুটেণ্ডা খলনিতাহার ।
পিতা গুরুত্বং জগতামধীশোত্রতায়ঃ কাল উপাতদণ্ডঃ।
হিতায় চেচ্ছাতমূভিঃ সমীহৃদে মানং বিশ্বন্ জগদীশমানিনাং॥ ৬॥

## वीधत्यामी।

য়দা অজ্ঞানতংকৃতদেহসম্পন্ধে নতঃ তন্ত্ৰ তংকৃতানাং লোভাদীনাং কা বার্কেতা। কুতোছে বিভি তংকৃতা দেহসম্পন্ধতাঃ তন্তেবঃ প্নর্প্যন্যস্য দেহস্য হেতবঃ নত্ন জ্ঞানিনামপি তে দৃশাতে অভএবাই অবুধ্বিস্ভাবাঃ অজ্ঞানিনাং গমকাঃ যাবজাগাদিমস্বং ভবিজজ্ঞানিত্যের ন দিশ্ধমিতার্থঃ। লোভাদ্যভাবেহপি মন্মান্ডকো দঙার্থমিতাাই অপাশীতি ॥ ৫॥

নমু অন্ধণ্ডে মম গোপবালকস্ত কা শক্তি: কিঞ্চ কারণং কো বা দণ্ডো ময়া কৃত ইত্যত আৰু পিতেতি। জগড়াঃ আছং পিডা জনক:। গুরুত্বপদেষ্টা অধীশো নিয়ন্তা ইতি দণ্ডধারণে হেতুত্বয়:। কালছাং সমর্থ:। তল্মাছপাক্তদণ্ডো লীলাবতারৈ: সমীহদে তব সমীহা লীলৈব জগলীশমানিনামত্মাকং মানধুননমিতার্থ:॥ ৬॥

## देवकवरकावनी।

অত: কৈম্তিক্সায়েনাই কুতোৰিতি। যদি তে গুণা মানাম্যা ন ভবন্ধি তহি তদ্বেতবা মানাহত্কা দোষা: কৃত ইতাৰ্থ:। ত্ব হৈত্বীশ হে মহামারানিয়ন্ত: । নম্বরকৃটভোজন স্বশ্বদাসহনাদিনা মানিতে ভবন্তিরবগতা এব কথমধুনা ভরেনাপলপাতে ত্বাই স্থ-কৃতা: লোভাদরে৷ যেহব্ধলিকভাবা ইতি। যে ব্ধলিকভাবা ভক্তভিকিমাহান্মাগমকা ভক্তদন্তভোজন সমামাদাদ্যাত্মকা লোভাদরতে ত্ স্থ-কৃতা: কৃত ইতি ন মানাক্তা: কিন্তু কুপামাত্রকৃতা ইতার্থ:। পত্রং পূপাং ফলং তোমমিত্যাদি । নম্থ ভবতু তাদ্শো লোভঃ ভক্তম্থকর্ত্বাদনোধানত্থে ক্রত্বান্ত। ক্রোধন্ত স্ববিষয় হংধকর এব দণ্ডান্মক্তবাং। কথং তহি ত্রুচ ন কুপা ত্বাহ অধাশীতি। ধর্মান্ত গুগুগো যা ধলনিগ্রহা তত্ম। ইতি ধলানাং অপি ধার্মিক্তাপত্রা স্থ্যেৰ জাদিত। সোধ্পি কৃপামাত্রকৃত এবেতি ভাব:। তথা-পীতি পাঠ: ক্রিং। ভগবান্ বিভ্রত্তীত্যপরোক্ষেহ্ণি পরোক্ষবছ্কির্ভরগৌর্বাদিনা। কৃশমন্থালোভাদ্য ইতি পাঠ:। চিচ্কুকাদীনাং পাঠে মন্থালোভাদীনাঞ্চ কুতোবিভ্যনেনৈবান্ধ্বাং। ৫॥

অতো মম হিতমেবাকরোদিতাহি পিতাচ গুরুক ইত্যাদির্বর:। সম্গীহদে বিচিত্রলীলাং তছবে। অত্তির:। তত্র মানধুন-ন্মিতাতিশ্ব বিবক্ষরৈবাভেদনির্দেশ:॥ ৬॥

## वीविश्वनाथठकवर्षो ।

পাত্ত: কৈমৃতিক্সায়েনাই কৃত ইতি। মু ভো ঈশ যদি তব গৈপপ্ৰবাহে জিম্বকাপি নাতি তহি কৃতভাগ গুৰপ্ৰবাহণ্য হৈতবোগুণাঃ আ:। তংকুতা গুণপ্ৰবাহকাৰ্যাভূতা লোভাদ্য চ যে হব্ধসা নিকং চিহুং ভাব্যজ্ঞাংপাদ্যত্তীতি তে। নহু তহি কথং ক্ষাণ্ডক্ষকস্ববং তত্ত্বাহ অথাণীতি লোভকোপাদ্যভাবেহপি॥ ৫॥

ধর্বগোপনথলনি এহা জ্যাং পূর্বজ্ঞ পরনে খবস্য মন কিং ফসমিতি চেৎ জগভাং মকলমেবেক্সাই পিতেতি। তব সাই জিক্সাক্ষণাই জগভাং মধ্যে বে ধার্মিকাডেবু ছং পিতা যথা প্রস্ত কেহৰৰে বংসলঃ গুক্তবিশ নিয়ক্ত জীব্দুনি বংসলঃ। অধীশক্তক বুখবাদ-অধ্বানন্দ্র্যা। বে তু ধ্রাতেবু ছং ছবভাবো ছবাবে কালঃ স ইব উপাত্তনগুঃ দওপ্রদানে নুব তচ্ছোবক ইতার্থঃ। অনু উদ্ভবেশাং

হে ঈশ। যদি অজ্ঞান ও তৎকৃত দেহদখন না থাকিল তবে দেহদখন কৃত যে দকল লোভাদি, যাহারা পুনরায় অন্যদেহোৎপতির কারণ এবং অজ্ঞানিদিপের ব্যঞ্জক সে দকল কোথা ইইতে ইইবে অর্থাক ক্ষুই সকলের কথা কি । পরস্তু লোভাদি না থাকিলেও আপনি ধর্মরকা এবং ধলনিএই নিমিত্ত ব্যঞ্জারণ করিতেহের অতএব স্তাই ক্ষোমার এই মান তদ্ধ করিলেন। ৫।

ভগৰন্। আপনি গোপবালক নহেন, জগতের জনক, উপদেকী টুট্রং নিয়ন্তা অর্থাৎ দশুধারী । অপুন জাপুনি-কালক্ষ্মপ শ্রকালণ সমর্থ অত এব সভ্যারণ করিয়া দীসাধ্বতার্থারা এইরপ চেফা ক্রিয়া যে মৰিধাজ্ঞা জগদীশমানিনস্তাং বীক্য কালে হভয়মাণ্ড তম্মদং।
হিছাৰ্য্যমাৰ্গং প্ৰভক্ত্যপক্ষ্মা কহা ধলানামপি তেহসুশাসনং॥৭॥
স জং মনৈশ্ব্যমদপ্প তস্ত কৃতাগসন্তে হবিচ্যং প্ৰভাবং।
কল্তঃ প্ৰভো হথাৰ্হসি মৃচচেত্ৰসো মৈবং পুনস্থ মতিৱীশ মেহস্তী॥৮॥

#### **ত্রীধরস্বামী**

কথমেতদিতাত আহ পিতেতি যে ইতি মহিধাক তে অজ্ঞাকেতি অতোজগদীশমানিনঃ কালে তরকালেহপি বথাধুনৈৰাতিরটো ভাষভয়ং ভরমগণরস্বং বীক্ষা আণ্ড অসমং জগদীশা ইতি মদং হিছা বিগতগর্কাঃ সম্ভঃ আগ্নীমার্গং স্বঃভিলক্ষণং ভল্পতি অভতাব ঈহৈব খলানামকুশাসমং দণ্ড ইত্যর্থঃ ॥ १॥

এবং ভগবত: স্বরূপমভিপ্রায়ং চামুবর্ণা ক্ষমাপয়তি স স্বমিতি। এবস্কৃতা অসতী মতি মে পুনম কি প্রার্থনা তরং ॥ ৮ ॥

### देवकवरजावनी ।

মানভল্পনপূৰ্ব্বক হি তৎপ্ৰবৰ্ত্তন প্ৰকারমেবাহ য ইতি হিতমাহ আৰ্য্যেতি ৰদ্যপি ভক্তানন্দনাৰ্থমেব তথাপি তবেহা লীলা মহি-ধানাং প্লানামণি অনুশাসনং শিকাকরণং ভবতীত্যৰ্থ: ॥ ৭ ॥

প্রভাবে মদাদিস্কলেবেশর হে ক্ষমাসমর্থেতি বা । অথাখাছকাজেতা:। স্বাজিতকারী কুভাগনোথি সম্প্রমার্থি বিশেষ্টিয়া কুভাগতে হেতু: তব প্রভাবং মাহাত্মানবিত্বং অক্ষানতত্তৎকৃতে। মৃচ্চেতসং বিচাররহিতত্তেভার্থ:। তদপি কৃতঃ প্রশ্যমদ্ব্যাপ্রভাব বি প্রভাবং বিত্রোথি কুভাগস ইতাধিক্মাগোখভিপ্রেতং। তথাপি ক্ষমহাসি কৃতঃ মৃচ্চেতসং বিশ্বতপ্রভাবভা। অক্সত্বোপ্রাথভাপিরাধ্বাদিতি ভাব:। কিঞ্চ। সকল অগজিতার্থাবতীর্ণভা প্রমদ্যালোকদারশিরোমণেক্তব মদীরৈতৎসক্ষদ-প্রাথক্ষমাপনং কিয়ন্ত্রমি কিন্তু তথা কৃক্ যথা পুনত্রি ভুদীরেষ্চ কোপ্যপ্রাথে। অভাদিত্যাহ মৈর্মিতি। এতাদৃশী ত্রি তাবকের্চ

#### ক্রমসন্দর্ভঃ।

মানভল্পনপূর্বকং হিতপ্রবর্ত্তদে প্রকারমেবার য ইতি। হিতমার আর্যোতি। অন্তুশাসনং শিক্ষাকারণং ॥ ৭ ॥ বৈবং পুনতু দিতি প্রার্থনা নাজিগুরুচেত্তসা বিহিত্তেতি ক্লেয়ং। পুনরণি পারিফাত্ররণেহপরাধাপাতদর্শনাং ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥

### এবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

হিতাৰৈৰ ইচ্ছা তমুতিঃ বেচ্ছাময়াৰতারৈঃ স্নীংসে চেষ্ট্ৰেম তব স্মীহা গীলৈব পূতনাবধাদিকা ছইসংহারিকা শিষ্টপালিকা চেতার্থঃ। বে অধিয়ুত্তকা ব্রহ্মাদ্যাক্ষত বং কিঞ্চিদ্রব্যোগের মন্তা ভবন্তি তেবামপি মদনিরসিনী ব্রীলৈবেত্যাহ মানমিতি ॥ ৬ ॥

তের জগদীশমানিশ্বপি মধ্যেংহরত্যধন ইত্যাহ। মহিধাশ্চ তে অজ্ঞাশ্চেতি তেন অজ্ঞানাদপুশেমানবাদহনত্যক্ত ইতি ভাবং। কালে ভরকালেছপি বধা অধুনৈবাতিবৃত্তী অভরং ভরমগণরস্তং বীক্ষ্য। বহা। ন জানে প্রভুরং মাং কীদৃশং দণ্ডরিবাতীতি বস্য ভরং ভরতেতুং বীক্ষ্য ভক্ষাং অগ্ননিশ্বর্থ মহং ভ্যক্ত্বা আর্থ্যাশাং দত্তজানাং মার্সং ভক্তি গতত্মরা নইগর্কা অভত্তবেরং গোবর্জনশারণ লীলৈব ধলানামত্মাক্ষক্সশাসনং দণ্ডঃ ৪ ৭ দ

নমু গোবৰ্দ্ধনধারণেন ব্ৰহ্ম রক্ষানেবাক্রবং নতু তব দণ্ডং। তব দণ্ডৱ সাম্প্রতং বৈবম্বতমাহ্র সমীচীনতবৈধ কার্ডিরামীত্যাপত্য সহাজরবিহন আরু সংশ্রেদ্ধান পিতা চ গুরুল্ডার রুপালুরাং ক্ষমসিব্লাক প্রথমদানিরো প্র্তাস নিমন্ত্র অতএব তব প্রকাবং
অবিহ্বো হ্লানতঃ ম্মাপরাধং ক্ষমর দি। বতো মৃচ্চেত্তসং পশুম্বভাবস্য পশুহি স্বামিনাদ্রদণ্ডপ্রহারেহিণ ক্ষপান্তরে ত্রেবাপরাধং
বৈড়ান, ফলতঃ আপনার চেইট্রালীলামাত্রে, কিন্তু আমরা মনে করি আপনি জগদীশার বলিরাঅভিনানকারি অস্ক্রদাদির সান বিনাশ করিত্তছেন ॥ ৬ ॥

প্রতিতা যে সকল ব্যক্তি আমার সদৃশ অক্স, অতএব আপনাদিগকে জগদীশর বলিয়া মানে, তাহারা আপনাকে ভরকালেও নির্ভয় নিরীকণ করিয়া একণে আপনাদের মদ অর্থাৎ "আমরা অগতেই নির্বার,, এই অভিমান পরিত্যাগ পূর্বক বিগভগর্ব হওত ক্ষাপনার ভক্তিস্বরূপ আর্থাবন্ধ নেবা করিভেছে, না করিবে কেন ? আপন্বার চেফাই ধলব্যক্তিদিখের দও॥ ৭॥

सार्च । चात्रि थेयंश् मार्ग मत रहेत्राहिलाम, क्यनकात संखार खानि मारे अकात्र जनवार केति-

তবাবতারোহয়মধোকজেই ভূবোভরাণামুরুভারজমনাং।

চমূপতীনামভবায় দেব ভবায় যুল্লচরণাকুবর্তিনাং॥ ৯ ।

নমস্তভাং ভগবতে পুরুষায় মহাল্মনে। বাহুদেবায় কৃষ্ণায় সাত্বতাং পতয়ে নমঃ॥ ১০॥

#### वी धत्रवामी।

মহানরমপরাধ: কথং ক্ষস্তব্য ইতি চেদত আহ তবেতি। স্বয়মেব ভরাণাং পুনশ্চ উক্তারজন্মনাং বহুনাং ভারাণাং জন্ম বেভ্য-তেরামভবার নাশার যুল্লচরণদেবিনাত্ত ভবীর অতো মম তৎপেবক্তাৎ অত্যস্তাপরাধিনোহণি ক্ষস্তব্যমিতি ভাব:॥ ১॥

ক্ষমাপরর্মকরোতি নম ইতি। তুজাং ভগবতে শ্রীমৎক্ষার নম: পুরুষার অস্তর্যামিণে মহাত্মনে অক্তঃহত্বেহপাপরিচ্ছিলার কুতঃ

### देवकवरजावगी।

মহাগদাং জননী অতএবাদতী মৃড়চেতদ ইত্যন্তাতৈবাদর:। যংকিঞ্জিংজ্ঞানরহিত্যাপি দতো মে। নবৈশ্বর্যে দতি কণং নাম ন ভবেং তথাহ হে ঈশ তথাপি মন্না তথা কর্তুং শক্যত ইত্যর্থ:। এতচ্চ নাতিশুদ্ধেন চেতদা প্রাথিতমিতি জ্ঞেরং। স্বাং বীক্ষ্য কালে ভর-মিত্যুক্তেরক্ষমতবৈধ তদমুগতে:। অতএব পুন: পারিস্থাতহ্বণাদাবিপি বিশ্ববিধ্যতে ॥ ৮॥

অধোকজ হে ইন্দ্রিজ্ঞানাগোচর ইতি প্রমাদৃশ্যতোকা। তথাপী সৃথী তলে তবাবতার: প্রাকট্যং ভবায় মললায়। বেব ছে পূজা ইতি স্বস্য সেবকতাং সাধরতি যুগ্নিতি। বহুছেন তদীয়ান্ শ্রীব্রজনাদীনিপ সংগৃহাতি। আনাকৈঃ। যথা। স্বস্য তৎপ্রভাববিদ্দ্রোমেবাভিব্যঞ্জয়ন্ মূঁচচেতত্বমেব দর্শয়ন্ সাম্তাপমাহ তবেতি। অস্মাকং প্রার্থনয়া অস্মাকমেব হিতার্থং অমবতীর্ণোহনীত্বসাভিজ্ঞামত এব তথাপোতাদৃশোহপরাধঃ ক্বতঃ অহো বত মৃচ্চেতত্বং অতঃ ক্ষত্তমহাস্তিত ভাবঃ॥ ১॥

ভগবতে সাক্ষাং প্রমেশবার তত্তাপি ক্লঞার অশেধৈখর্যাপ্রকটনেন সর্বাচিত্তাকর্ষকার তৃত্যং নমঃ। এবং বহিবৈশ্যাম্ক ক্রের মপ্যাহ পুরুষায়েতি। লীলরা তৃ সাত্তাং প্তরে। অন্যাত্তা। যথা। সর্বাবিতাবেশপোব্যেবং তং যথাপি করোবি তথাপাত সর্বতো মহাবিশেষ ইত্যাহ নম ইতি তৃত্যং ক্লঞার সর্বাচিত্তাকর্ষকার নমঃ। ক্লফ্রমেব স্বচয়তি ভগবতে স্ট্রেশ্বাগবিপুর্ণার কুতঃ পুরুষার

#### श्रीविधनाथहळ्वश्री।

করোত্যতোহহং দণ্ডপ্রাণানেন ন শোধনমহ মি। কিন্তু ক্লপরা তথা মাং শোধর বথা মে মৃচ্চেত্রং নশাতীত্যাহ মৈবমিতি। এতচ্চ নাতিশুদ্ধেন চেত্রসা প্রার্থিতমিতি জ্রেয়ং। স্বাং বীক্ষ্য কালে ভয়মিত্যুকেরক্ষমতবৈৰ ভদত্বগতে:। স্বতঃ পুনঃ পারিজাতহরণাদাবলি বিশ্ববিধ্যত ইতি বৈঞ্চবতোষণী ॥৮॥

অহো মে মৃচ্চেত্রত্বং যদস্থাকং প্রার্থনিয়াক্ষাক্ষমের হিতার্থার স্বমরতীর্ণাহিদীতি পশ্যরপ্রেছাহ্মভবং। দম্প্রতি লব্ধ তঃ প্রাপ্তি চক্ষুরেবং তবং তে জানামীত্যাহ তবেতি। স্বয়মের ভরাণাং ভারক্ষণাণাং পুনশ্চ উক্লভারজন্মনাং বহুনাং ভারাণাং জন্ম বেভ্যক্তেবাং চম্প্রীনাং অভবার নাশ্র যুন্নচেরণ্সেবিনাক্ত ভবার মললার। স্বাহ্ম উভয়েবাং মধ্যে ন কোহণীতি মম নাভবো নাগি ভব ইতি মধ্যাদাসীন এব স্বং বর্ত্তেইতি ধিঙ্যামিতি ভাবং ॥ ১ ॥

তক্ষাং যুদ্মজরণাত্মবিত্তিং মমাপান্তিতি প্রণমন্নাশাতে নমন্ততামিতি ছাতাং। পরাবরেশো মহনংশযুক্ত ইত্যন্তবোকেঃ সর্বাংশসাহিত তোনৈবাবতীর্ণসা প্রথমমংশান্ প্রণমতি ভগবতে মহাবৈকুঠনাধার প্রক্ষার মহংশ্রেই। মহান্মনে সমন্তান্তর্যামিণে। তাংশান্ প্রণমা

য়াছি আমি ষ্ট্মতি, আমাকে ক্ষমা করুন,আর প্রার্থনা করি, এতাদৃশী অসতী মতি পুনরায় যেন আমার উপস্থিত না হয়॥৮॥

হে আধাকজ ! যে সকল ব্যক্তি স্বয়ং পৃথিবীর ভার স্বরূপ এবং যাহাদের হইতে বছতর ভারের উৎপ্রতী হয় সেই সকল সেনাপতির বিনাশ ও সেব্কদিগের মঙ্গলের নিমিত্তই আপনকার এই অব-তার, অতএব আমি আপনার সেবক, যদিও অত্যন্ত অপরাধী হইয়া থাকি, ক্ষমা করন ॥ ১॥

প্রভো ! আপনি ভগবান্ অর্থাৎ জীমান্ ক্লা এবং অন্তর্যামী তথা মহাস্থা অর্ধাৎ অন্তঃস্থ হইয়াও অপরিচিছে । অপর আপনি বাহুদেব অর্ধাৎ সকলের নিবাস স্থান এবং যাদবদিগের পতি, আপনাকে

স্বাছিদ্দোপাত্তদেহায় বিশুদ্ধজ্ঞানমূর্ত্তরে। সর্ববৈশ্ব সর্ববীজায় সর্বস্থৃতাত্মনে নমঃ ॥ ১১ ॥ ময়েদং ভগবন্ গোষ্ঠনাশায়াসারবায়ুভিঃ। চেষ্টিত্ং বিহতে যজ্ঞে মানিনা তীত্রমস্যুনা ॥ ১২ ॥

### क्षिपत्रवाशी ।

ৰাস্ক্রেবায় সর্কনিবাসায় সাত্ততাং যাদবানাং পত্যে ॥ ১ • ॥

তহি কিমহং যাদব: ন অচ্ছেলোপান্তদেহায় স্বেষাং ভক্তানাং ছন্দেন ইচ্ছ্য়া স্বীকৃতদেহায় তত্রাপি বিশুদ্ধং জ্ঞানমেব মূর্দ্ভির্বস্য তলৈ মায়য়া সর্কলৈ জগজপায় কুতঃ সর্কস্য বীজায় কারণায় অতএব সর্কভূতানামান্মনে নশঃ॥ ১১॥

ক্বতাগদ ইত্যানেন উক্তং অপরাধং নিবেদয়তি ময়েদমিতি। আদারবায়্ভির্গোর্চনাশার ময়েদমক্বতাং চেষ্টিতং কুক্তং ॥ ১২৪

#### বৈষ্ণবতোষণী।

নিজাশেষপুরুষার্থবাঞ্জায়েতার্থ:। অতএব মহায়নেহপরিচ্ছিন্নাহায়ায়েতার্থ:। ক্রফত্বনেব স্পটরতি বহুদেবহুতারেতি। অতঃ সাত্তাং যাদবানাং সর্ক্ষোং পরিপালকায়॥ > ॰॥

অতস্বনেব সর্ক্ষিত্যাহ স্বচ্ছনেতি। বৈভিক্তিঃ কর্ত্তিঃ ছন্দেনেচ্ছ্যা করণরূপয়া উপ সমীপে আন্তা আরুষ্টা দেহাঃ শ্রীমৎস্যকৃষ্ণাদ্যোহিপি বিগ্রহা যেন তথ্য। তেবাং দেহানাং স্বর্গজ্ঞানার্থং পুনরাহ বিশুক্তানমূর্ত্ত্যে বিশুক্ষা মায়াতীতাঃ স্বপ্রকাশতরা জ্ঞানরূপাশ্চ
মূর্ত্ত্যো দেহা বস্যেতি তত্মা ইতি। অন্যত্তিঃ। তত্র সর্ক্ত্রে জগত্রপার সর্ক্ষ্য বীজার কারণার মহাপুক্ষরূপার সর্ক্ত্রান্থনে
তদস্ক্র্যামিনে ইতি। যা। স্বচ্ছনাং যথা স্যাত্তথা উপাত্তা অন্তর্যামিত্বন স্বীকৃতা দেহাঃ সমষ্ট্রিরাটিরূপা যেন স্বয়ন্ত্র্যার ইতি তু পূর্ক্বিং॥১১॥

কিঞ্চ। মহাপরাধিনাপি প্রমাযুগ্রহোহয়ং সর্কতো মহাবিশেষ ইত্যাহ ময়েতি সার্দ্ধেন। ময়া স্বয়মেবেদং সাক্ষাদিদানীমেবেত্যর্থ:। গোষ্ঠস্য নাশারেতি প্রমার্কত্যত্মফুকেং। যতো মানিনা অতএব তীব্রমহানা। ভগবন্ হে সর্কজ্ঞ তল্মম হুইতার্ত্তঃ
ত্বরা জ্ঞায়ত এব কিং ময়া য়ৢটেন বিত্তার্যমিতি ভাব:। যহা। হে ভগবিরতি সর্কৈশ্ব্যপরিপূর্ণে হয়ি সাক্ষাহতিমানেহিপি হলোষ্ঠনাশারেত্যপ্রাধাধিক্যং স্টিতং॥ ১২॥

### ক্রমসম্বর্ড:।

ত্বাং বীক্ষ্য কালে ভর্মিত্যগতৈয়বাহুগড়েঁশ্চ স্বেষাং ভব্জানাং ছন্দেনাভিলাষেণ উপাত্তঃ তৎসমীপে গৃহীত আনীতঃ প্রকটীক্বতো-দেহো যেন তল্মৈ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥

### ত্ৰীবিখনাপচক্ৰবৰ্তী।

সাক্ষাত্তমংশিনং প্রণমতি বাস্থদেবারেতি। পিতৃনামোল্লেথেন ক্লফারেতি তল্মামোল্লেথেন দাবতাং পত্যে ইতি পার্বদনামোল্লেথেন ॥>• অনেক্বিধপ্রেমবিষয়ত্বাং বৈভক্তিকশ্বন্দেন প্রতিব্যেক্ষ্যা দাস্থেন বাংসল্যেন রমণেন চ স্থপ্রদানার্থং উপাত্তো গৃহীতো দেহো যস্যেতি তলৈ । দেহস্যাপ্রাকৃতত্বাং বিশুদ্ধং মায়াতীতং জ্ঞাননেব মূর্তির্যস্য তল্মৈ। মায়াদিশক্তিমত্বাং সর্বব্যে। অতএব সর্বস্কৃত্যাত্মনে॥ >> ॥

ভো: শক্ত ত্বং মন্তক্ত ইত্যানয়া স্বত্যৈৰ জ্ঞায়দে কিন্ত বিনৈব 'ছদাজ্ঞাং ছষ্টা মেঘা মন্ত্ৰনধিকং যং কদৰ্থয়স্তি স্ম তদিমে ত্বয়া দণ্ড-নীয়া ইতি পৰিত্ৰভং সনমাশক্ষা হস্ত হস্তান্মিলস্কৰ্যামিণি কপটং ন ঘটত ইতি বিমৃশ্য স্বচেষ্টিতং যথাৰ্থমেবাহ ময়েতি নয়েতলুক্তকে ত্বি কথং সম্ভবেত্তবাহ। বিহতে যজে ইঙি নয়ু 'ছংপ্ৰভুনা মহৈব বিহত্তেহপি দাসস্য তইৰতাবদক্ততাং ন প্ৰত্যেমি তত্তাহ মানিনা।

### নমস্কার করি॥ ১০॥

ভগবন্! আপনি যতুদিগের পতি বটেন কিন্তু স্বয়ং যাদব নহেন, তথাচ এই মূর্ত্তি বিশুদ্ধ জ্ঞান-মাত্র। অপর আপনি মায়া দারা জগজ্ঞাপ, যে হেছু আপনি সকলের বীজ, অতএব আপনি সক্ষুত্তর আত্মা, আপনাকে নমস্কার॥ ১১॥

্ভগবন্ ! যজ্ঞ বিহত হওয়াতে আমি অভিমান বশতঃ তীত্রমন্য 'অতিকুদ্ধ' হইয়া ,গোষ্ঠ বিনাশ নিমিত্ত বারি বর্ষণ ও বায়ু প্রেরণ করিয়া অত্যন্ত অকার্য্য করিয়াছি ॥ ১২ ॥ ছয়েশাকুস্হীতোহস্মি ধ্বস্তস্তম্ভো রুথোদ্যমঃ। ঈশ্বরং গুরুমাত্মানং দ্বামহং শরণং গতঃ ॥ শ্রীশুক উবাচ ॥

এবং সংকীর্ত্তিতঃ কুষ্ণো না ভগবানমুং। মেঘগম্ভীরয়া বাচা প্রহুসন্নিদমত্রবীৎ ॥ ১৩ ॥ জ্ঞীভগবাসুবাচ ॥

ময়া তেহকারি মঘবন্ মথভঙ্গোহসুগৃহুতা। মদসুস্মৃতয়ে নিত্যং মন্তস্মেঞ্জ্রিয়া ভূশং। মামৈথধ্যমদান্ধো হি দণ্ডধাণিং ন পশাতি। তং ভ্রংশয়ামি সম্পট্ড্যা যক্ষ বাঞ্চাম্যুগ্রহং॥ ১৪॥

### श्री धतत्रामी ।

তথাপি ভো ঈশ স্বয়ানুগৃহীতোহম্মি অমুগ্রহং দর্শরতি ধ্বস্তস্তম্ভ ইতি বুথোদাম ইতি চ॥ ১০॥ ইক্ষেণ স্বাভিপ্রায়ে নিবেদিতে ভগবানপি তণৈবাহ ময়েতি ইক্ষ্রম্বিয়া দেবরাজ্যেন॥ ১৪॥

### रेनकवरजावनी ।

ঈশ হে সর্কনিয়ত্বঃ যদাপি সদ্য এব ময়ি দত্তং কর্ত্তুং সমর্থত্বং তথাপি ত্বাহুগৃহীতোহত্তি এবেতার্থঃ। নচ বাহাহুগ্রহ ইত্যাহ্
ধ্বস্তত্ত্বঃ নষ্টমদো যত্মিন্ যতো হতোদাসঃ। ধ্বংসিরআত্ত্ত্তার্থঃ। যতত্ত্বির ক্তত্তো নাশিতঃ উদ্যমণ্চ হত ইত্যর্থঃ। অতা গুরুং
তামের মহাপরাধ্যহং শরণং গতঃ। অত্তবান্যদ্পি হেতৃত্বয়ং ঈশবং নিয়ন্তারং আত্মানং রশ্মীনাং ক্র্যামির সর্কেবাং মূলক্রপং ত্রিধাপাননাগতিকত্বাদিতি ভাবঃ॥

সঙ্কীর্তিত অতঃ ভগবানিতি পরমপ্রভুষং বোধয়ন্ অপরাধিনাপি তালুশে কুল্লেছনভিনিবেশং বোধয়তি অতএব মেছেভি মেছ-গর্জিতঃ লক্ষয়তি অনেন তস্য মহাসন্থতাং প্রহসন্ধিতি মহাশয়তাঞ্চ ব্যানক্তি অমুমিত্যেকবচননিশিষ্টাদঃশব্দেন লৌকিকরীত্যা মধ্যেনস্ত কুল্লুতামিতি ॥ ১৩ ॥

নবেছমিত্যাদি তদ্বাক্যামুদ্ধণং প্রভুজেচিত্মেবাই অমুগৃহুতৈব নতু কুধাতেত্যর্থ:। ক্রোধবিষয়ছেইপি তদ্বিধ্যাবোগ্যছাদিতি ভাব:। নিত্যং মম অমু বার্ষারং যা স্থতিত্তদর্থং অন্যথা বিপথগামী স্যাতি। হি যত:। ঐশর্থোণ প্রভুজেন প্রিয়া ধনাদিসম্পান চ মন্ব্রেনাদ্ধ: গতাশেষজ্ঞান: সন্নিত্যর্থ:। দণ্ডপাণিং মদীরোপাসকান্ প্রতি গোপবেশোচিত স্থভগ্যষ্টিপাণিজেন ভাসমানতবৈব তদিধান্ প্রতি পু ব্যঞ্জিতদণ্ডপাণিদ্মিপ ন পশ্রতি নাবগছ্তীতি গোপলীলায়াং নিজপ্রভূষবিশেষমূক্। তদন্তরক্পরিক্রের্ শ্রীগোপরাজাদিদ্ধি শ্রিদাণ্ডকেবর্তী।

ক্রম্বা গর্মদা কিমশক্যমিতি ভাব:। নমু দৈবাছখিতা অপি গর্মাদয়ো ভাবা মন্তকৈর্বিবেকেনৈব তিরোধাপ্যয়ে ইতি তত্রাহ তীব-মন্থানা। তীব্র: ক্রোধো হি বিবেকম্পি বলাদশু সভীতি ভাব:॥ ১২॥

তদপি তিরস্কৃতেনাপি ভিষলা কুগালুনা চিকিৎসিতো রোগীব স্বয়াহং অন্ত্র্হীতঃ অতএব সম্প্রতি ধ্বত্তস্করোগঃ। বতো হতা উদ্যাম বন্ধনিকেপাদয়ো "স্যাসঃ। অতো নিরস্কৃষাদীশ্বং হিতকারিস্বাদাকুকং প্রেমাম্পদস্কাদাশ্বানং॥ ১৩॥

•ইক্রেণ নিষ্ণ্রদাকে ভগবানপি তথৈবাহ ময়া তে ইতি॥ ১৪॥

হে ঈশ ! তথাপি আপনি আমার প্রতি অমুগ্রহ দর্শাইয়াছেন, কারণ আপনা ইইতে আমার এই স্তব্ধতা বিধ্বস্ত এবং উদ্যম ব্যর্থ হইল, আর ঈশ্বর গুরু এবং আত্মরণী যে আপনি আপনকার শ্রণাগত হইলাম ॥

শুকদেব কছিলেন, দেবন্দ্রকর্ত্ক এই প্রকারে সংস্তত হইয়া ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ হাস্ত করিতে ২ নেঘবৎ গম্ভীরস্বরে তাঁহার প্রতি নিম্নলিখিত বচনপ্রয়োগ করিলেন॥ ১৩॥

ভগবান্ কহিলেন হে মহেন্দ্র ! তুমি দেবরাজ্ঞা প্রাপ্ত হইয়া অত্যন্ত হইয়াছিলে, আমি অমুগ্রহ করিয়া আমার স্মরণ নিমিত্ত তোমার যজ্ঞভঙ্গ করিয়াছি। যে ব্যক্তি ঐশ্ব্য মদে অন্ধ হয়, দে দণ্ডপাণি যে আমি আমাকে দেখিতে পায় না, অতথব যাহার প্রতি অমুগ্রহ করিতে আমার বাসনা হয়, আমি তাহাকে অগ্রে ঐশ্ব্য সম্পদ্ হইতে এই করিয়া থাকি ॥ ১৪ ॥

গম্যতাং শক্ত ভদ্রং বঃ ক্রিয়তাং মেহমুশাসনং। স্থীয়তাং স্বাধিকারের যুক্তৈর্পঃ স্তম্ভবর্জিতঃ ॥১৫ অধাহ স্করভিঃ কৃষ্ণমভিবন্দ্য মনস্বিনী। স্বসন্তানৈরূপামন্ত্র্য গোপরূপিণমীশবং ॥ ১৬ ॥ স্করভিরূবাচ ॥

### श्रीभतवामी।

বো মুম্বাভি:। বহুৰচনং বক্ষণাদ্যভিত্থায়েণ। ক গস্তব্যং স্থর্গেংপি তবৈবেশ্বর্থাদিতি চেন্ত্রোহ ক্রিয়তামিতি। মদমুশাদনেন মধা-পূর্বং তিত্র স্থীয়তামিত্যর্থ:। যুক্তের প্রমধ্যে অন্তবজ্জিতৈনি বিহ্হাবৈ:॥ ১৫॥

चन्छारेनर्लाछिः नर् छेशां पद्या कुक्षकृत्कका निना नरवासा ॥ ১७ ॥

### 🕝 বৈষ্ণৎতোষণী।

ভক্তিরমুশিষ্টা যতো ন পশ্রতি অতএব চ যদ্যামুগ্রহমিচ্ছামি যমমুগ্রহীতুমিচ্ছামীতার্থঃ। তং দম্পদ্যো লংশরামি তদ্যৈখগ্যেত্ক ধনাদিসম্পত্তীর্হরামীতার্থঃ। ভবতস্ত তত্ত্বাদহিষ্তাং দৃষ্ট্য ন তাদৃশমপ্যকরবং কিন্তু যংকিঞ্চিন্মপভঙ্গমেবেতি ভাবঃ॥ ১৪॥

নমু তহি মমাপি তাদৃশনেবাম্গ্রহং কুরু ময়াত্রৈব স্থীয়তাং তত্রাহ গম্যতামিতি। বো যুয়াকং যন্তরং ক্ষেমং তদক্ষিতাভয়দানং বন্ধ-তন্ত্র ন মদেকাম্বভলানাং তত্ত্বমিত্যুক্তিপরিপাট্যা তদক্ষেমেবাভিপ্রেতং। অলিগমিবন্তং প্রত্যাহ ক্রিয়তামিতি। গলা চ মদাজ্ঞা পরিপাল্যতামিত্যুর্থ:। অনধিকারিণত্তেহ্রাবস্থিত্যপরাধ এব ভাবীতি গমনমেব যুক্তমিতি ভাব:। যরা। নমু ভগবন্ তত্ত্র গত-ত্যাইপাল্ব্যান্ত্রাবেনাবল্লমপরাধো ভবিতৈব তত্ত্বাহ ক্রিয়তামিতি মদমুশাদনং মদ্বিক্তিমিত্যুর্থ:। তদেবাহ স্থীয়তামিতি স্বইয়্রব নতু পরলাধিকারের কিং পুন্ম দন্তরক্ষপরিকর প্রীত্রজবাদ্যাদিছিত্যুর্থ:। তত্ত্বাপি যুক্তরপ্রমতৈর্ভিত্যোগবভির্বা তত্ত্বাপি নিশ্বদৈশ্চ সন্তির্বো যুয়াভি: স্থীয়তাং। ইঞ্চ বরপ্রদানরূপোহস্থগ্রেরা ন ক্রতঃ কিন্ত কেবলমসমর্থেনের যুক্তিপুর্বকশিক্ষারূপ এব ক্রতঃ। সম্যক্ প্রদাদাপ্রব্রেরঃ। অতএব তদমুশাদনাপালনেন পশ্চাদপরাধান্তর্মপি জাতং তচ্চ পারিজাতহরণাদৌ ব্যক্তং ভাবি॥১৫৪

তথানস্তর্মিত্স্যাভিপ্রারম্ববিকি ইত্যত্ত পূর্ব্বমেব ব্যাধ্যাত:। স্বসন্তানৈ: চক্রবংশে শ্রীকৃষ্ণবং স্বস্য বংশে প্রাহ্রভূ তৈনি তাতদীর-গোধনর পৈত্তৈরপলিকতাভিতো বন্দিবাহ স্ততিপূর্বকং নিবেদিতবতী। স্প্রভিনন্দ্যতি পাঠে স এবার্থ:। ন কেবলমভিনন্দ্যাহ কিন্তৃপামন্ত্য বক্ষ্যাণসম্বোধনৈ: স্বান্ধন্যবধানং প্রার্থ্য চাহ। স্বাভীষ্টনিবেদনে হেতু: গোপরপিণ্মীশ্বমিতি। স্বভিনন্দনে হেতু-রীশ্বরমিতি। নিবিক্রমানীয় প্রথমং স্বয়ং কথং তৎসাহায্যার্থমিপি ন কিঞ্চিরিবেদিতবতী তত্ত্বাহ মনস্বিনী ধীর্চিতা তত্ত্বা ভগবতঃ স্বর্জ্বস্ক্ষ্হিতকারিতে ইক্সন্ত চোভানিচিত্ত স্বর্থেন্ত ব্রাধ্যাত্তি নিবেদনীয়ং বিশেষং বিচার্য্য প্রথমন্ত নোক্রবজীত্যর্থঃ॥১৬

### क्रममन्दः।

অধানস্তরং স্বসন্তানৈঃ সহ তদীর পোধনক্ষপৈতৈঃ সহাভিবন্দিরা তথোপামন্ত্রা বক্ষ্যমাণসন্থোধনৈরাক্ষন্যবধানং প্রার্থ্যেত্যর্থ: ॥ ১৬॥

### श्चिविश्वनाथहळ्वर्दी।

ব ইতি বক্ণাদ্যভিপ্রারেণ। বুকৈরপ্রমধ্যে স্তম্বর্জিতৈনি রহজারৈ: স্থীরভাননাথা পুনরপি দশুং প্রাপ্যাতীতি ভাবং। অত্র পুনত্তে স্তম্ভোন ভবিষ্যতীতি ভগবতা নোক্তমতএব পারিজাতহরণেন পুন স্তম্ভোহদ্য ভবিষ্টাতি তাদৃশ দীলাদিদ্বার্থমিতি জ্ঞোং॥>৫ স্বস্থানৈর জিকৈর্গোভি: সহেতি প্রকৃত্যা অপি তদ্যা অপ্রাকৃতাম তাম ক্ষমপরিক্রমূতাম স্বস্থানাভিমানতাদাং মুরভিবংশো-দ্বত্তাব। যথা চন্দ্রংশোদ্ধতে ক্ষেও প্রাকৃত্যাপি চন্দ্রদ্য স্বস্থানাভিমান:। উপামন্ত্রা সংবাধ্য ৪ ১৬ ৪

হে শক্র ! একণে গমন কর, তোমার মঙ্গল হউক, আমার আজ্ঞা পালন করিও, স্বর্গে গিয়া নিরহ-কার ও অপ্রমন্ত হইয়া নিজ নিজ অধিকারে পূর্ববিৎ অবস্থিতি কর ॥ ১৫॥

তদনস্তর মনস্বিনী মুরভি জ্রীকৃষ্ণকে অভিবাদন করিয়া তকুজ গো সমূহ সহ সম্বোধন পূর্বক গোপ-রূপি গেই ঈশ্বরের প্রতি এই বাক্য প্রয়োগ করিলেন॥ ১৬॥ কৃষ্ণ কৃষ্ণ নহাযোগিন্ বিশ্বাস্থন্ বিশ্বসম্ভব। ভবতা লোকনাথেন সনাথা বর্মচ্যুত ॥ ১৭ ॥ স্থং নঃ পরমকং দৈবং স্থং ন ইস্কো জগৎপতে। ভবায় ভব গোবিপ্রদেবানাঃ যে চ সাধবং ॥১৮ ইস্কং নস্তাভিষেক্যামো ব্রহ্মণা চোদিতা বয়ং। অবতীর্ণোহসি বিশাস্থান্ ভূমের্জারাপমুত্তয়ে ॥১৯

### खेववयायो ।

ইন্দ্রেন হতা অপি ভবতা সনাধা বয়ং ক্লভরক্ষিতা ইত্যর্থ: ॥ ১৭ ॥

ছং ন: পরমকং দৈবং দেবতা অতঃ তে জুঁগুৎপতে গোবিপ্রদেবানাং বেহনো চ সাধবং তেখাঞ্চ তবারাভা্নরার স্বমেবেক্রোতব ॥ ১৮ ॥ নমু তবতামিক্রোহতীতি চেদতআই ইক্রমিতি অলং পুরন্দরতেক্রতরা ইত্যর্থ:। নমু দেব এব ইক্রো তবতি কথমহং তবেরমিতি

#### देवकवरकावना ।

জ্ঞাথ গোপারপত্বনেশ্বর্দ্বন চ সংখাধ্য তহুভর্ষণ প্রকাশমানেন ম্মা শ্বেষামসাধারণেন নাথেন সর্ব্ধতাহিশি বরং পূর্ণ। ইতি ব্যক্ষরতি।
তত্ত্ব কৃষ্ণকৃষ্ণতি গোপার্পিত্ব্যঞ্জকং জাত্রৈব বীপাচ নিজকচ্যতিশরেন। ঈশ্বর্দ্বেন সংখাধরতি হে মহাযোগিন্ সর্ব্বোদিমাদিবোগৈশ্ব্যনিত্য প্রকাশ। বিশ্বেষামপ্রাকৃত প্রাকৃত বংকিকিংপদার্থানাং মূলরূপ। তত্ত এব হে বিশ্বস্থর তংকারণরূপ। বিশ্বতাবনৈতি পাঠে
তথ্যবার্থ:। তথ্যব স্কৃতকৃত্যতা সুধং নিবেদরতি লোকনাথেনাপি তবতা ব্রুমেব সনাধা ইত্যথ:। প্রক্ষা বৈশিষ্ট্যাপজেঃ।
লোকৈন থিয়াননাত্রেণেতি বা। স্বাচ্যুত্তি সংখাধ্য তথ্য নিত্যকং চ দর্শরতি॥ ১৭॥

বৈশিষ্ট্যে হেতৃং-ত্বং নং পরমকং দৈবমিতি। নীতৌ চ তদ্মু ক্রাদিতি কন্। ক্রমকরাড্যাং ভিন্ন: স্থাপুরম্মজেল্যাহয়ং। বোহসৌ গোষু তিঠতি গোপান্ পালয়তি বোহসৌ নর্ফের বেদের তিঠতি যোহসৌ সুইফের্বে দৈবীয়তে বোহসৌ সর্ফের জুতেবাবিশ্র ভূতানি বিদ্যাতীত্যাদি তাপনীশ্রতে। অতো নোহত্মাকমিক্রতমের ভব। ক্রগৎপতে ইতি বদ্যপি ক্রমতামিশ পতিত্বং তথাপীতি পূর্ফাবং। গবৈক্র-বেছপি বিপ্রাদীনামভ্যাদয়ং। গোভোগ যজ্ঞাং প্রবর্ধন্তে পোভোগ দেবাং সম্বিতাং। গোভির্ফোদাং সম্দুর্গীর্ণাং স বড়কপদক্রমা ইতি গোলফ্রার ॥ ১৮ ॥

তৎপ্ৰকারনেৰ ভক্তিবিশেষেণ সনিশ্চরং বিজ্ঞাপরতি ইক্সমিতি। স্বভাৰত এব নোহস্থাকমিক্সং স্থামধুনা মছ্বালোকে প্রচারার

### क्ष्मनमर्छः।

এবং শ্রীকৃষ্ণ এজগৰীনামণি ভাদৃশত্বং দর্শিতং। লোকনাথেনাণি ভবতা বহমণি সনাথা ইত্যর্থঃ। পুনক্ষক্ত্যা বৈশিষ্ট্যপ্রাথেঃ অচ্যুত্তেতি ত্ত্রাণি নিত্যত্বং নিশ্চিনোতি বৈশিষ্ট্যে হেছুঃ॥ ১৭ ॥

দং নঃ পরমকং দৈবমিতি কাগংপভেরিতি যদাপি কাগংপতিদং তথাপীতি। পূর্ববং গবেক্সদেহপি বিপ্রাদীনামভাদরঃ। গোডো বজাঃ প্রবর্ত্তরে গোভোা দেবাঃ সমুখিতাঃ। গোভির্বেদাঃ সমুক্ষীর্ণাঃ স বড়কপদক্রমা ইতি শ্রুতেঃ॥ ১৮॥

প্রমগোলোকে অভাবত এব নোহসাকমিত্রং দামধুনা মহুবালোকে প্রচারার কেবলং অভিবেক্ষাম:॥ ১৯॥

### श्चित्रनाथहळवडी।

কৃষ্ণকুষ্ণেতি হবেঁণ বিষয়। মহাবোগিরিতি বোগবলেটনৰ গোবর্ছনমূছ্তা মংসন্থানীনি অমরক ইতি ভাবঃ। ভবতা সনাথা-ইতি মংসন্থানান্ শিবাংস্না ইক্লেণ নাথেনালমিতি ভাবঃ॥ ১৭॥

প্রমং কং সুধং ৰত্মান্ত। অভব্যেৰাত্মাক্ষিক্রো ভব। অগৎপতে ইতি তব অগংপতিলোহপি সম্প্রতি গোপজাতিবাৎ গোপ-বেহপি ইক্রমধ্যিম্পিরাভিত্রপরাভাবক্যান্ত তবেক্রডমুপযুক্তমেবেতি ভাবঃ। যে চান্যে সাধ্যতেবাঞ্॥ ১৮॥

নোহসাকং সা সাং ইঞা। নলু ক্স্যাপ্যাদেশেন স্বাতজ্যেদৈব বা ততাহ ক্রম্ণেতি। যদা মহাভদ্বিফ্লেণে স্বসাহাব্যার্থং

হুরভি কহিলেন হে কৃষ্ণ। হে কৃষ্ণ। হে মহাযোগিন্। হে বিখাত্মন্। হে বিখসম্ভব। আমর। ইস্ত্র কর্তৃক হত হইয়াও লোকনাথ আপনা কর্তৃক রক্ষিত হইলাম ॥ ১৭ ।

হে অচ্যত। আপনি আমাদের পরম দেবতা, হে জগৎপতে। গো বিশ্র দেব তথা অভাভ সাধ্-জনের অভ্যুদরার্থ আপনিই আমাদের ইক্ত হউন ॥ ১৮॥

जामता जाननाटक जामारतत रेखार बिजिक कतिय, जेबी जामावितरक अलेबिसरात निविक्तरे

এবং কৃষ্ণমূপামন্ত্রা হারভিঃ পয়দাত্মনঃ ॥ ২০ ॥ জলৈশ্চাকাশুগঙ্গায়া ঐরাবতকরোদ্ধৃতিঃ। ইন্দ্রঃ হার্মিভিঃ দাকং চোদিতো দেবমাতৃভিঃ।

### विश्ववामी।

চেদত আহ অবতীর্ণোৎসীতি॥ ১৯॥

স্থ্রভিরাম্বনঃ পর্যা অভ্যবিঞ্ছ ॥ ২০ ॥

ইজ্র-চাকাশগঙ্গারা অবৈরভ্যবিঞ্চ দেবমাত্ভিরদিভ্যাদিভি: দেবৈম তিভিল্টেভি বা। গাং পশূন্ গাং স্বর্গং বা ইক্তছেন বিন্দভীভি

### देवक वरकावनी।

কেবলমভিবেক্যাম:। নমু তহি ইক্রাদ্যধিকারদাতুর ক্রণোহবমান: ভাততাহ বন্ধনেতি অতো বন্ধবাক্যাপেক্রাণি ত্বা সক্ষতিঃ কার্য্যভি ভাতা। নমু তহি সএব কথং নাগভততাহ বন্ধভিত্রাম্যাক্ষেবাধিকার:। জনীরগোবংশভাদিমাতৃত্বন তত্রান্তরক্ত্বাং তস্য তু প্রপঞ্চাধিকারতেন বহিরক্তাদিতি ভাব:। অতো বহুত্বমপ্যাত্মনো বহুমানেন। বহা। বংসলতরা স্বস্লাগভমিক্রং তদীয়াংক কুতার্ধিক্রিত্ং বহুত্বন তান্ সর্বান্ গৃহাতি। ততক কুতাপরাধেন বেন মহাপরাধিন ইক্রস্যাপ্যপরাধক্ষমাপণে পূর্ববিদপরাধন্ত্বয়া বন্ধানাগমদিতি ভেরং। অবতীর্ণোহসীতি তৈর্বাঞ্জিতং। বহা। নম্বহং শ্রীনন্দ্রোপনন্দন: কথং যুমন্দ্রং ততো বৃরং বন্ধান্প্রসমীক্ষ্য কারিপ এবেত্যাপক্য ন মুহরম্মান্ প্রতার্বেত্যাহ অবেতি শ্রীমতি পরমগোলাকে বিরাজ্মানো নিত্যমন্ত্রংপরমন্তৈব্রক্রপ-এব তং অবতীর্ণোহিসি শ্রীনন্দাদি নিক্রপরিক্রৈঃ সহ কেবলং ভূম্যাং প্রক্টোহিসি নতু জীববজ্জাতোহসীত্যর্থ:। নম্প্রভূতারাপনাদনেন মম কিং তত্রাহ বিশ্বাম্বান্ধিতি অতো বিশ্বস্যাপি; স্থিতিত্বত্ত এব যুক্ত্যত এবেতি ভাব:। তত্রিব বথা তরোম্বানিবেচনেন ইত্যাদি স্থাক্ষেন সর্বোবানেরত ব্যভিবেকে জার্মানং স্বর্থং ভদর্থনবতীর্ণেন ভবতামুনোদনীর্যমেবেতি ব্যঞ্জিতং ॥ ১৯ ॥

এবমিতি যুগ্মকং উপামন্তা নিচেক্সত্বশীকারায় প্রার্থোত্যর্থ:। লঙ্জাদিনা খ্রীভগবতা সাক্ষাদক্ততেহপি স্বীকারে মৌনং সম্মতি-লক্ষণং ইতি ভায়েন স্থরভিঃ স্বয়মেবাভ্যম্পিৎ॥ ২০॥

ইক্স: স্বয়মপ্রবৃত্তঃ কিন্তু তদভিষেকার্থমের স্থর্রবিভি: সাকং তত্র সাক্ষাদাগতাভি: দেবমাতৃভি: প্রেষিভ: যথা শ্রীক্লফোহয়ং ভগবান্

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

উপামন্ত্র নিজৈক্রস্থীকারায় প্রার্থেত্যর্থ:। প্রচোদিত: প্রেরিত:॥ ২০॥

ভয়াৎ স্বয়মপ্রবৃত্তে: ঐরাবত ইতি। গজেক্রদারা তিহিধানাৎ। গ্রামিক্রো গোবিন্দঃ তৎপদেনৈর গবেক্রতারা বাচ্যদ্বাৎ।

#### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী।

গদা ব্ৰহ্মানিবেদিভক্তদা তেনাপি ভূতপূৰ্ববাপরাধন্মত্যা ভীতেন বিমৃশ্য অহৰাদিষ্টা হ্বরতে বংসন্তানপালকস্য প্রভোজনতিপ্রীতিপাত্রী ভ্রদি তৎ প্রমেব গদা ক্রপাসিক্ষো ত্রেক্সাপরাধং ক্ষময় গবেক্সন্থেন তম্ভিষ্টি চেতি। কিঞা ব্রহ্মাণ্ডকোটীক্সস্য ব্রহ্মসন্তাদিছ্র ভিচরণপরিচরণস্য তব গবেক্সন্থেনাভিষেকো নাম কঃ খলুৎকর্ষঃ। ুক্তিভূত্তিকতামন্মাক্মেবোৎকর্ষার্থমন্মাক্ময়ং প্রযন্ত ইত্যাহ অব-তীর্ণোহসীতি বিশাল্মন্তি বিশাল্পতি ভাবঃ॥ ১৯॥

প্রদা ছ্দ্ধেন। দেবমাতৃভিরদিত্যাদিভি: প্রেরিত ইক্রশ্চাভাষিঞ্চৎ আত্মনো তগব্রিক্টুদাসত্মননেনাভিষেককর্মণাভাহিতি অয়মপ্রবৃত্ত: প্রথমং স্থগিত এবেক্র আসীৎ পশ্চাদদিত্যাদিভি: প্রেরিততদাজ্ঞাবশার্ম তৃদ্ধিকার্মন্তানন এব অভাষিঞ্চিত্যর্থ:।
দাশাহিমিতি নশাহ বংশ্যত্মেন জ্ঞাত্যাদি তদ্য গোপস্বদ্যৈব স্পৃহণীয়ন্তাধিক্যাৎ। গাং পশূন্ বিক্তি গাং স্কৃত্তেক্রিয়াণ্যাকর্ষকন্মেন বিক্তিতি বা গোবিক্র ইত্যভাধাৎ নান ক্রতবানিত্যর্থ:। ২০॥

দেবনিকায়ের কেতব ইব ম্থ্যা বরুণাদয়:। অত্তপুলারটিভিবি শৈবেণ অবাকিরন্ আবজ্রতার্থ:। গাং পূথীং পয়োডিপাঠাইয়া দিলেন। তে বিশ্বমূর্ত্তে ! আপনি মানব নছেন, ভূমির ভার হরণ নিমিত অবতীর্ণ
হইরাছেন ॥ ১৯॥

ৈ হে রাজন্ ! এই প্রকারে সম্ভাষণ করিয়া হঁরভি স্বীয় হুশ্ব ছারা ভগবাদ্কে ইক্সত্ব পদে অভিষিক্ত করিলেন ॥ ২০॥

্তদন্তর দেবেক্তও দেবমাত্দিগের উত্তেজনায় দেব ও ঋষিগণ সহিত ঐরাৰত করোজ্ত সাকাশ

অভাসঞ্জ দাশাহং গোবিন্দ ইতি চাভ্যধাৎ।
ভত্তাগতান্তম্মুক্রনারদাদয়ো গন্ধর্ববিদ্যাধরসিদ্ধচারণাঃ।
অন্তর্মশো লোকসলাপহং হরেঃ হুরাঙ্গনাঃ সংননৃতু মুদান্বিতাঃ ॥ ২১॥
তং ভুক্তুবুদে বিনিকায়কেতবো হ্বাকিরংশ্চান্ত্তপুষ্পর্ম্ভিভিঃ।
লোকাঃ পরাং নির্তিমাপ্রবংস্তরো গাবস্তদা গামনয়ন্ পয়োক্রতাং ॥ ২২॥

#### **टी** धत्रशारी

কৃষা গোবিন্দ ইত্যভাগাৎ নাম কৃতবানিতাৰ্থ: ॥ ২১ ॥ দেৰনিকালেমু কেতব ইব দৰ্শনীয়া মুখ্যা ইতাৰ্থ:। গাব: গাং পৃথ্যীং পলোভিক্ৰতাং আৰু ং অনৱন্ অকুৰ্বলিতাৰ্থ; ॥ ২॥

### বৈষ্ণবভোষণী।

ক্বপার্জ চিত্তঃ শরণাগতবংগলঃ বিশেষতণ তৎপ্রেরজনসকতা। স্বমাগতোহিদি সমরোহয়মপাতিপ্রশিক্ত সালা তয়ং কার্বী ম হোৎসবং ভক্তা বিধংবেতি অতবৈধ্বের সহিতোহভাষিক্ষদিতার্থঃ। ঐরাবতত করেণ করা রত্তকুলিধার। উদ্ধৃতিরানীতৈঃ তদীয়রত্বমরঘণ্টরেতি। বিষ্ণুপুরাণে। তচ্চ গলেক্সম্বারা তিধিনাং সংল্যাবান্তিততীপ্রকল্লান্তান্ত গবামিক্রো গোবিন্দঃ তৎপদেনৈব গবেক্সভারা বাচ্যরাং। প্রীয়ার ইক্রোগবামিতি তদর্থনির্দেশন তরায়ঃ স্চিত্তাং। ইতি গোগোকুলপতিং গোবিন্দমতিবিচ্য স ইতি বক্ষ্মাণান্ত। প্রোদ্রাদিপাঠ ইতি দাশার্হ মিতি দাশার্হ হৈহিপি গোবিন্দম্ভইমিত্যভিত্রেতং ॥

ততক মহোৎসবো জগদানন্দকরো বৃত্ত ইত্যাহ তত্ত্রেতি। ত্রিভি: তশ্মিন্ শক্রকুণ্ডমিতি শ্রীবারাহতঃ গোবিন্দকুণ্ডমিতি স্বান্দতঃ প্রসিদ্ধে শ্রীবারাহিক। গোবিন্দকুণ্ডমিতি স্বান্দতঃ প্রসিদ্ধে শ্রীবারাহিক। সর্ব্যান্দ্র হৈছু: মুদাধিতাঃ। অত ইক্তাজ্ঞাপেকাপি তৈল ক্তেট্র ভাবঃ। তুলুরোরাদৌ নির্দেশঃ পূর্বং নারদাদিপি তত্ত্ব সানে ক্রৈট্রাং। তচ্চ বিশ্বপুরাণে ব্যক্তং। শ্রীনারদক্তার্যং নিত্যপার্ষদঃ শ্রীগক্ষ্ণাদীনাং শ্রীবৈনতেয়াদিরিব ভগব-দবতারতৎপার্শদপ্রবর্গ্রীনারদক্তিবাবতারো গীতাদিকোতুকেন গন্ধর্কাদিয় বর্তত ইতি। আদিশকাচ্চিত্ররপাদয়ঃ। বহা। তুলুকনারদাবাদাবিহাতো বেবাং তে গন্ধর্কাদয়ঃ লোকানাং সর্ব্যোধাং মশং তত্তকৌ দোবং মোক্ষাভিসন্ধিপর্যক্তং॥ ২১॥

দেবনিকায়কেতবং বরুণাদ্যা: । পূস্পাণাং স্বরূপেণ বৃষ্টীনামপার্ষিত্যনেন্চ অস্কুতাভিঃ পূস্পাণাং বৃষ্টিভিঃ ব্যাণয়ামারু:। প্রাং যতোহিভিশ্বিতা নাজান্তি তাং॥ ২২॥

#### ক্ৰমন্দৰ্ভ:।

শ্রীয়ার ইক্রোগবামিত্যুক্তত্বাৎ ত্বল্ল ইক্রো অগংপতেরিতি। ইতি গোগোকুলপতিং গোবিক্ষমভিবিচা স:। ইতি বক্ষানাগাং ॥ ২১ ॥ ২২ ॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্তবর্তা।

क कार वादार वनवन् वक्रिकार्थः ॥ २>॥

নানারদৌখা: ক্ষীরাদিবাহিন্য অক্টপ্রা: কর্ষণং বিনৈব পকা ওবধয়ো বয় তে গিরয়:। উয়ণীন্ উৎকৃষ্টায়ণীন অবিজ্ঞন্ অবিভক্ষঃ ॥ ২২ ॥

গলার জল বাইরা ভগবানের অভিষেক করিলেন, তাহার পর গোবিশ এই নাম রাখিলেন, কারণ ইত্রছরূপে অর্গলাভ করিয়াছিলেন। রাজন্। দেই সময় দেখানে তুমুক্ত, নারদ প্রভৃতি দেবর্ধি তথা গল্পর্ব বিদ্যাধর, নিজ্ ও চারণগণ উপনীত হইয়া ভগবানের লোকমলাপ্ত অমল যশ গান, আর দেবারনা সক্ল হর্ষাজ্যুক্ত হইয়া মৃত্যু করিতে লাগিলেক। ২১,॥

স্থার, দেবর্শ মধ্যে ধ্রেবং দর্শনীয় অর্থাৎ প্রধান ২ দেবগণ টাছার স্তব এবং আশ্চর্য্য পুষ্পর্ষ্টি মারা তাঁহাকে আছের করিলেন! অপিচ লোকপালদিগের সহিত তিন লোক পরম স্বস্কুরা লাভ করিল, আর গাভী সকল স্ব ২ পয়ে।ধারার, ব্রাভ্রুকে স্মার্ক করিয়া তুলিল। ২২। নানারসোধা: সরিতো রক্ষা আসন্ মধুত্রবা:। অকৃষ্টপচ্যোবধরো গিরব্রোহবিজ্ঞ দুশান্।
কৃষ্ণেহভিষক্ত এতানি সর্বাণি ক্রনন্দন। নির্বৈরাণ্যভবং স্তাত ক্রাণ্যপি নিসর্গতঃ।
ইতি গোগোকুলপতিং গোবিন্দমভিষিচ্য স:। অসুজ্ঞাতো যথো শক্রো রতো দেবাদিভিদিবং ॥২০
॥ \* ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষকে শ্রীকৃষ্ণাভিষেকঃ সপ্তবিংশোধ্যায়ঃ ॥ \* ॥ ২৭ ॥ \* ॥

### बीधत्यामी।

নানারদোষা কীরাদিবাহিত্র:অক্টণচ্যাঃ কর্ষণং বিদৈব পকা ওবধরো গ্রীস্থাদর আসন্। বছা। অক্টণচ্যা ওবধরো বেবু তে গিরর উন্মাপুনু গর্তগভান্ মণীন্ উৎ উলগভান্ বহিঃ প্রকটান্ অবিজ্ঞন্ অবিজ্ঞঃ ॥ ২৩ ॥

॥ \* ॥ ইতি দশমে সপ্তবিংশ:॥ \*॥

### বৈষ্ণবজোষণী।

নানারদেত্যাদাবেবং ক্রেয়ং। পূর্বং বুন্দাবনে বৃদ্দাবৈশিষ্ট্যমাসীৎ তদপ্যধুনাধিকতরা তত্র ভূছা ত্রৈলোক্যমণি ব্যাপ্লোদিতি। অরুষ্ট-প্রচ্যাবধ্য ইতি মধ্যে অপ্লুক্ ছান্দসঃ সন্ধিবন্ধ। ॥

নচ কেবলং গুণা এব সম্পন্নাঃ স্বাভাবিকদোৰা অণি বিনষ্টা ইত্যাহ ক্লফ ইতি। এতানি প্রসিদ্ধান সন্থানি নিস্পৃতঃ লাতিসভাবেন ক্রাণি পরম্পারং হিংসাপরাণ্যপি অহিনকুলাদীনি সর্বাণি সর্বভৃতান্যেব নিকৈরাণি মিআণীবাতবন্। আরমানে জনার্দন ইতি বত্তদানীমিতি ক্লেনং। বৃন্ধাবনে সর্বাদেবেতি শেবঃ। হে কুলনন্দন ইতি তত্ত তবাসুমোলনেন হে তাতেতি পরমশ্চার্বোণ প্রেম-বৈবঞ্জেন বা পুনঃ সংবাধনং॥

সঃ অপরাধ্যপি প্রিভগবতা দীরু ভোপচার: গোগোকু লগতি দেন দ্বত এব তং গোবিন্দমভিবিচ্যেতি তেন তক্ত নাতি শরঃ কিন্তু তেন কর্মণা লোক ক্রেব দর্শকের হিতং চকারেতি ভাবঃ। তক্ত হিতমেব দর্শরিত তত্তঃ শ্রীগোবিন্দেনামূজ্ঞাতঃ সন্ পূর্বং তরপরাধিশাং প্রায়ন্ত্যক্তোহিপি পুনর্দেবাদিভির্বতঃ। দ্বীকৃতে। ভূষা দিবং ব্যাবিতি লীলেরং স্থিতিঃ স্থানবেশাদি বৈশিষ্টোনৈব জ্ঞাত ঘাং দ্রতো বা নিহু তা দৃষ্ট্যাং পশ্চাদেব ব্রজে কথিতেতি জ্ঞেরং। ইতি গোগোকু লগতিং গোবিন্দমভিবিচ্যেতি গোগোকু লগে। ত্তদী শিতবারো নিবিন্দিভিত্যকান এব স্থাচমংকারাং। পালোজরেবতে তু। গোপর্দ্ধান্দ গোপান্দ দৃষ্ট্য তত্ত্ব শতক্রত্বং। তেন সংপ্রিতাকৈর প্রহ্মকুলং ব্যুরিতি শ্রীনন্দ্রশোদাদীনামণি ত্ত্রাগমনং বর্ণিতং। তকু বিবিক্ত উপসংগ্রেছি বিরোধাৎ ক্ষান্তরে ক্ষেরং॥ ২৩ ॥

#### ক্রমদলর্ড:।

# + # ইতি **ঐ**বৈক্ষৰভোষণ্যাং দশষ্টিপ্পন্যাঃ সপ্তবিংশঃ # + ।

নির্কৈরাণীতি সর্বভূভান্যেব তদানীমিতি শেব: ॥ ২০ ॥

॥ 🛊 ॥ দৰ্শমে জীজীবগোহামিকতে ক্রমসকর্ডে সপ্তবিংশ: ॥ 🗢 ॥

#### গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবতী।

এতানি ভূতানীতি শেব: ॥ ২৩ ॥ .

॥ • ইতি সারার্থদর্শিন্থে হর্বিণাং ডক্তচেত্রসাং। দশমে সপ্তবিংশোহরং সঙ্গতঃ সঞ্চঃ সভাং ॥ • ॥

ছে কুরুনন্দন ! রুষ্ণ অভিষিক্ত হইলে পর, নদ নদী সকল ক্ষীরাদি বিবিধ রসবাহিনী ইইয়াছিল, বৃক্ষ সকলে নধুক্ষরণ করিতে আরম্ভ করে, ত্রীহি প্রভৃতি ওধি সকল কর্ষণ ব্যতিরেকে পরিপক হইয়া উঠে । আর পর্বত সকল স্বং গর্গ্জতি মণিসমূহ বাহিরে প্রকর্তিত করিয়া ধারণ করিয়াছিল । অধিক্তা যে সকল প্রাণী সভাবতঃ ক্রুর, তাহারা পরক্ষার হেষভাব পরিত্যাগ করিয়া সকলে নির্কৈশ্ধ হইয়াছিল। দেবরাজ এই প্রকারে গোও গোকুলপত্তি গোবিক্তকে অভিষিক্ত করিয়া দেবরুক্তে পরিকৃত্তি স্বর্গে গমন করিলেন ॥ ২০॥

॥ • ॥ वनदेव मेखिरम ॥ • ॥

শ্রীবাদরায়ণিক্রবাচ ॥

একাদশ্যাং নিরাহারঃ সমভ্যর্জ্য জনার্দনং। স্নাতৃং নন্দস্ত কালিন্দ্যাং দ্বাদশ্যাং জলমাবিশৎ। তং গৃহীদ্বানয়ন্তৃত্যো বরুণস্যাস্থরোহন্তিকং। অবজ্ঞায়াস্থরীং বেলাং প্রবিষ্টমুদকং নিশি। চুকুশুস্তমপশ্যস্তঃ কৃষ্ণরামেতি গোপকাঃ॥ ১॥

#### श्रीभवचामी।

অন্তাবিংশে ততোনলানরনং বরুণালয়াই। বৈকুপ্তদর্শনাঞাথ গোপানামহবণ্যতে। গোবর্জনং সমৃত্ত্য বলে কৃত্যাহমেরেশরং। নলানয়নতঃ ক্ষেত্যা বরুণঞ্চ বলেহনয়ং॥ • ॥

ক্লামাত্রায়াং দাদশ্যাং পারণাদরাভিনিবেশেন আহ্নরীং বেলামবজ্ঞায় অকণোদরাং পূর্বনের শাস্ত্রবলেন নিশি উদকং প্রবিষ্ঠিং তদনভিজ্ঞো বরুণদ্য ভৃত্ত্যোহনয়দিতি। তথাত শাস্ত্রং। কলার্দ্ধাং দুখা নিশীপাদ্র্দ্ধমের হি। আনধ্যাক্ষাং ক্রেরাঃ সর্ব্বাঃ কর্ত্তব্যাঃ শস্তু শাসনাদিত্যাদি। বক্ষাতি চ বরুণঃ অজানতা মামকেনেতি ভগদ্ধমঞ্জানতেত্যর্থঃ॥ >॥

#### देवकावरकावनी।

প্রসাদক্তচরিত্নেবাসুবর্ণয়য়ালো ঐশব্যমদানর্থতানের দশ্রন্ধিক্সত্তের বরণজ্ঞাপপ্রেধিং বক্তৃং তৎপ্রসঙ্গমার্ভতে একাদ্রানিত্যাদিনা মুদ্মিত্যন্তেন। একাদ্রাঃ হাসেন বা কিঞ্জিয়ার নিজান্তায়াং তল্ঞাং। বট্প্রেরাবের তদ্যুতনকালং ব্যাপ্যেত্যর্থঃ

দাদ্রাং পারণাহ নিজান্তে কিঞ্জিদ্বাদ্রাদি প্রহরন্ধাবসর্ভদ্যতনকাল ইত্যর্থঃ। কিঞ্চ। সম্যাভিত্যাহর্তনিত্ব। পরমভাগবতাব্যাহ্রেন যথাবিধিস্কাগর্পপ্রাবিশেবং রুত্বা ইত্যর্থঃ। জনৈ উক্তৈর্ন্ধাতেহত্ত্পতায়া নিত্যং ভক্তার্থং যাচ্যতে ইতি তথা তং। ইতি
পরমক্তার্ব্রাণি তল্প নিরাহারত্বন সমভ্যক্তনে হেতুঃ। অতএব কার্লিক্সাং ভগবভ্বতিবিবর্দ্ধন্যাং জলমাবিশং তুশন্দেনাজ্ঞানাবিশং কিন্তাং ব্যাধ্রতি ব্যঞ্জিত্বা তল্প যমুনালানাগ্রহং বোধন্বতি ॥

শ্বর ইতি জাতৈয়ৰ বৈষ্ণৰধৰ্মাজ্ঞৰমূকং। তথাসুৰ্য্যাং বেলারাং জ্বলরক্ষণে ব্লিষ্ঠস্ত তক্তৈৰ বৌগ্যত্বঞ্চ দুৰ্শিতং। বৰুণসভ্ত ভূতা ইতি তভাপি দোৰাপত্তিঃ। অবজ্ঞায় অনাদৃত্য ॥

চুকুগুরিতার্দ্ধকং গোপকা মহারাজ্বত তত চতুর্দিগ্রক্ষকা জনাঃ॥ ১ ॥

#### ক্ৰমসন্ত:

একাদশ্যাং অল্পনাতি বাদশুগুণলক্ষিত ষট্প্ৰেছর তত্ত্তর তদদাতন কালং ব্যাপ্যেত্যর্থ:। ছাদশ্যাং পারণাহনিক্ষাপ্ত বিধিদ্ধাদশ্যাদি প্রছর্মনার্ক তদদাতন কাল ইত্যর্থ:। তু শব্দেনান্যো নাবিশদিতি ব্যস্তা তাদৃশতগ্যক্ষিত্ততাং বোধনতি। অবজ্ঞান অনাদৃত্য তংক্রোশনমুশক্ষতা পিতরঞ্চ বরুণাহাত্তং বিজ্ঞায়েতি শেবঃ ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥

#### श्रीविधनाषहत्ववर्धी।

আটাবিংশেহভবরন্ধানরণং বরণস্তিঃ। গোগানাং বিসম্থোৎস্কাশ্মবৈক্ঠদর্শনং। ইস্কাগাণত তৎকাভিম্কৃ। সম্তিমাগতে। বরণস্যাপি তে বক্তুমাহ লীলাভরং মুনিঃ॥ • ॥

জনমাবিশদিত্যরুণোদয়াদি পূর্বাং কলামাত্রাবশিষ্টায়াং ছাদশ্যাং পারণাপ্রাপ্ত্যর্থং শাল্পজাবনেনৈবেতি জ্ঞেয়ং। তথাচ শাল্পং। কলান্ধাং ছাদশীং দৃষ্ট্র। নিশীপাদৃর্দ্ধমেব হি। আমধ্যায়াঃ ক্রিয়াঃ সর্বাঃ কর্তব্যাঃ শক্ত্শাসনাদিতি ॥

বঙ্গণায় ভ্তোহিস্থর:। বঙ্গণায়াভিক্ষনরং তত্ত্ব হেতু: আসুরীং বেলামবজ্ঞার উদক্ষ প্রবিষ্টমিতাজ্ঞানেনৈব তত্মিন্ দোব-ক্ষানং। শ্রীনক্ষেন ভু শাস্ত্রাজ্ঞাবলেনৈবোদকে প্রবিষ্ট্রবাৎ। অতএবাত্রে বক্ষাতে অন্ধানতা মামকেন মুদ্দেনতি ॥

লোপকা: মানার্থং রাজে গভদ্য ভদ্য রক্ষকা: ॥ ১ ॥

অফ্টাবিংশাধ্যায়ে বরুণালয় হইতে নন্দানয়ন এবং গোপদিগের বৈকুণ্ঠদর্শন ॥ • ॥

শুক্ক বাদশীতে স্নান নিমিত্ত যম্নার জলে প্রবিষ্ট ইইলেন। আহ্নরীবেলা না মানিয়া শাস্ত্রবলে অরু-পূক্কি বাদশীতে স্নান নিমিত্ত যম্নার জলে প্রবিষ্ট ইইলেন। আহ্নরীবেলা না মানিয়া শাস্ত্রবলে অরু-লোদয়ের পূর্কেই রাত্রিতে জল মধ্যে প্রবেশ করেন, অতএব বরুণের একজন ভূত্য তাঁহাকে ধরিয়া আপনার প্রভূপ সন্ধিধানে লইয়া গেল। নন্দকে না দেখিয়া গোপসকল অতিশয় ব্যাক্ল হইলেন এবং হে রাম। হে কৃষ্ণ। বলিয়া চীৎকার করিতে আরম্ভ করিলেন॥ ১॥ ভগৰাংস্তত্পশ্রুত্ত পিতরং বরুণাছতং। তদস্তিকং গতোরাজন্ স্থানামভয়দোবিছু: ॥ ২ ॥
প্রাপ্তং বীক্ষ্য ছ্যীকেশং লোকপালঃ দপ্র্যায়। মহত্যা পূজ্যিছাত তদ্দ্রনমহোৎদ্র: ॥ ৩ ॥
শ্রীবরুণ উবাচ ॥

অদ্য মে নিভ্তো দেহো অদ্যার্থোহধিগত: প্রভো। ছৎপাদভাজো ভগবন্নবাপু: পারমধ্বন: ॥৪

### क्षित्रवामी।

স্থানাং ভগবদ্ধপরায়ণানাং অভয়দ: মাটেডটেত্যভয়ং দদৎ ॥ ২ ॥

পপর্যারা অহ'পেন ॥ ৩ ॥

আব্য ইবানীং মে মরা দেহো নিভ্তঃ ধৃতঃ বদা ভদর্শনং জাতং তদৈব দেহসাফলাং প্রাপ্তমিভার্থ:। यदा। নিভ্তঃ পূর্ণমনোরথ-ইত্যর্থ:। কিঞু। অদ্যৈবার্থোহধিগতঃ সর্ব্বরদ্বাকরপতিনাপি ইতঃপূর্বং মৈব্যিধোহর্থ: প্রাপ্ত ইত্যর্থ:। কিঞ্চ সংসারোহপি নির্ত্ত

### देवकवट्डावनी ।

ভংক্রোশনং দ্রগোহণি উপ সমীপ এব শ্রন্থা পিতরং বরুণাস্থতঞ্চ জ্ঞান্থেতি শেষঃ তদন্তিকং গতঃ তত্র কৈমুত্যেন হেডুঃ বিভ্র্যা-পক ইতি স্থানাং গোপজাতিমাত্রাণামভরপ্রানঃ কিং পুনঃ পিতৃরিত্যর্থঃ ॥ ২ ॥

স্ববীকেশং সর্কেজিরপ্রবর্ত্তকং ইতীজিরবৃত্তাগোচরমণি প্রাথং বীক্ষ্য নিকটনাগতং জ্ঞাছেত্যর্থ:। তভল্চোণপ্রস্রোতি জ্ঞেরং লোক-পাল ইতি মহাসপর্যায়া সামর্থাং দ্যোতিতং। ততত্তদৈব লোকপালছং সফলং বৃত্তং ইতি চ। তদ্ধনিন মহাহুৎসব স্মানদো বভেতি ভালৃশ প্রানে হেতুং এতছক্তং ভবতি পূর্বং শ্রীভগ্রতো ছর্জনাস্থচরে তিমিন্ ক্রোধ এব জাতঃ সক্ষত্যতু তং সভয়তারামণি নাতিব্যপ্রং সদত্তবন্ধতিত্যোপপ্রক্ষণ্ড চ দৃষ্ট্রা নিশ্তিত্বাভীইপদ্ধিতরা তভ্ত তল্প ক্মাব্লিভদ্টির্জাতা। ততশ্চ তস্য তদ্ধন্মহোৎসবো জাতঃ ভতশ্চ স্বতিপ্রাদিকং তেনার্ক্ষিতি ॥ ৩ ॥

প্রতোহে জগদীশর ইতি পরমদোর্শত্যাদিকম্ক:। অবাপু: অবহেলনেন লেভিরে। অন্তবৈ: তত্র পূর্ণমনোরথ ইতি পকে। মে মমেতি পূর্ণো মনোরথো যত্রেতি চ ব্যাখ্যের:। বদাপি পূর্বেত হেতু: বাক্যমুক্তরাদ্ধি তথাপাছার্থজাপি লাভাদিত্যভিপ্রারেণাহ কিঞা। সংগারোহপীতি। বহা। নিতরাং ভূত: মৃত্র্দেইধারণক্ত ফলমদ্যৈব সম্য়েক্ষমিত্যর্থ:। কুত: অর্থ: পরমবিচারেণার্থো নাম বঃ সোহদ্যৈব মরা প্রাপ্ত: ছৎপাদভাজস্বতরণক্ষলং প্রাপ্তবস্ত এবাধ্বন: প্রাপ্য পরশাররা অস্তং অব সমস্তাদাপুরিতি। তদৈব স্বরং ভগ্

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

নিতরাং ভূতঃ অত্তৈব সম্যক্ সাফল্যাৎ কুতঃ অর্বঃ পরমবিচারেণার্থো নাম বং সোহলৈয়ে মরা প্রাপ্তঃ তত্ত্ব তেতুঃ। তৎপাদভাজ ভচ্চরণক্ষনাং প্রাপ্তবন্তঃ এবাধ্বনঃ পারং প্রাপ্য পরম্পার্যা অন্তঃ অব সমস্তাৎ আপুরিতি। তবৈব স্বরং ভগবস্থাদিতি ভাবঃ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥

### ত্ৰীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তংক্রোশনং উপশ্রত্য তদানীং দ্রতঃ পুশ্রশ্যারাং শয়ানোহণি উপ নিকট এব শ্রাছেতি তদ্য দর্মদেশবর্তিছাৎ পিতরং বরুণাস্থতং ক্লাছেতি শেবঃ। তদানীযেব রক্ষকগোণানাং নিকটমেত্য ক্ মে তাতো নিমমক্ষেতি দৃষ্ট্য তত্ত্বৈব তটাৎ দঝশ্পং নিমক্ষ্য তদজিকং বরুণায়িকং গতঃ। স্থানামভর্দঃ। ততঃ দকাশার্লমানীয় জ্ঞাতীনামভয়ং দাস্যবিত্যর্থঃ ॥ ২ ॥ ৩ ॥

অদ্য নিতরাং ভৃতো ধৃতঃ এতাবদ্দিনপর্যান্তং সহস্রশো দেহা বুথৈব ধৃতা ওদ্দর্শনলাভাভাবাদিতি ভাবঃ। অর্থোহপ্যদাবাধিগতঃ। সর্ব্বিস্থাক্ষপতিনাপি ইতঃপুর্বং নৈব্দিধোহর্থং প্রাপ্ত, ইতি ভাবঃ। বংপাদৌ ভদ্ধন্ত এবাধ্বনঃ সংসারস্য পার্মবাপুঃ। অহতেতা-

পিতাকে বরুণ হরণ করিয়। লইয়া গিয়াছেন ইহা শুনিয়া ভগবান্ ভগবদ্ধ পরায়ণ জনগনের অভয় দান করত অর্থাৎ ভয় করিও না, ভয় করিও না এই বাক্য বারস্বার উচ্চারণ করিতে ২ তৎক্ষণাৎ বরুণ সন্ধিধানে গমন করিলেন ॥ ২॥

লোকপাল বরুণ ঐক্তফেকে আপনার আলয়ে উপনীত দেখিয়া মহোৎসবপূর্বক মহতী সপর্যা।
খারা পূজা করিয়া নিম্নলিখিত বচন বলিতে লাগিলেন, ॥ ৩ ॥

্বরুণ কহিলেন, প্রভো ! অদ্য আমার দেহধারণ সফল হইল, অদ্যই আমি প্রম পদার্থ প্রাপ্ত হইলাম,ইহার অত্যে সর্বরিশ্বাকরের অধিপতি হুইয়াও এব্যাধ অর্থ প্রাপ্ত হুই নাই। ভগবন্ ! যে সকল নমস্তভাং ভগবতে ত্রক্ষণে পরমান্ধনে। ন যত্ত্র প্রেয়তে মায়া লোকস্প্তিবিকল্পনা ॥ ৫ ॥
ভাজানতা মামকেন মুড়েনাকার্য্যবেদিনা। আনীতোহয়ং তব পিতা তৎপ্রভো ক্ষন্ত্যহ সি॥ ৬॥
ভীধ্যবানী।

ইত্যাশবেনার স্বংপাদভাক ইতি অধ্বন্ধ পারং মোকং ॥ । ॥

ভগৰতে নিরতিশরৈশব্যার একশে পূর্ণার পরমান্ধনে সর্বজীবনিয়ত্তে তত্ত্ব ব্যত্তেতি লোকস্টিং বিকরয়তি যা মায়া সা ন যত্ত আবিদ্যমানেৰ তিইতীত্যর্থ: ॥ ৫ ॥

অজানতা মহুত্যেন স্বংপিত্রাহরণং বংক্কতং তদিভি॥ ৬॥

### देवकवरकावनी ।

#### ৰম্বাদিতি ভাব:॥ ৪॥

অতত্তবাহাত্মঃ বর্ণয়ন্ ভক্তা প্রণমতি নম ইতি ভগবতে পূর্বজ্ঞণৈশ্বগৈণ খলোকানে বিরাজমানার প্রমাত্মন সুর্বায়বামি-রপার ব্রহণে কচিদধিকারিণি অপ্রকাশিতত্ত্তক্তেরে সভাং জানমনভ্মিভোবং কেবলং প্রকাশমানার। নচ মায়য়। তত্ত্বপদ্মিভাহে ন যত্ত্তি। তত্ত্ব হেতৃমাহ লোকেতি। জীবানামেবং স্টেং বিবিধভয়া কর্মিভূং শক্রোতি ন চেখরে ত্ত্বি প্রভবতীভার্থ:। এবকৈখব্যরূপ গুণাদিভেদবিক্সিকা অরপশক্তিরন্যাত্তি ইতি দর্শিভং। অতএব ভাদৃশ্য তব নিজ্গৃহাভাত্তর এব সন্ধনেনাল্য প্রমক্তার্থে। ছুটি ত্তিংপ্রাং ॥ ৫ ॥

অতো মহাপরাধোহণি মে স্বরা করেং যুক্তাত এবেত্যাই অকানতেতি যতো মুদ্দেন মুর্থেন নমু কথং তহি রাজিয়ানদোরং আছা মংশিতানীতত্তরাই অকার্যাং কর্তু ম্যোগ্যমের বেদিত্ং শীলমদ্যেতি তথা তেন। যহা স্বংশিতেত্যজানতা। কিঞা মুদ্দেন তগরহর্ম্ম-জ্ঞানহীনেন চেত্যার্থ:। ন কেবলং মুদ্দেন প্রমন্থ্য ছিনা চেত্যাই অকার্যাতি অকার্যাং অসংকার্যাং। অরমিতি স্বগৃহে রক্ষিত্মজ্ঞানতা একার্যার বিষ্টাইন কর্তাই কর্তাই এব রক্ষিত্ত হৈ হেতুং তব পিতেতি। যহকং ছিতীরে। নক্ষ্ম মোক্ষাতি ভরাং বরুণ্যা পাশাদিতি। অতা চ পাশাদ্যভয়ং তত্মাহিমোক্ষাতি নতু পাশাদিতি পাশসহহাে নিরন্তঃ। তদানস্বাগ্যা। নমু মহাপরাধাহয় ক্ষেত্রা ন স্যান্তরাহ প্রভা হে প্রম্মুম্প্রতি হাবং। কর্ত্তাইতি ভাবং। যহা। হে অস্থ্যামিন্ অতো দাসানাম্মাকং অপরাধঃ স্বর্থ এব ত্রা ক্ষম্ভ যুক্তাত এবেতি ভাবং। তত্তবান্ ক্ষম্ভ মহাতীতি কচিং পাঠঃ॥ ৬॥

#### ক্রমদন্ত:।

অয়মাদ্রণীয়ৰেন নিজাগ্রত এব ৰক্ষ্মাণঃ। নক্ষ মোক্ষতি ভয়াং ৰক্ষণ্য পাশাদিতি পাশাং ভয়ং যদাং নতু পাশাদিত্যুৰ্থ: ॥৬॥१॥

#### ট্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তী।

দৃশং দর্শনমপি প্রাপ্ত ইতাহো মন্তাগ্যস্য পরাকার্চেতি ভাবঃ ॥ ৪ ॥

ভক্তা জানেন যোগ্যন চ প্ৰেবোপাস্য ইত্যাহ নম ইতি। মারাশাবল্যাদেব তব তগবদাদীতাচক্ষাণা আন্তা এবেত্যাহ ন ষত্তেতি। লোকস্টেবিবিধক্ষনং যতঃ সা॥ ৫॥

কিং ভো মামেবং অবন্ লক্ষ্যে সভাং মহাপরাধো মে জাত এবেতাাহ অজানতা বাদীনা। আরবে অরুণোদরাৎ পূর্বমণি জালে প্রবেটবামিতি ভজিশাল্লানভিজ্ঞেন। মামকেমেতি ভূত্যাপরাধেন মমৈবাপরাধ ইতি ভাবঃ। অভএব মৃদ্দে আকার্য্যবিদিনা মন ভূত্যাহিশি মংকার্গং ন জানাতীতার্থঃ। তব শিতা আনীতঃ অরমিতি রন্ধচত্কিকা মধ্যাসীনং খেন পূজিতং খেইদেবশ্বরণ-রজং শ্রীনকাং আঞ্জিনা দর্শরতি। ক্রমহ্পীতি তব্ ক্মানিকুছাৎ মমছপরাধনিকুছাৎ দগুরিবাসি চেং বথেইং দগুরেভি ভাবঃ ॥ ৬॥

ব্যক্তি আপনকার পাদপদ্ম দেবা করে তাহাদের মোক্ষ প্রাপ্তি হয়, আমিও চরণদেবক, আমার সংসার নির্ভি হইল ॥ ৪ ॥ °

প্রভো ! সাপনি নিরতিশয় ঐশর্য্যরূপী পূর্ণ্যরূপ এবং সর্ব্ব জীবের নিয়ন্তা, কারণ যে মায়া লোকস্ষ্টি বিকল্লিড করে তাহাও স্থাপনাকে স্বাঞ্জর করে না স্বতএব স্থাপনাকে নমস্কার করি ॥ ৫ ॥ স্থাবন্ ! স্থামার একটা মৃঢ় ভৃত্য কার্য্যাকার্য্য কিছু বোঝে না, সে যে স্থাপনকার এই পিডাকে

इत्रण कतित्रा **या**निवारक, यांशनि **अक्छ यश्राध क**मा कतिरु स्याग हरवन ॥ ७ ॥

পৌৰিন্দ নীয়তামেষ পিতা তে পিতৃৰৎসলঃ॥

প্রীশুক উবাচ ॥

এবং প্রসাদিতঃ কুফো ভগবানখিলেখরঃ। আদায়াগাৎ স্বপিতরং বন্ধূনাঞাবহন্দং॥ ৭॥ নন্দস্ততীন্দ্রিং দৃষ্ট্বা লোকপালমহোদ্যং। কুষ্ণে চ সন্ধৃতিং তেষাং জ্ঞাতিভ্যো বিস্মিতোহত্তবীৎ ॥৮ তে চৌৎস্ক্যধিয়ো রাজন্ মন্বা গোপাস্তমীখরং। অপি নঃ স্বগতিং সূক্ষামুপাধাস্যদধীখরঃ ।৯॥

### बीधतवामी।

নন্দং বিমুচ্য সমর্পন্ততি গোবিন্দেতি॥ १॥

অতীক্রিমং অদৃষ্টপূর্বাং লোকপাল্যা মহোদয়ং ঐথর্ব্যং ॥ ৮॥

উৎস্কাৰ্কা ধীৰ্যেবাং তে অপি কিং অগতিং স্বস্থানং স্ক্ৰাং ব্ৰহ্মাখ্যাং উপাধাস্যৎ উপধাস্যতি নোহস্থান্ প্ৰাপয়িষ্যতীতি সঙ্ক্লিত-বস্ত ইত্যৰ্থ: ॥ ৯ ॥

### देवकवरजामनी।

তত্ত তদৈব গৃহমানীয় তং দর্শনাহ গোবিন্দেতার্ককেন। তত্র গোবিন্দেতি মহাপরাধীনাপীক্তেণ রুতস্য গোবিন্দতরাভিষেকস্য স্থীকাবেণ পরমকারুণাাদিকং স্টিতং কে পিতৃবৎসলেতি পিতাপুজৌ তোষয়তি। তথা বর্ষমেকজ্ঞানীম এব স্থগৃহে পরমীদৃশভাগধেয়া-কাজ্জদৈব তাবতং ক্ষণং রক্ষিত আসীদিতি চ ব্যঞ্জয়তি। এবমুক্তপ্রকারেণ ব্যবহারেণ বচনেন ব্যবসায়েন চ। নিষ্তোবন্মহাপরাধে তাবনাত্রেণৈব কথং প্রসন্মেহভূত্তরাহ ভগবান্ সর্ক্জঃ তত্তত্ত্বদোধো নান্তি ইতি বিজ্ঞানাদেব ইতি ভাব:। ভগবত্বে হেতু: অধিলান্নামীশবঃ প্রবর্তক:। ঈশবেশ্বর ইতি গাঠঃ ক্টিৎ॥ ৭॥

এবং যদেগাবিন্দান্থ দিলিওং তেলৈয়ব মহিমদর্শনার তদাম্পদস্য মহিমানং দর্শরতি নন্দান্ধত্যাদিনা। তুশব্দো ভিরক্রমে। তেরাং বঙ্গণস্য তল্লোকবাসিনাঞ। বিশ্বিত ইতি কেবল মধুরনরলীলাবেশাদিতি সিদ্ধান্তিতমেব। শ্রীকৃষ্ণপ্রেটমব হি সর্কোংকর্ষহেতু ন সম্পদাদ্য ইতি। ভদপেকা চেত্তেহপি হি দর্শন্তিয়ন্ত ইতি ভাবং॥৮॥

তে তাদৃশ তরিতাপরিকরা অপি প্রেমবিশেষেণ গোপা: কেবল তথাস্কবগোপতাভিমানিন: অত ঔৎস্কাধিয়: লোকপালমাত্রস্য তাদৃশং লোকাদিবৈভবং অফ বাম্মনীয় রূপস্যাপ্যধীম্বরস্য কীদৃশং স্যাৎ ইত্যুৎক্সিতিধিয়: অভ: স্বগতিশব্দেনাত্র প্রস্থানমিত্যেব

#### ক্রমসন্তর্ভঃ।

বিস্মিত ইতি কেবলমধুরনরলীলাবেশাদিতি সিদ্ধান্তিতং নন্দল্পিত্যাদিনা ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১ • ॥

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবন্ধী।

আগাদিতি সুর্য্যোদয়াৎ পূর্ব্বমেবেতি জেরং॥ १॥

অতীক্রিরং অতিচমৎকার বৃত্তি ইক্রিরাণি ষততাং মহোদরং মহৈশ্ব্যাং তেযাং লোকপালানাং অত্রবীদিতি ছাদশীমধ্য এব পারণং কুরা আন্থান্যাং উপবেশ্যের ইতি জ্ঞেরং ৮৮॥

ঔৎস্কাযুক্তা ধীর্ষেষাং তে স্বগতিং স্বোপাসকানাং গতিং ক্সাং মারাতীতাং ব্রহ্মানস্বরূপাং বৈকুঠপ্রাপ্তিরূপাঞ্চ। উপাধাস্যৎ উপ-ধাস্যতি নোপধাস্যতি নোহম্মান্ প্রাপয়িষ্যতে ভো বন্ধরাল ছয়ৈব পূর্বং পর্গোক্ত্যা অক্ত নারায়ণসাম্যমূকং নতু নারায়ণহং। সম্প্রকি তু বরণপ্ততাঃ সাক্ষাদৃষ্টরা বদি নারারণহুমেব 'নিশ্বাররদি তদা বন্ধুনাম্মাকং সাংসারিকানামপ্যবক্তমেব মনোরথমহং প্রিয়িজ্যব

হে গোবিন্দ! হে পিতৃবৎসল! আপনকার এই পিতাকে লইরা যাউন। শুকদেব কহিলেন, অথি-লেখর ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ এই প্রকারে প্রসাদিত হইয়া আপনার পিতাকে লইয়া গেলেন এবং বন্ধুদিগের আফলাদ উৎপাদন করিলেন॥ ৭॥

লোকপাল বৰুণের অদৃষ্ট পূর্বে ঐশ্বর্য এবং শ্রীকৃষ্ণের প্রতি ভাহাদিগের সম্যক্ নমক্রিয়া অবলো-কন.করিয়া নন্দ বিশ্বিত হইয়া জ্ঞাতিগণ সন্নিধানে আসিয়া ঐ সকল বৃত্তান্ত বলিলেন ॥ ৮॥ হে রাজন্! সেই সকল গোপও শ্রীকৃষ্ণকে ঈশ্বর মানিয়া উৎস্কৃচিতে চিন্তা করিতে লাগিলেন ইতি স্বানাং স জগবান্ বিজ্ঞায়াখিলদৃক্ স্বয়ং। সকলসিদ্ধান্নে তেবাং কুলাইছতদচিন্তরং ॥ ১০ ॥ জনো বৈ লোক এতিম্মিবিদ্যাকামকর্মভিঃ। উচ্চাবচান্ন গতিমুন বেদ স্বাং গতিং অমন্॥ ১১ ॥

### **डी** धत्रवामी

ইত্যেবং ভূতং বানাং বেষাং সংকল্প অধিলদৃক্ সর্বজ্ঞ:,সমমেৰ বিজ্ঞান তেষাং সমলসিদ্ধরে বন্ধামাণমিদমচিভারং ॥ ১০ ॥ অবিদ্যা দেহাদ্যহংবৃদ্ধি: তত্ত: কাম: তত্তং কর্ম তৈঃ উচ্চাব্চাত্ম স্থ্রতির্বাগাদিব্ ভ্রমন্ স্বীয়াং গতিং ন বেদ ॥ ১১ ॥

### देवकवरकावनी।

ব্ৰহ্মাখ্যা। ক্ল্মামিত্যনেন চ ন সা প্ৰোচাতে। স্থাতিমিতাসৈয়ে বিশেষণাছেন প্ৰতীতে: শস্বুদ্ধিকৰ্মণাং বিরম্য ব্যাপারাভাব ইতি ন্যায়বিরোধাদলৈয়ে প্নরার্ত্তিক ন স্যাদিতি ক্লাং ছক্লেরাং তদেবমেবাং তাদৃশস্থাতিদিদৃক্ষা চ তৎপ্রেটেয়ব। অধীখরতাজ্ঞানে ২পি স্বাভাবিকপ্রতাদিবিজ্ঞানামূপ্যদাং ॥ ৯॥

স্থানাং জাতীনাং। সমজাতিধনাথ্যায়ামিতি শক্ষতে:। ইতি জীক্ষত তথৈব তৎপ্রেমময়াভিমানং দর্শরতি স ব্রুজনাধিলমনো-র্পপরিপ্রণে ব্যগ্রঃ। স্বর্মিতি তৈর্শজ্ঞাদিনা সাক্ষাদ্বিজ্ঞাপিত্যপি স্বর্মেব বিজ্ঞায়॥ ১০॥

জন ইত্যত্র বাং বীরাং গতিং বরপমিত্যুচাতে চেৎ পূর্বোক্তবগতিমিত্যক্রাহ্বাদে। ন ক্রাৎ ব্যবরণং জ্ঞানমিতি পক্ষেচ বশবেনাত্র নাঝোচাতে তত্র তত্ত্ব নপুংসক্ষাৎ গতিশবেন জ্ঞানং নোচাতে বেদেতানেন পৌনক্ষক্তাাৎ। তথাচকত্বে হি বং ন বেদেত্যেবাচক্যত সংক্রসিদ্ধরে তেবামিত্যুক্তাচ্চ ন তদর্থতা ঘটতে। নক্ষতীক্রিরং দৃষ্ট্ব ইত্যত্র হি তেবাং লোকপালক্ত লোক্ষদিমহোদয়স্য তথাপি ক্রক্তে সরতেক্ত প্রবণেন তল্লোকাদিমহোদরদর্শনক্ত বিবক্ষিত্যাৎ। বগৃতিং ক্ষাং ইত্যত্রচ হরোঃ সামানাধিকরণামেবাবগ্রাতে।

#### ক্ৰমসন্দৰ্ভ:।

ৰৰা জনো এজবাসী মদীরত্বজনোহরং। এতত্মিন্ সম্প্রতি তাবতারাদীক্কতে লোকে প্রাণঞ্চিকে। অবিদাা মলীলাবেশেনানানত্ব-সন্ধানং। কাম: মহিবরকবিচিঅমনোরথ: কর্ম দদীরাত্মকুলা জিরা। নাবিন্দন্ ভববেদনাং। বদ্ধান্ত্বিত্তবিদ্ধান্ত্রেরিদ্দর্শনাৎ তৈক্ষজাবচাত্ম নানাবিধাত্ম গতিষু প্রেমজবেষু ত্বাং গতিং অনাদিসিদ্ধাং পরমগোলোকাদিবৈভবন্ধণাং ক্রমন্ বিত্মরন্ তামেব ত্বগতিং

#### वीवियनाथहळ्कवर्जा ।

যতক্ষৰ পূত্ৰ এব মম ত্ৰাতৃপুত্ৰ:। অত ভগিনীপুত্ৰোহ্স্য দৌহিতঃ প্ৰমেশবোহ্যমন্ত্ৰিছেত বহং বিজ্ঞান এবায়মপ্যশাৰাসক্ষতি ভঙো পোণাঃ প্ৰমেশবাদৰাৎ অঅবাজনীবং যথেষ্টং গৃহীতেভূকে কেচিলাছৰ হং মুক্তা এব বৃভ্বাম ইভান্যে বন্ধঃ বৈকুঠবাদিন এব বৃভ্বামেতি পৃথক্ পৃথক্ বিবিধমতয়ে বিবিধসকলবক্তা বভূব্ ন তু যুবাং ন নঃ হতে সাক্ষাং প্ৰধানপুক্ষেশবাবিভি ভত্তে গভোহম্মানগদা পদা-রবিশ্বমিতি সংখতি মভা প্রসভং যত্তক্ষিত্যাত্মক্তিমত্তো বহুদ্বেৰাৰ্জ্নাদল ইব ঐশব্যজ্ঞানোপনাগাং স্কৃষ্থনৈথিলাবজ্ঞা বভূব্-বিভার্থ: ॥ ৯ ॥

ইত্যেবজ্ঞঃ স্থানাং জাতীনাং সভনং বিজ্ঞান স্থান্ত অধিবাং ব্ৰহাত্তবং স্থাং বৈতৃষ্ঠবাসমূপং ব্ৰজ্জনিপ্ৰেমম্পঞ্চ পদাভি জানা-তীভাধিবদৃক্। স্পরিকরপ্রেমতারতম্যেন তংসানিধ্য ঐপর্যাবরণভারতম্যবন্ধেংলি ভুলানীং লীলালজ্ঞিপ্রেমণশাদের সম্পূর্ব-সর্প্পজ্জাদরাং। গোপানাং তেবাভ তংগ্রেমমাধুর্যক্ষিকরাণি ব্রহ্মস্থাবেন্দ্রিক্তিম্পানিটীনীকৃত্যেংশি তেবাং নরলীল্যেন স্থানাং সঞ্জাসিদ্ধরে তংস্থ্যিতং ব্রহ্মস্থাং বৈতৃষ্ঠ্যুথঞ্চ ভানজ্জাব্দিয়ান্তিজ্বং ॥ ১০ ॥

লদঃ প্ৰস্তুত্বাস্থাপি বিজ্ঞানী এত সিন্তুৰ্গতিক স্বিদ্যা সাম্বরপ্রানং ততঃ ক্ষান্তঃ কর্ম তত উল্লোচাল্ প্তিযু বরপানিবেৰলোকগতর্বৈশ্বন্যানীয় ভূপে কিগতনত্ব্যতিব্যগানিতঃপানৈশ্বামনীয় চ চ্টান্ত শ্রমন্ নরলীলভাবের স্বেষং সাংসারিক্ত্
বুলা শ্রমং প্রাপ্তবন্ধাং গভিং সইর্জনি ছর্লভাং বর্জনানাং স্বপদ্বীং ন বেদ। বদ্বং মংশিকা বরুবলোকং প্রত্তপ্রভ্যাং মানিকীবের
সম্পাধং চ্ট্রা নিশিবইব্স্প্রসায়মণি বুলাবনং ত্রাদিপি ন্নেং মন্তে। বধা স্বঃ ক্তিং কৃতিবস্কানা আকারতেলঃসোচিবভ্ট্যা
স্বত্যংকারো বাজবাদ্বাস্কাং ততো ন্নাং বেভি। অধৈন প্রশ্নিক্ত্রতিচরপ্রেগ্নপালনো বরাক্ষ্ত্রভাগি নিজ্ঞানের বন্ধান্ত।
বাল্ ক্রমণ্ড ক্ষামানিস্তাক প্রস্তান্ত্র ক্ষান্ত্র ক্ষান্ত ক্রমণ্ড।

সর্বজ্ঞ ভগবান জ্ঞাতিদিগের সংকল সিজির নিমিত কুপাবণতঃ চিন্তা করিতে লাগ্নিদেন । ১০.॥ ইহ লোকে জীব সকল অবিদ্যা (বেহাবিতে অহং বৃদ্ধি) এবং কাম কর্ম বারা দেব ও তির্যাপাদি

# ইজি সংচিন্ত্য ভগবান্ মহাকারুণিকো বিভূ:। দর্শয়াশাস স্বং লোকং গোপানাং ভ্রমসঃ পরং॥১২

खीरत्यांगी।

খং ব্রহ্মস্বরূপং লোকঞ্চ বৈকুষ্ঠাব্যং তমসঃ প্রকৃতেঃ পরং । ১২ ।।

### देवकवरकावनी।

স্কাং হজেরাং। তথাক্ষনশবেনাপি ন প্রাক্তজন উচ্যতে। তেবাং সংসার এব গতি ন জ্লোকাদিরিতি। যদি চ স এবাচ্যতে তর্হি সর্বাসাপি তস্ত তথা কুপাপ্রাপ্তিপ্রসক্ষঃ আং। কিন্তু তচ্ছবেন তদীয়খজন এব উচ্যতে। তর্হি সর্বাসাপি তস্য তথা কুপাপ্রাপ্তিপ্রসক্ষঃ স্যাৎ সালোক্যসাস্থিত্যাদি পদ্যে জনা ইতিবং। অত্র তু প্রস্তাববলাং ব্রজবাসিজন এবোচ্যতে অস্ত হি তদীয়পরমন্ত্রনত্বং স্বাহ্ন নির্মান্তর বিভাবিতং। তথা মানুহাক্রনত্বং গোষ্ঠং মরাপং মৎপরিপ্রহং। গোপায়ে স্বাহ্মযোগেন সোহয়ং মে ব্রত আহিত ইতি। উক্তে চ তদীয়স্বজনে ত্যা অবিদ্যাদিময়োচাবচগতেঃ সিদ্ধান্তর প্রস্তাস্বাস্থিত প্রত্তমন্বার্থ:। জনো ব্রজবাসিলকণো মদীয়স্বজনসমূহোহয়নবিদ্যাদিতি হৈ কুভি বা উচ্চাব্দা গতরো দেবতির্য্যাদয়ন্তাস্থিতি ক্রমন্ তরির্জিশের তরা জানন্ তামের স্বাং গতিং লমন্ জানাভ্যাহে কট্রিতি। বন্মার্য্যাবেশেন জ্ঞানাংশাবরণাদিতি ভাবং। যহা। জনো ব্রজবাসী মদীয়স্বজনোহয়ং এতিমিন্ স্প্রতি স্বাব্যায়ালীয়তে লোকে প্রাপঞ্জিক অবিদ্যামন্ত্রীলাবেশাদ্যানম্পন্তান:। কামং মহিবয়বিচিত্রমনোরথং। কর্ম মদীয়ান্ত্রক্রাস্থানিকান ভাবিকন্ ভববেদনাং বন্ধনার্থ স্থাগতিং আনাদিসিকাং পরমগোলোকাদিবৈভবরূপাং ল্রমন্ বিশ্বরন্ তামের স্বাং গতিং ন বেদ ন জানাতীত্যর্থ:। অবিদ্যাদিশক্ষেনাগাদানঞ্চ ক্রেগ্য জ্বাহ্বাহ্বাধ্বাধিনাহিতে লাকে লাক্রিকান্তর লাগে লাক্রিকান্তর লাগেনাহিতে লাক্রিকান্তর লাগিলাহিত্র লগেং ল্রমন্ বিশ্বরন্ তামের স্বাং গতিং ন বেদ ন জানাতীত্যর্থ:। অবিদ্যাদিশক্ষেনাগাদানঞ্চ ক্রেগ্য জ্বাহিত্যক্রপাং ল্রমন্ বিশ্বরন্ তামের স্বাং গতিং ন বেদ ন জানাতীত্যর্থ:। অবিদ্যাদিশক্ষেনাগাদানঞ্চ ক্রিকার্যক্রতাম্বাপেনাহিতেকালাকের # >> ॥

গোপানাং সমন্ধি স্বং লোকং এগোলোকমিত্যর্থঃ। তত্ত প্রকৃতিবিকারেছভিব্যক্তক্ষমপি নিষেধতি তমসং পরমিতি। কাহং তম-

### क्रममन्छः।

ন বেদ ন জানাতীত্যর্থ:। অত্যেদ্ধং বিবেচনীয়ং। অত্য স্থাপেন স্বরূপং নোচ্যতে। তত্ত তস্য মপুংসকতাৎ গতিশবেন চ জানং নোচ্যতে বদেত্যনেন পৌনরুক্ত্যাৎ তথাচকত্ত্ব হি স্থং ন বেদেত্যেব বক্ষাতে। সঙ্করসিদ্ধরে তেথামিত্যুক্তথান্ত ন তদর্থতা ঘটতে। নদম্ভতীন্দ্রিয়ং দৃষ্টেত্যত্ত হি তেথাং লোকপালস্য লোকপালাদিমহোদয়স্য তথাপি ক্লক্ষে সন্নতেশ্চ শ্রবণেন তল্লোকাদিমহোদয়দর্শ-

#### শ্ৰীবিখনাপচক্ৰবন্তা।

তথৈব নিতামাখাল্যমান মহামাধুর্যায়বিষয়কপুঞালিভাবময় প্রেমবতোহিপি মুক্তিবৈকুণ্ঠলোকাবধিকো নুমনাতে তৌ থলু দদ্দীনাবে
নতু তয়েররহমণীনঃ কেনচিং কচিদ্ইঃ প্রেমন্ত্রমণীন এব সর্কৈর্ভ্রমান এবাসীত্যপি বিবেকং ন ভলতে। কিঞ্চ। মুক্তেন থলু রক্ত্রেন
বাখালতে। তচ্চ ব্রহ্ম বদ্য প্রভাপভবত ইতাত্র তনু স্ন নিকলমনশ্বমিতি ব্রহ্মগহিতোক্তের্ক্রপে। হি প্রতিষ্ঠাহিমিতি মহক্তেম দীরং
মহিমানঞ্চ পরব্রেক্তি শক্তিমতি মদংশমৎসাদেবোকেণ্চ মদীরং নির্কিশেবং ব্যাপক্ষতীক্রিয়ং জ্যোতিরেব সোহহুনের বস্য প্রেমকরণকাবাদবিষ্মীভূতমাধুর্যঃ পুত্রানিরপত্রা সদা বর্ত্তে এব তথা আহো মধুপুরী ধন্যা বৈকুষ্ঠাচে গরীয়গীতি পালোকেম প্রামন্তন
করণকাবাদবিষ্মীভূতমাধুর্যঃ পুত্রানিরপত্রা সদা বর্ত্ত এব নচ মহাপ্রদরহুপ্যায় কাচিং ক্লতি ভূগোলচক্রে মধুপুরী
ভবাব তালাং মধ্যে সাক্ষান্ত স্নোণালপুরী দ্লীতি যথা সরসি পল্পং তিষ্ঠতি তথা ভূম্যামিতি গোশালভাগনীক্রতেঃ। প্রাকৃতে প্রনার প্রাপ্তের ব্যক্তং গতে পুরা । শিক্তে ব্রহ্মানবাক্যাচে। তদপি মুক্তিবৈকুষ্ঠলোকাণ্টচরছাদেব ব্রহ্মং শৃহ্মতি তদেনং
তৌ সম্প্রতি সাক্ষান্তপলন্তরামীতি ভাবং প্রাদ্ধানির কাসমান্তাতিগংকরে। ব্রহ্মানদাণ্টচরছাদেব ব্রহ্মং শৃহ্মতি তদেনং
তৌ সম্প্রতি সাক্ষান্তপলন্তরামীতি ভাবং প্রাদ্ধানির ক্র্যাণ্টানং ন ঘটতে। ব্রহ্মানিনা নক্ষানেং ক্রম্থে পুরাদিভাববতো নিতাসিক্ষানেংকানিক্রের ইতি। কচ মুক্তিবৈকুষ্ঠিভ্রোরপি দাস্যমান্ত্রং ক্র্যে ক্রমিনানিনামুত ভবান্ কিং মিবরাত্তিতি ব্রদ্ধাক্রেরেক্ত্যপিলং প্রনাবধান্তে স্বুক্তিকং ব্যাণ্টাতং জুইবাং । ১১ ।

ইতি সংচিত্তা স নিত্যাম্পদশ্য শ্রীর্নাবন্দা মুর্নোওকর্ম বৃদ্ধান্তভাৰনীকে সাল্পান্ত আনানীকৈ বিচার্য ক্ষান্তভাৰনীক নানাবিধ যোনিজে জ্বান্ত করে কিন্ত তাহারা আপনাদের গতি জানিতে পাত্রে নালা ১৮৯ জানিক নানাবিধ যোনিজে বিজু জারান্ এই রূপ চিত্তা করিয়া গোপ্রিগতেক প্রকৃতির পার বেংজ্বান্ত্র সত্যং জ্ঞানমনস্তং যদ্ধ কা জ্যোতিঃ সনাতনং। যদ্ধি পশুস্তি মুনায়ো গুণাপারে সমাহিতাঃ॥ ১০॥ তেতু ব্রক্ষব্রদং নীতা মগ্রাঃ কৃষ্ণেন চোদ্ধৃতাঃ। দদৃশু ব্রক্ষণো রূপং যত্তাক্রাইধ্যগাৎ পুরা।

#### श्रीधतचायो ।

দেহাদিপিহিতানাং তদর্শনমশক্যমিতি প্রথমং দেহাদিব্যতিরিক্তং ব্হমন্তরপং দর্শরামাস তদাহ সত্যমিতি। সত্যমবাধ্যং ক্সানমকড়ং অনস্তমপরিচ্ছিন্নং ক্যোতিঃ স্বপ্রকাশং সনাতনং শবংসিদ্ধ গুণাপারে গুণাপোহে জানিনো যৎ পশ্চম্ভি তৎকুপরৈব দর্শরামাস ॥ ১৩ ॥ এবং ব্রহ্মহুদং প্রস্ক এব হুদ ইব হুদঃ গুল্ল মগ্রস্ক বিশেষজ্ঞানাভাবাৎ। তংব্রদ্ধাহুদং তে তু নীতাঃ প্রাণিতাঃ তদ্মিন্ মগ্রাশ্চতুঃ-

#### रेवकवरकावनी।

ইত্যাদৌ তম:শব্দেন প্রকৃতিনির্দেশাং। বিভূরিতি তস্য তাদৃশবৈভবস্য সদা সর্বাত্ত সিদ্ধাদিত্যর্থ:॥ ১২॥
নমু তমস: পরং কিং নাম ৰশ্বিত্যপেকারাং তত্তাবং সামাগ্রতো নির্পয়তি সত্যমিতি॥ ১০॥

৫০
অথ বিশেষতোহপি তল্লিরপয়ংভাদৃশং তদ্শনিমাহ তে খিতি। ত্রক্ষ পুর্বোক্তপ্রকৃত্যনভিব্যক্তং প্রকাশং বং তদেব ছ্রবগাহখাদিন।

#### ক্রমসন্ত:।

নস্য বিবক্ষিতথাৎ স্বগতিং স্ক্রামিত্যতা চ হবোঃ সামানাধিকরণামেবাবগমাতে স্ক্রাং ছপ্তেরাং তত্মাজ্ঞনশব্দেনাপি ন প্রাক্তভা জনএব উচ্যতে। তেবাং সংসার এব গতিঃ নতু ভল্লোকাদিরিতি। কিন্তু ভচ্ছবেদ ভাগবতো জন উচ্যতে। সালোক্যসাহী-ভ্যাদিপদ্যে জনা ইতিবং। উক্তঞ্চ ভাগবতে। জনে তস্যাবিদ্যাদিময়োচ্চাব্চগতেরসিদ্ধান্তভাত্তক এবার্থঃ সমঞ্জসং॥

অত্যাবিদ্যাদিশস্ব প্রয়োগস্ত কারুণাতো নির্ফোনাদেবেতি জ্ঞেয়ং। গ্রোপানাং সম্বন্ধি স্বলোকং তস্য প্রকৃতিময়ন্তং নিবেধতি তম্স ইতি ॥ ১২ ॥

নমু তমস: পর: কিং নাম বন্ধিত্যপেক্ষারাং তত্তাবং সামান্যতো নিরপরতি সত্যমিতি 🛭 ১০ 🖡 🔒

অথ বিশেবতোহপি তল্লিরুপমং তাদৃশং তদ্শনিমাহ তে বিতি। এক প্রেজিদামান্যাকারাৎ। নীতা অহুসদ্ধাণিতা মধাজনাতা-কুতবং গতাঃ অনন্তরমুদ্ধ্তাঃ বিশেষাকারতংক্র্যাপ্যংক্ষিতাঃ সন্তো দৃদ্তঃ। একাণ ইত্যাদি বত্র প্রকৃতেঃ পরেহিত্য অকুরেহিপাধ্যগাং

### **बी**विश्वनाथहक्तवर्षी ।

লোকঞ বৈকুঠাপ্যং দৰ্শবামাস। বুলাবনাদিবোল্য পঞ্চবান্ কণান্ তে এব প্রাপঘামাসেতি ভাব:। যতো মহাকাফণিক: বাতিরে-কেন্টো বুলাবনস্য মাধুর্য্যং তাভ্যামপুণে কুটং জ্ঞাপরিভূমিতি ভাব:। নহু বক্ষদর্শনৈব অক্ষপ্রাপণ।। বৈব সাযুল্যমুক্তিতেবাং ততো নিক্ষমণাসম্ভবাং। কথং তেষাং পুনর্লাবনীয়মাধুর্য্যহন্ত্রাবনা ইত্যত আহ বিভূ: সাযুল্যমোক্ষাং বৈকুঠান্ত নিক্ষমিয় পুমপি সমর্থ-ইত্যথ:। অং লোকঞ বিশিন্তি। ভমস: প্রকৃতে: পরং । ১২ ।

সভ্যমবাধ্যং জ্ঞানমন্ত্ৰস্থান স্তমপ্রিছিল্লং স্নাভনং শ্বংসিদ্ধং। যং মুনরো জ্ঞানিনঃ গুণাপারে গুণাতীতত্বে সভি পণ্যক্তি। বৃন্ধান্দ্রাপি ব্রন্ধাননাপি ব্রন্ধাননাপ্র কিন্তাল্য কিছে। বাবালিক পারাবিভ্তিমধ্যবর্তি কেনে মাধ্যাধিকাং। যথা দীপরোতিবত্বনামধ্যবর্তি কেন। অতএব ভ্রমণ পরং নতু ভ্রেমামধ্যবর্তি সভ্রানাদির পং ক্যোতিদ শ্রামান। কিঞ্। ব্রন্ধস্বনুপতোহণি বিচিত্রলীলাময়ং ভগবংশ্বরপমতিমধুরং গুক্দোবাদিভ কাল্যারামাল্ভবাদবদীরতে। ভক্ত ভগবহপুং সর্ক্রাপক্ষণি পরিছিলং বঙ্গ্ কার্মহিত্যপ্রাক্ত ক্যাতিছবৃদ্ধানিসহিতং ভরক্ষাদিলোবশ্নানিপ ক্ষ্পিপাদার স্বেলভর্নের শাবনমণি ব্রন্ধ্রাধিক শ্ববাভাদিবহিত্যতর্ক্যান অপক্রিদেব যথা ভবৈব
পঞ্রোক্ষান্দ্র বনং মে দেহর পক্ষিতি ভগবলুক্তের শাবনমণি ব্রন্ধ্রাই বিগতিষ্ট্তর স্থাত্ব বিগতবৃত্তি ক্রেমাণ্ড ইভ্যাগমাদিবাক্যাৎ ভর্মাদিদোব্রহিত্যশি ক্থিপিগানা ক্যাক্রাছেদভেদাদিমল্ল্যপভ্রগনগাদিক্ষিণি নিভ্যমেবেভানস্ক্রমংকারাশ্রমিতি ॥ ১৩ য়

এবং ব্রম্বাহণ ব্রম্বের এল ইব এলভার নিময়দ্য বিশেষজ্ঞানাভাষাৎ তং ব্রম্বাদনে। নীভাং প্রাণিভাং তদা তে ত্মিন্ এবং বৈক্তাখ্য লোক, তাহা দুর্শন করাইলেন ॥ ১২.॥

দেহাবিছির ব্যক্তিদিগের তদর্শন স্থপাধা নয় একারণ প্রথমে অবড় অপরিচ্ছির,নিগুণ এবং স্নাতন যে একা, মুনিশ্বৰ গুণাপায়ে সুমাহিত হইয়া মাহা দুর্শন করেন তাহাই প্রদর্শন করিলেন ॥ ১৩॥

ट्र त्राक्नन् ! प्राक्त् प्रदर्श त्युवादन विज्ञा खन्ना कर्तिशाष्ट्रितन, नमानि लाभगव प्राप्ट खन्न-

## নন্দাদয়স্ত তং দৃষ্ট্বা পরমানন্দনির্বতাঃ। কৃষ্ণঞ্চ তত্র চ্ছন্দোভিঃ স্তৃয়মানং স্থবিস্মিতাঃ॥ ১৪॥

### वीशत्रवामी ।

শব্দোক্তং বিশেষমাহ পুনঃ ক্লফেনোজ্তাঃ সমাধেরিবোখাপিতাঃ সন্তঃ এক্ষণস্তকৈব লোকং হৈকুঠাথাং দদ্শুরিতি। নমু ত্রন্ধণি মগ্নানাং পুনর্বোকদর্শনমন্তিতমিত্যাশ্যেনাহ যত্রেতি। যত্র শীক্ষকে নিমিত্তে সতি পূর্কমক্রোহ্ধাগাৎ দৃষ্টবান্। শুক্পরীক্ষিৎসন্ধাদাৎ প্রাক্ত-

### देवक वटलावनी।

হদ ইব হদতং নীতাঃ স্বশক্তা তদস্সদানং গমিতান্তত এব তে ময়ঃ তয়াত্রাক্তবাবস্থামপি প্রাপ্তাঃ পুনন্তমাদণি তেনোদ্ভাঃ প্রথমন্তাং সামান্যাকারতংক্ বিমতিক্রম্য স্বরূপশক্তাভিব্যক্তবিশেষকারতংক্ ব্যাপ্তংক্রিতাঃ সন্তো ব্রহ্মণো নরাকৃতিপরব্রহ্মণত্তগার লোকং দদৃভঃ চক্ষ্বাপি সাক্ষাংকৃতবন্ধঃ ন চাশ্রুতচরমেতদিত্যাহ বত্র প্রকাশেংকু রোহণি অধ্যাগং বৈকুঠলোকং দৃইবান্ তং অতবান্ বা। , ছিতীরে চ তকৈ স্বলোকং ভগবান্ সভাজিতঃ সন্দ্র্রামাস পরং ন বং পরং। ব্যণেতসংক্রেশবিমাহসাধ্বসং স্বদৃইবন্তিঃ পৃষ্ঠবেরতিই তং। প্রবর্তত যত্র রক্তমন্তরোঃ সব্ধ মিশ্রং নচ কালবিক্রমঃ। ন যত্র মারা কিম্তাপরে হরেরিত্যাদি তয়ামিশ্রং রক্তমঃ সহচরং প্রাক্তসন্মত্রে । ইতিহাসদম্ভরে মুলালোপাধ্যানে ব্রহ্মণঃ সদনাদৃদ্ধং তরিফোঃ পরমং পদং। ভন্ধং সনাতনং জ্যোতিঃ পরং বন্ধেতি তহিছেরিতি। জন্মান্ধং আর্তিরহিতে দেশ ইত্যর্থঃ। শ্রীনারদপঞ্চরাত্রে। জিতত্তে তোত্রে। লোকং বৈকুঠনামানং দিবাং বড় গুণসংবৃত্তং। অবৈক্ষবানামপ্রাপ্যং গুণতার্রবিবর্জিতমিতি। ব্রহ্মাগুপুরাণে। তমনস্বন্ধণাবাসং মহতেকো ত্রাসদং। অপ্রত্যক্ষং নিক্ষপমং পরানন্দমতীক্রিরমিতি। প্রত্যক্ষত পরেণ নাকং নিহিতং গুহারাং বিদ্রান্ধতে যদ্পতরো বিশ্বতীত্তাদ্যাঃ। অথবা ব্রহ্মহমক্র্রতীর্থং নীতান্তরীর্থমহিমজ্ঞাপনার কোতৃকার বা প্রাণিতাঃ। ততত্তংপ্রের্গরা ময়াঃ পুনন্তেনের তন্মাত্রদ্ধ তা উথাপিতা দদৃতঃ শ্রীবৃন্ধাবনমের বিলক্ষণদেবনাপ্যশ্রেরিত্যাদি। যত্র তীর্থে। তদেবং সর্বপ্রমাণচ্ডামণিনা শ্রীমন্তাগবতেন প্রোক্তেনাত্র প্রসিদ্ধানার্দির ক্রমব্যাধ্যানান্তন পরত্র ব্যবহিতযোজনা চাপততীতি গম্যং।

তথাপ্যক্রতঃ শ্রীমন্ত্রনানীং দর্শনবৈশিষ্ট্যবদানন্দবৈশিষ্ট্যমণি জাতমিত্যাছ নন্দেতি। তং তেবামের সম্বন্ধিনং শ্রিরুক্তনোকং অতঃ স্বভাবতঃ এব প্রমানন্দনির্ভা বভূর্ঃ। কৃষ্ণকৈতি ভথাপ্যব্যতিচারিপুদ্রভাববতো বিদ্মিতাণ্ট বভূর্রিতি। ছলোভিঃ কর্ভূতৈঃ করণভূতৈর্বা উভয়ভূতিরের বা শ্রীগোপালভাপভাদিভিঃ। অত্র স্বগতিমিতি তৈঃ স্বান্ধস্য শ্রীকৃষ্ণকাভিপ্রায়েণৈবোক্তিঃ গতিশক্ষত চ বরণলোকদর্শনেন তল্লোকদর্শনাভিপ্রায়েণোক্তিঃ। তথাচ শ্রীকৃষ্ণেন চ স্বাং গতিমিতি শ্রীগোপসম্বন্ধিত। নির্দেশঃ শ্রীমূনী-জ্বেণ চ গোণানামিতি ষঠ্যা সাক্ষাদের তৎসম্বন্ধনির্দেশঃ। কৃষ্ণকৃতি সাক্ষাৎ শ্রীকৃষ্ণনির্দেশঃ বৈকৃষ্ঠান্তরং ব্যবজিদ্য পরমগোলোকমের স্থাপরত। অতএব অহ্যাপৃতং নিশিশ্রানমতিশ্রমণ লোকং বিকৃষ্ঠম্পনেব্যতি গোক্ষাং দ্বৈতি শ্রীব্রন্ধবাক্ষেইণি ব্রন্ধহদতাক্র রতীর্ধদপক্ষে। যদামার্থপ্রস্থান্তর্বায়েকর ইতি ভাষেন দিবলৈ তদেকার্থবাগার্যক্রং তৎপরিশ্রমণে রাত্রৌ চ তদেকসমাধিরপনিত্রাপন্নং। বিকৃষ্ঠং গোলোকাঝাং উপ সমীপে তবৈর দর্শবিষ্যভীত্যর্থঃ। স যথা ব্রন্ধসংহিতায়াং ঈশ্বরং পরমঃ কৃষ্ণঃ সচিদানন্দবিশ্রহঃ। অনাদিরাদির্দোণিবন্দঃ সর্ক্রারণকারণং। সহস্রপত্রং ক্মনং গোক্লাঝাং মহৎপদং। তৎকর্ণিকারং তদাম তদনস্বাংশসম্ভব্যিত্যাদি। তথাব্রে ব্রন্ধত্বর। চিন্তামণিপ্রক্রমণ্ডসন্ত্রম্বির্দি পালয়ন্তং। লক্ষ্মীগ্রন্থসন্ত্রমানানং গোবিন্ধমাদিপুক্রয় তমহং ভলামি।

### **अ**विश्वनाथककवर्ती।

মগা: ক্লেন উদ্ তা: সাতৰ্কাশক্তা ব্ৰুসাযুক্তাদিণি উদ্ তাজসাত্থাণিতা: সম্ভাব্যের ব্ৰুপণ্ লোকং বৈকুঠক দদ্ভ:। লোকং বিকুঠনগনেষ্তি গোকুলং শেতি বিতীরোকে:। উদ্ তা ইতি বধানো সংস্থারহদাত্দ্তা: সংখা ব্ৰহ্মসূত্ৰী তথৈবামী প্রোমবজা-গোগা: ব্ৰহ্মসূদ্যিদ্ তা বৈকুঠলোকং দদ্ভরিতি সর্ববনাশবত্যা: সাযুক্তা বিপদ্য সকাশাৎ বৈকুঠো নির্বৃতিকরঃ ইতি ভাষ:। প্রোমরহিতানু ক্ষম্পাত্তবাৎ প্রোম্বিতা বৈকুঠস্পাত্তবা শ্রেইভডোহণি প্রেম্মরো গোকুলম্পাত্তবা শ্রেই ইতি সিধারো আণিত:।
যত বৈকুঠে পুরা ক্ষ্রেরহিণ্যগাৎ গতবান্ স্বাহীটদেবং দুইবানিতি বা । শুক্পরীক্ষিৎস্থাদ্ধ প্রাক্তন্যমূত্নিক্ষেশ:॥

তং বৈক্ঠলোকং দুই। তু পর্মানকনির তাং। বৈক্ষারগোলোকর ব্লাবন্দ্য ব্লাবন্দ্য ব্লাবন্দ্য বিশ্বর ভাষা । যথাই কোনি ক্র ব্লাবন্দ্য বাদ্য বিশ্বর শ্রেষ্ট্র করিল। তদনন্তর শ্রেষ্ট্র তাহানিক প্রবিধ তাহাকে নিরীক্ষণ করিল। তাহানের বিশ্বর হর্ম, তাহার পর সকলে পরম আনক্ষে নির্ভিত্ত হিমা বিবিধ বেশবাক্ষে তাব করেন। ১৪।

### विश्वतामी।

নম্বাং ভৃতনিৰ্দেশঃ। নহুতকৈ ধৰ্ব্যে ভগৰতি কি কিদপাসস্তাবিতমিতি ভাবঃ। অথবা হকুরো বকু দৃটবান্ ভঞা বমুনা হুৰঞ একাছদ-

#### देवकवरकावनी।

গোলোকনাম্বি নিজধাম্বি তলে চ তত্ত দেবীমহেশহরিধামত্ব তেবু তেবু। তে তে প্রভাবনিচরা বিহিতাশ্চ যেন গোবিক্ষাদিপুক্ষং তমহং ভলামীতি। গোলোক এব নিবসভাথিশাত্মভূত ইত্যাদি চ। অত্তে চ। প্রিয়ং কান্তাং কান্তঃ পরমপুরুষ: করতরবো ক্রমা ভূমি-শ্চিস্তামণিগণমন্ত্রী ভোরমমূত্তং। কথা গানং নাঁটাং গমনমণি বংশী প্রিরদ্ধী চিদানন্দং জ্যোতিঃ প্রমণি তদাখাদ্যমণি চ। স্বত্ত ক্ষীনুষ্ঠিক: সরতি স্বর্জিভাশ্চ স্থমহারিষেবার্কাথ্যো বা ব্রন্ধতি নহি যতাপি সময়:। ভলে খেত্তবীপং ত্মহ্মিই গোলোক্ষিতি যং বিদ্তুত্তে সস্তঃ ক্ষিতিবিরলচরাঃ কতিপরে ইতি। এবং স্বান্দে মোক্ষধর্মদা নারাধণীরোপাধ্যানে চ। এবং বছবিধৈ রূপৈন্চরামীত বস্তুদ্ধরাং। ত্রন্ধ-লোকঞ্চ কৌত্তের গোলোকঞ্চ সনাতনমিতি। তথাচ হরিবংলে। বিধাহ শক্রঃ। স্বর্গাদৃদ্ধং ব্রন্ধলোকো ব্রদ্ধরিগণুদেবিতীঃ। ত্র সোমগতি শৈব জ্যোতিযাঞ্চ মহাত্মনাং। তস্যোপরি গ্রাং লোক: সাধ্যতিং পালয়তি ছি। সুহি সর্প্রণত: কুঞ্চ: মহাকাশগতো-ম হান্। উপযুগের ততাপি গভিত্তব তপোময়ী। যাং ন বিল্লোবয়ং সর্বের্গ পুত্রতেছিপি পিতামহং। গভি: সমদ্মাঢ্যানাং স্বর্গ: স্কৃতকর্মণাং। ব্রান্ধ্যে তপসি যুক্তানাং বন্ধালাক: পরা গতি:। গবামের তু গোলোকো ছরারোছা হি সা গতি:। সতু লোকস্বয়া ক্লফ সীনমানঃ ক্লতান্মনা। ধ্রতো ধৃতিমতা বীর নিমতোপজবান্ গ্রামিতি। অস্যার্থ:। স্বর্গন্দেন স্বর্লোক্মারন্ত্য সভালোকপর্যান্তং লোকপঞ্চক্ষ্টাতে "ভূৰ্লোক: কল্লিভ: পত্তাং ভূবৰ্লোকোহস্য নাভিভ:। খৰ্লোক: কল্লিভো মূৰ্দ্ধু । ইতি বা লোককল্পনা ইভি দিতীয়াং। তমাদুর্মমুপরি ব্রহ্মণোক: পরব্রমণো ভগবতো লোক:। দদুও ব্রমণোলোকমিত্যক্তরাং। এবং বিতীয়ে মুর্ছভি: সভ্যদোকস্ব ব্ৰহ্মলোক: সনাতন ইতি। ব্যাথাতক তৈ:। ব্ৰহ্মলোকো বৈকুঠাথা: সনাতনো নিত্য: নতু স্ব্যাপ্ৰপঞ্চান্তৰ্মভীত্যৰ্থ:। ব্ৰহ্মাণ মূর্ত্তিমক্ষোবেদাঃ অধরণত তীনারদাদ্য:। গণাশ্চ তীগরুড়বিষক্ষেনাদ্য: তৈনিবিবিত:। এবং নিত্যাপ্রিভাত্তরু। তলামনাধি-কাার্থ আহ তত্ত্র ব্রমদোকে উময়া সহ বর্তত ইতি সোম: শ্রীশিবশুক্ত গতি: জ্যোতিশ্চরণাভিধানাদিতি নাায়েন জ্যোতির ক্র তদৈকাঝাভাবানাং জ্ঞানিজীবন্মুজানামিত্যর্থ:। অত্র সমাস্থ্রবিষ্টস্যাপি গতিশব্দস্যাকর্ষ আর্ঘ:। সোমেতি ছাল্দস্ এব বা ষ্ঠা। <u>जनूक नज् जानृगानाभि पर्व्यवाः अत्रजाहि महाञ्चनाः महानद्रानाः साक्तिनाग्रज्ञा जन्नजाः वीपनकानिज्नाानाभिजार्थः। मुक्ता-</u> নামপি দিলানাং নারারণপরায়ণ:। তুত্রভ: প্রশান্তায়া কোটিবপি মহামুনে ইত্যাদৌ তেবেব মহতাপর্যবদানাং। তত চ ব্রহ্ম লোকভোপরি সর্কোর্ম প্রদেশে গবাং লোক ইতার্থ:। তং ত্রীগোলোকং সাধ্যা অত্মাকং প্রাপঞ্চিকদেবানাং প্রাপ্তবাসাযুদ্ধাম্পরপা নিত্যতলীয়দেবগণাঃ পালয়ন্তি তত্ৰ দিকপালছেনাবরণক্রপা বর্তত্তে। তেহ নাকং মহিমানঃ সচন্ত বত্র পূর্বের বেচ সাধাাঃ সন্তি বিখেদেব। ইতি শ্রুতেঃ। তত্র পুরের্ধ যে চ সাধ্যা বিধেদেবাঃ সনাতনাঃ। তেহ নাকং মহিমানঃ সচম্ব শুভদর্শনা ইতি বৈকুঠবর্ণনে পাছোত্তর-খণ্ডাক্ত। হি প্রসিদ্ধৌ স প্রীগোলোক: সর্বাগত: প্রীকৃষ্ণবং সর্বাপঞ্চিকাপ্রাপঞ্চিকসন্তব্যাপক: মত এব মহানু ভগবজ্ঞাপ এব। মহান্ত-মাখানং বিভূমিতি শ্রুতে:। তর হেতুম হাকাশ: প্রব্যোমাধ্যং ব্রহ্মবিশেষণ্যাভাং। আকাশস্তরিকাদিতি ন্যায় প্রবিদ্ধেশ্চ। তং কুত: ব্রহ্মাকারেদিয়ান তারং তৎপ্রাপ্তে:। বরা। মহাকাশ: পরবোমাথো মহাবৈকুষ্ঠাথা: তুলগত: তদুর্ছ ভাগস্থিত:। তলে চ তত **(मरीमारक्ष्यक्रियांमिषिकि अस्तरिक्छायां: उपर्श**तन बुरक्करमारकः। अवमूनय्तिषि त्रतालमातन उक शिर्णारनारकश्ल ভব গজিঃ। मानाबर्ट्यन देवकूश्वीरमी क्वीफ़छख छवानि खिरगाविसक्रत्य क्वीफ़ा विमाठ हें छार्थः। मा की नृमी তপোমনী অনব-क्किट्रेबचर्गमती। পরমং যো মহন্তপ ইতিবং অভএব ব্রহ্মাদি ছর্মিতর্ক্যত্বমণ্যাহ যানিতি। অর্থুনা তদ্য গোলোক ইত্যাথ্যা জীবমতি-ব্যশ্রমতি গতিরিতি ত্রান্মো ত্রন্মলোকপ্রাপকে তপসি বিফুবিষরকমন:প্রনিধানে যুক্তানাং রতচিতানাং প্রেমভক্ষানামিতার্থ:। ত্রন লোকো বৈক্ঠলোকঃ পরা প্রভাতীভা। প্রামিতি মোচরন্ এলপ্রাং দিনতাপমিত্যকাছদারেণ গোকুল্বাসিমাতাণাং প্রভত্তা-বানাঞ্চ সাধনবলেকেতার্থঃ। অতএব ভত্তাবস্থাস্পর্তত্বাৎ ছ্রারোহা ধুতো রক্ষিতঃ শ্রীগোবর্দ্ধনোদ্ধরণেনেত্রি। অত্যাধান্তবে সপ্তলো-

#### विविधार्थहक्तवर्थी।

খরাঃ ক্যাটিনই স্থাবনাঃ স্বেঃ দৈবাং কৃতিভ্তবধনতিলাঃ প্রধান-দানিব তাঃ তবতি তথেতাবং। ততকাসং প্রাণনোটনির্দাহনীয়-মুখাদবিদার্থকেইবিদ্ধান্তকাঃ কৈতি তল্বেধণাহসভানবজে বতি তক দন্তবিত্যহি ক্ষাং তত্তি জ্লোতিষ্ঠিষতি ত্যমানং মুহী স্থিমিতাঃ। হং হো কাগজাবতাবদেতে ক্যোতিষ্থাই ভাষকা অত বুনাবদে এইপাসিটাইমানাঃ প্রই, ম্যাভিবেশ ক্যাং কে

### व्यिधवयांगी।

ইতি নাম তং হুদং নীতাঃ মগ্রাশ্চ সম্বো এক্ষলোকং দদ্শঃ পুনঃ ক্ষেত্রনাক্তাঃ পূর্ববিৎ তং দৃষ্ট্র বিশ্বিতো বভূব্রিভি ব্যবহিতাৰরঃ। অপ্রসিদ্ধকলনাচ সোদ্বোভি ॥ ১৪ ॥

### दिकवरकावनी ।

কতা চেত্তি অর্গাদেবার্জং সত্যলোকো ন ভবতি মহয়ে কিদিব্যবধানাৎ তথা সোমগতিরিত্যাদিকং ন সম্ভবতি ঞ্বলোকাধতাদেব তদগতে:। অবর্সাধ্যগণানাং তৃদ্ধাথ। সত্যলোকপালনেহপ্যনহাঁথ। তথা প্রাক্তত্মালোকত সর্ধগতত্মং চাসম্ভাবাং। অভএছ ভ্রাপি তব গতিরিত্যপিশকোবিস্ময়ে প্রযুক্তঃ যাং নবিশ্ব ইত্যাদিকঞ্চ। তত্মাৎ প্রাক্তাদিত এবাসে গোলোকঃ। য এব প্তনান্দালাদে নির্মপিতঃ। য এব চ প্রাপঞ্চিকস্বার রুদ্ধাবনাদিরপেণ প্রপঞ্চেভিব্যক্তঃ সদা বিরাজতে। স্তু লোকত্মা বীর নিমতোপত্রবান্ গবাং। যুত ইত্যভেদেনোকত্মাং ভগবহদ্দিত্ত্যপক্তিময়েলেন তত্তৈকস্যাপ্যক্রোপ্যনন্ত্যপ্রকাশসামর্থাচে। বোগনার্বিভ্তিবর্ণনৈ যুগপথপ্রাতরাদিনানাসময়াদিবর্ণনময়েলেন তবৈব দারকায়া অপি দর্শিত্মিতি। গোলোকভার্ক্বলোকোপরিজনভাক মহিমদৃষ্ট্যপেক্ষয়াবির্ভাবাং। বস্ততম্ব স হি সর্ব্ধগত ইত্যেবোকং। অতো বারাহেহপ্যস্থামেব বৃন্দাটব্যাং প্রাপঞ্চিকস্বমানৈক অভ্যমাত্রৈশ্চাম্পৃষ্টা নিত্যসিদ্ধাং পৃথিব্যাপ্যক্রাতাঃ কদ্মদায়ে বর্ণাত্ত। যথা। ত্রোপি মহদাশ্চর্য্যং পশ্যন্তি পঞ্জিল নরাঃ। কালির-ছদপুর্বেণ কদ্মে মহিতো ক্রমঃ। শতশাধ্য বিশালাক্ষি প্রাং ক্রমভিগন্ধি চ। স চ দাদ্য মাসানি মনোক্তঃ ভ্রুত্মীভলঃ। পুলার্মতি বিশালাক্ষি প্রভাবরে বিতঃ। তদ্যের বর্তত ইত্যর্থঃ প্রভাসম্ভর প্রভাসরিত্যর্থঃ।

তত্রাশ্র্য্যং প্রবক্ষ্যামি তচ্চুণু বং বস্থরে। লভত্তে মহুকা: সিদ্ধিং মম কর্মপরায়ণা:। ত্যা তত্তোত্তরে পার্ষেংশোকরক: সিতপ্রভ:। বৈশাখন্ত তু মাস্যা শুক্লপক্ষ্যা বাদশী। স পুশতি চ মধ্যাকে মম ভক্তস্থাবহ:। ন কশ্চিদ্পি জানাতি বিনা ভাগবতং শুচিমিত্যাদি। আদিবারাহে চ। ফ্লফটীড়া সেতৃবন্ধং মহাপাতকনাশনং। বলভীং তত্ত্ব ক্রীড়ার্থং ক্লবা দেবো পদাধর: ১ গোপকৈ: সহিতত্তত ক্লণমেকং দিনে দিনে। তত্তৈব রমণার্থ হি নিত্যকাশং স গচ্ছতীতি। তবৈৰ গোলোক এব নিবসতাখিলাতাভূত ইতি নিয়ম: শ্রেরতে। স্কান্দে মথুরামাহান্ম্যে। ততো বৃন্দাবনং পুণাং বৃন্দাদেবীসমাল্লিতং। হরিণাধিষ্ঠিতং তচ্চ ব্রহ্মরুত্রাদিদেবিতমিতি চ শ্রন্নতে। বুছদেগীতমীরে চ। শ্রীকৃষ্ণবাক্যং। ইদং বুন্দাবনং রুমাং মুম ধানৈব কেবলং। ष्यव (र १ भनः १ किम्नाः कीरो नतामताः। (र दनश्वि ममाधिर्षः मृजाः राखि ममानतः। जब रा शां शकनाकः निदनश्वि ममानस्त। যোগিনাতা: ময়া নিত্যং মম দেবাপরায়ণা:। পঞ্যোজনমেবাত্তি বনং মে দেহরূপকং। কালিন্দীয়ং স্থ্যুমাধ্যা প্রমামূতবাহিনী। অত্র দেবাশ্চ ভূতানি বর্ত্তক্তে স্ক্লরপত:। সর্বদেবমরশ্চাহং ন তাজামি বনং কচিৎ। আবির্ভাবন্তিরোভাবো ভবেল্লেছত্র যুগে যুগে। তেজোময়মিদং রম্যং অদৃশ্যং চর্ম্মচকুষেতি। তত্মাৎ সদা প্রক্লতাবনভিব্যক্তে ত্রীরন্দাবনস্যপ্রকাশবিশেষে গোলোকাথ্যে যো নিত্যং তৈরেব নিত্যপরিকরৈ: সহ বিহরতি স এব প্রীকৃষ্ণ: প্রাপঞ্চিক নিজ্জক্তরুণয়া প্রাকৃতাভিব্যক্তেহশ্বিংস্তৎপ্রকাশে তৈরেব সহ কর্দা-চিত্যকীভবতি তত্তৎপরিকর্ত্বনিয়ম্স তৎপরিক্রত্তেনৈবোপাসনাশাস্ত্রাদি দর্শনাৎ। এবং বোড়শস্হশ্রবিবাহে 🕮 বস্থদেবাদি-वन्त्रमा एक व्यनकां कियान्क व्यकारमञ्जल व्यकां मास्यादन वाकी करिया। क्या नी नात्रमात्राय नी नाम किरादव व्यवस्वनामियात्रा তত্ত্ব তত্ত্ব প্রকাশে পুণগভিমানং পরম্পুরমন্তুসন্ধানঞ্চ সম্পাদয়তি যতো নিত্যসিদ্ধমণি তং নি**ত্তবৈভবাদিকং তদা তে<del>নাতুসন্দ্</del>ৰিরে। তদে**-ব্যবৈত্র স্থিতমন্ত্রৈর শ্রীবৃন্ধাবনস্য প্রকাশবিশেষং শ্রীগোলোকং দর্শব্যামাস। প্রকাশতেদেপ্যতেদেন তান্ বিনা নান্যাংশ্যান্তরক্রপরিক-রান্ দর্শযামাদ ছন্দদান্ত বহিরঞ্জমেব,। বন্দিজনদাধর্মাৎ। ছন্দোভি: ছতৈদ্র্শনকেদং প্রামাণ্যার্থমেবেভি সর্বাং শান্তং ॥ ১৪ ॥

### क्यम्बर्छः।

বৈকুঠং দৃষ্টবান্। ছন্দোভি: খ্রীগোপালভাপন্যাদিভি: । ১৪ ॥

### श्रीविधनाथठकवर्छी। .

তন্মধ্যবন্তী কৃষণাব্যস্থাননৈকান্ পিআদীন্ দৃষ্ট্ৰাপি বাল্যবিলাসং প্ৰপঞ্চয়ৰ সন্নিধন্তে নাপি ভূজাত্যাং নঃ কঠং বজে বয়সপি সন্নিধাত্যকাৰ বাত্ত্যকাৰ কাৰ্যস্থান কৰ্মনাবজাৰ জীবিষ্যভীজ্যেক বিষ্তান ক্ৰমেন্যভোজ্যকী জীবিষ্যভীজ্যেক বিষ্তান বিষয়ান্দ্ধানাজে সীলাশজিপ্ৰেয়িভয়া বোগসাগ্নীয়েৰ প্নর্ভাবনমানিনিয়ের ইভি শেষঃ। এতংগ্রাজ্যবার্মেরার্জ্য শ্রীমংপ্রভ্বীরে রপগোস্থানিচরণৈঃ তবমালায়ামুপ্লোজিতঃ। স চ প্লোকো বথা। লোকো ব্যায় কোহণি বৃজ্জিকীজো নাজি কালীজ্য আন্তান্ত্র কুলি বিষ্টানী কাৰ্যস্থানিক কাৰ্যকাৰ ক্ষান্ত কাৰ্যকাৰ কৰিছে কাৰ্যকাৰ ক্ষান্ত ক্ষান্ত কাৰ্যকাৰ ক্ষান্ত কাৰ্যকাৰ ক্ষান্ত কাৰ্যকাৰ ক্ষান্ত কাৰ্যকাৰ ক্ষান্ত কৰিছে ক্ষান্ত কৰা ক্ষান্ত কৰিছে ক্ষান্ত কৰা ক্ষান্ত ক্ষান্ত কৰা ক্ষান্ত কৰা ক্ষান্ত কাৰ্যকাৰ ক্ষান্ত কৰা ক্ষান

## শীমন্তাগৰতম্।

009

॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং দশমক্ষে নন্দনোকণমন্তাবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ২৮ ॥ # ॥

### ञी भत्रवामी ।

॥ • ॥ रेंजि नमस्य षडीविश्मः ॥ • ॥

## বৈষ্ণ বভোষণী।

॥ • ॥ टेठि औरवक्कवरकावनार चनमिन्धिकामहोविः नः ॥ • ॥

### क्रमम्बर्छः।

॥ + ॥ ইতি শ্রীজীবগোসামিকুতে ক্রমসন্দর্ভে ২টাবিংশ: ॥ + ॥

### এবিখনাগচক্রবর্তী।

॥ \* ॥ ইकि नात्रार्थनर्मिनााः इहिंगाः छक्षाद्रकाः। व्यक्षेतिः त्यां इति नगरम नक्षकः नकः नकः नकः । ॥ ॥

॥ #॥ ইতি দশমে অফীবিংশ ॥ #॥

**औवामताम्रागिकवार ॥** 

ভগবানপি তা রাজীঃ শারদোৎকুলমলিকাঃ। বীক্ষ্য রস্তুং মনশ্চক্রে যোগমায়ামুপাঞ্জিতঃ ॥ ১ ॥

### द्येथत्रवामी ।

উনতিংশে তুরাদার্থস্ক্তিপ্রত্যুক্তরো হরে:। গোপীতী-রাদদংরস্থে তদ্য চান্তর্জিকৌতুকং। ত্রন্ধানিকরসংরুচনপকন্দর্পদর্শন। ক্রান্তি শ্রীপতির্গোধীরাদমগুলমঞ্জিত:। নতুবিপরীতমিনং পরদারবিনোদেন কন্দর্পক্তেত্তপ্রতীতে মৈবং বোগমায়ামুপালিজ:। আত্মারামোহপ্ররীরমৎ দাক্ষান্ত্রশাল্পমন্ত্রণ আত্মারামোহপ্ররীরমৎ দাক্ষান্ত্রশাল্পমন্ত্রণ আত্মানার্বিজ্বনং কামক্রান্ত্রণ ক্রান্তর্গালিক ক্রান্তর্গালিক বিভাগ শুকারকথাপনেশন বিশেবতো নির্ভিপরেরং পঞ্চাধায়ীতি ব্যক্তীকরিয়াম:॥ • ॥

ভা রাত্রীরিভি যাতাহবলা ইডানেন প্রতিশ্রতা ইভার্থ: ॥ ১ ॥

#### (वक्षव (कावना।

নমঃ শ্রীরাসরসিকেভাঃ। আন টীকারাং রাসসংস্কৃত হাত। তথিরিনিত্তে রাসারস্কৃসম্বন্ধিনং মানং বীক্ষোতার্থং। কর্মপ্রেক্স প্রতীতেরিতি কন্দর্শকত্ ক্সৈয়ের কেতৃত্বস্য প্রত্যরাদিত্যথং। অথ মূলে শ্রীরাদরারণিক্ষবাচেতি বক্ষ্যমাণমহামহিয়ঃ প্রসক্ষ্যাস্য বলাত্তিনিং লক্ষয়তি বদরিকাশ্রমে মহাতপশ্চরণাৎ ভগবান্ শ্রীবাদরারণঃ তচ্চ তপঃ শ্রীকৃক্ষোণাসনলক্ষণমের সর্বজ্ঞস্য তস্য প্রমোত্তমে তত্মিরের ব্যবসায়েটিত্যাং। তত্মত তাদৃশত্পঃফলরূপপুত্র ইতি সর্বজ্ঞ শ্রীজ্ঞগবংপ্রেমবসময়ছাদিকং ত্রাধিকং যদাণি ক্রুরতি তথাপি তরামনিক্রক্মের্যিক্সাপর্যবসানমত্রের কাতং তত্ত্বাদৃশভক্তিরেবৈত্তক্ষ্যেত্ব্যমিত্ব্যক্সিত্ত। শ্রীশুক উবাচেতি গাঠে তৃ প্রমোজ্ঞ্গরস্বাভাব্যেন প্রমক্ষেমলালাপতা দশিতা। তত্ত্বাদৃশচিত্তত্বির প্রোত্ত্বাদিদ্যিতি ব্যক্সিতং। তথাছি। সর্বাভিশরিপ্রেম-

#### ক্ৰমদন্ত: ১

ভগবানপীতাপি শব্দেন তংগ্রেরভোহপীতি সমুচ্চীরতে। তাঃ নিজমাধুর্ব্যেণাদ্যাপ্যক্ষরনোহারিণীঃ শরদাপি মলিকোংকুলতা-ভালৃশরসময়লীলাসময়রপথাং। যোগমায়াং ছর্ঘটঘটনাশক্তিং উপ সমীপে আপ্রিতঃ। ভালৃশ তংসেরাবসরাপেক্ষরা নিকটতে তালৃশ -শক্তিরিত্যর্থ: ॥ > ॥

### श्रीवित्रनाथहळ्कवळी।

শ্রীরামকৃষ্ণগলাচরণারত্বা শুরুত্বকরের। শ্রীলনরোভ্তমনাথ শ্রীগোরালপ্রভুং নৌমি। প্রণম্য শ্রীশুকং তৃরঃ শ্রীকৃষ্ণ কর-পার্থবং। লোকনাথং লগচক্ষু: শ্রীশুকং তমুপাশ্রের। গোপরামাজনপ্রাগপ্রেরতেহতিপ্রভূক্কবে। তদীয়প্রিয়দাস্যার মাং মদীয়মহং ছলে। অব পঞ্চন্তির্যাটিয় পঞ্চপ্রাণসনৈর্নিয়। রাসং প্রাহ হরেঃ সর্বাদীলাসন্পদ্ধিরোমণিং। রাসো জয়তি বন্ধতেশীভাগ্যা গোপ-বোহিতঃ। ধরাত্বা অধ্রীচকুঃ সর্বোজ্তাং রমামপি। উনবিংশে বেণুনাদপাক্ষরাবিষ্বর্বণং। গোপিকাচাতকীত্বাভিঃ ক্রীড়ান্তর্থিক বর্ণাতে ।

ইছ খলু সপ্তবর্ষবন্ধনি বর্তমানেন ভগবভা কার্তিকস্যামাৰক্রারাং কর্মবালোখাপনেন ইক্সমখতকঃ কৃতঃ। তজুক্প্রতিপদি পোবর্জনাথাপ্রবাং। বিভীয়ারাং যমুনাভীরে প্রাত্তিভীয়াভোজনোৎসবঃ শ্রীমুনীক্রেণাবর্ণিতোছিপি জ্ঞেয়ঃ। তত্ত্বিব বর্ণিতা ইক্র-কোলোজ্যক। তৃতীরামারভ্য নবনীপর্যাজং গোবর্জনধারণং। দশম্যাং গোপানাং বিশ্বক্ষথাবাছল্যং একাদশ্যাং গোবিল্লাভিবেকঃ বাদশ্যাং বক্ষণবোক্সমনং পৌর্ণমাস্যাং ব্রহ্মবাকস্মনং। তত্তক শ্রদঃ স্মাপ্তছাৎ তত্ত্বে বুর্বে অন্তব্ধব্যুক্ত স্থানিনপূর্ণিমারাং রাব্যেৎসবঃ স্ক্রীলোৎস্বমুক্তমণিজ্য বজুমারভতে। ভগবানপি বড়েখ্যুপ্রণিছিপি বছু মনশ্চক্রে র্মণ্স্যাদ্ধীপনাল্মনানাং

ব্রহ্মাদি দেববৃন্দকে জয় করিয়া কন্দর্প অতিশয় দর্পাদিত হইয়াছিল,ভগবান্ প্রীকৃষ্ণ গোপীদিগের রাদমণ্ডলে মণ্ডিত হইয়া তদীয় দর্প সংহার করত জয়য়ুক্ত হয়েন ॥

উনত্রিংশ অধ্যারে রাসবিহারার্ধ গোপীগণ সহ উক্তি প্রত্যুক্তি এবং রাসারস্কে শ্রীকৃষ্ণের অন্তর্জান রূপ কৌতুকের বর্ণন ॥ • ॥

শুকদেব কহিলেন হে রাজন্! ভগবান্ ষড়ৈখব্য পরিপূর্ণ হইয়াও বস্ত্রণ কালীন যে প্রতিশ্রুত শুর্বাৎ পোপকুমারীদিপের নিকট যে অঙ্গীকার করিয়াছিলেন "ছে শ্বলাগণ তোমরা দিছ হইয়াছ,

### देवस्वंदङावनी ।

বতীনাং প্রীত্তক্তকরীণাং মনোরপপরিপূরণমেব। প্রিয়বাতত্ত্বার্থার্থং সর্ব্বতঃ প্রীতগবতো মুধাতরপ্রাক্তনমিতি দর্শরংক্তদেব ভদ্য দর্কাভিশারিম্থাত্রথমিতি চ প্রকটরংন্তত চ দাক্ষারারথমরাথ ইতি ত্রৈলোকালক্ষ্যেকপদং বপুর্দধদিতি গোপ্যন্তপঃ কিম্চর্নিভি দৃট্টা সর্কায়ারানৈরপি ছল্ল ভানাং ভগবত্রপরসগত্মপর্শশলাং বৈশিষ্টোনাত্মভবাৎ। তদীয়রসস্যাধরামূভদ্য তু সর্ক্রেথবানাআসম্ভবাৎ। প্রেমবিশেষবিস্তার স্থাসিদ্ধা তলেবাগ্যাভিস্তাভিঃ সহ রাসকীড়াং পঞ্চেরতুল্যপ্রিরে পঞ্চিরধ্যারৈ বর্ণরতি। যত্র, পীলা মুকুন্ধ-मुथनात्रयगक्तिकृतिकानिना शाभीनाः शत्रमानल व्यानीत्नाविकानर्यन हेळातिन। हेवः मतःव्यक्तवामिकानिना इमस्य व्यथम মানীত্যাদিনা চ তাদাং ত্ত্যা চ নবরাগং বিশিষ্য স্থেন বর্ণিভচরং শর্হদাশয়ে সাধুজার্ত্সং সর্বিজেত্যাদিনা প্রহ্সিতং প্রিয় প্রেমে-ত্যাদিনা রহসি স্বিদং ক্রছয়োদ্যমিত্যাদিনা চ তাভিঃ স্বয়ং বর্ণয়িষ্যমাণ্ঞ। স্বুড়াতিবিশিষ্টতরা বর্ণয়িতব্যক্ষেন নবস্কুমং স্বুরুল্ল ভগবা-নপীতি। অপিশব্দেন তাসাং পূর্ব্বপূর্ববর্ণিতং নবরাগং স্মারয়তি পূর্ব্বেণ বাক্যেন তু সঙ্গমদ্যাদ্য নবত্বমেবাবগময়তি এতাবস্তং কালং তা অমুরাগর্চপলচিত্ততরা রন্ধং মন: কুর্বভা এবাসন্। ভগবাংস্ত জাতামুরাগতেহপি ধৈর্যোণ সময়বিশেষং প্রতীক্ষমণো ন চক্রে সম্প্রতি তাঃ কৈশোরমধ্যপ্রাপ্তাঃ সর্বাহত্তরা সর্বাহলতয়া প্রকৃতিতবেণুশিকাদিবিশেষতয়া চ বিলক্ষণাঃ কুমারীযু চ ময়েমা-রংস্যথ ক্ষপা ইতি প্রতিশ্রতা রাত্রীবীক্ষ্য ডত্রাপি রাকা রাত্রেরাগমনারত্তে দীপ্তাসুরাগত্বেন গলিতধৈর্য্যতয়া তচ্চক্র এবেতি প্রতিপত্তে:। শ্লেঘেণাত্মারামাশ্চ মুনর ইত্যাদিবৎ ভগবান সর্বার্থপরিপূর্ণোহপি তা রাত্রীবীক্ষা উদ্দীপনত্বনামুভূয়েতি কৈমুভ্যেনালম্বনরপাণাং তাগাং প্রেমমহিমা দর্শিতঃ। তত্ত্র ব্যক্তস্কার্থং তস্য কৈশোরমপি মানিতং লাতমিতি প্রীবিষ্ণুপ্রাণে দর্শিতং। সোষ্পি কৈশো-রকবয়ো মানয়ন মধুস্দন:। রেমে ভাভিরমেয়াঝাকপাস্থ ক্ষপিতাহিত ইতি। হরিবংশেচ। যুবতীর্গোপকন্যাশ্চ রাজৌ সংকাল্য কালবিং। কৈশোরকং মানয়ানঃ সহ তাভিমুমোণ হ ইতি। অত কালবিদিভাস্য ব্যাখ্যানং তা রাত্রীবী ক্যেতি। সহ তাভি মুমোণ হ ইত্যুস্য স্থাচকং। রক্কং মনশ্চক্রে ইতি আত্মনেপদ্নির্দ্ধেশঃ থবরং সার্থঃ। ক্রিয়তাং বোধয়তি স্বরিত্তঞিতোঃ কর্ত্র ভিপ্রায়ে ক্রিয়াক্রে ইতি বিশেষবিধ্যাশ্ররণাৎ। তদেরং ভা ইত্যানেন স্বস্যাপি চমৎকারকরং কালবৈশিষ্টাং ব্যক্ষ্য তত্ত্বজ্বলিতাং শ্রীরন্দাবনশোভামণি দর্শরভি শরদেতি শরদা খেতুনা উঠিচ: ফুলা মল্লিকা যাত্র তাঃ পরস্পরযোগাপ্রসিদ্ধেরনেনাদ্যাঃ শরদো মল্লিকানাঞ্গপুর্বরং ব্যঞ্জিতং তেন চ সর্বাণ্যের পুষ্পাণি লক্ষ্যয়ে ইত্যালম্বনকালনেশানাং একফার প্রেমময়পরমহাথপ্রদত্তং দর্শিতং। যত্মাৎ জ্লাদিনীশক্তিবিলাগলক্ষণ তংপ্রেমবিশেষময়েবৈষা রিরংদা নতু প্রাকৃতকামময়ীতি তেষাং কন্দর্পদর্পহেতি ব্যাখ্যানমপি তথা যুক্তমেব নিবৃত্তিপরেরং পঞ্চাধ্যায়ী-তাপি অগমেৰ চ ৰক্ষতে ছাজিংশে বিরহালাপৰিক্লিল্ড্ৰয়ো হরি:। তজাৰিভূৰি গোপীভা: সাম্বামাস মান্যন্। অপ্ৰেমাম্ভ-करमानविस्तनीक्रजरहजनः। ननवः ननवन् राभीक्रकारजा नननन्तन हेजि। श्रीमूनीरखनाभीनरमय वकारज। विकीष्टिणः अनवपूर

### শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্তা।

কালদেশপাতাণাং শর্মবামিনী বৃন্ধাবনত্রজ্বনিতানাং সর্ব্বোৎক্ষরমাধ্ব্যাপাক্ষ্টমাদিতি ভাবং। শতকোটিবিগাসিনীনামুজ্জনরসচিত্তা মনীনাং সৌষ্ব্যাসৌল্ব্যাসৌল্ব্যাসৌক্মাব্যসৌরভ্যাধ্ব্যবিদ্ধাতে বিশ্ব বিধানি প্রমন্ধতিরানি স্বীরশ্রোতাদীতির জিল্পন্ধং স্বীর্বান্ধ্যাদীনি তদীরশ্রোতাদিতিরা জিল্লাইয়্ক বভ্ব প্রেমবক্সবাদেক স্যামের রজ্ঞামবাবধানেন বদা তদা সভ্যসম্ব্রভাশক্যা প্রেরিড্রা বোগনারর। ত্বতিব্টনাপটারস্যা শক্যা প্রেইরচ্তুইরবভ্যাক্তস্যা এব রাজেম ধ্যে তাবিদ্বাস্সমাপরিত্তাঃ পরং শতকোটিরাত্তা আনীর দিশিতাঃ অতএব তা রাজীবীক্ষাতি বক্ষানাথ উৎস্কা মনিকা ৰাষ্ক্ ভাগেছিল বক্ষাতে প্রেমির্ভিগ্রেক্ত বক্ষানামিল উৎপ্রা মনিকা ৰাষ্ক্ ভাগেছিল বক্ষানি মনিকাং ক্ষান্তন্ত ক্লান্ধানা গুণবতীরিতি রাজীণামুহক্র। শর্মা টাবক্তঃ শর্মারামিল উৎপ্রা মনিকা ৰাষ্ক্ ভাগে শর্মাণ মন্ধিকাং ক্ষান্তন্তনিই বাতিগন্ধ ইতি ক্ষান্তনিশ্ব বিলেশ তর্বনানিক্ষমলামোদবান্তন্তি রাজাবিশি ক্ষলানি পূপ্যক্তি ইতি বৃন্ধাননস্যোহকর্ম। শার্মেহম্পন্তন্তি কাল্লান্ধ্যান্তন্ত রাজাবিশি ক্ষলানি পূপ্যক্তি ইতি বৃন্ধাননস্যোহকর্ম। শার্মেহম্পন্তন্তি ভাগেছ ইতি পাঠে। শার্মান্দত তা উৎফুলম্বিকান্তে ভাগের রন্ধারেতে রেমে ইত্যুক্তে মীন্ধারাম্ব্য স্বত্যব পূর্ণকামস্য ভগবতত্ত্ব্য বন্ধ-বিভাল রমণং বাহুং নরবিভ্যনমেনেতি কণ্ডিল্যাচক্ষীতেভ্যাতো রন্ধং মনশ্চক্র ইত্যুক্ত্যা রমণমিদমান্তরমের নতু বাহুমিতি জ্বানিক্ষ্য স্বাধার্ক স্থাধিক স্থাং বেধিক স্থাং বিভাল ভগবান্ধ ভগবান্ধ ভগবান্ধান্ত ভগবান্ধ লি ক্রমোৎকর্ম। ক্রমার্কার স্বাহিশি কৈনো কর্মান্তন্ত ভালিক ভগবান্ধ ভালিক ভগবান্ধ ভগবান্

ত দোড় রাজঃ করুভঃ করৈমু খং প্রাচ্যা বিলিম্পদ্দরণেন শস্তমৈ:।

À

#### धिशत्रवाशी।

ভবা ভনিবেৰ কৰে তংশ্ৰীতৰে উড়্বালগন্ত উদগাং উদিতঃ কিং কুৰ্বন্ দীৰ্ঘকালেন দৰ্শনং ৰদ্য স শ্ৰিরঃ অপ্রিয়ায়াঃ মুধং অরুণেন কুছুমেন যথা লিপ্পতি তথা প্রাচ্যাঃ কুকুঃ দিলে৷ মুধং শস্তমৈঃ অ্থতইমঃ করের রশিতিঃ অরুণেন উদয়বাগেণ বিলিপ্ণনু অরুণীকুর্বন

#### देवकवरकावनी।

ভিরিদক্ষেতাদৌ। তার হুর্যট্টনাং সমাদ্ধদাহ বোগমারা পরাধ্যাচিস্ক্রাশক্ষিং তামুপ সামীপ্রেনাপ্রিতঃ যত্র যত্র বিহরতি তার উত্তৈব স্থাঃ স্থানিধিতিমিব সদা প্রাপ্ত ইতি স্বাভাবিক তানৃশপজিবং বাঞ্জিতঃ। তেন চ হুর্যটতভারীলা চ সেংস্ভাটিত ভাবং। শ্লেষেণ বোগং সংযোগং তদর্বং মারা কুপা। মারা দক্ষে কুপারাক্ষেতি বিশ্বঃ। তামুপ স্বাধিক্যোপ্রিতঃ। কিঞ্চ। তা বীক্ষা কুমেণ রাকাপ্রাপ্তমধিক্মধিক্ং মনোরথং চক্র ইত্যর্পকে লব্ধে বিশেষোহ্মপি জ্বেয়ং। তদ্যাং রাকারাং সাধং প্রহ্মাগতো ভোজনাদিকং বিধার মাতৃং স্থানাং শ্রাগৃহচক্রশালিকা বার্মাগতঃ সন্ স্বায়ং সম্পান্ধেন নিশ্চিত্বানিতার্থঃ॥১॥

এবং নিজ্বিরংসেরা চক্রমণি প্রাচী দিশা সহ প্রির: প্রিরয়ের রম্ম্লুজং মন্তমানত শ্রীভগবতো ভাবমভিব্যঞ্জর তাসাং রাজীণাম্বমালনারপারামন্তামভিব্যজ সর্ক্মক্লস্চকমন্তলগাহ তদেতি। উজ্নাং রাজেতি তা অপি তৎপরিবার্ত্বন উদগুরিতি ধ্বনিজং। রিফিলিটেরক্রেন ইতি ক্রণ্ড্রা উভরেষামণি সাধকভমত্বাং রিফির্ডেন রাণেণেত্যর্থ:। বিশেবেণ লিম্পান্ ইতি পূর্বচ্রাভিপ্রায়েরণৈর ততো রাকৈবেরং ভিথিং। উৎজুলমলিকা রাজীর্বিক্যেভিবেরভাপুদ্দিশন্বেন সহক্রেদ্যমেটিভাগে। রাকেশকরর্মিতমিতি বক্ষামাণাম্বনারেণ ততিথাবের তাৎপর্যাং। স ইতি তা ইতিবং। ন কেবলমেরমন্ত্রনালী দিশ এব তাপোপত্তঃ কিন্তু সর্ক্রেরাং জনানামণীত্যাহ চর্বণীনাং ইতি শুচ: শর্দক্রসন্তাপত্তথানি। যথা। মনোত্থানি। ভগবতঃ সর্ক্রণজ্যাশ্রমণরম্পতিরপাণ তাসাং অফ্লান্রাসাভ্যাং স্থতএব সর্ক্রেরাং তত্তবাবাং শ্রীকৃক্রনাদিনাদিবং। প্রিয়ঃ প্রিয়ায়া ইবেতি সরাগন্ত্রাম্প্রনিভ্রাদিনান্যান্তং ক্রির-বিশেবাদ্র্শিতঃ। অভ্যান্ত তথেতি ব্যক্তিরং। দীর্ঘণ্ননি

#### श्रीविधनाथहळावळी।

ভাত্তিরমেয়ায়া ক্ষপান্থ ক্ষণিতাহিত ইতি। যুবতীর্গোপকন্যাশ্চ রাজৌ সন্ধান্য কাশবিং। কৈশোরকং মানয়ান: সহ তাতিমুমান হৈছি বিষ্ণুপ্রণান্ধরিবংশরোমানিয়ন্ আনৃতঃ কুর্মনিতার্থা। তাতিঃ সহ বিহারাভাবে স্বীষ্টকশোরবয়োহপ্যবমানিতঃ স্যান্ত এবোক্ত-মভিযুক্তমহামুভাবৈ:। কৈশোরং সক্ষীকরোতি ক্লয়ন্ কুলে বিহারং হরিবিভি সর্মধৈব এলবনিতানামপ্যংক্ষো ধানিতঃ। ভব্ চোক্তান্ত্রক্সর্কেভি কৃত্যস্থাধানার্থমাহ বোগমায়াং স্বীয়াচিস্তাচিচ্ছক্তিবৃত্তিং উপ স্বাধিক্যেন আশ্রিত ইতি স্বাশ্রিতানামপি ভামাপ্রিত ইতি প্রয়োগাত্স্যা অপ্যব্র নৌভাগাধিকাং॥ > ॥

উদৈবোদ্দীপনান্তর# প্রাত্ব ত্বেত্যাহ। তদা উড়ুরালশ্চক উদগাং। কিঞা ন কেবলমরম্দীপন এব অপি তু গোপজীরমণ্য তক্ত প্রমাণীভূত ইত্যাহ কক্ত ইতি। দীর্ঘকালেন দর্শনং যক্ত স প্রিয়ো রমণং প্রিয়ালা অবমণ্যা মুধং অকণেন কুকুনেন অকরধতেন যথা বিলিপ্ততি তথা প্রাচ্যাঃ ককুভো দিশঃ মুধং শস্তবৈঃ অধতমৈঃ করেঃ কির্পের্গতেন অকণেন উদ্রবাগেণ লিম্পদ্দশীক্ষ্মিত্যের্গ:। স প্রসিদ্ধ এব চর্ণীনাং অর্থায়ে। মাতৃকা পন্নী তরোশ্চর্ণদাঃ স্তাঃ। যত্র বৈ নাহ্যা জাতীর স্থাপরিক্রিতেতি
বঙ্গোক্তেম হিরলাতীনাং ভচঃ সন্তাগান্ মূজন্ অপনরন্। অরমর্থ:। কুক্রস্যা স কুলাদ্রিপ্রক্রি স প্রাতনোহণি বিজ্য়াজোহণি রমগাহ্ বহুত্রস্থানীমানস্থি প্রাচ্যা দিশঃ ইক্রভার্যাছাং প্রস্তিরো মুধং অকরৈঃ প্রাতি স্পারের অরং ত্যামস্বক্তরামণাহ্রাগ-

এখন ব্রজ্ঞে গমন কর, আগামিনী রক্ষুনীসমূহে আমার সহিত জ্রীড়া করিতে পাইবে) সেই সকল রজনী শরৎকালীন উৎফুল মলিকায় স্থাভেন অবলোকন করিয়া যোগমায়া অবলম্বন পূর্বক জ্রীড়া করিতে মন করিলেন ॥ > ॥

তাহার প্রীতি নিমিত্ত তৎক্ষণাৎ নক্ষত্রকাস্ত চন্দ্র গগনমগুলে উদিত হইয়া দীর্ঘকালের পর স্মা-গত প্রিয় যেমন স্থাপন প্রেয়দীর বদনক্ষল স্কুল্বর্ণ কুরুমে বিলিপ্ত করেন, তেমনি পূর্বাদিকের মুখ

দ ধর্ষণীনামুদণাচছুচো মুক্তন্ প্রিয়ঃ প্রিয়ায়া ইব দীর্ঘদর্শনঃ ॥ ২ ॥ দৃষ্ট্র কুমুবন্তমথশুমশুলং রমাননাভং নবকুরুমারুণং।

श्रीभवत्रामी।

রিভার্থ: স প্রসিদ্ধ উভ্রাজ: তথা চর্বীনাং ওচ: তাপ্যানী: মূজন্ অপ্রন্যন্॥ ২ ॥

কুমুং কুষ্দং বিক্ৰনীয়ং বিদ্যুতে ৰব্য তং কুষ্মতং ন খণ্ডং মণ্ডলং যথা তং রমায়া আননভাতেব আভা বস্ত। নবং কুমুমমিব অরুণং

বৈশ্বভোষণী।

ইত্যানেন প্রমোৎকণ্ঠাং হুচিতং। এবং সর্বমিদং শ্রীভগবতো ব্লিরংসাবিভাবনমেবোক্তং॥ ২॥

ভতত তং দৃষ্ট্য ভাববিশেষাবিভাবেন বনমাগতা তচ্চ তদ্ধশিঞীরঞ্জিতং দৃষ্ট্য তত্র যমুনাতীরভাগং অদ্যাপি রাসৌনীতি প্রসিদ্ধ ব্রজন্থাপিতপ্রামচত্বরমাগতা চাকর্ষ্পবেশুনা কিমপি গীতমগায়দিতি পূর্ববন্তসাং রাতৌ প্রকটিতবেশুশিক্ষাবিশেষত্বমপ্যাহ দৃষ্টেভি। তঞ্চ রমানসাজং রময়ন্তীতি রমাণাং পরমরমারপাণামেব ভাগাং তংগ্রেম্পীনাং মধ্যে পরমপ্রেম্পী যা রাধা বংগ্রাপ্তার্থমেব বেণুশিক্ষা-ৰিশেষং প্রকটিয়িতুং নুনমেতাবল্তং কালং তাসামপি সঙ্গমে শিধিলোহভূৎ। ভস্যা যৎ আননং তদাভং দৃষ্ট্1 তত্তরা বিভর্কা তেন তৎস্বস্থা কলং জ্বাবিত্যৰয়:। বিভর্কাত্যপ্রাদনার সাম্যেন বিশেষণানি কুমুৎ কুমুদং। তথাচ বিখ:। কুমুদেছপি কুমুৎ প্রোক্তমিতি তর্ত্তমিতি বা অপ্রকাশনায় কুমুদানি চ তদানীং বিক্ষিতানীতি ধ্বস্তর্থ:। অত্র বিশেবগৈরেব বিশেষাশ্চন্তো শভাতে। অয়মুদয়তি মুডাভঞ্জন: পশ্নি-নীনামিতিবং। আননন্ত পক্ষে কো: পৃথিব্যা মুংকর্ত্তব্যক্ষেন বিদ্যতে যক্ত। তদিভি বিশেষাবশাং লিক্সপরিণামেন জ্ঞেয়ং। পরমরমারপ-ত্বান্তকাঃ। অথগুমগুলং বোড়শকলং। পক্ষে ষ্ণাবৎপরিমাণসন্থলিতং মগুলমবরবরুলং বত্ত নবকুত্বুমপিগুবদরুণং। পক্ষে নবকুতুমরাপে-ণারুণং। এবং কালন্ত রতিযোগ্যতাং প্রদর্শ্য স্থানস্যাপি দর্শয়তি বনঞ্চেতি। তক্ত প্রথমোদ্বেনারমাত্র প্রকাশবভির্গোভীরঞ্জিতং দীর্ঘদা ভাবশ্ছাল্দস:। এবং ভাবোদীপনমেব দশিতং। কলং মধুরাক্ষ্টং ধ্বনিং দগৌ বেগুনেতি জ্ঞেরং। কান্তাদতে কলপদাম্তবেগুগীতেতাাদি-বক্ষ্যাণাৎ। তত্র মধুরত্বং স্তুনোহর্ণায় অক্টুড্ং সর্কাসামপি তাগাং অকনামময়ত্বাদিল্রমার বামদৃশাং মনোহরমিতি তাদৃশ ভাববতীনা-

করৈরক্রণেন ভদগভোদয়রাগেশ। ২ ॥

675

মহালক্ষীক্ষপত্মেল বা। রমা অতা জীরাধা। ইতি বেপুরবং রাজন সর্বভৃতমনোহরমিতি পূর্বোক্তাৎ বৈশিষ্ট্যমাহ বামলৃশাং

**बि**विधनाधहकवर्षी ।

বতীং। করোতি যদি তদা ক্লুফ্স্য তবংশ্যস্য নবীনবয়নো গোপজাতেরলভ্তবিবাহখাৎ স্বীর স্ত্রীরহিতস্যাধ্য স্বাসেবর্গেণ মান্তবজাতী-রানন্দরতো গোপস্তীরমণে কঃ ধনু দোব ইতি ॥ ২ ॥

তত্ত তদ্দশ্নেনাত্ত কম্প্ৰিকারো ফ্লাচরতি শ্রেষ্ঠন্তত্তে বেত্রোলন ইতি ব্জা সকুলাদিপুক্ষস্য ভস্য ধর্মং স্বান্তিরাপ পশ্যন্ নিঃশক্ষেব পরক্রীরানেতৃং ক্ষপ্যমোধং ষত্ত্মকরোদিত্যাই মৃটে তি। কুমুৎ কুমুদং। কুমুদেইপি কুমুৎপ্রোক্তমিতি বিশ্বঃ। ভিছি-কাসনীয়থেন বৰ্ত্ততে যদ্য তং। কোঃ পৃথিব্যা অপি মুৎকৰ্ত্তব্যন্থেন বৰ্ত্ততে যদ্য ভৰাত্মানঞ্চ দৃষ্টে,তাপি ব্যাখ্যেরং বিশেষ্য বিশেষণা-মুক্তে: ন খণ্ডং মণ্ডলং বিষং শারপং যদ্য তং পূর্ণমিত্যর্থ:। রমা লক্ষীন্তভ্রাতৃত্বান্তদাননাতং। বরা। দর্মলক্ষীমরী দর্মকাবিঃ সন্দো-হিনী পরেতি স্বতে রমা প্রীরাধা। রমস্তে রময়তীতি বা রমা গোপ্যক তাসামাননসোবাভা বস্য তমিতি তদশনেন ভাঃ স্বতিপ্রমার্কা-ইতি ভাব:। পকে রমাণাং ভাসাং ভাননে আতা অস্তঃকৰপবিকারদ্যোতনী সমাক্ কাত্তিবভরেমাত্মানং উদয়রাগব্যাপ্তভাৎ নব-কুৰুমপিওবদকণং। পক্ষে নবকুৰুমচচ্চিত্ৰ অকশং। তথা বনক তদা কোৰলৈৰ্গোভিঃ কিবলৈ বলিতং একিতং। অভিসঞ্জিতমিভি সমানো বা। পকে তৈ: প্রসিদৈর্কোভি: বালকান্তিভি:। বপালামানগ্ৰীভিব। অভির্ক্তিও। অভির্ক্তিরমিতার্থ:। টলভাব-আর্ব:। ইজুদদীপনালখনবিভাবৌ দৃষ্ট্। কলং মধুরবগায়ত বেগুনেভি শেব:। কাছ্যক তে কলপদামৃতবেগুণীভেভাতিমোজে:। ক্থং স্থতম কিরণ দারা অরুণ উদয় কালীন রাণে অরুণিত করিতে লাগিলেন। তাঁহার দর্শনমাত্রে প্রাণি-মাত্রের তাপজন্য গ্লানি দুরীভূত হইল ॥ ২॥

ভগবান দেখিলেন কুমুদবিকাশশীল নিশানাথ অথগুমগুল হইয়া গগণমগুলে উদিত इইয়াছেন, लक्मीत वमनश्राम गाम जाहात श्राम श्राम शाहराजह अवः नवीनक्षूमवः अक्रगर्ग हहेता छेठि-য়াছে, অপর তদীয় কোমল কিরণে সমস্ত বনস্থাী সর্ঞিত হইয়াছে অতএব জীড়ার উপস্কুল স্বর

## ্বন তেওঁ কোনসংগাভি রঞ্জিতং জগে কলং বামদৃশাং মনোহরং॥ ৩॥ নিশম্য গীতং ভর্নজ্বর্দ্ধনং অজস্ত্রিয়ঃ কৃষ্ণগৃহীতমানসাঃ।

### श्रीश्वचामो ।

দৃষ্ট্বা তথা বনঞ্চ তদ্য কোমলৈর্গোভিঃ রশ্মিভিঃ রঞ্জিতং দৃষ্ট্বা কলং মধুরং জ্বগৌ অসারৎ। কথং বামা বরা দৃশো বাদাং ভাদাং মনো-ছরং যথা॥ ৩॥

অসাপত্নায় অন্যোন্যমলক্ষিতো ন অপুপিত উদ্যমো যাভিত্তাঃ স কান্তো যত্ত তা গীতধ্বনিমার্গেণাক্ষয়ুঃ কবেন বেগেন লোলানি বৈষ্ণবতোষণী।

মেব মনোহর্মং মুণা ভারণেতি। আদিরসমান্তোদীপনং রাগবিশেষং জগাবিত্যর্থ:। বল্যতে চ জনক্বর্ধনমিতি। সচ নৃনং মধ্যমাদিনাদ

যত উক্তং মোউররাগভেদে। মধ্যমাদিম গ্রহারো মধ্যমগ্রামরাগলঃ। অরং সারং তু গাতব্যঃ শৃলারে ধ্ববর্জিত ইতি। মেতি মলাই

ধবেতি ধ্বতধৈবতৌ অরৌ। গ্রহঃ অরস ইত্যুক্তো বো গীতাদৌ সমর্পিত ইতি। পূর্বত্ত ইতি বেণুরবং রাজনু সর্বভূতমনোহন্দিতি

সামান্তবিষয়কত্তাৎ অভাবাল্সারেণ তাসাং মোহনমান্তং জাতং অধুনা তু রসবিশেবাদীপনত্তালক্বামিতি তল্প তল্প আছুলং

ইয়ান্তি। যথোক্তং। অর্ধান্ত্রান্তানং তারাদিবিবরাইকং। ততাে হলুনান্তরে যল মুখরদুং তথাসূসং। শিরো বেদাস্থাং পুদ আছুলং

সা তু বংশিকা। নবরন্ত্রা স্থান স্থান ভারাদিবিবরাইকং। ততাে হলুনান্তরে যা তারম্থরদুং তথাসূসং। শিরো বেদাস্থাং পুদ আছুলং

হলীতি চ। ভবেৎ প্র্যান্তরা সা চেৎ তত আকর্ষণী মতা। আনন্দিনী তদা বংশী ভবেদিক্রান্তরা যদি। গোপা<sup>নং ব্রভা</sup> সেরং

বংশুলীতি চ বিশ্রতা। ক্রমান্ত্রানিমিতি তেও আকর্ষণী মতা। আনন্দিনী তদা বংশী ভবেদিক্রান্তরা হিমীরং শ্রা। এবং গান

বৈশিন্ত্রামণি জ্লেরং। বামদৃশামিতি স্লেবেণ স্থান্ত্র কৃতিনমেব পশ্রন্তীনাং তাসাং মনোরপ্রস্বান্তরী। দৃষ্ট্যাদিসনে ক্রিব্রুক্তমেবাক্রই,

মিবেতার্থ:। অল স্লেবেণ কামবীকং জগাবিতি রহজং। যতাে বামদৃক্রবন্ধি বতং সহিতং ক্রমিতি প্রথমান্তর্কার বাজিত। নাদ্র্ক্ত

ত্বেনাদ্বাভাব্যাদেবেতি ভাবং। তত্তকং। কলাতু মানা লবক্তি মুর্তিং ক্রকণ্ডেগ্নিনাদ্বম ইতি ॥ ৩

শত্যেতৃ তদগীতং ন শ্রুতবন্ধঃ কিন্তু তেন তা এবার্ক্টা ইতি তক্ত শক্তিবিশেষং দ্যোতররাহ নিশম্যেতি গ্রুপ্রের্কাকপ্রকারং শ্রীক্ষণ-বেশ্ দাতং। অনলং শ্রীভগবিষ্বিশ্ব কামং প্রাথর্তমানমেবাধুনা বর্জরতীতি তথা তং। বদ্যপি বামদৃশং মনোহরমিতানেনানলবর্জন-বমারাতমেব তথাপীরমুক্তিন্তদ্বিশরবিবক্ষরা। অনলশন্ধপ্রয়োগন্ধ পূর্বং বীকাত্বরূপেণেব স্থিতঃ প্রতি তু পর্বতি ইত্যর্থং বোধ-রতি। এতেন তলগানভামৃতসেকত্বমপূর্থেক্সতে সদ্যন্তবাশ্বাধ। ব্রক্ত বিষ্কৃতিদেখাঃ প্রক্রণবলাৎ অতএব ক্লেন প্রমাকর্ষ-

ক্রমসন্দর্ভ:।

মনোহরমিভি। আদিরসোদীপনগানবিশেষাদিতি,ভাব:॥৩॥

#### শ্ৰীবিশ্বনাগচক্ৰবৰ্ত্তী।

বামা মনোহরা দৃশো ঘাসাং তাসাং ব্ৰজীনামের মনোহরং মথা জাত্তণা। গায়ত্তং দ্রিয়ং গাময়ত্ত ইতি শ্রুতে:। শ্লেব্ণে কলার লকারং বামদৃশামিতি প্রবিত্তিকং পদং বামদৃক্ চতুর্থং খরং। তরা সহ পঞ্চশখরং কুমিবীজং জগাবিতি রহস্যং মনোহরং মনস-আকর্ষকদ্বাৎ খস্ত্রপত্তমহামন্ত্রশত্যর্থি:॥ ৩॥

কলগীত হবে গুলিভা: পঞ্চলিকা ইব তাঃ ক্লাভিক নামাত। ইত্যাহ তৎ গীতং মনোহরমধি মনোলবর্জনং। কিঞা ক্লোহি বেণুগীতাথাং মহাটোরং ব্রন্ধে প্রেষিতবাংকেন চ ব্রন্ধীণাং নিজপাটেন কর্ণহাণোৱাক ব্রন্ধারাগারং প্রেষিতবাংকেন চ ব্রন্ধীণাং নিজপাটেন কর্ণহাণোৱাক ব্রন্ধারাগারং প্রেষিত্য নন্দান মন্দান করিলেন। পক্ষান্তরে, ক ল পদে ক,ল, বামদ্ক পদে চতুর্ধার জি) এবং মন্দাণদে মন্দান অধিষ্ঠাতী দেবতা চন্দ্র অধাৎ তদাকারবর্গ চন্দ্রবিন্দু (ত্ৰা সমন্ত্রিতে মহাসন্মথমন্ত্র অধাৎ কাম্বীজ (ক্লীত্ৰ) ইহাই গান করিলেন। ৩।

ব্রজাসনাদি গের চিত্ত একে জ্রীকৃষ্ণ কর্তৃক পরিগৃহীত হইরাছিল ততুপরি আবার তাঁহারা কাম-বর্ষক তদীয় গীত আৰণ করিলেন, মতএব সাপক্ষাভাব পরিহার পূর্বক ক্ষমেল বিহার বাসনায় পরস্পার

### श्रिश्तवामी।

চঞ্চানি কুওলানি যাগাং ডা:॥ ৪॥

প্রীকৃষ্ণপ্রকশন্তর্থান তথপ্রবাচিন্তানাং তংক্ষণমের তৈবর্গিককর্মনিবৃত্তিং দোভয়ত ইব অস্কাবশিষ্ঠং কর্ম বিহায় যযু: তদাহ

### देवकवरकावनी ।

কণ পূর্বনেব গৃহীতং আকৃষ্টং মানসং মনন্তনীয়াশেষং বা যাসাং ভাঃ বিশেষতশেলানীং গীতং শ্রুদা আজ্মঃ। অভোতালকিতত্বে ভূবৈর্থাখ্যাতঃ। বলা। স্বস্থুৰে মিথঃ স্থাবতীনামপি ভাসাং তত্ত্ব হেতৃঃ ক্ষেত্তি ভদানীং ক্ষাকৃষ্টভিত্তেল বিচারাপগমাদিভি ভানি। অত্ত্রু ক্বেতি আজ্মুরিতি শ্রীবাদরায়ণেঃ শ্রীকৃষ্ণান্তিকে সদৈব ক্রেঃ কিশা ভাসাং ভদামনবার্ত্তরা ভাববিশেষোদ্যেন ভাদানি ক্রেন্ত্রা সাক্ষাদিব শ্রীকৃষ্ণান্তিকভারাঃ ক্রুণাং। অগ্রেতৃ য্র্রিতি চলনার্থকমেব। স ইতি ভাদৃশতংক্রেণাই ভাবচনং। প্রমন্থেন্ত্রা সাক্ষাদিব শ্রীকৃষ্ণান্তিকভারাঃ ক্রুণাং আশ্রাক্ষ মূত্রত্যর্থমন্ত্রীন্দিত ইত্যর্থ:। কাস্তো রমণোক্রেন্তি ভাবং। প্রমাত্র্যান্ত ক্রেন্ত্রা সাক্ষাদিক প্রমাক্ষ্ণবিদ্যাক্রেপদ্যালক্ত্র শ্রুণাদিকম্পি নাসীদিভি ভাবং॥ ৪ ॥

#### ক্রমসন্দর্ভ:।

আৰুগা; প্ৰাপ্তব্তা:॥ ৪॥

ছহস্তা: দোহস্বতা: অভিষয়: চা ত্রতা:। नিশূন্ ভণিনীযাতৃপুর্কানীন পরো গবাং অতান অনমিত্যকেরালমনবৈত্রপ্যাৎ নর্কা:

#### ত্ৰীবিখনাপচক্ৰবৰ্তী।

ধৃতিস্বৃতিবিবেকলক্ষাভীতিমত্যাদীনি বাশং তাঃ আজ্মা; মহাচৌরচক্রবর্তিনঃ কৃষ্ণাং তানি স্বস্থানানি প্রার্থিয়িত্মিবেতি ভাবঃ। তদৈব মন্যে তং মহাচৌরং ধর্তুং ব্যগ্রাণামনে নাং ন লক্ষিত উদ্যানে যাসাং তাঃ। চৌরস্য পশ্চাৎ পশ্চাদেবাজ্ময়;। ক স কাজো বর্ত্ত। জবেন বেগেন লোগানি কৃপ্তশানি কৃপ্তলোপুনক্ষভানি কৃষ্ণাকিছিণ্যাদীন্যপি যাসাং তাজেন সহ তাসাং বহিষ্করণগৃহস্থিভানি ধনান্য স্ব্যাধ্ব্রা চৌরেণ তেন নাপস্তানীতি ভাবঃ। । । ।

তানাং তৎপার্থগমনকালে পরমোর্থকার বিল দ্যাদছ্রাং মমতাহত্তাম্পদকর্মাণেকাতাবং স্নোক্র্যা বদন কাদাঞ্চিৎ স্বজাতি-ধর্মপরিত্যাগমাহ। ছহত্তাঃ গা দোহুর উত্তং দোহং দোহনকর্ম হিছা অভিবয়ং অভিনক্ষঃ। পরো হৃদ্ধং পার্ত্তাহং চুল্লামধিতিতা

কেছ কাহাকেও স্বৰ্থ উদ্ধি জ্ঞাপন না করিয় যে ছানে সেই কান্ত অবস্থিতি করিতেছেন তথায় সম্বর আসিতে লাগিলেন, বেগে আগমন করাতে অহাদের কর্ণকুণ্ডল সাতিশয় চঞ্চল ছইল ॥ ৪॥

কোন কোন গোপাপনা দোহন করাইছেছিলেন তাঁহারা দোহন পরিত্যাগ পূর্কক সমূৎ হক হইয়া গমন করিলেন। অন্যান্য গোপী ত্থা আবর্তন করিতেছিলেন তাঁহা চুলীর উপরই থাকিল কার্থ (উথিত হইয়া উঠা—উইংলান) প্রতীক্ষা করিতে পারিলেন না। অপরা গোপী গোধ্যকণাম রক্ষন করিতেছিলেন, পক অন্ন নামাইয়াই চলিলেন। কোন ২ গোপী গৃহে অন্নাদি পরিবেশন করিতে

### 🗎 মন্তাগবভম।

পরিব্রুক্ত তারি জারিয়ন্তাঃ শিশুন্ পরঃ। শুক্রাবন্তাঃ পতীন্ কাশ্চিদশ্বন্ত্যাহপাদ্য ভোজনং ॥৫ লিম্পন্তাঃ ক্রিক্তিয়া অঞ্জ্যঃ কাশ্চ লোচনে। ব্যত্যন্তবন্ত্রাভরণাঃ কাশ্চিৎ কুফান্তিকং যয়ঃ ॥৬॥ তা বাহাহার্টি সিতিভিঃ পিতৃভিত্র তিবন্ধুভিঃ। গোবিন্দাপন্ততাত্মানো ন শ্বর্তম্ভ নোহিতাঃ ॥৭॥

#### शिवतचामी।

ছ্ৰত্তা ইতি। পর: স্থানীস্থা চ্ল্যামধিপ্ৰিত্য তংকাথমপ্ৰতীক্ষমাণাং কান্চিদ্বয়। সংবাবং গোধ্যকণালং পৰুং অনুবাস্য অনবতার্থা। অন্যা: প্ৰমুক্ত্য: অকোবর্তনাদিকং কুর্বত্য: কান্চ কান্চিৎ প্রীকৃষ্ণতৃত্তীর্থং কর্ম তদাসক্তমনসাং অন্যথা কৃতমণি ফলত্যেবৈতঃ দ্যোত্মলাহ ব্যতান্তেতি। স্থানতঃ স্থলপতন্ট উদ্ধ্যোধারণেন বিপর্যারং প্রাপ্তানি ব্যলাভ্রণানি বাসাং তাঃ ॥ ৬ ॥.

নচ প্রীকৃষ্ণাকৃষ্টমনসাং বিশ্বা: প্রভবস্তীভাহে তা বার্যামাণা ইতি ॥ १ ॥

### देवस्वर्षावनी ।

পাদেন হিবেতাসুবর্ত্ততে। বক্ষামাণাস্বাবেণ ভগিনীযাতৃপুআদীন্ হিছাৎন্যথা রবাভাবাপতেঃ। এবং লোকপরিত্যাগম্জু । ধুপরিত্যাগমাহ শুক্রবস্তাঃ শুক্রবমাণাঃ মানাণ্যথোকোদকার্পণাদিনা বেবমানাঃ। কারাফিদেহাপেকা ভ্যাগমাহ অল্লস্ত ইতি অল্লস্ত ভূজানাঃ। অনেন তৎপ্রেমাবিষ্টের বৈহিকশুদ্ধান্ত হিবিচারো নাতীতি গমাতে ॥ ৫ ॥

কানাঞ্চিতাহরহ তথপ্রত্যাশরা বিরহেহপ্যকেষাভরণং করোতি বহুশ ইতি গীতগোবিশ্বরীত্যা প্রভগবংপ্রেমবিশ্বিশ্বিশি নিআল-বেশস্ত প্রমোৎকঠরা পরিত্যাগমাহ লিম্পন্তঃ ইত্যাদিনা লিম্পন্তঃ অকরাগং কুর্বত্যঃ লেপনাদিকমপ্যপাশুতি জ্বেঃ। অন্যা ইত্যুক্ত লিম্পন্তা ইতি পদব্যনাধরঃ। তবৈব হেতুং দর্শয়ন বিং বন্ধব্যং নৈহিকদেহান্যপেকা পরিত্যক্তেতি কানাঞ্চিংহাব্যববিশেবানন্থ-সন্ধানমণি লাতমিতি ব্যানক্তি ব্যত্তান্তি। পূর্ব্বোক্তন্বত্যাগান্ত্যাব্দদ্যাগৈ হুক্তান্য বিভ্রমাধ্যোরহমন্থতারঃ। হথাকং। বন্ধত্পান্তি-বেলায়াং মদনাবেশসন্ত্রমাথ। বিভ্রমো হারমাল্যাদিভ্রান্থানিবিশ্ব্যর ইতি। অনেন তবিধানাং প্রেম বথা ভগতেহিপেকিতং ন তথা বেশাদি, ইতি গম্যতে। কিন্তু পশ্চান্তেনৈর পরিহিত্ত স্বয়ং তথাবং পরিধাপিতমিতি জেয়ং। এবং দোহনাদীনানভোনামবর্তাপেক্যমেন ব্যথাতিরং শ্রৈষ্ঠানুহং। তদেবক্তন্তা ক্রপি ক্রঞ্চ্যান্তিকং প্রতিবৃদ্ধঃ প্রস্থিতবৃদ্ধঃ ॥ ৬ ॥

অধুনা স্বীরৈর্বলাৎকারিতবাহাম্বসদ্ধানানাং অণি তাদাং কুলবধ্যাভাবিকত্বেন পরমত্ত্যালক লক্ষান্দেশি ত্যাগমাহ তা ইতি। সর্বা

### ক্রমসক্তঃ।

শরংকার্যকথারদাশ্রম ইতি বক্ষামাণরদাশ্রমবিরোধান্ত। শুশ্রমন্তা ইত্যন্তপূহরীতিকাং কালিদেব জেলাং স্থনাদাং বং পত্য-পতাক্ষলামিত্যাদিনা তদবীকারাং ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥

### वीविश्वनाथहळ्वा ।

অধ্যান্ত্ৰেছ এতৎ কাৰ্মপ্ৰতীক্ষাণা: কাল্চিৎ সংযাবং গোৰ্মকণারং প্ৰমণ্যসূত্ৰাদ্য অনবভাগ। জীমাত্ৰৰ্পত্যাগমাহ পরিবেষৰজ্ঞতপরিবেশণং গতীসুফোদকপ্ৰদানাদিনা ভঞ্জয়স্তাঃ ॥ ৫ ॥

কাসাঞ্চিদাবশ্যকদৈহিকবেশত্যাগমাহ । শিশ্বস্তঃ: দেহে অন্তলেণং ক্রদ্দাদিনা সূর্বতঃ: প্রমূলস্তঃ: উবর্তনাদিকং কুর্বতঃ:। কাসাঞ্চিদাবেগবশাদেহাবন্ধববিশেষপরিচরস্যাপ্যভাবমাহ ব্যতান্তেতি। বিভ্রমাব্যাহ্মুভাবোহর:। বছকে:। বলভগ্রান্তিবেলারাং মদনাবেশসন্ত্রমাৎ। বিভ্রমা হারমাল্যাদিভ্রান্থাক্রিবিশ্বন্ধ ইতি ॥ ৩ ॥

নত্ব তাঃ প্রেমপ্রাবল্যাৎ সর্বাপেকাং তত্যস্থিত্যতিত্যের তাসামপেকাং তৎপ্রসালয়: কথং চত্যস্থ্যাহ। তাঃ কুলবধ্বঃ পতিভিঃ

ছিলেন তাঁহারা তত্তৎ কর্ম পরিত্যাগ করিয়া গমন করিলেন। অন্য গোপীগণ ভোজন করিতেছিলেন, গীত জাবণ মাত্র ভোজন বিদর্জন করিয়া প্রস্থান করিলেন। ৫॥

আর ২ অঙ্গনা অঙ্গরাগ লেপন করিতেছিলেন,আর কতকগুলি গোপী অঙ্গোষর্তনাদি কর্ম করিতেছিলেন, আর কতিপর গোপী লোচনে অঞ্জন দিতেছিলেন তাঁহারাও গীত প্রবণ সেই সকল কর্ম পরিত্যাগ করিয়া প্রীকৃষ্ণসমীপে সম্বর গমন করিলেন,ব্যস্ততা প্রযুক্ত তাঁহাদিগের বসন ও ভূষণ উর্দ্ধ ও শীচে ধারণ দারা স্থানতঃ ও স্বরূপতঃ বিপর্যয় প্রাপ্ত ইইল ॥ ৬ ॥

(इ तासन् । माँ इक्तिरात्र मनः क्विकृत्क नवर्णिक कार्रात्र कार्रा त्कान विष्ठे चाहे ना, के नकन

# অন্তৰ্গু হগতাঃ কাশ্চিদেগাপ্যৌহলস্কবিনিৰ্গমাঃ। কৃষ্ণং উদ্ভাবনাযুক্তা দ্বানী নিৰ্দ্ধোচনাঃ॥ ৮॥

### देवकवर्दकावनी।

ন বানো বিনিৰ্গনো যাভিতাঃ প্ৰাণপি ভৱাবনীযুকাং তদা নিতরাং দধ্যুরিভার্থঃ ॥ ৮॥

অপি তাঃ পত্যাদিভিঃ ক মু রাত্রো বহির্মাত ইত্যাদিনির্কজেন মুহ্র্কার্থমাণা অপি ন স্তর্বস্ত কিছু যযুর্কের্ডার্থঃ। কুতঃ মোহিছাঃ হতবিবেকাঃ তৎ কুতঃ গোবিন্দেনাপস্থত আত্মা চিত্তং যাসাং তাঃ। অয়ং পত্যাদীনামপি শৈথিল্যে হেতুপ্তেরঃ। তত্ত জিমাত্রত সর্ক্বিমা শুলারিপ্রভাবছাৎ। তত্ত্বদ্ধিকবর্তিভিঃ পতিভিঃ কাশ্চিৎ পিত্রাদিভিশ্চ কাশ্চন। তত্ত্ব দু পিত্রাদিভিরবিবাহিতাঃ অবাসিস্তশ্চেতি। রচহুৎ কন্যাং পিতা ইন্দ্রীদাং পতিঃ প্তত্ত্ব বাইকে। অভাবে জাত্মত্বেবং ন স্বাতন্ত্রাং কচিৎ দ্রিয়া ইতি স্বতেঃ॥ ৭॥

খিল কিই ক্রান্থান বারিতা অতবিষান্ তর্হি সদ্য এব দশনীদশানিব দশানগনিষান্নিতি তাসাং সর্বাসানেব ভাববিশেষং দৃষ্টান্তেন প্রদর্শনিত ত্যুসাং প্রস্থিতবতীনানেব মধ্যে কাসাঞ্চিদবস্থাবিশেষমান অন্তর্রাতি ত্রিভি:। অন্তর্গথে: প্রীকৃষ্ণত ব্রন্ধপ্রের্জ্যতাবং দিবিধাঃ নিত্যসিধাং সাধনসিদ্ধান্ত। তত্রকাসাং নিত্যসিদ্ধান্তরাদাবাভিবিশিষ্ট্রেইনর তদারাধনবিধানান্যক্রং। তচ্ছুতীনাং তদারাধনানাং চাধানান্তরাবিভয়াং। অতো ব্রন্ধগহিতারাং। চিন্তামণিপ্রক্রসন্মন্ত কর্মকলকার্তেন্বিতি। আনন্দচিন্মন্তরপ্রভিভাবিতাতিরিতি। তিই কান্তাঃ প্রমণ্ড্রমণ্ডরাই ইলেগ্রিকারি। চিন্তামণিপ্রক্রসন্মন্ত ত্র ত্রাধিকারা বৈশিষ্টাং বৃহদ্বোভনীরে। দেবী ক্রন্ধনী প্রেতি। রাধিকা প্রদেবতা। সর্বলিন্ত্রীমনী সর্বকান্তিঃ সম্বোহিনী পরেতি। অতএব অক্পরিশিষ্টে চ। পরম্পরমন্তিচান্নিত্রং প্রোক্তং রাধানা মাধ্রো দেবো মাধ্রেইনর রাধিকা। বিভাক্তরে জনেলা ইতি। অতো মাৎস্থাদৌ ক্রিণী নারবতান্ত রাধা বৃন্ধাবনে বনে ইতি শক্তিব্রাধান্তরান্তরান্তরান্তর বিশিষ্টাং, জ্ঞেরং। অথাবরাসাং সাধনসিদ্ধত্বং যথা পান্মোত্রর্বতে। প্রামহর্বন্ন সর্বের্গান্তর হিলা বান্ধান্তর হিলা ত্রাক্তি। হিলাক্তরে স্ব্রেল্ডানান্তর বিশ্বিত বিশিষ্টাং। দ্বিত্র স্বিত্রহং। তে সর্বের্গান্তরান্তরান্তর গোকুলে। হরিং সংপ্রোপ্য কানেন ততে মুক্তা ভ্রাণ্বাং ইতি। গোকুল ইত্যস্য হরিং সংপ্রোপ্যেত্রনেনাপ্যন্তর্বাং। যে বর্ণা নাং প্রপদ্যন্ত ইতি স্তার্গান্ত।

### . श्रीविचनाष्ठळवर्छी।

কুলকন্যাশ্চ তাঃ শিত্রাদিভিবিদ্যাণা অপি ন ন্যবর্ত্তর। তার হেতুর্গোবিন্দেতি ভয়লজ্ঞাদীনাং কা বার্ত্তা তাসামাত্মনামণি গ্রেন্তি দেনাগন্তত্ত্বাং। মোহিতা মুহ্নিতা ইতি হত্রসঞ্চারিত্পঞ্চালিকা ইবেত্যর্থঃ। পত্যাদিভিগতপ্রাণানামণি ভার্য্যাদিকেহানাম প্রিক্রি ভয়াদেবান্যর সঞ্চারো ন সন্থত ইতি চেং পত্যাং বিপ্রতিপত্তিরিয়ং যোগমাথের সমাহিতা জ্ঞেরা তচ্চ সমাধানং ভরেব ক্রিডাক্রিক্র কণ এব তাদৃশগোপীনাং সম্বভার্যাকিক্তেন প্রত্যায়িতানাং সম্বণ্তান্থিতি পত্যাদিভিঃ পরাকর্ত্তনমের ॥ ৭ ॥

অত্যোজ্ঞলনীলমণ্যক্তরীত্যা বিবিচতে। গোপ্যভাবন্ধিবিধাঃ। নিতাসিদ্ধাঃ সাধনসিদ্ধাক্ত। সাধনসিদ্ধাক্ত বিবিধাঃ। বৌধিক্যো ইবৌধিক্যক। বৌধিক্যক বিবিধাঃ প্রতিষ্থত্ত্থাৎ প্রতিচর্বঃ প্রবিষ্ণত্ত্থাদ্বিচর্ব্যাক। তত্তকাসাং চতুর্বিধ্যমুক্তং পাল্লে গোপ্যস্ত প্রতির ক্রেরা প্রবিদ্ধা গোপকন কাঃ। দেবকন্যাক রাক্তের ন মানুবাঃ কথকনেত্তি গোপীছেনৈব মানুবছে লক্ষেণ্টি ন মানুব্য ইতি নিবেধভাসাং প্রাক্তমানুবন্ধাচাবং আপ্রতি। অত্র গোপকন্যকা এব নিতাসিদ্ধাভাসাং সাধনাপ্রবাহ। গোপীদে সত্যপি কাত্যান্নার্চনস্য তু সাধনত্বং নরলাল্যক্র আপরতি গোপীছস্য সিদ্ধাদেবেতি তৎপ্রস্ক এব প্রপঞ্চিতঃ। তাসাং নিত্য সিদ্ধান্ত আনলচিন্মন্ত্রস্প্রতিভাবিভাজিতাভিরিছি ব্রহ্মসংহিতোক্ত্যা তাসাং জ্যাদিনীশক্তিপ্রতিপাদনাং। জ্যাদিনী বা নহাশজি রিতি বৃহলোত্মীরাক্ত। তাতিঃ সহক্ষেস্য ব্রবশ্বনাদিবাক্ত দশান্তাক্ষরাদিমন্তের্ তাসাং নিত্যসিদ্ধাপিকাংশভ্তত্থ ব্যাখ্যাত্ত্রক্ষর প্রতীনাঞ্চানান্যক্রণভাবিত্ত্যাক। সন্তবন্ধরন্তির ইতি প্রমাণাব্যতানাং দেবকন্যানাং নিত্যসিদ্ধাপিকাংশভ্তত্থ ব্যাখ্যাত্রক্ষর নীল্মণোঁ। প্রতিচরীপাং সাধনসিদ্ধতং কন্ধর্গকোট্যাবণ্য ছির দৃষ্টে মনাংসি নঃ। কারিনীভাব্যাসাদ্য স্বরক্ষানাসংশ্রহা

বজন্মনীগণকে পতি, পিতৃ, ভাতৃ ও বন্ধুবৰ্গ ঘৃষ্টিও বারখার নিবারণ করিল তথাচ আপনাদের চিং গোবিন্দ কর্তৃক অপ্রতুক্ত হওয়াতে মোহিত হইয়া চলিলেন, কোন মডেই নিবৃত হইলেন না । বুলি যে সকল গোপী নির্গমন লাভ করিতে পারিলেন না, তাঁছারা পূর্বেও ব্রীকৃষ্টিভার্ক নিস্ ছিলেন এবং এ সময়েও নিমীলিত লোচন হইয়া খুড়াই চিতা করিতে লাগিলেন। ৮ ।